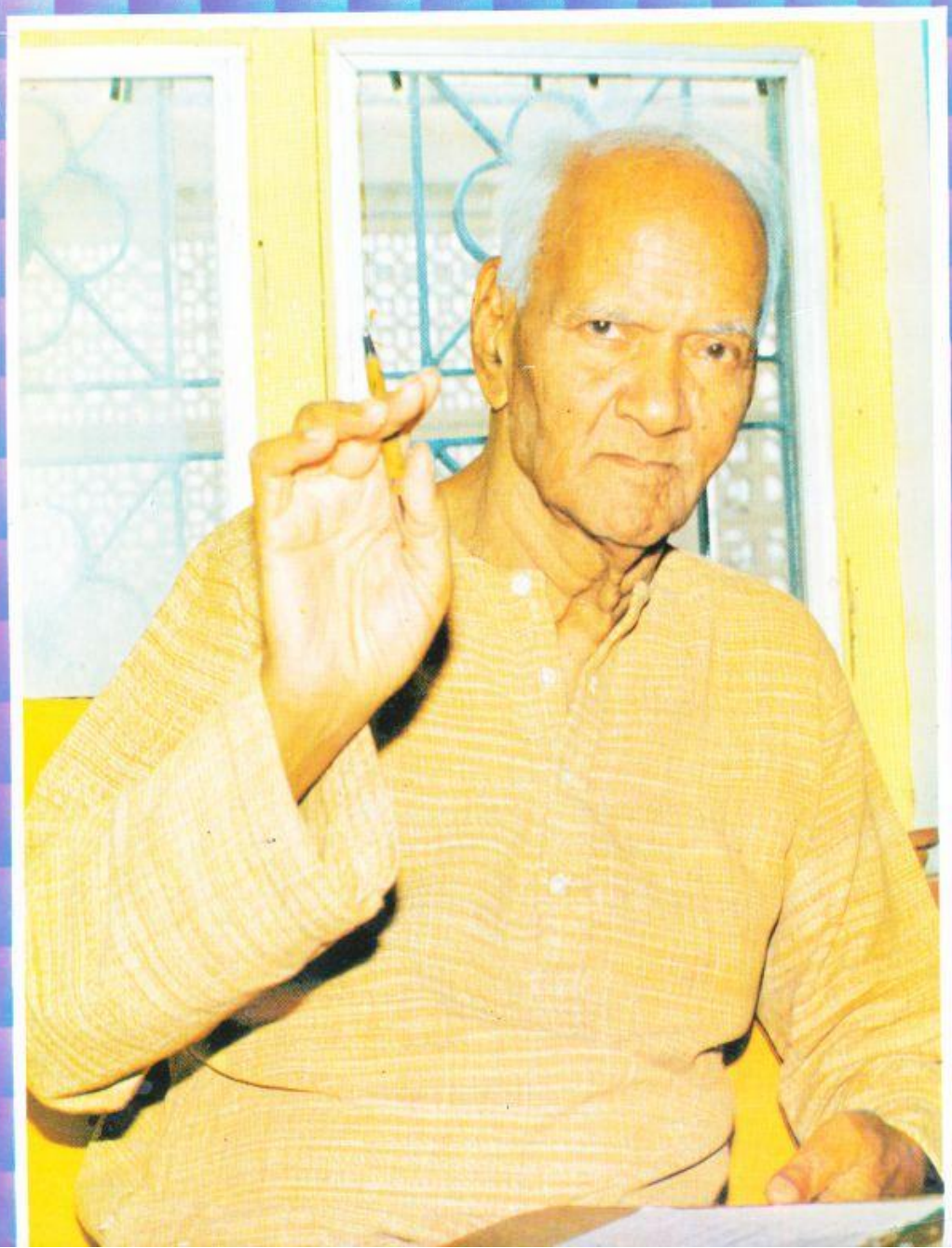
पं. श्रीराम शर्मा आचार्य वाङ्मय

गायत्री महाविद्या का तत्वदर्शन



www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य वाङ्मय

गायत्री महाविद्या का तत्त्वदर्शन

सम्पादक
ब्रह्मवर्चस



प्रकाशक
अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

❐

प्रकाशक

अखण्ड ज्योति संस्थान

मथुरा - २८१००३

❐

© सर्वाधिकार सुरक्षित

❐

द्वितीय संस्करण १९९८

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

❐

मूल्य १२५)

❐

मुद्रक

जनजागरण प्रेस, मथुरा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

समर्पणम्

ॐ मातरं भगवतीं देवीं श्रीरामञ्च जगद्गुरुम् ।
पादपद्मे तयोः श्रित्वा प्रणमामि मुहुर्मुहुः ।।

मातृवत् लालयित्री च पितृवत् मार्गदर्शिका ।
नमोऽस्तु गुरुसत्तायै श्रद्धा-प्रज्ञा युता च या ।।

भगवत्याः जगन्मातुः, श्रीरामस्य जगद्गुरोः ।
पादुकायुगले वन्दे, श्रद्धाप्रज्ञास्वरूपयोः ।।

नमोऽस्तु गुरवे तस्मै गायत्रीरूपिणे सदा ।
यस्य वागमृतं हन्ति विषं संसारसंज्ञकम् ।।

असम्भवं सम्भवकर्तुमुद्यतं प्रचण्डझञ्झावृतिरोधसक्षमम् ।
युगस्य निर्माणकृते समुद्यतं परं महाकालममुं नमाम्यहम् ।।

त्वदीयं वस्तु गोविन्द ! तुभ्यमेव समर्पये ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

विराट गायत्री परिवार एवं उसके संस्थापक-संरक्षक एक संक्षिप्त परिचय

इतिहास में कभी-कभी ऐसा होता है कि अवतारी सत्ता एक साथ बहुआयामी रूपों में प्रकट होती है एवं करोड़ों ही नहीं, पूरी वसुधा के उद्धार-चेतनात्मक धरातल पर सबके मनों का नये सिरे से निर्माण करने आती है । परमपूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य को एक ऐसी ही सत्ता के रूप में देखा जा सकता है जो युगों-युगों में गुरु एवं अवतारी सत्ता दोनों ही रूपों में हम सबके बीच प्रकट हुई, अस्सी वर्ष का जीवन जीकर एक विराट् ज्योति प्रज्ज्वलित कर उस सूक्ष्म ऋषि चेतना के साथ एकाकार हो गयी जो आज युग परिवर्तन को सन्निकट लाने को प्रतिबद्ध है । परमवंदनीया माताजी शक्ति का रूप थीं जो कभी महाकाली, कभी माँ जानकी, कभी मां शारदा एवं कभी माँ भगवती के रूप में शिव की कल्याणकारी सत्ता का साथ देने आती रही है । उनने भी सूक्ष्म में विलीन हो स्वयं को अपने आराध्य के साथ एकाकार कर ज्योतिपुरुष का एक अंग स्वयं को बना लिया । आज दोनों सशरीर हमारे बीच नहीं है किन्तु, नूतन सृष्टि कैसे ढाली गयी, कैसे मानव गढ़ने का साँचा बनाया गया, इसे शान्तिकुंज, ब्रह्मवर्चस, गायत्री तपोभूमि, अखण्ड ज्योति संस्थान एवं युगतीर्थ आँवलखेड़ा जैसी स्थापनाओं तथा संकल्पित सृजन सेनानी गणों के, वीरभद्रों की करोड़ों से अधिक की संख्या के रूप में देखा जा सकता है ।

परमपूज्य गुरुदेव का वास्तविक मूल्यांकन तो कुछ वर्षों बाद इतिहासविद, मिथक लिखने वाले करेंगे किन्तु, यदि उनको आज भी साक्षात कोई देखना या उनसे साक्षात्कार करना चाहता हो तो उन्हें उनके द्वारा अपने हाथ से लिखे गये उस विराट परिमाण में साहित्य के रूप में युग संजीवनी के रूप में देख सकता है जो वे अपने वजन से अधिक भार के बराबर लिख गये । इस साहित्य में संवेदना का स्पर्श इस बारीकी से हुआ है कि लगता है लेखनी को उसी की स्याही में डुबा कर लिखा गया हो । हर शब्द ऐसा जो हृदय को छूता मन को, विचारों को बदलता चला जाता है । लाखों करोड़ों के मनों के अंतःस्थल को छू कर उसने उनका कायाकल्प कर दिया । रूसो के प्रजातंत्र की, कार्ल मार्क्स के साम्यवाद की क्रांति भी इसके समक्ष बौनी पड़ जाती है । उनके मात्र इस युग वाले स्वरूप को लिखने तक में लगता है कि एक विश्वकोश तैयार हो सकता है, फिर उस बहुआयामी रूप को जिसमें वे संगठनकर्ता, साधक, करोड़ों के अभिभावक, गायत्री महाविद्या के उद्धारक, संस्कार परम्परा का पुनर्जीवन करने वाले, ममत्व लुटाने वाले एक पिता, नारी जाति के प्रति अनन्य करुणा बिखेरकर उनके ही उद्धार के लिए धरातल पर चलने वाला नारी जागरण अभियान चलाते देखे जाते हैं, अपनी वाणी के उद्‌बोधन से एक विराट गायत्री परिवार एकाकी अपने बलबूते खड़े रहते दिखाई देते हैं तो समझ में नहीं आता, क्या-क्या लिखा जाय, कैसे छन्दबद्ध, लिपिबद्ध किया जाय, उस महापुरुष के जीवनचरित को ।

आश्विन कृष्ण त्रयोदशी विक्रमी संवत् १९६७ (२० सितम्बर १९११) को स्थूल शरीर से आँवलखेड़ा ग्राम जनपद आगरा जो जलेसर मार्ग पर आगरा से पंद्रह मील की दूरी पर स्थित है, में जन्मे श्रीराम शर्मा जी का बाल्यकाल-कैशोर्य काल ग्रामीण परिसर में ही बीता । वे जन्मे तो थे एक जमींदार घराने में, जहाँ उनके पिता-श्री पं. रूपकिशोर जी शर्मा आसपास के दूर-दराज के राजघरानों के राजपुरोहित, उद्‌भट विद्वान, भागवत कथाकार थे किन्तु, उनका अंतःकरण मानव मात्र की पीड़ा से सतत विचलित रहता था । साधना के प्रति उनका झुकाव बचपन में ही दिखाई देने लगा । जब वे अपने सहपाठियों को, छोटे बच्चों को अमराइयों में बिठाकर स्कूली शिक्षा के साथ-साथ सुसंस्कारिता अपनाने वाली आत्मविद्या का शिक्षण दिया करते थे । छटपटाहट के कारण हिमालय की ओर भाग निकलने व पकड़े जाने पर उनने संबंधियों को बताया कि हिमालय ही उनका घर है एवं वहीं वे जा रहे थे । किसे मालूम था कि हिमालय की ऋषि चेतनाओं का समुच्चय बनकर आयी यह सत्ता वस्तुतः अगले दिनों अपना घर वहीं बनाएगी । जाति-पाँति का कोई भेद नहीं । जातिगत मूढ़ता भरी मान्यता से ग्रसित तत्कालीन भारत के ग्रामीण परिसर में एक अछूत वृद्ध महिला की जिसे कुष्ठ रोग हो गया था, उसी के टोले में जाकर सेवाकर उनने घरवालों का विरोध तो मोल ले लिया पर अपना व्रत नहीं छोड़ा ।

उस महिला ने स्वस्थ होने पर उन्हें ढेरों आशीर्वाद दिये। एक अछूत कहलाने वाली जाति का व्यक्ति जो उनके आलीशान घर में घोड़ों की मालिश करने आता था, एक बार कह उठा कि मेरे घर कथा कौन कराने आएगा, मेरा ऐसा सौभाग्य कहाँ। नवनीत जैसे हृदय वाले पूज्यवर उसके घर जा पहुँचे एवं कथा पूरे विधान से कर पूजा की, उसको स्वच्छता का पाठ सिखाया, जबकि सारा गाँव उनके विरोध में बोल रहा था।

किशोरावस्था में ही समाज सुधार की रचनात्मक प्रवृत्तियाँ उनने चलाना आरम्भ कर दी थीं। औपचारिक शिक्षा स्वल्प ही पायी थी किन्तु, उन्हें इसके बाद आवश्यकता भी नहीं थी क्योंकि जो जन्मजात प्रतिभा सम्पन्न हो वह औपचारिक पाठ्यक्रम तक सीमित कैसे रह सकता है। हाट-बाजारों में जाकर स्वास्थ्य-शिक्षा प्रधान परिपत्र बाँटना, पशुधन को कैसे सुरक्षित रखें तथा स्वावलम्बी कैसे बनें, इसके छोटे-छोटे पैम्फलेट्स लिखने, हाथ की प्रेस से छपवाने के लिए उन्हें किसी शिक्षा की आवश्यकता नहीं थी। वे चाहते थे, जनमानस आत्मावलम्बी बने, राष्ट्र के प्रति स्वाभिमान उसका जागे, इसलिए गाँव में जन्मे इस लाल ने नारी शक्ति व बेरोजगार युवाओं के लिए गाँव में ही एक बुनताघर स्थापित किया व उसके द्वारा हाथ से कैसे कपड़ा बुना जाय, अपने पैरों पर कैसे खड़ा हुआ जाय, यह सिखाया।

पंद्रह वर्ष की आयु में वसंत पंचमी की वेला में सन् १९२६ में उनके घर की पूजा स्थली में, जो उनकी नियमित उपासना का तब से आगार थी, जबसे महामना पं० मदन मोहन मालवीय जी ने उन्हें काशी में गायत्री मंत्र की दीक्षा दी थी, उनकी गुरुसत्ता का आगमन हुआ अदृश्य छायाधारी सूक्ष्म रूप में। उनने प्रज्ज्वलित दीपक की लौ में से स्वयं को प्रकट कर उन्हें उनके द्वारा विगत कई जन्मों में संपन्न क्रिया कलापों का दिग्दर्शन कराया तथा उन्हें बताया कि वे दुर्गम हिमालय से आये हैं एवं उनसे अनेकानेक ऐसे क्रियाकलाप कराना चाहते हैं, जो अवतारी स्तर की ऋषि सत्ताएँ उनसे अपेक्षा रखती हैं। चार बार कुछ दिन से लेकर एक साल तक की अवधि तक हिमालय आकर रहने, कठोर तप करने का भी उनने संदेश दिया एवं उन्हें तीन संदेश दिए- १. गायत्री महाशक्ति के चौबीस-चौबीस लक्ष के चौबीस महा- पुरश्चरण जिन्हें आहार के कठोर तप के साथ पूरा करना था। २. अखण्ड घृतदीप की स्थापना एवं जन-जन तक इसके प्रकाश को फैलाने के लिए समय आने पर ज्ञानयज्ञ अभियान चलाना, जो बाद में अखण्ड ज्योति पत्रिका के १९३८ में प्रथम प्रकाशन से लेकर विचार-क्रांति अभियान के विश्वव्यापी होने के रूप में प्रकटा तथा ३. चौबीस महापुरश्चरणों के दौरान युगधर्म का निर्वाह करते हुए राष्ट्र के निमित्त भी स्वयं को खपाना, हिमालय यात्रा भी करना तथा उनके संपर्क से आगे का मार्गदर्शन लेना।

यह कहा जा सकता है कि युग निर्माण मिशन, गायत्री परिवार, प्रज्ञा अभियान, पूज्य गुरुदेव जो सभी एक दूसरे के पर्याय हैं, की जीवन यात्रा का यह एक महत्वपूर्ण मोड़ था, जिसने भावी रीति-नीति का निर्धारण कर दिया। पूज्य गुरुदेव अपनी पुस्तक 'हमारी वसीयत और विरासत' में लिखते हैं कि "प्रथम मिलन के दिन समर्पण सम्पन्न हुआ। दो बातें गुरु सत्ता द्वारा विशेष रूप से कही गई, संसारी लोग क्या करते हैं और क्या कहते हैं, उसकी ओर से मुँह मोड़कर निर्धारित लक्ष्य की ओर एकाकी साहस के बलबूते चलते रहना एवं दूसरा यह कि अपने को अधिक पवित्र और प्रखर बनाने की तपश्चर्या में जुट जाना- जौ की रोटी व छाछ पर निर्वाह कर आत्मानुशासन सीखना। इसी से वह सामर्थ्य विकसित होगी जो विशुद्धतः परमार्थ प्रयोजनों में नियोजित होगी। वसंत पर्व का यह दिन गुरु अनुशासन का अवधारण ही हमारे लिए नया जन्म बन गया। सद्गुरु की प्राप्ति हमारे जीवन का अनन्य एवं परम सौभाग्य रहा।"

राष्ट्र के परावलम्बी होने की पीड़ा भी उन्हें उतनी ही सताती थी जितनी कि गुरुसत्ता के आदेशानुसार तपकर सिद्धियों के उपार्जन की ललक उनके मन में थी। उनके इस असमंजस को गुरुसत्ता ने तोड़कर परावाणी से उनका मार्गदर्शन किया कि युगधर्म की महत्ता व समय की पुकार देख सुन कर तुम्हें अन्य आवश्यक कार्यों को छोड़कर अग्निकाण्ड में पानी लेकर दौड़ पड़ने की तरह आवश्यक कार्य भी करने पड़ सकते हैं। इसमें स्वतंत्रता संग्राम सेनानी के नाते संघर्ष करने का भी संकेत था। १९२७ से १९३३ तक का समय उनका एक सक्रिय स्वयं सेवक-स्वतंत्रता सेनानी के रूप में बीता, जिसमें घरवालों के विरोध के बावजूद पैदल लम्बा रास्ता पारकर वे आगरा के उस शिविर में पहुँचे, जहाँ शिक्षण दिया जा रहा था, अनेकानेक मित्रों-सखाओं-मार्गदर्शकों के साथ भूमिगत हो कार्य करते रहे तथा समय आने पर जेल

भी गये । छह-छह माह की उन्हें कई बार जेल हुई । जेल में भी वे जेल के निरक्षर साथियों को शिक्षण देकर व स्वयं अंग्रेजी सीखकर लौटे । आसन- सोल जेल में वे श्री जवाहर लाल नेहरू की माता श्रीमती स्वरूपरानी नेहरू, श्री रफी अहमद किदवई, महामना मालवीय जी, देवदास गाँधी जैसी हस्तियों के साथ रहे व वहाँ से एक मूलमंत्र सीखा जो मालवीय जी ने दिया था कि जन-जन की साझेदारी बढ़ाने के लिए हर व्यक्ति के अंशदान से-मुट्ठी फण्ड से रचनात्मक प्रवृत्तियाँ चलाना । यही मंत्र आगे चलकर एक घण्टा समयदान बीस पैसा नित्य या एक दिन की आय एक माह में तथा एक मुट्ठी अन्न रोज डालने के माध्यम से धर्मघट की स्थापना का स्वरूप लेकर लाखों-करोड़ों की भागीदारी वाला गायत्री परिवार बनाता चला गया, जिसका आधार था प्रत्येक व्यक्ति की यज्ञीय भावना का उसमें समावेश ।

स्वतंत्रता की लड़ाई के दौरान कुछ उग्र दौर भी आये, जिनमें शहीद भगतसिंह को फाँसी दिये जाने पर फैले जन आक्रोश के समय श्री अरविन्द के किशोर काल की क्रांतिकारी स्थिति की तरह उनने भी वे कार्य किये, जिनसे आक्रान्ता शासकों के प्रति असहयोग जाहिर होता था । नमक आन्दोलन के दौरान वे आततायी शासकों के समक्ष झुके नहीं, वे मारते रहे परन्तु, समाधि स्थिति को प्राप्त राष्ट्र देवता के पुजारी को बेहोश होना स्वीकृत था पर आन्दोलन से पीठ दिखाकर भागना नहीं । बाद में फिरंगी सिपाहियों के जाने पर लोग उठाकर घर लेकर आये । जरारा आन्दोलन के दौरान उनने झण्डा छोड़ा नहीं जबकि, फिरंगी उन्हें पीटते रहे, झण्डा छीनने का प्रयास करते रहे। उनने मुँह से झण्डा पकड़ लिया, गिर पड़े, बेहोश हो गये पर झण्डे का टुकड़ा चिकित्सकों द्वारा दाँतों में भींचे गये टुकड़े के रूप में जब निकाला गया तब सब उनकी सहनशक्ति देखकर आश्चर्य चकित रह गये । उन्हें तब से ही आजादी के मतवाले उन्मत्त श्रीराम मत्त नाम मिला। अभी भी आगरा में उनके साथ रहे या उनसे कुछ सीख लिए अगणित व्यक्ति उन्हें मत्त जी नाम से ही जानते हैं। लगानबन्दी के आँकड़े एकत्र करने के लिए उनने पूरे आगरा जिले का दौरा किया व उनके द्वारा प्रस्तुत वे आँकड़े तत्कालीन संयुक्त प्रान्त के मुख्य मंत्री श्री गोविन्द वल्लभ पंत द्वारा गाँधी जी के समक्ष पेश किये गये । बापू ने अपनी प्रशस्ति के साथ वे प्रामाणिक आँकड़े ब्रिटिश पार्लियामेण्ट भेजे, इसी आधार पर पूरे संयुक्त प्रान्त के लगान माफी के आदेश प्रसारित हुए । कभी जिनने अपनी इस लड़ाई के बदले कुछ न चाहा उन्हें सरकार ने अपना प्रतिनिधि भेजकर पचास वर्ष बाद ताम्रपत्र देकर शांतिकुंज में सम्मानित किया । उसी सम्मान व स्वाभिमान के साथ सारी सुविधाएँ व पेंशन उनने प्रधान मंत्री राहत फण्ड, हरिजन फण्ड के नाम समर्पित कर दीं । वैरागी जीवन का, सच्चे राष्ट्र संत होने का इससे बड़ा प्रमाण क्या हो सकता है ?

१९३५ के बाद उनके जीवन का नया दौर शुरु हुआ, जब गुरुसत्ता की प्रेरणा से वे श्री अरविन्द से मिलने पाण्डिचेरी, गुरुदेव ऋषिवर रवीन्द्रनाथ टैगोर से मिलने शांति निकेतन तथा बापू से मिलने साबरमती आश्रम, अहमदाबाद गये । सांस्कृतिक आध्यात्मिक मोर्चे पर राष्ट्र को कैसे परतंत्रता की बेड़ियों से मुक्त किया जाय, यह निर्देश लेकर अपना अनुष्ठान यथावत् चलाते हुए उनने पत्रकारिता के क्षेत्र में प्रवेश किया जब आगरा में 'सैनिक' समाचार पत्र के कार्यवाहक संपादक के रूप में श्री कृष्णदत्त पालीवाल जी ने उन्हें अपना सहायक बनाया। बाबू गुलाब राय व पालीवाल जी से सीख लेते हुए सतत स्वाध्यायरत रह कर उनने अखण्ड ज्योति नामक पत्रिका का पहला अंक १९३८ की वसंत पंचमी पर प्रकाशित किया । प्रयास पहला था, जानकारियाँ कम थीं अतः पुनः सारी तैयारी के साथ विधिवत् १९४० की जनवरी से उनने परिजनों के नाम पाती के साथ अपने हाथ से बने कागज पर पैर से चलने वाली मशीन से छापकर 'अखण्ड ज्योति' पत्रिका का शुभारंभ किया जो पहले तो दो सौ पचास पत्रिका के रूप में निकली, किन्तु क्रमशः उनके अध्यवसाय घर-घर पहुँचाने, मित्रों तक पहुँचाने वाले उनके हृदय स्पर्शी पत्रों द्वारा बढ़ती-बढ़ती नवयुग के मत्स्यावतार की तरह आज दस लाख से भी अधिक संख्या में विभिन्न भाषाओं में छपती व एक करोड़ से अधिक व्यक्तियों द्वारा पढ़ी जाती है ।

पत्रिका के साथ-साथ 'मैं क्या हूँ' जैसी पुस्तकों का लेखन आरम्भ हुआ, स्थान बदला, आगरा से मथुरा आ गये, दो-तीन घर बदलकर घीयामण्डी में जहाँ आज अखण्ड ज्योति संस्थान है, आ बसे । पुस्तकों का प्रकाशन व कठोर तपश्चर्या, ममत्व विस्तार तथा पत्रों द्वारा जन-जन के अंतः स्थल को छूने की प्रक्रिया चालू रही । साथ देने आ गयीं

परमवंदनीया माताजी भगवती देवी शर्मा, जिन्हें भविष्य में अत्यधिक महत्वपूर्ण भूमिका अपने आराध्य इष्ट गुरु के लिए निभानी थी । उनके मर्मस्पर्शी पत्रों ने, भाव भरे आतिथ्य, हर किसी को जो दुखी था-पीड़ित था, दिये गये ममत्व भरे परामर्श ने गायत्री परिवार का आधार खड़ा किया, इसमें कोई सन्देह नहीं । यदि विचारक्रांति में साहित्य ने मनोभूमि बनायी तो भावात्मक क्रांति में ऋषियुगल के असीम स्नेह ने ब्राह्मणत्व भरे जीवन ने शेष बची भूमिका निभायी ।

'अखण्ड ज्योति' पत्रिका लोगों के मनों को प्रभावित करती रही, इसमें प्रकाशित 'गायत्री चर्चा' स्तम्भ से लोगों को गायत्री व यज्ञमय जीवन जीने का संदेश मिलता रहा, साथ ही एक आना से लेकर छह आना सीरज की अनेकानेक लोकोपयोगी पुस्तकें छपती चली गयीं। इस बीच हिमालय के बुलावे भी आये, अनुष्ठान भी चलता रहा जो पूरे विधि विधान के साथ १९५३ में गायत्री तपोभूमि की स्थापना, १०८ कुण्डी यज्ञ व उनके द्वारा दी गयी प्रथम दीक्षा के साथ समाप्त हुआ । गायत्री तपोभूमि की स्थापना के निमित्त धन की आवश्यकता पड़ी तो परम वंदनीया माताजी ने जिनने हर कदम पर अपने आराध्य का साथ निभाया, अपने सारे जेवर बेच दिये, पूज्यवर ने जमींदारी के बाण्ड बेच दिये एवं जमीन लेकर अस्थायी स्थापना कर दी गयी । धीरे-धीरे उदारचेताओं के माध्यम से गायत्री तपोभूमि एक साधना पीठ बन गयी। २४०० तीर्थों के जल व रज की स्थापना वहाँ की गयी, २४०० करोड़ गायत्री मंत्र लेखन वहाँ स्थापित हुआ, अखण्ड अग्नि हिमालय के एक अति पवित्र स्थान से लाकर स्थापित की गयी जो अभी तक वहाँ यज्ञशाला में जल रही है । १९४१ से १९७१ तक का समय परमपूज्य गुरुदेव का गायत्री तपोभूमि, अखण्ड ज्योति संस्थान में सक्रिय रहने का समय है । १९५६ में नरमेध यज्ञ, १९५८ में सहस्रकुण्डी यज्ञ करके लाखों गायत्री साधकों को एकत्र कर उनने गायत्री परिवार का बीजारोपण कर दिया । कार्त्तिक पूर्णिमा १९५८ में आयोजित इस कार्यक्रम में दस लाख व्यक्तियों ने भाग लिया, इन्हीं के माध्यम से देश भर में प्रगतिशील गायत्री परिवार की दस हजार से अधिक शाखाएँ स्थापित हो गयीं । संगठन का अधिकाधिक कार्यभार पूज्यवर परमवंदनीया माताजी पर सौंपते चले गये एवम् १९५९ में पत्रिका का संपादन उन्हें देकर पौने दो वर्ष के लिए हिमालय चले गये, जहाँ उन्हें गुरुसत्ता से मार्गदर्शन लेना था, तपोवन नंदनवन में ऋषियों से साक्षात्कार करना था तथा गंगोत्री में रहकर आर्ष ग्रन्थों का भाष्य करना था । तब तक वे गायत्री महाविद्या पर विश्वकोश स्तर की अपनी रचना गायत्री महाविज्ञान के तीन खण्ड लिख चुके थे, जिसके अब तक प्रायः पैंतीस संस्करण छप चुके हैं । हिमालय से लौटते ही उनमें महत्वपूर्ण निधि के रूप में वेद, उपनिषद्, स्मृति, आरण्यक, ब्राह्मण, योगवाशिष्ठ, मंत्र महाविज्ञान, तंत्र महाविज्ञान जैसे ग्रन्थों को प्रकाशित कर देव संस्कृति की मूल थाती को पुनर्जीवन दिया । परमवंदनीया माताजी ने उन्हीं वेदों को पूज्यवर की इच्छानुसार १९९१-९२ में विज्ञान सम्मत आधार देकर पुनर्मुद्रित कराया एवं वे आज घर-घर में स्थापित हैं ।

युग निर्माण योजना व 'युग निर्माण सत्संकल्प' के रूप में मिशन का घोषणा पत्र १९६३ में प्रकाशित हुआ । तपोभूमि एक विश्वविद्यालय का रूप लेती चली गयी तथा अखण्ड ज्योति संस्थान एक तपःपूत की निवास स्थली बन गया, जहाँ रहकर उनने अपनी शेष तप साधना पूरी की थी, जहाँ से गायत्री परिवार का बीज डाला गया था । तपोभूमि में विभिन्न शिविरों का आयोजन किया जाता रहा, पूज्यवर स्वयं छोटे-बड़े जन सम्मेलनों, यज्ञायोजनों के द्वारा विचार क्रांति की पृष्ठभूमि बनाते रहे, पूरे देश में १९७०-७१ में पाँच १००८ कुण्डी यज्ञ आयोजित हुए । स्थायी रूप से विदाई लेते हुए एक विराट सम्मेलन (जून १९७१) में परिजनों में विशेष कार्य भार सौंप, परम वंदनीया माताजी को शांतिकुंज, हरिद्वार में अखण्ड दीप के समक्ष तप हेतु छोड़ कर स्वयं हिमालय चले गये । एक वर्ष बाद वे गुरुसत्ता का संदेश लेकर लौटे एवं अपनी आगामी बीस वर्ष की क्रिया पद्धति बतायी । ऋषि परम्परा का बीजारोपण, प्राण प्रत्यावर्त्तन संजीवनी व कल्प साधना सत्रों का मार्गदर्शन जैसे कार्य उनने शांतिकुंज में सम्पन्न किये ।

सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थापना अपनी हिमालय की इस यात्रा से लौटने के बाद ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान की थी, जहाँ विज्ञान और अध्यात्म के समन्वयात्मक प्रतिपादनों पर शोध कर एक नये धर्म वैज्ञानिक धर्म के मूलभूत आधार रखे जाने थे । इस सम्बन्ध में पूज्यवर ने विराट् परिमाण में साहित्य लिखा, अदृश्य जगत के अनुसंधान से लेकर मानव की प्रसुप्त क्षमता के जागरण तक साधना से सिद्धि एवं दर्शन-विज्ञान के तर्क, तथ्य प्रमाण के आधार पर प्रस्तुतीकरण तक । इसके

लिए एक विराट ग्रन्थागार बना व एक सुसज्जित प्रयोगशाला। वनौषधि उद्यान भी लगाया गया तथा जड़ी बूटी, यज्ञविज्ञान तथा मंत्र शक्ति पर प्रयोग हेतु साधकों पर परीक्षण प्रचुर परिमाण में किये गये। निष्कर्षों ने प्रमाणित किया कि ध्यान साधना मंत्र चिकित्सा व यज्ञोपैथी एक विज्ञान सम्मत विधा है। गायत्री नगर क्रमशः एक तीर्थ, संजीवनी विद्या के प्रशिक्षण का एकेडमी का रूप लेता चला गया एवं जहाँ ९-९ दिन के साधना प्रधान, एक-एक माह के कार्यकर्त्ता निर्माण हेतु युग शिल्पी सत्र सम्पन्न होने लगे।

कार्यक्षेत्र में विस्तार हुआ। स्थान-स्थान पर शक्तिपीठें विनिर्मित हुईं, जिनके निर्धारित क्रियाकलाप थे- संस्कारिता, आस्तिकता संवर्धन एवं जन जागृति के केन्द्र बनना। ऐसे केन्द्र जो १९८० में बनना आरंभ हुए थे, प्रज्ञा संस्थान - शक्तिपीठ-प्रज्ञामण्डल-स्वाध्याय मंडल के रूप में पूरे देश व विश्व में फैलते चले गये। ७६ देशों में गायत्री परिवार की शाखाएँ फैल गयीं, ४६०० से अधिक भारत में निज के भवन वाले संस्थान विनिर्मित हो गये, वातावरण गायत्रीमय होता चला गया।

परमपूज्य गुरुदेव ने सूक्ष्मीकरण में प्रवेश कर १९८५ में ही पाँच वर्ष के अंदर अपने सारे क्रिया कलापों को समेटने की घोषणा कर दी। इस बीच कठोर तप साधना कर मिलना-जुलना कम कर दिया तथा क्रमशः क्रिया कलाप परमवंदनीया माताजी को सौंप दिये। राष्ट्रीय एकता सम्मेलनों, विराट दीप यज्ञों के रूप में नूतन विधा को जन-जन को सौंप कर राष्ट्र देवता की कुण्डलिनी जगाने हेतु उनने अपने स्थूल शरीर छोड़ने व सूक्ष्म में समाने की, विराट से विराटतम होने की घोषणा कर गायत्री जयन्ती २ जून १९९० को महाप्रयाण किया। सारी शक्ति वे परमवंदनीया माताजी को दे गये व अपने व माताजी के बाद संघशक्ति की प्रतीक लाल मशाल को ही इष्ट आराध्य मानने का आदेश देकर ब्रह्मबीज से विकसित ब्रह्मकमल की सुवास को देव संस्कृति दिग्विजय अभियान के रूप में आरंभ करने का माताजी को निर्देश दे गये।

एक विराट श्रद्धांजलि समारोह व शपथ समारोह जो हरिद्वार में सम्पन्न हुए, में लाखों व्यक्तियों ने अपना समय समाज के नव निर्माण, मनुष्य में देवत्व के उदय व धरती पर स्वर्ग लाने का गुरु सत्ता का नारा साकार करने के निमित्त देने की घोषणा की। परमवंदनीया माताजी द्वारा भारतीय-संस्कृति को विश्वव्यापी बनाने, गायत्री रूपी संजीवनी घर-घर पहुँचाने के लिए पूज्यवर द्वारा आरम्भ किये गये युगसंधि महापुरश्चरण की प्रथम व द्वितीय पूर्णाहुति तक विराट अश्वमेघ महायज्ञों की घोषणा की गयी। वातावरण के परिशोधन, सूक्ष्मजगत के नव निर्माण एवं सांस्कृतिक व वैचारिक क्रांति के निमित्त सौर ऊर्जा के दोहन द्वारा विशिष्ट प्रयोगों के माध्यम से विशिष्ट मंत्राहुतियों द्वारा सम्पन्न किये गये इन अश्वमेधों ने सारी विश्ववसुधा को गायत्री व यज्ञमय, वासंती उल्लास से भर दिया। स्वयं परमवंदनीया माताजी ने अपनी पूर्व घोषणानुसार चार वर्ष तक परिजनों का मार्गदर्शन कर सोलह यज्ञों का संचालन स्थूल शरीर से किया व फिर भाद्रपद पूर्णिमा १९ सितम्बर १९९४ महालय श्राद्धारंभ वाली पुण्य वेला में अपने आराध्य के साथ एकाकार हो गयीं। उनके महाप्रयाण के बाद दोनों ही सत्ताओं के सूक्ष्म में एकाकार होने के बाद मिशन की गतिविधियाँ कई गुना बढ़ती चली गयीं एवं जयपुर के प्रथम अश्वमेध यज्ञ (नवम्बर ९२) से छब्बीसवें अश्वमेध यज्ञ शिकागो (यू. एस. ए. जुलाई ९५) तक प्रज्ञावतार का प्रत्यक्ष रूप सबको दीखने लगा है।

गुरुसत्ता के आदेशानुसार सतयुग के आगमन तक १०८ महायज्ञ देवसंस्कृति को विश्वव्यापी बनाने हेतु संपन्न होने हैं। युग संधि महापुरश्चरण की अंतिम पूर्णाहुति उसी के बाद होगी। प्रथम पूर्णाहुति नवम्बर १९९५ में कार्त्तिक पूर्णिमा के अवसर पर युगपुरुष पूज्यवर की जन्मभूमि आँवलखेड़ा में मनायी जा रही है। उनके द्वारा लिखे गये समग्र साहित्य के वाङ्मय का जो सत्तर खण्डों में फैला है, विमोचन भी यहीं सम्पन्न हो रहा है। विनम्रता एवं ब्राह्मणत्व की कसौटी पर खरे उतरने वाले वरिष्ठ प्रज्ञापुत्र ही उनके उत्तराधिकारी कहे जायेंगे, यह गुरुसत्ता का उद्घोष था एवं इस क्षेत्र में बढ़ चढ़कर आदर्शवादी प्रतिस्पर्धा करने वाले अनेकानेक परिजन अब उनके स्वप्नों को साकार करने आगे आ रहे हैं। 'हम बदलेंगे-युग बदलेंगे' का उद्घोष दिग-दिगन्त तक फैल रहा है एवं इक्कीसवीं सदी-उज्ज्वल भविष्य, सतयुग की वापसी का स्वप्न साकार होता चला जा रहा है, यह स्पष्ट दिखाई दे रहा है।

भूमिका

परम पूज्य गुरुदेव को इस युग का विश्वामित्र कहा जाता है क्योंकि उन्होंने विलुप्त हो रही गायत्री महाविद्या का पुनर्जीवन कर उसे एक वर्ग विशेष तक सीमित न रहने देकर विश्व व्यापी बना दिया । गायत्रीं साधना सद्बुद्धि की आराधना-उपासना है । गायत्री को वेदों की माता-वेदमाता कहा जाता है । वेद शब्द का अर्थ है ''ज्ञान'' । यह ज्ञान कल्याण (ऋक्), पौरुष (यजु), क्रीड़ा (साम) एवं अर्थ (अथर्व)-इन चार उपक्रमों के माध्यम से सृष्टि के हर जीवधारी के चेतनात्मक क्रिया कलापों का मूलाधार है । उस चैतन्य शक्ति की जिसे आद्य शक्ति कहा जाता है, यह स्फुरणा है जो सृष्टि के आरम्भ में उद्भूत हुई व इस सृष्टि की उत्पत्ति इस प्रकार से ब्रह्माजी के माध्यम से चार वेदों के माध्यम से हुई । गायत्री वही आद्य शक्ति है, इसलिए वेदमाता कही जाती है ।

गायत्री मंत्र को समस्त वेद शास्त्रों का निचोड़ कहा गया है । शास्त्रों में ऋषिगणों ने इस मंत्र की महिमा का गायन खुलकर किया है तथा श्री मद्भगवद्गीता में तो स्पष्ट रूप से योगिराज श्रीकृष्ण के मुख से कहलवाया गया है कि गायत्री छन्दों में सर्वश्रेष्ठ होने के रूप में परमात्मा की सत्ता उनमें विराजती है। ''गायत्री छन्द सामहम्'' । गायत्री मंत्र एक छोटा सा सारगर्भित किन्तु समग्र धर्म शास्त्र है जिसके चौबीस अक्षरों में से प्रत्येक अक्षर में वेदों रूपी महा वट-वृक्ष के मूल तत्त्व ज्ञानबीज के रूप में विद्यमान हैं । इन्हीं के पल्लवित होने पर वैदिक वाङ्मय का अपौरुषेय कहलाने वाला चारों वेदों का विस्तार ऋषियों की ज्ञान सम्पदा के रूप में हमारे समक्ष आता है जो सृष्टि की उत्पत्ति का आधार ही नहीं बना, देव संस्कृति का, विश्व संस्कृति का उद्गम भी कहलाया ।

प्रस्तुत खण्ड में परमपूज्य गुरुदेव के द्वारा गायत्री महाविद्या पर लिखे गए ऐसे तत्त्व दर्शन को समाहित किया गया है, जिससे प्रमाणित होता है कि इस एक मंत्र के माध्यम से ही इस संसार में सब कुछ पाया जा सकता है । कैसे गायत्री देवताओं, अवतारी सत्ताओं व ऋषिगणों की उपास्य रही है, मानव मात्र के लिए वह विपत्ति निवारण करने वाली एक संजीवनी किस रूप में है, इसका विस्तृत विवेचन वाङ्मय के इस खण्ड में है । गायत्री अमृत है, पारस है, कल्पवृक्ष है, कामधेनु है, किस रूप में व किस तरह वह सुपात्र को ये अनुदान प्रदान करती है, इसकी विवेचना जो गायत्री महा विज्ञान, युग शक्ति गायत्री एवं अखण्ड ज्योति में समय-समय पर प्रकाशित होती रही, प्रस्तुत खण्ड में पाठकगण एक ही शृंखला में क्रमबद्ध रूप में पढ़ कर लाभान्वित हो सकते हैं ।

गायत्री महामंत्र का हर अक्षर शक्ति का स्रोत है, अपरिमित शक्ति का भाण्डागार है तथा सही ढंग से की गयी गायत्री उपासना जीवन में चमत्कारिक परिणाम उत्पन्न करती है, यह परमपूज्य गुरुदेव के जीवन का अनुभव है जो इन पंक्तियों को पढ़कर आत्मसात किया व स्वयं जीवन में कैसे उतारा जाय, यह शिक्षण लिया जा सकता है। गायत्री महाविद्या को अथर्ववेद के अनुसार प्रधानतया ब्रह्मवर्चस् अर्थात् आत्मबल प्रदान करने वाली प्रधान सत्ता बताते हुए परमपूज्य गुरुदेव ने इसे प्राण ऊर्जा की अधिष्ठात्री शक्ति प्रमाणित किया है । आज का सबसे बड़ा संकट है आत्मबल की कमी, मानव की अशक्ति । आस्था संकट से पीड़ित मानव जाति को जिस संजीवनी-जीवन मूरि की आवश्यकता है, वह गायत्री महामंत्र के रूप में विद्यमान है । यदि व्यक्ति इस मंत्र की उपासना के माध्यम से अपना ब्रह्मवर्चस् जगा ले, अपने प्रसुप्त बल को पुनः प्राप्त करले तो वह समस्त प्रतिकूलताओं से मोर्चा ले सकता है। श्रद्धा, निष्ठा, प्रज्ञारूपी त्रिपदा गायत्री की उपासना साधक को ऐसा ही आत्मबल प्रदान करती है , जिससे वह दुर्भावनाओं, दुष्चिन्तक दुष्प्रवृत्तियों से जूझते हुए जीवन समर जीतता हुआ आगे बढ़ता रह सकता है । अपना

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

आध्यात्मिक स्वास्थ्य बनाए रख अपना आभा मण्डल सतत बढ़ाए रखता चल सकता है । अपनी बुद्धि को सन्मार्ग-गामी बनाते हुए स्रष्टा के इस उद्यान को और सुरम्य बना सकता है ।

परा व अपरा विद्या की जननी गायत्री महामंत्र के जितने भी ज्ञात-अविज्ञात पक्ष हैं, उनको जन-जन के समक्ष प्रस्तुत कर एक प्रकार से समग्र मानव जाति का कायाकल्प करने, नूतन सृष्टि का सृजन करने का पुरुषार्थ इस ज्ञान के माध्यम से सम्पन्न हुआ है । गायत्री उपासना ईश्वर उपासना का एक अत्युत्तम, सरलतम, शीघ्र सफलता देने वाला मार्ग है, यह जानने के बाद फिर कहीं किसी के भटकने की आवश्यकता ही नहीं रह जाती । **'गायत्री वा इदं सर्वभूतं यदिदं किंच'** के माध्यम से छान्दोग्योपनिषदकार ने स्पष्ट रूप से कह दिया है कि यह विश्व जो भी कुछ है, गायत्रीमय है । युग ऋषि का संपूर्ण जीवन गायत्री को समर्पित रहा व जीवन की स्थूल शरीर से अंतिम श्वांस भी उनने गायत्री माँ की गोद में, उनके धरती पर अवतरण के दिन ली । उनकी ही लेखनी का अमृत विश्वमाता-देवमाता-वेदमाता गायत्री को समर्पित हो, सबके लिए जीवन-साधना के जटिल पथ को सरलतम बनाता हुआ, वाङ्मय के इस खण्ड के रूप में प्रस्तुत है ।

- ब्रह्मवर्चस

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विषय-सूची

अध्याय-१

गायत्री माहात्म्य	१.१
अथगायत्री महात्म्य	१.२
गायत्री जाप के लाभ	१.४
गायत्री से पाप और दु:खों से निवृत्ति	१.१०
गायत्री उपेक्षा की भर्त्सना	१.११
गायत्री आध्यात्मिक त्रिवेणी है	१.१२
गायत्री का स्वरूप और रहस्य	१.१३
तरणतारिणी गायत्री गंगा	१.१५
सतोगुणी ब्राह्मी शक्ति	१.१६
वेदमाता गायत्री	१.१८
ब्रह्मा की स्फुरणा से गायत्री का प्रादुर्भाव	१.१८
गायत्री सूक्ष्म शक्तियों का स्रोत है	१.२०
शक्ति की अधिष्ठात्री त्रिपदागायत्री	१.२३
गायत्री साधना से शक्तिकोशों का उद्भव	१.२५
गायत्री और ब्रह्म की एकता	१.२९
गायत्री माता का परिचय	१.३२
परमात्मा की कार्यकर्त्री देवशक्ति	१.३२
विभूतियों का भण्डागार	१.३३
रहस्यों का जानना आवश्यक है	१.३४
तीन चरणों की अनन्त सामर्थ्य	१.३५
गायत्री का व्याख्या-विस्तार	१.३५
मंगलमयी मधुविद्या	१.३६
अन्तर्जगत के गुप्त तत्व गायत्री मन्त्रदृष्टा	१.३७
महर्षि विश्वामित्र	१.३८
वेदमाता की आराधना से लाभ	१.४२
शास्त्रों और ऋषियों द्वारा गायत्री की महिमा	१.४८
वेदों में गायत्री का गौरव	१.५१
वृहदारण्यक उपनिषद् में गायत्री	१.५२
महाभारत और गायत्री मन्त्र	१.५५
महापुरुषों द्वारा गायत्री महिमा का गान	१.५७

अध्याय-२

वेद-शास्त्रों का निचोड़ गायत्री	२.१
गायत्री गीता	२.१
गायत्री स्मृति	२.५
गायत्री उपनिषद्	२.१७
अथ गायत्री उपनिषद्	२.१७
गायत्री रामायण	२.२८
गायत्री हृदयम्	२.३७
गायत्री पञ्जरम्	२.४५
अथ गायत्री पञ्जरम्	२.४७
गायत्री संहिता	२.४९
गायत्री तन्त्र	२.५५
गायत्री का गोपनीय वाममार्ग	२.५८
गायत्री तन्त्रम्	२.६१
गायत्री का आग्नेयास्त्र	२.७२
मारण प्रयोग	२.७६
चौबीस गायत्री	२.७९
तीन वर्णों की तीन गायत्री	२.८५
गायत्री तत्व बोध	२.८६
गायत्री मञ्जरी	२.९१
गायत्री लहरी	२.९५
गायत्री सहस्रनाम का विज्ञान	२.९७
अथगायत्री सहस्रनाम	२.१००
अथ गायत्री स्तवराज	२.१०४
अथस्तवन	२.१०५
अथगायत्री अष्टकम्	२.१०६
आत्मेज संवर्धन ब्राह्मी स्तोत्र	२.१०८
अनिष्ट निवारक 'शक्ति स्तोत्र'	२.१०९
बुद्धिवर्द्धक सरस्वती स्तोत्र	२.११०
गायत्री-स्तुति	२.१११
भगवती शरणाष्टकम्	२.११५
गायत्री वन्दना	२.११६
गायत्री चालीसा पाठ की महिमा	२.११७
वन्दे वेदमातरम्	२.११७
श्रीगायत्री चालीसा	२.११७
आरती गायत्री जी की	२.१२७

अध्याय-३

गायत्री ही कामधेनु है	३.१
त्रिविध दु:खों का निवारण	३.१
गायत्री द्वारा सतोगुण वृद्धि के दिव्य लाभ	३.२
आत्मबल और परमात्मा की प्राप्ति	३.४

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

नौ निधियों की प्राप्ति ३.६
भूतल पर स्वर्गीय सुख ३.९
विपत्तियों से छुटकारा ३.११
कष्ट निवारण में गायत्री का अनुग्रह ३.१२
गायत्री उपासना से सुनिश्चित सत्परिणाम ३.१५
गायत्री उपासना से मायामुक्ति ३.१९
पापनाशिनी गाथत्री ३.२०
गायत्र्या सर्व संसिद्धि ३.२२
हमारा व्यक्तिगत अनुभव ३.२४
ब्राह्मण की कामधेनु गौ-गायत्री ३.२५
गायत्री महाशक्ति का रत्न भण्डार किसे मिलेगा ? ३.२८
गायत्री और उसकी पृष्ठभूमि ३.३३
गायत्री उपासना बनाम द्विजत्व-ब्राह्मणत्व ३.३५
गायत्री रहित ब्राह्मण की दुर्गति ३.४१
सर्वोपरि सर्वसुलभ गायत्री योग ३.४३

अध्याय-४

गायत्री ही गुरुमन्त्र है ४.१
गुरु और गुरुमन्त्र का रहस्य ४.३
दीक्षा और गुरुमन्त्र ४.५
इष्ट निर्धारण गायत्री का वरण ४.१०

अध्याय-५

देवताओं, अवतारों और ऋषियों की उपास्य गायत्री ५.१
सर्वफल प्रदा उपास्य सर्वश्रेष्ठ गायत्री ५.१
वेदमाता देवमाता भगवती गायत्री ५.७
गायत्री साधना के तीन चरण : शरीर, मन और आत्मा को बलवान बनाने की प्रक्रिया ५.८
विश्वमूल में सक्रिय परा-अपरा शक्तियाँ ५.११
देवशक्तियों का केन्द्र बिन्दु गायत्री ५.१७
देवशक्तियाँ भी गायत्री से अनुग्रहीत ५.२१
देवशक्तियों की उपास्य गायत्री माता ५.२३
गायत्री साधना : त्रिदेवों की परम उपास्य गायत्री महाशक्ति ५.२५
गायत्री का जप करते थे, महादेव भगवान ५.३१

अध्याय-६

गायत्री द्वारा मनुष्य जीवन की सार्थकता ६.१
गायत्री जप की महिमा ६.१
गायत्री का अद्भुत प्रभाव ६.३
गायत्री से मनुषत्व की प्राप्ति ६.६
हमारा कर्तव्य ६.१०

अध्याय-७

विपत्ति निवारिणी गायत्री ७.१
पापनाशिनी गायत्री ७.१
गायत्री के प्रथम पाद द्वारा पापों की निवृत्ति ७.७
गायत्री के द्वितीय पाद द्वारा दिव्य दृष्टि की प्राप्ति ७.१०
गायत्री के तृतीय पाद द्वारा सद्गुणों की वृद्धि ७.१४
गायत्री के चतुर्थ-पाद द्वारा आन्तरिक कायाकल्प ७.१९
विपत्ति में भी भगवान की दया ७.२४

अध्याय-८

गायत्री एक समग्र धर्मशास्त्र ८.१
तत्वज्ञान और विवेचन ८.१
गायत्री महाशक्ति का स्वरूप और रहस्य ८.५
गायत्री महाशक्ति और उसकी सुविस्तृत माया ८.१३
प्रज्ञा की देवी गायत्री और उसकी विभूतियाँ ८.१८
सद्बुद्धि की अधिष्ठात्री गायत्री ८.२४
गायत्री का वाहन राजहंस ८.२५
ऋतम्भरा प्रज्ञा की अभ्यर्थना ८.२८
त्रिपदा गायत्री की आध्यात्मिक त्रिवेणी ८.२९
गायत्री उपासना से अर्जित तीन दिव्य विभूतियाँ-अमृत, पारस और कल्पवृक्ष ८.३३
माँ गायत्री के अनुदान ८.३७
त्रिपदा गायत्री का विकास विस्तार ८.३८
त्रिपदा गायत्री की महिमा, गरिमा ८.४०
त्रिपदा गायत्री का रहस्य ८.४२
त्रिपदा की तीन प्रमुख शक्ति धारायें त्रिपदा और ब्रह्मवर्चस् ८.४५

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

व्याहृतियों में विराट् का दर्शन ८.५१
गायत्री से बढ़कर और कुछ नहीं ८.५३
गायत्री उपासना सनातन और सर्वोपरि ८.६०
सर्वतोमुखी समर्थता की अधिष्ठात्री गायत्री महाशक्ति ८.६३
समस्त शक्तियों की आदिमाता गायत्री ८.७०
गायत्री की अमोघ शक्ति सामर्थ्य ८.७२
सर्वकाम प्रदा प्रोक्ता ८.७५
गायत्री का अवलम्बन परम श्रेयस्कर ८.७८
जीवन का कायकल्प ८.८०
गायत्री का ब्रह्मतत्व ब्रह्मवर्चस् ८.८२
भर्ग की सार्थकता देवस्य के समावेश से ८.८८
गायत्री का धियः तत्व ब्रह्मविज्ञान ८.८९
धीमहि की प्रेरणा और प्रचोदयात् की परिणति ८.९२
ब्रह्मविद्या आत्मबल बढ़ा सकने वाली शक्ति महाप्रज्ञा ८.९४
गायत्री ही समस्त शक्तियों का स्रोत ८.९६
क्षात्र बल का जागरण गायत्री के वरण से ८.९८
गायत्री मन्त्र में समाहित दर्शन एवं शिक्षण ८.१००
सत्यम् शिवम् सुन्दरम् की अभिव्यक्ति गायत्री मन्त्र में ८.१०४
ब्रह्म-विद्या का मूल गायत्री ८.१०६
गायत्री अनुग्रह की प्राप्ति पात्रता ८.११३
गायत्री की दो भुजाएँ योग और तप ८.११५

अध्याय-९

परा-अपरा विधा की अधिष्ठात्री महाशक्ति-गायत्री तत्वदर्शन ९.१
अपरा विद्या ९.३
भारतीय धर्म का एक ही उद्गम स्रोत गायत्री ९.७
अन्तःचेतना को प्रभावित करने में गायत्री ही सक्षम ९.१२
गायत्री का भावनात्मक एवं वैज्ञानिक महत्व ९.१४
गायत्री उपासना एवं उसके चमत्कारी सत्परिणाम ९.१६
महाप्रज्ञा की उपासना तत्वदर्शन और माहात्म्य ९.१८
गायत्री और उसकी पृष्ठभूमि ९.२५
गायत्री महामन्त्र का तत्व-ज्ञान उसके शक्तिशाली अक्षरों में ९.२८
गायत्री उपासना की क्रिया-प्रक्रिया ९.३५
गायत्री महिमा के चौबीस सूत्र ९.४२
गायत्री उपासकों की ऊँची श्रेणी ९.४६
गायत्री मन्त्र का अद्भुत प्रभाव ९.४८
गायत्री की त्रिविध साधना ९.५०
महाप्रज्ञा का तत्वदर्शन सब के लिए ९.५२

अध्याय-१०

गायत्री का हर अक्षर शक्ति-स्रोत १०.१
गायत्री के चौबीस अक्षरों में दिव्य शक्तियाँ १०.१
गायत्री के चौबीस अक्षर १०.३
चौवीस अक्षर-चौबीस शक्ति-स्रोत १०.३
चौबीस अक्षरों से सम्बन्धित चौबीस कलाएँ १०.६
चौबीस अक्षरों से सम्बन्धित चौबीस मातृकाएँ १०.६
न्यास विधान १०.८
रक्षा बन्धन १०.८
चौबीस अक्षर चौबीस प्रत्यक्ष देवता १०.१०
ऋषि, छन्द और देवता परक गायत्री विनियोग १०.१३
गायत्री महामन्त्र के परम सामर्थ्यवान २४ अक्षर १०.२०
गायत्री के चौवीस अक्षर और मस्तिष्क की चौबीस शक्तियाँ १०.२७
गायत्री के शब्दों का पंचाधाशक्ति समुच्चय १०.३०
गायत्री की असंख्य शक्तियाँ और उनका सान्निध्य १०.३२

अध्याय-११

गायत्री का ब्रह्मवर्चस् ११.१
गायत्री उपासना से ब्रह्मवर्चस् की प्राप्ति ११.१
वर्चस् की साधना आत्मबल उभारने के लिए ११.५

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

गायत्री और सावित्री की समन्वित साधना ही ब्रह्मवर्चस् ११.१०
गायत्री की ब्रह्मवर्चस् साधना ११.१३
विन्दुयोग त्राटक ११.१३
प्राणयोग ११.१४
कुण्डलिनी योग शक्तिचालिनी ११.१४
लय योग खेचरी मुद्रा ११.१५
हंसयोग-सोऽहम् साधना ११.१६

अध्याय-१२

गायत्री की प्रचण्ड प्राण ऊर्जा १२.१
गायत्री प्राण-प्रतिष्ठा की अधिष्ठात्री १२.१
गायत्री उपासना से प्राणशक्ति का अभिवर्धन १२.३
तारक मन्त्र गायत्री १२.७
गायत्री मन्त्र और प्राण-विद्या १२.१५
प्राण शक्ति एक जीवन्त ऊर्जा १२.१७
मानवी विद्युत प्राण १२.१९
गायत्री साधना से प्राण ऊर्जा का अभिवर्द्धन १२.२१
गायत्री उपासना द्वारा प्राणशक्ति का कर्षण १२.२५
गायत्री ही तेज है तेज ही गायत्री है १२.२९
प्राण योग-प्रचण्ड ऊर्जा का उत्पादन १२.३२
गायत्री की प्राण सम्वर्धन साधना १२.३५
गायत्री और प्राणायाम की समन्वित साधना १२.४२
प्राणाकर्षण प्राणायाम १२.४४
नाड़ी-शोधन प्राणायाम १२.४५
लोमविलोम सूर्यवेधन प्राणायाम १२.४६

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गायत्री माहात्म्य

गायत्री के इतने महान् लाभों के मूल में क्या-क्या कारण हैं जिनके कारण इतना सब आश्चर्य होता है, इसके बारे में पूर्ण जानकारी होना तो मनुष्य के लिये कठिन है, पर उन महान् कारणों में एक कारण यह भी है कि गायत्री के पीछे अनेक मनस्वी साधकों का जगमगाता हुआ साधना बल है । सृष्टिकर्ता ब्रह्मा से लेकर आधुनिक काल तक समस्त ऋषि-मुनियों ने, साधु-महात्माओं ने, श्रेय-मार्गियों ने गायत्री मंत्र का आश्रय लिया है । इन सबके द्वारा जितना साधन, जप, अनुष्ठान गायत्री मन्त्र का हुआ है उतना और किसी का नहीं हुआ । अत्यन्त उच्चकोटि की आत्माओं ने अपनी सर्वश्रेष्ठ भावनाओं को सर्वाधिक एकाग्रता और तन्मयता के साथ गायत्री में लगाया है । कल्प-कल्पान्तरों से यह क्रम चलता आया है । इस प्रकार इस एक मन्त्र के पीछे इतनी उच्चकोटि की आत्म-विद्युत सम्मिश्रित हो गई है कि सूक्ष्म लोकों में उसका एक भारी पुञ्ज जमा हो गया है ।

विज्ञान बताता है कि कोई शब्द या विचार कभी नष्ट नहीं होता । आज जो बातें कही जा रही हैं या सोची जा रही हैं वे अपनी तरंगों के साथ आकाश में फैल जायेंगी और अनन्त काल तक सृष्टि के अन्तराल में किसी न किसी रूप में विद्यमान रहेंगी । जो तरंगें विशेष बलवान होती हैं, वे तो विशेष रूप से प्रदीप्त रहती हैं । महाभारत युद्ध के संस्मरण और तानसेन के गायन की तरंगों को सूक्ष्म आकाश में से पकड़ कर रिकार्ड बना लेने के लिए वैज्ञानिक प्रयत्न चल रहे हैं । यदि वे सफल हुए तो प्राचीन काल की महत्वपूर्ण वार्ताओं को ज्यों का त्यों हम कानों से सुन सकेंगे, तब भगवान कृष्ण के मुख से निकली गीता को ज्यों का त्यों अपने कानों से सुनना सम्भव हो जायगा । शब्द और विचारों को सूक्ष्म से स्थूल करना भले ही अभी बहुत काल तक कठिन रहे पर इतना निश्चित है कि उनका अस्तित्व नष्ट नहीं होता । अब तक असंख्यो महान् व्यक्तियों के द्वारा गायत्री के प्रति जिस श्रद्धा और सार्थना का उपयोग हुआ है, वह नष्ट नहीं हो गई है, वरन् सूक्ष्म जगत में उसका प्रबल अस्तित्व बना हुआ है । "एक प्रकार के पदार्थों का एक स्थान पर सम्मिलन" के सिद्धान्तानुसार उन सभी साधनों की श्रद्धाएँ, साधनाएँ, भावनाएँ, तपश्चर्याएँ, एक स्थान पर एकत्रित होकर एक प्रबल चैतन्यतायुक्त आध्यात्मिक विद्युत भण्डार जमा हो गया है ।

जिन्हें विचार विज्ञान का थोड़ा-सा भी परिचय है वे जानते हैं कि मनुष्य जिस प्रकार सोचता है उसी प्रकार का एक आकर्षण चुम्बकत्व उसके मस्तिष्क में उत्पन्न हो जाता है । यह चुम्बकत्व निखिल आकाश में उड़ते हुए उसी जाति के अन्य विचारों को आकर्षित करके अपने पास बुला लेता है और थोड़े ही समय में उसके पास उस जाति के विचारों का भारी जमाव जुड़ जाता है । साधुता की बात सोचने वाले दिन-दिन साधुता के विचारों, गुणों, कर्मों और स्वभावों से परिपूर्ण होते जाते हैं । इसी प्रकार दुष्टता एवं पाप के विचार का मस्तिष्क थोड़े ही समय में उस दिशा में बड़ा कुशल हो जाता है । यह सब विचार आकर्षण के विज्ञान के अनुसार होता है । इसी विज्ञान के अनुसार गायत्री के साधकों की वे विचार शृंखलाएँ सम्बद्ध हो जाती हैं, जो सृष्टि के आदि से लेकर अब तक की महान् आत्माओं द्वारा तैयार की गई हैं । ऊँची दीवार पर कोई व्यक्ति अपने बाहुबल द्वारा बड़ी मुश्किल से चढ़ सकता है, परन्तु कोई अच्छी सीढ़ी दीवार के सहारे लगा दी जाय तो उस पर पैर रखते हुए आसानी से मनुष्य दीवार पर चढ़ जाता है । भूतकाल के साधकों की बनी हुई सीढ़ी पर चढ़कर हम गायत्री तत्व तक आसानी से पहुँच सकते हैं और उस स्थान पर प्राप्त होने वाली समृद्धियों को सुगमतापूर्वक प्राप्त कर सकते हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गायत्री-साधना में जितना श्रम हमें करना पड़ता है उससे अनेक गुनी सहायता पूर्व काल के महान् शोधकों द्वारा छोड़ी हुई सम्पत्ति से मिल जाती है और हम अनायास ही उन महान् लाभों से लाभान्वित हो जाते हैं जिसके लिये किसी समय किन्हीं साधकों को बहुत अधिक श्रम करना पड़ता होगा । परन्तु सूक्ष्म जगत के ऐसे सूक्ष्म विधान निर्मित हो चुके हैं, जिन पर आरूढ़ होते ही हम द्रुतगति में दौड़ने लगते हैं । पानी की बूँद समुद्र में गिरकर समुद्र बन जाती है, एक सिपाही जब सेना में भर्ती हो जाता है तो वह सेना का अंग बन जाता है, एक नागरिक की पीठ पर उसकी सरकार की समस्त ताकत होती है, इसी प्रकार एक साधक जो गायत्री शक्ति पुञ्ज के साथ आबद्ध हो जाता है, उसे उस शक्ति पुञ्ज द्वारा लाभ उठाने का पूरा-पूरा अवसर मिल जाता है । जितना प्रकाशवान् शक्तिपुञ्ज गायत्री मन्त्र के पीछे है, उतना और किसी के वेद मन्त्र के पीछे नहीं है । यही कारण है कि गायत्री की साधना से स्वल्प श्रम में अत्यधिक लाभ प्राप्त होता है ।

इतने पर भी हम देखते हैं कि कितने ही मनुष्य गायत्री की महिमा को जानते हुए भी उससे लाभ नहीं उठाते । किसी के बिल्कुल पास, यहाँ तक कि जेब में ही प्रचुर धन रखा हो पर यदि वह उसका उपयोग करके आनन्द प्राप्त न करें तो वह उसका दुर्भाग्य ही समझना चाहिये । गायत्री एक दैवी विद्या है, जो परमात्मा ने हमारे लिये सुलभ बनाई है । ऋषि-मुनियों ने धर्म-शास्त्रों में पग-पग पर हमारे लिये गायत्री-साधना द्वारा लाभान्वित होने का आदेश किया है, इतने पर भी यदि हम उससे लाभ न उठावें, साधना न करें तो उसे दुर्भाग्य के अतिरिक्त और क्या कहा जा सकता है ।

अथ गायत्री माहात्म्य

गायत्री की महिमा का वेद, शास्त्र, पुराण सभी वर्णन करते हैं । अथर्ववेद में गायत्री की स्तुति की गई है, जिसमें उसे आयु, प्राण, शक्ति, कीर्ति, पशु, धन और ब्रह्म तेज प्रदान करने वाली कहा है ।

स्तुता मया वरदा वेदमाता प्रचोदयन्तां पावमानी द्विजानाम्।
आयुः प्राणं प्रजा पशुं कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चसम् ।।

(अथर्ववेद- १९-१७-१)

अथर्ववेद में स्वयं वेद भगवान् ने कहा है-

मेरे द्वारा स्तुति की गई, द्विजों को पवित्र करने वाली वेदमाता गायत्री आयु, प्राण, शक्ति, पशु, कीर्ति, धन, ब्रह्मतेज उन्हें प्रदान करें ।

यथामधु च पुष्पेभ्यो घृतं दुग्धाद्रसात्पयः ।
एवं हि सर्ववेदानां गायत्री सार मुच्यते ।

-व्यास

जिस प्रकार पुष्पों का सारभूत मधु, दूध का घृत, रसों का सारभूत दूध है, उसी प्रकार गायत्री मन्त्र समस्त वेदों का सार है ।

तदित्यृचः समो नास्ति मन्त्रो वेदाचतुष्टये ।
सर्वे वेदाश्च यज्ञाश्च दानानि च तपांसि च ।
समानि कलया प्राहुर्मुनयो नतदित्यृचः ।

-विश्वामित्र

गायत्री मन्त्र के समान मन्त्र चारों वेदों में नहीं है । सम्पूर्ण वेद, यज्ञ, दान, तप, गायत्री मन्त्र की एक कला के समान भी नहीं हैं ऐसा मुनि लोग कहते हैं ।

गायत्री छन्दसां मातेति ।।२।।

-- महानारायणोपनिषद् । १५ । १

गायत्री वेदों की माता अर्थात् आदि कारण है ।

त्रिभ्य एव तु वेदेभ्यः पादम्पादमदूदुहत् ।।
तदित्यृचोऽस्याः सावित्र्याः परमेष्ठी प्रजापतिं ।।

-मनु० अ० २। ७७

परमेष्ठी प्रजापति ब्रह्माजी ने तीन ऋचा वाली गायत्री के तीनों चरणों को तीन वेदों से सारभूत निकाला ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गायत्र्यास्तु परन्नास्ति शोधनं पापकर्मणाम् ।
महाव्याहृति संयुक्ता प्रणवेन च संजपेत् ।।

-सम्वर्त स्मृ० श्लो० २१८

पाप को नाश करने में समर्थ गायत्री के समान अन्य कोई मन्त्र नहीं है, अतः प्रणव तथा महाव्याहृतियों सहित गायत्री मन्त्र का जाप करे ।

नान्नतोयं समं दानं न चाहिंसा परं तपः ।
न गायत्री समं जाप्यं न व्याहृति समं हुतम् ।।

-सूत संहिता यज्ञ वैभव खंड अ० ६ /३०

अन्न और जल के समान कोई भी दान, अहिंसा के समान तप, गायत्री के समान जप, व्याहृति के समान अग्निहोत्र कोई भी नहीं है ।

हस्तत्राणप्रदा देवी पततां नरकार्णवे ।
तस्मात्तामभ्यसेन्नित्यं ब्राह्मणो हृदये शुचि : ।।

गायत्री नरक रूपी समुद्र में गिरते हुए को हाथ पकड़कर बचाने वाली है अतः द्विज नित्य ही पवित्र हृदय से गायत्री का अभ्यास करे अर्थात् जपे ।

गायत्री चैव वेदाश्च तुलया समतोलयन् ।
वेदा एकत्र सांगास्तु गायत्री चैकतः स्थिता ।।

-योगी याज्ञवल्क्य

गायत्री और समस्त वेदों को तराजू में तोला गया । षट् अंगों सहित वेद एक ओर रखे गये और गायत्री को एक ओर रखा गया ।

सारभूतास्तु वेदानां गुह्योपनिषदो मता
ताभ्यः सारस्तु गायत्री तिस्त्रो व्याहृतयस्तथा ।।

-योगी याज्ञ०

वेदों का सार उपनिषद् हैं और उपनिषदों का गायत्री और तीनों महाव्याहृतियाँ हैं ।

गायत्री वेदजननी गायत्री पापनाशिनी ।
गायत्र्यास्तु परन्नास्ति दिविचेह च पावनम् ।।

गायत्री वेदों की जननी है । गायत्री पापों का नाश करने वाली है । गायत्री से अन्य कोई पवित्र करने वाला मन्त्र स्वर्ग और पृथ्वी पर नहीं है ।

यद्यथाग्निर्देवानां, ब्राह्मणो मनुष्याणां ।
बसन्तऋतुनामवं गायत्री छन्दसाम् ।।

-गोपथ ब्राह्मण

जिस प्रकार देवताओं में अग्नि, मनुष्यों में ब्राह्मण, ऋतुओं में बसन्त ऋतु श्रेष्ठ है, उसी प्रकार समस्त छन्दों में गायत्री श्रेष्ठ है ।

अष्टादशसु विद्यासु मीमांसाति गरीयसा ।
ततोऽपि तर्कशास्त्राणि पुराणां तेभ्य एव च ।
ततोऽपि धर्मशास्त्राणि तेभ्यो गुर्वी श्रुतिः द्विज ।
ततोऽप्युपनिषच्छ्रेष्ठा गायत्री च ततोऽधिका ।
दुर्लभ सर्वमन्त्रेषु गायत्री प्रणवान्विता ।

-वृह. सं. भा.

अठारह विद्याओं में मीमांसा अत्यन्त श्रेष्ठ है । मीमांसा से तर्कशास्त्र श्रेष्ठ है और तर्कशास्त्र से पुराण श्रेष्ठ हैं ।

पुराणों में भी धर्मशास्त्र श्रेष्ठ हैं, हे द्विज ! धर्मशास्त्रों से वेद श्रेष्ठ हैं और वेदों में उपनिषद् श्रेष्ठ हैं, और उपनिषदों से गायत्री मन्त्र अत्यधिक श्रेष्ठ है ।

प्रणव युक्त यह गायत्री समस्त वेदों में दुर्लभ है ।

नास्ति गंगा समं तीर्थं न देवाः केशवात्परः ।
गायत्र्यास्तु परं जप्यं भूतं न भविष्यति ।।

- वृ० यो० यज्ञ० अ० १०२/७९

गंगाजी के समान कोई तीर्थ नहीं है, केशव से श्रेष्ठ कोई देवता नहीं है । गायत्री मन्त्र के जप से श्रेष्ठ कोई जप न आज तक हुआ और न होगा ।

सर्वेषां जप सूक्तानामृचश्च यजुषां तथा ।
साम्नां चैकाक्षरादीनां गायत्री परमो जपः ।।

-वृ० पराशर० स्मृति अ० ४ । ४

समस्त जप सूक्तों में, ऋग्यजु सामवेदों में तथा एकाक्षरादि मन्त्रों में गायत्री मन्त्र का जप परम श्रेष्ठ है ।

एकाक्षरं परं ब्रह्म प्राणायामाः परन्तपाः ।
सावित्र्यास्तु परन्नास्ति पावनं परमं स्मृतम् ।।

-मनु० स्मृति० अ० २।८३

एकाक्षर अर्थात् 'ओ३म्' परब्रह्म है । प्राणायाम परम तप है और गायत्री मन्त्र से बढ़कर पवित्र करने वाला कोई भी मन्त्र नहीं है ।

गायत्र्या परमं नास्ति दिवि चेह न पावनम् ।
हस्तत्राणप्रदादेवी पततां नरकार्णवे ।।

-शंख स्मृति अ० १२। २५

नरक रूपी समुद्र में गिरते हुए को हाथ पकड़कर बचाने वाली गायत्री के समान पवित्र करने वाली वस्तु या मन्त्र पृथ्वी पर तथा स्वर्ग में भी नहीं है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गायत्री चैव वेदाश्च ब्रह्मणा तोलिता पुरा ।
वेदेभ्यश्च चतुस्त्रेभ्यो गायत्र्यतिगरीयसी ।।

-वृ० पाराशर स्मृति अ० ५।१६

प्राचीनकाल में ब्रह्मा ने गायत्री को वेदों से तोला । परन्तु चारों वेदों से भी गायत्री का पल्ला भारी रहा ।

सोमादित्यान्वयः सर्वे राघवाः कुरुवस्तथा ।
पठन्ति शुचयो नित्यं सावित्रीं परमां गतिम् ।।

महाभारत अनु० पर्व० अ० १५। ७८

हे युधिष्ठिर ! सम्पूर्ण चन्द्रवंशी, सूर्यवंशी, रघुवंशी तथा कुरुवंशी नित्य ही पवित्र होकर परमगतिदायक गायत्री मन्त्र का जप करते हैं ।

बहुना निमिहोक्तेन यथावत् साधु साधिता ।
द्विजन्मानामियं विद्या सिद्धा कामदुधास्मृता ।।

यहाँ पर अधिक रहने से क्या लाभ ? अच्छी प्रकार सिद्धि की गई यह गायत्री विद्या द्विज जाति को कामधेनु कहा गया है ।

सर्व वेदोधृतः सारो मन्त्रोऽयं समुदाहृतः ।
ब्रह्मादेव्यादि गायत्री परमात्मा समीरितः ।।

यह गायत्री मन्त्र समस्त वेदों का सार कहा गया है । गायत्री ही ब्रह्मा आदि देवता है । गायत्री ही परमात्मा कही गई है ।

या नित्या ब्रह्मगायत्री सैवगंगा न संशयः ।
सर्व तीर्थमयी गंगा तेन गंगा प्रकीर्तिता ।।

-गायत्री तन्त्र

गंगा सर्व तीर्थमय होने से 'गंगा' कहलाती है । वह गंगा ब्रह्म गायत्री का ही रूप है ।

सर्वशास्त्रमयीगीता गायत्री सैव निश्चिता ।
गयातीर्थ न गोलोकं गायत्री रूप मद्भुतम् ।।

-गायत्री तन्त्र

गीता में सब शास्त्र भरे हुए हैं । वह गीता निश्चय ही गायत्री रूप है । गया तीर्थ और गौलोक यह भी गायत्री के ही रूप हैं ।

अशुचिर्वा शुचिर्वापि गच्छन् तिष्ठन् यथा तथा ।
गायत्री : प्रजपेद्धीमान् जपात् पापान्निवर्तते ।।

--गायत्री तन्त्र

अपवित्र हो अथवा पवित्र हो, चलता हो अथवा बैठा हो अथवा जिस भी स्थिति में हो, बुद्धिमान मनुष्य गायत्री का जप करता रहे । इस जप के द्वारा पापों से छुटकारा होता है ।

मननात् पापतस्त्राति मननात् स्वर्गं मश्नुते ।
मननात् मोक्ष माप्नोति चतुर्वर्ग मयोभवेत् ।।

-गायत्री तन्त्र

गायत्री का मनन करने से पाप छूटते हैं, स्वर्ग प्राप्त होता है और मुक्ति मिलती है तथा चतुर्वर्ग (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) सिद्ध होते हैं ।

गायत्री तु परित्यज्य अन्य मन्त्रामुपासते ।
सिद्धान्नं च परित्यज्य भिक्षामांटिति दुर्मति ।।

जो गायत्री को छोड़कर दूसरे मन्त्रों की उपासना करता है, वह दुर्बुद्धि मनुष्य पकाये हुए अन्न को छोड़कर भिक्षा के लिए घूमने वाले पुरुष के समान है ।

नित्यनैमित्तिके काम्ये तृतीये तप वर्धने ।
गायत्र्यास्तु परं नास्ति इहलोके परत्र च ।।२।।

नित्य, नैमित्तिक, काम्य की सफलता तथा तप की बुद्धि के लिए इस लोक तथा परलोक में गायत्री से बढ़कर कोई नहीं है ।

सावित्री जापतो नित्यः स्वर्ग माप्नोति मानव ।
तस्मात् सर्व प्रयत्नेन स्नानः प्रयतमानसः ।।
गायत्रीं तु जपेद्भक्त्या सर्व पाप प्रणाशिनीम् ।।

-शंख स्मृति

गायत्री मन्त्र जानने वाला मनुष्य स्वर्ग को प्राप्त करता है । इसी कारण समस्त प्रयत्नों से स्नान कर, स्थिर चित्त हो समस्त पाप को नाश करने वाली गायत्री का जप करे ।

गायत्री जाप के लाभ

गायत्री का जप करने से कितना महत्त्वपूर्ण लाभ होता है, इसका कुछ आभास निम्नलिखित थोड़े से प्रमाणों से जाना जा सकता है । ब्राह्मण के लिए तो इसे विशेष रूप से आवश्यक कहा है, क्योंकि ब्राह्मणत्व का सम्पूर्ण आधार सद्बुद्धि पर निर्भर है और वह सद्बुद्धि गायत्री के बताये हुए मार्ग पर चलने से मिलती है ।

सर्वेषां वेदानां गुह्योपनिषत्सार भूतां ततो गायत्री जपेत् ।

-छांदोग्य परिशिष्टम्

गायत्री समस्त वेदों का और गुह्य उपनिषदों का सार है इसलिए गायत्री मन्त्र का नित्य जप करें ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सर्व वेद सारभूता गायत्र्यास्तु समर्चना ।
ब्रह्मदयोऽपि सन्ध्यायां तां ध्यायन्ति जपन्ति च ।।

-दे० भा० स्कं० १६ अ० १६।१५

गायत्री मन्त्र का आराधन समस्त वेदों का सारभूत है । ब्रह्मादि देवता भी सन्ध्या काल में गायत्री का ध्यान करते हैं और जप करते हैं ।

गायत्री मात्र निष्णातो द्विजो मोक्षमवाप्नुयात्।।

-वे०भा०स्कं० १२ अ० ८ । ९०

गायत्री मात्र की उपासना करने वाला भी ब्राह्मण मोक्ष को प्राप्त होता है ।

एहिकामुष्मिकं सर्वं गायत्री जपती भवेत् ।

-अग्निपुराण

गायत्री जपने वाले को सांसारिक और पारलौकिक समस्त सुख प्राप्त हो जाते हैं ।

योऽधीतेऽहन्यहन्येतां त्रीणिवर्षाण्यतन्द्रितः ।
स ब्रह्मा परमभ्येति वायुभूतः स्वमूर्तिवान् ।।

-मनुस्मृति २/ ८२

जो मनुष्य तीन वर्ष तक प्रतिदिन गायत्री मन्त्र जपता है, वह अवश्य ब्रह्म को प्राप्त करता है और वायु के समान स्वेच्छाचारी होता है ।

कुर्यादन्यन्न वा कुर्यात् इति प्राह मनुः स्वयं ।
अक्षय मोक्षमवाप्नोति, गायत्री मात्र जापनात् ।।

-शौनिकः

इस प्रकार मनु जी ने स्वयं कहा है कि अन्य देवताओं की उपासना करे या न करे, केवल गायत्री के जप से द्विज अक्षय मोक्ष को प्राप्त होता है ।

बहुना किमिहाक्तेन यथावत् साधु साधिता ।
द्विजन्मानामियं विद्या सिद्धिः कामदुधास्मृता ।।

-शारदायां

यहाँ पर अधिक कहने से क्या ? अच्छी प्रकार उपासना की गई गायत्री द्विजों के मनोरथ पूर्ण करने वाली कही गई है ।

एतया ज्ञातया सर्व वाङ्मयं विदितं भवेत् ।
उपासिंत भवेत्तेन विश्वं भुवन सप्तकम् ।।

-योगी याज्ञ०

गायत्री के जान लेने से समस्त विद्याओं का वेत्ता हो जाता है और उसने केवल गायत्री की ही उपासना नहीं की अपितु सात लोकों की भी उपासना कर ली ।

ओंकार पूर्विकास्तिस्त्रो गायत्रीं यश्च विंदति ।
चरितब्रह्मचर्यश्च से वै श्रोत्रिय उच्यते ।।

-योगी याज्ञ०

जो ब्रह्मचर्य पूर्वक ओंकार, महाव्याहृतियों सहित गायत्री मन्त्र का जप करता है वह श्रोत्रिय है ।

एतदक्षरमेतां जपन व्याहृति पूर्वकाम् ।
सन्ध्ययोर्वेदविद्विप्रो वेद पुण्येन मुच्यते ।।

-मनुस्मृति अ० २/ ७८

जो ब्राह्मण दोनों सन्ध्याओं में प्रणवव्याहृति पूर्वक गायत्री मन्त्र का जप करता है, वह वेदों के पढ़ने के फल को प्राप्त करता है ।

गायत्रीं जपते यस्तु द्वौ कालौ ब्राह्मणः सदा ।
असत्प्रतिगृहीतोपि स याति परमां गतिम् ।।

-अग्नि पुराण

जो ब्राह्मण सदा सायंकाल और प्रातः काल गायत्री का जप करता है वह ब्राह्मण अयोग्य प्रतिगृह लेने पर भी परम गति को प्राप्त होता है ।

सकृद्यादि जपेद्विद्वान् गायत्रीं परमाक्षरीम् ।
तत्क्षणात् संभवेत्सिद्धिर्ब्रह्म सायुज्यमाप्नुयात् ।।

-गायत्री पुरश्चरण -२८

श्रेष्ठ अक्षरों वाली गायत्री को विद्वान यदि एक बार भी जपे तो तत्क्षण सिद्धि होती है और वह ब्रह्म की सायुज्यता को प्राप्त करता है ।

जप्येनैव तु संसिद्धयेत् ब्राह्मणो मात्र संशयः ।
कुर्यादन्यन्नवा कुर्यान्मैत्रो ब्राह्मण उच्यते ।।

-मनु० ९७

ब्राह्मण अन्य कुछ करे या न करे, परन्तु वह केवल गायत्री जप से ही सिद्धि पा सकता है ।

कुर्यादन्यन्नवा कुर्यादनुष्ठानादिकं तथा ।
गायत्री मात्र निष्ठस्तु कृत्यकृत्यो भवेद्विज : ।।

-गायत्री तन्त्र /८

अन्य अनुष्ठानादिक करे या न करे, गायत्री मात्र की उपासना करने वाला द्विज कृतकृत्य हो जाता है ।

सन्ध्यासु चार्घ्य दानं च गायत्री जपमेव च ।
सहस्त्रत्रितयं कुर्वन्सुरै पूज्य भवेन्मुने ।।

-गायत्री तन्त्र श्लोक ९

हे मुने ! सन्ध्याकाल में सूर्य को अर्घ्यदान और तीन हजार नित्य गायत्री जपने मात्र में पुरुष देवताओं में भी पूजनीय हो जाता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यदक्षरैक संसिद्धेः स्पर्धते ब्राह्मणोत्तमः ।
हरिशंकर कंजोत्थ सूर्योचन्द्र हुताशनैः ।।

-गायत्री पुर० ११

गायत्री के एक अक्षर की सिद्धि मात्र से हरि, शंकर, ब्रह्मा, सूर्य, चन्द्र, अग्नि आदि देवता भी साधक से स्पर्धा करने लगते हैं ।

दस सहस्त्रपभ्यस्तां गायत्री शोधिनी परा ।

-लघु अत्रि संहिता

दस हजार जपी गई गायत्री परम शोधन करने वाली है ।

सर्वेषाञ्चैव पापानां संकरे समुपस्थिते ।
दशसाहांसुकाभ्यासो गायत्र्याः शोधनंपरम् ।।

समस्त पापों को तथा संकटों को दस हजार गायत्री का जप नाश करके परम शुद्ध करने वाला है ।

गायत्री मेव यो ज्ञात्वा सम्यगश्चोच्यते पुनः ।
इहामुत्र च युज्योऽसौ ब्रह्मलोकमवाप्नुयात् ।।

-व्यासः

जो गायत्री को भली प्रकार जानकर उसका उच्चारण करता है, वह इस लोक और परलोक में ब्रह्म को सायुज्यता को प्राप्त करता है ।

मोक्षाय च मुमुक्षूणां श्री कामानांश्रियेप्तदा ।
विजयाम युयुत्सूनां व्याधि नानामरोगकृत् ।।

-गायत्री पञ्चांग १

गायत्री-साधना से मुमुक्षुओं को मोक्ष मिलेगा, श्री कामियों को श्री का, युद्धेच्छुओं को विजय तथा व्याधिग्रस्तों को निरोगता प्राप्त होगी ।

वश्याय वश्य कामानां विद्यायै वेदकामिनाम् ।
द्रविणाय दरिद्राणां पापानां पाप शान्तये ।।२८।।

वशीकरण करने वालों को वशीकरण होंगे, वेदार्थियों को विद्या, दरिद्रियों को धन, पापियों के पाप की शान्ति हो जाती है ।

वादिनां वाद विजये कवीनां कविता प्रदम् ।
अन्नाय क्षुधितानां च स्वर्गाय नाक मिच्छा ताम्।।३९।।

शास्त्रार्थियों को शास्त्र विजय,कवियों को काव्य लाभ, भूखों को अन्न तथा स्वर्गेच्छुओं को स्वर्ग ।

पशुभ्यः पशुकामानां पुत्रेभ्य पुत्रकामिणाम् ।
क्लेशिनां शोक शान्त्यर्थं नृणां शत्रुभयाय च ।।४०।।

पशु इच्छुओं को पशु, पुत्रार्थियों को पुत्र, क्लेशियों को शोक-शान्ति, शत्रु भय वालों को अभय मिलता है ।

अष्टादशसु विद्यासु मीमांसाऽस्ति गरीयसी ।
ततोऽपि तर्क शास्त्राणि पुराणांतेभ्य एव च ।।५।।

अठारह विद्याओं में मीमांसा श्रेष्ठ है, उससे श्रेष्ठ तर्कशास्त्र तथा पुराण उससे भी श्रेष्ठ कहे हैं ।

ततोऽपि धर्म शास्त्राणि तेभ्योगुर्वी श्रुतिनृप ।
ततोह्यु पनिषत् श्रेष्ठ गायत्री च ततोधिका ।।६।।

धर्मशास्त्र उनसे भी श्रेष्ठ है तथा हे राजन् ! उनसे भी श्रेष्ठ श्रुतियाँ कही गई हैं । उन श्रुतियों से भी श्रेष्ठ उपनिषद् हैं और उपनिषदों से भी गरीयसी गायत्री कही गई है ।

तां देवीमुपतिष्ठन्ते ब्राह्मण ये जितेन्द्रियाः ।
सूर्य्य लोकं ते प्रयान्ति क्रमान्मुक्तिंञ्च पार्थिवः ।।१।।

-पद्म पुराण

जो इन्द्रियजित ब्राह्मण इस गायत्री की उपासना करते हैं । हे पार्थिव ! अवश्य ही सूर्य लोक को प्राप्त होते हैं तथा क्रमशः मुक्ति को भी प्राप्त करते हैं ।

सावित्री सार मात्रोऽपि वरं प्रियः सुमन्त्रितः ।।२।।

चारों वेदों का सारभूत सावित्री को विधि सहित जानने वाला ब्राह्मण श्रेष्ठ है ।

गायत्रीं जपते यस्तु त्रिकालं ब्राह्मणः सदा ।
अर्थी प्रतिग्रही वापि सगच्छेत्परमांगतिम् ।।३।।

जो ब्राह्मण गायत्री को त्रिकाल में जपता है वह माँगने वाला या दान देने वाला (अग्रह्य दान को ग्रहण करने वाला) ही क्यों न हो वह भी परम गति को प्राप्त हो जाता है ।

गायत्रीं जपते यस्तु कल्पमुत्थापयो द्विजः ।
सलिम्पति न पापेन पद्म पत्रमिवाम्भसा ।।

जो ब्राह्मण उठकर गायत्री का जप करता है वह जल में कमल-पत्र की भाँति पापग्रस्त नहीं होता ।

अर्थोऽयं ब्रह्म सूत्राणां भारताथ विनिर्णयः ।
गायत्री भाष्य रूपौऽसौ वेदार्थ परिवृंहिताः ।।

- मत्स्य पुराण

गायत्री का अर्थ ब्रह्म सूत्र है । गायत्री का निर्णय महाभारत है, गायत्री का अर्थ वेदों में हुआ है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जपन हि पावनी देवीं गायत्रीं वेदमातरम् ।
तपसः भावितो देव्या ब्राह्मणः पूतः किल्विषः ।।

-कूर्म पुराण

ब्राह्मण वेद-जननी पवित्र गायत्री को जपता हुआ अनेक पापों से मुक्त हो जाता है ।

गायत्री ध्यान पूतस्य कलां नहिति षोडशीम् ।
एवं किल्विष युक्तस्य विनिर्दहति पातकम् ।।

-कूर्म पुराण

गायत्री के ध्यान से पवित्र हुई सोलह कलाओं का कोई मूल्यांकन नहीं हो सकता । इस प्रकार पाप-युक्त के पापों को शीघ्र ही दहन कर देती है ।

उभे सन्ध्येह्युपासीत तस्मान्नित्यं द्विजोत्तम ।
छन्दस्तस्यास्तु गायत्रं गायत्री त्युच्यते ततः ।।

-मत्स्य पुराण

द्विज श्रेष्ठ ! गायत्री का छन्दानुसार दोनों सन्ध्याकाल में ध्यान करना चाहिए ।

गान करने वाले का यह त्राण करती है इसीलिये इसे गायत्री कहा है !

गायन्तं त्रायते यस्मात् गायत्री तु ततः स्मृता ।
मरीचे ! कारणत्तस्मात् गायत्री कीर्तिता मया ।

-लक्ष्मेश तन्त्र

हे मारीच! गान करने वाले का त्राण करती है इसी हेतु मैंने इसे गायत्री कहा है ।

ततः बुद्धिमताश्रेष्ठ नित्यं सर्वेषुकर्मसु ।
सव्याहृतिं सप्रणवां गायत्री शिरसासह ।।
जपन्ति ये सदा तेषां न भयं विद्यते क्वचित् ।
दशकृत्वः प्रजसा सा रात्र्यहायि कृतं लघु ।।

-नारद पुराण

बुद्धिमानों में श्रेष्ठ, अपने नित्य नियमित सभी कार्यों को करते हुए व्याहृतियों सहित तथा प्रणव के उच्चारण सहित गायत्री को जो पुरुष सदा जपते हैं, उनको कहीं भी भय नहीं है । दस बार जपने से रात्रि तथा दिन के लघु दोषों का निवारण होता है ।

काम कामी लभेत् कामान् गति कामश्च सद्गतिम् ।
अकामः सम वाप्नोतिः तद्विष्णोः परमं पदम् ।।

कामाभिलाषी को काम की प्राप्ति होती है और जो मोक्ष की आकांक्षा करते हैं, उन्हें सद्गति प्राप्त होती है । जो पुरुष निष्काम भाव से गायत्री की उपासना करते हैं, वे विष्णु के परम पद को ही प्राप्त हो जाते हैं ।

त्रिभ्य एव तु चेदेभ्यः पादं पादमदूदुहत् ।
तदित्यृचोऽस्याः सावित्र्याः परमेष्ठी प्रजापतिः ।।

परमेष्ठी पितामह ब्रह्माजी ने एक-एक वेद से सावित्री के एक पद की रचना की, इस प्रकार तीन वेदों से तीन पदों का सृजन किया ।

एतदक्षर मेकाञ्च जपन् व्याहृति पूर्विकाम् ।
सन्धायोर्वेदविद्विप्रो वेद पुण्येन युज्यते ।।

व्याहृति पूर्वक इस गायत्री को दोनों सन्ध्या काल में जपता हुआ ब्राह्मण वेद पढ़ने के पुण्य को प्राप्त होता है ।

इयमेव स व्याहृतिका ब्रह्म पद प्राप्ते द्वाररूपं ।
तस्मात्प्रत्यहं ब्राह्मणै व्याहृतिपूर्विकेयं अध्ययनीया ।।

यह गायत्री ब्रह्मपद की प्राप्ति का द्वार है अतः ब्राह्मण को व्याहृति पूर्वक प्रतिदिन इसका अध्ययन (मनन) करना चाहिये ।

योऽधीतेऽहन्य हन्ये तान्त्रीणिवर्षाण्यतन्द्रित : ।
स ब्रह्म परमभ्येति वायु भूतः स मूर्तिमान् ।।

जो इस गायत्री को तन्द्रा रहित (आलस्य को छोड़कर) तीन वर्ष तक नियमित रूप से जपता है, वह ब्रह्मा को निस्सन्देह उपलब्ध हो जाता है ।

तत् पापं प्रणुदत्याशु नात्र कार्या विचारणा ।
शतं जप्त्वा तु सा देवी पापौघ शमनी स्मृता ।।

इसमें सन्देह नहीं करना चाहिए कि उन पापों का शीघ्र ही निवारण हो जाता है । सौ बार जप करने पर यह गायत्री पापों का विनाश कर देती है ।

विधिना नियतं ध्यायेत् प्राप्नोति परमं पदम् ।
यथा कथिञ्चिज्जपिता गायत्री पाप हारिणी ।
सर्व्व काम प्रदा प्रोक्ता पृथक्कर्म्मसु निष्ठिता ।।

विधि पूर्वक नियत ध्यान करने पर परम पद की प्राप्ति होती है । जिस किसी भी प्रकार जपी हुई गायत्री पापों का विनाश करती है, भिन्न-भिन्न कार्यों के उद्देश्य से किया हुआ जप भी अभीष्टों की सिद्धि कर देता है ।

जप्येनैव तु संसिध्येद् ब्राह्मणो नामसंशयः ।
कुर्यादन्यन्त वा कुर्यान्मैमो ब्राह्मण उच्यते ।।

-मनु० २।८७

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अर्थात् गायत्री उपासना समस्त सिद्धियों की आधारभूत है, गायत्री उपासक अन्य कोई अनुष्ठान न करे तो भी सबसे मित्रवत् आचरण करता हुआ ब्रह्म को प्राप्त करता है क्योंकि जप से उसका चित्त ब्राह्मी चेतना की तरह शुद्ध व पवित्र हो जाता है ।

पूर्वां सन्ध्यां जपस्तिष्ठत्सावित्रीमार्क दर्शनात् ।
पश्चिमां तु समासीनः सम्यगृक्ष विभावनात् ।।

-मनु० २।२०२

हे तात ! प्रातःकाल सूर्योदय के पूर्व से सूर्योदय तक खड़ा होकर गायत्री का जप करने वाला, सायंकाल तारों के निकलने तक बैठकर जप करने वाले उपासक भौतिक और आध्यात्मिक समृद्धि के अधिकारी बनते हैं ।

अपां समीपे नियतो नैत्यिकंविधिमास्थितः ।
सावित्रीमप्य धीयति गत्वाण्यंसमाहितः ।।

-मनु० २।१०४

अर्थात् नगर की अशान्ति से वन में किसी सरोवर के समीप जाकर की गई गायत्री उपासना से मन की एकाग्रता और असीम शान्ति का लाभ मिलता है ।

गायत्री मात्र सारोऽपि वरंविप्रः सुर्यान्मतः ।
नायत्रितस्त्रिवेदोऽपि सर्वाशी सर्व विक्रयी ।।

- मनु० २ । ११ ।८

केवल गायत्री की उपासना करने वाला संयमी पुरुष सर्वभक्षी, सब कुछ बेचने वाले वेदपाठी ब्राह्मण से भी श्रेष्ठ कहलाता है

एतदक्षरमेतां च जपन् व्याहृति पूर्विकाम् ।
सन्ध्ययोर्वेदविद्विप्रो वेद पुण्येन पूज्यते ।।

-मनु० २।७८

अर्थात् ओंकार और व्याहृतिपूर्वक दोनों संध्याओं के समय गायत्री उपासना करने वाले को स्वयं ही वेद ज्ञान प्राप्त हो जाता है ।

सहस्त्र कृत्वस्त्वभ्यस्य बहिरेतात्रिकं द्विजः ।
महतोऽप्येनसो मासात्व चेवाहुर्विमुच्यते ।।

-मनु० २/ ७९

अर्थात् जो महापातक किसी अन्य तरह नहीं छूट सकते प्रतिदिन एक हजार मन्त्र जप करने से वैसे ही छूट जाते हैं जैसे सर्प केंचुली छोड़ देता है ।

योऽधीतेऽहन्य हन्येतां त्रीणि वर्षाण्यतन्द्रितः ।
स ब्रह्म परमभ्येति वायुभूतः खंमूर्तिमान् ।।

-मनु० २।८२

अर्थात् यदि उपासक तीन वर्षों तक निरालस्य नियम पूर्वक गायत्री मन्त्र का जप करता है तो वह वायु और विराट् आकाश में व्याप्त चेतना को भली प्रकार जान लेता है और परमात्मा को प्राप्त करने का अधिकार पा लेता है ।

गायत्री महामन्त्र का इतना अधिक महत्व है कि शास्त्रकारों ने जगह-जगह उसका महात्म्य वर्णन किया है- और गायत्री का जप करने के लिये विशेष रूप से आदेश किया है । उनमें से कुछ इस प्रकार हैं-

जपन्नासीत सावित्रीं प्रत्यगा तारकोदयात् ।
संध्यां प्राक् प्रातरेव हि तिष्ठेदासूर्यदर्शनात् ।।

-याज्ञवल्क्य० आचार अ० ।। २४५

अर्थात् सायंकाल में नक्षत्रों के दिखाई देने तक और प्रातःकाल में सूर्योदय तक गायत्री का जप करता हुआ ठहरे ।

सहस्त्र परमां देवी शत मध्यां दशावराम् ।
गायत्री यो जपेद्विपो न स पापेन लिप्यते ।।

-अत्रिस्मृति २ । ९ ।

अर्थात् जो ब्राह्मण गायत्री को १११० बार प्रति दिन जपता है, वह पापों में लिप्त नहीं होता ।

दर्भेषुसिनो दर्भान् धार्यमाणः सोदक्ते ।
पाणिना प्रत्यङ् मुखः सावित्री सहस्त्रकृत्वआवर्तयेत् ।।

-बौधायन स्मृति २ । ४ । ५

जपेत् प्रणव पूर्वाभिः व्याहृतिभिः सहैव तु
तिसृभिर्भूप्रभृतिभिः गायित्रीं ब्रह्मरूपिणीम् ।।
ब्रह्मचारी गृहस्थश्च शतमष्टोत्तर जपेत् ।
कालत्रयेऽप्यशक्तश्चेदष्टविंशतिमेव वा ।
लब्धाश्वलायन स्मृति ।। २ ।।

अर्थात् ब्रह्मचारी तथा गृहस्थी को ॐकार तथा 'भूर्भुवः स्वः' पूर्वक ब्रह्मरूपिणी गायत्री का १०८ बार जप करना चाहिये । यदि १०८ बार जप करने की सामर्थ्य न हो तो २८ बार तो अवश्य ही जाप करें ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सव्याहृतिकां सप्रणवां गायत्रीं शिरसा सह ।
य जपन्ति सदा तेषां नं भयं विद्यते क्वचित् ।।

–शंख स्मृति ।।१२ ।१४ ।।

जो सदा गायत्री का जाप व्याहृतियों और ॐकार सहित करते हैं उन्हें कहीं भी कोई भय नहीं सताता ।

शतं जप्त्वा तु गायत्रीं दिन पाप प्रणाशिनीं ।
सहस्त्रं जप्त्वा तु तथा पातकेभ्यः समुद्धरेत् ।।

–शंख० ।।१२ ।१५ ।।

गायत्री का सौ बार जाप करने से दिन भर के पाप नष्ट हो जाते हैं तथा दिन भर पापों की अधिकता नहीं होने पाती । एक हजार बार जप करने से यह गायत्री मन्त्र मनुष्य को पापों से ऊपर उठा देता है और उसके मन की रुचि पापों की ओर नहीं रहती ।

दश सहस्त्रं जप्त्वा तु सर्वकल्मषनाशिनी ।
सुवर्णस्तय कृद्रिमा ब्रह्महा गुरु तल्पगः ।।
सुरावाश्च विशुद्धयत् लक्ष जप्यान्न संशय : ।।

– शंख ।१२ ।१६ ।।

दश सहस्त्र बार जप करने से मनुष्य के सब कल्मष (मन के मैल) नष्ट हो जाते हैं । एक लाख बार जपने से महापापियों के भी अन्तकरण पवित्र हो जाते हैं ।

हुता देवी विशेषेण सर्वकामप्रदायिनी ।
सर्वपापक्षयकरी वरदा भक्तवत्सला ।।

– शंख ।।१२ ।१९ ।।

यदि गायत्री मन्त्र के उच्चारण के साथ अग्नि में आहुतियाँ दी जावें तो मनुष्य के सब पापों को नष्ट करके गायत्री उस हवन करने वाले के समस्त मनोरथों को पूरा करती है ।

शान्तिकमस्तु जुहुयात् सावित्रीमक्षतैः शुचिः ।
हन्तु कामोऽपमृत्युञ्च घृतेन जुहुयाद्यदा ।।२०।।
श्री कामस्तु तथ पद्मै बिल्वै : काञ्चन कामुक : ।
ब्रह्मवर्चस्कामस्तु पयसा जुहुयात्तथा ।।२१।।

यदि गायत्री मन्त्र के उच्चारण के साथ अक्षतों की आहुति दी जाय तो शान्ति प्राप्त होती है । घृत की आहुति देने से अपमृत्यु दूर होती है । कमल, बिल्व तथा दूध की आहुति देने से क्रमशः तेजस्विता, ओज, वीर्य और पराक्रम की वृद्धि होती है ।

घृतप्लुतैस्तिलर्वह्निः जुहुयातसु समाहितः ।
गायत्र्यथुत होमाञ्च सर्वपापैः प्रमुच्यते ।।२३।।
पापात्मा लक्ष होमेन पातकेभ्यः प्रमुच्यते ।
अभीष्टं लोकमाप्नोति प्राप्नुयात् काममीप्सितम ।।२४।।

घृत मिश्रित तिलों से जितेन्द्रिय होकर यदि विधि से दश सहस्त्र आहुतियाँ दे तो वह समस्त पापों से मुक्त हो जाता है और एक लाख आहुतियाँ देने से तो वह सारी पाप भावनाओं से रहित होकर स्वर्ग लोक को तथा समस्त इष्ट पदार्थों को प्राप्त कर लेता है ।

गायत्र्यष्ट सहस्त्रं तु जप्यं कृत्वास्थिते रघौ ।
मुच्यते सर्व पापेभ्यो यदि न ब्रनकबहा भवेत् ।।

–अत्रिस्मृति ।।३ ।१५ ।।

सूर्याभिमुख होकर यदि मनुष्य आठ हजार जप करे, यदि ज्ञान का शत्रु (ब्रह्महा) नहीं है तो सब पापों से मुक्त हो जाते हैं ।

एतदक्षरभेतांच जपन् व्याहृति पूर्विकाम् ।
सन्ध्ययोर्वेदविद्विप्रो वेद पुण्येन युज्यते ।।

–मनु० ।।२ ।७८ ।।

इस ॐकार तथा व्याहृतियों समेत गायत्री का दोनों सन्ध्याकाल में जप करने वाला अवश्वमेव वेद के स्वाध्याय का पुण्य प्राप्त करता है ।

सहस्त्र कृत्वस्त्वभ्यस्य बहिरेतन्त्रिकं द्विजः ।
महतोऽप्येनसो मासात्-वचेवाहिविमुच्यते ।।७९।।

इस त्रिक अर्थात् प्रणव व्याहृति तथा त्रिपाद युक्त गायत्री का एक सहस्त्र बार एकान्त स्थान में जल के समीप एक मास तक प्रति दिन जप करने से द्विज महापाप से ही छूट जाता है जैसे सर्प केंचुली से ।

ॐकार. पूर्विकास्तिस्त्रो महाव्याहृतयोऽव्ययः ।
त्रिपदा चैव सावित्री वित्त यं ब्रह्मणो मुखम् ।।८१।।
येगाऽयीतेऽहन्य हन्येतां स्त्रीणिं वर्षाण्यतन्द्रितः ।
स ब्रह्म परमभ्येति वायु भूतः स्व मूर्तिमान् ।।८२।।

ॐकार तथा महा व्याहृति पूर्वक गायत्री को ब्रह्म मुख अर्थात् ब्रह्म प्राप्ति का द्वार समझना चाहिये । जो मनुष्य तीन वर्ष तक प्रति-दिन बिना किसी प्रमाद के गायत्री मन्त्र का जप करता है वह परमात्मा में वैसे ही लीन हो जाता है–जैसे आकाश में वायु ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सावित्री जाप निरतः स्वर्गमाप्नोति मानवः ।
तस्मात् सर्व प्रयत्नेन स्नात्: प्रयत मानसः ।।
गायत्रीं तु जपेभ्दक्त्या सर्व पाप प्रणाशिनीम् ।

-शंख स्मृति -

गायत्री जप में लगा हुआ मनुष्य स्वर्ग को प्राप्त होता है अत: मनुष्यों को चाहिये कि वह स्नान आदि से शुद्ध होकर श्रद्धा भक्ति से प्रति-दिन गायत्री का जाप किया करे, जो सारे पापों को नाश करने वाली है ।

ओ३म् स्तुता मया वरदा वेद माता प्रचोदन्ता पावमानी द्विजानाम्। आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चसम् । मह्यं दत्ता व्रजत ब्रह्मलोकम् ।।

-अथर्व० का० १९ सू० ७१ मं० १ ।।

अर्थात् वेद माता गायत्री वरों की दाता है । अपने उपासक को कुमार्ग से बचाकर सुमार्ग पर लाने वाली है । आयु, स्वास्थ्य, सन्तान, पशु, धन, सम्पत्ति, कीर्ति, यश और अन्ततः ब्रह्म का साक्षात् कराने वाली और उससे मिलाने वाली यही है ।

गायत्री से पाप और दुःखों से निवृत्ति

गायत्री-साधना से सब पापों की और सब दुखों की निवृत्ति के अनेक प्रमाण मिलते हैं, जिनमें से कुछ नीचे दिये जाते हैं-

ब्रह्म हत्यादि पापानि गुरूपि च लघूनि च ।
नाशयन्त्यचिरेणैव गायत्री जापतो द्विजः ।।

-पद्म पुराण

गायत्री जपने वाले के ब्रह्महत्यादि सभी पाप, छोटे हों चाहे बड़े हों शीघ्र ही नष्ट हो जाते हैं ।

गायत्री जपकृद्भक्त्या सर्व पापै प्रमुच्यते ।

-पाराशर

भक्ति पूर्वक गायत्री जपने वाला समस्त पापों से छूट जाता है ।

सर्व पापानि नश्यन्ति गायत्री जपतो म् ।

-भविष्य पुराण

गायत्री जपने वाला समस्त पापों से छूट जाता है ।

गायत्र्यष्ट सहस्त्रं तु जापं कृत्वा स्थिते रवौ ।
मुच्यते सर्व पापेभ्यो यदि न ब्रह्मदा भवेत् ।।

-अत्रि स्मृति ३- १५

सूर्य के समक्ष खड़े होकर यदि गायत्री का आठ हजार जप करे तो वह सब पापों से मुक्त हो जाता है । यदि ब्रह्मा अर्थात् ज्ञानी पुरुषों की निन्दा करने वाला न हो, तो ।

सहस्त्र कृत्वस्त्वभ्यस्य वहिरेतत्त्रिकं द्विज : ।
महतोप्येनसो मासात्त्वचे वाहिर्विमुच्यते ।।

-मनु स्मृति अ० २।७९

एकान्त स्थान में प्रणव, महाव्याहृति पूर्वक गायत्री का एक हजार जप करने वाला द्विज बड़े से बड़े पाप से ऐसे छूट जाता है जैसे केंचुली से सर्प छूट जाता है ।

जना यैस्तरति तानि तीर्थानि

जिनसे पुरुषों के पाप दूर हो जाते हैं और वे इस संसार से तर जाते हैं उनको तीर्थ कहते हैं । गायत्री इन तीन अक्षरों में वही तीर्थ विद्यमान हैं- ग=गंगा । य= यमुना । त्र=त्रिवेणी समझनी चाहिये ।

ब्रह्महत्या सुरापानं स्तेयं गुर्वङ्गना गम : ।
महानि पातकान्यानि, स्मरणान्नाशमाप्नुयात् ।।

-गायत्री पु० २२

गायत्री के स्मरण मात्र से ब्रह्महत्या, सुरापान, चोरी, गुरु स्त्री गमन आदि अन्य महापातक भी नष्ट हो जाते हैं ।

ए एतां वेद गायत्रीं पुण्यांसवगुणान्विताम् ।
तृत्वेन भरतश्रेष्ठ ! स लोके न प्राणश्यति ।।

-महा भा० भीष्म प० अ० १४/१६

हे युधिष्ठिर ! जो मनुष्य तत्व पूर्वक सर्वगुण सम्पन्न पुण्य गायत्री को जान लेता है, वह संसार में दुखित नहीं होता है ।

गायत्री निरतं हव्य कव्येषु विनियोजयेत् ।
तस्मिन्न तिष्ठते पापमविदुरिव पुष्करे ।।

गायत्री जपने वालों को ही पितृकार्य तथा देवंकार्य में बुलाना चाहिए, क्योंकि गायत्री-उपासक में पाप उस प्रकार नहीं रहता जैसे कमल के पत्ते पर पानी की बूँद नहीं ठहरती ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गायत्रीमपठेद्विप्रो न स पापेनलिप्यते

-लघु अत्रि संहिता

जो द्विज गायत्री को जपता है, वह पाप से युक्त नहीं होता ।

चरक संहिता में गायत्री-साधना के साथ आँवला सेवन करने से दीर्घ जीवन का वर्णन किया है ।

सावित्रीं मनसा ध्यायन् ब्रह्मचारी जितेन्द्रियः ।
सम्वत्सरान्तं पौषीं वा माघीं वा फाल्गुनीं तिथिम् ।।

-चरक चिकित्सा० आँव० रसा० श्लो० ९

मन से गायत्री का ब्रह्मचर्य पूर्वक एक वर्ष तक ध्यान करता हुआ वर्ष के उपरान्त में पौष मास अथवा माघ मास की अथवा फाल्गुन मास की किसी शुभ तिथि में तीन दिन क्रमशः उपासना कर उपरांत आँवले के वृक्ष पर चढ़ जितने आँवले मनुष्य खायगा उतने ही वर्ष मनुष्य जीवित रहेगा ।

यदिहवा अप्येवं विद्वद्विह प्रतिगृहणानि न हैव तद् गायत्र्या एक च न पदं प्रति । स य इमाणं स्त्रींल्लोकान् पूर्णान् प्रतिगृह्णीयात् सो स्वा एतत्प्रथमं पदमवाप्नुयादश्च यावतीयं त्रयी विद्या यस्तावत्प्रति गृह्णीयात् सोऽस्या एतत द्वितीय पदमवाप्नुयादथ यावदिद प्राणि यस्तावत् प्रतिगृह्णीयात् सोऽस्याः एतत्तृतीयं पदमवाप्नुयात् अथास्याः एतदेव तुरीयं दशनं पदं परोरजाय एष तपतिनैव केनचनाप्यं कुत उ एतावत्प्रतिगृह्णीयात् ।

-बृ० ५ ।१४ ।५-६

गायत्री को सर्वात्मक भाव से जपने वाला मनुष्य यदि बहुत ही प्रतिगृह लेता है तो भी उस प्रतिगृह का दोष गायत्री के प्रथम पाद उच्चारण के समान भी नहीं होता है । यदि समस्त तीनों लोकों को प्रतिगृह में लेवै तो उसका दोष प्रथम पाद उच्चारण से नष्ट हो जाता है । यदि तीनों वेदों का प्रतिगृह लेवे तो उसका दोष द्वितीय पाद में नष्ट हो जाता है । यदि संसार के समस्त प्राणियों को भी प्रतिगृह से लेवे तो उसका दोष तृतीय पाद में नाश हो जाता है, अतः गायत्री जपने वाले को कोई हानि नहीं पहुँचती और गायत्री का चौथा पद परब्रह्म है, इसके सदृश दुनिया में कुछ भी नहीं है ।

यदाह्नात्कुरुते पापं तदह्नात्प्रतिमुच्यते ।
यद्रात्रियात्कुरुते पापं तद्रात्रियात्प्रतिमुच्यते ।।

-तै० आ० प्र० १० अ० ३४

हे गायत्री ! तुम्हारे प्रभाव से दिन में किये पाप दिन में ही नष्ट हो जाते हैं और रात्रि में किये पाप रात्रि में ही नष्ट हो जाते हैं ।

गायत्रीं तु परित्यज्य येऽन्य मन्त्रमुपासते ।
मुण्डकरावै ते ज्ञेया इतिवेदविदोविदुः ।।

जो गायत्री मन्त्र को त्याग अन्य मन्त्र की उपासना करते हैं वे नास्तिक हैं ऐसा वेदवेत्ताओं ने कहा है ।

गायत्रीं चिन्तयेद्य स्तु हृदपद्मे समुपस्थिताम् ।
धर्माधर्म विनिर्मुक्तः स याति परमां गतिम् ।।

जो मनुष्य हृदय कमल बैठी गायत्री का चिन्तन करता है, वह धर्म, अधर्म के द्वन्द से छूटकर परम गति को प्राप्त होता है ।

सहस्त्र जप्त्वा सा देवी ह्यु पपातक नाशिनी ।
लक्ष्य जाप्ये तथा तच्च महापातक नाशिनी ।।
कोटि जाप्येन राजेन्द्र ! यदिच्छतितदाप्नुयात् ।।

एक सहस्त्र जप करने से गायत्री उपपातकों का विनाश करती है । एक लाख जप करने से महापातकों का विनाश होता है । एक करोड़ जप करने से अभीष्ट सिद्धि प्राप्त होती है ।

गायत्री उपेक्षा की भर्त्सना

गायत्री को जानने वाले अथवा जानने पर भी उसकी उपासना न करने वाले द्विजों की शास्त्रकारों ने कड़ी भर्त्सना की है और उन्हें अधोगामी बताया है । इस निन्दा में इस बात की चेतावनी है कि जो आलस्य या अश्रद्धा के कारण गायत्री साधना में ढील करते हों, उन्हें सावधान होकर इस श्रेष्ठ उपासना में प्रवृत्त होना चाहिये ।

गायत्र्युपासना नित्या सर्ववेदै : समीरिता ।
यस्या विनात्वधः पातो ब्राह्मणस्यास्ति सर्वथा ।।

-देवी भागवत स्कं० १२ । अ० ८ ।९

गायत्री की उपासना नित्य ही समस्त वेदों में वर्णित है । जिस गायत्री के बिना सर्व प्रकार से ब्राह्मण की अधोगति होती है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सांगाश्च चतुरो वेदानधीन्यापि सवाङ्मयान् ।
सावित्रीं यो न जानाति वृथा तस्यापरिश्रम : ।।

-यो० याज्ञवल्क्य

सस्वर या साङ्गपूर्वक चारों वेदों को जानकर जो गायत्री मन्त्र को नहीं जानता, उसका परिश्रम व्यर्थ है ।

गायत्रीं यः परित्यज्य चान्यमन्त्रमुपासते ।
न साफल्यमवाप्नोति कल्पकोटिः शतैरपि ।।

-वृ० सन्ध्या भाष्ये

जो गायत्री मन्त्र को छोड़कर अन्य मन्त्र की उपासना करता है, वह करोड़ों जन्मों में भी सफलता प्राप्त नहीं कर सकता है ।

विहायतां तु गायत्रीं विष्णूपास्तिः परायणा : ।
शिवोपास्तिरते विप्रो नरकं याति सर्वथा ।।

-देवी भागवत

गायत्री को त्याग कर विष्णु और शिव की पूजा करने पर भी ब्राह्मण नरक में जाता है ।

गायत्री रहितो विप्र शूद्रादपि शुचिर्भवेत् ।
गायत्री ब्रह्म तत्वज्ञः सम्पूज्यस्तु द्विजोत्तमः ।।

गायत्री से रहित ब्राह्मण शूद्र से भी अपवित्र है । गायत्री रूपी ब्रह्म तत्व को जानने वाला सर्वत्र पूज्य है ।

एतच्चर्या विसंयुक्त काले च क्रियया स्वया ।
ब्रह्मक्षत्रियविद्योनिगर्हाणां याति साधुषु ।।

-मनु स्मृति अ० २।८०

प्रणव व्याहृति पूर्वक गायत्री मन्त्र का जप सन्ध्याकाल में न करने वाला द्विज सज्जनों में निन्दा का पात्र होता है ।

एवं यस्तु विजानाति गायत्रीं ब्राह्मणस्तुसः ।
अन्यथा शूद्रं धर्मस्याद्वेदानामपि पारगः ।।

-यो० याज्ञ०

जो गायत्री को जानता है और जपता है वह ब्राह्मण है अन्यथा वेदों में पारङ्गत होने पर भी शूद्र के समान है ।

अज्ञात्वा चैवं गायत्रीं ब्राह्मण्यादेव हीयते ।
अपवादेन संयुक्तो भवेच्छू तिनिदर्शनात् ।।

- भो० या०

गायत्री को न जानने से ब्राह्मण ब्राह्मणत्व से हीन हो पापयुक्त हो जाता है ऐसा श्रुति में कहा गया है ।

किं वेदैः पठितै : सर्वैः सेहितास पुराणकैः ।
सांगैः सावित्र हीनेन न विप्रत्वमवाप्नुयात् ।।

-वृ० पाराशर० अ० ५।१४

इतिहास, पुराणों के तथा समस्त वेदों के पढ़ लेने पर भी यदि ब्राह्मण गायत्री मन्त्र से हीन हो तो वह ब्रह्मणत्व को नहीं प्राप्त होता है ।

न ब्राह्मणो वेदपाठान्न शास्त्र पठनादपि ।
देव्यास्त्रिकालमभ्यासाद्ब्राह्मणः स्याद्द्विजोऽन्यथा ।।

-वृ० सन्ध्या भाष्ये

वेद और शास्त्रों के पढ़ने से भी ब्राह्मणत्व नहीं हो सकता है । तीनों काल में गायत्री की उपासना से ब्राह्माण होता है अन्यथा वह द्विज ही रहता है ।

ओंकारं पितृ रूपेण गायत्रीं मातरं तथा ।
पितरौ यो न जानाती स विप्रस्त्वन्यरेतसः ।।३६।।

ओंकार को पिता रूप और गायत्री को माता रूप से जो नहीं जानता वह पुरुष अन्य की सन्तान है अर्थात् व्यभिचार से उत्पन्न है ।

उपलभ्य च सावित्रीं नोपतिष्ठेत योद्विज : ।
काले त्रिकालं समाहात् स पतन्नात्र संशयः ।।

गायत्री मन्त्र को जानकर जो द्विज इसका आचरण नहीं करता अर्थात् इसे त्रिकाल में नहीं जपता उसका निश्चय पतन हो सकता है ।

गायत्री आध्यात्मिक त्रिवेणी है

पिछले पृष्ठों पर कुछ थोड़े से प्रमाण गायत्री की महिमा सूचक दिये गए हैं । इस प्रकार के प्रमाण धर्म-शास्त्रों में इतनी बड़ी मात्रा में भरे पड़े हैं कि उनका संग्रह और प्रकाशन करना कठिन है । गङ्गा, गीता, गौ, गायत्री यह चार आर्य धर्म की शिलाएँ हैं । भारतीय धर्म को मानने वाला प्रत्येक व्यक्ति इन चारों का माता के समान आदर करता है और एक माता की सन्तान के समान आपस में एकता अनुभव करता है ।

गायत्री को आध्यात्मिक त्रिवेणी कहा गया है । गङ्गा, यमुना के मिलने से एक अदृश्य, सूक्ष्म एवं अलौकिक दिव्य सरिता का आविर्भाव होता है जिसे सरस्वती कहते हैं । गङ्गा, यमुना और सरस्वती तीनों का सम्मिलन त्रिवेणी कहलाता

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है । त्रिवेणी होने के कारण ही प्रयाग को तीर्थराज कहा गया है । सब तीर्थों का राजा माना गया है, इसी प्रकार आध्यात्मिक जगत् की त्रिवेणी गायत्री है । उसके तीन अक्षर संकेत रूप से इसी प्रकार के त्रिगुणात्मक सम्मेलन का रहस्योद्घाटन करते हैं । गा-पहला अक्षर गङ्गा का बोधक है । य-दूसरा अक्षर यमुना का संकेत करता है । त्री-तीसरा अक्षर त्रिवेणी का अस्तित्व बताता है । इस त्रयै शक्ति में कितने ही त्रक् गुथे हुए हैं । (१) सत्, चित्, आनन्द (२) सत्य, शिव, सुन्दर, (३) सत, रज, तम, (४) ईश्वर, जीव, प्रकृति (५) ऋक्, यजु, साम, (६) ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य (७) गुण, कर्म, स्वभाव, (८) शैशव, यौवन, बुढ़ापा (९) ब्रह्मा, विष्णु, महेश, (१०) उत्पत्ति, वृद्धि, नाश (११) सर्दी, गर्मी, वर्षा, (१२) धर्म, अर्थ, काम (१३) आकाश, पाताल, पृथ्वी (१४) देव मनुष्य, असुर आदि अगणित त्रिक गायत्री छन्द के गर्भ में सम्पुटित हैं । जिसमें गहराई तक प्रवेश करके मनन, चिन्तन, परिशीलन रूपी स्नान करने से, वैसा ही आध्यात्मिक लाभ होता है जैसा कि भौतिक ज्ञान में त्रिवेणी के स्नान का पुण्य फल माना गया है । इन तीन अक्षरों में अनेकों प्रकार की तीन-तीन समस्याएँ मनुष्य के सामने उपस्थित की गई हैं, जिनका भली प्रकार अवगाहन करने से जीवन-मुक्ति के परम फल को प्राप्त किया जा सकता है ।

त्रिवेणी की तीनों धाराएँ देखने में बड़ी दुस्तर, भयंकर, विशाल और अगाध दिखाई पड़ती हैं । इसी प्रकार गायत्री में जो समस्याएँ लिपटी हुई हैं, वे काफी कठिन प्रतीत होती हैं पर जैसे त्रिवेणी की जलधारा में प्रवेश करके स्नान करने से भय दूर हो जाता है और शान्तिदायक, शीतल प्रफुल्लता प्राप्त होती है, वैसे ही गायत्री में सन्निहित समस्याओं को चिन्तन, मनन और अवगाहन करने से ऐसे तत्व ज्ञान की प्राप्ति होती है, जो सत्पथ की ओर प्रेरित करता है और शाश्वत् शान्ति एवं परमानन्द के द्वार तक पहुँचा देता है । गायत्री निसन्देह आध्यात्मिक त्रिवेणी है उसे तीर्थराज ही समझना चाहिए, क्योंकि उसमें सन्निहित तत्व ज्ञान अति सरल, सुबोध, सुगम, सीधा और स्थायी सुख-शान्ति प्रदान करने वाला है ।

गायत्री की महिमा अनन्त है । वेद-पुराण, शास्त्र, इतिहास, ऋषि-मुनि, गृही-विरागी सभी समान रूप से उसका महत्व स्वीकार करते हैं । उसमें हमारे दृष्टिकोण को बदल देने की अद्भुत शक्ति है । अपनी उल्टी विचारधारा, भ्रान्त मनोभूमि यदि सीधी हो जाय, हमारी इच्छाएँ, आकांक्षाएँ, विचारधाराएँ, भावनाएँ यदि उचित स्थान पर आ जायें तो यह मनुष्य शरीर देवयोनि से बढ़कर और यह भूलोक सुरलोक से बढ़कर हर किसी के लिये आनन्ददायक हो सकते हैं । हमारी उल्टी बुद्धि ही स्वर्ग को नरक बनाए हुए है । इस विषम स्थिति से उबार कर हमारे मस्तिष्क को सीधा करने की शक्ति गायत्री में है । जो उस शक्ति का उपयोग करता है वह विषम विकारों, भ्रान्ति विचारों और दुर्भावों के भव-बन्धन से छूटकर जीवन का सत्य, शिव और सुन्दर रूप दर्शन करता हुआ, परमात्मा की शाश्वत शान्ति को प्राप्त करता है । इसलिये वेदमाता गायत्री को महा महिमामयी कहा गया है । उसका महात्म्य अनन्त है ।

गायत्री का स्वरूप और रहस्य

ह्रीं श्रीं क्लीं चेति रूपेभ्य स्त्रिभिर्वालोक पालिनी ।
भासते सततं लोके गायत्री त्रिगुणात्मिका ।।१।।

(ह्रीं, श्रीं, क्लीं,) ह्रीं, श्रीं, क्लीं, (इति) इन , (त्रिभिः) तीन, (रूपेभ्यः) रूपों से, (लोक पालिनी) संसार का पालन करने वाली, (त्रिगुणात्मिका गायत्री) तीनों गुणों वाली, (लोके) संसार में, (सततं) निरन्तर, (भासते) प्रकाशित होती है ।

आदि शक्तिस्त्वियं विष्णोस्तामहं प्रणमामिहि ।
सर्गः स्थितिविनाशश्च जायन्ते जगतोऽनया ।।

(इयंतु) यह ही (विष्णोः) परमात्मा की(आदि शक्तिः) आदि शक्ति है (तां) उसको (अहं) मैं (प्रणमामि) प्रणाम करता हूँ (अनयी) इसी शक्ति से (जगतः) संसार का (सर्गः) निर्माण (स्थितिः)

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पालन (च) और (विनाशः) विनाश (जायन्ते) होता है ।

सृष्टि के प्रारम्भ का मूल हेतु परमात्मा की 'द्विधा' है । एक अव्यय परमात्मा ने जब बहुत होने की इच्छा की तो वह इच्छा स्फुरणा शक्ति कहलाई । इस प्रकार अद्वैत ब्रह्मद्वैत हो गया । एक अखंड, अलख, अगोचर, इन्द्रियातीत, निराकार, निर्विकार परमात्मा जब सृष्टा के रूप में आता है तो उसे द्विधा देखा जाता है । लक्ष्मीनारायण, सीताराम, राधेश्याम, उमाशंकर, माया ब्रह्म, शक्ति, शिव, आदि नामों से उसे पुकारते हैं ।

सूर्य अपने कक्ष में, अपनी एक रस गतिविधि से क्रिया मग्न रहता है । किसी के प्रति राग द्वेषात्मक भावनाएँ उसमें नहीं है, तो भी उसकी किरणें दौड़ती हुई पृथ्वी तक आती हैं और क्षेत्र, ऋतु, वातावरण तथा जीवों की स्थिति के अनुकूल विविध प्रकार के प्रभाव डालती हैं । सप्तवर्ण की किरणें विविध गुणों से युक्त होती हैं । जो सूर्यचिकित्सा विज्ञान के रहस्य को जानते हैं उन्हें पता है कि सूर्य की विविधि किरणों में गुणों की कितनी भिन्नता है । एक व्यक्ति को एक प्रकार की सूर्य किरणें अमृतोपम लाभ प्रदान करती हैं तो दूसरे प्रकार की किरणें हानिकारक परिणाम उपस्थित कर सकती हैं । सूर्य एक है, उसकी शक्ति किरण भी एक ही है । पर सूक्ष्म भेदों के कारण उसके सूक्ष्म प्रभावों में भारी अन्तर उत्पन्न हो जाता है ।

परमात्मा एक है उसकी शक्ति एक है । पर जिस प्रकार परमात्मा एक से दो हो गया उसी प्रकार उसकी शक्ति एक से तीन हो जाती हैं । इन तीन का नाम आध्यात्म विद्या के सूक्ष्म दर्शियों ने ह्रीं, श्रीं, क्लीं रखा है । यह शब्द काल्पनिक नहीं है । वरन् सृष्टि के सूक्ष्म शान्त अन्तराल में इस त्रिविधि शक्ति की प्रतिध्वनियाँ हैं । योगियों ने समाधि अवस्था में जाकर प्रकृति की मूलभूत-सूक्ष्म स्थिति का अनुभव किया । वहाँ तीर्थ राज प्रयाग की तरह तीन धाराएँ प्रवाहित होती हैं । सत् मयी धारा में निमग्न होने पर योगी को एक सूक्ष्म शब्द सुनाई पड़ता है, जैसे कांसे की घड़ियाल में हल्की सी हथौड़ी मार देने पर झनझनाती रहती है और उसके अन्त में ई कार और अनुस्वार का सम्मिलित हल्का सा 'ई' शब्द गुजरता रहता है इसी प्रकार सतोगुणी धारा में ह्रीं, रजोगुणी में 'श्रीं', तमोगुणी में 'क्लीं' शब्द गूंजता हुआ अनुभव में आता है । यह धाराएँ अपनी कार्य प्रणाली के कारण एक दूसरे से भिन्न सी प्रतीत होती हैं । ह्रीं उत्पादक है, श्रीं पोषक है, क्लीं संहारिणी है । इसी से उन्हें क्रमशः ब्राह्मी, नारायणी और शांभवी भी कहा जाता है । पुल्लिंग शब्दों में उन्हीं शक्तियों को ब्रह्मा, विष्णु और महेश कहा जा सकता है । गुणों के विभाग में इन्हें सत्, रज, तम कहा जायगा

ब्रह्म की आदि शक्ति का नाम गायत्री है । वह त्रिगुणात्मक हैं । ब्रह्म परायण साधक उसके ही रूप की आराधना करते हैं, आध्यात्मिक उन्नति के लिये, आत्म साक्षात्कार के लिये परमानन्द और मुक्ति के लिये उसी का आश्रय ग्रहण किया जाता है । अर्थ परायण-किसी कामना की पूर्ति के इच्छुक सांसारिक सम्पदा और ऐश्वर्य चाहने वाले साधक उसके श्रीं रूप की उपासना करते हैं । तमोगुणी तांत्रिक, मारण, मोहन, उच्चाटन, वशीकरण आदि अभिचारों में क्लीं तत्व का पुरश्चरण किया जाता हैं । ह्रीं-सरस्वती के रूप में, श्रीं-लक्ष्मी के रूप में, क्लीं दुर्गा के रूप में पूजी जाती है । जो साधक जिस गुण की उपासना करता है उसमें उन्हीं तत्वों का आविर्भाव विशेष रूप से होता है । उसकी प्रकृति उसी ढाँचे में ढलती है, स्वभाव वैसा बनता है योग्यताएँ और शक्तियाँ वैसी बढ़ती हैं, तथा उसी के अनुरूप सफलताओं का मार्ग प्रशस्त है ।

अपने में किन्हीं गुण, कर्म, स्वभावों की उत्पत्ति के लिए ह्रीं का, किन्हीं तत्वों की वृद्धि के लिए श्रीं का, और किन्हीं दोष-दुर्गणों के निवारण के लिए क्लीं का आराधन किया जाता है । समय-समय पर भले बुरे सभी प्रकार के प्रयोजनों के लिए उपयोगितानुसार तीनों ही तत्वों की आवश्यकता होती है क्योंकि मनुष्य तीनों ही तत्वों का बना हुआ है । प्रयोजन, आवश्यकता, उपयोगिता तथा मात्रा के भेद से इन तत्वों में न्यूनाधिकता, तो प्रयोजनीय होती है पर उपास्य तीनों ही हैं । इसलिए त्रिमुखी वेदमाता गायत्री को साधक अभिवादन, प्रणाम, नमस्कार करता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

किसी के प्रति श्रद्धा, सम्मान, उच्च भावना, प्रतिष्ठा की स्थापना अपने मन में करने से ही उसकी ओर खिंचाव, आकर्षण, प्रेम तथा निष्ठा की उत्पत्ति होती है और इस उत्पत्ति के आधार पर ही साधन में प्रीति होती है, मन लगता है, उत्साह बढ़ता है तथा दृढ़ता रहती है । इन आवश्यकताओं को रखते हुए सर्वप्रथम गायत्री माता को श्रद्धा और विश्वास तथा ध्यान — पूर्वक प्रणाम किया जाता है ।

तरण तारिणी गायत्री गंगा

चन्द्रशेखर केशेभ्यो निर्गता हि सुरापगा ।
भागीरथं ततारैव परिवार समं यथा ।
जगद्धात्री समुद्भूत्य या हृन्मानसरोवरे ।
गायत्रीं सकुलं पारं तथां नयति साधकम् ।
ज्ञान गंगैव गायत्री ज्ञान नीर समाकुला ।
ज्ञान गंगा तु तां भक्त्या बारं बारं नमाम्यहम् ।

(यथा) जिस प्रकार (चन्द्रशेखर केशेभ्यो) शिवजी के केशों से (निर्गता) निकलने वाली (सुरापगा) गंगा ने (परिवार समं) परिवार सहित (भागीरथं) भागीरथ को (ततार एव) पार कर ही दिया (तथैव) उसी प्रकार (जगद्धात्री) संसार का पालन करने वाली (वा) जो (गायत्री) गायत्री (हृन्मान सरोवरें) हृदय रूपी मान-सरोवर में (समुद्भूत्यं) प्रकट होकर (सकुलं साधकं) सपरिवार साधक को (पारंनयति) पार ले जाती है (सैव) वही (गायत्री) गायत्री (ज्ञान नीर समाकुला) ज्ञान रूपी जल से परिपूर्ण (गंगा) गंगा (अस्ति) है । (तां गंगा) उस गंगा को (अहं) मैं (भक्त्या) भक्ति से (बारं-बारं) बार-बार (नमामि) नमस्कार करता हूँ ।

भगवान शंकर की जटाओं से पुण्यश्लोका गंगा का आर्विभाव हुआ । उस ज्ञान को भागीरथ जी तपस्या करके ब्रह्मलोक से मर्त्यलोक में लाये और उस गंगा के द्वारा न केवल भागीरथ के परिवार का वरन् समस्त भूलोक का कल्याण हुआ । यह गंगावतरण धरती माता का एक बड़ा भारी सौभाग्य माना जाता है ।

गायत्री की उपमा गंगा से दी गई है तरण तारिणी भगवती गंगा के आगमन से इस भूतल का अनेक प्रकार से लाभ हुआ, गंगा का पारलौकिक, महात्म्य प्रसिद्ध है । गङ्गा जल में रहने वाले आध्यात्मिक तत्वों का प्रभाव स्नान करने वाले के ऊपर पड़ता है । वह गंगा स्नान करके उन तत्वों को अपने में धारण करता है और उस धारणा के फलस्वरूप शुभ गति का अधिकारी बनता है । आरोग्य वर्धक, गंगा जल की महिमा भी प्रसिद्ध है उसमें चाँदी, ताँबा, पारा तथा सोने की मात्रा काफी अंशों में रहती है जिसके कारण अनेक रोगों के लिए गंगा जल अनुपम लाभदायक सिद्ध होता है । भौतिक लाभ भी गंगा के कम नहीं हैं । उससे सींची गई भूमि करोड़ों मन अन्न प्रतिवर्ष उपजाती है, सूखे भूमि खंडों को वह हरा-भरा, बनाती है । अगणित प्राणी तथा जीव-जन्तु उसके अन्नजल से प्राण धारण करते हैं, और विविध प्रकार की धन सम्पत्तियाँ गंगा के माध्यम से उपार्जित करते हैं । विविध प्रकार के अन्न, ईख, औषधियाँ, वृक्ष, घासपात, नावें, बिजली, नहर, शहरों में पीने का पानी मछली आदि न जाने कितनी वस्तुएँ लोग उससे पाते हैं और उनसे लाभ उठाकर धनी बनते हैं ।

गायत्री भी ऐसी ही ज्ञान गंगा है जो मनुष्य की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करती है और उसे सब प्रकार सुखी बनाती है । आध्यात्मिक दृष्टि से देखिए तो आत्म कल्याण के सभी तत्व उसके अन्तर्गत मौजूद हैं । स्वर्ग, मुक्ति, आत्म साक्षात्कार, ईश्वर दर्शन के सभी तत्व उसमें मौजूद हैं । कोई आध्यात्मिक लाभ, महत्व, चमत्कार ऐसे नहीं हैं और न कोई सिद्धि या महत्वाकाँक्षा ऐसी हैं जो गायत्री की शक्ति से प्राप्त न हो सकें । अनेकों शास्त्र-बचन इस बात के प्रमाण हैं और अनेकों अनुभवी साधकों के अनुभव इस बात के साक्षी हैं कि इस कामधेनु से जिसने जो चाहा है उसे वह मिला है । यह एक ऐसा आध्यात्मिक माध्यम है, जिसका आश्रय लेकर सभी प्रकार के दैवी बल प्राप्त किये जा सकते हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गायत्री गंगा के स्नान करने से अन्त:करण के मैल धुल जाते हैं । कषाय कल्मषों का बोझ हट जाता है, चिरकाल से संचित एवं मनोभूमि में गहरे जमे हुए कुसंस्कारों की जड़ उखड़ जाती है ऐसा विशुद्ध हृदय के व्यक्ति जिस परिवार में एकाध भी हो, वह सारा परिवार तर जाता है क्योंकि उसके निर्मल विचार एवं गुण, कर्म, स्वभाव निकटवर्ती सभी लोगों को प्रभावित करते हैं, तदनुसार वे लोग चाहे पूर्ण रूप से धर्मानुयायी न बन सकें पर इतना निश्चित हैं कि उनमें आपसी सद्भाव नष्ट नहीं हो पाता । एक सुधरा हुआ व्यक्ति अपने निकटवर्ती लोगों को बहुत कुछ सुधार लेता है, इस प्रकार उस परिवार में कल्याण का ही आश्रय रहता है । संगति के प्रभाव से अन्य लोग भी सुधारते हैं जिस प्रकार भागीरथ जी ने गंगा को लाकर समस्त लोक के साथ अपने नरक में पड़े हुए परिवार को तार लिया था वैसे ही गायत्री के साधक अपनी साधना द्वारा स्वार्थ और परमार्थ दोनों का संचय कर सकता है ।

गंगा से अन्न, जल, बिजली आदि प्राप्त करके लोग नाना प्रकार के सांसारिक लाभ उठाते हैं वैसे गायत्री साधना से भी अनेक प्रकार के काम्य मनोरथ पूरे होते हैं । सकाम भाव और निष्काम भाव दोनों ही प्रकार से यह साधना की जाती हैं और दोनों ही मार्गों पर चलने वाले लोग इस शक्ति से श्रेय एवं प्रेय की प्राप्ति करते हैं ।

गायत्री के अन्तर्गत ज्ञान की पुण्यश्लोका गंगा बह रही है, उसके सूक्ष्म-तत्वों पर विचार करने से यह सहज ही पता चल जाता है कि इसके गर्भ में कितना महान ज्ञान सागर लहरा रहा है जो इस ज्ञान गंगा में स्नान करता है वह सत् चित् सुख का प्रत्यक्ष अनुभव करता है । ऐसी ज्ञान गंगा को, भगवती वेद माता गायत्री को हमें भक्ति पूर्वक बार-बार प्रणाम करना चाहिए और शाश्वत शान्ति के लिए उनकी शरण में जाना चाहिए ।

सतोगुणी ब्राह्मी शक्ति

परमात्मनस्तु या लोके ब्रह्म शक्तिर्विराजते ।
सूक्ष्मा च सात्वकी सैव गायत्री त्यभिधीयते ।।

(लोके) संसार में (परमात्मन:) परमात्मा की (या) जो (सूक्ष्मा) सूक्ष्म (च) और (सात्विकी) सात्विक (ब्रह्मशक्ति: ब्रह्मशक्ति (विराजते) विद्यमान है (सैव) वह ही (गायत्री इति) गायत्री (अभिधीयते) कही जाती है ।

प्रभावादेव गायत्र्या भूतानामभिजायते ।
अन्त: करणेषु दैवानां तत्वानां हि समुद्भव: ।।

(भूतानां) प्राणियों के (अन्त:करणेषु) अन्तकरणों में (दैवीनां) दैवी (तत्वानां) तत्वों का (समुद्भव:) प्रादुर्भाव (गायत्र्या:) गायत्री के (एव) ही (प्रभावात्) प्रभाव से (अभिजायते)होता है ।

गायत्री परमात्मा की वह शक्ति है जो सृष्टि में चैतन्यता, सजीवता, विचार शक्ति के तत्वों को उत्पन्न करती है । मूल में यह सत् है । ब्रह्म से उत्पन्न शक्ति भी मूलत: ब्राह्मी ही है, उसमें ब्रह्मत्व ओत-प्रोत है । इस ब्रह्मत्व को धारण करने से मनुष्य ब्राह्मण बन जाता है । गायत्री वह ब्राह्मी शक्ति है जो सात्विक उच्च ही आध्यात्मिक तत्वों को धारण किये हुए है । मूल में वह ऐसी ही है । विकारों के सम्मिश्रण से वह दूसरे प्रकार की भी हो जाती है, रज और तम से भी आच्छादित हो जाती है । अग्नि मूलत: शुद्ध और तेज तत्व है । पर उसमें विषैले दूषित दुर्गन्धित पदार्थ डाल दिये जायें तो उसका वर्ण एवं गुण भी वैसा ही बन जाता है । गायत्री-चैतन्यता-मूलत: परमात्म तत्व से सम्बन्धित होने के कारण देवत्व से परिपूर्ण है । परन्तु रज और तम के समन्वय से वह उस रूप में भी प्रकट होती है । रजोगुण के समन्वय से उसका रूप लक्ष्मी हो जाता है, तमोगुण के मिश्रण से वह दुर्गा के रूप में प्रकट होती है ।

हंस वाहिनी-सरस्वती- गायत्री का दूसरा नाम है । हंस दूध पीता है पानी को छोड़ देता है । हंस वाहिनी गायत्री भी शुद्ध सतोगुण धारण करती है । विशुद्ध तेज के समान, अपने मूल स्वरूप में दीप्तिमान रहती है । इसलिए आध्यात्मिक सुख चाहने वाले, आत्मोन्नति की आकांक्षा करने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वाले गायत्री की उपासना करते हैं । अग्नि में सुगन्धित पदार्थ डालने से उसमें से सुगंधित धुआं निकलता है और उसमें दुर्गंधित पदार्थ जलाने से दुर्गंधि फैलती है । मूलतः अग्नि गंध रहित है । चैतन्य तत्त्व भी मूलतः सतोमय है पर धन, ऐश्वर्य एवं भोग वैभव की इच्छाओं के कारण वह लक्ष्मी बन जाती है और संघर्ष, विनाश, आक्रमण की स्थिति में वह दुर्गा कही जाती है । इस प्रकार एक ही चैतन्यता शक्ति, सरस्वती (गायत्री) लक्ष्मी तथा दुर्गा के रूप में भी दृष्टिगोचर होती है । संसार भर के प्राणियों में व्यापक चैतन्यता-आत्म प्राप्ति, ऐश्वर्य, लोभ तथा संघर्ष इन तीन कार्यों में लगी हुई है । इन तीन कार्यों के असंख्यो कार्यक्रम हैं असंख्यों आयोजन हैं, पर धाराएँ तीन ही हैं ।

इतना सब होते हुए भी गायत्री के मूल स्वरूप में कोई विकार नहीं आता । ब्रह्म-सत्, चित् आनन्द स्वरूप है, सत्य, शिव, सुन्दर है । उसकी चैतन्यता ब्राह्मी शक्ति भी इन्हीं गुणों से परिपूर्ण है । बादल, धूलि, वर्षा, ग्रहण, उदय, अस्त, ऋतु परिवर्तन, स्थान विशेष आदि की स्थितियों के कारण सूर्य के रंग रूपों में भारी हेर-फेर दृष्टि-गोचर होता रहता है, तो भी सूर्य का मूल वर्ण अपरिवर्तनशील रहता है । इसी प्रकार संसार की चैतन्य शक्ति को, प्राणसत्ता को, प्राणधारी स्वेच्छा पूर्वक विविधि दिशाओं में प्रयोग करते हैं इससे उत्तम, मध्यम और निकृष्ट कार्य करते हैं, तो भी मूलतः वह शक्ति अपने आप में निर्विकार रहती है । रुपये को बुरे काम में भी खर्च किया जा सकता है, भले में भी । बिजली से लाभ भी उठाया जा सकता है और भारी अनिष्ट भी किया जा सकता है । शस्त्रास्त्रों का सदुपयोग भी हो सकता है और दुरुपयोग भी । इतना सब होते हुए भी रुपया, बिजली एवं शस्त्रास्त्र के मूलतत्व में कोई विकार नहीं आता ।

संसार में चैतन्य सत्ता के बुरे, घृणित, लोभ-पूर्ण भोग, ऐश्वर्य, अभिमुखी कार्यों में भी उपयोग हो रहा है । गंगाजल से माँस भी पकाया जाता है और मदिरा भी बनाई जाती है । पर इतने मात्र से न तो गंगा के गौरव में कमी आती है और न गायत्री शक्ति का गौरव घटता है । ब्राह्मी शक्ति-वस्तुतः ब्रह्म का ही प्रस्फुरण है । ब्रह्म का जो गुण कर्म स्वभाव है वही ब्राह्मी का -गायत्री-का है । इसलिए वह सदा सतोमयी, सात्विक, शुद्ध, शिव, सुन्दर एवं सुख शान्ति मय ही रहती है । उसकी उपासना से इन्हीं गुणों की प्राप्ति होती है ।

वेदमाता गायत्री

गायत्र्येव मता माता वेदानां शास्त्र सम्पदाम् ।
चत्वारोऽपि समुत्पन्ना वेदास्त्वस्या असंशयम् ।।

(शास्त्र सम्पदा) शास्त्रों की सम्पत्ति रूप (वेदानां) वेदों की (माता) माता (गायत्र्येव) गायत्री ही (माता) मानी गई है (असंशयं) निश्चय से (चत्वारोऽपि) चारों ही (वेदाः) वेद (अस्याः) इससे (समुत्पन्नाः) उत्पन्न हुए हैं ।

वेद कहते हैं ज्ञान को। ज्ञान के चार भेद हैं- ऋक्, यजु, साम और अर्थ । कल्याण, प्रभुप्राप्ति, ईश्वर दर्शन, दिव्यत्व, आत्म शान्ति, ब्रह्म निर्वाण, धर्म भावना, कर्तव्य पालन, प्रेम, तप, दया,उपकार, उदारता, सेवा आदि ऋग् के अन्तर्गत आते हैं । पराक्रम, पुरुषार्थ, साहस, वीरता, रक्षा, आक्रमण, नेतृत्व, यश, विजय, पद, प्रतिष्ठा यह सब 'यजु' के अन्तर्गत हैं । क्रीड़ा, विनोद, मनोरंजन, संगीत, कला, साहित्य, स्पर्श, इन्द्रियों का स्थूल भोग तथा उन भागों का चिन्तन, प्रिय कल्पना, खेल, गतिशीलता, रुचि, तृप्ति आदि को साम के अन्तर्गत लिया जाता है । धन, वैभव, वस्तुओं का संग्रह, शास्त्र, औषधि, अन्न, वस्त्र, धातु, गृह, वाहन, भृत्य आदि सुख साधनों की सामिग्रयाँ 'अथर्व' की परिधि में आती हैं ।

किसी भी जीवित प्राणधारी को लीजिए उसकी सूक्ष्म और स्थूल, बाहरी और भीतरी, क्रियाओं और कल्पनाओं का गम्भीर एवं वैज्ञानिक विश्लेषण कीजिए, प्रतीत होगा कि इन्हीं चार क्षेत्रों के अन्तर्गत उसकी समस्त चेतना परिभ्रमण कर रही है । (१) ऋक्-कल्याण, (२) यजु- पौरुष (३) साम-क्रीड़ा, (४) अथर्व-अर्थ इन चार दिशाओं के अतिरिक्त प्राणियों की ज्ञान धारा और

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

किसी ओर प्रवाहित नहीं होती । ऋक् को धर्म, यजु को मोक्ष, साम को काम, अथर्व को अर्थ भी कहा जाता है । यही चार ब्रह्मा के मुख हैं । ब्रह्मा को चतुर्मुखी इसलिए कहा गया है कि वे एक मुख होते हुए भी चार प्रकार की ज्ञान धारा का निष्क्रमण करते हैं । वेद शब्द का एक अर्थ है- ज्ञान । इस प्रकार वेद एक है परन्तु एक होते हुए भी वह प्राणियों के अन्तःकरण में चार प्रकार का दिखाई देता है ।। इसलिए एक वेद को सुविधा के लिए चार भागों में विभक्त कर दिया गया । भगवान विष्णु की चार भुजाऐं भी यही हैं । इन चार विभागों को स्वेच्छापूर्वक पार करने के लिए चार आश्रम और चार वर्णों की व्यवस्था की गई । बालक क्रीड़ा अवस्था में, तरुण अर्थ अवस्था में, वानप्रस्थ पौरुष अवस्था में और संन्यासी कल्याण अवस्था में रहता है । ब्राह्मण ऋक् है, क्षत्रिय यजु है, वैश्य अथर्व है, साम शूद्र है । इस प्रकार यह चातुर्विधि विभागीकरण हुआ है ।

यह चारों प्रकार के ज्ञान उस एक चैतन्य शक्ति के ही प्रस्फुरण हैं जो सृष्टि के आरम्भ में ब्रह्माजी ने उत्पन्न की थी, और जिसे शास्त्रकारों ने गायत्री नाम से सम्बोधित किया है । इस प्रकार चारों वेदों की माता गायत्री हुई । इसी से उसे 'वेद माता' भी कहा जाता है । जिस प्रकार जल तत्व को बर्फ, भाप, (बादल, ओस, कुहरा आदि) वायु (हाइड्रोजन-नाइट्रोजन) तथा पतले पानी के चार रूपों में देखा जाता है । जिस प्रकार अग्नि तत्व को ज्वलन, गर्मी, प्रकाश तथा गति के रूप में देखा जाता है उसी प्रकार एक ज्ञान गायत्री के चार वेदों के चार रूप में दर्शन होते हैं । गायत्री माता है तो चार वेद उसके चार पुत्र हैं ।

यह तो हुआ सूक्ष्म गायत्री का सूक्ष्म वेद माता स्वरूप । अब उसके स्थूल रूप पर विचार करेंगे । ब्रह्मा ने चार वेदों की रचना से पूर्व चौबीस अक्षर वाले गायत्री मंत्र की रचना की । इस एक मंत्र के एक-एक अक्षर में ऐसे सूक्ष्म तत्व आधारित किये गये जिनके पल्लवित होने पर चार वेदों की शाखा-प्रशाखायें तथा श्रुतियाँ उद्भुत हो गईं । एक वट बीज के गर्भ में, महान् वटवृक्ष छिपा होता है जब वह बीज पौधे के रूप में उगता है, वृक्ष के रूप में बड़ा होता है तो उसमें असंख्यों शाखाऐं, टहनियाँ, पत्ते, फूल, फल, लद जाते हैं, उन सबका इतना विस्तार होता है- जो उस मूल वट बीज की अपेक्षा करोड़ों अरबों गुना बड़ा होता है । गायत्री के चौबीस अक्षर भी ऐसे ही बीज हैं जो प्रस्फुटित होकर वेदों के महा विस्तार के रूप में अवस्थित हो गये हैं ।

व्याकरण शास्त्र का उद्गम शंकरजी के वे चौदह सूत्र हैं जो उनके डमरू से निकले थे । एक बार महादेव जी ने आनन्द मग्न होकर अपना प्रिय वाद्य डमरू बजाया । उस डमरू में से चौदह ध्वनियाँ निकलीं इन (अइउण, ऋलक्, एओङ्, ऐऔच, हयवरट्, लण-आदि) चौदह सूत्रों को लेकर पाणिनी ने महा व्याकरण शास्त्र रच डाला । उस रचना के पश्चात् उसकी व्याख्याएँ होते-होते आज इतना बड़ा व्याकरण साहित्य प्रस्तुत है, जिसका एक भारी संग्रहालय बन सकता है । गायत्री मन्त्र के चौबीस अक्षरों से भी इसी प्रकार वैदिक साहित्य के अंग-प्रत्यंगों का प्रादुर्भाव है । गायत्री सूत्र है, तो वैदिक ऋचाएँ उसकी विस्तृत व्याख्याएँ हैं ।

ब्रह्मा की स्फुरणा से गायत्री का प्रादुर्भाव

नाभिपद्म भुवा विष्णोर्ब्रह्मणानिर्मितं जगत् ।
स्थावरं जंगमं शक्त्या गायत्र्या एव वै ध्रुवम् ।।

(विष्णोः) विष्णु की (नाभिपद्म भुवा) नाभि कमल से उत्पन्न हुए (ब्रह्मणा) ब्रह्मा ने (गायत्र्याः शक्त्या एव) गायत्री शक्ति से ही (स्थावरं जंगमं) जड़ तथा चेतन (जगत्) संसार को (निर्मितं)बनाया (वैध्रुवम्) यह निश्चय है ।

अनादि परमात्म तत्व से ब्रह्म से यह सब कुछ उत्पन्न हुआ है । सृष्टि उत्पन्न करने का विचार उठते ही ब्रह्मा में एक स्फुरणा उत्पन्न हुई जिसका नाम है-शक्ति। शक्ति के द्वारा दो प्रकार की सृष्टि हुई एक जड़ दूसरी चैतन्य । जड़ सृष्टि का संचालन करने वाली शक्ति प्रकृति और चैतन्य सृष्टि को उत्पन्न करने वाली शक्ति का नाम सावित्री है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पुराणों में वर्णन मिलता है कि सृष्टि के आदि काल में भगवान की नाभि में से कमल उत्पन्न हुआ, कमल के पुष्प में से ब्रह्मा हुए, ब्रह्मा से सावित्री हुई, सावित्री और ब्रह्मा के संयोग से चारों वेद उत्पन्न हुए । वेद से समस्त प्रकार के ज्ञानों का उद्भव हुआ । तदनन्तर ब्रह्मा जी ने पंच भौतिक सृष्टि की रचना की । इस अलंकारिक गाथा का रहस्य यह है कि निर्लिप्त, निर्विकार, निर्विकल्प परमात्म तत्व की नाभि में से-केन्द्र भूमि में से- अन्तःकरण में से- कमल उत्पन्न हुआ और वह पुष्प की तरह खिल गया । श्रुति में कहा है कि सृष्टि के आरम्भ में परमात्मा की इच्छा हुई कि 'एकोऽहं बहुस्याम' मैं एक से बहुत हो जाऊँ । यह उसकी इच्छा, स्फुरणा, नाभिदेश में से निकल कर बाहर प्रस्फुटित हुई अर्थात् कमल की लतिका उत्पन्न हुई और उसकी कली खिल गई ।

इस कमल पुष्प पर ब्रह्मा उत्पन्न होते हैं । यह ब्रह्मा, सृष्टि निर्माण की त्रिदेव-शक्ति का प्रथम अंश है, आगे चल कर वह त्रिदेव-शक्ति उत्पत्ति, स्थिति और नाश का कार्य करती हुई ब्रह्मा, विष्णु, महेश के रूप में दृष्टिगोचर होगी । आरम्भ में कमल पुष्प पर केवल ब्रह्माजी ही प्रकट होते हैं क्योंकि सर्वप्रथम उत्पत्ति करने वाली शक्ति की आवश्यकता हुई ।

अब ब्रह्मा जी का कार्य आरम्भ होता है । उन्होंने दो प्रकार की सृष्टि उत्पन्न की, एक चैतन्य दूसरी जड़ । चैतन्य सृष्टि के अन्तर्गत वे सभी जीव आ जाते हैं जिनमें इच्छा, अनुभूति, अहंभावना पाई जाती है । चैतन्यता की एक स्वतंत्र सृष्टि है जिसे विश्व का प्राणमय कोष कहते हैं । निखिल विश्व में एक चैतन्य तत्व भरा हुआ है जिसे 'प्राण' नाम से पुकारा जाता है । विचार, संकल्पभाव, इस प्राण तत्व के तीन वर्ग हैं और सत्, रज, तम यह तीन इसके वर्ण हैं । इन्हीं तत्वों को लेकर आत्माओं के सूक्ष्म, कारण और लिंग शरीर बनते हैं । सभी प्रकार के प्राणी इसी प्राण तत्व से चैतन्यता एवं जीवन सत्ता प्राप्त करते हैं ।

जड़ सृष्टि के निर्माण के लिए ब्रह्मा जी ने पंच-भूतों का निर्माण किया । पृथ्वी, जल, वायु, तेज, आकाश के द्वारा विश्व के सभी परमाणुमय पदार्थ बने । ठोस, द्रव, गैस, इन्हीं तीनों रूपों में प्रकृति के परमाणु अपनी गतिविधि जारी रखते हैं । नदी, पर्वत, धातु, धरती आदि का सभी पसारा इन पंच भौतिक परमाणुओं का खेल है । प्राणियों के स्थूल शरीर भी इन्हीं प्रकृति जन्य पंच तत्वों के बने होते हैं ।

क्रिया दोनों सृष्टियों में है । प्राणमय चैतन्य सृष्टि में अहंकार, संकल्प और प्रेरणा की गतिविधियाँ विविध रूपों में दिखाई पड़ती हैं । भूत मय-जड़ सृष्टि में, शक्ति, हलचल और सत्ता इन आधारों के द्वारा विविध प्रकार के रंग रूप, आकार प्रकार बनते बिगड़ते रहते हैं। जड़ सृष्टि का आधार परमाणु और चैतन्य सृष्टि का आधार संकल्प है । दोनों ही आधार अत्यन्त सूक्ष्म और अत्यन्त बलशाली हैं, इनका नाश नहीं होता केवल रूपान्तर होता रहता है ।

जड़ चेतन सृष्टि के निर्माण में ब्रह्मा की दो शक्तियाँ काम कर रही हैं (१) संकल्प शक्ति, (२) परमाणु शक्ति । इन दोनों में प्रथम संकल्प शक्ति की आवश्यकता हुई, क्योंकि बिना उसके चैतन्य का आविर्भाव न होता और बिना चैतन्य के परमाणु का उपयोग किसलिए होता । अचैतन्य सृष्टि तो अपने आप में अन्धकार मय थी, क्योंकि न तो उसका किसी को ज्ञान होता और न उसका कोई उपयोग होता । 'चैतन्य' के प्रकटीकरण की सुविधा के लिए उसकी साधन सामग्री के रूप में 'जड़' का उपयोग होता है । अस्तु आरम्भ में ब्रह्माजी ने चैतन्य बनाया, ज्ञान का संकल्प का आविष्कार किया, पौराणिक भाषा में यों कहिए कि सर्वप्रथम वेदों का उद्घाटन हुआ ।

पुराणों में वर्णन मिलता है कि ब्रह्मा के शरीर से एक सर्वाङ्ग सुन्दर तरुणी उत्पन्न हुई, यह उनके अंग से उत्पन्न होने के कारण उनकी पुत्री हुई । इस तरुणी की सहायता से उन्होंने अपना सृष्टि निर्माण कार्य जारी रखा । इसके पश्चात् उस अकेली रूपवती युवती को देखकर उनका मन विचलित हो गया और उन्होंने उससे पत्नी के रूप में रमण किया । इस मैथुन से मैथुनी संयोगज-परमाशुमवी-पंच भौतिक सृष्टि उत्पन्न हुई । इस कथा के आलंकारिक रूप को, रहस्यमय पहेली को न समझ कर कई व्यक्ति अपने मन में प्राचीन

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तथ्यों को उथली और अश्रद्धा की दृष्टि से देखते हैं । वे यह भूल जाते हैं कि ब्रह्मा कोई मनुष्य नहीं है और न उससे उत्पन्न हुई शक्ति पुत्री या स्त्री है और न पुरुष स्त्री की तरह उनके बीच में समागम होता है । यह तो सृष्टि निर्माण काल के तथ्य को गूढ़ पहेली के रूप में आलंकारिक ढंग से प्रस्तुत करके कवि ने अपनी कलाकारिता का परिचय दिया है ।

ब्रह्मा, निर्विकार परमात्मा की वह शक्ति है जो सृष्टि का निर्माण करती है । इस निर्माण कार्य को चालू रखने के लिए उसकी दो भुजाएँ हैं जिसे संकल्प शक्ति तथा परमाणु शक्ति कहते हैं । संकल्प शक्ति, सतोगुण सम्भव है, उच्च आत्मिक तत्वों से सम्पन्न है इसलिए उसे सुकोमल, शिशु सी पवित्र पुत्री कहा है । यही पुत्री गायत्री है । अब इस दिशा में कार्य हो चुका । चैतन्य तत्वों का निर्माण हो चुका तो ब्रह्मा जी ने अपनी निर्माण शक्ति की सहायता से मैथुनी सृष्टि को संयोगज परमाणु प्रक्रिया को, आरम्भ कर दिया, तब वह स्त्री के रूप में पत्नी के रूप में कही गई तब उसका नाम सावित्री हुआ इस प्रकार गायित्री और सावित्री पुत्री तथा पत्नी के नाम से प्रसिद्ध हुईं ।

गायत्री सूक्ष्म शक्तियों का स्रोत है

पिछले पृष्ठों पर बतलाया जा चुका है कि एक अव्यय, निर्विकार, अजर-अमर परमात्मा को 'एक से अधिक हो जाने' की इच्छा हुई । ब्रह्म में स्फुरण हुआ कि 'एकोऽहं बहुस्याम' मैं अकेला हूँ बहुत हो जाऊँ । उसकी यह इच्छा ही शक्ति बन गई । इस इच्छा स्फुरणा या शक्ति को ही ब्रह्मपत्नी कहते हैं । इस प्रकार ब्रह्म एक से दो हो गया । अब उसे लक्ष्मी नारायण, सीताराम, राधेश्याम, उमामहेश, शक्ति-शिव, मायाब्रह्म, प्रकृति परमेश्वर आदि नामों से पुकारने लगे ।

इस शक्ति के द्वारा अनेक पदार्थों तथा प्राणियों का निर्माण होना था, इसलिए उसे भी तीन भागों में अपने को विभाजित कर देना पड़ा, ताकि अनेक प्रकार के सम्मिश्रण तैयार हो सकें और विविध गुण, कर्म, स्वभाव वाले जड़ चेतन पदार्थ बन सकें ब्रह्म शक्ति के यह तीन टुकड़े-(१) सत्, (२) रज, (३) तम, इन तीन नामों से पुकारे जाते हैं । सत् का अर्थ है-ईश्वर दिव्य तत्व । तम का अर्थ है -निर्जीव पदार्थों में परमाणुओं का अस्तित्व । रज का अर्थ है जड़ पदार्थों और ईश्वरीय दिव्य तत्व के सम्मिश्रण से उत्पन्न हुई आनन्ददायक चैतन्यता । यह तीन तत्व स्थूल सृष्टि के मूल कारण हैं । इनके उपरान्त स्थूल उपादान के रूप में मिट्टी, पानी, हवा, अग्नि, आकाश ये पाँच स्थूल तत्व और उत्पन्न होते हैं । इन तत्वों के परमाणुओं तथा उनकी शब्द, रूप, रस, गन्ध, स्पर्श, तन्मात्राओं द्वारा दृश्य सृष्टि का सारा कार्य चलता है । प्रकृति के दो भाग हैं-सूक्ष्म प्रकृति जो शक्ति-प्रवाह के रूप में प्राण संचार के रूप में, काम करती है । वह सत्, रज, तममयी है । स्थूल प्रकृति जिससे दृश्य पदार्थों का निर्माण एवं उपयोग होता है, परमाणुमयी है । यह मिट्टी, पानी, हवा आदि स्थूल पञ्च तत्वों के आधार पर अपनी गतिविधि जारी रखती है ।

उपरोक्त पंक्तियों से पाठक समझ गये होंगे कि पहले एक ब्रह्म था, उसके स्फुरणा से आदि शक्ति का आविर्भाव हुआ । इस आदि शक्ति का नाम ही गायत्री है । जैसे ब्रह्मा ने अपने दो भाग कर लिये थे, वैसे ही आदि शक्ति गायत्री ने अपने तीन भाग कर लिये -(१) सत्-जिसे 'ह्रीं' या सरस्वती कहते हैं, (२) रज- जिसे 'श्रीं' या लक्ष्मी कहते हैं, (३) तम-जिसे 'क्लीं' या काली कहते हैं । वस्तुतः सत् और तम दो ही विभाग हुये थे । इन दोनों के मिलने से जो धारा उत्पन्न हुई वह रज कहलाती है । जैसे गंगा, यमुना जहाँ मिलती हैं, वहाँ उनकी मिश्रित धारा को सरस्वती कहते हैं । सरस्वती वैसे कोई पृथक नदी नहीं है, जैसे इन दो नदियों के मिलने से रज उत्पन्न हुआ और यह त्रिधा प्रकृति कहलाई ।

अद्वैतवाद, द्वैतवाद, त्रैतवाद का बहुत झगड़ा सुना जाता है, वस्तुतः वह समझने का अन्तर मात्र है । ब्रह्म, जीव, प्रकृति यह तीनों ही अस्तित्व में है । पहले एक ब्रह्म था यह ठीक है, इसलिए अद्वैतवाद भी ठीक है । पीछे ब्रह्म और शक्ति

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

(प्रकृति) दो हो गये, इसलिए द्वैतवाद भी ठीक है । प्रकृति और परमेश्वर के संस्पर्श से जो रसानुभूति और चैतन्यता मिश्रित रज सत्ता उत्पन्न हुई, वह जीव कहलाई । इस प्रकार ईश्वर, जीव, प्रकृति तीनों का अस्तित्व मानना भी ठीक है इस प्रकार त्रैतवाद भी ठीक है । मुक्ति होने पर जीव सत्ता नष्ट हो जाती है । इससे भी स्पष्ट है कि जीवधारी की जो वर्तमान सत्ता मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार के ऊपर आधारित है, एक मिश्रण मात्र है ।

तत्व दर्शन के गम्भीर विषय में प्रवेश करके आत्मा के सूक्ष्म विषयों पर प्रकाश डालने का यहाँ अवसर नहीं है । इन पंक्तियों में तो स्थूल और सूक्ष्म प्रकृति का भेद बताना था, क्योंकि विज्ञान के दो भाग यहाँ से होते हैं, मनुष्यों की द्विधा प्रकृति यहीं से बनती है । पञ्च तत्वों द्वारा काम करने वाली स्थूल प्रकृति का अन्वेषण करने वाले मनुष्य भौतिक विज्ञानी कहलाते हैं । उन्होंने अपने बुद्धि बल से पञ्च तत्वों के भेद उपभेदों को जानकर उनसे लाभ उठाने की अनेकों परिपाटियाँ ढूंढ़ निकालीं और उनसे अनेक लाभदायक साधन प्राप्त किये । रसायन, कृषि, विद्युत वाष्प, शिल्प, संगीत, भाषा, साहित्य, वाहन, गृह-निर्माण, चिकित्सा, शासन, खगोल विद्या, अस्त्र-शस्त्र, दर्शन, भू-परिशोध आदि अनेक प्रकार के सुख-साधन खोज निकाले और रेल, मोटर, तार, डाक, रेडियो, टेलीविजन, फोटो घड़ी आदि विविध वस्तुऐं बनाने के बड़े-बड़े यन्त्र निर्माण किये । धन, सुख, सुविधा और आराम के साधन सुलभ हुए । इन मार्ग से जो लाभ मिलता है, उसे शास्त्रीय भाषा में 'प्रेय' या 'भोग' कहते हैं । यह विज्ञान भौतिक विज्ञान कहलाता है । यह स्थूल प्रकृति के उपयोग की विद्या है ।

सूक्ष्म प्रकृति वह है, जो आद्य शक्ति गायत्री से उत्पन्न होकर सरस्वती, लक्ष्मी, दुर्गा में बंटती है । यह सर्व-व्यापिनी शक्ति निर्झरणी पञ्च तत्वों से कहीं अधिक सूक्ष्म है । जैसे नदियों के प्रवाह में जल की लहरों का वायु के आघात होने के कारण 'कलकल' से मिलती-जुलती ध्वनियाँ उठा करती हैं, वैसे ही सूक्ष्म प्रकृति की शक्ति धाराओं से तीन प्रकार की शब्द-ध्वनियाँ उठती हैं । सत् प्रवाह में 'ह्रीं', रज प्रवाह में श्रीं और तम प्रवाह में क्लीं शब्द से मिलती-जुलती ध्वनि उत्पन्न होती है । उससे भी सूक्ष्म ब्रह्म का ॐकार ध्वनि प्रवाह है । नाद योग की साधना करने वाले ध्यानमग्न होकर इन ध्वनियों को पकड़ते हैं और उनका सहारा पकड़ते हुए सूक्ष्म प्रकृति को भी पार करते हुए ब्रह्म सायुज्य तक जा पहुँचते हैं । यह योग-साधना-पथ गायत्री महाविज्ञान के तीसरे खण्ड में पाठकों के सामने प्रस्तुत किया जायगा ।

प्राचीन काल में हमारे पूज्यनीय पूर्वजों ने, ऋषि-मुनियों ने अपनी सुतीक्ष्ण दृष्टि से विज्ञान के इस सूक्ष्म तत्व को पकड़ा था, उसी की शोध और सफलता में अपनी शक्तियों को लगाया था । फलस्वरूप वे वर्तमान काल के यशस्वी भौतिक विज्ञान की अपेक्षा अनेक गुण लाभों से लाभान्वित होने में समर्थ हुए थे । वे आद्य शक्ति के सूक्ष्म शक्ति प्रवाहों पर अपना अधिकार स्थापित करते थे । यह प्रकट तथ्य है कि मनुष्य के शरीर में अनेक प्रकार की सूक्ष्म विद्युत शक्तियों के केन्द्र हैं, जिन्हें जागृत करने से अनेक प्रकार की शक्तियों का आविर्भाव होता है । हमारे ऋषिगण योग साधना द्वारा शरीर के विविध भागों में छिपे पड़े हुए शक्ति-केन्द्रों को, चक्रों को, ग्रन्थियों को, मातृकाओं को, ज्योतियों को, भ्रमरों को जगाते थे और उस जागरण से जो शक्ति-प्रवाह उत्पन्न होता था, उसे आद्य शक्ति के त्रिविध प्रवाहों में से जिसके साथ आवश्यकता होती थी उसके साथ सम्बन्धित कर देते थे । जैसे किसी रेडियो स्टेशन के ट्रांसमीटर यन्त्र का जब किसी दूसरे रेडियो स्टेशन के ध्वनिपेक्षक यन्त्र से सम्बन्ध स्थापित कर दिया जाता है तो दोनों की विद्युत शक्तियाँ सम श्रेणी की होने के कारण आपस में सम्बन्धित हो जाती हैं, तथा उन स्टेशनों के बीच आपसी वार्तालाप का, संवादों के आदान-प्रदान का सिलसिला चल पड़ता है । इसी प्रकार साधना द्वारा शरीर के अन्तर्गत छिपे हुए और तन्द्रित पड़े हुए केन्द्रों का जागरण करके सूक्ष्म प्रकृति के शक्ति प्रवाहों से सम्बन्ध स्थापित हो जाता है तो मनुष्य और आद्य शक्ति आपस में सम्बन्धित हो जाते हैं,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इस सम्बन्ध के कारण मनुष्य उसे आद्य शक्ति के गर्भ में भरे हुए रहस्यों को समझने लगता है और अपनी इच्छानुसार उसका उपयोग करके लाभान्वित हो सकता है । चूँकि संसार में जो कुछ है वह सब उस आद्य-शक्ति के भीतर है, इसलिए वह सम्बन्धित व्यक्ति भी संसार के सब पदार्थों और साधनों से अपना सम्बन्ध स्थापित कर सकता है ।

वर्तमान काल के वैज्ञानिक पञ्च तत्वों की सीमा तक सीमित स्थूल प्रकृति के साथ उसके परमाणुओं के साथ सम्बन्ध स्थापित करने के लिए बड़ी-बड़ी कीमती मशीनों का विद्युत वाष्प गैस, पेट्रोल आदि का प्रयोग करके कुछ आविष्कार करते हैं और थोड़ा-सा लाभ उठाते हैं । यह तरीका बड़ा श्रम साध्य, कष्ट साध्य, धन साध्य और समय साध्य है । उसमें खराबी, टूट-फूट और परिवर्तन की खटपट भी आये दिन लगी रहती है । उन यन्त्रों की स्थापना, सुरक्षा और निर्माण के लिए हर समय काम जारी रखना पड़ता है तथा उनका स्थान परिवर्तन तो और भी कठिन होता है । यह सब झंझट भारतीय योग विज्ञान के विज्ञान वेत्ताओं के सामने नहीं थे । वे बिना किसी यन्त्र की सहायता के तथा बिना संचालक, विद्युत, पेट्रोल आदि के केवल अपने शरीर के शक्ति केन्द्रों का सम्बन्ध सूक्ष्म प्रकृति से स्थापित करके ऐसे-ऐसे आश्चर्यजनक कार्य कर लेते थे, जिनकी सम्भावना तक को आज के भौतिक विज्ञानी समझने में समर्थ नहीं हो पा रहे हैं ।

महाभारत और लंका युद्ध में जो अस्त्र-शस्त्र व्यवहृत हुए थे उनमें से बहुत थोड़ों का धुंधला रूप अभी सामने आया है । रेडार गैस, बम, अश्रु बम, रोग कीटाणु बम, परमाणु बम, मृत्यु किरण आदि का धुंधला चित्र अभी तैयार हो पाया है । प्राचीन काल में मोहन शस्त्र, ब्रह्मपास, नागपास, वरुणास्त्र, आग्नेय वाण, शत्रु को मारकर तरकस में लौट आने वाले वाण आदि व्यवहृत होते थे, शब्द वेध का प्रचलन था । ऐसे अस्त्र-शस्त्र किन्हीं कीमती मशीनों से नहीं, मन्त्र बल से चलाये जाते थे । मन्त्र बल से 'कत्या' या 'घात' चलाई जाती थी । जो शत्रु को जहाँ भी वह छिपा हो ढूंढ़कर उसका संहार करती थी । लंका में बैठा हुआ रावण और अमेरिका में बैठा हुआ अहिरावण आपस में भली प्रकार वार्तालाप करते थे, उन्हें किसी रेडियो यन्त्र या ट्रांसमीटर की जरूरत न थी । विमान बिना पेट्रोल के उड़ते थे ।

अष्ट-सिद्धि और नव-निधियों का योग शास्त्रों में जगह-जगह पर वर्णित है । अग्नि में प्रवेश करना, जल पर चलना, वायु के समान तेज दौड़ना, अदृश्य हो जाना, मनुष्य को पशु-पक्षी और पशु-पक्षी से मनुष्य का शरीर बदल लेना, शरीर को बहुत छोटा या बड़ा, बहुत हल्का या भारी बना लेना, शाप से अनिष्ट उत्पन्न कर देना, वरदानों से उत्तम लाभों की प्राप्ति, मृत्यु को रोक लेना, पुत्रेष्ट-यज्ञ, भविष्य का ज्ञान, दूसरों के अन्तर की पहिचान, क्षण भर में यथेच्छ धन, ऋतु नगर, जीव-जन्तु गण-दानव आदि उत्पन्न कर लेना, समस्त ब्रह्माण्ड की हलचलों से परिचित होना, किसी वस्तु का रूपान्तर कर देना, भूख, प्यास, नींद, सर्दी, गर्मी पर विजय, आकाश में उड़ना आदि अनेकों आश्चर्य भरे कार्य केवल मन्त्र बल से, योग शक्ति से, आध्यात्म विज्ञान से होते थे और उस वैज्ञानिक प्रयोजन के लिए किसी प्रकार की मशीन, पेट्रोल, बिजली आदि की जरूरत न पड़ती थी । यह कार्य शारीरिक विद्युत और प्रकृति के सूक्ष्मप्रवाह का सम्बन्ध स्थापित कर लेने पर बड़ी आसानी से हो जाते थे । यह भारतीय विज्ञान था, जिसका आधार था-साधना ।

साधना द्वारा केवल तम तत्व के सम्बन्ध रखने वाले उपरोक्त प्रकार के भौतिक चमत्कार ही नहीं होते वरन् रज और सत् क्षेत्र के लाभ एवं आनन्द भी प्रचुर मात्रा में प्राप्त किये जा सकते हैं । हानि शोक, वियोग, आपत्ति, रोग, आक्रमण, विरोध, आघात आदि की विपन्न परिस्थितियों में पड़कर जहाँ साधारण मनोभूमि के लिए मृत्यु तुल्य मानसिक कष्ट पाते हैं, वहाँ आत्म-शक्तियों के उपयोग की विद्या जानने वाला व्यक्ति विवेक, ज्ञान, वैराग, साहस, आशा और ईश्वर विश्वास के आधार पर इन कठिनाइयों को हँसते-हँसते आसानी से काट लेता है और बुरी अथवा साधारण परिस्थितियों में भी अपने आनन्द को बढ़ाने का

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मार्ग ढूँढ़ निकाला है वह जीवन को इतनी मस्ती, प्रफुल्लता और मजेदारी के साथ बिताता है जैसी कि बेचारे करोड़पतियों को भी नसीब नहीं हो सकती । जिसका शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य, आत्मबल के कारण ठीक बना हुआ है, उसे बड़े-बड़े अमीरों से भी अधिक आनन्दमय जीवन बिताने का सौभाग्य अनायास ही प्राप्त हो जाता है । रज शक्ति का उपयोग जानने का यह लाभ भौतिक विज्ञान द्वारा मिलने वाले लाभों की अपेक्षा कहीं अधिक महत्वपूर्ण है ।

'सत्' तत्व के लाभों का वर्णन करना तो लेखनी और वाणी दोनों की ही शक्ति के बाहर है । ईश्वरीय दिव्य तत्वों की जब आत्मा में वृद्धि होती है तो दया, करुणा, प्रेम, मैत्री, त्याग, सन्तोष, शान्ति, सेवा-भाव, आत्मीयता, सत्यनिष्ठा, ईमानदारी, संयम, नम्रता, पवित्रता, श्रमशीलता, धर्म परायणता आदि सद्गुणों की मात्रा दिन-दिन बड़ी तेजी से बढ़ती जाती है । फलस्वरूप संसार में उसके लिये प्रशंसा, कृतज्ञता, प्रत्युपकार, श्रद्धा, सहायता, सम्मान के भाव बढ़ते हैं और उसे प्रत्युपकार से सन्तुष्ट करते रहते हैं । इसके अतिरिक्त यह सद्गुण स्वयं इतने मधुर हैं कि जिस हृदय में इनका निवास होता है, वहीं आत्म-सन्तोष की शीतल निर्झरिणी सदा बहती रहती है । ऐसे लोग चाहे जीवित अवस्था में हों, चाहे मृत अवस्था में, उन्हें जीवन मुक्ति स्वर्ग, परमानन्द, ब्रह्मानन्द, आत्म दर्शन, प्रभु-प्राप्ति, ब्रह्म-निर्माण, तुरीयावस्था, निर्विकल्प समाधि का सुख प्राप्त होता रहता है । यही तो जीवन का लक्ष्य है । इसे पाकर आत्मा परम-तृप्ति के आनन्द-सागर में निमग्न हो जाती है ।

आत्मिक, मानसिक और सांसारिक तीनों ही प्रकार के सुख-साधन, आद्य शक्ति गायत्री की सत्, रज, तममयी धाराओं तक पहुँचने वाला साधक सुगमतापूर्वक प्राप्त कर सकता है । सरस्वती, लक्ष्मी और काली सिद्धियाँ पृथक-पृथक भी की जाती हैं पाश्चात्य देशों के भौतिक विज्ञानी 'क्लीं' तत्व को काबी शक्ति का अन्वेषण, आराधना करने में निमग्न हैं । बुद्धिजीवी, धर्म-प्रचारक, सुधारवादी, गांधीवादी, समाज-सेवी, व्यापारी श्रमिक, उद्योगी, समाजवादी, कम्युनिस्ट यह 'श्रीं शक्ति की सुव्यवस्था में लक्ष्मी की आयोजन में लगे हुए हैं । योगी, ब्रह्मवेत्ता अध्यात्मवादी, तत्वदर्शी, भक्त, दार्शनिक, परमार्थी, व्यक्ति 'ह्रीः' तत्व की, सरस्वती की आराधना कर रहे हैं । यह तीनों ही वर्ग गायत्री की आद्यशक्ति के एक-एक चरण के उपासक हैं । गायत्री को 'त्रिपदी' कहा है । उसके तीन चरण हैं । यह त्रिवेणी उपरोक्त तीनों ही प्रयोजनों को पूरा करने वाली है । माता बालक के सभी काम करती है । आवश्यकतानुसार वह उसके लिए महतर का, रसोइये का, कहार का, दाई का, घोड़े का, दाता का, दर्जी का, धोबी का, चौकीदार का काम बजा देती है । वैसे ही जो लोग आत्म-शक्ति को आद्य शक्ति के साथ जोड़ने की विद्या को जानते हैं, वे अपने को सुसन्तति सिद्ध करते हैं, वे गायत्री रूपी सर्वशक्तिमान माता से यथेच्छ लाभ प्राप्त कर लेते हैं ।

शक्ति की अधिष्ठात्री - त्रिपदा गायत्री

संसार के समस्त दुःखों के तीन प्रधान कारण हैं-(१) अज्ञान, (२) अभाव, (३) अशक्ति । सत्, रज, तम की त्रिविधि प्रकृति से मनुष्य का निर्माण हुआ है । वस्तुतः सत्ता दो की है । सत् और तम की । रज की उत्पत्ति तो दोनों के सम्मिश्रण से होती है । दुःखों के कारणों में भी प्रधान दो ही हैं- अज्ञान और अशक्ति । अभाव तो उनकी परिणति है । गायत्री की तीन शक्ति धाराएँ हैं- ह्रीं, श्रीं और क्लीं । ह्रीं सद्ज्ञान की, श्रीं वैभव की और क्लीं शक्ति की बल की प्रतीक है ।

सत्-रज-तम से बनी काया को आवश्यकता तीनों ही शक्ति धाराओं की है । इनमें किसी का भी महत्व कम नहीं है । तीनों का सन्तुलन आवश्यक है । जीवन निर्वाह के लिए जितना महत्व ज्ञान का है उतना ही साधनों एवं शक्ति का । एक भी पक्ष छोड़ा नहीं जा सकता । गायत्री महामन्त्र में तीनों शक्ति धाराओं का समान रूप में समावेश है ।

ह्रीं को सत् या सरस्वती कहते हैं। ज्ञान की अधिष्ठात्री के रूप में माँ सरस्वती की अभ्यर्थना,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उपासना भारतीय संस्कृति में सदियों से होती चली आ रही है । तत्वेत्ता ऋषि इस तथ्य से अवगत थे कि सद्ज्ञान के बिना मनुष्य का कल्याण सम्भव नहीं । इसलिए उन्होंने गायत्री मन्त्र का आश्रय लिया । सद्ज्ञान की ओर ले चलने वाला सर्व समर्थ मन्त्र घोषित किया । यह ऋषियों की परम्परा रही है कि ज्ञान एवं शक्ति धाराओं को उत्पन्न करने वाली दैवी शक्तियों को 'माँ' के रूप में विभूषित किया जाता है । तत्वज्ञानियों की शृंखला में आने वाले प्रत्येक महामानव ने गायत्री के ह्रीं सत् शक्ति की उपासना द्वारा असाधारण सामर्थ्य प्राप्त की है । चाहे वह रामकृष्ण परमहंस हों अथवा योगीराज अरविन्द । महर्षि दयानन्द हों अथवा महर्षि रमण । विवेकानन्द से लेकर स्वामी रामतीर्थ तक सभी के ऊपर माँ सरस्वती का वरदहस्त रहा है । ज्ञान सम्पदा का अनुग्रह, आत्मज्ञान की प्राप्ति गायत्री महाशक्ति द्वारा सम्भव हो सकी है ।

अन्यान्य सभी प्रकार की सम्पदाओं की अपेक्षा ज्ञान की महत्ता सर्वोपरि है । इसके अभाव में जीवन यों ही अस्त-व्यस्त बना रहता और मूल्यवान मनुष्य जीवन निरर्थक चला जाता है । अपनी गरिमा एवं लक्ष्य का बोध न रहने से ईश्वर प्रदत्त क्षमताओं का सदुपयोग नहीं हो पाता । उपभोग की पशु-प्रवृत्ति के कारण सदा असन्तोष ही बना रहता है । अज्ञान के रहते मनुष्य काम, क्रोध, लोभ, मोह की संकीर्ण परिधि से बाहर नहीं निकल पाता । अपनी संकीर्ण प्रवृत्तियाँ ही उलटकर हमला करती और मनुष्य को चैन से बैठने नहीं देती हैं । वासना, तृष्णा एवं अर्हता की पूर्ति के लिए असन्तुष्ट बना वह वस्तुओं के पीछे पागल के समान भागता है ।

अज्ञान ही समस्त दुःखों की जननी है जिसके रहते मनुष्य सम्पन्नता का लाभ नहीं उठा सकता । सुख तो दूर रहा, मिली सम्पदा दुःखदायी बोझ के तुल्य सिद्ध होती है । इस सत्य को वर्तमान में सर्वत्र देखा जा सकता है । सम्पन्नता साधनों की दृष्टि से आज का मनुष्य भूतकाल की तुलना में बहुत आगे है । सारा संसार ही सिमट कर एक छोटे घेरे में आ गया है, यह साधनों का ही चमत्कार है । बुद्धि का भी असामान्य विकास हुआ है किन्तु अन्तः में निवास करने वाले 'धी' तत्व में भारी कमी आयी है । प्रज्ञा का स्थान बुद्धि की जड़ता ने ले लिया है । फलतः बुद्धि भी जड़वाद की ही पक्षधर बनती चली जा रही है । समर्थन जब जड़ को मिला है तो चेतना की गरिमा की बात क्यों कर समझ में आये । साधनों के संग्रह की आपाधापी में विश्व मानस ने चेतना की महत्ता को लगभग भुला दिया है ।

लोकमान्य तिलक कहते हैं "जिस बहुमुखी दासता के बन्धनों में मानव जाति जकड़ी हुई है उसका अन्तः राजनैतिक संघर्ष करने मात्र से न हो जायेगा । उसके लिए आत्मा के अन्दर प्रकाश उत्पन्न होना चाहिए जिससे सत् और असत् का विवेक जागे । कुमार्ग को छोड़कर श्रेष्ठ मार्ग पर चलने की प्रेरणा मिले, गायत्री मन्त्र में यही भावना विद्यमान है । इस तथ्य को जानते हुए योगीजन, ब्रह्मवेत्ता, अध्यात्मवादी, तत्वदर्शी, जीवन साधक, दार्शनिक, परमार्थी व्यक्ति प्रकारान्तर से ह्रीं तत्व की - सरस्वती की ही आराधना-उपासना करते रहते हैं । इन सबका विभिन्न माध्यमों से एकमात्र लक्ष्य है- मनुष्य को असत् से सत् की ओर ले चलना ।

गायत्री उपासना से आत्मिक आवश्यकताओं की ही मात्र पूर्ति नहीं होती । अपितु भौतिक साधनों की भी आपूर्ति होती है । गायत्री की श्रीं शक्ति धारा द्वारा भौतिक साधन सम्बर्धन की सुसम्पदा अर्जन की विवेक बुद्धि प्राप्त होती है । यह स्वाभाविक है कि प्रगति के प्रयास तो भौतिक स्तर पर ही करने पड़ेंगें । पर उन पर विवेक का अंकुश होने से भटकाव की गुंजाइश नहीं रहती । ऐसी योग्यता, प्रतिभा सृजनात्मक दिशा में ही नियोजित होती है । व्यक्ति एवं समाज के सामूहिक उत्थान की ही बात रुचती है । गायत्री की श्रीं लक्ष्मी शक्ति धारा विभूतियों की अधिष्ठात्री है । श्रीं तत्व के उपासक को अपना ही स्वार्थ अभीष्ट नहीं होता वरन् वह सम्पूर्ण समाज की प्रगति की बात सोचता है । सामूहिक विकास में ही उसे अपना सच्चा स्वार्थ दीखता है । उसके सारे प्रयास उसी दिशा में लगे रहते हैं । बुद्धिवादी, धर्म-प्रचारक, सुधारवादी, समाज सेवी श्रीं शक्ति की सुव्यवस्था में लगकर लक्ष्मी के उपार्जन में सफल हो पाते हैं । गायत्री की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

श्रीं शक्तिधारा में व्यक्ति एवं समाज के भौतिक विकास के सभी समाधान विद्यमान हैं । वैभव की वृद्धि ही नहीं उनका सदुपयोग सम्पूर्ण मानव जाति के लिए किस प्रकार किया जा सकता है, वह विवेक बुद्धि भी गायत्री उपासना से ही मिलती है । यही कारण है कि सच्चा गायत्री उपासक साधन सम्पन्न होते हुए भी निर्लिप्त बना रहता है । अपने लिए कम से कम साधनों का उपयोग करता है । व्यापक स्तर पर विद्यमान अभाव, दरिद्रता के निवारण में ही उसे शाश्वत आनन्द की अनुभूति होती है ।

श्रीं तत्व की अवहेलना करने वाला व्यक्ति संकीर्ण बनता है । व्यक्तिगत उपभोग के लिए ही वह सारे ताने-बाने बुनता है । समाज से उपार्जित सम्पत्ति का वह संग्रह तो करता है, पर उसका उपयोग स्वयं करता है । इसके विपरीत श्रीं तत्व का उपासक लक्ष्मी का सच्चा साधक सम्पत्ति का मोह नहीं रखता । उसे उपभोग में नहीं, सम्पत्ति के सदुपयोग में आनन्द आता है । समाज की उन्नति के लिए वह अपनी सम्पत्ति सहर्ष समर्पित करता है ।

गायत्री का 'क्लीं' तत्व भौतिक सामर्थ्य का प्रतीक है । उसे ही गायत्री की शक्ति धाराओं में 'काली' के रूप में अलंकृत किया गया है । ज्ञान एवं साधन हो किन्तु शक्ति न हो उनका उपयोग नहीं बन पड़ता । शक्ति रहित व्यक्ति के पास साधन भी अधिक दिन तक टिके नहीं रह सकते । कमजोर, अशक्त न तो अपनी सुरक्षा रख सकता है न ही अपनी सम्पदा का । शक्ति के अभाव में अर्जित ज्ञान का भी लाभ नहीं मिल पाता । इसी कारण ऋषियों ने ज्ञान सम्पादन ही नहीं शक्ति संचय पर भी जोर दिया है ।

मानवी अन्तराल में ऐसे शक्ति केन्द्र छिपे पड़े हैं जिनको जागृत किया जा सके तो मनुष्य शक्ति का पुंज बन सकता है । वे सुषुप्तावस्था में पड़े हैं । 'क्लीं' की महाकाली की उपासना द्वारा इन शक्ति केन्द्रों को जागृत किंया जा सकता है । कुण्डलिनी जागरण इस क्लीं शक्ति की आराधना की ही फलश्रुति है । अन्तः जागरण की इस प्रक्रिया से इतनी सामर्थ्य प्राप्त की जा सकती है जितनी कि परमाणु द्वारा भी नहीं हो सकी है ।

अज्ञान, अभाव एवं अशक्ति के निवारण हेतु त्रिपदा गायत्री की तीन शक्ति धाराओं ह्रीं, श्रीं, और क्लीं की उपासना की जानी चाहिए । ज्ञान, सम्पदा एवं शक्ति के तीनों ही अनुदान आद्य शक्ति गायत्री की ही अनुकम्पा से मिलते हैं । इस महाशक्ति का अंचल श्रद्धापूर्वक पकड़ा जा सके तो अज्ञान, अभाव एवं अशक्ति की स्थिति ही समाप्त हो जाय, ज्ञान, वैभव एवं सामर्थ्य की त्रिवेणी साधक में फूट पड़े ।

गायत्री साधना से शक्ति-कोशों का उद्भव

पिछले पृष्ठों में बताया जा चुका है कि गायत्री कोई देवी-देवता, भूत-पलीत आदि नहीं वरन् ब्रह्मा की स्फुरणा से उत्पन्न हुई आद्य शक्ति है, जो संसार के प्रत्येक पदार्थ का मूल कारण है और उसी के द्वारा जड़, चेतन, सृष्टि में गति, शक्ति, प्रगति प्रेरणा एवं परिणति होती है जैसे घर में रखे हुए रेडियो का यन्त्र सम्बन्ध विश्व व्यापी ईथर तरंगों से स्थापित करके देश-विदेशों में होने वाले प्रत्येक ब्राडकास्ट को सरलता पूर्वक सुन सकते हैं उसी प्रकार आत्म-शक्ति का विश्वव्यापी गायत्री शक्ति से सम्बन्ध स्थापित करके सूक्ष्म प्रकृति की सभी हलचलों को जान सकते हैं और उस सूक्ष्म शक्ति को इच्छानुसार मोड़ने की कला विदित हो जाने पर सांसारिक, मानसिक और आत्मिक क्षेत्र में प्राप्त हो सकने वाली सभी सम्पत्तियों को प्राप्त कर सकते हैं । जिस मार्ग से यह सब हो सकता है, उसका नाम है साधना ।

कई व्यक्ति सोचते हैं-'हमारा उद्देश्य ईश्वर-प्राप्ति, आत्म-दर्शन और जीवन-मुक्ति है, हमें गायत्री के सूक्ष्म प्रकृति के चक्कर में पढ़ने से क्या प्रयोजन ? हमें तो केवल ईश्वराधना करनी चाहिए ।' ऐसा सोचने वालों को जानना चाहिये कि ब्रह्मा सर्वथा निर्विकार, निर्लेप, निरंजन, निराकार गुणातीत है । वह न किसी से प्रेम करता है न द्वेष । वह केवल दृष्टा एवं कारण रूप है, उस तक सीधी पहुँच नहीं हो सकती क्योंकि जीव और ब्रह्मा के बीच सूक्ष्म प्रकृति का सघन आच्छादन है । इस

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आच्छादन को पार करने के लिए प्रकृति के साधनों से ही कार्य करना पड़ेगा । मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार, कल्पना, ध्यान, सूक्ष्म शरीर, षट् चक्र इष्टदेव की ध्यान. प्रतिमा, भक्ति भावना, उपासना, व्रत, अनुष्ठान, साधन यह सब भी तो माया निर्मित ही हैं । इन सबको छोड़कर ब्रह्म-प्राप्ति किस प्रकार होनी सम्भव है ? जैसे ऊपर आकाश में पहुँचने के लिए वायुयान की आवश्यकता पड़ती है, वैसे ही ब्रह्म-प्राप्ति के लिए भी प्रतिमूलक आराधना का ही आश्रय लेना पड़ता है । गायत्री के आचरण में होकर पार जाने पर ही ब्रह्म का साक्षात्कार होता है । सच तो यह है कि साक्षात्कार का अनुभव गायत्री के गर्भ में ही होता है इससे ऊपर पहुँचने पर सूक्ष्म इन्द्रियाँ और उनकी अनुभव शक्ति भी लुप्त हो जाती है । इसलिए मुक्ति और ईश्वर-प्राप्ति चाहने वाले भी गायत्री मिश्रित ब्रह्म की राधेश्याम, सीताराम, लक्ष्मी नारायण की ही उपासना करते हैं । निर्विकार ब्रह्म का सायुज्य तो तभी होगा, जब ब्रह्म 'बहुत से एक होने' की इच्छा करेगा और सब आत्माओं को समेट कर अपने में धारण कर लेगा । उससे पूर्व सब आत्माओं का सविकार ब्रह्म में ही सामीप्य, सारूप्य, सायुज्य आदि हो सकता है । इस प्रकार गायत्री मिश्रित सविकार ब्रह्म ही हमारा उपास्य रह जाता है । उसकी प्राप्ति के साधन जो भी होंगे, वे सभी सूक्ष्मप्रकृति गायत्री द्वारा ही होंगे । इसलिए ऐसा सोचना उचित नहीं कि ब्रह्म प्राप्ति के लिये गायत्री अनावश्यक है । वह तो अनिवार्य है । नाम से कोई उपेक्षा या विरोध करें यह उनकी इच्छा पर गायत्री तत्व से बचकर अन्य मार्ग से जाना असम्भव है ।

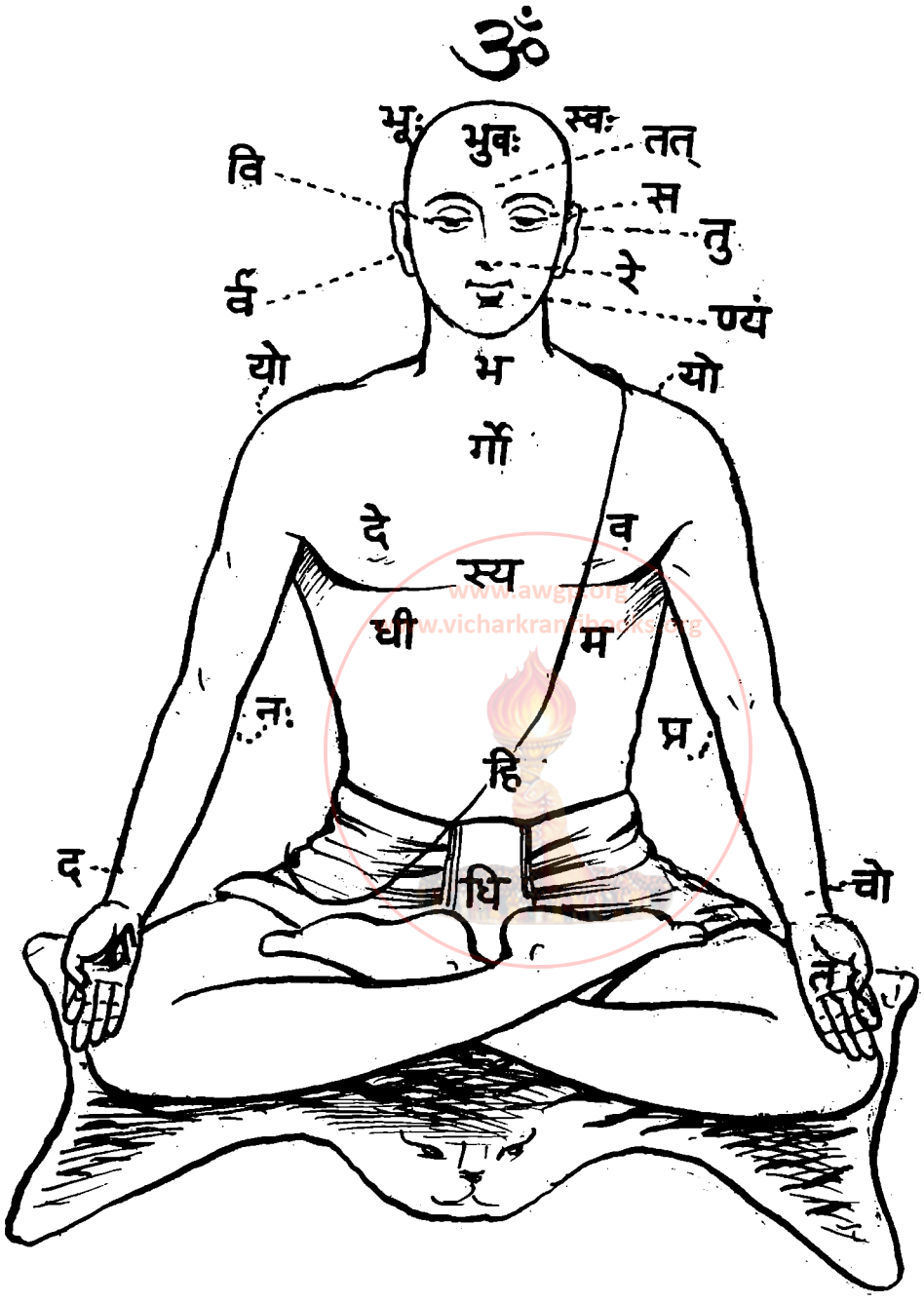
कई व्यक्ति कहते हैं कि हम निष्काम साधना करते हैं । हमें किसी फल की कामना नहीं, फिर सूक्ष्म प्रकृति का आश्रय क्यों लें ? ऐसे लोगों को जानना चाहिये कि निष्काम साधना का अर्थ भौतिक लाभ न चाह कर आत्मिक साधना का है । बिना परिणाम सोचे या चाहे तो किसी कार्य में प्रवृत्ति ही नहीं हो सकती, यदि कुछ किया भी जाय तो उनसे समय एवं शक्ति के अपव्यय के अतिरिक्त और कुछ परिणाम नहीं निकलता, निष्काम कर्म का तात्पर्य दैवी, सतोगुणी, आत्मिक कामनाओं से है । ऐसी कामनाएँ भी गायत्री के प्रथम पाद में, 'ह्रीं' तत्व में, सरस्वती भाग में आती हैं । इसलिए निष्काम भाव की उपासना भी गायत्री-क्षेत्र से बाहर नहीं है ।

मन्त्र विद्या के वैज्ञानिक जानते हैं कि जीभ से जो भी शब्द निकलते हैं, उनका उच्चारण कण्ठ, तालु, मूर्धा, ओष्ठ, दन्त, जिह्वा, मूल आदि मुख के विभिन्न अंगों द्वारा होता है । इस उच्चारण काल में मुख के जिन भागों से ध्वनि निकली है, उन अंगों के नाड़ी तन्तु शरीर के विभिन्न भागों तक फैलते हैं । इस फैलाव क्षेत्र में कई सूक्ष्म ग्रन्थियाँ होती हैं, जिन पर उस उच्चारण का दबाव पड़ता है । जिन लोगों की कोई सूक्ष्म ग्रन्थियाँ रोगी या नष्ट हो जाती हैं, उनके मुख से कुछ खास शब्द अशुद्ध या रुक-रुककर निकलते हैं, इसी को हकलाना या तुतलाना कहते हैं । शरीर में अनेकों छोटी बड़ी दृश्य-अदृश्य ग्रन्थियाँ होती हैं । योगी लोग जानते हैं कि उन कोषों में कोई विशेष शक्ति-भण्डार छिपा रहता है । सुषुम्ना से सम्बन्ध षट्चक्र प्रसिद्ध हैं, ऐसी अगणित अनेकों ग्रन्थियाँ शरीर में हैं । विविध शब्दों का उच्चारण इन विविध ग्रन्थियों पर अपना प्रभाव डालता है और उस प्रभाव से उन ग्रन्थियों का शक्ति भण्डार जागृत होता है । मन्त्रों का गठन इसी आधार पर हुआ है । गायत्री मन्त्र में २४ अक्षर हैं । इनका सम्बन्ध शरीर में स्थित ऐसी २५ ग्रन्थियों से है, जो जागृति होने पर सद्बुद्धि प्रकाशक शक्तियों को सतेज करती हैं । गायत्री मन्त्र के उच्चारण से सूक्ष्म शरीर का सितार २४ स्थानों से झंकार देता है और उससे एक ऐसी स्वर-लहरी उत्पन्न होती है, जिसका प्रभाव अदृश्य जगत के महत्वपूर्ण तत्वों पर पड़ता है । यह प्रभाव ही गायत्री-साधना के फलों का प्रभाव हेतु है ।

शब्दों का ध्वनि-प्रवाह तुच्छ चीज नहीं है । शब्द-विद्या के आचार्य जानते हैं कि शब्द में कितनी शक्ति है और उसकी अज्ञात गतिविधि के द्वारा क्या-क्या परिणाम उत्पन्न हो सकते हैं ? शब्द को ब्रह्म कहा गया है । ब्रह्म की स्फुरणा कम्पन उत्पन्न करती है। वह कम्पन ब्रह्मा से टकराकर ॐ ध्वनि के सात बार ध्वनित होता रहता है । जैसे दीवाल घड़ी का लटकन घंटा पैण्डुलम झूमता हुआ घड़ी के पुर्जों में चाल पैदा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org



Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

करता रहता है, इसी प्रकार वह ॐकार ध्वनि प्रवाह सृष्टि को चलाने वाली गति पैदा करता है । आगे चलकर उस प्रवाह में 'ह्रीं', श्रीं, क्लीं, की तीन प्रधान सत्, रज, तममयी धाराएँ बहती हैं। तदुपरान्त उसकी और भी शाखा-प्रशाखाएँ हो जाती हैं, जो बीज मन्त्र के नाम से पुकारी जाती हैं । यह ध्वनियाँ अपने-अपने क्षेत्र में सृष्टि कार्यों का संचालन करती हैं। इस प्रकार सृष्टि का संचालन कार्य शब्द तत्त्व द्वारा होता है । ऐसे तत्व को तुच्छ नहीं कहा जा सकता । गायत्री की शब्दावली ऐसे चुने हुए शृंखलाबद्ध शब्दों से बनाई गई है, जो क्रम और गुम्फन की विशेषता के कारण अपने ढंग की एक अद्भुत ही शक्ति प्रवाह उत्पन्न करती है ।

दीपक-राग गाने से बुझे हुए दीपक जल उठते हैं, मेघ मल्हार गाने से वर्षा होने लगती है, वेणु-नाथ सुनकर सर्प लहराने लगते हैं, मृग सुधि-बुधि भूल जाते हैं, गायें अधिक दूध देने लगती हैं । कोयल की बोली सुनकर कास-भाव जागृत हो आते हैं । सैनिकों के कदम मिलाकर चलने की शब्द ध्वनि से लोहे के पुल तक गिर सकते हैं, इसलिए पुलों को पार करते समय सेना को कदम मिलाकर न चलने की हिदायत कर दी जाती है । अमेरिका के डाक्टर हचिंसन ने विविध संगीत ध्वनियों से अनेक असाध्य और कष्ट साध्य रोगियों को अच्छा करने में सफलता और ख्याति प्राप्त की है । भारतवर्ष में तांत्रिक लोग थाली को घड़े पर रख कर एक विशेष गति से बजाते हैं और उस बाजे से सर्प, बिच्छू आदि जहरीले जानवरों के काटे हुए कण्ठमाला, विषवेल, भूतोन्माद आदि के रोगी बहुत करके अच्छे हो जाते हैं। कारण यह है कि शब्दों के कम्पन सूक्ष्म प्रकृति से अपनी जाति के अन्य परमाणुओं को लेकर ईश्वर का परिभ्रमण करते हुए जब अपने उद्गम केन्द्र पर कुछ ही क्षणों में लौट आते हैं तो उनमें अपने प्रकार की एक विशेष विद्युत शक्ति भरी होती है और परिस्थिति के अनुसार उपयुक्त क्षेत्र पर उस शक्ति का एक विशिष्ट प्रभाव पड़ता है । मन्त्रों द्वारा विलक्षण कार्य होने का भी यही कारण है । गायत्री मन्त्र द्वारा भी इसी प्रकार शक्ति का आविर्भाव होता है । मन्त्रोच्चारण में मुख के जो अंग क्रियाशील होते हैं, उन भागों के नाड़ी-तन्तु कुछ विशेष ग्रन्थियों को गुदगुदाते हैं ; उनमें स्फुरणा होने से एक वैदिक छंद का क्रमबद्ध यौगिक संगीत प्रवाह ईथर तत्व में फैलता है और अपनी कुछ क्षणों में पूरी होने वाली विश्व परिक्रमा से वापिस आते-आते एक स्वजातीय तत्वों की सेना वापिस ले आता है, जो अभीष्ट उद्देश्य की पूर्ति में बड़ी सहायक होती है । शब्द संगीत के शक्तिमय कम्पनों का पञ्च भौतिक प्रवाह और आत्म-शक्ति की सूक्ष्म प्रकृति की भावना, साधना-आराधना के आधार पर उत्पन्न किया गया सम्बन्ध, दोनों ही कारण गायत्री-शक्ति को ऐसी बलबान बनाते हैं, जो साधकों के लिये देवी वरदान सिद्ध होती है ।

गायत्री मन्त्र को और भी अधिक सूक्ष्म बनाने वाला कारण है साधक का 'श्रद्धामय विश्वास' । विश्वास की शक्ति से सभी मनोविज्ञान वेत्ता परिचित हैं । हम अपनी पुस्तकों और लेखों में ऐसे असंख्य उदाहरण अनेकों बार दे चुके हैं, जिनसे सिद्ध होता है कि केवल विश्वास के आधार पर लोग केवल भय की बजह से अकारण काल के मुख में चले गये और विश्वास के कारण मृत प्रायः लोगों ने नवजीवन प्राप्त किया । रामायण में तुलसीदास जी ने 'भवानी शंकरौ बन्दे श्रद्धा विश्वास रूपिणौ,' गाते हुए श्रद्धा और विश्वास को भवानी शंकर की उपमा दी है । झाड़ी को भूत, रस्सी को सर्प, मूर्ति को देवता बना देने की क्षमता विश्वास में है । लोग अपने विश्वासों की रक्षा के लिये धन, आराम तथा प्राणों तक को हँसते-हँसते गँवा देते हैं। एकलव्य, कबीर आदि के ऐसे अनेक उदाहरण हैं, जिनसे प्रकट है कि गुरु द्वारा नहीं, केवल अपनी श्रद्धा के आधार पर गुरु द्वारा प्राप्त होने वाली शिक्षा से भी अधिक विज्ञ बना जा सकता है। हिप्नोटिज्म का आधार रोगी को अपने बचन पर विश्वास कराके इससे मनमाने कार्य करा लेना ही तो है । तांत्रिक लोग मन्त्र प्रसिद्ध की कठोर साधना द्वारा अपने मन में इस मन्त्र के प्रति अगाध श्रद्धा जमाते हैं। आमतौर पर जिसके मन में जितनी गहरी श्रद्धा जमी होती है,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उस तांत्रिक का मन्त्र भी उतना ही काम करता है । जिस मन्त्र से श्रद्धालु तांत्रिक चमत्कारी काम कर दिखाता है, उसी मन्त्र को अश्रद्धालु साधक चाहे सौ बार बकें, कुछ लाभ नहीं होता । गायत्री मन्त्र के सम्बन्ध में भी यह तथ्य बहुत हद तक काम करता है । जब साधक श्रद्धा और विश्वास पूर्वक आराधना करता है तो शब्द-विज्ञान और आत्म-सम्बन्ध दोनों महत्ता से संयुक्त गायत्री का प्रभाव और भी अधिक बढ़ जाता और वह एक अद्वितीय शक्ति सिद्ध होती है ।

चित्र में दिखाया गया है कि गायत्री के प्रत्येक अक्षर का किस-किस स्थान से सम्बन्ध है ? उन स्थानों पर यौगिक ग्रन्थि चक्र हैं। इसका परिचय इस प्रकार है ।

अक्षर	ग्रन्थि का नाम	उनमें भरी हुई शक्ति
१ तत्	तापिनी	सफलता
२ स	सफलता	पराक्रम
३ वि	विश्वा	पालन
४ तुर	तुष्टि	कल्याण
५ व	वरदा	योग
६ रे	रेवती	प्रेम
७ णि	सूक्ष्मा	धन
८ यं	ज्ञाना	तेज
९ भर	भर्गा	रक्षा
१० गो	गौमती	बुद्धि
११ दे	देविका	दमन
१२ व	वराही	निष्ठा
१३ स्य	सिंहिनी	धारण
१४ धी	ध्याना	प्राण
१५ म	मर्यादा	संयम
१६ हि	स्फुटा	तप
१७ धि	मेधा	दूरदर्शिता
१८ यो	योगमाया	जागृति
१९ यो	योगिनी	उत्पादन
२० नः	धरित्री	सरसता
२१ प्र	प्रभवा	आदर्श
२२ चो	ऊष्मा	साहस
२३ द	दृश्या	विवेक
२४ यात्	निरञ्जन	सेवा

गायत्री उपर्युक्त २४ शक्तियों को साधक में जागृत करती है । यह गुण इतने महत्वपूर्ण हैं कि इनके जागरण के साथ-साथ अनेक प्रकार की सफलताएँ, सिद्धियाँ और सम्पन्नता प्राप्त होना आरम्भ हो जाता है । कई लोग समझते हैं कि यह लाभ अनायास कोई देवी-देवता दे रहा है । कारण यह है कि अपने अन्दर हो रहे सूक्ष्म तत्वों की प्रगति और परिणति को वे देख और समझ नहीं पाते । यदि वे समझ पावें कि उनकी साधना से क्या-क्या सूक्ष्म प्रक्रियाएँ हो रही हैं तो यह समझने में देर न लगेगी कि यह सब कुछ कहीं से अनायास दान नहीं मिल रहा वरन् आत्म विद्या की सुव्यवस्थित वैज्ञानिक प्रक्रिया का यह परिणाम है । गायत्री-साधना कोई अन्ध-विश्वास नहीं, एक ठोस वैज्ञानिक कृत्य है और उसके द्वारा लाभ भी सुनिश्चित ही होते हैं ।

योगी लोग अनेक प्रकार की साधनाओं द्वारा स्थूल और सूक्ष्म शरीर में अवस्थित जिन गुप्त शक्तियों को जागृत करते हैं वे गायत्री जप से अनायास ही जागृत होने लगती हैं । इस प्रकार यह साधना सरल होते हुए भी अत्यन्त उच्च कोटि की योग साधनाओं जैसी महान फलदायक है । इससे सरल, स्वल्प, धन साध्य, हानि रहित तथा शीघ्र फलदायिनी साधना और कोई नहीं । कभी कोई भूल हो जाने पर या साधना में कुछ त्रुटि रहने पर इससे कभी किसी को, किसी प्रकार की हानि नहीं होती ।

गायत्री और ब्रह्म की एकता

गायत्री कोई स्वतन्त्र देवी-देवता नहीं है । यह तो परब्रह्म परमात्मा का क्रिया भाग है । ब्रह्म निर्विकार है, अचिन्त्य है, बुद्धि से परे है, साक्षी रूप है, परन्तु उसकी क्रियाशील चेतना शक्तिरूप होने के कारण उपासनीय है और उस उपासना का अभीष्ट परिणाम भी प्राप्त होता है । ईश्वर भक्ति, ईश्वर-उपासना, ब्रह्मसाधना, आत्म-साक्षात्कार, ब्रह्म-दर्शन, प्रभु-परायणता आदि पुरुष वाची शब्दों का

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जो तात्पर्य और उद्देश्य है वही 'गायत्री उपासना' इन स्त्री वाची शब्दों का मन्तव्य है ।

गायत्री-उपासना वस्तुतः ईश्वर-उपासना का एक अत्युत्तम सरल और शीघ्र सफल होने वाला मार्ग है । इस मार्ग पर चलने वाले व्यक्ति एक सुरम्य उद्यान में होते हुए जीवन के चरम लक्ष्य ईश्वर प्राप्ति तक पहुँचते हैं । ब्रह्म और गायत्री में केवल शब्दों का अन्तर है, वैसे दोनों ही एक हैं । इस एकता के कुछ प्रमाण नीचे देखिये-

गायत्री छंदसामहम् ॥१॥

-श्री भगवद्गीता अ० १० । ३५

छंदों में गायत्री छंद मैं हूँ ।

भूर्भुवः स्वरिति चैव चतुविंशक्षरास्तथा ।
गायत्री चतुरोवेदा ओंकारः सर्वमेव तु ॥

-वृ० यो० याज्ञ० अ० १०।४।१६।

भूर्भुवस्वः यह तीन महाव्यहृतियाँ चौबीस अक्षर वाली गायत्री तथा चारों वेद निसंदेह ओंकार (ब्रह्म) स्वरूप हैं ।

देवस्य सवितुस्यस्य धियोयोनः प्रचोदयात् ।
भर्गो वरेण्यं तद्ब्रह्म धीमहित्यथ उज्यते ॥

-विश्वामित्र

उस दिन तेजस्वी ब्रह्म का हम ध्यान करते हैं जो हमारी बुद्धि को सन्मार्ग में प्रेरित करता है ।

यथोवदा म गायत्री तत्व रूपां त्रयीमयीं ।
यथा प्रकाश्यते ब्रह्म सच्चिदान्द लक्षणम् ॥

-गायत्री तत्वे० श्लो० १

त्रिवेदमयी, तत्व स्वरूपिणी गायत्री को मैं कहता हूँ जिससे सच्चिदानन्द लक्षण वाला ब्रह्म प्रकाशित होता है अर्थात् ज्ञान होता है ।

गायत्री इदं सर्वम्

-नृसिंहपूर्वतापनीयोप० ४।२

यह समस्त जो कुछ है गायत्री स्वरूप है ।

गायत्री परमात्मा है ।
गायत्री ही परमात्मा है

-गायत्री तत्वे श्लो० ८

ब्रह्म गायत्रीति-ब्रह्म वै गायत्री

-शतपथ ब्राह्मण ८।५।३।७-ऐतरेय ब्रा० अ०२७ खं० ५।

ब्रह्म गायत्री है, गायत्री ही ब्रह्म है ।

सप्रभं सत्यमानन्दं हृदये मण्डलेऽपिच ।
ध्यायञ्जतेत्तदित्यन्निष्कामो मुच्यतेऽपिरात् ॥

-विश्व० ॥

प्रकाश सहित सत्यानन्द स्वरूप ब्रह्म को हृदय में और सूर्य मण्डल में ध्यान करता हुआ कामना रहित हो गायत्री मन्त्र को यदि जपे तो अविलम्ब संसार के आवागमन से छूट जाता है ।

ओंकारस्तत्परं ब्रह्म सावित्रस्यात्तदक्षरम् ॥

-कूर्मपुराणे उ० विभा० अ० १४।५५

ओंकार परब्रह्म स्वरूप है, गायत्री भी अविनाशी ब्रह्म है ।

गायत्री तुपरं तत्वं गायत्री परमागतिः ॥

-वृहत्पाराशर सं० अ० ५।२५

गायत्री परम तत्व है गायत्री परम गति है ।

सर्वात्मा हि सा देवी सर्वभूतेषु संस्थिता ।
गायत्री मोक्ष हेतुर्वै मोक्षस्थानमलक्षझम् ॥

- ऋषि शृंग

वह गायत्री देवी समस्त प्राणियों में आत्मारूप से विद्यमान है, गायत्री मोक्ष का मूलकरण और सारूप्य मुक्ति का स्थान है ।

गायत्र्येव परोविष्णुर्गायत्र्येव परः शिवः ।
गायत्र्येवपरो ब्रह्मो गायत्र्येव त्रयीयतः ॥

-वृहसन्ध्या भाष्ये

गायत्री ही दूसरे विष्णु हैं और शंकर जी भी दूसरे गायत्री ही हैं । ब्रह्माजी भी गायत्री में परायण हैं क्योंकि गायत्री तीनों देवों का स्वरूप है ।

गायत्री परदेवतेति गदिता ब्रह्मैच चिद्रूपिणी ॥३॥

-गायत्री पुरश्चरण प०

गायत्री परम श्रेष्ठ देवता और चित्त रूपी ब्रह्म है, ऐसा कहा गया है ।

गायत्री वा इदं सर्वभूतं यदिदं किंच ॥

-छान्दोग्योपनिषद्

यह विश्व जो कुछ भी हैं वह समस्त गायत्री मय है ।

नाभिन्ना प्रतिपद्येत गायत्री ब्रह्मणा सह ।
सोऽहंमस्मीत्युपासीत विधिनायेनकेन चित् ॥

-व्यासः

गायत्री और ब्रह्म में भिन्नता नहीं है अतः जिस किसी भी प्रकार से ब्रह्म स्वरूपी गायत्री की उपासना करें ।

गायत्री प्रत्यग्ब्रह्मैक्यबोधिका ।

-शंकर भाष्ये

गायत्री प्रत्यक्ष अद्वैत ब्रह्म बोधक है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

परब्रह्मस्वरूपा च निर्वाण पद दायिनी ।।
ब्रह्मतेजोमयी शक्तिस्तदधिष्ठातृ देवता ।

-देवी भागवत स्कन्ध ९ अ० १।४२

गायत्री मोक्ष देने वाली परमात्मास्वरूप और ब्रह्मतेज से युक्त शक्ति है और मन्त्रों की अधिष्ठात्री है ।

गायत्र्याख्यं ब्रह्म गायर्श्चनुगतं मुखेनोक्तम ।।

-छान्दोग्य, शंकर भाष्य: प्र० ३ खं० १२ मं० ५ ।।

गायत्री स्वरूप एवं गायत्री से प्रकाशित होने वाला ब्रह्म गायत्री नाम से वर्णित है ।

प्रणव व्याहृतिभ्याञ्च गायत्र्या त्रितयेन च ।
उपास्यं परमं ब्रह्म आत्मा यत्र प्रतिष्ठित : ।।

- तारानाथ कृ० गा० व्या० पृ०२५

प्रणव, व्याहृति और गायत्री इन तीनों से परमब्रह्म की उपासना करनी चाहिये, उस ब्रह्म में आत्मा स्थित है ।

तेवा एते पंच ब्रह्म पुरुषा: स्वर्गस्य लोकस्य द्वारपाल स य एतानेवं पंच ब्रह्म पुरुषान् स्वर्गस्य लोकस्य द्वारपाल वेदास्य कुले वीरो जायते प्रतिपद्यते स्वर्ग लोकम् ।

(छ० ३ ।१३ ।६)

हृदय चैतन्य ज्योति गायत्री रूप ब्रह्म के प्राप्ति स्थान के प्राण, व्यान, अपान, समान, उदान ये पाँच द्वारपाल हैं । अत: इन्हीं को वश में करे, जिससे हृदयस्थित गायत्री स्वरूप ब्रह्म की प्राप्ति हो । उपासना करने वाला स्वर्गलोक को प्राप्त होता है और उसके कुल में वीर पुत्र या शिष्य उत्पन्न होता है ।

भूमिरन्तरिक्षं द्यौरित्यष्टावक्षराण्यष्टाक्षर हवा एकं गायत्र्यै पदमेतदूहैवास्या एयत्स यावदेतेषुत्रिपुतावद्धि जयतियोऽस्या एतदवं पदंवेद ।

-बृ० ५।१४।१

भूमि,अन्तरिक्ष, द्यौ- ये तीनों गायत्री के प्रथम पाद के आठ अक्षरों के बराबर हैं । अत: जो गायत्री के प्रथम पद को भी जान लेता है, वह त्रिलोक विजयी होता है ।

स वै नैव रेमे, तस्मादेकाकी न रमते, सद्वितीयमैच्छत् । सहैताबाना स । यथा स्त्रीपुमान्सौ संपरिस्वक्तौ स इममेवात्मानं द्वेधा पातयत्ततः पतिश्च पत्नी चाभवताम् ।

-शक्ति उपनिषद

अर्थात् वह ब्रह्म रमण न कर सका, क्योंकि अकेला था । अकेला कोई भी रमण नहीं कर सकता । उसका स्वरूप संयुक्त स्त्री-पुरुष की भाँति था । उसने दूसरे की इच्छा की तथा अपने इस संयुक्त रूप को द्विधा विभक्त किया तब दोनों रूप पत्नी और पति भाव को प्राप्त हुए ।

निर्गुण: परमात्मा तु त्वदाश्रयतया स्थित: ।
तस्य भट्टारिकासि त्वं भुवनेश्वरि ! भोगदा ।।

-शक्ति दर्शन

परमात्मा निर्गुण है और तेरे ही आश्रित ठहरा हुआ है तू ही उसकी साम्राज्ञी और भोगदा है ।

शक्तिश्च शक्तिमद्रूपाद् व्यतिरेकं न वांच्छति ।
तादात्म्यमनयोनित्य वन्हिदाहिकयोरिव ।।

-शक्ति दर्शन

शक्ति, शक्तिमान् से कभी पृथक नहीं रहती । इन दोनों का नित्य सम्बन्ध है । जैसे अग्नि और दाहक शक्ति का नित्य परस्पर सम्बन्ध है उसी प्रकार शक्ति और शक्तिमान् का भी ।

सदैकत्वं न भेदोन्ति सर्वदैव ममास्य च ।
वोऽसौ सहमहं या सौ भेदोस्ति मतिविभ्रमातृ ।।

।। देवी मा० ।।

मुझ शक्ति का और उस शक्तिमान पुरुष का सदा सम्बन्ध है कभी भेद नहीं है । जो वह है सो मैं हूँ और जो मैं हूँ सो वह है । यदि भेद है तो केवल बुद्धि का भ्रम है ।

जगत्माता च प्रकृति: पुरुषश्च जगत्पिता ।
गरीयसी जगतां माता शतगुणै: पितु: ।।

(ब्र० वै० पु० कृ० ज० अ० ५०)

संसार की जन्मदात्री प्रकृति है और जगत् का पालन कर्ता या रक्षा करने वाला पुरुष है । जगत् में पिता से माता सौगुनी अधिक श्रेष्ठ है ।

इन प्रमाणों से स्पष्ट हो जाता है कि ब्रह्म ही गायत्री है और गायत्री की उपासना ब्रह्म-प्राप्ति का सर्वोत्तम मार्ग है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गायत्री माता का परिचय

गायत्री वह शक्ति केन्द्र है जिसके अन्तर्गत विश्व के सभी दैविक, दैहिक, भौतिक, छोटे-बड़े शक्ति तत्वों का समावेश है । यह छोट-बड़े शक्ति तत्व अपनी-अपनी क्षमता और सीमा के अनुसार संसार के विभिन्न कार्यों का सम्पादन करते हैं । इन्हीं का नाम देवता है । ये ईश्वरीय सत्ता के अन्तर्गत उसी के अंश रूपी इकाइयाँ हैं जो सृष्टि संचालन के विशाल कार्यक्रम में अपना कार्य भाग पूरा करते रहते हैं । जिस प्रकार एक शासन-तंत्र के अन्तर्गत अनेकों अधिकारी अपनी-अपनी जिम्मेदारी निबाहते हुए सरकार का कार्य संचालन करते हैं, जिस प्रकार एक मशीन के अनेकों पुर्जे अपने-अपने स्थान पर अपने-अपने क्रिया कलापों को जारी रखते हुए उस मशीन की प्रक्रिया को सफल बनाते हैं, उसी प्रकार यह देव तत्व भी ईश्वरीय सृष्टि व्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों की विधि-व्यवस्था का सम्पादन करते हैं ।

गायत्री एक सरकार एवं मशीन के सदृश है जिसके अंग-प्रत्यंगों के रूप में सभी देवता गुंथे हुए हैं । 'गायत्री' के तीन अक्षर सत्, रज, तम तीन तत्वों के प्रतीक हैं । इन्हीं को स्थिति के अनुसार ब्रह्मा, विष्णु, महेश-सरस्वती, लक्ष्मी, काली कहते हैं । इन्हीं तीन श्रेणियों में विश्व की सभी स्थूल एवं सूक्ष्म शक्तियों की गणना होती है । जितनी भी शुभ-अशुभ, उपयोगी अनुपयोगी, शान्ति-अशान्ति की प्रक्रियायें दृष्टिगोचर होती हैं वे इन्हीं सत्, रज, तम तत्वों के अन्तर्गत हैं और यह तीन तत्त्व गायत्री के तीन चरण हैं । इस प्रकार समस्त शक्ति तत्वों का मूल आधार गायत्री ही ठहरती है ।

ब्रह्म, इस विशाल सृष्टि का मूल कारण तो अवश्य है पर वह स्वभावतः साक्षी और दृष्टा के रूप में स्थित रहता हुआ स्वयं अपने आप में निष्क्रिय है । उसकी 'गतिशीलता' ही वह तत्व है जिसके द्वारा जगत के स्थूल और सूक्ष्म विभिन्न कार्यक्रम सम्पन्न होते हैं । इस गतिशीलता को ही प्रकृति, माया, चेतना, ब्रह्मपत्नी आदि नामों से पुकारा गया है । यही गायत्री है ।

परमात्मा की कार्यकर्त्री देव-शक्ति

सृष्टि का आरम्भ करते हुए परमात्मा ने अपने भीतर से जो शक्ति तत्व प्रादुर्भूत किया और सृष्टि संचालन की सारी व्यवस्था उसे सौंप कर स्वयं निश्चिन्त हो गया । इस प्रकार वहब्रह्म निर्लिप्त, निरधिष्ट, निरवद्य एवं अव्यय बना रहा और संसार का सारा कार्य उस प्रादुर्भूत शक्ति तत्व के द्वारा संचालित होने लगा । इस रहस्य का उद्घाटन निम्न प्रमाणों से होता है ।

देवीह्येकाऽग्र आसीत्। सैव जगदण्डमसृज··· तस्या एव ब्रह्मा अजीजनत्। विष्णुरजी जनत्·· सर्वमजी जनत्····· । सैषा पराशक्ति : ।

वृहबचोपनिषद्

सृष्टि के आरम्भ में वह एक ही देवी शक्ति थी । उसी ने यह ब्रह्माण्ड बनाया । उसी से ब्रह्मा उपजे । उसी ने विष्णु, रुद्र उत्पन्न किये । सब कुछ उसी से उत्पन्न हुआ । ऐसी है वह पराशक्ति ।

निर्दोषो निरधिष्ठेयो निरवद्यसनातनः ।
सर्वकार्यकरी साहं विष्णोरव्यय रूपिण : ।।

-लक्ष्मीतंत्र

वह ब्रह्म तो निर्दोष, निरधिष्ठ निरवद्य, सनातन ब्राह्मण है । उनकी सर्व कार्यकारिणी शक्ति तो मैं ही हूँ ।

इस महाशक्ति की सर्व व्यापकता का, सभी पदार्थों की अधिष्ठात्री विभूति एवं सभी हलचल की मूल प्रेरिका होने का वर्णन अनेक ग्रन्थों में मिलता है । देखिए -

स्वं भूमि सर्व भ तानां प्राणः प्राणवतां तथा ।
धीः श्रीः कान्तिः क्षमा शान्ति श्रद्धा मेधा धृतिः स्मृतिः
स्व मुद्गीथेऽधं मात्रासि गायत्री व्याहृति स्तथा ।।

-देवी० भा० १-५

तुम्हीं सब प्राणियों को धारण करने वाली भूमि हो । प्राणवानों में प्राण हो । तुम्ही धी, श्री, कान्ति, क्षमा, शान्ति, श्रद्धा, मेधा, धृति, स्मृति

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हो । तुम ही ओंकार की अर्धयात्रा उद्गीथ हो, तुम ही गायत्री व्याहृति हो ।

पूषार्यममरुत्वांश्च ऋषियोऽपि मुनीश्वराः ।
पितरोनागयक्षाश्च गन्धर्वाप्सरसा गणाः ।
ऋग्यजु सामवेदाश्च अथर्वाङ्गिरसानि च ।
त्वमेव पञ्च भूतानि तत्वानि जगदीश्वरि ।।
ब्राह्मी सरस्वती सन्ध्या तुरीया त्वं महेश्वरी ।
त्वमेव सर्वं शास्त्राणि त्वमेव सर्वं संहिता ।
पुराणानि च तंत्राणि महागम मतानि च ।।
तत्सद् ब्रह्म स्वरूपा त्वं किञ्चित्सद सदात्मिका ।
परात्परेशी गायत्री नमस्ते मातरम्बिके ।।

-वशिष्ठ संहिता

पूषा, अर्यमा, मरुत, ऋषि, मुनीश्वर, पितर, नाग, यक्ष, गन्धर्व, अप्सरा, ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, अंगिरस, पंचभूत, ब्राह्मी, सरस्वती एवं सन्ध्या-हे महेश्वरि तुम ही हो । सर्वशास्त्र, संहिता, पुराण, तंत्र, आगम, निगम तथा और भी जो कुछ इस संसार में है सो हे ब्रह्मरूपिणी, पराशक्ति गायत्री ! तुम ही हो । हे माता तुम्हें प्रणाम है ।

आदित्य देवा गन्धर्वा मनुष्याः पितरो सुराः तेषां सर्व भूतानां माता मोदिनी माता मही सावित्री गायत्री जगत्युर्वी पृथ्वी बहुला विद्या भूता ।

- नारायणोपनिषद

अर्थात् देव, गन्धर्व, मनुष्य, पितर, असुर इनका मूल कारण अदिति अविनाशी तत्व है । वह अदिति सब भूतों की माता मेदिनी और माता मही है । उसी विशाल गायत्री के गर्भ में विश्व के सम्पूर्ण प्राणी निवास करते हैं।

परमात्मास्तु या लोके ब्रह्मशक्ति र्विराजते ।
सूक्ष्मा च सात्विकी चैव गायत्री त्यभिधीयते ।

अर्थात् सब लोकों में विद्यमान जो सर्व व्यापक परमात्मा की शक्ति है वह अत्यन्त सूक्ष्म एवं सतोगुणी प्रकृति में निवास करती है । यह चेतन शक्ति गायत्री ही है ।

अहं रुद्रेभिर्वसुभिश्चराभ्यहमादित्यैरुत विश्व - देवैः ।
अहं मित्रावरुणोभाविभर्म्यहमिन्द्राग्नी अहिमश्वि नोभा ।

ऋग्वेद ८।७।११

मैं ही रुद्र, वसु, आदित्य और विश्वेदेवाओं में विचरण करती हूँ । मैं ही मित्र, वरुण, इन्द्र, अग्नि और अश्विनीकुमारों का रूप धारण करती हूँ ।

मया सो अन्नमत्ति यो विपश्यति यः प्राणिति य ई शृणोत्युक्तम् । अमन्त वो मां त उप क्षियन्ति श्रुधि श्रुत श्रद्धि वं ते वदामि ।

यह विश्व मुझ से ही जीवित है । मेरे द्वारा ही उसे अन्न मिलता है । मेरी शक्ति से ही वह बोलता और सुनता है । जो मेरी उपेक्षा करता है वह नष्ट हो जाता है । श्रद्धावानो, सुनो! यह सब मैं तुम्हारे ही कल्याण के लिए कहती हूँ ।

विभूतियों का भण्डागार

इस महाशक्ति का विस्तार अत्यन्त व्यापक है जब समस्त सृष्टि की अगणित प्रक्रियाओं का संचालन उसी के द्वारा होता है तो कितने प्रकार की शक्तियाँ उसके अन्तर्गत काम करती होंगी, इसकी कल्पना कर सकना भी कठिन है । पर मनुष्य सीमित है । उसकी आवश्यकतायें एवं आशंकायें भी सीमित हैं, जिन वस्तुओं को प्राप्त करके उसका व्यक्तित्व निखर उठता है एवं मन उल्लसित हो जाता है वे विभूतियाँ भी सीमित हैं । यह सीमित वस्तुऐं गायत्री का एक बहुत छोटा अंशमात्र है । मनुष्यों में जो कुछ प्रशंसनीय एवं आकर्षक विशेषतायें दिखाई पड़ती हैं उन सबको उस महाशक्ति का छोटा सा प्रसाद ही समझना चाहिए । मानव शरीर में वह शक्ति किन प्रमुख रूपों में अधिष्ठत है इसका परिचय देते हुए माता स्वयं कहती है : -

अहं बुद्धि रहं श्रीश्च धृतिः कीर्तिः स्मृतिस्तथा ।
श्रद्धा मेधा दया लज्जा क्षुधा तृष्णा तथा क्षमा ।।
कान्तिः शान्तिः पिपासा च निद्रा तन्द्रा जरा जरा ।
विद्याविद्या स्पृहा वांछा शक्तिश्चाशक्ति रेवच ।।
वसा मज्जा च त्वक चाहं दृष्टिर्वागनृता ऋता ।
परामध्या च पश्यन्ती नाड्येऽहं विविधाश्च याः ।।
किं नाहं पश्य संसारे मद्वियुक्तं किमस्ति हि ।
सर्वमेवाहभित्येवं निश्चयं विद्धि पद्मज ।।

मैं क्या नहीं हूँ ? इस संसार में मेरे सिवाय और कुछ नहीं है । बुद्धि, श्री, धृति, कीर्ति, स्मृति, श्रद्धा, मेधा, लज्जा, क्षुधा, तृष्णा, क्षमा, कान्ति, शान्ति, पिपासा, निद्रा, तन्द्रा, जरा, अजरा,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विद्या, अविद्या, स्पृहा, बाञ्छा, शक्ति, अशक्ति, वसा, मज्जा, त्वचा, दृष्टि, असत और सत्, वाणी, परा, मध्यमा, पश्यन्ति, नाड़ी संस्थान आदि निश्चय ही सब कुछ मैं हूँ ।

अहमेक स्वयंमिदं वदामि जुष्टं देवेभिरुत मानुषेभिः ।
यं कामये तं तमुग्रं कृणोमि तं ब्रह्माणं तमृषिं तं सुमेधा ।।

मैं तत्वज्ञान का उपदेश करती हूँ । मैं जिसे चाहती हूँ उसे समुन्नत करती हूँ, उसे सुबुद्धि देती हूँ, ऋषि बनाती हूँ और ब्रह्मपद प्रदान करती हूँ ।

रहस्यों का जानना आवश्यक है

गायत्री तत्व के सूक्ष्म रहस्यों को जानने के उपरान्त ही उसकी उपासना वास्तविक रूप में होना सम्भव है । उसके मर्म विज्ञान को समझे बिना साधारण रीति से जो उपासना क्रम चलाया जाता है, उसका परिणाम तो होता है पर उसकी मात्रा स्वल्प ही होती है । उपासना का समुचित सत्परिणाम प्राप्त करने के लिए इस विज्ञान के रहस्यों को समझना और उनका अनुशीलन करना आवश्यक है । मनुष्य की आत्मा पर चढ़े हुए मल, विक्षेप आवरणों को हटाने के लिए जैसी तीव्र साधना एवं गहन निष्ठा की आवश्यकता है उसको उपलब्ध करने के लिए गायत्री के तत्वज्ञान को समझना चाहिए ।

शतपथ ब्राह्मण में एक आख्यायिका आती है जिसमें यह बताने का प्रयत्न किया गया है कि एक पुरोहित गायत्री के मर्म से वंचित रहने के कारण साधारण उपासना करते रहने पर भी समुचित सत्परिणाम प्राप्त न कर सका । आख्यायिका इस प्रकार है –

एतद्धवै तज्जनको द्यैदेही बुड़िल माशवतं राश्वि मुवाच यन्नु हो तद्गायत्री विदवूथाऽअथकथूꣳहस्ती भूतोव्वह सीति मुखंह्यस्या सम्राशन विवाञ्चकरेति हो वाच । तस्या ऽग्निरेव मुखं यदि हवाऽअपि बह्विवाग्ना वभ्यादधति सर्वमेव तत्सम्द्ध हत्येव व ꣳ है वैव विद्यद्यपि बह्विव पापङ्करोति सर्व मेव सत्संरंसा शुद्ध पूतोऽजरोऽमृतः संभवति ।

– शतपथ

अर्थात् " राजा जनक का पूर्व जन्म का पुरोहित बुड़िल अनुचित दान लेने के पाप से मर कर हाथी बन गया किन्तु राजा जनक ने विज्ञान तप किया और उसके फल से वह पुनः राजा हुआ । राजा ने हाथी को उसके पूर्व जन्म का स्मरण दिलाते हुए कहा–आप तो पूर्व जन्म में कहा करते थे कि मैं गायत्री का ज्ञाता हूँ । फिर अब हाथी बनकर क्यों बोझ ढोते हो ? हाथी ने कहा– मैंने पूर्व जन्म में गायत्री का मुख नहीं समझ पाया था इसलिये मेरे पाप नष्ट न हो सके ।"

"गायत्री का प्रधान अङ्ग मुख अग्नि ही है । जैसे जो ईंधन डाले जाते हैं उन्हें अग्नि भस्म कर देती है वैसे ही गायत्री का मुख जानने वाला आत्मा अग्नि मुख होकर पापों से छुटकारा प्राप्त कर अजर अमर हो जाता है ।"

गायत्री के जिस मुख का ऊपर की पंक्तियों में वर्णन है वह उसका प्रवेश द्वार–आरम्भिक ज्ञान ही है । जिस प्रकार भोजन को पेट में पहुँचाने के लिए मुख ही उसका प्रारम्भिक प्रवेश द्वार होता है उसी प्रकार उपासना का मुख यह है कि उपास्य के बारे में आवश्यक ज्ञान प्राप्त किया जाय। यह ज्ञान ग्रन्थों के स्वाध्याय द्वारा एवं उस विद्या के विशेषज्ञों के सत्संग से जाना जा सकता है । यह दोनों ही माध्यम प्रत्येक सच्चे जिज्ञासु को अनिवार्यतः अपनाने चाहिए ।

गायत्री ज्ञान–विज्ञान की महत्ता बताते हुए उपनिषद्कार ने बताया है कि ज्ञानपूर्वक की हुई उपासना से आत्मा में सन्निहित दिव्य तत्वों का विकास होता है और इस जीवन तथा संसार में जो कुछ प्राप्त होने योग्य है वह सभी कुछ उसे प्राप्त हो जाता है ।

यो ह वा एवं चित् स ब्रह्म वित्पुण्यां च कीर्ति लभते सुरभींश्च गन्धान् । सोऽपहत पाप्मानन्तां श्रिय मश्नुतेय एवं वेद, यश्चैवं विद्वनेवमेत वेदानां मातरं सावित्री सम्पदमुपनिषद मुपास्त इति ब्राह्मणम् ।

–गायत्री उपनिषद्

जो इस प्रकार वेदमाता गायत्री को जान लेता है वह ब्रह्मवित्, पुण्य, कीर्ति एवं दिव्य गन्धों को प्राप्त करता है और निष्पाप होकर श्रेय का अधिकारी बनता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तीन चरणों की अनन्त सामर्थ्य

गायत्री को त्रिपदा कहा गया है, उसके तीन चरण हैं । इनमें से प्रत्येक चरण तीन लोकान्तरों तक फैला हुआ है । उसके माध्यम से आत्मा की गति केवल इसी लोक तक सीमित नहीं रहती वरन् वह अन्य लोकों तक अपना क्षेत्र विस्तृत कर सकता है और वहाँ उपलब्ध साधनों से लाभान्वित हो सकता है ।

भूमिरन्तरिक्षं द्यौरित्यष्टा व क्षराण्यष्टाक्षर हवा एवं गायत्र्यै पद मेतदुहैवास्या एतत्सयाबेदतेषु लोकेषु तायद्धि जयति योऽस्याएतदेवं पदं बेद ।

-वृहदारण्यक ५।१४।१

भूमि, अन्तरिक्ष, द्यौ ये तीनों गायत्री के प्रथम पाद के आठ अक्षरों के बराबर हैं । जो गायत्री के इस प्रथम पाद को जान लेता है सो तीनों लोकों को जीत लेता है ।

जिस प्रकार वाह्य जगत में अनेकों लोक हैं उसी प्रकार इस शरीर के भीतर भी सप्त प्राण, षटचक्र ग्रन्थियाँ, उपत्यिकाएँ मौजूद हैं । साधारण मनुष्यों में यह प्रसुप्त अवस्था में अज्ञात पड़े रहते हैं, पर जब गायत्री उपासना द्वारा जागृत आत्मा इन अविज्ञात शक्ति केन्द्रों को झकझोरता है तो वे भी जागृत हो जाते हैं और उनके भीतर जो आश्चर्य-जनक तत्व भरे पड़े हैं वे स्पष्ट हो जाते हैं । जिस प्रकार वैज्ञानिक लोग, इस ब्रह्माण्ड में बाह्य जगत में व्याप्त अनेक शक्तियों को ढूंढ़ते और उनका उपयोग करते हैं उसी प्रकार आत्म विज्ञानी साधक पिण्ड में, देह में-अन्तर्जगत में-सन्निहित तत्वों का साक्षात्कार करके उनकी दिव्य शक्तियों से लाभान्वित होते हैं । आत्म-दर्शन ब्रह्म साक्षात्कार एवं स्वर्ग लोक की प्राप्ति उनके लिए सरल हो जाती है । इस मार्ग में सफलता प्राप्त करने वाली अपनी परम्परा को आगे जारी रखने वाले कोई तेजस्वी उत्तराधिकारी भी अपने पीछे के लिए छोड़ जाते हैं ।

तेवाएते पञ्च ब्रह्म पुरुषा स्वर्गस्य लोकस्य द्वारपालस्य एतानेकं पञ्च ब्रह्म पुरुषान् स्वर्गस्य लोकस्य द्वारपाल वेदास्य कुले वीरो जायते प्रतिपद्यते स्वर्ग लोकम् ।

-छान्दोग्य ३।१३।६

हृदय चैतन्य ज्योति गायत्री रूप ब्रह्म के प्राप्ति स्थान के प्राण, व्यान, अपान, समान, उदान ये पाँच द्वारपाल हैं । इनको वश में करे । जिससे हृदयस्थित गायत्री स्वरूप ब्रह्म की प्राप्ति हो । इस प्रकार उपासना करने वाला स्वर्ग लोक को प्राप्त होता है और उसके कुल में वीर पुत्र या शिष्य उत्पन्न होता है ।

गायत्री का व्याख्या विस्तार

गायत्री महामंत्र के २४ अक्षरों में इतना ज्ञान-विज्ञान भरा हुआ है कि उसका अन्वेषण करने से सब कुछ प्राप्त किया जा सकता है । ब्रह्माजी ने गायत्री के चार चरणों की व्याख्या स्वरूप चार मुखों से चार वेदों का वर्णन किया ।

महर्षि वाल्मीक ने अपनी वाल्मीक रामायण की रचना करते हुए एक-एक हजार श्लोकों के बाद क्रमशः गायत्री के एक-एक अक्षर से आरम्भ होने वाले श्लोक बनाये । इस प्रकार बाल्मीक रामायण में प्रत्येक एक हजार श्लोकों के बाद गायत्री के एक-एक अक्षर का सम्पुट लगा हुआ है । महर्षि वाल्मीक गायत्री के महत्व को जानते थे उन्होंने अपने महाकाव्य में एक प्रकार का सम्पुट लगाकर अपने ग्रन्थ की महत्ता में और भी अधिक अभिवृद्धि कर ली ।

श्रीमद्भागवत पुराण की भी गायत्री महामन्त्र की व्याख्या स्वरूप ही रचना हुई । श्रीधरी टीका में इस रहस्य को स्पष्ट रूप से स्वीकार किया गया है ।

सत्यं परं धीमहि-तं धीमहि इति गायत्र्या प्रारम्भेण गायत्र्याख्य ब्रह्मविद्या रूपभेत्पुराण् इति ।

-श्री धरी

वेद व्यास जी ने गायत्री प्रतिपाद्य सत्यं परं धीमहि तत्व में ही भागवत का प्रारम्भ मूल है । गायत्री के ही दो अक्षरों की व्याख्या में एक-एक स्कन्ध बनाकर १२ स्कन्ध पूरे किये हैं ।

देवी भागवत पुराण के सम्बन्ध में भी यही मान्यता है कि उसकी रचना गायत्री मन्त्र के अक्षरों में निहित तत्वों का उद्घाटन करने के लिए ही की गई है । मत्स्य पुराणों में इस तथ्य का स्पष्ट उल्लेख है ।

यत्राधिकृत्य गायत्री वर्ण्यन्ते धर्म विस्तरः ।
वृत्रासुरवधोपेतं तद् भागवत मुच्यते ।

-मत्स्य पुराण ५३।२०

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जिसमें गायत्री के माध्यम से धर्म का विस्तार पूर्वक वर्णन है । जिसमें वृत्तासुर वध का वृतान्त है, वह भागवत ही कही जाती है ।

देवी भागवत पुराण का आरम्भ गायत्री के रहस्योद्घाटन के रूप में ही होता है ।

ॐ सर्व चैतन्य रूपां तामाद्यां विद्यां च धीमहि । बुद्धियों नः प्रचोदयात् ।

-देवी भागवत

जो आदि अन्त रहित, सर्व चैतन्य स्वरूप वाली, ब्रह्म विद्या स्वरूपिणी आदि शक्ति है उसका हम ध्यान करते हैं । वह हमारी बुद्धि को सन्मार्ग पर प्रेरित करे ।

देवी भागवत, बारहवें स्कन्ध के अन्त में समाप्ति का श्लोक भी गायत्री तत्व के सम्पुट के साथ ही पूर्ण हुआ है ।

सच्चिदानन्द रूपां तां गायत्री प्रतिपिदताम् ।
नमामि ह्रीं मयीं देवी धियो योनः प्रचोदयात् ।

उन ह्रीं मयी सच्चिदानंद स्वरूपा गायत्री शक्ति को प्रणाम है । वे हमारी बुद्धि को सन्मार्ग पर प्रेरित करें ।

चारों वेद, बाल्मीक रामायण, श्रीमद् भागवत, देवी भागवत ही नहीं- न जाने कितने बड़े ज्ञान-भण्डार का प्रणयन, गायत्री के आधार पर हुआ है । वस्तुतः भारतीय धर्म का सारा ज्ञान-विज्ञान गायत्री रूपी सूर्य के सामने छोटे-बड़े ग्रह-उपग्रहों के रूप में भ्रमण करता है ।

मंङ्गलमयी मधु विद्या

बृहदारण्यक उपनिषद् में जिस मधु विद्या का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है उसका सम्बन्ध गायत्री से ही है । जिस प्रकार पारस मणि के स्पर्श से लोहे के टुकड़ों का ढेर भी सोना हो जाता है । उसी प्रकार इस संसार की अनेकों कडुई, कुरूप, कष्टदायक, प्रतिकूल वस्तुएँ तथा परिस्थितियाँ भी उसके लिये मधुर, सौन्दर्ययुक्त, सुखदायक एवं अनुकूल बन जाती हैं ।

गायत्री के तीनों चरण समस्त सृष्टि को अपने लिए आनन्दपूर्ण मधुमय बना देने की शक्ति से परिपूर्ण हैं । नदियों को जलपूर्ण, समुद्र को रत्नपूर्ण और औषधि वनस्पतियों को जीवनी शक्ति से परिपूर्ण गायत्री का प्रथम चरण बनाना है । रात्रि और दिन किसी प्रकृति विपरीतता से तूफान, भूचाल, अतिवृष्टि, शीतोष्ण की अधिकता जैसी विकृतियों से बच कर हितकर वातावरण से आनन्दमय रहें, पृथ्वी के परमाणु पर्याप्त मात्रा में अन्न, धातु, खनिज, रस, रत्न आदि प्रदान करते रहें तथा द्युलोक की मंगलमयी किरणें पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध रहें ऐसी शक्ति गायत्री के दूसरे चरण में है । गायत्री का तीसरा चरण सूर्य की उत्पादन, प्रेरक एवं विकासोन्मुख शक्तियों को नियंत्रित एवं आवश्यक मात्रा में पृथ्वी पर आह्वान करता है । न तो सूर्य की शक्ति किरणें पृथ्वी पर इतनी अधिक आवें कि ताप से जीवन रस जलें और न उसकी इतनी न्यूनता हो कि विकास क्रम में बाधा पड़े । चूँकि वनस्पतियाँ, जीव जन्तु एवं जड़-चेतन सभी अपना जीवन तत्व सूर्य से प्राप्त करते हैं । मानव प्राणी की चेतना एवं विशेष प्राण क्षमता भी सूर्य पर ही अवलम्बित है । इस विश्व प्रसविता-सविता पर गायत्री का तीसरा चरण नियंत्रण स्थापित करता है, इसलिये सृष्टि के समस्त संतुलन को गायत्री शक्ति के आधार पर स्थिर रख सकना सम्भव हो सकता है ।

गायत्री में आध्यात्म तत्व तो प्रधान-रूप से है ही, वह आत्मबल और अन्तर्जगत की अगणित सूक्ष्मे शक्तियों को विकसित करके मनुष्य को इस पृथ्वी तल का देवता तो बना ही सकता है, साथ ही स्थूल सृष्टि में काम करने वाली सभी भौतिक शक्तियों पर भी उसका नियंत्रण है । इस विकास को प्राचीन काल में जब आत्मदर्शी लोग जानते थे तब वे इस संसार को ही नहीं अन्य लोकों की स्थिति भी शान्तिमय, मधुरिमा से पूर्ण बनाये रख सकने में समर्थ थे । भारतवर्ष का यही महान विज्ञान किसी समय उसे अत्यधिक ऊँची सम्मानास्पद स्थिति में रखे हुए था । आज इसी को खोकर हम मणिहीन सर्प की तरह दीन-हीन एवं परमुखापेक्षी बने हुए हैं । गायत्री में सन्निहित मधु विद्या का उपनिषदों का वर्णन इस प्रकार है :-

तत्सवितुर्वरेण्यम् । मधु वाता ऋतायने ममुक्षरन्ति सिन्धवः । माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः । भूः स्वाहा भर्गोदेवस्य धीमहि । मधुनक्त गुतोषसो

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मधुमैत्यार्थिष रजः । मधुद्यौस्तु नः पिता । भुवः स्वाहा । धियो योनः प्रचोदयात् । मधु मान्नो वनस्पति मधु मा अस्तु सूर्यः माध्वीर्गावो भनन्तु नः । स्वः स्वाहा । सर्वाश्च मधुमती रहभेवेद्र सर्वभूयांसं भूर्भुवः स्वः स्वाहा ।

-वृहदारण्यको ६ । ३ । ६

-(तत्सवितुर्वरेण्यं) मधुर वायु चले, नदी और समुद्र रसमय होकर रहें । औषधियाँ हमारे लिये सुखदायक हों ।

-(भर्गोदेवस्य धीमहि) रात्रि और दिन हमारे लिये सुखकारी हों, पृथ्वी की रज हमारे लिये मंगलमय हो । द्युलोक हमें सुख प्रदान करे ।

(धियो योनः प्रचोदयात्) वनस्पतियाँ हमारे लिए रसमयी हों । सूर्य हमारे लिये सुखप्रद हो । उसकी रश्मियाँ हमारे लिये कल्याणकारी हों । सब हमारे लिए सुखप्रद हों । मैं सबके लिए मधुर बन जाऊँ ।

अन्तर्जगत के गुप्त तत्व

मनुष्य के अन्तर्जगत में जो विलक्षण शक्तियाँ भरी हुई हैं, उनका जागरण भी गायत्री महामंत्र द्वारा ही सम्भव है । इस महामन्त्र का एक-एक अक्षर शक्ति बीज है । इन शक्ति बीजों के स्पर्श से शरीर में अवस्थित प्रधान षटचक्रों एवं अठारह उपचक्रों का इस प्रकार कुल २४ चक्रों का जागरण गायत्री उपासना से होता है । इन रत्न भण्डार सरीखे चक्र उपचक्रों में से प्रत्येक में ये शक्तियाँ और सिद्धियाँ, भरी हुई हैं जिन्हें प्राचीन काल में ऋषि-मुनि प्राप्त करके अपने को ईश्वरीय तत्वों का अधिकारी-उत्तराधिकारी बनाये हुए थे । इसका प्रमाण इस प्रकार मिलता हे।

चतुर्विंशाक्षरी विद्या परं तत्व विनिर्मिता ।
तत्कारात् यातकार पर्यन्तं शब्द ब्रह्मस्वरूपिणी ।।

-गायत्री तन्त्र

अर्थात् 'तत्' शब्द से लेकर 'प्रचोदयात्' शब्द पर्यन्त २४ अक्षरों वाली गायत्री पर तत्व अर्थात पराविद्या से ओत-प्रोत है ।

गायत्री के २४ अक्षरों में से प्रत्येक अक्षर शरीर में काम करने वाले प्रधान तत्वों में से एक-एक का प्रतिनिधि है । महामन्त्र के २४ अक्षर किन-किन २४ महातत्वों से सम्बन्धित हैं इसका वर्णन निम्न प्रमाण में देखिये-

कर्मेन्द्रियाणि पंचैव पंच बुद्धीन्द्रियाणि च ।
पंच पंचेन्द्रियार्थश्च भूतानांचैव पंचकम् ।।
मनोबुद्धिस्तथात्माच अव्यक्तं च युदत्तमम् ।
चतुर्विंशत्यथैतानि गायत्र्या अक्षराणितु ।।

-योगी याज्ञवल्क्य

अर्थात- पाँच कर्मेन्द्रिय, पाँच ज्ञानेन्द्रिय, पाँच तत्व, पाँच तन्मात्राऐं, मन, बुद्धि, आत्मा तथा परमात्मा यह चौबीस शक्तियाँ गायत्री के चौबीस अक्षरों में समाई हुई हैं ।

यद्यपि वह शक्ति निराकार है, फिर भी उससे सम्बन्ध स्थापित करने, आकर्षित करने, अपने अन्दर धारण करने के लिये जो उपासना की जाती है वह निराकार रूप में सम्भव नहीं इसलिये उसके रूप की कल्पना करनी पड़ती है ।

अचिन्त्यस्याप्रमेयस्य निर्गुणस्य गुणात्मनः ।
उपासकानां सिद्धयर्थं ब्रह्मणो रूप कल्पना ।

ब्रह्म अचिन्तय, अप्रमेय, निर्गुण, गुणात्मा है उसका चिन्तन ध्यान सम्भव नहीं, इसलिए उपासकों की सफलता के लिये रूप कल्पना की गई ।

परमात्मा तथा उसकी इस प्रधान शक्ति को लिंग भेद में, विभाजित नहीं किया जा सकता । वही नर है न नारी परन्तु इतना अवश्य है कि उसे जिस रूप में जिस भाव से माना जाय उसी के अनुरूप वह सामने उपस्थित होते हैं । भक्त की भावना के ढाँचे में वह महा शक्ति भी मिट्टी की तरह आसानी से ढल जाती है और तदनुसार अपने अस्तित्व का परिचय देती है । भगवान को भक्त अपनी अभिरुचि के अनुसार माता, पिता, बन्धु, सखा, पति, पुत्र आदि जो चाहे सो मान सकता है और उसी के अनुसार उनका प्रत्युत्तर देते अनुभव कर सकता है ।

इस संसार में माता का स्नेह एवं वात्सल्य सबसे उत्कृष्ट होता है इसलिए अन्य सम्बन्ध स्थापित करने की अपेक्षा उस ईश्वरीय सत्ता को माता के भाव से मानना मातृ सम्बन्ध स्थापित करना, अधिक उत्तम है । इस मान्यता के कारण वह शक्ति भी माता के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अनुरूप स्नेह एवं वात्सल्यता के साथ हमारे सामने आ उपस्थित होती है । भगवान को माता के रूप में प्राप्त करना भक्त के लिए सबसे अधिक आनन्ददायक सौभाग्य हो सकता है । इसलिए गायत्री को माता के रूप में माना गया है और उसी रूप में उसकी पूजा होती है ।

गायत्री माता को नारी रूप में देखने की प्रतिक्रिया होती है "नारी मात्र को गायत्री माता का स्वरूप समझना" । स्त्री जाति में मातृ भावना की स्थापना होकर साधक जब गायत्री की छवि को एक युवा नारी के रूप में सामने रख कर उसके चरणों पर अपना शुद्ध मातृ भाव समर्पित करता है तो यही अभ्यास धीरे-धीरे ही दृढ़ होता हुआ इस स्थिति में जा पहुँचता है कि कोई स्त्री चाहे वह रूपवती या तरुणी ही क्यों न हो गायत्री माता का प्रतीक ही दिखाई पड़ने लगती है । यह मातृ बुद्धि प्राप्त होना एक बहुत बड़ी आध्यात्मिक सफलता है ।.

गायत्री के मन्त्र-दृष्टा महर्षि विश्वामित्र

वैदिक साहित्य और परवर्ती हिन्दू धार्मिक तथा दर्शन साहित्य में गायत्री-मन्त्र का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है । गायत्री मन्त्र का प्रथम दर्शन वैदिक युग के क्रान्ति काल में ऐतिहासिक महर्षि विश्वामित्र द्वारा हुआ है । क्रम के अनुसार यह ऋग्वेद के तीसरे मण्डल के ६२वें सूत्र का १०वां मन्त्र है । ऋग्वेद के तृतीय मंडल के ऋषि विश्वामित्र हैं अतः गायत्री के महत्व को समझने के लिए यह आवश्यक है कि महर्षि विश्वामित्र के जीवन-परिचय और कार्य-कलापों का मनोवैज्ञानिक और ऐतिहासिक दृष्टिकोण से अध्ययन करने का प्रयत्न करें ।

पौराणिक वार्ताओं और हिन्दू समाज में प्रचलित अनेक कथाओं से सिद्ध होता है कि वैदिक युग में महर्षि विश्वामित्र एक बहुत ही क्रान्तिकारी और महान व्यक्तित्व लेकर अवतरित हुए थे । बोधायन सूत्र और अध्यात्म रामायण दोनों के अनुसार सप्तऋषियों में उनका नाम सर्वप्रथम लिया जाता है ।

१- विश्वामित्रोऽथ जमदग्निर्भरद्वाजोऽथ गौतमः ।
अत्रिर्वशिष्ठः कश्यपः इत्येते सप्तर्षय ।

- बोधायन सूत्रः प्रवर अध्याय

विशवामित्रोऽसितः कण्वो दुर्वासः भृगुरंगिरा ।
वशिष्ठो वामदेवोऽभिस्तथा सप्तर्षयोऽमला

- अध्यात्म रामायण उत्तरकाण्ड

(१) नई सृष्टि की रचना, त्रिशुंक को सदेह स्वर्ग भेज देना, जीवन रक्षा के लिए कुत्ते के माँस का भक्षण करना, ब्रह्मर्षि और राजर्षि के सैद्धान्तिक प्रश्न को लेकर वशिष्ठ से निरन्तर संघर्ष करना, बिना नरमेध किए ही राजा हरिशचन्द्र को रोगमुक्त करना और मेनका द्वारा तपस्या भंग किया जाना आदि अनेक पौराणिक कथायें इनके नाम के साथ जुड़ी हुई हैं, जो इनके ऐतिहासिक अस्तित्व और महत्व को सिद्ध करती हैं । इन कथाओं और वैदिक सूत्रों के आधार पर इनके जीवन के क्रान्तिपूर्ण कार्यों को खोज कर प्रकाश में लाना बहुत मनोरंजक और जिज्ञासु पाठकों के लिए बड़ा लाभकारी सिद्ध होगा ।

यद्यपि इस प्राचीन काल की घटनाओं का यथातथ्य विवरण देना उतना सरल नहीं हैं किन्तु उनका वैज्ञानिक आधार पर विश्लेषण करना अनुचित न होगा । ऋग्वेद के मन्त्रों से सिद्ध होता है कि उन दिनों त्वष्टा, पर्जन्य और द्यावा पृथ्वी जैसे देवताओं के स्थान पर इन्द्र, वरुण, अग्नि, सूर्य और सोम जैसे देवता अधिक लोकप्रिय हो चले थे । राजनैतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक नेतृत्व ऋषियों के हाथ में था जो मन्त्र दृष्टा होने के साथ-साथ अच्छे योद्धा भी होते थे और शस्त्र तथा शास्त्र दोनों के द्वारा समाज की रक्षा करते थे । आर्यों और दस्युओं में पारस्परिक संघर्ष होने के कारण एक दूसरे के विषय में समाज में अनेक अनर्गल बातें प्रचलित थीं । आगे चलकर दोनों सभ्यताओं में समन्वय स्थापित हुआ और दस्युओं के उपास्यदेव शिवलिंग उग्रदेव को आर्यों ने भी अपनाया जो 'शंकर' के रूप में प्रसिद्ध हुए । ऐसी ही सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितियों में विश्वामित्र का जन्म हुआ ।

सप्तसिन्धु में उस समय भरत, तृत्सु श्रृञ्जय, मरुत, भृगु और पृथु आदि प्रमुख कुल थे ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विश्वामित्र इनमें से प्रसिद्ध भरत वंश में उत्पन्न हुए । वे जन्हु के प्रपौत्र, कुशिक के पौत्र और महाराज गाधि के पुत्र थे । इतिहास प्रसिद्ध भगवान परशुराम के पिता और महर्षि ऋचीक और सत्यवती के पुत्र महर्षि जमदग्नि विश्वामित्र के भानजे थे । जमदग्नि और प्रसिद्ध ऋग्वेदकालीन राजा दिवोदास के पुत्र सुदास के साथ महर्षि मैत्रावरुण अगस्त्य के आश्रम में इन्होंने शस्त्र और शास्त्र की शिक्षा ग्रहण की । ऋषि-पत्नी लोपामुद्रा इनकी प्रतिभा, बुद्धि और विद्या पर मोहित थी और इन्हीं गुणों के कारण इन्हें लोपामुद्रा का विशेष स्नेह प्राप्त था । आश्रम में वाण-विद्या का अद्‌भुत कौशल दिखाकर इन्होंने अपने से वरिष्ठ सहपाठियों का भी हृदय जीत लिया था । वे वहाँ बड़े लोकप्रिय थे ।

एक बार दस्युराज शम्बर ने आश्रम पर छापा मारा और इनके एक सहपाठी ऋक्ष के साथ इनका अपहरण कर ले गया । शम्बर ने इन्हें अपने लोहे के किले में बन्द कर दिया और अनेक प्रकार की यातनायें देना लगा । सम्भवतः उन्हीं परिस्थितियों में इन्हें एक बार कुत्ते का मांस खाकर अपनी प्राण-रक्षा करनी पड़ी होगी । अपने कौशल और बुद्धि चातुर्य से वे यहाँ विपत्तियों पर विजय पाने में सफल हुए । उन्होंने शम्बर की पुत्री उग्रा को प्रणय सूत्र में बाँधकर अपने वश में कर लिया और उसकी सहायता से शम्बर का वध करके वहाँ से निकल भागे ।

शम्बर के कारागार से लौटकर विश्वामित्र ने तृस्तु कुल का पौरोहित्य पद स्वीकार कर लिया । तृस्तु कुल का राजा सुदास अत्यन्त पराक्रमी और दवदबे वाला था । इस पौरोहित्य को लेकर ही सम्भवतः विश्वामित्र और वशिष्ठ में संघर्ष आरम्भ हुआ । वशिष्ठ और विश्वामित्र के वैमनस्य के अनेक संकेत ऋग्वेद के विश्वामित्र द्वारा रचे गये मन्त्रों में मिलते हैं । राजा सुदास के पुरोहित के पद से उसकी मंगलकामना का संकेत भी ऋग्वेद के मन्त्रों में है ।

१. इमे भोजा अंगिरसो विरूपा दिवस्युभासाअसुरिस्य वीराः
विश्वामित्राय ददतो मघानि सहस्त्र सवि प्रतिरन्त आयुः ।

-ऋग्वेद मण्डल ६, सूत्र ५३, अध्याय ७

२- इम इन्द्र भरतस्य पुत्रा अपपित्वं चिकितुनं प्रपित्वम् ।
हिन्वन्त्यश्व मरणं न नित्यं ज्या वाजं परिणामन्त्याजौ ।

-ऋग्वेद मण्डल ३, सूत्र ५३ मन्त्र २४

न सायकस्य चिकिते जनासो,
लोघं नयन्ति पशु मन्यमानाः,
ना वाजिनं वाजिना हासयन्तिनं,
गर्गभं पुरो अश्वान्नयन्ति ।।

-ऋग्वेद, मण्डल ३, सूत्र ५३ मन्त्र २३

(१) इन मन्त्रों से सिद्ध होता है कि वशिष्ठ के साथ विश्वामित्र का सैद्धान्तिक मतभेद था । (२) एक बार संघर्ष में विश्वामित्र को वशिष्ठ के भृत्यों के हाथों बन्दी तक होना पड़ा था । (३) इस मतभेद का सूत्र-पात विश्वामित्र द्वारा शम्बर पुत्री उग्रा का पाणिग्रहण करने पर ही हो गया था । महर्षि वशिष्ठ आर्यों की रक्त शुद्धि के पक्षपाती थे और वे अनार्यों के साथ आर्यों के सम्पर्क और वैवाहिक सम्बन्धों को अनुचित और अनियमित ठहराते थे । उसके विपरीत विश्वामित्र कर्म के आधार पर जाति और धर्म की स्थापना करते थे तथा वे शुद्ध करके दस्युओं को भी आर्य बनाने के पक्ष में थे । यही झगड़ा बढ़ते-बढ़ते व्यापक हो गया और इसकी परिणति आगे चलकर दशराज्ञ (दस राजाओं का युद्ध) में हुई ।

उग्रा के पाणिग्रहण के प्रश्न को लेकर स्वयं भरत वंश में विश्वामित्र का विरोध होने लगा । महर्षि अगस्त्य उनके अनुज वशिष्ठ, भरत और तृस्तु कुल के राजवंश यहाँ तक कि विश्वामित्र की माँ घोषा तक उनके विरोध में हो गई, किन्तु विश्वामित्र ने हिम्मत नहीं हारी । अब वे खुले आम दस्युओं की शुद्धि की व्यवस्था देने लगे । इस 'अनर्थ' को देखकर वशिष्ठ तो तृस्तु राज्य-क्षेत्र में स्थापित अपना आश्रम तक त्याग कर चले गये । किन्तु धीरे-धीरे लोग विश्वामित्र की बातों को समझने और ग्रहण करने लगे । उनके पराक्रम, विद्वता, सरलता, दान-वीरता और त्याग वृत्ति का लोगों पर बड़ा प्रभाव पड़ा । लोग उनके नये दर्शन, नई विचारधारा और आचार-विचारों के सम्बन्ध में नई व्यवस्था को स्वीकार करने लगे । स्वयं राजा सुदास ने अपने पूर्व व्यवहार के लिए क्षमा याचना

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

की । उग्रा की मृत्यु हो चुकी थी, अब अगस्त्य और लोपामुद्रा ने अपनी पुत्री रोहिणी से विश्वामित्र का पाणिग्रहण करा दिया । इस प्रकार सफलता से उत्साहित होकर विश्वामित्र ने गायत्री मन्त्र की घोषणा की और कहा कि जो कोई व्यक्ति इस मन्त्र का विधिवत् जप करेगा उसे विशुद्ध आर्य समझा जायेगा । चाहे उसका जन्म किसी भी प्रकार के वंश में हुआ हो ।

किन्तु सफलता के साथ ही विश्वामित्र के जीवन का संघर्ष आरम्भ हुआ । प्रतिक्रियावादी शक्तियाँ अपने रूढ़ि विचारों के कारण खुलकर उनका विरोध करने लगीं । महर्षि वशिष्ठ ने व्यवस्था दी कि विश्वामित्र का जन्म क्षत्रिय कुल में हुआ है अतः वे तपस्या करने पर भी केवल राजर्षि हो सकते हैं, ब्रह्मर्षि कहलाने के अधिकारी वे नहीं हैं । विश्वामित्र ने इन सब रूढ़ियों का विरोध किया । उनका एक अनुयायी त्रिशंकु वशिष्ठ से निराश होकर उनके पास सदेह स्वर्ग जाने की इच्छा लेकर आया । विश्वामित्र ने नरक और स्वर्ग की व्याख्या करके उसे समझाया कि नरक और स्वर्ग सब इसी जीवन में हैं । यद्यपि आगे चलकर अपने अभिमान के कारण त्रिशंकु का पतन हुआ, किन्तु इतिहास जानता है कि एक बार विश्वामित्र की कृपा से मुक्त होकर वह स्वर्ग का अधिकारी हुआ था ।

विश्वामित्र और वशिष्ठ का संघर्ष केवल पुरोहित पद के लिये उनकी प्रतिद्वन्द्विता के आधार पर ही नहीं था बल्कि यह प्रगतिशीलता और प्रतिक्रियावाद के बीच में होने वाला संघर्ष था । निस्संदेह इस संघर्ष में प्रगतिशील तत्वों का नेतृत्व विश्वामित्र करते थे । वे स्वर्ग और नरक दोनों का भोग वर्तमान जीवन में ही मानते थे और इस गहन दर्शन को सर्व साधारण के लिए सुगम बना देने की क्षमता भी उनमें थी । उनके द्वारा नई सृष्टि की रचना की घटना भी इसी बात की ओर संकेत कर रही है कि तत्कालीन सामाजिक विधान उन्हें अमान्य थे और वे उनमें मौलिक परिवर्तन करना चाहते थे, जिनसे भद्र समाज भयभीत हो गया था । मेनका द्वारा उनकी तपस्या भंग कराने की घटना भी इसी ओर संकेत करती है कि वे तत्कालीन अभिजात्य वर्ग के लिये एक चुनौती के रूप में थे और किसी प्रकार उन्हें समाज की दृष्टि में पतित सिद्ध कर देना ही उस वर्ग को अभीष्ट था । बिना नरमेध के हरिश्चन्द्र को रोग-मुक्त कर देने की घटना बताती है कि वे अन्धविश्वास और मिथ्या कर्मकाण्ड में विश्वास न करके वस्तुओं के वैज्ञानिक विवेचन में विश्वास करते थे ।

वशिष्ठ और विश्वामित्र के फलस्वरूप होने वाले 'दशराज्ञ' का स्पष्ट उल्लेख ऋग्वेद में है । कथा सूत्रों और ऋग्वेद के संकेतों से ऐसा लगता है कि यह युद्ध निरा आर्यों और दस्युओं के बीच होने वाला युद्ध न होकर एक सैद्धान्तिक युद्ध था । एक पक्ष का नेतृत्व वशिष्ठ करते थे जो आर्यों की रक्तशुद्धि के पक्षपाती तथा दस्युओं और आर्यों के पारस्परिक सम्बन्धों के प्रबल विरोधी थे, दूसरे पक्ष का नेतृत्व विश्वामित्र के हाथों में था जो कर्म के अनुसार ही आर्य जाति का अस्तित्व मानते थे और जिनका विश्वास था कि आर्य धर्म का पालन और गायत्री का जप करके दस्यु भी आर्य धर्मी हो सकता है । युद्ध में भले ही विश्वामित्र की पराजय हुई किन्तु हमारी वर्तमान सामाजिक व्यवस्था साक्षी है कि व्यवहार में उनके ही सिद्धान्त की विजय हुई और अन्त में वशिष्ठ ने भी कर्म के अनुसार जाति का अस्तित्व स्वीकार करके उन्हें 'ब्रह्मर्षि' कहकर सम्बोधित किया था । इस परमोच्च पद को प्राप्त करने के लिए उन्हें प्रचण्ड तपश्चर्या करनी पड़ी थी ।

एक दिवस प्रातःकाल विश्वामित्र ऋषि हिमालय के उच्च प्रदेश पर आसन लगाकर बैठे थे । उनकी देह स्थिर और अचल थी । उषाकाल व्यतीत हो चुका था और गगन-मण्डल के एक कोने से सूर्य झांकने लगा था, उसकी प्रथम किरणों ने हिमालय के शिखर को स्पर्श किया । उसी किरण ने फिर विश्वामित्र के हृदय को स्पर्श किया, देखते-देखते हजारों किरणों को फैलाता हुआ सूर्य ऊपर आ गया । विश्वामित्र को इस सूर्य के दर्शन हुए ।

पर यह क्या ? विश्वामित्र अकस्मात बड़े विस्मय में पड़ गये, उनके शरीर के भीतर भी एक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सूर्य चमक रहा था । उनके हृदय रूपी आकाश में भी एक सूर्य प्रकाशित हो रहा था । यह बाहर के आकाश का सूर्य समस्त विश्व को प्रकाश देने के कारण समष्टि सूर्य था और विश्वामित्र के हृदयाकाश में, मस्तक से लेकर पैर तक के नख तक प्रकाशित यह दूसरा सूर्य व्यक्तिगत था । इन दोनों सूर्यों में एकता का भाव उत्पन्न हो रहा था । ये दोनों ही भौतिक पदार्थ थे । बाहर का सूर्य पांच महाभूतों का बना था और देह के भीतर का सूर्य भी पंच महाभूतों के आधार पर ही प्रकाशित हुआ था । विश्वामित्र विचार करने लगे कि इन पांच महाभूतों को प्रेरणा देने वाला कौन है, कौन-सी शक्ति इनको कार्य सक्षम बना रही है ?

विश्वामित्र की वेधक दृष्टि जड़-जगत से बाहर जाकर चेतन-तत्व को खोज रही थी । बाहर की स्थूल जड़ता को तोड़कर वह अन्तराल में प्रवेश कर रही थी, वहीं से तेज का प्रवाह निकल रहा था । वहाँ से नयी-नयी चेतनाएँ और प्रेरणाएँ मिल रही थीं । उन प्रेरणाओं को देने वाला अन्तर्यामी देव सविता-नारायण था । वह आधिदैविक रूप में सब देवों का अधिदेव था । उसी की प्रेरणा से आकाश स्थित सूर्य को असंख्यों किरणों द्वारा विश्व को प्रकाशित करने की शक्ति मिली थी और उसी की चेतना इस देह में स्थित सूर्य को प्रकाश प्रदान कर रही थी । जिस प्रकार साझीं-बहुत से छेद वाली हांड़ी में रखे हुए देवी के दीपक का प्रकाश प्रत्येक छेद में से झलकता है उसी प्रकार देह में बैठे अन्तर्यामी का प्रकाश प्रत्येक इन्द्रिय और एक-एक रोम कूट से प्रगट होता है । सच्चे-साधु संत जनों की देह के छिद्र निर्मल, स्वच्छ रहते हैं, इससे उनकी देह में स्थित प्रकाश विशेष रूप से दिखलायी पड़ता है । पर संसारी और पापीजनों के छेद विषय वासना के मैल से भरे रहते हैं इसलिए भीतर बैठा अन्तर्यामी पुरुष अपना प्रकाश बाहर नहीं फेंक पाता अथवा बहुत ही मन्द रूप में फेंक सकता है। इसी से साधु जनों के शरीर का प्रकाश (औरा) सफेद स्वच्छ होता है और पापी संसारी जनों का 'औरा' काला होता है ।

विश्वामित्र ने अनेक वर्षो तक तप करके अपनी देह के सब छिद्रों को स्वच्छ निर्मल बना लिया था । उन्होंने अपनी बुद्धि शक्ति को पारदर्शक बनाया था । भीतर का, बाहर का किसी प्रकार का मैल उनमें शेष नहीं रह गया था । विश्वामित्र की देह तपे हुए स्वर्ण के समान प्रकाशवान थी । अब उनकी देह अपनी नहीं रही थी । वह पंच भूतों की बनी देव सर्वभूतों सब प्राणियों से बने समाज के लिए भेंट कर दी गयी थी । वह विश्व के साथ एकता स्थापित कर चुकी थी । विश्वामित्र ने वास्तविक रूप में विश्व का मित्र बनकर अपना नाम सार्थक कर दिखाया था ।

साधना के पथ में आगे बढ़ते-बढ़ते विश्वामित्र अपना व्यक्ति-भाव भूल गये थे । विश्व की समस्त विभूतियाँ उनकी अपनी बन चुकी थीं । वे जो कुछ प्रयत्न कर रहे थे वे अपने लिए नहीं वरन् अन्य, अनेकों के लिए, समाज के लिए कर रहे थे । पहले उनको अपने अन्तःकरण से प्रेरणा मिलती थी पर अब उनको अब प्रत्यक्ष प्रेरणा सविता-नारायण से मिल रही थी । इसी के प्रभाव से एक स्वर्णमय प्रभात में उनको एक दिव्य दर्शन हुआ । उस दर्शन में जो प्रकाश था वह सूर्य और सविता का ही था पर वह केवल प्रकाश ही नहीं था उसमें ज्योति और चेतना भी थी ।

विश्वामित्र के अन्तराल से एक नाद शब्द प्रकट हो रहा था -'भर्ग' यह 'भर्ग' परम तेज, परम प्रकाश सविता नारायण का सर्वोत्तम तत्व था । इसी प्रसंग में विश्वामित्र को अपने गुरुदेव का स्मरण हो आया, उनका नाम 'भृगु' ऋषि था । उन्हीं की परम कृपा से यह परम-प्रेरणा, यह समाज कल्याण की भावना, यह विश्व हित की चेतना प्राप्त हुई थी । इसलिए अपने गुरुदेव तथा अपने को प्राप्त हुए इस परम तेज का नाम 'भर्ग' सब प्रकार से उचित ही था ।

मुनिवर विश्वामित्र को जब इस परम तत्व का दर्शन हुआ तो उसी समय उनको एक मन्त्र की स्फुरणा हुई । उनके अन्तराल में एक नाद जागृत हुआ, जिससे उनका हृदय नाच उठा । ऐसा जान पड़ता था कि कोई अन्तर्यामी उनके हृदय में प्रवेश

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

करके उनको दिव्य मन्त्र का उपदेश दे रहा है । तपश्चर्या करके और परम तत्व स्वरूप सविता नारायण का दर्शन करके उनको जो परम चेतना और प्रेरणा मिली थी उसके प्रभाव से उनका मुख मण्डल प्रकाशित हो रहा था । उनके मुख से सविता नारायण की महिमा गाने वाले तीन मन्त्र निकले जिनमें प्रथम यही था –

तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि,
धियो यो नः प्रचोदयात् ।।

ऋगवेद के दस मण्डल हैं । उनमें से तीसरे मंडल के ६१७ मन्त्रों के दृष्टा विश्वामित्र ऋषि हैं । उन सब मन्त्रों का दर्शन उनकी अन्तःप्रेरणा में से हुआ है और उन सब मन्त्रों में सबसे उत्तम यही मन्त्र माना गया है । तीसरे मंडल में ६१ सूक्त हैं । उनमें यह मन्त्र अन्तिम सूक्त का दसवां है ।

विश्वामित्र ऋषि ने इस मन्त्र का दर्शन करके समाज-कल्याण की सर्वोत्तम भावना को प्रकट किया है । तपशक्ति के प्रभाव से उनकी बुद्धि को यह प्रेरणा मिली जो समस्त समाज के कल्याण का मुख्य आधार बनी रहती है। गायत्री छन्द में गाये हुए इस मन्त्र में विश्वामित्र ने 'सविता' की परम शक्ति सावित्री का अनुपम गान गाया है । विश्वामित्र के मुख में से प्रकट होने वाली इस सरस्वती वाणी को, शब्द अर्थ और व्यंजना की शक्ति ने मन्त्र का रूप देकर साधना का सर्वश्रेष्ठ मार्ग प्रकट किया है ।

वेद माता की आराधना के लाभ

भारतीय संस्कृति के सम्बन्ध में जिसने भी गहराई से अध्ययन किया उसी ने उसे महान कहकर मस्तक झुकाया । यदि विवेक की दृष्टि से देखा जाय तब तो हम भारत मां के पुत्र कहलाने वाले व्यक्ति भी अपनी संस्कृति के सबसे बड़े-सबसे कड़े आलोचक बन जाते हैं । आत्महीनता से ग्रस्त होकर हम हर अपनी वस्तु को छोटा और हर विदेशी वस्तु को श्रेष्ठ मानने लगते हैं । विदेशियों ने हमारे धर्म-कर्म को ढोंग कहा तो उसकी आलोचना करना कथित सभ्य समाज का फैशन बन गया । हमें योग निरर्थक लगता रहा, जब तक कि वह विदेश से योगा कहलाकर नहीं लौटा। योगा के नाम से भी उसके साथ न्याय नहीं हो सक रहा है, हो सकना सम्भव भी नहीं क्योंकि उसे भी एक फैशन के रूप में लिया जा रहा है । उसका तत्व समझने का प्रयास ही नहीं किया गया । जब प्रयास ही नहीं किया गया तो उसे समझा जाना, सही रूप में प्रयुक्त किया जाना सम्भव नहीं ।

विश्व कवि रबीन्द्रनाथ ठाकुर को विदेशी अशुद्ध सम्बोधन "टैगोर" के नाम से हम पुकारना पसन्द करते हैं । उनकी गीतांजली को जब 'नोबिल' पुरस्कार मिला तब हमने उसकी ओर आँख उठाई, अन्यथा उसे किसी धार्मिक पुस्तक का अनुवाद कहकर हम उसकी उपेक्षा करते और अपने आपको प्रगतिशील समझते हुए उसके लाभ से वंचित ही रह जाते ।

भारतीय संस्कृति के सम्बन्ध में यदि हमारा दुराग्रह-पूर्वाग्रह समाप्त हो जाय तो हम स्पष्ट रूप से उसकी महानता को देख-समझ सकते हैं । अपने को विश्व-विजेता कहने वाला सिकन्दर युद्ध में यहाँ जीता या हारा, इस पर शंका की जा सकती है लेकिन वह भारतीय संस्कृति के सामने नत-मस्तक हुआ था इसमें दो राय नहीं हो सकती ।

इस युग का सर्वश्रेष्ठ कहा जाने वाला वैज्ञानिक आइन्सटीन हो, या अन्तर्राष्ट्रीय आध्यात्मिक संगठन 'थियोसोफिकल सोसाइटी' का संस्थापक कर्नल आल्काट दोनों भारतीय संस्कृति से प्रेरणा प्राप्त करते हैं। प्राचीनकाल में तो विश्व के हर कोने में इस देवभूमि का सन्देश प्रसारित किया गया था । केवल धर्म ही नहीं, राजनैतिक शास्त्र, अर्थशास्त्र, समाज शास्त्र, व्यापार, चिकित्सा विज्ञान सभी क्षेत्रों में यहाँ के देवपुत्रों ने विश्वमानव को मार्ग दर्शन एवं सहयोग दिया था । इसके अगणित उदाहरण हैं । पू० गुरुदेव की पुस्तक समस्त विश्व को भारत के अजस्र अनुदान अथवा विवेकानन्द शिला स्मारक केन्द्र, कन्या कुमारी से प्रकाशित अंग्रेजी की पुस्तक में मिल सकते हैं ।

भारत के उस गौरवमय स्वरूप की पुनः स्थापना करनी है, तो उसके सही आधारों को पुनः खोजना होगा, उन्हें मान्यता देनी होगी । इस देव-

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

संस्कृति के बट-वृक्ष के मूलतत्व की खोज करने पर वह गायत्री महामन्त्र में बीज रूप में मिलता है । भारतीय ज्ञान-विज्ञान के मूल स्रोत वेद माने जाते हैं । उपनिषद् इन्हीं के अंश अथवा व्याख्यायें हैं । उन्ही को स्पष्ट करने के लिए ब्राह्मण, आरण्यक आदि ग्रन्थों की रचना की गई । घटनाक्रम से उन्हीं तत्वों को स्पष्ट करने के लिए पुराणों एवं उप पुराणों का विशाल कलेवर खड़ा हो गया । अस्तु मूल धारा वेद कहलाते हैं, और निर्विवाद रूप से गायत्री को वेदमाता कहा जाता है ।

वेद मात्र ग्रंथ नहीं-वेद का अर्थ होता है ज्ञान । उसे पुस्तकों तक सीमित नहीं किया जा सकता । अस्तु गायत्री को ज्ञान की माता कहा जाना अधिक उपयुक्त है । पौराणिक उपाख्यान भी इसकी पुष्टि करते हैं । उल्लेख है कि सृष्टि के पूर्व, ब्रह्मा को आकाशवाणी से गायत्री मन्त्र प्राप्त हुआ । उसकी साधना, तपश्चर्या द्वारा उन्हें सृष्टि रचना की शक्ति प्राप्त हुई । स्पष्ट है कि सृष्टि रचना का ज्ञान 'वेद' उन्हें इसी आदिशक्ति से प्राप्त हुआ ।

छोटे से गायत्री मन्त्र में ज्ञान-विज्ञान की अगणित धारायें कैसे समाई हुई हैं, यह प्रश्न अब कठिन नहीं है । विज्ञान ने हमारी दृष्टि काफी विकसित कर दी है । हम जानते हैं कि छोटे से छोटे बीज के अन्दर विशाल वृक्ष के गुण धर्म से लेकर आकार-प्रकार तक, सभी समाये रहते हैं । उनका क्रमशः विस्तार अनुकूल परिस्थितियों में होता रहता है ।

वृक्ष ही नहीं मानव के सम्बन्ध में भी ऐसे ही तथ्य प्रकट हो चुके हैं । शुक्राणु के अन्दर गुण सूत्रों में अत्यन्त सूक्ष्म कण 'जीन्स' के अन्दर मनुष्य की आकृति नहीं, स्वभाव, गुण आदि के विकास की सारी रूपरेखा सन्निहित होती हैं ।

पदार्थ की सबसे छोटी इकाई 'परमाणु' के अन्दर पूरे सौर मण्डल जैसी स्थिति होने की जानकारी अब कोई नयी बात नहीं । अणुशक्ति की क्षमता पर कोई भी आज शङ्का नहीं करता । अणु ऊर्जा बिजली में बदलकर छोटे से छोटे और बड़े से बड़े कितने प्रकार के कल कारखानों को चला सकती है, यह तथ्य अब रहस्य नहीं रह गया । अस्तु गायत्री मन्त्र के अन्दर दर्शन, संस्कृति, ज्ञान-विज्ञान की अनन्त धारायें विकसित करने की क्षमता पर भी विश्वास किया जाना असंगत नहीं ।

यह तथ्य अन्य प्रकार से भी समझा जा सकता है । संस्कृति को संसार की भाषाओं में सबसे सुव्यवस्थित भाषा कहा जाता है । उसकी व्याकरण भाषा विज्ञान की दृष्टि से बेजोड़ है । लेकिन वह सारा व्याकरण मात्र १ सूत्रों 'अय उव, लितिक आदि विस्तार से बनी है ।' आज भी विज्ञान जगत में कठिन सिद्धान्तों की बड़ी-बड़ी व्याख्याओं को, छोटे-छोटे सूत्रों, 'फामूलों' के रूप में याद रखने की परिपाटी प्रचलित है । अस्तु भारतीय तत्ववेत्ता ऋषियों ने संस्कृति के महत्वपूर्ण सूत्रों को बीज रूप में एक गायत्री मन्त्र के अन्दर समाविष्ट कर दिया तो कोई आश्चर्य की बात नहीं ।

वेदमाता गायत्री का सम्मान भी भारतीय संस्कृति में मां के अनुरूप ही किया गया है । पुत्र कितना भी समर्थ हो जाय अपनी निर्मात्री माँ को भूल नहीं सकता । शिवाजी छत्रपति हो गये तो भी जीजाबाई के आगे बालक भाव से ही रहे । संत बिनोवा अपनी माँ की चर्चा करते हुए आज भी पुलकित हो उठते हैं और उनके नेत्र-कंठ भर आते हैं । सीता पुत्र 'लवकुश' हो या शकुन्तला पुत्र 'भरत' मां के गौरव को उन्होंने सर्वोपरि रखा । कुन्ती के प्रति पाँडव हमेशा कृतज्ञ बने रहे तो क्या आश्चर्य ? सच बात तो यह है कि इन सपूतों के प्रभाव और माँ के प्रति उनकी भावना देखकर ही दुनिया ने उन देवियों की महानता को समझा ।

आदि शक्ति गायत्री के सम्बन्ध में भी यह बात लागू होती हैं । भारतीय संस्कृति की हर धारा में उसको सर्वोपरि सम्मान दिया गया है । किसी भी उपासना के पूर्व सन्ध्या वन्दन का क्रम अनिवार्य बतलाया गया है और सन्ध्या वन्दन का सारा ढाँचा गायत्री मन्त्र पर खड़ा हुआ है । ऋषियों से लेकर अवतारों तक ने माँ को मान्यता दी है । भगवान श्री राम हों या उनके गुरु वशिष्ठ और विश्वामित्र, सभी गायत्री के अनन्य उपासक रहे हैं । गायत्री विद्या के विशेषज्ञ के रूप में विश्वामित्र ऋषि को मान्यता प्राप्त है । राम-लक्ष्मण को बला-अतीबला, सिद्धियाँ

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उन्होंने इसी महान साधना के आधार पर प्राप्त कराई थी । भगवान श्रीकृष्ण से संदीपन ऋषि ने गायत्री साधना ही करायी थी । कालान्तर में भ्रान्तियाँ फैलीं तो गायत्री साधना कौन करे, कौन न करे इसका झगड़ा तो खड़ा हुआ, किन्तु वेदमाता की शान के खिलाफ किसी प्रकार की कोई बात नहीं कही गयी । अनेक मन्त्रों का प्रचलन हुआ किन्तु अनादि गुरुमन्त्र के रूप में गायत्री की प्रतिष्ठा बराबर बनी रही । किसी भी साधना में, यहाँ तक कि तांत्रिक साधना में भी सफलता के लिए गायत्री का सम्पुट लगाना अनिवार्य माना जाता रहा है ।

वेदमाता को मान्यता देने के प्रमाण अनेक महत्वपूर्ण वाल्मकि ग्रन्थों से मिलते हैं । भागवत, देवी भागवत, वाक रामायण आदि ग्रन्थों में गायत्री मन्त्र के २४ अक्षरों का सम्पुट लगाया गया है । गायत्री मन्त्र के अक्षरों से प्रारम्भ होने वाले श्लोक इन ग्रन्थों में उसी क्रम से मिलते हैं । एक श्लोक के बाद दूसरा श्लोक लगभग समान अन्तर पर मिलता है । यह संयोग अचानक ही बन गया नहीं कहा जा सकता ।

उपासना पद्धतियाँ और ग्रन्थ ही गायत्री से सम्पुटित हों ऐसी बात नहीं । भारतीय संस्कृति के हर अनुयायी को उसके प्रति जागरूक रखने की विधि व्यवस्था बनाई गई हैं । इस महाशक्ति के प्रति आस्थावान बना रहकर व्यक्ति क्रमशः मानव से महामानव एवं देव मानव बन सकता है, इसलिए हर व्यक्ति उसका लाभ उठाने में प्रमाद न करे यह आवश्यक है । भारतीय संस्कृति के अनुयायी हर व्यक्ति के शरीर पर प्रतीक रूप में स्थापित करने की परम्परा चली । शिखा चोटी इसी की प्रतीक है । उसका वंदन उपासना के शब्द 'चिद् रूपिणी महामाये ' कहकर अनिवार्य रूप से किया जाता है । यज्ञोपवीत के रूप में गायत्री की प्रतिमा को शरीर पर धारण करके शरीर को देवमन्दिर बनाने की परिपाटी रही है । यज्ञोपवीत की तीन लड़ें गायत्री मन्त्र के तीन चरण, नौ तार, नौ शब्द, तीन ग्रन्थियाँ, तीन व्याहृतियां, एक बड़ी ग्रन्थि, प्रणव की प्रतीक मानी जाती । माँ गायत्री के गर्भ में रहकर हर व्यक्ति को दूसरा जन्म मिलता है तब उसे द्विज की संज्ञा दी जाती है । उसकी देव प्रतिमा को शरीर पर धारण करके द्विज अपने शरीर को, मन को देव मन्दिर जैसा पवित्र बनाये रखने का उत्तरदायित्व स्वीकार करता है ।

गायत्री को त्रिपदा कहा गया है । मनुष्य के स्थूल, सूक्ष्म एवं कारण तीनों शरीरों पर उसका प्रभाव पड़ता है । तीन काल-भूत, भविष्य, वर्तमान । तीन गुण- सत्, रज तम् । तीन आयाम- लम्बाई, चौड़ाई, ऊँचाई, तीन लोक आदि सभी को प्रभावित करने की क्षमता, त्रिपदा गायत्री में है । अर्थात् गायत्री साधक एकांगी नहीं होता, उसकी प्रगति सभी दिशाओं में, सभी पक्षों में होती है । लौकिक सफलताओं से लेकर पारलौकिक विभूतियाँ तक प्राप्त करने की क्षमता गायत्री साधक में विकसित होती हैं ।

आदर्श माता अपने बच्चों का एकाँगी विकास पसन्द नहीं करती । वह न तो संसार में उसे भटकने देना चाहती है और न संसार मिथ्या कह कर उसे पलायनवादी बनाना चाहती है । कुन्ती ने पांडवों को पराक्रमी भी बनाया, सन्तोषी भी और चरित्रनिष्ठ भी । सीता के लव कुश, शकुन्तला के भरत, मदालस के सुबाहु अलर्क आदि पुत्र सांसरिक तथा आध्यात्मिक दोनों ही दृष्टियों से सक्षम और सम्पन्न थे । वेदमाता गायत्री भी अपने वरद् पुत्रों को सभी विभूतियों से सम्पन्न बनाती हैं । अथर्व वेद में वेदमाता की महत्ता बतलाते हुए उल्लेख किया है ।-

''स्तुतामया वरदा, वेदमाता प्रचोदयन्तां पावमानी द्विजानाम् । आयुः प्राणं प्रजां पशुं, कीर्तिं, द्रविणं ब्रह्मवर्चस् मद्या दत्वा ब्रजत ब्रह्म लोकम् ।''

-अथर्व० १९ ।७१ ।१

अर्थात् वेदमाता गायत्री अपने साधकों को पवित्र करती है । उन्हें आयु, प्राण, प्रजा, पशु, यश, धन एवं ब्रह्मवर्चस् प्रदान करती हुई ब्रह्मलोक का अधिकारी बनाती है ।

इस घोषणा को समझकर किसी भी व्यक्ति को, उपासना को एकाँगी मानकर तिरस्कृत नहीं करना चाहिए । लोगों में यह भ्रान्ति है कि उपासना से मनुष्य केवल पारलौकिक दिशा में बढ़ता है, लौकिक उन्नति से उसका यह सम्बन्ध नहीं है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

संसार को छोड़कर ही उपासना की दिशा में बढ़ा जा सकता है, यह मान्यता गलत है । संसार से विरक्ति की बात इसलिए कही जाती रही है कि उसमें उचित से अधिक उलझकर व्यक्ति अपने अन्य विकास के मार्गों की उपेक्षा करने लगता है । माँ गायत्री अपने साधकों को आश्वस्त भी करती है और दिशा भी देती है । मनुष्य के लिए आवश्यक हर विभूति उसकी कृपा से प्राप्त की जा सकती है । शरीर छूटने पर 'ब्रह्मलोक' की प्राप्ति की बात के साथ-साथ उसके पूर्व आयु, प्राण से लेकर ब्रह्मवर्चस तक प्राप्त करने के औचित्य का प्रतिपादन इस मन्त्र में है । शरीर रहते ब्रह्मवर्चस एवं शरीर छूटने पर ब्रह्मलोक की प्राप्ति, यह पूरी तरह आध्यात्मिक उपलब्धियाँ हैं किन्तु मां गायत्री का पयपान करके मनुष्य में जो क्षमताएँ उत्पन्न होती हैं, उनके द्वारा और माँ के सीधे अनुदान के रूप में आयु, प्राण, प्रजा, पशु आदि कीर्ति और धन वैभव यह पांच लौकिक लाभ प्राप्त होते हैं ।

'आयु' मनुष्य की सहज आकाँक्षा है । किसी से पूछा जाय आप क्यों जीना चाहते हैं ? तो प्रश्न अटपटा सा लगता है, मनुष्य बहुत कुछ करना चाहता है इस प्रश्न का सहज उत्तर यही है कि वह एक सहज आकांक्षा है । माँ गायत्री का साधक उचित आयुष्य प्राप्त कर लेता है यह उसकी प्रथम उपलब्धि है ।

प्राण मनुष्य के जीवट को, तेजस्विता को कहते हैं । जीवन के दिन किसी प्रकार पूरे करने वालों को प्राणहीन व्यक्ति कहा जाता है । वे किसी की कृपा की कामना करते हुए किसी प्रकार जीवन पूरा करते हैं । इसके विपरीत प्राण सम्पन्न व्यक्ति जहाँ भी चल पड़ते हैं नयी फिजाँ पैदा करते हुए चलते हैं । वे अपने मानवोचित शौर्य का प्रदर्शन करते हुए अपने तक के रूप में संसार की सुविधाओं से लेकर भगवान का प्रेम तक प्राप्त कर लेते हैं। कवीन्द्र-रवीन्द्र की पंक्तियाँ- ''एकला चलो रे'' ऐसे ही सम्पन्न व्यक्तियों द्वारा चरितार्थ होती हैं । अकेला अभिमन्यु चक्रव्यूह को चीरता हुआ निकल जाता है । अकेला हनुमान अजेय रावण की लंका में कूद पड़ता है । अकेला विवेकानन्द भारतीय संस्कृति की दुन्दुभी बजाता हुआ विश्व धर्म सम्मेलन में जा पहुँचता है । अकेला शंकराचार्य देश भर में सांस्कृतिक भ्रान्तियों को एक झाड़ू से समेट कर रख देता है । लकड़हारे का बेटा अब्राहम लिंकन अमेरिका का राष्ट्रपति और गरीब नौकरानी का बेटा महान वैज्ञानिक ऐडिसन बन सकता है । इन सभी की परिस्थितियाँ ऐसी थीं कि उनका हवाला देकर, भयभीत होकर कोई भी सामान्य व्यक्ति सन्तोष कर लेता पर प्राणवान व्यक्ति मछली की तरह धारा को चीरते हुए आगे बढ़ने में ही आनन्द का अनुभव करते हैं । हर मनुष्य प्राण सम्पन्न भी होना ही चाहता है ।

मनुष्य की एक और आकांक्षा है कि वह अकेला नहीं रहना चाहता, वह अपनों के बीच रहना चाहता है । अपने समर्थकों और आश्रितों को संभालते हुए उनके बीच रहना मनुष्य को रुचिकर है । यह भी एक सहज आकांक्षा है । अपने समर्थक एवं आश्रित वर्ग को प्रजां-पशु की संज्ञा दी जाती है । माँ की कृपा से यह 'विभूति' भी साधक प्राप्त करता है ।

सांसारिक जीवन में यश की भी उपयोगिता है, उसका औचित्य भी है । लोकेषणा की तो निन्दा की गयी है, किन्तु 'यश' होना न तो बुरा है और न अनुचित । श्रेष्ठ व्यक्तियों की कीर्ति फैलती है तो उनकी विशेषताओं का लाभ उठाने का तथा उनसे प्रेरणा प्राप्त करने का अवसर भी अगणित व्यक्तियों को प्राप्त होता है । भगवान के जन्म के उद्देश्यों में भी रामचरित मानस में 'जग विस्तारहि विशद जस, राम जन्म कर हेतु' भी शामिल है ।

सत्पुरुषों को, देख तो थोड़े से व्यक्ति ही पाते हैं, किन्तु उनके यश से अगणित व्यक्ति लाभ उठाते हैं । हरिश्चन्द्र के यश ने ही गांधीजी को सत्य का साधक बनाया था । राम, कृष्ण, गौतम, विवेकानन्द आदि के पावन यश से ही लोग प्रेरणा लेते रहे हैं और लेते रहेंगे । गायत्री साधक को कीर्ति के रूप में ऐसा ही पावन यश प्राप्त होता है ।

पाँचवीं विभूति के रूप में धन का उल्लेख किया गया है । आज के युग में धन की महत्ता बतलाना

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

किसी के लिए भी आवश्यक नहीं । धन प्राप्ति के लिए आज का सभ्य कहलाने वाला नागरिक भी क्या कुछ नहीं कर गुजरता । धन प्राप्ति के यदि सौम्य-उचित माध्यम खड़े किये जा सकें तो उनके कारण होने वाले अगणित दुराचार एवं अपराध सहज ही रुक सकते हैं । अन्य मतों में धन को माया कह कर त्याज्य भले कहा हो, किन्तु वेदमाता उचित सीमा तक धन को उचित भी मानती है तथा अपने साधकों को उसकी प्राप्ति का आश्वासन भी देती है।

यह पाँच विभूतियाँ पाकर मनुष्य निश्चित रूप से श्रेष्ठ-संतुलित जीवन जी सकता है, किन्तु मां गति को यहीं नहीं रोकती । शरीर रहते एक दुर्लभ विभूति प्राप्त करने का प्रोत्साहन और देती है, वह है-ब्रह्मवर्चस । शरीर रहते हुए भी मनुष्य सर्वशक्ति मान ब्राह्मी चेतना से स्वयं को जोड़ सकता है । वह स्थिति पैदा हो जाती है, तो मनुष्य महामानव, देवमानव के रूप में विकसित हो जाता है । यह संसार की जानी जा सकी शक्तियों में सबसे बड़ी शक्ति मानी जाती है । अपनी सेना समेत राजा विश्वामित्र जब महर्षि वशिष्ठ से पार न पा सके तो उन्हें आश्चर्य हुआ । उन्हें पता लगा कि महर्षि के ब्रह्म बल के आगे उनकी सारी शक्ति कोई महत्व नहीं रखती । तब उन्होंने कहा था 'धिक बले क्षत्रिय बलं, ब्रह्मबलं -बलं-बलं ।' अर्थात् बल कहलाने योग्य बल तो एक मात्र ब्रह्मबल ही है ।

ब्रह्मवर्चस सम्पन्न व्यक्ति ही शाप वरदान एवं असम्भव लगने वाले कार्यों को पूरा कर पाता है । ब्रह्मवर्चस् ही क्रमशः ब्रह्मास्त्र, ब्रह्मदण्ड एवं ब्रह्मशीर्ष के रूप में व्यवहारित होता है । बाहर की अजेय आसुरी शक्तियाँ हों या भीतर की अजेय लगने वाली दुष्प्रवृत्तियाँ हों उन्हें जिस शक्ति से समाप्त किया जा सकता है उसे ब्रह्मास्त्र कहते हैं । उसे अचूक माना जाता है । ब्रह्मास्त्र के अमोध होने के प्रमाण शास्त्रों में उपलब्ध हैं । ब्रह्मदण्ड, शाप के रूप में प्रकट होता है । अपनी शक्तियों को लौकिक दृष्टि से अतुलनीय मान लेने पर जो व्यक्ति उद्दण्ड, उच्छृंखल हो उठते हैं उन्हें दण्डित करने के लिए ब्रह्म-दण्ड के रूप में शाप आदि का प्रयोग होता है तो फिर उससे वचना असम्भव हो जाता है । पुराणों में इसकी ढेरों कथायें मिलती हैं ।

जिस प्रकार अनीति करने वालों को ब्रह्मदण्ड द्वारा दण्डित किया जाता है उसी प्रकार सत्पुरुषों को पुरस्कृत भी किया जाता है । उसके लिए प्रयुक्त शक्ति को ब्रह्मशीर्ष कहते हैं । वरदान इसी शक्ति के आधार पर पूरे होते हैं । जिनकी श्रेष्ठ कार्यों, श्रेष्ठ प्रवृत्तियों के प्रति अनन्य निष्ठा है, यदि उन्हें सांसारिक माध्यमों से सहयोग-समर्थन, पारितोषिक नहीं मिल पाता तो वरदान द्वारा उन्हें वह उपलब्ध हो जाता है । वरदानों की शृंखला अपने शास्त्रों में शापों से कम लम्बी नहीं है । यह सब ब्रह्मवर्चस के ही विभिन्न रूप हैं । माँ गायत्री अपने पुत्रों को शरीर रहते, अनेक लौकिक विभूतियों के साथ-साथ यह दिव्य-विभूति भी प्राप्त कराना चाहती है ।

वेद के इस कथन का प्रमाण जानने की इच्छा किसी के अन्दर सहज ही उठ सकती है । वह बुरी भी नहीं । हमारे यहां सोच समझ कर ही किसी मार्ग पर कदम बढ़ाना उचित माना जाता है । यह बात ठीक है कि श्रद्धा में तर्क नहीं चलता, किन्तु श्रद्धा के द्वार तक मनुष्य की बुद्धि को पहुँचाने में तर्क और तथ्य बहुत उपयोगी सिद्ध होते हैं । रामायण की उक्ति है -

जाने बिनु न होय परितीती, बिन परतीत होय किम प्रीती।
प्रीति बिना नहिं भक्ति दृढ़ाई, जिमि खगेस जल की चिकनाई ।

अस्तु भक्ति तक श्रद्धा तत्व तक पहुँचने के लिये ठीक-ठीक जानकारी भी होना आवश्यक है । वेद माता की आराधना से किसने क्या पाया, इसके सुनिश्चित प्रमाण शास्त्रों में भरे पड़े हैं । हम थोड़े से प्रमाणों पर विचार करते हैं । पौराणिक काल के महर्षि वशिष्ठ और महर्षि विश्वामित्र गायत्री विद्या के निर्विवाद विशेषज्ञ माने जाते रहे हैं । ऐतिहासिक युग में आर्य समाज के संस्थापक ऋषि दयानन्द ने सनातन पद्धति के अनेक पक्षों की आलोचना की किन्तु गायत्री उपासना को सर्वोपरि मानकर चले । पौराणिक और ऐतिहासिक युग की घटनाएँ पुरानी हैं पता नहीं किन परिस्थितियों में क्या हुआ इस पर कभी-कभी शंका होने लगती है तो एक दो उदाहरण वर्तमान काल के भी लिए जा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सकते हैं । एक महात्मा आनन्द स्वामी संयासी के रूप में रहे पर सनातनी और आर्यसमाजी दोनों के रूप में भारत के ही नहीं विश्व स्तर के माने हुए सन्त मात्र गायत्री उपासना के आधार पर ही बढ़े । बचपन में वे महामूर्ख समझे जाते थे । जानवर चराने में भी भूलें होतीं और मार तथा अपमान सहना पड़ता । जीवन से तंग आकर आत्महत्या पर उतारू हो गये । तब एक संत ने गायत्री मां का आंचल पकड़ने का मार्ग बताया । उन्होंने प्रातः तीन बजे उठकर साधना का क्रम प्रारम्भ किया । नींद आती थी तो चोटी में रस्सी बांधकर छत पर बाँध देते थे, सिर नीचा होते ही झटका लगता था । माँ की कृपा हुई और हर दृष्टि से आदर्श गृहस्थ भी बने और आदर्श महात्मा भी ।

एक प्रमाण इस महा अभियान के प्रर्वतक का है । आगरा जिले के एक छोटे से गांव में जन्मे १५ वर्ष की आयु की अवधि में ही हमें कई जन्मों के मार्गदर्शक ने उपासना कक्ष में सूक्ष्म रूप से प्रकट होकर कुछ महत्वपूर्ण कार्य करने का आदेश दिया । उसकी तैयारी के लिये शक्ति अर्जित करने के लिए गायत्री मन्त्र के चौबीस-चौबीस लाख के चौबीस पुरुश्चरण करने के लिए कहा । हमने निष्ठापूर्वक, केवल जौ की रोटी और छाछ लेकर यह पुरुश्चरण की लम्बी श्रृंखला पूर्ण की । उसी शक्ति से अद्‌भुत कार्य सम्पन्न करने का सिलसिला जो चालू हुआ तो अब तक नित्य नये स्वरूप सामने आते चले आते हैं ।

हम इन सब प्रमाणों को वेद भगवान की घोषणा की प्रामाणिकता की दृष्टि से देख रहे हैं । जिन विभूतियों के मिलने की चर्चा उक्त ऋचा में की गयी है, उन्हें एक-एक करके हम देखते हैं -

प्रथम है आयु-गायत्री साधना से आयुष्य की प्राप्ति होती है । महर्षि वशिष्ठ के सम्बन्ध में हम जानते हैं कि वे रघु कुल के राजाओं में दिलीप से लेकर भगवान राम तक राजगुरु के रूप में रहे । इतना आयुष्य सामान्य बात नहीं । महर्षि विश्वामित्र का वर्णन भी भगवान राम के पूर्व से द्वापर तक मिलता है । इस सन्दर्भ में सत्यवान की कथा भी उल्लेखनीय है । सावित्री, गायत्री का ही दूसरा नाम है । यह सत्यवान का वरण कर लेती है । फिर यदि उसकी आयु कम है तो वह उसे यम से भी छुड़ा लेने में समर्थ है । इस उपाख्यान के अन्दर गायत्री विद्या के महत्वपूर्ण तथ्य विद्यमान हैं ।

आयु का अर्थ लम्बी आयु ही नहीं-आयुष्य का अर्थ स्वस्थ-निरोग जीवन भी माना जाता है । ऋषि दयानन्द एवं महात्मा आनन्द स्वामी दोनों इसके प्रमाण हैं । आनन्द स्वामी अभी दो वर्ष पूर्व ही ९४ वर्ष की आयु पाकर स्वर्गवासी हुए । जिन्होंने उन्हें देखा है वे जानते हैं उस आयु तक उनमें बालकों जैसी स्फूर्ति बराबर बनी रही । अपनी भी कुछ ऐसी ही स्थिति है । हमने एक ही जीवन में पाँच जीवन जिया है । जानकारों का कथन है कि महात्मा बुद्ध और स्वामी विवेकानन्द भी अपने मिशन को अपने जीवन काल में इतना व्यापक और इतना व्यवस्थित स्वरूप नहीं दे सके थे, जितना युग निर्माण के संस्थापक ने दिया है । यह सब मां गायत्री के अनुदानों का ही प्रभाव है । गायत्री साधना से प्राण शक्ति के विकास के भी प्रमाण इसी प्रकार हैं । ऋषियों के आश्रम में सिंह और गाय एक साथ बिचरते थे । यह उनके प्राण तत्व की तेजस्विता का ही प्रभाव था जो वे अपनी स्वाभाविक वृत्ति भूल कर उनके अनुरूप आचरण कर उठते थे । ऋषि दयानन्द रुढ़िवादियों के बीच अकेले पाखंड खंडिनी पताका लेकर कूद पड़े, और अपने मिशन में सफल हुए । हम भी जीवन पर्यन्त हजार विरोधों के बीच अकेले क्रियाशील रहे । माँ गायत्री एवं यज्ञ पिता को बन्धन मुक्त करके जन-जन तक पहुँचाने में अपनी अद्‌भुत प्राण-शक्ति के आधार पर ही सफल हो सके ।

'प्रजां' - पशु के रूप में सहयोगी समर्थक, अनुयायियों की कमी ऋषियों को भी नहीं रही । राजाओं के राज्यों की सीमायें थीं पर ऋषियों का प्रभाव क्षेत्र उनसे मुक्त-अधिक विस्तृत था । ऋषि दयानन्द की प्रजा आर्य समाज के रूप में देश विदेश में आज भी फैली है । हमारे निर्देश पर अपनी साधना पद्धति ही नहीं, जीवन पद्धति भी ढालने वाले करोड़ों व्यक्ति देश एवं विदेश में आज भी हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कीर्ति तो सत्पुरुषों की कभी नष्ट नहीं होती । वेदमाता के साधक महर्षि वशिष्ठ से लेकर आज तक सभी कीर्ति के परम अधिकारी हुए हैं । एक बार तो विरोधी भी सराहना कर उठते हैं । 'द्रविणं' धन की भी उन्हें कमी नहीं रही । महर्षि वशिष्ठ के संकेत मात्र से सम्पदा के पहाड़ लग जाते थे । विश्वामित्र जी को आवश्यकता पड़ी तो राजा हरिश्चन्द्र ने सारा राज्य सौंप दिया तथा स्वयं बिक कर भी पूर्ति करने का प्रयास किया । ऋषि दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना के लिए जितना धन चाहा उन्हें मिला । महात्मा आनन्द स्वामी ने कभी अपने उपयोग के लिए किसी की दक्षिणा स्वीकार नहीं की । हमारे जीवन में भी चमत्कारी ढंग से धन की पूर्ति हुई है । जब हमने मथुरा में सहस्र कुण्डीय यज्ञ किया तो, न तो किसी धनपति का सहारा लिया और न कोई सार्वजनिक अपील की । व्यवस्था में जिनका सीधा हाथ था, वे भी यह रहस्य न समझ सके आय के सारे स्रोतों को जोड़ लेने के बाद भी जो रकम बची, खर्च उससे कई गुना अधिक हो गया । यह सब कहाँ से हो गया इतने बड़े प्रकाशन, देशव्यापी कार्य, गायत्री तपोभूमि, शान्ति कुंज ब्रह्मवर्चस्, गायत्री नगर आदि का निर्माण जिस क्रम में हुआ और होता जा रहा है, वह आज भी लोगों के लिए आश्चर्य का विषय है ।

ब्रह्मवर्चस की प्राप्ति के सम्बन्ध में भी अगणित प्रमाण मिल जाते हैं । ऋषियों के आश्रम में सिंह और गाय एक साथ रह लेते थे । बड़े-बड़े चक्रवर्ती सम्राट उनके आगे सहम जाते थे । शासनतन्त्र को उच्छृंखल होने से रोकने में ऋषियों का ब्रह्मवर्चस एक सशक्त अंकुश का काम करता रहा । श्राप, वरदान आदि के अगणित उदाहरण हम जानते हैं । हमारे एक-एक वाक्य लोगों के जीवन की दिशा बदल देते हैं । एक संकेत पर बड़े-बड़े कार्य हाथ में उठा लिए जाते हैं । यह सब ब्रह्मवर्चस का ही प्रभाव है ।

हमारे जीवन के इस पक्ष का विवरण देना कठिन है । हमने अपना शरीर रहते स्वयं रोक लगा रखी है । फिर भी हमारे आस-पास ढेरों ऐसे व्यक्ति मिल सकते हैं जो अपने व्यक्तिगत अनुभवों के आधार पर इसके प्रमाण दे सके । भारतीय संस्कृति के उद्धार के उद्घोष के पीछे मिशन द्वारा चलाई जा रही, धार्मिक, साहित्यिक, संगठन परक, गतिविधियों के पीछे जो शक्ति कार्य कर रही है वह ब्रह्मवर्चस ही है । सामान्य व्यक्ति जिस शक्ति के सहारे उनके कार्य के लिए निर्भय होकर बड़े-बड़े कदम उठाने को तैयार हो जाते हैं, वह उसी शक्ति का प्रभाव है । कल तक जो लोग युग निर्माण अभियान का उपहास उड़ाते थे वो आज समर्थक सहयोगी बनकर आगे आ रहे हैं । कार्य किसी लौकिक शक्ति से सम्भव नहीं । पीढ़ियों से चली आ रही रूढ़ियों को तोड़ते हुए सामान्य लोग भी इस महाअभियान में भागीदार बनने के लिए दौड़ पड़ते हैं । यह उसी महाशक्ति गायत्री की दिव्य क्षमता का करिश्मा है । अगले दिनों में इसे और भी स्पष्टता से देखा समझा जा सकेगा ।

शास्त्रों और ऋषियों द्वारा गायत्री की महिमा

ऋषयो वेद शास्त्राणि सर्वे चैव महर्षयः ।
श्रद्धया हृदि गायत्रीं धारयन्ति स्तुवन्ति च ।।

(ऋषय) ऋषि लोग (वेद शास्त्राणि) वेद और शास्त्र (च) और (सर्वे महर्षयः) समस्त महर्षि (गायत्रीं) गायत्री को (श्रद्धया) श्रद्धा से (हृदि धारयन्ति) हृदय में धारण करते हैं (च) और (स्तुवन्ति) उसकी स्तुति करते हैं ।

सत्य इतना स्पष्ट होता है कि उसके सम्बन्ध में प्रायः सभी विचारशील व्यक्तियों की सम्मति एक होती है । दो और दो मिलकर कितने होते हैं इस प्रश्न को कितने ही व्यक्तियों से पूछा जाय, सबका एक ही उत्तर होगा-चार । इस समय दिन है या रात ? इस प्रश्न का उत्तर सभी विचारवान् व्यक्ति एक ही देंगे, सूर्य निकल रहा होगा तो कहेंगे कि इस समय दिन है, सूर्य अस्त हो गया होगा तो कहेंगे कि अब रात है । यह प्रश्न चाहे जितने व्यक्तियों से पूछा जाय यदि उनका मस्तिष्क स्वस्थ और परिपक्व दशा में है तो एक ही प्रकार के उत्तर मिलेंगे ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सत्यता से भरे हुए तथ्य इतने स्पष्ट होते हैं कि उनके सम्बन्ध में सभी को एक मत होना पड़ता है । अपनी कमजोरी के कारण कोई उन्हें कार्य रूप में परिणत करने में समर्थ भले ही न हो पर जहाँ तक मान्यता का प्रश्न है वहाँ तक प्रायः सभी विचारवान् व्यक्ति सहमत हो जाते हैं । झूठा मनुष्य भी प्रत्यक्ष रूप से 'सत्य' की महत्ता से इनकार नहीं कर सकता, 'ईमानदारी' की श्रेष्ठता का खंडन करने का साहस चोर में भी नहीं होता । गुपचुप रूप से कोई, चाहे कुछ करे प्रत्यक्ष रूप से सच्चाई का विरोध नहीं कर सकता । कारण यह है कि सत्य की श्रेष्ठता सर्वोपरि है, उसमें अगर-मगर भले ही जोड़ी जाय किन्तु स्पष्ट रूप से उसका विरोध नहीं हो सकता । जब चोरों की यह बात है तो श्रेष्ठ व्यक्तियों का तो कहना ही क्या ? उन्हें तो सत्यता के तत्वों पर सहमत होना ही चाहिए । फिर ऋषि मुनि और सन्त महात्माओं के बारे में तो यह सूर्य की तरह स्पष्ट है कि वे लोग जिस बात को सत्य, उचित, आवश्यक एवं उपयोगी देखेंगे, उसके सम्बन्ध में एक मत होंगे ही ।

गायत्री मन्त्र की महत्ता एक ऐसी ही स्पष्ट सचाई है जिसके आगे सभी ऋषि-मुनियों ने, सभी धर्म ग्रन्थों ने समान रूप से मस्तक झुकाया है, एक स्वर से उसका गुणगान किया है, एक सम्मति से उसका महात्म्य वर्णन किया है । गायत्री की महिमा का वर्णन इतने महापुरुषों ने, इतने आप्तग्रन्थों ने, इतने विस्तार एवं स्पष्ट रूप से किया है कि उसके सम्बन्ध में किसी प्रकार का सन्देह रहने की गुंजाइश नहीं बचती । आप्त पुरुषों की प्रणाली यह रही है कि वे पहले किसी बात को परीक्षा की कसौटी पर कसते हैं, उसका मंथन करते हैं, सूक्ष्म दृष्टि से उसके अदृष्ट एवं दूरवर्ती भावी परिणामों पर विचार करते हैं, अपने अनुभव में लाते हैं, तब किसी बात का प्रकाश करते हैं । गायत्री को इन सब कसौटियों पर कसा गया है और जब देखा गया कि यह महिमा मय तत्व एक उच्चकोटि का रत्न भण्डार है तब उसका सर्व साधारण के लिए प्रकाश किया गया है ।

उसका साधारण प्रकाश नहीं किया गया है वरन् इतना महत्त्वपूर्ण समझा गया है कि प्रतिदिन, नित्य, बिना नागा केवल एक बार नहीं अनेक बार, उसको अपनाने का आग्रहपूर्ण आदेश किया गया है । हम देखते हैं कि सन्ध्या वन्दन को धर्म शास्त्रों ने इतना ही आवश्यक माना है जितना कि भोजन, निद्रा, स्नान आदि नित्यकर्मों को माना गया है । संध्या करना आवश्यक है, लाभप्रद है, अनिवार्य है इन तथ्यों को मनुष्य के मस्तिष्क पर जमाने के लिए अनेकों विधि वचन धर्म ग्रन्थों में मिलते हैं । ऐसे असंख्यों श्लोकों, मन्त्रों, सूत्रों एवं आदेशों से हमारे आर्ष ग्रन्थ भरे पड़े हैं, उनमें अनेक प्रकार से यह कहा गया है कि सन्ध्या करना आवश्यक है । संध्या को प्रातः, मध्यान्ह, सायंकाल तीन बार करने का विधान है, पर प्रातः सायं दो बार या कम से कम एक बार प्रातः काल करना तो अनिवार्य जैसा बताया है । संध्या की अनेकों पद्धतियाँ प्रचलित हैं, ऋग्वेदीय, यजुर्वेदीय, सामवेदीय संध्यायें प्रसिद्ध हैं । सनातन धर्मावलम्बियों की संध्याऐं तथा आर्य समाजियों की संध्याऐं पृथक हैं । इन सभी संध्याओं में अन्य प्रकार के अन्तर भले ही हों पर गायत्री मन्त्र सबमें अवश्य होगा । बिना गायत्री के संध्या हो ही नहीं सकती । इस अनिवार्यता में एक बात स्पष्ट है कि गायत्री को हर हालत में प्रतिदिन् कई-कई वेलाओं में, अनेक बार जपना, अनेक बार हृदयंगम करना आवश्यक है । इस विधान पर विचार करने से सहज ही पता चल जाता है कि गायत्री के अन्तर्गत कोई ऐसे तत्व हैं जिनकी हमारे आन्तरिक शरीर को उतनी ही आवश्यकता है जितनी की भोजन की । भोजन भी तीन बार तक किया जाता है, गायत्री की आवश्यकता भी तीन बार है । कोई-कोई निर्बल, वृद्ध या रोगी उदर की कमजोरी के कारण एक बार भोजन करना ही काफी समझते हैं, इसी प्रकार अध्यात्मिक निर्बलता वाले व्यक्ति रुचि मंदता के कारण एक वेला में ही गायत्री जपते हैं । जिस प्रकार भोजन को अनेक ग्रासों में बार-बार खाया जाता है उसी प्रकार गायत्री को भी अमुक संख्या में बार-बार दोहराया जाता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गायत्री भोजन जैसी उपयोगी इसलिए है कि उसमें आत्मिक बल का केन्द्र है । बुद्धि की शुद्धि, उदर शुद्धि से भी अधिक आवश्यक है । पेट में मल भरा हो, विषैले पदार्थ जमा हों तो शरीर का स्वास्थ्य प्रतिदिन क्षीण होता जायगा भले ही कीमती भोजनों को खाया जाता रहे । इसी प्रकार यदि बुद्धि अशुद्ध है, विकृत है, नीच तत्वों में लिप्त है तो उस बुद्धि से आत्म-कल्याण नहीं हो सकता, सुख-शान्ति का दर्शन नहीं हो सकता, चाहे कोई कितना ही बड़ा, कितना ही मूल्यवान कर्मकाण्ड क्यों न करे । उदर की शुद्धि होने पर किया हुआ भोजन शुद्ध रक्त बनाता है और बल वीर्य की वृद्धि करता है, इसी प्रकार शुद्ध बुद्धि से किये गये कार्य एवं विचार ही आत्मबल को बढ़ाने एवं आत्म कल्याण की ओर ले जाने वाले होते हैं । यदि किसी झरने के उद्गम में विष की खान हो तो उसका जल देखने में चाहे कितना ही शीतल, स्वच्छ, स्वादिष्ट क्यों न हो पर उसको पीने से अनिष्ट कर परिणाम ही उत्पन्न होगा, अशुद्ध बुद्धि का भी यही हाल है उससे चाहे कैसे ही चमत्कारी कार्य क्यों न कर दिखाये जायँ, चाहे कितना ही धन, यश, वैभव, इकट्ठा कर लिया जाय पर परिणाम बुरा ही होगा । इसलिए मूल केन्द्र को शुद्ध करना, अन्य सब कार्यों की अपेक्षा अधिक उपयोगी देखकर उसकी अनिवार्यता का प्रतिपादन किया गया है और गायत्री साधना को भोजन करने जैसा दैनिक कृत्य नियुक्त किया गया है ।

सर्वसाधारण के लिए यह आदेश किया गया है कि गायत्री को केवल एक विशेष साधना समझ कर उसकी उपेक्षा न करो, वरन् एक अनिवार्य नित्यकर्म समझ कर प्रतिदिन कई-कई बार उसमें गर्भित तथ्य को अपने अन्तःकरण में धारण करो । बुद्धि की शुद्धि करना, उसे सात्विक बनाना, आत्म निर्माण का सर्व प्रथम कार्य है, गायत्री इसकी शिक्षा देती है और सफलता प्रदान करने का मार्ग बताती है । यह इतना बड़ा लाभ है जिसकी तुलना और किसी लाभ से नहीं हो सकती । बुद्धि की शुद्धता प्राप्त होने पर आत्मिक आनंदों का समुद्र उमड़ पड़ता है और साथ ही भौतिक जगत् में जो उन्नति होती है वह स्थायी, सुदृढ़ एवं प्रतिष्ठा युक्त होती है, उस समृद्धि को भोगने से मनुष्य को भोग का सच्चा आनन्द मिलता है । अशुद्ध बुद्धि से उपार्जित किये हुए भोग ऐसे हैं जैसे शरीर में बादी भर जाने से उसका फूल कर फफ्फस हो जाना, ऐसे फूल कर फफ्फस हुए मनुष्य बाहर से चाहे कैसे ही मोटे दिखाई पड़ें पर भीतर से उनका वह मुटापा उनके लिए भार स्वरूप कष्टदायी होता है । श्लीपद रोग में पैर मोटे हो जाते हैं, शोथ में शरीर सूज जाता है, जलोदर में पेट फूला रहता है, अण्डवृद्धि में अण्डकोश बढ़ जाते हैं, यह सब बढ़ोत्तरी बाहर किसी नासमझ को सम्पत्ति भले ही दीखती हो पर भुक्तभोगी जानता है कि यह बढ़ोत्तरी मेरे लिए कितनी विपत्ति है । यही बात अशुद्ध बुद्धि से एकत्रित हुई सम्पत्ति के बारे में है । उसे पाकर कोई आत्मा सुखी नहीं हो सकती, उससे तो विपत्ति, अशान्ति एवं उद्विग्नता ही बढ़ती है । सुख तो उन भोगों से ही मिलेगा जो सद्बुद्धि से उपार्जित किये गये होंगे । गायत्री हमारी बुद्धि को शुद्ध करती है, इसलिए वह आत्मिक आनन्दों के अतिरिक्त सच्चे भौतिक सुखों को भी देती है । इसीलिए उसे "भुक्ति मुक्ति प्रदायिनी" कहा गया है । उससे भोग और योग दोनों की प्राप्ति होती है ।

हमारे पूजनीय ऋषियों को, आर्ष ग्रन्थों के प्रणेताओं को, आत्म तत्व के सूक्ष्मदर्शी आचार्यों को जो बात लोक हित के लिए अधिक उत्तम प्रतीत हुई है । उसका उन्होंने अधिक बल पूर्वक आदेश किया है । गायत्री को उन्होंने ऐसा ही पाया-इसलिए उन सबने एक मत से, एक स्वर से गायत्री का महत्व बताया है । साधना क्षेत्र में और किसी साधना का इतना सर्व सम्मत समर्थन नहीं हुआ जितना कि गायत्री का हुआ है अपने-अपने ढंग से सभी ने उसका समर्थन किया है । आगे कुछ ऐसे ही अभिवचन दिये जाते हैं जिससे पाठक गायत्री के सम्बन्ध में आर्ष ग्रन्थों और आप्त पुरुषों का अभिमत जान सकें ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वेदों में गायत्री का गौरव

तस्माद् अज्ञान सर्व हुतः ऋच सामानि अज्ञिरे ।
छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद् यजुस्तस्माद जायत ।।

-यजुः ३१-७

अर्थात् उस यज्ञ रूप परम ब्रह्म परमात्मा द्वारा चारों वेद ऋक्, यजः, साम, अथर्व सृष्टि के आदि में प्रादुर्भूत हुए ।

(१) **ऋग्वेद**- में ज्ञान की बातें हैं अतः इसे ज्ञान काण्ड कहते हैं । इसमें कुल १० मण्डल हैं । ८५ अनुवाक हैं । १०५२२ मन्त्र हैं । इसके दो ब्राह्मण ग्रन्थ हैं- ऐतरेय और कौषीतकी तथा इसकी २८ शाखाएँ हैं और इसका 'आयुर्वेद' उपवेद है । गायत्री गुरुमन्त्र -ऋग्वेद मण्डल ३ सूक्त ६२ मन्त्र १० में आया

(२) '**यजुर्वेद**'- में यज्ञ सम्बन्धी विशेष बातें हैं अतः इसे 'कर्मकाण्ड' प्रधान कहते हैं । इसमें कुल ४० अध्याय हैं। १९७५ मन्त्र हैं । इसमें १२३० गुङ्कार (वैदिक अनुस्वार चिन्ह) ँ इस प्रकार के हैं । इसकी १०१ शाखाएँ हैं और इसका धनुर्वेद उपवेद हैं । शतपथ इसका ब्राह्मण है । यजुर्वेद में गायत्री गुरुमन्त्र अध्याय ३ मन्त्र ३५, अध्याय २२ मन्त्र ९, अध्याय ३० मन्त्र २ तथा अध्याय ३६ मन्त्र ३ में व्याहृति सहित आया है । यह सब से अधिक चार बार इसी में आया है ।

(३) '**सामवेदः**' -सस्वर ग्राम गेय (गानात्मक) होने से इसे 'उपासना काण्ड' कहते हैं। इसमें १८७५ मन्त्र हैं । इनके ८ ब्राह्मण ग्रन्थ हैं । इसकी १००० शाखाएँ हैं । इसका 'गान्धर्ववेद' उपवेद है । गायत्री गुरु मन्त्र- सामवेद प्रपाठक ६ अ० १३ खं० ४ सूक्त १० में आया है ।

(४) '**अथर्ववेद**'- में कला कौशल (शिल्प शास्त्र) और औषधादि मन्त्र-तन्त्र निर्माण की (सूक्ष्म आध्यात्मिक ज्ञान सम्बन्धी) विशेष बातें हैं । अतः इसे 'विज्ञान-काण्ड' भी कहते हैं । इसके कुल २० काण्ड १११ अनुवाक ७३१ सूक्त तथा ५९७७ मन्त्र हैं । इसका गोपथ ब्राह्मण हैं । इसकी ९ शाखाएँ हैं और इसका 'अर्थ वेद' उपवेद है ।

अथर्व वेद में एक बार भी गायत्री का पाठ नहीं परन्तु फल द्युति अवश्य है और वह किसी भी वेद में नहीं-

"स्तुता मया वरदा वेद माता प्रचोदयन्ता पावमानी द्विजानाम आयुः प्राणं, प्रजां, पशुं, कीर्ति, द्रविणं ब्रह्मवर्च्चस् । मह्या दत्वा व्रजत ब्रह्म लोकम् "

(अथर्व १९-७१-१)

इसमें गायत्री को ३ विशेषणों से विभूषित किया है । पहिला "वरदा" वर देने वाली अर्थात् "यत् यत् वृणीने, तत् तत् ददालीनि वरदा"- इस व्युत्पत्ति के आधार पर शुभ कामनाओं की पूर्ति करने वाली परिलक्षित है । साधकों की इच्छाओं को पूर्ण करने के कारण इसे कल्पवृक्ष कहते हैं। चूँकि इसकी आध्यात्मिक दुग्ध-धारा का पान करने से त्रिविधि दुःखों का निवारण हो जाता है । किसी प्रकार का कोई कष्ट नहीं रहता । देवताओं की भाँति सदा सन्तुष्ट, प्रसन्न तथा सुसम्पन्न रहता है । इसके पास कोई अपनी कुछ कामना लेकर जाता है तो उसकी इच्छा तुरन्त पूरी हो जाती है, इसलिए इसे भूलोक की कामधेनु भी कहते हैं । इसे पारस मणि भी कहते हैं क्योंकि लोहे जैसे कलुषित अन्तःकरण भी सोने जैसे शुद्ध हो जाते हैं । जहाँ गायत्री रूपी प्रकाश जाता है वहाँ से दुर्विचार, दुर्स्वभाव और दुर्भावना रूपी अन्धकार अपना स्थान छोड़ देता है । जब अन्तःकरण पवित्र हो जाता है, मन पर चढ़े हुए सभी मल विक्षेप कट जाते हैं, ईर्ष्या, द्वेष, घृणा निन्दा, बेईमानी, काम, क्रोध, लोभ, अहंकार की अनाधिकार चेष्टाओं से रहित हो जाता है- सत्य, प्रेम, न्याय, दया, ईमानदारी संयम, सहानुभूति आदि गुणों का विकास हो जाता है, तभी भगवान् दर्शन देते हैं । इसलिए "**वरं श्रेष्ठ परमेष्ठिनं प्रजापति ददाति साक्षात्कारयति**"
इस निरुक्ति से तो परम पिता परमात्मा का साक्षात्कार कराने वाली प्रतिपादित होती है ।

'वेद माता' शब्द तो वात्सल्य से ओत-प्रोत है । "**वेदस्य वेदानां वा माता**" यदि यह कहें, तब यह अर्थ होगा कि ज्ञान की मायिका शक्ति अथवा वेदों की पूर्णमान्य । '**वेदायां मातरं मन्यन्ते सा वेद माता**' इस व्युत्पत्ति के अनुसार वेद स्वयं गायत्री को अपनी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

माता स्वीकार करते हैं । इसी प्रकरण में अथर्व वेद में यज्ञ मन्त्र आया है –

अव्यसश्च व्यचसश्च बिलं विष्यामि मायया ।
नाभ्यामुदध्रत्य वेदमव्यो कर्माणि क्रामहे ।।

–अथर्व० १९/६९/१

इसका भाव यह है कि "मैं पुरुष और प्रकृति के समस्त रहस्यों को बुद्धि से खोलता हूँ और पुरुष और प्रकृति की साहचर्य लीला से ज्ञान को उद्धृत करके तत्पश्चात् कर्म में प्रवृत्त होता हूँ । " अनुभव भी यही बतलाता है कि जब साधक बुद्धि और ज्ञान की जन्मदाता गायत्री माता से अपना सम्बन्ध जोड़ लेता है और दृढ़ श्रद्धा, विश्वास, भावना और तपश्चर्या द्वारा वह निरन्तर आगे बढ़ता जाता है तो उसके अन्त:करण में ऐसे सद्विचारों और सद्भावों का उदय होता है, जो ऋषि मुनियों के मन में अवतरित होकर बड़े मन्त्रों को शोभायमान कर रहे हैं । चूँकि इस महाशक्ति के आवाहन से ही वेद-मन्त्रों का अवतरण हुआ इसलिए इसे वेदमाता कहते हैं । इसीलिए गायत्री मन्त्र के दृष्टा महर्षि विश्वामित्र का कहना है कि "गायत्री के समान चारों वेदों में कोई मन्त्र नहीं है । सम्पूर्ण वेद, यज्ञ, दान, तप गायत्री की एक कला के समान भी नहीं हैं ।" योगिराज याज्ञवल्क्य भी अपने अनुभव के आधार पर कहते हैं- "गायत्री और समस्त वेदों को तराजू में तौला गया, एक ओर षट अंगों समेत वेद और दूसरी ओर गायत्री को रखा तो गायत्री का पल्ला भारी निकला ..... जो द्विज गायत्री परायण नहीं वह वेदों का पारंगत होते हुए भी शूद्र के समान है । अन्यत्र किया हुआ उसका श्रम व्यर्थ है । " इसीलिए वेदारम्भ के पूर्व गायत्री के जप व मनन आदि का आदेश देते हैं, क्योंकि गायत्री द्वारा ही वेद मन्त्रों के अर्थ खुलते हैं ।

एक बार माता और पिता से जन्म ग्रहण करके जो आचार्य पिता और सावित्री माता से जन्मते हैं वह ही निश्चय से द्विज हैं और ऐसे द्विजों को पवित्र-तम बनाने वाली, उनके पापों को नाश करने वाली गायत्री है, इसलिए इसे "पावमानी द्विजानाम" का विशेषण दिया गया है । गायत्री की सविता शक्ति निरन्तर सद्प्रेरणा करती रहती है । सत्य और असत्य को निर्णय करके सत्य को ग्रहण करने और असत्य को त्यागने का आदेश देती रहती है । गायत्री की मन्त्र शक्ति साधक की सभी बुराइयों, दुर्बलताओं और कुप्रवृत्तियों को भस्म कर देती है, संसार के जन्म मृत्यु आदि दु:खों के कारण मूल भूत पापों को नाश करती है । प्रकाश द्वारा आन्तरिक अन्धकार को दूर करती है । इसीलिए इसे पाप नाशिनी कहते हैं।

वेद भगवान की घोषणा है कि गायत्री माता आशीर्वाद के रूप में अपने पुत्रों को आयु, प्राण, प्रजा, पशु, कीर्ति, द्रविण, ब्रह्म वर्चस प्रदान करती है । यही विश्व मानव की सबसे बड़ी सम्पत्ति है । इनकी प्राप्ति से अभाव, अशक्ति और अज्ञान के तीनों प्रकार के दु:खों की निवृत्ति हो जाती है । जिस देश में दीर्घायु, बलिष्ठ प्राण, सुसन्तति, पुष्टांग पशु तथा यशस्कर, धनवान, ब्रह्मवर्चस्वी नवयुवक उत्पन्न हों, वह राष्ट्र को उन्नति के उच्च शिखर पर पहुँचा देते हैं । उन लाभों की प्राप्ति का मूल कारण सद्बुद्धि की प्राप्ति ही है । सद्बुद्धि का उद्गम केन्द्र गायत्री है । इसलिए उपरोक्त फलों को प्रत्यक्ष करने के लिए गायत्री माता की गोद में बैठकर उसके शक्तिमय दुग्ध का पान करना चाहिए ।

वृहदारण्यक उपनिषद् में गायत्री

ॐ भूमिरन्तरिक्षं द्यौरित्यक्षराण्यष्टाक्षर ँ ह वा एकं गायत्र्यै पदमेतदु हैवास्या एतत्स यावदेषु त्रिषु लोकेषु तावद्ध जयति योऽस्या एतदेवं पदं वेद ।। १ ।।

–वृहदारण्यक उपनिषद् १४-२२५

अर्थ- "भूमि, अन्तरिक्ष, द्यौ:" यह आठ अक्षर (द्यौ: के दो अक्षर समझना) गायत्री का पहिला पद आठ अक्षरों का है (तत्सवितुर्वरेण्यं) भूमि आन्तरिक दिशा यह गायत्री का प्रथम भाग गायत्री के इस (त्रैलोक्य स्वरूप) पद को जो जानता है वह त्रैलोक्य में मिलने सरीखा होता है वह सब प्राप्त कर सकता है ।

ऋचो यजू ँषि सामोनात्यष्टाक्षराण्यष्टाक्षर ँ ह वा एकं गायत्रै पदमेतदु हैवास्या एतत्स यावतीयं त्रयी विद्या तावद्ध जयति योऽस्यां एतदेवं पदं वेद ।।२।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अर्थ –''ऋचो यजुषि सोमानि'' यह आठ अक्षर गायत्री का दूसरा पद (भर्गो देवस्य धीमहि) आठ अक्षरों का है । यह दूसरा भाग (पद) गायत्री के इस त्रयी विद्यारूपी पद को जो जानता है, वह त्रयीविद्या (ऋक्० यजु० साम०) को मिलाता है । अर्थात् तीनों वेदों को (फल को) पाता है ।

प्राणोऽपानो व्यान इत्यष्टाक्षराण्यणाष्टक्षर ँ ह धी एकं गायत्र्यै पदमेतदु हैवास्या एतत्स यावदिदं प्राणि तावद्ध जयति योऽस्या एतदेवं पद वेदाथास्या । एतदेव तुरीयं दशत पदं परोरजा या एष तपति युद्धै चतुर्थ तत्तरीयं दर्शनं पदमिति ददृश इव ह्योष परोरजा इति सर्वमु ह्योवैषराज - उपर्युपरितपत्येव ँ हैव मिश्रयो यशस तपति योऽस्या एतदेवं पदं वेद ।।३।।

अर्थ-''प्राण अपान व्यान'' यह आठ अक्षरों का समूह गायत्री का तीसरा पद आठ अक्षरों का है (धियो योनः प्रचोदयात्) यह गायत्री का तीसरा पद है । गायत्री के इस प्राणरूप पद को जो जानता है, उसको सब प्राणीमात्र वश होते हैं । (यहाँ तक त्रिपदा-गायत्री का वर्णन किया गया है । अब चौथे पद का वर्णन करते हैं) आकाश में जो तपन होता है वह इन मनुष्यों से परे रहने वाला तेजरूप आदित्य स्पष्ट (प्रत्यक्ष) रूप से दिखाने वाला (दर्शतं) चौथा पद है । परोरज इसमें रज याने लोक पर ऊपर । क्योंकि आदित्य ऊपर प्रकाशता है । इससे चौथे पद को जो जानता है वह श्रीं (लक्ष्मी) और यश से प्रकाशित होता है ।

सैषा गायत्र्यैतस्मि ँ स्तुरीये दर्शते पदे परो. रजसी प्रतिष्ठिता तद्वै तत्सत्ये प्रतिष्ठितं चक्षर्वै सत्यं चक्षुर्हि वै सत्यं तस्माद्यदिदानी द्वौ विवदमानावेयाता महमदर्शमहमश्रौषमिति य एवं ब्रू या दहमदर्शमिति तस्मा एव श्रद्धध्याम । तत्सत्यं बले प्रतिष्ठितं ँ प्राणो वै बलं तत्प्राणे प्रतिष्ठितं तस्मादाहुर्बलं ँ सत्यादोगीय इत्येवम्वेषा गायत्याधात्मं प्रतिष्ठिता सा हैषा गया ँ स्तत्रे तद्यद्गया ँ स्तत्रे तस्माद्गायत्री नाम सयामेवाम् ँ सावित्री मन्वा हैवैव सा स यस्मा अन्वाह तस्य प्राणा ँ स्त्रायते ।। ४ ।।

अर्थ- वह गायत्री इस चौथे दृश्यमान 'परोरज' पद में स्थिर है । वह पद सत्य में स्थित है । चक्षु यह सत्य है । चक्षु को सत्य कहकर जब किसी दो व्यक्तियों में वाद होता है तब एक व्यक्ति कहता है मैंने ऐसा सुना है और दूसरा कहता है, मैंने देखा है । तब देखा है ऐसा कहने वाले पर विश्वास किया जाता । वह सत्य बल पर स्थित है । बल यानी प्राण । वह (बल) प्राण में स्थित है । इसीलिए कहते हैं कि बल सत्य से भी तेजस्वी है । इस प्राण से गायत्री आध्यात्मिक रूपी प्राण की जगह स्थित है । प्राण (इन्द्रियां) यही गया है, प्राण ने इन्द्रियों का रक्षण किया । गयकात्राण (रक्षण) किया इसी से गायत्री शिष्य को आचार्य जब इस सवितृ देवनात्मक गायत्री का उपदेश करता है तब उस (शिष्य) के प्राणों की रक्षा करती है ।

ता ँ हैतामेके सावित्री मनुष्टुभमन्वाहुर्वांग-नुष्टुवेतद्वाव मनुष्टुभ इति न तथा कुर्यादगायत्री मेव सावित्री मनुष्टूयाद्यादि ह्वा अप्येवं विद्वद्भव प्रतिगृण्हाति न हैव तद्गायत्र्यां एकं चन पदं प्रति ।। ५ ।।

अर्थ- यह सावित्री (सवितृ देवतात्मक गायत्री) अपने शिष्यों को वाक् अनुष्टम है और (वाणी यह शरीरस्य सरस्वती होने से) वाणी के अनुसार सावित्री कहना परन्तु ऐसा न करना चाहिए । गायत्री छन्द में ही सावित्री का उपदेश दिया जाना चाहिए । गायत्री जानने वालों ने अन्य बहुत सा ज्ञान अन्य किसी से कितना भी लिया जाय तो भी वह (अन्य ज्ञान) गायत्री के एक पाद के बराबर (योग्यता का) नहीं है ।

सय इमा ँ स्त्रींल्लोकान्पूर्णान्प्रतिगृणहीयात्सोऽस्या एत प्रथमे पदमाप्नुयादथ यावतीयं त्रयी विद्या यस्तावत्प्रति गृण्हीयात्सोऽस्या एतदि्द्वतीयं पदमाप्नुयादथ यावदीदं प्राणी यस्तावत्प्रति गृण्ही-यात्योस्या एतत्तृतीयं पदमामयादथास्या एतदेव तुरीयं दर्शत पदं परोरजा यः एष तपति नैव केन चनाप्यं कुत उएतावत्प्रति गृण्हीयात् ।। ६ ।।

यह तीन लोक (सब ऐश्वर्य से पूर्ण ऐसे) गायत्री जानने वाले ने दान (प्रतिग्रह) लिया तो गायत्री के एक पाद का फल उसको मिला ऐसा जाने । अर्थात् प्रतिग्रह (दान) का दोष गायत्री के एक पाद के प्रभाव से नष्ट होता है । त्रयी विद्या का प्रतिग्रह लेने से उसकी गायत्री के दूसरे पद के प्रभाव से दोष दूर होकर फल मिलता है । जो सब प्राणियों का

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रतिग्रह लेता है उसको गायत्री के तीसरे पाद का फल मिलता है । यह जो आदित्य तपन (प्रकाशमान) है यह दृश्यमान तथा 'परोरज' ऐसा चौथा पद है । यह किसी को मिलना शक्य नहीं फिर उसका प्रतिग्रह किसको होगा ? गायत्री के प्रथम पाद के प्रभाव से तीनों लोक का ऐश्वर्य, दूसरे पाद से त्रयी विद्या का ज्ञान और तीसरे पाद से प्राणिमात्र वश होना यह सब प्राप्त होता है । चौथे परोरज पद उपास्थान बताया है -

गायत्र्यस्येकपदी द्विपदी त्रिपदी चतुष्पद्यपदसी न हि पद्यसे । नमस्ते तुरीयाय दर्शताय पदाय परोरजसेऽसावदोमा प्रापदिति यं द्विष्यादसावस्मै कामो मा समृद्धीति वा न हैवास्मै स कामः समृध्यते यस्मा एवमुपतिष्ठतेऽहमदः प्राषमिति वा । ७ ।

सूर्य के सम्मुख होकर प्रणाम करके ऊँचे हाथ उठाकर उपरोक्त मन्त्र से प्रार्थना करें । तुम एक पद हो, द्विपद हो, त्रिपद हो, चतुष्पद होकर भी पद रहित (निरूपाधिक) हो, इसी से तुम जानी नहीं जाती हो । प्रत्यक्ष देखने वाले 'परोरज' ऐसे चौथे पद को मैं प्रणाम करता हूँ । तुम्हारी प्राप्ति में विघ्न-रूप ऐसा पापरूपी शत्रु मेरे पास न आवे । गायत्री विद् ब्राह्मण को जो द्वेष करेगा उसके काम कभी पूर्ण न करें । इस उपस्थान मन्त्र के प्रभाव से शत्रु के काम पूर्ण नहीं होते उपस्थान करने वालों को प्राप्त होते हैं ।।७ ।।

प्राणो वै बलं तत्प्राणे प्रतिष्ठितं तस्मादाहुर्बलं । सत्यादोगीय इत्येवम्वेषा गायत्र्यांध्यात्मं प्रतिष्ठिता ।।

स हैषा गयांस्तत्रे तद्यद्गयांस्तत्रे तस्मादगायत्री नाम । सयामेवा मू ँ सावित्री मन्वा दैँषेव सा स यस्मा अन्वाह तस्य प्राणा ँ स्त्रायते ।।

- वृ० अ० ५ब्रा० १४ मन्त्र ४ ।

प्राण में बल है बल सत्य से भी तेजस्वी है । इसी से गायत्री आध्यात्मिक रूपी प्राण की जगह स्थित है । प्राण (इन्द्रियाँ) गय है । उसने (प्राण ने) इन्द्रियों का रक्षण किया । गय का त्राण किया इससे गायत्री कहलाती है । उपनीत शिष्य को आचार्य जब इस सवितृ देवतात्म गायत्री का उपदेश करता है तब उस (शिष्य) के प्राणों की रक्षा करता है । इस महत्व के कारण 'गायत्री' कही है । इसकी योग्यता महान् है ।

उपर्युक्त मन्त्रों वृहदारण्यक उपनिषदकार ने गायत्री के सम्बन्ध में बहुत कुछ रहस्यमय चर्चा की है । उसमें कहा गया है कि गायत्री के प्रथम पाद के मर्म को जो जानता है वह इन तीनों लोकों में जो कुछ मिल सकता है ।' उस सबको प्राप्त कर लेता है । जो गायत्री के दूसरे पद का मर्म समझ लेता है वह तीनों वेदों द्वारा मिल सकने वाले समस्त लाभों को प्राप्त करता है । तीसरे पद को जानने वाले के वश में सम्पूर्ण प्राणी हो जाते हैं ।

गायत्री द्वारा बुद्धि की शुद्धि, और उस शुद्ध बुद्धि से आत्मोन्नति होती है । आत्मबल वह साधन है जिसकी सामर्थ्य दुर्लभ से दुर्लभ वस्तु को प्राप्त कर सकता है । आत्मा परमात्मा का अंश है, उसके लिए अपने पिता की बनाई हुई कोई वस्तु अप्राप्त नहीं है । जैसे-जैसे पात्रता बढ़ती जाती है वैसे ही वैसे दैवी भण्डार की कुञ्जियाँ प्राप्त होती जाती हैं ।

गायत्री के तीन पद प्रसिद्ध हैं । पर उपनिषदों तथा तन्त्र, ग्रन्थों में कहीं-कहीं चार पद वाली गायत्री भी पाई जाती है । चौबीस अक्षरों वाली गायत्री के अन्त में कहीं-कहीं एक पद और भी जुड़ा हुआ मिलता है वह यह है- "परोरज से सावदोम्" जो इस चौथे पद को जानता है वह श्री और यश से प्रतिष्ठित होता है ।

गायत्री शक्ति का स्थान प्राण है । इस शक्ति की उपासना से प्राण बलवान होते हैं । प्राणों का बल ही वास्तविक बल है । इस बल से तेजस्वी हुआ मनुष्य सत्य को प्राप्त करता है । यह सत्य ही आत्मा का दिव्य चक्षु है । सत्य की दृष्टि से जो कुछ देखा जाता है, उसी को सम्यक् दृष्टि या तत्व दर्शन कहते हैं । यह जीवन का सर्वोपरि लाभ है ।

यों तो शरीर में रहने वाली वाणी भी सरस्वती है । वाणी द्वारा अन्यान्य शब्दों में भी गायत्री का तात्पर्य कहा जा सकता है । परन्तु ऐसा न करके गायत्री मन्त्र द्वारा ही उस सावित्री शक्ति की उपासना और प्राप्ति करनी चाहिए । गायत्री मन्त्र द्वारा ही ईश्वरीय महिमा को समझना चाहिए क्योंकि इस मन्त्र में ईश्वर की वह महिमा गाई गई है जो हमारे लिए अत्यन्त आवश्यक है । दुनिया में फैली हुई ढेरों जानकारियाँ उतनी महत्वपूर्ण नहीं हैं जितनी कि गायत्री के गर्भ में छिपा हुआ विज्ञान महिमामय है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यदि तीनों लोकों की सम्पदा किसी को मिल जावे तो समझना चाहिए कि गायत्री के एक पद का पुण्य फल मिला । यदि दान का अन्न खाकर भी लोक सेवा न करने का गुरुतर पाप नष्ट होता है, वेद पढ़ कर दूसरों को न पढ़ाने का, ज्ञानवान होते हुए भी यदि दूसरों को ज्ञानवान न बनाने का महानतम पाप भी यदि छूटता है तो इसे गायत्री के दूसरे पद का प्रभाव समझना चाहिये । सब प्राणी यदि अपने आज्ञानुवर्ती बन जायँ तो इसे गायत्री के तीसरे पद का प्रभाव समझना चाहिए । यह सब कुछ तो तीन पदों से ही प्राप्त हो गया फिर उस दुर्लभ चौथे पद से कौन सा महान लाभ प्राप्त होगा ?

इस चौथे पद के लिए हमें प्रणाम करना चाहिए कि-" हे भगवति । आप छन्द बद्ध, पदों वाली होते हुए भी अज्ञेय हो । रजोगुण से परे जो "ॐ" कार है उसी की शक्तिरूप आप हैं । पाप रूपी शत्रुओं से मेरी रक्षा कीजिए ।"

इन भावनाओं के द्वारा जो व्यक्ति ब्रह्म परायण हो गया है, ब्राह्मण बन गया है । उस निष्पाप व्यक्ति से भी जो दुष्ट-द्वेष एवं शत्रुता रखता है उसका मनोरथ कभी सफल नहीं होता वरन् अपनी दुर्भावनाओं के कारण स्वयं ही नष्ट हो जाता है ।

गायत्री की शक्ति महान् है । वह अपने उपासक के प्राणों की रक्षा करती है और बल, तेज, आध्यत्म तथा सत्य का अमूल्य उपहार प्रदान करती है ।

महाभारत और गायत्री मन्त्र

गायत्री मन्त्र वेदों में कई बार आता है और उसकी महिमा तो वेद शास्त्रों, आरण्यक और सूत्र ग्रन्थों तथा उपनिषद दर्शनों में कई स्थानों पर गाई गयी है । इसका कारण है कि गायत्री मन्त्र आदि काल से भारतीय धर्मानुयायियों का उपास्य मन्त्र रहा है ।

महाभारत में भी गायत्री मन्त्र की महिमा कई स्थानों पर गायी गयी है । यहाँ तक कि भीष्म पितामह युद्ध के समय भी जब घायल होकर शरशय्या पर पड़े होते हैं तो उस समय अन्तिम उपदेश के रूप में युधिष्ठिर आदि को गायत्री उपासना की प्रेरणा देते हैं । भीष्म पितामह का यह उपदेश महाभारत के अनुशासन पर्व के अध्याय १५० में दिया गया है ।

युधिष्ठिर पितामह से प्रश्न करते हैं:-

पितामह महाप्राज्ञ सर्व शास्त्र विशारद ।
कि जप्यं जपतो नित्यं भवेद्धर्म फलं महत् ।।
प्रस्थानो वा प्रवेशे वा प्रवृत्ते वाणी कर्मणि ।
दैवे व श्राद्धकाले वा किं जप्यं कर्म साधनम् ।।
शान्तिकं पौष्टिक रक्षा शत्रुघ्न भय नाशनम् ।
जप्यं यद् ब्रह्मसमितं तद्भवान् वक्तुमर्हति ।।

-महाभारत, आ० प० अ० १५०

"हे सभी शास्त्रों के विशारद महाप्राज्ञ पितामह ! कौन से मन्त्र को सदा जपने से विशेष धर्म फल मिलता है । किसी कार्य को आरम्भ करते समय चलते-फिरते देवताओं के श्रद्धा-सत्कार में कौन सा मन्त्र अधिक लाभकारी होता है । वह कौन सा मन्त्र है जिसके जपने से शान्ति, पुष्टि, सुरक्षा, शत्रु हानि तथा निर्भय होते हैं और जो वेद सम्मत हो कृपया उसका वर्णन कीजिए ।

भीष्म पितामह ने युधिष्ठिर के इस प्रश्न का उत्तर देते हुए कहा :-

यान पात्रे च याने च प्रवासे राजवेश्यति ।
परां सिद्धिमाप्नोति सावित्रीं ह्युत्तमां पठन् ।।
न च राजभय तेषां न पिशाचान्न राक्षसान् ।
नाग्न्यम्बुपवन व्यालाद्भयं तस्योपजायते ।।
चतुर्णामपि वर्णानामाश्रमस्य विशेषतः ।
करोति सततं शान्ति सावित्री मुत्तमा पठन् ।।
नाग्निर्दहति काष्ठानि सावित्री यम् पठ्यते ।
न तम व्यालोग्रियते न च तिष्ठन्ति पन्नगाः ।।
न तेषा विद्यते दुःख गच्छन्ति परमां गतिम् ।
ये श्रृण्वन्ति महद्ब्रह्म सावित्री गुण कीर्तनम् ।।
गवां मन्ये तु पठतो गावोऽस्य बहु वत्सलाः ।
प्रस्थाने वा प्रवासे वा सर्वावस्थां गतः पठेत् ।।

"जो व्यक्ति सावित्री (गायत्री) का जप करते हैं उनको धन, पात्र, गृह सभी भौतिक वस्तुएँ प्राप्त होती हैं । उनको राजा, दुष्ट, राक्षस, अग्नि, जल, वायु और सर्प किसी से भय नहीं लगता । जो लोग इस उत्तम मन्त्र गायत्री का जप करते हैं, वे ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इन चारों वर्णों एवं चारों आश्रमों में सफल रहते हैं । जिस स्थान पर सावित्री

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

का पाठ किया जाता है, उस स्थान में अग्नि काष्ठों को हानि नहीं पहुँचाती, बच्चों की आकस्मिक मृत्यु नहीं होती, न ही वहाँ पन्नग रहते हैं । जो लोग सावित्री के गुणों से भरे वेद को ग्रहण करते हैं उन्हें किसी प्रकार का कष्ट एवं क्लेश नहीं होता है तथा जीवन के लक्ष्य को प्राप्त करते हैं । गौओं के बीच सावित्री का पाठ करने से गौओं का दूध अधिक पौष्टिक होता है । घर हो अथवा बाहर, चलते-फिरते सदा ही गायत्री का जप किया करें ।"

भीष्म पितामह कहते हैं कि सावित्री-गायत्री से बढ़ कर कोई जप नहीं है:-

जपतां जुह्वतां चैव नित्यं च प्रयतात्मनाम् ।
ऋषिणाम् परमं जप्यं गुह्यमेतन्नराधिप ।।
तथातथ्येन सिद्धस्य इतिहासं पुरातनम् ।
पराशरमतं दिव्यं शक्ताय कथितं पुरा ।।
तदेतत्ते समाख्यां तथ्य ब्रह्म सनातनम् ।
हृदयं सर्व भूतानां श्रुतिरेषा सनातनी ।।
सोमदित्यान्वयाः सर्वे राघवाः कुरवस्तथा ।
पठन्ति शुचयो नित्यं सावित्री प्राणिनां गतिम् ।।

"हे नर श्रेष्ठ सदा जप में लीन रहने वाले तथा नित्य हवन करने वाले ऋषियों का यह परम जप तथा गुप्त मन्त्र है । सर्वप्रथम इस गुह्य मन्त्र का इतिहास 'पाराशर' द्वारा देवराज के समक्ष वर्णन किया गया था, वही इतिहास मैं तुम्हारे सामने वर्णन करता हूँ । यह गायत्री ब्रह्मस्वरूप तथा सनातन है । यही सर्वभूतो का हृदय तथा श्रुति है । चन्द्रवंशीय, सूर्यवंशीय, रघुवंशीय, कुरुवंशीय सभी राजा पूर्ण पवित्र भाव से सर्व हितकारी इस महामन्त्र सावित्री गायत्री का जप किया करते थे ।

तदेतत्ते समाख्यातं तथ्यं ब्रह्म सनातनम् ।
हृदयं सर्व भूतानां श्रुति रेषा सनातनी ।।

पितामह ने कहा कि उसी गायत्री मन्त्र का वर्णन तुमसे किया जायेगा । गायत्री मन्त्र ही सत्य एवं सनातन है । यह सभी प्राणियों का हृदय एवं सनातन श्रुति है ।

शोभा दिव्यो न्वयौः सर्वे राघवोः कुरवस्थत ।
पठन्ति शुचयो नित्यं सावित्री प्राणिनांगतिम् ।।

चन्द्रवंशी, सूर्यवंशी, रघु एवं कुरु वंश में उत्पन्न सभी राजा नित्य पवित्र भाव से गायत्री मन्त्र का जप करते थे । गायत्री मन्त्र समस्त संसार के प्राणियों की परम गति का आधार है ।

समझा जाता है कि स्त्रियों को गायत्री उपासना की अनाधिकारिणी 'महाभारत काल' में ही घोषित किया गया । यह सर्वथा भ्रामक है । महाभारत में कई स्थानों पर उल्लेख आता है कि स्त्रियाँ गायत्री की उसी प्रकार अधिकारिणी हैं, जिस प्रकार कि पुरुष । यथा:-

भारद्वाजस्य दुहिता रूपेण प्रतिमा भुवि ।
श्रुतावती नाम विभोकुमारी ब्रह्मचारिणी ।।

-महाभारत शल्य पर्व ४८ / २

"भारद्वाज की श्रुतावती नामक कन्या थी, जो ब्रह्मचारिणी थी । कुमारी के साथ-साथ ब्रह्मचारिणी शब्द लगाने का तात्पर्य यह है कि अविवाहित और वेदाध्ययन करने वाली थी ।"

अत्रैव ब्राह्मणी सिद्ध कौमार ब्रह्मचारिणी ।
योग युक्तादिव माता तपः सिद्धा तपस्विनी ।।

-महाभारत शल्य पर्व ५४ / ६

"योग सिद्धि को प्राप्त कुमार अवस्था से ही वेदाध्ययन करने वाली तपस्विनी, सिद्धानाम की ब्राह्मणी मुक्ति को प्राप्त हुई ।"

वभूव श्रीमती राजन् शांडिल्यस्य महात्मनः ।
सुता धृतव्रता साध्वी नियता ब्रह्मचारिणी ।।
साधु तप्त्वा तपो घोरे दुश्चरं स्त्री जनेन ह ।
गता स्वर्ग महाभागा देव ब्राह्मणीपूजिता ।

-महाभारत शल्य पर्व ५४ / ९

"महात्मा शांडिल्य की पुत्री 'श्री मती' थी, जिसने व्रतों को धारण किया । वेदाध्ययन में निरन्तर प्रवृत्त थी । अत्यन्त कठिन तप करके वह देवि ब्राह्मणों से पूजित हुई और स्वर्ग सिधारी ।"

अत्र सिद्धा शिवा नाम ब्राह्मणी वेद पारगा ।
अधीत्य सकलान् वेदान् लेभेसद्देह मक्षयम् ।।

-महाभारत उद्योग पर्व १९० / १८

"शिवा नामक ब्राह्मणी वेदों में परांगत थी, उसने सब वेदों को पढ़कर मोक्ष पद प्राप्त किया ।"

महाभारत शान्ति पर्व अध्याय ३२० में 'सुलभा' नामक ब्रह्मवादिनी संन्यासिनी का वर्णन है, जिसने राजा जनक के साथ शास्त्रार्थ किया था । इसी अध्याय के श्लोक ८२ में सुलभा ने अपना परिचय देते हुए कहा है -

प्रधानो नाम राजर्षि ब्यक्त ते श्रोत मागतः ।
कुले तस्य समुत्पन्ना सुलभां नाम विद्धिमाम् ।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

साहं तस्मिन् कुले जातां भर्तर्यसति मद्विधे ।
विनीता मोक्ष धर्मेषु धराम्येका मुनिव्रतम् ।।

-महाभारत शान्ति पर्व ३२० ।८२

"मैं सुप्रसिद्ध क्षत्रिय कुल में उत्पन्न सुलभा हूँ । अपने अनुरूप पति न मिलने से मैंने गुरुओं से शास्त्रों की शिक्षा प्राप्त करके संन्यास ग्रहण किया है ।"

इस प्रकार 'महाभारत' में अनेक स्थानों पर स्त्रियों को भी गायत्री उपासना की अधिकारिणी सिद्ध करते हुए सर्व सामान्य के लिए गायत्री उपासना अनिवार्य बतायी गयी है ।

महापुरुषों द्वारा गायत्री महिमा का गान

हिन्दू-धर्म में अनेक मान्यताएँ प्रचलित हैं । विविध सिद्धान्तों के सम्बन्ध में परस्पर विरोधी मतभेद भी हैं । पर गायत्री-मन्त्र की महिमा एक एक ऐसा तत्व है जिसे सभी शास्त्रों ने, सभी सम्प्रदायों ने, सभी ऋषियों ने एक स्वर से स्वीकार किया है ।

अथर्ववेद- १९-७१-१ में गायत्री की स्तुति की गई है, जिसमें उसे आयु, प्राण, शक्ति, कीर्ति, धन और ब्रह्मतेज प्रदान करने वाली कहा गया है ।

विश्वामित्र का कथन है-गायत्री के समान चारों वेदों में कोई मन्त्र नहीं है । सम्पूर्ण वेद, यज्ञ, दान, तप गायत्री-मन्त्र की एक कला के समान भी नहीं हैं ।

भगवान मनु का कथन है - 'ब्रह्माजी ने तीनों वेदों का सार तीन चरण वाला गायत्री-मन्त्र निकाला ।' गायत्री से बढ़कर पवित्र करने वाला और कोई मन्त्र नहीं है । जो मनुष्य नियमित रूप से तीन वर्ष तक गायत्री का जप करता है वह ईश्वर को प्राप्त करता है । जो द्विज दोनों सन्ध्याओं में गायत्री जपता है वह वेद पढ़ने के फल को प्राप्त करता है । अन्य कोई साधना करे या न करे केवल गायत्री-जप से ही सिद्धि को पा सकता है । नित्य एक हजार जप करने वाला पापों से वैसे ही छूट जाता है जैसे केंचुली से सर्प छूट जाता है । जो द्विज गायत्री की उपासना नहीं करता वह निन्दा का पात्र है ।

योगीराज याज्ञवल्क्य कहते हैं- 'गायत्री और समस्त वेदों को तराजू में तोला गया । एक ओर षटअङ्गों समेत वेद और दूसरी ओर गायत्री को रखा गया । वेदों का सार उपनिषद् हैं, उपनिषदों का सार व्याहृतियों समेत गायत्री है । गायत्री वेदों की जननी है, पापों का नाश करने वाली है, इससे अधिक पवित्र करने वाला अन्य कोई मन्त्र स्वर्ग और पृथ्वी पर नहीं है । गंगा के समान कोई तीर्थ नहीं, केशव से श्रेष्ठ कोई देव नहीं, गायत्री से श्रेष्ठ मन्त्र न हुआ न आगे होगा । गायत्री जान लेने वाला समस्त विद्याओं का वेत्ता और श्रेष्ठ श्रोत्रिय हो जाता है । जो द्विज गायत्री परायण नहीं वह वेदों का पारङ्गत होते हुए भी शूद्र के समान है, अन्यत्र किया हुआ उसका श्रम व्यर्थ है । जो गायत्री नहीं जानता ऐसा व्यक्ति ब्राह्मणत्व से च्युत और पापयुक्त हो जाता है ।'

पाराशरजी कहते हैं - 'समस्त जप सूक्तों तथा वेद मन्त्रों में गायत्री-मन्त्र परम श्रेष्ठ है । वेद और गायत्री की तुलना में गायत्री का पलड़ा भारी है । भक्तिपूर्वक गायत्री जपने वाला परममुक्त होकर पवित्र बन जाता है । वेद, शास्त्र, पुराण, इतिहास पढ़ लेने पर भी जो गायत्री से हीन है उसे ब्राह्मण न समझना चाहिए ।'

शंख ऋषि का मत है- 'नरकरूपी समुद्र में गिरते हुए को हाथ पकड़ कर बचाने वाली गायत्री ही है । उससे उत्तम वस्तु स्वर्ग और पृथ्वी पर कोई नहीं है । गायत्री का ज्ञाता निस्संदेह स्वर्ग को प्राप्त करता है ।'

शौनिक ऋषि का मत है -'अन्य उपासनाएँ करे चाहे न करे, केवल गायत्री-जप से द्विज जीवन-मुक्त हो जाता है । सांसारिक और पारलौकिक समस्त सुखों को पाता है । संकट के समय दस हजार जप करने से विपत्ति का निवारण होता है ।'

अत्रि ऋषि कहते हैं- 'गायत्री आत्मा का परम शोधन करने वाली है । उसके प्रभाव से कठिन दोष और दुर्गुणों का परिमार्जन हो जाता है । जो मनुष्य गायत्री-तत्व को भली प्रकार समझ लेता है उसके लिए संसार में कोई सुख शेष नहीं रह जाता ।'

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

महर्षि व्यासजी कहते हैं - 'जिस प्रकार पुष्पों का सार शहद, दूध का सार घृत है उसी प्रकार समस्त वेदों का सार गायत्री है । सिद्ध की हुई गायत्री कामधेनु के समान है । गंगा शरीर के पापों को निर्मल करती है, गायत्री रूपी ब्रह्मगंगा से आत्मा पवित्र होती है । जो गायत्री को छोड़कर अन्य उपासनाएँ करता है वह पकवान को छोड़कर भिक्षा माँगने वाले के समान मूर्ख है । काम्य सफलता तथा तप की सिद्धि के लिए गायत्री से श्रेष्ठ और कुछ नहीं है । '

भारद्वाज ऋषि कहते हैं- 'ब्रह्मा आदि देवता भी गायत्री का जप करते हैं । वह ब्रह्म साक्षात्कार कराने वाली है । अनुचित काम करने वालों के दुर्गण गायत्री के कारण छूट जाते हैं । गायत्री से रहित व्यक्ति शूद्र से भी अपवित्र है ।'

चरक ऋषि कहते हैं- 'जो ब्रह्मचर्यपूर्वक गायत्री की उपासना करता है और आँवले के ताजे फलों का सेवन करता है वह दीर्घजीवी होता है ।'

नारद जी की उक्ति है- 'गायत्री भक्ति का ही रूप है । जहाँ भक्ति-रूपा गायत्री है वहाँ श्री नारायणजी का निवास होने में कोई सन्देह नहीं करना चाहिए । '

वशिष्ठ जी का मत है - 'मन्दगति, कुमार्गगामी और अस्थिर मति भी गायत्री के प्रभाव से उच्च पद को प्राप्त करते हैं फिर सद्गति होना निश्चित है । जो पवित्रता और स्थिरतापूर्वक गायत्री की उपासना करते हैं वे आत्म-लाभ करते हैं ।'

गौतम ऋषि का मत है कि - 'योग का मूल आधार गायत्री है । गायत्री से ही सम्पूर्ण योगों की साधना होती है ।'

महर्षि उद्दालक कहते हैं- 'गायत्री में परमात्मा का प्रचण्ड तेज भरा हुआ है । जो इस तेज को धारण करता है उसका वैभव अतुलनीय हो जाता है ।'

देव-गुरु वृहस्पतिजी का मत है- 'देवत्व और अमृत्व की आदि जननी गायत्री है । इसे प्राप्त करने के पश्चात् और कुछ प्राप्त करना शेष नहीं रह जाता । '

शृंगी ऋषि की उक्ति है - 'ज्ञान-विज्ञान का आदि स्रोत गायत्री है । जो इसमें है उससे अधिक संसार में और कुछ नहीं है ।'

उपरोक्त अभिमतों से मिलते-जुलते अभिमत प्रायः सभी ऋषियों के हैं । इससे स्पष्ट है कि कोई भी ऋषि अन्य विषयों में चाहे आपस का मतभेद रखते रहे हों पर गायत्री के बारे में उन सब में समान श्रद्धा रहती थी और वे सभी उपासना में उसका प्रथम स्थान रखते थे । शास्त्रों में, धर्म ग्रन्थों में, स्मृतियों में, पुराणों में गायत्री की महिमा तथा साधना का प्रकाश डालने वाले सहस्रों श्लोक भरे पड़े हैं । इन सबका संग्रह किया जाय तो एक बड़ा भारी गायत्री-पुराण ही बन सकता है ।

वर्तमान शताब्दी के आध्यात्मिक तथा दार्शनिक महापुरुषों ने भी गायत्री के महत्त्व को उसी प्रकार स्वीकार किया है जैसा कि प्राचीन काल के तत्त्वदर्शी ऋषियों ने किया था । आज का युग बुद्धि और तर्क का, प्रत्यक्षवाद का युग है । इस शताब्दी के प्रभावशाली गणमान्य व्यक्तियों की विचारधारा केवल धर्मग्रन्थों या परम्पराओं पर आधारित नहीं रही है । उन्होंने बुद्धिवाद, तर्कवाद और प्रत्यक्षवाद को अपने विचार और कार्यों में प्रधान स्थान दिया है । ऐसे महापुरुषों को भी गायत्री-मन्त्र सब दृष्टिकोणों से परखने पर खरा सोना प्रतीत हुआ है । नीचे उनमें से कुछ विचार देखिए:-

महात्मा गाँधी कहते हैं- 'गायत्री-मन्त्र का निरन्तर जप रोगियों को अच्छा करने और आत्माओं की उन्नति के लिए उपयोगी है । गायत्री का स्थिर चित्त और शांत हृदय से किया हुआ जप आपत्ति काल के संकटों को दूर करने का प्रभाव रखता है ।'

लोकमान्य तिलक कहते हैं- 'जिस बहुमुखी दासता के बन्धनों में भारतीय प्रज्ञा जकड़ी हुई है उसका अन्त राजनैतिक संघर्ष करने मात्र से न हो जायगा । उनके लिए आत्मा के अन्दर प्रकाश उत्पन्न होना चाहिये । जिससे सत् और असत् का विवेक हो, कुमार्ग को छोड़कर श्रेष्ठ मार्ग पर चलने की प्रेरणा मिले । गायत्री मन्त्र में यही भावना विद्यमान है ।'

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

महामना मदनमोहन मालवीयजी ने कहा था- 'ऋषियों ने जो अमूल्य रत्न हमें दिये हैं उनमें से एक अनुपम रत्न गायत्री से बुद्धि पवित्र होती है । ईश्वर का प्रकाश आत्मा में आता है । इस प्रकाश से असंख्य आत्माओं को भव-बन्धन से त्राण मिला है । गायत्री में ईश्वर परायणता में श्रद्धा उत्पन्न करने की शक्ति है । साथ ही वह भौतिक अभावों को दूर करती है । गायत्री की उपासना करना ब्राह्मणों के लिए तो अत्यन्त आवश्यक है । जो ब्राह्मण गायत्री-जप नहीं करता वह अपने कर्तव्य धर्म छोड़ने का अपराधी होता है ।'

रवीन्द्र नाथ टैगोर कहते हैं- 'भारतवर्ष को जगाने वाला जो मन्त्र है वह इतना सरल है कि एक ही श्वास में उसका उच्चारण किया जा सकता है । वह है- गायत्री मन्त्र । इस पुनीत मन्त्र का अभ्यास करने में किसी प्रकार के तार्किक ऊहापोह, किसी प्रकार के मतभेद अथवा किसी प्रकार के बखेड़े की गुंजाइश नहीं है ।'

योगी अरविन्द घोष ने कई जगह गायत्री-जप करने का निर्देश किया है । उन्होंने बताया है कि गायत्री में ऐसी शक्ति सन्निहित है जो महत्वपूर्ण कार्य कर सकती है । उन्होंने कइयों को साधना के तौर पर गायत्री का जप बताया है ।

स्वामी रामकृष्ण परमहंस का उपदेश है- 'मैं लोगों से कहता हूँ कि लम्बे-लम्बे साधन करने की उतनी जरूरत नहीं है । इस छोटी सी गायत्री की साधना करके देखो । गायत्री का जप करने से बड़ी-बड़ी सिद्धियाँ मिल जाती हैं । यह मन्त्र छोटा है पर इसकी शक्ति भारी है ।'

स्वामी विवेकानन्द का कथन है - 'राजा से वही वस्तु माँगी जानी चाहिए जो उसके गौरव के अनुकूल हो । परमात्मा से माँगने योग्य वस्तु सद्बुद्धि है । जिस पर परमात्मा प्रसन्न होते हैं उसे सद्बुद्धि प्रदान करते हैं । सद्बुद्धि से सत मार्ग पर प्रगति होती है और सत कर्म से सब प्रकार के सुख मिलते हैं जो सत् की ओर बढ़ रहा है उसे किसी प्रकार के सुख की कमी नहीं रहती । गायत्री सद्बुद्धि का मन्त्र है । इसलिए उसे मन्त्रों का मुकुटमणि कहा गया है ।'

जगद्गुरु शंकराचार्यजी का कथन है- 'गायत्री की महिमा का वर्णन करना मनुष्य की सामर्थ्य से बाहर है । बुद्धि का शुद्ध होना इतना बड़ा कार्य है जिसकी समता संसार के और किसी काम से नहीं हो सकती । आत्मबल प्राप्त करने की दिव्य दृष्टि शुद्ध बुद्धि से प्राप्त होती है उसका प्रेरक गायत्री-मन्त्र है । इसका अवतार दुरितों को नष्ट करने और ऋत के अभिवर्धन के लिए हुआ है ।'

स्वामी रामतीर्थ ने कहा है- 'राम को प्राप्त करना सबसे बड़ा काम है । गायत्री का अभिप्राय बुद्धि का काम रुचि से हटा कर राम-रुचि में लगा देना है । जिसकी बुद्धि पवित्र होगी वही राम को प्राप्त करने का काम कर सकेगा । गायत्री पुकारती है कि बुद्धि में इतनी पवित्रता होनी चाहिए कि वह काम को राम से बढ़कर न समझे ।'

महर्षि रमण का उपदेश है- 'योग-विद्या के अन्तर्गत मन्त्र-विद्या बड़ी प्रबल है, मन्त्रों की शक्ति से अद्भुत सफलताएँ मिलती हैं । गायत्री मन्त्र ही है, जिससे आध्यात्मिक और भौतिक दोनों प्रकार के लाभ मिलते हैं ।'

स्वामी शिवानन्द जी कहते हैं- 'ब्राह्म मुहूर्त में गायत्री का जप करने से चित्त शुद्ध होता है और हृदय में निर्मलता आती है । शरीर निरोग रहता है, स्वभाव में नम्रता आती है, बुद्धि सूक्ष्म होने से दूरदर्शिता बढ़ती है और स्मरण शक्ति का विकास होता है । कठिन प्रसंगों में गायत्री द्वारा दैवी सहायता मिलती है । उसके द्वारा आत्म-दर्शन हो सकता है । '

काली कमली वाले बाबा विशुद्धानन्द जी कहते थे- 'गायत्री ने बहुतों को सुमार्ग पर लगाया है । कुमार्गगामी मनुष्य की पहले तो गायत्री की ओर रुचि ही नहीं होती । यदि ईश्वर कृपा से हो भी जाय तो वह कुमार्गगामी नहीं रहता । गायत्री जिसके हृदय में वास करती है उसका मन ईश्वर की ओर जाता है । विषय-विकारों की व्यर्थता उसे भली प्रकार अनुभव होने लगती है । कई महात्मा गायत्री का जप करके परम सिद्ध हुए हैं । परमात्मा की शक्ति ही गायत्री है । जो गायत्री के निकट जाता है वह शुद्ध होकर रहता है । आत्म-कल्याण के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

लिए मन की शुद्धि आवश्यक है । मन की शुद्धि के लिए गायत्री-मन्त्र अद्‌भुत है । ईश्वर-प्राप्ति के लिए गायत्री-जप को प्रथम सीढ़ी समझना चाहिए ।'

दक्षिण भारत के प्रसिद्ध आत्मज्ञानी टी० सुब्बाराव कहते हैं -'सविता नारायण की देवी प्रकृति को सावित्री कहते हैं । आदिशक्ति होने के कारण इसको गायत्री कहते हैं । गीता में इसका वर्णन 'आदित्य वर्ण' कहकर किया गया है । गायत्री की उपासना करना योग का सबसे प्रथम अंग है ।'

श्री स्वामी करपात्रीजी का कथन है-'जो गायत्री के अधिकारी हैं उन्हें नित्य नियमित रूप से उसका जप करना चाहिए । द्विजों के लिए गायत्री का जप एक अत्यन्त आवश्यक धर्मकृत्य है ।'

गीता-धर्म के व्याख्याता श्री स्वामी विद्यानन्द जी कहते हैं- 'गायत्री बुद्धि को पवित्र करती है । बुद्धि की पवित्रता से बढ़कर जीवन में और दूसरा लाभ नहीं है । इसलिए गायत्री एक बहुत बड़े लाभ की जननी है ।'

सर राधाकृष्णन् कहते हैं-'यदि हम इस सार्वभौमिक प्रार्थना पर विचार करें तो हमें मालूम होगा कि यह हमें वास्तव में कितना ठोस लाभ देती है । गायत्री हम में फिर से जीवन का स्रोत उत्पन्न करने वाली आकुल प्रार्थना है ।'

प्रसिद्ध आर्य समाजी महात्मा सर्वदानन्दजी का कथन है-'गायत्री मन्त्र द्वारा प्रभु का पूजन सदा आर्यों की रीति रही है । ऋषि दयानन्द ने भी उसी शैली का अनुसरण करके संख्या का विधान तथा वेदों के स्वाध्याय का प्रयत्न करना बताया है । ऐसा करने से अन्तःकरण की शुद्धि तथा बुद्धि निर्मल होकर मनुष्य का जीवन अपने तथा दूसरों के लिए हितकर हो जाता है । जितना भी इस शुभ कर्म में श्रद्धा और विश्वास हो उतना ही अविद्या आदि क्लेशों का ह्रास होता है । जो जिज्ञासु गायत्री-मन्त्र को प्रेम और नियमपूर्वक उच्चारण करते हैं उनके लिए यह संसार-सागर में तैरने की नाव और आत्म-प्राप्ति की सड़क है ।'

आर्यसमाज के जन्मदाता श्री दयानन्द जी गायत्री के श्रद्धालु उपासक थे । ग्वालियर के राजासाहब से स्वामी जी ने कहा था कि भागवत सप्ताह की अपेक्षा गायत्री-पुरश्चरण अधिक श्रेष्ठ है । जयपुर के सच्चिदानन्द, हीरालाल रावल, घोड़लसिंह आदि को गायत्री-जप की विधि सिखाई थी । मुलतान में उपदेश के समय स्वामीजी ने गायत्री-मन्त्र का उच्चारण किया और कहा कि- यह मन्त्र सबसे श्रेष्ठ है । चारों वेदों का मूल यही गुरु-मन्त्र है । आदि काल में सभी ऋषि-मुनि इसी का जप किया करते थे । स्वामी जी ने कई स्थानों पर विशाल गायत्री अनुष्ठानों का आयोजन कराया था, जिनमें चालीस तक की संख्या में विद्वान ब्राह्मण बुलाये गये । यह जप पन्द्रह दिन तक चले थे ।

इस प्रकार वर्तमान शताब्दी के अनेकों गणमान्य बुद्धिवादी महापुरुषों के अभिमत हमारे पास संग्रहीत हैं । उन पर विचार करने से इस निष्कर्ष पर पहुँचना पड़ता है, कि गायत्री उपासना कोई अन्धविश्वास जन्य परम्परा नहीं है, वरन् उसके पीछे आत्मोन्नति करने वाले ठोस तत्वों का बल है । इस महान् शक्ति को अपनाने का जिसने भी प्रयत्न किया है उसे लाभ ही मिला है । गायत्री-साधना कभी भी निष्फल नहीं जाती ।

गायत्री भूलोक की कामधेनु है । यह आत्मा की समस्त क्षुधा-पिपासाओं को शांत करती है । भव-बन्धनों के जन्म-मृत्यु के चक्र से छुड़ाने की सामर्थ्य के परिपूर्ण होने के कारण उसे अमृत भी कहते हैं । गायत्री को स्पर्श करने वाला कुछ से कुछ हो जाता है, इसलिए उसे पारसमणि भी कहा गया है । चाहे कोई गृहस्थ हो या विरक्त, गायत्री-उपासना सबके लिए समान रूप से लाभदायक है । गायत्री-उपासना प्रत्येक द्विज का अनिवार्य धार्मिक कृत्य है । उसकी उपेक्षा करना अपने परम पुनीत धार्मिक कर्त्तव्य से च्युत होना है ।

अभाव, कष्ट, विपत्ति, चिंता एवं निराशा की घड़ियों में गायत्री का आश्रय लेने से तुरन्त शांति मिलती है । माता की कृपा प्राप्त होने से पर्वत के समान दीखने वाले संकट राई के समान हल्के हो जाते हैं और अन्धकार में भी आशा की किरणें प्रकाशवान् होती हैं । गायत्री को सर्व शक्तिमान्, सर्व सिद्धिदायिनी और सर्व कष्ट विनाशिनी कहा गया है ।

* * *

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वेद शास्त्रों का निचोड़ः गायत्री

गायत्री के सम्बन्ध में प्राचीन ग्रंथों में सुविस्तृत वर्णन है । अनेक ग्रंथों में गायत्री के विवेचन, इतिहास, विवरण, साधन एवं माहात्म्य के सम्बन्ध में बहुत कुछ लिखा हुआ है । गायत्री महामंत्र अकेला ही इतना सारगर्भित है कि उसे समझने में कई जन्म लग सकते हैं । साथ ही उसके गर्भ में वह सभी तत्त्वज्ञान भरा हुआ है, जिसकी व्याख्या के लिए वेदशास्त्र, पुराण, इतिहास, दर्शन, उपनिषद्, ब्राह्मण, आरण्यक, स्मृति, नीति एवं सूत्र ग्रन्थों की रचना की गई है । इस अध्याय में वर्णित गायत्री सम्बन्धी लघु संग्रहों से पाठक इस बात का अनुमान कर सकते हैं कि गायत्री विद्या कितनी अगाध है ।

इस अध्याय में गायत्री गीता, गायत्री स्मृति, गायत्री उपनिषद्, गायत्री रामायण, गायत्री हृदयम्, गायत्री पंजरम्, गायत्री संहिता, गायत्री तंत्र, गायत्री तत्त्वबोध, गायत्री मंजरी, गायत्री लहरी, गायत्री सहस्रनाम्, एवं गायत्री स्तोत्रम्, गायत्री चालीसा आदि संकलित किये गये हैं । इस तरह गायत्री विद्या का सर्वसुलभ प्राचीन साहित्य इस अध्याय में एक जगह एक साथ साधकों को मिल जायगा, जिससे यह जाना जा सकेगा कि गायत्री विद्या का कितना महत्त्व है ।

गायत्री गीता

वेदमाता गायत्री का मन्त्र छोटा सा है । उसमें २४ अक्षर हैं, पर इतने थोड़े में ही अनन्त ज्ञान का समुद्र भरा हुआ है । जो ज्ञान गायत्री के गर्भ में है, वह इतना सर्वांगपूर्ण एवं परिमार्जित है कि मनुष्य यदि उसे भली प्रकार समझ ले और अपने जीवन में व्यवहार करे तो उसके लोक-परलोक सब प्रकार सुख-शान्तिमय बन सकते हैं ।

यों तो गीता सम्बोधन किसी विषय के मर्म की व्याख्या के संदर्भ में प्रयुक्त होने लगा है । गायत्री का संदेश आध्यात्मिक एवं सांसारिक दोनों दृष्टियों से अत्यधिक अर्थपूर्ण एवं उपयोगी है । गायत्री गीता में प्रणव 'ॐ' व्याहृतियों-भूर्भुवः स्वः सहित गायत्री मन्त्र के नौ शब्दों में सन्निहित मर्म को प्रकट करने का प्रयास किया गया है । यह ज्ञान इतना परिमार्जित एवं महत्त्वपूर्ण है कि यदि मनुष्य इसे भली प्रकार समझ ले और जीवन-व्यवहार में उतार ले तो लोक-परलोक दोनों में सुख-शान्ति का लाभ पा सकता है । नीचे संक्षिप्त-सा गायत्री मन्त्रार्थ दिया जाता है । यही गायत्री गीता है ।

ओमित्येव सुनामधेयमनघं विश्वात्मनो ब्रह्मणः,
सर्वेष्वेव हि तस्य नामसु वसोरेतत्प्रधानं मतम् ।
यं वेदा निगदन्ति न्याय निरतं श्रीसच्चिदानन्दकम्,
लोकेशं समदर्शिनं नियमनं चाकारहीनं प्रभुम् ।। १ ।।

अर्थ-जिसको वेद न्यायकारी, सच्चिदानन्द, सर्वेश्वर, समदर्शी, नियामक, प्रभु और निराकार कहते हैं, जो विश्व में आत्मा रूप से उस ब्रह्म के समस्त नामों में श्रेष्ठ नाम, पाप-रहित, पवित्र और ध्यान करने योग्य है-वह "ॐ" ही मुख्य नाम माना गया है ।

भावार्थ-"परमात्मा को प्राप्त करने और प्रसन्न करने का मार्ग उसके नियमों पर चलना है । वह निन्दा-स्तुति से प्रभावित नहीं होता, वरन् कर्मों के अनुसार फल देता है । परमात्मा को सर्वत्र व्यापक समझकर गुप्त रूप से भी पाप न करना चाहिये । प्राणियों की सेवा करना परमात्मा की ही पूजा करना है । परमात्मा को अपने अन्तर में अनुभव करने से आत्मा पवित्र होती है और सत, चैतन्यता तथा आनन्द की अनुभूति होती है ।"

भूर्वै प्राण इति ब्रुवन्ति मुनयो वेदान्तपारं गताः,
प्राणः सर्व विचेतनेषु प्रसृतः सामान्य रूपेण च ।
एतेनैव विसिद्धयते हि सकलं नूनं समानं जगत्,
द्रष्टव्यः सकलेषु जन्तुषु जनैर्नित्यं ह्यसुश्चात्मवत् ।। २ ।।

अर्थ-मुनि लोग प्राण को 'भूः' कहते हैं । यह प्राण समस्त प्राणियों में सामान्य रूप से फैला हुआ है । इससे सिद्ध है कि यहाँ सब समान हैं । अतएव सब मनुष्य और प्राणियों को अपने समान ही देखना चाहिए ।

भावार्थ-अपने समान सबको कष्ट होता है, इसलिये किसी को सताना न चाहिये ! दूसरों से वही

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

व्यवहार करना चाहिये, जो हम दूसरों से अपने लिये चाहते हैं, सबमें समत्व की दृष्टि रखनी चाहिये । कुल, वंश, वेष, जाति, समुदाय, स्त्री, पुरुष आदि भेदों के कारण किसी को नीच-ऊँच, छोटा-बड़ा नहीं समझना चाहिये । उच्चता और नीचता का कारण तो भले-बुरे कर्म ही हो सकते हैं ।

भुवो नाशो लोके सकल विपदां च निगदितः,
कृतं कार्यं कर्त्तव्यमिति मनसा चास्य करणम् ।
फलाशां मर्त्या ये विदधति न वै कर्मनिरताः,
लभन्ते नित्यं ते जगति हि प्रसादं सुमनसाम् ॥ ३ ॥

अर्थ-संसार में समस्त दुःखों का नाश ही 'भुवः' कहलाता है । कर्त्तव्य-भावना से किया गया कार्य ही कर्म कहलाता है । परिणाम में सुख की अभिलाषा को छोड़कर जो कार्य करते हैं, वे मनुष्य सदा प्रसन्न रहते हैं ।

भावार्थ-मनुष्य का अधिकार कार्य करना है, फल देने वाला ईश्वर है । अमुक वस्तु प्राप्त होने पर ही सुख माना जाय, ऐसा सोचने की बजाय ऐसा सोचना चाहिये कि कर्त्तव्य-पालन ही हमारे लिये आनन्द का सर्वोत्तम केन्द्र है । जो अपने कर्त्तव्य कर्म को ही लक्ष्य मान लेता है, वह कर्मयोगी हर घड़ी सुखी रहता है । जो इच्छित फल की आशा के लिये लटका रहता है, उस तृष्णावान् को सदा सत्कर्म करते रहना चाहिये, गीता के कर्मयोग का यही तत्त्व है ।

स्वरेषो वै शब्दो निगदति मनः स्थैर्य-करणम्,
तथा सौख्यं स्वास्थ्यं ह्युपदिशति चित्तस्य लोलताम् ।
निमग्नत्वं सत्यव्रतसरसि चाचक्षति उत,
त्रिधा शान्तिं होतां भुवि च लभते संयमरतः ॥ ४ ॥

अर्थ-'स्वः' यह शब्द मन की स्थिरता का निर्देश करता है । चञ्चल मन को सुस्थिर और स्वस्थ रखो, यह उपदेश देता है । सत्य में निमग्न रहो, यह कहता है । इस उपाय से संयमी पुरुष तीनों प्रकार की शान्ति को प्राप्त करते हैं ।

भावार्थ-अनिश्चित परिस्थिति प्राप्त होने पर प्रायः मनुष्य शोक, दुःख, क्रोध, द्वेष, दीनता, निराशा, चिन्ता, भय, बेचैनी आदि से उद्विग्न होकर अपना मानसिक संतुलन खो बैठते हैं और अनुकूल परिस्थिति प्राप्त होने पर अहंकार, मद, उद्दण्डता, खुशी में फूलकर अस्वाभाविक आचरण करना, इतराना, अपव्यय, शेखी आदि से ग्रस्त हो जाते हैं । ये दोनों ही स्थितियाँ एक प्रकार के नशे या ज्वर हैं । ये विवेक को अन्धा कर देते हैं जिससे विचार और कार्यों की उचित शृंखला नष्ट-भ्रष्ट हो जाती है और आदमी अन्धा तथा बावला बन जाता है । इन सत्यानाशी तूफानों से आत्मा की रक्षा करने के लिये मन को स्थिर, संतुलित, स्वस्थ एवं सत्यप्रेमी बनाना चाहिये, तभी मनुष्य को आत्मिक, बौद्धिक तथा शारीरिक शान्ति मिल सकती है ।

ततो वै निष्पत्तिः स भुवि मतिमान् पण्डितवरः,
विजानन् गुह्यं यो मरणजीवनायोस्तदखिलम् ।
अनन्ते संसारे विचरति भयासक्तिरहित,
स्तथा निर्माणं वै निजगतिविधीनां प्रकुरुते ॥ ५ ॥

अर्थ-'तत्' शब्द यह बतलाता है कि इस संसार में वही बुद्धिमान है, जो जीवन-मरण के रहस्य को जानता है । भय और आसक्ति रहित जीवन जीता है और अपनी गतिविधियों का निर्माण करता है ।

भावार्थ-मृत्यु सदा सिर पर नाचती खड़ी रहती है । इस समय श्वास चल रही है, अगले ही क्षण बन्द हो जाय, इसका क्या ठिकाना है ? यह सोचकर इस सुर-दुर्लभ मानव-जीवन का श्रेष्ठतम उपयोग करना चाहिये और थोड़े जीवन में क्षणिक सुख के लिये पाप क्यों किये जावें जिससे चिरकाल तक दुःख भोगने पड़ें, ऐसा विचार करना चाहिये ।

यदि विद्याध्ययन, समाज-सुधार, धर्म-प्रचार आदि श्रेष्ठ कार्य करने हों तो ऐसा सोचना चाहिये कि जीवन अखण्ड है । यदि इस शरीर से वह कार्य पूरा न हो सका तो अगले में पूरा करेंगे । यह निर्विवाद है कि जो इस जीवन का सदुपयोग कर रहा है, उसे मृत्यु के पश्चात् आनन्द ही मिलेगा । परलोक, पुनर्जन्म आदि में सुख ही प्राप्त होगा, पर जो इन जीवन-क्षणों का दुरुपयोग कर रहा है, उसका भविष्य अन्धकारमय है । इसलिये जो बीत चुका है, उसके लिये दुःख न करते हुए शेष जीवन का सदुपयोग करना चाहिये ।

सवितुस्तु पदं वितनोति ध्रुवं,
मनुजो बलवान् सवितेव भवेत् ।
विषया अनुभूति परिस्थितियो
वै सदात्मन एव गणेदिति सः ॥ ६ ॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अर्थ-'सवितु' यह पद बतलाता है कि मनुष्य सूर्य के समान बलवान होना चाहिये और सभी विषय तथा अनुभूतियाँ अपनी आत्मा से ही सम्बन्धित हैं, ऐसा विचारना चाहिये ।

भावार्थ-सूर्य को वीर्य और पृथ्वी को रज कहा जाता है । सूर्य की शक्ति से संसार की सब क्रियायें होती हैं । इसी प्रकार आत्मा अपनी क्रियाशीलता द्वारा विविध प्रकार की परिस्थितियाँ उत्पन्न करती है । प्रारब्ध, भाग्य, दैव आदि भी अपने प्राचीन कर्मों का ही परिपाक मात्र हैं । इसलिये अपने लिये जैसी परिस्थिति अच्छी लगती है, उसी के योग्य अपने को बनाना चाहिये । अपना भाग्य-निर्माण करना हर मनुष्य के अपने हाथ में है । इसलिये आत्म-निर्माण की ओर ही सबसे अधिक ध्यान देना चाहिये । बाहर की सहायता भी अपनी अन्तरंग स्थिति के अनुकूल ही मिलती है ।

मनुष्य को तेजस्वी, बलवान, पुरुषार्थी बनना चाहिये । स्वास्थ्य, विद्या, धन, चतुरता, संगठन, यश, साहस और सत्य इन आठ बलों से अपने को सदैव बलवान् बनाने का प्रयत्न करना चाहिये ।

वरेण्यञ्चैतद्वै प्रकटयति श्रेष्ठत्वमनिशम्,
सदा पश्येच्छ्रेष्ठं मननमपि श्रेष्ठस्य विदधेत् ।
तथा लोके श्रेष्ठं सरलमनसा कर्म च भजेत्,
तदित्थं श्रेष्ठत्वं व्रजति मनुजः शोभितगुणैः ।। ७ ।।

अर्थ-'वरेण्यं' यह शब्द प्रकट करता है कि प्रत्येक मनुष्य को नित्य श्रेष्ठता की ओर बढ़ना चाहिये । श्रेष्ठ देखना, श्रेष्ठ चिन्तन करना, श्रेष्ठ विचारना, श्रेष्ठ कार्य करना इस प्रकार से मनुष्य श्रेष्ठता को प्राप्त होता है ।

भावार्थ-मनुष्य वैसा ही बनता है, जैसे उसके विचार होते हैं । विचार साँचा है और जीवन गीली मिट्टी । जैसे विचारों में हम डूबे रहते हैं, हमारा जीवन उसी ढाँचे में ढलता जाता है, वैसे ही आचरण होने लगते हैं, वैसे ही साथी मिलते हैं, उसी दिशा में जानकारी रुचि तथा प्रेरणा मिलती है । इसलिये यदि अपने को श्रेष्ठ बनाना है तो सदा श्रेष्ठ मनुष्यों के सम्पर्क में रहना, श्रेष्ठ पुस्तकें पढ़ना, श्रेष्ठ बातें सोचना, श्रेष्ठ घटनायें देखना, श्रेष्ठ कार्य करना आवश्यक है । दूसरों में जो श्रेष्ठतायें हों उनकी कदर करना और उन्हें अपनाना, श्रेष्ठता में श्रद्धा रखना ये सब बातें उन लोगों के लिये बहुत आवश्यक हैं, जो अपने को श्रेष्ठ बनाना चाहते हैं ।

भर्गो व्याहरति पदं हि नितरां लोकः सुलोको भवेत,
पापे पाप-विनाशने त्वविरतं, दत्तवधानो वसेत् ।
दृष्ट्वा दुष्कृतिदुर्विपाक-निचयं तेभ्यो जुगुप्सेद्धि च,
तन्नाशाय विधीयतां च सततं, संघर्षमेभिश्च सह ।। ८ ।।

अर्थ-'भर्गो' यह पद बताता है कि मनुष्य को निष्पाप बनना चाहिये । पापों से सावधान रहना चाहिये । पापों के दुष्परिणामों को देखकर उनसे घृणा करे और निरन्तर उनको नष्ट करने के लिये संघर्ष करता रहे ।

भावार्थ-संसार में जितने दुःख हैं, पापों के कारण हैं । अस्पतालों में, जेलखानों में तथा अन्यत्र नाना प्रकार के कष्टों से पीड़ित मनुष्य अब के या पुराने पापों से ही दुःख भोगते हैं । नरक में भी पापी ही त्रास पाते हैं । सन्त और परोपकारी पुरुष दूसरों के पापों का बोझ अपने सिर पर लेकर दुःख उठाते हैं और उन्हें शुद्ध करते हैं । चाहे दूसरों का दुःख कोई सन्त सहे, चाहे पापी स्वयं सहे, हर हालत में दुःखों का कारण पाप ही है । इसलिये जिन्हें दुःख का भय है और सुख की इच्छा है, उन्हें चाहिये कि पापों से बचें और भूतकाल के पापों के लिये प्रायश्चि करें । पापों से सावधानी रखना और उन्हें भीतर-बाहर से नष्ट करने के लिये संघर्ष करना- यह बहुत बड़ा पुण्य कार्य है , क्योंकि इससे अगणित प्राणी दुःखों से छुटकारा पाकर सुखी बनते हैं । निष्पापता में ही सच्चे आनन्द का निवास है ।

देवस्येति तु व्याकरोत्यमरतां मर्त्योऽपि संप्राप्यते,
देवानामिव शुद्धदृष्टि करणात् सेवोपचाराद् भुवि ।
निःस्वार्थ परमार्थकर्मकरणात् दीनाय दानात्तथा,
बाह्याभ्यन्तरमस्य देवभुवनं संयुज्यते चैव हि ।। ९ ।।

अर्थ-'देवस्य' यह पद बतलाता है कि मरणधर्मा मनुष्य भी अमरता अर्थात् देवत्व को प्राप्त कर सकता है । देवताओं के समान शुद्ध दृष्टि रखने से, प्राणियों की सेवा करने से, परमार्थ कर्म करने से, निर्बलों की सहायता करने से मनुष्य के भीतर और बाहर देवलोक की सृष्टि होती है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भावार्थ-परमात्मा की बनाई हुई इस पवित्र सृष्टि में जो कुछ है, पवित्र और आनन्दमय ही है । इस सृष्टि को, संसार को, प्रसन्नता की दृष्टि से देखना, उसमें मनुष्यों द्वारा उत्पन्न की गयी बुराइयों को दूर करना और ईश्वरीय श्रेष्ठताओं को विकसित करना, प्रचलित करना देवकर्म हैं । इस देव-दृष्टि को धारण करने से मनुष्य देवता बन सकता है । जो अपने को शरीर न समझ कर आत्मा अनुभव करता है, वह अमर है । उसके पास से मृत्यु का भय दूर हो जाता है । प्राणियों को प्रेम और आत्मीयता की पवित्र दृष्टि से देखना, अपने आचरणों को पवित्र रखना, अपने से निर्बलों को ऊँचा उठाने के लिये अपनी शक्ति का दान करना यह देवत्व है । इन गुण वालों के लिये यह भूलोक भी देवलोक के समान आनन्दमय बन जाता है ।

धीमहि भवेम सर्वविधं शुचिं,
शक्तिचयं वयमित्युपदिष्टाः खलु ।
नो मनुजो लभते सुखशांति-
मनेन विनेति वदन्ति हि वेदाः ॥ १० ॥

अर्थ-'धीमहि' का आशय है कि हम सब लोग हृदय में सब प्रकार की पवित्र शक्तियों को धारण करें । वेद कहते हैं कि इसके बिना मनुष्य, सुख-शान्ति को प्राप्त नहीं होता ।

भावार्थ-संसार में भौतिक शक्तियाँ अनेक हैं । धन, पद, वैभव, राज्य, शरीर-बल, संगठन, शस्त्र, विद्या, बुद्धि, चतुरता, कोई विशेष योग्यता आदि के बल पर लोग ऐश्वर्य और प्रशंसा प्राप्त कर लेते हैं, पर यह अस्थायी होती है । इनसे सुख मिल सकता है, पर वह छोटे-मोटे आघात में ही नष्ट भी हो सकता है । स्थायी सुख आध्यात्मिक पवित्र गुणों में है, जिन्हें दैवी सम्पदायें या दिव्य शक्तियाँ भी कहते हैं । निर्भयता, विवेक, स्थिरता, उदारता, संयम, परमार्थ, स्वाध्याय, तपश्चर्या, दया, सत्य, अहिंसा, नम्रता, धैर्य, अद्रोह , प्रेम, न्यायशीलता, निरालस्य आदि दैवी गुणों के कारण जो सुख मिलता है उसकी तुलना किसी भी भौतिक सम्पदा से नहीं हो सकती । इसलिये अपनी दैवी सम्पदाओं का कोष बढ़ाने का प्रयत्न करते रहना चाहिये ।

धियो मत्योन्मथ्यागमनिगममन्त्रान् सुमतिमान् ,
विजानीयात्तत्त्वं विमल नवनीतं परमिव ।
यतोऽस्मिन लोके वं संशयगत विचार-स्थलशते,
मतिः शुद्धैर्वाञ्छा प्रकटयति सत्यं सुमनसे ॥ ११ ॥

अर्थ-'धियो' पद बतलाता है कि बुद्धिमान को चाहिये कि वह वेद-शास्त्रों को बुद्धि से मथ कर मक्खन के समान उत्कृष्ट तत्त्व को जाने क्योंकि शुद्ध बुद्धि से ही सत्य को जाना जाता है ।

भावार्थ-संसार में अनेक विचारधारायें हैं, उनमें से अनेको आपस में टकराती भी हैं । एक शास्त्र के सिद्धान्त दूसरे शास्त्र के विपरीत भी बैठते हैं । इसी कारण एक विद्वान् या ऋषि के विचार दूसरे विद्वान् या ऋषि के विचारों से पूर्णतया मेल नहीं खाते । ऐसी स्थिति में विचलित न होना चाहिये । देश, काल, पात्र और परिस्थिति के अनुसार जो बात एक समय बिल्कुल ठीक होती है, वही भिन्न परिस्थितियों में गलत भी हो सकती है । जाड़े के दिनों में जो कपड़े लाभदायक होते हैं, उनसे गर्मी में काम नहीं चलाया जा सकता । इसी प्रकार एक परिस्थिति में जो बात उचित है, वह दूसरी परिस्थिति में अनुचित हो जाती है । इसलिये किसी ऋषि, विद्वान, नेता व शास्त्र की निन्दा न करते हुए हमें उसमें से वही तत्त्व लेने चाहिये, जो आज की स्थिति के अनुकूल हैं । इस उचित-अनुचित का निर्णय तर्क, विवेक और न्याय के आधार पर वर्तमान परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए करना चाहिये ।

यो नो वास्ति तु शक्तिसाधनचयो न्यूनाधिकश्चाथवा,
भागं न्यूनतमं हि तस्य विदधेमात्मप्रसादाय च ।
यत्पश्चादवशिष्टभागमखिलं त्यक्त्वा फलाशां हृदि,
तदधीनेष्वखिलार्थवस्तु वितर ये शक्तिहीनाः स्वयम् ॥ १२ ॥

अर्थ-'यो नः' पद का तात्पर्य है कि हमारी जो भी शक्तियाँ एवं साधन हैं, चाहे वे न्यून हों अथवा अधिक हों, उनके न्यून से न्यून भाग को ही अपनी आवश्यकता के लिये प्रयोग में लावें और शेष को निःस्वार्थ भाव से अशक्त व्यक्तियों को बाँट दें ।

भावार्थ-भगवान् ने मनुष्य को ज्ञान, बल तथा वैभव एक अमानत के रूप में इसलिये दिये हैं कि इन विभूतियों से सुसज्जित होकर अपने को मान, यश, सुख तथा पुण्य का श्रेय प्राप्त करें । परन्तु

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इनका लाभ अधिक से अधिक मात्रा में दूसरों को उठाने दें । अपने ऐश आराम, भोग, संचय या अहंकार की पूर्ति में इनका उपयोग नहीं होना चाहिये । वरन् लोकहित के लिये, अपने से निर्बल की सहायता के लिये इनका उपयोग किया जाना चाहिये । विद्वान, बलवान या धनवान का गौरव इसी बात में है कि उनके द्वारा कम ज्ञान वालों को , निर्धनों को ऊँचा उठाने का प्रयास किया जाय । जैसे वृक्ष, कूप, तड़ाग, उपवन, पुष्प, अग्नि, जल, वायु, बिजली आदि श्रेष्ठ समझे जाने वाले पदार्थ अपनी महान् शक्तियों को लोक-हित के लिये सदैव वितरित करते रहते हैं वैसे ही हमें भी अपनी शक्तियों का जीवन-निर्वाह मात्र अपने लिये रख कर शेष को जग-हित के लिये समर्पित कर देना चाहिये ।

प्रचोदयात् स्वयं त्वितरांश्च मानवान् ,
नरः प्रयाणाय च सत्यवर्त्मनि ।
कृतं हि कर्माखिलमित्थमग्निना,
वदन्ति धर्म इति हि विपश्चितः ।। १३ ।।

अर्थ 'प्रचोदयात्' पद का अर्थ है कि मनुष्य अपने आपको तथा दूसरों को सत्य मार्ग पर चलने के लिये प्रेरणा दे । इस प्रकार किये हुए सब कामों को विद्वान् लोग धर्म कहते हैं ।

भावार्थ-प्रेरणा संसार की सबसे बड़ी शक्ति है । इसके बिना सारी साधन सामग्री बेकार है, चाहे वह कितनी ही बड़ी क्यों न हो । प्रेरणा से उत्साहित और प्रवृत्त हुआ मनुष्य यदि कार्य आरम्भ कर देता है तो साधन अपने आप जुटा लेता है । उसे ईश्वरीय सहायतायें मिलती हैं और अनेक सहयोगी प्राप्त हो जाते हैं । इसलिये अपने आपको सन्मार्ग पर चलने के लिये प्रेरणा तथा प्रोत्साहन देना चाहिये तथा दूसरों को श्रेष्ठता की दिशा में अग्रसर करने के लिये उन्हें प्रेरित करना चाहिये । वस्तुयें देकर किसी का उतना उपकार नहीं किया जा सकता है । सत्कार्य के लिये प्रेरणा देना इतना बड़ा पुण्य कार्य है कि उसकी तुलना में छोटी-मोटी पुण्य क्रियायें बहुत ही तुच्छ बैठती हैं ।

गायत्री-गीतां ह्येतां यो नरो वेत्ति तत्वतः ।
स मुक्त्वा सर्वदुःखेभ्यः सदानन्दे निमज्जति ।। १४ ।।

अर्थ-जो मनुष्य इस गायत्री-गीता को भली प्रकार जान लेता है, वह सब प्रकार के दुःखों से छूट कर सदा आनन्दमग्न रहता है ।

गायत्री गीता के उपर्युक्त १४ श्लोक समस्त वेद शास्त्रों में भरे हुए ज्ञान का निचोड़ है । समुद्र मन्थन से १४ रत्न निकले थे । समस्त शास्त्रों के समुद्र का मन्थन यह १४ श्लोक रूपी १४ रत्न हैं । जो व्यक्ति इन्हें भली प्रकार हृदयंगम कर लेता है, वह कभी भी दुःखी नहीं रह सकता, उसे सदा ही आनन्द रहेगा ।

गायत्री स्मृति

गायत्री स्मृति में कुल २५ श्लोक हैं । पर इनमें सन्निहित शिक्षाएँ अमूल्य हैं । यह २५ शिक्षाएँ इतनी सारगर्भित और महत्त्वपूर्ण है कि इन्हें जीवन नीति बना लिया जाय तो मनुष्य की सभी लौकिक और परलौकिक समस्याएँ सुलझ सकती हैं । साथ ही राष्ट्रों, जातियों, वर्गों और व्यक्तियों के बीच में जो भारी मनोमालिन्य चल रहा है उसका निवारण होकर संसार में सतयुगी शान्ति की स्थापना हो सकती है ।

गायत्री के एक-एक अक्षर पर गायत्री स्मृति के एक-एक श्लोक का निर्माण हुआ है । इसके अन्तर्गत गायत्री साधकों के लिए गायत्री के संदेश-निर्देशों का उल्लेख है । गायत्री मन्त्र के २४ अक्षरों में से प्रत्येक अक्षर एक विशेष निर्देश, विशेष शिक्षा देता है । वह विस्मरण में उपेक्षा के गर्त में न डाल दिया जाय, स्मृति में सदैव बना रहे तभी कल्याण पथ पर प्रगति सम्भव है । गायत्री स्मृति में साधकों के लिए उन्हीं महत्वपूर्ण सूत्रों को स्पष्ट किया गया है ।

भूर्भुवः स्वस्त्रयो लोका व्याप्तमोम्ब्रह्म तेषु हि ।
स एव तथ्यतो ज्ञानी यस्तद्वेत्ति विचक्षणः ।। १ ।।

भूःभुवः और स्वः ये तीन लोक हैं, उन तीनों लोकों में ॐ ब्रह्म व्याप्त है । जो बुद्धिमान उस ब्रह्म को जानता है, वही वास्तव में ज्ञानी है ।

परमात्मा का वैदिक नाम 'ॐ' है । यह ॐ तीनों ही लोकों में व्याप्त है । भूः पृथ्वी, भुवः पाताल, स्वः स्वर्ग-ये तीनों ही लोक परमात्मा से परिपूर्ण हैं । भूः शरीर, भुवः संसार, स्वः आत्मा यह तीनों ही परमात्मा के क्रीड़ा-स्थल हैं । इन सभी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

स्थलों को, निखिल ब्रह्माण्ड को भगवान् का विराट् रूप समझकर उस आध्यात्मिक उच्च भूमिका को प्राप्त करने का प्रयत्न करना चाहिये, जो गीता के ११वें अध्याय में भगवान् ने अर्जुन को अपना विराट् रूप दिखाकर प्राप्त कराई थी । परमात्मा को सर्वत्र सर्वव्यापक, सर्वेश्वर, सर्वात्मा देखने वाला मनुष्य माया, मोह, ममता, संकीर्णता, अनुदारता, कुविचार एवं कुकर्मों की अग्नि में झुलसने से बच जाता है और हर घड़ी परमात्मा के दर्शन करने से परमानन्द सुख में निमग्न रहता है । ॐ भू र्भुवः स्वः का तत्त्वज्ञान समझ लेने वाला ब्रह्मज्ञानी एक प्रकार से जीवन-मुक्त ही हो जाता है ।

तत्-तत्त्वज्ञास्तु विद्वांसो ब्राह्मणाः स्वतपोबलैः ।
अंधकारमपाकुर्यु-र्लोकादज्ञानसम्भवम् ।। २ ।।

तत्त्वदर्शी विद्वान ब्राह्मण अपने एकत्रित तप के द्वारा संसार से अज्ञान द्वारा उत्पन्न अन्धकार को दूर करें ।

ब्राह्मण वे हैं जो तत्त्व को, वास्तविकता को, परिणाम को देखते हैं, जिन्होंने अपनी पढ़ाई को भाषा साहित्य, शिल्पकला, विज्ञान आदि की पेट भरू शिक्षा तक ही सीमित न रखकर जीवन का उद्देश्य, आनन्द और साफल्य प्राप्त करने की 'विद्या' भी सीखी है । शिक्षित तो गली-कूचों में मक्खी-मच्छरों की तरह भरे पड़े हैं, पर जो विद्वान हैं वे ही ब्राह्मण हैं ।

भगवान् ने जिन्हें तत्त्वदर्शी और विद्वान बनने की सुविधा एवं प्रेरणा दी है, उन ब्राह्मणों को अपनी जिम्मेदारी अनुभव करनी चाहिये क्योंकि वे सबसे बड़े धनी हैं ।

ब्राह्मणत्व विश्व का सबसे बड़ा धन है । रत्नों का भण्डार बढ़िया कीमती, मजबूत तिजोरी में रखा जाता है । जो शरीर तपःपूत है, तपस्या की, संयम की, तितीक्षा की, त्याग की अग्नि में तपा-तपा कर जिस तिजोरी को भली प्रकार से मजबूती से गढ़ा गया है, उसी में ब्राह्मणत्व रहेगा और ठहरेगा । जो असंयमी, भोगी, स्वार्थी, तपोविहीन हैं, वे शास्त्रों की तोतारटन्त भले ही करते हों पर उस बकवाद के अतिरिक्त अपने में ब्राह्मणत्व को भली प्रकार सुरक्षित एवं स्थिर रखने में समर्थ नहीं हो सकते । इसलिये ब्राह्मण को, सद्ज्ञान के धनी को, अपने को तपःपूत बनाना चाहिये । तप और ब्राह्मणत्व के सम्मिश्रण से ही सोना और सुगन्ध की उक्ति चरितार्थ होती है ।

ब्राह्मण को भूसुर कहा जाता है । भूसुर का अर्थ है पृथ्वी का देवता । देवता वह है जो दे । ब्राह्मण संसार का सर्वश्रेष्ठ धन का, सद्ज्ञान का धनपति होता है । वह देखता है कि जो धन उसके पास अटूट भण्डारों में भरा हुआ है, उसी के अभाव के कारण सारी जनता दुःख पा रही है । अज्ञान से, अविद्या से बढ़कर दुःखों का कारण और कोई नहीं है । जैसे भूख से छटपटाते हुए, करुण क्रन्दन करते हुए मनुष्य को देखकर सहृदय धनी व्यक्ति उन्हें कुछ दान दिये बिना नहीं रह सकते, उसी प्रकार अविद्या के अन्धकार में भटकते हुए जन समूह को सच्चा ब्राह्मण, अपनी सद्ज्ञान सम्पदा से लाभ पहुँचाता है । यह कर्तव्य आवश्यक एवं अनिवार्य है । यह ब्राह्मण की स्वाभाविक जिम्मेदारी है ।

गायत्री का प्रथम शब्द 'तत्' ब्राह्मणत्व की इस महान जिम्मेदारी की ओर संकेत करता है । जिसकी आत्मा, जितने अंशों में तत्त्वदर्शी, विद्वान और तपस्वी है, वह उतने ही अंश में ब्राह्मण है । यह ब्राह्मणत्व जिस वर्ण, कुल, वंश के मनुष्य में निवास करता है, उसी का यह कर्तव्य-धर्म है कि अज्ञान से उत्पन्न अंधकार को दूर करने के लिये जो कुछ कर सकता हो , अवश्य करता रहे ।

स-सत्तावन्तस्तथा शूराः क्षत्रिया लोक रक्षकाः ।
अन्यायाशक्तिसम्भूतान ध्वंसयेयुर्हि त्वापदः ।। ३ ।।

सत्तावान् वीर और संसार के रक्षक क्षत्रिय अन्याय और अशक्ति से उत्पन्न होने वाली आपत्तियों को नष्ट करें ।

जन-बल, शरीर-बल बुद्धि-बल, सत्ता-शक्ति, पद, शासन, गौरव, बड़प्पन, संगठन, तेज, पुरुषार्थ, चातुर्य, साधन, साहस, शौर्य यह क्षत्रियत्व के लक्षण हैं । जिसके पास इन वस्तुओं में से जितनी अधिक मात्रा है, उतने ही अंशों में उसका क्षत्रियत्व बढ़ा हुआ है ।

देखा गया है कि यह क्षत्रियत्व जब अनधिकारियों के हाथ में पहुँच जाता है तो इससे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

स्वस्थ होते हुए निश्चय ही रोगों से मुक्त हो जाते हैं ।

स्वास्थ्य को ठीक रखने और बढ़ाने का राजमार्ग प्रकृति के आदेशानुसार चलना, प्राकृतिक आहार-विहार अपनाना, प्राकृतिक जीवन व्यतीत करना है । अप्राकृतिक, अस्वाभाविक, बनावटी, आडम्बर, और विलासिता से भरा हुआ जीवन बिताने से लोग बीमार बनते हैं और अल्पायु में ही काल के ग्रास बन जाते हैं ।

(१) भूख लगने पर खूब चबाकर प्रसन्न चित्त से, थोड़ा पेट खाली रखकर भोजन करना (२) फल, शाक, दूध, दही, छिलके समेत अन्न और दालें जैसे ताजे सात्विक आहार लेना । (३) नशीली चीजें, मिर्च-मसाले, चाट, पकवान, मिठाइयाँ, माँस आदि अभक्ष्यों से बचना । (४) सामर्थ्य के अनुकूल श्रम एवं व्यायाम करना । (५) शरीर, वस्त्र, मकान और प्रयोजनीय सामान की भली प्रकार सफाई रखना । (६) रात को जल्दी सोना और प्रातः जल्दी उठना । (७) मनोरंजन, देशाटन, निर्दोष विनोद के लिये पर्याप्त अवसर प्राप्त करते रहना । (८) कामुकता, चटोरेपन, अन्याय, बेईमानी, ईर्ष्या, द्वेष, चिन्ता, क्रोध, पाप आदि के कुविचारों से मन को हटाकर सदा प्रसन्नता और सात्विकता के सद्वचारों में रमण करना (९) स्वच्छ जलवायु का सेवन (१०) उपवास, ऐनेमा, फलाहार, जल, मिट्टी आदि प्राकृतिक उपचारों से रोग-मुक्ति का उपाय करना । ये दस नियम ऐसे हैं जिन्हें अपनाकर प्राकृतिक जीवन बिताने से खोये हुए स्वास्थ्य को पुनः प्राप्त करना और प्राप्त स्वास्थ्य को सुरक्षित एवं उन्नत बनाना बिल्कुल सरल है । गायत्री का 'ण्य' अक्षर यही उपदेश करता है ।

भ-भवोद्विग्नमना नैव हृदुद्वेगं परित्यज ।
कुरु सर्वव्यवस्थासु शांतं संतुलितं मनः ॥ ९ ॥

मानसिक उत्तेजना को छोड़ दो । सभी आवश्यकताओं में मन को शान्त और संतुलित रखो ।

शरीर में उष्णता की मात्रा अधिक बढ़ जाना 'ज्वर' कहलाता है और ज्वर अनेक दुष्परिणामों को पैदा कर सकता है वैसे ही उद्वेग, आवेश, उत्तेजना, मद, आतुरता आदि लक्षण मानसिक ज्वर के हैं । आवेश का अन्धड़ तूफान जिस समय मन में आता है उस समय ज्ञान, विवेक सब का लोप हो जाता है और उस सन्निपात से ग्रस्त व्यक्ति अंड-बंड बातें बकता है, न करने लायक अस्त-व्यस्त क्रियायें करता है वह स्थिति मावन जीवन में सर्वथा अवांछनीय है ।

विपत्ति पड़ने पर लोग चिन्ता, शोक, निराशा, भय, घबराहट, क्रोध, कायरता आदि विषादात्मक आबेश से ग्रस्त हो जाते हैं और सम्पत्ति बढ़ने पर अहंकार, मद, मत्सर, अतिहर्ष, अमर्यादा, नास्तिकता, अतिभोग, ईर्ष्या, द्वेष आदि विध्वंसक उत्तेजना में फँस जाते हैं । कई बार लोभ और भोग का आकर्षण उन्हें इतना लुभा लेता है कि वे आँखें रहते हुए भी अन्धे हो जाते हैं । इन तीनों स्थितियों में मनुष्य का होशहवास दुरुस्त नहीं रहता । देखने में वह स्वस्थ और भला-चंगा दीखता है, पर वस्तुतः उसकी आन्तरिक स्थिति पागलों, बालकों रोगियों तथा उन्मत्तों जैसी हो जाती है । ऐसी स्थिति मनुष्य के लिये विपत्ति, त्रास, अनिष्ट और अनर्थ के अतिरिक्त और कुछ उत्पन्न नहीं कर सकती । इसलिये गायत्री के 'भू' शब्द का संदेश है कि इन आवेशों और उत्तेजनाओं से बचो । दूरदर्शिता, विवेक, शान्ति और स्थिरता से काम लो । बदली की छाया की तरह रोज घटित होती रहने वाली रंग-विरंगी घटनाओं से अपनी आन्तरिक शांति को नष्ट न होने दो । मस्तिष्क को स्वस्थ रखो, चित्त को शान्त रहने दो, आवेश की उत्तेजना से नहीं विवेक और दूरदर्शिता के आधार पर अपनी विचारधारा और कार्य प्रणाली को चलाओ ।

गो-गोप्याः स्वीया मनोवृत्तिर्नासहिष्णुर्नरो भवेत् ।
स्थितिमन्यस्य च वीक्ष्य तदनुरूपतां चरेत् ॥ १० ॥

अपने मनोभावों को नहीं छिपाना चाहिये । मनुष्य को असहिष्णु नहीं होना चाहिये । दूसरे की स्थिति को देखकर उसके अनुसार आचरण करे ।

अपने मनोभाव और मनोवृत्ति को छिपाना, छल, कपट और पाप है । जैसे भीतर है वैसे ही बाहर प्रकट कर दिया जाय तो वह पाप निवृत्ति का सबसे बड़ा राजमार्ग है । कोई व्यक्ति यदि अधिक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

रहस्यवादी हो, अधिक अपराधी कार्य करता हो तो भी वह अपने कुछ ऐसे आत्मीय-विश्वासीजनों से सम्पर्क अवश्य रखना चाहता है, जिनके आगे अपने सब रहस्य प्रकट करके मन हल्का कर लिया करे । ऐसे आत्मीय मित्र और गुरुजन हर मनुष्य को नियुक्त कर लेने चाहिये ।

प्रत्येक मनुष्य के दृष्टिकोण, विचार, अनुभव, अभ्यास, ज्ञान, स्वार्थ, रुचि एवं संस्कार विभिन्न होते हैं । इसलिये सबका सोचना एक प्रकार का नहीं हो सकता । इस तथ्य को समझते हुए दूसरों के प्रति सहिष्णुता होनी चाहिये । अपने से किसी भी अंश में मतभेद रखने वाले को मूर्ख, अज्ञानी, दुराचारी या विरोधी मान लेना उचित नहीं । ऐसी असहिष्णुता झगड़ों की जड़ है । एक-दूसरे के दृष्टिकोण के अन्तर को समझते हुए यथासम्भव समझौते का मार्ग निकालना चाहिये । फिर भी जो मतभेद रह जाय उसे पीछे धीरे-धीरे सुलझाते रहने के लिये छोड़ देना चाहिए ।

संसार में सभी प्रकृति के मनुष्य है । मूर्ख, विद्वान, रोगी, स्वस्थ, पापी, पुण्यात्मा, पाखण्डी, कायर, वीर, कटुवादी, नम्र, चोर, ईमानदार, निन्दनीय, आदरास्पद, स्वधर्मी, विधर्मी, दया-पात्र, दण्डनीय, शुष्क, सरस, भोगी, त्यागी आदि परस्पर विरोधी स्थितियों के मनुष्य भरे पड़े हैं । उनकी स्थिति को देखकर तदनुसार उनसे भाषण, व्यवहार, सहयोग करे । उनकी स्थिति के आधार पर ही उनके लिये शक्य सलाह दे । सबसे एकसमान व्यवहार नहीं हो सकता और न सब एक मार्ग पर चल सकते हैं । यह सब बातें 'गो' अक्षर हमें सिखाता है ।

दे-देयानि स्ववशे पुंसा स्वेन्द्रियाण्यखिलानि वै ।
असंयतानि खादन्तीन्द्रियाण्येतानि स्वामिनम् ।।११ ।।

मनुष्य को अपनी सम्पूर्ण इन्द्रियाँ अपने वश में करनी चाहिये । ये असंयत इन्द्रियाँ स्वामी को खाती हैं ।

इन्द्रियाँ आत्मा के औजार हैं, घोड़े हैं, सेवक हैं । परमात्मा ने इन्हें इसलिये प्रदान किया है कि इनकी सहायता से आत्मा की आवश्यकता पूरी हों और सुख मिले । सभी इन्द्रियाँ बड़ी उपयोगी हैं । सभी का काम जीव को उत्कर्ष एवं आनन्द प्रदान करना है । यदि उसका सदुपयोग हो तो क्षण-क्षण पर मानव-जीवन का मधुर रस चखता हुआ प्राणी अपने भाग्य को सराहता रहेगा ।

किसी इन्द्रिय का भोग पाप नहीं है । सच तो यह है कि अन्तःकरण को विविध क्षुधाओं को, तृष्णाओं को तृप्त करने का इन्द्रियाँ एक माध्यम हैं । जैसे पैट की भूख-प्यास को न बुझाने से शरीर का सन्तुलन बिगड़ जाता है, वैसे ही सूक्ष्म शरीर की क्षुधायें उचित रीति से तृप्त न की जाती रहें तो आंतरिक क्षेत्र का सन्तुलन बिगड़ जाता है और अनेक मानसिक रोग उठ खड़े होते हैं ।

इन्द्रिय भोगों की जगह-जगह निन्दा की जाती है और वासनाओं को दमन करने का उपदेश दिया जाता है । उसका वास्तविक तात्पर्य यह है कि अनियन्त्रित इन्द्रियाँ स्वाभाविक एवं आवश्यक मर्यादा का उल्लंघन करके इतनी स्वेच्छाचारी एवं चटोरी हो जाती हैं कि वे स्वास्थ्य और धर्म के लिये संकट उत्पन्न करके भी मनमानी करती हैं । आजकल अधिकांश मनुष्य इसी प्रकार के इन्द्रिय-गुलाम हैं । अपनी वासना पर काबू नहीं रख सकते । बेकाबू हुई वासना अपने स्वामी को खा जाती है ।

गायत्री का 'दे' अक्षर आत्म-नियन्त्रण का उपदेश देता है ।

व-वस नित्यं पवित्रः सन् बाह्याऽभ्यन्तरतस्तथा ।
यतः पवित्रतायां हि राजतेऽतिप्रसन्नता ।। १२ ।।

मनुष्य को बाहर और भीतर सब तरह से पवित्र होकर रहना चाहिये, क्योंकि पवित्रता में ही प्रसन्नता रहती है ।

मलीनता अन्ध तामसिकता की प्रतीक है । आलस्य और दारिद्रय, पाप और पतन जहाँ रहते हैं, वहाँ मलीनता एवं गन्दगी का निवास होता है । जो इस प्रकृति के हैं उनके वस्त्र, घर, सामान, शरीर, मन सब में गन्दगी और अस्तव्यस्तता भरी रहती है । इसके विपरीत जहाँ चैतन्यता, जागरूकता, सुरुचि, सात्विकता होगी वहाँ सबसे पहले स्वच्छता की ओर ध्यान जायगा । सफाई, सादगी, सजावट, व्यवस्था का नाम ही पवित्रता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मलीनता से घृणा होनी चाहिये पर उसे हटाने या उठाने में रुचि होनी चाहिए । जो गन्दगी को छूने या उसे उठाने, हटाने से हिचकिचाते हैं वे सफाई नहीं रख सकते । मन में, शरीर, म, वस्त्रों, में, समाज में हर घड़ी गन्दगी पैदा होती है । निरन्तर टूट-फूट का जीर्णोद्धार न किया जाय, तो गन्दगी बढ़ती जायगी और सफाई चाहने की इच्छा केवल एक कल्पना मात्र बनी रह जायगी ।

गायत्री का 'व' अक्षर स्वच्छता का सन्देश देता है । स्वच्छ शरीर, स्वच्छ वस्त्र, स्वच्छ निवास, स्वच्छ सामान, स्वच्छ जीविका, स्वच्छ विचार, स्वच्छ व्यवहार जिसमें इस प्रकार की स्वच्छतायें निवास करती हैं, वह पवित्रात्मा मनुष्य निष्पाप जीवन व्यतीत करता हुआ पुण्य गति को प्राप्त करता है ।

स्व-स्यन्दनं परमार्थस्य परार्थो हि बुधैर्मतः ।
योऽन्यान् सुखयते विद्वान तस्य दुःखं विनश्यति ।। १३ ।।

दूसरों का प्रयोजन सिद्ध करना परमार्थ का रथ हैं, ऐसा बुद्धिमानों ने कहा है । जो विचारवान दूसरे लोगों को सुख देता है, उसका दुःख नष्ट हो जाता है ।

लोक व्यवहार के तीन मार्ग हैं-(१) **अर्थ**-जिसमें दोनों पक्ष समान रूप से आदान-प्रदान करते हैं (२) **स्वार्थ**-दूसरों को हानि पहुँचा कर अपना लाभ करना, (३) **परमार्थ**-अपनी हानि करके भी दूसरों को लाभ पहुँचाना । स्वार्थ में चोरी ठगी, अपहरण, शोषण बेईमानी आदि आते हैं । परमार्थ में दान, सेवा, सहायता, शिक्षा आदि कार्यों को कहा जाता है ।

अर्थ (जीविका) हमारा नित्यकर्म है । उसके बिना जीवन यात्रा भी नहीं चल सकती । आहार , निद्रा, भोजन, मल-त्याग आदि के समान स्वाभाविक होने के कारण उसका विधि निषेध कुछ नहीं है । वह तो हर एक को करना ही होता है । स्वार्थ त्याज्य है, निंदनीय है, पाप मूलक है, उससे यथासंभव बचते ही रहना चाहिये । परमार्थ धर्म कार्य है, इससे अपने को त्याग का, उदारता का अभ्यास बढ़ता है, आत्म-कल्याण का धर्म-मार्ग प्रशस्त होता है तथा उससे दूसरों का लाभ होने से वह प्रसन्न होकर बदले में प्रत्युपकार करते हैं, प्रशंसा और आदर देते हैं और कृतज्ञ रहते हैं ।

गायत्री का 'स्य' शब्द प्रेरणा देता है कि हर मनुष्य का कर्तव्य है कि अर्थ उपार्जन करता हुआ स्वार्थ से बचे और परमार्थ के लिये यथा सम्भव प्रयत्नशील रहे । अपना पेट तो पशु-पक्षी भी भर लेते हैं, प्रशंसनीय वह है जिसके द्वारा दूसरे भी लाभ उठावें ।

धी-धीरस्तुष्टो भजेन्नैव ह्येकस्यां समुन्नतौ ।
क्रियतामुन्नतिस्तेन सर्वास्वाशासु जीवने ।। १४ ।।

धीर पुरुष को एक ही प्रकार की उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिये । मनुष्य को जीवन की सभी दिशाओं में उन्नति करनी चाहिये ।

जैसे मनुष्य के कई अंग हैं और उन सभी का पुष्ट होना आवश्यक होता है, वैसे ही जीवन की अनेक दिशायें हैं और उन सभी का विकास होना सर्वतोमुखी उन्नति का चिह्न है । यदि पेट बहुत बढ़ जाय और हाथ-पाँव पतले हो जायँ तो इस विषमता से प्रसन्नता न होकर चिन्ता ही बढ़ेगी । इसी प्रकार यदि कोई आदमी केवल धनी, केवल विद्वान या केवल पहलवान बन जाय तो वह उन्नति पर्याप्त न होगी । वह पहलवान किस काम का जो दाने-दाने को मोहताज हो । वह विद्वान किस काम का जो रोगों से ग्रस्त हो । वह धनी किस काम का जिसके पास न विद्या है न तन्दुरुस्ती ।

केवल एक ही दिशा में उन्नति के लिये अत्यधिक प्रयत्न करना और अन्य दिशाओं की उपेक्षा करना, उनकी ओर से उदासीन रहना उचित नहीं । जैसे पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, ईशान वायव्य, नैऋत्य, आग्नेय आठ दिशायें हैं वैसे ही जीवन की भी आठ दिशाएँ हैं, आठ बल हैं । (१) स्वास्थ्य-बल (२) विद्या-बल, (३) धन-बल, (४) मित्र बल (५)प्रतिष्ठा-बल,(६)चातुर्य-बल, (७) साहस-बल (८) आत्म-बल । इन आठों का यथोचित मात्रा में संचय होना चाहिये । जैसे किसान खेत को सब ओर से रखाता है, जैसे चतुर सेनापति युद्ध क्षेत्र के सब मोर्चो की रक्षा करता है, वैसे ही जीवन के ये आठों मोर्चे सावधानी के साथ ठीक रखे जाने चाहिये । जिधर भी भूल रह जायगी उधर से ही शत्रु का आक्रमण होने और परास्त होने का भय रहेगा ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गायत्री का 'धी' शब्द हमें सजग करता है कि आठों बल बढ़ाओ, आठों मोर्चों पर सजग रहो, अष्टभुजी दुर्गा की उपासना करो, आठों दिशाओं की रखवाली करो तभी सर्वांगीण उन्नति हो सकेगी ।

म-महेश्वरस्य विज्ञाय नियमान्न्याय संयुतान् ।
तस्य सत्तां च स्वीकुर्वन कर्मणा तमुपासयेत् ।। १५ ।।

"परमात्मा के न्यायपूर्ण नियमों को समझकर और उसकी सत्ता को स्वीकार करते हुए कम से कम उस परमात्मा की उपासना करे ।"

परमात्मा के नियम न्यायपूर्ण हैं । सृष्टि में उसके प्रधान कार्य भी दो ही हैं । (१) संसार को नियमबद्ध रखना, (२) कर्मों का न्यायानुकूल फल देना । इन दोनों ईश्वरीय प्रधान कार्यों को समझकर जो अपने को नियमानुसार बनाता है, प्रकृति के कठोर नियमों को ध्यान में रखता है, सामाजिक, राजकीय, धार्मिक, लोक-हितकारी कानूनों, कायदों को मानता है वह एक प्रकार से ईश्वर को प्रसन्न करने का प्रयत्न करता है । इसी प्रकार जो यह समझता है कि न्याय की अदालत में खड़ा होना ही पड़ेगा और बुरे-भले कर्मों के अनुसार दुःख-सुख की प्राप्ति अनिवार्यतः होगी वह ईश्वर के समीप पहुँचता है । काम करने पर ही उसकी उजरत मिलती है । जो पसीना बहायेगा, परिश्रम करेगा, पुरुषार्थ, उद्योग और चतुरता का परिचय देगा, उसे उसके प्रयत्न के अनुसार साधन सामग्री जुटाने में सफलता मिलेगी ।

परमात्मा की पूजा उपासना की जितनी साधनायें हैं, जितने कर्मकाण्ड हैं, उनका तात्पर्य यही है कि साधक परमात्मा के अस्तित्त्व पर उसकी सर्वज्ञता और सर्वव्यापकता पर विश्वास करे । यह विश्वास जितना दृढ़ होगा, उतना ही उसे परमात्मा का नियम और न्याय स्मरण रहेगा । इन दोनों की कठोरता और निश्चिन्तता पर विश्वास होना, सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा का हेतु है । जो समझता है कि शीघ्र या देर-सबेर में तुरन्त या विलम्ब से कर्म का फल मिले बिना नहीं रह सकता, वह आलसी या कुकर्मी नहीं हो सकता । जो आलस्य और कुकर्म से जितना बचता है वह ईश्वर का उतना ही बड़ा भक्त है । गायत्री का 'म' अक्षर ईश्वर उपासना के रहस्य का स्पष्टीकरण करता है । बताता है कि ईश्वरीय नियम और न्याय का ध्यान रखते हुए हम सत्पथ पर चलें ।

हि-हितं मत्त्वा ज्ञानेन्द्रं स्वातंत्र्येण विचारयेत् ।
नान्धानुसरणं कुर्यात् कदाचित् कोऽपि कस्यचित् ।। १६ ।।

"हितकारी ज्ञान केन्द्र को समझकर स्वतंत्रतापूर्वक विचार करे । कभी भी कोई किसी का अन्धानुसरण न करे ।"

देश, काल, पात्र, अधिकार और परिस्थिति के अनुसार मानव जाति के हल और सुविधा के लिये विविध प्रकार के नियम, धर्मोपदेश, कानून और प्रथाओं का निर्माण एवं परिचालन होता है । परिस्थितियों के परिवर्तन के साथ-साथ इन प्रथाओं एवं मान्यताओं का परिवर्तन होता रहता है ।

समाज के सुसंचालन के लिये प्रथायें हैं । मनुष्य जाति की सुव्यवस्था के लिये उन्हें बनाया गया है । ऐसा नहीं कि उन प्रथाओं को अपरिवर्तनशील समझकर समाज और जाति के लिये उन्हें अमिट लकीर मान लिया जाय । संसार में आदि काल से बराबर परिवर्तन होता आ रहा है । कई रिवाजें आज के लिये अनुपयुक्त हैं, तो ऐसा नहीं कि परम्परा मोह के कारण उनका अन्धानुकरण किया ही जाय ।

गायत्री का 'हि' अक्षर कहता है कि मनुष्य समाज के हित का ध्यान रखते हुए देश, काल और विवेक के अनुसार प्रथाओं को, परम्पराओं को बदला जा सकता है । आज हिन्दू समाज में ऐसी अगणित प्रथायें प्रचलित हैं, जिन्हें बदलने की अत्यधिक आवश्यकता है ।

धि-धिया मृत्युं स्मरन् मर्म जानीयाज्जीवनस्य च ।
तदा लक्ष्यं समालक्ष्य पादौ सन्ततमाक्षिपेत ।। १७ ।।

"बुद्धि से मृत्यु का ध्यान रखे और जीवन के मर्म को समझे, तब अपने लक्ष्य की ओर निरन्तर अपने पैरों को चलावे अर्थात् निरन्तर अपने लक्ष्य की ओर बढ़े ।"

जीवन और मृत्यु के रहस्य को विवेकपूर्वक गम्भीरता से समझना आवश्यक है । मृत्यु कोई डरने की बात नहीं, पर उसे ध्यान में रखना आवश्यक है । न जाने किस समय मृत्यु सामने आ खड़ी हो

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

और कूच की तैयारी करनी पड़े । इसलिये जो समय हाथ में है, उसे अच्छे से अच्छे उपयोग में लाना चाहिये । धन, यौवन आदि अस्थिर हैं । छोटे से रोग या हानि से इनका विनाश हो सकता है, इसलिये इनका अहंकार न करके, दुरुपयोग न करके, ऐसे कार्यों में लगाना चाहिये, जिससे भावी जीवन में सुख-शांति की अभिवृद्धि हो ।

जीवन एक अभिनय है और मृत्यु उसका पटाक्षेप है । इस अभिनय को हमें इस प्रकार करना चाहिये, जिससे दूसरों की प्रसन्नता बढ़े और अपनी प्रशंसा हो । नाटक या खेल के समय सुखपूर्ण और दुःख भरे अनेक अवसर आते हैं, पर अभिनयकर्त्ता समझता है कि यह केवल खेल मात्र हो रहा है, इसमें वास्तविकता कुछ नहीं है । उस खेल के समय होने वाले दुख के अभिनय में न दुःखी होता है न सुख के अभिनय में सुखी वरन् अपना कौशल प्रदर्शित करने में, अपनी नाट्य सफलता में प्रसन्नता अनुभव करता है । जीवन नाटक का भी अभिनय इसी प्रकार होना चाहिये । हर समय मनुष्य पर आये दिन आने वाली सम्पदा-विपदा का कुछ महत्त्व नहीं, उनकी ओर विशेष ध्यान न देकर अपना कर्म-कौशल दिखाने के लिये हमें प्रयत्नशील रहना चाहिये । मृत्यु जीवन का अन्तिम अतिथि है । उसके स्वागत के लिये सदा तैयार रहना चाहिये । अपनी कार्य प्रणाली ऐसी रखनी चाहिये कि किसी भी समय मृत्यु सामने आ खड़ी हो तो तैयारी में कोई कमी अनुभव न करनी पड़े ।

गायत्री का 'धि'' अक्षर जीवन और मृत्यु के सत्य को समझाता है । जीवन को इस प्रकार बनाओ जिससे मृत्यु के समय पश्चाताप न हो । जो वर्तमान की अपेक्षा भविष्य को उत्तम बनाने के लिये प्रयत्नशील हैं, वे जीवन और मृत्यु का रहस्य भली प्रकार जानते हैं ।

यो-यो धर्मो जगदाधारः स्वाचरणे तमानय ।
मा विडम्बय तं सोऽस्ति होको मार्गे सहायकः ।। १८ ।।

''जो धर्म संसार का आधार है, उस धर्म को अपने आचरण में लाओ । उसकी विडम्बना मत करो । वह तुम्हारे मार्ग में एक ही अद्वितीय सहायक है ।''

धर्म संसार का आधार है । उसके ऊपर विश्व का समस्त भार रखा हुआ है । यदि धर्माचरण उठ जाय और सब लोग पूर्ण रूप से अधर्मी बन जायें तो एक क्षण के लिये भी कोई प्राणी चैन से न बैठ सकेगा । सबको अपने प्राण बचाने और दूसरे का अपहरण करने की चक्की के दुहरे पाटों के बीच पिसना पड़ेगा । आज अनेक व्यक्ति लुकछिप कर अधर्माचरण करते हैं पर उन्हें भी यह साहस नहीं होता कि प्रत्यक्षतः अपने को अधर्मी घोषित करें या अधर्म को उचित ठहराने की वकालत करें । बुराईयाँ भी भलाई की आड़ लेकर की जाती हैं । इससे प्रकट है कि धर्म ऐसी मजबूत चीज है कि उसी का आश्रय लेकर, आडम्बर ओढ़कर दुष्ट दुराचारी भी अपना बेड़ा पार लगाते हैं । ऐसे मजबूत आधार को ही हमें अपना अवलम्बन बनाना चाहिए ।

कई आदमी धर्म को कर्मकाण्ड का, पूजा-पाठ का, तीर्थ-व्रत, दान आदि का विषय मानते हैं और कुछ समय इनमें लगाकर शेष समय को नैतिक-अनैतिक कैसे ही कार्य करने के लिये स्वतंत्र समझते हैं । यह भ्रान्त धारणा है । धर्म, पूजा-पाठ तक ही सीमित रहने वाली वस्तु नहीं है वरन् उसका उपयोग तो अपनी प्रत्येक विचारधारा और क्रियाप्रणाली में पूरी तरह होना चाहिये ।

गायत्री का 'यो' अक्षर बताता है कि धर्म की विडम्बना मत करो, उसे आडम्बर का आचरण मत बनाओ, वरन् उसे अपने जीवन में घुला डालो । जो कुछ सोचो, जो कुछ करो, वह धर्मानुकूल होना चाहिये । शास्त्र की उक्ति है कि-''रक्षा किया हुआ धर्म अपनी रक्षा करता है और धर्म को जो मारता है, धर्म उसे मार डालता है ।'' इस तथ्य को ध्यान में रखकर हमें धर्म को ही अपनी जीवन नीति बनाना चाहिये ।

यो-योजन व्यसनेभ्यः स्यात्तानि पुंसस्तु शत्रवः ।
मिलित्वैतानि सर्वाणि समये घ्नन्ति मानवम् ।। १९ ।।

''व्यसनों से योजन भर दूर रहे अर्थात् व्यसनों से बचा रहे, क्योंकि वे मनुष्य के शत्रु हैं । ये सब मिलकर समय पर मनुष्य को मार देते हैं ।''

व्यसन मनुष्य के प्राणघातक शत्रु हैं । मादक पदार्थ व्यसनों में प्रधान हैं । तम्बाकू, गांजा, चरस,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भांग, अफीम, शराब आदि नशीली चीजें एक से एक बढ़कर हानिकारक हैं । इनसे क्षणिक उत्तेजना आती है । जिन लोगों की जीवनी-शक्ति क्षीण एवं दुर्बल हो जाती है वे अपने को शिथिल तथा अशक्त अनुभव करते हैं । उनका उपचार, आचार, विहार प्रभृति में अनुकूल परिवर्तन करके शक्ति संचय की वृत्ति द्वारा वर्द्धन होना चाहिये । परन्तु भ्रान्त मनुष्य दूसरा मार्ग अपनाते हैं । वे थके घोड़े को चाबुक मार-मारकर दौड़ाने का उपक्रम करके चाबुक को शक्ति का केन्द्र मानने की भूल करते हैं । नशीली चीजें मस्तिष्क को मूर्च्छित कर देती हैं, जिससे मूर्च्छाकाल में शिथिलतावश पीड़ा नहीं होती । दूसरी ओर वे चाबुक मार-मार कर उत्तेजित करने की क्रिया करती हैं । नशीली चीजों का सेवन करने वाला ऐसा समझता है कि वे मुझे बल दे रही हैं, पर वस्तुतः उनसे बल नहीं मिलता, वरन् रही बची हुई शक्तियाँ भड़ककर बहुत शीघ्र समाप्त हो जाती हैं और मादक द्रव्य सेवन करने वाला व्यक्ति दिन-दिन क्षीण होते-होते अकाल मृत्यु के मुख में चला जाता है । व्यसन मित्र के वेष में शरीर में घुसते हैं और शत्रु बनकर उसे मार डालते हैं ।

नशीले पदार्थों के अतिरिक्त और भी ऐसी आदतें हैं जो शरीर और मन को हानि पहुँचाती हैं पर आकर्षण और आदत के कारण मनुष्य उनका गुलाम बन जाता है । वे उससे छोड़े नहीं छूटते । सिनेमा, नाचरंग, व्यभिचार, मुर्गा, तीतर, बटेर लड़ाना आदि कितनी ही हानिकारक और निरर्थक आदतों के शिकार बनकर लोग अपना धन, समय और स्वास्थ्य निरर्थक बरबाद करते हैं ।

गायत्री का 'यो' अक्षर व्यसनों को दूर करने का आदेश करता है, क्योंकि ये शरीर और मन दोनों का नाश करने वाले हैं । व्यसनी मनुष्य की वृत्तियाँ नीच मार्ग की ओर ही चलती हैं ।

नः-नः श्रृण्वेकामिमां वार्ता "जागृतस्त्वं सदा भव" ।
सप्रमादं नरं नूनं ह्याक्रामन्ति विपक्षिणः ।। २० ।।

"हमारी यह एक बात सुनो कि तुम हमेशा जागृत रहो, क्योंकि निश्चय ही सोते हुए मनुष्य पर दुश्मन आक्रमण करते हैं ।"

असावधानी, आलस्य, बेखबरी, अदूरदर्शिता ऐसी भूलें हैं जिन्हें अनेक आपत्तियों की जननी कह सकते हैं । बेखबर आदमी पर चारों ओर से हमले होते हैं । असावधानी में ऐसा आकर्षण है, जिससे खिंच-खिंच कर अनेक प्रकार की हानियाँ, विपत्तियाँ एकत्रित हो जाती हैं । असावधान आलसी पुरुष एक प्रकार का अर्धमृत है । मरी हुई लाश को पड़ी देखकर जैसे चील, कौए, कुत्ते, शृगाल, गिद्ध दूर-दूर से दौड़कर वहाँ जमा हो जाते हैं, वैसे ही असावधान पुरुष के ऊपर आक्रमण करने वाले तत्त्व कहीं न कहीं से आकर अपनी घात लगाते हैं ।

जो स्वास्थ्य की रक्षा के लिये जागरूक नहीं है, उसे देर-सबेर में बीमारियाँ आ दबोचेंगी । जो नित्य आते रहने वाले उतार-चढ़ावों से बेखबर है वह किसी दिन दिवालिया बनकर रहेगा । जो काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर सरीखे मानसिक शत्रुओं की गतिविधियों की ओर से आँखें बन्द किये रहता है, वह कुविचारों और कुकर्मों के गर्त में गिरे बिना न रह सकेगा । जो दुनियाँ के छल, फरेब, झूँठ, ठगी, लूट, अन्याय, स्वार्थपरता, शैतानी आदि की ओर से सावधान नहीं रहता, उसे उल्लू बनाने वाले, ठगने वाले, सताने वाले अनेको पैदा हो जाते हैं । जो जागरूक नहीं, जो अपनी ओर से सुरक्षा के लिये प्रयत्नशील नहीं रहता, उसे दुनियाँ के शैतानी तत्त्व बुरी तरह नोंच खाते हैं ।

इसलिये गायत्री का 'न' अक्षर हमें सावधान करता है कि होशियार रहो, सावधान रहो, जागते रहो कि तुम्हें शत्रुओं के आक्रमण का शिकार न बनना पड़े ।

प्र-प्रकृत्या तु भवोदारो नानुदारः कदाचन ।
चिन्तयोदारदृष्ट्यैव तेन चित्तं विशुद्धयति ।। २१ ।।

"स्वभाव से ही उदार होओ, कभी भी अनुदार मत बनो, उदार दृष्टि से ही विचार करो-ऐसा करने से चित्त शुद्ध हो जाता है ।"

अपनी बात, अपनी रीति, अपनी रिवाज , अपनी मान्यता, अपनी अक्ल को ही सही मानना और दूसरे सब लोगों को मूर्ख, भ्रान्त, बेईमान ठहराना अनुदारता का लक्षण है । अपने लाभ के लिये चाहे सारी दुनियाँ का विनाश होता हो तो हुआ करे, ऐसी नीति अनुदार लोगों की होती है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वे सिर्फ अनपी सुविधा और इच्छा को सर्वोपरि रखते हैं । दूसरों की कठिनाई और असुविधा का उन्हें जरा भी ध्यान नहीं होता ।

ऐसी अनुदारता पशुता की सूचक है । जिद्दी, दुराग्रही, घमण्डी, खुदगर्ज, संकीर्ण भाव वाले मनुष्यों की वाणी बड़ी रूखी, विचारधारा बड़ी शुष्क एवं क्रिया बड़ी कर्कश होती है । गायत्री का संदेश सुनने और समझने वालों को ऐसा अनुदार कदापि न होना चाहिए । दूसरों के विचारों, तर्कों, स्वार्थों और परिस्थितियों को समझकर मतभेद होते हुए भी उनका आदर करना सीखना चाहिए । दूसरे लोग अपनी सुविधा और स्थिति के अनुसार किसी बात को सोचते हैं । जब वह अपनी बात को ठीक समझने के लिए दृढ़ हैं तो दूसरे की वैसी दृढ़ता के लिए उसे क्यों कोसना चाहिए ।

गायत्री का 'प्र' अक्षर कहता है कि दूसरों की भूलों और कमियों के प्रति हमें कठोर नहीं, उदार होना चाहिये । उनकी उचित इच्छाओं, आवश्यकताओं और माँगों के प्रति हमारी सहानुभूति होनी चाहिये ।

चो-चोदयत्येव सत्संगो धियमस्य फलं महत् ।
स्वमतो सज्जनैर्विद्वान् कुर्यात् पर्यावृतं सदा ।। २२ ।।

"सत्संग बुद्धि को प्रेरणा देता है । इस सत्संग का फल महान है । इसलिये विद्वान अपने आपको हमेशा सत्पुरुषों से घिरा हुआ रखे, अर्थात् हमेशा सज्जनों का संग करे ।"

मनुष्य का मस्तिष्क निर्मल जल के समान है । वातावरण, संस्कार और अनुकरण के साधन उसे विभिन्न दिशाओं में मोड़ते हैं । पानी का बहाव नाव को बहा ले जाता है । हवा जिधर को चलती है, पतंगे उधर ही उड़ते हैं । मनुष्य जिस वातावरण में रहता है, उधर ही उसकी मनोवृत्तियाँ चलने लगती हैं और धीरे-धीरे वह उसी ढाँचे में ढलने लगता है । जैसे दो बालकों में से जन्म से ही एक को कसाई के यहाँ रखा जाय तथा एक को ब्राह्मण के यहाँ, तो बड़े होने पर उन दोनों के गुण, कर्म, स्वभाव में जमीन-आसमान का अन्तर होगा, यह संगति का ही प्रभाव है ।

जो लोग अच्छाई की दिशा में अपनी उन्नति करना चाहते हैं, उन्हें चाहिये कि अपने को अच्छे वातावरण में रखें, अच्छे लोगों को अपना मित्र बनायें और उन्हीं से अपना व्यापार, व्यवहार तथा सम्पर्क रखें । सम्भव हो तो परामर्श उपदेश और पथ-प्रदर्शन भी उन्हीं से प्राप्त करें । इस प्रकार की स्थिति में रहने से प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से वैसा ही प्रभाव अपने ऊपर पड़ता है और उसी दिशा में चलने के लिये प्रेरणा मिलती है । कुसंग में रहने से, बुरे वातावरण के सम्पर्क में आने से मलीनता बढ़ती है । इसलिये उधर से मुँह मोड़े रहना ही उचित है

यथासाध्य अच्छे व्यक्तियों का सम्पर्क बढ़ाने के अतिरिक्त अच्छी पुस्तकों का स्वाध्याय भी उपयोगी है । सत्संग न हो सके तो पुस्तकें पढ़कर सत्संग का लाभ उठाया जा सकता है । एकान्त में स्वयं भी अच्छे विचारों का चिन्तन और मनन करने तथा अपने मस्तिष्क को उसी दिशा में लगाये रहने से भी आत्म-सत्संग होता है । यह सभी सत्संग आत्मोन्नति के लिये आवश्यक हैं । गायत्री का 'यो' अक्षर सत्संग का महत्त्व बताता है और उसके लिये प्रयत्नशील रहने का उपदेश करता है ।

द-दर्शनं ह्यात्मनं कृत्वा जानीयादात्म-गौरवम् ।
ज्ञात्वा तु तत्तदात्मानं पूर्णोन्नतिपथं नयेत् ।। २३ ।।

"आत्मा का दर्शन करके आत्मा के गौरव को पहिचानो । उसको जानकर, तब आत्मा को उन्नति के मार्ग पर ले चलो ।"

मनुष्य शरीर नाशवान् और तुच्छ है । उसके हानि-लाभ भी तुच्छ और महत्त्वहीन है, पर उसकी आत्मा ईश्वर का अंश होने के कारण महान है । उसकी महिमा और महत्ता इतनी बड़ी है कि किसी से भी उसकी तुलना नहीं हो सकती । मनुष्य का गौरव उसके शरीर के कारण नहीं, वरन् आत्मा की विशेषताओं के कारण है, जिसकी आत्मा जितनी अधिक बलवान होती है, वह उतना ही बड़ा महापुरुष कहा जाता है ।

जिन कार्यों से हमारी प्रतिष्ठा, साख, सम्मान, आदर, श्रद्धा बढ़ती है, वे ही आत्म-गौरव को बढ़ाने वाले हैं । प्रतिष्ठा सबसे बड़ी सम्पत्ति है, फिर आत्मा की प्रतिष्ठा का मूल्यांकन तो हो ही नहीं सकता । इतनी बड़ी अमानत को हमें सब प्रकार

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सुरक्षित रखना चाहिये । लोग सम्पत्ति द्वारा बनी हुई प्रतिष्ठा को गिरते या नष्ट होते देखकर तिलमिला जाते हैं और उस दु:ख से इतने दु:खी हो जाते हैं कि कोई-कोई तो आत्महत्या भी कर डालते हैं । फिर आत्म-प्रतिष्ठा, आत्म-गौरव तथा आत्म-सम्मान तो और भी ऊँची चीज हैं, उन्हें तो किसी भी मूल्य पर न गिरने देना चाहिये ।

जिससे आत्म-गौरव घटता हो, आत्म-ग्लानि होती हो और आत्म-हनन करना पड़ता हो, ऐसे धन, सुख, भोग, पद को लेने की अपेक्षा भूखा और दीन रहना कहीं अच्छा है । गायत्री का 'द' अक्षर आत्म-सम्मान की रक्षा और आत्म-हनन की निवृत्ति के लिये हमें बड़े से बड़ा त्याग करने में भी न झिझकने के लिये तैयार रहने को कहता है ।

या-यायात्स्वोत्तरदायित्व निर्वहन् जीवने पिता ।
कुपितापि तथा पाप: कुपुत्रोऽपि यथा मत: ।। २४ ।।

"पिता अपने उत्तरदायित्त्व को निभाता हुआ जीवन में चले, क्योंकि कुपिता भी उसी प्रकार पापी होता है, जैसे कुपुत्र होता है ।"

जिनके हाथ प्रबन्ध, व्यवस्था शासन, स्वामित्व, बल होते हैं, वे प्राय: उसका यथोचित उपयोग नहीं करते । ढील, शिथिलता, लापरवाही भी वैसी ही बुराई है, जैसी कि स्वार्थपरता एवं अनुचित लाभ उठाने की नीति । इसका परिणाम बुरा ही होता है । अक्सर पुत्र, शिष्य, स्त्री, प्रजाजन, सेवक आदि के बिगड़ जाने, बुरे होने, अवज्ञा करने, अनुशासनहीन होने के उदाहरण बहुत सुने जाते हैं । इन बुराइयों का बहुत कुछ उत्तरदायित्त्व पिता, गुरु, पति, शासक, स्वामी आदि पर भी है, क्योंकि प्रबन्ध शक्ति उनके हाथ में होती है । बुद्धिमत्ता और अनुभव अधिक होने के कारण उत्तरदायित्त्व उन्हीं का अधिक होता है । व्यवस्था में शिथिलता डालने, बुरे मार्ग पर चलने का अवसर देने, नियंत्रण में सावधानी न रखने से भी ऐसी घटनायें प्राय: घटित होती हैं ।

प्रत्येक सम्बन्ध में दो पक्ष पक्ष होते हैं । दोनों पक्षों को यथोचित कर्तव्य पालन करने से ही वे सम्बन्ध स्थिर और सुदृढ़ रहते हैं, तो भी समझदार पक्ष का उत्तरदायित्त्व विशेष है । उसे अपने पक्ष पर अधिक मजबूती से खड़ा रहना चाहिये और छोटे पक्ष के साथ उदार बर्ताव करना चाहिये । लोग अपने-अपने अधिकार पर अधिक बल देते हैं और अपने कर्तव्य से जी चुराते हैं, यही कलह का कारण है । यदि दोनों ओर से अपने-अपने अधिकारों की अपेक्षा न की जाय तो संघर्ष का अवसर ही न आवे और सम्बन्ध बड़ी मधुरता से निभते चले जायें ।

"या" अक्षर पिता-पुत्र में, बड़े-छोटे में, अच्छे सम्बन्ध रखने का नुस्खा यह बताता है कि दोनों ओर से अधिकार की माँग मन्द रखी जाय और कर्तव्यों का दृढ़ता से पालन हो । बड़ा पक्ष छोटे पक्ष को सँभालने के लिये अधिक सावधानी और उदारता बरते ।

त-तथाचरेत्सदान्येभ्यो वाञ्छन्त्यन्येर्यथा नर: ।
नम्र: शिष्ट: कृतज्ञश्च सत्यसाहाय्यवान् भवेत ।। २५ ।।

"मनुष्य दूसरे के साथ उस प्रकार का आचरण करे, जैसा वह दूसरे के द्वारा चाहता है और उसे नम्र, शिष्ट, कृतज्ञ और सच्चाई के साथ सहयोग की भावना वाला होना चाहिये ।"

दूसरों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिये, उसकी कसौटी यह है कि "हम दूसरों से जैसा व्यवहार अपने लिये चाहते हैं, वैसा ही आचरण स्वयं भी दूसरों के साथ करें ।" दुनियाँ कुएँ की आवाज की तरह है । कुएँ में मुँह करके जैसी वाणी हम बोलेंगे, बदले में वैसी ही प्रतिध्वनि दूसरी ओर से आवेगी ।

हर एक मनुष्य चाहता है कि दूसरे आदमी उससे नम्र बोलें, सभ्य व्यवहार करें, उसकी कोई चीज न चुरावें, विपत्ति पड़ने पर सहायता करें, ईमानदारी बरतें, कोई भूल हो जाय तो उसे सहन कर लें, मार्ग में कोई रोड़ा न अटकावें, उसकी बहिन-बेटियों पर कुदृष्टि न डालें तथा समय-समय पर उदारता एवं सहयोग की भावना का परिचय दें । जब हम दूसरों से ऐसा व्यवहार चाहते हैं तो हमारे लिये भी यह उचित है कि वैसा ही व्यवहार दूसरों से करें । कारण यह है कि सदा ही क्रिया से प्रतिक्रिया उत्पन्न होती है । यदि हम बुराई करेंगे तो दूसरों के मन पर उसकी छाप पड़ेगी, प्रतिक्रिया होगी और उसमें से वैसे ही विचार तथा व्यवहार

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उत्पन्न होंगे । यदि यह बुरी शृंखला चल पड़ी तो अपने लिये तथा अन्यों के लिये इसका बुरा प्रतिफल होगा, अगर यह शृंखला अच्छी तरह चली तो उससे पारस्परिक सहयोग, प्रेम, सद्भावों की प्रतिक्रिया होगी, जो अपने लिये ही नहीं, अन्यों के लिये भी हितकर होती है । यदि लोग अपने विचार और कार्यों में वैसे ही तत्त्व भर लें, जैसे कि दूसरों में होने की आशा करते हैं तो संसार में सुख-शान्ति की स्थापना हो सकती है ।

गायत्री का अन्तिम अक्षर "त्" शास्त्रकारों की "आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्" उक्ति का उद्घोष करता है । इसे क्रियात्मक रूप में लाना, गायत्री शिक्षा की ओर एक महत्त्वपूर्ण कदम बढ़ाना है ।

गायत्री उपनिषद्

उपनिषद् भारतीय आध्यात्मिक साहित्य के उज्ज्वल रत्न हैं । परमात्मा और आत्मा के स्वरूप की व आध्यात्मिक दृष्टि से मानवता की जैसी गहन और स्पष्ट व्याख्या उपनिषद्कारों ने की है, वैसी अन्यत्र कहीं देखने में नहीं आती । मनुष्य क्या है, कहाँ से आया है, मृत्यु के पश्चात् उसका क्या परिणाम होता है और इन दृष्टियों से उसका क्या कर्तव्य होना चाहिए-ये प्रश्न इतने दुरूह हैं कि या तो संसार के किसी धर्म-प्रचारक ने इनको उठाया ही नहीं, और यदि इनकी चर्चा भी की तो दो चार ऊपरी अथवा निरर्थक बातें कहकर अपना पिंड छुड़ा लिया । पर उपनिषद्कार ने इन्हीं सब प्रश्नों का इतना अधिक मनन और विवेचन किया है कि आज उसका एक बहुत बड़ा स्वतन्त्र साहित्य ही निर्मित हो गया है ।

"गायत्री उपनिषद्" में महामन्त्र गायत्री की व्याख्या करके बतलाया गया है कि इस मन्त्र के २४ अक्षरों में जो ज्ञान भरा हुआ है, उससे मनुष्य जीवन को पूर्ण रूप से सफल बनाकर अन्त में मोक्ष की प्राप्ति की जा सकती है । संसार में जो कुछ महान् सफलताएँ मानी जाती हैं, अर्थात् श्री, प्रतिष्ठा और ज्ञान इन सबकी प्राप्ति गायत्री द्वारा हो सकती है । गायत्री का आदेश है कि मनुष्य कोई भी कामना करने के पहले अपनी बुद्धि अथवा ज्ञान को शुद्ध बना ले । शुद्ध ज्ञान से ही मनुष्य को हितकारी और अपने लिए उपयुक्त वस्तु का ज्ञान हो सकता है । इस प्रकार "गायत्री उपनिषद् में मनुष्य को वही उपदेश दिया गया है जिससे उसका शाश्वत कल्याण हो सके ।

वेदों से 'ब्राह्मण' ग्रन्थों का आविर्भाव हुआ है । प्रत्येक वेद के कई-कई ब्राह्मण ग्रन्थ थे, पर अब उनमें से थोड़े ही प्राप्त होते हैं । काल की कुटिल गति ने उनमें से कितनों ही को लुप्त कर दिया ।

ऋग्वेद के दो ब्राह्मण मिलते हैं-शाखांयन और ऐतरेय । शाखांयन को कौषीतकी भी कहते हैं ।
यजुर्वेद के तीन ब्राह्मण प्राप्य हैं-शतपथ ब्राह्मण, कान्व ब्राह्मण, तैत्तरीय ब्राह्मण ।

सामवेद के ११ ब्राह्मण उपलब्ध हैं-आर्षेय ब्राह्मण, जैमिनी यार्षेय ब्राह्मण, संहितोपनिषद् ब्राह्मण, मन्त्र ब्राह्मण, वंश ब्राह्मण, साम विधान ब्राह्मण, षडविंश ब्राह्मण, देवत् ब्राह्मण, ताण्ड्य ब्राह्मण, जैमिनीय ब्राह्मण, जैमिनीय उपनिषद् ब्राह्मण ।

अथर्ववेद का केवल मात्र एक ब्राह्मण मिलता है, जिसका नाम है गोपथ ब्राह्मण । गोपथ की ३१ से लेकर ३८ तक आठ काण्डिकाएँ गायत्री उपनिषद् कहलाती हैं । इनमें मैत्रेय आरै मौदल्य के परस्पर विवाद के उपाख्यान द्वारा गायत्री का महत्त्वपूर्ण रहस्य समझाया गया है । साधारण शब्दार्थ के अनुसार बुद्धि-प्रेरणा की प्रार्थना ही गायत्री का तात्पर्य है, परन्तु इस उपनिषद् में ब्रह्म विद्या एवं पदार्थ विद्या से सम्बन्ध रखने वाले कई रहस्यों पर प्रकाश डाला गया है ।

अथ गायत्री उपनिषद्

एतद्ध स्मएतद् विद्वां समेकादशाक्षं ।
मौदगल्यं ग्लाको मैत्रेयोऽभ्याजगाम ।।

एकादशाक्षमौदगल्य के समीप ग्लाव मैत्रेय आये

स तस्मिन् ब्रह्मचर्य बसतीत विज्ञायोवाच
कि स्विन्मर्या अयं तन्मौदगल्योऽध्येति
यदस्मिन्ब्रह्मचर्य बसतीति ।

मौदगल्य के ब्रह्मचारी को देखकर और उसे सुनाकर ग्लाव ने (उपहास उड़ाते हुए) कहा कि-मौदगल्य अपने इस ब्रह्मचारी को क्या पढ़ाता है अर्थात् कुछ भी नहीं पढ़ाता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तद्धि मौदगल्यस्यान्तेवासी शुश्राव ।
स आचार्यायाब्रज्या चचष्टे ।

मौदगल्य के ब्रह्मचारी ने इस बात को सुनकर अपने आचार्य के पास जाकर कहा-

दुरधीयानं वा अयं भवन्तमवोचद्यऽयमधातिथिर्भवति

जो आज अतिथि हुए हैं, आपको उन्होंने मूर्ख कहा है ।

किं सौम्य विद्वानिति-

क्या वह विद्वान है ? मौद्गल्य ने पूछा ।

त्रिन्वेदान् ब्रूते भो इति-

हाँ, वे तीनों वेदों के प्रवचनकर्त्ता हैं, शिष्य ने कहा-

तस्य सौम्य यो विद्वान् विपष्टो विजिगीषोऽन्तेवासी तं मेऽऽह्वयेति ।

हे सौम्य ! उसका जो विद्वान, सूक्ष्मदर्शी तथा विजय चाहने वाला शिष्य हो, तुम उसे मेरे पास ले आओ ।

तमाजुहाव । तमभ्युवाचा सावित्रि भो इति ।

तब वह उसे बुला लाया और बोला-वे ये हैं ।

किं सौम्य त आचार्योऽध्येतीति ।

मौद्गल्य ने उससे पूछा-हे सौम्य ! तुम्हारे आचार्य क्या पढ़ाते हैं ?

त्रीनवेदान् ब्रूते भो इति ।

उसने उत्तर दिया-वे तीनों वेदों का प्रवचन करते हैं ।

यन्नु खलुसौम्यास्माभिः सर्वे वेदा मुखतो गृहीताः, कथं त एव माचार्यो भाषते, कथं नु स चेत्सौम्य दुरधीयानो भविष्यति, आक्षार्यो बालब्रह्मचारी ब्रह्मचारिण सावित्री प्राह, इति वक्ष्यति ।

हे सौम्य ! यदि वे यह जानते होंगे तो कहेंगे कि आचार्य अपने ब्रह्मचारी को जिसका उपदेश देते हैं, वह सावित्री है अर्थात् जो गायत्री का शब्दार्थ, स्थूल अर्थ है, उसे ही बता देंगे ।

तत्वं ब्रू याद दुरधीयानं तं वैभवान्मौदगल्य मवोच, स त्वां यं प्रश्नमप्राक्षीन्न तं व्यवोचः। पुरा सम्वत्सरादार्तिमारष्यिसीति ।

तब तुम कहना कि आपने तो हमारे आचार्य मौद्गल्य को मूर्ख बतलाया था । वे आपसे जो प्रश्न पूछते हैं, उसे आप नहीं बतला सके । एक वर्ष के भीतर ही आपको कुछ कष्ट होगा ।

शिष्टाः शिष्टेभ्य एवं भाषेरन् । यं ह्येनमहंप्रश्न पृच्छामि न तं विवक्ष्यति, नह्येनमध्येतीति ।

हे सौम्य ! हमने भी सब वेद अध्ययन किए, फिर तुम्हारे आचार्य मुझे मूर्ख क्यों कहते हैं ? क्या शिष्टों को शिष्टों के लिए ऐसा कहना ठीक है ? हम उनसे जो प्रश्न पूछेंगे, वे उसे न बतला सकेंगे, वे उसे पढ़ाते भी न होंगे ।

स ह मौद्गल्यः स्वभेन्तेवासीनमुवार्च-परे हि सौम्य, ग्लावं मैत्रेयमुपासीत् , अधीहि भोः सावित्रीं गायत्री चतुर्विंशति योनिं द्वादश मिथुनां, यस्यांभृग्वंगिरशश्च क्षुर्यस्यां सर्वमिदं श्रितं तां भवान् प्राब्रवीत्विति ।

तब उन मौद्गल्य ने अपने ब्रह्मचारी से कहा-सौम्य ! तुम जाओ, ग्लाव मैत्रेय के समीप उपस्थित होकर कहो कि बारह मिथुन तथा चौबीस योनि वाली भृगु और अङ्गिरा जिसके नेत्र हैं तथा जिसके आश्रित यह सब हैं, उस सावित्री गायत्री को हमें पढ़ाइये ।

इस काण्डिका में मौद्गल्य ने मैत्रेय से गायत्री का रहस्य पुछवाया है । साधारण अर्थ तो सभी जानते हैं कि इस मन्त्र में परमात्मा से यह प्रार्थना की गई है कि हमें सद्बुद्धि की प्रेरणा कीजिये । ऐसे मन्त्र तो श्रुति स्मृतियों में अनेक भरे पड़े हैं, जिनमें इसी प्रकार की या इससे भी उत्तम रीति से बुद्धि, विवेक आदि के लिए प्रार्थनाएँ की गई हैं । फिर गायत्री में ही ऐसी क्या विशेषता है, जिसके कारण उसे वेद-माता कहा गया और समस्त श्रुति-क्षेत्र में इतना अधिक महत्त्व दिया गया । इसका कोई न कोई बड़ा कारण अवश्य होना चाहिए । मौद्गल्य ने उसी रहस्य एवं कारण को मैत्रेय से पुछवाया ।

स तत्राजगाम यत्रेतरो बभूव । तंहप्रयपच्छ स ह न प्रतिपदे ।

मौद्गल्य का शिष्य मैत्रेय के पास आया । उसने उससे पूछा, किन्तु वे उसका उत्तर न दे सके ।

तं होवाच दुरधीयानं त वै भवान्मौद्गल्यमवो चत्सत्वायं प्रश्नमप्रक्षीन्न तं व्यवोचः पुरा संवत्सरादार्तिमारिष्यसीति ।

उसने कहा-आपने मौद्गल्य को मूर्ख कहा था । उन्होंने जो आपसे पूछा आप उसे नहीं बतला सके, इसलिए एक वर्ष में आपको कष्ट होगा ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

स ह मैत्रेयः स्वानन्तेवासीन उवाच-यथार्थं भवन्तो यथागृहं यथामनो विप्रसृज्यन्ताम् दुरधीयानं वा अहं मौद्गल्य मवोचम्, स यं प्रश्नमप्रोक्षीन्न तं व्यवोचं, तमुपैष्यामि, शान्ति करिष्यामीति ।

तब मैत्रेय ने अपने शिष्यों से कहा-अब आप लोग अपनी-अपनी इच्छानुसार अपने-अपने घरों को लौट जाइये । मैंने मौद्गल्य को मूर्ख कहा था, पर उन्होंने जो पूछा है, मैं उसे नहीं बतला सका हूँ । मैं उनके पास जाऊँगा और उन्हें शान्त करूँगा ।

स ह मैत्रेयः प्रातः समित्पाणिमौदगल्यमुपससादासौ व अहं भो मेत्रेय इति ।

दूसरे दिन प्रातःकाल हाथ में समिधा लेकर मैत्रेय मौद्गल्य ऋषि के पास आये और कहा-मैं मैत्रेय आपकी सेवा में आया हूँ ।

किमर्थमिति-

किसलिए ?-उन्होंने पूछा ।

दुरधीयानं वा अहं भवन्तमवोचं त्वं मा य प्रश्नमप्राक्षीन्न तं व्यवोचं, त्वामुपैष्यामि, शान्ति करिष्यामीति ।

मैत्रेय ने कहा-मैंने आपको मूर्ख कहा था । आपने जो पूछा, मैं उसे न बतला सका । अब मैं आपकी सेवा में उपस्थित होऊँगा और आपको शान्त करूँगा ।

स होवाच अत्र वा उपेतं च सर्वं च कृतं पापकेन त्वा यानेन चरन्तमाहुः अथोऽयं मम कल्याणस्तं ते ददामि तेन याहीति ।

मौद्गल्य ने कहा-आप यहाँ आए हैं, लेकिन लोग कहते हैं कि आप शुद्ध भावना से नहीं आये हैं, तो भी मैं उन्हें कल्याणकारी भाव देता हूँ, तुम इसे लेकर लौटो ।

स होवाच । एतदेवात्रात्विषं चानृशस्य च यथा भवानाह । उपायामि त्वेव भवन्तमिति ।

मैत्रेय ने कहा-आपका कहना अभयकारी एवं सदय है । मैं आपकी सेवा में समित्पाणि होकर उपस्थित होता हूँ ।

तं हो पेथाय-

अब वे विधिपूर्वक उनकी सेवा में उपस्थित हुए ।

तं होपेत्य पप्रच्छ-

उपस्थित होकर पूछा-

किंस्विदाहुर्भोः सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य कवयः किमाहु ।
धियो विचक्षे यदि ताः प्रवेत्थ प्रचोदयन्सवितायाभिरेति ।।

१-सविता का वरेण्य किसे कहते हैं ?

२-उस देव का भर्ग क्या है ?

३-यदि आप जानते हों तो धी संज्ञक तत्त्वों को कहिये, जिनके द्वारा सबको प्रेरणा देता हुआ सविता विचरण करता है ।

तस्मा एतत्प्रोवाच-

उन्होंने उत्तर दिया-

वेदांश्छन्दांसि सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य कवयोऽन्नमाहुः । कर्माणि धियस्तदुते ब्रवीभि प्रचोदपन्सवितायाभिरेति ।

१-वेद और छन्द सविता का वरेण्य है ।

२-विद्वान पुरुष अन्न को ही देव का भर्ग बतलाते हैं ।

३-कर्म ही वह धी तत्त्व है, जिसके द्वारा सबको प्रेरणा देता हुआ सविता विचरण करता है ।

वमुपसग्रद्य पप्रच्छ धीहि भोः, कः सविता, का सावित्री ।

यह सुनकर उनने फिर पूछा-सविता क्या है और सावित्री क्या है ?

मौद्गल्य के अभिप्राय को मैत्रेय भली प्रकार समझ गये । उन्होंने सच्चाई के साथ विचार किया तो जाना कि मैं गायत्री के उस रहस्य को नहीं जानता हूँ, जिसके कारण उसे इतना महत्त्व प्राप्त है । उन्होंने सोचा, यह मूल कारण न मालूम हो तो उसके वाह्य प्रतीकों को जान लेने मात्र से कुछ लाभ नहीं हो सकता । इसलिये वेदों का प्रवचन करने से तब तक क्या लाभ, जब तक कि उनका मूल कारण न मालूम हो । यह सोचकर उनने निश्चय किया कि पहले मैं गायत्री का रहस्य समझूँगा , तब अन्य कार्य करूँगा । उन्होंने अपने विद्यार्थियों की छुट्टी कर दी और स्वयं नम्र बनकर समिधा हाथ में लेकर शिष्य-भाव से मौद्गल्य के पास पहुँचे । विद्या प्राप्त करने की-विशेष रूप से अध्यात्म विद्या की-यही परिपाटी है कि शिक्षार्थी अपने अध्यापक के पास नम्र होकर, उनके प्रति श्रद्धा भाव मन में धारण करके पढ़ने जावे । इस आर्ष प्रणाली को छोड़कर आज के उच्छृङ्खल 'स्टूडेण्ट' जिन उजड्ड

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भावनाओं के साथ शिक्षा प्राप्त करते हैं, वह शिक्षा गुरु का आशीर्वाद न होने से निष्फल हो जाती है ।

मैत्रेय ने पूछा-गायत्री के प्रथम पद में आये हुए शब्दों का रहस्य बताइये । (१) सविता का वरेण्य क्या है, अर्थात् उस तेजस्वी परमात्मा को किससे वरेण्य किया जाता है । ईश्वर किस उपाय से प्राप्त होता है ? (२) उस देव का भर्ग क्या है ? देव कहते हैं श्रेष्ठ को, भर्ग कहते हैं बल को । देव का भर्ग क्या है ? जिसके द्वारा परमात्मा सबको प्रेरणा करता है अर्थात् वह माध्यम क्या है, जिसके द्वारा ईश्वर की कृपा प्राप्त होती है ? इन तीनों तत्त्वों को मैत्रेय ने मौद्गल्य से पूछा ।

इनका संक्षिप्त उत्तर मौद्गल्य ने दिया है, वह बड़े ही मार्के का है । इन उत्तरों पर जितना गम्भीरतापूर्वक विचार किया जाय, उतना ही उनका महत्त्व प्रकट होता है । मौद्गल्य कहते हैं:-

(१) वेद और छन्द सविता का वरेण्य हैं । (२) अन्न को ही देव का भर्ग कहते हैं । (३) कर्म ही 'धी' तत्त्व है, इसी के द्वारा परमात्मा सबको प्रेरणा देता है, सबका विकास करता है । आइये, इन तीनों प्रश्नों पर पृथक-पृथक विचार करें -

(१) वेद अर्थात् ज्ञान, छन्द अर्थात् अनुभव तत्व से, आत्म-ज्ञान से परमात्मा की प्राप्ति होती है, पर वह ज्ञान केवल वाचिक न होना चाहिये । भारवाही गधे की तरह अनेक पुस्तकें पढ़ लेने से, शुक सारिकाओं की भाँति कुछ रटे हुए शब्दों का प्रवचन कर देने से काम नहीं चल सकता । हमारा तत्त्व-ज्ञान अनुभव सिद्ध होना चाहिए । जिसको कारण, तर्क, प्रमाण और उदाहरण के द्वारा सत्य मान लिया जाय, उस सत्य के प्रति मनुष्य के मन में अगाध श्रद्धा होनी चाहिये और उस श्रद्धा का जीवन में व्यावहारिक आचरण होना चाहिये । पहले पूरी तत्परता, सच्चाई और निष्पक्षता से यह देखना चाहिए कि कौन-कौन सिद्धान्त उचित एवं कल्याणकारी हैं । जब यह विश्वास हो जाय कि सत्य, परोपकार, संयम, ईमानदार आदि गुण सब दृष्टियों से श्रेयष्कर है तो उनके सिद्धान्त का जीवन में आचरण होना चाहिए । सद्ज्ञान की श्रद्धा भूमि में परिपक्व होना यही ईश्वर की प्राप्ति का प्रधान उपाय है । बिना सिद्धान्तों के जाने केवल अनुभव निर्बल है और बिना अनुभव का ज्ञान निष्फल है । जब सद्ज्ञान मनुष्य की श्रद्धा में परिणित हो जाता है, दम्भ, छल, मत्सर, कपट, धूर्तता एवं दुराव को छोड़कर जब समस्त मनोभूमि में एक ही जाति की श्रद्धा स्थापित हो जाती है, तो उसी आधार पर परमात्मा की प्राप्ति होती है । वेद और छंद के सम्मिश्रण में सविता का वर्णन किया जाता है और ज्ञान और अनुभव से परमात्मा को प्राप्त किया जाता है ।

(२) इसी प्रश्न का उत्तर देते हुए मौद्गल्य कहते हैं, देव का भर्ग अन्न है । श्रेष्ठ का बल उसके साधन हैं । श्रेष्ठता को तभी बलवान बनाया जा सकता है, जब उसको विकसित करने के लिए अन्न हो, साधन हो । साधन सामिग्री लक्ष्मी एक शक्ति हैं, जो असुरों के हाथ में चली जावे तो असुरता को बढ़ाती है और यदि देवों के हाथ में हो तो उसके द्वारा देवत्व का विस्तार होता है । देवता बलवान होते हैं । शासन-सत्ता यदि दुष्ट लोगों के हाथ में हो तो वे उससे दुष्टता फैलाते हैं । पिछली शताब्दियों में भारत की राजसत्ता विदेशियों के हाथ में रही है, इसके कारण उन्होंने भारत-भूमि का कितना अधःपतन किया, यह किसी से छिपा नहीं है । वही सत्ता अब जब अच्छे हाथों में आई तो थोड़े ही दिनों में रूस, अमेरिका की भाँति वहाँ भी उन्नत अवस्था प्राप्त होने की सम्भावना है । योगी अरविन्द ने अपनी 'माता' पुस्तक में लिखा है कि- 'लक्ष्मी पर श्रेष्ठ लोगों को आधिपत्य करना चाहिये । इस प्रकार संसार में सुख शांति बढ़ेगी । यदि लक्ष्मी असुरों के पास चली गई तो उससे विश्व का अनिष्ट ही समझिए ।' देवताओं को भोग के लिए नहीं, लोभ के लिए नहीं, संग्रह के लिए नहीं, अहंकार-प्रदर्शन के लिए नहीं, अन्याय करने के लिए नहीं वरन् इसलिए धन और साधन सामग्रियों की आवश्यकता है कि वे शक्तियों द्वारा देवत्व की रक्षा एवं वृद्धि कर सकें । अपने आपको बलवान, क्रियाशील और साधन सम्पन्न बना सकें । अन्न को, इस साधन-सामिग्री को लक्ष्मी का प्रतीक माना है । मौद्गल्य का दूसरा उत्तर यह है कि देव का भर्ग

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अन्न है, श्रेष्ठ का बल साधन है । बिना साधन के तो वह बेचारा निर्बल ही रहेगा ।

(३) मौद्गल्य का तीसरा उत्तर यह है कि कर्म ही 'धी' तत्त्व है । इसी के द्वारा परमात्मा सबका विकास करता है । यह नितान्त सत्य है कि परमात्मा की कृपा से सबका विकास होता है । परमात्मा सबको ऊपर की ओर-उन्नति की ओर प्रेरित करता है, पर यह भी जान लेना चाहिये कि उस प्रेरणा का रूप है-'धी' । धी अर्थात् वह बुद्धि जो कर्म करने के लिए प्रेरणा, प्रोत्साहन देती है और कर्म करने में लगा देती है । परमात्मा की जिस पर कृपा होती है, उसे उसी प्रकार की बुद्धि प्राप्त होती है । किसी मनुष्य पर परमात्मा की कृपा है या नहीं, इसकी पहचान करनी हो तो वह इस प्रकार हो सकती है कि वह मनुष्य उत्साहपूर्वक, तन्मयतापूर्वक, श्रम, जागरूकता और रुचि के साथ काम करता है या नहीं ? जिसका स्वभाव इस प्रकार का है, समझना चाहिए कि इनको विकसित करने के लिए परमात्मा ने इन्हें 'धी' तत्त्व प्रदान किया है ।

कितने ही व्यक्ति आलसी, निकम्मे, हरामखोर होते हैं, निराशा जिन्हें घेरे रहती है, काम को आधे मन से, अरुचिपूर्वक, बेगार भुगतने की तरह करते हैं, जरा सा काम उन्हें पहाड़ मालूम होता है । थोड़े से श्रम से भारी थकान अनुभव करते हैं । ऐसे लोगों को धी तत्त्व से रहित समझना चाहिये । यह प्रत्यक्ष है कि वे ईश्वर के अकृपा पात्र हैं, कर्म प्रेरक बुद्धि के अभाव में वे दुर्भाग्य ग्रस्त ही रहेंगे ।

मौद्गल्य का उपर्युक्त कथन कितना गम्भीर और सत्य है इसके बारे में दो मत नहीं हो सकते । भाग्य का रोना रोने वाले, तकदीर को ठोकने वाले, अपनी त्रुटि का दोष किसी दूसरे ज्ञात-अज्ञात पर थोपकर झूठा मनः सन्तोष भले ही कर लें, पर वस्तु स्थिति यही है कि उन्होंने ईश्वर की कृपा को प्राप्त नहीं किया । यह कृपा हर किसी के लिए सुलभ है, हर किसी के अपने हाथ में है । धी तत्त्व को-कर्मशीलता को-अपनाकर हर कोई ईश्वरीय कृपा और उन्नति का अधिकारी बन सकता है । परमात्मा अपनी कृपा से किसी को वंचित नहीं रखता, मनुष्य ही दुर्बुद्धि के कारण उसका परित्याग कर देता है ।

मन एव सविता वाक् सावित्री यत्रैव मनस्तद्वाक् ।
यत्र वै वाक् तन्मन इति एते द्वे योनि एकं मिथुनम् ॥ १ ॥

मन सविता है वाक् सावित्री, जहाँ मन वहाँ वाक् है, जहाँ वाक् है वहाँ मन, ये दोनों एक योनि और एक मिथुन हैं ।

अग्निरेव सविता पृथिवी सावित्री यत्र ह्येवाग्निस्तत्पृथिवी
यत्र वै पृथिवी तदग्निरिति एते द्वे योनी एकं मिथुनम् ॥ २ ॥

अग्नि सविता है, पृथ्वी सावित्री, जहाँ अग्नि है वहाँ पृथ्वी है, जहाँ पृथ्वी है वहाँ अग्नि है, यह दो योनि तथा एक मिथुन हैं ।

वायुरेव सविता अन्तरिक्षं सावित्री, यत्र ह्येव वायु स्तदन्तरिक्षम्,
यत्र वा अन्तरिक्ष तद्वायुरिति एते द्वे योनी एकं मिथुनम् ॥ ३ ॥

वायु सविता है अन्तरिक्ष सावित्री है, जहाँ वायु है वहाँ अन्तरिक्ष है, जहाँ अन्तरिक्ष है वहाँ वायु है । ये दोनों योनि और एक मिथुन हैं

आदित्य एव सविता द्यौः सावित्री यत्रैवादित्यस्तद् द्यौः यत्र वैद्यौ स्तदादित्य इति । एते द्वेयोनि एकं मिथुनम् ॥ ४ ॥

आदित्य सविता है, द्यौ सावित्री । जहाँ आदित्य है वहाँ द्यौ है, जहाँ द्यौ है वहाँ आदित्य है । ये दोनों योनि और एक मिथुन हैं ।

चन्द्रमा एव सविता नक्षत्राणां सावित्री यत्र ह्येव चन्द्रमा स्तन्नक्षत्राणि ।
यत्र वै नक्षत्राणि तच्चंन्द्रमा इति । एते द्वे योनी एकं मिथुनम् ॥ ५ ॥

चन्द्रमा सविता है नक्षत्र सावित्री है, जहाँ चन्द्रमा है वहाँ नक्षत्र है, जहाँ नक्षत्र हैं वहाँ चन्द्रमा है । ये दोनों योनि और एक मिथुन हैं ।

अरेव सविता रात्रिः सावित्री यत्र ह्येवाहस्तद्रात्रिः ।
यत्र वै रात्रि स्तदहरिति एते द्वेयोनी एकं मिथुनम् ॥ ६ ॥

दिन सविता है और रात्रि सावित्री है । जहाँ दिन है वहाँ रात्रि है । जहाँ रात्रि है वहाँ दिन है । ये दो योनि और एक मिथुन हैं ।

उष्णमेव सविता शीतं सावित्री यत्र ह्येवोष्णं तच्छीतं ।
यत्र वै शीतं तदुष्णमिति एते द्वे योनी एकं मिथुनम् ॥ ७ ॥

उष्ण सविता है, शीत सावित्री । जहाँ उष्ण है वहाँ शीत है, जहाँ शीत है वहाँ उष्ण है । ये दोनों योनि और एक मिथुन हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अभ्रमेव सविता वर्ष सावित्री यत्र ह्येवाभ्रं तद्वर्ष, यत्र वै वर्ष तदभ्रमिति एते द्वे योनी एकं मिथुनम् ॥ ८ ॥

बादल सविता है और वर्षण सावित्री । जहाँ बादल हैं वहाँ वर्षण है, जहाँ वर्षण है वहाँ बादल हैं । ये दोनों योनि तथा एक मिथुन है ।

विद्युदेव सविता स्तनयित्नुः सावित्री । यत्र ह्येव विद्युत्त त्स्तनयित्नुः यत्र वै स्तनयित्नुस्तद्विद्युदित्ति एते द्वे योनी एकं मित्नम् ॥ ९ ॥

विद्युत् सविता है और उसकी तड़क सावित्री । जहाँ बिजली है वहाँ उसकी तड़क है, जहाँ तड़क है वहाँ बिजली है । ये दोनों योनि एक मिथुन हैं ।

प्राण एव सविता अन्नं सावित्री यत्र ह्येव प्राणस्तदन्नम्। यत्र वा अन्नं तत्प्राण इति । एते द्वे योनी एकं मिथुनम् ॥ १० ॥

प्राण सविता है अन्न सावित्री । जहाँ प्राण है वहाँ अन्न है। जहाँ अन्न है , वहाँ प्राण है । यह दोनों योनि तथा एक मिथुन हैं ।

वेदा एव सविता छन्दांसि सावित्री यत्र ह्येव वेदास्तच्छंदांसि यत्र वै छन्दांसि तद्वेदा इति एते द्वे योनी एकं मिथुनम् ॥ ११ ॥

वेद सविता है छन्द सावित्री । जहाँ वेद हैं वहाँ छन्द हैं । जहाँ छन्द हैं वहाँ वेद हैं । यह दोनों योनि आरै एक मिथुन हैं ।

यज्ञ एवं सविता दक्षिणा सावित्रीं यज्ञ ह्येव यज्ञस्त दक्षिणा । यत्र वैदक्षिणाः रतेद्यज्ञ इति एते द्वे योनी एकं मिथुनम् ॥ १२ ॥

यज्ञ सविता है और दक्षिणा सावित्री, जहाँ यज्ञ है वहाँ दक्षिणा है, जहाँ दक्षिणा है वहाँ यज्ञ है, ये दोनों योनि तथा एक मिथुन हैं ।

एतद्धम्मै तद्विद्वांसमोपकारी मासस्तुर्ब्रह्मचारी ते संस्थित इति ।

विद्वान तथा परोपकारी महाराज ! आपकी सेवा में यह ब्रह्मचारी आया है ।

अथैत आसस्तुरा चित इव चितो बभूव अथोत्थाय प्रावाजीदिति ।

यह ब्रह्मचारी आपके यहाँ आकर ज्ञान से परिपूर्ण हो गया है । इसके बाद वे वहाँ से चले गये ।

एतद्धा अहं वेद नैतासु योनिष्वितएतेभ्यो वा मिथुनभ्यः संभवतो ब्रह्मचारी मम पुरायुषः प्रेषादिति ।

और उन्होंने कहा कि अब मैं इसे जान गया हूँ, इन योनियों अथवा इन मिथुनों में आया हुआ मेरा कोई ब्रह्मचारी अल्पायु नहीं होगा ।

अब प्रश्न होता है कि सविता क्या है और सावित्री क्या है ? गायत्री का देवता सविता माना गया है । प्रत्येक मंत्र का एक देवता है, जिससे पता चलता है कि इस मन्त्र का क्या विषय है । गायत्री का देवता सविता होने से यह प्रकट है कि इस मन्त्र का विषय सविता है । सविता की प्रधानता होने के कारण गायत्री- का दूसरा नाम सावित्री भी है ।

मैत्रेय पूछते हैं-भगवान् सविता क्या है और वह सावित्री क्या है ? महर्षि मौद्गल्य उन्हें उत्तर देते हैं कि सविता और सावित्री का अविच्छिन्न सम्बन्ध है, जो एक है वही दूसरा है । दोनों मिलकर एक जोड़ा बनता है, एक केन्द्र है दूसरा उसकी शक्ति है । दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं ।

शक्ति मार्ग का महत्त्व उसकी शक्ति के विस्तार से है । यों तो प्रत्येक परमाणु अनन्त शक्ति का पुञ्ज हैं । एक परमाणु के विस्फोट से प्रलय उपस्थित हो जाती है । पर इस प्रकार की गतिविधि तभी होती है जब उस शक्ति का विस्तार एवं प्रकटीकरण होता है । यदि यह प्रकटीकरण न हो तो अनन्त शक्तिशाली पदार्थ का भी कोई अस्तित्त्व नहीं, उसे कोई जानता तक नहीं । सविता कहते हैं-तेजस्वी परमात्मा को और सावित्री कहते हैं- उसकी शक्ति को । सावित्री सविता से भिन्न नहीं, वरन् उसकी पूरक है, उसका मिथुन अर्थात् जोड़ा है । सावित्री द्वारा ही अचिन्तन, अज्ञेय, निराकार एवं निर्लिप्त परमात्मा इस योग्य होता है कि उससे कोई लाभ उठाया जा सके ।

यह बात बहुत सूक्ष्म और गम्भीर विचार के उपरान्त समझ में आने वाली है । इसलिए उपनिषद्कार उसे उदाहरण दे देकर सुबोध बनाते हैं और इस गूढ़ तत्त्व को इस प्रकार उपस्थित करते हैं कि हर कोई आसानी से समझ सके । वे कहते हैं-

मन सविता है, वाक् सावित्री है, जहाँ मन है वहाँ वाक् है, जहाँ वाक् है वहाँ मन है । ये दोनों योनियाँ हैं । एक मिथुन है । इसी प्रकार अग्नि और पृथ्वी का, वायु और अन्तरिक्ष का, आदित्य और द्यौ का, चन्द्रमा और नक्षत्रों का, दिन और रात्रि का, उष्ण और शीत का, अग्नि और वरुण का, विद्युत्

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

और तड़क का, प्राण और अन्न का, वेद और छन्द का, यज्ञ और दक्षिणा का मिथुन बताया गया है । यह तो थोड़े से उदाहरण मात्र हैं, यह उदाहरण बताकर उपनिषद्कार ने यह बताया है कि अकेली कोई वस्तु प्रकट नहीं हो सकती, प्रकाश में नहीं आ सकती, विस्तार नहीं कर सकती । अव्यक्त पदार्थ तभी व्यक्त होता है, जब उसकी शक्ति का प्रकटीकरण होता है । केवल परमात्मा बुद्धि की मर्यादा के बाहर है, उसे न तो हम सोच सकते हैं और न उसके समीप तक पहुँचकर कोई लाभ उठा सकते हैं । यह अव्यक्त परमात्मा-सविता, अपनी शक्ति सावित्री द्वारा सर्वसाधारण पर प्रकट होता है और उस शक्ति की उपासना द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है ।

लक्ष्मीनारायण, सीताराम, राधाकृष्ण, उमाशंकर, सविता, सावित्री, प्रकृति परमेश्वर के मिथुन, यही बताते हैं । यह एक-दूसरे के पूरक हैं, प्रकट होने के कारण हैं । जीव भी मावा के कारण अव्यक्त से व्यक्त होता है । यह मिथुन हेय या त्याज्य नहीं है । वरन् क्रियाशीलता के विस्तार के लिए हैं । मनुष्य का विकास भी एकाङ्गी नहीं हो सकता, उसे अपनी शक्तियों का विस्तार करना पड़ता है । जो अपनी शक्तियों को बढ़ाता है वही उन्नति की ओर अग्रसर होता है ।

शक्ति और शक्तिवान् का अन्योन्याश्रय सम्बन्ध है । जैसे सविता अपनी सावित्री से ओत-प्रोत है, उसी प्रकार हमें भी अपने आपको बहुमुखी शक्तियों से परिपूर्ण बनाना चाहिये । अपने साथ अनेक व्यक्तियों का सहयोग संगठित करना चाहिये । जिसके मिथुन जितने अधिक हैं वह उतना ही सुखी है ।

इस शक्ति और शक्तिवान् के रहस्य को जानकर मैत्रेय संतुष्ट हुए, उन्होंने कहा-'मैं आपका शिष्य अब ज्ञान की वास्तविक जानकारी से परिपूर्ण हो गया हूँ । अब मैं जान गया हूँ कि मेरा जो भी शिष्य इस योनि और मिथुन के रहस्य को जान लेगा । वह अल्पायु न होगा । वह शान्ति को अपना अविच्छिन्न अङ्ग मानकर उसका दुरुपयोग न करेगा वरन् सदुपयोग द्वारा सब प्रकार का लाभ उठायेगा, इस प्रकार शक्ति का महत्त्व समझकर उसका सदुपयोग करने वाले अल्पायु कदापि नहीं हो सकते ।

ब्रह्म हेदं श्रिवं प्रतिष्ठामायतनमैक्षत तत्तपैस्का यदि तद्ब्रू ते श्रियेत् तत्सत्ये प्रत्यतिष्ठत् ।

ब्रह्मा ने श्री, प्रतिष्ठा और आयतन को देखा, वह था कि-तप करो । यदि तप के व्रत को धारण किया जाय, तो सत्य में प्रतिष्ठा रहती है ।

स सविता सावित्र्या ब्राह्मर्ण सृष्ट्वा तत्सावित्री पर्यदधात् ।

उस सविता ने सावित्री से ब्राह्मण की सृष्टि की तथा सावित्री को उससे घेर दिया ।

तत्सवितुर्वरेण्यं इति सावित्र्याः प्रथमः पादः ।

'तस्सवितुर्वरेण्यं' यह सावित्री का प्रथम पाद है ।

पृथिव्यर्चं समधात् । श्रूचा अग्निम् । अग्निनाश्रियम् श्रिया स्त्रियम् । स्त्रियो मिथुनम् । मिथुनेन् प्रजाम् । प्रज्या कर्म । कर्मणा तपः । तपसा सत्य सत्येन ब्रह्म । ब्रह्मणाम । ब्रह्मणाम व्रतम् । व्रतेन वै ब्राह्मणः संशितो भवंति । अशून्यो भवति, अविच्छिन्नो भवति ।

पृथ्वी से ऋक् को जोड़ा युक्त किया । ऋक् से अग्नि को । अग्नि से श्री को । श्री से स्त्री को । स्त्री से मिथुन को । मिथुन से प्रजा को । प्रजा से कर्म को । कर्म से तप को । तप से सत्य को । सत्य से ब्रह्म को । ब्रह्म से ब्राह्मण को । ब्राह्मण से व्रत को । ब्राह्मण व्रत से ही तीक्ष्ण होता है, पूर्ण होता है और अविच्छिन्न होता है ।

अविच्छिन्नोऽस्य तन्तुरविच्छिन्न जीवनं भवति, य एवं वदेत्, यश्चैवं विद्वानेवेमेतं सावित्र्याः प्रथम पादं व्याचष्टे ।

जो इस प्रकार इसे जानता है और जानकर जो विद्वान इसकी इस प्रकार व्याख्या करता है वह, उसका वंश तथा उसका जीवन अविच्छिन्न होता है ।

ब्रह्म जब तक अपने आप में केन्द्रित था, तब तक कोई पदार्थ न था । जब उसने 'एकोहं बहुस्याम'' की इच्छा की, एक से बहुत बनने का उपक्रम किया तो उस इच्छा शक्ति के कारण सृष्टि उत्पन्न हुई । जब ब्रह्म ने उस सृष्टि का साक्षात्कार किया तो उसमें से तीन वस्तुएँ प्रधान दिखाई दीं । (१) श्री (२) प्रतिष्ठा, (३) आयातन अर्थात् ज्ञान । इन विलक्षण सुख सामिग्रियों को किस प्रकार प्राप्त किया जा सकता है ? इस रहस्य का उद्घाटन

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

करते हुए ब्रह्म ने कहा-तप करो, अर्थात् तन्मयतापूर्वक श्रम करो । यह किस प्रकार सम्भव है ? तप से अभीष्ट वस्तुएँ किस प्रकार प्राप्त हो सकती हैं ? उसका भी ब्रह्म ने बड़े सुन्दर ढङ्ग से स्पष्टीकरण कर दिया । यदि तप का व्रत धारण किया जाय, तप को रुचिपूर्वक श्रमशीलता को अपना स्वभाव बना लिया जाय तो अवश्य ही सत्य में प्रतिष्ठित हो जाता है और अवश्य ही सही मार्ग मिल जाता है और उस मार्ग पर चलता हुआ प्राणी अभीष्ट को प्राप्त कर लेता है ।

अब इस श्री, प्रतिष्ठा और ज्ञान का अधिकारी कौन नियुक्त किया जाय ? इस विलक्षण सुख-साधना का अधिकारी हर कोई नहीं हो सकता । सविता ने -परमात्मा ने अपनी सत् शक्ति से ब्राह्मण को बनाया और उसको सावित्री से घेर दिया । जिसमें सत् शब्द विशेष है, जो ब्रह्म परायण है, वह व्यक्ति ब्राह्मण है, ऐसे व्यक्ति ईश्वरीय दिव्य भावों से, दिव्य शक्ति से घिरे रहते हैं, उन्हें ही श्री, प्रतिष्ठा और ज्ञान की प्राप्ति होती है, वे ही उनका सदुपयोग करके लाभान्वित होते हैं, अन्यों को इन तीनों का अधिकार नहीं है, यदि बलात्, अनधिकृत रूप से कोई इन्हें प्राप्त कर लेता है तो उसके लिए यह वस्तुयें विपत्ति रूप बन जाती हैं ।

आसुरी भावनाओं से आच्छादित मनुष्य तपस्वी नहीं होते जिससे उचित मार्ग से, तप द्वारा, ईमानदारी से इन वस्तुओं को प्राप्त करें । वे अवैधानिक रूप से, अनुचित मार्ग से , चालाकी से इन्हें प्राप्त करते हैं । ऐसी दशा में वह श्री, प्रतिष्ठा और ज्ञान उनके खुद के लिए तथा अन्य लोगों के लिए विपत्ति का कारण बनते हैं । आज हम देखते हैं कि धनी लोग, धन संग्रह के लिए कैसे-कैसे अनुचित तरीके अपनाते हैं और फिर उस संचित धन को कैसे अनुचित मार्ग में खर्च करते हैं । अपनी प्रतिष्ठा का दुरुपयोग करने वाले नेता, महात्मा, साधु, संन्यासी आदि की संख्या कम नहीं है, लोग ओंधे-सीधे मार्ग से नामवरी और वाहवाही लूटने के लिए प्रयत्न करते हैं । ज्ञान का दुरुपयोग करने वालों की तो कमी है ही नहीं । झूठे को सच्चा, सच्चे को झूठा सिद्ध करने वाले वकीलों की कमी नहीं है, अश्लील, कुरुचिपूर्ण पुस्तकें लिखने वाले लेखक, चित्रकार कम नहीं हैं, झूठी विज्ञापनबाजी करके अपनी ज्ञान शक्ति का दुरुपयोग करने वालों की संख्या पर्याप्त है ? ऐसे असत् प्रकृति के लोगों को जब यह तीन शक्तियाँ मिल जाती हैं तो वे उनका दुरुपयोग करते हैं । दुरुपयोग का निश्चित परिणाम उसका छिन जाना है । प्रकृति का नियम है कि वह अयोग्य हाथों में किसी वस्तु को अधिक समय नहीं रहने देती ।

जो ब्राह्मण है, ब्रह्म प्रकृति के हैं ब्रह्म ने उन्हें ही उपर्युक्त तीन लाभों का स्थायी अधिकारी बनाया है । यही ईश्वरीय नियम है । जिन्हें स्थायी रूप से श्री, प्रतिष्ठा और ज्ञान का अधिकारी बनना हो, सदा के लिए इनका रसास्वादन करना हो, उन्हें ब्राह्मण बनना चाहिये । अपने गुण, कर्म, स्वभावों में ब्राह्मी भावों की प्रधानता रखनी चाहिये । तभी यह तीन तत्त्व स्थायी रूप से उसके पास ठहरेंगे । सविता ने, परमात्मा ने अपनी सावित्री से सत् शक्ति से ब्राह्मण घेर दिया है, हमें तप द्वारा, योग द्वारा, यज्ञ द्वारा, सत्य द्वारा, प्रेम द्वारा, न्याय द्वारा ब्राह्मण बनने का प्रयत्न करना चाहिये जिससे संसार के इन तीन दिव्य सुखों के अधिकारी बन सकें ।

ब्राह्मण के पास-सन्मार्गगामी के पास, वैभव किस-किस प्रकार पहुँचता और ठहरता है, इसका विवेचन करते हुए उपनिषद्कार ने परस्पर सम्बन्धों को गिनाया है कि यह परस्पर सम्बन्ध की शृंखला किस प्रकार सम्पन्नता को प्राप्त कराने में समर्थ होती है ।

गायत्री के प्रथम पाद "तत्सवितुर्वरेण्यं" का भू प्रतिनिधि कहा जाता है । तीन व्याहृतियों से-भूः भुवः स्वः से गायत्री के तीन पद आविर्भूत हुए हैं । भूः कहते हैं पृथ्वी लोक को । पृथ्वी को पृथ्वी के निवासियों से, ऋक् को ज्ञान से सम्बद्ध किया, ज्ञान से अग्नि अर्थात् क्रिया को सम्बद्ध किया अग्नि, से श्री को अर्थात् क्रिया से वैभव को जोड़ दिया । वैभव को स्त्री से अर्थात् तृप्ति को जोड़ा । तृप्ति से मिथुन अर्थात जोड़ा बना, मैत्री हुई, मैत्री से प्रजा अर्थात बहुजन सम्बन्ध स्थापित हुआ, बहुजन सहयोग से कर्म हुए, सत्कर्मों से तप के लिए साहस

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बढ़ा । तप से सत्य मार्ग मिला, सत्य मार्ग से ब्रह्म की प्राप्ति हुई, ब्रह्म प्राप्ति करने वाला ब्राह्मण कहलाया, ब्राह्मण ने व्रत को अपनाया, आदर्शवादी आचरण की प्रतिज्ञा की । इस प्रकार जिसका जीवन आदर्शवादी आचरण की प्रतिज्ञा से ओत-प्रोत है, वह ब्राह्मण सुतीक्ष्ण, परिपूर्ण और अखण्डित होता है । उसकी तीक्ष्णता में, क्रियाशीलता में, पूर्णता में, कुछ कमी नहीं होती, उसे कोई खण्डित नहीं कर सकता ।

जो इस प्रकार का ज्ञान रखता है, जो इस प्रकार गायत्री की व्याख्या करता है उसका जीवन और वंश अविच्छिन्न रहता है ।

गायत्री के प्रथम पाद का शब्दार्थ तो बहुत साधारण है । उसे समझने मात्र से उतना लाभ नहीं मिल सकता, जितना कि मिलना चाहिये । ब्रह्म ने श्री प्रतिष्ठा और ज्ञान रूपी तीनों रत्नों का जिसे अधिकारी बनाया है उसे गायत्री से घेर दिया है । इसका तात्पर्य यह है कि गायत्री की मर्यादा के भीतर जिन्होंने ब्राह्मणत्व प्राप्त किया है-वे ही भौतिक और आत्मिक आनन्दों को प्राप्त करेंगे । जिनकी जठराग्नि तीव्र है उनके लिए साधारण श्रेणी के पदार्थ भी रुचिकर और पुष्टिकर होते हैं और जिनकी जठराग्नि मन्द है, उनके लिए बढ़िया मोहन भोग भी रोग उत्पन्न करते हैं । गायत्री से आच्छादित ब्रह्मकर्मा मनुष्य की आत्मिक जठराग्नि ऐसी ही तीव्र होती है, वह थोड़ी मात्रा में प्राप्त हुए पदार्थों से भी रसास्वादन कर सकता है ।

जो यह जानता है कि गायत्री के प्रथम पाद का वास्तविक उद्देश्य मानव जीवन को आदर्शवाद की प्रतिज्ञा से ओत-प्रोत बनाना है, वही उसका वास्तविक तात्पर्य जानता है । जो इस ज्ञान को व्यवहार में लाता है, अर्थात् अपने को वैसा ही बनाता है, उसका जीवन अविच्छिन्न होता है - अर्थात जीवन पर पथभ्रष्ट नहीं होता और उसका वंश भी नष्ट नहीं होता । पीछे भी जन्म-जन्मान्तरों तक वह भावना नष्ट नहीं होती, इस अविच्छिन्नता के कारण उसे श्री, प्रतिष्ठा और ज्ञान का कभी भी अभाव नहीं होता ।

भर्गो देवस्य धीमहि ति सावित्र्याः द्वितीयः पादः ।

भर्गो देवस्य धीमहि यह सावित्री का दूसरा पाद है ।

अन्तरिक्षण यजुः समुदद्यात् यजुषा वायुम् वायुना अभ्रम् । अभ्रेम वर्षम् वर्षणौषधि वनस्पतीन् औषधि वनस्पतिभिः पशून् पशुभि कर्मः कर्मणा तपः तपस्या सत्यम्, सत्येन ब्रह्म, ब्राह्मणा ब्राह्मणाम् ब्राह्मणेन व्रतं व्रतेव वै ब्राह्मणः संशितो भवत्शून्यो भवत्यविच्छिन्नो भवति ।

अन्तरिक्ष से यजु को युक्त करता है । यजुर्वेद से वायु को, वायु से मेघ को, मेघ से वर्षा को, वर्षा से औषधि वनस्पतियों को, औषधि वनस्पतियों से पशुओं को, पशुओं से कर्म को, कर्म से तप को, तप से सत्य को, सत्य से ब्रह्म को, ब्रह्म से ब्राह्मण को, ब्राह्मण से व्रत को तथा व्रत से ब्राह्मण तीक्ष्ण, पूर्ण और अविच्छिन्न होता है ।

अविच्छिन्नोऽस्यतन्तुरविच्छिन्नं जीवनं भवति एवं वेद यश्चैव विद्वानेवमेतं सावित्र्याः द्वितीय पादं व्याचष्टे ।

जो विद्वान इस प्रकार जानकर सावित्री के द्वितीय पाद की व्याख्या करते हैं उनका वंश तथा जीवन अविच्छिन्न होता है ।

पिछली काण्डिका में भूः से ऋक् को सम्बन्धित करके प्रथम पाद का रहस्य समझाया था । इस काण्डिका में गायत्री के दूसरे पाद का विवेचन करते हैं । भुवः से अंतरिक्ष से यजुः को सम्बद्ध किया है । यजुः कहते हैं यज्ञ को । यज्ञ कहते हैं परमार्थ को । पहली काण्डिका में ज्ञान द्वारा आदर्श जीवन की प्राप्ति का उपाय बतलाया था । यहाँ यज्ञ द्वारा व्रतमय जीवन होने की शृङ्खला का वर्णन करते हैं ।

भुवः से अन्तरिक्ष में यजुः को संयुक्त किया, यजुः से वायु को, वायु से मेघ को, मेघ से वर्षा को, वर्षा से औषधि और वनस्पतियों को, वनस्पति से पशुओं को सम्बद्ध किया । गीता में भी यज्ञ विधान का ऐसा ही वर्णन है । यज्ञ से वायु शुद्ध, वायु के सम्पर्क से गुणदायक जल बरसता है । उससे वृक्ष, वनस्पति और पशु श्रेष्ठ तत्त्वों वाले होते हैं, उनका उपयोग करने से मनुष्य का मन श्रेष्ठ बनता है और श्रेष्ठ मन से श्रेष्ठ कर्म होते हैं ।

कर्म से मन को, तप से सत्य को, सत्य से ब्रह्म को, ब्रह्म से ब्राह्मण को और ब्राह्मण को व्रत से सम्बद्ध किया । अन्ततः वही क्रम आ गया । व्रत धारण करने से ब्राह्मण, सुतीक्ष्ण, परिपूर्ण एवं अविच्छिन्न वंश वाला होता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जो ज्ञान से प्राप्त होता है वही प्रकारान्तर से यज्ञ द्वारा श्रेष्ठ कर्मों द्वारा भी प्राप्त हो सकता है । उच्च अन्तःकरण से निकली हुई सद्भावनाएँ समस्त आकाश को, वातावरण को सतमय बना देती है और उस वातावरण में पलने वाले सभी पदार्थ सत् से परिपूर्ण होते हैं । जिस वातावरण के कारण मनुष्य ब्रह्म परायण व्रतवान् होकर अविच्छिन्न जीवन हो जाता है , यह इस दूसरी काण्डिका का तात्पर्य है ।

धियो योनः प्रचोदयादिति सावित्र्यास्तृतीयः पादः ।

धियो योनः प्रचोद्यात्-यह सावित्री का तीसरा पाद है ।

दिवा साम समदधात् साम्नाऽऽदित्यम् आदित्येन रश्मीन रश्मिभिवषम् वर्षेणौषधिवनस्पतीन् औषधि वनस्पतिभिः पशून, पशुभिः कर्मः, कर्मणातपः तपसा यत्यम् सत्येन ब्रह्म ब्राह्मणा ब्रह्मणम् ब्राह्मणेन व्रतम् व्रतेन वै ब्राह्मणः संशितो भवत्पशून्य भवत्यविच्छिन्नो भवति । अविच्छिन्नोऽस्य तन्तुरविच्छिन्नं जीवनं भवति य एवं वेद, यश्चैवं विद्वानेवमेतं सावित्र्यास्तृतीयं पादं व्याचष्टे ।

द्यू लोक से साम को युक्त करता है, साम से आदित्य को, आदित्य से रश्मियों को, रश्मियों से वर्षा को, वर्षा से औषधि वनस्पतियों को, औषधि वनस्पतियों से पशुओं को, पशुओं से कर्म को, कर्म से तप को, तप से सत्य को, सत्य से ब्रह्म को, ब्रह्म से ब्राह्मण को, ब्राह्मण से व्रत को, व्रत से ब्राह्मण तीक्ष्ण, पूर्ण और अविच्छिन्न वंश वाला होता है जो विद्वान यह जानकर सावित्री के तृतीय पाद की व्याख्या करते हैं वे अपने वंश एवं जीवन को अविच्छिन्न बनाते हैं ।

गायत्री का तीसरा पद 'स्वः' से आविर्भूत हुआ है । 'स्वः' कहते हैं द्यू लोक को । द्यू लोक सामवेद से संयुक्त किया गया है । साम से आदित्य , आदित्य से रश्मियाँ, रश्मियों से वर्षा, वर्षा से औषधि वनस्पति, उनसे पशुओं का सम्बन्ध है । इनका प्रयोग करने से पूर्व काण्डिकाओं में वर्णित प्रकार से मनुष्य ब्रह्मचारी व्रतधारी बनकर अविच्छिन्न जीवन और वंश वाला बन जाता है ।

गायत्री के तीन पादों में यह विज्ञान सन्निहित है जिसके द्वारा मनुष्य को श्री, प्रतिष्ठा और ज्ञान की उपलब्धि होती है । तीन पाद तीनों वेदों से बने हैं । प्रत्येक प्राद तीन-तीन लोकों का प्रतीक है । इन तीनों लोकों से यह तीनों वेदों के मन्त्र आवश्यक सामग्री को खींच कर लाते हैं और गायत्री साधक को सब प्रकार सुखी बना देते हैं । इससे व्यक्तिगत लाभ ही नहीं वरन् सामूहिक लाभ भी है । जैसे यज्ञ करने से वायु की शुद्धि, उत्तम वर्षा और उससे गुणकारी वनस्पति तथा दूध की उत्पत्ति होती है वैसे ही गायत्री द्वारा भी वह प्रक्रिया पूरी होती है ।

यह सम्बद्ध शृङ्खलायें अपने में एक बड़ा भारी पदार्थ विज्ञान सम्बन्धी रहस्य छिपाये बैठी हैं । एक पदार्थ से दूसरे का सम्बन्ध किस प्रकार है इसकी थोड़ी सी विवेचना हमने आध्यात्मिक शैली से की है, परन्तु इसमें और भी विशद् रहस्य मौजूद हैं । भौतिक विज्ञान के अनुसार भी वह फलितार्थ उपस्थित होते हैं जिसके कारण गायत्री का साधक इन तीनों लाभों से श्री, प्रतिष्ठा एवं ज्ञान से पर्याप्त मात्रा में लाभान्वित होता है और अन्त में ईश्वर की प्राप्ति करके अविच्छिन्न जीवन अर्थात अमर हो जाता है । उसे जरा मृत्यु के जीवन बंधन में नहीं बँधना पड़ता । ऐसा है-इस त्रिपदा गायत्री का रहस्य ।

तेन ह वा एवं विदुषा ब्राह्मणेन ब्राह्माभिषन्नं ग्रसितं परामृष्टम् ।

सावित्री के तीन पाद जानने वाला ब्राह्मण, ब्रह्म प्राप्त, ग्रसित और परामृष्ट होता है ।

प्राप्त- Approached
ग्रसित- Digested
परामृष्ट-Realised

ब्रह्मणा आकाशमभिपन्नं, ग्रसितं परामृष्टम् आकाशेन वायुरभिपन्नो ग्रसितः परामृष्टः वायुना ज्योतिरभिपन्नो ग्रसितः परामृष्टः । ज्योतिषापोऽभिपन्नो ग्रसितः परामृष्टः । अद्भिभू मिरभिपन्न ग्रसिताः परामृष्टाः । भूम्यान्नभिपन्नं ग्रसितं परामृष्टम् ।
अन्नेन प्राणऽभिपन्नो ग्रसितः परामृष्टः । प्राणेन मनोऽभिपन्नं ग्रसितं परामृष्टम् । मनसा वागभिपन्नां ग्रसिता परामृष्टाः । वाचा वेदा अभिपन्ना ग्रसिताः

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

परामृष्टाः । वेदैयज्ञोऽभिपन्नो ग्रसितः परामृष्टः । तानि ह वा एतानि द्वादश महाभूतान्येवं विदि प्रतिष्ठितानि । तेषां यज्ञ एव पराध्यः ।

ब्रह्म से आकाश प्राप्त, ग्रसित एवं परामृष्ट है । आकाश से वायु प्राप्त, ग्रसित तथा परामृष्ट है । वायु से ज्योति अभिपन्न ग्रसित और परामृष्ट है । ज्योति से जल प्राप्त ग्रसित और परामृष्ट है । जल से पृथ्वी प्राप्त, ग्रसित और परामृष्ट है । भूमि से अन्न अभिपन्न, ग्रसित और परामृष्ट है । अन्न से प्राण अभिपन्न ग्रसित तथा परामृष्ट है । प्राण से मन अभिपन्न तथा परामृष्ट है । मन से वाक् अभिपन्न, ग्रसित तथा परामृष्ट है । वाक् से वेद अभिपन्न, ग्रसित एवं परामृष्ट हैं । वेदों से यज्ञ प्राप्त, ग्रसित एवं परामृष्ट है । इस प्रकार का ज्ञान रखने वालों में ये बारह महाभूत प्रतिष्ठित रहते हैं । इनमें यज्ञ ही सर्वश्रेष्ठ है ।

पिछली तीन काण्डिकाओं में वर्णित गायत्री के तीन पादों के रहस्य को जो भली प्रकार जानता है, उस ब्राह्मण से ब्रह्म प्राप्त, ग्रसित और परामृष्ट होता है अर्थात् वह ब्राह्मण ब्रह्म को प्राप्त करता है, प्राप्त करके उसे अपने में पचाता है और उससे परामृष्ट-आच्छादित होता है । उसके भीतर बाहर सब ओर ब्रह्म की ही सत्ता काम करती है ।

अब १२ ऐसी कड़ियाँ बताई जाती हैं, जिन पर विचार करने से यह प्रकट हो जाता है कि पंचभूत, अन्तःकरण चुतष्टय, वेद और यज्ञ सबका मूल केवल ब्रह्म है । ब्रह्म से ही एक कड़ी के बाद दूसरी कड़ी की तरह यह सब जुड़े हुए हैं, उसी से ओत-प्रोत हैं ।

बताया गया है कि ब्रह्म से आकाश, आकाश से वायु, वायु से अग्नि, अग्नि से जल, जल से पृथ्वी-पृथ्वी से अन्न, अन्न से प्राण, प्राण से मन, मन से वाक्, वाक् से वेद और वेद से यज्ञ प्राप्त होता है, ग्रसित किया जाता है, आच्छादन होता है ।

ब्रह्म प्रत्यक्ष रूप से आँखों से दिखाई नहीं पड़ता । स्वल्प ज्ञान वाले मनुष्य समझते हैं कि पंचभूतों का यह पुतला ही सब कुछ करता है । उन्हें यह बताया गया है कि पंचभूत और तुम्हारे अन्दर काम करने वाली मन बुद्धि आदि की चैतन्यता ब्रह्म से पृथक् नहीं है वरन् उससे आच्छादित है । यदि ब्रह्म का आच्छादन इन पर न हो तो इनकी क्रियाशीलता समाप्त हो जाय और कोई तत्त्व कुछ भी काम करने में समर्थ न हो सके ।

जो प्रकृति में, पंचभूतों में, शरीर में ब्रह्म को, परमात्मा को समाया हुआ देखता है, वह ब्राह्मण कहलाता है । वह वेद और यज्ञ से घिरा होता हैं अर्थात् सद्ज्ञान और सत्कर्म उसके कण-कण में व्याप्त होते हैं । इन सब ज्ञानों में यज्ञ ही, सत्कर्म ही सर्वोत्तम हैं, क्योंकि इस ज्ञान का तात्पर्य ही यह है कि मनुष्य सत्कर्म में लगे । जिसे यह सब रहस्य मालूम हैं, उसमें सब भूत प्रतिष्ठित रहते हैं अर्थात् समस्त सृष्टि-विस्तार को वह अपने भीतर ही समझता है ।

त ह स्मैतमेव विद्वांसो मन्यन्ते विद्यैनमिति यथातथ्यम विद्वांसः ।

जो विद्वान् यह समझ लेते हैं कि हम इस यज्ञ के जानकार हो गये हैं, वे इसे नहीं जानते ।

अयं यज्ञो वेदेषु प्रतिष्ठितः । वेदा वाचि प्रतिष्ठिताः वाङ्मनसि प्रतिष्ठिता । मनः प्राणे प्रतिष्ठितम् । प्राणोऽन्ने प्रतिष्ठितः अन्नं भूमौ प्रतिष्ठितम् । भूमिरप्सु प्रतिष्ठिता आपो ज्योतिषि प्रतिष्ठिताः ज्योतिर्वायो प्रतिष्ठितम् । वायुराकाशे प्रतिष्ठितः आकाशं ब्रह्मणि प्रतिष्ठतम् । ब्रह्म ब्राह्मणे ब्रह्म विदि प्रतिष्ठितम् ।

यो ह वा एवं चित् स ब्रह्मवित्पुण्यां च कीर्तिं लभते सुरभींश्च गन्धान् । सोऽपहतपाप्मानन्तां श्रियमश्नुतेय एवं वेद, यश्चैवं विद्वानेवमेतां वेदानां मातरं सावित्री सम्पदमुपनिषदपुपास्त इति ब्राह्मणम् ।

यह यज्ञ वेदों में प्रतिष्ठित है । वेद वाक् में प्रतिष्ठित है । वाक् मन में प्रतिष्ठित है । मन प्राण में प्रतिष्ठित है । प्राण अन्न में प्रतिष्ठित है । अन्न भूमि में प्रतिष्ठित है । भूमि जल पर प्रतिष्ठित है । जल तेज पर प्रतिष्ठित है । तेज वायु पर प्रतिष्ठित है । वायु आकाश पर प्रतिष्ठित है । आकाश ब्रह्म पर प्रतिष्ठित है । ब्रह्म ब्रह्मवेत्ता ब्राह्मण पर प्रतिष्ठित है । प्रकार जानने वाला ब्रह्मज्ञानी पुण्य एवं कीर्ति को प्राप्त करता है तथा सुरभित गन्धों को पाता है वह व्यक्ति पापहीन होकर अनन्त ऐश्वर्य को प्राप्त होता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पिछली काण्डिका में यज्ञ को सर्वोत्तम बताया है । परन्तु यह ध्यान रखना चाहिये कि जो यह कहते हैं कि हम यज्ञ को जानते हैं, वे नहीं जानते । कारण यह है कि दूसरे आदमी किसी कार्य के वाह्य रूप को देखकर ही उसके भले-बुरे होने का अनुमान लगाते हैं परन्तु यथार्थ में काम के बाहरी रूप से यज्ञ का कोई सम्बन्ध नहीं, वह तो आन्तरिक भावनाओं पर निर्भर होता है । यह हो सकता है कि कोई व्यक्ति बड़े-बड़े दान-पुण्य, होम, अग्निहोत्र, ब्रह्म-भोज, तीर्थ-यात्रा आदि करता हो, पर इसमें उसका उद्देश्य यश लूटना या कोई और लाभ उठाना हो । इसी प्रकार डाक्टर के आपरेशन करने के समान ऐसे कार्य भी हो सकते हैं, जो देखने में पाप प्रतीत होते हैं, परन्तु कर्त्ता की सद्भावना के कारण वे श्रेष्ठ कर्म हों । इसलिए कौन आदमी यज्ञ कर रहा है या नहीं, इसका निर्णय उन व्यक्तियों की अन्तरात्मा ही कर सकती । बाहर के आदमी के लिए बहुत अंशों से उसका जानना संभव होने पर भी पूर्ण रूप से शक्य नहीं है ।

पिछली काण्डिका में जिन बारह कड़ियों को एक ओर से गिनाया था, इस काण्डिका में उन्हें दूसरी ओर से गिनाया गया है अर्थात् क्रम उल्टा कर दिया है -

यज्ञ वेदों में, वेद वाक् में, वाक् मन में, मन प्राण में, प्राण अन्न में, अन्न भूमि में, भूमि जल में, जल तेज में, तेज वायु में, वायु आकाश में, आकाश ब्रह्म में और ब्रह्म ब्राह्मण में प्रतिष्ठित है । इस प्रकार इस शृङ्खला का एक सिरा ब्राह्मण है, तो दूसरा यज्ञ । एक सिरा यज्ञ है, तो दूसरा ब्राह्मण । ब्राह्मण वही है, जो सद्ज्ञान और सत्कर्म से ओत-प्रोत है । दूसरी तरह से इसी को यों कह लीजिये कि जो सद्ज्ञान और सत्कर्म से ओत-प्रोत है , वही ब्राह्मण है ।

जो इस प्रकार जानता है, जो ब्रह्मज्ञानी है, वह सुगन्ध की तरह उड़ने वाली पुण्यमयी कीर्ति को प्राप्त करता है । वह निष्पाप हो जाने से अनन्य ऐश्वर्यों को भोगता है । वह ज्ञान का उपासक बनकर इस वेदमाता गायत्री की उपनिषद् का उपासक बनता है अर्थात् इस उपनिषद् में वर्णित महान् ब्रह्मज्ञान को अपने अन्तःकरण में धारण करके उससे अपना जीवन ओत-प्रोत बनाता है । ऐसा व्यक्ति ही ब्राह्मण है, ऐसा शास्त्रों का अभिवचन है ।

गायत्री रामायण

यह प्रसिद्ध है कि वाल्मीकि रामायण की रचना का मूल आधार गायत्री मन्त्र है । गायत्री मन्त्र की व्याख्या के रूप में इस महान् ग्रन्थ की रचना हुई है ।

वाल्मीकि रामायण में २४ हजार श्लोक हैं । एक-एक अक्षर की व्याख्यास्वरूप एक-एक हजार श्लोक रचे हैं अथवा यों कहा जा सकता है कि एक-एक हजार श्लोकों के ऊपर गायत्री के एक-एक अक्षर का सम्पुट दिया गया है ।

आजकल वाल्मीकि रामायण के जो संस्करण मिलते हैं, जिनमें श्लोकों की संख्या समान नहीं है, उनमें काफी अन्तर पाया जाता है । इससे प्रतीत होता है कि बीच के अन्धकार-युग में यवन काल में कितने ही श्लोक नष्ट-भ्रष्ट हो गये होंगे । अन्य ग्रन्थों की भाँति साम्प्रदायिक उतार-चढ़ाव के जोश में सम्भव है, वाल्मीकि रामायण में भी कुछ श्लोक जोड़े गये हों या निकाले गए हों । रामचन्द्रजी द्वारा माँस का प्रयोग होना ऐसी ही निषिद्ध बात है, जो किसी ने पीछे से जोड़ दी मालूम होती है अन्यथा विश्वास नहीं होता कि भगवान रामचन्द्र जब कि बनवास में यती बन कर रह रहे थे, लक्ष्मण से माँस पकवाते और फिर सीता लक्ष्मण समेत उसे खाते ।

इस प्रकार की गड़बड़ी में श्लोक संख्या का क्रम भी बिगड़ गया है । प्रति एक हजार श्लोकों के बाद गायत्री के एक अक्षर का सम्पुट देकर महर्षि वाल्मीकि ने अपने ग्रन्थ में मिलावट को रोकना चाहा था, पर वह न हो सका । आज हमें अव्यवस्थित क्रमों वाली पुस्तकें ही प्राप्त होती हैं । हिसाब लगा कर देखा गया तो कहीं-कहीं तो केवल ४-६ श्लोकों का ही आगा-पीछा है पर कहीं यह अन्तर सैकड़ों तक पहुँचा है ।

इतना होने पर भी प्रति सहस्र पर गायत्री का एक अक्षर होने के इस क्रम को आकस्मिक नहीं कहा जा सकता, क्योंकि अन्य किसी मन्त्र का ऐसा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सम्पुट प्राप्त नहीं होता । अनजान में ऐसा सम्पुट नहीं लग सकता । महर्षि वाल्मीकि ने इसे बहुत समझकर लगाया है ।

इस गायत्री सम्पुट के न जाने कितने रहस्य और कारण होंगे । उन सबका जानना तो आज कठिन है, परन्तु उन सम्पुट वाले श्लोकों पर दृष्टिपात किया जाय तो भी वे बड़े महत्त्वपूर्ण प्रतीत होते हैं । वैसे उनमें से अधिकांश श्लोक घटनात्मक हैं । किसी घटना या वार्तालाप का ही परिचय मिलता दीखता है, तो भी गम्भीर दृष्टि डाली जाय तो प्रतीत होता है कि उसमें संकेत रूप से एक बड़ी ही महत्त्वपूर्ण शिक्षा भरी हुई है । जिस शिक्षा पर ठीक प्रकार अमल किया जाय तो मनुष्य का जीवन असाधारण विशेषताओं से परिपूर्ण हो सकता है ।

इन २४ अक्षरों के आरम्भ वाले २४ श्लोकों को 'गायत्री रामायण' कहा जाता है । इन श्लोकों के गर्भ में संकेत रूप से छिपे हुए मर्मों को समझकर उन्हें हृदयङ्गम करने वाला मनुष्य सम्पूर्ण वाल्मीकि रामायण के लाभ को प्राप्त कर सकता है । आगे उन गायत्री के २४ अक्षरों से आरम्भ होने वाले श्लोकों की विवेचना करते हैं ।

१-तप स्वाध्याय निरतं तपस्वी वाग्विदांवरम् ।
नारदं परिप्रच्छ वाल्मीकिर्मुनि पुंगवम् ।।

-बालकांड ११ ।

अर्थ-तप और स्वाध्याय करने वाले सर्वप्रधान और मुनियों में श्रेष्ठ नारदजी से तपस्वी वाल्मीकि ने पूछा-

इस श्लोक में दो पहेलियों पर प्रकाश डाला गया है । नारदजी को दो पदवी दी हैं और उन पदवियों का कारण भी बताया है । नारदजी को सर्वप्रधान विद्वान और मुनियों में श्रेष्ठ कहा है । सर्वप्रधान विद्वान उन्हें क्यों कहा गया है ? क्या नारदजी ने व्यासजी की तरह अठारह पुराण लिखे थे या उन्होंने कोई ऐसी विशेषता दिखाई थी, जो अन्य विद्वान में न होती ? यदि ऐसा नहीं है तो उन्हें सर्वश्रेष्ठ विद्वान क्यों कहा गया था फिर वाल्मीकि झूठे थे, जिन्होंने नारदजी की अत्युक्तिपूर्ण प्रशंसा की ?

इसी श्लोक में वह कारण भी स्पष्ट कर दिया है, जिसके कारण उन्हें सर्वश्रेष्ठ विद्वान् बताया गया है । वह कारण है-शास्त्र का चिंतन । पोथी पढ़ने वाले 'पड्दू' तो एक से एक बढ़िया पड़े हैं, जिनकी जिन्दगियाँ पोथी पढ़ने में बीत गईं । हजारों लाखों पुस्तकें जिन्होंने पढ़ डाली, क्या ऐसे लोगों को सर्वश्रेष्ठ विद्वान् कह दिया जाय ? नहीं, ऐसा नहीं हो सकता । पोथी पढ़ने का व्यसन किसी की जानकारी को तो बढ़ा सकता है, पर उससे कोई आत्मिक लाभ नहीं हो सकता । व्यक्ति भले ही शास्त्र को थोड़ा पड़ता हो, पर उसका चिंतन करता रहे । शास्त्र में अर्थ पर, आदेश पर, मर्म पर, महत्त्व पर गम्भीरता से मनन करना, अपनी आत्मा का अध्ययन करना, आत्म-मन्थन से जो नवनीत निकलता हो, उसे पचाकर आत्मसात् कर लेना यही स्वाध्याय का तथ्य है । जो इस प्रकार शास्त्र-सेवन करता है, वही विद्वानों में सर्वश्रेष्ठ है । इसलिए नारदजी को विद्वानों में सर्वश्रेष्ठ कहा ।

दूसरी पदवी उन्हें मुनियों में श्रेष्ठ की दी गई ऐसा क्यों हुआ ? इसका उत्तर भी साथ ही मौजूद है, वह है 'तप' । मनन करने वालों को मुनि कहते हैं । ऐसे अनेक जो सत् तत्त्व का मनन करते हैं पर इतने मात्र में काम नहीं चलता । जिसमें आदर्श के लिए घोर प्रयत्न करने की लगन है और उस प्रयत्न के लिये बड़े से बड़ा कष्ट सहन का साहस है वही तपस्वी, मुनियों में श्रेष्ठ है । नारद जी घड़ी भर चैन किये बिना अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए यहाँ वहाँ भ्रमण करते फिरते थे, लोक-सेवा के लिए उन्होंने सारा जीवन ही उत्सर्ग कर रखा था ।

इस श्लोक में नारद जी को माध्यम बना कर तप और स्वाध्याय की सर्वश्रेष्ठता वर्णन की है । गायत्री रामायण का पहला श्लोक हमें तपस्वी और स्वाध्यायशील होने का सदुपदेश देता है ।

२-स हत्वा राक्षसान् सर्वान् यज्ञघ्नान् रघुनन्दन ।
ऋषिभ पूजितस्तत्र यथेन्द्रो विजये पुरा ।।

-बालकाण्ड २०-२४

अर्थ-यज्ञ नष्ट करने वाले समस्त राक्षसों को रामचन्द्र जी ने मारा, ऋषियों ने उनकी पूजा की,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जिस प्रकार पहले असुर विजय करने पर इन्द्र की की गई थी ।

इस दूसरे श्लोक में तीन तथ्य हैं (१) यज्ञ नष्ट करने वालों को राक्षस मानना (२) राक्षसों को मारना (३) राक्षसों को मारने के लिये विवेकशीलों द्वारा प्रोत्साहित किया जाना ।

भले कर्मों में जो लोग बाधा अटकाते हैं, जनता की सुख-शान्ति में विघ्न उपस्थित करते हैं, पुण्य की प्रथा रोग पाप की प्रणाली चलाते हैं, ऐसे लोक-कण्टक मनुष्य राक्षस हैं, जनता के शत्रु हैं, ऐसे लोगों के प्रति घृणा के भाव जागृत रखना आवश्यक है अन्यथा वे हमारी उपेक्षा, लापरवाही तथा आँख चुराने की मनोवृत्ति देखकर निर्भय हो जायेंगे और दूने उत्साह से अपना काम करेंगे । इसलिये समाज-विरोधी, देश-द्रोही, लोक-कंटक लोगों पर हमारी तीव्र दृष्टि रहनी आवश्यक है । उनकी करतूतों से सावधान रहें, दूसरों को सावधान रखें और उनके विपक्ष में घृणा का आवरण तैयार करते रहें, जिससे वे राक्षसी वृत्तियों में निर्भय होकर बढ़ने से ठिठकें ।

ऐसे लोगों के लिये दूसरा उपाय है उनका दमन । जहाँ व्यक्तिगत रूप से निपट लेने की अनिवार्य आवश्यकता हो वहाँ तो बात दूसरी है पर अन्य साधारण अवसरों पर राज्य द्वारा ऐसे लोगों को दंड दिलवाना चाहिए । विदेशी शासन चले जाने पर अब सरकार भी जनता का प्रतिनिधित्व करती है । इसलिए दण्ड देने का काम जनता की सामूहिक दंड शक्ति सरकार द्वारा उन्हें कुचलवाना चाहिए । ऋषियों ने राक्षसों को स्वयं नहीं मारा था, विश्वामित्र जी राम और लक्ष्मण राजपुत्रों को लाये थे और उन्हें धनुष विद्या सिखा कर राक्षसों को मरवाया था । चाहते तो विश्वामित्र भी राक्षसों को मार सकते थे, पर प्रजा द्वारा प्रजा को दंड दिया जाना उचित न समझ कर उन्होंने इसके लिए राज्याश्रय को ही प्राप्त किया । हमें भी दुष्टों के दमन के लिए अपनी राज-शक्ति का ही प्रयोग करना चाहिए । तीसरी बात यह है ऋषियों द्वारा राजशक्ति की पूजा दुष्टों से लड़ने वाली शक्तियों के साथ हमारी पूरी-पूरी सहानुभूति होनी चाहिये । उनकी सहायता एवं प्रशंसा में हमें कंजूसी न करनी चाहिए । यह हो सकता है कि हमें किसी से, किसी कारणवश विरोध हो, कोई असन्तोष या द्वेष हो, पर जब राक्षसत्व के दमन का अवसर आवे तब तो उस विरोधी का भी पूरा-पूरा समर्थन और सहयोग करके असुरत्व को परास्त कराना चाहिये । सैद्धान्तिक या व्यक्तिगत विरोध को ऐसे अवसरों पर जरा भी ध्यान नहीं देना चाहिए । वीर पूजा की प्रथा प्राचीन है, इन्द्र आदि की भी पूजा उनके असुर विजय करने के कारण होती है । विघ्नों से, कंटकों से और असुरता के साथ जो लोग लड़ते हैं वे वीर हैं, वे हमारी प्रशंसा, प्रोत्साहन एवं सहयोग के अधिकारी हैं ।

३-विश्वामित्रः स रामस्तु श्रुत्वा जनकभाषितम् ।
वत्स राम धनुः पश्य इति राघवमब्रतीत् ।।

-बालकाण्ड ६७/१२

राम के साथ विश्वामित्र ने जनक की बातें सुनी और रामचन्द्र से कहा -वत्स राम ! धनुष को देखो ।

"इस कठिन काम को अनेक लोग पूरा नहीं कर सके इसलिए यह मुझसे भी पूरा न होगा" इस प्रकार के अपडर से अनेकों सुयोग्य व्यक्ति अपनी प्रतिभा को कुंठित कर लेते हैं और हीनता की ग्रन्थि से ग्रथित हो जाते हैं, ऐसा होना उचित नहीं । कई बार ऐसा देखा गया है कि जो काम बड़े लोगों के लिए कठिन था वह छोटों ने पूरा कर दिखाया । जनक का धनुष 'भूप सहस दस एकहि बारा । लगे उठावन टरहि न टारा ।।' के अनुसार बड़ा भारी कठिन कार्य बना हुआ था । विश्वामित्र जानते थे कि यह झिझक राम को भी आ सकती है और उससे डर जायें तो आधा काम विफल हो सकता है । इसलिए उन्होंने उत्साह प्रदान करते हुए कहा-वत्स राम ! इस धनुष को देखो ।

जो कठिनाइयाँ हमारे सामने आती हैं उनकी कल्पना बड़ी डरावनी होती है । ऐसा मालूम देता है कि यह विपत्ति न जाने हमारा क्या कर डालेगी,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

परन्तु जब मनुष्य हिम्मत बाँध कर उसका मुकावला करने खड़ा हो जाता है तो वे विघ्न भी सरल हो जाते हैं जैसे कि राम के लिए धनुष सरल हो गया था । उर्दू की कहावत है, "हिम्मते मरदां मददे खुदा" जो हिम्मत वाले मर्द होते हैं उनकी ईश्वर सहायता करता है । कठिनाइयों को देखकर हमें झिझकना, डरना या घबराना न चाहिए वरन् दृढ़तापूर्वक उनका हल करने के लिए अग्रसर होना चाहिए । यही इस श्लोक का तात्पर्य है ।

४-दतुष्टावास्यतदावंशं प्रविश्य स विशांपतेः ।
शतनीयं नरेन्द्रस्य तदासाद्य व्यतिष्ठत ।।

-अयोध्याकाण्ड १५/९

राजा के शयनागार तक वे (सुमन्त) चले गये । वहाँ उनके वंश की प्रशंसा की ।

प्रशंसा एक ऐसा उपायं है जिसके द्वारा उस स्थान तक आसानी से पहुँचा जा सकता है जहाँ पहुँचना साधारणतः कठिन होता है । राजा के शयनागार में हर किसी का प्रवेश नहीं होता, पर सुमन्त वहाँ भी पहुँच गये । उन्होंने उनके वंश की अहंभाव के विचार की प्रशंसा की ।

उस पोषण और काम सेवन संसार के यह दो प्रमुख विलास है । मनःक्षेत्र में सबसे प्रिय विलास प्रशंसा है । अपनी प्रशंसा सुन कर सब कोई मोहित हो जाते हैं । सर्प और मृग संगीत की ध्वनि पर मुग्ध हो जाते हैं, मनुष्य के लिए सबसे मधुर संगीत उसकी आत्म-प्रशंसा है ।

इस श्लोक में प्रशंसा के महत्व का वर्णन है । यह एक शस्त्र है जिसके उपयोग द्वारा बुरे और भले दोनों प्रकार के परिणाम निकल सकते हैं । खुशामदी, चालाक, धूर्त, ठग लोग अनुचित प्रशंसा करके दूसरों के गर्व को फुलाते हैं, अपना उल्लू सीधा करते हैं । अनुचित प्रशंसा से फूलने वाले की आदत बिगड़ती है । उसे ऐसा भ्रम होता है मानों मैं वैसा ही हूँ । अपनी त्रुटियाँ दिखाई नहीं पड़ती और अच्छाइयाँ अनुचित रूप से बढ़ी-चढ़ी दिखाई देती हैं, इससे उसका मस्तिष्क अज्ञान ग्रस्त एवं भ्रान्त हो जाता है । फलस्वरूप उसके कार्य भी बेढंगे होते हैं । राजाओं, ताल्लुकेदारों, अमीरों, अफसरों आदि में इस प्रकार के खुशामद से उत्पन्न होने वाले अनेक विकार पाये जाते हैं ।

परन्तु यदि प्रशंसा का सदुपयोग किया जाय उचित रीति से, किसी का उत्साह वर्धन किया जाय उसके वास्तविक गुणों को अच्छे रूप में सामने रख कर, उन्हें और अधिक बढ़ने की शुभ कामना की जाय तो इससे उसका उत्साह एवं आत्म-बल बढ़ता है, प्रशंसा की रक्षा के लिए वह बुराई से बचता है । सफ़ेद कपड़े वाला मनुष्य अपने को बहुत सँभाल कर बैठता उठता है, कपड़े मैले न हो जायँ इसका बहुत ध्यान रखता है, पर जो मैले कपड़े पहने है उसे इस प्रकार कोई संकोच नहीं होता । प्रशंसा स्वच्छ चादर है और निन्दा गंदा चिथड़ा । हमें अपने हर परिचित को सफेद कपड़े पहनाने चाहिए जिससे वह लोक-जीवन में सावधानी और सुरुचि सीखे ।

५-वनवासं हि संख्याय वासांम्याभरणानिच ।
मर्तारमनुगच्छन्त्यै सीतायै श्वसुरो ददौ ।।

-अयोध्याकाण्ड ४०/१४

बनवास के दिनों को गिनकर, पति के साथ जाने वाली सीता को श्वसुर ने वस्त्र आभूषण दिये ।

भविष्य में आने वाली कठिनाइयों को ध्यान में रखकर उनके लिए समुचित तैयारी करना यह इस श्लोक का रहस्य है । पूर्व कर्मो के फलस्वरूप आज हमें अच्छी परिस्थिति प्राप्त है, पर यदि अब कोई अच्छी तैयारी न की गई तो भविष्य अन्धकारमय है । बुद्धिमान मनुष्य भविष्य की चिन्ता करते हैं । आगामी जीवन सुख-शान्ति एवं आनन्द उल्लास के साथ बीते इसके लिए वे शुभ कर्म करके अधिकाधिक पुण्य संचय करते हैं । ऐसा ही हमें भी करना चाहिए ।

६-राजा सत्यं च धर्मश्च राजा कुलवतांकुलम् ।
राजा माता पिता चैव राजा हितकरो नृणाम् ।।

-अयोध्याकाण्ड ३७/६४

राजा सत्य है, धर्म है, कुलवानों का कुल है, माता-पिता है और मनुष्यों का हितकारी है ।

राजा द्वारा, प्रजा के हित के लिए सत्य के आधार पर चलने वाले राज्य को सुराज्य और इसके भिन्न प्रकार के राज्य को कुराज्य कहते हैं । इस श्लोक में सुराज्य की प्रशंसा की गई है, उसकी श्रेष्ठता बताकर सुराज्य द्वारा निर्धारित नियमों का

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पालन करने का प्रेत्साहन है । प्रत्येक सभ्य नागरिक का कर्त्तव्य यह है कि समाज हित के राज्य नियमों का ईश्वर की धर्म की आज्ञाओं के समान आदर करे और उनका पालन करें । राज्यभक्ति का तात्पर्य है देश-भक्ति, समाज-भक्ति । इस देश-भक्ति एवं समाज-भक्ति के लिये यह श्लोक प्रेरणा देता है ।

७- निरीक्ष्य स मुहूर्त्त तु ददर्श भरतो गुरुम् ।
उटजे राममासीनं मे जटामण्डल धारिणम् ।।

-अयोध्याकाण्ड ९९/२०

भरत ने उसी क्षण जटाधारी राम को उस कुटीर में बैठे देखा ।

ईश्वर का ऐश्वर्य, बड़े वैभवशाली भवनों, खजानों और भण्डारों में भी मौजूद है । वैभव वाला ईश्वर, प्रत्येक वैभववान पदार्थ में हमें झिलमिलाता हुआ दिखाई पड़ता है, परन्तु यदि ईश्वर के सतोगुणी स्वरूप का-ब्रह्म का-जटा जूटधारी त्याग मूर्ति राम का दर्शन करना हो तो वह कुटीर में ही मिलेगा ।

महात्मा गाँधी दरिद्र जनता को दरिद्र नारायण कहा करते थे । उन्हें ईश्वर की सर्वोत्तम झाँकी दरिद्रों में होती थी और दीनों के झोंपड़े उन्हें ईश्वर का सर्वश्रेष्ठ मन्दिर दृष्टिगोचर होते थे । कुटिया सादगी, अपरिग्रह, एवं त्यागवृत्ति का प्रतिनिधित्व करती है, जहाँ यह गुण है वहाँ जटाधारी राम, सत् शक्तियों से आच्छादित ब्रह्म के दर्शन हो सकते हैं । यह दर्शन उन्हें होंगे, जो भरत के समान सरल निर्मल एवं सरस अन्तःकरण वाले हैं । इस श्लोक में ईश्वर की श्रेष्ठ झाँकी किस प्रकार हो सकती है इस गुत्थी को सुलझाते हुए कुटिया, जटाधारी राम और भरत इन तीन तत्त्वों का उल्लेख किया है । विवेकवान् व्यक्ति अपने दृष्टिकोण को भरत सा; अपने अन्तःकरण को सरलतामयी कुटिया सा बना ले तब उसे जटाधारी राम के दर्शन होंगे । मुकुटधारी राम तो अन्यत्र भी देखे जा सकते हैं, उनकी झाँकी तो अयोध्या के महलों में भी होती थी, पर जटाधारी राम का घर तो कुटिया ही है ।

८-यदि बुद्धिः कृताद्रष्टुमगस्त्यं तं महामुनिम् ।
अद्यैव गमने बुद्धि रोचयस्व महामते ।।

-आरण्यकांड ११/४३

हे महामति ! यदि तुमने अगस्त्य के दर्शन की इच्छा की है तो आज ही जाने की सोचो ।

अगस्त्य कहते हैं कल्याण को । जो महामति, कल्याण के दर्शन करना चाहता है, आत्म साक्षात्कार करना चाहता है, ईश्वर को प्राप्त करना चाहता है अर्थात् किसी भी प्रकार की भौतिक, मानसिक सफलता चाहता है तो उसे चाहिये कि उद्देश्य पूर्ति के लिए, आज से ही प्रयत्न प्रारम्भ करे । कल के लिये टालते रहने से कोई बात पूरी नहीं हो सकती, क्योंकि कल कभी आता नहीं ।

वर्तमान सबसे मूल्यवान् समय है । जो बीत चुका वह वापस नहीं आ सकता, उसके लिए चिन्ता या शोक करने से कुछ लाभ नहीं । जीवन धन की बहुमूल्य पूँजी वे घड़ियाँ हैं जिन्हें वर्तमान कहते हैं । समय का सदुपयोग यही है कि वर्तमान की एक-एक घड़ी का उत्तम से उत्तम उपयोग किया जाय । जो करना अभीष्ट है उसके लिए विलम्ब न लगाकर, समय को बर्बाद न करके वर्तमान में ही उसके लिए प्रयत्न आरम्भ कर देना चाहिए, यही इस श्लोक का आशय है ।

९-भरतस्यार्यपुत्रस्य श्वश्रुणां मम च प्रभो ।
मृगः रूपमिदं दिव्यं विस्मयं जनयष्यति ।

-आरण्यकांड ४३/१८

भरत को, आपको और मेरी सासों को यह दिव्य मृगरूपी खिलौना विस्मित करेगा, यदि यह जीवित न पकड़ा जा सके तो भी इसका मृग चर्म बड़ा ही सुन्दर होगा ।

सब लोगों को प्रसन्नता देने वाले सुन्दर पदार्थ यदि पूर्ण मात्रा में प्राप्त न हो सकें तो उनको कम मात्रा में ही प्राप्त करने का प्रयत्न करना चाहिए । सद्गुण अपने में जितनी अधिक मात्रा में हों उतने अच्छे, पूर्ण हों तो सबसे अच्छे, पर यदि पूर्णता प्राप्त न हो सके तो भी जितनी कुछ न्यूनाधिक मात्रा में उनका प्राप्त होना सम्भव हो उसके लिए भी प्रयत्न करना चाहिए । यदि पूर्ण सत्यवादी, पूर्ण निष्पाप, पूर्ण सदाचारी न बना जा सके तो हिम्मत हार बैठने की अपेक्षा यही अच्छा है कि जितनी भी थोड़ी बहुत सफलता प्राप्त की जा सके, उसके लिए प्रयत्न बराबर जारी रखा जाय ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

शिल्प, संगीत, कला-कौशल, व्यायाम, भ्रमण वक्तृता अन्य भाषाओं का ज्ञान आदि जितने कुछ अंशों में प्राप्त हो सकें, संसार के जितने अधिक विषयों को जितनी अधिक जानकारी प्राप्त हो सके उसके लिए प्रयत्नशील रहना चाहिए । "पूरा या कुछ नहीं " की दुराग्रह भरी नीति के स्थान पर 'जितना मिले उसे लो और अधिक के लिए कोशिश करो की नीति अपनाने की शिक्षा इस श्लोक में है । 'सर्वनाश समुत्पन्ने अर्धंत्यजति पंडितः' का भावार्थ यही है ।

१०-गच्छ शीघ्रमितो वीर सुग्रीवं च महाबलम् ।
वयस्यं तं कुरु क्षिप्रमितो गत्वाऽद्य राघव ।।

-आरण्यकांड ७२/१७

हे राघव ! तुम यहाँ से शीघ्र महाबली सुग्रीव के पास जाओ और आज ही उसे अपना मित्र बनाओ ।

बलवान् को अपना मित्र बनाने में देर न करने की शिक्षा यहाँ दी गई है । लोक व्यवहार के लिए बल का, बलवान् का सहारा एक बड़ी चीज है, उससे बड़ी-बड़ी कठिनाइयों का हल होता है और उन्नति के अनेक द्वार खुल जाते हैं । संगीत की महिमा प्रसिद्ध है, जो अपने से बलवान् है उसकी समीपता से (मैत्री से) अपनी बल-वृद्धि होना स्वाभाविक है । आध्यात्मिक क्षेत्र में भी यही बात है, जीवात्मा अपने से बलवान् दैवी शक्तियों से मैत्री स्थापित करके दैवी लाभों को प्राप्त करता है । जिसे जिस क्षेत्र में लाभान्वित होना हो उसे उसी क्षेत्र में अपने से बलवान् शक्तियों के साथ शीघ्र ही मैत्री स्थापित करनी चाहिये ।

११-देश कालौ भजस्वाद्य क्षयमाणः प्रियाप्रिये ।
सुख दुःख सहःकाले सुग्रीव वशगो भव ।।

-किष्किन्धाकाण्ड २२/२०

देश काल को समझो । प्रिय-अप्रिय को तथा सुख-दुख को सह कर सुग्रीव के अधीन रहो ।

मनुष्य जैसी स्थिति चाहता है, वैसी कामनाएँ और इच्छाएँ करता है, वैसी उसे प्राप्त हो जावें यह आवश्यक नहीं ।

देश काल की विचित्रता के कारण, प्रारब्ध के कारण कभी-कभी मनुष्य को ऐसी परिस्थितियों में रहना पड़ता है जो असुविधाजनक एवं कष्टकारक होती है । ऐसी स्थिति को धैर्यपूर्वक सहन करते हुए, उससे मुक्त होने का प्रयत्न करना चाहिए । प्रिय अप्रिय में, सुख-दुःख में, मनुष्य को विलचित न होना चाहिए वरन् मन को एकरस कर अपनी मानसिक स्वस्थता का परिचय देना चाहिये ।

१२-वन्दितव्यास्ततः सिद्धास्तपसां वीतकल्मषाः ।
प्रष्टव्याचापि सीतायाः प्रवृत्तिर्विनयान्वितैः ।।

-किष्किन्धाकाण्ड ४३/३१

निष्पाप सिद्ध तपस्वियों को प्रणाम करना और उनसे विनयपूर्वक सीता का पता पूछना ।

आत्मज्ञान की शिक्षा हर किसी से ग्रहण नहीं करनी चाहिए । गुरु चाहे जिसे नहीं बनाना चाहिए वरन् पहले यह देख लेना चाहिये कि आत्म ज्ञान का शिक्षक तीन गुणों से सम्पन्न हैं या नहीं । (१) निष्पाप, (२) अनुभवी एवं सफलता प्राप्त, (३) तेजस्वी । जिसमें यह तीन गुण हों वे आध्यात्मिक शिक्षा देने के अधिकारी हो सकते हैं । पापात्मा, अनुभवहीन तथा भोग परायण व्यक्ति चाहे कितने ही चतुर वक्ता एवं पण्डित क्यों न हों, उनके द्वारा शिक्षा ग्रहण करने में पथ भ्रष्ट किए जाने का, ठगे जाने का खतरा रहता है ।

विश्वसनीय पथ-प्रदर्शक प्राप्त होने पर उन्हें प्रणाम करके विनय पूर्वक प्रश्न करना चाहिये । इस प्रकार उचित जिज्ञासा के साथ शिष्टाचार और शिष्य भाव से पूछे जाने पर अधिकारी गुरु लोग उचित पथ-प्रदर्शन कराते हैं । इस श्लोक में आत्म ज्ञान के गुरु के लक्षण और शिष्य की पूछने की शैली का आधार बताया गया है ।

१३-स निर्जित्य पुरीं लंका श्रेष्ठां तां काम रूपिणीम् ।
विक्रमेण महातेजो हनूमान कपि सत्तमः ।।

-सुन्दरकाण्ड ४१

कपि श्रेष्ठ महातेजस्वी हनुमान ने पराक्रम से कामरूपिनी लङ्का को जीता ।

कामवासना रूपी लङ्का देखने में बड़ी लुभावनी स्वर्ण कान्त, नयनाभिराम मालूम देती है । उसे जीतना कठिन प्रतीत होता है । इस कामवासना रूपी स्वर्ण लङ्का में असुर कुल आनन्दपूर्वक निवास करता है । सब असुर, आन्तरिक शत्रु , तब तक सुरक्षित हैं जब तक उनका कामवासना रूपी लङ्का

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

का दुर्ग सुरक्षित है । इस रहस्य को समझते हुए हनुमान जी ने इस असुर पुरी को जीतना आवश्यक समझा और अपने पराक्रम से, ब्रह्मचर्य से, शील, सदाचार एवं संयम से उस काम वासना रूपी लङ्का को जीता । असुरता को परास्त करना है, तो काम वासना को जीतना आवश्यक है । यह विजय ब्रह्मचर्य द्वारा ही सम्भव है । हनुमान जी की भाँति हम सबको वासना रूपी लङ्का जीतने का प्रयत्न करना चाहिये ।

१४-धन्या देवाः सगन्धर्वाः सिद्धाश्च महर्षयः ।
मम पश्यन्ति ये वीरं रामं राजीव लोचनम् ।।

-सुन्दरकाण्ड २६/३७

देवता, गन्धर्व, सिद्ध तथा ऋषिगण धन्य हैं जो मेरे राजीव-लोचन वीर राम को देखते हैं ।

वे लोग धन्य हैं जो परमात्मा को देखते हैं, परमात्मा सबके निकट है, सबके भीतर है, चारों ओर हैं, उससे एक इञ्च भूमि भी खाली नहीं है, फिर भी मायाग्रस्त लोग उसे देख नहीं पाते । समझते हैं न जाने परमात्मा मुझसे कितनी दूर है, न जाने उसे प्राप्त करना, उसके दर्शन करना कितना कठिन है । वे अपनी अन्धी आँखों से ईश्वर को नहीं देखते और बुराइयों में डूबे रहते हैं ।

जिनके दिव्य नेत्र खुल गये हैं, उनको अपने भीतर बाहर चारों ओर जर्रे-जर्रे में परमात्मा के दर्शन होते रहते हैं । इस दिव्य झाँकी से उनका अन्तःकरण तृप्त हो जाता है और सात्विक गुण कर्म स्वभावों की कस्तूरी जैसी महक उनके भीतर उठती रहती है । ऐसे दिव्यदर्शी व्यक्तियों को देव, गन्धर्व, सिद्ध, ऋषि की पदवी देते हुए इस श्लोक में उनकी सराहना की है और उन्हें धन्य कहा है ।

१५-मंगलाभिमुखी तस्य तदासीन्महाकपेः ।
उपतस्थे विशालाक्षी प्रयता हव्य वाहनम् ।।

-सुन्दरकाण्ड ५३/२५

वे उस समय कपि का मङ्गल करना चाहती थीं, इसलिये विशालाक्षी सीता ने अग्नि की स्तुति की ।

मङ्गल कामना के लिए अग्नि-पूजा की वैदिक रीति प्रसिद्ध है । अग्निहोत्र, होम, यज्ञ के साथ जो शुभ कर्म किये जाते हैं वे सदा सत्परिणाम उपस्थित करते हैं । यज्ञों की महिमा असाधारण है । उनके द्वारा रोगमुक्त, वर्षा, पुत्र प्राप्ति तथा विविध कामनाओं की पूर्ति से लेकर आत्म-शुद्धि तक होती है दूसरों के मङ्गल अमङ्गल का विधान भी अग्नि-पूजा द्वारा होना शक्य है ।

अग्नि जीवनी शक्ति को भी कहते हैं । जीवनी शक्ति की वृद्धि से मङ्गल का होना तो प्रत्यक्ष ही है । जिसमें पर्याप्त मात्रा में उष्णता है, तेजस्विता है उसका हर प्रकार मङ्गल ही होगा । क्रिया शक्ति की मात्रा में वृद्धि होने से उनके कार्य सहज ही सफल और सुलभ हो जाते हैं ।

१६-हितंमहार्थं मृदु हेतु संहितं ज्यतीत कालायति संप्रतिक्षण् । निशम्य यद्वाक्यमुपस्थितज्वरः प्रसंगवानुत्तर मे तवव्रवीत् ।।

-लङ्काकाण्ड १०/२७

तीनों कालों में हितकारी, सप्रमाण, कोमल और अर्थयुक्त विभीषण के वचन सुनकर रावण को बड़ा क्रोध आया और उसने कहा-

दुष्ट व्यक्तियों को इस बात से प्रयोजन नहीं रहता कि क्या उचित है क्या अनुचित ? क्या कल्याणकर है क्या अकल्याणकर ? उन्हें तो अपना अहङ्कार, अपना स्वार्थ सर्वोपरि प्रतीत होता है । उनकी जो अपनी सनक होती है उसके अतिरिक्त और किसी बात को वे सुनना नहीं चाहते । रावण पर विभीषण के हितकारी, सप्रमाण, कोमल और अर्थयुक्त वचनों का भी कुछ अच्छा प्रभाव नहीं हुआ वरन् उल्टा कुपित होकर प्रत्युत्तर देने लगा ।

"अन्धे के आगे रोवे अपने नयना खोवे" की लोकोक्ति को इस श्लोक में नीति वचन के रूप में समझाया है । जो लोग मदोन्मत्त हो रहे हैं वे दूसरों की उचित बात को भी नहीं समझते । उनको समझाने का रास्ता दूसरा ही हो सकता है ।

१७-धर्मात्मा राक्षस श्रेष्ठः संप्राप्तोऽयं विभीषणः ।
लंकैश्वर्यमिदं श्रीमान्शु वं प्राप्तोत्यकंटकम् ।।

-लङ्काकाण्ड ४१/६८

राक्षस-श्रेष्ठ धर्मात्मा विभीषण आ रहे हैं, वे ही लङ्का के शत्रुहीन राज्य का उपयोग करेंगे ।

चाहे शासक परिवार का हो, पाठशाला का हो, राज्य का हो, आमतौर से उसके विरोधी बहुत

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

रहते हैं । परन्तु वे लोग इसके अपवाद रहते हैं । जो धर्मात्मा हैं, जिनका दृष्टिकोण निष्पक्ष है, जो न्याय को, सहृदयता को, उदारता को सर्वोपरि स्थान देते हैं, ऐसे मनुष्य उत्तरदायित्व, नेतृत्व, शासन और न्याय की बागडोर अपने हाथ में रखते हुए भी किसी के शत्रु नहीं बनते । विभीषण की भाँति न्यायपूर्ण दृष्टि रखकर हम सर्वप्रिय रह सकते हैं और उनके हृदयों पर शासन कर सकते हैं ।

१८-यो बज्रपातशाति संनिपातान्न चुक्षुभं नापि चचाल राजा । स रामबाणभिहितो भृशातश्च चाल चापं च मुमोच वीरः ।।

-लङ्काकाण्ड ५१/१३७

जो रावण वज्रपात तथा अग्नि के प्रहार से विचलित नहीं हुआ था, वह राम के बाणों से आहत होकर बहुत दुखी हुआ और उसने बाण चलाये ।

जो लोग बड़े साहसी, लड़ाकू कौर योद्धा होते हैं, सांसारिक कठिनाइयों की कुछ परवाह नहीं करते । कठिन प्रहार सहन करके भी अपना पराक्रम प्रदर्शित करते हैं । ऐसे वीर प्रकृति के लोगों को भी राम के बाणों से अन्तरात्मा के शाप से व्यथित होना पड़ता है । कुचली हुई आत्मा जब क्रन्दन करती है, जीवन धन को बुरी तरह बर्बाद करने के लिए कुबुद्धि को शाप देती है तो अन्तस्तल में हाहाकार मच जाता है । उस आत्म ताड़ना से बड़े-बड़े पाषाण हृदय भी विचलित हो जाते हैं ।

अपने बाहुबल से लोग कमजोरों को सताते हैं और उनको लूट कर, परास्त कर अपनी विजय श्री पर अभिमान करते हैं, छोटे मोटे पराक्रमों पर उन्हें बड़ा अभिमान रहता है, पर पाप के दंड स्वरूप कोई दैवी प्रहार उन पर होता है तो उनके होश गुम हो जाते हैं । अहङ्कारियों को याद रखना चाहिए कि उनसे भी बलवान् कोई सत्ता मौजूद है और उसके एक ही प्रहार में सारी अकड़ ढीली हो सकती है । कमजोर को सताया जा सकता है पर कमजोर की हाय का मुकाबला करना कठिन है, वह बड़े-बड़ों की ऐंठ को सीधा कर देती है । इसलिए हमें ईश्वरीय कोप का और दैवी दंड का ध्यान रखते हुए अपने आचरण को ठीक रखना चाहिए ।

१९-यस्य विक्रममासाद्य राक्षसा निधनं गताः ।
तं मन्ये राघवं वीरं नारायणमनायनमू ।।

-लङ्काकाण्ड ७२/६०

जिसके पराक्रम से राक्षसों की मृत्यु हुई उस निष्कल्मष वीर राम को धन्य है ।

उस वीर पुरुष का पराक्रम धन्य है जो स्वयं निष्पाप रहता है और कषाय कल्मषों को मार भगाता है । स्वार्थ के लिए बहुत लोग पराक्रम दिखाते हैं, पराक्रम करने के लाभ से अहंकार ग्रस्त हो जाते हैं, ऐसा तो साधारण व्यक्तियों में भी देखा जाता है, पर धन्य वे हैं, जो अपने पराक्रम का उपयोग केवल असुरत्व विनाश के लिए करते हैं और उस पराक्रम का तनिक भी दुरुपयोग न करके अपने को जरा भी पाप पंक में गिरने नहीं देते । पराक्रम और वीरता की यही श्रेष्ठता है ।

२०-नते ददु शिरे रामं दहन्तमपि वाह्निनीम् ।
मोहिताः परमास्त्रेण गन्धर्वेण महात्मनः ।।

-लंकाकाण्ड ९३/२५

महात्मा राम ने दिव्य गन्धर्वास्त्र के द्वारा राक्षसों को मोहित कर दिया था इसी से वे सेना को नष्ट करने वाले राम को नहीं देख सकते थे ।

अज्ञानियों की बुद्धि ऐसी भ्रम विमोहित होती है कि उन्हें यह सूझ नहीं पड़ता कि उनकी सेना का संहार कौन कर रहा है । उन्हें कष्ट कौन दे रहा है ? उन्हें इसका कारण ही ज्ञात नहीं । समझते हैं कि हमारे शत्रु हमें हानि पहुँचा रहे हैं, पर असल बात यह है कि अपनी असत् प्रणाली ही फलित होकर विपत्ति का कारण बन जाती है । ईश्वरीय प्रक्रिया के द्वारा वे पाप ही कष्ट बन जाते हैं । अज्ञानी लोग कष्टों का कारण सांसारिक परिस्थितियों को समझते हैं, पर वस्तुतः स्थिति यह है कि उनका पाप ही उनका सबसे बड़ा शत्रु होता है । अदृश्य ईश्वर उन पापों को ही गन्धर्व वाण की तरह उन पर फेंकता है और उससे वे आहत होते हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

२१-प्रणम्य दैवतेभ्यश्च ब्राह्मणोभ्यश्च मैथिली ।
बद्धांजलि पुटाचेद मुवाचेग्नि समीपतः ।।

-लंकाकाण्ड ११६/२४

देवता और ब्राह्मणों को प्रणाम करके सीता ने हाथ जोड़ कर अग्नि के समीप जाकर कहा ।

सच्ची आत्मायें किसी बात को प्रकट करने से पूर्व और ब्राह्मणों का श्रद्धा पूर्वक ध्यान रखती हैं, अर्थात् वे यह सोचती हैं कि इस कथन के सम्बन्ध में श्रेष्ठ लोग क्या कहेंगे ? चाहे दुनियाँ भर के मूर्ख लोग किसी बात को पसन्द करें पर यदि थोड़े से देव और ब्राह्मण अर्थात् श्रेष्ठ पुरुष इसे त्याज्य ठहराते हैं तो वह कार्य सच्ची आत्माओं के लिए त्याज्य ही होगा ।

दूसरे सतोगुणी अन्तःकरण वाले व्यक्ति चाहे वैभव में कितने ही बड़े क्यों न हो जायँ, ब्रह्म-कर्मा, उच्च चरित्र वाले व्यक्तियों के लिए वे सदा ही झुकते हैं ।

सीता ने अग्नि के समीप जाकर कहा हमें जो कुछ कहना हो वह अन्तःकरण में निवास करने वाली ज्योति के समक्ष उपस्थित होकर कहना चाहिए । छल, कपट, असत्य की वाणी उन्हीं के मुख से निकलती है जो ईश्वर से दूर रहते हैं । अग्नि के समीप जाकर, अन्तःज्योति के समक्ष उपस्थित होकर यदि हम अपना मुख खोलें, वाणी का उच्चारण करें, तो सदा सत्य ही मुख से निकलेगा ।

२२-चालना पर्वतस्यैव गणा देवस्य कम्पिताः ।
चचाल पार्वती चापि तदाश्लिष्ठा महेश्वरम् ।।

-उत्तरकाण्ड १६/२६

पर्वत के काँपने से शिवगण भी काँप गये और पार्वती भी काँप कर महादेव से लिपट गईं ।

आधार के विचलित हो जाने से उसके ऊपर स्थिति अन्य सब वस्तुएँ भी विचलित हो जाती हैं चाहे वे कितनी ही बड़ी क्यों न हों, भूकम्प आता है तो उस पर रक्खी हुई सब वस्तुयें डाँवा डोल हो जाती हैं ।

मनुष्य अपने दृष्टिकोण को जैसा निर्धारित कर लेता है उसी के अनुसार उसे संसार की वस्तुएँ, क्रियाएँ, घटनाएँ तथा परिस्थितियाँ भली या बुरी लगती हैं । पर यदि पूर्व दृष्टिकोण बदल जाय और उसके स्थान पर नये प्रकार से सोचने की प्रणाली प्राप्त हो जाय तो पहली रुचि बदल जाने के कारण सब कुछ बदलना मालूम देता है । आज कोई व्यक्ति एक दृष्टि को अपनाने के कारण घोर लोभी एवं कंजूस है, यदि उसे कल ही कोई नई दृष्टि मिल जाय तो वह उच्च कोटि का त्यागी हो सकता है । इसी प्रकार उलटा परिवर्तन हो जाय तो त्यागी से लोभी भी बना जा सकता है । तात्पर्य यह है कि जीवन परिवर्तन का मुख्य कारण वह आधार है जिस पर खड़े होकर मनुष्य सोचता विचारता है और अपने स्वार्थ का निर्णय करता है ।

संसार में जितने भी व्यक्तिगत या सामूहिक परिवर्तन होते हैं उनका मूल कारण दृष्टिकोण का, आधार का परिवर्तन है । हम अपने को, अपने समाज को, जिस दिशा में परिवर्तित करना चाहते हैं वैसा ही उसकी दृष्टि का, उसकी विचार-प्रणाली का, आधारशिला का, परिवर्तन करना अनिवार्य है । पर्वत काँपने से शिव-पार्वती काँपे थे , अतः दृष्टि के काँपने से वाह्य जीवन का सारा महल काँप जाता है ।

२३-दाराः पुत्राः पुरं राष्ट्र भोगाच्छादन भोजनम् ।
सब मेवांविभक्तं नौ भविष्यति हरीश्वर ।।

-उत्तरकांड ३४/४१

वानर राज ! स्त्री , पुत्र, नगर, राज्य, भोग, वस्त्र, भोजन यह हमारी अविभक्त संपत्ति होगी ।

सम्पत्ति को, राज को, समाज को, खाद्य सामग्री को अविभक्त बताकर इस श्लोक में वर्तमान समाजवाद के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया है । ईश्वर प्रदत्त जितनी भी सामग्री इस संसार में हैं उस पर मानव प्राणियों का समान रूप से अधिकार है । आवश्यकतानुकूल सभी को इन वस्तुओं के उपयोग का अधिकार होना चाहिए । इन्हीं सिद्धान्तों पर समाजवाद की सारी आधारशिला खड़ी की गई है । सम्पत्ति को बाँटकर अपने व्यक्तिगत कब्जे में कर लेने का इस श्लोक में विरोध है और समाज तथा व्यक्ति दोनों के सम्मिलित होने का समर्थन है । यह श्लोक समाजवाद के सिद्धान्त का सूत्र रूप है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

२४-यामेव रात्रिं शत्रुघ्नः पर्णशालां समाविशत् ।
तामेव रात्रिं सीतापि प्रसूता दारकद्वयम् ।।
-उत्तरकाण्ड ६६/१

जिस रात्रि शत्रुघ्न वाल्मीकि आश्रम की पर्णशाला में गये उसी रात्रि सीता ने दो पुत्रों को उत्पन्न किया ।

जिस दिन शत्रु का नाश करने वाला प्रेम, लोभ के महलों को छोड़कर ऋषि भावना की प्रतीक त्याग रूपी पर्णशाला में पहुँचता है उसी रात्रि सीता रूपी आत्मा दो पुत्र उत्पन्न करती है ।

१-लव अर्थात् ज्ञान (२) कुश अर्थात् कर्म ।

निस्वार्थ निर्मल प्रेम जब संसार भर में शत्रुता का भाव हटा देता है, सबको अपना समझकर सबके लिये सद्भाव धारण कर लेता है, तो उसका स्वाभाविक फलितार्थ यह होता है कि यह व्यक्ति भोग और संग्रह की वासनाएँ त्याग कर संयम और त्याग की नीति अपना लेता है । यही शत्रुघ्न का वाल्मीकि की पर्णशाला में पहुँचना है ।

ऐसी स्थिति प्राप्त होने पर आत्मा में सद्ज्ञान का प्रकाश होता है और वह सत्कर्म प्रवृत्त रहती है । यही सीता का दो पुत्र प्रसव करना है । यही आत्मोन्नति की दो परम सिद्धावस्था हैं ।

गायत्री रामायण के पिछले २४ श्लोकों में धर्म, नीति, समाज, स्वास्थ्य, अध्यात्म आदि के रहस्यों का उद्घाटन किया गया है, रास्ता दिखाया गया है, इस अन्तिम श्लोक में यह बता दिया गया है कि उन पर आचरण करने से अन्तिम स्थिति में क्या परिणाम उपस्थित होता है । अन्त में सीता के दो पुत्र उत्पन्न होते हैं, आत्मा की गोदी सद्ज्ञान और सत्कर्म रूपी दो पुत्रों से भर जाती है । इन पुत्रों को पाकर सीता सब कष्टों को भूल गई थी । आत्मा भी तपश्चर्या के सारे कार्य क्लेशों का विस्मरण करके इन दो दिव्य पुत्रों के आनन्द से आच्छादित हो जाती है, फिर उसके आनन्द का ठिकाना नहीं रहता । सद्ज्ञान और सत्कर्म जिसे प्राप्त होते हैं, उन दोनों हाथों लड्डू हैं । उसके आनन्द की सीमा कौन निर्धारित कर सकता है यह परमानन्द ही गायत्री की सिद्धि है ।

इन २४ श्लोकों में महर्षि वाल्मीकि ने अपने अनुभव और ज्ञान का निचोड़ भर दिया है । उपर्युक्त पंक्तियों में उस रहस्य की ओर अँगुली निर्देश मात्र हुआ है । विज्ञ विचारक इन २४ सूत्रों में छिपे रहस्यों पर स्वतन्त्र चिन्तन करेंगे तो उन्हें बड़े-बड़े अद्भुत ज्ञान रत्न इनमें छिपे हुए मिलेंगे ।

गायत्री हृदयम्

इस 'गायत्री हृदयम्' को कई ग्रन्थों में गायत्री उपनिषद् भी बताया गया है । उपनिषदों में ब्रह्म ज्ञान की-तत्व ज्ञान की-चर्चा होती है । आत्म-विवेचना आरै आत्म-तत्व की प्राप्ति का उसमें विवेचन किया जाता है । इसमें भी वही सब विषय है इसलिए इसको उपनिषद् ठीक ही कहा गया है ।

परन्तु गोपथ ब्राह्मण की कुछ काण्डिकाओं को लेकर भी एक गायत्री उपनिषद् प्रचलित है । इस प्रकार एक ही नाम की दो पुस्तकें हो जाने से भ्रम पड़ने की बहुत सम्भावना थी । इस असुविधा को ध्यान में रखते हुए इस उपनिषद् को कोई प्राचीन ग्रन्थकारों ने 'गायत्री हृदयम्'' नाम दिया है ।

हमने भी इनका अनुसरण किया है । इसे हम 'गायत्री हृदयं' और गोपथ ब्राह्मण में वर्णित काण्डिकाओं का 'गायत्री उपनिषद्' नाम से उल्लेख करेंगे । फिर भी यह 'गायत्री हृदयम्' उपनिषद् ही है इसमें बड़ी महत्वपूर्ण तत्व चर्चा की गई है ।

ॐ नमस्कृत्य भगवान् याज्ञवल्क्यः स्वयंभुवं परिपृच्छति । त्वं ब्रूहि ब्रह्मन् गायत्र्युत्पत्तिं श्रोतु मिच्छामि । ब्रह्म ज्ञानोत्पत्तिं प्रकृति परिपृच्छामि ।। १ ।।

याज्ञवल्क्यजी ब्रह्माजी से पूछते हैं कि गायत्री की उत्पत्ति कैसे हुई यह सुनाइए । यह सुनने की इच्छा उन्हें इसलिए हुई कि इस उत्पत्ति विज्ञान को जान लेने से ब्रह्म-ज्ञान की भी उत्पत्ति होती है । इसका स्पष्ट तात्पर्य यह हुआ कि गायत्री की उत्पत्ति का जो कारण है वही कराण ब्रह्म-ज्ञान की उत्पत्ति का है । एक ही वस्तु के यह दो नाम हैं । इन दोनों में से एक को जान लेने से दूसरी की जानकारी स्वयमेव हो जाती है ।

श्री भगवानुवाचः

प्रणवेन व्याहृतिभिः प्रवर्तते तमस्तु परं ज्योतिः ।
कः पुरुषः ? स्वयम्भूर्विष्णुरित । सोऽयः सृजति । अथ

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तास्वक्ष्वडगुल्या मन्थमते । मध्यमानात् फेनो भवति । फेनाद्बुद्बुदो भवति । बुद बुदादण्डं भवति । अण्डाद् वायुर्भवति । वायोरग्निर्भवति । अग्ने रोङ्कारो भवति । ओंकाराद् व्याहृतिर्भवति । व्याहृत्या गायत्री भवति । गायत्र्याः सावित्री भवति । सावित्र्या सरस्वती भवति । सरस्वत्याः वेदाः भवन्ति । तस्माल्लोकाः प्रवर्त्तन्ते । चत्वारो वेदाः सोपनिषद् सतिहासाः । सर्वेते गायत्र्याः प्रवर्त्तन्ते । यथाग्निर्देवानां ब्राह्मणो मनुष्याणां मेरुः शिखरिणां, गंगा नदीनां, वसन्तो ऋतूणां, ब्रह्मा प्रजा पतीनां, एमवमसौ मुख्या । गायत्र्या गायत्री छन्दो भवति ॥ २ ॥

भगवान् बताते हैं कि ॐ कार और भूर्भुवः स्वः के साथ उस परम ज्योति का सम्बन्ध है, जो प्रकृति के सत् और रज गुणों का स्पर्श तो करती है, परन्तु तमोगुण से सर्वथा दूर है । प्रथम सतोगुण है, उसकी उपासना करने वालों में सतोगुणी प्रवृत्तियाँ बढ़ती हैं, साथ ही रजोगुणी वैभव भी मिलते हैं । जिसके हृदय में आत्म-ज्ञान, संयम, आदर्श, धर्म, सकर्म सेवा, उदारता, प्रेम एवं आत्मीयता का सात्विक भाव प्रस्तुत होते हैं उसके वाह्य जीवन में यश, ऐश्वर्य, सुख, वैभव, प्रतिष्ठा स्वस्थता आदि राजसिक समृद्धियों का होना स्वाभाविक है । प्रणव और व्याहृतियों का जोड़ा ऐसा ही है जैसा आत्म-ज्ञान और सुख-शान्ति का जोड़ा । जहाँ यह दोनों बातें हैं, वहाँ दुःख, दारिद्र, क्लेश, असन्तोष, दीनता, हीनता, क्रूरता, पाप, पतन का तम नहीं ठहर सकता । जहाँ प्रकाश की परम ज्योति मौजूद है वहाँ बेचारा तम-अन्धकार अपना किस प्रकार अस्तित्त्व रख सकेगा ।

जिस ज्योतिर्मय पुरुष का-अखण्ड-ज्योति का ऊपर वर्णन है, वह कौन है ? वह अजन्मा परमात्मा है । परमात्मा प्रकाश स्वरूप है, जहाँ परमात्मा का निवास होगा वहाँ अज्ञान का, पाप का अन्धकार रह नहीं सकता । परमात्मा के भक्त का अन्तःकरण सदा ज्ञान-ज्योति से प्रकाशवान् रहता है ।

सृष्टि का निर्माण किस प्रकार हुआ ? अब इस प्रश्न पर विचार किया जाता है । उस ज्योति पुरुष परमात्मा ने सबसे प्रथम जल की रचना की । उस जल का उङ्गलियों से मन्थन किया, जिससे फेन उत्पन्न हुआ, फेन से बबूले हुए, बबूलों से अण्ड अर्थात् पार्थिव परमाणु बने, परमाणुओं से वायु हुई, वायु के चलने से परमाणुओं में संघर्षण हुआ जिसकी गर्मी से अग्नि पैदा हुई । अग्नि से ओंकार अर्थात् शब्द उत्पन्न हुआ । शब्द को आकाश भी कह सकते हैं । इस प्रकार ईश्वर की इच्छा से एक-एक करके पाँचों तत्त्व बने । जिस प्रकार स्थूल सृष्टि के पाँच तत्त्व हुए उसी प्रकार सूक्ष्म चैतन्य के भी पाँच कोष बने ।

जल कहते हैं रस को । रस का गुण है स्वाद, अनुभूति । सबसे पहले प्राणी का वह भाग बढ़ा, जिससे वह रसास्वादन करता है, जिससे अनुभूति होती है, रस आता है । यदि विविध प्रकार की स्थूल और सूक्ष्म प्रकार के स्वादों को अनुभव करने की शक्ति न होती तो उसकी चैतन्यता का विकास होना असम्भव था । सबसे प्रथम प्राणी-जल परिधान-इस आवरण का बनाया गया, इसे ही आनन्दमय कोष कहते हैं ।

इसका मन्थन किया गया । मन्थन से फेन उत्पन्न हुआ, फेन से बुदबुदा पैदा हुए और बुदबुदों से पार्थिव परमाणु बने अर्थात् इसकी अनुमति से अपनी अभीष्ट वस्तु की खोज की, मन्थन हुआ, प्राप्त पदार्थ की इच्छा हुई यह फेन कहलाया । इच्छा ने पदार्थों की कल्पना की जिन्हें बुदबुदा कहा गया । इस खोज, इच्छा और कल्पना के साथ जिस पार्थिव आवरण की रचना हुई उसे चैतन्य सृष्टि में विज्ञानमय कोष कहा जाता है ।

अण्ड से -परमाणु से वायु हुई । वायु का अर्थ है-गति । विज्ञानमय कोष की सूक्ष्मता को अधिक स्थूल और सफल बनाने के लिए गति की आवश्यकता होती है, यह गति-मन है । परमाणु से वायु बनी । विज्ञानमय कोष से मनोमय कोष बना ।

वायु के संघर्ष से अग्नि उत्पन्न हुई, मन की घुड़-दौड़ मची । सूक्ष्म को स्थूल में लाने के लिए अप्रत्यक्ष को प्रत्यक्ष में अनुभव करने के लिए ऐसी साधन सामग्रियों की, इन्द्रियों की आवश्यकता हुई जिनके द्वारा प्रकृति के स्थूल परमाणुओं के साथ अपना सम्बन्ध स्थापित किया जा सके । इस आवश्यकता ने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आविष्कार उत्पन्न कर दिया । एक उष्णता गुण वाला विकासोन्मुखी क्रियाशील शरीर पैदा हुआ जिसे सूक्ष्म शरीर या प्राणमय कोष कहते हैं । मन, बुद्धि, चित्त, अहङ्कार के साथ-साथ दसों इन्द्रियाँ इस अग्नि गुण वाले प्राणमय कोष में विनिर्मित हुईं ।

अग्नि से ॐकार 'शब्द' आकाश हुआ । यह ईश्वर का प्रत्यक्ष निवास स्थान, ब्रह्माण्ड का बीज रूप पिंड कहलाया । इसे ही स्थूल शरीर कहते हैं । यह अन्नमय कोष ध्यानावस्थित अवस्था में प्रकृति के अन्तराल में प्रति क्षण होने वाले 'ॐ' ध्वनि के शब्दगुञ्जन को सुनता है, ॐ इस पर प्रकट होता है । इसलिए इस शरीर को-अन्नमय कोष को ॐकार भी कहा है ।

पञ्च तत्तव-पञ्च कोष बन जाने पर उसकी मर्यादा नियत की गई । यह पञ्च तत्त्व कहाँ तक काम करेंगे, यह पञ्च कोष वाला शरीर कितने क्षेत्र में अपनी गतिविधि जारी रखेगा इस सीमा का निर्धारण भूः लोक, भुवः लोक, स्वः लोक है । शरीर भूः लोक है, मस्तिष्क भुवः लोक है, अन्तकरण स्वः लोक है । आकाश, पाताल और पृथ्वी यह तीन स्थूल लोक कहे जाते हैं । साथ ही चैतन्य प्राणी के लिए तीन व्याहृतियाँ उसके अपनत्त्व में भी निवास करती हैं । शरीर, मस्तिष्क और अन्तः करण व्याहृतिमय है ।

व्याहृति से गायत्री उत्पन्न हुई । तीनों लोकों में काम करने वाली त्रिविधि शक्तियाँ उत्पन्न हुईं । गायत्री-कारण शक्ति । सावित्री सूक्ष्म शक्ति सरस्वती-स्थूल शक्ति । यह एक ही ईश्वरीय शक्ति जब भिन्न-भिन्न स्थितियों में होती है तब भिन्न-भिन्न नामों से पुकारी जाती है । ज्ञान की स्थूल शक्ति का नाम वेद है । यह वेद-शक्ति ब्रह्मा के रूप में अवतीर्ण हुई । ब्रह्मा ने उस शक्ति को व्यवस्थित रूप देकर सर्वसाधारण के उपयोगी, सुसम्पादित बनाकर चार भागों में विभक्त कर दिया ।

उस ब्रह्मा ने वेदों के साथ लोक भी बनाए अर्थात् लोकों को वेद ज्ञान से सुसज्जित कर दिया । धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष के चतुष्टय को भी ज्ञानमय बताया है । वेद के तथ्य का विस्तार उपनिषद् और इतिहासों में भी है । यह सब भी गायत्रीमय हैं ।

प्रत्येक जाति में, श्रेणी में जो विशेषता होती है, वह प्रशंसनीय होती है । उसी का वैभव होता है, उसी की महत्ता से उस वर्ग का गौरव होता है । देवताओं में अग्नि, मनुष्यों में ब्राह्मण, पर्वतों में सुमेरू, नदियों में गङ्गा, ऋतुओं में बसन्त, प्रजापतियों में ब्रह्मा श्रेष्ठ हैं, विशेष हैं, असाधारण हैं, महत्वपूर्ण हैं । इसी प्रकार सम्पूर्ण छन्दों में, सम्पूर्ण ज्ञानों में, सम्पूर्ण शक्तियों में गायत्री श्रेष्ठ है-विशेष है ।

किं वै भूः ? किं भुवः ? किं स्वः ? किं महः ? किं जनः ? किं तपः ? किं सत्यं ? किं तत् ? किं सवितुः ? किं वरेण्यं ? किं भर्गः ? कि देवस्य किं धीमहि ? किं धियः ? किं यः ? किं नः ? किं प्रचोदयात् ॥ ३ ॥

भूरति भू लोंको, भुव इत्यन्तरिक्ष लोकः, स्वरिति स्वर्लोको, महरिति महर्लोको, जनः इति जन लोकः तब इति तपो लोकः, सत्यमिति सत्य लोकः भूर्भुवः स्वरिति त्रैलोक्यं । तदिति तेजः यत्तेजः सोऽग्निः सविता दित्योऽयं वै वरेण्यं, अन्नमेव प्रजापति ।

भर्ग इत्यापो वै भर्गः यदापस्तत् सर्व देवताः ।

देवस्य सवितुर्देवो वा यः पुरुषः सविष्णुः ।

धीमहीत्यैश्वर्यं स प्राण इत्ध्यात्मं, यदाध्यात्मं तत् परमं पदं, तन्महेश्वरः । धिय इति महीति ।

पृथिवी महीं । योनः प्रचोदयादिति कामः ।

काम इमान् लोकान् प्रच्यावयते । यो नृशंसो योऽनृशंसोऽस्याः स परो धर्म इत्येषा वै गायत्री ॥ ४ ॥

गायत्री का प्रत्येक शब्द क्या है ? यह भली भाँति समझने की आवश्यकता है । एक सपाटे में सबका विहङ्गावलोकन कर जाने से काम न चलेगा वरन् एक-एक शब्द पर गम्भीर दृष्टि डालकर उसके गर्भ में छिपे हुए अर्थ, रहस्य और सन्देश पर विचार करना होगा । यह बताने के लिए उपर्युक्त पंक्तियों में हर शब्द के लिए अलग-अलग प्रश्न किया गया है । भूः क्या है ? भुवः क्या है ? स्वः क्या है ? सत् क्या है ? सवितुः क्या है ? आदि प्रत्येक पद के लिए अलग-अलग प्रश्न करके यह प्रयत्न किया गया है कि हर पद के सम्बन्ध में अलग-अलग विचार किया जाय ।

गायत्री की सात व्याहृतियों को और उसके अन्य शब्दों को स्पष्ट किया गया है । उनका क्या तात्पर्य

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है यह इस प्रकार समझना चाहिए । भू:-पृथ्वी लोक । भुव:- आकाश लोक । स्व:-स्वर्ग लोक । मह:-महर्लोक । जन:-जन लोक । तप:-तप लोक । सत्य:-सत्य लोक । तत्-अर्थात् तेज का तात्पर्य है अग्नि । सविता-अर्थात् सूर्य । वरेण्यं-अर्थात् अन्न, अन्न का तात्पर्य है प्रजा पालिनी शक्ति । भर्ग-अर्थात् अप, अप का तात्पर्य है देव-शक्तियों का समूह । देवस्य-अर्थात् सविता देव, सविता देव पुरुष । इसका तात्पर्य है विष्णु । धीमहि अर्थात् ऐश्वर्य का ध्यान करते हैं । ऐश्वर्य का अर्थ है प्राण, अध्यात्म, परम पद, महेश्वर । योन: प्रचोदयात्-अर्थात् काम, काम वह जिसके कारण लोक का संचालन होता है । असत्-अर्थात् बुरे कर्मों का संहार करने वाली कामना नृशंस-अर्थात् गर्हित है । जो कामनाएँ सत्कर्मों की प्रेरणा करती हैं वह अनृशंस-अर्थात् ग्राह्य हैं । इस प्रणाली का परिचालन करना गायत्री का विशेष धर्म है, यह गायत्री का स्वरूप है ।

भू: भुव: स्व: मह: जन: तप: सत्य: । यह सात-लोक हैं । सातों लोकों का बाराबार स्मरण करना इसलिए आवश्यक है कि मनुष्य अपनी ही समस्याओं, कठिनाइयों, स्वार्थों और लाभों की ओर देखते रहने की संकुचितता से ऊँचा उठकर विश्व ब्रह्माण्ड की ओर देखे, उसकी समस्याओं को अपनी समस्या समझते हुए, विश्व मानव की एक घटक अपने को समझते हुए बचे और उसी दृष्टि से काम करे ।

तत्, सविता, वरेण्यं, भर्ग, देव । इन पाँच शब्दों द्वारा तेज, उष्णता, अन्न, दिव्यता और परमात्मा इन पाँच महान आवश्यकताओं की ओर ध्यान केन्द्रित किया गया यह पाँचों पदार्थ जीवन की अनिवार्य आवश्यकताएँ हैं । इन्हें अधिकाधिक मात्रा में संचित करना आवश्यक है । तेजस्विता, प्रतिभाशालीनता, पुरुषार्थ, पराक्रम यह तत् शब्द के अन्तर्गत हैं । उष्णता, स्फूर्ति, पाचन-शक्ति, निरोगता, सुदृढ़ता, यह सब सविता से सम्बन्धित हैं । अन्न, वस्त्र, घर, दुधारू पशु, गृहिणी, सन्तति एवं अन्य समस्त जीवनोपयोगी वस्तुएँ वरेण्यं शब्द के अन्तर्गत हैं । दिव्यता, अनेक सद्गुण, योग्यताएँ, शक्तियाँ, सामर्थ्य भर्ग शब्द से सम्बन्धित हैं । गायत्री के पहचानने वाला इन पाँचों की आवश्यकता अनुभव करता है और अपने पुरुषार्थ एवं दैवी सहायता से उन्हें प्राप्त करता है ।

धीमहि कहते हैं-ध्यान को । किसका ध्यान ? उस मङ्गलमय परमात्मा का ध्यान, जिसको हृदय में धारण कर लेने से जीवन में ओतप्रोत कर लेने से उसके नियमों पर चलने से सब प्रकार की सुख-शान्ति मिलती है । ऐश्वर्य, प्राण-शक्ति, आत्म दर्शन तथा परम पद की प्राप्ति होती है । ईश्वर की यह धारणा ऐसी निश्चित होनी चाहिए जैसे कि पृथ्वी की धारणा होती है ।

योन: प्रचोदयात में कामनाओं की ओर संकेत किया गया है । मनुष्य कामनाओं से बना हुआ है, बिना कामना के वह रह नहीं सकता । काम उसका स्वभाव है क्योंकि कामना के कारण-इच्छा के कारण ही यह संसार चल रहा है । पर हमारी कामना नृशंस नहीं होनी चाहिए । स्वार्थ, लोलुपता, निर्दयता, निष्ठुरता, भोग इत्यादि की नृशंसता से बचते हुए ऐसे काम का सेवन करें, ऐसी कामनाएँ करें जो धर्म मूलक हों, सबके लिए श्रेयस्कर हों, यही गायत्री का स्वरूप है । इस लक्षण को स्थिर करना, इस मार्ग पर चलना यही गायत्री की असाधारण उपासना है ।

किं गोत्रा ? कत्यक्षरा ! कतिपादा ? कति कुक्षि: ? कति शीर्षा ! ।।५ ।।

सांख्यायनगोत्रा चतुर्विंशत्यक्षरावै गायत्री, त्रिपदा षट् कुक्षि: पञ्च शीर्षा ।। ६ ।।

केऽस्यास्त्रय: पादा भवन्ति ? का अस्या षट् कुक्षय: ? कानिच पञ्च शीर्षाणि ? । । ७ ।।

ऋग्वेदोस्या: प्रथमा: पादे भवति, युजर्वेदो द्वितीय: सामवेदस्तृतीय:, पूर्वाह्णिक प्रथमा कुक्षिर्भवति, दक्षिणा द्वितीया, परिश्रमा तृतीया, उत्तरा चतुर्था, ऊर्ध्वा पञ्चमी, अधेस्या: षष्ठी । व्याकरणमस्या: प्रथमं शीर्षं भवति, शिक्षा द्वितीयं, कल्पस्तृतीयं, निरुक्तं चतुर्थं, ज्योतिषामयनमिति पञ्चम ।। ८ ।।

किं लक्षणं ? किं विनियोक्तृ ! किं मुदाहृता ? ।। ९ ।।

लक्षणं मीमांसा, अथर्व वेदो विनियोक्तृ छन्दो विचित् रुदाहृतं ।। १० ।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

को वर्णाः ? कः स्वरः ? श्वेतो वर्णाः षट् स्वरा ॥ ११ ॥

अब प्रश्न यह उठता है कि गायत्री का गोत्र क्या है ? कितने अक्षर हैं ? कितने पाद हैं ? कितने कुक्षि हैं ? कितने शीर्ष हैं ? इनका उत्तर यह है कि गायत्री का सांख्यायन है । आत्म-कल्याण के दो मार्ग, एक योग दूसरा सांख्य । गीता में इन दोनों को एक बताया है-"योग सांख्यौः ग्रंथग्वाला प्रवदन्ति न पण्डितः ।" योग कहते हैं अनाशक्ति को, सांख्य कहते हैं आसक्ति को । संसार के पदार्थों को त्याग कर-उनसे विमुख होकर आत्मा को प्राप्त करना यह योग मार्ग है । दूसरा मार्ग है संसार के पदार्थों को उत्साहपूर्वक एकत्रित करना और उदारतापूर्वक उनका सन्मार्ग में व्यय करना । यह दूसरा मार्ग ही सांख्य मार्ग है । गायत्री को सांख्यायन अर्थात् सांख्य का घर कहा है । वह सांख्य प्रधानता के साथ जीवन व्यतीत करने का संकेत करती है । यही गायत्री का गोत्र है ।

गायत्री में चौबीस अक्षर हैं, तीन पाद हैं, छः कुक्षि हैं, पाँच शीर्ष हैं । अब प्रश्न उपस्थित होता है कि यह तीन पाद क्या हैं ? छः कुक्षियाँ क्या हैं ? पाँच शीर्ष क्या हैं ? बताते हैं कि ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद यह तीन वेद उसके पाद हैं । इनके ऊपर गायत्री खड़ी होती है, यह वेद ही उसकी आधार-शिला है, चौथा अथर्ववेद तो इस वेदत्रयी की व्याख्या मात्र है । छः कुक्षियाँ छः दिशाएँ हैं-पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, ऊर्ध्वः, अधः । इन छहों दिशाओं में अर्थात् सर्वत्र गायत्री शक्ति व्याप्त है । वेद के षट् अङ्गों को शीर्ष कहा गया है । गायत्री का शरीर तो छन्द है, शेष पाँच वेदाङ्ग उसके शीर्ष हैं । गायत्री छन्द के अन्य पाँच वेदाङ्ग-व्याकरण, शिक्षा, कल्प, निरुक्त, ज्योतिष सिर हैं-मस्तिष्क हैं । इन वेदाङ्गों के अन्तर्गत जो महान् भावनाएँ सन्निहित हैं, उन्हें ही गायत्री का शिर अर्थात मस्तिष्क समझना चाहिये । गायत्री शक्ति में वही भावना विद्यमान है जो वेदाङ्ग में है ।

अब जानना है कि गायत्री का लक्षण क्या है ? चेष्टा क्या है ? उदाहरण क्या है ? बताते हैं कि मीमांसा लक्षण है, अथर्ववेद चेष्टा है और छन्द प्रतीक हैं । मीमांसा का अर्थ है विचार । गायत्री का लक्षण विचार है, इस महाशक्ति का आविर्भाव हुआ है या नहीं यह परीक्षा किसी मनुष्य के विचारों को देखकर की जा सकती है जिसके अन्तः-करण में गायत्री अवतीर्ण होगी उसके विचारों में परिवर्तन दिखाई पड़ेगा । उसके विचार, विवेचन, निर्णय ऐसे होंगे जो एक आत्म-शक्ति सम्पन्न शक्ति के गौरव के अनुकूल हों, वह गायत्री का लक्षण है, लक्षण को देखकर ही किसी वस्तु का अस्तित्व पहचाना जाता है । गायत्री की उपस्थिति का लक्षण साधक की उच्च विचारधारा को ही समझना चाहिये ।

गायत्री की चेष्टा अथर्ववेद बताता है । अथर्व में व्यावहारिक ज्ञान है । शिल्प-कला, रसायन, विज्ञान चिकित्सा काम-शास्त्र आदि व्यावहारिक जीवन में प्रयुक्त होने वाली विद्याओं का अथर्व में वर्णन है । जहाँ गायत्री की स्थिति होगी, वहाँ अथर्व से सम्बन्ध रखने वाली चेष्टाएँ देखी जायेंगी । उद्योग, प्रयत्न, उत्पादन, निर्माण, कला-कौशल, व्यवस्था, परिवर्तन, ग्रहण, विसर्जन आदि चेष्टाएँ प्रत्यक्ष रूप से परिलक्षित होंगी । अभीष्ट की प्राप्ति के लिए जहाँ प्रचण्ड प्रयत्न हो रहा हो, समझना चाहिये कि यह गायत्री शक्ति की चेष्टा है ।

गायत्री का उदाहरण है-छन्द का अर्थ है-पदार्थ । लक्षण और चेष्टाओं के द्वारा विचार और कर्मों द्वारा निस्सन्देह अभीष्ट पदार्थ प्राप्त होते हैं । उदाहरण कहते हैं-नमूने को । गायत्री की स्थिति कैसी होती है ? इसका उदाहरण उत्तमोत्तम पदार्थों और परिस्थितियों को दिखाकर बताया गया है कि जहाँ जान या अनजान में गायत्री की कृपा होगी वहाँ का वाह्य वातावरण श्रेष्ठता से परिपूर्ण होगा ।

अब मालूम करना है कि गायत्री का वर्ण क्या है ? स्वर क्या ? वर्ण श्वेत है । श्वेत सतोगुण का, शुभ्रता का, उज्ज्वलता का, पवित्रता का प्रतीक है । स्वर छः हैं-ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत, उदात्त अनुदात्त, स्वरित । प्रत्येक स्वर का अपना-अपना विज्ञान एवं अपना महत्त्व है । शब्द की शक्ति अनन्त है, शब्दों द्वारा जो कम्पन होते हैं उनके कारण सृष्टि में विविध प्रकार के वातावरण बनते हैं । यह छः

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

स्वर ही ध्यान के छः भेद हैं, इन्हीं के द्वारा स्थूल पञ्च तत्त्वों और सूक्ष्म २४ तत्त्वों में गति का संचार होता है । इसे गायत्री महाविज्ञान के तृतीय खण्ड में सविस्तार लिखा जायगा । यहाँ तो इतना ही जान लेना चाहिए कि संसार की सम्पूर्ण गतिविधियों को प्रेरणा देने वाले और उनका नियन्त्रण करने वाले सभी स्वर गायत्री में मौजूद हैं । जो उनका रहस्य जानता हो वह चाहे जिस राग की स्वर लहरी बजा सकता है और मन चाहे परिणाम उपस्थित कर सकता है ।

पूर्वा भवति गायत्री, मध्यमा सावित्री, पश्चिमा सन्ध्या सरस्वती । रक्ता गायत्री, श्वेता सावित्री, कृष्णा सरस्वती ॥ १२ ॥

प्रणेत्रे नित्य युक्तास्याद् व्याहृतीषु च सप्तसु । सर्वेषां पापानां शङ्करे समुपस्थिते । शतसाहस्त्रमभ्यस्ता गायत्री पावनं महत् ॥ १३ ॥

उपः काले रक्ता, मध्यान्हे श्वेताऽपरान्हे कृष्णा ।

पूर्व सन्धि ब्राह्मी मध्य सन्धि माहेश्वर्य परा सन्धि वैष्णवी । हंसवाहिनी ब्राह्मी, वृष वाहिनी माहेश्वरी, गरुड़ वाहिनी वैष्णवी ॥ १४ ॥

पूर्वान्ह काले सन्धया गायत्री, कुमारी रक्ताङ्गी रक्तवासास्त्रिनेत्रा पाशांकुशाक्षमाला कमण्डलु करा हंस रूढ़ा ऋग्वेद सहिता, ब्रह्म दैवत्यभूर्लोक व्यवस्थितादित्य पथ गामिनी ॥ १५ ॥

मध्यान्ह काले सन्धया सावित्री युवती श्वेतांगी श्वेतवासा स्त्रिनेत्रां, पाशांकुश त्रिशूल डमरू हस्ता वृषमारूढ़ यजुर्वेद संहिता, रुद्र दैवत्या भुवर्लोक व्यवस्थितादित्यपथगामिनी ॥ १६ ॥

सायान्ह काले सन्धया सरस्वती वृद्धा कृष्णांगी, कृष्णवासा स्त्रिनेत्रा शंख, चक्र, गदा, पद्म हस्ता, गरुड़ारूढ़ा सामवेद सहिता विष्णु दैवत्या स्वर्लोक व्यवस्थितादित्यपथ गामिनी ॥ १७ ॥

गायत्री को तीन नामों से पुकारा जाता है । आरम्भिक अवस्था में गायत्री, मध्य अवस्था में सावित्री और अन्त अवस्था में सरस्वती । प्रारम्भ, तरुणाई और परिपक्वता, इन तीनों भेदों के कारण एक ही शक्ति के तीन नाम रखे गये हैं । गायत्री की आभा अरुण है, सावित्री श्वेत और सरस्वती की कृष्ण वर्ण-धुँधली है । जैसे सूर्य श्वेत वर्ण है पर प्रातःकाल उसकी आभा लाल, मध्याह्न की शुभ्र और संध्या में धुँधली हो जाती है उसी प्रकार साधना काल में साधक को अपनी स्थिति के अनुसार यह तीनों वर्ण ध्यानावस्था में परिलक्षित होते हैं । गायत्री सदा प्रणव युक्त है । उसका उच्चारण सदा ॐकार समेत होता है । यद्यपि साधारण साधना में और विवेचना में तीन ही व्याहृतियों का प्रयोग होता है पर ब्रह्म विवेचना के लिए-उपनिषद् विज्ञान के लिए सात व्यहृतियों का प्रयोग होता है । यदि सब पापों का समूह इकट्ठा हो जावे तो भी उसका नाश शत सहस्र गायत्री का अभ्यास करने से हो जाता है । यों मोटे अर्थ में शत सहस्र, एक लाख को और अभ्यास जप को कहते हैं । परन्तु इस सूत्र का सूक्ष्म रहस्य इस प्रकार है-शत कहते हैं-निश्चित भाव से, सहस्र कहते हैं-सहस्रार में-ब्रह्मरन्ध्र में-गायत्री की धारणा का अभ्यास करने से पाप दूर होते हैं । निश्चित विधि से षट् चक्रों का वेधन कर ब्रह्मरन्ध्र तक गायत्री को पहुँचाने की विधि "गायत्री महाविज्ञान" के प्रथम भाग में वर्णित है । उस साधना से साधक अग्नि में तपे हुए स्वर्ण की भाँति निष्पाप हो जाता है । "शत सहस्र अभ्यास" पद में उसी साधना की ओर संकेत है ।

पूर्व सन्ध्या को, प्रातःकाल की सन्ध्या को, ब्राह्मी कहते हैं । यह हंस वाहिनी, कुमारी रक्त अङ्ग वाली, रक्त वस्त्र वाली, तीन नेत्र वाली, पाश, अंकुश, जप-माला और कमण्डलु धारण करने वाली, ऋग्वेद सहित, ब्रह्म देवत्या, भूः लोक में रहने वाली और सूर्य पथ से गमन करने वाली है ।

आइए, उपर्युक्त अलंकारिक वर्णन के गूढ़ रहस्य पर विचार करें । प्रातःकाल का समय ब्रह्म मुहूर्त्त कहलाता है । उस समय ब्रह्म तत्त्व की विशेषता रहने के कारण गायत्री को ब्राह्मी कहते हैं । हंस कहते हैं प्राण को । हंसारूढ़ अर्थात् प्राण पर छायी हुई । ब्राह्मी गायत्री प्राण पर अपना विशेष प्रभाव प्रकट करती है । कुमारी का अर्थ है-बाल्यवृत्तियों से चंचलता से युक्त । रक्त गतिशीलता का विकास विद्युत् का प्रतीक है । प्रातःकाल गायत्री में गतिशीलता का विकास विद्युत् के संसार का-गुण है, यही उसका रक्ताङ्गी और रक्त वस्त्र होना है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

त्रिनयनी-तीन दृष्टियों वाली, तीनों लोकों को दृष्टि में रखने वाली । शरीर, मस्तिष्क और अन्तःकरण को देखने वाली है । तीनों ओर दृष्टि रखती है इसलिए उसे त्रिनयनी कहते हैं । पाश अर्थात् बन्धन, अंकुश-अर्थात् नियन्त्रण, अक्षमाला शब्द मातृकाएँ कमण्डलु-अर्थात् धारणा, ऋग्वेद-अर्थात ज्ञान, ब्रह्मदेवत्या-अर्थात् ब्रह्म की देवशक्ति । इन सब लक्षणों, गुणों और साधनों से सम्पन्न होने के कारण प्रातःकाल की गायत्री अपने साधक पर इन सब उपचारों का प्रयोग करती है । वह इन सब साधनों से ब्राह्मी गायत्री द्वारा तपाया जाता है और ब्रह्म भूत बनाया जाता है । ब्रह्म गायत्री भूर्लोक निवासिनी है । उसका इस भूलोक के प्राणियों द्वारा विशेष उपयोग होता है । भूः लोक शरीर को भी कहते हैं, ब्राह्मी शरीर को स्वस्थ रखती है । वह सूर्य-गामिनी है । जिस प्रकार सूर्य की तेजस्वी किरणें मनुष्य को विशेष रूप से प्रभावित करती हैं वैसे ही गायत्री की शक्तियाँ भी काम करती हैं । सूर्य की किरणें और प्रातः गायत्री की शक्तियों की कार्य-विधि में बहुत कुछ समता है ।

अब मध्याह्न गायत्री के लक्षण देखिए । वह सावित्री नाम वाली, युवती श्वेताङ्गी, श्वेत वस्त्रा, त्रिनयना, पाश अंकुश त्रिशूल, डमरू लिए हुए है । वृषभ पर आरूढ़ है । यजुर्वेद सहित, रुद्र देवत्या, भुवः लोक व्यवस्थित, सूर्य पथ गामिनी है । इनमें से कुछ बातें तो ब्राह्मी के समान हैं-त्रिनयना, पाश, अंकुश, सूर्य पथ गामिनी, इन चारों बातों की विवेचना पहले की जा चुकी है । अब शेष लक्षणों पर प्रकाश डालते है-युवती अर्थात् प्रौढ़, विकसित, परिपुष्ट, स्थिर, सुदृढ़ । श्वेत वर्ण अर्थात् प्रकाशवान्, विस्तृत फैली हुई, आलोकमय । परिपुष्ट होकर अपनी पूर्णावस्था के तेज से झिलमिलाती हुई गायत्री को श्वेत वर्ण, श्वेत वस्त्रा कहा है । सविता सूर्य के समान तेजस्वी होने से उसका सावित्री नाम है । त्रिशूल कहते हैं तीन दुःखों को-अज्ञान, अभाव और अशक्ति । इन तीनों को वह अपने हाथ में, अपनी मुट्ठी में लिए हुए है-अर्थात् यह तीनों शूल उसके नियन्त्रण में हैं । डमरू ध्वनि का, वाणी का, प्रतीक है । वृषभ धर्म का प्रतीक है, तरुण सावित्री धर्म पर आरूढ़ है । यजुर्वेद कर्मकाण्ड का प्रतीक है, वह कर्म की प्रेरणा करता है । रुद्र दैवत्या-अर्थात् भयंकर, उग्र, दिव्य शक्तियों वाली । भुवः लोक में निवास करने वाली, भुवः कहते हैं मानस लोक को । मस्तिष्क, विचार, तर्क, बुद्धि, सूझ-बूझ को परिमार्जित बनाने वाली है ।

अब सन्ध्याकाल के गायत्री के लक्षण देखिये । वह सरस्वती नाम वाली, वृद्धा कृष्णाङ्गी, कृष्ण वस्त्रा, तीन नेत्र वाली, शंख, चक्र, गदा, पद्म हाथ में लिए हुए, गरुड़ पर आरूढ़-सामवेद सहित, विष्णु दैवत्या, स्वः लोक निवासी, सूर्य-पथ गामिनी है । सूर्य-पथ गामिनी और त्रिनयनी का वर्णन पहले हो चुका है इसलिये इन दो लक्षणों को छोड़कर अन्य लक्षणों पर विचार करेंगे । स + रस + वती= सरस्वती । सरता वाली, संगीत, साहित्य, कला, कवित्व तथा अन्य स्थूल सूक्ष्म रसों की निर्झरिणी होने के कारण परिपक्व-सन्ध्याकालीन गायत्री को सरस्वती कहा है । वृद्धा का अर्थ है-परिपक्व, पूर्ण विकसित, विकास की अन्तिम मर्यादा तक पहुँची हुई । कृष्ण वर्ण-धुँधलापन-मिश्रण का द्योतक है । ब्रह्म और प्रकृति के उभय रूपों का मिश्रण काला होता है । पारा श्वेत है, गन्धक पीला है, इसी प्रकार ब्रह्म शुभ्र है, प्रकृति पीत है, दोनों के मिश्रण से काला रङ्ग बनता है । भगवान राम और कृष्ण के काला होने का यही कारण था । सन्ध्या कालीन गायत्री में ब्रह्म और प्रकृति का सम्मिश्रण होने से वह कृष्ण वर्ण वाली, कृष्ण वस्त्र वाली कहलाती है । सरस्वती के हाथ में चार पदार्थ हैं । शंख अर्थात् वाणी, चक्र-अर्थात् तेज, गदा-अर्थात् विनाश अर्थात् वैभव । इन चारों शक्तियों पर सरस्वती का आधिपत्य है । गरुड़ कहते हैं-क्रिया को, गतिशीलता को । सरस्वती का क्षेत्र विचार तक ही सीमित नहीं है वरन् वह क्रियाशील भी है । सामवेद सङ्गीत का-वाह्य गायन का प्रतीक है । विष्णु की सेवक दिव्य शक्तियों का प्रतिनिधित्व करने के कारण वह विष्णु दैवत्या कहलाती है । स्वः लोक कहते हैं-हृदय को-अन्तःकरण को । सरस्वत वीणा के तारों को झंकृत करती है-अन्तःकरण में विवेक जागृत करती है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ऊपर ब्राह्मी, सावित्री और सरस्वती का विवेचन किया गया है । अविकासित और परिपुष्ट इन भेदों से तीन रूप कहे गये हैं । इनको प्रातः मध्याह्न, सन्ध्या इन तीन कालों में भी विभक्त कर दिया गया है । यह तीन भेदों में से साधक को अपने लिए जिस शक्ति की उपयोगिता दृष्टिगोचर होती हो उसे साधन के लिए चुन लेना चाहिए ।

कान्यक्षर दैवतानि भवन्ति ? ॥ १८ ॥

प्रथम माग्नेयं, द्वितीयं प्राजापत्यं , तृतीयं सौम्य, चतुर्थमैशानं, पञ्चमादित्यं, षष्ठं बाहस्पत्यं, सप्तमं भगदैवत्यम्, अष्टमं पितृदैवत्यं, नवममर्यमण, दशमं सावित्रं, एकादशं त्वाष्ट्रं, द्वादशं पौष्णं, त्रयोदशं मैन्द्राग्न्यं , पञ्चदशं वाम देव्यं शोडषं मैत्रावरुणं, सप्तदशं वाभ्रुव्यं, अष्टादशं वैश्व देव्यम्, एकोनविंशतिकं वैष्णव्यं, विंशतिकं वासवम्, एकविंशतिकं तौषितं, द्वाविंशतिकं कौबेरं, त्रियोविंशतिकं आश्विनं, चतुर्विंशतिकं ब्राह्मं इत्यक्षर दैवतानि भवन्ति ॥ १९ ॥

गायत्री के चौबीस अक्षरों के देवता कौन-कौन हैं ? इसका उत्तर देते हुए बताते हैं कि तत्-का देवता अग्नि, स का प्रजापति, वि-का सोम, तुः - का ईशान, य-का नदिति, रे-का वृहस्पति, णि-का भग, यम्-का पित, भ-का अर्यमा, र्गो-का सविता, दे-का तुष्टा, व-का पूषा, न्य-का इन्द्र और अग्नि, धी-का वायु, म-का कामदेव, हि-का मित्र और वरुण, धि-का वधु, यो-का विश्वदेव, यो-का विष्णु, नः-का वसु, प्र-का तुषित, चो-का कुवेर, द-का अश्विनीकुमार और यात् का ब्रह्मा देवता है ।

यह देवता प्रत्येक अक्षर की शक्तियाँ हैं । इन शक्तियों का गायत्री के अक्षर प्रतिनिधित्व करते हैं । इस महामन्त्र के साथ-साथ उन शक्तियों का साधन में आविर्भाव होता है ।

द्यो मूर्धाग्नि संगतास्ते, ललाटे रुद्रः भ्रुवोर्मेघः चक्षुषोश्चन्द्रादित्यौ, कर्णयोः शुक्र वृहस्पती, नासिके वायुदेवत्ये दन्तौष्ठा वुभयसन्ध्ये मुखमग्निं जिह्वा सरस्वती ग्रीवा साध्यानु गृहीतिः स्तनयोर्वसवः बाह्वोर्मरुतः, हृदयं पार्ज्जन्यमाकाश मुदरं, नाभिरन्तरिक्ष, कटिरिन्द्राग्नी, जघन प्राजापत्यं, कैलाश मलयाबूरू, विश्वेदेवाजानुनो, जङ्घ, कुशिकौजङ्घाद्वयं, खुराः पितराः पादौ वनस्पतयः अंगुलयो रोमाणि, नखाश्च मुहूर्त्तास्तेऽपि ग्रहा केतुर्मासा ऋतुवः संध्या कालस्तथाच्छादनं सम्वत्सरो निमिषमहोरात्रि आदित्यश्चन्द्रमाः ॥ २० ॥

गायत्री को यदि एक मनुष्याकृति देवी माना जाय, तो उसके अंग-प्रत्यंगों में विविध देव-शक्तियों की स्थापना माननी होगी । गायत्री का ध्यान जब मनुष्याकृति की देवी रूप में करते हैं, तो उसके दिव्य होने की धारणा की जाती है । गायत्री के अंग-प्रत्यंगों में जो दिव्य शक्तियाँ निवास करती हैं, उनका ध्यान भी साधक को करना होता है । जब साधक अपने को गायत्री शक्ति से ओतप्रोत अनुभव करे, तब भी उसे ऐसा ही ज्ञान होना चाहिये कि मैं स्वयं उन शक्यिों से ओतप्रोत हो रहा हूँ । मेरे अंग-प्रत्यंगों में वे ही देवता गण समाये हुए हैं, जो गायत्री के अंगों में हैं । इस भावना के कारण साधक अपने उपास्य देव की जाति में आ जाता है । कहा है कि "देव बनकर देवता की उपासना करनी चाहिये ।" देव शक्तियाँ हमारे अंग-प्रत्यंगों में विराजमान हैं, यह भावना आत्म-श्रेष्ठता का संचार करती है । आत्म-स्थिति को देव-उपासना के योग्य बनाती है । अब गायत्री के अंगों में देव-शक्तियों की स्थापना का वर्णन देखिये ।

गायत्री के मस्तक में स्वर्ग, ललाट में रुद्र, भ्रुवों में मेघ, दोनों नेत्रों में चन्द्र सूर्य, दोनों कानों में शुक्र और वृहस्पति, दोनों नथुनों में वायु, दन्त और ओष्ठों में दोनों सन्ध्याएँ, मुख में अग्नि, जिह्वा में सरस्वती, ग्रीवा में साध्य गण, स्तनों में वसु गण, दोनों भुजाओं में मरुद्गण, हृदय में इन्द्र, उदर में आकाश, कटि में अग्नि, जघन में प्रजापति, उरु में कैलाश और मलय पर्वत, जंघा में जह्नु और कुशिक, तलबों में पितृगण, चरण में वनस्पति गण, अंगुलियों में रोम और नखों में मुहूर्त, गृह, धूमकेतु, मास, ऋतु और सन्ध्याएँ, आच्छादन, सम्वत्सर, वर्ष, दिन, रात्रि, सूर्य और चन्द्र गायत्री के निमेष हैं ।

सहस्त्र परमां देवीं शतमध्यां दशावरां ।
सहस्त्र नेत्रां गायत्रीं शरणमहं प्रपद्यते ॥ २१ ॥

ॐ तत् सवितुर्वरेण्याय नमः । ॐ तत् पूर्व जपाय नमः ।
ॐ तत् प्रातरादित्य प्रतिष्ठाय नमः ॥ २२ ॥

सायमधीयानो दिवस कृतं पापं नाशयति । प्रातरधीयानो रात्रि कृतं पापं नाशयति । तत् सायं प्रातरधीयानो पापोऽपापो भवति ॥ २३ ॥

य इदं गायत्री हृदयं ब्राह्मणः पठेत् अपेय पानात् पूतो भवति, अभक्ष्य भक्षणात् पूतो भवति, अज्ञानात् पूतो

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भवति स्वर्ण स्तेयात् पूतो भवति, गुरु तल्पगमनात् पूतो भवति अपंक्ति पावनात् पूतो भवति ब्रह्म हत्यायाः पूतो भवति, अब्रह्मचारी सब्रह्मचारी भवति, इत्यनेन हृदये नाधोतेन कृतुः सम्यगिष्टो भवति, षष्टि गायत्र्याः शत सहस्त्राणि जप्तानि भवति अष्टौ ब्राह्मणान् सम्यग् ग्राहोत् ! अथ सिद्धिर्भवति ।। २४ ।।

इदं ब्राह्मणोनित्यमधी यीते सर्व पापैः प्रमुच्यते इति ब्रह्मलोके महीयते इत्याह भगवान याज्ञवल्क्यः ।। २५ ।।

।। इति 'गायत्री हृदयं' सम्पूर्णम् ।।

गायत्री का एक हजार जप नित्य करना श्रेष्ठ है । इतना न हो सके तो मध्यम रूप से सौ जप भी किये जा सकते हैं । अन्ततः इतना भी न हो सके तो कम से कम दस बार तो अवश्य ही करना चाहिये । गायत्री सहस्र नेत्र वाली है, उसकी हजारों आँखें हैं, वह सर्वत्र सब कुछ देखती है, उससे कुछ भी छिपा हुआ नहीं है, ऐसी सर्वत्रदर्शी ईश्वरीय शक्ति को सर्वव्यापक समझ कर अपने विचार और कार्य ऐसे रखने चाहिये, जो दिव्य हों, माता की दृष्टि में उचित, उत्तम धर्ममय जँचे, अपने उद्देश्य, आचरण और व्यवहार को श्रेष्ठ रखना ही गायत्री की शक्ति है । सच्चा साधक वह है, जो भक्तिपूर्वक वेदमाता की शरण में जाता है ।

ॐ तत् सवितुर्वरेण्यं इत्यादि पदों वाले मन्त्रों को नमस्कार है, जिनके द्वारा माता का साक्षात्कार होता है । ॐ तत् आदि शब्दों के साथ किये हुए पूर्व जप को नमस्कार है, क्योंकि उस जप के द्वारा आत्म-ब्रह्म की प्राप्ति होती है । ॐ तत् सहित भगवान आदित्य को नमस्कार है, क्योंकि उसके प्रकाश और प्रेरणा से पथ में प्रगति होती है ।

सायंकाल में गायत्री का पाठ करने से दिन में किए हुए पाप नष्ट हो जाते हैं । प्रातः में पाठ करने से रात्रि में किये हुए पाप नष्ट होते हैं । सायं प्रातः दोनों समय पाठ करने से पापी भी निष्पाप हो जाता है । मद्यादि पीने, अंभक्ष खाने, अज्ञान में डूबे रहने, चोरी करने, व्यभिचार, ब्रह्महत्या, दुराचार आदि पापों से छुटकारा मिल पाता है । जो इसको नित्य पढ़ता है, वह पापों से छूट जाता है, ऐसा भगवान याज्ञवल्क्य ने कहा है ।

पाठ के द्वारा निष्पाप हो जाने का रहस्य यह है कि श्रद्धा और विश्वासपूर्वक इस महान ब्रह्म विद्या का विवेचन, चिन्तन, मनन करने के कारण विवेक की जागृति होती है । मनुष्य को पाप की निरर्थकता और पुण्य की सार्थकता समझ में आ जाती है । फलस्वरूप वह कुमार्ग से विरत होकर सन्मार्ग पर चलना अपनी नीति बनाता है । अन्तःकरण में धँसे हुए अज्ञानान्धकार को बहिष्कृत करके ज्ञान का प्रकाश धारण करता है । पूर्वकृत पापों का प्रायश्चित करता है और भविष्य में उन्हें न करने की प्रतिज्ञा करता है । ऐसी स्थिति उत्पन्न हो जाने पर नये पाप हो जाना बन्द हो जाता है, पुराने प्रारब्ध बने हुए पाप धीरे-धीरे भुगतते जाते हैं, इस प्रकार वह थोड़े ही दिनों में निष्पाप बन जाता है । कुबुद्धि का परित्याग और सद्बुद्धि की धारणा ही पाप नाश का वास्तविक कारण है । परन्तु वह कारण यदि इस ब्रह्मज्ञान के पाठ, चिन्तन, मनन से उत्पन्न हुआ है तो उसका श्रेय इस पाठ का मनन को ही दिया जायगा । इसीलिये पाठ द्वारा पाप निवृत्ति का वर्णन किया जाता है ।

'गायत्री-हृदय' में जो विस्तृत तत्त्व ज्ञान भरा पड़ा है, उसको भली प्रकार हृदयंगम कर लेने से आत्मा में उतना ही प्रकाश हो जाता है, उतनी ही आत्म-शुद्धि हो जाती है, जितनी कि साठ लाख गायत्री जप करने से । इस 'गायत्री-हृदयम्' में वर्णित तत्त्व ज्ञान को आत्मसात कर लेने का पुण्य-फल इतना अधिक है कि इसकी तुलना और किसी कार्य से नहीं की जा सकती ।

गायत्री पञ्जरम्

किसी वस्तु के सम्बन्ध में विचार करने के लिए यह आवश्यक है कि उसकी कोई मूर्ति हमारे मनःक्षेत्र में हो । बिना कोई प्रतिमूर्ति बनाए मन के लिए किसी भी विषय में कुछ सोचना असम्भव है । मन की प्रक्रिया ही यह है कि पहले वह किसी वस्तु का कोई आकार निर्धारित कर लेता है, तब उसके बारे में कल्पना-शक्ति काम करती है । समुद्र भले ही किसी ने न देखा हो, पर जब समुद्र के बारे में कुछ सोच-विचार किया जायगा, तब एक बड़े जलाशय की प्रतिमूर्ति मनःक्षेत्र में अवश्य रहेगी ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भाषा विज्ञान का भी आधार है । प्रत्येक शब्द के पीछे एक आकृति रहती है । 'कुत्ता' शब्द जानना तभी सार्थक है, जब 'कुत्ता' शब्द उच्चारण करते ही एक प्राणी विशेष की आकृति सामने आ जाय । न जानी हुई विदेशी भाषा को कोई हमारे सामने बोले तो उसके शब्द कान में पड़ते हैं, पर वे शब्द चिड़ियों के चहचहाने की तरह निरर्थक जान पड़ते हैं । कोई भाव मन में उदय नहीं होता । कारण यह है कि उस शब्द के पीछे रहने वाली आकृति का हमें पता नहीं होता । जब तक आकृति सामने न आवे, तब तक मन के लिए यह असम्भव है कि उस सम्बन्ध में कोई सोच विचार करे ।

ईश्वर या ईश्वरीय शक्तियों के बारे में भी यही बात है । चाहे उन्हें सूक्ष्म माना जाय या स्थूल, निराकार माना जाय या साकार, इन दार्शनिक और वैज्ञानिक झमेलों में पड़ने से मन को कोई प्रयोजन नहीं । उससे यदि इस दिशा में कोई सोच-विचार का काम लेना है तो कोई न कोई आकृति बनाकर उसके सामने उपस्थित करनी पड़ेगी अन्यथा वह ईश्वर या उसकी शक्ति के बारे में कुछ भी न सोच सकेगा । जो लोग ईश्वर को निराकार मानते हैं, वे भी 'निराकार' का कोई न कोई आकार बनाते हैं । आकाश जैसा निराकार, प्रकाश जैसा तेजोमय, अग्नि जैसा व्यापक, परमाणुओं जैसा अदृश्य आखिर कोई न कोई आधार उस निराकार का भी स्थापित करना ही होगा । जब तक आकार की स्थापना न होगी, मन, बुद्धि और चित्त से उसका कुछ भी सम्बन्ध स्थापित न हो सकेगा ।

इस महा सत्य को ध्यान में रखते हुए निराकार, अचिन्त्य बुद्धि से, अगम्य, वाणी से अतीत परमात्मा का मन से सम्बन्ध स्थापित करने के लिए भारतीय आचार्यों ने ईश्वर की आकृतियाँ स्थापित की हैं । इष्ट देवों के ध्यान की सुन्दर, दिव्य आकृति प्रतिमाएँ गढ़ी हैं । उनके साथ दिव्य आयुध, दिव्य वाहन, दिव्य गुण, दिव्य स्वभाव एवं दिव्य शक्तियों का सम्बन्ध किया गया है । ऐसी आकृतियों का भक्तिपूर्वक ध्यान करने से साधक उनके साथ एकीभूत होता है, दूध और पानी की तरह साध्य और साधक का मिलन होता है । भृङ्ग झींगुर को पकड़ ले जाती है और उसके सामने भिनभिनाती है, झींगुर उस गुन्जन को सुनता है और उसमें इतना तन्मय हो जाता है कि उसकी आकृति तक बदल जाती है और वह झींगुर भृङ्ग बन जाता है । दिव्य कर्म स्वभाव वाली देवाकृति का ध्यान करते रहने से साधक में भी उन्हीं दिव्य शक्तियों का आविर्भाव होता है । जैसे रेडियो यन्त्र को माध्यम बनाकर सूक्ष्म आकाश में उड़ती फिरने वाली विविध ध्वनियों को सुना जा सकता है, उसी प्रकार ध्यान में देव मूर्ति की कल्पना करना एक आध्यात्मिक रेडियो स्थापित करना है, जिसके माध्यम से सूक्ष्म जगत में विचरण करने वाली विविध ईश्वरीय शक्तियों को साधक पकड़ सकता है । इसी सिद्धान्त के अनुसार अनेक इष्ट देवों की अनेक आकृतियाँ साधकों को ध्यान करने के लिए बनाई गई हैं । इन देव-आकृतियों का स्वतन्त्र विज्ञान है । अमुक देवता की अमुक प्रकार की आकृति क्यों रखी गई है, इसका एक क्रमबद्ध रहस्य है । उसकी चर्चा तो एक स्वतन्त्र पुस्तक में करेंगे, यहाँ तो इतना ही जान लेना पर्याप्त होगा कि अमुक प्रयोजन के लिए अमुक ईश्वरीय शक्तियों को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए जो आकृति योगी लोगों को ठीक सिद्ध हुई है, वही आकृति उस देवता की घोषित कर दी गई है ।

जहाँ अन्य प्रयोजनों के लिए अन्य देवाकृतियाँ हैं वहाँ इस विश्व-ब्रह्माण्ड को ईश्वरमय देखने के लिए 'विराट रूप' परमेश्वर की प्रतिमूर्ति विनिर्मित की गई है । मनुष्य की सारी आत्मोन्नति और सुख-शान्ति इस बात पर निर्भर है कि उसका आन्तरिक और वाह्य जीवन पवित्र एवं निष्पाप हो । समस्त प्रकार के क्लेश, दुख, अभाव एवं विक्षोभों के कारण मनुष्य के शारीरिक और मानसिक पाप हैं । यदि वह इन पापों से बचता जाता है तो फिर और कोई कारण ऐसा नहीं जो उसकी ईश्वर प्रदत्त अनन्त सुख-शान्ति में बाधा डाल सके । पापों से बचने के लिए ईश्वरीय भय की आवश्यकता होती है । ईश्वर सर्वत्र व्यापक है, इस बात को जानते तो सब हैं, पर अनुभव बहुत कम लोग करते हैं । जो मनुष्य यह अनुभव करेगा कि ईश्वर मेरे चारों ओर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

छाया हुआ है और वह पाप का दण्ड अवश्य देता है, जिसको यह भावना अनुभव में आने लगेगी, वह पाप न कर सकेगा । जिस चोर के चारों ओर सशस्त्र पुलिस घेरा डाले खड़ी हो और हर तरफ से उस पर आँखें गढ़ी हुई हों, ऐसी दशा में वह भला किस प्रकार चोरी करने का साहस करेगा ।

परमात्मा की आकृति चराचरमय ब्रह्माण्ड में देखना ऐसी साधना है, जिसके द्वारा सर्वत्र परमात्मा अनुभव करने की चेतना जाग्रत हो जाती है । यही विश्व मानव की पूजा है, इसे ही विराट् दर्शन कहते हैं । रामायण में भगवान राम ने अपने जन्म-काल में कौशिल्या को विराट् रूप दिखाया है । एक बार भोजन करते समय भी राम ने माता को विराट् रूप दिखाया था । उत्तरकाण्ड में काकभुशुण्ड जी के सम्बन्ध में वर्णन है कि वे भगवान के मुख में चले गये तो उन्होंने वहाँ सारे ब्रह्माण्ड को देखा । भगवान कृष्ण ने भी इसी प्रकार कई बार अपने विराट् रूप दिखाये । मिट्टी खाने के अपराध में मुँह खुलवाते समय यशोदा को विराट् रूप दिखाया, महाभारत के उद्योग पर्व में दुर्योधन ने भी ऐसा ही रूप देखा । अर्जुन को भगवान ने युद्ध के समय में विराट् रूप दिखाया जिसका गीता के ११ वें अध्याय में सविस्तार वर्णन किया है ।

इस विराट् रूप को देखना हर किसी के लिए सम्भव है । अखिल विश्व ब्रह्माण्ड को परमात्मा की विशालकाय मूर्ति देखना और उसके अन्तर्गत-उसके अङ्ग प्रत्यंगों के रूप में समस्त पदार्थों को देखने, प्रत्येक वस्तु को, प्रत्येक स्थान को ईश्वर से ओत-प्रोत देखने की भावना करने से भगवद् बुद्धि जाग्रत होती है और सर्वत्र प्रभु की सत्ता को व्याप्त होने का सुदृढ़ विश्वास होने से मनुष्य पाप से छूट जाता है फिर उससे पाप कर्म नहीं बन सकते । निष्पाप होना इतना बड़ा लाभ है कि उसके फलस्वरूप सब प्रकार के दुखों से छुटकारा मिल जाता है । अन्धकार के अभाव का नाम है-प्रकाश और दुःख के अभाव का नाम है-आनन्द । विराट् का उपभोग करता है ।

गायत्री परमात्मा की शक्ति है । परमात्मा की शक्ति सर्वत्र, अणु-अणु में, विश्व ब्रह्माण्डों में व्याप्त है जो कुछ है गायत्रीमय है । गायत्री के शरीर में ही यह सब जगत है, यह भावना "गायत्री का विराट् रूप दर्शन" कहलाती है । नीचे दिए हुए "गायत्री पञ्जर स्तोत्र" यही विराट् दर्शन है । पञ्जर कहते हैं ढाँचे को । गायत्री का ढाँचा, सम्पूर्ण विश्व में है यह इस स्तोत्र से बताया गया है । इस स्तोत्र का भावना सहित ध्यान करने से अन्तः लोक और वाह्य जगत में विराट् गायत्री के दर्शन होते हैं । उस दर्शन के फलस्वरूप पाप करने का किसी को उसी प्रकार साहस नहीं हो सकता जैसे कि पुलिस से घिरा हुआ व्यक्ति चोरी करने का प्रयत्न नहीं करता ।

अथ गायत्री पञ्जरम्

भूर्भुवः सुवरित्येतै निगमत्व प्रकाशकाम् ।
महर्जनस्तपः सत्य लोकोपरि संस्थिताम् ।। १ ।।

भूः भुवः स्वः द्वारा निगम का प्रकाश करती है, महः, जनः, तपः, सत्य इन लोकों से ऊपर स्थित है ।

कृतमान विनोदादि कथालापन तत्पराम् ।
तदित्य वाङ्मनो गम्य तेजो रुपधरां परम् ।। २ ।।

गान आदि से विनोद और कथा आदि में तत्पर वह वाणी और मन से अगम्य होने पर भी जो तेज रूप धारण किये हुए है ।

जगतः प्रसवित्री तां सवितुः सृष्टिकारिणीम् ।
वरेण्यं मित्यन्नमयां पुरुषार्थफलप्रदाम् ।। ३ ।।

जगत् का प्रसव करने वाली को सविता कहा है, वह सृष्टि कर्तृ है । वरेण्यं का अर्थ अन्नमयी है वह पुरुषार्थ का फल देती है ।

अविद्या वर्ण वर्ज्या च तेजोवद्गर्भसंज्ञिताम् ।
देवस्य सच्चिदानन्द परब्रह्म रसात्मिकाम् ।। ४ ।।

वह अविद्या है, वर्ण सहित है, तेजयुक्त है, गर्भ संज्ञा वाली है तथा सच्चिदानन्द परब्रह्म देव की रसमयी है ।

धीमह्यहं स वैतद्वदब्रह्माद्वै तस्वरूपिणीम् ।
धियो योनस्तु सविता प्रचोदयादुपासिताम् ।। ५ ।।

हम ध्यान करते हैं कि वह अद्वैत ब्रह्म स्वरूपिणी है, सविता हमारी बुद्धि को उपासना के लिए प्रेरणा देती है ।

तादृगस्या विराट् रूप किरीटवरराजिताम् ।
व्योमकेशालकाकाश रहस्यं प्रवदाम्यहम् ।। ६ ।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इस प्रकार वह विराट् रूप वाली है, वह सुन्दर किरीट धारण करती है । व्योम केश है, आकाश अलकें हैं, इस प्रकार इसका रहस्य कहा जाता है ।

मेघ भ्रकुटिकाक्रान्त विधिविष्णुशिवार्चिताम ।
गुरु भार्गवकर्णांतां सोमसूर्याग्निलोचनाम् ।। ७ ।।

भौंहों से आक्रान्त भेद्य है । ब्रह्मा, विष्णु और शिव से जो अर्चित है, गुरु, शुक्र कान हैं, सोम, सूर्य अग्नि जिसके नेत्र हैं ।

इडापिंगलसूक्ष्माभ्यां वायुनासापुटान्विताम् ।
सन्ध्याद्विरोष्ठपुटितां लसद्वाग्भूप जिह्विकाम् ।। ८ ।।

इडा, पिंगला दोनों नासापुट हैं । दोनों सन्ध्या, दोनों ओष्ठ हैं, उपजिह्वा ही वाणी है ।

सन्ध्यासौ द्युमणे कण्ठलसद्वाहुसमन्विताम् ।
पर्जन्य हृदयासक्त वसुसुस्तनमण्डलाम् ।। ९ ।।

वह सन्ध्या द्यु है, मणि से कंठ शोभित है । वायु शोभायुक्त है तथा पर्जन्य हृदय है और स्तनमंडल वसु है ।

आकाशोदर विस्तरः नाभ्यवान्तरदेशकाम् ।
प्राजापत्याख्य जघनां कटीद्राणिसंज्ञिकाम् ।। १० ।।

आकाश उदर है, अन्तर देश नाभि है । जघन प्रजापति है, कटि इन्द्राणि है ।

उरू मलम मेरुभ्यां शोभमानाऽसुद्विषाम् ।
जानुनी जह्नु कुशिक वैश्वदेवसदाभुजाम् ।। ११ ।।

उरू मलय मेरु है, जहाँ असुरद्वेषी देव निवास करते हैं । जानु में जह्नु कुशिक है, भुजाएँ वैश्व देव हैं ।

अयनद्वय जंघाद्यं खुराद्य पितृसंज्ञकाम ।
पदांघ्रि नख रोमाद्य भूतलद्रु मलांछिताम् ।। १२ ।।

जंघाओं के दोनों आदि स्थान अयन हैं, खुर आदि पितृ हैं, पद, अंघ्रि, नख, रोम आदि पृथ्वी तल के पेड़ आदि कहे हैं ।

ग्रहराश्यदेवर्षि मूर्तिं च पर संज्ञिकाम् ।
तिथिमासप्तुवर्षाख्यं सुकेतुनिमिषात्मिकाम् ।।
माया कल्पित वैचित्र सन्ध्याच्छादन संवृताम् ।। १३ ।।

ग्रह, राशि, ऋज, देव, ऋषि, पर संज्ञक शशि की मूर्तियाँ हैं । तिथि, मास, ऋतु, वर्ष तथा सुकेतु आदि निमेष हैं ।

ज्वलत्कालानलप्रभां तडित्कोटिसमप्रभाम् ।
कोटिसूर्य प्रतीकाशां चन्द्रकोटिसुशीलतम् ।। १४ ।।

कालाग्नि की तरह ज्वलन है, करोड़ों बिजलियों के समान प्रभायुक्त है, करोड़ों सूर्य की तरह प्रकाशवान् और करोड़ों चन्द्रमा के समान शीतल है ।

सुधामण्डलमध्यस्थां सान्द्रानन्दाऽमृतात्मिकाम् ।
प्रागतीतां मनोरम्यां वरदां वेद मातरम् ।। १५ ।।

सुधा मण्डल के मध्य में आनन्द और अमृत युक्त है, प्राक है, अतीत है, मनोहर है, वरदा है और वेदमाता है ।

ततस्तैरङ्गपं कस्यात्तैरेव व्यापकत्रयम् ।
पूर्वोक्त देवतां ध्यायेत्साकारगुणसंयुताम् ।। १६ ।।

इसके छः अंग है, यह तीनों भुवनों में व्यापक है । इन पूर्वोक्त गुणों से संयुक्त देवता का ध्यान करना चाहिए ।

पंचवक्त्रां दशभुजां त्रिपंचनयनैर्युताम् ।
मुक्ताविद्रुमसौवर्णा मितशुभ्रसमाननाम् ।। १७ ।।

पाँच मुँह हैं, दश भुजा हैं, पन्द्रह नेत्र हैं और मुक्ता, विद्रुम के तुल्य सुवर्ण, सफेद तथा शुभ्र आनन हैं ।

आदित्य पथ गामिन्यां स्मरेद्ब्रह्मस्वरूपिणीम् ।
विचित्र मन्त्र जननीं स्मरेद्विद्या सरस्वतीम ।। १८ ।।

वह सूर्य मार्ग से गमन करती है, उस स्वरूपिणी का स्मरण करना चाहिये, उन विचित्र मन्त्रों की जननी विद्या सरस्वती का स्मरण करना चाहिए ।

इति 'गायत्री पञ्जरम्' ।।

अन्यत्र भी इस प्रकार के प्रमाण पाये जाते हैं, जिनमें पिंड में ही ब्रह्माण्ड की स्थिति होने की पुष्टि की गई है । देखिए-

देहेऽस्मिन् वर्तते मेरुः सप्तद्वीप समन्वितः ।
सरितः सागराः शैलाः क्षेत्राणि क्षेत्रपालिकाः ।।
ऋषयो मुनयः सर्वे नक्षत्राणि ग्रहास्तथा ।
पुण्य तीर्थानि पीठानि वर्तन्ते पीठ देवताः ।।
सृष्टिसंहारकर्त्तारौ भ्रमन्तौशशिभास्करौ ।
नभो वायुश्च वह्निश्च जलं पृथ्वी तथैव च ।।
त्रैलोक्ये यानि भूतानि तानि सर्वाणि देहतः ।
मेरु संवेष्ट्य सर्वत्र व्यवहारः प्रवर्त्तते ।।
जानाति यः सर्वमिदं स योगी नात्र संशयः ।
ब्रह्माण्ड संज्ञके देहे यथादेशं व्यवस्थितः ।।

-शिव संहिता

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मनुष्य शरीर इस विशाल ब्रह्माण्ड की प्रतिमूर्ति है, जो शक्तियाँ इस विश्व का परिचालन करती हैं वे सब इस मानव देह में वर्तमान हैं ।

इस शरीर में सप्त द्वीप सहित मेरु हैं । नदियाँ, सागर, पर्वत, खेत, किसान, ऋषि, मुनि, सब नक्षत्र, ग्रह, पुण्यतीर्थ, पीठ और पीठ-देवता विद्यमान हैं । सृष्टि के संहार करने वाले चन्द्र, सूर्य घूम रहे हैं । आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी, तीनों लोकों में जितने भी भूत हैं वे सब शरीर में हैं । मेरु को सवेष्टन कर सर्वत्र व्यवहार होता है । जो भी इनको जानता है वह योगी है इसमें संशय नहीं कि ये सब ब्रह्माण्ड नामक देह में यथा आदेश व्यवस्थित हैं ।

स एव पुरुषस्तस्मादण्डं निर्भेद्य निर्गतः ।
सहस्त्रोर्वङ्घ्रिबाह्वक्षः सहस्राननशीर्षवान् ।।
यस्येहावयवैर्लोकान कल्पयन्ति मनीषिणः ।
कट् यादिभिरधः सप्त सप्तध्वं जघनादिभिः ।।
भूर्लोकः कल्पितः पद्भ्यां भुवर्लोकोऽस्यनाभितः ।
हृदा स्वर्लोक उरसा महर्लोके महात्मनः ।।
ग्रीवायां जनलोकोऽस्य तपोलोकः स्तनद्वयात् ।
मूर्द्धाभिः सत्यलोकश्च ब्रह्म लोकः सनातन ।।
तत्कूकद्या चातलं कलृप्तमूरुभ्यां वितलं विभोः ।
जानुभ्यां सुतलं शुद्धं जङ्घाभ्यां तलातलम् ।।
महातलं तु गुल्फाभ्यां प्रपदाभ्यां रसातलम् ।
पातालं पादतलत इति लोकमयः पुमान् ।।

इसलिए वह ही पुरुष प्राण को भेदन कर निकल गया जिसके हजार उरु, अंगुली बाहु, नेत्र और हजार ही मुख और शिर थे तथा इस संसार में विद्वान जिसके अवयवों के द्वारा लोकों की कल्पना करते हैं । कटि के नीचे सात और नितम्ब से ऊपर सात लोक हैं । पैरों में भू लोक की कल्पना की है, नाभि से भुवः लोक की, हृदय से स्वर लोक की, वक्षस्थल से महः लोक, गर्दन से जन-लोक की तथा दोनों स्तनों से तपःलोक की और मूर्द्धा से सत्य-लोक की । वह ब्रह्म-लोक सनातन है, उसकी कटि में अतल कल्पित किया है । उरुओं की वितल, घुटनों की सुतल, पिंडलियों में तल और अतल, गुल्फ में महातल, पंजों में रसातल और पाद तल में पाताल यह लोकमय पुरुष है ।

इन श्लोकों का पाठ करना मात्र पर्याप्त न होगा । इन पर विचारपूर्वक, भक्ति-भावना के साथ चित्त एकाग्र किया जाना चाहिये । विराट् विश्व में अपने इष्टदेव को व्याप्त देखने की अनुभूति जब प्रत्यक्ष होने लगती है तो प्रति क्षण ईश्वर के दर्शन लाभ कराने वाले स्वर्ग का साक्षात्कार इसी जीवन में होने लगता है ।

गायत्री संहिता

आदि शक्तिस्त्वियं विष्णोस्तामहं प्रणमामि हि ।
सर्गः स्थितिविनाशश्च जायन्ते जगतोऽनया ।। १ ।।

यह गायत्री ही परमात्मा की आदि शक्ति है, उसको मैं प्रणाम करता हूँ, इसी शक्ति से संसार का निर्माण, पालन और विनाश होता है ।

नाभि पद्म भुवा विष्णोर्ब्रह्मणा निर्मितं जगत् ।
स्थावरं जंगमं शक्त्या गायत्र्या एतद् वै ध्रुवम् ।। २ ।।

विष्णु की नाभि-कमल से उत्पन्न हुए ब्रह्मा ने गायत्री की शक्ति से जड़ तथा चेतन संसार भी बनाया ।

चन्द्रशेखर केशेभ्यो निर्गता हि सुरापगा ।
भागीरथं ततारैव परिवारसमं यथा ।। ३ ।।
जगद्धात्री समुद्भूत्य या हृन्मानसरोवरे ।
गायत्री सकुलं पारंतथा नयति साधकम् ।। ४ ।।
सास्ति गगैव ज्ञानाख्यसुनीरेण समाकुला ।
ज्ञान गंगां तु तां भक्त्या बारं-बारं नमाम्यहम् ।। ५ ।।

जिस प्रकार शिव के केशों से निकलने वाली गंगा ने परिवार सहित भागीरथ को पार कर दिया, उसी प्रकार संसार का पालन करने वाली गायत्री, हृदयरूपी मानसरोवर से प्रकट होकर सपरिवार साधक को भवसागर से पार ले जाती है । वही गायत्री ज्ञानरूपी जल से परिपूर्ण गंगा है । उस गंगा को मैं भक्ति से बार-बार नमस्कार करता हूँ ।

ऋषयो चेद शास्त्राणि सर्वे चैव महर्षयः ।
श्रद्धया हृदि गायत्रीं धारयन्तिस्तुवन्ति च ।। ६ ।।

ऋषि लोग, वेदशास्त्र और समस्त महर्षि गायत्री को श्रद्धा से हृदय में धारण करते और उसकी स्तुति करते हैं ।

ह्रीं श्रीं क्लीं चेति रूपेभ्यस्त्रिभिर्वालोकपालिनी ।
भासते सततं लोके गायत्री त्रिगुणात्मिका ।। ७ ।।

ह्रीं, श्रीं, क्लीं, इन तीन रूपों से संसार का पालन करने वाली त्रिगुणात्मक गायत्री संसार में निरन्तर प्रकाशित होती है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

गायत्र्येव मता माता वेदानां शास्त्रसम्पदाम् ।
चत्वारोऽपि समुत्पन्ना वेदास्त्वस्या असंशयम् ।। ८ ।।

शास्त्रों की सम्पत्ति रूप वेदों की माता गायत्री ही मानी गई है । निश्चय से चारों ही वेद इस गायत्री से उत्पन्न हुए हैं ।

परमात्मनस्तु या लोके ब्रह्म शक्तिर्विराजते ।
सूक्ष्मा च सात्विकी चैव गायत्रीत्यभिधीयते ।। ९ ।।

संसार में परमात्मा की जो सूक्ष्म और सात्विक ब्रह्म शक्ति विद्यमान है वह ही गायत्री कही जाती है ।

प्रभावा देव गायत्र्या भूतानामभिजायते ।
अन्तःकरणेषु दैवानां तत्त्वाना हि समुद्भवः ।। १० ।।

प्राणियों के अन्तःकरणों में दैवी तत्वों का प्रदुर्भाव गायत्री के प्रभाव से ही होता है ।

गायत्र्युपासना करणादात्मशक्तिर्विवर्धते ।
प्राप्यते क्रमशोऽजस्य समीप्यं परमात्मनः ।। ११ ।।

गायत्री की उपासना करने से आत्म-बल बढ़ता है । धीरे-धीरे जन्म बन्धन रहित परमात्मा की समीपता प्राप्त होती है ।

शोचं शान्तिर्विवेकश्चैतल्लाभत्रयमात्मिकाम् ।
पश्चादा वाप्यते नूनं सुस्थिरं तदुपासकम् ।। १२ ।।

मन को वश में रखने वाले उस गायत्री के उपासक को बाद में पवित्रता, शान्ति और विवेक ये तीन आत्मिक लाभ निश्चय ही प्राप्त होते हैं ।

कार्येषु साहसः स्थैर्यं कर्मनिष्ठा तथैव च ।
एते लाभाश्च वै तस्माज्जायन्ते मानसास्त्रयः ।। १३ ।।

कार्यों में साहस, स्थिरता और वैसे ही कर्तव्य निष्ठा के तीन मनः सम्बन्धी लाभ उसको प्राप्त होते हैं ।

पुष्कलं धन समृद्धिः सहयोगश्च सर्वतः ।
स्वास्थ्यं वा त्रय एते युस्तस्माल्लाभश्च लौकिकाः।१४ ।

सन्तोषजनक धन की वृद्धि, सब ओर से सहयोग और स्वस्थता ये तीन सांसारिक लाभ उससे होते हैं ।

काठिन्यं विविधं घोरं ह्यापदा संहतिस्तथा ।
शीघ्रं विनाशतां यान्ति विविधा विघ्नराजयः ।। १५ ।।

नाना प्रकार की घोर कठिनाई और विपत्तियों का समूह नाना प्रकार के विघ्नों का समूह इससे शीघ्र ही नष्ट हो जाते हैं ।

विनाशादुक्त शत्रूणामन्तः शक्तिर्विवर्धते ।
संकटानामनायासं पारं याति तया नरः ।। १६ ।।

उपर्युक्त शत्रुओं के विनाश से आन्तरिक शक्ति बढ़ती है । उस आन्तरिक शक्ति से मनुष्य सहज ही संकटों से पार हो जाता है ।

गायत्र्युपासकस्यान्ते सत्कामा उद्भवन्ति हि ।
तत्पूर्तयेऽभिजायन्ते सहज साधनान्यपि ।। १७ ।।

निश्चय ही गायत्री के उपासक के हृदय में सदिच्छाएँ पैदा होती हैं । उनकी पूर्ति के लिये आसानी से साधन भी मिल जाते हैं ।

त्रुटयः सर्वथा दोषा विघ्ना यान्ति यदान्तताम् ।
मानवो निर्भयं याति पूर्णोन्नति पथं तथा ।। १८ ।।

जब सर्व प्रकार के दोष, गल्तियाँ और विघ्न विनाश को प्राप्त हो जाते हैं तब मनुष्य निर्भय होकर पूर्ण उन्नति के मार्ग पर चलता है ।

बाह्याभ्यन्तरमस्य नित्यं सन्मार्गगामिनः ।
उन्नतेरु भयं द्वारं यात्युन्मुक्तकपाटताम् ।। १९ ।।

सर्वदा सन्मार्ग पर चलने वाले इस व्यक्ति के बाह्य और भीतरी दोनों उन्नति के द्वार खुल जाते हैं ।

अतः स्वस्थेन चित्तेन श्रद्धया निष्ठया तथा ।
कर्तव्य विरतं काले नित्यं गायत्र्युपासना ।। २० ।।

इसलिये श्रद्धा से, निष्ठा से तथा स्वस्थ चित्त से प्रतिदिन निरन्तर ठीक समय पर गायत्री की उपासना करनी चाहिए ।

दयालुः शक्ति सम्पन्ना माता बुद्धिमतीं यथा ।
कल्याणं कुरुते ह्येव प्रेम्णा बालस्य चात्मनः ।। २१ ।।
तथैव माता लोकानां गायत्री भक्तवत्सला ।
विदधाति हितं नित्यं भक्त्यानां ध्रुवमात्मनः ।। २२ ।।

जैसे दयालु शक्तिशालिनी और बुद्धियुक्त माता प्रेम से अपने बालक का कल्याण ही करती है, उसी प्रकार भक्तों पर प्यार करने वाली गायत्री संसार की माता है वह अपने भक्तों का सर्वदा कल्याण ही करती है ।

कुर्वन्नापि त्रुटीर्लोके बालको मातरं प्रति ।
यथा भवति कश्चिन्न तस्या अप्रीतिभाजनः ।। २३ ।।
कुर्वन्नपि त्रुटीर्भक्तः कश्चिद् गायत्र्युपासने ।
न तथा भलमाप्नोति विपरीतं कदाचन ।। २४ ।।

जिस प्रकार संसार में माता के प्रति गलतियाँ

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

करता हुआ भी कोई बालक उस माता का शत्रु नहीं होता, उसी प्रकार गायत्री की उपासना करने में गलतियाँ करता हुआ भी कोई भक्त कभी भी विपरीत फल को नहीं प्राप्त होता ।

अक्षाराणां तु गायत्र्या गुम्फनं ह्यस्ति तद्विधम् ।
भवन्ति जागृता येन सर्वा गुह्यास्तु ग्रन्थयः ।। २५ ।।

गायत्री के अक्षरों का, गुंथन इस प्रकार हुआ है कि जिससे समस्त गुह्य योग ग्रन्थियाँ जाग्रत हो जाती है ।

जागृता ग्रन्थयस्त्वेताः सूक्ष्माः साधकमानसे ।
दिव्यशक्तिसमुद् भूतिं क्षिप्रं कुर्यन्त्यसंशयम् ।। २६ ।।

जागृत हुई ये सूक्ष्म योगिक ग्रन्थियाँ साधक के मन में निःसन्देह शीघ्र ही दिव्य शक्तियों को पैदा कर देती है ।

जनयन्ति कते पुंसामेतां वै दिव्यशक्तयः ।
विविधान् परिणामान्हि भव्यान्मंगलपूरितान् ।। २७ ।।

ये दिव्य शक्तियाँ मनुष्यों के लिए नाना प्रकार के मङ्गलमय, सुन्दर परिमाणों को उत्पन्न करती हैं ।

मन्त्रस्योच्चारणं कार्यं शुद्ध मेवाप्रमादतः ।
तदशक्तो जपेन्नित्यं सप्रणवास्तु व्याहृतीः ।। २८ ।।

आलस्य रहित होकर गायत्री मन्त्र का शुद्ध ही उच्चारण करना चाहिये । जो ऐसा करने में असमर्थ हो वह केवल प्रणव (ॐ) सहित व्याहृतियों का जाप करे ।

ओमिति प्रणवः पूर्व भूर्भुवः स्वस्तदुत्तरम् ।
एषोक्ता लघु गायत्री विद्वद्भिर्वेद पण्डितैः ।। २९ ।।

पहले प्रणव (ॐ) का उच्चारण करना चाहिए तत्पश्चात् भूर्भुवः स्वः का । यह पञ्चाक्षरी मन्त्र (ॐ भूर्भुवः स्वः) वेदज्ञ विद्वानों ने लघु गायत्री कहा है ।

शुद्धं परिधानमाधाय शुद्धे वै वायुमण्डले ।
शुद्ध देहमनोभ्यां वै कार्या गायत्र्युपासना ।। ३० ।।

शुद्ध वस्त्रों को धारण करके शुद्ध हवा में देह एवं मन को शुद्ध करके गायत्री की उपासना करनी चाहिए ।

दीक्षामादाय गायत्र्या ब्रह्मनिष्ठाग्रजन्मना ।
आरभ्यतां ततः सभ्यग्विधिनोपासना सता ।। ३१ ।।

किसी ब्रह्म निष्ठ ब्राह्मण से गायत्री की दीक्षा लेकर तब विधि पूर्वक उपासना आरम्भ करनी चाहिए ।

गायत्र्युपासनानुक्त्वा नित्यावश्यक कर्मसु ।
उक्तस्तत्र द्विजातीनां नानध्यायी विचक्षणैः ।। ३२ ।।

गायत्री उपासना को विद्वानों ने द्विजों के लिए अनिवार्य किसी भी दिन न छोड़ने योग्य, नित्यकर्म बताया है ।

आराधयान्ति गायत्रीं न नित्यं ये द्विजन्मनः ।
जायन्ते हि स्वकर्मभ्यस्ते च्युतानात्र संशय ।। ३३ ।।

जो द्विज गायत्री की नित्य प्रति उपासना नहीं करते वे अपने कर्तव्य से च्युत हो जाते हैं ।

शूद्रास्तु जन्मना सर्व पश्चाद्यान्ति द्विजन्मताम् ।
गायत्र्येव जनाः साकं ह्यु पवीतस्य धारणात् ।। ३४ ।।

जन्म से तो सभी शूद्र होते हैं बाद में मनुष्य गायत्री के सहित यज्ञोपवीत धारण करने से द्विजत्व को प्राप्त होता है ।

उच्चता पतितानां च पापानां पापनाशम् ।
जायते कृपयैवास्याः वेदमातरनन्तया ।। ३५ ।।

पतितों को उच्चता और पापियों को उसके पापों का विनाश ये दोनों कार्य इस वेदों की माता गायत्री की अनन्त कृपा से ही होते हैं ।

गायत्र्या तु युता सन्ध्या ब्रह्मसन्ध्या तु सामता ।
कीर्त्तितं सर्वतः श्रेष्ठः तदनुष्ठानमागमैः ।। ३६ ।।

जो सन्ध्या गायत्री से युक्त होती है वह ब्रह्म सन्ध्या कहलाती है । शास्त्रों ने उसका उपयोग सबसे श्रेष्ठ बतलाया है ।

आचमनं शिखाबन्धः प्राणायामोऽधमर्षणम् ।
न्यासश्चोपासनायांतु पंच कोषा मता बुधैः ।। ३७ ।।

आचमन, चोटी बाँधना, प्राणायाम, अधमर्षण और सन्यास, ये पाँच कोष विद्वानों ने गायत्री सन्ध्या की उपासना में स्वीकार किये हैं ।

ध्यानतस्तु ततः पश्चात सावधानेनचेतसा ।
जपतां सततं तुलसी मालायां सा मुहुर्मुहुः ।। ३८ ।।

सावधान चित्त से ध्यानपूर्वक गायत्री मन्त्र को सात्विक प्रयोजन के लिये तुलसी की माला पर जपना चाहिये ।

एक वारं सकलमालां न्यूनतो न्यूनामाजपन ।
धीमान्मन्त्र शतं नूनं नित्यमष्टोत्तरं जपेत् ।। ३९ ।।

प्रतिदिन कम से कम एक माला १०८ मन्त्रों का अवश्य ही जप कर लेना चाहिए ।

ब्राह्मे मुहूर्त्ते प्राच्यास्यो मेरु दण्डं प्रतन्य हि ।
पद्मासन समासीनः सन्ध्यावन्दमाचरेत् ।। ४० ।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म मुहूर्त्त में पूर्वाभिमुख होकर मेरु दण्ड को सीधा कर पद्मासन पर बैठ कर सन्ध्यावन्दन करे ।

दैन्यरुक् छोक चिन्तानां विरोधाक्रमणापदाम् ।
कार्यं गायत्र्यनुष्ठानं भयानां वारणाय च ॥ ४१ ॥

दीनता, रोग, शोक, चिन्ता, विरोध, आक्रमण, आपत्तियाँ और भय इनके निवारण के लिए गायत्री का अनुष्ठान करना चाहिए ।

जायते स्थितिरस्मात्साभिलाषा मन ईप्सिताः ।
यतः सर्वेऽभिजायन्ते यथा कालं हि पूर्णताम् ॥ ४२ ॥

इस अनुष्ठान से यह स्थिति पैदा होती है जिससे समस्त मनवांछित अभिलाषाएँ यथा समय पूर्णता को प्राप्त होती हैं ।

अनुष्ठानात्तु वैतस्माद् गुप्ताध्यात्मिक शक्तयः ।
चमत्कार मयालोके प्राप्यन्तेऽनेकधाबुधैः ॥ ४३ ॥

उस अनुष्ठान से साधकों को संसार में चमत्कार से पूर्ण अनेक प्रकार की गुप्त आध्यात्मिक शक्तियाँ प्राप्त होती हैं ।

सपदलक्ष मंत्राणां गायत्र्या जपनं तु वै ।
ध्यानेन विधिना चैवानुष्ठानं हि प्रचक्षते ॥ ४४ ॥

विधि एवं ध्यानपूर्वक गायत्री के सवा लाख मन्त्रों का जप करना ही अनुष्ठान कहलाता है ।

पञ्चम्यां पूर्णिमायां वा चैकादश्यां तथैव हि ।
अनुष्ठानस्य कर्त्तव्य आरम्भः फल प्राप्तये ॥ ४५ ॥

पञ्चमी, पूर्णमासी और एकादशी के दिन अनुष्ठान का आरम्भ करना शुभ होता है ।

मासद्वयेऽविरामं तु चत्वारिंशदिदनेपुवा ।
पूरयेतदनुष्ठानं तुल्यसंख्यासु वै जपन ॥ ४६ ॥

दो महीने में अथवा चालीस दिनों में बिना नागा किए तथा नित्य समान संख्याओं में जप करता हुआ उस अनुष्ठान को पूर्ण करे ।

तस्या प्रतिमां सु संस्थाप्य प्रेम्णा शोभन आसने ।
गायत्र्यास्तेषु कर्त्तव्य सत्प्रतिष्ठा तुवाग्मिभिः ॥४७ ॥

प्रेम से सुन्दर और ऊँचे आसन पर गायत्री की प्रतिमा स्थापित करके उसकी भली प्रकार प्रतिष्ठा करनी चाहिए ।

तद्विधाय ततो दीप धूप नैवेद्य चन्दनैः ।
नमस्कृत्याक्षतेनापि तस्याः पूजनमाचरेत् ॥ ४८ ॥

इस प्रकार से गायत्री की स्थापना करके, तदनन्तर उसे नमस्कार करके, दीपक, धूप, नैवेद्य और चन्दन तथा अक्षत इन सबसे गायत्री का पूजन करे ।

पूजनान्तरं विज्ञः भक्त्या तज्जप मारभेत् ।
जपकाले तु मनः कार्यं श्रद्धान्वितचञ्चलम् ॥ ४९ ॥

बुद्धिमानों को चाहिए कि वह पूजा के अनन्तर भक्ति से उस गायत्री का जप आरम्भ करें । जप के समय मन को श्रद्धा से युक्त और स्थिर कर लेना चाहिये ।

कार्यं तो यदि चोतिष्ठेन्मध्य एव ततः पुनः ।
जल प्रक्षालनं कृत्वा शुद्धैरंगैरुपाविशेत् ॥ ५० ॥

और यदि किसी काम से साधन समय के बीच में ही उठना पड़े तो फिर पानी से हाथ मुँह धोकर बैठे ।

आद्यशक्तिर्वेदमाता गायत्री तु मदन्तरे ।
शक्तिंकल्लोसंदोहान् ज्ञानज्योतिश्चसंततम् ॥ ५१ ॥
उत्तरोत्तरमाकीर्य प्रेरयन्ती विराजते ।
इत्येवाविरतं ध्यायन् ध्यनामग्नस्तुतां जपेत् ॥ ५२ ॥

आद्यशक्ति वेदों की माता स्वरूप गायत्री मेरे भीतर लगातार शक्ति की लहरों के समूहों को और ज्ञान के प्रकाशों को उत्तरोत्तर फैलाकर प्रेरित करती हुई विद्यमान हैं, इस प्रकार से निरन्तर ध्यान करता हुआ ध्यान में निमग्न उसका जाप करे ।

चतुर्विंश तिलक्षाणां सततं तदुपासकः ।
गायत्रीणामनुष्ठानाद्गायत्र्याः सिद्धिमाप्नुते ॥ ५३ ॥

गायत्री का उपासक निरन्तर चौबीस लाख गायत्री के मन्त्र जप का अनुष्ठान करने से गायत्री की सिद्धि को प्राप्त करता है ।

साधनायै तु गायत्र्याः निश्छलेन हि चेतसा ।
वरणीयः सदाचार्यः साधकेन सुभाजनः ॥ ५४ ॥

गायत्री की साधना के लिए साधक को चाहिए कि वह श्रद्धा भक्ति के साथ श्रेष्ठ योग्य आचार्य को गुरु वरण करे । गायत्री दीक्षा लेकर साधना आरम्भ करे ।

लध्वानुष्ठानतो वापि महानुष्ठानतोऽथवा ।
सिद्धि विन्दति वे नूनं साधकः सानुपातकाम् ॥ ५५ ॥

लघु अनुष्ठान करने से अथवा वृहत अनुष्ठान करने से साधक साधना में किये श्रम के अनुपात से सिद्धि को प्राप्त करता है ।

एक एव तु संसिद्धः गायत्री मन्त्र आदिशत् ।
समस्तलोक मन्त्राणां कार्यसिद्धेस्तु पूरकः ॥ ५६ ॥

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सिद्ध हुआ अकेला ही गायत्री मन्त्र संसार के समस्त मन्त्रों द्वारा हो सकने वाले कार्यों को सिद्ध करने वाला माना गया है ।

अनुष्ठानावसाने तु अग्निहोत्रो विधीयताम् ।
यथा शक्ति ततो दानं ब्रह्मभोजस्त्वनन्तरम् ।। ५७ ।।

अनुष्ठान के अनन्तर हवन करना चाहिये, तदनन्तर शक्ति के अनुसार दान और ब्रह्मभोज करना चाहिए ।

महामन्त्रस्य चाप्यस्य स्थाने स्थाने पदे-पदे ।
गूढो रहस्यगर्भोऽनन्तोपदेशसमुच्चयः ।। ५८ ।।

इस महामन्त्र के अक्षर-अक्षर और पद्-पद् में रहस्य भरा हुआ है और अनन्त उपदेशों का समूह इस महामन्त्र में छिपा हुआ अन्तर्हित है ।

यो दधाति नरश्चैतानुपदेशांस्तु मानसे ।
जायते ह्यु भयं तस्य लोकमानन्दसंकुलम् ।। ५९ ।।

जो मनुष्य इन उपदेशों को मन में धारण करता है उसके दोनों लोक आनन्द से व्याप्त हो जाते हैं ।

समग्रामपि सामग्रीमनुष्ठानस्य पूजिताम् ।
स्थाने पवित्र एवैतां कुत्रचिद्धि विसर्जयेत् ।। ६० ।।

अनुष्ठान की समस्त पूजित सामग्री को कहीं पवित्र स्थान पर ही विसर्जित करे ।

सत्पात्रो यदि वाचार्यो न स्वात्संस्थापयेत्तदा ।
नारिकेलं शुचं वृत्वाचार्यभावेन चासने ।। ६१ ।।

अगर श्रेष्ठ एवं योग्य आचार्य न प्राप्त हो तो पवित्र नारियल को आचार्य भाव वरण करके आसन पर स्थापित करे ।

प्रायश्चितं मतं श्रेष्ठं त्रुटीनां पापकर्षणम् ।
तपश्चर्यैव गायत्र्याः नातोऽन्यदृश्यते क्वचित् ।। ६२ ।।

गलतियों एवं पाप कर्मों के प्रायश्चित के लिए गायत्री की तपश्चर्या सबसे श्रेष्ठ मानी गई है ।

सेव्या आत्मोन्नतेरर्थं पदार्थास्तु सतोगुणाः ।
राजसाश्च प्रयोक्तव्या मनोवाञ्छाभि पूतये ।। ६३ ।।

आत्मा की उन्नति के लिए सतोगुणी पदार्थों का उपयोग करना चाहिए और मनोभिलाषाओं की पूर्ति के लिए रजोगुणी पदार्थों का उपयोग करना चाहिए ।

प्रादुर्भावस्तु भावनां तामसानां विजायते ।
तमोगुणानामर्थानां सेवनादिति निश्चयः ।। ६४ ।।

तमोगुणी पदार्थों के उपयोग करने से तमोगुणी भावों की उत्पत्ति होती है ।

मालासनं समिध्यज्ञ सामिग्रयर्चन संग्रहः ।
गुणत्रयानुसारं हि सर्वे वैददते फलम् ।। ६५ ।।

माला, आसन, हवन सामग्री, पूजा के पदार्थ जिस तत्त्व की प्रधानता के लिए जायेंगे वे वैसे ही अपने गुणों के अनुसार फल को देते हैं ।

प्रादुर्भवन्ति वै सूक्ष्माश्चतुर्विंशति शक्तयः ।
अक्षरेभ्यस्तु गायत्र्याः मानवानां हि मानसे ।। ६६ ।।

मनुष्य के अन्तःकरण में गायत्री के चौबीस अक्षरों से चौबीस सूक्ष्म शक्तियाँ प्रकट होती हैं ।

मुहूर्त्ता योग दोषा वा येऽप्यमङ्गलकारिणः ।
भस्मतां यान्ति ते सर्वे गायत्र्यास्तीव्रतेजसा ।। ६७ ।।

अमङ्गल को करने वाले जो मुहूर्त्त अथवा योग दोष हैं वे सब गायत्री के प्रचण्ड तेज से भस्म हो जाते हैं ।

एतस्मात्तु जपान्नूनं ध्यानमग्नेन चेतसा ।
जायते क्रमशश्चैव षट्चक्राणां तु जाग्रतिः ।। ६८ ।।

निश्चय ही ध्यान में रत चित्त के द्वारा इस जप को करने से धीरे-धीरे षट् चक्र जागृत हो जाते हैं ।

षट्चक्राणि यदैतानि जागृतानि भवन्ति हि ।
षट् सिद्धयोऽभिजायन्ते चक्रैरेतैस्तदा नरम् ।। ६९ ।।

जब ये षट्चक्र जागृत हो जाते हैं तब मनुष्य को इन चक्रों के द्वारा छः सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं ।

अग्निहोत्रं तु गायत्री मन्त्रेण विधिवत् कृतम् ।
सर्वेष्ववसरेष्वेव शुभमेव मतं बुधैः । ७० ।।

गायत्री मन्त्र से विधिपूर्वक किया गया अग्निहोत्र सभी अवसरों पर विद्वानों ने शुभ माना है ।

यदावस्थासु स्याल्लोके विपन्ना सु तदातु सः ।
मौनं मानसिकं चैव गायत्री जपमाचरेत् ।। ७१ ।।

जब कोई मनुष्य विपन्न (सूतक, रोग, अशौच आदि) अवस्थाओं में हो तब वह मौन मानसिक गायत्री जप करे ।

तदनुष्ठान काले तु स्वशक्तिर्नियमेज्जनः ।
निम्नकर्मसु ताः धीमान् न व्ययेद्धि कदाचन ।। ७२ ।।

मनुष्य को चाहिये कि वह गायत्री साधना से प्राप्त हुई अपनी शक्ति को संचित रखे । बुद्धिमान् मनुष्य कभी भी उन शक्तियों को छोटे कार्यों में खर्च नहीं करते ।

नैवानावश्यक कार्य क्वचिदात्मार्थिनानरा ।
स्वत्मशक्तेस्तु प्राप्तयाः यत्र तत्र प्रदर्शनम् ।। ७३ ।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आत्मार्थी मनुष्य को प्राप्त की हुई अपनी शक्ति का जहाँ-तहाँ अनावश्यक प्रदर्शन नहीं करना चाहिये ।

आहारे व्यवहारे च मस्तिष्केऽपि तथैव हि ।
सात्विकेन सदा भाव्यं साधकेन मनीषिणा ।। ७४ ।।

आहार में, व्यवहार में और उसी प्रकार मस्तिष्क में भी बुद्धिमान साधक को सात्विक होना चाहिए ।

कर्त्तव्यधर्मतः कर्म विपरीत तु यद्भवेत ।
तत्साधकस्तु मतिमानाचरेन्न कदाचन ।। ७५ ।।

जो काम कर्त्तव्य कर्म से विपरीत हो वह कर्म बुद्धिमान साधक कभी नहीं करे ।

पृष्ठऽस्याः साधनाया राजतेऽतितरां सदा ।
मनस्वीसाधकानां हि बहूनां साधनाबलम् ।। ७६ ।।

इस साधना के पीछे आदि क़ाल से लेकर अब तक के असंख्य मनस्वी साधकों को साधन बल शोभित है ।

अल्पीयस्या जगत्येव साधनायस्तु साधकः ।
भगवत्यास्तु गायत्र्याः कृपां प्राप्नोत्यसंशयम् ।। ७७ ।।

थोड़ी ही श्रम साधना से साधक भगवती की कृपा को प्राप्त कर लेता है ।

प्राणायामे जपन् लोकः गायत्रीं ध्रुवमाप्नुते ।
निग्रहं मनसश्चैव चेन्द्रियाणां हि सम्पदाम् ।। ७८ ।।

मनुष्य निश्चय से प्राणायाम में गायत्री को जपत हुआ मन का निग्रह और इन्द्रियों की सम्पत्ति को प्राप्त करता है ।

मन्त्रं विभज्य भागेषु चतुर्थेषु न बुधरतदा ।
रेचकं कुम्भकं वाह्यं पूरकं कुम्भकं चरेत् ।। ७९ ।.

बुद्धिमान मन्त्र को चार भागों में विभक्त करके तब रेचक, कुम्भक, पूरक और वाह्य कुम्भक को करे

यथा या पूर्वस्थितेनैव न द्रव्यं कार्यं साधकम् ।
महासाधनतोऽप्यस्मान्नाज्ञो लाभं तथाप्नुते ।। ८० ।।

जिस प्रकार धन पास में रखे रहने से ही कार्य सिद्ध नहीं हो जाता, उसी प्रकार से मूर्ख मनुष्य इस महा साधन से भी लाभ प्राप्त नहीं कर सकता ।

साधकः कुरुते यस्तु मन्त्रशक्तेरपव्ययः ।
तं विनश्यति सा शक्तिः समूलं नात्र संशयः ।। ८१ ।.

जो साधक मन्त्र शक्ति का दुरुपयोग करता है उसको वह शक्ति समूल नष्ट कर देती है ।

सततं साधनाभिर्यो याति साधकतां नरः ।
स्वप्नावस्थासु जायन्ते तं दिव्या अनुभूतयः ।। ८२ ।।

जो मनुष्य निरन्तर साधन करने से साधकत्व को प्राप्त हो जाता है उस व्यक्ति को स्वप्नावस्था में दिव्य अनुभव होते हैं ।

सकलः साधको लोके प्राप्नुतेऽनुभवान् नवान् ।
चित्रान् दशविधाश्चैव साधनासिद्धयन्तरम् ।। ८३ ।।

संसार में सफल साधक नवीन और विचित्र प्रकार के अनुभवों को साधना की सिद्धि के पश्चात् प्राप्त करता है ।

भिन्नाभिर्विधिर्बुद्धया भिन्नासु कर्यपंक्तिषु ।
गायत्र्या सिद्ध मन्त्रस्य प्रयोगः कुरुते बुधा ।। ८४ ।।

बुद्धिमान पुरुष भिन्न-भिन्न कार्यों में गायत्री के सिद्ध हुए मन्त्र का प्रयोग भिन्न-भिन्न तरीकों से विवेकपूर्वक करता है ।

चतुर्विंशति वर्णैर्यो गायत्री गुम्फिता श्रुतौ ।
रहस्यमुक्तं तत्रापि विज्ञैः रहस्य वादिभिः ।। ८५ ।।

वेद में जो गायत्री चौबीस अक्षरों में गूँथी गई है, विद्वान् लोग इन चौबीस अक्षरों से गूँथने में बड़े-बड़े रहस्यों को छिपा बतलाते हैं ।

रहस्यमुपवीतस्य गुह्याद्गुह्यतरं हि यत् ।
अन्तर्हितं तु तत्सर्वं गायत्र्यां विश्वमातरम् ।। ८६ ।।

यज्ञोपवीत का जो गुह्य से गुह्य रहस्य है वह सब विश्वमाता गायत्री में अन्तर्हित है ।

अयमेव गुरोर्मन्त्रः यः सर्वोपरि राजते ।
विन्दौ सिन्धुरिवास्मिस्तु ज्ञानविज्ञानमाश्रितम् ।। ८७ ।।

यह गायत्री ही गुरु-मन्त्र है, जो सर्वोपरि विराजमान है । एक बिन्दु में सागर के समान इस मन्त्र में समस्त ज्ञान और विज्ञान आश्रित है ।

आभ्यन्तरे तु गायत्र्या अनेके योग सञ्चयाः ।
अन्तर्हिता विराजन्ते कश्चिदत्त न संशयः ।। ८८ ।।

गायत्री के अन्तर्गत अनेक योग समूह छिपे हुए रहते हैं, इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है ।

धारयन् हृदि गायत्रीं साधको धौत कल्मिषः ।
शक्तीरनुभवत्युग्राः स्वस्मिनात्मन्यलौकिकाः ।। ८९ ।।

पाप रहित साधक हृदय में गायत्री को धारण करता हुआ अपनी आत्मा में अलौकिक तीव्र शक्तियों का अनुभव करता है ।

वार्तास्वेतादृशास्तस्मै भासन्तेऽल्पप्रयासतः ।
यास्तु साधारणो लोको ज्ञातुमर्हति नैव हि ।। ९० ।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उसको थोड़े ही प्रयास से ऐसी-ऐसी बातें विदित हो जाती हैं, जिन बातों को सामान्य लोग जानने में समर्थ नहीं होते ।

एतादृशास्तु जायन्ते तन्मनस्यनुभूतयः ।
यादृशान हि दृश्यन्ते मानवेषु कदाचन ।। ९१ ।।

उसके मन में इस प्रकार के अनुभव होते हैं, जैसे अनुभव साधारण मनुष्यों में कभी भी नहीं देखे जाते ।

प्रसादं ब्रह्मज्ञानस्य येऽयेभ्यी वितरन्त्यपि ।
आसादयन्ति ते नूनं मानवाः पुण्यमक्षयम् ।। ९२ ।।

ब्रह्मज्ञान के प्रसाद को जो लोग दूसरों को भी बाँटते हैं, वे मनुष्य निश्चय ही अक्षय पुण्य को प्राप्त करते हैं ।

गायत्री संहिता ह्येषा परमानन्ददायिनी ।
सर्वेषामेव कष्टानां वारणायास्त्यलं भुवि ।। ९३ ।।

यह ''गायत्री संहिता'' परम आनन्द को देने वाली है । समस्त कष्टों के निवारण के लिये पृथ्वी पर यह अकेली ही पर्याप्त है ।

श्रद्धया ये पठन्त्येनां चिन्तयन्ति च चेतसा ।
कृपायां वावगृहणन्ति भववाधास्तरन्तिते ।। ९४ ।

जो लोग इसको श्रद्धा से पढ़ते हैं और ध्यानपूर्वक इसका चिन्तन, मनन करते हैं, और अपने विचार एवं कार्यों को इसके अनुकूल बना लेते हैं, वे लोग भव-बाधाओं से तर जाते हैं ।

गायत्री-तन्त्र

योग-साधना के दो मार्ग हैं, एक दक्षिण मार्ग दूसरा वाम मार्ग । दक्षिण मार्ग का आधार यह है कि-''विश्वव्यापी ईश्वरीय शक्तियों को आध्यात्मिक चुम्बकत्व से खींच कर अपने में धारण किया जाय, सतोगुण को बढ़ाया जाय और अन्तर्जगत में अवस्थित पञ्च कोष, सप्त प्राण, चेतना चतुष्टय, षटचक्र एवं अनेक उपचक्रों, मात्रिकाओं, ग्रंथियों भ्रमरों, कमलों, उपत्यिकाओं को जा१०१०ऽठकरके आनन्दायिनी अलौकिक शक्तियों का आविर्भाव किया जाय ।''

वाम मार्ग का आधार यह है कि-''दूसरे प्राणियों के शरीरों में निवास करने वाली शक्ति को इधर से उधर हस्तान्तरित करके एक जगह विशेष मात्रा में शक्ति संचित कर ली जाय और उस शक्ति का मनमाना उपयोग किया जाय ।''

तांत्रिक साधनाओं की कार्य-पद्धति इसी आधार पर चलती है । किन्हीं पशुओं का वध करके उनके पाँच प्राणों का उपयोगी भाग खींच लिया जाता है । जैसे शिकारी लोग सुअर के शरीर में निकलने वाली चर्बी को अलग से निकाल लेते हैं वैसे ही तन्त्र साधक उस वध होते हुए पशु के सप्त प्राणों में से पाँच प्राणों को चूस जाते हैं और उससे अपनी शक्ति बढ़ा लेते है । बकरे, भेंसे, मुर्गे आदि के बलिदानों का आधार यही है । मृत मनुष्यों के शरीर में एक सप्ताह तक कुछ उपचक्र एवं ग्रन्थियों में चैतन्यता बनी रहती है । श्मशान भूमि में रह कर मुर्दों द्वारा शव साधना करने वाले अघोरी उन मृतकों से भी शक्ति चूसते हैं । देखा जाता है कि कई अघोरी मृत बालकों की लाशों को जमीन में से खोद ले जाते हैं, मृतकों की खोपड़ी लिए फिरते हैं, चिताओं पर भोजन पकाते हैं । यह सब इसी प्रयोजन के लिए किया जाता है । कुछ तांत्रिक कोमल प्रकृति के वयस्क स्त्री, पुरुषों या छोटे बालकों पर अपना अदृश्य दाँत गढ़ा कर उनका प्राण चूस जाते हैं । ऐसे अघोरी, कापालिक, रक्तबीज, वैतालिक, ब्रह्म राक्षस पुरुष तथा डाकिनी, शाकिनी, कपाल कुण्डली, सर्पसूत्रा आदि स्त्रियाँ अब भी गुप्त प्रकट रूप से जहाँ-तहाँ देखी जाती हैं ।

इस प्रकार मनुष्य या पशु-पक्षियों के शरीर से चूँसी हुई शक्ति अधिक समय तक ठहरती नहीं, उसका तात्कालिक कार्य के लिये ही उपयोग हो सकता है । किसी पर मारण प्रयोग करना होता है, कृत्या, घात, चौकी या मूँठ चलानी होती है तो उसके लिए किन्हीं प्राणियों का बलिदान आवंश्यक हो जाता है । तांत्रिकों का आधार ही दूसरे की शक्ति का अपहरण करके अपना काम चलाना है । इसी प्रकार उनके जितने भी काम होते हैं वे इसी प्रकार एक स्थान से शक्ति का अपहरण करके दूसरे पर फेंकने के आधार पर होते हैं ।

किसान और डाकू में जो अन्तर है वही अन्तर दक्षिणमार्गी योगी और वाममार्गी तांत्रिक में है । किसान अपने खेत में बाहर से लाकर बीज, खाद और पानी डालता है, परिश्रम करके उसकी जुताई, नराई, गुड़ाई, सिंचाई, कटाई करता है तब फसल

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

का लाभ उठाता है । डाकू इन सब झंझटों में नहीं पड़ता , वह किसी भी रास्ता चलते को लूट लेता है । किसान की अपेक्षा डाकू अधिक नफे में रहता मालूम देता है । वह एक दिन में अमीर बन जाता है और रईसी शान के साथ दौलत खर्च करता है । किसान वैसा नहीं कर सकता । कारण यह है कि उसे धन कमाने में काफी समय, श्रम, धैर्य एवं सावधानी से काम लेना पड़ता है । उसे खर्च करते समय दर्द लगता है, पर डाकू की स्थिति दूसरी है, वह लूटकर लाता है तो होली की तरह उसे फूँक भी सकता है । तांत्रिक चमत्कारी होते हैं । थोड़े ही दिनों के प्रयत्न में वे प्रेत, पिशाच सिद्ध कर लेते हैं और उनके द्वारा अपना आतङ्क फैलाते हैं । किसान और डाकू की कोई तुलना नहीं, इसी प्रकार योगी और तांत्रिक की भी समता नहीं हो सकती ।

गायत्री द्वारा भी तांत्रिक प्रयोग हो सकते हैं । जो कार्य संसार के अन्य किसी मन्त्र से होते हैं, वे गांयत्री से भी हो सकते हैं । तन्त्र-साधना भी हो सकती है । पर हम अपने अनुयायियों को उस ओर न जाने की सलाह देते हैं, क्योंकि स्वार्थ-साधना का कितना ही बड़ा प्रलोभन उस दिशा में क्यों न हो पर अनैतिक एवं धर्म-विरुद्ध कार्य होने से उसका अन्तिम परिणाम अच्छा नहीं होता ।

तन्त्र का शक्ति-स्रोत दैवी, ईश्वरीय शक्ति नहीं वरन् भौतिक शक्ति है, प्रकृति के सूक्ष्म परमाणु अपनी धुरी पर द्रुत गति से भ्रमण करते हैं, तब उनके घर्षण से ऊष्मा पैदा होती है उसका नाम काली या दुर्गा है । इस ऊष्मा को प्राप्त करने के लिए अस्वाभाविक, उल्टा, प्रतिगामी मार्ग ग्रहण करना पड़ता है । जल के बहाव को रोका जाय तो उस प्रतिरोध से एक शक्ति का उद्भव होता है । तांत्रिक वाम मार्ग पर चलते हैं, फलस्वरूप काली शक्ति का प्रतिरोध करके अपने को एक तामसिक पञ्चभौतिक बल से सम्पन्न कर लेते हैं । उल्टा आहार, उल्टा विहार, उल्टी दिनचर्या, उल्टी गतिविधि सभी कुछ उनका उल्टा होता है ।

द्रुत गति से एक नियत दिशा में दौड़ती हुई रेल, मोटर, नदी, वायु आदि के आगे आकर उसकी गति को रोकना और उस प्रतिरोध से शक्ति प्राप्त करना यह खतरनाक खेल है । हर कोई इसे कर भी नहीं सकता, क्योंकि प्रतिरोध के समय झटका लगता है । प्रतिरोध जितना ही कड़ा होगा झटका भी उतना ही जबरदस्त लगेगा । तन्त्र-साधक जानते हैं कि जन-कोलाहल से दूर एकान्त खण्डहरों, श्मशानों में अर्धरात्रि के समय जब उनकी साधना का मध्यकाल आता है तब कितने रोमांचकारी भय सामने आ उपस्थित होते हैं । गगन चुम्बी राक्षस, विशालकाय सर्प, लाल नेत्रों वाले शूकर और महिष, छुरी से दाँतों वाले सिंह साधक के आस-पास जिस रोमाञ्चकारी भयङ्करता से गर्जन-तर्जन करते हुए कुहराम मचाते और आक्रमण करते हैं । उनसे न तो डरना आरै न विचलित होना साधारण काम नहीं है । साहस के अभाव में यदि इस प्रतिरोधी प्रतिक्रिया से साधक भयभीत हो जाय तो उसके प्राण संकट में पड़ सकते हैं । ऐसे अवसरों पर कई व्यक्ति पागल, बीमार, गूँगे, बहरे, अन्धे हो जाते हैं, कइयों को प्राणों तक से हाथ धोना पड़ता है । इस मार्ग में साहसी और निर्भीक प्रकृति के मनुष्य ही सफलता पाते हैं ।

तांत्रिक साधन गुप्त रखे जाते हैं । उनका सार्वजनिक रूप से प्रकटीकरण करना निषिद्ध है, क्योंकि अधिकारी अनधिकारी का निर्णय किये बिना वाम मार्ग में हाथ डालना, आग से खेलना है । पग-पग पर आने वाली कठिनाइयों का समाधान अनुभवी पथ-प्रदर्शक ही कर सकता है । बिना गुरु के, अनधिकारी व्यक्ति तन्त्र-साधना करे तो परिणाम कैसा होगा इसकी कल्पना करना कुछ विशेष कठिन नही है । एक नौसिखिया एक बार ऐसी ही विपत्ति में फँस गया । प्रतिरोध की प्रतिक्रिया को वह सहन नहीं कर सका, फलस्वरूप उसकी छाती में रक्त-वाहिनी तीन नाड़ियाँ फट गईं । मुख, नाक और मल-मार्ग से खून बह रहा था, ज्वर चढ़ा हुआ था और शरीर काँप रहा था, भय से भरी हुई चीत्कारें बार-बार मुख से निकलती थीं । हमने उसका उपचार किया, कई दिन में उसका कष्ट दूर हो पाया और पूर्ण स्वस्थ होने में तो उसे प्रायः सात मंहीने लग गये ।

गायत्री-तन्त्र द्वारा प्रकृति के परमाणुओं के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

घर्षण की ऊष्मा (काली) का आह्वान होता है । प्राणियों के शरीर में रहने वाली विद्युत को अत्यधिक उत्तेजित करके उत्तेजना समय की बढ़ी हुई शक्ति को भी अपहरण कर लिया है । प्राण बलिदान या आंशिक रक्त माँस आदि के प्रतिघात करते समय प्राणी की अन्तःचेतना व्याकुलता, पीड़ा एवं उत्तेजना की स्थिति में होती है उस अवसर से तांत्रिक लोग लाभ उठा लेते हैं ।

तन्त्र के चमत्कारी प्रलोभन असाधारण हैं । दूसरों पर आक्रमण करना तो उसके द्वारा बहुत ही सरल है । किसी को बीमारी, पागलपन, बुद्धिभ्रम, उच्चाटन उत्पन्न कर देना, प्राणघातक सङ्कट में डाल देना आसान है । सूक्ष्म जगत में भ्रमण करती हुई किसी ''चेतना ग्रन्थि'' को प्राणवान बनाकर उसे प्रेत, पिशाच, बेताल, भैरव, कर्ण पिशाचनी, छाया पुरुष आदि के रूप में सेवक की तरह काम लेना, सुदूर देशों से अजनबी चीजें मँगा देना, जेब की चीजें या अज्ञात व्यक्तियों के नाम पते बता देना तांत्रिकों के लिए सम्भव है । आगे चलकर वेष बदल लेना या किसी वस्तु का रूप बदल देना भी उनके लिए सम्भव है । इसी प्रकार की अनेक विलक्षणताएँ उनमें देखी जाती हैं जिससे लोग बहुत प्रभावित होते हैं और उनकी भेंट पूजा भी खूब होती है । परन्तु स्मरण रखना चाहिए कि इन शक्तियों का स्रोत परमाणुगत ऊष्मा (काली) हीं है जो परिवर्तनशील है । यदि थोड़े दिनों साधना बन्द रखी जाय या प्रयोग छोड़ दिया जाय तो उस शक्ति का घट जाना या समाप्त हो जाना अवश्यम्भावी है ।

तन्त्र द्वारा कुछ छोटे-मोटे लाभ भी हो सकते हैं । किसी के तांत्रिक आक्रमण को निष्फल करके किसी निर्दोष की हानि को बचा देना ही सदुपयोग है । तांत्रिक विधि से 'शक्तिपात' करके अपनी उत्तम शक्तियों का कुछ भाग किसी निर्बल मन वाले को देकर उसे ऊँचा उठा देना भी सदुपयोग ही है और भी कुछ ऐसे ही प्रयोग हैं जिन्हें विशेष परिस्थिति में काम में लाया जाय तो वह भी सदुपयोग ही कहा जायगा । परन्तु असंस्कृत मनुष्य इस तमोगुण प्रधान शक्ति का सदा सदुपयोग ही करेंगे इसका कुछ भरोसा नहीं । स्वार्थ-साधना का अवसर हाथ में आने पर उनका लोभ छोड़ना किन्हीं विरलों का ही काम होता है ।

तन्त्र अपने आप में कोई बुरी चीज नहीं है । वह एक विशुद्ध विज्ञान है । वैज्ञानिक लोग यन्त्रों और रासायनिक पदार्थों की सहायता से प्रकृति की सूक्ष्म शक्तियों का उपयोग करते हैं । तांत्रिक अपने अन्तर्जगत को ही ऐसी रासायनिक एवं यान्त्रिक स्थिति में ढाल लेता है कि अपने शरीर और मन को एक विशेष प्रकार से संचालित करके प्रकृति की सूक्ष्म शक्तियों का मनमाना उपयोग करे । इस विज्ञान का विद्यार्थी कोमल परमाणुओं वाला होना चाहिए साथ ही साहसी प्रकृति का भी । कठोर बनावट और कमजोर मन वाले इस दिशा में अधिक प्रगति नहीं कर पाते । यही कारण है कि पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियाँ अधिक आसानी से सफल तांत्रिक बनते देखी गई हैं । छोटी-छोटी प्रारम्भिक सिद्धियाँ तो उन्हें स्वल्प प्रयत्न से ही प्राप्त हो जाती हैं ।

तन्त्र एक स्वतन्त्र विज्ञान है । विज्ञान का दुरुपयोग भी हो सकता है और सदुपयोग भी । परन्तु इसका आधार गलत और खतरनाक है । शक्ति प्राप्त करने के उद्गम स्रोत अनैतिक, अवांछनीय हैं; साथ ही प्राप्त सिद्धियाँ भी अस्थायी हैं । आमतौर से तांत्रिक घाटे में रहता है, उससे संसार का जितना उपकार हो सकता है उससे अधिक चमत्कार होता है इसलिए चमत्कारी होते हुए भी इस मार्ग को निषिद्ध एवं गोपनीय ठहराया गया है । अन्य समस्त तन्त्र साधनों की अपेक्षा गायत्री का वाम मार्ग अधिक शक्तिशाली है । अन्य सभी विधियों की अपेक्षा इस विधि से मार्ग सुगम पड़ता है फिर भी निषिद्ध वस्तु त्याज्य है । सर्वसाधारण के लिए तो उससे दूर रहना ही उचित है ।

यों तन्त्र की कुछ सरल विधियाँ भी हैं, अनुभवी पथ-प्रदर्शक इन कठिनाइयों का मार्ग सरल बना सकते हैं । हिंसा, अनीति एवं अकर्म से बचकर ऐसे लाभों के लिए साधन करा सकते हैं, जो व्यावहारिक जीवन में उपयोगी हों आरै अनर्थ से बचकर स्वार्थ-साधन होता रहे । पर यह लाभ तो दक्षिणमार्गी साधना से भी हो सकते हैं । जल्दबाजी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

का प्रलोभन छोड़कर यदि धैर्य और सात्विक साधन किए जायँ तो उनके लाभ भी कम नहीं हैं । हमने दोनों मार्गों का लम्बे समय तक साधन करके यही पाया है कि दक्षिणमार्ग का राज-पथ ही सर्व सुलभ है ।

गायत्री द्वारा साधित तन्त्र-विद्या का क्षेत्र बड़ा विस्तृत है । सर्प-विद्या, प्रेत विद्या, भविष्य-ज्ञान अदृश्य वस्तुओं का देखना, परकाया प्रवेश, घात-प्रतिघात, दृष्टि बन्ध, मारण, उन्मादीकरण, वशीकरण, विचार सन्दहीन, मोहनतन्त्र, रूपान्तरण, विस्तृत, सन्तान सुयोग, छाया पुरुष, भैरवी, अपहरण, आकर्षण, अभिकर्षण आदि अनेकों ऐसे-ऐसे कार्य हो सकते हैं, जिनको अन्य किसी भी तांत्रिक प्रक्रिया द्वारा किया जा सकता है । परन्तु यह स्पष्ट है कि तन्त्र की प्रणाली सर्वोपयोगी नहीं है । उसके अधिकारी कोई विरले ही होते हैं ।

दक्षिणमार्गी वेदोक्त, योग सम्मत गायत्री-साधना, किसान द्वारा अन्न उपजाने के समान धर्म-सङ्गत, स्थिर लाभ देने वाली और लोक-परलोक में सुख-शान्ति देने वाली है । पाठकों का वास्तविक हित इसी राज-पथ के अवलम्बन में है ।

गायत्री का गोपनीय वाममार्ग

न देयं परं शिष्येभ्योह्यभक्तेभ्यो विशेषतः ।
शिष्येभ्यो भक्ति युक्तेभ्योह्यन्यथामृत्युमाप्नुयात् ।।

दूसरे के शिष्य के लिये विशेषकर भक्ति रहित के लिये यह मन्त्र कभी न देना चाहिये । इसकी दीक्षा भक्तियुक्त शिष्य को ही देनी चाहिये अन्यथा मृत्यु की प्राप्ति होती है ।

उपर्युक्त प्रमाण में यह बताया गया है कि तन्त्र एक गुप्त विज्ञान है । उसकी सब बातें सब लोगों के सामने प्रकट करने योग्य नहीं होती । कारण यह है कि तांत्रिक साधनाएँ बड़ी क्लिष्ट होती हैं । वे उतनी ही कठिन हैं, जितना कि समुद्र की तली में घुसकर मोती निकालना । गोताखोर लोग जान को जोखिम में डालकर पानी में बड़ी गहराई तक नीचे उतरते हैं, तब बहुत प्रयत्न के बाद उन्हें कुछ मोती हाथ लगते हैं । परन्तु इस क्रिया में अनेक बार उन्हें जल-जन्तुओं का सामना करना पड़ता है । नट अपनी कला दिखाकर लोगों को मुग्ध कर देता है और प्रशंसा भी प्राप्त करता है, परन्तु यदि एक बार चूक कर जाय तो खैर नहीं ।

तन्त्र प्रकृति से संग्राम करके उसकी रहस्यमय शक्तियों का विजय लाभ करना है इसके लिये असाधारण प्रयत्न करने पड़ते हैं और उनकी असाधारण ही प्रतिक्रिया होती है । पानी में जोर से डेला फेंकने पर वहाँ का पानी जोर से उछाल खाता है और एक छोटे विस्फोट जैसी स्थिति दृष्टिगोचर होती है । तांत्रिक साधक भी एक रहस्यमय साधन द्वारा प्रकृति के अन्तराल में छिपी हुई शक्ति को प्राप्त करने के लिये अपनी साधना का एक आक्रमण करता है । उसकी एक प्रतिक्रिया होती है, उस प्रतिक्रिया से कभी-कभी साधक के भी आहत हो जाने का भय रहता है ।

जब बन्दूक चलाई जाती है तो जिस समय नली में से गोली बाहर निकलती है, उस समय वह पीछे की ओर एक झटका मारती है और भयंकर शब्द करती है । यदि बन्दूक चलाने वाला कमजोर प्रकृति का हो तो उस झटके से पीछे की ओर गिर सकता है, धड़ाके की आवाज से डर या घबरा सकता है । चन्दन के वृक्षों के निकट सर्पों का निवास रहता है, गुलाब के फूलों में काँटे होते हैं, शहद प्राप्त करने के लिये मक्खियों के डङ्क का सामना करना पड़ता है, सर्पमणि प्राप्त करने के लिये भयङ्कर सर्प से और गजमुक्ता प्राप्त करने के लिये मदोन्मत्त हाथी से जूझना पड़ता है । तांत्रिक साधनाएँ ऐसे ही विकट पुरुषार्थ हैं जिनके पीछे खतरों की शृंखला जुड़ी रहती है । यदि ऐसा न होता तो उन लाभों को हर कोई आसानी से प्राप्त कर लिया करता ।

तलवार की धार पर चलने के समान तंत्र विद्या के कठिन साधन हैं । उसके लिए साधक में पुरुषार्थ, साहस, दृढ़ता, निर्भयता और धैर्य पर्याप्त होना चाहिए । ऐसे व्यक्ति सुयोग्य अनुभवी गुरु की अध्यक्षता में यदि स्थिर चित्त से श्रद्धा पूर्वक साधना करें तो वे अभीष्ट साधन में सिद्धि प्राप्त कर सकते हैं । परन्तु यदि निर्बल मनोभूमि के डरपोक, संदेह स्वभाव वाले, अश्रद्धालु, अस्थिरमति किसी साधन

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

को करें और थोड़ा सा संकट उपस्थित होते ही उसे छोड़ भागें तो वैसा ही परिणाम होता है जैसा किसी सिंह या सर्प को पहले तो छेड़ा जाय पर जब वह क्रुद्ध होकर अपनी ओर लपके तो लाठी डंडा फेंक कर बेतहाशा भागा जाय । इस प्रकार छेड़कर भागने वाले मनुष्य के पीछे वह सिंह या सर्प अधिक क्रोध पूर्वक, अधिक साहस के साथ दौड़ेगा आरै उसे पछाड़ देगा । देखा गया है कि कई मनुष्य किसी भूत पिशाच को वश में करने के लिए तांत्रिक साधना करते हैं, जब उनकी साधना आगे बढ़ चलती है तो ऐसे भय सामने आते हैं जिनसे डर कर वह मनुष्य अपना साधन छोड़ बैठे । यदि उस साधक में साहस नहीं होता और किसी भयंकर दृश्य को देखकर डर जाता है तो डराने वाली शक्तियाँ उसके ऊपर हमला बोल देती है फलस्वरूप उसको भयंकर क्षति का सामना करना पड़ता है । कई व्यक्ति भयंकर बीमार पड़ते हैं, कई पागल हो जाते हैं, कई तो प्राणों तक से हाथ धो बैठते हैं ।

तन्त्र एक उत्तेजनात्मक उग्र प्रणाली है । इस प्रक्रिया के अनुसार जो साधना की जाती है उससे प्रकृति के अन्तराल में बड़े प्रबल कम्पन उत्पन्न होते हैं, जिनके कारण ताप और विक्षोभ की मात्रा बढ़ती है । गर्मी के दिनों में सूर्य की प्रचण्ड किरणों के कारण जब वायुमण्डल का तापमान बढ़ जाता है तो हवा बहुत तेज चलने लगती हैं । लू, आँधी और तूफान के दौर बढ़ते हैं । उस उग्र उत्तेजना में खतरे बढ़ जाते हैं, किसी को लू सता जाती है, किसी की आँखों में धूल भर जाती है, अनेकों के शरीर फोड़े फुन्सियों से भर जाते हैं । आँधी से छप्पर उड़ जाते हैं, पेड़ उखड़ जाते हैं, कई बार हवा के भँवर पड़ जाते हैं जो एक छोटे दायरे में बड़ी तेजी से नाचते हुए डरावनी शक्ल में दिखाई पड़ते हैं । तन्त्र की साधनाओं से ग्रीष्मकाल का सा उत्ताप पैदा होता है और मनुष्य के वाह्य एवं आन्तरिक वातावरण में एक प्रकार की सूक्ष्म लू एवं आँधी चलने लगती है, जिसकी प्रचण्डता के भयंकर झकझोरे लगते हैं । यह झकझोरे मस्तिष्क के कल्पना तन्तुओं से जब संघर्ष करते हैं तो अनेकों प्रकार की भयंकर प्रतिमूर्तियाँ दृष्टिगोचर होने लगती है । ऐसे अवसर पर डरावने भूत, प्रेत, पिशाच, देव, दानव जैसी आकृतियाँ दीख सकती हैं, दृष्टि-दोष उत्पन्न होने से कुछ का कुछ दिखाई दे सकता है । अनेक प्रकार के शब्द, रूप, रस, गन्ध और स्पर्शों का अनुभव हो सकता है । यदि साधक निर्भयतापूर्वक इस स्वाभाविक प्रतिक्रियाओं को देखकर मुस्कराता न रहे तो उसका साहस नष्ट हो सकता है और उन भयंकरताओं से यदि वह भयभीत हो जाय तो वह भय उसके लिए संकट बन सकता है ।

इस प्रकार की कठिनाई का हर कोई मुकाबला नहीं कर सकता, इसके लिए एक विशेष प्रकार की साहसपूर्ण मनोभूमि होनी चाहिए । मनुष्य दूसरों के विषय में तो परीक्षा बुद्धि रखता है पर अपनी स्थिति का ठीक परीक्षण कोई विरले ही कर सकते हैं । ' 'मैं तन्त्र साधनाएँ कर सकता हूँ या नहीं ।'' इसका निर्णय अपने लिए कोई मनुष्य स्वयं नहीं कर सकता । इसके लिए उसे किसी दूसरे अनुभवी व्यक्ति की सहायता लेनी पड़ती है । जैसे रोगी अपनी चिकित्सा स्वयं नहीं कर सकता, विद्यार्थी अपने आप अपनी शिक्षा नहीं कर सकता वैसे ही तांत्रिक साधनाएँ भी अपने आप नहीं की जा सकती । इसके लिए किसी विज्ञ पुरुष को गुरु नियुक्त करना होता है । वह गुरु सबसे पहले अपने शिष्य की मनोभूमि का परीक्षण करता है और तब उस परीक्षण के आधार पर यह निश्चत करता है कि इस व्यक्ति के लिए कौन साधना उपयोगी होगी और उसकी विधि में अन्यों की अपेक्षा क्या हेर फेर करना ठीक होगा । साधना काल में जो विक्षेप आते हैं उनका तात्कालिक उपचार और भविष्य के लिए सुरक्षा व्यवस्था बताना भी गुरु के द्वारा ही संभव है । इसलिए तंत्र की साधनाएँ गुरु परम्परा से चलती है । सिद्धि के लोभ से अनधिकारी साधक स्वयं, अपने आप-उन्हें ऊट-पटांग ढंग से न करने लग जाय इसलिए उन्हें गुप्त रखा जाता है । रोगी के निकट मिठाइयाँ नहीं रखी जाती, क्योंकि पचाने की शक्ति न होते हुए भी यदि लोभवश उसने उन्हें खाना शुरू कर दिया तो अन्ततः उसी का अहित होगा ।

तन्त्र की साधनाएँ सिद्ध कर लेने के बाद जो शक्ति आती है उसका यदि दुरुपयोग होने लगे तो

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उससे संसार में बड़ी अव्यवस्था फैल सकती है, दूसरों का अहित हो सकता है, अनधिकारी लोगों को अनावश्यक रीति से लाभ या हानि पहुँचाने से उनका अनिष्ट ही होता है । बिना परिश्रम के जो लाभ प्राप्त होता है वह अनेक प्रकार के दुर्गुण पैदा करता है । जिसने जुआ खेलकर दस हजार रुपया कमाया है वह उन रुपयों का सदुपयोग नहीं कर सकता और न उनके द्वारा वास्तविक सुख प्राप्त कर सकता है । इसी प्रकार ईश्वरीय या राजकीय विधि से मिलने वाले स्वाभाविक दण्ड विधान को छोड़कर किसी को मन्त्र बल से हानि पहुँचाई जाती है वह गर्भपात के समान अहितकर ही होती है । तन्त्र में सफल हुआ व्यक्ति ऐसी गड़बड़ी पैदा कर सकता है । इसलिए हर किसी को उसकी साधना करने का अधिकार नहीं दिया गया है । वह तो एक विशेष मनोभूमि के व्यक्तियों के लिए सीमित क्षेत्र में उपयोग होने वाली वस्तु है इसलिए उसका सार्वजनिक प्रकाशन नहीं किया जाता । हमारे घर सिर्फ उन्हीं व्यक्तियों के प्रयोग के लिए होते हैं जो उसमें अधिकारपूर्वक रहते हैं । निजी घरों का उपयोग धर्मशाला की तरह नहीं हो सकता और न हर कोई मनुष्य किसी के घर में प्रवेश कर सकता है । तन्त्र भी अधिकार सम्पन्न मनोभूमि वाले विशेष व्यक्तियों का घर है उसमें हर व्यक्ति का प्रवेश नहीं है । इसलिए उसे नियत सीमा तक सीमित रखने के लिए गुप्त रखा गया है ।

हम देखते हैं कि तन्त्र ग्रन्थों में जो साधना विधियाँ लिखी गई हैं वे बड़ी अधूरी हैं । उनमें दो ही बातें मिलती हैं-एक साधन का फल, दूसरे साधन विधि का कोई छोटा सा अंग । जैसे एक स्थान पर आया है कि 'छोंकर की लकड़ी हवन करने से पुत्र की उत्पत्ति होती है ।' केवल इतने मात्र उल्लेख को पूर्ण समझ कर जो छोंकर की लकड़ियों के गट्ठे भट्ठी में झोंकेगा उसकी मनोकामना पूर्ण नहीं होगी । मूर्ख लोग समझेंगे कि साधना विधि झूठी है । परन्तु इस शैली से वर्णन करने में तंत्रकारों का मन्तव्य यह है कि साधना विधि का संकेत कायम रहे जिससे इस विद्या का लोप न हो , वह विस्मृत न हो जाय । यह सूत्र प्रणाली है । व्याकरण आदि के सूत्र बहुत छोटे-छोटे होते हैं उनमें अक्षर तो दस-दस या पाँच-पाँच ही होते हैं पर अर्थ बहुत भारी छिपा होता है । यह सूत्र, उस विस्तृत अर्थ के एक लघु संकेत मात्र होते हैं जिससे याद कम करना पड़े और समय पड़ने पर पूरी बात याद हो आवे । गुप्त कार्य करने वाले डाकू, षडयन्त्रकारी या खुफिया पुलिस आदि के व्यक्ति भी कुछ ऐसे ही संकेत बना लेते हैं जिनके द्वारा दो चार शब्द कह देने मात्र से एक बड़ा अर्थ समझ लिया जाता है ।

"छोंकर के हवन से पुत्र प्राप्ति" इस संकेत सूत्र में एक भारी विधान छिपा हुआ है, किस मनोभूमि का मनुष्य, किस समय, किन नियमों के साथ, किन उपकरणों के द्वारा, किन मन्त्रों से कितना हवन करे तब पुत्र प्राप्ति हो यह सब विधान उस सूत्र में छिपा कर रखा गया है । छिपाया इसलिए है कि अनधिकारी लोग उसका प्रयोग न कर सकें । संकेत रूप से कहा इसलिए गया है कि कालान्तर में उस तथ्य का विस्मरण न हो जाय, आधार मालूम रहने से आगे की बात का स्मरण हो आना सुगम होता है । तन्त्र-ग्रन्थों में साधना विधियों को गुप्त रखने पर बार-बार जोर दिया गया है, साथ ही कहीं-कहीं ऐसी विधियाँ भी बताई गई हैं जो देखने में बड़ी सुगम मालूम पड़ती है पर उनका फल बड़ा भारी कहा गया है । इस दिशा के अनजान लोगों के लिए या गोरखधंधा बड़ा उलझन भरा है । वे कभी उसे अत्यंत सरल समझते हैं और कभी उसे असत्य मानते हैं । पर वस्तुस्थिति दूसरी ही है । संकेत सूत्रों की विधि से उन साधनाओं का थोड़ा-सा वर्णन करके तन्त्रकारों ने अपनी रहस्यवादी मनोवृत्ति का परिचय दिया है ।

गायत्री के दोनों ही प्रयोग हैं । दक्षिणमार्गी भी और वाममार्गी भी । वह योग भी है और तन्त्र भी । उससे आत्म दर्शन और ब्रह्म प्राप्ति भी होती है तथा सांसारिक उपार्जन-संहार भी । गायत्री योग दक्षिणमार्ग है । उस मार्ग से हमारे आत्म-कल्याण का उद्देश्य पूरा होता है । गायत्री तन्त्र-वाममार्ग है-उससे सांसारिक वस्तुएँ प्राप्त की जा सकती हैं और किसी का नाश भी किया जा सकता है । तन्त्र का विषय गोपनीय है इसलिए गायत्री के तन्त्र ग्रन्थों में ऐसी अनेक साधनाएँ प्राप्त होती हैं जिनमें धन, सन्तान, स्त्री, यश,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आरोग्य, पद प्राप्ति, रोग निवारण, शत्रुनाश, पापनाश, वशीकरण आदि लाभों का वर्णन है और संकेत रूप सें उन साधनाओं का एक अंश बताया गया है । परन्तु यह भले प्रकार स्मरण रखना चाहिए कि इन संक्षिप्त संकेतों के पीछे एक भारी कर्मकाण्ड एवं विधि विधान है । वह पुस्तकों में नहीं वरन् अनुभवी, साधना सम्पन्न व्यक्तियों से प्राप्त होता है ।

तन्त्रो ग्रन्थों से संग्रह करके कुछ संकेत आगे के पृष्ठों पर दिये जाते हैं, जिससे पाठकों को गायत्री द्वारा मिल सकने वाले महान् लाभों का थोड़ा-सा परिचय प्राप्त हो जाय ।

गायत्री-तंत्रम्

नारद उवाच-

नारायण महाभागं गायत्र्यास्तु समन्वितः ।
शान्त्यादिकान्प्रयोगांस्तु वदस्व करुणानिधे ।।

नारद जी ने प्रश्न किया हे नारायण ! गायत्री के शान्ति आदिक प्रयोगों को कहिये ।

नारायण उवाच-

अति गुह्यमिदं पृष्टं त्वया ब्रह्मतनूद्भव ?
न कस्यापि वक्तव्यं दुष्टाय पिशुनाय च ।। २ ।।

यह सुनकर श्री नारायण ने कहा कि हे नारद ! आपने अत्यन्त गुप्त बात पूछी है परन्तु यह किसी दुष्ट या पिशुन (छलिया) से नहीं कहना चाहिये ।

अथ शान्तिर्यथोक्ताभिः समिद्भिर्जुहुयात् द्विजः ।
शमी समिद्भिः शाम्यन्ति भूत रोग ग्रहादयः ।। ३ ।।

द्विजों को शान्ति प्राप्ति करने के लिए हवन करना आवश्यक है तथा शमी की समिधों से हवन करने पर भूत रोग एवं ग्रहादि की शान्ति होती है ।

आर्द्राभिः क्षीरवृक्षस्य समिद्भिः जुहुयात्द्विजः ।
जुहुयाच्छकलैर्वापि भूतरोगादि शान्तये ।। ४ ।।

दूध वाले वृक्षों की आर्द्र समिधों से हवन करने पर ग्रहादि की शान्ति होती है । अतः भूत रोगादि की शान्ति के लिए सम्पूर्ण प्रकार की समिधों से हवन करना आवश्यक है ।

जलेन तर्पयेत्सूर्यं पाणिभ्यां शान्तिमाप्नुयात् ।
जानुदघ्ने जले जप्त्वा सर्वम् दोषशमो भवेत् ।। ५ ।।

सूर्य का हाथों द्वारा जल से तर्पण करने पर शान्ति मिलती है तथा घुटनों पर्यन्त पानी में स्थित होकर जपने से सब दोषों की शान्ति होती है ।

कंठदघ्न जले जप्त्वा मुच्येत् प्राणान्तकाद्भयात् ।
सर्वेभ्यः शान्ति कर्मेभ्यो निमज्याप्सु जपः स्मृतः ।। ६ ।।

कंठ पर्यन्त जल में खड़ा होकर जप करने से प्राणी के नाश होने का भय नहीं रहता इसलिए सब प्रकार की शान्ति प्राप्त करने के लिए जल में प्रविष्ट होकर ही जप श्रेष्ठ है ।

सौघुर्णे राजते वापि पात्रे ताम्रमयेऽपिवा ।
क्षीरवृक्षमयं वापिनिश्छिद्रेमृन्मयेऽपि वा ।। ७ ।।
सहस्त्रं पंच-गव्येन हुत्वा सुज्वलितेऽनले ।
क्षीरवृक्षमयैः काष्ठैः शेषं सम्पादयेत्छनैः ।। ८ ।।

सुवर्ण, चांदी, तांबा, दूध वाले वृक्ष की लकड़ी से बने या छेद रहित मिट्टी के वर्तन में पंचगव्य रखकर दुग्ध वाले वृक्ष की लकड़ियों से प्रज्वालित अग्नि में हवन करना चाहिये ।

प्रत्याहुतिं स्पृशञ्जप्त्वा सहस्त्रं पात्रसंस्थिताम् ।
तेन तं प्रोक्षयेद्देशं कुशैर्मंत्रमनुस्मरन् ।। ९ ।।

प्रत्येक आहुति में पंचगव्य का स्पर्श करना चाहिये । तथा मन्त्रोच्चारण करते हुए कुशाओं द्वारा पंच गव्य ही से सम्पूर्ण स्थान का मार्जन करना चाहिए ।

बलिं प्रदाय प्रयतो ध्यायेत् परदेवताम् ।
अभिचार समुत्पन्ना कृत्या पापं च नश्यति ।। १० ।।

पश्चात् बलि प्रदान कर देवता का ध्यान करना चाहिए । इस प्रकार ध्यान करने अभिचारोत्पन्न कृत्या की शान्ति होती है ।

देव भूत पिशाचाद्या यद्येवं कुरुते वशे ।
गृहं ग्रामं पुरं राष्ट्रं सर्वं तेभ्यो विमुच्यते ।। ११ ।।

देवता भूत और पिशाच आदि को वश में करने के लिए भी उपर्युक्त कही हुई विधि करनी चाहिये । इस प्रकार की क्रिया से देवता, भूत तथा पिशाच सभी अपना-अपना घर, ग्राम, नगर और राज्य छोड़कर वश में हो जाते हैं ।

चतुष्कोणेहि गन्धेन मध्यतो रचितेन च ।
मण्डले शूलमालिख्य पूर्वोक्ते च क्रमेऽपि वा ।। १२ ।।
अभिमन्त्र्य सहस्त्रं तन्निखनेत्सर्वं सिद्धये ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

चतुष्कोण मण्डल में गन्ध से शूल लिखकर और पूर्वोक्त विधि द्वारा सहस्र गायत्री का जप कर गाड़ देने पर सब प्रकार की सिद्धि मिलती है ।

सौवर्णं, रजतं वापि कुम्भं ताम्रमयं स वा ।। १३ ।।
मृन्मयं वा नवं दिव्यं सूत्रवेष्टितमव्रणम् ।
स्थंडिले सैकते स्थाप्य पूरयेन्मंत्रितैजलैः ।। १४ ।।
दिग्भ्य आहृत्य, तीर्थानि चतसृभ्यो द्विजोत्तमैः ।

सोना, चाँदी, तांबा, मिट्टी आदि में से किसी एक का छेद रहित घड़ा लेकर सूत्र से ढक कर बालु-युक्त स्थान में स्थापित कर, श्रेष्ठ ब्राह्मणों द्वारा चारों दिशाओं से लाये हुए जल से भरें ।

एला, चन्दन, कर्पूर, जाती, पाटल, मल्लिकाः ।। १५ ।।
विल्वपत्रं तथा कान्तां, देवी ब्रीहि यवां स्तिलान् ।
सर्षपान् क्षीर वृक्षाणां प्रवालानि च निक्षिपेत् ।। १६ ।।

पुनः इलायची, चन्दन, कपूर, जाती, पाटल, बेला, विल्व पत्र, विष्णुक्रान्ता, देवी (सहदेई) जौ, तिल, सरसों और दुग्ध निकलने वाले वृक्षों के पत्ते लेकर उसमें छोड़े ।

सर्वमेव विनिक्षिप्य कुश कूर्चं समन्वितम् ।
स्नातः समाहितो विप्रः सहस्रं मन्त्रयेदबुधः ।। १७ ।।

इस प्रकार सबको छोड़कर कुशा की कूँची बनाकर तथा उसे भी घड़े में छोड़ कर, स्नान करके एक हजार बार मन्त्र का जप करना चाहिये ।

दिक्षु सौरानधीयीरन् मन्त्रान् विप्रास्त्रयीविदः ।
प्रोक्षयेत्पाययेदेनं नीरं तेनाभिषिंचयेत् ।। १८ ।।

धर्मादि के ज्ञाता ब्राह्मण द्वारा, मन्त्रों से पूतीकृत इस जल से भूत आदि की बाधा से पीड़ित पुरुष के ऊपर मार्जन करे तथा पिलावे तथा गायत्री मन्त्र के साथ इसी जल से अभिषिञ्चन करे ।

भूत रोगाभिचारेभ्यः स निर्मुक्तः सुखी भवेत् ।
अभिषेकेण मुच्येत मृत्योरास्यगतोनरः ।। १९ ।।

इस प्रकार अभिषिञ्चन करने पर मरणासन्न हुआ मनुष्य भी भूत-व्याधि से मुक्त होकर सुखी हो जाता है ।

अवश्यं कारयेद्विद्वान् राजा दीर्घ जिजीविषुः ।
गावो देयाश्च ऋत्विग्भ्य अभिषेके शतं मुने ।। २० ।।
तेभ्यो देया दक्षिणा च यत् किञ्चिच्छक्ति पूर्वकम् ।
जपेद श्वत्थमालभ्य मंदवारे शतं द्विजः ।।२१।।

हे मुने ! अधिक समय तक जीने की इच्छा वाला विद्वान राजा इस कार्य को अवश्य करावे । तथा इस अभिषेक के समय ऋत्विजों को सौ गायों की दक्षिणा देनी चाहिए । या ब्राह्मणों को सन्तुष्ट करने वाली दूसरी दक्षिणा देनी चाहिए । अथवा अपनी शक्ति के अनुसार जो हो सके वह देनी चाहिए ।

भूत रोगाभि चारेभ्योमुच्यते महतो भयात् ।
गुड्च्याः पर्व विच्छिन्नः पयोक्त्ता जुहुयात् द्विजः ।।२२।।

शनिवार के दिन जो ब्राह्मण पीपल के नीचे बैठकर सौ बार जप करता है । वह निस्सन्देह भूत व्याधा आदि से निर्मुक्त होता है ।

एवं मृत्युंजयो होमःसर्व व्याधिविनाशनः ।
आम्रस्य जुहुयात्पत्रैः पयोक्तै र्ज्वरशान्तये ।।२३।।

जो द्विज गुर्च (गिलोय) की समिधों को दूध में डुबा-डुबा कर हवन करता है । वह सम्पूर्ण व्याधाओं से विनिर्मुक्त होता है । ज्वर की शान्ति के हेतु दूध में डाल-डाल कर आम्र-पत्तों से हवन करना चाहिये ।

बचाभिः पयसिक्ताभिः क्षयं हुत्वा विनाशयेत् ।
मधुत्रितय होमेन राजयक्ष्मा विनश्यति ।। २४ ।।

दुग्ध में बच को अभिषिक्त कर हवन करने से क्षय रोग विनष्ट होता है तथा दुग्ध, दधि एवं घृत इन तीनों का अग्नि में हवन करने से राजयक्ष्मा का विनाश होता है ।

निवेद्य भास्करायान्नं पायसं होमं पूर्वकम् ।
राजयक्ष्माभिभूतं च प्राशयेच्छान्तिमाप्नुयात् ।। २५ ।।

दूध की खीर बनाकर सूर्य को अर्पण करे तथा इस हवन से शेष बची हुई खीर को राजयक्ष्मा के रोगी को सेवन करावे तो रोग की शान्ति हो जाती है ।

लताः पर्वसु विच्छिद्य सोमस्य जुहुयातद्विजः ।
सोमे सूर्येण संयुक्ते पयोक्ताः क्षयशान्तये ।। २६ ।।

अमावास्या के दिन सोमलता (छेउटा) की डालों से होम करने पर क्षय रोग का निवारण होता है ।

कुसुमैः शंखवृक्षस्य हुत्वा कुष्ठं विनाशयेत् ।
अपस्मार विनाशः स्यादपामार्गस्य तण्डुलैः ।।२६ ।।

शंख वृक्ष (कौडिला) के पुष्पों से यदि होम किया जाय तो कुष्ठ रोग का विनाश होता है तथा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अपामार्ग के बीजों से हवन करने पर अपस्मार रोग का विनाश होता है ।

क्षीरवृक्ष समिद्धोमादुन्मादोऽपि विनश्यति ।
औदुम्बर समिद्धोमादति मेहः क्षयं व्रजेत् ।। २८ ।।

क्षीर वृक्ष की समिधों से हवन करने पर उन्माद रोग नहीं रहता तथा औदुम्बर (गूलर) की समिधों से हवन किया जाय तो महाप्रमेह विनष्ट होता है ।

प्रमेहं शमयेद्धुत्वा मधुनेक्षु सेन वा ।
मधु त्रितय होमेन नयेच्छान्ति मसूरिकाम् ।। २९ ।।

प्रमेह की शान्ति के लिए मधु अथवा शर्बत से भी हवन करना चाहिये और पैरों में उत्पन्न होने वाला मसूरि का रोग मधुत्रितय (दुग्ध, घृत दधि) से हवन पर नहीं रहता ।

कपिला सर्पिषा हुत्वा नयेच्छान्ति मसूरिकाम् ।
उदुम्बर वटाश्वत्थैर्गोगजाश्वामयं हरेत् ।। ३० ।।

कपिला गौ के घी से हवन करके भी मसूरिका की दूर करना चाहिये । गाय के सभी रोगों की शान्ति के लिए गूलर, हाथी के रोग निवारण के लिए वट और घोड़े के रोग दूर करने के लिए पिप्पल की समिधों से हवन करना लाभदायक है ।

पिपील मधुवल्मीके गृहेजाते शतं शतम् ।
शमी समिद्भिरन्नेन सर्पिषा जुहुयात्द्विजः ।। ३१ ।।

चींटी तथा शहद की मक्खियों द्वारा घर में छत्ता रख लेने पर शमी (छोंकर) की समिधों से हवन करना उत्तम है । साथ ही अन्न और घी भी होना चाहिए ।

तदुत्थं शान्तिमायाति शेषैस्तत्र बलिं हरेत् ।
अभ्रस्तनित भूकम्पो समृद्विवनवेतसः ।। ३२ ।।

बिजली की कड़क से पृथ्वी में कम्प उत्पन्न होता हो तो वनवैत की लकड़ियों से हवन करना चाहिये ।

सप्ताहं जुहुयादेवं राष्ट्रे राज्ये सुखं भवेत् ।
यां दिशं शतजप्तेन लोष्ठेनाभिप्रताड़येत ।। ३३ ।।
ततोऽग्नि मारुतारिभ्यो भयं तस्य विनश्यति ।
मनसैव जपेदेना बद्धो मुच्येत् बन्धनात् ।। ३४ ।।

किसी भी दिशा में यदि दिग्दाह हो तो सात दिन पर्यन्त मन्त्र जप कर उस दिशा में जिधर दाह होता हो ढेला फेंकना चाहिए । इस प्रकार शान्ति उत्पन्न होती है । एक सप्ताह तक इस क्रिया को करने से राज्य और राष्ट्र में सुख की समृद्धि होती है ।

मनसैव जपेदेनां बद्धो मुच्येत् बन्धनात् ।। ३४ ।।

बन्धन में ग्रसित मनुष्य गायत्री-मन्त्र का मन में ही जाप करने पर बन्धन मुक्त हो जाता है ।

भूत रोग विषादिभ्यः व्यथितं जप्त्वा विमोचयेत् ।
भूतादिभ्यो विमुच्येत जलं पीत्वाभिमंत्रितम् ।। ३५

भूत, रोग तथा विष आदि से कथित पुरुष को गायत्री मन्त्र जपना चाहिए ।

कुश से जल को स्पर्श करता हुआ गायत्री-मन्त्र का जप करे फिर इस जल को भूत, प्रेत तथा पिशाच आदि की पीड़ा से पीड़ित मनुष्य को पिला दिया जाय तो वह रोग मुक्त हो जाता है ।

अभिमन्त्र्य शतं भस्मन्यसद्भूतादि शान्तये ।
शिरसा धारयेद्भस्म मंत्रयित्वा तदित्यृचा ।। ३६ ।।

गायत्री-मन्त्र से अभिमन्त्रित भस्म लगाने से भूत-प्रेत की शान्ति होती है । मन्त्र का उच्चारण करते हुए अभिमन्त्रित भस्म को पीड़ित पुरुष के मस्तक और शिर में लगाना चाहिए ।

सर्व व्याधि विनिर्मुक्तः सुखी जीवेत्छतंसमाः ।
अशक्तः कारयेत्शान्तिं विप्रं दत्वा तु दक्षिणाम् ।। ३७ ।।

सामर्थ्यहीन पुरुष भी ब्राह्मण को दक्षिणा देकर तथा गायत्री को जप कर सर्व-व्याधियों से मुक्त होकर शतायु होकर जीता है ।

अथ पुष्टि श्रियं लक्ष्मीं पुष्पैर्हुत्वाप्नुयातद्विजः ।
श्री कामो जुहुयात्पद्मैः रक्तैः श्रियमवाप्नुयात् ।। ३८ ।।

लक्ष्मी की आकांक्षा वाले पुरुष को गायत्री मन्त्रोच्चारण के साथ पुष्पों से हवन करना चाहिए ।

श्री और सौन्दर्य की कामना वाले पुरुष को रक्त कमल के फूलों से हवन करने पर श्री की प्राप्त होती है ।

हुत्वाश्रियमवाप्नोति जाती पुष्पैर्नवैः शुभैः ।
शालितंडुल होमेन श्रियमाप्नोति पुष्कलाम् ।। ३९ ।।

जाती के पुष्पों से हवन किया जाय तो लक्ष्मी प्राप्ति होती है । इसलिए लक्ष्मी की अभिलाषा वाले पुरुष को नवीन जाती के पुष्पों से हवन करना चाहिए । शालि चावलों से हवन करने पर भी लक्ष्मी प्राप्त होती है ।

श्रियमाप्नोति परमां मूलस्य शकलैरपि ।
समिद्भिः विल्व वृक्षस्य पायसेन च सर्पिषा ।। ४० ।।

विल्व वृक्ष की जड़ की समिधाओं से हवन करने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पर लक्ष्मी प्राप्त होती है । अतः लक्ष्मी की प्राप्ति हेतु विल्व वृक्ष के फल, पुष्प तथा पत्र सभी से हवन करना चाहिए ।

परमां श्रियमाप्नोति मूलस्य शकलैरपि ।
विल्व वृक्षस्य समिद्भिःघायसेन च सर्पिषा ।। ४१।।

विल्व वृक्ष की जड़ की समिधाखीर तथा घी इनसे हवन करने पर लक्ष्मी की प्राप्ति होती है ।

शतं-शतं च सप्ताहं हुत्वा श्रियमवाप्नुयात् ।
लाजैस्तु मधुरोपेतैर्होमे कन्या मवाप्नुयात् ।। ४२ ।।

मधु-त्रय मिलाकर लाजा से सात दिन तक सौ-सौ आहुतियाँ देकर हवन करने पर सुन्दर कन्या की प्राप्ति होती है ।

अनेन विधिना कन्या वरमाप्नोति वाञ्छितम् ।

इस विधि से होम करने पर कन्या अति सुन्दर और अभीष्ट वर की प्राप्ति करती है ।

रक्तोत्पलं शतं हुत्वा सप्ताहं हेम प्राप्नुयात् ।। ४३।।

सात दिन पर्यन्त लाल कमल के फूल कमलों से हवन करने पर सुवर्ण की प्राप्ति होती है ।

सूर्य बिंबे जलं हुत्वा जलस्थं हेमवाप्नुयात् ।
अन्नं हुत्वाप्नुयादन्नं व्रीहीन्व्रीहिपतिर्भवेत् ।। ४४।।

सूर्य के मण्डल में जल छोड़ने से जल में स्थित सुवर्ण की प्राप्ति होती है । अन्न का होम करने पर अन्न की प्राप्ति होती है ।

करीषचूर्णैर्वत्सस्य हुत्वापशुमवाप्नुयात् ।
प्रियंगु पायसाज्यैश्च भवेद्धोमादिभिः प्रजा ।। ४५ ।।

बछड़े के गोबर के होम करने से पशुओं की प्राप्ति होती है काकुनि जाडरि घृत के होम से प्रजा की प्राप्ति होती है ।

निवेद्यभास्करायान्नं पायसं होमपूर्वकम् ।
भोजयेत्तदृतुस्नातां पुत्रं परमवाप्नुयात् ।। ४६ ।।

सूर्य को होमपूर्वक पायस अर्पण करके ऋतुस्नान की स्त्री को भोजन कराने से पुत्र की प्राप्ति होती है ।

स प्ररोहाभिरार्द्राभि र्हुत्वाआयुष्यमाप्नुयात् ।
समद्भिः क्षीरवृक्षस्य हुत्वाऽऽयुषमवाप्नुयात् । । ४७ ।।

पलास की समिधों से होम करने पर आयु की वृद्धि होती है । क्षीर वृक्ष की समिधा से हवन किया जाय तो भी आयु की वृद्धि होती है ।

सप्ररोहाभिरार्द्राभि मुक्ताभिमधुरत्रयैः ।
व्रीहीणां च शतं हुत्वा हेम चायुरवाप्नुयात् ।। ४८ ।।

पलास समिधा के होम करने से तथा यवों के होम करने से सुवर्ण और आयु की प्राप्ति होती है ।

सुवर्ण कमलं हुत्वा शतमापुरवाप्नुयात् ।
दूर्वाभिः पयसावापि मधुना सर्पिषापि वा ।। ४९।।

सुवर्ण कमल के होम से पुरुष शतजीवी होता है । दूर्वा, दुग्ध, मधु (शहद) और घी से-

शतं शतं च सप्ताहमपमृत्युं व्यपोहति ।
शमीसमिद्भिरन्नेन पयसा वा च सर्पिषा ।। ५० ।।

सौ-सौ आहुतियाँ देने पर अकाल मृत्यु का भय नहीं रहता । शमी (छोकर) की समिधाओं से, दूध से तथा घी से हवन करने पर भी अपमृत्यु होने का भय नहीं रहता ।

शतं शतं च सप्ताहमपमृत्युं व्यपोहति ।
न्यग्रोध समिधो हुत्वा पायसं होमयेत्ततः ।।५१ ।।

वह वृक्ष की समिधों से सौ-सौ बार आहुति देने से भी अपमृत्यु का भय नहीं रहता ।

शतं-शतं च सप्ताहमपमृत्युं व्यपोहति ।
क्षीराहारो जपेन्मृत्योः सप्ताहद्विजयीभवेत् ।।५२

केवल एक सप्ताह तक दुग्धाहार करके सौ-सौ आहुतियाँ दी जायें तो पुरुष मृत्यु-जित हो जाय ।

अनश्नवाग्यतो जप्त्वा त्रिरात्रं मुच्यते यमात् ।
निमज्जाप्सु जपेदेव सद्योमृत्योर्विमुच्यते ।।५३।।

तीन रात्रि बिना खाने हुए रह कर मन्त्र जप करने पर मृत्यु के भय से ही मुक्त हो जाता है । जल में निमग्न होकर गायत्री जप करने से तत्क्षण ही मृत्यु से विमुक्ति हो जाती है ।

जपेद्विल्वं समाश्रित्य मासं राज्यमवाप्नुयात् ।
विल्वं हुत्वाप्नुयाद्राज्यं समूल फल पल्लवम् ।।५४।।

एक मास तक विल्व वृक्ष के नीचे आसन लगा कर जप करने से राज्य की प्राप्ति होती है । विल्व वृक्ष की जड़ फल, फूल और पत्तों से एक साथ हवन करने पर भी राज्य मिलता है ।

हुत्वा पद्मशतं मासं राज्यमाप्नोत्यकण्टकम् ।
यवागुं ग्राममाप्नोति हुत्वा शालिसमन्वितम् ।।५५ ।।

एक मास पर्यन्त यदि कमल से हवन किया जाय तो राज्य की प्राप्ति होती है । शालि से युक्त यवागू (हलुआ) से हवन किया जाय तो एक ग्राम की प्राप्ति होती है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अश्वत्थ समिधो हुत्वा युद्धादौ जयमाप्नुयात् ।
अर्कस्य समिधो हुत्वा सर्वत्र विजयी भवेत् ।। ५६ ।।

पीपल की समिधाओं से हवन करने पर युद्ध में विजय प्राप्ति होती है । आक की समिधाओं से हवन करने पर सर्वत्र ही विजय होती है ।

संयुक्तैः पयसापत्रैः पुष्पैर्वा वेतसस्य च ।
पायसेन शतं हुत्वा सप्ताहं वृष्टिमाप्नुयात् ।। ५७ ।।

बेंत वृक्ष के फूलों से अथवा पत्र मिलाकर खीर से हवन करने पर वृष्टि होती है ।

नाभिदघ्ने जले जप्त्वा सप्ताहं वृष्टि माप्नुयात् ।
जले भस्म शतं हुत्वा महावृष्टिं निवारयेत् ।। ५८ ।।

नाभि पर्यन्त जल में खड़े होकर एक सप्ताह तक गायत्री जपने से वृष्टि होती है और जल में सौ बार हवन करने से अति वृष्टि का निवारण होता है ।

पलाशैसमवाप्नोति समिद्धिर्ब्रह्मर्चसम् ।
पलाश कुसुमैर्हुत्वा सर्वमिष्टमवाप्नुयात् ।। ५९ ।।

पलाश की समिधों से हवन करने पर ब्रह्मतेज की अभिवृद्धि होती है और पलाश के कुसुमों से हवन करने पर अपने सभी इष्टों की उपलब्धि होती है ।

पयोहुत्वाप्नुयान्मेधोमाज्यं बुद्धिमवाप्नुयात् ।
पीत्वाभिमन्त्र्य सुरसं ब्राह्म्या मेधामवाप्नुयात् ।। ६० ।।

दूध का हवन करने से तथा घृत की आहुतियाँ देने से बुद्धि वृद्धि होती है । मन्त्रोच्चारण करते हुए ब्राह्मी के रस का पान करने से चिर-ग्राहिणी बुद्धि होती है ।

पुष्प होमे भवेद्वासस्तसभिस्तद्विधं पटम् ।
लवणं मधु संमिश्रं हुत्वेष्टं वशमानयेत् ।। ६१ ।।

पुष्प का होम करने पर वस्त्र और डोडों के होम से भी उसी प्रकार का वस्त्र मिलता है । नमक मिले हुए शहद से होम करने पर इष्ट वश में हो जाता है ।

नयेदिष्टं वशं हुत्वा लक्ष्मी पुष्पैर्मधुप्लुतैः ।
नित्यमंजलिनात्मानमभिषिंचनजलेस्थिताः ।। ६२ ।।

लक्ष्मी पुष्पों से मिले हुए शहद का होम करने पर इष्ट वश में होता है । जल में स्थित होकर अंजलि द्वारा अपना अभिषेक करनें पर (अंजलि में जल लेकर अपने ऊपर छिड़कने से) ।

मतिमारोग्यमाष्युष्यन्नित्यं स्वास्थ्यमवाप्नुयात् ।
कुर्याद्विप्रोऽन्यमुद्दिश्य सोऽपि पुष्टिवाप्नुयात् ।। ६३ ।।

मति, निरोगता, चिरायु और स्वास्थ्य की प्राप्ति होती है । यदि ब्राह्मण किसी अन्य पुरुष के लिए करे तो भी वह पुष्टि को प्राप्त होता है ।

चारुविधिना मासं सहस्त्रं प्रत्यहं जपेत् ।
आयुष्यकामः शुचौ देशे प्राप्नुयादायुरुत्तमम् ।। ६४ ।।

उचित रीति से प्रतिदिन एक सहस्त्र जप एक मास तक करने से आयु की वृद्धि होती है तथा बल बढ़ता है तथा यह दीर्घायु और बल उत्तम देश में प्राप्त होता है ।

आयुरारोग्य कामस्तु जपेन्मासद्वयं द्विजः ।
भवेदायुष्यमारोग्यं श्रियै मासत्रयं जपेत् ।। ६५ ।।

आयु और आरोग्य की अभिलाषा युक्त द्विज को दो मास तक इसका जप करना चाहिए । दो मास तक जप करने पर आयु और आरोग्य दोनों ही उपलब्ध होते हैं और लक्ष्मी की कामना के लिए तीन मास तक जप करना आवश्यक है ।

आयुः श्री पुत्र दाराद्याश्चतुर्भिश्च यशोजपात् ।
पुत्रदारायुरारोग्यश्रियं विद्यां च पंचभिः ।। ६६ ।।

चार मास तक जप करने से दीर्घायु श्री (लक्ष्मी), स्त्री और यश की प्राप्ति होती है ।

पुत्र, कलत्र, आयु और आरोग्यता, लक्ष्मी और विद्या प्राप्ति हेतु पाँच मास तक जप करना चाहिये ।

एवमेवोक्त कामार्थं जपेन्मासैः सुनिश्चितैः
एक पादो जपेदूर्ध्ववाहुः स्थित्वा निराश्रयः ।। ६७ ।।

इस प्रकार उपर्युक्त तत्तद् वस्तु की प्राप्ति के लिए निर्दिष्ट मासों तक जप करना आवश्यक है एक पैर पर बिना किसी का आश्रय लिए खड़े रहकर तथा ऊपर को भुजायें लम्बी कर जप करना चाहिये ।

मास शतत्रयं विप्रः सर्वान्कामानवाप्नुयात् ।
एवं शतोत्तरं जप्त्वा सहस्त्रं सर्वमाप्नुयात् ।। ६८ ।।

इस प्रकार एक मास तक ३०० मन्त्र प्रतिदिन जाप करने पर सब कार्यों में सिद्धि प्राप्त करता है । इसी प्रकार ग्यारह सौ नित्य जपने से सब कार्य ही सम्पन्न हो जाते हैं ।। ६८ ।।

रुद्धा प्राणमपानं च जपेन्मासं शतत्रयम् ।
यदिच्छेत्तदवाप्नोति सर्वं स्वाभीष्टमाप्नुयात् ।। ६९ ।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्राण, अपान वायु को रोक कर एक मास तक प्रतिदिन एक सहस्र मन्त्र जपने से इच्छित वस्तु की उपलब्धि होती है ।

एक पादो जपेदूर्ध्वं बाहूरुध्वानिलं वशीः ।
मासं शतमवाप्नोति यदिच्छेदिति कौशिकः ।। ७० ।।

आकाश की ओर भुजायें उठाये हुए एक पैर के ऊपर खड़ा होकर श्वास को यथाशक्ति अवरोध कर एक मास तक १०० मन्त्र प्रतिदिन जपने से अभीष्ट वस्तु की प्राप्ति होती है ।

एवं शतत्रयं जप्त्वा सहस्रं सर्वमाप्नुयात् ।
निमग्ज्याप्सु जपेन्मासं शतमिष्टमवाप्नुयात् ।। ७१ ।।

जल के भीतर डुबकी लगा कर एक मास तक १३०० मन्त्र प्रतिदिन जप करने से सभी अभीष्ट वस्तुओं की प्राप्ति होती है ।

एवं शतत्रयं जप्त्वा सहस्रं सर्वमाप्नुयात् ।
एकपादो जपेदूर्ध्वं बाहू रुद्धो निराश्रयः ।। ७२ ।।

इस प्रकार १३०० मन्त्र प्रतिदिन जप करने से सभी वस्तुओं की प्राप्ति होती है । जपने के समय एक पैर पर खड़े होकर आकाश की ओर बाहु लम्बी किए और बिना किसी का आश्रय लिए खड़ा होना चाहिए ।

नक्तमश्नन्हविष्यान्नं वत्सरादृषितामियात् ।
गीरमोघा भवेदेवं जप्त्वासंवत्सर द्वयम् ।। ७३ ।।

इसी प्रकार एक पैर पर खड़ा होकर रात्रि में हविष्यान्न खाकर एक सप्ताह तक जप करने से मनुष्य ऋषि हो जाता है । इसी प्रकार दो वर्ष तक जप करने से वाणी अमोघ होती है ।

त्रिवत्सरं जपेदेवं भवेत्त्रिकालदर्शनम् ।
आयाति भवगान्देवश्चतुः सम्वत्सरं जपेत् ।। ७४ ।।

तीन वर्ष तक इसी विधि के अनुसार जप करने से मनुष्य त्रिकालदर्शी हो जाता है और यदि चार वर्ष तक इसका जाप उक्त विधि से किये जाय तो भगवान् ही निकट आ जाते हैं ।

पंचभिर्वत्सरैरेवमणिमादि युतोणोभवेत् ।
एवं षड्वत्सरं जप्त्वा कामरूपित्वमाप्नुयात् ।। ७५ ।।

पांच वर्ष पर्यन्त जप करते रहने से अणिमा आदि अष्ट-सिद्धियों की प्राप्ति होती है और छः वर्ष तक एक पाद स्थित होकर ऊर्ध्व बाहु किए जप करने से इच्छा-रूपी जैसा वेश बनाने की इच्छा होने पर वैसा ही रूप धारण कर लेना हो जाता है ।

सप्तभिर्वत्सरैरेवमप्ररत्वममवाप्नुयात् ।
मनुत्वं नवभिः सिद्धिमिंद्रत्वं दशभिर्भवेत् ।। ७६ ।।

सात वर्ष तक जप करने से अमरता प्राप्ति होती अर्थात् देव योनि मिल जाती है । नौ वर्ष पर्यन्त जप करने से मनुष्यत्व और दस वर्ष में इन्द्रासन ही मिल जाता है ।

एकादशभिराप्नोति प्राजापत्यं तु वत्सरैः ।
ब्रह्मत्वं प्राप्नुयादेवं जप्त्वा द्वावश वत्सरान् ।। ७७ ।।

उसी एक आसन के सहारे ग्यारह वर्ष तक जप किया जाय तो मनुष्य प्रजापति के भाव को प्राप्त कर लेता है और बारह वर्ष के पश्चात् तो ब्रह्म पद को ही प्राप्त कर लेता है ।

एतेनैव जिता लोकास्तपसा नारदादिभिः ।
शाकमन्येऽपरे मूलं फलमन्ये पयोऽपरे ।। ७८ ।।

इसी तप से नारद जी ने सम्पूर्ण लोकों को जीत लिया था, जिसमें कुछ शाकाहारी थे, दूसरे कन्द, भोजी, कुछ फल खाने वाले और कुछ जल पर निर्भर रहते थे ।

घृतमन्येऽपरे सोममपरे चरु वृत्तयः ।
ऋषयः भैक्ष्यमश्नंति केचिद्भैक्षाशिनोऽहनि ।। ७९ ।।

कुछ घृताहारी, दूसरे सोमपान करने वाले और कुछ ऐसे थे जो भिक्षान्न पर ही निर्वाह करते थे ।

हविष्यमपरेऽश्नंत कुर्वन्त्येव परं तपः ।
अथ शुद्धयैः रहस्यानां त्रिसहस्रं जपेत्द्विजः ।। ८० ।।

कुछ लोग हविष्य को ही खाते हुए महान् तप करते थे । द्विज को पापों के निवारणार्थ तीन सहस्र जप करना चाहिये ।

मासं शुद्धो भवेत्स्तेयात्सुवर्णस्य द्विजोत्तमः ।
जपेन्मासं त्रि सहस्रं सुरापः शुद्धिमाप्नुयात् ।। ८१ ।।

यदि किसी द्विज के द्वारा सुवर्ण चुरा लिया गया हो तो इस पाप से मुक्त होने के लिए एक मास पर्यन्त जप करना चाहिये । जिस द्विज ने मदिरापान कर लिया हो उसे पूरे एक मास पर्यन्त ३०० मन्त्र प्रतिदिन का जप करना चाहिये ।

मासं जपे त्रिसहस्रं शुचिः स्याद् गुरुतल्पगः ।
त्रिसहस्रं जपेन्मासं कुटीं कृत्वा वने वसन् ।। ८२ ।।

गुरु शय्यागामी को शुद्ध होने के लिऐ एक मास तक ३०० मन्त्र प्रति दिन का जाप करना चाहिये ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जंगल में कुटी बनाकर रह कर और तीन सहस्र प्रति दिन जप करने से-

ब्रह्माहा मुच्यते पापादिति कौशिकभाषितम् ।
द्वादशाहं निमज्याप्सु सहस्त्रं प्रत्यहं जपेत् ।। ८३ ।।

ब्रह्म हत्या करने वाला हत्या रूपी महान पातक से भी विमुक्त हो जाता है । ऐसा विश्वामित्र ने कहा है । बारह दिन तक जल में डुबकी लगा कर एक सहस्र गायत्री का जाप करे तो-

मुच्येरन्नंहसः सर्वे महापातिकिनो द्विजाः ।
त्रिसहस्त्रं जपेन्मासं प्राणनायम्य वाग्यतः ।। ८२ ।।

शुद्ध होकर प्राणायाम करके ३००० मन्त्र एक मास तक जपने से महान पातक से भी छूट जाता है ।

महापातक युक्तोऽपि वा मुच्यते महतोभयात् ।
प्राणायाम सहस्त्रेण ब्रह्महापि विशुध्यति ।। ८५ ।।

महापातकी, ही क्यों न हो वह इस भय से मुक्त हो जाता है । एक सहस्र प्राणायाम करने से ब्रह्मघाती भी विशुद्ध हो जाता है ।

षट् कृत्वोह्याम्य से दूर्ध्वं प्राणापानौ समाहितः ।
प्राणायामो भवेदेष सर्वपाप प्रणाशनः ।। ८६ ।।

छः बार प्राणापान को ऊपर करके जो प्राणायाम किया जाता है वह सब पापों का विनाश करता है

सहस्त्रमभ्यसेन्मासं क्षितिपः शुचितामियात् ।
द्वादशाहं त्रिसहस्त्रं जपेद्धि गोबधे द्विजः ।। ८७ ।।

राजा एकमास तक जपता हुआ पवित्रता को प्राप्त होता है और गोवध हो जाने पर बारह दिन तक ३००० जप प्रतिदिन करे ।

अगम्यागमनेस्तेय हननेभक्ष्य भक्षणे ।
दश सहस्त्रमभ्यस्त गायत्री शोधयेत्द्विजम् ।। ८८ ।।

अगम्य स्थान में गमन करना, चोरी, मारना, अभक्ष वस्तु का भक्षण कर लेना इन दोषों के मिटाने के निमित्त दश हजार गायत्री का जप करना चाहिये । इससे द्विज की शुद्धि होती है ।

प्राणायाम शतं कृत्वा मुच्यते सर्व किल्विषात् ।
सर्वेषामेव पापानां संकरे सति शुद्धये ।। ८९ ।।

सम्पूर्ण पापों से एक साथ ही दूषित होने पर अथवा जब किसी पुरुष को एक साथ ही अनेक पापों ने दोष युक्त बना दिया हो तो सौ प्राणायाम कर इन पापों से मुक्त होना चाहिये ।

सहस्त्रमभ्यसेन्मासं नित्यं जापी बने वसन् ।
उपवास समो जापस्त्रित्रिसहस्त्रं तदित्यृचः ।। ९० ।।

वन में बस कर हजार जप करता हुआ एक मास तक ठहरे इससे सभी किल्विष दूर होते हैं । तीन हजार जप करने से एक उपवास के समान पुण्य मिलता है ।

चतुर्विंशति स्त्रहस्त्रमम्स्ता कृच्छ्र सशिता ।
चतुष्यष्टिः सहस्त्राणि चान्द्रायण समानितु ।। ९१ ।।

चौबीस सहस्र का जप करने से एक कृच्च के समान और चौंसठ सहस्र का फल एक चान्द्रायण व्रत के समान होता है ।

शत कृत्वोऽभ्यसेन्नित्यं प्राणानायाम्य सन्ध्ययोः ।
तदित्यृवमवाप्नोति सर्व पाप क्षयं परम् ।। ९२।।

प्रातः और सायं-दोनों सन्ध्याओं में सौ-सौ बार जप करने से सभी पाप छूट जाते हैं ।

निमज्याप्सु जपेन्नित्यं शतकृत्वास्तदित्यृचम् ।
ध्यायन्देवीं सूर्यरूपां सर्व पापैः प्रमुच्यते ।। ९३ ।।

जल में निमग्न होकर एक शंत गायत्री नित्य जप कर सब पापों से मुक्त होवे । जप करते समय सूर्य-रूपा गायत्री का ध्यान करता रहे ।

इति मे सम्यगाख्याताः शान्ति शुध्यादि कल्पना ।
रहस्याति रहस्याश्च गोपनीयास्त्वया सदा ।। ९४ ।।

नारदजी ! यह हमने आपसे शान्ति शुद्धादि कल्पना रहस्य कहा है । यह रहस्य का भी रहस्य है यह आपको सर्वदा गुप्त रखने योग्य है ।

इति संक्षेपतः प्रोक्तः सदाचारस्य संग्रहः ।
विधिनाचरणादस्य माया दुर्गा प्रसीदति ।। ९५ ।।

यह सदाचार का संग्रह हमने आपको संक्षेप से सुनाया विधिपूर्वक आचरण करने से माया दुर्गा प्रसन्न होती है ।

नैमित्तिकं च नित्यं च काम्यं कर्म यथाविधिः ।
आचरेन्मनुज सोऽयं भुक्ति-मुक्ति फलाप्तिभाक् ।। ९६

नित्य, नैमित्तक कर्म जो यथाविधि करता है वह पुरुष भुक्ति और मुक्ति दोनों का अधिकारी होता है ।

आचारः प्रथमो धर्मो धर्मस्य प्रभुरीश्वरी ।
इत्युक्तः सर्व शास्त्रेषु सदाचार फलं महत् ।। ९७ ।।

आचार को प्रथम धर्म कहा है तथा धर्म की स्वामिनी देवी को कहा है । यही सम्पूर्ण शास्त्रों में

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बतलाया गया है कि सदाचार के समान कोई भी वस्तु महान् फलदायिनी नहीं है ।

आचारवान्सदापूतः सदैवाचारवान्सुखी ।
आचारवान्सदा धन्यः सत्यं सत्यं च नारद ।। ९८ ।।

सदाचारी पुरुष सदा पवित्र और सदा सुखी होता है । नारद ! इसमें असत्य नहीं कि सदाचार युक्त पुरुष धन्य होता है ।

देवी प्रसाद जनकं सदाचार विधानकम् ।
यदपि शृणुयान्मर्त्यो महासम्पति सौख्यभाक् ।। ९९ ।।

जो देवी के प्रसाद सदाचार विधि को सुनता और सुनाता है वह सब प्रकार से धनी होता है ।

जप्यं त्रिवर्ग संयुक्तं गृहस्थेन विशेषतः ।
मुनीनां ज्ञान सिद्धयर्थं यतीनां मोक्षसिद्धये ।। १०० ।।

विशेषतः जप करने वाले गृहस्थों को त्रिवर्ग की प्राप्ति होती है । मुनियों को ज्ञान सिद्धि, तथा यतियों को मोक्ष की सिद्धि होती है ।

त्रिरात्रौ पोषितः सम्यग्घृतं हुत्वा सहस्त्रशः ।
सहस्त्रं लाभमाप्नोति हुत्वाग्नौ खदिरैधन्म् ।। १०१ ।।

तीन रात उपवास करके अच्छी प्रकार से हजार बार घी की आहुति खदिर की समिधाओं से 'अग्नि में' देने पर हजार पति बनने का लाभ होता है ।

पालाशैः समिद्भिश्च धृताक्तैस्तु हुताशने ।
सहस्त्रं लाभमाप्नोति राहु सूर्य समागमे ।। १०२ ।।

घृतयुक्त पलाश की समिधायें अग्नि में सूर्य ग्रहण के समय हवन करने से सहस्त्र पति हो जाता है ।

हुत्वा तु खदिरं वन्हौ घृताक्तं रक्त चन्दनम् ।
सहस्त्र हेममाप्नोति राहु चन्द्र समागमे ।। १०३ ।।

खदिर तथा रक्त चन्दन को घृतयुक्त करके चन्द्र ग्रहण के अवसर पर अग्नि में हवन करने से सहस्त्र स्वर्ण मुद्रा प्राप्त होती हैं ।

रक्त चन्दन मिश्रं तु सघृतं हव्य वाहने ।
हुत्वा गोमयमाप्नोति सहस्त्रं गोमयं द्विजः ।। १०४ ।।

रक्त चन्दन को घी में मिलाकर अग्नि में हजार बार आहुति देने से घी दूध आदि गोमय की कमी नहीं रहती ।

जाती चम्पक राजार्क कुसुमानां सहस्त्रशः ।
हुत्वा वस्त्रमवाप्नोति घृताक्तानां हुताशने ।। १०५ ।।

ज्ञाती, चंपा, राजार्क के हजार फूलों को घृतयुक्त करके अग्नि में हवन करने से वस्त्र प्राप्त होते हैं ।

सूर्य मण्डल विम्बे च हुत्वा तोयं सहस्त्रशः ।।
सहस्त्रं प्राप्नुयाद्धैमं रौप्यमिन्दुमये हुते ।। १०६ ।।

जब सूर्य मण्डल का विम्व मात्र झलक रहा हो अर्थात् सूर्योदय हो रहा हो उस समय हजार बार तर्पण करने तथा सूर्योदय से पूर्व चन्द्रकाल में एक हजार आहुतियाँ देने से सोना, चांदी की प्राप्ति होती है ।

अलक्ष्मी पाप संयुक्ते मल व्याधि विनाशके ।
मुच्येत्सहस्त्र जाप्येन स्नायाद्यस्तु जलेन वै ।। १०७ ।।

जल में स्नान करके एक हजार बार जप करने से अलक्ष्मी, पाप, मल, व्याधि नष्ट हो जाते हैं ।

गो घृतेन सहस्त्रेण लोध्रेण जुहुयाद्यदि ।।
चौराग्नि मारुतोत्थानि भयानि न भवन्ति वै ।। १०८ ।।

लोघ को गो-घृत में मिलाकर हजार बार होमने से चोर, अग्नि, वायु के उपद्रवों का भय नष्ट हो जाता है ।

क्षीराहारो जपेल्लक्षमपमृत्युमपोहति ।
घृताशी प्राप्नुयान्मेधां बहु विज्ञान संचयाम् ।। १०९ ।।

दूध पीकर एक लक्ष गायत्री का जप करने से अकाल मृत्यु का डर चला जाता है । घी खाने वाला मेधा प्राप्त करता है जिससे बहु-विज्ञान का संचय होता है ।

हुत्वा वेतसपत्राणि घृताक्तानि हुताशने ।
लक्षाधिपस्य पदवीं सार्वभौमं न संशयः ।। ११० ।।

वेतपत्रों को घी में मिलाकर अग्नि में हवन करने से लक्षाधिपति की पदवी प्राप्त हो जाती है ।

लाक्षा भस्म होमञ्च कृत्वा हुत्तिष्ठते जलात् ।
आदित्याभि मुखं स्थित्वा नाभि मात्रजले शुचौ ।। १११ ।।

जल में स्थित होकर एक लक्ष भस्म की आहुति दे तथा सूर्य के सम्मुख नाभिमात्र जल में शुद्ध होकर खड़ा रहे ।

गर्भपातादि प्रदराश्चान्ये स्त्रीणां महारुजः ।
नाशमेष्यन्ति ते सर्वे मृतवत्सादि दुखदाः ।। ११२ ।।

गर्भपात, प्रदर, मृतसन्तान की उत्पत्ति आदि स्त्री सम्बन्धी महारोग दूर हो जाते हैं ।

तिलानां लक्ष होमेन घृताक्तानां हुताशने ।
सर्वकाम समृद्धात्मा परं स्थानमवाप्नुयात् ।। ११३ ।।

अग्नि में घी मिलाकर तिलों से एक लाख बार हवन करने से सब कामों की सिद्धि मिलती है तथा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

परम स्थान की प्राप्ति होती है ।

यवानां लक्ष होमेन घृताक्तानां हुताशने ।
सर्व काम समृद्धात्मा परां सिद्धिमवाप्नुयात् ।। ११४ ।।

यवों में घी मिलाकर एक लाख बार अग्नि में आहुति देने से सब कामों की सिद्धि होती है तथा परा सिद्धि प्राप्त होती है ।

घृतस्यऽऽहुतिलक्षेणसर्वान्कामानवाप्नुयात् ।
पंच गव्याशनोलक्षं जपेच्चाति स्मृतिभवेत् ।। ११५ ।।

एक लाख बार घी की आहुति देने से सब कामों की सिद्धि होती है । पंच गव्य पीकर एक लाख जप करने से स्मृति की वृद्धि होती है ।

तदेव ह्यनले हुत्वा प्राप्नोति बहुसाधनम् ।
अन्नादि हवनान्नित्यमन्नाद्यं च भवेत्सदा ।। ११६ ।।

उसी प्रकार अन्नादि से नित्य हवन करने से अन्नादि प्राप्त होता है और अग्नि में आहुति देने से बहुत सा साधन सामान प्राप्त होता है ।

लवणंमधुसंयुक्तं हुत्वासर्ववशी भवेत् ।
हुत्वातु करवीराणि रक्तानि ज्वालयेज्ज्वरम् ।। ११७ ।।

नमक और मधु मिलाकर हवन करने से सब वश में हो जाते हैं । ज्वर नष्ट करने के लिए लाल कनेर के फूलों का हवन करना चाहिए ।

हुत्वा भाल्लातकं तैलं देशादेव प्रचालयेत् ।
हुत्वा तु निम्ब पत्राणि विद्वेष शान्तयेन्नृणाम् ।। ११८ ।।

भिलावे के तैल का हवन करने से उच्चाटन हो जाता है निम्ब पत्रों का हवन करने से विद्वेष उत्पन्न हो जाता है ।

रक्तानां तंदुलाना च घृताक्तानां हुताशने ।
हुत्वा बलमवाप्नोति शत्रुभिर्न स जीयते ।। ११९ ।।

लाल चावलों को घी में मिलाकर अग्नि में हवन करने से बल की प्राप्ति होती है और शत्रुओं का क्षय होता है ।

प्रत्यानयन सिद्धयर्थं मधुसर्पिः समन्वितम् ।
गवांक्षीरं प्रतीप्तेऽग्नौ जुह्वतस्तत्प्रशाम्यति ।। १२० ।।

मधु, सर्पि संयुक्त करके किसी को वापस बुलाने के लिए हवन करना चाहिए । गाय के दूध का अग्नि में हवन करने से शान्ति का निवास हो जाता है ।

ब्रह्मचारी जिताहारो यः सहस्त्रत्रयं जपेत् ।
संवत्सरेणलभते धनैश्वर्यं न संशयः ।। १२१ ।।

आहार जीतकर जो ब्रह्मचारी तीन हजार गायत्री जप करता है वह एक वर्ष में ही धन-ऐश्वर्य आदि प्राप्त कर लेता है इसमें संशय नहीं ।

शमीविल्वपलाशानामर्कस्य तु विशेषतः ।
पुष्पाणां हि समिद्भिश्चैव हुत्वा हेममवाप्नुयात् ।। १२२ ।।

शमी, विल्व, पलाश, और खासतौर से अकौवे के पुष्पों की समिधा बनाकर जो हवन करते हैं उन्हें स्वर्ग की प्राप्ति होती है ।

ब्रह्मयम्बकाद्यन्तंयो हि प्रयत मानसः ।
जपेल्लक्षं निराहारः स तस्य वरदो भवेत् ।। १२३ ।।

आब्रह्म से, त्र्यम्बकं यजामहे तक एक लाख बार निराहार होकर जपने से गायत्री वरदा हो जाती है ।

महारोगा विनश्यन्ति लक्ष जप्यानु ावतः ।।
स्नात्वा शतेन गायत्र्याः शत मंतर्जले जपेत् ।। १२४ ।।

भावना पूर्वक एक लाख जपने से महारोग नष्ट हो जाते हैं तथा सौ बार स्नान करके और जल के भीतर सौ बार जप करने से भी ।

स्वर्णहारी, तैलहारी वस्तु विप्रः सुरां पिवेत् ।.
चन्दन द्वय संयुक्त कर्पूरं तण्डुलं यवम् ।। १२५ ।।

स्वर्ण, तैल की चोरी करने तथा सुरा पीने का पाप नष्ट हो जाता है । दोनों चन्दन, कपूर, चावल, यव-

लवंगं सुफलं चाज्यं सिता चाग्रस्य दारुकैः ।
अयं न्यून विधिः प्रोक्तो गायत्र्याः प्रीति कारकः ।। १२६ ।।

लवंग, नारियल, आज्य, मिश्री, आम की लकड़ी सब गायत्री को प्रिय है ।

क्षीरोदन तिलान्दूर्वाक्षीरद्रुम समिद्वरान् ।
प्रथक् सहस्त्र त्रितयं जुहुयान्मन्त्र सिद्धये ।। १२७ ।।

प्रणव युक्त २४ लाख गायत्री जप कर, जप सिद्धि के लिये प्रथक दूध, भात, तिल, दूव, बरगद, गूलर आदि दूध वाले वृक्षों की समिधाओं से तीन हजार गायत्री का हवन करे ।

तत्व संख्या सहस्त्राणि मन्त्रविज्जुह्यात्तिलैः ।
सर्व पापविनिर्मुक्तो दीर्घमायुः स विन्दति ।। १२८ ।।

तिलों से २४ हजार आहुति देने पर आहुति देने वाला समस्त पापों से रहित हो दीर्घायु होता है ।

आयुषे साज्य हविषा केवलेनाथ सर्पिषा ।
दूर्वात्रिकैस्तिलैर्मन्त्री जुहुयात्त्रिसहस्त्रकम् ।। १२९ ।।

आयु की कामना में घृत युक्त सामग्री से अथवा घृतयुक्त खीर से दूव और तिलों से तीन हजार आहुति दे ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अरुणाब्जैस्त्रिमध्वक्तैर्जुहुयादयुतं ततः ।
महालक्ष्मीर्भवेत्तस्य षण्मासान्न संशय ।। १३० ।।

तदनन्तर लाल कमलों से शहद से ही दस हजार आहुति दे, तो वह छः महीने में महान् धनवान हो जाता है, इसमें सन्देह नहीं है ।

सव्याहृति सप्रणवां गायत्रीं शिरसा सह ।
ये जपन्ति सदा तेषां न भयं विद्यते क्वचित् ।। १३१ ।।

जो मनुष्य प्रणव, व्याहृति, तथा शिर सहित गायत्री मन्त्र का जप करते हैं, उनको कहीं पर भी भय नहीं होता ।

शतं जप्त्वा तु सा देवी दिनपापप्रणाशनी ।
सहस्त्रं जप्त्वा तु सादेवी सर्वकल्मषनाशिनी ।। १३२ ।।

सौ बार गायत्री का जप करने से दिन भर का पाप नष्ट होता है और हजार बार जपने से अनेक पातकों से मुक्त हो जाता है ।

दस सहस्त्रं जप्त्वा तु पातकेभ्यः समुद्धरेत् ।
स्वर्णस्तेयकृद्विप्रो ब्राह्मणः गुरुतल्पगः ।। १३३ ।।

दस हजार बार गायत्री जपने से सोने के चोरी करने तथा गुरु स्त्री गमन करने के पापों से भी मुक्त हो जाता है ।

सुरापःश्च विशुध्येत लक्षजापान्न संशयः ।
प्राणायाम त्रयं कृत्वा स्नान काले समाहितः ।। १३४ ।।

स्नान काल में तीन बार प्राणायाम कर यदि गायत्री का लाख बार जप करें तो शराब पीने के दोष से छूट जाता है ।

अहोरात्र कृतात्पापात्तत्क्षणादेवमुच्यते ।
प्राणायामैः षोडशीभर्व्याहृति प्रणवान्वितैः ।। १३५ ।।

प्रणव, महाव्याहृति पूर्वक यदि प्राणायाम सोलह बार करे तो तत्क्षण ही रात दिन के पाप से छूट जाता है ।

अपिभ्रूणहनं मासात्पुनन्त्यरहरहः कृताः ।
हुता देवी विशेषेण सर्वकामप्रदायिनी ।। १३६ ।।

एक हजार नित्य गायत्री का जप एक मास करने से भ्रूणहत्या के दोष को भी नाश कर देती है, विशेष कर यदि गायत्री मन्त्र से हवन करने से समस्त कामनाऐं पूर्ण होती हैं ।

सर्वपापक्षयकरी वरदा भक्तवत्सला ।
शान्ति कामस्तु जुहुयात् सावित्री मक्षतैः शुचिः ।। १३७ ।।

गायत्री समस्त पाप नाशिनी और वर देने वाली तथा भक्तों पर कृपा करने वाली है अतः शान्ति की कामना करने वाला पुरुष पवित्र होकर चावलों से गायत्री मन्त्र द्वारा हवन करे ।

हन्तुकामोऽपमृत्युं च घृतेन जुहुयात्तथा ।
श्री कामस्तु तथा पद्मैर्विल्वैः काञ्चनकामुकः ।। १३८ ।।

अपमृत्यु की नाश करने की इच्छा वाला पुरुष घृत द्वारा, और शोभा की इच्छा करने वाला पद्म द्वारा और सोने की इच्छा करने वाला वेलपत्रों द्वारा गायत्री मन्त्र से हवन करे ।

ब्रह्मवर्चस् कामस्तु पयसा जुहुयात्तथा ।
घृतप्लुतैस्तिलैरग्नौ जुहुयात्सुसमाहितः ।। १३९ ।।

ब्रह्म तेज की कामना करने वाला व्यक्ति सावधानता पूर्वक घृतयुक्त तिलों से और घी से हवन करे ।

गायत्र्ययुत होमाच्च सर्वं पापैः प्रमुच्यते ।
पापात्मा लक्ष होमेन पातकेभ्यः प्रमुच्यते ।। १४० ।।

एक हजार गायत्री से हवन करने से पाप मुक्त हो जाता है और एक लाख बार हवन करने से पापी पुरुष बड़े पाप से छूट जाता है ।

अभीष्ट लोकमवाप्नोति प्राप्नुयात्काममीप्सितम् ।
गायत्री वेद जननी गायत्री पाप नाशिनी ।। १४१ ।।

गायत्री वेदों माता एवं पापनाश करने वाली है अतः गायत्री की उपासना करने वाला मनुष्य इच्छित लोकों को प्राप्त करता है ।

उपांशु स्याच्छतगुणः सहस्त्रो मानसः स्मृतः ।
नोच्चैर्जपमतः कुर्यात्सावित्र्यास्तु विशेषतः ।।१४२ ।।

उपांशु (जिसमें होठ न हिलें) भाव से जपने पर सौ गुना फल प्राप्त होता है और मन ही में जपने से हजार गुना फल होता है । अतः गायत्री का जप विशेषतया उच्च स्वर से न करे ।

सावित्री जाप निरतः स्वर्गमाप्नोति मानवः ।
गायत्री जाप निरतो मोक्षोपायं च विन्दति ।। १४३ ।।

गायत्री जपने वाला पुरुष स्वर्ग को प्राप्त करता है और मोक्ष को भी प्राप्त करता है ।

तस्मात्सर्वप्रयत्नेन स्नातः प्रयतमानसः ।
गायत्रींतु जपेद्भक्त्या सर्वपापप्रणाशिनी ।। १४४ ।।

इस कारण से समस्त प्रयत्नों द्वारा स्नान कर स्थिर चित्त हो सर्व पाप नाश करने वाली गायत्री का जप करे ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

एवं यः कुरुते राजा लक्ष होमं युतव्रतः ।
न तस्य शत्रवः संख्ये अग्रे तिष्ठन्ति कर्हिचित् ।। १४५ ।।

जो राजा व्रत पूर्वक गायत्री के एक लक्ष होम करता है उसके शत्रु युद्ध-भूमि में उसके आगे कदापि नहीं ठहरते ।

नाकाल मरणं देशे व्याधिर्वा जायते तथा ।
अति वृष्टिरनावृष्टिर्मूषकाः शलभा शुकाः ।। १४६ ।।

उसके देश में अकाल मृत्यु तथा व्याधिका कभी भय नहीं रहता । अति वर्षण, अवर्षण, मूसों, शलभ (टिड्डी) आदि और पक्षियों-

राक्षसाद्याः विनश्यन्ति सर्वास्तत्र तथेतियः ।
रसवन्ति च तोयानि शस्यश्च निरुपद्रवम् ।। १४७
धर्मिष्ठा जायते चेष्टा भद्रं भवति सर्वतः ।

इन ईतियों का और राक्षसों का भय नहीं रहता अर्थात् इन सबका विनाश हो जाता है ।

कोटि होमं तु यो राजा कारयेद्विधिपूर्वकम् ।
न तस्य मानसो दाह इहलोके परत्र च ।।
कोटि होमे तु वरयेत् ब्राह्मणान् विंशतिं नृप ।। १४८ ।।

जो नृपति एक कोटि संख्या में सविधि होम करता है । उसका चित्त स्थिर और शान्त रहता है उसे मानसिक दाह इस लोक और परलोक में कही भी व्यथित नहीं करते । इस कोटि होम में राजा २० ब्राह्मणों का वरण करे ।

शतं वाथ सहस्रं वा य इच्छेदगतिमात्मनः ।
कोटि होमं स्वयं यस्तु कुरुते श्रद्धया द्विजः ।। १४९ ।।

जो द्विज आत्मा की सद्गति के लिए सौ या एक सहस्र अथवा एक करोड़ होम स्वयं करता है वह इस प्रकार श्रद्धान्वित होकर करने पर-

क्षत्रियो वाथ वैश्यो वा तस्य पुण्यफलं महत् ।
यद् यदिच्छति कामानां तत्तदाप्नोत्यसंशयम् ।। १५० ।।

वह क्षत्रिय हो अथवा वैश्य उसे महान पुण्य का फल प्राप्त होता है और वह जिन-जिन वस्तुओं की अभिलाषा करता है उसे वह निस्संदेह मिलती है ।

सशरीरोऽपिचेद्गन्तुं दिविमिच्छेत्तदाप्नुयात् ।
सावित्री परमादेवी सावित्री परमं परम् ।। १५१ ।।

सावित्री देवी जो देवाधिदेव रूप है उसका आश्रय लेने पर मनुष्य की संदेह स्वर्ग जाने की अभिलाषा पूर्ण होती है ।

सर्व काम्प्रदा चैव सावित्री कथिता तत ।
अभिचारेषु तां देवीं विपरीतां विचिन्त् ।। १५२ ।।

यह सर्व कामों की मनोभिलाषाओं की प्रदायिनी सावित्री कही गई इसका अभिचार में विपरीत चिन्तन करना चाहिये ।

कार्या व्याहृतयश्चात्र विपरीताक्षरास्तथां ।
विरीताक्षर कार्य शिरश्च ऋषिसत्तम ? ।। १५३ ।।

यहाँ विपरीताक्षर व्याहृतियों का उच्चारण करना चाहिये । हे ऋषि श्रेष्ठ ? इसके शिर अक्षर को भी विपरीत कहना चाहिये ।

आदौ शिरः प्रयोक्तव्यं प्रणवोऽन्तेच वै ऋषे ?
मतिस्थेनैव फट्कारं मध्ये नाम प्रकीर्त्तितम् ।। १५४ ।।

प्रारम्भ में शिर का प्रयोग करना चाहिये तथा प्रणव को अन्त में उच्चारण करना चाहिये और फट्कार को मध्य में प्रयुक्त करे ।

गायत्री चिन्तयेत्तत्र दीप्तानलसमप्रभाम् ।
घातयन्तीं त्रिशूलेन केशेष्वाक्षिप्यवैरिणम् ।। १५५ ।।

प्रज्वलित अग्नि की आभा के समान आभावाली गायत्री देवी को चिन्तन करे और ऐसा ध्यान करे कि वह शत्रुओं के केशों को पकड़ कर अपने त्रिशूल द्वारा उनका घात कर रही है ।

एवं विधा च गायत्री जप्तव्या राजसत्तम ?
होतव्या च यथा शक्तया सर्वकामसमृद्धिदा ।। १५६ ।।

हे राजसत्तम! सकल कामनाओं की देने वाली गायत्री को इस प्रकार जपना चाहिए और शक्ति के अनुसार होम करना चाहिए ।

निर्दहन्ती त्रिशूलेन भृकुटी भूषिताननाम् ।
उच्चाटने तु तां देवीं वायु भूतां विचन्तयेत् ।। १५७ ।।

अपने शूल से दहन करती हुई तथा चढ़ी हुई भृकुटी से सुशोभित मुख मण्डल वाली उस वायु भूत देवी को उच्चाटन काल में चिन्तन करे ।

धावमानं तथा साध्यं तस्मादेशात्त दूरतः ।
अभिचारेषु होतव्या राजिका विषमिश्रिताः ।। १५८ ।।

धावमान तथा साध्य को उस देश से दूर से ही अभिचार में होम करना चाहिए ।

स्वरक्तसिक्तं होतव्यं, कटु तैल मथापि वा ।
तथाऽपि च विषं देयं होम काले प्रयत्नतः ।। १५९ ।।

अपने रक्त को कड़वे तैल मिलाकर तथा उस में विष मिला कर यत्न पूर्वक होम काल में देना चाहिए ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

क्रोधेन महताविष्टः परान्नाभिंचरेद्बुधः ।
न जुह्यात् यदि क्रोधेन ध्रुवं नश्येत् स एवं तु ।। १६० ।।

किन्तु क्रोधावेश में आकर शत्रुओं के वध करने को इस रीति का प्रयोग नहीं करना चाहिए । अन्यथा शत्रु के ऊपर प्रयुक्त न हुआ तो प्रयोक्ता को निश्चय नष्ट कर डालता है ।

अनागसि न कर्तव्यमभिचार मतो बुधैः ।
स्वल्पागसि न कर्त्तव्यो ह्यभिचारो महामुने ।। १६१ ।।

बुद्धिमानों को इस का प्रयोग अक्रोध में भी नहीं करना चाहिए । हे मुनीश्वर ! स्वल्प क्रोध आने पर भी इस का उपयोग करना उचित नहीं ।

महापराधं बलिनं देव ब्राह्मण कण्टकम् ।
अभिचारेण यो हन्यान्न स दोषेण लिप्यते ।। १६२ ।।

महान अपराध करने वाले बलवान को तथा देव और ब्राह्मणों को कष्ट देने वाले को जो हवन करे उसे दोष नहीं लगता ।

धर्मस्य दान काले च स्वल्पागसि तथैव च ।
अभिचारं न कुर्वीत बहु पापं विचक्षणः ।। १६३ ।।

धर्म के दान करते समय तथा स्वल्प क्रोध के समय पण्डित को चाहिए कि बहु पाप रूप अभिचार नहीं करना चाहिए ।

बहुना कण्टकं वस्तु पापात्मानं सुदुर्म्मतिम् ।
हन्यात्प्राप्तापराधन्तु तस्य पुण्य फलं महत् ।। १६४ ।।

जो पापात्मा तथा दुर्मति के मार्ग में कण्टक बना हुआ है उस अपराधी के हनन करने वाले को महान् पुण्य फल की प्राप्ति होती है ।

ये भक्ताः पुण्डरीकाक्षे वेदयज्ञे द्विजे जने ।
न तानभिचरेत् जातु तद्विफलं भवेत् ।। १६५ ।।

जो पुरुष भगवान के वेद यज्ञों के द्विजों के भक्त हैं उनके प्रति कभी अभिचार न करे और वह अभिचार निष्फल ही जाता है ।

नहि केशभक्तानामभिचारेण कर्हिचित् ।
विनाश मभिपद्येत तस्मात्तत्र समाचरेत् ।। १६६ ।।

जो श्री कृष्ण भगवान के भक्त हैं उनके प्रति अभिचार का प्रयोग कदापि न करे क्यों कि इस प्रकार करने पर विनाश हो जाता है ।

सेयं धात्री विधात्री च सावित्र्यथ विनाशिनी ।
प्राणायामेन जाप्येन तथा चान्तर्जलेन च ।। १६७ ।।

पाप समूहों को विनाश करने वाली उस धात्री सावित्री को प्राणायाम से, जप से, अन्तर्जल से-

सव्याहृती प्रणवा जप्तव्या शिरसा सह ।
प्रणवेन न्यस्ता वाच्या व्याहृतयः प्रथक् ।। १६८ ।।

व्याहृती तथा प्रणव सहित शिर से जपना चाहिए । प्रणवों के साथ न्यास करके व्याहृतियों को प्रथक् प्रथक् उच्चारण करना चाहिए ।

सदाचारेण सिध्येश्च ऐहिकामुष्मिकं सुखम् ।
तदेव ते मया प्रोक्तं किमन्यच्छ्रोतुमिच्छसि ।। १६९ ।।

सदाचार से लौकिक और पारलौकिक सभी सुख प्राप्त होते हैं । यह मैंने आपसे कहा और क्या सुनने की इच्छा है वह मुझसे कहो ।

गायत्री का आग्नेयास्त्र

आधुनिक युग में भौतिक विज्ञान ने बड़े-बड़े अद्भुत आविष्कार किये हैं । कुछ समय पहले जिन बातों को असंभव कहकर झूठी समझा जाता था वे ही अब प्रत्यक्ष मौजूद हैं । भारत पर विदेशी लोगों के शासन के साथ शासकों के वे प्रयत्न भी आगे बढ़े जिनका उद्देश्य भारतीय संस्कृति को तुच्छ, अवैज्ञानिक, झूठी और असम्बद्ध बातों से भरी हुई सिद्ध करना था । उस प्रचार को हमने स्वीकार किया और राजनैतिक हीनता के साथ अपनी सांस्कृतिक हीनता भी स्वीकार कर ली ।

उन्नीसवीं शताब्दी में इस मान्यता का बड़ा जोर रहा कि भारतीय इतिहास में जिन अद्भुत अस्त्र शस्त्रों यंत्रों, रसायनों एवं सिद्धियों का वर्णन है वे कपोल कल्पना मात्र है, असंभव है ऐसी अनहोनी बातें कभी नहीं हो सकतीं । उन्नीसवीं शताब्दी में जो सम्प्रदाय जन्मे उन्होंने ऐसी बातों का विशेष रूप से मखौल उड़ाया । उन्होंने इस बात का प्रतिपादन किया कि जो कुछ संसार में इस समय मौजूद है उतना ही सदा से रहा है । जो लोग भारतीय इतिहास की अद्भुत बातों पर विश्वास करते थे उन्हें पोपजी, पोंगापंथी, अन्धविश्वासी, अज्ञानी आदि न जाने क्या-क्या नाम दिये गये । परन्तु समय की प्रगति ने उनका मुँह बन्द कर दिया । जब ऊँट पहाड़ के नीचे पहुँचा तब उसे मालूम हुआ कि मुझसे ऊँची भी और कोई वस्तु है । उन्नीसवीं

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

शताब्दी के आरम्भ में भौतिक विज्ञान का बचपन था अब वह किशोर हो चला है जो बातें उस समय असम्भव दिखाई पड़ती थीं ये अब सम्भव हो गई हैं और प्रत्यक्ष रूप से काम में आ रही हैं ।

कुछ समय पहले इस बात को अव्वल दर्जे की गप्प कहा जाता था कि लंका में बैठा हुआ रावण-पाताल पुरी में बैठे हुए अहिरावण से बिना तार टेलीफोन के बात करता था । पर अब रेडियो के अविष्कार ने यह बता दिया कि ऐसा होना असम्भव नहीं है । संजय घर बैठे महाभारत के सारे दृश्य देखते थे और उसका हाल धृतराष्ट्र को सुनाते थे, यह बात कुछ समय पहले तक गप्प थी पर अब टेलीविजन यंत्र ने यह सिद्ध कर दिया है कि ऐसा हो सकता है । रामायण का पुष्पक विमान एक समय में गप्प थी ऐसा कहा जाता था कि पक्षी के समान आकाश में उड़ने की लालसा ने मनुष्य को वायुयान की कल्पना गढ़ लेने के लिए प्रेरित किया है पर अब वह कल्पना कही जाने वाली बात असम्भव नहीं रही ।

महाभारत और रामायण में वर्णित महायुद्धों में दिव्य अस्त्र-शस्त्रों के प्रयोग का विस्तृत वर्णन है । वरुण अस्त्र से घोर जल वर्षा होती थी और शत्रु का मार्ग रुक जाता था, आग्नेयास्त्र से अग्नि जैसे जलते हुए तूफान उत्पन्न होते थे, अग्नि लग जाती थी मोहनास्त्र का जिन पर प्रयोग होता था वे बेहोश हो जाते थे । ब्रह्म पाश से शत्रु जकड़ जाता था उसे एक प्रकार का लकवा मार जाता था । कुछ समय पहले तक यह अस्त्र-शस्त्र गप्प थे । पर अब तो तरह-तरह के जैसे, कीटाणु बम, परमाणु बम, मृत्यु किरण, रैडर आदि वैज्ञानिक अस्त्र-शस्त्रों ने सिद्ध कर दिया है कि प्राचीन काल की भाँति अब भी उसी नमूने की चीजें मौजूद हैं चाहे उनकी शक्ति और शक्ल पूर्व काल के अस्त्र -शस्त्रों जैसी हो या भिन्न ।

आज का विज्ञान केवल पदार्थ विज्ञान तक सीमित है । यन्त्रों, धातुओं, रसायनिक पदार्थों अथवा ऐसे ही किन्हीं अन्य उपकरणों द्वारा आज के वैज्ञानिक अपने आविष्कारों को प्रस्तुत कर रहे हैं परन्तु उनका विश्वास है कि एक दिन ऐसा आवेगा कि बिना स्थूल वस्तुओं की सहायता के भी आविष्कारों का कार्य चल सकेगा और बड़े-बड़े अद्भुत कार्य आकाश स्थित रासायनिक पदार्थों से ही चल सकेंगे । डाक्टर वेन्स का कहना है कि भविष्य में आकाश में कड़कने वाली बिजली को पकड़ कर उसे कैद कर लिया जाया करेगा और उसकी सहायता से इतना काम हो सकेगा जितना कई बिजली घर मिलकर नहीं कर सकते ।

जो धातु खनिज या रासायनिक पदार्थ हमें दृश्य रूप से हस्तगत होते हैं वही सब वस्तुएँ आकाश में भारी परिमाण में भ्रमण करतीं रहती हैं । दुनिया में जितना स्थूल है उससे अनेक गुना सूक्ष्म है, हर स्थूल पदार्थ के सूक्ष्म परमाणु होते हैं, और उनमें भी वही सब शक्ति होती है, सच तो यह है कि स्थूल वस्तुओं की अपेक्षा उनके अदृश्य सूक्ष्म परमाणु जो आकाश में उड़ते फिरते हैं उनमें अनेक गुनी शक्ति अधिक होती है । उनकी थोड़ी सी मात्रा भी बहुत अधिक काम कर सकती है । अब वैज्ञानिक यह तैयारी कर रहे हैं कि कोयला, तेल और पानी द्वारा शक्ति पैदा करने की अपेक्षा परमाणुओं का विस्फोट करके शक्ति पैदा की जाया करे और उससे सारे कल-कारखाने चला करें ।

प्रकृति सूक्ष्म परमाणुओं का संचालन केवल मशीनों या वस्तुओं से ही होता हो सो बात नहीं है । शब्द द्वारा भी यह सब हो सकता है । शंख बजाने से वायुमण्डल में घूमते हुए वेक्टीरिया नामक जीवाणु मर जाते हैं । गाली देने से, सुनने वालों के मनमें गर्मी पैदा होती है । संगीत सुनकर सर्प और मृग तक मुग्ध हो जाते हैं । मधुर वाद्य यंत्र सुनाते हुए दूधारू पशुओं को दुहने से वे अधिक दूध देते हैं । बिजली की कड़क सुनकर गर्भवती स्त्रियों के गर्भ स्रवित होते देखे गये हैं । मेघों का गर्जन सुनकर मोर कूकने लगते हैं । यह बातें बताती हैं कि शब्द में अपनी शक्ति है जो अपनी क्रिया से दूसरों को प्रभावित करती है ।

अमेरिका में नकली मनुष्य बनाये गये हैं । यह मनुष्य आकृति में साधारण मनुष्यों जैसे होते हैं और कार्य भी वैसे ही करते है । इन्हें जो आज्ञा दी जाती है वही काम करते है, जो बात पूछी जाती है

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उसका उत्तर देते है, टेलीफोन पर बात चीत करते हैं । कारण यह कि उन पंच मनुष्यों के भीतर इस प्रकार के रेडियो यंत्र लगते हैं जो शब्द की ध्वनि का आघात पाकर क्रियाशील होते हैं "चलो" शब्द कहने से 'च' और 'लो' शब्द उस मशीन मानव के भीतरी पुर्जे से टकराते हैं और इन दोनों शब्दों की चोट से वे भाग काम करने लगते हैं जिनके द्वारा पैरों से चलने की क्रिया होती है । जब आज्ञा दी जाती है कि "ठहरो" तो आज्ञा देने वाले के मुख से निकले हुए शब्द-ठ, ह, रो, उस मशीन मानव के भीतर लगे हुए पुर्जों पर ऐसी चोट करते हैं जिनके फलस्वरूप चलने की क्रिया रुक जाती है । इसी प्रकार बैठने लेटने, झुकने. दौड़ने, अमुक जगह जाने, अमुक वस्तु लाने, अमुक बात बताने आदि की जो आज्ञाएँ दी जाती हैं उनमें यही होता है कि आज्ञा देने वाले के शब्द उस मशीन-मानव के भीतर लगे हुए रेडियो यंत्र से टक्कर खाते हैं और उसमें विविध प्रकार की गतिविधियाँ उत्पन्न करते है, फलस्वरूप वह मशीन तरह-तरह के काम करती है ।

मनुष्य एक अच्छा खासा बिजली घर है । उसमें उतनी उष्णता एवं विद्युत-शक्ति होती है कि यदि उस सबका ठीक प्रकार उपयोग हो सके तो एक द्रुतवेग से चलने वाली तूफानमेल रेलगाड़ी दौड़ सकती है, जो शब्द मुख में से निकलते हैं वे अपने साथ एक विद्युत प्रवाह ले जाते हैं, फलस्वरूप उनके द्वारा सूक्ष्म जगत में कम्पन उत्पन्न होते हैं और उन कम्पनों द्वारा अन्य वस्तुओं पर प्रभाव पड़ता है । देखा गया है कि कोई वक्ता अपनी वक्तृता के साथ-साथ ऐसी भाव विद्युत का सम्मिश्रण करते हैं कि सुनने वालों का हृदय हर्ष, विषाद, क्रोध, त्याग आदि से भर जाता है, वह अपने श्रोताओं को उंगलियों पर नचाता है । देखा गया है कि कई उप्रवक्ता भीड़ को उत्तेजित करके उससे भयंकर कार्य करा डालते हैं । कभी किसी-किसी महत्त्वपूर्ण व्यक्ति के भाषण इतने प्रभावपूर्ण होते हैं कि उससे समस्त संसार में हलचल मच जाती है । अपने समय में हिटलर ऐसा ही व्यक्ति था, उसकी गर्वोक्तियाँ संसार भर में आतंक पैदा करती थीं । कई बार वाणी के कारण भयंकर अनर्थ हुए हैं । द्रोपदी ने कौरवों को "अन्धे बाप के अन्धे बेटे" कह कर उपहास किया था, उस उपहास ने कौरवों के हृदय में प्रतिशोध की भयंकर ज्वाला जला दी जो अन्त में महाभारत जैसा महासंग्राम कराके ही बुझी ।

शब्द को शास्त्रों में वाण कहा गया है । धनुष से जब वाण छूटता है तो उसमें शक्ति होती है । यह शक्ति जहाँ चोट करती है उसे तिलमिला देती है । शब्द भी ऐसा ही शक्ति सम्पन्न साधन है जो प्रकृति के परमाणुओं में विविध प्रकार के विक्षोभ उत्पन्न करता है । जिस प्रकार प्रकृति में आजकल वस्तुओं की सहायता से हलचल पैदा की जाती है, वैज्ञानिक आविष्कार होते हैं, उसी प्रकार मनुष्य शरीर में रहने वाले विद्युत प्रवाह के आधार पर भी सृष्टि के परमाणुओं में गतिविधि पैदा की जा सकती है और वैसे ही परिणाम उपस्थित किये जा सकते हैं जैसे कि वैज्ञानिक लोग अपनी मशीनों के आधार पर प्रस्तुत करते हैं ।

आकाश के ऊँचे स्तर पर बर्फ का चूर्ण हवाई जहाजों से फैलाकर वैज्ञानिकों ने तुरन्त वर्षा कराने की विधि ढूँढ़ निकाली है । इसी कार्य को प्राचीन काल में शब्द विज्ञान द्वारा, मन्त्रवलों से किया जाता था । उस समय भी उच्च कोटि के वैज्ञानिक मौजूद थे, पर उनका आधार वर्तमान आधार से भिन्न था । उसके लिए उन्हें मशीनों की जरूरत न पड़ती थी, इतनी खर्चीली खट पट के बिना भी उनका काम चल जाता था । आज स्थूल से सूक्ष्म को प्रभावित करके तब वह शक्ति उत्पन्न की जाती है जिससे आविष्कारों का प्रकटीकरण होता है । आज कोयला, तेल और पानी से शक्ति पैदा की जाती है । परमाणु का विस्फोट करके शक्ति उत्पन्न करने का अब नया प्रयोग सफल हुआ है । अमेरिकन साइंस एकेडेमी के प्रधान डाक्टर एविड का कहना है कि आगामी तीन सौ वर्षों के भीतर विज्ञान इतनी उन्नति कर लेगा कि बाहरी किसी वस्तु की सहायता के बिना मानव शरीर के अन्तर्गत रहने वाले तत्वों के आधार द्वारा सूक्ष्म जगत में हलचल पैदा की जा सकेगी, और जो लाभ आज कल मशीनों द्वारा मिलते हैं वे शब्द आदि के प्रयोग द्वारा ही प्राप्त किये जा सकेंगे ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

डाक्टर एविड भविष्य में जिस वैज्ञानिक उन्नति की आशा करते हैं, भारतीय वैज्ञानिक किसी समय उस में पारंगत हो चुके थे । शाप और वरदान देना इसी शब्द विज्ञान की चरम उन्नति थी । शब्द का आघात मार कर प्रकृति के अन्तराल में भरे परमाणुओं को इस प्रकार आकर्षित विकर्षित किया जाता था कि मनुष्य के सामने वैसे ही भले बुरे परिणाम आ उपस्थित होते थे । जैसे आज विशेष प्रक्रियाओं द्वारा मशीनों की विशेष गतिविधि से विशेष कार्य किये जाते हैं । पर प्राचीन काल में अपने आप को एक महाशक्तिशाली यंत्र मान कर उसी के द्वारा ऐसी शक्ति उत्पन्न करते थे जिसके द्वारा अभीष्ट फलों को चमत्कारिक रीति में प्राप्त किया जा सकता था । यह प्रणाली साधना, योगाभ्यास, तपश्चर्या, तंत्र आदि नामों से पुकारी जाती है । इन प्रणालियों के जप, होम, पुरश्चरण, अनुष्ठान, तप, व्रत, यज्ञ, पूजन, पाठ, आदि होते थे । विविध प्रयोजनों के लिए विविध कर्मकाण्ड थे । हवन में होमी जाने वाली सामग्रियाँ, मन्त्रों की ध्वनि, ध्यान का मानसिक आकर्षण, स्तोत्र और प्रार्थनाओं द्वारा आकांक्षा प्रदीप्ति, विशेष प्रकार के आहार विहार द्वारा मनः शक्तियों का विशेष प्रकार का निर्माण, तपश्चर्याओं द्वारा शरीर में विशेष प्रकार की उष्णता का उत्पन्न होना, देव पूजा द्वारा प्रकृति की सूक्ष्म शक्तियों को खींच कर अपने में धारण करना आदि प्रकारों से साधक अपने आपको एक ऐसा विद्युत पुंज बना लेता था कि उसका प्रवाह जिस दिशा में चल पड़े उस दिशा के प्रकृति परमाणुओं पर उसका आधिपत्य हो जाता था और उस प्रक्रिया द्वारा अभीष्ट परिणाम प्राप्त होते थे ।

भारतीय विज्ञान इसी प्रकार का था, उसमें मशीनों की जरूरत नहीं पड़ती थी, बल्कि अपने आपको महा यंत्र मानकर उसी को समय-समय पर इस योग्य बना लेते कि उसी से दुनिया की सारी मशीनों का काम चल जाता था । उस समय रेडियो ध्वनि विस्तारक या ध्वनि ग्राहक यंत्रों की जरूरत नहीं पड़ती थी, तब विचार संचालन विद्या की साधना जानने वाले बड़ी आसानी से इस लाभ को उठा लेते थे । अस्त्र-शस्त्रों के विषय में भी यही बात थी । आज बन्दूक की गोली को सीध में चलाये जाने की बात लोगों को मालूम है पर किसी जमाने में गोली या बाण को, मुड़कर गोलाई में, चक्राकार चलाने का विज्ञान भी मालूम था । रामचन्द्र जी ने चक्राकार खड़े हुए सात ताड़ के वृक्षों को एक ही वाण से वेधा था । एकलव्य ने कुत्ते के होठों को वाणों से सीं दिया था, पर कुत्ते के जबड़े में राई भर भी चोट न आई थी, शब्दवेधी वाण चलाने की विद्या तो पृथ्वीराज चौहान तक विदित थी, आज तो उस विज्ञान का प्रायः लोप सा हो गया है ।

बिना मशीन के चलने वाले जिन अद्भुत दिव्य, अस्त्रों का भारतीय इतिहास में वर्णन है उनमें आग्नेयास्त्र भी एक था इससे आग लगाई जाती थी, जलन, आँधी या तूफान पैदा किया जाता था । व्यक्तिगत प्रयोगों में इससे किसी व्यक्ति विशेष पर प्रयोग करके उसकी जान तक ले ली जाती थी । अग्निकाण्ड कराये जाते थे, इसे तान्त्रिक काल में 'आगीया वेताल' कहा जाता था इसका प्रयोग गायत्री मन्त्र द्वारा भी होता था जिसका कुछ संकेत नीचे के प्रमाणों में वर्णित है । उल्टी गायत्री को 'अनुलोप जप' कहते हैं । यही आग्नेयास्त्र है ।

'त् या द चो प्र नः यो यो धि । हि म धी स्य व दे गों भ ण्यं रे र्व । तु वि त्स त स्वः वः र्भुभूः ॐ । यह मन्त्र आग्नेयास्त्र है । इस विद्या का कुछ परिचय नीचे देखिए -

आग्नेयास्त्रस्य जानाति विसर्गादान कर्मणि ।
यः पुमान् गुरुणा शिष्टस्तस्याधीनं जगत्त्रयम् ।।

जो पुरुष इस आग्नेयास्त्र के छोड़ने तथा खींचने की विधि को जानता है और जो गुरु द्वारा शिक्षित है, उसके अधिकार में त्रैलोक्य है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आग्नेयास्त्राधिकारी स्यातविधानमुदीर्यते ।
आग्नेयास्त्रमिति प्रोक्त विलोम पठितो मनुः ।।

और वह आग्नेयास्त्र का अधिकारी हो जाता है । अब आग्नेयास्त्र की प्रयोग विधि कहते हैं । आग्नेयास्त्र प्रतिलोम और अनुलोम दो प्रकार से कहा गया है ।

क्षीरद्रु माणामाज्येन, हविषान्नैघृःतान्वितैः ।
चतुश्चत्वारिंशदाढयं शतुःशत समन्वितम् ।।

दूध वाले वृक्षों की समिधाओं से, घृतयुक्त जौ की सामग्री से चार सौ चवालीस युक्त-

चतुः सहस्त्रं जुहुयादर्चिते हव्यषाहने ।
मण्डले सर्वतो भद्रे षट्कोणांकित कार्णिके ।।

चार हजार आहुति प्रदीप्त अग्नि में दे, और सर्वतो भद्र यंन्त्र बना कर उसके अन्तर्गत छः कोणवाला यन्त्र बनावे ।

पूर्वोक्ता एवमुत्याद्या, मन्त्रास्य परिकीर्तिताः ।
प्रतिलोम कुर्यादस्य, षडङ्गानि प्रकल्पयेत् ।।

प्रतिलोम कर्म में पूर्वोक्त ऋष्यादि तथा षडङ्गन्यास आदि को प्रतिलोम क्रम से (उल्टे) करे ।

वर्णान्यास पद न्यास, विदध्यात्प्रतिलोमतः ।
ध्यान्भेदान्विजानीयाद् गुर्वीदेशान्त चान्यथा ।।

वर्णन्यास, पदन्यास, आदि को भी प्रतिलोम क्रम से करे । ध्यान भेदों को गुरु की आज्ञा से करे अन्यथा न करे ।

पूर्ववज्जपः क्लृप्तिः, स्याज्जुहुयान्पूयात्पूर्वसंख्यया ।
पञ्चगव्य सुपक्वेन, चरुणा तस्य सिद्धये ।।

पूर्वोक्त संख्यानुसार जप करे और पञ्चगव्य युक्त अच्छे प्रकार पके चरु द्वारा जप सिद्धि के लिये पूर्वोक्त संख्यानुसार आहुति दे ।

अर्चनं पूर्ववत्कुर्याच्छक्तिस्तु प्रतिलोमतः ।
सर्वत्र देशिकः कुर्यात्, गायत्र्या द्विगुणं जपम् ।।

प्रतिलोमता से शक्तियों का पूजन पूर्ववत् करे और सर्वत्र गायत्री का दूना जप करे ।

क्रूरकर्माणि कुर्वीत, प्रतिलोमविधानतः ।
शान्तिकं पौष्टिकं कर्म, कर्त्तव्यं अनुलोमतः ।।

प्रतिलोम के विधान से जपादि क्रूरकर्मों की सिद्धि के लिये करे, और शान्तिमय एवं पुष्टिदायक कर्मों की सिद्धि के लिये अनुलोम के विधान से करे ।

प्रयोगकाले प्रजपेदष्टौ, पादान्विलोमतः ।
शोधितो जायते पश्चार मन्त्रोयं विधिनामुना ।।

विलोम के प्रयोग काल में मन्त्र के आठों पदों को प्रतिलोम क्रम से पढ़े और अनुलोम कर्म में अनुलोमतः आठों पदों को पढ़े क्यों कि मन्त्र पढ़ने से मन की अस्थिरता आदि दोष नष्ट हो जाते हैं ।

उपरोक्त विधि एक संकेत मात्र है । उसके साथ में एक विस्तृत कर्मकाण्ड एवं गुप्त साधना विधि है । उस सबका रहस्य गुप्त ही रखा जाता है क्योंकि उन बातों का सार्वजनिक प्रकटीकरण करना सब प्रकार निषिद्ध है ।

मारण प्रयोग

तंत्र ग्रन्थों में मारण, मोहन, उच्चाटन आदि के कितने ही प्रयोग मिलते हैं । शत्रुनाश के लिए मारण प्रयोगों को काम में लाया जाता है । मारण कितने ही प्रकार का होता है एक तो ऐसा जिससे किसी मनुष्य की तुरन्त मृत्यु हो जाय । ऐसा प्रयोगों में ''घात'' या ''कृत्या'' प्रसिद्ध है । यह एक शक्तिशाली तांत्रिक अग्नि अस्त्र है जो प्रत्यक्षतः दिखाई नहीं पड़ता तो भी बन्दूक की गोली की तरह निशाने पर पहुँचता है और शत्रु को गिरा देता है । दूसरे प्रकार के मारण-मन्द मारण, कहे जाते हैं इनके प्रयोग से किसी व्यक्ति को रोगी बनाया जा सकता है । ज्वर, दस्त, दर्द, लकवा, उन्माद, मतिभ्रम आदि रोगों का आक्रमण किसी व्यक्ति पर उसी प्रकार हो सकता है जिस प्रकार कीटाणु बमों से प्लेग, हैजा, आदि महामारियों को फैलाया जाता है ।

इस प्रकार के प्रयोग नैतिक दृष्टि से उचित है या अनुचित ? यह प्रश्न दूसरा है, पर इतना निश्चित है कि यह असम्भव नहीं सम्भव है । जिस प्रकार विष खिलाकर या शस्त्र चलाकर किसी मनुष्य को मार डाला जा सकता है वैसे ही ऐसे अदृश्य उपकरण भी हो सकते हैं जिनको प्रेरित करने से प्रकृति के घातक परमाणु एकत्रित होकर अभीष्ट लक्ष्य की ओर दौड़ पड़ते हैं और उस पर भयंकर आक्रमण करके उस पर चढ़ बैठते हैं और परास्त करके प्राण संकट में डाल देते हैं । इसी प्रकार प्रकृति के गर्भ में विचरण करते हुए किसी रोग विशेष के कीटाणुओं को किसी व्यक्ति विशेष की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ओर विशेष रूप से प्रेरित किया जा सकता है ।

'मृत्यु किरण' आज का ऐसा ही वैज्ञानिक आविष्कार है । किसी प्राणी पर इन किरणों को डाला जाय तो उसकी मृत्यु हो जाती है । प्रत्यक्ष देखने में उस व्यक्ति को किसी प्रकार का घाव आदि नहीं होता पर अदृश्य मार्ग से उसके भीतरी अवयवों पर ऐसा सूक्ष्म आघात होता है कि उस प्रहार से उसका प्राणान्त हो जाता है यदि वह आघात हल्के दर्जे का हुआ तो उससे मृत्यु तो नहीं होती पर मृत्यु तुल्य कष्ट देने वाले या घुला-घुला कर मार डालने वाले रोग पैदा हो जाते हैं ।

शाप देने की विद्या प्राचीन काल में अनेक लोगों को मालूम थी । जिसे शाप दिया जाता था उसका बड़ा अनिष्ट होता था । शाप देने वाला अपनी आत्मिक शक्तियों को एकत्रित करके एक विशेष विधि व्यवस्था के साथ जिसके ऊपर उनका प्रहार करता था, उसका वैसा ही अनिष्ट हो जाता था जैसा कि शाप देने वाला चाहता था । तान्त्रिक अभिचारों द्वारा भी इसी प्रकार से दूसरों का अनिष्ट हो सकता है । परन्तु ध्यान रखने की बात यह है कि इस प्रकार के प्रयोगों में प्रयोगकर्ता की शक्ति भी कम नष्ट नहीं होती । बालक प्रसव करने के उपरान्त माता बिल्कुल निर्बल, निःसत्व हो जाती है , किसी को काटने के बाद साँप निस्तेज इतबीर्य और शक्ति रहित हो जाता है । मारण उच्चाटन के अभिचार करने वाले लोगों की शक्तियाँ भी भारी परिमाण में व्यय हो जाती हैं और उसकी क्षति पूर्ति के लिए उन्हें असाधारण प्रयोग करने होते हैं ।

जिस प्रकार तंत्र द्वारा दूसरों का मारण, मोहन, उच्चाटन आदि अनिष्ट हो सकता है उसी प्रकार कोई कुशल तांत्रिक इस प्रकार के अभिचारों को रोक भी सकता है । उन प्रयोगों को निष्फल भी कर सकता है और यहाँ तक कि उस आक्रमण को इस प्रकार उलट सकता है कि वह प्रयोग कर्ता पर उल्टा पड़े और उसीका अनिष्ट कर दे । घात, कृत्या, चौकी आदि को कोई भिज्ञ तांत्रिक उलट दें तो उसके प्रेरक प्रयोक्ता पर विपति का पहाड़ टूटा हुआ ही समझिए ।

उपर्युक्त अनिष्टकर प्रयोग अक्सर होते हैं- विद्या द्वारा हो सकते हैं । पर नीति, धर्म मनुष्यता और ईश्वरीय विधान की सुस्थिरता की दृष्टि से ऐसे प्रयोगों का किया जाना नितान्त अनुचित और अवांछनीय है । यदि इस प्रकार की गुप्त हत्याओं का तांता चल पड़े तो उससे लोक व्यवस्था में भारी गड़बड़ी उपस्थित हो जाय और परस्पर के सद्भाव एवं विश्वास का नाश हो जाय हर व्यक्ति दूसरों को आशंका, संदेह एवं अविश्वास की दृष्टि से देखने लगे । इसलिए तंत्र विद्या के भारतीय तांत्रिकों ने इन क्रियाओं को निषिद्ध घोषित करके उन विधियों को गोपनीय रखा है । आज कल परमाणु बम बनाने के रहस्यों को बड़ी सावधानी से गुप्त रखा जा रहा है ताकि उसकी जानकारी सर्व सुलभ हो जाने से कहीं उसका दुरुपयोग न होने लगे । उसी प्रकार इन अभिचारों को भी सर्वथा गोपनीय रखने का ही नियम बनाया गया है ।

शारदा तिलक तंत्र के गायत्री पटल में इस प्रकार के अभिचारों का वर्णन है, इन में संकेत रूप से उन विस्तृत क्रियाओं का थोड़ा-थोड़ा आभास कराया गया है । वह संकेत सर्वथा अपूर्ण एवं असम्बद्ध हैं तो भी उस सूत्र के आधार पर यह जाना जा सकता है कि कार्य को पूरा करने के लिए किस प्रणाली का अवलम्बन करना होगा किन वस्तुओं की प्रधान रूप से आवश्यकता होगी । इन संकेतों के द्वारा इस मार्ग पर चलने वाले को किसी न किसी प्रकार उन गुप्त रहस्यों की जानकारी हो ही जायगी ।

शारदा तिलक तंत्र के कुछ ऐसे अभिचार सूत्र दिये गये हैं जिससे इस प्रकार की विधियों पर कुछ प्रकाश पड़ता है और यह स्पष्ट हो जाता है कि जिस प्रकार गायत्री से सात्विक लाभ उठाये जाते हैं उसी प्रकार उससे मानसिक कार्य भी किये जा सकते हैं । परन्तु ऐसा उपयोग करना किसी भी प्रकार उचित नहीं कहा जा सकता । इसीलिए उन विधानों को गुप्त ही रखा जा रहा है । नीचे कुछ अभिचार संकेतों के श्लोक दिये जा रहे हैं -

धत्तूर विषवृक्षोभूरुहोत्थान्समिद्वरान् ।
राजीतैलेन संलिप्तान् प्रथक्सप्त सहस्त्रकम् ।।
जहुयात् संयतो मन्यी, रिपुर्यमपुरं प्रजेत् ।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

धतूरा, कुचिला तथा सरसों के तेल से युक्त श्रेष्ठ समिधाओं से, प्रथक् सात हजार आहुति जितेन्द्रिय होकर दे तो शत्रु यमपुर को जावे ।

सप्तरात्रं प्रजुहुयात् सिद्धार्थस्नेहहल्लौलितैः ।
आर्द्रवस्त्रो विष्टिकाले, मरीचैर्म्मनुनामुना ।।

सात रात तक सरसों के तेल से युक्त मिरचों द्वारा हवन करे गीला वस्त्र धारण कर वर्षाकाल में यह प्रयोग करे ।

निगृह्यते ज्वरेणारिः प्रलयाग्नि समेन सः ।
तालपत्रे समालिख्य, शत्रु नाम यथाविधि ।।

ऐसा करने पर शत्रु प्रलपाग्नि के सदृश ज्वर से युक्त हो जाता है । ताल पत्र पर शत्रु के नाम को यथा विधि पूर्वक लिख कर -

आग्नेयास्त्रेण संवेष्टय, कुण्डमध्ये निखन्यते ।
जहुयान्मरिचैः क्रुद्धो, ज्वराक्रान्त स जायते ।।

आग्नेयास्त्र से अभिमन्त्रत कर कुण्ड के मध्य में गाढ़ देवे और क्रोधित होकर मिर्चों द्वारा हवन करे तो वैरी ज्वर से युक्त हो जाता है ।

तदादाय क्षिपेत्तोये, शीतले सवशो भवेत् ।
पिष्ट्वापामार्गबीजानि, मरीचं मधु संयुतम् ।।

पुनः कुण्ड में से उखाड़ कर उसको शीतल जल में डाल देवे , आरै अपामार्ग (चिड़चिड़ा) के बीजों को पीस, शहद से युक्त मिरचों को-

अत्युष्ण लवणे तोथे, निक्षिप्य क्वाथयेत्ततः ।
ऋक्षवृक्ष प्रोतकृते, हृदये वदने नसि ।।

नमक के जल में डाल अग्नि पर रख कर क्वाथ के सदृश पकावे । पुनः ऋक्ष वृक्ष से शोधित करे ।

किंचित्किंक्षपेत्तोये, दर्व्या कास्करोत्थया ।
आग्नेयमुच्चरन्मन्त्री सोऽचिराज्वरितो भवेत् ।।

और साथ में थोड़ा-थोड़ा जल डालता हुआ मन्त्र को उच्चारण कर दर्वी (करछुली) से चलावे तो शीघ्र ही शत्रु ज्वर युक्त हो जावे ।

क्वथितेऽम्भसि तां क्षित्वा हन्याच्छत्रनयत्नतः ।
तीक्ष्ण स्नेहेन संलिप्तां, शत्रो प्रतिकृतिं निशि ।।

क्वाथ बन जाने पर उसको जल में डाल कर कूटे पुनः बकुवे तेल से युक्त उस कुटे हुए क्वाथ को रात्रि में ।

तापयेदेधिते वन्हौ प्रतिलोममनुं जपन् ।
ज्वरेण्वाध्यते सद्यो होमादस्य मृतिर्भवेत् ।।

प्रतिलोमता पूर्वक मन्त्र जपता हुआ प्रज्वलित अग्नि में तपावे । शीघ्र ही शत्रु ज्वर से आक्रान्त हो जाता है और होम से उसकी मृत्यु हो जाती है ।

सामुद्रे सलिले हिङ्गु बीजजीरकलोलिते ।
क्वथिते पुत्तलिं साध्य नक्षत्र तरुनिर्मिताम् ।।

नमक युक्त जल में हींग, जीरा मिला कर क्वाथ बना कर, उसकी मूर्ति बनावे ।

अधोवक्त्रां विनिः क्षिप्य, यष्ट्या विषतरुत्थया ।
तच्छिरास्ताऽनं कर्वन् जपेदस्त्रं विलोमतः ।।

और उसको अधोमुख पृथ्वी पर डालकर विष वृक्ष की लाठी से उसका शिर फोड़े और मन्त्र को पड़ता जावे ।

सप्ताहान्मरणं याति शत्रुर्ज्वर विमोहितः ।
आदित्य रथ नागेन्द्र ग्रस्ताङ्घ्रितिद्विषाहतम् ।।

इस प्रकार करने पर शत्रु ज्वर से युक्त हो जाता है और उसकी एक सप्ताह में मृत्यु हो जाती है । उसको सर्प पैर में काट लेता है ।

नग्नं तेलेन लिप्ताङ्गं दग्धं भानुमरीचिभिः ।
अधोमुखं निज रिपून्ध्यात्वा क्वथित वारिणा ।।
तपेयद्भानुमालोक्य शत्रुर्मृत्यु प्रियो भवेत् ।।

दूसरी विधि मूर्ति को तेल से चुपड़ कर मिर्चों के साथ जलाकर उसका नीचे को मुख कर उष्ण जल से सूर्य का तर्पण करे, तो शत्रु की शीघ्र मृत्यु होवे ।

आङ्गणे स्थण्डिलं कृत्वा सुगन्धिकुसुमादिभिः ।
देवीमभ्यर्चयेन्नित्यं, प्रगुक्तेनैव वर्त्मना ।।

आंगन में वेदी बनाकर सुगन्धित पुष्प आदि से नित्य देवी की विधान पूर्वक अर्चना करे ।

आहरेद्रात्रिषुबलिं चरुणा सर्वसिद्धिदा ।
कृत्यारोग भय द्रोह, भूतादीन्नात्र संशयः ।।

और रात्रि में समस्त सिद्धि दायक चरु द्वारा बलिदान देवे, इस प्रकार करने पर रोग, भय, द्रोह, तथा भूतादिकों का भय नहीं रहता है ।

यथावद्ग्निमाराध्य, गन्धैः पुष्पैः मनोरमैः ।
स्थित्वा तस्याग्रतोमन्त्री, जपेन्मं त्रमनन्यधीः ।।

मनोहर सुगन्धित पुष्पों द्वारा अग्नि की पूजा कर अग्नि के समक्ष अनन्य बुद्धि द्वारा मन्त्र जाप करे ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जपोऽयं सर्व सिद्धयै स्यान्नात्र कार्या विचारणा ।
लवणैमधुरासिक्तै र्जुहुयात्पश्चिमामुखः ।।

यह जप समस्त सिद्धि प्रदायक है, इसमें किसी प्रकार का सन्देह नहीं करना चाहिये, तदनन्तर पश्चिममुख हो नमकीन अन्न तथा मिष्ठान द्वारा हवन करे ।

मन्त्रार्थ संख्यया मन्त्री, रिपुमात्मवशं नयेत् ।
शान्लीन्प्रक्षाल्य संशोध्य, शुद्धान्कुर्वीत तण्डुलान ।

४४ हजार मन्त्र जाप करने पर जपने वाला शत्रु को अपने वश में कर लेता है । शाठी चावलों को धोकर शुद्ध करे ।

जपित्वा पंचगव्येषु संस्कृते हव्यवाहने ।
संपचेज्जपन्मन्त्र, मवचार्य पुनः सधीः ।।

शोधित चावलों को पंचगव्य में शुद्ध करके विद्वान् पुनः मन्त्र का जप करे ।

अर्चयित्वा विशदधीदैवीमग्नौ यथापुरा ।
जुहुयाच्चारुणानेच, साज्येनाष्ट सहस्त्रकम् ।।

पुनः पूर्ववत् देवी को पूजकर अग्नि में घृत युक्त इस चरु के द्वारा आठ हजार आहुति दे ।

पात्रे सम्पातनं कुर्वन्साध्यंतत्प्राशयेत्सुधीः ।
शेषं तं निखने द्वारि सम्प्रातं प्रङ्गणान्तरे ।।

पुनः कुछ चरु पत्र में, रख स्वयं भक्षण करे और शेष को आंगन में गाढ़ देवे अथवा द्वार पर फेंक देवे ।

कृत्यरोगा विनश्यन्ति सह भूत ग्रहामयैः ।
परैरुत्पादिताः कृत्या, पुनस्तानेव भक्षयेत् ।।

कृत्या से उत्पन्न रोग भूत ग्रहों के साथ-साथ नष्ट हो जाते हैं । दूसरों द्वारा भेजी गई कृत्या (घात) उन्हीं को नष्ट करती है ।

जुहुयात्सम्पदां भूमिः साधको भवति ध्रुवम् ।

ऐसा करने पर साधक सम्पत्ति युक्त निश्चय हो जाता है ।

ग्रीहिभिर्हविषा क्षीरैः पयोवृक्ष समिद्भतैः ।
आज्यैर्मधुत्रयोपेतैरतद्दशशतं प्रथक् ।।

हवि, जौ, दूध, दूध युक्त वृक्षों की समिधाओं से, घृत से, शहद, इनसे एक हजार आहुति प्रथक् दे ।

चौबीस गायत्री

गायत्री के २४ अक्षर यथार्थ में २४ शक्ति बीज हैं । पृथ्वी, जल, वायु, तेज, आकाश यह पाँच तत्व तो प्रधान हैं ही, इनके अतिरिक्त २४ तत्व हैं, जिनका वर्णन सांख्य दर्शन में किया गया है । इन सृष्टि के २४ तत्वों का गुंफन करके एक सूक्ष्म अध्यात्म शक्ति का आविर्भाव किया गया है जिसका कि नाम गायत्री रखा गया ।

मारकण्डेय पुराण में शक्ति के अवतार की कथा इस प्रकार है कि सब देवताओं ने अपना-अपना तेज एकत्रित किया और वह एकत्रित तेज केन्द्र शक्ति के रूप में अवतीर्ण हुआ । देवता उन तत्व शक्तियों का नाम हैं जो सृष्टि के निर्माण, पोषण एवं संहार के मूल कारण हैं । रसायन विज्ञान का नियम है कि क्रियाशील पदार्थ के सम्मिलन से नये पदार्थ बनते हैं । रज और वीर्य के सजीव परमाणु जब मिलते हैं तो एक मूर्तमान गर्भ का आविर्भाव होता है । गंधक और पारा मिलकर कजली बन जाती है, दूध और खटाई मिलकर दही बनता है । ऋण और धन परमाणु मिलकर बिजली की शक्तिशाली धारा के रूप में परिणत हो जाते हैं । २४ सूक्ष्म तत्वों के-२४ सूक्ष्म शक्ति के सम्मिलन से एक ऐसी अद्भुत विद्युत धारा उत्पन्न होती है जिसकी सामर्थ्यों का वर्णन करना कठिन है । मारकण्डेय पुराण का शक्ति अवतार और उस अवतार की आश्चर्यजनक क्रियाशीलता इसी तथ्य पर प्रकाश डालती है ।

एक विशेष पर्वतीय प्रदेश की भूमि, वहाँ की वायु, वहाँ की वनस्पति, रासायनिक पदार्थों से सम्मिश्रण के कारण गंगोत्री से आरम्भ होने वाला जल एक विशेष प्रकार के अद्भुत गुणों वाला बन गया । इसी प्रकार चौबीस तत्वों के उपयोगी तत्वों का कारणवश सम्मिश्रण हो जाने के कारण अन्तरिक्ष आकाश में एक विद्युतमयी सूक्ष्म सरिता बह निकली इस अध्यात्म गंगा का नाम "गायत्री" रखा गया । जिस प्रकार गंगा नदी में स्नान करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता प्राप्त होती है, उसी प्रकार उस आकाश वाहिनी विद्युन्मयी गायत्री शक्ति की समीपता से आन्तरिक एवं बाह्य, बल तथा वैभवों की उपलब्धि होती है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सृष्टि के उत्पादक तत्व चैतन्यता रहित कहे जाते हैं, यह अचेतन्य उनका स्थूल रूप है । पर इस अचेतनता के पीछे भी एक प्रेरणा रहती है, क्योंकि बिना प्रेरणा के कोई अचेतन वस्तु कार्य नहीं कर सकती । रेल, मोटर, जहाज, तार, बम, तोप आदि को चलाने वाला कोई न हो तो यह इतने शक्तिशाली, होते हुए भी कुछ कार्य नहीं कर सकते । इन यन्त्रों को चलाने के लिए यह आवश्यक है कि कोई चैतन्य प्राणी इनका संचालन करे । इसी प्रकार तत्वों को क्रियाशील रहने के लिए यह आवश्यक है कि उनके पीछे कोई चैतन्य शक्ति कार्य करती हो । अध्यात्म विद्या के भारतीय वैज्ञानिक सदा से यह मानते आये हैं कि प्रत्येक तत्व के पीछे एक चैतन्य शक्ति, प्रेरक सत्ता के रूप में विद्यमान है और उस प्रेरक शक्ति से सम्बन्ध स्थापित करके उन पदार्थों का लाभ उठाया जा सकता है जिन पर उस शक्ति का आधिपत्य है । इन प्रेरक शक्तियों को भारतीय विज्ञान वेत्ताओं ने देवता नाम दिया है ।

पृथ्वी, वायु, अग्नि, जल आदि की पूजा के लिए वेदोक्त और पुराणोक्त प्रक्रियाएँ मिलती हैं । क्या यह लोहा, लकड़ी, पानी, आग, हवा आदि की पूजा है ? क्या हमारे ऋषि मुनि मूर्ख थे जो यह भी नहीं जानते थे कि इन निर्जीव वस्तुओं के पूजने से लाभ होना असम्भव है ? ऐसा सोचने से काम न चलेगा । भारतीय वैज्ञानिकों ने बहुत ऊँची शोध की थीं । आज के भौतिक विज्ञानी जहाँ अपने विज्ञान की अन्तिम सीमा समझते हैं वहाँ से उनकी शोधों का आरम्भ होता है, उनको मिट्टी, पत्थर पूजने वाला मूर्ख समझने की गलती हमें न करनी चाहिए । वस्तु स्थिति यह है कि एक प्रकार के गुण, शक्ति, स्वभाव, प्रवृति एवं स्थिति के परमाणु समूहों तत्व में रहते हैं और तत्व के पीछे एक प्रेरक शक्ति काम करती है, जो ईश्वरीय अनुशासन नाम से भी पुकारी जाती है । यह प्रेरक, नियामक, उत्पादक, संचालक एवं विध्वंसक सत्ता अपने क्षेत्र की अधिपति है । उसका आधिपत्य अपने क्षेत्र में अक्षुण्य है । उसी का नाम देवता है ।

इन देवताओं की अपनी-अपनी कार्य-प्रणाली, अपनी-अपनी मर्यादा होती है । जहाँ उनमें पदार्थ एवं परमाणुओं सम्बन्धी क्रियाएँ होती हैं वहाँ गुण और स्वभाव सम्बन्धी शक्तियाँ भी हैं इन देवताओं का अपना एक गुण और स्वभाव भी है । जिस देवता से उपासना विधि द्वारा सम्बन्ध स्थापित किया जाता है उसके गुण और स्वभाव के साथ भी सम्बन्ध स्थापित हो जाता है । इस प्रकार वह देव उपासक, अपने उपास्य देव के गुण और स्वभाव को प्राप्त करता है साथ ही जिन पदार्थों पर उस देव शक्ति का आधिपत्य है वे भी उसे किसी न किसी मार्ग से अधिक मात्रा में उपलब्ध होने लगते हैं ।

इन देव शक्तियों तक पहुँचने के लिए, उन्हें पकड़ने के लिए, उनके साथ सम्बन्ध स्थापित करने के लिए साधना विज्ञान के आचार्यों ने समाधि अवस्था में पहुँच कर अपनी ध्यान चेतना को आन्तरिक्ष लोकों में फेंका । उनकी अन्तःचेतना ने देव शक्तियों से सम्बद्ध होते हुए जो अनुभव किये उन अनुभवों को योगी जनों ने देवताओं का रूप घोषित कर दिया । मनुष्य के मस्तिष्क का निर्माण इस प्रकार हुआ है कि उससे कोई भी वस्तु टकरावे तो उसका रूप अवश्य ध्यान में आवेगा । कोई वस्तु साकार हो या निराकार पर यदि मस्तिष्क से उसके सम्बन्ध में कुछ सोचना पड़ा तो वह उसका कोई न कोई रूप निर्धारित करेगा । बिना रूप की स्थापना हुए मस्तिष्क उसके सम्बन्ध में किसी प्रकार की विचारणा या धारणा करने में असमर्थ होता है । साकार वस्तुओं को देखने या सुनने के आधार पर उसका कोई रूप मस्तिष्क में बन जाता है । निराकार वस्तुओं का आकार अपनी कल्पना के आधार पर गढ़ता है । परन्तु यह कल्पना भी किसी न किसी आधार पर चलती है । देवताओं का आकार निर्धारण करने का काम कार्ययोग के आचार्यों ने किया है । उनके मस्तिष्क ने अन्तरिक्ष लोक में फैली हुई देव शक्तियों से सम्बद्ध होते समय जो रूप बनते देखा उसे ही देव रूप माना ।

यह देव रूप एक माध्यम है जिसको पकड़ कर आसानी के साथ उन देव शक्तियों से सम्बन्ध स्थापित किया जा सकता है । देव शक्ति से सम्बद्ध होने पर जो चित्र मन में आता है, यदि प्रारम्भ में

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ही उस चित्र को मन में धारण कर लिया जाय तो उस शक्ति से सम्बद्ध होने का कार्य भी सुविधापूर्वक पूरा किया जा सकता है । देवताओं के रूप का ध्यान करना इस दिशा में प्रधान साधन है इसलिए आचार्यों ने प्रत्येक देवताओं का रूप अपनी अनुभव साधना के आधार पर निर्धारित कर दिया है ।

यहाँ हमें यह भी भली-भाँति ध्यान रखना चाहिए कि यह देवता कोई स्वतन्त्र सत्ता नहीं है । एक ही परमात्मा की विविध शक्तियों का नाम ही देवता है । जैसे सूर्य की विविध गुणों वाली किरणें, आल्ट्रा वायलेट, अल्फा, पारदर्शी, मृत्युकिरण आदि अनेक नामों से पुकारी जाती हैं, उसी प्रकार अनेक, कार्य और गुणों के कारण ईश्वरीय शक्तियाँ भी देव नामों से पुकारी जाती हैं । सूर्य की प्रातःकालीन मध्याह्नकालीन, संध्याकालीन किरणों के गुण भिन्न-भिन्न हैं । इसी प्रकार गर्मी, वर्षा और शीतकाल में किरणों के गुण में अन्तर पड़ जाता है । सूर्य एक ही है पर प्रदेश, ऋतु और काल के भेद से उसका गुण भिन्न-भिन्न हो जाता है । ईश्वर की शक्तियों से इसी प्रकार की विभिन्नताओं से युक्त होने के कारण उनके नाम विभिन्न प्रकार के रखे गये हैं ।

गायत्री में २४ शक्तियाँ गुम्फित हैं । साधारणतः गायत्री की उपासना करने से उन २४ शक्तियों का यथोचित मात्रा में लाभ मिलता है । दूध में सभी पोषक तत्त्व होते हैं , दूध पीने वाले को उन सभी तत्वों का यथोचित मात्रा में लाभ मिल जाता है, परन्तु यदि किसी को किसी विशेष तत्त्व की आवश्यकता होती है तो वह उसके किसी विशेष भाग का ही खास-तौर से सेवन करता है । किसी को दूध के चिकनाई भाग की आवश्यकता होती है तो वह 'घी' निकाल कर उसका सेवन करता है और बाकी अंश को छोड़ देता है । किसी को छाछ की अधिक आवश्यकता है तो वह दूध के छाछ अंश को लेकर अन्य भागों को छोड़ देता है । रोगियों को दूध फाड़ कर उसका पानी मात्र देते हैं । इसी प्रकार किसी विशेष व्यक्ति की गायत्री में रहने वाली अनेक देव शक्तियों में से किसी विशेष शक्ति की आवश्यकता होती है तो वह उसकी आराधना करता है । अपनी प्रमुख आवश्यकता की वस्तु के लिए अधिक श्रम करता है ।

इस दृष्टि से काम करने के लिए प्रथक-प्रथक साधनाएँ बनाई गई हैं । इन पद्धतियों को "चौबीस गायत्री साधना" कहते हैं । गायत्री के तंत्र ग्रन्थों में चौबीस देवताओं की चौबीस गायत्री लिखी हुई हैं । उनका संक्षिप्त सा साधन विधान भी है । उन सबके ऊपर सूक्ष्म दृष्टिपात करने से स्पष्ट हो जाता है कि विविध कामनाओं की पूर्ति के लिए सृष्टि के प्रधान २४ तत्त्वों की प्रेरक शक्तियों का उपयोग करने का यह विधि विधान है ।

भारतीय योग विज्ञान की क्रिया पद्धति यह है कि वह परमाणुओं एवं तत्त्वों का ऊहापोह उस तरह नहीं करती जिस प्रकार वर्तमान काल के भौतिक विज्ञानी करते हैं । वैज्ञानिक अपना अभीष्ट सिद्ध करने के लिए तत्त्वों और परमाणुओं को पकड़ते हैं, इस पकड़ के लिए उन्हें बहुत श्रम और धन से बनने वाली, बार-बार टूटने फूटने वाली मशीनों की आवश्यकता होती है । योग विज्ञान इस सतह में कहीं ऊँची सतह पर काम करता है । वह तत्वों और परमाणुओं के पीठ पर काम करने वाली, प्रेरक एवं चैतन्य देव शक्ति को पकड़ता है और उससे अपना मनोरथ पूरा करता है । इस पकड़ के लिए उसे लोहे की मशीनों की आवश्यकता नहीं होती वरन् मानव शरीर मस्तिष्क एवं अन्तःकरण की अद्भुत, अलौकिक, असाधारण एवं अनन्त शक्तिशाली मशीन का उपयोग करता है । ईश्वर ने जितनी सर्वाङ्गपूर्ण मशीन "मनुष्य देह" बनाई है उतनी सम्पूर्ण सामर्थ्यों वाली सम्पूर्ण प्रयोजनों में प्रयुक्त हो सकने वाली मशीन आज तक किसी भी वैज्ञानिक द्वारा नहीं बनाई जा सकी है और न भविष्य में इस प्रकार की कोई सम्भावना है । भारतीय वैज्ञानिकों ने नई-नई मशीनें बनाने के झंझट से बच कर इस एक ही मशीन से सब सूक्ष्म प्रयोजनों को पूरा करने की क्रिया निकाली थी ।

रेडियो यंत्र की सुई घुमाने से उन विविध स्थानों की ध्वनियाँ सुनाई पड़ती है जो आपस में बहुत दूर और बहुत भिन्न हैं । सुई के घुमाने से यन्त्र के भीतर भारी परिवर्तन हो जाता है कि पहले उसके भीतर जो गतिविधि काम कर रही थी वह बन्द हो जाती

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है और नये प्रकार की गतिविधि आरम्भ हो जाती हैं जिससे पहले जिस स्टेशन की ध्वनियाँ सुनाई पड़ रही थीं वे बन्द होकर नया स्टेशन सुनाई पड़ने लगता है । मनुष्य शरीर की स्थिति को भी साधनात्मक कर्मकाण्डों द्वारा इसी प्रकार परिवर्तित कर दिया जाता है कि वह कभी किसी देव शक्ति के और कभी किसी देव शक्ति के अनुकूल बन जाता है । साधना काल में साधक के रहन-सहन, आहार-विहार, दिनचर्या, विचार, चिन्तन, ध्यान, संयम, कर्मकाण्ड, आदि के ऐसे प्रतिबंध एवं नियन्त्रण कायम किये जाते हैं जिनके कारण उसकी मनोभूमि एक विशेष दिशा में काम करने योग्य बन जाती है । साधनाकाल के नियमोपनियमों का, प्रतिबन्धों या नियन्त्रणों का यदि कोई साधक पूरी तरह पालन न करे तो उसकी मशीन इतनी सक्षम न हो पावेगी कि इच्छित देव शक्ति से सम्बन्ध स्थापित कर सके । इसलिए अध्यात्म विद्या के पथप्रदर्शक अपने शिष्यों को साधना काल में आवश्यक संयमों और प्रतिबंधों का पालन करने के लिए विशेष रूप से सावधान करते रहते हैं ।

स्थूल शरीर में दोनों हाथ इस प्रकार के अवयव हैं जिनकी सहायता से वस्तुओं को पकड़ा जाता है । सूक्ष्म शरीर के भी इसी प्रकार के दो हाथ हैं जिनके द्वारा परमाणु और तत्त्वों की प्रकृति से ऊपरी सतह पर-ब्रह्मलोक में-भ्रमण करने वाली देव शक्तियों को पकड़ा जाता है । इन सूक्ष्म हाथों का नाम है-श्रद्धा और विश्वास । श्रद्धा और विश्वास के कारण मानव अन्तःकरण में बिखरी हुई शक्तियाँ एक स्थान पर एकत्रित हो जाती हैं । इस एकीकरण को जिस दिशा में प्रेरित किया जाता है उसी में वह बड़ी द्रुत गति से दौड़ती है । थोड़ी सी बारूद और शीशे की गोलियों की पुड़िया को बन्दूक की नाल में भरते हैं, इस पुड़िया को चिनगारी लगाकर एक बन्दूक की नली की सहायता से एक विशेष दिशा में उड़ाते हैं । निशाना सधा होने पर वह गोली अभीष्ट स्थान पर प्रहार करती है और लक्ष्य को वेध देती है । योग साधना में भी यही होता है । आहार विहार का, दिनचर्या का प्रतिबंध बन्दूक बनाना है, उसमें श्रद्धा और विश्वास की गोली बारूद डाली जाती है, साधना विधि उसमें चिनगारी लगाना है, इस प्रकार जो लक्ष्यवेध किया जाता है वह मनोवाञ्छित परिणाम उपस्थित कराता है । चन्द्रलोक और मंगल ग्रह की यात्रा करने की तैयारी में जो वैज्ञानिक लगे हुऐ हैं वे ऐसी तोप तैयार कर रहे हैं जो अत्यन्त दूरी तक निशाना फेंक सके । उस तोप में ऐसा गोला रखा जायगा जिसमें यात्री बैठ सकें । यह गोला चन्द्र या मंगल तक उन्हें पहुँचा देगा ऐसी उनकी मान्यता है । यह प्रयोग कहाँ तक सफल होगा यह तो भविष्य बतावेगा पर भूतकाल में यह भली प्रकार साबित हो चुका है कि योग साधना रूपी लक्ष्यवेध उपर्युक्त विधि-विज्ञान के आधार पर देव शक्तियों के साथ टकराता है, उन्हें पकड़ता है और उन्हें मनुष्य के लाभ के लिए उसी प्रकार प्रस्तुत कर देता है जिस प्रकार कि आज के वैज्ञानिकों ने बिजली, भाप आदि की शक्तियों को मनुष्य की सुख साधना के लिए लगा दिया है । योग साधक अपनी निज की शक्ति को सुसंचालित करके देव शक्तियों तक पहुँचते हैं और उनसे वे लाभ वे वरदान प्राप्त करते हैं जिनकी उन्हें आवश्यकता होती है । हमारे इतिहास पुराण पग-पग पर इस महासत्य की साक्षी देते हैं ।

विज्ञान का मार्ग एक होते हुए भी उनके साधन अवयवों में अन्तर होता है, हो सकता है । रेडियो का विज्ञान एक है पर रेडियो यन्त्रों की बनावट हर बनाने वाला अलग-अलग रखता है । घड़ियों और मोटरों के पुर्जों में भी इसी प्रकार का हेर-फेर हुआ करता है । इस प्रकार के अन्तर होते हुए भी इन विविध आकृति के यन्त्रों से लाभ एक जैसा ही मिलता है । योग साधना के अनेक मार्ग हैं, उनमें से एक मार्ग गायत्री मार्ग भी है । गायत्री की साधना पद्धति द्वारा भी उन सूक्ष्म देव शक्तियों से साधक अपने को सम्बद्ध कर सकता है और अभीष्ट लाभ उठा सकता है ।

गायत्री के तंत्र ग्रन्थों में २४ गायत्रियों का वर्णन है । चौबीस देवताओं के लिए एक-एक गायत्री है । इस प्रकार चौबीस गायत्रियों द्वारा चौबीस देवताओं से सम्बन्ध स्थापित किया गया है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गायत्री मन्त्र के २४ अक्षरों में प्रत्येक के देवता क्रमशः, (१) गणेश (२) नृसिंह (३) विष्णु (४) शिव (५) कृष्ण (६) राधा (७) लक्ष्मी (८) अग्नि (९) इन्द्र (१०) सरस्वती (११) दुर्गा (१२) हनुमान (१३) पृथ्वी (१४) सूर्य (१५) राम (१६) सीता (१७) चन्द्रमा (१८) यम (१९) ब्रह्मा (२०) वरुण (२१) नारायण (२२) हयग्रीव (२३) हंस (२४) तुलसी, यह हैं । यद्यपि इनमें से कई नामों के मनुष्य, अवतार, ग्रह, नक्षत्र, तत्त्व, पक्षी, वृक्ष आदि भी होते हैं और उनके चरित्र भी उपलब्ध होते हैं पर यहाँ स्मरण रखना चाहिए कि ऊपर जिन नामों का उल्लेख है उनका प्रयोग तन्त्र विज्ञान में विशुद्ध देव शक्तियों के रूप में होता है । यों इन देव शक्तियों की छाया लेकर मनुष्य, ग्रह, तत्त्व, पक्षी, वृक्ष आदि भी हुए हैं पर वे उन शक्तियों के या तो स्थूल प्रतीक हैं या अलंकारिक विवेचन । हंस पक्षी, तुलसी का पौधा, सूर्य चन्द्र ग्रह, अग्नि, वरुण आदि तत्त्व, राम, कृष्ण, सीता, राधा, हनुमान आदि अवतारी पुरुष उन देव शक्तियों के स्थूल प्रस्फुरण हैं, वस्तुतः वे शक्तियाँ अत्यन्त सूक्ष्म और ईश्वरीय सूर्य की किरणें हैं । चौबीस गायत्रियों द्वारा उन चौबीस किरणों का ही सानिध्य स्थापित किया जाता है ।

यह पहले ही बताया जा चुका है कि देवशक्तियाँ स्वयं चैतन्य हैं और अपनी मर्यादा में परमाणुओं , तत्त्वों एवं पदार्थों पर शासन करती हैं । इसलिए वे भौतिक और आत्मिक दोनों ही सत्ताओं से सम्पन्न हैं । देव उपासना से मनुष्य को उस प्रकार के आत्मिक गुण प्राप्त होते हैं साथ ही उसके शासन में रहने वाले पदार्थ भी उसी ओर खिंच-खिंच कर जमा होते हैं । मधुमक्खियों के छत्ते में एक शासक मक्खी होती है वह जिधर चलती है उधर ही छत्ते की अन्य सब मक्खियाँ चल देती हैं, जहाँ चुम्बक होता है वहाँ लोहे के कण स्वयमेव खिंच आते हैं । शक्ति अपने आधार को अपनी ओर खींचती रहती है । जिस मनुष्य ने जिस देव शक्ति की जितनी धारणा अपनी मनोभूमि में कर ली है उसी अनुपात से उस शक्ति से सम्बन्धित परिस्थितियाँ एवं वस्तुएँ उसकी ओर खिंचती चली आवेंगी और वह देव उपासना का समुचित लाभ प्राप्त करेगा ।

गायत्री के चौबीस देवताओं की चैतन्य शक्ति क्या है और उस शक्ति के द्वारा क्या-क्या लाभ मिल सकते हैं इसका विवरण नीचे दिया जाता है –

(१) गणेश- सफलता शक्ति । फल-कठिन कामों में सफलता, विघ्नों का नाश, बुद्धि वृद्धि ।

*(२) नृसिंह-*पराक्रम शक्ति । फल-पुरुषार्थ पराक्रम, वीरता, शत्रुनाश, आतंक, आक्रमण ।

*(३) विष्णु-*पालक शक्ति । फल-प्राणियों का पालन, आश्रितों की रक्षा, योग्यताओं की वृद्धि रक्षा ।

*(४) शिव-*कल्याण शक्ति । फल-अनिष्ट का विनाश, कल्याण की वृद्धि, निश्चिंतता, आत्म परायणता ।

*(५) कृष्ण-*योग शक्ति । फल-क्रियाशीलता, आत्म-निष्ठा, अनासक्ति, कर्मयोग, सौन्दर्य, सरसता ।

*(६) राधा-*प्रेम शक्ति । फल-प्रेम दृष्टि, द्वेषभाव की समाप्ति, आत्मीयता ।

*(७) लक्ष्मी-*धन शक्ति । धन, पद, यश और भोग्य पदार्थों की प्राप्ति ।

*(८) अग्नि-*तेज शक्ति । फल-उष्णता, प्रकाश, गति और सामर्थ्य की वृद्धि । प्रभावशाली, प्रतिभाशाली, तेजस्वी होना ।

*(९) इन्द्र-*रक्षा शक्ति । फल-रोग, हिंसक, चोर, शत्रु, भूत, प्रेत, अनिष्ट आदि के आक्रमणों से रक्षा ।

*(१०) सरस्वती-*बुद्धि शक्ति । फल-मेधा की वृद्धि, बुद्धि की पवित्रता, चतुरता, दूरदर्शिता, विवेकशीलता, गुण ।

*(११) दुर्गा-*दमन शक्ति । फल-विघ्नों पर विजय, दुष्टों का दमन, शत्रुओं का संहार, दर्प की प्रचण्डता ।

*(१२) हनुमान-*निष्ठा शक्ति । फल-कर्तव्य-परायण, निष्ठावान्, विश्वासी, ब्रह्मचारी एवं निर्भय होना ।

(१३) पृथ्वी शक्ति । फल-गंभीरता, क्षमा शीलता, सहिष्णुता, दृढ़ता, धैर्य, भार वहन करने की क्षमता ।

*(१४) सूर्य-*प्राण शक्ति । फल-निरोगता, दीर्घजीवन, विकास वृद्धि, उष्णता, विकारों का शोधन

*(१५) राम-*मर्यादा शक्ति । फल-तितीक्षा,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कष्ट में विचलति न होना, धर्म मर्यादा, सौम्यता, संयम, मैत्री ।

(१६) सीता-तप शक्ति । फल-निर्विकार, पवित्रता, मधुरता, सात्विकता, शील, नम्रता ।

(१७) वन्द्र शक्ति । फल-उद्विग्नताओं की शान्ति, शोक, क्रोध, चिन्ता प्रतिहिंसा आदि विक्षोभों का शमन, काम, लोभ, मोह एवं तृष्णा का निवारण, निराशा के स्थान पर आशा का संचार ।

(१८) यम-काल शक्ति । फल-समय का सदुपयोग, मृत्यु से निर्भयता, निरालस्यता, स्फूर्ति, जागरूकता ।

(१९) ब्रह्मा-उत्पादक शक्ति । फल-उत्पादक शक्ति की वृद्धि । वस्तुओं का उत्पादन बढ़ना, सन्तान बढ़ना, पशु, कृषि वृक्ष वनस्पति आदि में उत्पादन की मात्रा का बढ़ जाना ।

(२०) वरुण- रस शक्ति । फल-भावुकता, सरसता, कलाप्रियता, कवित्व, आर्द्रता, दया, दूसरों के लिए द्रवित होना, कोमलता, प्रसन्नता, माधुर्य, सौन्दर्य ।

(२१) नारायण-आदर्श शक्ति । फल-महत्वाकांक्षा, श्रेष्ठता, उच्च आकांक्षा, उच्च आदर्श, दिव्य गुण, दिव्य स्वभाव, उज्ज्वल चरित्र-पथ प्रदर्शक कार्य शैली, ।

(२२) हयग्रीव-साहस शक्ति । फल-साहस, उत्साह, वीरता, शूरता, निर्भयता, कठिनाइयों से लड़ने की अभिला पुरुषार्थ

(२३) हंस-विवेक शक्ति । उज्जवल कीर्ति, आत्म-संतोष, सत्-असत-निर्णय, दूरदर्शिता, सत्संगति, उत्तम आहार-विहार ।

(२४) तुलसी-सेवा शक्ति । फल-लोक सेवा में प्रवृत्ति, सत्व प्रधानता, पतिव्रत, पत्नीव्रत, आत्म शान्ति, पर दुःख निवारण ।

जिसे अपने में जिस शक्ति की, जिस गुण कर्म स्वभाव की, कमी या विकृति दिखाई पड़ती हो उसे उस शक्ति वाले देवता की उपासना विशेष रूप से करनी चाहिए । जिस देवता की जो गायत्री है उसका दशांश जप गायत्री साधना के साथ-साथ करना चाहिए । जैसे कोई व्यक्ति यदि संतानहीन है, सन्तान की कामना करता है तो उसे ब्रह्मा-गायत्री की भी उपासना करनी चाहिए । यदि गायत्री की दस मालाएँ नित्य जपी जायँ तो एक माला ब्रह्म गायत्री की भी जपनी चाहिए । केवल मात्र ब्रह्म गायत्री जपने से काम न चलेगा, क्योंकि ब्रह्म गायत्री की स्वतंत्र सत्ता उतनी बलवती नहीं है देव गायत्रियाँ, उस महान् वेद माता गायत्री की छोटी-छोटी शाखाएँ तभी तक हरी-भरी रहती हैं जब तक वे मूल वृक्ष के साथ जुड़ी हुई हैं । वृक्ष से अलग कट जाने पर शाखा निष्प्राण हो जाती है, उसी प्रकार अकेली देव गायत्री भी निष्प्राण होती हैं, उनका जप महा गायत्री के साथ ही करना चाहिए ।

आरम्भ में देव गायत्री का जप करना चाहिए । साथ ही उस देवता का ध्यान करते जाना चाहिए और ऐसी भावना करनी चाहिए कि वह देवता, हमारे अभीष्ट परिणाम को प्रदान करेंगे । नीचे चौबीसों देवताओं की गायत्रियाँ दी जाती हैं । इसके जप से उन देवताओं के साथ विशेष रूप से सम्बन्ध स्थापित होता है और उनसे सम्बन्ध रखने वाले गुण, पदार्थ एवं अवसर साधक को प्राप्त होते हैं -

(१) गणेश गायत्री-ॐएकदंष्ट्राय विद्महे, वक्रतुण्डाय धीमहि तन्नो बुद्धिः प्रचोदयात् ।

(२) नृसिंह गायत्री-ॐ उग्र नृसिंहाय विद्महे, वज्र नखाय धीमहि तन्नो नृसिंह प्रचोदयात् ।

(३) विष्णु गायत्री-ॐ नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि तन्नो विष्णु प्रचोदयात् ।

(४) शिव गायत्री--ॐ तत्पुरुषाय विद्महे, महादेवाय धीमहि तन्नः शिवः प्रचोदयात् ।

(५) कृष्ण गायत्री-ॐ देवकी नन्दनाय विद्महे, वासुदेवाय धीमहि तन्नो कृष्ण प्रचोदयात् ।

(६) लक्ष्मी गायत्री-ॐ महालक्ष्म्यै विद्महे, विष्णु प्रियायै धीमहि तन्नो लक्ष्मी प्रचोदयात् ।

(७) अग्नि गायत्री-ॐ महज्वालाय विद्महे, अग्निदेवाय धीमहि । तन्नः अग्नि प्रचोदयात् ।

(८) इन्द्र गायत्री-ॐ सहस्त्र नेत्राय विद्महे । वज्र हस्ताय धीमहि । तन्नो इन्द्रः प्रचोदयात् ।

(९) सरस्वती गायत्री-ॐ सरस्वत्यै विद्महे, ब्रह्मपुत्र्यै धीमहि । तन्नो देवी प्रचोदयात् ।

(१०) हनुमान गायत्री-ॐ अंजनी सुताय विद्महे । वायु पुत्राय धीमहि, तन्नो मरुतः प्रचोदयात् ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

(११) पृथ्वी गायत्री-ॐ पृथ्वी देव्यै विद्महे, सहस्त्र मूर्त्यै धीमहि । तन्नः पृथ्वी प्रचोदयात् ।

(१२) दुर्गा गायत्री-ॐ गिरजायै विद्महे, शिव प्रियायै धीमहि । तन्नो दुर्गा प्रचोदयात् ।

(१३) सूर्य गायत्री-ॐ भास्कराय विद्महे, दिवाकरराय धीमहि, । तन्नः सूर्यो प्रचोदयात् ।

(१४) राम गायत्री-ॐ दशरथाय विद्महे, सीता बल्लभाय धीमहि, । तन्नो रामः प्रचोदयात् ।

(१५) सीता गायत्री-ॐ जनक नन्दन्यै विद्महे, भूमिजायै धीमहि, । तन्नो सीता प्रचोदयात् ।

(१६) चन्द्र गायत्री-ॐ क्षीर पुत्राय विद्महे, अमृत तत्वाय धीमहि । तन्नः चन्द्रः प्रचोदयात् ।

(१७) यम गायत्री-ॐ सूर्य पुत्राय विद्महे, महाकालाय धीमहि । तन्नो यमः प्रचोदयात् ।

(१८) ब्रह्मा गायत्री-ॐ चतुर्मुखाय विद्महे, हंसारूढ़ाय धीमहि, । तन्नो ब्रह्मा प्रचोदयात् ।

(१९) वरुण गायत्री-ॐ जल बिम्बाय विद्महे, नील पुरुषाय धीमहि । तन्नो वरुणोः प्रचोदयात् ।

(२०) नारायण गायत्री-ॐ नारायण विद्महे, वासुदेवाय धीमहि । तन्नो नारायणः प्रचोदयात् ।

(२१) हयग्रीव गायत्री-ॐ वाणीश्वराय विद्महे, हयग्रीवाय धीमहि, । तन्नो हंस प्रचोदयात् ।

(२२) हंस गायत्री-ॐ परमहंसाय विद्महे । महाहंसाय धीमहि । तन्नो हंसः प्रचोदयात् ।

(२३) राधा गायत्री-ॐ वृषभानुजायै विद्महे, कृष्ण प्रियायै धीमहि। तन्नो राधा प्रचोदयात् ।

(२४) तुलसी गायत्री-ॐ श्री तुलस्यै विद्महे, विष्णु प्रियायै धीमहि । तन्नो वृन्दा प्रचोदयात् ।

इन देव गायत्रियों के साथ व्याहृतियाँ लगाने की आवश्यकता नहीं है । क्योंकि ये वेदोक्त नहीं तंत्रोक्त है । यों तो उपर्युक्त देव शक्तियों के साथ सम्बन्ध स्थापित करने के स्वतंत्र एवं विशिष्ट विज्ञान है जो साधना ग्रन्थों में सविस्तार वर्णित है उन साधनाओं से सम्पूर्ण प्रगति उसी दिशा में होती है । यहाँ उस विस्तृत विज्ञान का वर्णन करना आवश्यक नहीं । यहाँ तो इन देव शक्ति में एवं उनकी गायत्रियों का वर्णन इसलिए किया गया है कि वेद माता का सर्व फल दायिनी साधना में भी किसी विशेष तत्त्व को बढ़ा कर किसी विशेष उद्देश्य के लिए एक अतिरिक्त प्रयत्न भी साथ में जोड़ा जा सके ।

तीन वर्णों की तीन गायत्री

ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य इन वर्णों के लिए प्रथक-प्रथक गायत्री भी कही गई है । वेदोक्त विधि से तीनों वर्णों के लिए एक ही गायत्री है । जिसमें एक प्रणव और तीन व्याहृतियाँ हैं । परन्तु तंत्रोक्त साधनाओं में द्विजों के तीन वर्णों के लिए गायत्री में प्रथकता रखी गई है । अपने वर्ण के अनुसार ही तंत्रोक्त साधना के लिए अपने वर्ण की गायत्री का उपयोग करना चाहिए । गायत्री तंत्र में कहा है कि-

प्रणवत्रयप संयुक्ता ब्राह्मणेषु प्रकीर्तिता ।
क्षत्रादौपरमेशानि सर्वत्र प्रणवद्वयम् ।।

अर्थात्-ब्राह्मण को तीन प्रणव के साथ गायत्री का जप करना चाहिए और क्षत्रियों के लिए दो प्रणव युक्त गायत्री कही है ।

उपर्युक्त प्रमाणों के अनुसार प्रत्येक वर्ण की एक प्रथक गायत्री हो जाती है । ब्राह्मण जब तंत्र साधना के लिए गायत्री का उपयोग करे तो उसे चाहिए कि ॐ ॐ ॐ तीन बार प्रणव का उच्चारण करके तब भूर्भुवः स्वः तत्सवितु आदि मन्त्र का उच्चारण करे यह ब्रह्म गायत्री हुई । इसी प्रकार दो बार ॐकार का उच्चारण करने के उपरान्त आगे का मन्त्र जपने का विधान क्षत्रिय के लिए वह क्षत्रिय गायत्री है ।

वैश्य के लिए एक प्रणव लगाकर गायत्री का उपयोग करना चाहिए जैसा कि आमतौर से उच्चारण होता है । यह वैश्य गायत्री है ।

पर यह ध्यान रखना चाहिए कि वर्णों के अनुसार ब्रह्म गायत्री, क्षत्रिय गायत्री, वैश्य गायत्री केवल, तंत्रोक्त कार्यों के लिए ही है । वेदोक्त दक्षिण मार्ग में तीनों के लिए एक ही गायत्री है उसमें किसी वर्ण के लिए कोई भेद नहीं होता । योग साधना के लिए एक प्रणव वाली गायत्री ही प्रयोग होती है ।

गायत्री तत्वबोधः

शिवं पप्रच्छ कैलासे पार्वती सैकदा प्रभुम् ।
आद्य शक्त्यास्तु गायत्र्याश्चतुर्विंशति संख्यके ।। १ ।।
अक्षराणां गणे देव ! शक्तयो याः समाहिताः
तास्तु मे ज्ञातुमिच्छास्ति कृषया वद विस्तरात् ।। २ ।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

टीका- कैलास पर्वत पर पार्वती जी ने शिवजी से एक बार पूछा-हे देव ! आद्य शक्ति गायत्री के चौबीस अक्षरों में समाहित देव शक्तियों का रहस्य जानने की इच्छा है, सो कृपया विस्तार पूर्वक कहिए -॥ १ । २ ॥

शिव उवाचः-

देवि ! दुर्लभमेतत्तु रहस्यं सर्वमेव हि ।
देवतानामृषीणां च सर्वेषामपि पूर्णतः ।
प्रकाशितं करोष्येतत् तदैवानुग्रहाच्छणु ॥ ३ ॥

टीका-शिवजी बोले हे देवि ! यह रहस्य देवताओं और ऋषियों के लिए भी पूर्ण रूप से दुर्लभ है । तुम्हारे आग्रह के कारण इन रहस्यों को प्रकट कर रहा हूँ, ध्यान से सुनो ॥ ३ ॥

ऊँकारस्तु परंब्रह्म व्याप्तो ब्रह्माण्डमण्डते ।
यः स एवोच्यते शब्द ब्रह्मायो नादब्रह्म च ॥ ४ ॥
सर्वेषां वेदमन्त्राणां, चोच्चारणदयम् । ॐकारः कथ्यते सर्वैः पाठान्तेऽपि च सर्वदा ॥ ५ ॥

टीका-ॐकार परब्रह्म है । वह निखिल ब्रह्माण्ड में व्याप्त है, उसे शब्द ब्रह्म और नाद के नाम से भी जाना जाता है । प्रत्येक वेदमन्त्र के उच्चारण के पूर्व तथा पाठ-समाप्ति के बाद इसे लगाया जाता है ॥ ४-५ ॥

ॐकारस्यैव वर्णेभ्यस्त्रिभ्यस्तु व्याहृतित्रयम् ।
उत्पन्नं यच्च गायत्र्यामोङ्कारान्ते प्रयुज्यते ॥ ६ ॥
भूर्भुवः स्वरयं शीर्षो भागो मन्त्रस्य विद्यते ।
पृथक्त्वेऽप्यस्य मन्त्रस्य प्रारम्भेऽस्ति नियोजनम् ॥ ७ ॥

टीका-ॐकार के तीन अक्षरों से तीन व्याहृतियाँ उत्पन्न हुई । उन्हें भी गायत्री महामन्त्र के साथ ॐ के उपरान्त जोड़ा जाता है । 'ॐ भूर्भुवः स्वः' यह गायत्री मन्त्र का शीर्ष भाग है । पृथक् होते हुए भी इसका मन्त्र के आदि में नियोजन होता है ॥ ६-७ ॥

अस्यानन्तरमेषोऽस्ति प्रारब्धो मन्त्र उत्तमः ।
विद्यन्ते यत्र वर्णास्तु चतुर्विंशतिसंख्यकाः ॥ ८ ॥
तदादिवर्णगानर्थान् वर्णानगणयँस्तु तान् ।
'ण्यं' वर्णस्य च द्वौ भागौ 'णि' 'यं' कर्तुं च छान्दसे । ९ ।
इयादिंपूरणे सूत्रे ध्वनिभेदतया पुनः ।
चतुर्विंशतिरेवं च वर्णा मन्त्रे भवन्त्यतः ॥ १० ॥

टीका-इसके उपरान्त उत्तम गायत्री मन्त्र प्रारम्भ होता है । गायत्री के चौबीस अक्षर हैं । गणना में 'तत्' आदि वर्णों में अर्धाक्षरों को नगण्य मानकर, उन्हें एक ही अक्षर गिना जाता है । ऐसी स्थिति में ध्वनि भेद के आधार पर छन्दः प्रयोग में 'इयादिपूरणे' सूत्रानुसार 'ण्यं' वर्ण को 'णि' और 'यं'-इन दो भागों में बाँट लिया जाता है । इस प्रकार चौबीस की संख्या पूरी हो जाती है ॥ ८-९ ॥

गायत्रीमन्त्रगा वर्णा प्रतीका निश्चितं मताः ।
स्वस्वविशिष्टदेवीनां देवतानामथापि च ॥ ११ ॥
ऋषीणां शक्तिबीजानां यन्त्राणामपि पार्वति ।
सन्त्येषां च प्रयोगोऽय रहस्यं सत्फलं पृथक् ॥ १२ ॥
तत्वज्ञानयुता योगरतास्ते हि तपस्विनः ।
उद्भावयन्ति यान्येवं लाभमासादयन्ति च ॥ १३ ॥

टीका-गायत्री मन्त्र का प्रत्येक अक्षर एक-एक विशिष्ट शक्ति धारा-देवी का, देवता का, ऋषि का, शक्तिबीज का, यन्त्र चक्र का प्रतीक है । इनमें से प्रत्येक के अपने-अपने रहस्य, प्रयोग और प्रतिफल है । जिन्हें तत्वज्ञानी, योगी, तपस्वी प्रकट करते और लाभान्वित होते रहते हैं ॥ ११-१३ ॥

'तत्' वर्णस्य तु देवीं तामाद्यां शक्तिं वदन्त्यथ ।
देवतां च परंब्रह्म बीजमोङ्कारमेव च ॥ १४ ॥
विश्वमित्रमृषिं यन्त्रं गायत्रीं फलमस्य च ।
प्रज्ञादीक्षे विभूती द्वे संस्कारित्वाऽऽप्तकामते ॥ १५ ॥

टीका-'तत्' अक्षर की देवी-'आद्यशक्ति', देवता-'परब्रह्म', बीज-ॐ, ऋषि-'विश्वामित्र', यन्त्र-'गायत्रीयन्त्रम्' विभूति-'प्रज्ञा एवं दीक्षा' तथा प्रतिफल-'आप्तकाम एवं सुसंस्कारिता' है ॥ १४॥ १५

'स' वर्णस्य देवी च ब्राह्मी ब्रह्मा तु देवता ।
ऋषि र्वशिष्ठो यन्त्रं च ब्राह्मी भूतिद्वयं पुनः ।
श्रद्धायुक्ते च विद्यन्ते फलं सृष्टिः सुसन्तति ॥ १६-१७ ॥

टीका-'स' अक्षर की देवी-'ब्राह्मणी' देवता-'ब्रह्मा' बीज-'ह्रीं', ऋषि-'वशिष्ठ', यन्त्र-'ब्राह्मीयंत्रम्', विभूति श्रद्धा एवं युक्ता और प्रतिफल सृजन शक्ति एवं सुसन्तति है ॥ १६-१७ ॥

'वि' अक्षरस्य च देवी सा वैष्णवी देवता च सः ।
विष्णुः णं बीजमेतस्य वैष्णवी यन्त्रमेव च ॥ १८ ॥
ऋषिः स नारदो भूती निष्ठाक्षेमे च सन्त्यपि ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

फलं वर्चोऽथ तद्दिव्यं वैभवं द्वयमेव तु ।। १९ ।।

टीका-'वि' अक्षर की देवी-'वैष्णवी' देवता 'विष्णु', 'बीज,-'णं' यन्त्र-'वैष्णवीयंत्रम्', ऋषि-'नारद' विभूति-'निष्ठा एवं क्षमा', और प्रतिफल-'वर्चस् एवं दिव्य वैभव' हैं ।। १८-१९ ।।

'तु' अक्षरस्य च देवी तु शाम्भवी देवता शिवः ।
बीज 'शं' अत्रिरेवर्षिः शाम्भवी यन्त्रमेव च ।
भूती मुक्ता शिव मुक्ति फलं चानिष्टनाशनम् ।। २० ।।

टीका-'तु' अक्षर की देवी-'शाम्भवी' देवता-'शिवे,' बीज-'शं',ऋषि,'अत्रि' यंत्र-'शाम्भवीयन्त्रम् विभूति-'मुक्ता' एवं 'शिवा' तथा प्रतिफल है-'मुक्तिप्राप्ति तथा अनिष्ट-निवारण' ।। २० ।।

वस्य वर्णस्य देवी तु वेदमाताऽथ देवता ।
आदित्यो बीजं ओं एवं ऋषिर्व्यासोऽथयन्त्रकम् ।।२१।।
विद्या सन्ति च भूती द्वे स्मृतिविद्ये क्रमातथा ।
अस्य प्रतिफलं दिव्यस्फुरणं ज्ञानमुत्तमम् ।। २२ ।।

टीका-'व' अक्षर की देवी-'वेदमाता', देवता-'आदित्य' बीज-'ओं' ऋषि-'वेदव्यास', यन्त्र-'विद्यायन्त्रम्' विभूति-'स्मृति एवं विद्या तथा प्रतिफल-'दिव्यस्फुरणा व सद्ज्ञान' है ।। २१-२२ ।।

'रे' वर्णस्य च देवी तु देवमाताऽथ देवता ।
इन्द्रो बीजं च लृं अस्य भृगुः ऋषिरुत्तमः ।। २३ ।।
यन्त्रं देवेशयन्त्रं च देवयानी तथैव च ।
दिव्या भूती फलं सन्ति देवत्वं सच्चरित्रता ।। २४ ।।

टीक-'रे' अक्षर की देवी -'देवमाता' देवता-'इन्द्रं' बीज-'लृं', ऋषि-'भृगु', यन्त्र 'देवेशयन्त्रम्' विभूति-'दिव्या एवं देवयानी', तथा प्रतिफल-देवत्व व सच्चरित्रता हैं । ।।२३-२ ।।

विश्वमाता 'णि' देवी सा विश्वकर्मा च देवता ।
बीजं स्त्रीं यन्त्रमस्यैवं मातृयन्त्रमृषिश्च सः ।। २५ ।।
अङ्गिरा भूति के ध्येया विराजा सन्ति च क्रमात् ।
सहयोगस्य संसिद्धिर्विराटानुभवः फलम् ।। २६ ।।

टीका-'णि' अक्षर की देवी-'विश्वमाता' देवता 'विश्वकर्मा', बीज-'स्त्री० 'यन्त्र-मातृयन्त्रम्', ऋषि 'अंगिरा',विभूति-'विराट एवं ध्येया' और प्रतिफल-'विराटानुभूति एवं सहयोग सिद्धि' है ।। २५-२६ ।।

ऋतम्भरा च 'यं' देवी विद्यते देवता पुनः ।
हिरण्यगर्भो बीजं ऋं भरद्वाजो महानृषिः ।। २७ ।।
ऋतं यन्त्रं विभूती च सत्या सा सुमुखी तथा ।
न्यायः च स्थिरप्रज्ञत्वं फलं सन्ति यथाक्रमम् ।।२८ ।।

टीका-'यं' अक्षर की देवी-'ऋतम्भराद,' देवता-'हिरण्यगर्भ', बीज-'ऋं', ऋषि-भरद्वाज, यन्त्र 'ऋत्यन्त्रमं', विभूति 'सत्या एवं सुमुखी,' तथा प्रतिफल-'स्थिरप्रज्ञा व न्याय' है ।। २७-२८ ।।

'भ' वर्णस्थ देवीं तु मता मन्दाकिनी वसुः
देवता बीजं उं चैव गौतमोऽसावृषिस्तथा ।। २९ ।।
निर्मला यन्त्रमेवं च निर्मला विरजे पुनः ।
भूती सन्ति फलं चैव निर्माल्यं पापनाशनम् ।। ३० ।।

टीका-'भ' अक्षर की देवी-'मन्दाकिनी' देवता-'वसु', बीज, 'उं' ऋषि-'गौतम', यन्त्र-'निर्मलायन्त्रम्,' विभूति-निर्मला एवं विरजा और प्रतिफल-'निर्मलता व पापनाश' हैं ।। २९-३० ।।

'गों' देवीमजपामेवं देवता मरुतं तथा ।
बीजं यं तमृषिं चास्य कथयन्ति पतञ्जलिम् ।। ३१ ।।
यन्त्रं निरञ्जनां भूती सहजां च निरञ्जनाम् ।
शान्ति प्रतिफलं चास्य भयनाशं च सर्वतः ।। ३२ ।।

टीका-'गों' अक्षर की देवी-'अजपा', देवता-'मरुत्', बीज-'यं', ऋषि-'पतञ्जलि', यन्त्र-'निरंजनायन्त्रम्', विभूति-'निरंजना एवं सहजा' प्रतिफल 'शांति एवं भयनाश' हैं ।। ३१-३२ ।।

ऋद्धिं दे वर्णदेवीं तु गणेशं देवता तथा ।
बीजं गं च कणादं तं ऋषिमृद्धिं च यन्त्रकम् ।। ३३ ।।
तुष्टिं भद्रां विभूती च कथयन्तिद्वयं पुनः ।
प्रतिफलं गुणवत्तां तां तुष्टिं च सुखदायिनीम् ।। ३४ ।।

टीका-'दे' अक्षर की देवी-'ऋद्धि', देवता-गणेश, बीज-'गं' ,ऋषि-'कणाद', यन्त्र-'ऋद्धियन्त्रम्' विभूति-'तुष्टा एवं भद्रा तथा प्रतिफल-तुष्टि एवं गुणवत्ता है ।। ३३-३४ ।।

ऋद्धिं 'व' वर्णं देवी च क्षेत्रपालं च देवताम् ।
बीजं क्षं कथयन्त्येवं अगस्त्यमृषिमस्य तु ।। ३५ ।।
सिद्धि यन्त्रं विभूती च सूक्ष्मां तां योगिनी तथा ।
फलं तन्मयतामाद्यं द्वितीयं कार्यकौशलम् ।। ३६ ।।

टीका-'व' अक्षर की देवी-'सिद्धि', देवता-'क्षेत्रपाल', बीज-'क्षं', ऋषि-'अगस्त्य', यन्त्र-'सिद्धियन्त्रम्, विभूति-'सूक्ष्मा एवं योगिनी' और प्रतिफल-'तन्मयता' एवं कार्यकुशलता' हैं ।। ३५३६ ।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

'स्यं' देवीं कथयन्त्येवं सावित्रीं देवतामथ ।
सवितारं च बीजं तु ङ्गं पुलस्त्यमृषिं पुनः ॥ ३७ ॥
सावित्रीं यन्त्रमेतस्य कल्याणीष्टे विभूतिके ।
साफल्यं ब्रह्मविद्यां च द्वयं प्रतिफलं तथा ॥ ३८ ॥

टीका-'स्य' अक्षर की देवी-'सावित्री' देवता-'सविता' बीज-'ङ्गं' 'ऋषि-'पुलस्त्य', यन्त्र-'सावित्रीयन्त्रम्' विभूति-'कल्याणी एवं इष्टा' और प्रतिफल -'ब्रह्मविद्या एवं साफल्य' हैं ॥ ३७-३८ ॥

सरस्वती तु 'धी' देवी देवता च प्रजापतिः
ऐं बीजं कश्यपश्चर्षिर्यन्त्रं चाऽपि सरस्वती ॥ ३९ ॥
कथितान्यस्य भूती तु हर्षा च प्रभवा पुनः ।
कलात्माता स उल्लासो द्वयं प्रतिफलं मतम् ॥ ४० ॥

टीका-'धी' अक्षर की देवी-'सरस्वती' देवता 'प्रजापति, बीज 'ऐं', ऋषि-'कश्यप', यन्त्र-'सरस्वतीयन्त्रम्', विभूति-'हर्षा एवं प्रभवा' तथा प्रतिफल-'उल्लास एवं कलात्मकता' हैं ॥ ३९-४० ॥

'म' वर्णस्य च देवी तु महालक्ष्मीस्तथैव च ।
कुबेरो देवता बीजं श्रीं ऋषिश्चाश्वलायनः ॥४१ ॥
यन्त्र श्रीः श्रीमुखी भूती तारिणी कथितान्यपि ।
सम्पन्नत्वं सदिच्छा च द्वयं प्रतिफलं मतम् ॥ ४२ ॥

टीका-'म' अक्षर की देवी-'महालक्ष्मी' देवता-'कुबेर' बीज 'श्रीं', ऋषि-'आश्वलायन', यन्त्र-'श्रीयन्त्रयम्', विभूति-'तारिणी एवं श्रीमुखी' और फलश्रुति 'सदिच्छा एवं सम्पन्नता' हैं ॥ ४१-४२ ॥

'हि' देवी तु महाकाली महाकालश्च देवता ।
बीजं क्लीं कथितान्येवं दुर्वासाश्चैव स ऋषिः ॥ ४३ ॥
कालिका यन्त्रमेवं च भूती भर्गा च वह्निणी ।
अस्य प्रतिफलं शत्रुनाशः कल्मषनाशनम् ॥ ४४ ॥

टीका-'हि' अक्षर की देवी-'महाकाली' देवता-'महाकाल,' बीज-'क्लीं', ऋषि-'दुर्वासा' यन्त्र-''कालिकायन्त्रम्' विभूति-भर्गा एवं वह्निणी' तथा प्रतिफल-'कल्मषनाश एवं शत्रुनाश' हैं ॥ ४३-४४ 'धि' वर्णस्य च देवी तु प्रोक्ता कुण्डलिनी तथा ।
देवता भैरवो बीजं लं ऋषिः कण्व एव च ॥ ४५ ॥
भैरवं यन्त्रमेतस्य धृतिः सा प्रतिभा तथा ।
विभूती फलमोजस्वितोन्नतिः कथितानि च ॥ ४६ ॥

टीका-'धि' अक्षर की देवी-'कुण्डलिनी' देवता-'भैरव', बीज-'लं' ऋषि-'कण्व' यन्त्र-भैरवयन्त्रम्, विभूति-धृति एवं प्रतिभा और प्रतिफल-'ओजस्विता एवं उन्नति' हैं ॥ ४५-४६ ॥

ज्वालामुखी तु 'यो' देवी जातवेदश्च देवता ।
बीजं रं स ऋषिश्चास्य याज्ञवल्क्योऽथ यन्त्रकम् ॥ ४७ ।
ऊर्जो भूती च स्वाहाऽथाजरा पुष्टिस्तथैव च ।
आरोग्यं च फलं पूर्णं कथितानि क्रमादिह ॥ ४८ ॥

टीका-'यो' अक्षर की देवी-'ज्वालामुखी' (प्राणाग्नि), देवता 'जातवेदा,' बीज-'रं', ऋषि-'याज्ञवल्क्य,' यन्त्र, 'ऊर्जायन्त्रम्,' विभूति-'स्वाहा एवं अजरा, तथा प्रतिफल- 'पुष्टि एवं आरोग्य, है ॥ ४७-४८ ॥

'यो' देवी भुवनेशी तु देवता च पुरन्दरः ।
बीजं खं जमदग्निश्च स ऋषिर्यन्त्रकं विभुः ॥ ४९ ॥
गौरी विश्वोत्तमे भूती यश ऐश्वर्यमेव च ।
फलं च क्रमशः सर्वाण्येतान्युक्तानि ते मया ॥ ५० ॥

टीका-'यो' अक्षर की देवी-'भुवनेश्वरी' देवता-'पुरन्दर' बीज 'खं', ऋषि-'जमदग्नि' यन्त्र-'विभूतियन्त्रम्', विभूति 'गौरी' एवं विश्वोत्तमा' और प्रतिफल-'सुयश एवं ऐश्वर्य है ॥ ४९-५० ॥

नः वर्णस्य भवानी च देवी रुद्रश्च देवता ।
बीजं हुं चैवमस्यर्षिः स वैशम्पायनस्तथा ॥ ५१ ॥
यन्त्रं दुर्गा ध्रुवामघे भूती द्वे फलमस्य च ।
अजेयताऽथ मोघे सङ्कल्पसिद्धिः प्रोक्तानि च क्रमात् ॥ ५२ ॥

टीका-'नः' अक्षर की देवी-'भवानी' देवता-'रुद्र' बीज-'हुं' ऋषि-'वैशम्पायन', यन्त्र-'दुर्गायन्त्रम्', विभूति-'ध्रुवा एवं अमोघा, और प्रतिफलं संकल्पसिद्धि एवं अजेयता है ॥ ५१-५२ ॥

'प्र' वर्णस्य देवी तु साऽन्नपूर्णास्ति देवता ।
पूषा बीजमहो 'अ' च पिप्पलादश्च स ऋषिः ॥ ५३ ॥
अन्नपूर्णेश्वरी यन्त्रं तृप्ता पूर्णोदरी तथा ।
सन्ति भूती फलं तृप्तिरभावान्मुक्तिरेव च ॥ ५४ ॥

टीका-'प्र' अक्षर की देवी-'अन्नपूर्णा' देवता-'पूषा', बीज 'अं' ऋषि-पिप्पलाद यन्त्र 'अन्नपूर्णेश्वरीयन्त्रम्' विभूति 'तृप्ता' एवं पूर्णोदरी तथा प्रतिफल तृप्ति व अभावमुक्ति है ॥ ५३-५४ ॥

'चो' देवी तु महामाया महादेवोऽथ देवता ।
बीजं ह प्रोक्तमेतत्स ऋषिः कात्यायनस्तथा ॥ ५५ ॥
योगि नी यन्त्रमेतच्च भूती मेधाऽथ पाशिनी ।
विद्यन्ते तत्वदृष्टिश्च भ्रममुक्ति फलं द्वयम् ॥ ५६ ॥

टीका-'चो' अक्षर की देवी-'महामाया' देवता-'महादेव', बीज-'ह' ऋषि-'कात्यायन'

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यन्त्र-'योगिनीयन्त्रम्,' विभूति-'मेधा एवं पाशिनी' और प्रतिफल-'तत्वदृष्टि व भ्रममुक्ति' हैं ।। ५५-५६ ।।

'द' तु पयस्विनी देवी देवता वरुणस्तथा ।
बीजं 'वं' धौम्य एवर्षियन्त्रं वरुणयन्त्रकम् ।। ५७ ।।
विभूती च स्वधार्द्रे द्वे विद्यन्तेऽपि फलं तथा ।
स्नेहः सरसता चेयं द्वयं देवि यशक्रमम् ।। ५८ ।।

टीका-'द' अक्षर की देवी-'पयस्विनी,' देवता-'वरुण', बीज, 'वं' ऋषि-'धौम्य' यन्त्र-वरुणयन्त्रम् विभूति-'स्वधा' एवं आर्द्रा और प्रतिफल-स्नेह एवं सरसता' है ।। ५७-५८ ।।

'यात्' वर्णस्य देवी तु त्रिपुरा देवताऽथ च ।
त्र्यम्बकः त्रीं च बीजं तन्मार्कण्डेयऽच स ऋषिः ५९ ।।
त्रिधा यन्त्रं च विद्यन्ते त्रिशूलाऽथ त्रिधाऽपि च ।
विभूती तापमुक्तिः सा त्रिगुणाधिकृतिः फलम् ।। ६० ।।

टीका-'यात्' अक्षर की देवी-'त्रिपुरा' देवता-त्र्यम्बक' बीज-'त्रीं' ऋषि-'मार्कण्डेय' यन्त्र 'त्रिधायन्त्रम्' विभूति-त्रिधा एवं 'त्रिशूला तथा प्रतिफल त्रिगुणाधिकार एवं 'त्रितापमुक्ति' है ।। ५९-६० ।।

एतानीह सर्वाणि सर्वेषां तु यथाक्रमम् ।
कथितानि मया बुद्धे रुद्भूत्यै योगिनां नृणाम् ।। ६१ ।।
सम्भवेच्च तदैवेदं सदुद्देश्यतया यदा ।
श्रेष्ठभावयुता कार्या साधनाचानुशासिता ।। ६२ ।।
निष्ठापूर्वं यजेत् नित्यं सदाचारनियन्त्रिताम् ।
दिनचर्यां चरेद्यस्तु देवत्वं यात्यपि ध्रुवम् ।। ६३ ।।

टीका-हे देव ! ये सभी देवी, देवता, बीजमन्त्र, ऋषि यन्त्र, विभूति एवं प्रतिफल गायत्री के मैंने उन मनुष्यों की बुद्धि के सर्वतोमुखी विकास के लिए कहे हैं, जो योगियों के समान अलौकिक बुद्धि सम्पन्न बनना चाहते हैं । यह तभी संभव है, जब श्रेष्ठ लक्ष्यों के निमित्त श्रेष्ठ भावना से अनुशासित साधना की जाय, निष्ठापूर्वक नियमित रूप से यज्ञ कार्य करे, सदाचार से दिनचर्या नियन्त्रित की जाय, तो देवत्व भी प्राप्त हो जाता है ।। ६१-६३ ।।

यह गायत्री महामन्त्र के चौबीस अक्षरों में सन्निहित शक्तियों का तात्त्विक विवेचन है । तत्व दृष्टि सभी के पास नहीं होती, इसीलिए तत्त्व दर्शन को प्रतीक-प्रतिमाओं के माध्यम से व्यक्त करने की शैली ऋषियों ने विकसित की थी । देवी-देवताओं के स्वरूप इसी आधार पर निर्मित-निर्धारित किये गये थे । गायत्री मन्त्र की २४ शक्तिधाराओं के स्वरूप का निर्धारण भी उद्देश्यपूर्वक किया गया है । उनके स्थूल दर्शन से प्रतीकों के माध्यम से सूक्ष्म भावों का संचार संभव भी है और उपयोगी भी । अस्तु उनके स्वरूप, वाहनों, आयुधों का विवेचन भी यहाँ दिया जा रहा :-

१-आद्यशक्ति-एक मुख, दो हाथ, अपनी निजी माता का बोध कराने वाली सहज छवि । हाथों में पुस्तक एवं जल कमण्डलु-सद्ज्ञान एवं श्रद्धा-स्नेह युक्त पात्रता के प्रतीक । वाहन हंस-नीर-क्षीर विवेक, मुक्ता चयन एवं उज्ज्वलता का प्रतीक ।

२-ब्राह्मी-चार मुख-चतुर्मुखी प्रतिभा समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी, बहादुरी आदि वृत्तियों तथा चार हाथ, चार पुरुषार्थ (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) के प्रतीक । हाथों में पुस्तक से वेदज्ञान, माला से सतत् ध्यान-जागरूकता, जल-कमण्डलु से आर्द्रता तथा आशीर्वाद मुद्रा से सतत अनुग्रह का बोध । वाहन हंस-शुभ्र आकांक्षाओं का प्रतीक ।

३-वैष्णवी-एक मुख, चार हाथों में-शंख, चक्र, गदा, पद्म, शंख से दुष्कृत्यों के विनाश और सत्पुरुषों के सहयोग का उद्घोष, चक्र से सृष्टि चक्र के अनुशासन, गदा से व्यवस्था को दृढ़तापूर्वक लागू करने तथा कमल से दिव्य-उल्लास फैलाने का बोध । वाहन गरुड़ जो आतंक फैलाने वाले सर्पों का काल तथा तीव्रगति का प्रतीक है ।

४-शाम्भवी-एक मुख, सिर पर गंगा एवं द्वितीया का चन्द्रमा जो सद्ज्ञान की धारा और विकासमान शान्त मस्तिष्क का प्रतीक । चार हाथों में त्रिशूल, तीन शत्रु-वासना, तृष्णा, अहंता को नष्ट करने का, डमरू-शिवत्व का उद्घोष, कमण्डलु-पात्रता विकास तथा आशीर्वाद मुद्रा-श्रेष्ठ पुरुषों-देवताओं से लेकर-पिछड़े लोगों प्रेत-पिशाचों तक के लिए मार्गदर्शन का आश्वासन ।

५-वेदमाता-एक मुख, चार हाथों में चारों वेद । एक ब्राह्मी चेतना से निस्सृत ज्ञान की चार धाराओं का बोध । कमल आसन सहस्रारकमल में भरी हुई अनन्त पंखुड़ियों, पर्तों का प्रतीक ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

६देवमाता-एक मुख दो हाथ -सहज मातृभाव युक्त छवि । गोद में बालक से देवत्व के विकास का, आशीर्वाद मुद्रा से सभी को अनुदान देने की उदारता का बोध । आसन व्यवस्था पीठ-सुव्यवस्था की क्षमता की प्रतीक ।

७-विश्वमाता-एक मुख, चार हाथों में-शंख से हर प्राणी को ममता भरे अनुदान देने का उद्घोष , कमण्डलु से स्नेह भरी समता का, उठी हुई उंगली से एकता का निर्देश तथा आशीर्वाद मुद्रा से अनुदान की उदारता का बोध । आसन भूमण्डल, अर्थात् समस्त विश्व कार्य क्षेत्र ।

८-ऋतम्भरा-एक मुख, चार हाथ । उनमें दीपक-ऋतम्भरा प्रज्ञा-विवेक ज्योति का, श्रीफल-श्रेष्ठ प्रतिफल-सत्परिणाम का, माला-सतत स्मरण की, आशीर्वाद मुद्रा-उदार अनुदान की प्रतीक आसन सहस्रदल कमल-सहस्रार चक्र में समाहित ऋत शक्ति का द्योतक ।

९-मन्दाकिनी-एक मुख, चार हाथ । उनमें कमल से सौम्यता, जलपात्र से दिव्य रस, पुस्तक से ज्ञान प्रवाह तथा माला से सात्विकता-पवित्रता का बोध । वाहन मगर-धाराओं को चीरकर चलने की असाधारण क्षमता का प्रतीक ।

१०-अजपा-एक मुख । अर्द्धनिमीलित नेत्र-अन्तर्दृष्टि के प्रतीक । चार हाथों में दो ध्यान मुद्रा में अन्तःकरण की गहराइयों में जाने का, माला-सतत ईश स्मरण का तथा कमल निरभिमान-निर्मल भाव का प्रतीक ।

११-ऋद्धि-एक मुख, दो हाथ । दायें में चँवर-विकारों का निवारण प्रमुख । बायें में मोदक-भौतिक लाभ गौण । खड़ी मुद्रा अपने पैरों-स्वावलम्बी तत्परता, जागरूकता की प्रतीक ।

१२-सिद्धि-एक मुख, दो हाथ । दायें में मोदक-भौतिक साधन प्रधान , बायें में चँवर विकारों का निवारण-सहयोगार्थ । खड़ी मुद्रा-स्वावलम्बी तत्परता की प्रतीक ।

१३-सावित्री-पाँच मुख-पंचकोषों, पंचतत्वों, पंच प्राणों के प्रतीक । दस हाथ-दसों दिशाओं, दस इन्द्रिय शक्तियों के प्रतीक । आयुध -शंख से जागरूकता, अंकुश से आत्मानुशासन, चाबुक से निरालस्यता, चक्र से प्रगतिशीलता, गदा से शक्ति, पात्र से धारण-क्षमता का बोध । दो हाथों में कमल सभ्यता और सुसंस्कारिता के प्रतीक, दान मुद्रा से देवत्व का तथा आशीर्वाद मुद्रा से सद्भाव का बोध । कमल आसन से प्रफुल्लित विकासमान मनोभूमि का संकेत ।

१४-सरस्वती-एक मुख, चार हाथ । मुस्कान से उल्लास, दो हाथों में वीणा-भाव संचार एवं कलात्मकता की प्रतीक । पुस्तक से ज्ञान और माला से ईशनिष्ठा-सात्विकता का बोध । वाहन मयूर-सौन्दर्य एवं मधुर स्वर का प्रतीक ।

१५-लक्ष्मी-एक मुख, चार हाथ, एक लक्ष्य और चार प्रकृतियों (दूरदर्शिता, दृढ़ संकल्प, श्रमशीलता एवं व्यवस्था शक्ति) के प्रतीक । दो हाथों में कमल सौन्दर्य, और प्रामाणिकता के प्रतीक । दान मुद्रा से उदारता तथा आशीर्वाद मुद्रा से अभय अनुग्रह का बोध । वाहन-उलूक, निर्भीकता एवं रात्रि के अँधेरे में भी देखने की क्षमता का प्रतीक ।

१६-महाकाली-विकराल मुख-असुरता को भयभीत करने वाला । चार हाथों में खड्ग और राक्षस का सिर-असुरता के विनाश हेतु, खप्पर (पात्र) धारण शक्ति का तथा अभयमुद्रा देव पक्ष के लिए आश्वासन । शिव के मार्ग में आने पर रोष में भी पैर उठा रह जाना-शिवत्व की मर्यादा रखने का प्रतीक ।

१७-कुण्डलिनी-एक मुख, चार हाथों में क्रमशः वाँसुरी सुप्त को जागृत करने वाली क्षमता का, सर्प कुण्डलिनी में सामान्य दिखते हुए भी असमान्य शक्ति का, कमण्डलु धारण करने की क्षमता का तथा आशीर्वाद मुद्रा से लोकहित के लिए प्रतिबद्धता का बोध । वाहन कूर्म-संयम और दीर्घ आयु का प्रतीक ।

१८-ज्वालामुखी (प्राणाग्नि) एक मुख चार हाथ । स्रुवा-यज्ञीय कर्म का, अंकुश-शक्ति के नियन्त्रण की क्षमता और श्रीफल-पूर्णाहुति कार्य को पूर्णता प्रदान करने के संकल्प का प्रतीक । आशीर्वाद मुद्रा-'सर्वे भवन्तु सुखिनः' का संकेत । आसन यज्ञकुण्ड शक्ति के यज्ञार्थ-लोकहितार्थ उपयोग की प्रतिबद्धता ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

१९-भुवनेश्वरी:-एक मुख, चार हाथों में गदा शक्ति का एवं राजदण्ड व्यवस्था का प्रतीक । माला-नियमितता एवं आशीर्वाद मुद्रा-प्रजापालन की भावना का प्रतीक । आसन-शासनपीठ सर्वोच्च सत्ता की प्रतीक ।

२०-भवानी (दुर्गा):-एक मुख, आठ हाथ । शंख से देव पक्ष की सहायता का उद्घोष, गदा से शक्ति, पद्म से निर्विकारता, बँधी मुट्ठी से संगठन, चक्र से गतिशीलता, तलवार से दोषनाश, पाश से आसुरी शक्ति को बाँधकर बाधित करने तथा आशीर्वाद मुद्रा से सज्जनों को आश्वस्त करने का भाव । वाहन सिंह-शौर्य का प्रतीक ।

२१-अन्नपूर्णा:-एक मुख, चार हाथों में अन्न पात्र और चम्मच-अन्नदान के प्रतीक । दो हाथों में कमल अन्न में सुसंस्कारिता-पौष्टिकता के प्रतीक । आसन देवपीठ-दिव्य अनुशासन की प्रतीक ।

२२- महामाया-एक मुख, चार हाथों में इंगित श्रीफल पाश और दण्ड । इंगित देवानुशासन का संकेत, अनुशासन मानने पर श्रीफल-श्रेष्ठफल की प्राप्ति का तथा मर्यादा तोड़ने पर पाश से बँधने तथा दण्ड से दण्ड भोगने का बोध । वाहन हंस-हित अहित निर्धारण के विवेक का प्रतीक ।

२३-पयस्विनी: -एक मुख, चार हाथों में पय कलश, पयपान से दिव्य क्षमता के पोषण के लिए, कमल से सुसंस्कारिता और कमण्डलु से विराग का, आशीर्वाद मुद्रा से भक्त वत्सलता का बोध । आसन कमल-निर्विकारिता का प्रतीक ।

२४-त्रिपुरा-तीन मुख, तीन आयामी सृष्टि, त्रिगुण, त्रिकाल के प्रतीक । चार हाथों में त्रिशूल से त्रिताप नाश का, फल से श्रेष्ठ परिणाम प्राप्ति का, कमण्डलु से पात्रता का और आशीर्वाद मुद्रा से दिव्य अनुदान का बोध । वाहन हंस-उज्ज्वलता का प्रतीक ।

उपर्युक्त तत्वदर्शन को समझकर साधक अपनी कमियों के निवारण तथा विशेषताओं के जागरण विकास के लिए साधना कर सकते हैं । प्रतिमा विशेष अथवा यन्त्र विशेष का स्मरण करते हुए जिन विभूतियों के विकास की आवश्यकता है, उनके लिए प्रार्थना भाव रखकर नियमित गायत्री महामन्त्र का जप करने से प्रतिभा परिष्कार-प्रतिमा विकास के माध्यम से असाधारण लाभ प्राप्त किये जा सकते हैं । गायत्री मन्त्र में किसी प्रकार का परिवर्तन करने, बीज मन्त्र आदि लगाने का प्रयास न किया जाय । केवल भाव चेतना को दिशाबद्ध करने से ही पर्याप्त लाभ प्राप्त किए जाने सम्भव हैं ।

गायत्री मञ्जरी

'गायत्री मञ्जरी' को हिन्दी टीका सहित नीचे दिया जा रहा है-

एकदा तु महादेवं कैलाश गिरि सस्थितम् ।
प्रपच्छ पार्वती वन्द्या विबुध मण्डलैः ।। १ ।।

एक बार कैलाश पर्वत पर विराजमान देवताओं के पूज्य महादेवजी से वन्दनीया पार्वती ने पूछा-

कतमं योगमासीनो योगेश त्वमुपासते ।
येन हि परमां सिद्धि प्राप्नुवान् जगदीश्वर ।। २ ।।

हे संसार के स्वामी योगेश्वर महादेव ! आप किसके योग की उपासना करते हैं ? जिससे आप परम सिद्धि को प्राप्त हुए हैं ।

श्रुत्वा तु पार्वती वाचं मधुसिक्तां श्रुतिप्रियम् ।
समुवाच महादेवो विश्व कल्याण कारकः ।। ३ ।।

पार्वती की कर्णप्रिय एवं मधुर वाणी को सुनकर विश्व का कल्याण करने वाले महादेवजी बोले-

महद्रस्यं तद्गुप्त यत्तु पृष्टं त्वया प्रिये ।
तथापि कथयिष्यामि स्नेहात्वामह समम् ।। ४ ।।

हे पार्वती ! तुमने बहुत ही गुप्त और गूढ़ रहस्य के विषय को पूछा है फिर भी स्नेह के कारण वह सारा रहस्य में तुमसे कहूँगा ।

गायत्री वेद मातास्ति साद्य शक्तिर्मता भुवि ।
जनानां जननी चैव तासुपासेऽहमेव हि ।। ५ ।।

गायत्री वेदमाता है, पृथ्वी पर वह आद्यशक्ति कहलाती है और वह ही संसार की माता है । उसी की उपासना करता हूँ ।

योगिनानां समस्तानां साधनानां तु हे प्रिये ।
गायत्र्येव मता लोके मूलाधारी विदांवरैः ।। ६ ।।

हे प्रिये ! समस्त योगिक साधनाओं का मूलाधार विद्वानों ने गायत्री को ही माना है ।

अति रहस्यमय्येषा गायत्री तु दश भुजा ।
लोकेऽति राजते पंच धारयन्ति मुखानि तु ।। ७ ।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दश भुजाओं वाली अत्यन्त रहस्यमयी यह गायत्री संसार में पाँच मुखों को धारण करती हुई अत्यन्त शोभित होती है ।

अति गूढ़ानि संश्रुत्वावचनानि शिवस्य च ।
अति सवृद्ध जिज्ञासा शिवमूचे तु पार्वती ।। ८ ।।

शिव के अत्यन्त गूढ़ वचनों को सुनकर अतिशय जिज्ञासा वाली पार्वती ने शिव से पूछा-

पंचास्य दशबाहु नामेतेषां प्राणवल्लभ ।
कृत्वा कृपां कृपालोत्व किंम रहस्यं तु मे वद ।। ९ ।।

हे प्राणवल्लभ ! कृपालु कृपा करके इन पाँच मुख और दश भुजाओं का रहस्य मुझे बतलाइये ।

श्रुत्वात्वे तम्महादेवः पार्वती वचनं मृदु ।
तस्याः शंका मया कुर्वन् प्रत्युवाच निजां प्रियाम् ।। १० ।।

पार्वती के इन कोमल वचनों को सुनकर महादेव जी पार्वती की शंका का समाधान करते हुए बोले-

गायत्र्यास्तु महाशक्तिर्विद्यते याहि भूतले ।
अनन्य भावतोऽद्यास्मिनोतप्रोतोऽस्तिचात्मनि ।। ११ ।।

पृथ्वी पर गायत्री की जो महान् शक्ति है वह इस आत्मा में अनन्त भाव से ओतप्रोत हो रही है ।

विभर्ति पंचवरणान् जीवः कोशास्तु ते मताः ।
मुखानि पंच गायत्र्यास्तानेव वेद पार्वती ।। १२ ।।

जीव पंच आवरणों को धारण करता है, वे ही कोश कहलाते हैं । हे पार्वती उन्हीं को गायत्री के पाँच मुख कहते हैं ।

विज्ञानमयान्नमय प्राणमय मनोमयाः ।
तथानन्दमयाश्चैव पंच कोशाः प्रकीर्तिता ।। १३ ।।

अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय और आनन्दमय ये पाँच कोश कहलाते हैं ।

एष्वेव कोश कोशेशु ह्यनन्ता ऋषि सिद्धियः ।
गुप्ता आसाद्य या जीवो धन्यत्वमधिगच्छति ।। १४ ।।

इन्हीं कोष रूपी भण्डारों में अनन्त ऋद्धि-सिद्धियाँ छिपी हुई हैं जिन्हें पाकर जीव धन्य हो जाता है ।

यस्तु योगीश्वरो ह्यतान् पंच कोशान्न बेधते ।
स भवसागरं तीर्त्वा बन्धनेभ्यो विमुच्यते ।। १५ ।।

जो योगी इन पाँच कोशों को बेधता है वह भव सागर को पार कर बन्धनों से छूट जाता है ।

गुप्तं रहस्यमेतेषां कोशाणां योऽवगच्छति ।
परमां गतिमाप्नोति स एव नात्र संशयः ।। १६ ।।

जो इन कोशों के गुप्त रहस्य को जानता है, वह निश्चय ही परम गति को प्राप्त करता है ।

लोकानां तु शरीराणि ह्यन्नादेव भवन्ति नु ।
उपत्यकासु स्वास्थ्यं च निर्भर वर्तते सदा ।। १७ ।।

मनुष्यों के शरीर अन्न से बनते हैं । उपत्यिकाओं पर स्वास्थ्य निर्भर रहता है ।

आसनेनोपवासेन तत्व शुद्धया तपस्याय ।
चैवान्नमयकोशस्य संशुद्धिरभिजायते ।। १८ ।।

आसन, उपवास, तत्त्व शुद्धि और तपस्या से अन्नमय कोश की शुद्धि होती है ।

ऐश्वर्यः पुरुषार्थश्च तेजः ओजो यशस्तथा ।
प्राणशक्तया तु वर्धन्ते लोकानामित्यसंशयम् ।। १९ ।।

प्राण शक्ति से मनुष्य का ऐश्वर्य, पुरुषार्थ, तेज एवं यश निश्चय से बढ़ता है ।

पंचभिस्तु महाप्राणैर्लधुप्राणैश्च पंचभिः ।
एतै प्राणमयः कोशों जातो दशभिरुत्तम् ।। २० ।।

पाँच महा प्राण और पाँच लघु प्राण इन दश से उत्तम प्राणमय कोश बना है ।

बन्धेन मुद्रयाचैव प्राणायोमेन चैव हि ।
एषः प्राणमयः कोशयतामनं तु सिद्धियति ।। २१ ।।

बन्ध, मुद्रा और प्राणायाम द्वारा यत्नशील पुरुष को यह प्राणमय कोश सिद्ध होता है ।

चेतनामा हि केन्द्रन्तु मनुष्याणां मनोमतम् ।
जायते महतीत्वन्तः शक्तिस्तस्मिन् वशगते ।। २२ ।।

मनुष्यों में चेतना का केन्द्र मन माना गया है । उसके वश में होने से महान् अन्तःशक्ति पैदा होती है ।

ध्यान त्राटक तन्मात्रामुपानां साधनैर्ननु ।
भवयत्यूज्वलः कोशः पार्वत्येश मनोमयः ।। २३ ।।

ध्यान, त्राटक, तन्मात्रा और जप इनकी साधना करने से हे पार्वती ! मनोमय कोश अत्यन्त उज्ज्वल हो जाता है, यह निश्चय है ।

यथावत पूर्णतो ज्ञानं संसारस्य च स्वस्य च ।
न्यूनाधित्येव विज्ञानं प्रोक्तं विद्यावेतुभिः ।। २४ ।।

संसार का और अपना ठीक-ठीक और पूरा-पूरा ज्ञान होने को ही विज्ञानवेत्ताओं ने विज्ञान कहा है ।

साधना सोऽहमित्येषा तथा वात्मानुभूतयः ।
स्वराणां संयमश्चैव ग्रन्थिभेदस्तथैव ।। २५ ।।
एषांससिद्धिभिर्नूनं यतमानस्य ह्यात्मनि ।
नु विज्ञानमयः कोशः प्रिये याति प्रबुद्धताम् ।।। २६ ।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सोऽहं की साधना आत्मानुभूति, स्वरों का संयम और ग्रन्थि-भेद इनकी सिद्धि से यत्नशील की आत्मा में हे प्रिये ! विज्ञानमय कोश प्रबुद्ध होता है ।

आनन्दावरणोन्नत्यात्यन्त शांति प्रदायिका ।
तरीयास्थितिर्लोके साधकं त्वधिगच्छति ।। २७ ।।

आनन्द-आवरण की उन्नति से अत्यन्त शान्ति को देने वाली तुरीयावस्था साधक को संसार में प्राप्त होती है ।

नादा विन्दु कलानांतु साधनाय खलु ।
नन्वानन्दमयः कोशः साधके हि प्रबुद्धयेत् ।। २८ ।।

नाद, बिन्दु और कला की पूर्ण साधना से साधक में आनन्दमय कोश जागृत होता है ।

भूलोकस्यास्य गायत्री कामधेनुर्मता बुधैः ।
लोक आश्रय नेनामु सर्वमेवाधिगच्छति ।। २९ ।।

विद्वानों ने गायत्री को भूलोक की कामधेनु माना है । इसका आश्रय लेकर सब कुछ प्राप्त कर लिया जाता है ।

पंचस्यास्यास्तु गायत्र्यः विद्या यस्त्ववगच्छति ।
पंचतत्व प्रपंचात् सनून हि प्रमुच्यते ।। ३० ।।

पाँच मुख वाली गायत्री-विद्या को जो जानता है वह निश्चय ही पंच तत्त्वों के प्रपंच से छूट जाता है ।

दशभुजास्तु गायत्र्याः प्रसिद्धा भवनेषुयाः ।
पंच शूल महा शूलान्येताः संकेतयन्ति हि ।। ३१ ।।

संसार में गायत्री की दश भुजायें प्रसिद्ध हैं, ये भुजायें पाँच शूल और पाँच महाशूलों की ओर संकेत करती हैं ।

दशभुजानामेतासां यो रहस्य तु वेत्तिसः ।
त्रासं शूलाति शूलानां ना नैवावगच्छति ।। ३२ ।।

जो मनुष्य इन दश भुजाओं के रहस्य को जानता है, वह शूल और महाशूल के भय को नहीं पाता ।

दृष्टिस्तु दोषसंयुक्ता परेषाभवलम्बनम् ।
भयश्च क्षुद्रता सावधानता स्वार्थयुक्ता ।। ३३ ।।
अविवेकस्तथावेश स्तृष्णालस्य तथैव च ।
एतानि दश शूलानि शूलदानि भवन्निहि ।। ३४ ।।

दोषयुक्त दृष्टि; परावलम्बन, भय, क्षुद्रता, असावधानी, स्वार्थपरता, अविवेक, क्रोध, आलस्य, तृष्णा-ये दुःखदायी दश शूल हैं ।

निजैर्दश भुजैर्नूं नं शूलान्येतानि तु दश ।
संहरते हि गायत्री लोककल्याणकारिणी ।। ३५ ।।

संसार का कल्याण करने वाली गायत्री अपनी दश भुजाओं से इन दश शूलों का संहार करती है ।

कलौ युगे मनुष्याणां शरीराणीति पार्वती ।
पृथ्वी तत्व प्रधानानि जनास्येव भवन्तिहि ।। ३६ ।।

हे पार्वती ! कलियुग के मनुष्यों के शरीर पृथ्वी तत्त्व प्रधान होते हैं, यह तो तुम जानती ही हो ।

सूक्ष्मतत्व प्रधानान्ययुगोद्मदत नृणामतः ।
सिद्धिनां तपसामेते न भवत्यधिकारणिः ।। ३७ ।।

इसलिये अन्य युग में पैदा हुए सूक्ष्म तत्त्व प्रधान मनुष्य सिद्धि और तप के अधिकारी नहीं होते ।

पंचांग योग संसिद्धिया गायत्र्यास्तु तथापि ते ।
तद्युगानां सर्वश्रेष्ठां सिद्धि स प्राप्नुवंत हि ।। ३८ ।।

फिर भी वे गायत्री के पंचांग योग की सिद्धि द्वारा उन गुणों की सर्वश्रेष्ठ सिद्धि को प्राप्त करते हैं ।

गायत्र्यी वाममार्गीय ज्ञेयमत्युच्चसाधकं ।
उग्रं प्रचण्डमत्यन्त वर्तते तत्र साधनम् ।। ३९ ।।

उत्कृष्ट साधकों द्वारा जानने योग्य गायत्री का वाममार्गी तन्त्र साधन अत्यन्त उग्र और प्रचण्ड है ।

अतएव तु तदगुप्तं रक्षितं हि विचक्षणैः ।
स्याद्यतो दुरुपयोगे न कुपात्रैः कथंचन ।। ४० ।।

इसलिये विद्वानों ने इसे गुप्त रखा है, जिससे कुपात्रों द्वारा उसका किसी प्रकार दुरुपयोग न हो ।

गुरुणैव विद्या तत्वं गुरुणैव हृदि प्रकाश्यते ।
गुरुर्विना सातु विद्या सर्वथा निष्फला भवेत् ।। ४१ ।।

हे प्रिये ! विद्या का तत्त्व गुरु के द्वारा ही हृदय में प्रकाशित किया जाता है । बिना गुरु के वह विद्या निष्फल हो जाती है ।

गायत्री तु पराविद्या तत्फलः वाप्त ये गुरुः ।
साधकेन विद्यातव्यो गायत्री तत्व पंडित ।। ४२ ।।

गायत्री परा विद्या है अतः उसके फल की प्राप्ति के लिये साधक को ऐसा गुरु करना चाहिये, जो गायत्री तत्त्व का ज्ञाता हो ।

गायत्री यो विजानाति सर्व जानति सननु ।
जानात्ययां न यतस्य सर्वाः विद्यास्तु निष्फला ।। ४३ ।।

जो गायत्री को जानता है, वह सब कुछ जानता है । जो इसको नहीं जानता उसकी सब विद्या निष्फल है ।

गायत्रैव तपो योगः साधन ध्यानामुच्यते ।
सिद्धि जनानां सा माता नातः किंचित् बृहत्तरम् ।। ४४ ।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गायत्री ही तप है, योग है, साधन है और वह ही सिद्धियों की माता मानी गयी है । इस गायत्री से बढ़कर कोई दूसरी वस्तु नहीं है ।

गायत्री साधना लोके न कस्यापि कदापि हि ।
याति निष्फलतामेतत् ध्रुवं सत्यं कि भूतले ।। ४५ ।।

कभी भी किसी की गायत्री साधना संसार में निष्फल नहीं जाती, यह पृथ्वी पर ध्रुव सत्य है ।

प्राप्स्यन्ति परमां सिद्धि ज्ञास्त्यन्थेतत् तु ये जनः ।
गुप्तं मनुं रहस्यत् पार्वती त्वां पतिव्रताम् ।। ४६ ।।

हे परम पतिव्रता पार्वती ! मैंने जो यह गुप्त रहस्य कहा है, जो लोग इसे जानेंगे वे परम सिद्धि को प्राप्त होंगे ।

गायत्री लहरी के इन ४६ श्लोकों में भारतीय आध्यात्म-विद्या का जो सारांश सामान्य पाठकों के हितार्थ प्रकट किया गया है, उसका यदि भली प्रकार मनन किया जाय और उससे जो निष्कर्ष निकले तदनुसार आचरण किया जाय तो मनुष्य निःसंदेह इस लोक और परलोक के सभी कष्टों से बचकर सत्पुरुषों को मिलने वाली गति का अधिकारी बन सकता है । इसमें मानव शरीर, मन तथा आत्मा सम्बन्धी जितने भी तथ्य प्रकट किये गये हैं वे सब तर्क युक्त बुद्धिसंगत तथा अनुभव द्वारा भी सब प्रकार से उपयोगी हैं । यदि एक ज्ञानशून्य मनुष्य अपने को केवल शरीर रूप ही समझता है और केवल उसी के पालन, पोषण, भोग, सुरक्षा आदि की चिन्ता में व्यस्त रहता है, तो यही कहना चाहिये कि वह एक प्रकार से पशुओं जैसा जीवन व्यतीत कर रहा है । यद्यपि ऊपर से यह शरीर अस्थि, चर्ममय ही प्रतीत होता है जिसमें मल, मूत्र, रक्त, चर्बी जैसे जुगुप्सा उत्पन्न करने वाले पदार्थ भरे हैं, पर इसके भीतर मन, बुद्धि, अन्तःकरण जैसे महान् तत्त्व भी अवस्थित हैं जिनको विकसित करके मनुष्य पशु श्रेणी से ऊपर उठकर देव श्रेणी और स्वयं ईश्वर के समकक्ष स्थिति तक पहुँच सकता है । गायत्री लहरी में इन्हीं तत्त्वों की जानकारी और उनके विकास की साधना का सूत्र रूप में वर्णन किया गया है ।

शरीर के जिस रूप को हम बाहर से नेत्रों द्वारा देखते हैं, वह 'अन्नमय कोश' के अन्तर्गत है । इसको स्थिर रखने के लिये ही मनुष्य खाता, पीता, सोता और मल-मूत्र विसर्जित करता है, पर अधिकांश मनुष्य इसके सम्बन्ध में यह भी नहीं जानते कि इसे किस प्रकार से स्वस्थ, पूर्ण कार्यक्षम, दीर्घजीवी रखा जा सकता है । अन्नमय कोश के भीतर उससे अपेक्षाकृत सूक्ष्म 'प्राणमय कोश' है जिसका साधन और विकास करने से विभिन्न शारीरिक अंगों पर अधिकार प्राप्त हो जाता है और उसकी शक्ति को बहुत अधिक बढ़ाया जा सकता है । 'प्राणमय कोश' से सूक्ष्म 'मनोमय कोश' है जिसकी साधना से मानसिक शक्तियों को केन्द्रीकरण करके अनेक अद्‌भुत कार्य किये जा सकते हैं । इसकी मुख्य साधन विधि ध्यान बतलाई गयी है, जिससे अन्य व्यक्तियों को वश में करना, दूरवर्ती घटनाओं को जानना, भूत-भविष्य सम्बन्धी ज्ञान आदि शक्तियों की प्राप्ति होती है ।

'मनोमय कोश' के पश्चात् उससे भी सूक्ष्म 'विज्ञानमय कोश' बतलाया गया है जिससे मनुष्य आत्मा के क्षेत्र में पहुँच जाता है और जीव को बन्धन में रखने वाली तीनों ग्रन्थियों को खोल सकता है । अन्त में 'आनन्दमय कोश' आता है जिससे पञ्चतत्वों से बना मनुष्य परमात्मा के निकट पहुँचने लगता है और समाधि का अभ्यास करके अपने मूल स्वरूप में स्थित हो सकता है ।

इस प्रकार गायत्री मञ्जरी के थोड़े से श्लोकों में ही योग-शास्त्र का अत्यन्त गम्भीर ज्ञान सूत्र रूप में बता दिया गया है । इसे गायत्री योग के छिपे हुए रत्न-भण्डार की चाबी कहा जा सकता है । इसके एक-एक श्लोक की विस्तृत व्याख्या की जाय तो उस पर विस्तृत प्रकाश पड़ सकता है । गायत्री महाविज्ञान का तीसरा खण्ड इन ४६ श्लोकों की विवेचना के रूप में लिखा गया है । इससे अधिक प्रकाश प्राप्त करके योग मार्ग के पथिक अपना मार्ग सरल कर सकते हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गायत्री लहरी

अमन्दानन्देनामभरगृहे वास निरता,
नरं गायन्तं या भुविभवभयत्रायत इह ।
सुरेशैः सम्पूज्यां मुनिगण नुतां तां मुखकरीं
नमामो गायत्री निखिलमनुजाधौघशमनीम् ।। १ ।।

अर्थ-आनन्दपूर्वक देवलोक में निवास करने वाली, अपने भक्त की सांसारिक भय से रक्षा करने वाली, देवताओं द्वारा पूजित, प्राणिमात्र के पापों का विनाश करने वाली माता को हम भक्तिपूर्वक प्रणाम करते हैं ।

अवामा संयुक्तं सकल मनुजै जाप्यमभितो-
हयपायात्पायामृदरथ भुवि भुवः स्वः पदमिति !
पद तन्मे पादाववतु सवितुं श्चैव जघनं-
वरेण्यं श्रोणि मे सततभवता न्नाभिमपिच ।। २ ।।
पदं भर्गोदेवस्य मम हृदयं धीमहि तथा
गलं पायान्नित्यं धिय रस पदं चैवरसनाम् ।
तथा नेत्रे योऽव्यादलिक मवतान्नाः पदमिति
शिरोदेशं पायान्ममतु परिताश्चान्तिमपदम् ।। ३ ।।

भाषार्थ-ओंकार और अनुस्वार से युक्त प्रत्येक प्राणी द्वारा जपने योग्य ॐ भूर्भुव स्वः ये पद सम्पूर्ण पापों से मेरी रक्षा करें तथा तत् पद पाँवों की, सवितुः जाँघों की, वरेण्यं कटि की, भर्गो पद नाभि की, देवस्य हृदय की, धीमहि गले की, धिमः जिह्वा की, यः नयनों की और नः ललाट की एवं अन्तिम पद प्रचोदयात् मेरे सिर की सर्व प्रकार से रक्षा करे । इन दोनों श्लोकों में पूरा गायत्री मन्त्र है और उसके द्वारा अपने सर्वांग संरक्षण की प्रार्थना की गई है । इसे युग्मक कहते हैं ।

अये दिव्ये देवि त्रिदश निवहैर्वंदित पदे ।
न शेकु स्त्वां स्तोतुं भगवति महान्तोऽपि मुनयः ।
कथ कारं तर्हिस्तुतिततिरि यं मे शुभतरा-
तथा पूर्णाभूयात् त्रुटिपरियुता भावरहिता ।। ४ ।।

भाषार्थ-हे देवताओं द्वारा पूजनीय चरणों वाली गायत्री माता तेरी स्तुति करने में बड़े-बड़े मुनि भी समर्थ नहीं हैं । तब मेरी यह दोषों से युक्त भाव से रहित स्तुति उपयुक्त कैसे हो सकती है । तथापि मैं स्तुति करता हूँ सो स्वीकृत करो ।

भजन्तं निर्व्याजं तच सुखदमन्त्रं विजायिनं
जनं यावज्जीवं जगति जननित्वं सुखयसि
न वा कामं काचित् कलुषकणिकाऽपि स्पृशति तं
ससारं संसारं सरति सहसा तस्य सततम् ।। ५ ।।

हे माता ! तेरे सुखद और विजयी मन्त्र को जो जन जपता है उसको तुम सुखी बनाती हो और उसको पाप की कणिका स्पर्श नहीं करती एवं उसका सांसारिक वातावरण आनन्दयुक्त हो जाता है ।

दधानामा धानं सितकुवलथास्फालनरुचां
भरं विभ्राजन्तीं त्रिभुवन जनाह्लादन करीम् ।
अलं चालं मम चकितचित्तं सुचपलं
चलच्चन्द्रास्मे त्वद्वदनरुचमाचामय चिरम् ।

हे चञ्चल चन्द्र के समान मुख वाली ! श्वेत कमल की कमनीय कान्ति समूह को धारण करने वाली, संसार के प्राणियों को सुख देने वाली दाँतों की ज्योति का मेरे चलायमान चञ्चल चित्त को शीघ्र पान कराओ ।

ललामा भाले ते बहुतर विशालेऽति विमले
चिर चञ्चच्चान्द्रीं रुचिरचपलान्यञ्चति चया
नितान्तं तान्तं स क्षितिनिविड नाश व्यसनिनो
महान्तंध्वान्तं मद्र हृदयनिलयस्थं ग्लपयतु ।। ७ ।।

हे भगवती ! आपके विशाल भाल पटल पर जो चन्द्रमा की कला अथवा चन्द्राकार तिलक शोभायमान हो रहा है, उसकी कान्ति जो भूतल के अन्धकार का नाश करने वाली है, वह मेरे हृदय-सदन के अन्धकार को दूर करे ।

अये मातः किन्ते चरण शरण संश्रांतवतां-
जनानामन्तस्थो वृजिन हुतभुग् प्रज्वलति यः ।
तमश्रातंपात्रं सम्यक् प्रशमन हितायेव विधृत्
करे पात्रं सलिल भरितं काष्ठरचितम् ।। ८ ।।

हे माता गायत्री ! आपके चरणों की शरण ग्रहण करने वाले प्राणियों के हृदय में पाप रूपी जो आग जलती है, उसी को शान्त करने के लिए अपने कर-कमल में जल पूरित कमण्डलु धारण किया है क्या ।

अथाहोस्विन्मातः सरिद धिपतेः सारमखिलं
सुधारूपं कूपं लघुतरमनूपं कलयती ।
स्वभक्तेभ्यो नित्यं वितरसि जनोद्धारिणि शुभे
विहीने दीने मय्यपि कृपय किञ्चित् करुणया ।। ९ ।।

अथवा हे माता ! समुद्र के सारभूत अमृत को ही अपने कमण्डलु रूपी छोटे से कूप में भरकर अपने प्रिय भक्तों को वितरित करती हो । हे प्राणिमात्र के उद्धार करने वाली शुभे ! दीन-हीन मुझ पर भी कुछ कृपा कीजिए ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सदैव त्वत्पाणौ विधृतमरविन्दं द्युतिकरम्,
मुमा दर्शं दर्शं रविशशिसमं नेत्रयुगलम्।
विचिन्त्य स्वां वृति भ्रमविषमजालेऽस्ति पतित-
इदं मन्ये नो चेत् कथमहि भवेदर्ध-विकचम् ॥ १० ॥

हे माता ! तुम्हारे हाथ में जो कमल शोभायमान हो रहा है वह आपके सूर्य और चन्द्र के समान नेत्र युगल को देखकर भ्रम में पड़ गया है और अपनी वृत्ति का विचार कर सूर्योदय समझ खिलना चाहता है और चन्द्रमा को देख मुकलित होना वाहता है ऐसा मैं मानता हूँ । नहीं तो वह कमल दिन-रात अधखिला क्यों रहता है ।

स्वयं मातः किम्वा त्वमसि दमजानामपि खनि
यतस्ते सर्वांगे कमलपयमेवास्ति न किमु।
तथा भीत्वा तस्मात् शरण मुपयातः कमलराड-
प्रयुञ्जानो भ्रान्तं भवति तदिहैवासनविधो ॥११॥

अथवा हे माता ! तुम स्वयं कमलों की खान हो क्योंकि आपका सम्पूर्ण अङ्ग ही क्या कमलमय नहीं है ? अतएव जो कमलों का राजा है वह आपके शरण में डर कर आया है और वही निरन्तर आपके आसन के प्रयोग में आता है ।

दिवौको भिर्वन्द्येऽमुकुलित सरोजाक्षि सुखदे।
कृपादृष्टे वृष्टिः प्रणिपतति यस्योपरि तव।
तदीयां वाञ्छां द्रक् परिपरि परीध्यत्र सकला
मतोमन्तोस्तन्तून् मम सपदि छित्वाऽम्बसुखय ॥ १२॥

हे देवताओं द्वारा पूजनीये, विकसित कमल के समान नेत्र वाली सुखदायनी, आपकी कृपा दृष्टि की वर्षा जिस पर होती है, उसकी सम्पूर्ण मनोकामना को पूर्ण कर देती हो । अतएव मेरे भी अपराध शूलों का छेदन कर सुख दान करो ।

करेऽक्षाणां माला प्रविलसति या तेऽतिविमले
किमर्थं सा कान् वा गणयसि जनान् भक्ति निरतान्।
जपन्ती कं मन्त्र प्रशमयसि दुःखं जनिजुषा
मये कावां वांछा तव वरिवृतीत्वत्र वरदे ॥ १३ ॥

हे माता, तेरे एक हाथ में जो अक्षमाला विराजित है वह किसलिए है ? किन भक्तों को उसके द्वारा गिनती हो ? अथवा किस मन्त्र को जपकर प्राणियों के दुखों का शमन करती हो ? हे वरदायनी अथवा और मन्त्र जपकर क्या करना चाहती हो ?

नमन्ये धन्येऽहं त्वदितथमिदं लोकगदितं
ममात्रोर्युक्ताऽस्त्यविरत मयि यत्तव करम्।
विजृम्भा संयुक्त द्यु तिमयमिदं कोकनदमि
त्यरं जानानेयं मधुकरततिः संविलसतिः ॥ १४ ॥

हे धन्ये ! यह जो लोकोक्ति ऊपर कही गई है इसे मैं तो उपयुक्त नहीं मानता । इस विषय में मेरी उक्ति ही युक्त है कि आपके हाथ को विकसित कमल मानकर यह भ्रमरों की पंक्ति मँडरा रही है ।

महामोहाम्भोधौ मम निपतिता जीवनतरि
निरालम्बा दोला चलित दुखस्थामधिगता।
जलावत व्यालो ग्रसितुमभितो वांछति चतां।
करालम्बं दत्वा भगवति भरं तारय शिवे ॥ १५ ॥

हे भगवति ! कल्याणमयी इस संसार रूपी विशाल समुद्र में मेरी जीवन नौका पड़ी हुई है और वह बिना सहायता के बुरी अवस्था को प्राप्त हो गई है । उसको भँवर रूपी सर्प डसने की इच्छा कर रहा है । अतएव हे माता ! उसे शीघ्र तिराओ तथा अपने कर-कमल का सहारा दो ।

दधानासित्व यत् स्ववपुषि पयोधारि युगली
मिति श्रुत्वा लौकै र्ममममसि चिन्ता समभवत्।
कथ स्यात् सा तस्मादलक लतिका मस्तक भुवि
शिरोद्यां हृद्येयं जलद पटली खेलति किल ॥ १६ ॥

हे माता ! आप दो पयोधरों को धारण करती हो ऐसा लोगों के द्वारा सुनकर मेरे मन में चिन्ता उत्पन्न हुई कि यह मस्तक रूपी भूमि पर केशपाशमयी लता कैसे हो सकती है यह तो निश्चय ही मस्तकाकाश मेघ मण्डली क्रीड़ा कर रही है ।

तथा तत्रैवोपस्थितिमपि निशीथिन्यधिपतेः
प्रपश्यामि श्यामे सह सहचरैस्तारक गणैः
अहोरात्र क्रीड़ा परवशमितास्तेऽपि चकिता
श्चिरं चिक्रीडन्ते तदपि महदाश्चर्य चरितम् ॥ १७ ॥

तथा साथ ही हे माता ! उस समस्त आकाश में चन्द्र को अपने सहचर तारागणों के साथ ही मैं देख रहा हूँ, जो कि रात दिन क्रीड़ा में रत होकर आश्चर्यमय युक्त क्रीड़ा नित्य करते ही रहते हैं । यह भी आश्चर्यमय चरित है, क्योंकि सूर्योदय होने पर दिन में चन्द्र तारे अदृश हो जाते हैं किन्तु यहाँ नहीं होते ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यदाहुस्तं मुक्ता पटल जटितं रत्न मुकुटं
नधत्ते तेषां सा वचनरचना साधुपदवीम् ।
निशे वेषा केशा नहि विगत वेश ध्रुवमिति
प्रसन्नाऽध्यासन्नाविधुपरिषदेषा विलसति ।। १८ ।।

कुछ लोगों का कहना है कि यह तो अनेक मणि माणिक्य से जड़ा हुआ मुकुट है, किन्तु मेरी सम्मति से यह बात उनकी ठीक नहीं जँचती । यह तो निशाही है, विगत वेष केश नहीं है, ऐसा निश्चय करके ही प्रसन्नतापूर्वक यह चन्द्रमा की सभा शोभित हो रही है ।

त्रिबीजे हे देवि त्रि प्रणवसहिते त्र्यक्षरयुते
त्रिमात्रा राजन्तेभुवनावभवे ह्यो मितिपदे ।
त्रिकालं संसेव्ये त्रिगुणवति च त्रिस्वरमयि
त्रिलोकेशः पूज्ये त्रिभुवनभयात्राहि सततम् ।। १९ ।।

हे तीन बीज वाली, तीन ओंकार युक्त मन्त्र वाली, तीन अक्षर वाली ओउम् इस एक मात्र सारभूत मन्त्र में भी तीन मात्रा शोभित हैं । हे तीनों काल में सेवनीय, तीन गुण वाली, तीन स्वर वाली, तीनों लोक के ईश देवताओं द्वारा पूजनीय माता हमारी सांसारिक भय से रक्षा करो ।

न चंद्रो नैवेमे नभसि विततता तारक गणाः
त्विषां राशी रम्या तव चरण योरम्बुनिचये ।
पतित्वा कल्लोलैः सह परिचया द्विस्तृतिभिता
प्रभा सैवाऽनन्ता गगनमुकुरे दीव्यात सदा ।। २० ।।

आकाश में ये चन्द्रमा और तारागण नहीं है किन्तु आपके चरणों की छाया जल में गिर कर तरङ्गों के साथ परिचय होने से विस्तार को प्राप्त हो गई और वही आभा आकाश रूपी काँच में दैदीप्यमान हो रही है ।

त्वमेव ब्रह्माणी त्वमसि कमला त्वं नगसुता
त्रिसन्ध्य सेवते चरणयुगलं ये तव जना ।
जगज्जाले तेषां निपतित जाननामिह शुभे ।
समुद्धारार्थं किं मतिमति मतिस्ते न भवति ।। २१ ।।

तू ही ब्रह्माणी कमला एवं रुद्राणी है । तीनों काल में जो आपके चरण की सेवा करते हैं, उन जगज्जाल में फँसे हुए प्राणियों के उद्धार के लिए हे मतिमति ! आपकी मति नहीं होती है क्या ? अर्थात् अवश्य होती है ।

अनेकैः पापौघैर्लुलित वपुषं शोक सहितं
लुठन्त दीनं मां विमल पदयो रेणुषु भरम् ।
गलद्बाष्प शश्चद् जननि सहसाश्वासनवचो ।
ब्रुवाणोत्तीष्ठेष्यमृत कणिकां पास्यति करा ।। २२ ।।

अनेक पापों के समुदाय से जर्जर शरीर वाले शोकयुक्त मुझ दीन को आपके पाँवों की धूल में लोटते हुए अश्रुपूर्ण नेत्र वाले मुझ पापी को आश्वासन के वचन कहती हुई -हे बेटा उठ, ऐसे वचनों के अमृत कण का कब पान कराओगी ।

नवा माद्राग् पापी नहि तव समा पापहरणीं ।
न दुर्बुद्धिर्मदृक नच तव समा धी वितरिणी ।
न माद्राग् गर्विष्ठोनहि तव समा गर्व हरणीं ।
हृदि स्मृत्यै त्थं माम्यि ! कुरु यथेच्छा तव तथा ।।२३।।

मेरे जैसा पापी नहीं और आप जैसी पापहरणी नहीं, मेरे जैसा मूर्ख नहीं और आप जैसी बुद्धिदायी नहीं । मेरे जैसा अभिमानी नहीं और आप जैसी गर्व हरणी नहीं । अतएव हे माता ! यह सब विचार कर चाहो जैसा करो ।

दरीधतिं स्वान्तेक्षर वर चतुर्विंशतिमितं ,
त्वदन्तर्मन्त्रं यस्त्वयि निहित चेतो हि मनुजः ।
समन्ताद्भास्वन्तं भवति भुविसंजीवनवनं ,
भवाम्भोधेः पार व्रजति स नितानां सुखयुतः ।। २४ ।।

जो मनुष्य आपके २४ अक्षर वाले मन्त्र को हृदय में धारण करता है वह सुखी होता है । संसार समुद्र से पार हो जाता है और उसका जीवन हरा-भरा हो जाता है ।

भगवति ! लहरीयं रुद्रदेव प्रणीता,
तव चरण सरोजे स्थाप्यते भक्तिभावैः ।
कुमति मितर बंक स्यांक मग्नं सशंकम् ,
मयि ! मयि कुरु दत्वा वीतशंक स्वभंक ।। २५ ।।

हे भगवति ! यह लहरी रुद्रदेव द्वारा रचित तेरे चरण कमलों में स्थापित की जाती है । कुमति रूपी अन्धकार के कीचड़ की गोद में मग्न अङ्कित मेरे को अपनी गोद की शरण दे निर्भय करिये ।

इति श्री रुद्रदेव विरचित गायत्री लहरी समाप्तः ।

गायत्री सहस्रनाम का विज्ञान

गायत्री ईश्वरीय दिव्य शक्तियों का एक पुंज है । उस पुंज में कितनी शक्तियाँ निहित हैं इसकी कोई संख्या नहीं बताई जा सकती । उसके गर्भ में शक्तियों का भण्डार है । शास्त्रों में 'सहस्र' शब्द अनन्त

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

के अर्थ में भी प्रयुक्त होता है । यों मोटे अर्थ में तो सहस्र एक हजार को कहते हैं पर अन्यत्र अनन्त संख्या के लिए भी सहस्र शब्द प्रयुक्त होता है, ईश्वर की एक प्रार्थना है-"सहस्र शीर्षा" आदि ।

इस प्रार्थना में ईश्वर को सहस्र मस्तक और सहस्र हाथ, पाँव, नेत्र आदि वाला बताया गया है । यहाँ उस सहस्र का तात्पर्य अनन्त से है । सहस्रार चक्र में अनन्त दल हैं, न कि एक हजार । ऐसे अनेक प्रमाण हैं जिनसे सहस्र का अर्थ अनन्त सिद्ध होता है । गायत्री की अनन्त शक्तियों में से मनुष्य में बहुत थोड़ी शक्तियों का अभी तक पता चला है और जितने का पता चला है उनमें से बहुत थोड़ी उपयोग में आई हैं जो शक्तियां अब तक जानी जा सकी है, समझी जा सकी हैं, उनकी संख्या लगभग एक हजार है ।

इन हजार शक्तियों के नाम उनके गुणों के अनुसार रखे गये हैं । उन हजार नामों का वर्णन प्राचीन ग्रन्थों में "गायत्री सहस्रनाम" करके मिलता है । यह नाम इस प्रकार नहीं रखे गये हैं जिस प्रकार बालक का जन्म होने पर उसके नामकरण संस्कार के अवसर पर रखे जाते हैं । गायत्री का कभी जन्म हुआ होगा तब पुरोहित ने यह नाम उसके रखे होंगे ऐसी बात नहीं है और न ऐसी बात है कि दुलार में बड़े नाम को संक्षिप्त करके या किसी अन्य कारण से कोई दूसरे नाम रख लिए हों जैसे रामदास को रामू-राम, रमुआ आदि दुलार के नामों से पुकारते हैं वैसी भी कोई बात नहीं है । एक वस्तु के कई पर्यायवाची शब्द होते हैं-जैसे घोड़े के लिए अश्व, हय, वाजि, तुरंग आदि पर्यायवाची नामों का प्रयोग करते हैं । गायत्री सहस्रनाम इस प्रकार के किसी कारण से नहीं बना है । वरन् उनके कारण वे शक्तियाँ हैं जो गायत्री के गर्भ में निहित हैं । इस शक्ति पुंज में जो सामर्थ्ये समताएँ, विशेषताएँ हैं उनके अर्थ बोधक शब्दों को गायत्री का 'नाम' बता दिया गया है, और ऐसे हजार नामों से मिलकर "गायत्री सहस्रनाम" बना है ।

इन शक्तियों का जानना, समझना और पाठ करना इसलिए आवश्यक है कि हमें पता चलता रहता है कि इस शक्ति पुञ्ज के अन्तर्गत क्या-क्या विशेषताएँ छिपी हुई हैं और गायत्री की प्राप्ति के साथ-साथ हम किन-किन विशेषताओं को अपने में धारण करते हैं । यह पता चल जाने पर ही उनका उपयोग और प्रयोग हो सकता है, जब तक किसी वस्तु का गुण और महत्व न मालूम हो, उसकी शक्ति का परिचय न हो, तब तक उस वस्तु से वह लाभ नहीं उठाया जाता जो उठाया जा सकता है ।

कोई किसी अनजान, जंगली प्रदेश का निवासी ऐसा हो जिसे रुपया और उसके बदले में प्राप्त हो सकने वाली वस्तुओं का ज्ञान न हो तो उसके लिए वह रुपया प्राप्त कर लेना निरर्थक होगा । जिसका प्रारम्भ में ही रुपये का उपयोग करने का काम पड़ा है उसे यह जानना आवश्यक है कि रुपये की शक्ति क्या है । उसके अन्तर्गत कितने ५० पैसे कितने , २५ पैसे, २ पैसे, १२ पैसे १ पैसे आदि होते हैं, यह जाने बिना वह उस रुपये से अन्य सिक्कों की तुलना न कर सकेगा । इतना जान लेने के पश्चात् उसे यह मालूम करना होगा कि इस रुपये से क्या-क्या वस्तु खरीदी जा सकती है, अनेक वस्तु ऐसी हैं जो रुपये से नहीं खरीदी जा सकतीं, यदि उस अनजान आदमी को मालूम नहीं कि रुपये के बदले में क्या मिल सकता है, क्या नहीं तो वह कोई ऐसी वस्तु माँग बैठ सकता है जो रुपये से नहीं मिलती । विद्या, पदवी, प्रतिष्ठा, सतीत्व आदि को रुपये से कोई मोल नहीं ले सकता, परन्तु अन्य अगणित वस्तुएँ उससे मिल जाती हैं ।

जब उस अनजान आदमी को यह मालूम हो जाता है कि रुपये से अमुक-अमुक पदार्थ खरीदे जा सकते हैं जो वह अपने पास रुपया होने पर यह सोचता है कि मुझे इस रुपये द्वारा अमुक-अमुक पदार्थ खरीद कर अपनी आवश्यकताएँ पूरी करनी चाहिए । इस प्रकार सोचने के फलस्वरूप उसे वह वस्तुएँ मिल भी जाती हैं । शहर के बच्चे पैसा मिलने पर रबड़ के गुब्बारे या मीठी बरफ लेने दौड़ते हैं । पर जिन ग्रामीण बच्चों ने ये दोनों चीजें देखी या सुनी तक नहीं हैं वे उसको लेने के बारे में सोच तक नहीं सकते । रबड़ का गुब्बारा या बरफ लेने की इच्छा उसी बालक को होगी जो यह जानता होगा कि यह चीजें होती हैं, अमुक स्थान

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पर मिलती हैं और यह एक या दो पैसे के बदले में मिल जाती हैं । इतना ज्ञान होने पर ही बालक का मन उस ओर चलेगा और उसे प्राप्त करने का प्रयत्न करके अपनी रुचि की वस्तु को वह प्राप्त कर लेगा ।

गायत्री सहस्रनाम से भी यही लाभ होता है । साधक एक प्रकार का अनजान है । उसे सविस्तार यह मालूम नहीं होता कि गायत्री में क्या-क्या शक्तियाँ हैं, और उन शक्तियों का उपयोग करने से हम क्या-क्या लाभ उठा सकते हैं । सहस्रनाम में यही परिचय कराया गया है कि इन नामों पर भली प्रकार ध्यान देने से गायत्री की मर्यादा, शक्ति, प्रकृति, उपयोगिता आदि का परिचय प्राप्त हो जाता है । यह परिचय उन लाभों की प्राप्ति का प्रथम सोपान है । इसे जानकारी के आधार पर साधक सोचता है कि गायत्री शक्ति की अमुक-अमुक विशेषताएँ हैं जिन्हें आवश्यकता या रुचि के अनुसार प्राप्त किया जा सकता है । यह पता चलने पर एक तो उसकी उपयोगिता की ओर ध्यान जाता है और जीवन को सर्वाङ्गपूर्ण बनाने के लिए उन लाभों का संग्रह करने की प्रकृति बढ़ती है । साथ ही इस महातत्त्व की महिमा का पता चलता है कि यह इतनी असाधारण वस्तु है । किसी की महिमा, विशेषता या श्रेष्ठता का पता चलने पर ही उसके प्रति श्रद्धा की भावनाएँ उत्पन्न होती हैं । जो पारस के गुणों को जानता है वही उसकी खोज करता है, प्राप्त करने का प्रयत्न करता है, मिल जाने पर उसको सुरक्षित रखता है और उसका उपयोग करके समुचित लाभ उठाता है । जिसे यह सब मालूम न हो, पारस की विशेषताओं से परिचय न हो तो उसके लिए वह पत्थर के मामूली टुकड़े से अधिक कुछ नहीं है ।

पारस तभी पारस है जब उसकी विशेषताओं का परिचय हो । परिचय ही वह तत्व है जो मामूली पत्थर के टुकड़े से पारस को विशेषता प्रदान करता है और व्यक्तियों को लाभान्वित बनाता है । परिचय के अभाव में ऐसा कुछ नहीं हो सकता । गायत्री के सम्बन्ध में भी यही बात है । जिसे उसका बिल्कुल परिचय नहीं वे यह तक नहीं जानते कि गायत्री वृक्ष होता है या पक्षी । जिन्हें उसका थोड़ा सा परिचय है वे थोड़ी सी बात जानते हैं कि गायत्री भी कोई मन्त्र है और उस से पानी पढ़कर छिड़क दें तो भूत-प्रेत भाग जाते हैं । कोई उसे सूर्य नारायण का मन्त्र समझते हैं । किसी की समझ में गायत्री कोई देवी है जो उसके मन्त्र का जप करने से प्रसन्न होती है । इसी से मिलती -जुलती कितने ही लोगों की विविध धारणायें होती है और उन धारणाओं के अनुरूप वे उसे महत्त्व देते हैं ।

गायत्री सहस्रनाम में यह प्रयत्न किया गया है कि व्यक्तियों का ज्ञान क्षेत्र विस्तृत हो, उन्हें पता चले कि यह शक्ति पुञ्ज कितना बड़ा रहस्यमय केन्द्र है, उसमें से सहस्रों धाराएँ प्रवाहित होती हैं, जिनका यदि कुछ उपयोग किया जाय तो साधक अपने आपको कुछ से कुछ बना सकता है । इन्हीं सब बातों को ध्यान में रखते हुए सहस्रनाम का पाठ करना, उसे समझना, उसमें वर्णित शक्तियों की महत्ता पर विचार करना, उसके प्रति अपनी निष्ठा को बलवती करना आवश्यक बताया गया है । सहस्रनाम एक ऐसा माध्यम हो जो निर्जीव गायत्री को सजीव बनाता है । एक उपेक्षित महातत्व का ज्ञान देकर उससे लाभान्वित होने का अवसर देता है । यह गुण उतना ही महत्त्वपूर्ण है जितना कि स्वयं गायत्री का महत्त्व है । इसीलिए सहस्रनाम का श्रद्धापूर्वक पाठ करने का शास्त्रों में बड़ा माहात्म्य बताया गया है ।

गायत्री के सहस्रनामों में प्रत्येक नाम बड़ा ही रहस्यमय है । उसमें सूत्र रूप से गायत्री की शक्तियों का परिचय, इतिहास एवं विज्ञान छिपा हुआ है । मोटी दृष्टि से देखने में यह नाम साधारण मालूम होते हैं, पर यदि सूक्ष्म दृष्टि से विवेचन कियां जाय तो प्रत्येक नाम में से बड़े-बड़े रहस्यों का उद्घाटन होता है । यदि एक-एक नाम की व्याख्या और विवेचना की जाय तो उन तत्त्वों का उद्घाटन होगा, जिनको समझाने के लिए वेद, शास्त्र, पुराण, इतिहास, दर्शन, उपनिषद, ब्राह्मण, आरण्यक, स्मृति, नीति, संहिता एवं सूत्र ग्रन्थों की रचना हुई है । प्रत्येक नाम की विशद् व्याख्या करना इस छोटे ग्रन्थ में सम्भव नहीं है । कभी सुयोग मिला और माता की प्रेरणा हुई तो इन सहस्र नामों में से एक-एक नाम का सुविस्तृत विवेचन करेंगे । तब सर्वसाधारण के लिए यह जानना

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सुगम होगा कि आद्यशक्ति गायत्री की रूपरेखा, गतिविधि, प्रक्रिया , उपयोगिता, महत्ता, वैज्ञानिकता एवं वास्तविकता क्या है ? यह नाम गायत्री के गुण, इतिहास और विज्ञान का रहस्योद्घाटन करने के अतिरिक्त अनेक प्रकार की दक्षिणमार्गी एवं वाममार्गी साधनों की भी शिक्षा देते हैं । अंगुलि निर्देश, संकेत, सूक्ष्म एवं बीज रूप में इन सहस्र नामों के अन्तर्गत गायत्री विद्या का अनन्त भण्डार भरा हुआ है ।

अथ गायत्री सहस्रनाम

नारद उवाच ।। भगवन्सर्वधर्मज्ञ सर्वशास्त्र-विशारद ।। श्रुतिस्मृतिपुराणानां रहस्यं त्वन्मुखाच्छ्रुतं ।।१ ।। सर्वपापहरं देव येन विद्या प्रवर्तते ।। केन वा ब्रह्मविज्ञानं किंतु वा मोक्षसाधनम्।। २ ।। ब्राह्मणानां गतिः केन केन वा मृत्युनाशनं ।। ऐहिकामुष्मिकफलंकेन वा पद्म लोचनं ।। ३ ।। वक्तुमर्हस्यशेषेण सर्वं निखिलमादितः ।। श्रीनारायण उवाच ।। साधु साधु महाप्राज्ञ सम्यक् पृष्ट त्वयाऽनघ ।। ४ ।। शृणु वक्ष्यामि यत्नेन गायत्र्यष्ट सहस्रकं ।। नाम्नां शुभानां दिव्यानां सर्वपापविनाश।। ५ ।। सृष्ट्यादौ यद्भगवता पूर्वं प्रोक्तं ब्रवीमि ते ।। अष्टोत्तरसहस्रस्य ऋषिर्ब्रह्मा प्रकीर्तितः ।। ६ ।। छंदोऽनुष्टुप्तथा देवी गायत्री देवता स्मृता ।। हलो बीजानि तस्यैव स्वराः शक्तत ईरिताः ।। ७ ।। अंगन्यसकरन्यास वुच्येतेमातृकाऽक्षरैः ।। अथध्यानं प्रवक्ष्यामि साधकानां हिताय वै ।। ८ ।। रक्तंश्वेतहिरण्यनील धवलैर्युक्तां त्रिनेत्रोज्ज्वलां, रक्तां रक्तनवस्रजं मणिगणैर्युक्तां कुमारीमिमां । गायत्री कमलासनां करतलव्यामद्धकुंडांबुजांपद्माक्षी च वरस्रजं च दधती हंसाधिरूढां भजे ।। ९ ।। इति ध्यानं ।। अचिंत्यलक्षणाऽव्यक्ताप्यर्थमातृ महेश्वरी ।। अमृतार्णवमध्यस्थाऽप्यजिता चापराजिता ।। १० ।। अणिमादिगुणाधाराऽप्यर्क मण्डलसंस्थिता ।। अजराऽजाऽपराधर्मा अक्षसूत्रा धराऽधरा ।। ११ ।। अकारादिक्षकारांताऽप्यरिषड्वर्गभेदिनी ।। अंजनाद्रिप्रताकाशाप्यंजनाद्रिवासिनी ।। १२ तिश्चाजयाविद्याप्यरविंदनिभक्षणा अन्तर्बहिःस्थिताऽविद्याध्वंसिनी चांतरात्मिका ।। १३ ।। अजा चाजमुखावासाप्यरविंदनिभानना ।। अर्धमात्रार्थदा-नज्ञाप्यरिमण्डलमर्दिनी ।। १४ ।। असुरघ्नी ह्यमावास्याप्यलक्ष्मीघ्नयंतजार्चिता ।। आदिलक्ष्मीश्चा-दिशक्तिराकृतिश्चायतानना ।। १५ ।। आदित्यपदवीचाराप्यादित्यपरिसेविता ।। आचर्यावतना चाराप्यादिमूर्तिनिवासिनी ।। १६ ।। आग्नेयी चामरी चाद्या चाराध्या चामनस्थिता ।। आधारनिलयाधाराचाकाशांतनिवासिनी ।। १७ ।। आद्याक्षरसमायुक्ताचांतराकाशरूपिणी ।। आदित्यमण्ड लगता चांतरध्वांतनाशिनी ।। १८ ।। इंदिरा चेष्टदा चेष्टा चंदिवरनिभेक्षणा ।। इरावती चेन्द्रपदा चेंद्राणी चेंदुरूपिणी ।। १९ ।। इक्षु कोदंडसंयुक्ताचेषुसंधान कारिणी ।। इंद्रनीलसमाकारा चेडापिंगलरूपिणी ।। २० इंद्राक्षी चेश्वरी देवी चेहात्रयविवर्जिता ।। उमा चोषा ह्युडुनिभा उर्वारुकफलानना।। २१ ।। उडुप्रभा चोडुमती ह्युडुपा ह्युडुमध्यमा ।। ऊर्ध्वं चाप्युर्ध्वकेशी चाप्यूर्ध्वाधो गतिभेदिनी ।। २२ ।। ऊर्द्धबाहुप्रिया चोर्भिमा लावा ग्रन्थदायिनी ।। ऋतं चर्षिऋतुमती ऋषिदेवनमस्कृता ।। २३। ऋग्वेदा ऋणहर्त्री च ऋषिमंडलचारिणी ।। ऋद्धिदाऋजुमार्गस्था ऋजुधर्मा ऋतुप्रदा ।। २४ ।। ऋग्वेदनिलया ऋज्वी लुप्तधर्मप्रवर्तिनी ।। लूतारिवरसंभूता लूतादिविषहारिणी ।। २५ ।। एकाक्षरा चैक मात्रा चैका चैकै कनिष्ठिता ।। ऐंद्री ह्यैरावतारूढा चैहिकामुष्मिकप्रदा ।। २६ ।। ओंकारा ह्योषदो चोता चोतप्रोतनिवासिनी और्वा ह्यौषधसंपन्ना औपास-नफलप्रदा ।। अंडमध्यस्थितादेवी चा कारमनुरूपिणी ।। कात्यायनी कालरात्रिः कामाक्षी कामसुन्दरी ।। २८ ।। कमला कामिनी कांता कामदा कालकंठिनी ।। करिकुंभस्तनभरा करवीरसुवासिनी ।। २९ ।। कल्याणी कुंडलवती कुरुक्षेत्रनिवासिनी ।। कुरुविंददलाकारा कुण्डला कुमुदालया ।। ३० ।। कालजिह्वा करालास्या कालिका कालरूपिणी ।। कमनीयगुणा कांतिः कलाधारा कुमुद्वती ।। ३१ ।। कौशिकी कमलाकाराकामावारप्रभंजिनी ।। कौमारीकरुणापांगी ककुवंताकरिप्रिया ।। ३२ ।। केसरीकेशानुताकंदपक्कुसुमप्रिया ।कालिंदी कालिका कांची कलशोद्भवसंस्तुता ।। ३३ ।। काममाता क्रतुपती कामरूपा कृपावती ।। कुमारी कुडनिलया किराती कीरबाहना ।। ३४ ।। कैकयी कोकिलालापा केतकी कुसुमप्रिया ।। कमण्डलुधरा काली कर्मनिर्मूलकारिणी ।३५। कलहंसगतिः कक्षा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कृतकौतुकमंगला ।। कस्तूरीतिलका कम्रा करीद्रगमना कुहूः ।। ३६ ।। कर्पूरलेपना कृष्णा कपिला कुहराश्रया कूटस्थ कुबरा क्रमा कुक्षिस्थाऽखिलविष्टपा ।। ३७ ।। खड्गखेटधराखर्वाखेवरीखगवाहना ।। खट्वांग धारिणीख्याता खगराजोपरिस्थिता ।। ३८ ।। खलघ्नी खंडितजरा खडाख्यानप्रदायिनी ।। खंडेंदुतिलका गंगा गणेशगुहपूजिता ।। ३९ ।। गायत्री गोमती गीतगांधारीगानलोलुपा ।। गौतमी गामिनी गाधा गंधर्वा प्सरसेविता ।। ४० ।। गोविंदचरणाक्रांतागुणत्रयवि-भाविता ।। गंधर्वी गह्वरी गोत्रा गिरीशा गहना गमी ।। ४१ ।। गुहावासा गुणवती गुरुपापप्रणाशिनी ।। गुर्वी गुणवती गह्या गोप्तव्या गुणदायिनी ।। ४२ ।। गिरजा गुणमातंगी गरुडध्वजवल्लभा ।। गर्वापहारिणी गोदा गोकुलस्था गदाधरा ।। ४३ ।। गोकर्णनिलयासक्ता गुह्यमंडलवर्तिनी ।। धर्मदाघनदाघंटाघोर दानवमर्दिनी ।। ४४ ।। घृणिमंत्रमयी घोषा घनसंपातिदायिनी ।। घंटारवप्रिया घाणा घृणिसंतुष्टिकारिणी ।। ४५ ।। घानारिमंडला घूर्णा घृताची घनवेगिनी ।। ज्ञानधातुमयी चर्चा चर्चिता चारुहासिनी ।। ४६ ।। चटुला चंडिका चित्रा चित्रमाल्यविभूषिता ।। चतुर्भुजा चारुदंता चातुरी चरितप्रदा ।। ४७ ।। चुलिता चित्रवस्त्रांता चन्द्रमाः कर्णकुण्डला ।। चंद्रहासा चारुदात्री चकोरी चंद्रहासिनी ।। ४८ ।। चंद्रिका चन्द्रधात्री च चौरी चौरा च चण्डिका चंचद्वागादिनी चंद्रचूडा चारविनाशिनी ।। ४९ ।। चारुचंदनलिप्तांगी चञ्चच्चञ्चा- मरवीजिता ।। चारुमध्या चारुगतिश्चन्दिला चंद्ररूपिणी ।। ५० ।। चारुहोमप्रिया चार्वा चरिता चक्रवाहुकाचन्द्रमंडलमध्यस्था चन्द्रमंडलदर्पणा ।। ५१ ।। चिक्रवाकस्तनी चेष्टा चित्रा चारुविलासिनी ।। चित्स्वरूपा चन्द्रवती चन्द्रमाश्चन्दनप्रिया ।। ५२ ।। चोदयित्री चिरप्रज्ञा चप्तका चारुहतकी ।। छत्रयाता छाया छंदःपरिच्छदा ।। ५३ ।। छायादेवी छिद्रनखा छत्रेंद्रिय विसर्पिणी ।। छेदोनुष्टुप्रतिष्ठांता छिद्रोपद्रवभेदिनी ।। ५४ ।। छेदा छत्रेश्वरीछिन्ना छुरिका छेदनप्रिया ।। जननी जन्मरहिता जातवेदा जगन्मयी ।। ५५ ।। जाह्नवी जटिला जेत्री जरामरणवर्जिता ।। जंबूद्वीपवती ज्वाला जयंती जलशालिनी ।। ५६ ।। जितेन्द्रिया जितक्रोधा जितामित्रा जगत्प्रिया ।। जातरूपमयी जिह्वा जानकी जगती जरा ।। ५७ ।। जनित्री जन्हुतनया जगत्त्रयहितैषिणी ज्वालामुखी जपवती ज्वरघ्नी जितविष्टपा ।। ५८ ।। जिता क्रांतमयी ज्वाला जाग्रती ज्वरदेवता ज्वलंती जलदा ज्येष्ठा ज्याघोषास्फोट दिंमुखी ।। ५९ ।। जंभिनी जभणां जंभा ज्वलन्माणिक्यकुंडला ।। झिंझिका झणनिर्घोषा झंझामारुतवेगिनी ।। ६० ।। झल्लकीवाद्यकुशला झरूपा झभुजा स्मृता टंकबाणसमायुक्ता टंकिनी टंकभेदिनी ।।६१ ।। टंकीगणकृताघोषा टंकनीय-महोरसा टंकारकारिणी देवी ठठशब्दनिनादिनी ।। ६२ ।। डामरी डाकिनी डिंभा डुंडुमारकनिर्जिता ।। डामरीतंत्रमार्गस्था डमडमरुनादिनी ।। ६३ ।। डिंडीरवसहाडिभ-लसत्क्रीडापरायणा । ढुंढिविघ्नेश-जननी ढक्काहस्ता ढिलिव्रजा ।। ६४ ।। नित्यज्ञाना निरुपमा निर्गुणा नर्मदा नदी ।। त्रिगुणा त्रिपदा तंत्री तुलसी तरुणा तरुः । ६५ ।। त्रिविक्रमपदाक्रांता तुरीयपदगामिनी ।। तरुणादित्यसंकाशा तामसी तुहिना तुरा ।। ६६ ।। त्रिकालज्ञानसंपन्ना त्रिबली च त्रिलोचना ।। त्रिशक्तिस्त्रिपुरा तुंगा तुरंगवदना तथा ।। ६७ ।। तिमिंगिलगिला तीव्रा त्रिस्रोता तामसादिनी ।। तंत्र मंत्रविशेषज्ञा तनुमध्या त्रिविष्टपा ।। ६८ ।। त्रिसंध्या त्रिस्तनी तोषासंस्था तालप्रतापिनी ।। ताटंकिनी तुषाराभा तुहिनाचलवासिनी ।। ६९ ।। तंतुजालसमायुक्ता तारहारावलिप्रिया ।। तिलहोमप्रिया तीर्था तमालकुसुमाकृतिः ।। ७० ।। तारका त्रियुता तन्वी त्रिशंकुपरिवारिता ।। तलोदरी तिरोभाषा ताटंकप्रियवादिनी ।। ७१ ।। त्रिजटा तित्तिरी तृष्णा त्रिविधा तरुणाकृतिः ।। तप्तकांचनसंका शातप्त-कांचनभूषणा ।। ७२ ।। त्रैयंबका त्रिवर्मा च त्रिकालज्ञानदायिनी ।। तर्पणा तृप्तिदा तृप्ता तामसी तुंबरुस्तुता ।। ७३ ।। तार्क्ष्यस्था त्रिगुणाकारा त्रिभंगी तनुवल्लरी ।। थात्कारी थारवा थांता दोहिनीदीन वत्सला ।। ७४ ।। दानवांतकारी दुर्गा दुर्गासुरनिवर्हिणी देवरीतिर्दिवारात्रिद्रौपदीदुंदुभिस्वना ।। ७५ ।। देवयानी दुरावासा दारिद्रभेदिनी दिवा ।। दामोदरप्रिया दीक्षा दिग्वासा दिग्विमोहिनी ।। ७६ ।। दंडकारिण्यनिलया दंडिनी देवपूर्जिता ।। देवबंद्या दिविषदा द्वेषिणी दानवाकृतिः ।। ७७ ।। दीनानाथस्तुता दीक्षा दैवतादिस्वरूपिणी ।। धात्री धनुर्धरा धेनुर्धारिणी धर्मचारिणी ।। ७८ ।। धुरंधरा धरा धारा धनदा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

धान्यदोहिनी ।। धर्मशीला धनाध्यक्षा धनुर्वेदविशारदा ।।७९।। धृतिर्धन्या धृतपदा धर्मराजप्रिया ध्रुवा ।। धूमावती धूमकेशी धर्मशास्त्र प्रकाशिनी ।। ८० नंदा नंदप्रिया निद्रा नुनुता नंदनात्मिका ।। नर्मदा नलिनी नीला नीलकंठसमाश्रया ।। ८१ ।। नारायणप्रिया नित्या निर्मलानिर्गुणा निधिः ।। निराधारा निरुपमा नित्यशुद्धा निरंजना ।। ८२ ।। नादविंदुकलातीता नादविंदुकलात्मिका ।। नृसिंहिनी नगधरा नृपनागविभूषिता ।। ८३ ।। नरकक्लेशशमनी नारायणपदोद्भवा ।। निरवद्या निराकारा नारदप्रियकारिणी ।। ८४ ।। नानाज्योतिः समाख्याता निधिदा निर्मलात्मिका ।। नवसूत्रधरा नीतिर्निरुपद्रवकारिणी ।। ८५ ।। नंदजी नवरत्नाढ्या नेमिषारण्यवासिनी ।। नवनीतप्रिया नारी नलजीमृतनिःस्वन ।। ८६।। निमेषिणी नदीरूपा नीलग्रीवा निशाश्वरी ।। नामावलिर्निशुम्भघ्नी नागलोकनिवासिनी ।। ८७ ।। नवजांबूनदप्रख्या नागलोकाधिदेवता ।। नूपुराक्रांतचरणा नरचित्तप्रमोदिनी ।। ८८ ।। निमिग्नारक्तनयना निर्घातसमनिःस्वना ।। नंदनोद्याननिलया निर्ध्यू होपरिचारिणी ।। ८९ ।। पार्वती परमोदारा परब्रह्मात्मिका परा ।। पंचकोशविनिर्मुक्ता पंचपातकनाशिनी ।। ९० ।। परचित्तविधानज्ञा पंचिका पंचरूपिणी ।। पूर्णिमा परमा प्रीतिः परतेजः प्रकाशिनी ।। ९१ ।। पुराणीपौरुषी पुण्या पुण्डरीकनिभेक्षणा ।। पातालतलनिर्मग्ना प्रीता प्रीतिविवर्धिनी ।। ९२ ।। पावनी पादसहिता पेशला पवनाशिनी । प्रजापतिः परिश्रोता पर्वतस्तनमंडला ।।९३ ।। पद्मप्रिया पद्मसंस्थापद्माक्षीपद्मसंभवा ।। पद्मपत्रापद्माप्रदाप प्रियभाषिणी ।। ९४ ।। पशुपाशविनिर्मुक्ता पुरंध्रीपुरवासिनी ।। पुष्कलापुरुषापर्वा पारिजातसुमप्रिया ।।९५ ।। पतिव्रता पवित्रांगा पुष्पहासपरायणा ।। प्रज्ञावतीसुता पौत्री पुत्रपूज्या पयस्विनी ।। ९६ ।। पट्टिपाशधरा पंक्ति पितृलोकप्रदायिनी ।। पुराणी पुण्यशीला च प्रणतार्तिविनाशिनी ।।९७।। प्रद्युम्नजननी पुष्टा पितामह परिग्रहा ।। पुंडरीकपुरावासा पुण्डरीकनिभानना ।। ९८ । पृथुजंघा पृथुभुजा पृथुपादा पृथूदरी ।। प्रवालशोभा पिंगाक्षी पीतवासाः प्रवापला ।। ९९ ।। प्रसवा पुष्टिदा पुष्पा प्रतिष्ठा प्रणवागतिः ।। पञ्चवर्णा पञ्चवाणीपंचिक पंजरस्थिता ।। १०० ।। परमाया परज्योतिः परप्रीतिः परागतिः पराकाष्ठा परेशानी पावनी पावकद्युतिः ।। १०१ ।। पुण्यभद्रा परिच्छेद्या पुष्पहासा पृथूदरा ।। पीतांगी पीतवसना पीतशय्या पिशाचिनी ।। १०२ ।। पीतक्रिया पिशाचघ्नी पाटलाक्षी पटुक्रिया ।। चभक्षप्रियाचारा पूतना प्राणघातिनी ।।१०३।। न्नागवनमध्यथा पुण्यतीर्थनिषेविता ।। पंचांगी परशक्तिः परमाल्हादकारिणी ।। १०४ ।। पुष्पकांडस्थिता पूषा पोषिताखिलविष्टपा ।। पान प्रिया पंचशिखा पन्नगोपरिशापिनी ।। १०५ ।। पंचमात्रात्मिका पृथ्वी पथिका पृथुदोहिनी पुराणन्यायमीमांसा पाटली पुष्पाधनी ।। १०६ ।। पुण्यप्रजा परदात्री परमार्गैकगोचरा ।। प्रवालशोभा पूर्णांशा प्रणवा पल्लवोदरी ।। १०७ ।। फलिनी फलदा फल्गुः फूत्कारी फूलकाकृतिः ।। फणीन्द्रभोगशयना फणिमंडलमंडिता ।। १०८ ।। बालबाला बहुमता बालातपनिभांशुका ।। बलभद्रप्रियावंद्यावडवा बुद्धिसंस्तुता ।। १०९ ।। बंदीदेवी बलवती बडिशघ्न बलिप्रिया ।। बांधवी बोधिता बुद्धीबंधूककुसुमप्रिय ।।११०।। बालभानुप्रभाकारा ब्राह्मी ब्राह्मण देवता ।। बृहस्पति स्तुतावृन्दा वृन्दावनविहारिणी ।। १११ ।। बालाकिनी बिलाहारा विलवासा वहूदका ।। बहुनेत्रा बहुपदा बहुकर्णावतंसिका ।। ११२ ।। बहुबाहुयुता बीजरूपिणी बहुरूपिणी ।। विंदुनादकलातीता बिंदुनाद स्वरूपिणी ।। ११३ ।। बद्ध गोलांगुलित्राणा बदार्याश्रमवासिनी ।। वृन्दारका वृहत्स्कंधा बृहती बाणपातिनी ।। ११४ ।। वृंदाध्यक्षा वृहुनुता वनिता बहु विक्रमाबद्धपद्मासनासीना विल्वपत्रतलस्थिता ११५ ।। बोधिद्रुमनि जावासा बडिस्था बिंदुदर्पणा ।। बाला वाणसनवती वडवानलवेगिनी ।। ११६ ।। ब्रह्मांड बहिरांतस्था ब्रह्मकंकण सूत्रिणी ।। भवानी भीषणवती भवानी भयहारिणी ।। ११७ ।। भद्रकाली भुजंगाक्षी भारती भारताशया ।। भैरवी भीषणाकारा भूतिदा भूतिमालिनी ।। ११८ ।। भामिनी भोगनिरता भद्रदा भूरिविक्रमा ।। भूतवासा भृगुलता भार्गवी भूसुरार्चिता ।। ११९ ।। भागीरथी भोगवती भवनस्था भिषग्वरा ।। भामिनी भोगिनी भाषा भवानी भूरिदक्षिणा ।। १२० ।। भर्गात्मिका भीमवती भवबंधविमोचिनी ।। भजनीया भूतधात्रीरंजिता भुवनेश्वरी ।। १२१ ।। भुजंगवलया भीमा भेरुडा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भागधेयिनी ।। माता माया मधुमती मधु जिह्वा मधुप्रिया ।। १२२ ।। महादेवी महाभागा मालिनी मीनलोचना ।। मायातीता मधुमती मधुमासा मधुद्रवा ।। १२३ ।। मानवी मधु सम्भूता मिथिला पुरवासिनी ।। मधुकैटभ मेदनी मेघमालिनी ।। १२४ ।। मंदोदरी महामाया मैथिली मसृणप्रिया ।। महालक्ष्मी महाकाली महाकन्या महेश्वरी ।। १२५ ।। माहेन्द्री मेरुतनया मंदार कुसुमार्पिता ।। मंजुमजरिचरणा मोक्षदामंजुभाषिणी ।। १२६ ।। मधुरद्राविणी मुद्रा मलया मलयान्विता ।। मेधा मरकतश्यामामागधी मेनकात्मजा ।। १२७ ।। महामारी महावीरा महाश्यामानुस्तुता ।। मातृका मिहिराभासा मुकुन्दपद विक्रमा ।। १२८ ।। मूलाधारस्थिता मग्धा मणिपूरकवासिनी ।। मृगाक्षी महिषारूढ़ा महिषासुरमर्दिनी ।। १२९ ।। योगासना योगगम्या योगा यौवनकाश्रया ।। यौवनी युद्धमध्यस्था यमुना युगधारिणी ।। १३० ।। यक्षिणी योगयुक्ता च यक्षराजप्रसूतिनी ।। यात्रा यानविधानज्ञा यदुवंशसमद्भवी ।। १३१ ।। यकारादि हकारांता याजुषी यज्ञरूपिणी ।। यामिनी योगनिरता यातुधानभयंकरी ।। १३२ ।। रुक्मिणी रमणी रामा रेवती रेणुका रतिः ।। रौद्री रौद्रः प्रियाकारा रामभक्ता रतिप्रिया ।। १३३ ।। रोहिणी राज्यदा रेवा रमा राजीवलोचना ।। राकेशी रूपसंपन्ना रत्नसिंहासनस्थिता ।। १३४ ।। रक्तमाल्यां वरधरा रक्तगंधानुलेपना ।। राजहंससमारूढ़ा रंभा रक्तबलिप्रिया ।। १३५ ।। रमणीययुगाधारा राजिताखिल भूतला ।। रुरुचर्मपरीधाना रथिनी रत्नमालिका ।। १३६ ।। रोगेशी रोगशमनी राविणी रोमहर्षिणी ।। रामचंद्रपदाक्रांता रावणच्छेदकारिणी ।। १३७ ।। रत्नवस्त्रपरिच्छिन्ना रथस्था रुक्मभूषणा ।। लज्जाधिदेवता लोला ललिता लिंगधारिणी ।। १३८ ।। लक्ष्मीलोला लुप्तविषा लोकिनी लोकविश्रुता ।। लज्जा लंबोदरीदेवी ललना लोकधारिणी ।। ।। १३९ ।। वरदा वंदिता विद्या वैष्णवी विमलाकृतिः ।। बाराही विरजावर्षा वरलक्ष्मीविलासिनी ।। १४० ।। विनता व्योममध्यस्था वारिजाहनसंस्थिता ।। वारुणी वेणुसंभूता वीतिहोत्री विरूपिणी ।। १४१ ।। वायुमंडलमध्यस्था विष्णुरूपा विधिक्रिया ।। विष्णुपत्नी विष्णुमती विशालाक्षी वसुन्धरा ।। १४२ ।। वामदेवप्रिया वेला बज्रिणी वसुदोहिनी ।। वेदाक्षरपतीतांगी वाजपेयफलप्रदा ।। १४३ ।। वासवी वामजननी वैकुण्ठनिलया बरा ।। व्यासप्रिया चर्मधरा वाल्मिकीपरिसेविता ।। १४४ ।। शाकंभरी शिवा शांता शारदा शरणागतिः ।। शांतोदरी शुभाचार-शुम्भासुर विमर्दिनी ।। १४५ ।। शोभावती शिवाकारा शंकरार्धशरीरिणी ।। शोणा शुभाशया शुभ्रा शिरः संधानकारिणी ।। १४६ ।। शरावती शरानंदा शरज्ज्योत्स्ना शुभानना ।। शरभा शूलनी शुद्धा शबरी शुकवाहना ।। १४७ ।। श्रीमती श्रीधरानंदा श्रवण नंददायिनी ।। शर्वाणी शार्वरीवंद्या षड्भाषा षड्ऋतु प्रिया ।। १४८ ।। षडाधारस्थितादेवी षण्मुखप्रियकारिणी ।। षडंगरूपसुमतिः सुरासुर नमस्कृता ।। १४९ ।। सरस्वती सदाधारा सर्वमङ्गलकारिणी ।। सामगानप्रिया सूक्ष्मा सावित्री सामसंभवा ।। १५० ।। सर्ववासा सदानंदा सुस्तनी सागरांबरा । सर्वैश्वर्यप्रिया सिद्धिः साधुबंधुपराक्रमा ।। १५१ ।। सप्तार्षिमंडलगता सोममंडलवासिनी ।। सर्वज्ञा सांद्रकरुणा समानाधिकवर्जित ।। १५२ ।। सर्वोत्तुंगा संगहीना सद्गुणा सकलेष्टदा ।। सरघा सूर्यतनया सुकेशी सामसंहतिः ।। १५३ ।। हिरण्यवर्णा हरिणी हंकारी हंसवाहिनी ।। क्षौमवस्त्रपरीतांगी क्षीराब्धितनया क्षमा ।। १५४ ।। गायत्री चैव सावित्री पार्वती च सरस्वती ।। वेदगर्भा वरारोहा श्रीगायत्री परांबिका ।। १५५ ।। इति साहस्त्र नाम्नां गायत्र्याश्चैव नारद ।। पुण्यदं सर्वपापघ्नं महासंपत्तिदायकं ।। १५६ ।। एवं नाभादि गायत्र्या स्तोषोत्पत्ति कराणिहि ।। अष्टम्यां च विशेषेण पठितव्यं द्विजैः सह ।। १५७ ।। जपं कृत्वा होम पूजाध्यानं कृत्वा विशेषतः ।। यस्मै कस्मै न दातव्य गायत्र्यास्तु विशेषतः ।। १५८ ।। सुभक्ताय सुशिष्याय वक्तव्यं भूसुराय वै ।। भ्रष्टेभ्यः साधकेभ्यश्च बांधवेभ्यो न दर्शयेत् ।। १५९ ।। यदुगृहे लिखितं शास्त्रं भयं तस्य न कस्यचित् ।। चंचवपि स्थिरा भूत्वा कमला तत्र तिष्ठति ।। १६० ।। इदं रहस्यं परमं गुह्यादुगुह्यतरं महत् ।। पुण्यप्रदं मनुष्याणां दरिद्राणां निधिप्रदं ।।१६१।। मोक्षप्रदं मुमुक्षूणां कामिनां सर्वकामदं । रोगाद्वै मुच्यते रोगी बद्धो मुच्येत बंधनात् ।। १६२ ।। ब्रह्महत्यासुरापानसुवर्णस्तेयिनो नराः ।। गुरुतल्पगतो वापि पातकान्मुच्यते सुकृत् ।। १६३ ।। असत्प्रतिग्रहाच्चैवा भक्ष्यभक्षाद्विशेषतः ।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पाखंडानृतमुख्येभ्यः पठनादेव मुच्यते ।। १६४ ।।
इदं रहस्यमनलं भयोक्तं पद्मजोद्भव ।। ब्रह्मसायुज्यदं नृणां सत्यं सत्यं न संशयः ।। १६५ ।।
इति श्री देवी भागवते गायत्री सहस्त्रनामस्तोत्रं संपूर्णम् ।।

अथ श्रीगायत्रीस्तवराजः ।

ॐ अस्य गायत्री स्तवराजस्तोत्रमंत्रस्य विश्वमित्र ऋषिः सकलजननी चतुष्पदा गायत्री परमात्मा देवता सर्वोत्कृष्टपरं धाम प्रथमपादो बीजं द्वितीयः शक्तिः तृतीयः कीलकं दशप्रणवसंयुक्ता सव्याहृतिका तूर्यपादसहिता व्यापकं मम धर्मार्थकाममोक्षार्थे जपे विनियोगः ।। न्यासं कृत्वा ध्यायेत् ।। तद्यथा ।। गायत्री वेदधात्री शतमखफलदा वेदशास्त्रैकवेद्या चिच्छक्तिं ब्रह्मविद्यां परमशिवपद श्रीपदं वै करोति ।। सर्वोत्कृष्टं पदं तत्सवितुरनुपदांत वरेण्यं शरणयं भर्गो देवस्य धीमह्यभिदधति धियो यो नः (प्रचोदयात्) इत्योर्व तेजः ।। १ ।। साम्राज्यबीजं प्रणवत्रिपादं सव्यपसव्यं प्रजपेत्सहस्त्रम् ।। संपूर्णकामः प्रभवेद् विभूतिस्तथा भवेद्वाक्यविचित्रवाणी ।। २ ।। शुभं शिवं शोभनमस्तु मह्यं सौभाग्य भोगोत्सवमस्तु नित्यम् ।। प्रकाशविद्यात्रयशास्त्रसर्वं भवेन्महामन्त्रफलं प्रियै वै ।। ३ ।। ब्रह्मास्त्रं ब्रह्मदंडं शिरसि शिखिमहदुब्रह्मशीर्षम् नमोतं सूक्तं पारायणोक्तं प्रणवमथ महावाक्य सिद्धांतमूलम् ।। तुर्यं त्रीणि द्वितीयं प्रथममनुमहावेदवेदांतसूक्तं नित्यं स्मृत्यानुसारं नियमितचरितं मूलमन्त्रं नमोन्तम् ।। ४ ।। अस्त्र शस्त्रं हतं त्वघोरसहित दण्डेन वाजीहत चादित्यादिहतं शिरोंतसहितं पापक्षयार्थम् परम् । तुर्य्यान्त्यादिविलोममंत्रपठन बीजं शिखान्तोर्ध्वकं नित्यं कालनियम्यविप्रवेदुषां किं दुष्कृत भूसुराः ।। ५ ।। नित्यं मुक्तिप्रदं नियम्य पवनं निर्दोषशक्तित्रयम् सम्यग्ज्ञानगुरूपदेशविधिवदुदेवीं शिखान्तामपि ।। अष्टैकोत्तरसंख्यानुगत सौषुम्नादिमार्गत्रयी ध्याये नित्यसमस्तवेद जननीं देवीं त्रिसंध्यामयीम् ।। ६ ।। गायत्री सकलागमार्थफलदां सौरस्य बीजेश्वरी सर्वाग्नायसमस्तमंत्र जननीं सर्वज्ञधामेश्वरीम् ।। ब्रह्मादित्रयसंपुटार्थ करणो संसारपारायणीं संध्यां सर्वसमानतन्त्रपरमां ब्रह्मानुसंधायिनीम ।। ७ ।। एकद्वित्रिचतुः-समान-गणनावर्णाष्टक पादयोः पादादौ प्रणवादिमंत्र-पठनं मात्रात्रपीसपुटम् ।। संध्यायां द्विपदं पठेत्परतरं सायं तुरीयायुतं नित्यं नित्यमयनंतकोटिफलदं प्राप्तुं नमस्कुर्महे ।। ८ ।। ओजोऽसीति सहोऽस्यथो बलमसि भ्राजोऽसि तेजस्विनी वर्चस्वी सवितारिनसोममृतं रूपं परं धामहि ।। देवानां द्विजवर्यतां मुनिगणे मुक्त्यर्थितां शान्तितामोमित्येकमृच पठतियमियो यं यं स्मरेत्प्राप्नुयात् ।। ९ ।। ओमित्येकमज स्वरूपममल तत्सप्तधा भाजितं तारं तंत्रसमन्वितं परतरे पादत्रयं गर्भितम् ।। आपोज्योतिरसोमृतं जनमहः सत्यं तपः स्वर्भुवर्भूर्भूयः प्रणमामि भूर्भुवः स्वरोमेतैर्महामन्त्रकम् ।। १० ।। आदौ बिंदुमनुम्मरन्परतरे वाला त्रिवर्णोच्चरन्व्याहृत्यादसिबिंदुयु क्तत्रिपदातारत्रयं तुर्यकम् ।। आरोहादबरोहतः क्रमगता श्रीकुण्डलीसंस्थिता देवी मानसपंकजे त्रिनयना व नना पातुमाम्।। ११ ।। सर्वे सर्ववशे समस्तसमये सत्यात्मिके सात्विके सावित्रासवितात्मके शशियुते सांख्यायनीगोत्रजे ।। संध्यात्रीण्युपकल्प्य संग्रहविधो संध्याभिधानात्मके गायत्री प्रणवादिमन्त्रगुरुणा संप्रप्य तस्मै नमः ।। १२ ।। क्षेमं दिव्यमनोरथ परतरे चेतः समाधीयतां ज्ञानं नित्यवरण्यमेतदमलं देवस्य भर्गो धियः।। मोक्ष श्रीर्विजयार्थिनोऽथसवितुर्यच्छ्रेष्ठधीस्तत्पद प्रज्ञामेधप्रचोदयात्प्रतिदिनं यो नः पद पातु माम् ।। १३ ।। सत्यं तत्सवितुर्वरेण्य विमल बिश्वादिमायात्मक सर्वाद्यं प्रतिपादपादपादरमया तारं तथा मन्मथम् ।। तुर्यांतं त्रितयं द्वितीयमपरं संयोगसव्याहृति सर्वाम्नायमनोमयीं मनिसिजां ध्यायामि देवीं पराम् ।। १४ ।। आदौ गायत्रिमन्त्रे गुरुकृतनियम धर्मकर्मानुकूलं सर्वाद्य सारभूतं सकलमनुमयं देवतानामगम्यम् ।। देवानां पूर्वदेवं द्विजकुलमुनिभिः सिद्धविद्या धराद्यैः को वा वक्तुं समर्थस्तव मनुमहिमाबीजराजादि मूलम् ।। १५ ।। गायत्री त्रिपदा त्रिबीजसहिताम् त्रिव्या हृतिं त्रैपदां त्रिब्रह्मां त्रिगुणां त्रिकालनियमां वेदत्रयीतां पराम् ।। सांख्यादित्रयरूपिणीं त्रिनयत्रां मात्रात्रयी तत्परां त्रैलोक्यत्रिदशत्रि कोटिसंहितां संध्यात्रयी तां नमः ।। १६ । । ओमित्येतत्रिमात्रं त्रिभुवनकरणं त्रिस्वरं वह्निरूपं त्रीणि त्रिपादं त्रिगुणगुणमयं त्रैपुरांतं त्रिसूक्तम् ।। तत्त्वानां पूर्वशक्ति त्रितयगुरुपदं पीठयंत्रात्मकं तं तस्मादेतत त्रिपादं त्रिपद्मनुसरं त्राहि मा भो नमस्ते ।। १७।। स्वस्ति

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

श्रद्धातिमेधा मधुमतिमधुरः संशयः प्रज्ञकीर्तीर्विद्या बुद्धिर्बलं श्रीरतनुधनमतिः सोम्यवाक्यानुवृत्तिः ।। मेधा प्रज्ञा प्रतिष्ठा मृदुमधुरगिरा पूर्णविद्याप्रपूर्णं प्राप्तं प्रत्यूषचित्यं प्रणवपरवशात्प्राणिनां नित्यकर्म ।। १८ ।। पञ्चाशद्वर्णमध्ये प्रणवपरयुते मंत्रमाद्यं नमोतं सर्वं सव्यापसव्यं शतगुणममतो वर्गमष्टोत्तरं ते ।। एवं नित्यं प्रजप्तं त्रिभुवनसहितं तूर्य्ययुक्तं त्रिपादं ज्ञानं विज्ञानसुदृशं ध्याययेत्यः स मुक्तः ।। १९ ।। आदिक्षांतसर्बिदु युक्तसहितं मेरुं क्षकारात्मकं व्यस्ताव्यस्तसमस्तवर्ग सहितं पूर्णं शताष्टोत्तरम् ।। गायत्री जपतां त्रिकाल सहितं नित्यं सनैमित्तिकं चैवं जाप्यफलं शिवेन कथितं सद्भोग्यमोक्षप्रदम् ।। २० ।। सप्तव्याहृति-सप्ततारविकृतिः सत्यं वरेण्यं धृतिः सर्वं तत्सवितुश्च धीमहि महद देवस्य भर्गं भजे ।। धाम्नो धाम च भादिधारणमहाधीमत्पदं ध्यायते ॐ तत्सर्वमनुप्रपूर्ण दशक पादत्रयं केवलम् ।। २१ ।। विज्ञानं विलस द्विवेकवचसः प्रज्ञानुसंधारिणीं श्रद्धामेध्ययशः शिरः सुमनसः स्वस्तिश्रिय त्वां सदा । आयुष्यंधनधान्य लक्ष्मीमतुलां देवीकमटाक्षं परं तत्काले सकलार्थ साधनमदान्मुक्ति महत्त्वं पदम् ।। २२ ।। पृथ्वी गंधोऽर्च्चनायां नभसि कुसुमता वायुधूपप्रकर्षो वह्निर्दीप प्रकाशो जलममृतमय नित्यसंकल्पपूजा ।। एतत्सर्वं निवेद्यं सुखयति हृदये सर्वदा दंपतीनां त्वं सर्वज्ञे शिवं मे कुरु तव ममता भक्तवृन्दे प्रसिद्धा ।। २३ ।। सौम्य सौभाग्यहेतुं सकल सुखकरं सर्वसौख्यं समस्तं सत्यं सद्भोगनित्यं सुखजनसुहृदं सुन्दरं श्रीसमस्तम् ।। सौमंगल्यं समग्रं सकलशुभकरं स्वस्तिवाचं समस्तं संवेद्यं सद्विवेकं त्रिपदपदयुगं प्राप्तुमाद्यं समस्तम् ।। २४ ।। गायत्रीपदपंचपणवद्वं त्रिधा संपुटं सृष्टयादिक्रममंत्रजाप्यदशकं देवीपदं भूत्रयम् ।। मंत्रादिस्थितिकेषु संपुटमिदं श्रीमातृकावेष्टनं वर्णा त्यादिविलोममंत्रजपनं संहारसंमोहनम् ।। २५ ।। भूराद्यं भूर्भुवः स्वस्त्रिपदपदयुतं त्र्यक्षमाद्यं त्याज्यं स्टष्टिस्थित्यतकार्य्यं क्रमशिखिसकलं सर्वमंत्र प्रशस्तं ।। सर्वांगं मातृकाणां मनुमयवपुषं मन्त्रयोग प्रयुक्तम् संहारं क्षादिवर्ण वसुशतगणाश्नं मन्त्रराजं नमामि ।। २६ ।। विस्वामित्रकृतं परं हितकरं सर्वार्थसिद्धि-प्रदं स्तोत्राणां परम प्रभातसमये पारायणं नित्यशः ।। वेदानां विधिवादमन्त्रसफलं सिद्धिप्रदं सम्पदां स प्राप्नोत्यपरत सर्वसुखदं चायुष्यमारोग्यताम् ।।२७।। इति श्री विश्वामित्रकृतः श्रीगायत्री स्तवराजः समाप्तः ।

अथ स्तवनम्

यन्मंडलं दीप्तिकरं विशालम्,
रत्न प्रभम् तीव्र मनादि रूपम् ।
दारिद्रय दुःखक्षय कारणं च,
पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ।।

जिसका मण्डल प्रकाश देने वाला, विशाल रत्न प्रभा वाला, तेजस्वी तथा अनादि रूप है, जो दारिद्रय और दुःख को क्षय करने वाला है, वह उपासनीय सविता मुझे पवित्र करे ।

यन्मण्डलं देवगणैः सुपूजितम्,
विप्रैः स्तुतं मानवमुक्तिकोविदम् ।
तं देवदेवं प्रणमामि भर्गं,
पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ।।

जिसका मण्डल देवगणों द्वारा पूजित है, मानवों को मुक्ति देने वाला हैं । तथा विप्रगण जिसकी स्तुति करते हैं, उस देव सूर्य को प्रणाम करता हूँ । वह उपासनीय सविता मुझे पवित्र करे ।

यन्मण्डलं ज्ञान घनत्व गम्यं,
त्रैलोक्यपूज्यं त्रिगुणात्मरूपम् ।
समस्त तेजोमय दिव्यरूपं,
पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ।

जिसका मण्डल ज्ञान के घनत्व को जानता है, जो त्रय लोक द्वारा पूजित एवं प्रकृति स्वरूप है, तेज वाला एवं दिव्य रूप है । वह उपासनीय सविता मुझे पवित्र करे ।

यन्मण्डलं गूढ़यति प्रबोधम्,
धर्मस्य वृद्धिं कुरुते जनानाम् ।
तत् सर्वपापक्षयकारणं च,
पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ।।

जिसका मण्डल गुप्त योनियों का प्रबोध रूप है, जो जनता के धर्म की वृद्धि करता है, जो समस्त पापों के क्षय का कारणीभूत है वह उपासनीय सविता मुझे पवित्र करे ।

यन्मण्डलं व्याधिविनाशदक्षम्,
यदृग् यजुः सामसु सम्प्रगीतम् ।
प्रकाशितं ये न च भूर्भुवः स्वः,
पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जिसका मण्डल रोगों को नष्ट करने में दक्ष ह, जिसका वर्णन ऋक्, यजु और साम में हुआ है, जो पृथ्वी, अन्तरिक्ष तथा स्वर्ग तक प्रकाशित है वह उपासनीय सविता मुझे पवित्र करे ।

यन्मण्डलं वेदविदो वदन्ति,
गायन्ति यच्चारण सिद्धसंघाः ।
यद्योगिनो योगजुषां च संघाः ,
पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ।।

वेदज्ञ जिसके मण्डल का वर्णन करते हैं, जिसका गान चारण तथा सिद्धगण करते हैं, योगयुक्त योगी लोग जिसका ध्यान करते हैं वह उपासनीय सविता मुझे पवित्र करे ।

यन्मण्डलं सर्वजनेषु पूजितं ,
ज्योतिश्च कुर्यादिह मर्त्यलोके ।
यत्कालकालादिमनादि रूपम् ,
पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ।।

जिसके मण्डल का पूजन सब लोग करते हैं, मृत्युलोक में जो प्रकाश फैलाता है, जो काल का भी कालरूप है, अनादि है वह उपासनीय सूर्य मुझे पवित्र करे ।

यन्मण्डलं विष्णुचतुर्मुखास्यं ,
यदक्षरं पापहरं जनानाम् ।
यत्कालकल्पक्षय कारणं च ,
पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ।।

जिसका मण्डल विष्णु तथा ब्रह्मस्वरूप है, जो अक्षर है और जनों का पाप नष्ट करता है, जो काल को भी नष्ट करने में समर्थ है, वह उपासनीय सूर्य मुझे पवित्र करे ।

यन्मण्डलं विश्वसृजां प्रसिद्धम् ,
उत्पत्तिरक्षा प्रलय प्रगल्भम् ।
यस्मिन् जगत् संहरतेऽखिलं च ,
पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ।।

जिसके मण्डल द्वारा विश्व का सृजन हुआ है, जो उत्पत्ति, रक्षा तथा संहार करने में समर्थ है, जिसमें यह समस्त जगत् लीन हो जाता है, वह उपासनीय सविता मुझे पवित्र करे ।

यन्मण्डलं सर्वगतस्य विष्णोः ,
आत्मा परं धाम विशुद्ध तत्वम् ।
सूक्ष्मातिसूक्ष्म योगपथानुगम्यं ,
पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ।।

जिसका मण्डल सर्व व्यापक विष्णु का स्वरूप है, जो आत्मा का परम धाम है और जो विशुद्ध तत्व है, योग पथ से सूक्ष्म से सूक्ष्म भेद को भी जानता है, वह उपासनीय सविता मुझे पवित्र करे ।

यन्मण्डलं ब्रह्मविदो वदन्ति ,
गायन्ति यच्चारण सिद्धसंघाः ।
यन्मण्डलं वेदविदः स्मरन्ति,
पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ।।

जिसके मण्डल का वर्णन ब्रह्मज्ञ करते हैं, जिसका योगदान चारण और सिद्धगण करते हैं, जिसकी महिमा का वेदविद् स्मरण करते हैं, वह उपासनीय सविता मुझे पवित्र करे ।

यन्मंडलं वेदविदोपगीतम् ,
यद्योगिनां योग पथानुगम्यम् ।
तत्सर्व वेदं प्रणमामि सूर्यम् ,
पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ।।

जिसके मण्डल का वर्णन वेदविद् करते हैं, योग-पथ का अनुसरण करके योगी लोग जिसे मानते हैं, उस सूर्य को प्रणाम है, वह उपासनीय सविता हमको पवित्र करे ।

उपर्युक्त प्रार्थना में भगवान सविता की वन्दना है । सावित्री भी सविता की शक्ति है । गायत्री मन्त्र में भगवान का पुल्लिङ्ग शब्दों से अभिवन्दन किया है, माता की स्त्री लिङ्ग शब्दों में उपासना की जाती है । यह लिंग भेद कई व्यक्तियों को भ्रम में डालता है । वस्तुतः सविता और सावित्री, ईश्वर और ब्रह्म एक ही हैं । वह न स्त्री है न पुरुष, या वह दोनों ही हैं, स्त्री भी पुरूष भी । जब हम माता के रिश्ते में प्रभु की उपासना करते हैं तो वह गायत्री आराधना कहलाती है ।

अथ गायत्री अष्टकम्

सतोगुण प्रकाशक 'पुण्यस्तोत्र

सुकल्याणी वाणी सुरमुनिवरैः पूजितपदाम् ।
शिवामाद्यां वन्द्यां त्रिभुवनमयी वेदजननीम् ।।
परां शक्तिं स्रष्टुं विविध विध रूपा गुणमयीम् ।
भजेऽम्बां गायत्री परममृतमानन्दजननीम् ।। १ ।।
विशुद्धां सत्वस्थामखिल दुख दोषार्निहरणीम् ।
निराकारां सारां सुविमल तपो मूर्तिमतुलाम् ।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जगज्ज्येष्ठां श्रेष्ठासुरमसुरपूज्यां श्रुतिनुताम् ।
भजेऽम्बां गायत्री परमृतमानन्दजननीम् ।। २ ।।
तपोनिष्ठाभीष्टाम्बजनमन सन्ताप शमनीम् ।
दयामूर्तिं स्फूर्तिंयति तति प्रसादैक सुलभाम् ।।
वरेण्यां पुण्यां तां निखिल भव बन्धापहरणीम् ।
भजेऽम्बां गायत्रीं परममृतमानन्दजननीम् ।। ३ ।।
सदाराध्यां साध्यां सुमति मति विस्तार करणीम् ।
विशोकामालोका हृदयगत मोहान्ध हरणीम् ।।
परां दिव्यां भव्यामगम भव सिन्ध्वेक तरणीम् ।
भजेऽम्बां गायत्रीं परममृतमानन्दजननीम् ।। ४ ।।
अजां द्वैतां त्रैतां त्रिविध गुण रूपां सुविमलाम् ।
तमो हन्त्रीं तन्त्रीं श्रुति मधुरनादां रसमयीम् ।।
महामान्यां धन्यां सततकरुणाशील विभवाम् ।
भजेऽम्बां गायत्री परममृतमानंदजननीम् ।। ५ ।।
जगद्धात्रीं पात्रीं सकल भव संहार करणीम् ।
सुवीरां धीरां तां सुविमलतयो राशि सरणिम् ।।
अनेकामेकां वै त्रयजगदधिष्ठानपदवीम् ।
भजेऽम्बां गायत्रीं परममृतमानंदजननीम् ।। ६ ।।
प्रबुद्धां बुद्धां तां स्वजनयति जाड्यापहरणिम् ।
हिरण्यां गुण्यां तां सुकविजन गीता सुनिपुणीम् ।।
सुविद्यां निरवद्यामकथं गुण गाथां भगवतीम् ।
भजेऽम्बां गायत्रीं परममृतमानंदजननीम् ।। ७ ।।
अनन्तां शान्तां यां भजित बुध वृन्दः श्रुतिमयीम् ।
सुगेयां ध्येयां यां स्मरति हृदि नित्यं सुरपतिः ।।
सदा भक्त्या शक्त्या प्रणति यतिभिः प्रीतिवशगः ।
भजेऽम्बां गायत्रीं परम मृतमानन्दजननीम् ।। ८ ।।
शुद्ध चित्तः पठेद्यस्तु गायत्रीं अष्टकं शुभम् ।
अहो भाग्यो भवेल्लोके तस्य माता प्रसीदति ।। ९ ।।

गायत्री वाणी का कल्याण करने वाली है, सुर, मुनि द्वारा इसकी पूजा की जाती है । इसे शिवा कहते हैं यह आद्या है, त्रिभुवन में वन्दनीय है, वेद जननी है । पराशक्ति है, गुणमयी है तथा विविध-रूपधारण करके प्रादुर्भूत होती है । इस माता गायत्री का जो अमृत और आनन्द का सृजन करती है, हम भजन करते हैं । १ ।

गायत्री विशुद्धतत्ववाली, सप्तमयी तथा समस्त दुःख दोष एवं आर्त हरने वाली है, वह निराकार है, सार भूत है, और अतुल तप की मूर्ति एवं विमल है । वह संसार में सबसे महान है, ज्येष्ठ है । देवता तथा असुरों से पूजित है । उस परम अमृत एवं आनन्द की जननी माता गायत्री का हम भजन करते हैं । २ ।

गायत्री का तपोनिष्ठ रहना ही अभीष्ट है । वह स्वजनों के मानसिक सन्तापों को शमन करने वाली है । वह स्फूर्तिमयी है, दयामूर्ति है और उसकी प्रसन्नता प्राप्त कर लेना अत्यन्त सुलभ है, वह संसार के समस्त बन्धनों को हरण करने वाली है, एवं वरण योग्य है, उस परम अमृत एवं आनन्द की जननी माता गायत्री का हम भजन करते हैं । ३ ।

गायत्री निरन्तर आराधना करने योग्य है, और उसकी आराधना करना अत्यन्त साध्य है । वह सुमति का विस्तार करने वाली है । वे प्रकाशमय है, और शोक रहित है और हृदय में रहने वाले मोहान्धकार को दूर करने वाली है, वह परा है, दिव्य है अगम संसार सागर को तरने के लिए नौका के समान है, उस परम अमृत एवं आनन्द की जननी माता गायत्री का हम भजन करते हैं । ४ ।

गायत्री अजन्मा है, द्वैता तथा त्रैता है, त्रिगुण एवं सुविमल रूप मयी है । तम को दूर करती है । विश्व की संचालिका है । वाणी सुनने में मधुर एवं रसमयी है । वह महामाया है, धन्य है, और उसका वैभव निरन्तर करुणाशील है । उस परम अमृत एवं आनन्द की जननी माता गायत्री का हम भजन करते हैं । ५ ।

गायत्री संसार की माता है और सकल संसार को संहार करने की भी उसके शक्ति है । वह वीर है, धीर है, और उसके जीवन पवित्र तपोमय है । वह एक होते हुए भी अनेक हैं, उसकी पदवी संसार की अधिष्ठान मयी है । उस परम अमृत एवं आनन्द की जननी माता गायत्री का हम भजन करते हैं । ६ ।

गायत्री प्रबुद्ध है, बोधमयी है, स्वजनों की जड़ता को नाश करने वाली है, हिरण्यमयी है, गुणमयी है जिनकी निपुणता सुकवि जनों द्वारा गायी जाने वाली है, निरवयव उनके गुणों की गाथा अकथनीय है, वे भगवती अम्बा गायत्री उस परम अमृत एवं आनन्द की जननी है, मैं उसका भजन करता हूँ । ७ ।

गायत्री अनन्त हैं, शान्त है, इसका भजन करके पंडित लोग वेदमय हो जाते हैं । इसका गान-ध्यान तथा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

स्मरण इन्द्र नित्यप्रति हृदय से करता है । सदा भक्ति पूर्वक शक्ति के साथ आत्म निवेदन पूर्वक प्रेम युक्त आनन्द एवं अमृत की जननी माता गायत्री की मैं उपासना करता हूँ । ८ ।

इस शुभ गायत्री अष्टक को जो लोग शुद्ध चित्त होकर पढ़ते हैं, वे संसार में भाग्यवान हो जाते हैं और माता की उन पर पूर्ण कृपा रहती है । ९ ।

स्वामी आनन्दमुनि रचित गायत्री अष्टक समाप्त ।

आत्म तेज संवर्धन'ब्राह्मी स्तोत्र'

इस स्तोत्र के पाठ करने से ब्रह्म-विद्या के गूढ़ तत्वों की ओर मनुष्य का मन लगता है । ईश्वर, जीव और प्रकृति के गूढ़ रहस्य स्वयमेव सूझते हैं । अध्यात्म मार्ग में रुचि और प्रवृत्ति बढ़ती है, फल-स्वरूप मनुष्य आत्मदर्शन, ईश्वर, साक्षात्कार, परमपद एवं ब्रह्मानन्द की दिशा में अग्रसर होता जाता है ।

त्वमेका विश्वस्मिन् रमणं मनसा द्वैतमकरो-
स्ततस्तत् त्वं जज्ञे, महद्धिमहङ्कारसहितम् ।
मनस्तेनारब्धं सकलमपि दृग् दृश्यमसृज-
तद्वेवं लोकेस्मिन् किमपि, न विलोकेत्वदितरम् ।।

हे देवि ! तुमने ही इस विश्व में रमणेच्छा से द्वैत को उत्पन्न किया । फिर अहंकारादि सहित महतत्व की उत्पत्ति हुई, पुनः मन बना । ऐसे ही सम्पूर्ण दृश्य जगत् की रचना हुई । इसलिये मैं इस संसार में तुम्हारे अतिरिक्त कुछ भी नहीं देखता हूँ । संसार रूप में तुम्हारा ही अब तो ध्यान करता हूँ । तुम संसार मय हो और संसार तुम से भिन्न कोई वस्तु नहीं हैं ।

सूक्ष्मातिसूक्ष्मरूपे च प्राणापानादिरूपिणी ।
भावाभाव स्वरूपे च जगद्धात्रि नमोस्तुते ।। १ ।।

हे जगत् धात्रि देवि ! तुम सूक्ष्मातिसूक्ष्म प्राण, अपान, अभाव और भाव स्वरूप हो । हे देवि ! तुम्हें नमस्कार है ।

कालादि रूपे कालेशे कालाकालविभेदिनी ।
सर्वस्वरूपे सर्वज्ञे जगद्धात्र नमोस्तुते ।। २ ।।

हे कालादि स्वरूपे ! हे काल स्वामिनी ! हे काल और अकाल का भेदन करने वाली देवि ! तुम सर्व मय हो, सर्वज्ञ हो । अतः हे जगद्धात्रि देवि ! तुम्हें हम नमस्कार करते हैं ।

अगम्ये जगतामाद्ये, माहेश्वरी वराङ्गने ।
अशेषरूप रूपस्थे जगद्धात्रि ! नमोस्तुते ।

हे जगद्धात्रि ! तुम अगम्य और आदिशक्ति हो । तुम वरदा माहेश्वरी हो । सम्पूर्ण विश्वमय होकर उसमें व्याप रही हो । इसलिये हम तुम्हें नमस्कार करते हैं ।

न तस्य कार्यं करणं च विद्यन्ते ।
न तत्समश्चा भ्यधिकश्च दृश्यते ।।
परास्य शक्ति विविधैव श्रूयते ।
स्वाभाविकी ज्ञान बल क्रिया च ।।

उसका न कोई कार्य और न कोई करण है । न कोई उसके सदृश है और न उससे अधिक । उसकी शक्ति सर्वतोपरि विविध प्रकार की है । ज्ञान, बल और क्रिया उसमें स्वाभाविक हैं ।

चित्स्यन्दोऽन्तर्जगद्धते कल्पनेवपुरं हृदि ।
सैव वा जगदित्येव कल्पनैव यथा पुरम् ।।
पवनस्य यथा रुपन्दस्तथैवेच्छा शिवस्य सा ।
यथास्पन्दोऽनिलस्यान्तः प्रशान्तेच्छस्तथाशिवः ।।
अमूर्तो मूर्तमाकाशे शब्दाडम्बरमानिलः ।
यथा स्पन्दनोतनोत्येव शिवेच्छा कुरुतेजगत् ।।

वह स्पन्दन शक्ति उसी प्रकार जगत् को अपने में लय कर लेती है जैसे कल्पना, अपने कल्पना नगर को । अथवा कल्पना ही नगर है और शक्ति भी जगत् से भिन्न वस्तु नहीं है ।

जिस तरह पवन में स्पन्दन है वैसे ही शिव की इच्छा है और जैसे स्पन्दन के भीतर शान्ति निहित है वैसे ही शिवेच्छा में शिव है ।

यह शिवेच्छा ठीक उसी प्रकार जगत को उत्पन्न करती हैं जैसे निराकार व्योम मण्डल में अमूर्त शब्दाडम्बर को वायु प्रकट करता है ।

भ्रमयति प्रकृतिस्तात्संसारे भ्रमरूपिणी ।
यावन्न पश्यति शिवं नित्यतृप्तमनामयम् ।।
संविन्मात्रैक धमित्वात्काकतालीय योगतः ।
संविद्देव शिवं स्पृष्ट्वा तन्मय्येव भवत्यलम् ।।
प्रकृतिः पुरुषं स्पृष्ट् प्रकृतित्वं समुज्झति ।
तदन्तरत्वेकतां गत्वा नदीरूपमिवार्णवे ।।

प्रभु को चैतन शक्ति प्रकृति जो संभ्रमण शील है वह उस समय तक संसार में भ्रमण करती रहती है जब तक नित्य, तृप्त और अनामय शिव का दर्शन न हो जाय ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

स्वयं तद्रूप होने के कारण अचानक शिव दर्शन होने पर तुरन्त तन्मय हो जाती है ।

वह प्रकृति पूर्ण पुरुष को स्पर्श करके इस प्रकार प्रकृतित्व को छोड़ देती है जैसे समुद्र में मिलकर नदी अपने नदी भाव को छोड़ देती है ।

न धूमैर्नोदीपैर्न च मधुर नैवेद्य निवहै-
न पुष्पैर्नो गन्धैर्न च विविध बन्धैः स्तुति पदैः ।।
समस्त त्रैलोक्य प्रसरण लसद् भूरि विभवे ।
सपर्या पर्याप्ता तव भवति भावोप चरणैः ।।

हे समस्त संसार के प्रसार करने वाली देवि ! तुम्हारी पूजा, धूप, दीप, मधुर, नैवेद्य, पुष्प, गन्ध, और विविध प्रकार के सुन्दर सुशोभित स्तुति पदों से कभी पूर्ण नहीं हो सकती । उसके लिए तो केवल भाव पुष्प ही अभिलषित हैं । जो अपनी भावना के पुष्प अर्पण करने में असमर्थ है वह और किसी भी पूजा सामग्री से तुम्हारी आराधना पूर्णरूपेण नहीं कर सकता । वह सपर्याभाव-पुष्पों के बिना अपूर्ण ही है और अपूर्ण ही रहेगी ।

अनिष्ट निवारक 'शक्ति स्तोत्र'

श्री द्विज श्यामकृत-यह स्तोत्र भगवती के प्रति श्रद्धा और भक्ति उत्पन्न करने वाला है जिनका मन गायत्री साधना में न लगता हो वे कुछ दिनों श्रद्धा पूर्वक इस स्तोत्र का पाठ करें । इससे श्रद्धा और विश्वास की भक्ति भावना दिन-दिन बढ़ती है और साधक के सब प्रकार के बलों में वृद्धि होती है और अनिष्टों का निवारण होता है ।

ओंकार रूपा त्रिपदा त्रयी च
त्रिदेववन्द्या त्रिदिवाधिदेवी ।
त्रिलोकर्त्री त्रितयस्य भर्तृ ।
त्रैकालिकी संकलनाविधात्री ।।१।।

वह देवी आदि शक्ति ॐकार स्वरूप, त्रिपद् विभूषित और त्रयी विद्यारूप है । तीन (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) देवों से पूजित तथा देवाधिदेवी, त्रिलोक कर्त्री, तीनों कालों में एक रस रहने वाली और परमाणुओं का संकलन कर जग को रचने वाली है ।। १ ।।

त्रैगुण्य भेदात् त्रिविधस्वरूपा ,
त्रैविध्युक्तस्यफलस्य दात्री ।
तथापवर्गस्य विधायिनी त्वं,
दयार्द्रदृक्कोण विलोकनेन ।। २ ।।

त्रिगुण भेद से तुम विविध स्वरूप हो और वेदोक्त तीनों फलों के देने वाली हो । केवल दया दृष्टि से देखने से ही तुम अपवर्ग की देने वाली हो ।। २ ।।

त्वं वाङ्मयी शिवाश्ववदान्य मूर्ति-
विश्वस्वरूपाऽपि हि विश्वगर्भा ।
तत्वात्मिका तत्व परात्परा च ,
दृग्तारिका तारक शङ्करस्य ।। ३ ।।

हे देवि ! तुम शास्त्रमयी और विश्व की श्रेष्ठ मूर्ति हो । तुम विश्वस्वरूपा होकर भी विश्व-गर्भा हो । तुम तत्वों से युक्त होकर भी तत्वों से परे हो । तुम उद्धार कर्ता शंकर भगवान् की दृग्तारिका हो ।। ३ ।।

भूतं च भव्यं सकलं यदेतत् ।
त्वत्तः परं कुत्र न किंचिदस्ति ।
आद्या मनाद्या मन वद्यवन्द्य
पश्यन्ति विज्ञाः प्रवदन्ति च त्वाम् ।। ४ ।।

भूत और भविष्य जो भी कुछ है तुमसे पृथक कुछ कहीं भी नहीं । आदि और अनादि रूप तथा श्रेष्ठजनों से वन्दनीय तुमको विद्वान लोग भली भाँति देखते हैं, और तुम्हारा वर्णन करते हैं ।। ४ ।।

विश्वात्मिके विश्वविलासभूते-
विश्वाश्रये विश्वविकाशधामे ।
विभूत्यधिष्टात्र विभूतिदात्रि-
पदेत्वदीपे प्रणतिर्गदीया ।। ५ ।।

हे देवि ! विश्वात्मके ! तुम विश्व का मनोरंजन करने वाली हो । विश्वाश्रय और विश्व के विकास की कारण हो । सम्पत्ति और ऐश्वर्य की अधिष्ठात्री एवं विभूतियों को देने वाली हो । हे देवि ! तुम्हारे चरणों में मेरा नमस्कार है ।। ५ ।।

त्वं नित्यसर्गस्य विसर्ग भूता
दैनन्दिनस्यापि च प्राकृतस्य ।
विश्वस्य योनिर्हि मता तथापि ,
समुद्रहैमाद्रिविरंचि जाता ।। ६ ।।

हे देवि ! तुम नित्य सृष्टि की रचना करने वाली हो और प्राकृत दिनचर्या की भी निर्माणिका हो । हे माता ! यद्यपि तुम जगतजननी हो तो भी तुम समुद्र, हिमालय और ब्रह्मा की पुत्री करके मानी जाती हो ।। ६ ।।

भोगस्य भोक्त्री करणस्य कर्त्री ।
धात्वव्ययप्रत्ययलिंग शून्या ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सेया न वेदैर्न पुराण भेदै-
धर्येया धिया धारणयादिशक्तिः ।।

तुम ही भोग भोक्त्री तथा धनों को उत्पन्न करने वाली हो । धातु, अव्यय, प्रत्यय और लिंग से शून्य हो । विविध पुराण भेद तथा वेदों से भी नहीं जानी जाती हो । तुम्हें केवल बुद्धि से ही ध्यान कर सकते हैं ।।७ ।।

किंचिद्य देतत्तवमूर्ति रेषा
तथाप्य दृश्या खिलसाधनैश्च ।
सान्ता निरन्ता सदसत्स्वरूपा
स्फुटास्फुटस्फोट विकाशरूपा ।।८ ।।

यद्यपि तुम्हारी कुछ दृश्य मूर्तियाँ बनाई गई हैं परन्तु वस्तुतः सम्पूर्ण साधनों से तुम अदृश्य ही हो । तुम सान्त और निरन्त, असत् और अस्फुट तथा स्फुट स्वरूप हो और विकाश और प्रलय स्वरूपा हो ।।८ ।।

नित्यंसदा सर्वगताप्यलक्ष्या ।
विष्णोर्विधेः शंकरतोप्यभिन्ना ।
शक्तिस्वरूपा जगतोऽस्य शक्ति-
र्ज्ञातुं न शक्या करणादिभिस्त्वम् ।।९ ।।

तुम नित्य, सर्वगत् होकर भी अदृश्य हो । विष्णु ब्रह्मा और महेश से तुम भिन्न नहीं हो । तुम शक्ति स्वरूप हो और इस जगत की शक्ति हो । किसी करण (चिह्न) विशेष से तुम्हारा ज्ञान नहीं हो सकता ।।९ ।।

त्यक्तस्त्वयात्यन्त निरस्तबुद्धि-
र्नरो भवेद् वैभवभाग्यहीनः ।
हिमालया दप्यधिकोन्नतोऽपि ।
जनैस्समस्तैरपि लंघनीयः ।।१० ।।

हे देवि ! जिस मनुष्य का हाथ तू छोड़ देती है । वह निर्बुद्ध, वैभव हीन होकर भाग्य से भी हीन हो जाता है । यद्यपि वह हिमालय से भी ऊँचा हो तो भी उसे साधारण जन भी उसका लंघन कर जाते हैं । अर्थात् जन साधारण भी उसकी निन्दा करते हैं ।।१० ।।

शिवे हरौ ब्रह्मणि भानुचन्द्रयो-
श्चराचरे गोचरकेऽप्यगोचरे ।
सूक्ष्मातिसूक्ष्मे महतो महत्तमे
कला त्वदीया विमला विराजते ।।११ ।।

हे देवि ! तुम्हारी विमल कला का प्रकाश शिव, विष्णु, ब्रह्मा, भानु, चन्द्रमा, चर, अचर, गोचर, और अगोचर, सूक्ष्मातिसूक्ष्म महान् से भी महान् में सारांशतः सभी में हो रहा है । सभी में तुम्हारी ज्योति का प्रकाश है ।।११ ।।

सुधामरन्द तवं पाद द्मम्
स्वे मानसे धारणया निधाय ।
बुद्धिमिलिन्दी भवतान्मदीया
नातः परं देवि ? वरं समीहे ।।१२ ।।

हे देवि ! सुधा समान रस पूर्ण तुम्हारे चरण कमलों को निज मानस में धारणा पूर्वक धारण करके मेरी जो बुद्धि है वह उसकी भ्रमरी बन जाये । इसके अतिरिक्त मुझे अन्य किसी वर की चाह नहीं है ।

बुद्धि वर्द्धक सरस्वती स्तोत्र

सरस्वती अष्टक के आठ मंत्र नीचे दिये जाते हैं । इनका श्रद्धापूर्वक पाठ करने से विद्या की वृद्धि होती है, स्मरण शक्ति बढ़ती है । विद्यार्थियों के लिए, परीक्षा में अनुत्तीर्ण होने का भय, विवाद का व्यवसाय करने वाले शास्त्रार्थियों एवं वकीलों के लिए प्रतिपक्षी से परास्त होने का भय मिटता है । बुद्धि की निर्बलता के कारण जिन अनिष्टों के आने की आशंका रहती है वे सब अनिष्ट इस अष्टक के पाठ करने से दूर होते हैं । बुद्धि बढ़ने से इस प्रकार के भयों का अस्तित्व स्वयमेव मिट जाता है ।

नाम रूपात्मकं सर्वं यस्यमावेश्य तां पुनः ।
ध्यावन्ति ब्रह्मरूपैका सां मां पातु सरस्वती ।।

समान नाम और रूपों का जिसमें समावेश करके मुनिजन जिस देवी का ध्यान करते हैं वह ब्रह्म रूपी सरस्वती हमारी रक्षा करे ।

या सांगोपांग वेदेषु चतुर्ष्वेकैव गीयते ।
अद्वैता ब्रह्मण शक्तिः सा मां पातु सरस्वती ।।

जो सांगोपांग चारों वेदों में गायन की गई है । ऐसी ब्रह्मदेव की अनन्त शक्ति सरस्वती हमारी रक्षा करे ।

हीं आनोदिवो वृहतः पर्वतादा ।
सरस्वती यजता गन्तु यज्ञम् ।।
हवं देविजुजुषाणा घृताची ।
शन्मांनो वाच सुशति श्रृणोतु ।।

अर्थात् वह सरस्वती हमारे यज्ञ की सिध्यर्थ यज्ञ में आसन ग्रहण करें । तथा हमारे हव्य और प्रार्थनाओं को स्वीकार करें और सुने ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

या वर्ण पद वाक्यार्थ स्वरूपेणैव वर्त्तते ।
अनादि निधनानन्ता सा मां पातु सरस्वती ।।

जो सरस्वती सर्वदा वर्ण, पद, वाक्य और अर्थ रूप है । अनादि, आद्य और अनन्त है, यह देवी सरस्वती मेरी रक्षा करे ।

पावका नः सरस्वतीवाजेभिर्वाजिनीवती ।
यज्ञं वष्टु धिया वसु ।।

पावका-पवित्र करने वाली एवं समर्था सशक्ति संमन्ना सरस्वती देवी, हमारी यज्ञ की कामना करे किस अभिप्राय से कामना करे ? अन्न के लिए जिससे हमें अधिक अन्न या धन प्राप्त हो क्योंकि सरस्वती देवी अन्नयज्ञ की अधिष्ठात्री देवी है । बुद्धि के द्वारा ही धन प्राप्त किया जाता है

या प्रत्यगदृष्टिभिर्जी वैर्व्यज्यमानानुभूयते ।
व्यापिनी ज्ञप्ति रूपैका सा मां पातु सरस्वती ।।

एक सरस्वती सर्वत्र व्यापिनी और ज्ञानस्वरूपा है परन्तु जब जीवात्मा बहिर्मुख अवस्था को छोड़ कर अन्तर्मुखी होती है तभी उसके हृदय में सरस्वती देवी का भान होता है । ऐसी सरस्वती देवी मेरी रक्षा करे ।

व्यक्ताव्यक्तगिरः सर्वे वेदाद्या व्याहरन्ति याम् ।
सर्वकामदुधाः धेनुः सा मां पातु सरस्वती ।।

व्यक्त और अव्यक्त शब्दात्मक वाक्य तथा वेदादिशास्त्र जिस सरस्वती देवी के विस्तृत रूप का वर्णन करते हैं तथा जो सभी कामनाओं को पूर्ण करने वाली धेनु रूपा सरस्वती है । वह हमारी रक्षा करे ।

यां विदित्वाखिलं बन्धं निर्मथ्या रिवलवर्त्मना ।
योगी याति परं स्थानं सा मां पातु सरस्वती ।।

जिसको ज्ञात करके सम्पूर्ण बन्धनों को तोड़ कर योगी विश्वव्यापी होकर परम पद को प्राप्त होता है । ऐसी सरस्वती देवी हमारा पालन करे ।

अध्यात्ममधिदैवं च देवानां सम्यगीश्वरी ।
प्रत्यगास्ते वदन्ती या सा मां पातु सरस्वती ।।

जो देवों की आदि देवि और आध्यात्मिक शक्ति है और जो नित्य ही शक्तियों को प्रेरणा देती है, वह सरस्वती हमारी रक्षा करे ।

समृद्धि दातां 'सौभाग्य स्तोत्र'

दुःख, दारिद्रय और कष्टों के विनाश तथा सुख समृद्धियों की वृद्धि के लिए इस सौभाग्य स्तोत्र का पाठ करना चाहिए ।

त्वदन्यः पाणिभ्यामभयवरदो दैवतगण ।
स्त्वमेका नैवासि प्रकटितवरा भीत्यभिनया ।
भयात्त्रातुं दातुं फलमपि च वांछा समधिकम् ।
शरण्ये लोकानाम् तव हि चरणावेव निपुणौ ।। १।।

हे शरणागत रक्षिके ! तुम्हारे अतिरिक्त अन्य देवगण केवल हाथों से ही अभय देने वाले हैं । तुम वरदा आदि मुद्राओं का अभिनय नहीं करती किन्तु भक्तों को दुखों से मुक्त करने तथा चाहना से अधिक फल देने वाले आपके चरण ही भक्तों के सम्पूर्ण मनोरथों के पूरक हैं

कृपापांगालोकं वितर तासां साधुचरिते ।
न ते युक्तो पेक्षा मपि शरणदीक्षामुपगते ।
न चेदिष्टं दद्यादनुपदमहो कल्पलतिका
विशेषः सामान्यैः कथमितरवल्लीपरिकरैः ।।२।।

हे भगवति ! मुझ शरणागत पर शीघ्र ही कृपा दृष्टि कीजिए । मैं असाधुचरित्र होते हुए भी शरणागत के प्रति तुम्हारी उपेक्षा वृत्ति उचित नहीं है । क्योंकि कल्पलता के नीचे पहुँच कर भी यदि इष्ट लाभ नहीं होता तो कल्पलता और अन्य सामान्य लताओं में भेद ही क्या रहा ?

अयःस्पर्शे लग्नं सपदि लभते हेम पदवीं ।
यथा रथ्यापाथः शुचि भवति गङ्गौघमिलितम् ।
तथा तत्तत्पापैरति मलिनमन्तर्मम यदि ।
त्वयि प्रेरणासक्तं कथमिव न जायेत विमलम् ।।३।।

जब पारस के स्पर्श मात्र से ही लोहा सुवर्ण हो जाता है और गन्दे रास्ते का पानी निर्मल सुर गंगा में मिलते ही गंगा जल बन जाता है तो पापों से दूषित हुआ मेरा मन प्रेम से तेरी भक्ति करके पवित्र क्यों न होगा, अवश्य होगा ।

त्वदन्यस्मादिच्छा विषय फललाभे न नियम ।
स्त्वमज्ञानामिच्छाधिकमपि समर्था वितरणे ।
इति प्राहुः प्राञ्चः कमल भवनाद्यास्त्वयि मन-
स्त्वदाक्सन्तंक्तन्दिवमु चितमशि कुरुतत् ।। ४।।

अन्य देवताओं से इष्ट फल की प्राप्ति हो ही जायेगी यह भी कोई आवश्यक या निश्चित नहीं है । परन्तु तुम अपने की आकांक्षा से भी अधिक देने में समर्थ हो । पूर्ववर्ति ब्रह्मा आदि का कथन है कि अन्य देवगण तथा तुम में यही एक भेद है । इसी से मेरा मन तुममें आसक्त है । हे देवि ! अब तुम जो उचित समझो सो करो ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

नित्यं विश्वं वशयति हरि र्निगुहानुग्रहाभ्या-
माद्येशक्तिं विघटयति ते हन्त कारुण्यपूरः ।।

भगवान् विष्णु अपने निग्रह और अनुकम्पा से समस्त विश्व को अपने आधीन रखते हैं । परन्तु हे लक्ष्मी महारानी तुम्हारा करुणा का आवेग उस भगवान विष्णु के निग्रह के वेग को भी रोक देता है । अर्थात् हमारी दया के समक्ष भगवान् की निग्रह शान्ति विफल सी हो जाती है । जिस को तुम दया की दृष्टि से देखती हो भगवान् उसको दण्ड नहीं दे सकते ।

दरिद्रं दुःशीलं दुरिधगमनं दुःखदलितम् ।
दुराचारं दूरे पतितममरै र्दुर्भरतरम् ।।
जनैर्मुक्तं भुक्तिप्रमुखसुखसम्पत्त समुदयाः ।
पुमान्सं सेवेरन् भगवति ! भवद्दृष्टिभरितम् ।।

दरिद्र दुःशील, दुःख दलित, दुराचारी और दूर पर पड़ा हुआ जिस की देव लोक भी पालन करने में असमर्थ हैं, जिसको कुटुम्बीजन ठुकरा चुके हैं ऐसे मनुष्य को भी हे देवि भगवति ! तुम्हारी कृपा होने पर मुक्ति आदि संपूर्ण सुख सम्पत्तियाँ आकर दासी की भाँति रात दिन सेवा करती है । अर्थात् तुम्हारी कृपा के प्रभाव से घोर निन्दनीय और परित्यक्त जन भी आदरणीय और सर्व प्रिय बन सकता है ।

गायत्री-स्तुति

उपासना में भाव तन्मयता का असाधारण महत्व है । उपासना के विभिन्न कृत्यों में श्रद्धा आरोपित करने का प्रमुख लक्ष्य ही है । अन्तः की भाव संवेदनाओं का उभरना अपने इष्ट के प्रति जितनी अधिक सघनता, आत्मीयता भाव की विह्वलता होगी निकटता का उतना ही अधिक लाभ मिलेगा । कीर्तन, प्रार्थना स्तवन स्तुति इसी प्रयोजन की पूर्ति करते हैं । भावों में भगवान के विद्यमान होने की उक्ति अकारण नहीं है । इष्ट से मिलने-एकाकार होने, दर्शन करने की व्याकुलता, आतुरता साधक को निकट पहुँचा देती है । दैनिक जीवन क्रम में उसका उदाहरण देखा जा सकता है । बच्चा समर्पित भाव से व्याकुल स्वर में माँ को पुकारता है । वह सभी कार्यों को छोड़कर बच्चे के पास दौड़ी चली आती है । उसे पुचकारती, दूध पिलाती तथा अपने स्नेह से सिक्त करती है ।

गायत्री विश्व की जननी है । उसे विश्व माता कहा गया है । माँ के दिव्य अनुदान को प्राप्त करने में साधक की भाव विह्वलता का महत्व असाधारण है । उपासना के साथ स्तुति का विधान है । स्तुति के माध्यम से माँ के दिव्य रूप एवं गुणों का गान किया जाता है । अन्तः की यह विह्वलता जितनी अधिक होगी साधक को अदृश्य रूप में माँ की निकटता की अनुभूति दैवीय प्रेरणाओं के रूप में होगी । देवी भागवत में अनेकों स्थान पर आद्यशक्ति की स्तुति की गई है । कुछ उदाहरण निम्न हैं-

आराध्य परमा शक्ति सर्वैरपि सुरासुरै :।
मातु परतरं किञ्चित्त्राधिक भवनत्रये ।।

हे परम शक्ति स्वरूपा देवि ! तुम देवताओं व राक्षसों सभी द्वारा पूजनीय हो । हे माँ । तीनों लोकों में तुमसे अधिक श्रेष्ठ कोई नहीं है ।

या देवी सर्वभूतेषु शक्ति रूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ।।

जो देवी सभी प्राणियों में शक्ति रूप में विद्यमान है । उस देवी को बारम्बार नमस्कार है ।

विद्या समस्तास्तव देविभेदा ।
स्त्रियःवसमस्ताः सकला जगत्सु ।
त्पयैकया पूरतयम्ब यंतत
का ते स्तुतिः स्तना परापरोक्ति ।।

हे देवि ! समस्त देवियाँ और संसार की समस्त स्त्रियाँ तुम्हारे ही भेद हैं । हे माँ तुम्हारे द्वारा ही यह सम्पूर्ण जगत परिव्याप्त है अर्थात् तुम्हीं सर्वत्र विद्यमान हो । हम किन शब्दों में तुम्हारी स्तुति कर सकते हैं । अर्थात् स्तुति करने के लिए हमारे पास शब्द नहीं हैं ।

न बालान च तत्त्व वयस्या न वृद्धा
न च स्त्री न षण्ढः पुमान्नं व चत्वम् ।
सुरो नासुरो नो नरो वा न नारी
त्वयेका परब्रह्म रूपेन सिद्धा ।

हे देवि ! तुम न तो लड़की हो प्रौढ़ हो । न वृद्धा हो न स्त्री । न वन्ध्या हो न पुरुषरूपा । न देव हो न राक्षस, न नर हो और न नारी । तुम सिद्धि प्रदान करने वाली एक मात्र पर 'ब्रह्मस्वरूप हो ।

शत्र तो न भय तस्य दस्युतो वा राजतः ।
न शस्त्राबलतो यौधात्कदाचिसनभ्यविण्यते ।।

न शत्रु से भय रहता है न चोर से, न राजा से न शस्त्रों से और न ही अग्नि से । किसी से संघर्ष की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सम्भावना नहीं रहती । सभी से स्नेह एवं सद्व्यवहार बना रहता है ।

वेदमाता की बाल सुलभ भावना से स्तुति अभ्यर्थना करने वाले को माँ की निकटता-दिव्यता के रूप में अनुभव होती है । आद्य शक्ति अपनी दिव्य प्रेरणाओं के रूप में साधक के भाव क्रन्दन को सुनकर अवतरित होती है । उपासना के साथ भाव तन्मयता के लिए प्रत्येक गायत्री उपासक को स्तुति का भी अवलम्बन लेना चाहिए ।

गायत्री स्तुति इस प्रकार है-

नमस्तेस्तु मातस्समस्तेश्वरेशे,
स्वमस्ते सुमस्तोमवत्तेऽङ्घ्रिमूहे ।
श्रमस्तान्न भेत्वज्जपारौ कृपालो,
भ्रमोपि प्रमा स्यात् प्रमेय दृशाते ।। १ ।।

"समस्त ईश्वरों की अधीश्वरी हे माता, तुम्हें प्रणाम । मेरे मस्तक पर मैंने आपके पादारविन्द पुष्प के समान धारण किये हैं । हे दयालु, तेरे जपादि स्मरण करते समय मुझे श्रम न जान पड़ना चाहिये । तेरे कृपा कटाक्ष द्वारा मुझसे हुए भूल भी सत्य हो ।"

श्रुत्यन्तसंचारि विनोदकारि विसारि धीरे क्षणसद्विलासैः । श्रुत्यम्ब लीला न्तनुपे त्वमेका अमोघ मन्त्रा सकल स्वतन्त्रा ।। २ ।।

"हे वेदमाता ! तू वेदान्त में संचार करने वाली विनोदकारी, व्यापनशील, गंभीर दृष्टि विलासों से, अमोघ मन्त्रों से युक्त, सकल स्वातंत्र्य शालिनी आप अकेली ही लालाएँ कर रही हैं ।"

यदि भयमभविष्यदत्र मातः सपदिशिवेट शमयिष्य एवतन्मे ।
सुमहस्त्रि हृदि मेत्वयि प्रदीप्ते मभवति किन्नु तम स्समीप मेतुम् ।। ३ ।।

"हे माता यहाँ मुझे भय यदि सताता हो तो हे मंगलकारिणी तू उससे अवश्य ही हर सकती है । आप मेरे हृदय में रत्नदीप सम जगमगा रही हो फिर अंधकार को सम्मुख आने का क्या साहस होगा ?"

यावत्पश्चिमदिग्वधूः स्ववदने शोणं रवे मण्डिलम् ।
धत्तेचारु विशेषकं व विपुलं काश्मीरजं वर्तुयम् ।।
तावत्तेऽम्ब ददेऽर्घ्यं मञ्जलि भृतः स्वच्छेर्मनोहाभिः
स्वर्णाऽम्भोज मरन्द सौ युते स्त्रित्स्वर्धुनीकारिभिः ।। ४ ।।

"जब तक पश्चिम दिशा सुन्दरी रक्तवर्ण सूर्य विंब को अपने भाल पर सुन्दर, वर्तुलाकार गोल और विशाल कुंकुम तिलक धारण करती है तब हे माता अंजलि में भरे हुए स्वर्ग मया के सम्बन्धि निर्मल मनोहर, स्वर्ण पद्म के मकरंद से सुगंध से युक्त नीर में तीन बार अर्घ्य प्रदान करता हूँ ।"

निशा नट्या पुष्पाञ्जलिरिव विकीर्णो हरिपदे
चकास न्तारौघो न विलय मयं याव दयते
त्रि रर्घ्यं तावत्तेऽण्जलिभृतमनून्मन्त्रित जलैरर्
ददेऽम्बाऽऽर्के बिम्बे कृत वसतये सिद्धकृतते ।। ५ ।।

"यह रात एक नर्तकी है । वह अंजलि में धारण किये हुए और विष्णुपाद पर अर्थात् गगन में अर्पित किए, हुए पुष्प अर्थात् नक्षत्रों का अस्तमान समय जब तक नहीं होता उस समय सूर्य मण्डल में निवास करने वाली, संकल्पित कार्यों को पूर्ण करने वाली ऐसे तुझको अंजलि में भरे हुए अभिमंत्रित जल से तीन बार अर्घ्य प्रदान करता हूँ ।। ५ ।।

अम्बाऽर्कबिम्बान्तरुपेयुषि त्वां विम्बोष्ठि कम्बु प्रतिविंब कंठि ।
स्तम्बे रमास्यादि सुराभि वन्द्य जाम्बुन दालङ्करणेऽवलम्बे ।। ६ ।।

सूर्य बिम्ब में रहने वाली, बिम्बफल के समान ओष्ठवाली, शंख के संमान कंठ से युक्त, गणेशादि देवताओं से पूजनीय और सुवर्णमय आभूषण धारण करने वाली हे माता, ऐसे तुझको मैं शरणागत हूँ ।"

वन्दारुवृन्दारकवृन्दकोटिकिरीट माणिक्यमरीचिवीचिः ।
नीराजयत्यम्ब तवाऽङ्घ्रिपद्मे स्वाराज्य भाग्य श्रियमूर्जयन्ती ।। ७ ।।

"हे माता तेरे पाद्पद्म जो त्रैलोक्य राज्य लक्ष्मी को अभिवृद्धि करने वाले ऐसे हैं, उसे कोटि देवता जो तुझे नमस्कार करते हैं, उनके किरीटों में लगे हुये माणिक्य कांती परम्परा द्वारा मंगल आरती किए जैसे हैं ।

उपयिवांसि सेवार्थं इन्दी वाऽद्वगनि भेजुषाम् ।
पुरो विसृत्वरा भान्ति ययो नंखमरीचयः ।। ८ ।।

हे माता ! तेरे पादपद्म की नखकान्ति इतनी तेजस्वी है कि जान पड़ता है सर्वभक्तों के मन तेरे पाद सेवा करने को उसके अग्रभाग में आकर स्थित हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कान्त्ये वाऽधः कृतं पद्मं हेमपीठमधिष्ठितम् ।
अलंकरिष्णू श्रीमत्याः पादौ ते देवि संश्रये ।। ९ ।।

"हे माता, तेरे चरणों के नीचे रखा सुवर्णपीठ ऐसा जान पड़ता है जैसे कि आपके पादपद्म कांती द्वारा प्रपंच के सर्व पद्मपुष्प हार कर तेरी शरण में आकर, तेरी पाद सेवा करने आकर पादपीठ रूप धारण किए हुए हैं । उसे अलंकृत करने वाले तेरे चरण को मैं नमस्कार करता हूँ ।"

सायं प्रातर्जगद्वन्द्यो चक्षुषो विषयोऽसि मे ।
त्वदङ्ग सुषमा शोणा महती य त्तदेक्ष्यते ।। १० ।।

"प्रतिदिन सायं और प्रातः समय में जगद्वन्दनीय ऐसी तू हमें दर्शन देती है । वह कैसे ? प्रातः और सायं प्रतिदिन जो आपकी रक्तवर्ण शरीर छाया हमें गोचर होती है वही ।

तेजः पुञ्जारन्तरे भाति दिव्या ते मूर्ति रद्भुता ।
मनोऽनुसंहितं मन्त्र मनुद्यन्ती मनोहरा ।। ११ ।।

उस तेज पुंज जैसे कांती के मध्य में आश्चर्यकारी और दिव्य जैसा आपका स्वरूप, मुझे आपका मंत्रोच्चार , दिल में करते ही हगोचर होता है ।

उपाहिताग्नि सूर्येन्दु मंडले प्रणवासने ।
सुखासीनां सुप्रसन्नां त्वां मातः सुमुखी भजे ।। १२ ।।

"प्रणव पीठ पर अग्नि मंडल, उस पर सूर्य मंडल और उस पर चन्द्रमंडल जैसे उस पर तू अनुग्रह युक्त, संतोष से, प्रसन्नता से, विराजमान है, ऐसे तुझको मैं शरणागत हूँ ।

यद्रूपा परिचिन्त्यथेऽम्ब भवती तद्रूपिणी दृश्यते ।
ने द्क ते निजरूप मेतदिति के प्यावेदितु शक्नुयुः ।।
तादृक् त्वत्करुणा विशेष कलित प्रज्ञाऽऽत्मवि द्भिर्यथा ।
निध्याताकृति रात्मनाऽऽत्थसि तथा लीलाविहारोत्सुका ।। १३ ।।

"हे माता ! भक्तगण जो जिस रूप को मानकर तुझे भजते हैं वैसे ही तू उन्हें दर्शन, देती है । इससे तेरा स्वरूप यही है, इस प्रकार का है ऐसा कहने के लिये कोई भी समर्थ नहीं हैं, कोई भी तेरे निजस्वरूप को जानने में समर्थ नही है । तेरी कृपा दृष्टि को प्राप्त होकर, आत्मज्ञान संपादित करके जो पंडित तुझे भजते हैं और उन्हें तू जिस स्वरूप में दिखाई दी है उसी स्वरूप से तू संसार में विहार कर रही है ।

कैरप्य वेद्य निजतत्व रहस्य रूपां-निय्याद्भुता-मृत चिदात्मसुख स्वरूपाम् ।
दिग्व्यापि निर्मल निराकुल चित्प्रकाशां-त्वां पूर्णिमेन्दुमिवदेवि भजे सुपूर्णाम ।। १४ ।।

"तेरे निज रूप का कोई भी रहस्य नहीं जान सकता । तेरा स्वरूप नित्य, अद्भुत, अमृत-सा, ज्ञान रूप, आत्मरूप और सुखरूप है । आपकी कांति चांदनी जैसी दिग्व्यापि, निर्मल, निराकुल, ज्ञानरूप है ऐसी तुझको मैं सेवा करता हूँ ।"

वेदमात रविद्यांमे निवर्तय मनोवृतिम् ।
येन विद्या समग्ररसन् विद्यासमखिलं जगत् ।१५।

"हे वेदमाता गायत्री तुझे मेरे मन को आच्छादन करने वाली अविद्या को निवारण करना चाहिए जिससे मैं विद्या से परिपूर्ण होकर सब संसार को जान लूँ ।"

पुररसरीभ पुरुषार्थदात्री, मित्री मवित्री भजतामवित्री ।
पवित्रयन्ती सुपदक्रमैर्गा सवित्रि वेलार्चित ॐ नमस्ते ।। १६ ।।

'मेरे सम्मुख चलने वाली, पुरुषार्थ देने वाली, मित्र होने वाली, भक्तों का रक्षण करने वाली, सुन्दर चरणों के विन्दास से भूतल को और सुन्दर वचनों की रचनाओं से वाणी को पवित्र करने वाली, याज्ञिकों से त्रिकाल पूजित हे माता प्रणव स्वरूप तुझको नमस्कार ।

ओजश्शक्ति बल प्रभाव सुषमा लेजस्सु वीर्यप्रभा ।
ज्ञानैश्वर्य महस्सहो जययशस्स्थैर्य प्रतिष्ठा श्रियः प्रतिभा मतिस्मृतिधृति प्रज्ञाप्रथास्सुञ्चलाः
वर्णैत्वन्मानुगै स्त्रिरष्टभि रहो वर्ध्यन्त एवात्र मे ।।१७।।

"ओज, शक्ति, बल महिमा, कान्ति, तेज, पराक्रम, प्रकाश, ज्ञान, ऐश्वर्य, विकास, सहन शक्ति, जय, कीर्ति, स्थिरता, प्रतिष्ठा, लक्ष्मी, विज्ञान, प्रतिभा, मति, स्मृति, तृप्ति, प्रज्ञा, ख्याति, यह चौबीस गुण, हे माता ! तुम्हारी मंत्र में रहने वाले चौबीस वर्णों द्वारा मुझमें अभिवृद्धि कर रहे हैं ।"

रत्नस्तम्भ सहस्त्र केसर परिश्रेणी विराजत्सभा
नूलाब्जोन्नत कर्णिकायित महासिंहासनाध्यासिनी देवित्वं शरदिन्दु सुन्दरमुखी स्मेरेक्षण ज्योत्स्नया भिन्दाना सकलस्य सन्तमससन्तापान् स्वयं राजसे ।।१८।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हे माता ! सभा जो कि पद्म समान है और सभा स्तम्भ रत्नों के है । इस सभा में वे हजारों की पंक्ति में हैं यही उस पद्म के केसर है और सभा में सिंहासन अर्थात् पद्मकी कर्णिका पर तुम विराजमान हो ! शरत्काल पूर्णिमा के चन्द्रमा समान सुन्दर वदन वाली, मंद हासयुक्त प्रसन्न, चांदनी जैसी दृष्टि से सब लोगों के अज्ञान, कष्ट निवारण करने वाली जैसी तू स्वयं प्रकाशित हो रही है ।"

नाना नाम तनु प्रभेद बहुधा विस्तारि लोकाकृतिः ।
माणिक्य प्रतिमेव मंगल तरैः, क्षेमंददाना करैः ।।
साक्षाद देवगवी व सश्रित जनस्यो च्चैर्दुहानेप्सिता ।
न्यक्षय्याऽसि शुभश्रियांनिधि रहो गायत्रि तेजोनिधे ।।१९।।

हे माता ! विविध नामों से, शरीरों से और अभेदों से बहुत विस्तारशाली यह लोक ही तेरी आकृति है, स्वरूप है । माणिक्य प्रतिमा की दिव्य कांती जैसे सुखदायक होती है उसी प्रकार तेरे आश्रितों को तू इष्टार्थ, कामना पूर्ण करती हो । हे गायत्री देवी तुम शुभ संपदा के लिए एक अक्षय

पादौ ते कलयामि तौ कमलभौ कणन्नूपुरौ ।
देवेन्द्रादि किरीटरत्न रुचिभि र्नीराजितौ पूजितौ ।।
लोकेशी कृत बन्दमान जनता प्राध्यहिं सेवाक्षणौ ।
याभ्या मध्युपिताऽब्जरागमयवत् स्फाटिक्यभूत् पीठिका ।। २० ।।

हे माता ! तुम्हारे पाद कमल की कांति के भाँति सुन्दर ध्वनियुक्त नूपुरों द्वारा सुशोभित और देवेन्द्रादि देवताओं के द्वारा पूजित होते समय उनके किरीट रत्न कांति द्वारा आरती पाने वाले और तेरी कृपा द्वारा लोक प्रभु बने हुए तेरी चरण सेवा करने झुंड बनकर आये हुए हैं । किन्तु उन्हें उचित समय प्राप्त न होने के कारण तेरे पाद सेवाभिलाषी चरण सेवा नहीं कर पा रहे हैं । ऐसे तेरे चरणों को और स्फटिक पादपीठ जिस पर तुम्हारे चरण कांती पड़ने से यह पीठ पद्मराग समान दिखाई देता है ऐसे उन चरणों की मैं वंदना करता हूँ ।"

यथैव मे त्वं जनयित्री वाञ्छेस्तथा कृपीष्ठा मुदभेमी तेन ।
ममाऽविदो वांछिततोप्यभिज्ञे प्रेयो महीयस्तव वाञ्छितंहि ।। २१ ।।

हे माता तू जिस प्रकार चाहे उस प्रकार मुझे वरदान दे । उसी से मैं संतुष्ट हो जाऊँगा । क्यों कि मेरे जैसे ना समझ और लोप युक्त वरदान के पक्ष में तू ही समस्त जानने वाली है। तेरा स्वयं का दिया हुआ वरदान ही श्रेयस्कर होता है । उसी से मुझे संतोष है ।

ज्ञानध्यानजपार्चनास्तुतिमतिप्रीतिप्रपत्यादिभिर् ।
बाह्यान्तः करण प्रवृत्त विविधोपास्यानुकूलक्रमैः ।।
भूयोनामवपुः प्रकल्पित जगद्वि ख्यात दिव्याद्भुत ।
व्यापारां भवती भजे भगवती गायत्रि ओजोमर्याम् ।।२२।।

हे माता मैं ज्ञान, ध्यान, जप, पूजा स्तोत्र पढ़कर स्मरण मनन करके, प्रेम द्वारा और सर्व भी तेरे लिए त्याग करके इस प्रकार बाह्यान्तःकरण के अनेक उपासना पद्धति द्वारा मैं तुझे पूजता हूँ और तू अनेक नाम धारण कर, अनेक शरीर धारण कर प्रपंच में प्रसिद्ध और दिव्य और आश्चर्य कारक अनेक कार्य किये हुई ऐसी चरित्र वाली हे भगवती ओजमयी गायत्री तुझे नमस्कार है ।

विश्वस्य भजतामेऽद्य विश्वश्रेयः प्रदायिनी ।
आश्वासयान्तरात्मान माश्वाविर्भूय भूयसि ।। २३ ।।

हे गायत्री माता ! मैं तुझ पर विश्वास रखता हुआ तेरा मनन कर रहा हूँ और हे माता ! सब को सफल सुख प्रदान करने वाली तू मुझे शीघ्र ही प्रत्यक्ष होकर संतृप्ति कर ।

सहायोमेऽत्र भूयात्ते सुमहन्मञ्जुलंमहः ।
वेदमातः प्रमातीतं सर्वं कार्यं धुरन्धरम् ।।२४ ।।

हे माता ! तेरा प्रभाव इतना उतना ही नहीं है किन्तु सर्व कार्य को आगे आकर करने वाली ऐसी तेरी शक्ति है । ऐसी तेजः शक्ति मुझे इस संसार में हर प्रकार से सहायकारी हो ।"

भगवती शरणाष्टकम्

अशिवस्सुतस्ते शिवनामधेयः
विपरीत कर्माऽधर्माऽतिचारी,
त्वमेका गतिस्तस्य भ्रान्तस्य मातः
चरणाम्बुजे ते पापः नतोऽसौ ।। १ ।।

हे माँ ! शिव नामक तुम्हारा यह अशिव पुत्र विपरीत कर्म करने वाला, अधर्म और अत्याचारी है, उस भूले-भटके की तुम्हीं एक मात्र गति हो, वह पापी आप के चरण-कमलों को प्रणाम करता है ।

मातः प्रपन्नस्त्वामस्मि जातः
अज्ञः सुतोऽहं तव पापपीनः,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विषयेषु मग्नः खलमोहमूढः
एकोऽवलम्बः करुणा त्वदीया ।। २ ।।

हे माँ ! तुम्हारा यह पुत्र दुःखी है, अज्ञानी है, पापपूर्ण है, विषयों में आसक्त रहता है, खल और मोह-मूढ़ है, तुम्हारी एक मात्र करुणा ही उसका सहारा है ।

कृतं न पुण्यं चरितं नैव धर्मः
दानं न दत्तं न तप्तं तपो वा,
न जानामि शास्त्रं जपयोगध्यानम्
मातः कृपा ते आशा ममैका । ३ ।

हे माँ ! मैंने न कोई पुण्य किया, न धर्म किया, न दान दिया, न कोई तप किया, न किसी भी प्रकार का जप, योग, ध्यान व शास्त्र को जानता हूँ, तेरी कृपा ही मेरी एक मात्र आशा है ।

भवती हि जननी गरिमामहीयसी
करुणाक्षमा ते सहजस्वभावः,
पापे वरिष्ठः अघदर्पितोऽहम्
मातः, सुतोऽसौ खलु रक्षणीयः । ४ ।

हे माँ ! आप बहुत ही गरिमामयी है, करुणा और क्षमा तुम्हारा सहज स्वभाव है । मैं श्रेष्ठ पापी और अहंकारी हूँ , फिर भी मैं आपका पुत्र हूँ और रक्षा करने योग्य हूँ ।

ममतामयी त्वं माताऽस्मदीया
पुत्रा वयं ते कृतभूरिदोषाः
शरणं न अन्यं कूचिदस्ति मातः
शरणाश्रयं ते अम्बे भजामः । ५ ।

तुम मेरी ममतामयी माता हो और हम पर्याप्त दोषयुक्त पुत्र हैं । हे माँ ! तुम्हारे अतिरिक्त अन्य कोई हमारा सहारा नहीं है, तुम्हारे चरणों का आश्रय लेकर हम तुम्हारा भजन करते हैं ।

भक्तिं प्रयच्छ मातः विमलां मतिं च
मदकाममोहरहितं कुरु मानसं मे
सदसद्विवेकं अमलञ्च ज्ञानम्
प्रयच्छ मातः शरणं शरण्ये । ६ ।

हे माँ ! मुझे अपनी भक्ति प्रदान करो, निर्मल बुद्धि से युक्त बनाओ मेरे मन को अहंकार काम और मोह से रहित बनाओ । मुझे सद् और असद् का विवेक करने वाला निर्मल ज्ञान दो, हम आपकी शरण में हैं ।

एकं वरं त्वाऽम्बे हि याचे
अचलाऽस्तु निष्ठा गुरुपादपद्मे,
शिवस्वरूपस्य गुरोश्च करुणा
बलमस्तु मे निश्रेयसप्राप्तिहेतौ । ७ ।

हे माँ ! मैं आप से एक ही वरदान माँगता हूँ कि शिव स्वरूप, करुणामय गुरु के प्रति मेरी अविचल निष्ठा हो जो मेरे बल और निःश्रेयस प्राप्ति का हेतु है ।

चरणौ जनन्याः शरणस्थलौ नः
सुखाकरौ खलु त्रयतापहरकौ,
स्रोतौ च भक्तयाः ज्ञानस्य विमलौ
पोतौ भवाब्धेर्धनः तारकौ तौ । ८ ।

हे माँ ! आपके चरण कमल ही हमारे लिए शरण प्रदाता है, सुखकारी हैं, त्रयतापहारी हैं, भकि के स्रोत हैं, निर्मल ज्ञानदाता हैं तथा भवसागर से पार उतारने के लिए जहाज स्वरूप हैं ।

गायत्री-वन्दना

ॐकार रूपा त्रिपदा त्रयी च ,
त्रिदेववन्द्या त्रिदिवाधिदेवी !
त्रिलोककर्त्री त्रितयस्य भर्त्री,
त्रैकालिकी संकलनाविधात्री ।। १ ।।
त्रैगुण्य भेदात् त्रिविधस्वरूपा ,
त्रैविध्ययुक्तस्य फलस्य दात्री ।
तथापवर्गस्य विधायिनी त्वं,
दयार्द्रदृक्कोणविलोकनेन ।। २ ।।
त्वं वाङ्मयी विश्ववदान्य मूर्त्ति,
विश्वस्वरूपापि हि विश्वगामी ।
तत्वात्मिका तत्त्वपरात्परा च,
दृक्तारिका तास्कशंकरस्य ।। ३ ।।
विश्वात्मिके विश्वविलासभूते,
विश्वाश्रये विश्वविकाशधामे ।
विभूत्यधिष्ठात्रि विभूतिदात्रि,
पदे त्वदीये प्रणतिर्मदीया ।। ४ ।।
भोगत्य भोक्त्री करणस्य कर्त्री,
धात्वाव्ययप्रत्ययलिंगशून्या ।
ज्ञेया न वेदैर्न पुराणभेदैः,
ध्येया धिया धारणआदिशक्तिः ।। ५ ।।
नित्या सदा सर्वगताऽप्यलक्ष्या,
विष्णोर्विधेः शंकरतोऽप्यभिन्ना ।
शक्तिस्वरूपा जगतोऽस्य शक्ति,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ज्ञातुं न शक्या करणादिभिस्त्वम् ।। ६ ।।
त्यक्तास्त्वयात्यन्तनिरस्तबुद्धि,
नरो भवेद् वैभवभाग्यहीनः ।
हिमालयादप्यधिकोन्नतोऽपि,
जनैस्सतमस्तैरपि लंघनीयः ।। ७ ।।
शिवे हरौ ब्रह्मणि भानुचन्द्रयो,
श्चराचरे गोचरकेऽप्यगोचरे ।
सूक्ष्मातिसूक्ष्मे महतो महत्तमे,
कलात्वदीया विमला विराजते ।। ८ ।।
सुधामरन्दं तव पादपद्मं,
स्वे मानसे धारणया निधाय ।
बुद्धिर्मिलन्दीभवताम्मदीया ,
नातः परं देवि वरं समीहे ।। ९ ।।
दीनेषु हीनेषु गतादरेषु,
स्वभाविकी ते करुणा प्रसिद्धा ।
अतः शरण्ये शरणं प्रपन्न,
गृहाण मातः प्रणताञ्जल मे ।। १० ।।

गायत्री चालीसा पाठ की महिमा

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।। श्री गायत्री दिव्य शक्तियों की जननी हैं उनमें कितनी शक्तियाँ समाई हुई हैं, आज के समय में तो कोई विरला ही माई का लाल जानता होगा । प्राचीन ऋषि-मुनियों ने अपने-अपने साधनात्मक अनुभव के आधार पर उनकी महिमा का गान किया है । उसी महिमा का जनसाधारण को बोध कराने के लिये गायत्री चालीसा की रचना की गयी है । इस गायत्री चालीसा का नियमित पाठ करने से श्रीगायत्री की शक्तियों का ज्ञान होता है । ओषधि का गुण धर्म जानने के पश्चात् ही उसका लाभ उठाया जा सकता है । उसी प्रकार भगवती गायत्री की शक्तियों से लाभान्वित होने के लिये उनकी शक्तियों का महत्व समझना चाहिये । इसी आधार पर इस सचित्र गायत्री चालीसा की रचना की गई है । इसके नित्य पाठ से श्री गायत्री की मर्यादा, प्रकृति और शक्तियों की जानकारी मिलेगी । समुद्र-मन्थन में मात्र १४ रत्न निकले थे किन्तु इस गायत्री मंत्र में २४ रत्न भरे पड़े हैं । उनका उपयोग करके अपने को श्रेष्ठ बनाना मनुष्य के अपने वश की बात है । अस्तु गायत्री उपासना का यह प्रथम चरण है ।

श्रीगायत्री चालीसा का पाठ करने से हमारी यह धारणा दृढ़ होती है कि गायत्री देवमाता, वेदमाता एवं विश्वमाता है । इस धारणा से हमारी श्रद्धा, भक्ति तथा निष्ठा को बड़ा बल मिलता है । जिसको पारसमणि के महत्त्व का ज्ञान होता है, वही उसे प्राप्त करने का प्रयास करता है तथा उसका उपयोग करके लाभान्वित होता है । तो आइये ! हम सब भी गायत्री चालीसा का पाठ करें । उसमें वर्णित महिमा का गान करे चित्रों में उसका स्वरूप देखते हुए माता गायत्री की कृपा प्रसाद ग्रहण करें ।

वन्दे वेद मातरम्

श्री गायत्री चालीसा

दोहा-ह्रीं, श्रीं, क्लीं मेधा, प्रभा, जीवन ज्योति प्रचंड ।
शान्ति, क्रान्ति, जागृति, प्रगति, रचना शक्ति अखंड ।। १ ।
जगत जननि, मङ्गल करनि, गायत्री सुखधाम ।
प्रणवों सावित्री, स्वधा, स्वाहा, पूरन काम ।। २ ।।

भूर्भुवः स्वः ॐ युत जननी ।
गायत्री नित कलिमल दहनी ।।
अक्षर चौविस परम पुनीता ।
इनमें बसे शास्त्र, श्रुति, गीता ।।
शाश्वत सतोगुणी सत रूपा ।
सत्य सनातन सुधा अनूपा ।।
हंसारूढ़ सितम्बर धारी ।
स्वर्ण कान्ति शुचिगगन विहारी ।।
पुस्तक पुष्प कमंडलु माला ।
शुभ्र वर्ण तनु नयन विशाला ।।
ध्यान-धरत पुलकित हिय होई ।
सुख उपजत, दुख दुरमति खोई ।।
कामधेनु तुम सुर तरु छाया ।
निराकार की अद्भुत माया ।।
तुम्हारी शरण गहै जो कोई ।
तरै सकल संकट सों सोई ।।
सरस्वती लक्ष्मी तुम काली ।
दिपै तुम्हारी ज्योति निराली ।।
तुम्हरी महिमा पार न पावैं ।
जो शारद शत मुख गुन गावैं ।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

चार वेद की मातु पुनीता ।
तुम ब्रह्माणी गौरी सीता ।।
महामन्त्र जितने जग माहीं ।
कोऊ गायत्री सम नाहीं ।।
सुमिरत हिय में ज्ञान प्रकासै ।
आलस पाप अविद्या नासै ।।
सृष्टि बीज जग जननि भवानी ।
कालरात्रि वरदा कल्यानी ।।
ब्रह्मा विष्णु रुद्र सुर जेते ।
तुम सों पावें सुरता तेते ।।
तुम भक्तन की भक्त तुम्हारे ।
जननिहिं पुत्र प्राण ते प्यारे ।।
महिमा अपरम्पार तुम्हारी ।
जै जै जै त्रिपदा भय हारी ।।
पूरित सकल ज्ञान विज्ञाना ।
तुम सम अधिक न जग में आना ।।
तुमहिं जानि कछु रहै न शेषा ।
तुमहिं पाय कछु रहैं न क्लेशा ।
जानत तुमहिं, तुमहिं है जाई ।।
पारस परसि कुधातु सुहाई ।।
तुम्हरी शक्ति दिपै सब ठाई ।
माता तुम सब ठौर समाई ।।
ग्रह नक्षत्र ब्रह्माण्ड घनेरे ।
सब गतिवान तुम्हारे प्रेरे ।।
सकल सृष्टि की प्राण विधाता ।
पालक पोषक नाशक त्राता ।।
मातेश्वरी दया व्रत धारी ।
तुम सन तरे पातकी भारी ।।
जापर कृपा तुम्हारी होई ।
तापर कृपा करें सब कोई ।।
मन्द बुद्धि ते बुधि बल पावें ।
रोगी रोग रहित है जावें ।।
दारिद मिटै कटै सब पीरा ।
नाशै दुःख हरै भव भीरा ।।
गृह कलेश चित चिन्ता भारी ।
नासै गायत्री भय हारी ।।
सन्तति हीन सुसन्तति पावें ।
सुख सम्पति युत मोद मनावें ।।
भूत पिशाच सबै भय खावे ।
यम के दूत निकट नहिं आवें ।।

जो सधवा सुमिरें चित लाई ।
अछत सुहाग सदा सुखदाई ।।
घर वर सुख प्रद लहैं कुमारी ।
विधवा रहें सत्य व्रत धारी ।।
जयति जयति जगदम्ब भवानी ।
तुम सम और दयालु न दानी ।।
जो सद्गुरु सों दीक्षा पावें ।
सो साधन को सफल बनावें ।।
सुमिरन करें सुरुचि बड़भागी ।
लहैं मनोरथ गृही विरागी ।।
अष्ट-सिद्धि नवनिधि की दाता ।
सब समर्थ गायत्री माता ।।
ऋषि मुनि जती, तपस्वी जोगी ।
आरत, अर्थी, चिंतित, भोगी ।।
जो जो शरण तुम्हारी आवें ।
सो सो मन वांछित फल पावें ।।
बल बुधि विद्या शील स्वभाऊ ।
धन वैभव यश तेज उछाऊ ।।
सकल बढ़ें उपजें सुख नाना ।
जो यह पाठ करै धरि ध्याना ।।
यह चालीसा भक्ति युत, पाठ करै जो कोय ।
तापर कृपा प्रसन्नता गायत्री की होय ।।

दोहा-हीं, श्रीं, क्लीं, मेधा, प्रभा, जीवन ज्योति प्रचंड ।
शान्ति, क्रान्ति, जागृति, प्रगति रचना शक्ति अखंड ।। १ ।।

अर्थः हे महासरस्वती, महालक्ष्मी तथा महाकाली रूपों में स्थित श्री गायत्री माँ आप हमारे जीवन में ज्ञान ज्योति प्रकाशित करने वाली हो तथा हमें मेधा, प्रभा, प्रतिभा, शान्ति, क्रान्ति, जाग्रति, प्रगति व अखण्ड शक्ति प्रदान करने वाली हो ।। १।।

जगत जननि, मङ्गल करनि, गायत्री सुखधाम ।
प्रणवों सावित्री, स्वधा, स्वाहा, पूरन काम ।। २ ।।

आप विश्वमाता के रूप में जगत का कल्याण करती हो । आप में समस्त सुख निवास करते हैं । हे सावित्री, स्वाहा, स्वधा स्वरूपा पूर्णकाम माँ गायत्री! हम आपको प्रणाम करते हैं ।२।

भूर्भुवः स्वः ॐ युत जननी ।
गायत्री नित कलिमल दहनी ।।

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अर्थ-वेद माता गायत्री ॐ भुः भूवः स्वः से युक्त है और नित्य कलियुग के पापों का नाश करने वाली है । अर्थात् पृथ्वी, पाताल और स्वर्ग में जहाँ जहाँ ओंकार व्याप्त है, वहाँ आप भी गायत्री के रूप में निवास करती हो और कलि के प्रभाव को नष्ट करती हो ।

भावार्थ-गायत्री मंत्र "तत्सवितुर्वरेण्यम्" से आरम्भ होकर "प्रचोदयात्" तक है । इस मंत्र में जब ओं भूः भुवः स्वः अर्थात् ओंकार और व्याहृतियों लग जाती हैं तो उसका रूप मातृ-स्वरूप हो जाता है और उसको वेद माँ गायत्री कहते हैं ।

ॐ-ओं ईश्वर का नाम है योगशास्त्र में लिखा है कि "तस्यवाचकः प्रणवः" "उस ईश्वर को पुकारने का नाम ओं है, जैसे किसी बालक या मनुष्य को किसी विशेष नाम से पुकारने पर वह बोलता है उसी तरह उस ईश्वर को पुकारने के लिये ओं शब्द उच्चारण करना पड़ता है । इसी से हर मंत्र के आरंभ में ओं शब्द आता है ।

सृष्टि उत्पत्ति के समय सबसे पहला जो नाद सुनाई दिया वह ओं ही था । अब भी जब और कोई ध्वनि नहीं होती है तो ओं की ध्वनि न केवल बाहरी कान ही सुनते हैं अपितु अन्तःकरण भी ओं का नाद सुनता है ! आज भी मान सरोवर के पास कैलाशपर्वत के चारों तरफ ओं की ध्वनि गूंजा करती है और यात्रियों को सुनाई पड़ती है ।

ओं की इतनी महिमा है कि उसका वर्णन करने के लिए पृथक ग्रन्थ चाहिए । ओं के गुणगान से वेद, शास्त्र, ब्राह्मण ग्रन्थ, उपनिषद् , दर्शन आदि भरे पड़े हैं ।

ओं भवसागर से पार लगाने वाला है । मानव जीवन का आदि अन्त यही है । शास्त्र में ऐसा विधान है कि जब बालक का जन्म हो तो स्नान के बाद सोने की सलाई से मधु तथा घी के साथ बच्चे की जिह्वा में ओं लिखो । जन्मकाल में ही यह आदेश मिल गया कि तेरी वाणी पर सदा ओं रहे । मृत्यु समय भी वेद ने यही आदेश दिया कि 'ओं कृतो स्मर' कर्मशील ओं का स्मरण कर । गीता के ८ वें अध्याय में भगवान कहते हैं-

ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन्मामनुस्मरन् ।
यः प्रयाति त्यजन्देहं स याति परमांगतिम् ।।

अर्थ-जो पुरुष ओं ऐसे इस एक अक्षर रूप ब्रह्म को उच्चारण करता हुआ शरीर को छोड़ता है वह परम-गति को प्राप्त होता है ।

संसार में नेत्र खुलते ही वाणी पर ओं, संसार में नेत्र बन्द करते समय वाणी पर ओं, तो क्या जन्म मृत्यु के बीच में जो अवकाश है उसमें ओं नहीं ? यदि जीवन भर ओं का स्मरण, जप, कीर्तन नहीं किया तो अन्त समय उसका स्मरण कैसे आवेगा इसलिये इसका अभ्यास तो निरन्तर करना ही होगा ।

ओं में ३ अक्षर है अ, उ, म् इन तीनों के बड़े विशाल अर्थ है । तन्त्र में ओंकार की सात मात्राएँ कही गई हैं-(१) अकार, (२) उकार, (३) मकार, (४) अनुस्वार (५) ध्वनि, (६) नाद, (७)शान्ति । प्रथम तीन मात्राओं से ओं का स्थूल रूप बनता है, अनुस्वार, ध्वनि सूक्ष्म है,, नाद अव्यक्त रूप है, शान्ति तत्व स्वरूप है । अकार से स्थूल रूप आरम्भ, उकार से विकास, मकार से पूर्णता प्रगट होती है । उक्त मात्राओं के समझने के लिये किसी कांसे के घंटे पर ध्यान देना चाहिये । पहले शब्द होता है, जिसका रूप ओं के सदृश है, उस शब्द के बन्द होने पर अनुस्वार, तदनन्तर उसकी ध्वनि और नाद का ज्ञान होता है, ज्यों-ज्यों शब्द लय होता जाता है क्रम से सातों मात्राओं का अनुभव होता है अन्त में वह शब्द लय होते-होते शान्त होता है, वही उसका सातवाँ रूप है ।

कांस्य घण्टा निनादस्तु यथा लीयति शान्तये ।
ओंकारस्तु तथा योज्यः शान्तये सर्व मिच्छता ।।

कांसे के घंटे का शब्द जिस प्रकार शान्त होने के लिये लय होता है उसी प्रकार मुमुक्षु को ओंकार की योजना करनी चाहिये । जहाँ शब्द लय हो जाता है वहीं पर ब्रह्म गाया जाता है ।

ओं के उच्चारण में प्रथम अकार का उद्गम कंठ में होता है फिर जिह्वा में, फिर मूर्धा, तालु, दन्त आदि स्थानों को स्पर्श करता हुआ ओठों के बन्द होने पर लय होता है । इसके उच्चारण के समय सातों मात्राओं का अनुभव होता है और जापक परम पिता परमात्मा के अतिरिक्त और कुछ नहीं अनुभव करता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ओं प्रभु का नाम है । व्याहृतियाँ उसके गुणों को बताती है । ओं के द्वारा ईश्वर को बुलाते हैं, आवाहन करते हैं और व्याहृतियों द्वारा उसके गुणों का पूजन करते हैं और उनको अपने अन्दर धारण करते हैं ।

भूः

भूः के अर्थ है प्राणस्वरूप । वह ईश्वर भूः है और प्राणस्वरूप है । सभी प्राणियों में, चर अचर में एकात्म रूप से व्याप्त है । साधक ईश्वर के, भूः के गुणों को धारण करके ईश्वर को सर्वत्र देखने का अभ्यास करता है, किन्तु भाटों तथा मीरासियों की तरह ईश्वर के गुण गाते जाने से ही तो कोई लाभ नहीं पहुँच सकता । ईश्वर को प्रशंसा की जरूरत नहीं वह हमारी चाटुकारिता का भूखा नहीं, हम उसकी प्रशंसा करते हैं, स्तुति करते हैं तो इसलिये कि इन शब्दों में जो गुण वर्णन किये गये हैं उसका कुछ भाग अपने अन्दर धारण करें ।

ईश्वर प्राणस्वरूप है, प्राणों का देने वाला है, प्राणाधार है, इससे लाभ तभी होगा जब हम भी किसी के प्राणाधार बनें, अहिंसा का पालन करें, किसी का प्राण न लें । जिस तरह एक ही प्राण सर्वत्र समान रूप से व्याप्त है, उसी तरह ईश्वर सब जगह समान रूप से समाया हुआ है । सभी प्राणियों में एक ही प्राण रमण कर रहा है । जिस तरह एक ही तागे में माला के अनेक दाने पिरोये हुये हैं, उसी तरह प्राण रूप ईश्वर में सभी प्राणी पिरोये हुये हैं । ऐसा सोचने से सभी में एक आत्मा की भावना होती है । किसी प्राणी के प्रति द्वेष भावना नहीं होती । सदैव यह विचार करते रहना चाहिये कि जो प्राण मेरे अन्दर है वही दूसरे के अन्दर है और जो दूसरे के अन्दर है वही मेरे अन्दर है, हम में और दूसरे प्राणी में कोई भेद नहीं । भूः शब्द के अनुसार आचरण करने वाला ही समदर्शी हो जाता है जिसके लिये गीता में कहा है:-

विद्या विनय संपन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि ।
शुनि चैव श्वपाके च पण्डिताः समदर्शिनः ।।

अर्थः-ज्ञानीजन विद्या और विनययुक्त ब्राह्मण में तथा गौ हाथी कुत्ते (और) चाण्डाल में भी समभाव से देखने वाले ही होते हैं । प्राण का स्थूल रूप श्वास-प्रश्वास है । भूः के जापक को अपने प्राणों पर अधिकार करना चाहिये, प्राणायाम का अभ्यास करना चाहिये । नित्य जप करने के पहले थोड़ा सा प्राणायाम कर लेने से परमात्मा की प्राणस्वरूप शक्ति अपने अन्दर आ जाती है ।

भुवः

परमात्मा को भुवः कहते हैं । भुवः के अर्थ हैं दुःखनाशक अर्थात् वह ईश्वर दुःखनाशक है । परमात्मा के भू स्वरूप को जान लेने से मनुष्य भुवः स्वरूप को प्राप्त कर लेता है अर्थात् उसके दुःखों का नाश हो जाता है । दुःखों की गिनती नहीं है । सारा संसार दुःखी है हमारे सारे प्रयत्न दुःखों की निवृत्ति के लिये ही हैं । सांख्य दर्शन में कहा है कि:-

अथ त्रिविध दुःखात्यन्त निवृत्तिरत्यन्त पुरुषार्थः ।

अर्थः-तीनों (आध्यात्मिक, आधि-भौतिक, आधि-दैविक) दुःखों से अत्यन्त निवृत्ति ही अत्यंत पुरुषार्थ है ।

आध्यात्मिक दुःख-काम, क्रोध, मोह, लोभ, अहंकार, ईर्ष्या, द्वेष आदि मानसिक तथा अन्य शारीरिक कष्ट, पीड़ा इत्यादि ।

आधिभौतिक दुःख-सर्प, बिच्छू, सिंह, क्रूर स्वभाव मनुष्य चोर इत्यादिक से कष्ट ।

आधिदैविक दुःख-विजली, वायु, अग्नि आदि से दुःख ।

रामायण कहती है :-

दैहिक दैविक भौतिक तापा ।
राम राज्य नहिं काहुहि ब्यापा ।।

राम कहते हैं सब जगह रमने वाले को । सब जगह रमने वाला यह प्राण रूप में ईश्वर ही है । जहाँ प्राणरूप में राम का राज्य हो जाता है वहाँ तीनों प्रकार के दुःख मिट जाते हैं । जब साधक भूः की प्रतिष्ठा कर लेता है तब वह भी भुवः हो जाता है । योग दर्शन कहता है :-

परिणाम ताप संस्कार दुःखैर्गुणावृत्ति,
विविधाच्य दुःख मेवम सर्व विवेकिनः ।

अर्थः-अज्ञानी पुरुष को परिणाम दुःख, ताप दुख, संस्कार दुःख और उन वृत्तियों के विरोध से सब दुःख ही दुःख हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

परिणाम दुखः-संसार की सभी वस्तुयें नाशवान है । इसके सम्पर्क में आने पर अन्त में उसकी वियोग प्राप्त हो जाता है और दुःख होता है ।

ताप दुःख-सुख में भी यह भय बना रहता है । यह सुख समाप्त न हो जाय, यही ताप दुःख है ।

संस्कार दुःख-पुण्य से सुख मिलता है और उससे वासना बनती है और पुनः उसका संस्कार बनता है, तब फिर कर्म करने की इच्छा होती है यह संसार चक्र मनुष्य को फँसाये रखता है और दुःख से अत्यन्त निवृत्ति नहीं मिलती है । इसी से इसको संस्कार दुःख कहते हैं ।

गुण वृत्ति विरोध दुख-सत, रज, तम तीनों गुण परस्पर विरोधी ही हैं इनके आक्रमण से भिन्न-भिन्न समय भिन्न-भिन्न प्रकार के दुःख पैदा होते रहते हैं । दुःख का शाब्दिक अर्थ है खराब इन्द्रियाँ । जिसकी इन्द्रियाँ खराब हैं वही दुःखी है जितने भी दुःख है वह हम अपने अज्ञान के कारण स्वयं पैदा करते हैं इसी से कहा है :-

मोह सकल व्याधिन कर मूला ।
जिनते पुनि उपजहिं बहु शूला ।।

मोह के अर्थ अज्ञान इसी के कारण हम खाने पीने में, सोने जागने में नियमित नहीं रहते हैं और दुःख उत्पन्न कर लेते हैं ।

युक्ताहार विहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु ।
युक्त स्वप्नाव बोधस्य यीगो भवति दुःखहा ।।

अर्थ-दुःखों का नाश करने वाला योग (तो) यथा योग्य आहार और विहार करने वाले का तथा यथा योग्य चेष्टा करने वाले का (और) यथा योग्य शयन करने वाले तथा जागने वाले का ही सिद्ध होता है ।

अपनी अज्ञानता से हम अनेकों प्रकार के दुःख पैदा कर लेते हैं यह एक प्रकार का दुःख हुआ, एक दूसरा दुःख भी है जो दूसरों के द्वारा मिलता है । समाज में रहने पर अन्य प्राणियों का सन्सर्ग रहता है । उनके साथ उचित व्यवहार न किया जाय, सामाजिक नियमों को न माना जाय तो भी दुःख प्राप्त होता है । योग-शास्त्र बताता है कि दूसरों के द्वारा प्राप्त दुःखों की निवृत्ति के लिये यम का पालन करना चाहिये तथा अपने द्वारा उत्पन्न दुःखों से छूटने के लिये नियम का पालन करना चाहिये ।

यमः-अहिंसा , सत्य, स्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह ।
नियमः-शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वर प्रणिधान ।
अहिंसाः-मन, क्रम, वचन, से किसी को पीड़ा न देना ।

सत्यः-झूठ का सर्वथा त्याग, सत्य बोलना, सत्य सोचना, सत्य करना, जो मन में हो वही वाणी में हो वही कर्म में हो ।

स्तेय :-मन वचन कर्म से पराये धन लेने की इच्छा न करना ।

ब्रह्मचर्यः-इन्द्रिय संयम करते हुये वीर्य की रक्षा करना ।

अपरिग्रहः-परिग्रह न करना, सामान इकट्ठा न करना, भोगों का संग्रह न करना ।

नियम

शौचः-शरीर और मन को अन्दर और बाहर से पवित्र करना ।

संतोषः-जो मिले उसी में संतोष रखना ।

तपः-सर्दी, गर्मी, मान, अपमान आदि द्वन्द्वों को सहना ।

स्वाध्यायः-किसी धार्मिक पुस्तक का नित्य पाठ करना या मंत्र का जप ।

ईश्वर प्राणिधान-जो भी कर्म किये जायें उसको ईश्वर के अर्पण कर देना ।

भुवः का उच्चारण करते हुये यह भावना करनी चाहिये कि वह परमात्मा दुःखों को दूर करने वाला है और उसकी शरण में जाने से हमारे सब दुःख दूर हो जायेंगे । भुवः को आचरण में लाने के लिये यह आवश्यक है कि यम और नियमों का पालन किया जावे स्वः ।

स्वः

स्वः का अर्थ है सुख स्वरूप वह ईश्वर सुखों को देने वाला है । वह सच्चिदानन्द है । आत्मा के सभी सकल संघर्ष इसी आनन्द को प्राप्त करने के लिए हैं । लोग धन चाहते हैं, सम्मान चाहते हैं, संतान, मोटर गाड़ी आदि चाहते हैं केवल आनन्द के लिये परन्तु आनन्द इन वस्तुओं में है नहीं और न ऐसी कोई दुकान है जहाँ आनन्द बिकता हो । बाजार में मिठाइयाँ मिलती हैं, कपड़े मिलते हैं, जूते मिलते हैं, दवाइयों का स्टाक है मगर किसी भी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दुकान पर यह बोर्ड नहीं मिलेगा कि यहाँ आनन्द मिलता है ।

आपको जूते की जरूरत हो और आप हलबाई की दुकान पर माँगें तो दुकानदार आपको पागल समझेगा । आपको कुनैन की जरूरत है और आप खोज रहे हैं कपड़े वाले के यहाँ । अरे ! आनन्द इस संसार की वस्तुओं में कहाँ धरा है । जाना चाहते हो बम्बई और चढ़ बैठो उस गाड़ी में जो कलकत्ता जाती हो तो बम्बई कैसे पहुँचोगे । चाहते हो मक्खन, विलोते हो पानी । आनन्द केवल भगवान के पास है । संसार में किसी अन्य के पास नहीं । आनन्द प्राप्त करने के लिये प्रभु के पास जाओ । रामायण कहती है-

फूले नभ बरु बहु विधि फूला ।
जीवन सुख लह हरि प्रतिकूला ।।
तृषा जाय बरु मृग जल पाना ।
बरु जामहि शशि सीस बिखाना ।।
अन्धकार बरु रविहि नशावे ।
राम विमुख न जीव सुख पावे ।।
हिम ते अनल प्रकट बरु होई ।
विमुख राम सुख पाव न कोई ।।

एक कुत्ता कई दिनों का भूखा था, चलते चलते एक नदी के पास पहुँचा, तट पर एक वृक्ष था उसके एक शाख पर एक रोटी लटक रही थी । कुत्ते ने पानी की ओर देखा । उसमें रोटी का प्रतिबिम्ब पड़ रहा था उसने समझा सामने रोटी है । छलांग लगा दी, पानी हिला रोटी परे जाती हुई मालूम हुई, वह और आगे बढ़ा तो रोटी और आगे जाते हुये विदित हुई । वह आगे बढ़ता गया किन्तु रोटी न प्राप्त कर सका ।

मनुष्य ने सोचा कि विवाह में सुख है, पकी पकाई रोटी मिल जाती है, सुख शान्ति मिल जाती है लगा दी छलांग विवाह के जल में । किन्तु सुख तो मिला नहीं अपितु आनन्द की रोटी और आगे हो गई । मनुष्य ने सोचा आनन्द धन प्राप्त करने में है लगा दी छलांग धन के सागर में, डरवी का टिकट खरीद लिया किन्तु पानी हिल गया, आनन्द दूर चला गया । शक्ति सम्पत्ति, भोग, ऐश्वर्य, आदि में आनन्द नहीं । आनन्द चाहते हो तो ऊपर ताको वह ईश्वर रूपी वृक्ष में ऊपर लटक रहा है । आनन्द प्राप्त करना चाहते हो तो नीचे मत गिरो ऊपर उठो और परमात्मा को प्राप्त करो ।

आनन्द रोने से नहीं मिलता, दुःखों में घबराने से नहीं मिलता, व्यर्थ की चिन्तायें करने से नहीं मिलता । सदा प्रसन्न रहो । प्रतिकूल परिस्थितियों में भी हँसते रहो । प्रसन्नता का वातावरण बनाये रक्खो । सदैव हँसते हुये प्रेम का व्यवहार करो । एक सज्जन थे उनके कई बच्चे थे श्रीमान् दफ्तर गये थे । दिन भर घर के अन्दर बच्चे हँस खेल रहे थे । शाम को उनके आने के समय बच्चे इधर-उधर जा छिपे । हर ओर सन्नाटा छा गया । श्रीमान बड़े रौब से आये । जब उनसे पूछा गया कि बच्चे तुम से क्यों डरते हैं तो कहने लगे कि मैं घर में तनिक रौब से रहता हूँ ताकि घर का अनुशासन ठीक रहे । घर न हुआ, सेंट्रल जेल हो गया । ऐसे रौब से क्या लाभ जिससे प्रसन्नता भाग जावे । होना तो यह चाहिये कि जब आओ तो बच्चे प्रेम से लिपट जावें । ऐसा करने से प्रेम बढ़ेगा और दोनों को प्रसन्नता होगी ।

इसलिए वेद कहता है कि प्रसन्न रहो हर समय चिंता में डूबे मत रहो मत भूलो कि :-

या खून पसीना करके बहा, या तान के चादर सोता जा ।
यह नाव तो चलती जावेगी, तू हँसता रह या रोता जा ।।

जो दुःख तुम्हारे वश में नहीं उसके लिये भगवान से प्रार्थना करो और जो दुःख तुमने पैदा किये हैं उनको स्वयं दूर करने का प्रयत्न करो । महाभारत के युद्ध के बाद कृष्ण भगवान जब द्वारका को वापस जाने लगे तो कुन्ती से बोले माँ और कोई सेवा है । कुन्ती बोली हाँ भगवन् ऐसी कृपा करो कि हम पर कष्ट-क्लेश आते ही रहें । कृष्ण ने पूछा ऐसी बात क्यों माँगती हो ? कुन्ती ने कहा जब-जब कष्ट आता है, तब ही आपके दर्शन होते हैं इसलिये कहती हूँ कि कष्ट आते ही रहें तो अच्छा है ।

भगवान तुम्हारे दुःखों को दूर करने के लिये सदैव तत्पर हैं उनको पुकारो ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रभु आपकी हूँ मैं शरण निज चरण सेवक कीजिये ।
मैं कुछ नहीं हूँ माँगता जो आप चाहे दीजिये ।।
शिर आँख से मन्जूर है सुख दीजिये दुःख दीजिये ।
जो है इच्छा कीजिये पर न दूर-दर से कीजिये ।।

तब फिर आनन्द ही आनन्द है । 'स्व' शब्द बताता है कि ईश्वर सुख स्वरूप है । तुम भी सुखी बनो और दूसरे को भी सुखी बनाओ । गायत्री मंत्र के जप के साथ जब हम ईश्वर के इन गुणों का मनन करते हैं और उन पर स्वयं आचरण करते हैं तो वह शक्ति उत्पन्न होती है जो पापों को जला देती है ।

इसलिये मनु भगवान कहते हैं कि-

सहस्त्र कृत्वस्त्वभ्यस्य वहिरेतत् त्रिक द्विज ।
महतोऽप्येनसो भासात् त्व चेर्वा हिर्वि मुच्यते ।।

अर्थ-जो द्विज १ मास तक बाहर एकान्त स्थान में प्रति दिन १००० बार गायत्री मन्त्र का जाप करता है वह बड़े भारी पाप से भी इस प्रकार छूट जाता है जैसे साँप केंचुली से ।

एक बार कैलास पर्वत पर विराजमान महादेव शिव से पार्वती जी ने प्रश्न किया कि हे योगेश्वर ! आप किस योग द्वारा इतनी सिद्धियाँ प्राप्त कर पाये हैं, वह कौन से योग की उपासना है, जिसने आपको सिद्ध बना दिया ?

इस प्रश्न के उत्तर में महादेव जी ने कहा-

गायत्री वेद मातास्ति साऽद्या पवितर्मता भुवि ।
जगतां जननी चैव तामुपासेऽहमेव हि ।।

गायत्री वेदमाता है, पृथ्वी पर वह आद्याशक्ति कहलाती है । वही संसार की माता है । मैं उसी की उपासना करता हूँ ।

यौगिकानां समस्तानां साधनानां तु हे प्रिये ।
गायत्र्यैव मता लोके मूलाधारा विदां वरैः ।।

हे प्रिये ! विद्वानों ने समस्त यौगिक साधनाओं की मूलाधार गायत्री ही को माना है ।

भूलोकस्यास्य गायत्री कामधेनुर्मता बुवैः ।
लोक आश्रयणेनामु सर्वमेवाधिगच्छति ।।

विद्वानों ने गायत्री को भू-लोक की कामधेनु माना है । संसार इसका आश्रय लेकर सब कुछ प्राप्त कर सकता है ।

कलीयुगे मनुष्याणां शरीराणीति पार्वती ।
पृथ्वी तत्व प्रधानानि जानास्येव भवन्ति हि ।।

हे पार्वती ! कलियुग में मनुष्यों के शरीर पृथ्वी तत्व प्रधान होते हैं, यह तो तुम जानती ही हो ।

सूक्ष्म तत्व प्रधानान्यद्योगोद् भूत नृणातः ।
सिद्धिनां तपसामेते न भवन्त्यधिकारिणाः ।।

इसलिये अन्य युगों में उत्पन्न हुए सूक्ष्म तत्व प्रधान मनुष्यों की सिद्धि और तप के ये अधिकारी नहीं होते ।

पंचांगयोग संसिद्ध्या गायत्री अस्तु तथापि ते ।
तद्युगानां सर्व श्रेष्ठं सिद्धि प्राप्नुवन्ति हि ।।

फिर भी वे गायत्री पंचांग की सिद्धि द्वारा उन युगों की सर्वश्रेष्ठ सिद्धियाँ प्राप्त कर सकते हैं ।

गायत्र्येव तपो योगः साधनं ध्यानमुच्यते ।
सिद्धिनां सा मता माता नातः किंचिद् वृहत्तरम् ।।

गायत्री तप है, योग है, साधन है और यह ही सिद्धियों की माता मानी गई है । इस गायत्री से बढ़ कर अन्य कोई दूसरी वस्तु नहीं ।

इसलिये गायत्री चालीसा के पहले पद का दूसरा चरण बताता है कि गायत्री कलियुग के सभी पापों को जला डालती है, कलियुग में पाप जाने अनजाने हो जाया करते हैं, किन्तु नित्य गायत्री उपासना करने वालों को पुण्य पापों का फल नहीं भुगतना पड़ता । अतएव ओंकार तथा भूः भुवः स्वः से युक्त करके गायत्री मन्त्र का नित जप करना चाहिये, उसके अर्थों की भावना करनी चाहिये और तदनुसार आचरण करना चाहिये, उन्हीं उपदेशों को अपना जीवन दर्शन बनाना चाहिये ।

अक्षर चौबीस परम पुनीता ।
इनमें बसें शास्त्र, श्रुति, गीता ।।

अर्थ-आपके (गायत्री के) जो २४ अक्षर हैं वे परम पुनीत होने से पुण्य प्रदान करने वाले हैं । इन अक्षरों में समस्त शास्त्र, श्रुति और गीता आदि का समावेश है । जो व्यक्ति शास्त्र आदि पढ़ने में असमर्थ हैं, वे आपके इन २४ अक्षरों के जप व स्मरण मात्र से शास्त्र अध्ययन का फल प्राप्त कर लेते हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

शाश्वत सतोगुणी सत रूपा ।
सत्य सनातन सुधा अनूपा ।।

आपके यह २४ अक्षर शाश्वत हैं, सत्वगुण सम्पन्न है, सनातन हैं । सत्य का मार्ग प्रदर्शन करने वाले हैं तथा अमृततुल्य कल्याणकारी व सुपथ पर चलाने वाले हैं ।

हंसारूढ़ सितम्बर धारी ।
स्वर्णकान्ति शुचि गगन बिहारी ।।

हे श्वेताम्बर धारण करने वाली, स्वर्ण कान्ति से युक्त, हंस पर विराजित होकर गगन में बिहार करने वाली माँ गायत्री !

पुस्तक पुष्प कमंडलु माला ।
शुभ्र वर्ण तनु नयन विशाला ।।

आपके एक हाथ में पुस्तक, दूसरे में पुष्प, तीसरे में कमण्डलु तथा चौथे हाथ में माला सुशोभित है । हे शुभ्रवर्णा, हे विशाल नेत्रों वाली गायत्री माँ !

ध्यान धरत पुलकित हिय होई ।
सुख उपजत, दुख दुरमति खोई ।।

आपके इस स्वरूप का ध्यान करने से हमारा हृदय पुलकित हो जाता है । हमारा हृदय हर्ष और उत्साह से भर उठता है । क्लेश और दुष्प्रवृत्तियों का नाश हो जाता है । हमें सुख सम्पत्ति प्राप्त होती है ।

कामधेनु तुम सुर तरु छाया ।
निराकार की अद्भुत माया ।।

जिस प्रकार कल्पवृक्ष और कामधेनु मनोकामनाओं को पूर्ण करते हैं, उसी प्रकार आप भी अपने साधकों की समस्त सात्विक मनोकामनाओं को सिद्ध करती हैं । आप निराकार और निर्विकार हैं, फिर भी आपकी माया अपरम्पार है । वह ऐसी अद्भुत है कि दृष्टिगोचर नहीं होती, अनुभव की जा सकती है ।

तुम्हरी शरण गहै जो कोई ।
तरै सकल संकट सों सोई ।।

जो कोई व्यक्ति आपकी शरण में आता है वह समस्त संकटों और दुखों से मुक्त हो जाता है और सुख-शान्ति पूर्वक जीवन व्यतीत करता है ।

सरस्वती लक्ष्मी तुम काली ।
दिपै तुम्हारी ज्योति निराली ।।

हे माँ ! आप ही सरस्वती हो, आप ही लक्ष्मी हो, तथा आप ही महाकाली हो । इन तीनों स्वरूपों में आपकी दिव्य ज्योति निराले रूप में ही देदीप्यमान होती है ।

तुम्हरी महिमा पार न पावै ।
जो शारद शत मुख गुन गावैं ।।

आपकी महिमा अपरम्पार है, इसका कोई पार नहीं । शेष और शारदा द्वारा अनेक मुखों से गाय न करने पर भी आपकी महिमा का पार नहीं पा सकते ।

चार वेद की मातु पुनीता ।
तुम ब्रह्माणी गौरी सीता ।।

आप, चारों वेदों (ऋग्, यजु, साम, अथर्व) की जननी हो । आप ब्रह्माणी हो, गौरी हो तथा आप ही सती शिरोमणि सीता स्वरूपा हो ।

महामन्त्र जितने जग माहीं ।
कोऊ गायत्री सम नाहीं ।।

विश्व में जितने भी मन्त्र हैं, उनमें आपके (गायत्री मन्त्र) समान न तो अतीत में कोई था न वर्तमान में है और न भविष्य में होगा । आप समस्त मन्त्रों की शिरोमणि हैं ।

सुमिरत हिय में ज्ञान प्रकासै ।
आलस पाप अविद्या नासै ।।

इस मंत्र के (गायत्री मंत्र) सतत् जप से मानव हृदय में ज्ञान का प्रकाश हो जाता है । पाप तथा अविद्या रूपी अन्धकार का नाश हो जाता है । निष्क्रियता समाप्त हो जाती है और स्फूर्ति की प्राप्ति होती है । पुण्य एवं विद्या प्राप्त होती है ।

सृष्टि बीज जग जननि भवानी ।
कालरात्रि वरदा कल्यानी ।।

हे माँ, आप सृष्टि के बीज रूप में जगत जननी हैं । हे भवानी आप ही काल रात्रि हैं तथा आप ही विश्व का कल्याण करने वाली है ।

ब्रह्मा विष्णु रुद्र सुर जेते ।
तुम सों पावें सुरता तेते ।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हे सर्वशक्तिवान आद्याशक्ति, ब्रह्मा को सृजन, विष्णु को पालन तथा शिव को संहार करने की शक्ति आपने ही प्रदान की है । इनके अतिरिक्त अन्य सुरगणों को भी सुरता आपकी ही प्रदान की हुई है ।-१७

तुम भक्तन की भक्त तुम्हारे ।
जननिहिं पुत्र प्राण ते प्यारे ।।

हे दयामयी माँ ! आप भक्तों की एकमात्र आश्रयदाता हैं । भक्त आपके हैं तथा आप भक्तों की हैं । आपको ये भक्त पुत्र प्राणों से भी अधिक प्रिय हैं । - १८

महिमा अपरम्पार तुम्हारी ।
जै जै जै त्रिपदा भय हारी ।।

हे माता गायत्री, आपकी महिमा का पार नहीं पाया जा सकता । समस्त भय समूह को नष्ट करने वाली त्रिपदा गायत्री माता आपकी केवल जय जयकार करने से समस्त भय भाग जाते हैं ।-१९

पूरित सकल ज्ञान विज्ञाना ।
तुम सम अधिक न जग में आना ।।

इस अखिल विश्व ब्रह्माण्ड में जो भी ज्ञान-विज्ञान व्याप्त है वह सब आपकी ही प्रभुता है इस विश्व में आपसे बड़ा कोई तत्व नहीं है ।

तुमहिं जानि कुछ रहै न शेषा ।
तुमहिं पाय कछु रहै न क्लेशा ।।

हे ज्ञानेश्वरी, आप अनन्त ज्ञान की भण्डार हैं । आप को जान लेने के पश्चात् ऐसा कुछ शेष नहीं रहता जिसे जाना जाय । आपको प्राप्त कर लेने के पश्चात् आपको जान लेने वाला निष्काम हो जाता है उसे कुछ भी अप्राप्य नहीं रहता ।-२१

जानत तुमहिं तुमहिं है जाई ।
पारस परसि कुधातु सुहाई ।।

हे सर्वोच्च सत्ता धारिणी माते ! आपका ज्ञान हो जाने पर साधक की सत्ता आप में ही समा जाती है उसका कोई पृथक अस्तित्व नहीं रह जाता । जिस पारसमणि के स्पर्श से कुधातु भी स्वर्ण बन जाती है उसी भाँति आपका साधक भी साध्यमय हो जाता है ।

तुम्हरी शक्ति दिपै सब ठाईं ।
माता तुम सब ठौर समाईं ।।

आपकी दिव्य शक्ति सर्वत्र व्याप्त है । तीनों लोकों में कोई स्थान ऐसा नहीं है जहाँ आपकी दिव्य शक्ति का प्रकाश न हो । हे सर्वव्यापिनी माँ गायत्री आप तीनों लोकों में समाई हुई हैं ।- २३

ग्रह नक्षत्र-ब्रह्माण्ड घनेरे ।
सब गतियान तुम्हारे प्रेरे ।।

विश्व ब्रह्माण्ड के समस्त ग्रह नक्षत्र आपकी ही गति से गतिमान हैं, तथा जीव सृष्टि के समस्त क्रिया-कलाप आपकी प्रेरणा से हो रहे हैं ।-२४

सकल सृष्टि की प्राण विधाता ।
पालक पोषक नाशक त्राता ।।

आप समस्त सृष्टि को प्राणवान बनाये हुई हैं आपकी ही प्रेरणा से सृष्टि का सृजन, पालन और संहार होता है । इस संसार से अपने भक्त को आप ही पार लगाती हैं ।

मातेश्वरी दया व्रत धारी ।
तुम सन तरे पातकी भारी ।।

हे दयामयी माँ ! आप दया का व्रत धारण किये हुए हो । आप अत्यन्त दयावान हो । आपकी दया और कृपा से बड़े से बड़ा पातकी भी संसार सागर से पार हो जाता है ।

जापर कृपा तुम्हारी होई ।
तापर कृपा करें सब कोई ।।

जिस पर आपकी कृपा होती है, उस पर सभी कृपा करते हैं । बलवान से बलवान विरोधी भी उसका बाल बाँका नहीं कर सकता ।

मन्द बुद्धि ते बुधि बल पावें ।
रोगी रोग रहित है जावें ।।

जो व्यक्ति मन्द बुद्धि, विद्याभ्यास में निर्बल तथा विक्षिप्त ही क्यों न हो आपकी शरण में आने पर एवं आपके महामंत्र गायत्री मंत्र का जप करने से मेधावी होकर विद्याभ्यास करने में पूर्ण समर्थ हो जाता है तथा रोगी, रोग मुक्त होकर पूर्ण स्वस्थ हो जाता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दारिद्र मिटै कटै सब पीरा ।
नाशै दुःख हरै भव भीरा ।।

कैसा भी दुखी और निर्धन व्यक्ति हो, आपकी शरण में आने पर उसके समस्त अभाव मिट जाते हैं तथा दुखों का निवारण हो जाता है, साथ ही भव बन्धन से भी मुक्त हो जाता है ।

गृह कलेश चित चिन्ता भारी ।
नासै गायत्री भय हारी ।।

हे विघ्न विनाशिन माँ ! आपके अनुग्रह से पारिवारिक कलह एवं समस्त दुश्चिन्ताएँ दूर हो जाती हैं । हे अभयदायिनी शक्ति आप अपने जन के भय समूह को पलभर में नष्ट कर देती हो ।

सन्तति हीन सुसन्तति पावें ।
सुख सम्पति युत मोद मनावें ।।

आपकी आराधना करने वाले व्यक्ति को आप सुसन्तति प्रदान करती हो, आपका आराधक दैवी सम्पत्तियाँ प्राप्त करता है और आनन्दमय जीवन व्यतीत करता है ।

भूत पिशाच, सबै भय खावें ।
यम के दूत निकट नहिं आवें ।।

आपके मंत्र (गायत्री मंत्र) जप करने से भूत पिशाचादि दुष्ट आत्माएँ भयभीत होकर भाग जाती हैं । गायत्री मंत्र के जपकर्त्ता के निकट यमदूत भी नहीं आ सकते क्योंकि वह तो गायत्री मंत्र के जप के प्रभाव से बैकुण्ठधाम जाने का अधिकार प्राप्त कर लेता है ।

जो सधवा सुमिरें चितलाई ।
अछत सुहाग सदा सुखदाई ।।

सौभाग्यवती स्त्री गायत्री चालीसा का एकाग्र चित्त से पाठ करती है वह अखण्ड सौभाग्य प्राप्त करती है । दाम्पत्य सुख भोगती हुई अपने जीवन को सार्थक बनाती है ।

घर वर सुख प्रद लहैं कुमारी ।
विधवा रहें सत्य व्रत धारी ।।

जो कुमारी कन्याएँ इस चालीसा का पाठ करती हैं उन्हें सुन्दर पति एवं सम्पन्न घर मिलता है । जो विधवा स्त्री इस चालीसा का पाठ करती है, उसका सतीत्व रूपी सत्य धर्म सुरक्षित रहता है ।

जयति जयति जगदम्ब भवानी ।
तुम सम और दयालु न दानी ।।

हे जगदम्बे, हे भवानी ! आपकी जय हो, जय हो । हे दयामयी ! आपके समान दयावान , दानी और उदार अन्य कोई नहीं है ।

जो सद्गुरु सों दीक्षा पावें ।
सो साधन को सफल बनावें ।।

जो व्यक्ति सद्गुरुदेव से गायत्री मंत्र की दीक्षा प्राप्त करता है, उसकी सभी साधनायें सफल होती हैं । सद्गुरुदेव के प्राप्त न होने पर आप ही को गुरु रूप मानकर साधना करता है उसके सभी कार्य सफल होते हैं ।-३६

सुमिरन करें सुरुचि बड़भागी ।
लहैं मनोरथ गृही विरागी ।।

हे गायत्री माता ! जो व्यक्ति सहज श्रद्धा सुरुचि एवं निष्ठापूर्वक आपका स्मरण करता है, वह परम सौभाग्यशाली है । हे माँ ! आपके स्मरण करने से गृहस्थ एवं गृह त्यागी दोनों ही मनोनुकूल श्रेष्ठ अनुदान प्राप्त करते हैं ।-३७

अष्ट सिद्धि नवनिधि की दाता ।
सब समर्थ गायत्री माता ।।

हे वरदायिनी माँ ! आप अपने भक्तों को आठ प्रकार की सिद्धियाँ (अणिमा, इशिला लघिमा, गरिमा, प्राप्ति, प्रकाम्य, वशित्व एवं श्रुत, दृष्ट शक्ति, प्रेरणा तथा नौ निधि (शंख, मकर, कच्छप, पद्म, महापद्म, मुकुन्द कुन्द, नील, चर्या) प्रदान करने में संमर्थ हैं ।

ऋषि मुनि जती, तपस्वी जोगी ।
आरत, अर्थी, चिंतित, भोगी ।।

ऋषि, मुनि, यति, तपस्वी, योगी, सिद्धजन तथा दुखी, अर्थ की इच्छा रखने वाला, चिन्ता मग्न तथा संसारी ।

जो जो शरण तुम्हारी आवें ।
सो सो मन वांछित फल पावें ।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जो-जो भी आपकी शरण में आता है वह मनोनुकूल फल प्राप्त कर लेता है ।

बल बुधि विद्या शील स्वभाऊ ।
धन वैभव यश तेज उछाऊ ।।

हे मातेश्वरी ! तेरी कृपा से बलवान, बुद्धिमान, विद्वान, शीलवान ये सभी अर्थ, वैभव, यश, तेजस्विता तथा उत्साह प्राप्त करते हैं -४१

सकल बढ़ें उपजें सुख नाना ।
जो यह पाठ करै धरि ध्याना ।।
यह चालीसा भक्ति युत, पाठ करै जो कोय ।
तापर कृपा प्रसन्नता, गायत्री की होय ।।

जो व्यक्ति श्रद्धा निष्ठापूर्वक आपका ध्यान करते हुए इस गायत्री चालीसा का नित्य पाठ करते हैं वे श्रेय और प्रेय (सांसारिक सुख एवं पारलौकिक सुख) दोनों ही प्राप्त करते हैं तथा उन पर सदैव आपका वरदहस्त बना रहता है ।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं ।
भर्गोदेवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात् ।

अन्धकार में प्रकाश देने वाली वेदमाता, रक्षक प्राणाधार, दुखनाशक, आनन्ददायक हम आपके सुन्दर दिव्य एवं तेजोमय रूप का ध्यान करते है । आपको प्राणार्पण करते हैं । अर्थात् आपको सब कुछ सौंपते हैं । जिससे हमारी बुद्धि स्थिर हो सके ।

आरती गायत्री जी की

जयति जय गायत्री माता ।जयति जय गायत्री माता ।
आदि शक्ति तुम अलख निरंजन जग पालन कर्त्री ।
दुख शोक भय क्लेश कलह दारिद्र दैन्य हर्त्री ।
ब्रह्म रूपिणी, प्रणति पालिनी जगद्धातृ अम्बे ।
भय भय हारी, जन हितकारी, सुखदा जगदम्बे ।।
भय हारिणि, भव तारणि अनघे, अज आनन्द राशी ।
अविकारी, अघहरी, अविचलित, अमले, अविनाशी ।।
कामधेनु सत चित आनन्दा जय गंगा गीता ।
सविता की शाश्वती शक्ति तुम सावित्री सीता ।।
ऋग् यजु साम अथर्व प्रणयित्री प्रणब महा महिमे ।
कुण्डलिनी सहस्त्रार सुषुम्ना शोभा गुण गरिमे ।।
स्वाहा, स्वधा, शची, ब्रह्माणी राधा रुद्राणी ।
जय सत रूपा वाणी विद्या कमला कल्याणी ।।
जननी हम है दीन हीन दुख दारिद के घेरे ।
यदपि कुटिल कपटी कपूत तऊ बालक हैं तेरे ।।
स्नेह सनी करुणामय माता चरण शरण दीजै ।
बिलख रहे हम शिशु सुत तेरे दया दृष्टि कीजै ।।
काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह दुर्भाव द्वेष हरिये ।
शुद्धि बुद्धि निष्पाप हृदय मन को पवित्र करिये ।।
तुम समर्थ सब भाँति तारिणी तुष्टि पुष्टि त्राता ।
सत मारग पर हमें चलाओ जो है सुख दाता ।।
जयति जय गायत्री माता । जयति जय गायत्री माता ।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गायत्री ही कामधेनु है

तेजोऽसि शुक्रमस्यमृतमसि धामनामसि ।
प्रिय देवा नामना धृष्ट देव यजनमसि ।।
गायत्र्यस्येकपदी द्विपदी त्रिपदी चतुष्पद्यपदसिनहि-
पद्यते नमस्ते तुरीयाय दर्शना यपदाय् परोरजसेऽसा
वंदो मा प्रापतु ।

-कृ ५/१४/७

हे गायत्री ! तुम तेज रूप हो, निर्मल प्रकाश रूप हो, अमृत एवं मोक्ष रूप हो, चित्तवृत्तियों का निरोध करने वाली हो, देवों की प्रिय आराध्य हो, देव पूजन का सर्वोत्तम साधन हो ।

हे गायत्री ! तुम इस विश्व ब्रह्माण्ड की स्वामिनी होने से द्विपदी, समस्त प्राण-शक्ति का संचार करने से त्रिपदी और सूर्य मण्डल के अन्तर्गत परम तेजस्वी पुरुषों की आत्मा होने से चतुष्पदी हो । रज से परे हे भगवती श्रद्धालु साधक सदा तुम्हारी उपासना करते हैं ।

भूलोकस्यास्य गायत्री कामधेनुर्मता बुधैः ।
लोक आश्रायणे नामुं सर्व मेवाधि गच्छति ।।

-गायत्री मंजरी

"विद्वानों ने गायत्री को भूलोक की कामधेनु माना है । उसका आश्रय लेकर हम सब कुछ प्राप्त कर सकते हैं ।"

पुराणों में उल्लेख है कि सुरलोक में देवताओं के पास कामधेनु गौ है । वह अमृतोपम दूध देती है जिसे पीकर देवता लोग सदा सन्तुष्ट, प्रसन्न तथा सुसम्पन्न रहते हैं । इस गौ में यह विशेषता है कि उसके समीप कोई अपनी कुछ कामना लेकर जाता है तो उसकी इच्छा तुरन्त पूरी हो जाती है । कल्पवृक्ष के समान कामधेनु गौ भी अपने निकट पहुँचने वालों की मनोवांछा पूरी करती है ।

यह कामधेनु गौ गायत्री ही है । इस महाशक्ति की जो देवता, दिव्य स्वभाव वाला मनुष्य उपासना करता है, वह माता के स्तनों के समान आध्यात्मिक दुग्धधारा का पान करता है । उसे किसी प्रकार का कोई कष्ट नहीं रहता । आत्मा स्वतः आनन्द स्वरूप है । आनन्द मग्न रहना उसका प्रमुख गुण है । दुःखों के हटने और मिटते ही वह अपने मूल स्वरूप में पहुँच जाता है । देवता स्वर्ग में सदा आनन्दित रहते हैं । मनुष्य भी भूलोक में उसी प्रकार आनन्दित रह सकता है । यदि उसके कष्ट कारणों का निवारण हो जाय । गायत्री कामधेनु मनुष्य के सभी कष्टों का समाधान कर देती ।

त्रिविध दुःखों का निवारण

समस्त दुःखों के कारण तीन हैं- (१) अज्ञान, (२) अशक्ति, (३) अभाव । इन तीनों कारणों को जो जिस सीमा तक अपने से दूर करने में समर्थ होगा, वह उतना ही सुखी बन सकेगा ।

अज्ञान के कारण मनुष्य का दृष्टिकोण दूषित हो जाता है, वह तत्वज्ञान से अपरिचित होने के कारण उल्टा-उल्टा सोचता है और उल्टे काम करता है, तदनुसार उलझनों में अधिक फँसता जाता है और दुःखी बनता है । स्वार्थ, भोग, लोभ, अहंकार, अनुदारता और क्रोध की भावनायें मनुष्य को कर्त्तव्यच्युत करती हैं और वह दूरदर्शिता को छोड़कर क्षणिक क्षुद्र एवं हीन बातें सोचता है तथा वैसे ही काम करता है । फलस्वरूप उसके विचार और कार्य पापमय होने लगते हैं, पापों का निश्चित परिणाम दुःख है । दूसरी ओर अज्ञान के कारण वह अपने, दूसरे के सांसारिक गति-विधि के मूल हेतुओं को नहीं समझ पाता । फलस्वरूप असम्भव आशायें, तृष्णायें, कल्पनायें किया करता है । इन उल्टे दृष्टिकोण के कारण साधारण-सी, मामूली-सी बातें उसे बड़ी दुःखमय दिखाई देती हैं, जिसके कारण वह रोता-चिल्लाता रहता है । आत्मियों की मृत्यु, साथियों की भिन्न रुचि, परिस्थितियों का उतार-चढ़ाव स्वाभाविक है, पर अज्ञानी सोचता है कि जो मैं चाहता हूँ वही सदा होता रहे, कोई प्रतिकूल बात सामने आवे ही नहीं, इस असम्भव आशा के विपरीत घटनायें जब भी घटित होती हैं तभी वह रोता-चिल्लाता है । तीसरे अज्ञान के कारण भूलें भी अनेक प्रकार की होती हैं, समीपस्थ

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सुविधाओं से वंचित रहना पड़ता है, यह भी दुःख का हेतु है । इस प्रकार अनेकों दुःख मनुष्य को अज्ञान के कारण प्राप्त होते हैं ।

अशक्ति का अर्थ है-निर्बलता, शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, बौद्धिक, आत्मिक निर्बलताओं के कारण, मनुष्य अपने स्वाभाविक, जन्मसिद्ध अधिकारों का भार अपने कंधे पर उठाने में समर्थ नहीं होता, फलस्वरूप उसे उनसे वंचित रहना पड़ता है । स्वास्थ्य खराब हो, बीमारी ने घेर रखा हो, तो स्वादिष्ट भोजन, रूपवती तरुणी, मधुर गीतवाद्य, सुन्दर दृश्य निरर्थक हैं, धन-दौलत का कोई कहने लायक सुख उसे नहीं मिल सकता । बौद्धिक निर्बलता हो तो साहित्य, काव्य, दर्शन, मनन, चिन्तन का रस प्राप्त नहीं हो सकता । आत्मिक निर्बलता हो तो सत्संग, प्रेम, भक्ति आदि का आत्मानन्द दुर्लभ है । इतना ही नहीं, निर्बलों को मिटा डालने के लिए प्रकृति का 'उत्तम की रक्षा' सिद्धान्त काम करता है । कमजोर को सताने और मिटाने के लिए अनेकों तथ्य प्रगट हो जाते हैं । निर्दोष, भले और सीधे साधे तत्व भी उसके प्रतिकूल पड़ते हैं । सर्दी, जो बलवानों की बल वृद्धि करती है, रसिकों को रस देती है, वह कमजोरों को निमोनियाँ गठिया आदि का कारण बन जाती है । जो तत्व निर्बलों के लिए प्राणघातक हैं, वे ही बलवालों को सहायक सिद्ध होते हैं । बेचारी निर्बल बकरी को जंगली जानवरों से लेकर जगत्माता भवानी दुर्गा तक चट कर जाती है और सिंह को वन्य पशु ही नहीं बड़े-बड़े सम्राट तक अपने राज-चिन्ह में धारण करते हैं । आशक्त हमेशा दुःख पाते हैं, उनके लिए भले तत्व भी भयप्रद सिद्ध नहीं होते हैं ।

अभाव जन्य दुःख है—पदार्थों का अभाव । अन्न, वस्त्र, जल, मकान, पशु, भूमि, सहायक, मित्र, धन, औषधि, पुस्तक, शस्त्र, शिक्षक आदि के अभाव में विविध प्रकार की पीड़ाएँ, कठिनाइयाँ भुगतनी पड़ती हैं । उचित आवश्यकताओं को कुचल कर-मन मारकर बैठना पड़ता है और जीवन के महत्त्वपूर्ण क्षणों को मिट्टी के मोल नष्ट करना पड़ता है । योग और समर्थ व्यक्ति भी साधनों के अभाव में अपने को लुंज-पुंज अनुभव करते हैं और दुःख उठाते हैं ।

गायत्री कामधेनु है जो उसकी पूजा, उपासना, आराधना और अभिभावना करता है वह प्रतिक्षण माता का अमृतोपम दुग्ध-पान करने का आनन्द लेता है और समस्त अज्ञानों, अशक्तियों और अभावों के कारण उत्पन्न होने वाले कष्टों से छुटकारा पाकर मनोवांछित फल प्राप्त करता है ।

गायत्री द्वारा सतोगुण वृद्धि के दिव्य लाभ

गायत्री सद्बुद्धिदायक मन्त्र है । वह साधक के मन को, अन्तःकरण, मस्तिष्क को, विचारधारा को, कृपा-प्रणाली को सन्मार्ग की ओर प्रेरित करती है । सत्-तत्व की वृद्धि करना उसका प्रधान कार्य है । साधक जब इस महामन्त्र के अर्थ पर विचार करता है तो वह समझ जाता है कि संसार की सर्वोपरि समृद्धि और जीवन की सबसे बड़ी सफलता सद्बुद्धि को प्राप्त करना है । यह मान्यता सुदृढ़ होने पर उसकी इच्छा शक्ति इसी तत्व को प्राप्त करने के लिए लालायित होती है । यह आकांक्षा मनः लोक में एक प्रकार का चुम्बकत्व उत्पन्न करती है । उस चुम्बक की आकर्षण शक्ति से निखिल आकाश के ईश्वर तत्व में भ्रमण करने वाली सतोगुणी विचार-धारायें, भावनायें और प्रेरणायें खिंच-खिंच कर उस स्थान पर जमा होने लगती हैं । विचारों की चुम्बक शक्ति का विज्ञान सर्वविदित है । एक जाति के विचार अपने सजातीय विचारों को आकाश से खींचते हैं, फलस्वरूप संसार के मृत और जीवित सत्पुरुषों के फैलाये हुए अविनाशी संकल्प जो शून्य में सदैव भ्रमण करते रहते हैं, गायत्री साधक के पास दैवी वरदान की तरह अनायास ही आ-आकर जमा होते रहते हैं और संचित पूँजी की भाँति उनका एक बड़ा भण्डार जमा होता है ।

शरीर और मन में सतोगुण की मात्रा बढ़ने का फल आश्चर्यजनक होता है । स्थूल दृष्टि से देखने पर यह लाभ न तो समझ पड़ता है, न अनुभव होता है और न उसकी कोई महत्ता मालूम पड़ती है, पर जो

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सूक्ष्म शरीर के सम्बन्ध में अधिक जानकारी रखते हैं, वे जानते हैं कि तम और रज का घटना और उनके स्थान पर सत् तत्व का बढ़ना ऐसा ही है, जैसे शरीर में भरे हुए रोग, मल, विष, विजातीय पदार्थ घट जाना और उनके स्थान पर शुद्ध सजीव, परिपुष्ट रक्त और वीर्य की मात्रा बड़े परिणाम में बढ़ जाना । ऐसा परिवर्तन चाहे किसी को खुली आँखों से दिखाई भले ही न दे, पर उसका स्वास्थ्य की उन्नति पर जो चमत्कारी प्रभाव पड़ेगा, उसमें कोई सन्देह नहीं किया जा सकता । इस प्रकार के लोभ को यदि ईश्वर-प्रदत्त कहा जाय तो किसी को आपत्ति नहीं होनी चाहिए । शरीर का कायाकल्प करना एक वैज्ञानिक कार्य है, उसके कारण सुनिश्चित लाभ होगा ही । यह लाभ दैवी है या मानवी, इस पर जो मतभेद हो सकता है, उसका कोई महत्व नहीं । गायत्री द्वारा सत्गुण बढ़ता है और निम्नकोटि के तत्वों का निवारण होता है । फलस्वरूप साधक का एक सूक्ष्म कायकल्प हो जाता है । इस प्रक्रिया द्वारा होने वाले लाभों को वैज्ञानिक लाभ कहें या दैवी वरदान ? इस प्रश्न पर झगड़ने से कोई लाभ नहीं, बात एक ही है । कोई कार्य किसी भी प्रकार हो, उससे ईश्वरीय सत्ता पृथक् नहीं है, इसलिए संसार के सभी कार्य ईश्वर-इच्छा से हुए कहे जा सकते हैं । गायत्री साधना द्वारा होने वाले लाभ वैज्ञानिक आधार पर प्राप्त हुए भी कहे जाते हैं और ईश्वरीय कृपा के आधार पर हुए कहने पर भी कोई दोष नहीं ।

शरीर में सत् तत्व की अधिवृद्धि होने से शरीरचर्या की गतिविधि में काफी हेर-फेर हो जाता है । इन्द्रियों के भोगों में भटकने की गति मन्द हो जाती है । चटोरपन तरह-तरह के स्वादों के पदार्थ खाने के लिए मन ललचाते रहना, बार-बार खाने की इच्छा होना, अधिक मात्रा में खा जाना, भक्षाभक्ष का विचार न रहना, सात्त्विक पदार्थों में अरुचि और चटपटे, मीठे, गरिष्ठ पदार्थों में रुचि जैसी बुरी आदतें धीरे-धीरे कम होने लगती हैं । हल्के सुपाच्य, सरस, सात्त्विक भोजनों से उसे तृप्ति मिलती है और राजसी, तामसी खाद्यों से उसे घृणा हो जाती है । जिह्वेन्द्रिय वश में आने से कुपथ्य का एक भारी संकट दूर हो जाता है । इसी प्रकार कामेन्द्रिय की उत्तेजना सत्गुणी विचारों के कारण संयम हो जाती है । कुमार्ग में, व्यभिचार में, वासना में मन कम दौड़ता है, ब्रह्मचर्य के प्रति श्रद्धा बढ़ती है । फलस्वरूप वीर्य रक्षा का मार्ग प्रशस्त हो जाता है । कामेन्द्रिय और स्वादेन्द्रिय दो ही इन्द्रियाँ प्रधान हैं । इनका संयम होना स्वास्थ्य-रक्षा और शरीर वृद्धि का प्रधान हेतु है । इनके साथ-साथ परिश्रम, स्नान, निद्रा, सोना, जागना, सफाई, सादगी और अन्य दिनचर्याएँ भी सतोगुणी हो जाती हैं, जिनके कारण आरोग्य और दीर्घ जीवन की जड़ें मजबूत होती हैं ।

मानसिक क्षेत्र में सतोगुणों की वृद्धि के कारण काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर, स्वार्थ आलस्य, व्यसन, व्यभिचार, छल, झूँठ, पाखण्ड, चिन्ता, भय, शोक, कदर्य सरीखे दोष कम होने लगते हैं । इनकी कमी के साथ-साथ संयम, नियम, त्याग, समता, निरहंकारता, सादगी, निष्कपटता, सत्यनिष्ठा, निर्भयता, निश्चिन्तता, निरालस्यता, शौर्य, विवेक, साहस, धैर्य, दया, प्रेम, सेवा, उदारता, कर्त्तव्य-परायणता, आस्तिकता सरीखे सद्गुण बढ़ने लगते हैं । इस मानसिक कायाकल्प का परिणाम यह होता है कि दैनिक जीवन में प्रायः नित्य ही आते रहने वाले अनेकों दुःखों का सहज ही समाधान हो जाता है । इन्द्रिय संयम और संयत दिनचर्या के कारण शारीरिक रोगों का बहुत बड़ा निराकरण हो जाता है । विवेक जागृत होते अज्ञानजन्य चिन्ता, शोक, भय, आशंका, मोह, ममता, हानि आदि के दुःखों से छुटकारा मिल जाता है । ईश्वर-विश्वास के कारण मति स्थिर रहती है और भावी जीवन के बारे में निश्चिन्तता बनी रहती है । धर्म-प्रवृत्ति के कारण पाप, अन्याय, अनाचार नहीं बन पड़ते । फलस्वरूप राज-दण्ड, समाज-दण्ड, आत्म-दण्ड और ईश्वर-दण्ड की चोटों से पीड़ित नहीं होना पड़ता । सेवा, नम्रता, उदारता, दान, ईमानदारी, लोक-हित आदि गुणों के कारण दूसरों को लाभ पहुँचता है, हानि की आशंका नहीं रहती । इससे प्रायः सभी लोग उनके कृतज्ञ, प्रशंसक, सहायक, भक्त एवं रक्षक होते हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पारस्परिक सद्भावनाओं के परिवर्तन से आत्मा को तृप्त करने वाले प्रेम और सन्तोष नामक रस दिन-दिन अधिक मात्रा में उपलब्ध होकर जीवन को आनन्दमय बनाते चलते हैं । इस प्रकार शारीरिक और मानसिक क्षेत्रों में सत् तत्व की वृद्धि होने से दोनों ओर आनन्द का स्रोत उमड़ता है और गायत्री का साधक उससे निमग्न रहकर आत्म-सन्तोष का, परमानन्द का रसास्वादन करता रहता है ।

आत्मा ईश्वर का अंश होने से उन सब शक्तियों को बीजरूप में अपने अन्दर छिपाये रहता है, जो ईश्वर में होती हैं । वे शक्तियाँ सुप्तावस्था में रहती हैं और मानसिक-तापों के, विषय-विकारों के, दोष-दुर्गुणों के ढेर में दबी हुई अज्ञान रूप से पड़ी रहती हैं । लोग समझते हैं कि हम दीन-हीन, तुच्छ और अशक्त हैं, पर जो साधक मनोविकारों का पर्दा हटाकर निर्मल आत्म-ज्योति के दर्शन करने में समर्थ होते हैं, वे जानते हैं कि सर्वशक्तिमान् ईश्वरीय ज्योति उनकी आत्मा में मौजूद है और वे परमात्मा के सच्चे उत्तराधिकारी हैं । अग्नि के ऊपर राख ढक दी जाय तो वह छिप जाती है, पर जब उस राख को हटा दिया जाय तो फिर दहकता हुआ अंगार प्रगट हो जाता है । वह अंगार छोटा होते हुए भी भयंकर अग्निकाण्डों की सम्भावना से युक्त होता है । गायत्री साधना से सतोगुण की वृद्धि होती है और आत्मा पर पड़े हुए विकारों का नवीन आवरण हट जाता है । यह पर्दा फटते ही तुच्छ मनुष्य महान आत्मा (महात्मा) बन जाता है, चूँकि आत्मा से अनेकों ज्ञान, अज्ञान, साधारण, असाधारण, अद्भुत, आश्चर्यजनक शक्ति के भण्डार छिपे पड़े हैं वे खुल जाते हैं और वह सिद्ध योगी के रूप में दिखाई पड़ता है । सिद्धियाँ प्राप्त करने के लिए बाहर से कुछ लाना नहीं पड़ता, किसी देव-दानव की कृपा की जरूरत नहीं पड़ती, केवल अन्तकरण पर पड़े हुए आवरणों को हटाना पड़ता है । गायत्री की सतोगुणी साधना का सूर्य तामसिक अन्धकार के पर्दे को हटा देता है और आत्मा का सहज ईश्वरीय रूप प्रगट हो जाता है । आत्मा का यह निर्मल रूप सभी ऋद्धि-सिद्धियों से परिपूर्ण होता है ।

गायत्री द्वारा हुई सतोगुण की वृद्धि अनेक प्रकार के आध्यात्मिक और सांसारिक समृद्धियों की जननी है । शरीर और मन की शुद्धि सांसारिक जीवन को अनेक दृष्टियों से सुख शान्तिमय बनाती है । आत्मा में विवेक और आत्मबल की मात्रा बढ़ जाने से अनेक ऐसी कठिनाइयाँ जो दूसरों को पर्वत के समान भारी मालूम पड़ती हैं, उस आत्मवान् व्यक्ति के लिये तिनके के समान हल्की बन जाती हैं । उसका कोई काम रुका नहीं रहता या तो उसकी इच्छा के अनुसार परिस्थिति बदल जाती है या परिस्थिति के अनुसार अपनी इच्छा को बदल लेता है । क्लेश का कारण इच्छा और परिस्थिति के बीच प्रतिकूलता का होना ही तो है । विवेकवान् इस संघर्ष को इन दोनों में से किसी न किसी को अपनाकर उस संघर्ष को टाल देता है और सुख पूर्वक जीवन व्यतीत करता है । उसके लिए इस पृथ्वी पर भी स्वर्गीय आनन्द की सुरसरि बहने लगती है ।

आत्म-बल और परमात्मा की प्राप्ति

गायत्र्युपासनाकरणादात्म भक्तिर्विविर्धते ।
प्राप्यते क्रयशोऽजस्य सामीप्यं परमात्मनः ।।

(गायत्र्युपासना करणात्) गायत्री की उपासना करने से (आत्म-शक्ति) आत्मबल (विवर्धते) बढ़ता है (क्रमशः) धीरे-धीरे (अजस्य) जन्म बन्धन रहित (परमात्मनः) परमात्मा की (सामीप्यं) समीपता (प्राप्यते) प्राप्त होती है ।

पीछे बताया जा चुका है कि त्रिगुणात्मक और चतुर्विधि होते हुए भी गायत्री का मूल स्वरूप ब्रह्मवत् है । उपासना में उसके इस मूल रूप की ही धारणा की जाती है । इसलिए उपासक के अन्तः-करण में सत् तत्वों की ही वृद्धि होती है ।

जिस विचारधारा में मनुष्य परिभ्रमण करता है, वैसा ही स्वयं बनने लगता है । जो आदर्श, सिद्धान्त, लक्ष, श्रद्धापूर्वक अन्तःभूमि में धारण किये जाते हैं उनका एक साँचा तैयार हो जाता है । इस साँचे में गीली मिट्टी की तरह मनुष्य ढलने लगता है और यदि कुछ समय लगातार, दृढ़ता एवं श्रद्धापूर्वक यह प्रयत्न जारी रहे तो जीवन पकी हुई प्रतिमूर्ति की तरह ठीक उसी प्रकार का बन जाता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

चोरी, डकैती, ठगी, व्यभिचार, बेईमानी आदि दुष्कर्म कोई व्यक्ति यकायक नहीं कर बैठता । विचार बहुत पूर्व से उसके मन में चक्कर लगाते हैं इससे धीरे-धीरे उसकी प्रवृत्ति इस ओर ढलती जाती है और एक दिन सफल बदमाश बन जाता है । यही बात भलाई के मार्ग में होती है । बहुत समय तक स्वाध्याव, सत्संग, चिन्तन, मनन करने के उपरान्त उत्तम विचारों के संस्कार दृढ़ होते हैं तब कहीं प्रत्यक्ष जीवन् में वे लक्षण प्रगट होते हैं और वह वैसा बन जाता है । गायत्री की साधना से सतोगुण की ब्राह्मी भावनाएँ अन्त: प्रदेश में अपना केन्द्र स्थापित करती हैं । उन भावनाओं के अनुरूप आन्तरिक जीवन बन जाता है उसी प्रकार की प्रवृत्तियाँ बाह्य जीवन में भी दृष्टिगोचर होती हैं ।

पदार्थ विज्ञान के ज्ञाताओं को विदित है कि समान श्रेणी के पदार्थों की सहायता से सूक्ष्म तत्वों का आकर्षण और प्रगटीकरण हो सकता है । गन्धक, फास्फोरस, पुटाश, सरीखे अग्नितत्व प्रधान पदार्थों का अमुक प्रक्रिया के साथ संघर्ष करने से विश्वव्यापी सूक्ष्म अग्नितत्व चिनगारी के रूप में प्रगट हो जाता है । ताँबे और जस्ते के तारों को अमुक मसालों के साथ सम्बन्धित करने से उनमें बिजली धारा बहने लगती है । इसी प्रकार शब्द और विचारों की सहायता से चैतन्य तत्वों का आकर्षण और प्रगटीकरण हो सकता है । एक लेखक या वक्ता एक विशेष अनुभूति के साथ लोगों के सामने अपने विचार इस प्रकार रखता है कि वे विविध भावावेशों में डूबने, उतराने लगते हैं । हँसते को रुला देना और रोते को हँसा देना कुशल वक्ता के बायें हाथ का खेल है । इसी प्रकार क्रोध, घृणा, प्रतिहिंसा या दया, क्षमा, उपकार आदि के भावावेश शब्द और विचारों की सहायता से किसी व्यक्ति में पैदा किये जा सकते हैं ।

इस प्रकार भावनाओं का आवागमन, शब्द और विचारों की सहायता से होता है, संगीत, नृत्य, गान, रोदन, हुंकार, गर्जना, गाली, ललकार, विनय, मुस्कराहट, अट्टहास, तिरस्कार, अहंकार से सने हुए शब्द सुनने वालों के मन में विविध प्रकार के भाव उत्पन्न करते हैं और उन भावों से उत्तेजित होकर मनुष्य बड़े-बड़े दुस्साहसपूर्ण कार्य कर डालते हैं । अब विचार कीजिए कि शब्द तो एक ध्वनि मात्र था, उसने सुनने वाले को कुछ से कुछ कैसे बना दिया ? बात यह है कि शब्द और विचार मिलकर एक ऐसा शक्तिशाली माध्यम बन जाते हैं जो सूक्ष्म चैतन्य जगत में से उसी प्रकार के तत्वों को खींच लाते हैं और जिस स्थान पर उन्हें पटका गया था वहाँ प्रगट हो जाते हैं । दूसरों के ऊपर ही नहीं—अपने ऊपर भी अमुक प्रकार के चैतन्य तत्वों को इसी माध्यम द्वारा भरा जा सकता है । इससे प्रगट है कि परमाणुमय भौतिक जगत की भाँति, संकल्पमय चैतन्य जगत में भी वैसे माध्यम मौजूद हैं जो अदृश्य तत्वों और शक्तियों को खींच लाते हैं और उनका प्रत्यक्षीकरण कर देते हैं ।

गायत्री की शब्दावली एक ऐसा ही माध्यम है । इसकी शब्द शृंखला का गुंथन इस प्रकार हुआ है कि उसका उच्चारण होते ही, कुछ विशिष्ट प्रकार की भावना ग्रन्थियाँ उत्तेजित होती हैं और यह मन्त्रोच्चारण एक ऐसा शक्तिशाली माध्यम सूत्र बन जाता है जिसके द्वारा गायत्री की ब्राह्मी शक्ति सूक्ष्म लोक से खिंच-खिंच कर मनुष्य के अन्त:करण में जमा होने लगती है और वह दिव्य तत्वों से ओत-प्रोत होने लगता है ।

आत्मा परमात्मा का एक स्फुलिंग है । उसे सजातीय पदार्थ का सान्निध्य मिलता है तो उसकी शक्ति बढ़ना स्वाभाविक है । यह एक प्रसिद्ध सिद्धान्त है कि निर्जीव वस्तुयें एक और एक मिलकर दो और सजीव प्राणी एक और एक मिलकर ग्यारह हो जाते हैं । चेतन्य तत्व से बना हुआ आत्मा जड़ पदार्थों के संचय से, धन दौलत से सम्पन्न होने पर बलवान नहीं बनती, उसमें बल तो तब बढ़ता है, जब सूक्ष्म-चेतना का अधिक संचय उसके समीप एकत्रित होता है । गायत्री मन्त्र द्वारा यही कार्य होता है । आत्मा के समीप सत्, चित्त और आनन्दमय तत्वों का भण्डार प्रचुर मात्रा में जमा होने लगता है । यह संचय ही आत्मबल कहलाता है । इस प्रकार वेद माता गायत्री की कृपा से साधक आत्म-बल सम्पन्न बन जाता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

नौ निधियों की प्राप्ति

शौचं शान्तिर्विवेकश्चैतल्लाभ त्रयमात्मिकम् ।
पश्चादावाप्यते नूनं सुस्थिरं तदुपासकम् ।।

(सुस्थिर) मन को वश में रखने वाले (तदुपासकः) उस गायत्री के उपासक को (पश्चात्) बाद में (शौचं) पवित्रता (शान्तिः) शान्ति (च) और (विवेकः) विवेक (एतत्) ये (आत्मिकं) आत्मिक (लाभत्रयं) तीन लाभ (नूनं) निश्चय से (आवाप्यते) प्राप्त होते हैं ।

कार्येषु साहसः स्थैर्यं कर्मनिष्ठा तथैव च ।
एते लाभाश्चवै तस्माज्जायन्तेमानसास्त्रयः ।।

(कार्येषु साहसः) कार्यों में साहस (स्थैर्य) स्थिरता (तथैव च) और वैसे ही (कार्यनिष्ठा) कार्यनिष्ठा (एते) ये (त्रयः) तीन (लाभाः) लाभ (मानसाः) मन सम्बन्धी (तस्मात्वै) उससे (जायन्ते) प्राप्त होते हैं ।

पुष्कलं धनसमृद्धिः सहयोगश्च सर्वतः ।
स्वास्थ्यं वा त्रय एतेस्युस्तस्माल्लाभाश्चलौकिकाः ।।

(पुष्कलं) पर्याप्त (धन समृद्धिः) धन की समृद्धि (सर्वतः) सब ओर से (सहयोगः) सहयोग (च) और (स्वास्थ्यं वा) स्वस्थता (एते) ये (त्रयः) तीन (लौकिकाः) सांसारिक (लाभाः) लाभ (तस्मात्) उससे (स्युः) होते हैं ।

साधारण शारीरिक बल से सम्पन्न व्यक्ति अपने बाहुबल से बड़े-बड़े कठिन कार्य कर डालता है और आश्चर्यजनक सफलतायें प्राप्त कर लेता है, फिर आत्म-बल सम्पन्न व्यक्ति के बारे में तो कहना ही क्या है ? शरीर जड़ पदार्थों का बना हुआ है, उसका बल भी जड़ एवं सीमित है । यह सीमा इतनी छोटी है कि पशु-पक्षी और छोटे दर्जे के जीव-जन्तु भी इस दृष्टि से बलवान से बलवान मनुष्य की अपेक्षा अधिक बलवान होते हैं । कुत्ते की सी घ्राणशक्ति, हिरन की-सी चौकड़ी, बैल जैसी मजबूती, सिंह जैसी वीरता, मनुष्य में कहाँ होती है ? और मछली की तरह जल में तथा पक्षियों की तरह हवा में वह आवागमन कहाँ कर सकता है ? फिर भी मनुष्य सब प्राणियों से श्रेष्ठ-सृष्टि का मुकुट-मणि बना बैठा है । इसका कारण उसका आत्मिक बल ही है ।

यह आत्मिक बल, गायत्री तत्व को अधिक मात्रा में धारण करने से प्राप्त होता है । इस धारणा के और भी अनेक उपाय हैं जिनके द्वारा संसार के महापुरुषों ने अपने को आत्मिक बल से सम्पन्न बनाकर बड़े-बड़े पुरुषार्थ किये हैं, उन अनेक उपायों में से एक सर्व सुलभ उपाय अध्यात्म विद्या के पारंगत आचार्यों ने ढूँढ़ निकाला है । उस उपाय का नाम है—गायत्री साधना । इस साधना से आत्मा में सात्त्विक चैतन्यता की मात्रा बढ़ती जाती है, फलस्वरूप जीवन की सभी दिशाओं में उसका प्रगति-परिचय मिलने लगता है । जब शरीर में रक्त बढ़ता है तो हाथ, पाँव, छाती, नाक, गाल, ओठ सभी में चैतन्यता, पुष्टि और लालिमा दृष्टिगोचर होने लगती है । जब कमरे में प्रकाश जलता है तो सभी खिड़कियों में से उसकी रोशनी बाहर निकलती है । आत्मा में जब बल बढ़ता है तो वह भी कई दिशाओं में उत्साहवर्धक ढंग से प्रगट होता है ।

जीवन की प्रमुख दिशाएँ तीन होती हैं (१) आत्मिक, (२) बौद्धिक, (३) सांसारिक । इन तीनों दिशाओं में आत्म-बल बढ़ने से आनन्ददायक परिणाम प्राप्त होते हैं । इन तीनों दिशाओं में तीन-तीन लक्षण ऐसे दिखाई पड़ते हैं जिनसे जीवन सर्व सुखी बन जाता है । इन नौ सम्पदाओं को नव निद्धि भी कह सकते हैं । सिद्धियाँ देवताओं को प्राप्त होती हैं, ऋद्धियाँ असुरों को मिलती हैं और निद्धियाँ मनु की सन्तान मानव प्राणी को प्राप्त होती हैं । आत्मिक क्षेत्र की तीन निद्धियाँ (१) विवेक, (२) पवित्रता, (३) शान्ति हैं । बौद्धिक क्षेत्र की (१) साहस, (२) स्थिरता, (३) कर्त्तव्यनिष्ठा हैं और सांसारिक क्षेत्र की तीन निद्धियाँ (१) स्वास्थ्य, (२) समृद्धि, (३) सहयोग हैं । यह नौ लक्षण जीवन की सफलता के हैं । इन्हीं नौ गुणों को ब्राह्मण के नव गुण बताया है । भगवान् रामचन्द्रजी ने धनुष तोड़ने पर क्रुद्ध परशुरामजी से उनके नव गुणों की प्रशंसा करके उन्हें प्रसन्न किया था ।

"नवगुण परम पुनीत तुम्हारे ।"

(१) **विवेक**-जब आत्मा में गायत्री तत्व की स्थापना होती है तो अन्तःकरण में विवेक जागृत होता है । सत्-असत् के भेद स्पष्ट दिखाई पड़ने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

लगता है । शास्त्र, सम्प्रदाय, वर्ग, संस्कार, स्वार्थ आदि की चहार दीवारियों को छलाँग कर सत्य का दर्शन करने वाली ऋतम्भरा बुद्धि जागृत हो जाती है । उचित, न्याय-अन्याय, कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य, धर्म-अधर्म के भेद को अनेकों व्यक्ति ठीक प्रकार नहीं समझ पाते । थोड़ी सी अड़चन से उनकी बुद्धि अर्जुन की भाँति मोहग्रस्त हो जाती है, परन्तु जिसमें विवेक की मात्रा बढ़ गई है, वह भ्रमित नहीं होता । वस्तुस्थिति की गहराई तक वह आसानी से पहुँच जाता है । सूक्ष्म मेघा, तत्व दृष्टि अथवा ऋतम्भरा बुद्धि से उसकी आत्मा सम्पन्न होती है यह प्रथम निद्धि है ।

(२) **पवित्रता**- भीतरी और बाहरी दो प्रकार की पवित्रता होती है । छल, कपट, दुराव, असत्य, दंभ आदि के कारण अन्तःप्रदेश गन्दा हो जाता है । भीतर कुछ तथा बाहर कुछ भाव रहने से मनोभूमि में गन्दगी भर जाती है । इसकी दुर्गन्ध कलुषता से नाना प्रकार के आन्तरिक रोग उपज पड़ते हैं । ऐसे लोग—चोरी, व्यभिचार, शोषण, लोभ, क्रोध, मद, मत्सर आदि घातक शत्रुओं के आसानी से शिकार हो जाते हैं । गायत्री तत्व की वृद्धि के कारण वह आन्तरिक अपवित्रता नष्ट होती है और स्वभाव बालकों की तरह सरल, कोमल, स्वच्छ, निष्कपट बनता है । जो बात पेट में वही बाहर—जो बाहर वही पेट में । इस प्रकार के निष्कपट स्वभाव वाले व्यक्तियों का अन्तःकरण बड़ा निर्मल रहता है और निर्मल हृदय में अपने आप दैवी सम्पदाओं का निवास होने लगता है ।

बाह्य पवित्रता की दिशा में भी ऐसे मनुष्यों की अभिरुचि विशेष रूप से आकृष्ट रहती है । स्थान की, शरीर की, वस्त्रों की, प्रयोजनीय वस्तुओं की सफाई की ओर उनका बड़ा ध्यान रहता है । प्रकृति के बनाये हुए सुन्दर, स्वच्छ पदार्थों में उन्हें स्वभावतः प्रेम हो जाता है । बालक, वृक्ष, पौधे, पशु, पक्षी, नदी, पर्वतों की सुन्दरता उन्हें बहुत सुहाती है । उनका दृष्टिकोण स्वच्छ-पवित्र होने से उन्हें विचारों की, कार्यों की, साधनों की स्वच्छता ही पसन्द आती है ।

(३) **शान्ति**-साधारण लोग जहाँ साधारण हानि-लाभ से उत्तेजित, अशान्त, व्याकुल एवं बेकाबू हो जाते हैं, हर्ष, शोक, क्रोध, निराशा, भय, चिन्ता, मद आदि के तूफान उनके भीतर छोटी-छोटी घटनाओं के कारण उठते रहते हैं, जिससे उनके चित्त में सदा अस्थिरता रहती है, विश्राम न मिलने के कारण आत्मा को बड़ा क्लेश रहता है, परन्तु अन्तःप्रदेश में गायत्री तत्व की अधिकता हो जाने से यह स्थिति नहीं रहती । परिवर्तनशील संसार, वस्तुओं का अवश्यम्भावी रूपान्तर, त्रिगुणात्मक सृष्टि का वैचित्र्य जब उनकी समझ में भली प्रकार आ जाता है फिर उन्हें न हर्ष का, न शोक का कोई भी अवसर व्यथित नहीं बनाता । बाह्य विक्षोभ आ जाय तो भी उनका मानसलोक शान्त रहता है । ऐसी शान्ति को द्वन्द्वातीत, स्थिति प्रज्ञ, समत्व योग, परमानन्द आदि नामों से पुकारते हैं ।

(४) **साहस**-शक्तियाँ होते हुए भी कितने ही मनुष्य आत्महीनता, तुच्छता, दीनता, संकोच, कायरता आदि मानसिक कमजोरियों के कारण सदा डरते, झिझकते रहते हैं और कठिनाई चाहे कितनी ही छोटी हो पर वे इसे बहुत बड़ी मान बैठते हैं और अपने को उसे पार करने में असमर्थ अनुभव करते हैं । यह साहसहीनता बौद्धिक जगत में एक ऐसी आपत्ति है जिसके कारण अनेकों प्रकाशवान् दीपक असमय में ही बुझ जाते हैं, अनेकों सुरभित मनहारिणी कलियाँ अपने जौहर प्रकट करने से पहले ही मुर्झा जाती हैं । योग्यताओं का अभाव जीवनोन्नति में जितना बाधक होता है, उससे कहीं अधिक बाधक साहस का अभाव होता है । यह अन्धकार गायत्री तत्व की आध्यात्मिक किरणें प्रकाशित होने के साथ-साथ विलीन होता चलता है । साधक क्रमशः अधिक स्वावलम्बी, आत्मविश्वासी, साहसी, निर्भर बनता है । वह न किसी को त्रास देना पसन्द करता है और न सहना । आत्मगौरव से आध्यात्मिक महानता से उसका मनोलोक आलोकित हो उठता है तदनुसार वह मनुष्योचित अधिकारों के लिए संघर्ष, प्रयत्न और परिश्रम करता हुआ परतंत्रताओं के बन्धनों

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

को काटता हुआ स्वतन्त्रता की ओर, मुक्ति की ओर द्रुति गति से अग्रसर होता है और आत्मोन्नति लौकिक और परलौकिक आनन्द प्राप्त करता है ।

(५) **स्थिरता**-डांवाडोल अस्थिर वृत्तियों के मनुष्यों की जीवन यात्रा एक दिशा में नहीं चलती, फलस्वरूप उनका समय, श्रम और बल निरर्थक खर्च होता रहता है । विचार, विश्वास, सिद्धान्त, कार्य, लक्ष्य, स्वभाव एवं निष्ठा की एकरसता होने से जीवन प्रवाह एक नियत दिशा में प्रवाहित होता है और बूँद-बूँद से घट भर जाने की उक्ति के अनुसार उसे अपने कार्य में सफलता मिलती है । चित्त में स्थिरता रहने से मस्तिष्क नियत दिशा में सोचता और कार्य मग्न रहता है, फलस्वरूप उस क्षेत्र में अनेकों उन्नति के अवसर मिलते हैं । स्थिरता का आध्यात्मिक अर्थ है—मनोजय, आत्मनिग्रह, समाधि । इस मार्ग में प्रगति होने के साथ-साथ सांसारिक और आत्मिक सुख-शान्ति के द्वार खुलने लगते हैं ।

(६) **कर्त्तव्यनिष्ठा**-इसे धर्म भावना अथवा ईश्वरपरायणता कहते हैं । मानव जीवन की सर्वश्रेष्ठता प्राप्त होने के साथ-साथ प्राणी को एक भारी उत्तरदायित्व भी सौंपा गया है, जिसे धर्म कर्त्तव्य कहते हैं । यह कर्त्तव्य-पालन ही जीवन का सच्चा मूल्य है । इसे चुकाये बिना कोई आत्मा न तो शान्ति-लाभ कर सकती है और न सद्गति प्राप्ति कर सकती है । अपनी आत्मा के प्रति, मस्तिष्क के प्रति, शरीर के प्रति, कुटुम्ब के प्रति, समाज के प्रति, राष्ट्र, ईश्वर एवं समस्त संसार के प्रति मनुष्य के कुछ कर्त्तव्य, उत्तरदायित्व, धर्म होते हैं । असंख्यो व्यक्ति उन्हें जानते तक नहीं, जो जानते हैं उनमें से असंख्यो उन्हें पूरा नहीं करते, फलस्वरूप उन्हें वे दुःखद परिणाम भुगतने पड़ते हैं जिन्हें नरक बन्धन आदि नामों से पुकारा जाता है । गायत्री शक्ति की धारणा से यह धर्म-भावना जागृत होती है, फलस्वरूप साधक के विचार, कार्य और आयोजन धर्म केन्द्र के चारों ओर परिभ्रमण करने लगते हैं और वह ऐसा धर्मात्मा बनता जाता है जिसे सच्चा मनुष्य देशभक्त, लोक-सेवी, भला मानुष, सभ्य नागरिक, कर्तव्यनिष्ठ एवं ईश्वर-भक्त भी कह सकते हैं ।

(७) **स्वास्थ्य**-उत्तम स्वास्थ्य मनुष्य का जन्म-सिद्ध अधिकार है । कुछ अपवादों को छोड़कर आमतौर से प्रकृति माता सभी को स्वस्थ शरीर प्रदान करती है, किन्तु लोग उसे मिथ्या आहार-विहार के द्वारा बिगाड़ लेते हैं । यह बिगाड़ जब तक चलता रहता है, तब तक स्वास्थ्य में विकृतियाँ बनी ही रहती हैं । एक रोग गया, दूसरा आया । एक दवा बन्द हुई, दूसरी करनी पड़ी । यह क्रम तब तक नहीं टूट सकता, जब तक कि आहार-विहार में प्राकृतिकता न आवे, सतोगुण न बढ़े । गायत्री से सतोगुण बढ़ता है और जीवनक्रम में संयम एवं सुव्यवस्था का प्रमुख भाग रहने लगता है, तदनुसार स्वास्थ्य में सुधार आरम्भ हो जाता है और वह दिन-दिन अधिक सुधरने लगता है ।

(८) **समृद्धि**-अनेक दोषों, पापों, कुटेवों, व्यसनों में फँसे हुए व्यक्ति पूर्व संचित समृद्धि को भी गँवाते हैं । बुरे स्वभाव, उल्टे दृष्टिकोण और अस्थिर मस्तिष्क के कारण उनके लाभदायक कार्य भी हानिकारक सिद्ध होते हैं । उनके खर्च बहुत बढ़े हुए और निरर्थक होते हैं, तदनुसार तामसिक वृत्ति के मनुष्य सच्चे अर्थों में कभी समृद्धिशाली नहीं बन सकते । किसी प्रकार नीति-अनीति का विचार छोड़कर वे पैसे जमा भी कर लें तो वह पैसा उनके लिए चिन्ता, अशान्ति, क्लेश और दोष, दुर्गुणों की वृद्धि करने वाला कष्टकारक ही सिद्ध होता है । इसके विपरीत जिनके अन्दर गायत्री तत्व की अधिकता है उनका मानसिक सन्तुलन ठीक रहने से कार्यों में दूरदर्शिता की मात्रा अधिक रहती है, फलस्वरूप वे सम्पन्नता की ओर बढ़ते हैं । मितव्ययिता, ईमानदारी और परिश्रमशीलता के कारण वे गरीब नहीं रह पाते । अनीति से धनवान् हुए लोगों की तरह वे अमीर नहीं बन पावें तो भी उनकी थोड़ी-सी पूँजी सदुपयोग में आकर अमित आनन्ददायक बनती है और वे थोड़े धन से भी भारी अमीरी से अधिक समृद्धिशाली होने का सुख प्राप्त करते हैं ।

(९) **सहयोग**-बुरे लोगों से वे लोग भी भीतर ही भीतर डरते और घृणा करते रहते हैं जो कारणवश उनसे मित्रता रखते हैं । इसके विपरीत

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

खरे, ईमानदार, सद्गुणी, प्रसन्नचित्त, स्थिरमति, मधुरभाषी, सेवाभावी, सुखी, प्रसन्न व्यक्ति की ओर सबका मन आकर्षित होता है । ध्वनि की प्रतिध्वनि की भाँति प्रेम का प्रत्युत्तर प्रेम से, सेवा का सेवा से, सहयोग का सहयोग से मिलता है । इस प्रकार गायत्री साधक को अनेक सच्चे सहयोगी मिल जाते हैं । उन्नति के अवसर सहयोगियों की सहायता से ही मिला करते हैं । जिसे अधिक लोगों का सहयोग प्राप्त है उसको न केवल सांसारिक वरन् मानसिक सुख शान्ति की भी उपलब्धि होती है ।

यह नौ निधियाँ यज्ञोपवीत के नौ तार हैं । गायत्री की शरण में जाना द्विजत्व को प्राप्त करना है । जो द्विज इस नौ तार के यज्ञोपवीत को धारण करता है उसे उनसे सम्बन्धित उन नौ गुणों की प्रतिध्वनि स्वरूप यह नौ निधियाँ प्राप्त होती हैं । यह जीवन के सर्वोत्तम लाभ हैं । यह जितने अंशों में मनुष्य को प्राप्त हो जाते हैं उतने ही अंशों में साधक अपने को स्वर्गीय सुखों से सम्पन्न अनुभव करने लगता है ।

भूतल पर स्वर्गीय सुख

गायत्र्युपासकस्यान्ते सत्कामाउद्भवन्तिहि ।
तत्पूर्तयेऽभिजायन्ते सहजं साधनान्यापि ।।

(हि) निश्चय से (गायत्र्युपासकस्यान्ते) गायत्री उपासक के हृदय में (सत्कामाः) सदिच्छाएँ (उद्भवन्ति) पैदा होती हैं (तत्पूर्तये) उनकी पूर्ति के लिए (सहजं) आसानी से (साधनान्यपि) साधन भी (अभिजायन्ते) पैदा होते हैं ।

त्रुटयः सर्वथादोषा विघ्ना यान्ति यदान्तताम् ।
मानवो निर्भयं याति पूर्णोन्नतिपथं तथा ।।

(यदा) जब (सर्वथा) सब प्रकार के (दोषाः) दोष (त्रुटयः) कमियाँ (विघ्नाः) और विघ्न (अन्ततां) विनाश को (यान्ति) प्राप्त हो जाते हैं (तदा) तब (मानवः) मनुष्य (निर्भयं) निर्भय होकर (पूर्णोन्नतिपथं) पूर्ण उन्नति के मार्ग पर (याति) चलता है ।

बाह्याभ्यन्तरमस्य नित्यं सन्मार्गगामिनः ।
उन्नतेरुभयं द्वारं यात्युन्मुक्तकपाटताम् ।।

(नित्यं) नित्य (सन्मार्गगामिनः) सन्मार्ग पर चलने वाले (अस्य) इस व्यक्ति के (बाह्यं) बाह्य (च) और (आभ्यंतरं) भीतरी (उभयं) दोनों (उन्नतेः) उन्नति के (द्वारं) द्वार (उन्मुक्तकपाटतांयाति) खुल जाते हैं ।

गायत्री की साधना से मनुष्य के अन्तःकरण में एक मौलिक परिवर्तन होता है । उसकी वृत्तियाँ- इन्द्रिय भोग, धन संचय, अहंकार, मनोरंजन, मोह, स्वार्थ, द्वेष जैसी तुच्छ तृष्णाओं से विमुख हो जाती हैं, उनमें कुछ भी रस प्रतीत नहीं और न इनके पूर्ति का लाभ कोई वास्तविक लाभ दिखाई देता है । इस अज्ञान के, माया के, भोगवाद के बन्धन शिथिल पड़ जाते हैं और आध्यात्मिक रसों में आनन्द आने लगता है । इसकी इच्छाएँ लोक सेवा, परोपकार, दया, प्रेम, उदारता, त्याग, संयम, धर्म सेवन, सतोगुणपरायणता एवं ईश्वर प्राप्ति की ओर मुड़ती हैं और दिन-दिन इसी मार्ग पर बढ़ती चली जाती हैं ।

इस परिवर्तन के फलस्वरूप साधक उस प्रकार नहीं सोचता, उस प्रकार की कामनाएँ नहीं करता, जिस प्रकार से कि मोहग्रस्त साधारण जीव किया करते हैं । रूपवती रमणी, स्वादिष्ट भोजन, महल, मोटर, सन्तान, सेवक, धन-दौलत के खजाने, प्रतिष्ठा, पदवी, हुकूमत आदि की इच्छाएँ लोग किया करते हैं । कोई वस्तु कितनी ही उचित मात्रा में उन्हें प्राप्त क्यों न हो, पर सन्तोष नहीं होता । अधिक ! अधिक !! और अधिक !!! के लिए उनकी तृष्णा बढ़ती रहती है और कितना ही प्राप्त हो जाने पर भी वह शान्त नहीं होती । इसी अशान्ति में मनुष्य सदा जलते, कुढ़ते और रोते कलपते रहते हैं । भौतिक पदार्थ संसार में इतनी मात्रा में ही परमात्मा ने पैदा किये हैं कि उनका सबके हिस्से में काम चलाऊ भाग आ सके । सर्वग्राही-अनन्त तृष्णा की पूर्ति हो सके । इतनी मात्रा में पदार्थों की उत्पत्ति ही नहीं हुई है फिर वे मिल ही कैसे सकते हैं ? दूसरे योग्यता, प्रयत्न, आवश्यकता, पात्रत्व, प्रारब्ध, परिस्थिति, कर्मभोग आदि कारणों से भौतिक पदार्थों की, सांसारिक परिस्थितियों की वैसी ही स्थिति प्राप्त नहीं हो पाती, जैसी सर्वसुख सम्पन्न, सर्व मनोकामना पूर्ण अवस्था मनुष्य प्राप्त करना चाहता है । तीसरे उस मोह ग्रस्त

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मनुष्य की शारीरिक और मानसिक दशा ऐसी विपन्न होती है कि प्राप्त वस्तुओं का सुख भोगने में वह असमर्थ रहता है और तृष्णा की रट लगा-लगाकर अपना गला सुखाता रहता है । ऐसे मूढ़ मायाबद्ध जीव किसी न किसी कारणवश जीवन भर रोते कलपते रहतें हैं और अन्त में अशान्त, अतृप्त एवं दु:खी मन से अपनी जीवन यात्रा समाप्त करते हैं, परन्तु गायत्री का साधक अपने परिवर्तित दृष्टिकोण के कारण इस प्रपंच से बचा रहता है । उसकी इच्छाएँ सात्विक होने के कारण स्वाभाविक, सीमित और स्वल्प श्रम साध्य होती हैं जिनकी पूर्ति आसानी से हो जाती है ।

विवेकवान् व्यक्ति सोचता है जीवन इसलिए नहीं मिला है कि उसे भौतिक पदार्थों की असम्भव तृष्णा के ऊपर उत्सर्ग कर दिया जाय । भौतिक पदार्थों की, साधन सामग्रियों की आवश्यकता इसलिए है कि उनकी सहायता से उद्देश्य पूर्ति के पथ पर चलने में सुविधा और सहायता मिले । पर यदि वे सहायक सिद्ध होने के स्थान पर भार स्वरूप बन जाएँ, उन्हीं की उलझनों में उद्देश्य नष्ट हो जाय तो इन साधन सामिग्रियों के होने से, न होना ही अच्छा । यात्री लोग रास्ते के लिए अक्सर भोजन साथ में रखते हैं, क्योंकि इससे भूख के समय तुरन्त आवश्यकता पूर्ति हो जाती है, यह बुद्धिमत्ता भी है, परन्तु यदि कोई यात्री एक दो मन भोजन की गठरी बाँध कर सिर पर रख ले और उसके बोझ से नाना-विधि कष्ट सहता हुआ यात्रा करे तो इसे मूर्खता ही कहा जायेगा । विवेकवान् व्यक्ति सोचता है कि भौतिक सामिग्रियों की निष्प्रयोजन तृष्णा करने से यात्रा के उद्देश्य में बाधा ही उपस्थित होगी इसलिए वह केवल बहुत ही सीमित, आवश्यकता पूर्ति भर के लिए वस्तुयें चाहता है जिनकी पूर्ति ईश्वरीय विधान के अनुसार आसानी से हो जाती है । यदि कारणवश इन सामिग्रियों में कोई कमी रह जाती है तो वह अपने सन्तोष, त्याग, तितीक्षा, तपश्चर्या अपरिग्रहं आदि गुणों के कारण उस अभाव को अनुभव न करता हुआ हर दशा में प्रसन्न रहता है ।

जिन कामनाओं की पूर्ति के लिए, मनोवांछा को तृप्त करने के लिए, अज्ञानी मनुष्य हर घड़ी लालायित, चिन्तित रहते हैं, मनौती मनाते हैं, देवी-देवताओं को पूजते हैं, आकाश-पाताल में कुलावे लगाते हैं और उसी गोरखधन्धे में जीवन के बहुमूल्य क्षणों को बरबाद कर लेते हैं, उनकी ओर ज्ञानवान व्यक्ति आँख उठाकर भी नहीं देखता । जिन वस्तुओं के अभाव में अज्ञानी छाती पीटता है, सिर धुनता है और हाय-हाय करता है तथा जिनकी प्राप्ति पर हर्ष से उन्मत हो जाता है, अहंकार से अकड़ जाता है, उन प्रपंचों की ओर ज्ञानी की कोई प्रवृत्ति नहीं होती । इस प्रकार वह अनायास ही अज्ञानियों को सताने वाली, कामनाओं, इच्छाओं, तृष्णाओं की जलन से सहज ही छुटकारा पा जाता है । इस तरह उसके ऊपर से एक बड़ा भारी चिन्ताओं और मानसिक क्लेशों का बोझा उतर जाता है । दृष्टिकोण के परिवर्तन मात्र से सांसारिक लोगों को सताने वाले अधिकांश दु:ख उससे स्वयमेव दूर भाग जाते हैं ।

उसकी इच्छाएँ ऐसी होती हैं जो स्वयं अपने में एक आनन्द हैं । तृष्णाओं का चिन्तन करते समय एक बेचैनी, लालसा एवं कमी का अनुभव होता है, पर सेवा, संयम तथा परमार्थ का चिन्तन करने मात्र से—उनकी कल्पना इच्छा आयोजन करने मात्र से—हृदय में एक दैवी आनन्द की तरंगें उठने लगती हैं । उन इच्छाओं का पूर्ण होना दैवाधीन नहीं होता, परिस्थितियों पर निर्भर नहीं करता वरन् पूर्णतया अपने हाथ में होता है । कोई व्यक्ति सत्यवादी, प्रेमी, उदार, सेवाभावी बनना चाहता है, दूसरों के लिए अपनी शक्तियाँ दान करना चाहता है, संयम से रहना चाहता है, प्रेम पूर्ण व्यवहार करना चाहता है, सदाचारी, खरा, ईमानदार बनना चाहता है तो इसमें न कोई विघ्न है, न किसी की सहायता की आवश्यकता है । इच्छा होते ही उसे कार्यरूप में परिणत किया जा सकता है और क्रिया के साथ-साथ ही उस आत्म सन्तोष के दैवी-आनन्द का फल चखा जा सकता है ।

उल्टा दृष्टिकोण, भौतिक लक्ष्य जब बदल जाता है तो मन, वचन और काया से कोई पाप कर्म नहीं बन पड़ता । भूलें, त्रुटियाँ, कमियाँ तभी होती हैं, जब आदमी डूबता, उतराता है, कभी इधर, कभी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उधर देखता है किन्तु जब एक लक्ष्य स्थिर हो गया, एक राजपथ पर यात्रा चल पड़ी, एक आदर्श के प्रति निष्ठा अचल हो गई, तो न तो मन विचलित होता है और न भूलों की, त्रुटियों की गुंजायश रहती है । ऐसा एकनिष्ठ साधक निर्भय होता है, जहाँ सत्य है वहाँ भय कहाँ ? जिसके विचार और कार्य सतोगुण से परिपूर्ण हैं उसे किसी से डरने की क्या जरूरत ? ऐसा निर्भय, दृढ़चित्त, सत्य-परायण मनुष्य पूर्ण उन्नति के बाह्य और आन्तरिक उन्नति के पथ पर तेजी के साथ बढ़ता चला जाता है ।

उसकी आत्मा तो आनन्द सागर में निमग्न रहती ही है साथ ही सांसारिक सम्पदाओं की भी उसे कमी नहीं रहती । संयमी आहार-विहार के कारण उसका स्वास्थ्य ठीक रहता है, दृष्टिकोण की शुद्धि के कारण मानसिक शान्ति का बाहुल्य रहता है, परिश्रमशीलता, जागरूकता और एकाग्रता के कारण उसके सब व्यापार अच्छे चलते हैं, मधुर उंदारतापूर्ण व्यवहार के कारण अनेकों मित्र और सहयोगी मिल जाते हैं, ईमानदारी और सेवा-भावना के कारण प्रतिष्ठा बढ़ती है, उसकी गतिविधि का आधार सच्चाई होने के कारण निर्भयता रहती है । इन सब कारणों से धन, ऐश्वर्य तथा उन सब वस्तुओं की भी साधक को कमी नहीं रहती जिनके लिए कि मोहग्रस्त व्यक्ति विलाप करते फिरते हैं । इन बाह्य सुखों के अतिरिक्त सत् परायण के आन्तरिक आनन्द का तो कहना ही क्या ? इसका जीवन सब प्रकार आनन्दमय बन जाता है और इस भूतल पर ही उसे स्वर्गीय सुखों का रसास्वादन करने का अवसर मिलता है ।

विपत्तियों से छुटकारा

काठिन्यं विविधं घोरं ह्यापदां संहतिस्तथा ।
शीघ्रं विनाशतां यान्ति विविधा विघ्नराजयः ।।

(विविधं) नाना प्रकार की (घोरं) घोर (काठिन्यं) कठिनाई (तथा हि) वैसे ही (आपदां) आपत्तियों का (संहतिः) समूह (विविधा) नाना प्रकार के (विघ्न राजयः) विघ्नों का समूह इससे (शीघ्रं) शीघ्र ही (विनाशतां यान्ति) नष्ट हो जाते हैं ।

विनाशादुक्तशत्रूणामन्तः शक्तिर्विवर्धते ।
संकटानामनायासं पारं याति तया नरः ।।

(उक्त शत्रूणां) उपर्युक्त शत्रुओं के (विनाशात्) विनाश से (अन्तः शक्तिः) आन्तरिक शक्ति (विवर्धते) बढ़ती है (तया) उस अन्तः शक्ति से (नरः) मनुष्य (अनायासं) बिना परिश्रम के (संकटानां) संकटों के (पारं) पार (याति) हो जाता है ।

मनुष्य जीवन में अनेक प्रकार के कष्ट, विघ्न, दुर्दैव सामने आते रहते हैं । दैविक, दैहिक, भौतिक आपत्तियाँ सामने आती रहती हैं । अभी एक से छुटकारा प्राप्त हुआ नहीं कि दूसरा विघ्न सामने आ खड़ा हुआ । इस प्रकार आये दिन मनुष्य को विपत्तियों का, चिन्ता, शोक, भय, क्लेश, कलह, शोषण, उत्पीड़न आदि का शिकार होना पड़ता है और दुःख की घटायें ऊपर छाई रहती हैं, इस तरह आनन्द की प्राप्ति के उद्देश्य से स्वर्गादपि गरीयसी-धरती माता पर अवतीर्ण हुआ सुख स्वरूप आत्मा, स्वर्गीय सुख भोगने के स्थान पर नारकीय अनुभूतियों के साथ अपनी यात्रा पूरी करता है ।

वस्तुतः दुःख के तीन कारण हैं-अज्ञान, अशक्ति और अभाव । इन तीन कारणों से ही ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न होती हैं जो तुरन्त या देर-सवेर शारीरिक, मानसिक, सांसारिक एवं आकस्मिक दुःखों की उत्पत्ति करती हैं, जिनसे ग्रसित होकर मनुष्य विविध प्रकार के कष्ट सहता रहता है, परन्तु गायत्री की साधना से मनोभूमि का इस प्रकार विकास होता है कि ज्ञान, शक्ति और समृद्धि का बाहुल्य प्रत्यक्ष रूप से दृष्टिगोचर होने लगता है । इस वृद्धि के साथ-साथ दुःखों के मूल हेतु भी घटने लगते हैं, फलस्वरूप साधक अपने चारों ओर सुख शान्तिमयी परिस्थितियाँ बढ़ती हुई देखता है ।

आपत्तियाँ एक प्रकार की ईश्वरीय चेतावनियाँ हैं, जिनसे ठोकर खाकर मनुष्य सजग हो और गलत मार्ग में पीछे लौटे । जब साधक गायत्री शक्ति को अपने अन्तःकरण में धारण करके सतोगुणी कार्य प्रणाली अपना लेता है तो उसके लिए चेतावनियों की, ठोकर देने की, ईश्वर को कोई आवश्यकता

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

नहीं पड़ती । पुराने संचित अशुभ संस्कार जो अभी प्रारब्ध रूप में परिणत नहीं हुए हैं, इस परिवर्तन की गर्मी से छोटे पौधे की तरह जलभुन जाते हैं । इस प्रकार बहुत से छोटे-मोटे अशुभ संस्कारों का कुफल तो इस सत्य धारणा के तेज से ही भस्म हो जाता है । जिन प्रचण्ड, दीर्घकालीन, भारी, बुरे कर्मों का फल प्रारब्ध बन चुका है, वह शीघ्रता एवं आसानी - से भुगत जाता है । उसे भुगतते समय अपनी आध्यात्मिक मस्ती के कारण साधक को विशेष कष्ट नहीं होता, क्योंकि जब कष्ट को कष्ट मानना ही छोड़ दिया तो वह व्यर्थ हो जाता है । एक धनी का सब कुछ चला जाय और छोटी फूँस की झोंपड़ी में फटे-पुराने कपड़े पहन कर, रूखा-सूखा खाकर, गुजर करनी पड़े तो यह उसके लिये बड़े कष्ट की बात है । पर अनेकों मनुष्य ऐसे हैं जो चिरकाल से ऐसी ही हीन स्थिति में रहते आ रहे हैं और प्रसन्न हैं । इससे सिद्ध है कि सुख-दुःख की वास्तविकता उतनी नहीं, जितनी कि उसकी मान्यता प्रधान है । जब सतोगुणी मनुष्य दुःख नहीं मानता तो प्रारब्धों के भोग से दूसरों की दृष्टि में वह दुःखी भले ही प्रतीत हो पर स्वयं उसे बुरा अनुभव नहीं होता । इस प्रकार गायत्री के दुःखों का वस्तुतः नाश हो जाता है ।

गायत्री साधना से सतोगुण की वृद्धि होती है, आत्म-बल उन्नत होता है, फलस्वरूप उन तत्वों का शमने और दमन होता रहता है जो उन्नति और सुख-शान्ति में बाधक होते हैं । स्वभाव और दृष्टिकोण में अन्तर आ जाने से, उनके परिमार्जित हो जाने से, अनेकों ऐसे कारण स्वयमेव समाप्त हो जाते हैं, उनका अवसर ही नहीं आ पाता जिनके कारण दुःख दरिद्र की पीड़ाएँ मनुष्य को भुगतनी पड़ती हैं । विपत्ति और सम्पत्ति प्रधानतः मान्यता का विषय है । एक व्यक्ति जिस स्थिति में रहते हुए प्रसन्नतापूर्वक जीवनयापन करता है, दूसरा उसमें पहुँचने को एक विपत्ति अनुभव करता है । जब दृष्टिकोण में सतोगुणी दार्शनिक परिवर्तन हो जाता है तो मनुष्य के लिए कोई भी विपत्ति नहीं रहती ।

कष्ट निवारण में गायत्री का अनुग्रह

आपत्तियों और संकटों के समय लोग भौतिक उपायों से निवारण का उपाय तो करते हैं, पर उन उपायों की सामर्थ्य अति स्वल्प एवं अस्थायी है, इसलिए निश्चयपूर्वक यह नहीं कहा जा सकता कि इन उपायों से वे संकट टल ही जायेंगे । अस्वस्थता के लिए औषधियों का, शत्रु प्रतिरोध के लिए अस्त्र-शस्त्रों का, दरिद्र निवारण के लिए व्यवसाय का, उलझनों को सुलझाने के लिए विद्या-बुद्धि का और प्रयत्न पुरुषार्थ का हर कोई आश्रय लेता है, किन्तु इन उपायों का परिणाम अमोघ नहीं । भौतिक पदार्थ और उपाय सभी स्वल्प सामर्थ्यवान् एवं अनिश्चित हैं, इसलिये उनके परिणाम के बारे में भी कोई निश्चय नहीं कि अभीष्ट प्रतिफल मिल ही जायगा एवं प्रस्तुत संकट टल ही जायगा ।

आत्म-बल की शक्ति अमोघ है । उसकी क्षमता भौतिक माध्यमों की तुलना में असंख्य गुनी बढ़ी-चढ़ी है । इसलिये जब कोई ऐसा संकट आ खड़ा हो, जिसका निवारण सामान्य उपायों से सम्भव न दीखता हो, तब आत्म-शक्ति का सहारा लिया जाता है । देखा गया है कि यह प्रयोग असफल नहीं होता ।

आत्म-बल उत्पन्न करने और बढ़ाने के उपायों में गायत्री उपासना सर्वोपरि है । अन्यान्य उपासनाओं की तुलना में यह प्रयोग निस्सन्देह अति सामर्थ्यवान् है । आपत्तियों के निवारण में, लोक व्यवहार में प्रचलित उपाय करते हुए, यदि आत्म-शक्ति को उत्पन्न एवं प्रयुक्त किया जा सके तो उसके आश्चर्यचकित करने वाले परिणाम होते देखे गये हैं ।

इतिहास, पुराणों में ऐसे कथानक भरे पड़े हैं, जिनमें बताया गया है कि देव शक्तियों ने संकट एवं निराशा की घड़ियों में आत्म-शक्ति की मूर्तिमान देवी गायत्री का आश्रय लिया और उसकी सहायता से आपत्तियों के निवारण में सफल हुए । दैवी, आसुरी शक्तियों के युद्ध संघर्ष का क्रम चिरकाल से चला आ रहा है । असुर अपने प्रबल पुरुषार्थ के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आधार पर पहले दौर में विजयी होते रहे हैं । देवता एकांकी धार्मिक रुचि से सम्बन्धित रहे हैं, वे बल, पुरुषार्थ एवं संगठन से उदासीन रहते हैं, इस भूल का दण्ड उन्हें अनेक बार भुगतना पड़ा है । देव-दानव युद्ध के प्रथम दौर में दानवों की विजय देवताओं की एकाकी प्रगति के कारण उपलब्ध होती रही है । पराजित देवों को अन्ततः आत्म-शक्ति का सहारा लेना पड़ा है और तब वे नई सामर्थ्य से सुसज्जित होकर संघर्ष क्षेत्र में उतरते और विजयी होते रहे हैं ।

देवाधिराज इन्द्र को पराजित स्थिति से उबार कर विजयी बनाने में समय-समय पर आदि-शक्ति भगवती गायत्री का योगदान रहा है । ऋषियों, महापुरुषों एवं सामान्य मनुष्यों ने इस शक्ति के आधार पर कैसे पराजित स्थिति से छुटकारा पाकर विजयी बनने में सफलता पाई है, इसके कुछ प्रसंग नीचे देखिये-

मातः प्रसीद सुमुखी भव दीनसत्वाँ स्त्रायस्व, नो जननि दैत्य पराजितान्वौ । त्वं देविनः शरणदा भुवने प्रमाणा शक्तासि दुःख शमनेऽखिल वीर्ययुक्ते । ध्यायन्ति येऽपि सुखिनो नितराँ भवन्ति । दुःखान्विता विगत शोक-भयास्तथान्ये । मोक्षार्थिनो विगतमानविमुक्त सङ्गाः संसार वारिधजलं प्रतरन्ति संतः । त्वं देवि विश्व जननि प्रथित प्रभावा संरक्षणार्थं मुदिताऽऽर्त्ति हर प्रतापा ।

इन्द्रादि देवगण सावित्री देवी का स्तवन करते हुए कहते हैं—"हे माता ! आप प्रसन्न होइये और सुमुखी अर्थात् प्रसन्न मुख वाली होकर कृपा कीजिये । हे जननि ! हम हीन सत्व वालों की आप रक्षा कीजिये, जिन हम लोगों को दुष्ट दैत्य गण अहर्निश पराजित करने की चेष्टा किया करते हैं । हे देवि ! आप लोक में, शरण में आये हुओं की सुरक्षा करने वाली प्रसिद्ध हैं और आप समस्त प्रकार के दुःखों को शमन करने में पूर्ण समर्थ हैं । आप परिपूर्ण पराक्रम से युक्त हैं । जो भी कोई आपका ध्यान किया करते हैं, वे अत्यन्त सुखी हो जाते हैं । जो भी कोई दुःखों से युक्त होते हैं, वह आपकी कृपा से शोक और भय से छुटकारा पा जाया करते हैं । जो मोक्ष की इच्छा रखने वाले हैं, वे मान और संग से रहित होकर सन्त पुरुष आपके प्रसाद से इस संसार रूपी समुद्र के जल को पार कर जाते हैं । हे देवि ! आप इस सम्पूर्ण विश्व की माता हैं । आपका यह प्रभाव सर्वत्र प्रसिद्ध है कि आप दुःखियों के संरक्षण करने के लिये ही प्रगट हुई हैं और आपका प्रताप समस्त दुःखों को मिटा देने वाला है ।

त्वतः सर्वमिदं विश्वं स्थावरं जङ्गमं तथा । अन्ये निमित्त मात्रास्ते कर्तारस्तव निर्मिताः ।

अर्थ—हे देवि ! यह सम्पूर्ण चराचर विश्व आपसे ही समुत्पन्न हुआ है । अन्य ब्रह्मादि जो इसके कर्त्ता हैं, वे तो केवल इसके निमित्त मात्र ही हैं, क्योंकि उनको भी आपने बनाया है ।

संहर्त्तुं मेतदखिलं किल काल रूपा कोवेत्ति तेऽम्ब चरि त्वं तेनु मन्द बुद्धिः । ब्रह्मा हरश्च हरिश्च रथो हरिश्च इन्द्रो यमोऽथ वरुणोऽग्नि समीरणौच । सातुं क्षमान् मुन योऽपि महानुभावा यस्याः प्रभावमतुलं निगमागमाश्च । धन्यास्त एव तव भक्तिपरा महान्तः संसार दुःख रहिता सुख सिन्धु माताः ।

हे देवि ! इस सम्पूर्ण विश्व का जब आप संहार करना चाहती हैं तो आप ही का स्वरूप काल रूप वाला बन जाया करता है । हे अम्बे ! मन्द-बुद्धि वाला कौन आपके चरित्र को समझ सकता है, जबकि ब्रह्मा, हर हरिदश्च रथ, हरि, इन्द्र, यम, वरुण, अग्नि, वायु ये सब भी आपके इस परम अद्भुत चरित्र को जानने में समर्थ नहीं होते हैं । महानुभाव मुनिगण और निगम और आगम भी जिस आपके अतुल प्रभाव को नहीं समझते हैं । वे पुरुष परम धन्य हैं, जो आपकी भक्ति में परायण हैं और महान् हैं । आपके भक्तगण इस संसार के दुःख से रहित होकर सदा सुख के सागर में मग्न रहा करते हैं । आपकी भक्ति का ऐसा अद्भुत प्रभाव है ।

देवोद्याने पराशक्तेः प्रासादमकरोद्धरिः ।
पद्मरागमयी मूर्ति स्थापयामास वासवः ।।
त्रिकालं महतीं पूजा चक्रुः सर्वेऽपि निर्जराः ।
तदा प्रभृति देवानां श्री देवी कुल दैवतम् ।।
विष्णु च त्रिभुवन श्रेष्ठं पूजया मास वासवः ।
ततो हते महावीर्ये वृत्रे देव भयङ्करे ।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अर्थ—इसके अनन्तर इन्द्र ने देवोद्यान में पराशक्ति देवी का एक परम सुन्दर प्रासाद का निर्माण कराया था और उसमें एक पद्मराग मणि की प्रतिमा को निर्मित कराकर संस्थापित किया था । वहाँ उस पर देवी की समस्त देवगण तीनों काल में महती अर्चना किया करते थे । उसी समय से देवताओं की श्री देवी कुल देवता मानी जाने लगी थी । उस महान् भयंकर शत्रु देवगण को त्रास देने वाले अत्यन्त पराक्रमी वृत्रासुर के वध हो जाने पर इन्द्र ने त्रिभुवन में श्रेष्ठ भगवान् विष्णु का भी पूजन किया था ।

पूर्व मदोद्धता दैत्या देवैर्युद्धं तु चक्रिरे ।
शतवर्षं महाराज महाविस्मय कारकम् ।।
पराशक्ति कृपानेशात् देवैर्दैत्या जितायुधि ।
ततः प्रहर्षिता देवाः स्वपराक्रम वर्णनम् ।।
चक्रुः परस्परं मोहात्साभि मातः समन्ततः ।
परोशक्ति प्रभावं ते स्वत्वा मोहभाग ताः ।।
तेषा मनुग्रहं कर्तु तदैव जगदम्बिका ।
प्रादुरासीत् कृपा पूर्णा यज्ञ रूपेण भूमिय ।।
कोटि सूर्य प्रतीकाशं चन्द्र कोदि सुशीतलम् ।
विद्युत्कोटि समानाभं हस्त पादादि वर्जितम् ।।
अदृष्ट पूर्व तद दृष्ट्वा तेजः परम सुन्दरम् ।
सविस्मया स्तदा प्रोचः किमिदं किमिदं बिति ।।

प्राचीन काल में मद से उद्धत दैत्यों ने देवताओं के साथ युद्ध किया था । वह महाघोर युद्ध सौ वर्ष तक महान् विस्मय उत्पन्न करने वाला हुआ था । उस समय पराशक्ति की कृपा के आवेश से ही देवगणों ने युद्ध में दैत्यों को पराजित किया था । विजय होने पर देवगण अत्यन्त प्रसन्न हुए और परस्पर अपने बल-पराक्रम की प्रशंसा का वर्णन करने लगे । पराशक्ति के प्रभाव का ज्ञान प्राप्त न कर मोह से अभिमान पूर्वक सभी ओर अपने बल की शेखी बघारते थे । उन देवताओं पर कृपा करने के लिए जगत् जननी ने उसी समय में अपना प्रादुर्भाव किया था । भगवती कृपा से परिपूर्ण स्वरूप वाली थीं । हे राजन् ! उसने एक यक्ष के रूप में देवों को दर्शन दिया था । उस समय करोड़ों सूर्यों के तुल्य उसका तेज था, किन्तु करोड़ों चन्द्रों के सदृश वह तेज शीतल भी था । करोड़ों विद्युत के समान देदीप्यमान् वह तेज हस्त पाद आदि से रहित था । ऐसे दिव्यातिदिव्य तेज को देवों ने पहले कभी भी नहीं देखा था, जो कि बहुत ही अधिक सुन्दर भी था । तब तो देवता आश्चर्य से भर गये और कहने लगे कि यह क्या वस्तु है ?

इत्थं निश्चित्य तत्रैव गर्वं हित्वा सुरेश्वरः ।
चरित्र मीदृशं यस्थ तमेव शरणंगतः ।।
तस्मिन्मेव क्षणे जाता व्योम वाणी नभस्तले ।
मायाबीजं सहस्त्राक्ष जप तेन सुखी भव ।।
ततो जजाय परमं माया बीजं परात्परम् ।
तदेवाविरभूत्तेज स्तस्मिन्नेव स्थले पुनः ।।
प्रेमाश्रु पूर्ण नयनो रोमाञ्चित तनुस्ततः ।
दण्डवत्प्रणनामाथ पादयोर्जगदीशि तुः ।।
तुष्टाव विविधैः स्तोत्रैर्भक्ति सम्मत कन्धरः ।
उवाच परम प्रीतिः किमिहं यक्षमित्यणि ।।
प्रादुर्भूतं च कस्मातहृद सर्वं सुशोभने ।
इति तस्य वचः श्रुत्वा प्रोवाच करुणार्णवा ।।
मत्प्रसाद्भवभिस्तु जयोलब्धोऽस्ति सर्वथा ।
अनुग्रहं ततः कर्त्तुयुष्मद्देहादनुज्ञमम् ।।
निःसृतं सहसा तेजो मदीपं यक्षामित्यपि ।

अर्थ—सुरेश्वर ने मन में विचार किया कि मुझे अब इसकी ही शरण में जाना चाहिए, अन्य कोई भी चारा नहीं है । ऐसा निश्चय करके वहाँ पर ही अपने गर्व का परित्याग करके सुरेश्वर इन्द्र ने, जिसका ऐसा अद्भुत चरित्र है, उसी की शरणागति प्राप्त हो गया था । उसी क्षण में आकाश में, आकाशवाणी उत्पन्न हुई थी—'हे इन्द्र! तुम माया बीज का जाप करो । इसी से तुमको सुख प्राप्त होगा इसके अनन्तर इन्द्र ने परात्पर जो माया बीज है, उसका जप किया था । अचानक ही उसी स्थल में वही तेज पुनः आविर्भूत हुआ था । उस परम दिव्यातिदिव्य तेज को देखकर इन्द्र के नेत्रों से प्रेमाश्रुओं का पात होने लगा और उसकी सम्पूर्ण देह पुलकित हो गई थी । उस जगदीश्वरी के चरणों में इन्द्र ने दण्डवत्प्रणाम किया था । भक्ति-भाव से

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अपनी कन्धरा को नत करके अनेक स्त्रोतों के द्वारा उसका स्तवन किया था । इन्द्र ने प्रार्थना की कि हे सुशोभने ! कृपा कर यह बताइये यह यक्ष स्वरूप क्या है, जो कि प्रादुर्भूत हुआ है और इसका क्या कारण है ? इन्द्र के इस वचन का श्रवण कर अतिशय करुणा से पूर्ण भगवती ने कहा—"तुम्हारा जो दैत्यों से युद्ध हो रहा था, उसमें विजय मेरी ही कृपा से तुमको प्राप्त हुई है । मैं तुम्हारे ऊपर अनुग्रह करतें हुए, तुम्हारी देह से ही यह मेरा तेज सहसा यक्ष स्वरूप वाला निकला है ।"

अमः परं सर्वभावै हित्वा गर्वतु देहजम् ।
मामेव शरणं यात सच्चिदानन्द रूपिणीम् ।।
इत्युक्त्वा च मतादेवी मूल प्रकृति रीश्वरी ।
अन्तर्धानं गता सद्यो भक्तया देवै सभिष्टता ।।
ततः सर्वे स्वगर्वतु विहाय पदपङ्कनम् ।
सम्यगाराधग्रामासु र्भगंवत्याः परात्परम् ।।
त्रिसन्ध्यं सर्वदा सर्वे गायत्री जप तत्पराः ।
यज्ञ भागादिभिः सर्वे देवी नित्यं सिषेविरे ।।

अर्थ—भगवती ने इन्द्र से कहा—"इसलिये सर्वभाव से देह में उत्पन्न होने वाले अभिमान का त्याग करके परम सच्चिदानन्द स्वरूप वाली मेरी ही शरण ग्रहण करो । अर्थात् केवल मेरी उपासना करो ।" इतना कहकर मूल प्रकृति ईश्वरी महादेवी अर्न्तध्यान हो गईं । देवगणों ने भक्ति-भाव से उसकी स्तुति की थी । इसके अनन्तर समस्त देवों ने अपने गर्व का त्याग करके परस्पर भगवती के चरण कमल की आराधना की थी । सब लोग सर्वदा तीनों कालों में गायत्री का जप करने में तत्पर हो गये थे । सभी यज्ञ के भागों आदि के द्वारा नित्य देवी की सेवाराधना करने लगे थे ।

इस संसार में अगणित भौतिक और आध्यात्मिक कष्ट, संकट एवं विघ्न हैं, जिनके कारण सत्यात्य स्तर का विघ्न रहित जीवन यापन कठिन हो जाता है । प्रयत्न करते हुए भी सफलता हाथ नहीं लगती । ऐसी दशा में हमें हताश न होकर भगवती आदि शक्ति-अध्यात्म सामर्थ्य-गायत्री माता का सहारा लेना चाहिए ।-

गायत्री उपासना से सुनिश्चित सत्परिणाम

आत्म-कल्याण को अपना जीवन लक्ष्य निश्चित करने वाले साधक विभिन्न प्रकार की साधनाओं का अवलम्ब लेकर अभीष्ट दिशा में अग्रसर होते हैं । इसके लिए साधना पथ के पथ-प्रदर्शक गुरु के निर्देशानुसार अनेक प्रकार के ध्यान, जप, योगाभ्यास, व्रत, संयम आदि किये जाते हैं और अनेकानेक विधि विधानों का सहारा लिया जाता है । इन सभी में साधारणतः भिन्नता एवं अनेकता पाई जाती है, पर मूलतः उनमें कोई भेद नहीं है सभी साधनायें यों दिखाई भले ही भिन्न-भिन्न दें, परन्तु इन सभी का उद्भव गायत्री से ही हुआ है । बताया जाता है कि गायत्री से ८४ प्रकार के योगों का उद्भव हुआ है । देशकाल पात्र की भिन्नता के लिए भिन्न-भिन्न मनोभूमि के साधकों के लिए अलग-अलग प्रकार के साधना विधानों की आवश्यकता पड़ती है, पर मूल तो सबका एक ही है । जितना भी आत्म-ज्ञान एवं आध्यात्मिक साधना विधान है, इस सबका मूल आधार केवल गायत्री ही है ।

इसीलिए प्रायः सभी भारतीय ऋषि मुनियों ने सब साधना, उपासनाओं की मूल गायत्री का ही अवलम्बन लिया है, इतिहास पुराणों से भी पता चलता है कि तप का आरम्भ गायत्री से ही हुआ है । विष्णु की नाभि से जो कमल-नालिका निकली, वह गायत्री ही थी । सृष्टि-निर्माण से पूर्व ब्रह्माजी को आकाशवाणी द्वारा गायत्री का ज्ञान मिला, उन्होंने एक हजार वर्ष तक गायत्री का तप करके सृष्टि-निर्माण की शक्ति पाई । शंकरजी की योगमाया गायत्री ही है । वे इसी महासमाधि में लीन रहते हैं । इस महाशक्ति का जब तीन गुणों में पदार्पण होता है तो उस पदार्पण से सतोगुणी सरस्वती, रजोगुणी लक्ष्मी और तमोगुणी काली का अवतरण होता है । सविता सूर्य की आत्मा गायत्री ही कही गई है । इसी प्रकार अन्यान्य देव-शक्तियों को भी इसी महाशक्ति सागर की तरंगें कहा गया है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्राचीन युग में प्रायः सभी ऋषियों ने इसी महामन्त्र के आधार पर अपनी योग-साधनाएँ एवं तपस्यायें की हैं । सप्त ऋषियों को प्रधानता गायत्री द्वारा मिली, बृहस्पति इसी शक्ति की दक्षिणमार्गी साधना करके देव गुरु बने, शुक्राचार्य ने इस महामन्त्र का वाममार्गी भाग अपनाया और वे असुरों के गुरु हुए । साधारण ऋषि, मुनि उन्नति करते हुए महर्षि, ब्रह्मर्षि एवं देवर्षि का पद प्राप्त करते थे तो इस उत्कर्ष का मूल आधार गायत्री ही रहती थी ।

वशिष्ठ, याज्ञवल्क्य, अत्रि, विश्वामित्र, पाराशर, भरद्वाज, गौतम, व्यास, शुकदेव, नारद, दधीचि, बाल्मीकि, च्यवन, शख, लोमस, तैत्तरेय, जाबालि, शृंङ्गी, उद्दालक, वैशम्पायन, दुर्वासा, परशुराम, पुलस्त्य, दत्तात्रेय, अगस्त्य, सनत्कुमार, कण्व, शौनक आदि ऋषियों के जीवन वृत्तान्त जिन्होंने पढ़े हैं वे जानते हैं कि उनकी सहायक, शक्तियाँ जिस आधार शिला पर अवस्थित थीं—वह गायत्री है । इन ऋषियों ने अपने ग्रन्थों में गायत्री की मुक्त कण्ठ से एक स्वर से महिमा गाई है और बताया है कि आत्मा को परमात्मा बनाने वाली, नरक से स्वर्ग पहुँचाने वाली, तुच्छ को महान् बनाने वाली शक्ति गायत्री ही है । गायत्री साधना का मार्ग सबके लिए अभी भी खुला है । इस साधना को अपनाकर हर कोई अपना कल्याण कर सकता है ।

उचित तो यही है कि सभी साधनाओं की मूल गायत्री उपासना को ही अपना इष्ट बनाया जाय, क्योंकि अन्य उपासनाओं के साथ भी गायत्री उपासना तो अनिवार्य रूप से करनी ही पड़ती है । शास्त्रों में कहा भी गया है कि गायत्री उपासना के बिना अन्य उपासनायें फलवती नहीं होतीं फिर क्यों न एक मात्र गायत्री का ही अवलम्बन लिया जाय ।

गायत्री उपासना का प्रभाव सर्वप्रथम मनुष्य के मनः क्षेत्र पर पड़ता है । इससे कुविचार दूर होते हैं, दुष्कर्मों से घृणा उत्पन्न होती है, आत्म-निरीक्षण में अभिरुचि होती है तथा अपने भीतर जो-जो दोष दुर्गुण होते हैं उन्हें उपासक ढूँढ़-ढूँढ़ कर तलाश करता है, उनकी हानियों को समझता है और उन्हें त्यागने को तत्पर हो जाता है । इस प्रकार साधक को अपना वर्तमान जीवन निष्पाप बनाने की प्रेरणा मिलती है । जैसे-जैसे यह पवित्रता बढ़ती है, उसी अनुपात में पूर्व जन्मों के दुष्कृत संस्कार भी घटने और नष्ट होने लगते हैं । इसीलिए गायत्री को पाप नाशिनी, मोक्षदायिनी और कल्याणकारी कहा गया है । यथा—

गायत्र्या परमं नास्ति देवि चेह न पावनम् ।
हस्तत्राण प्रदा देवी पततां नरकार्णवे ।।

-शंखस्मृति अ० १२-१५

नरक रूपी समुद्र में गिरते हुए को हाथ पकड़कर बचाने वाली गायत्री के समान पवित्र करने वाली वस्तु, इस पृथ्वी पर तथा स्वर्ग में कोई नहीं है ।

धर्मोन्नतिमधर्मस्य नाशनं जनहृच्छुचिम् ।
मांगल्ये जगतो माता गायत्री कुसनात्सदा ।।

धर्म की उन्नति अधर्म का नाश, भक्तों के हृदय की पवित्रता तथा संसार का कल्याण गायत्री माता करें ।

गायत्री जान्हवी चोमे सर्व पाप हरे स्मृतो ।
गायत्रीच्छन्दसां माता-माता लोकस्य जान्हवी ।।

-नारद पुराण

गायत्री और गंगा यह दोनों ही सब पापों का नाश करने वाली हैं । गायत्री को वेद माता और गंगा को लोक माता कहते हैं ।

गायत्रीयो जपेन्नित्यं स न पापेन लिप्यते ।

-हरितास्मृति ३-४३

जो गायत्री का नित्य नियमित जप करता है, वह पापों में लिप्त नहीं होता ।

गायत्री पावनी जप्त्वा ज्ञात्वा याति परां गतिम् ।
न गायत्री विहीनस्य भद्रमत्र पात्र च ।।

अर्थात्— परम पावनी गायत्री का श्रद्धापूर्वक जप करके साधक परम गति को प्राप्त करता है । गायत्री रहित का तो न इस लोक में कल्याण होता है न परलोक में ।

गायत्री जाप्य निरतो मोक्षोपापं च विंदति ।

अर्थात्— गायत्री मन्त्र का जप करने वाला मोक्ष को प्राप्त करता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

परांसिद्धिमवाप्नोति गायत्री मुत्तमां पठेत् ।

गायत्री का जप करने में परा सिद्धि प्राप्त होती है ।

गायत्री महामन्त्र की उपासना से उत्पन्न आध्यात्मिक शक्ति से मनुष्य के लौकिक जीवन पर भी महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है और उसकी अनेकों आपत्तियों तथा कठिनाइयों का समाधान होकर सुख, समृद्धि, सौभाग्य, सफलता एवं उन्नति के अवसर प्राप्त होते हैं । उपासकों के अनुभवों से भी यह प्रत्यक्ष है और शास्त्र वचनों से भी इसकी पुष्टि होती है ।

एहिकामुष्यिकं सर्वं गायत्रीं जपतो भवेत् ।

–अग्नि पुराण

अर्थात्— गायत्री जप से सभी सांसारिक कामनायें पूर्ण होती हैं ।

शास्त्रों में गायत्री को कामधेनु कहा गया है । कुन्ती ने इसी कामधेनु के अनुग्रह से देव सन्तानें प्राप्त की थीं । इस संदर्भ में महाराजा पाण्डु और उनकी पत्नी कुन्ती का संवाद देवी भागवत में इस प्रकार आता है—

इत्याकर्ण्य तदा प्राहकुन्ती कमलोचनाम् ।
सुतमुत्पादयाशु त्वं मुनि गत्वा तपोन्वितम् ।।
त कुन्ती वचनं प्राह मम मन्त्रोऽस्ति कामदः ।
दत्तो दुर्वाससा पूर्व सिद्धिदः सर्वथा प्रभो ।।
निमन्त्रयेऽहं यं देवं मंत्रेणानेन पार्थिव ।
आगच्छेत्सर्वथाऽसौ मम पार्श्वं निमंत्रितः ।।

–देवी भागवत

महाराजा पाण्डु ने अपनी पत्नी कुन्ती से कहा तुम किसी तपोनिष्ठ मुनि की शरण में जाकर एक सन्तान प्राप्त करो ।

यह सुनकर कुन्ती ने कहा—दुर्वासा ऋषि का दिया हुआ एक सर्व कामनापूर्ण करने वाला कामधेनु जैसा मन्त्र मुझे ज्ञात है ।

सावित्री सत्यवान् के कथानक में सावित्री को गायत्री का प्रतीक और उत्कृष्ट जीवन जीने वाले साधक को सत्यवान् के रूप में निरूपित किया गया है । गायत्री हर किसी को वरण नहीं करती, हर किसी को मृत्यु के मुख से नहीं छुड़ाती । इसके लिए साधक को सत्यनिष्ठ होना चाहिए । सत्यवान् होना सच बोलने तक ही सीमित नहीं है । वरन् उसका संयमी, तपस्वी एवं परमार्थ प्रयोजनों में संलग्न रहना भी आवश्यक है । सावित्री सत्यवान् का विवाह किस कारण हुआ ? उन्होंने रूप, वस्त्र, धनवान, विद्यावानों की उपेक्षा करके मात्र तपस्वी का वरण क्यों किया, इसका उल्लेख महाभारत के वनपर्व में मिलता है । इसमें साधक में सत्यवान के से गुण होने का वर्णन है । तपस्वी पिता के तपस्वी पुत्र के रूप में ही सत्यवान् की चर्चा है । सावित्री कहती हैं—

तस्य पुत्रः पुरे जातः संवृद्धश्च तपोवने ।
सत्यवाननुरूपो मे भर्तेति मनसा वृतः ।।

उनके एक पुत्र हैं सत्यवान, जो पैदा तो नगर में हुए हैं, परन्तु उनका पालन-पोषण एवं संवर्धन तपोवन में हुआ है । वे ही मेरे योग्य पति हैं । उन्हीं का मैंने मन ही मन वरण किया है ।

कथानक कुछ इस प्रकार है—प्राचीन काल की बात है । मद्र देश पर राजा अश्वपति राज्य करते थे । उनके शासन में कोई दुःखी नहीं था । निर्धन और श्रेष्ठ कर्म वाले व्यक्ति ही उनके मित्र थे । चोर डाकुओं का नाम भी न था, अपराधियों का दमन करने में वे सदा तत्पर रहते थे । उनके देश में सर्वत्र सुभिक्ष था । धन-धान्य और ऐश्वर्य के कारण सभी उनके शासन का लोहा मानते थे ।

उनकी रानी का नाम मालती था । वह पतिव्रता एवं अत्यन्त रूपवती थी । उसके अद्भुत गुणों के कारण मुख-मण्डल पर तेज दमकता था । दास-दासी और परिवार के सभी व्यक्ति उसके उदार मन की भूरि-भूरि प्रशंसा करते थे ।

परन्तु सन्तान हीन होने के कारण राजा-रानी दोनों अत्यन्त दुःखी थे । विभिन्न उपाय-व्रत, उपासना आदि करने पर भी कोई सन्तान न हुई तो राजा ने एक दिन महर्षि वशिष्ठ से उचित उपाय बताने का निवेदन किया । वशिष्ठ बोले—हे राजन ! रानी से कहो कि वे भगवती गायत्री की पूजा करें । क्योंकि इन भगवती गायत्री को वेदमाता बताया गया है—

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

स्तुता मया वरदां वेदमाता,
प्रचोदयन्तां पावमानी द्विजानाम् ।
आयुः प्राणं प्रजा पशुं कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चसम्,
मह्यं दत्वा व्रजत ब्रह्मलोकम् ।।

–अथर्वेद १९।७१।५२

यह गायत्री ही तुम्हारी मनोकामना पूर्ण करेंगी, क्योंकि यह समस्त सुखों को देने वाली हैं ।

महर्षि वशिष्ठ की आज्ञानुसार रानी मालती ने भगवती गायत्री की उपासना की, परन्तु उससे कोई फल नहीं निकला । इससे राजा-रानी की मनोव्यथा अधिक बढ़ गई । वे पुनः महर्षि वशिष्ठ की सेवा में उपस्थित हुए । महर्षि ने उन्हें सान्त्वना देते हुए कहा, हे राजन् ! साधना कभी निष्फल नहीं जाती, परन्तु सब कार्य विधिपूर्वक करने से ही सम्पन्न होते हैं । तुम रानी सहित पुष्कर क्षेत्र में जाकर भगवती गायत्री की उपासना करो, तब तुम्हारी अभिलाषा पूर्ण होगी ।

महर्षि को अभिवादन कर राजा अपने घर गये और रानी को साथ लेकर पुष्कर क्षेत्र पहुँचे । वहाँ उन्होंने घोर तप किया । उनका व्रत, अनुष्ठान देखकर देववाणी हुई—'राजन् ! तुम्हारा कर्म प्रशंसनीय है । तुम भगवती गायत्री का विधिपूर्वक जप करो । तुम्हारी इच्छा अवश्य फलवती होगी ।'

राजा ने देवाज्ञा को शिरोधार्य किया । परन्तु गायत्री के जप की विधि क्या है ? इसका समाधान न हो सका । तभी महर्षि पाराशर उस मार्ग से आ निकले । राजा ने उनके पास जाकर प्रणाम किया और सम्पूर्ण वृत्तान्त कहकर गायत्री जप की विधि पूछी । महर्षि ने राजा की जिज्ञासा देखकर गायत्री के जप-अनुष्ठान की विधि का विस्तृत वर्णन करते हुए कहा—"राजन् ! विधि-रहित कर्म उसी प्रकार निष्फल होते हैं, जिस प्रकार विधि रहित अन्न कच्चा रह जाता है या जलकर भस्म हो जाता है । बिना विधि के अनुष्ठान भी या तो इष्टदेव को प्रभावित न करेंगे अथवा उनके रोष का कारण भी बन सकता है । अतः विधि पूर्वक जपादि करो और नित्यप्रति सन्ध्या कर्म भी अवश्य किया करो ।"

'जो आज्ञा' कहकर राजा अश्वपति ने महर्षि के चरणों में अपना सिर रख दिया और वहाँ से अपने राज्य मद्रदेश को लौट गये । वहाँ राजा ने पाराशर द्वारा बताई हुई विधि से भगवती गायत्री की उपासना की इससे प्रसन्न होकर भगवती ने दर्शन दिये । राजा-रानी गद्-गद् होकर उनके चरणों में गिर गये । भगवती ने उनके सिरों पर हाथ फेरते हुए कहा—'वत्स ! अब मैं आ गई हूँ । तुम किसी प्रकार की चिन्ता न करो । तुम्हारा अभीष्ट पूर्ण होने में अब अधिक विलम्ब नहीं है ।'

राजा-रानी ने सावधान होकर उन्हें बार-बार प्रणाम किया और विविध भाँति उनकी स्तुति करने लगे ।

उस समय भगवती गायत्री अत्यन्त प्रसन्न मुद्रा में थीं । उन्होंने राजा से कहा कि— 'वत्स ! तुम्हारी अभिलाषा को मैं जानती हूँ । रानी कन्या चाहती है और तुम पुत्र की कामना करते हो । तुम्हें दोनों की ही प्राप्ति होगी ।' यह कहकर भगवती अन्तर्ध्यान हो गईं और राजा-रानी अपने देश में चले गये ।

कुछ कालोपरान्त कन्या का जन्म हुआ । राजा ने उसका नाम सावित्री रखा । वह सुन्दरी कन्या चन्द्रकला के समान प्रतिदिन बढ़ने लगी । विवाह योग्य होने पर उस कन्या ने राजा द्युमत्सेन के पुत्र सत्यवान् का वरण किया ।

विवाह के एक वर्ष पश्चात् राजा द्युमत्सेन ने अपने पुत्र को वन से फल और ईंधन लाने की आज्ञा दी । सत्यवान् हर्ष पूर्वक जंगल को चल दिये । सावित्री छाया के समान उनके साथ लग गई । सत्यवान् जैसे ही वृक्ष पर चढ़कर लकड़ी काटने लगे, वैसे ही गिरकर मृत्यु को प्राप्त हुए । उनके प्राण को लेकर यमराज जैसे ही लौटे, वैसे ही सावित्री भी उनके पीछे चल पड़ी । यमराज यह देखकर रुक गये । उन्होंने कहा—'सावित्री ! तुम्हारे पति की आयु पूर्ण हो चुकी है, अब वह मेरे लोक को जायेगा, परन्तु, तुम इस पंचभौतिक देह से मेरे लोक में प्रवेश नहीं कर सकोगी । यह देह सदा नश्वर है, अमर आत्मा इस देह से निकलकर मुक्त हो जाती है । अतः इसका मोह छोड़कर अपने घर लौट जाओ ।'

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सावित्री ने कहा—'भगवन् ! मैं अपने प्राणनाथ को छोड़कर कहीं नहीं जा सकती । मुझे भी इनके साथ ले चलिए ।'

यमराज बोले—'सावित्री ! तुम्हारा जन्म भगवती गायत्री की कृपा से हुआ है । तुम्हारी पति-भक्ति को देखकर मेरी कामना है कि तुम अपने पति की प्रिय पत्नी बनो । इससे भिन्न भी यदि कोई अभीष्ट हो तो मैं देने को तत्पर हूँ ।'

सावित्री ने कहा—'मैं पुत्रवती होऊँ । मेरे पिता भी पुत्र प्राप्त करें । मेरे श्वसुर भी नेत्र-प्राप्त कर अपने राज्य को पुनः पावें ।'

यमराज ने कहा—वत्से ! तुम्हारी सभी कामनायें पूर्ण होंगी । तुम सौभाग्यवती होगी । अब विलम्ब हो रहा है, मुझे जाने दो और तुम भी अपने घर लौटो ।

यह कहकर यमराज शीघ्रता से जाने लगे । सावित्री पुनः उनके पीछे चली । यमराज बोले-'सावित्री ! अब अपने घर जाकर, भगवती (गायत्री) का व्रत करो । जो नारी इस व्रत को करती है, वह इहलौकिक और पारलौकिक सभी सुखों को प्राप्त करती है ।'

सावित्री ने कहा—'प्रभो ! आपकी आज्ञा अक्षरशः पालन करूँगी । परन्तु, मेरे पति को मुझे लौटा दीजिये ।'

यमराज बोले—'यह कैसे होगा ? पुत्री ! इसकी जितनी आयु इस लोक में थी, वह पूर्ण हो चुकी है । अतः अब यह यहाँ रहने का अधिकारी नहीं है ।'

सावित्री ने कहा—'प्रभो ! आपने मुझे अपने पति की प्रिय पत्नी बनने की कामना की है और मुझे पुत्रवती होने का 'वर' भी प्रदान किया है । जब आप मेरे सौभाग्य को अपने साथ ले जा रहे हैं तो मैं सौभाग्यवती कैसे हो सकूँगी ?'

यमराज ने प्रसन्न होकर सत्यवान् के प्राण उसे लौटा दिये । वह अपने पति के सहित घर पर लौटीं । वहाँ उसके श्वसुर को नेत्र लोभ हो चुका था और समय पाकर उन्हें राज्यश्री की पुनः प्राप्ति हुई तथा सावित्री के पिता राजा अश्वपति भी पुत्रवान् हो गये ।

गायत्री उपासना से माया-मुक्ति

माया बन्धनों से छूटना ही मुक्ति है । मुक्ति अर्थात् दृष्टिकोण का परिष्कार तत्व का यथार्थ दर्शन एवं वस्तु स्थिति के अनुरूप अपनी विचार पद्धति और कार्य प्रणाली को सही कर लेना । माया बन्धन दृष्टिकोण की निकृष्ट स्थिति का और माया मुक्ति परिष्कृत दृष्टिकोण का बोधक है । भगवत माया तो परा-अपरा प्रकृति के रूप में समस्त ब्रह्माण्ड में आदिकाल से व्याप्त है । उससे छुटकारे का प्रश्न नहीं । माया की शरण अर्थात् माता की गोद । इसमें अहिर्निश सुख ही सुख है । माँ गायत्री की आंचल छाया में हम असीम सुख-शान्ति प्राप्त कर सकते हैं ।

माँ भगवती कहती हैं —

युष्मानहं नर्त्तयामि काष्ठ पुत्तलिकोपमाम् ।
तां मां सर्वात्मिकां यूयं विस्मृत्य विजगर्वतः ।।
अहंकारा वृतात्मानो मोहमाप्ता दुरन्तकम् ।
अनुग्रहं ततः कर्तुं युष्मद्देश दनुत्तमम् ।।
निःसृतं सहसा तेजो मदीयं यक्षनित्यपि ।
अनः परं सर्व भावैर्हित्या गर्वं तु देहजम् ।
मामेव शरणं यात सच्चिदानन्द रूपिणीम् ।।

अर्थात्- मैं आप सबके हृदयान्तश्चारिणी होकर आपको काठ की पुतली की तरह नचाती हूँ । अपने अहंकार से अभिभूत होकर सभी निज गर्व से भूलकर दुर्दान्त को, मोह को प्राप्त होते हैं । उस समय आपके कार्यों की सिद्धि के लिए अनुग्रह करके आविर्भूत होकर तेजःस्वरूप में मैं अवस्थित होती हूँ । इसलिए अब आप लोग सर्वभाव से देह के गर्व को त्यागकर सच्चिदानन्द रूपिणी मुझमें ही शरण लीजिए आपका सर्वत्र शुभ होगा ।

माया और मोह परस्पर अविच्छिन्न रूप से जुड़े हैं । जहाँ माया होगी, वहाँ मोह होगा, समझना चाहिए कि मोह माया का ही प्रभाव है । वस्तुतः समस्त प्रकृति वैभव ही माया है और उस माया से प्रेरित मनुष्यों से लेकर देवताओं तक चैतन्य प्राणधारियों की और दृश्य पदार्थों की गतिविधियों

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तक में एक माया को ही ओत-प्रोत समझना चाहिए । वस्तुतः अध्यात्म का मर्म यही है कि शक्ति और माया का सही स्वरूप समझ लिया जाये । अज्ञान के अन्धकार से जब साधक प्रकाश की ओर बढ़ता है तो उसे तत्व ज्ञान होने लगता है । आद्यशक्ति गायत्री ही समस्त सृष्टि की जननी है । लिंग भेद में पड़ने की आवश्यकता नहीं । वह उससे भी परे एक परमशक्ति महत् सत्ता है ।

अथर्ववेद के दसवें सूक्त में उल्लेख आता है कि गायत्री को जानने वाले साधकों ने अमृतत्व की प्राप्ति की है—

यद्गायत्रे अधि गायत्रमाहितं
त्रैष्टुभाद्वा, त्रैष्टुभं निरतक्षत ।
यद्वा जगज्जगत्याहितं पदं य,
इत्तद्विदुस्ते अमृतत्वमानुशः ।।१।।
गायत्रेण प्रति मिमी अर्कमर्केण,
साम त्रैष्टुभेन वाकम् ।
वाकेन वाकं द्विपदा चतुष्पदाक्षरेण,
मिमते सप्तवाणीः ।।२।।

अर्थात्—गायत्री से सम्बन्धित जो गायत्र पद है अथवा त्रैष्टुप से जो त्रैष्टुप् पद मिलता है अथवा जगती द्वारा जो पद जगती में लक्षित है, जिन साधकों ने उसी को जाना है, उन्होंने अमृतत्व को प्राप्त किया है ।

अर्थात्—गायत्री के साथ प्रत्येक ऋचा को पढ़ा जाता है एवं ऋचा के साथ साम गाया जाता है । त्रिष्टुप के साथ वाक् और वाक् के साथ द्विपदा-चतुष्पदा अक्षर सहित सात छन्दमय सब वेद के अनुवाक् पढ़े जाते हैं । अर्थात् चारों वेद जो सात छन्दों में छन्दबद्ध हैं, गायत्री और त्रिष्टुप् के आधार पर स्थित हैं ।

तैत्तरीयोपनिषद् में भी उल्लेख है—

"गायत्रं प्रातः सवनं त्रैष्टुभं माध्यं दिनं सवनं जागतं तृतीयं सवनम् ।।"

-तै० सं० २, २, ९, ५-६

अर्थात्—गायत्री से प्रातः सवन, त्रिष्टुप से माध्य दिन सवन और जगती से सायं सवन करने वालों को जिस पद की प्राप्ति कही गयी है वह ब्रह्म पद ही अमर पद है ।

पाप नाशिनी गायत्री

परमात्मा ने मनुष्य को कर्म करने की जो स्वतन्त्रता प्रदान की है वह अन्य किसी प्राणी को नहीं दी है । इसीलिए अन्य प्राणियों को भोगयोनि के जीव तथा मनुष्य को कर्मयोनि का जीव कहा गया है । कर्म करने की इस स्वतन्त्रता के कारण देवता भी मनुष्य योनि में जन्म लेने के लिए तरसते हैं, क्योंकि अपने विवेक से अच्छे-बुरे कर्म करने की स्वतन्त्रता प्राप्त होने के कारण मनवाँछित उन्नति कर सकता है तथा पर्याप्त पुण्य अर्जित कर नर से नारायण और पुरुष से पुरुषोत्तम बन सकता है, लेकिन इस स्वतन्त्रता के कारण मनुष्य बुरे कर्मों के लिए भी स्वतन्त्र है । प्रायः होता यह है कि तात्कालिक स्वार्थ सिद्ध होता दिखाई पड़ने पर अधिकाँश व्यक्ति न करने योग्य कार्य करने लगते हैं । उनसे तत्काल स्वार्थों की पूर्ति होती भले दिखाई दे, पर जब उनके वास्तविक परिणाम सामने आते हैं तो रोग, शोक, क्लेश, क्षोभ जैसी कष्टकर स्थितियाँ उत्पन्न होती हैं और लोग अपने भाग्य को कोसने लगते हैं ।

वस्तुतः जिसे दुर्भाग्य कहा जाता है, वह और कुछ नहीं अपने पूर्वकृत पापों का ही दुष्परिणाम होता है । इसलिए आवश्यक है कि इस दूरदर्शी विवेक बुद्धि को विकसित किया जाय जिससे उचित-अनुचित का निर्णय निर्धारण किया जा सके और उत्थान प्रगति के पथ पर अग्रसर हुआ जा सके । गायत्री साधना से अन्तःकरण इस प्रकार परिष्कृत और निर्मल हो जाता है कि उचित, अनुचित, प्रगतिदायी और पतनकारी, लाभप्रद और हानिकर, पुण्य कर्मों तथा पापों का स्पष्ट विवेक होने के कारण दुष्कर्मों की ओर मन ही नहीं जाता क्योंकि उसके परिणाम स्पष्ट दिखाई देते हैं । परिणाम जानने पर भी बुरे कार्यों में कौन प्रवृत्त होगा ?

इसके साथ ही मनुष्य को अच्छे और बुरे कार्यों में प्रवृत्त होने की प्रेरणा बहुत कुछ वातावरण के प्रभाव से भी मिलती है । कहना चाहिए कि वातावरण से प्रभावित होकर भी मनुष्य दुष्कर्मों की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ओर अग्रसर होता है । ऐसी स्थिति में भी गायत्री साधना से साधक को वातावरण से अप्रभावित होने की प्रेरणा मिलती है । प्रेरणा ही नहीं बल मिलता है ।

शास्त्रों में उन परिस्थितियों को, जिनमें मनुष्य वातावरण से प्रभावित होकर दुष्कर्मों की ओर अग्रसर होता है, कलियुग कहा गया है । ऐसी परिस्थितियों के प्रभाव से उनके परिणाम स्वरूप होने वाले दुष्कर्मों की ओर प्रेरणा, दबाव तथा उनसे बचे रहने के उपाय के सम्बन्ध में राजा जनमेजय ने महर्षि व्यास से पूछा तो महर्षि व्यास ने उत्तर दिया कि इसके लिए भगवती महाशक्ति का आश्रय लेना ही सर्वोत्तम है । उनकी शरण में जाने वाले की अन्तःप्रेरणा उसे दुष्कर्मों से और दुष्ट भावों से बचाती है । फलतः वह उन बाह्य एवं आंतरिक कुकर्मों, कुभावों से भी बच जाता है जिनकी प्रेरणा कलियुग के कुपथ पर चलने वालों से निरन्तर मिलती रही ।

महर्षि व्यास और जनमेजय का यह सम्वाद इस प्रकार है—

भगवन्! सर्वधर्मज्ञ! सर्वशास्त्र विशारदा ।
कलाव धर्म बहुले नराणां का गतिर्भवेत् ।।
यद्यस्ति तदुपायश्चेद्दयया तं वदस्व मे ।
एकएव महाराज तत्रोपायस्तु नापरः ।।
सर्व दोष निरासार्थं ध्यायेद्देवी पदाम्बुजम् ।
मसन्त्यधामि तावन्ति मावती शक्तिरस्ति हि ।।

अर्थ–महर्षि वेद व्यासजी ने राजा जनमेजय युग धर्म के कराल समय में सद्गति का उपाय पूछते हुए कहते हैं—हे सम्पूर्ण धर्म के तत्व ज्ञता और समस्त शास्त्रों के महामनीषी । इस अधर्म से परिपूर्ण इस घोर कलियुग में मनुष्यों की गति कैसी होगी, यदि इसका कोई उपाय हो तो आप कृपा करके बतलायें । व्यास महर्षि ने कहा—

इसका केवल एक ही उपाय है, दूसरा कोई नहीं है । कलि में समस्त दोषों को निरस्त करने के लिए देवी के चरण कमलों का ध्यान करना चाहिए । उतनी पापों में सामर्थ्य नहीं है, जितनी देवी की शक्ति होती है ।

स्मृता सम्पूजिता भक्ता ध्याता चोच्चारिता स्तुता ।
ददाति वाञ्छितानर्थान्कामदा तेन कीर्त्यते ।।
समाराधिता च तथा नृभिरेभिः सदाऽम्बिका ।
यतोऽमी सुखिनः सर्वे संसारेस्मिन्न संशयः ।।
इति राजञ्छ्रुतं तत्रमया मुनिसमागमे ।
लोमशस्य मुखात्कामं देवी माहात्म्य मुत्तमम् ।।
इति सच्चिन्त्ये राजेन्द्र कर्त्तव्यं च सदार्चनम् ।
भक्तया परमया देव्याः प्रीत्या च पुरुषर्षभ ।।

अर्थ–सत्यव्रत के आख्यान में देवी की महिमा का वर्णन करते हुए कहा गया है—भगवती के स्मरण से वह स्वपूजित, भक्तिभाव से ध्यान की हुई, मुख से उच्चारण किये जाने पर और स्तुत होती हुई मानवों के सभी इच्छित मनोरथों को प्रदान कर देती है । इसीलिए उसका 'कामदा'-यह नाम कहा जाता है । मनुष्यों द्वारा सदा समाराधित वह देवी होती है, इसीलिए इस संसार में सब सुखी हैं, इसमें संशय नहीं है । व्यास ने कहा—हे राजन्! मैंने लोमश के मुख से देवी का माहात्म्य सुना है, अतः प्रेम-भक्ति से देवी का सदा अर्चन करना चाहिए ।

विगत जीवन भी अगर कुमार्गगामी रहा हो तो इस महाशक्ति का आश्रय लेने वाले व्यक्ति के अन्तःकरण में ऐसी प्रबल, प्रचण्ड और प्रखर प्रेरणाशक्ति उभरती है जिसके परिणामस्वरूप वह अपना जीवनक्रम बदलने के लिए विवश हो जाता है । गायत्री साधना के परिणामस्वरूप वह अपने अन्तःकरण को एक ऐसे दिव्य प्रकाश में भरा-पूरा अनुभव करने लगता है कि पिछले जीवन में अपनाई गई दुष्टता त्याग कर वह धर्म पथ का अनुगामी बनता है और अपना लोक-परलोक सुधरता है ।

महर्षि बाल्मीक का प्रसंग ऐसा ही है, वे जीवन के प्रथम चरण में डाकू थे पर वे आत्म-कल्याण की उपासना में प्रवृत्त हुए तो सारे दोष-दुर्गुणों से छुटकारा पाकर ऋषि जीवन बिताने लगे और जीवन की पूर्णता का लक्ष्य प्राप्त कर सकने में समर्थ हुए ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बीजोच्चारण तो देव्या विद्या प्रस्फुरिताऽखिला ।
बाल्मीकेश्च यथा पूर्व तथा स द्युभवत्कविः ।।

अर्थ-गायत्री भगवती के केवल बीज मात्र के उच्चारण करने से बाल्मीक की समस्त विद्यायें प्रस्फुटित हो गई थीं और सर्वप्रथम महान् कवि हो गये थे ।

भगवती महाशक्ति गायत्री यह नहीं देखती कि साधक का पिछला जीवन कैसा रहा है । इस आधार पर वे किसी से घृणा भी नहीं करती । दीपक प्रत्येक व्यक्ति को, चाहे वह भला हो या बुरा उसे प्रकाश देता है, उसका किसी व्यक्ति से बैर-विरोध नहीं । माँ अपने बुरे से बुरे बेटे से भी सुधरने की आशा रखती है और उस पर अन्य पुत्रों की तरह स्नेह वर्षा करती है । गायत्री महाशक्ति की तुलना न तो दीपक से की जा सकती है और न ही शरीर को जन्म देने वाली माँ से । फिर भी उस महाशक्ति की विशेषता को समझने के लिए यह उदाहरण ध्यान में रखे जा सकते हैं । गायत्री महाशक्ति अपने शरण में आने वाले को दिव्य प्रकाश देती है, उसे सन्मार्गगामी बनने की प्रेरणा प्रदान करती है और सच्ची सुख शान्ति का अधिकारी बना देती है ।

न वैषम्यं न नैर्घृण्यं भगवत्यां कदाचन ।
केवलं जीव मोक्षार्थं यतते भुवनेश्वरी ।।

अर्थ-भगवती गायत्री में कोई भी विषमता का भाव नहीं रहता है, अर्थात् वह सबको समान भाव से देखती है और उनको किसी से भी घृणा नहीं होती है । वह इस सम्पूर्ण भुवन की स्वामिनी केवल जीवों के कल्याण के लिए ही सदा यत्न करती है ।

सच्चे मन से गायत्री माता की शरण में जाने वाले व्यक्ति का अभ्युदय-लौकिक जीवन की सफलता और निःश्रेयस्-आत्मिक कल्याण सुनिश्चित है । इसी से कहा गया है कि भौतिक जीवन की सुख समृद्धि और आध्यात्मिक जीवन की शान्ति सद्गति का उन्हें अधिकार मिलता है, जो सच्चे मन से, वचन और कर्म से माता की शरण में जाते हैं और उनके निर्देशानुसार जीवनक्रम का निर्धारण करते हैं ।

गायत्र्या सर्व संसिद्धि

गायत्र्या सर्व संसिद्धिर्द्विजानां श्रुति संमता ।

वेद वर्णित सारी सिद्धियाँ गायत्री उपासना से मिल सकती हैं ।

यद्यत्स्पृशति हस्तेन यच्च पश्यति चक्षुषा ।
पूतं भवति तत् सर्व गायत्र्या न परं विदुः ।।

-गरुड पुराण

जिस-जिस का हाथ स्पर्श करता है और जो-जो नेत्र से देखता वह सभी पूत हो जाता है । गायत्री से परे अन्य कुछ भी नहीं है । यह गायत्री सर्वोपरि शिरोमणि मन्त्र है ।

यतः साक्षात् सर्वदेवतात्मनः सर्वात्मद्योतकः ।
सर्वात्म प्रतिपादकोऽयं गायत्री मन्त्रः ।।

"इस प्रकार यह गायत्री मन्त्र साक्षात् सर्व देवता स्वरूप सर्व शक्तिमान, सबको प्रकाश देने वाला और परमात्मा के सर्वात्म स्वरूप ज्ञान कराने वाला है ।"

ओजश्शक्ति बल प्रभाव सुषमा तेजस्सु वीर्य प्रभा ।
ज्ञानैश्वर्य महस्सहो जययशस्स्थैर्यं प्रतिष्ठाश्रियः ।।
विज्ञान प्रतिभा मतिस्मृतिधृति प्रज्ञाप्रथस्सु ख्यातः ।
वर्णास्त्वन्मानुग स्त्रिरषभि रहो वर्ध्यन्त एवात्रमे ।।

ओज, शक्ति, बल, महिमा, कान्ति, तेज, पराक्रम, प्रकाश, ज्ञान, ऐश्वर्य, विकास, सहनशक्ति, जय, कीर्ति, स्थिरता, प्रतिष्ठा, लक्ष्मी, विज्ञान, प्रतिभा, मति, स्मृति, घृति, प्रज्ञा, ख्याति-यह चौबीस गुण हे माता ! तुम्हारे मन्त्र में रहने वाले चौबीस वर्णों द्वारा मुझमें अभिवृद्धि पा रहे हैं ।

गायत्री, गीता, गंगा और गौ यह भारतीय संस्कृति की चार आधारशिला हैं, इन सब में गायत्री का स्थान सर्वप्रथम है । जिसने गायत्री के छिपे हुए रहस्यों को जान लिया उसके लिये और कुछ जानना तथा और कुछ पाना शेष नहीं रह जाता ।

समस्त धर्म ग्रन्थों में गायत्री की महिमा एक स्वर में कही गई है । समस्त ऋषि, मुनि मुक्त कण्ठ से गायत्री का गुणगान करते हैं । शास्त्रों में गायत्री की महिमा बताने वाला इतना साहित्य भरा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पड़ा है कि उसका संग्रह किया जाय तो एक बड़ा ग्रन्थ ही बन सकता है । गीता में भगवान् ने स्वयं कहा है—'गायत्री छन्दसामहम्' अर्थात्—गायत्री मन्त्र में स्वयं ही हैं ।

गायत्री सर्वश्रेष्ठ एवं सर्वोत्तम मन्त्र है । जो कार्य संसार में किसी अन्य मन्त्र से हो सकता है, गायत्री से भी अवश्य हो सकता है । इस साधना में कोई भूल रहने पर भी किसी का अनिष्ट नहीं होता, इससे सरल, स्वल्प श्रम साध्य और शीघ्र फलदायिनी साधना दूसरी नहीं है । समस्त धर्म ग्रन्थों में गायत्री की महिमा एक स्वर से कही गई है । अथर्ववेद में गायत्री को आयु, विद्या, सन्तान, कीर्ति, धन और ब्रह्मतेज प्रदान करने वाली कहा गया है ।

गायत्री की साधना द्वारा आत्मा पर जमे हुए मल विक्षेप हट जाते हैं, तो आत्मा का शुद्ध स्वरूप प्रकट होता है और अनेक ऋद्धि-सिद्धियाँ परिलक्षित होने लगती हैं । दर्पण माँज देने पर उसका मैल छूट जाता है, उसी प्रकार गायत्री साधना से आत्मा निर्मल एवं प्रकाशमान होकर ईश्वरीय शक्तियों, गुणों, सामर्थ्यों एवं सिद्धियों से परिपूर्ण बन जाती है ।

गायत्री मन्त्र से आत्मिक कायाकल्प हो जाता है । इस महामन्त्र की उपासना आरम्भ करते ही साधक को ऐसा प्रतीत होता है कि मेरे आन्तरिक क्षेत्र में एक नई हल-चल एवं रद्दो-बदल आरम्भ हो गई है । सतोगुणी तत्वों की अभिवृद्धि होने से दुर्गुण, कुविचार, दुःस्वभाव एवं दुर्भाव घटने आरम्भ हो जाते हैं और संयम, नम्रता, उत्साह, स्फूर्ति, श्रमशीलता, मधुरता, ईमानदारी, सत्यनिष्ठा, उदारता, प्रेम, शान्ति, सेवाभाव, आत्मीयता आदि सद्गुणों की मात्रा दिन-दिन बड़ी तेजी से बढ़ती जाती है । फलस्वरूप लोग उसके स्वभाव एवं आचरण से संतुष्ट होकर बदले में प्रशंसा, कृतज्ञता, श्रद्धा एवं सम्मान के भाव रखते हैं और समय-समय पर उसकी अनेक प्रकार से सहायता करते रहते हैं । इसके अतिरिक्त सद्गुण स्वयं इतने मधुर होते हैं कि जिस हृदय में इनका निवास होता है वहाँ आत्म-सन्तोष की परम शान्तिदायक शीतल निर्झरिणी सदा बहती रहती है । ऐसे लोग सदा स्वर्गीय सुख का आस्वादन करते रहते हैं ।

गायत्री-साधना से साधक के मनःक्षेत्र में असाधारण परिवर्तन हो जाता है । विवेक, दूरदर्शिता, तत्वज्ञान और ऋतम्भरा बुद्धि की अभिवृद्धि हो जाने के कारण अनेक अज्ञान जन्य दुःखों का निवारण हो जाता है । प्रारब्धवश, अनिवार्य कर्म फल के कारण कष्ट साध्य परिस्थितियाँ हर एक के जीवन में आती रहती हैं । हानि, शोक, वियोग, आपत्ति, रोग, आक्रमण, विरोध, आघात आदि की विभिन्न परिस्थितियों से जहाँ साधारण मनोभूमि के लोग मृत्यु तुल्य कष्ट पाते हैं वहाँ आत्म-बल सम्पन्न गायत्री साधक अपने विवेक, ज्ञान, वैराग्य, साहस, आशा, धैर्य, सन्तोष, संयम और ईश्वर विश्वास के आधार पर इन कठिनाइयों को हँसते-हँसते आसानी से काट लेता है । बुरी अथवा साधारण परिस्थितियों में भी वह अपने आनन्द का मार्ग ढूँढ़ निकालता है और मस्ती, प्रसन्नता एवं निराकुलता का जीवन बिताता है ।

गायत्री को भूलोक की कामधेनु कहा गया है, क्योंकि यह आत्मा की समस्त क्षुधा पिपासाएँ शांत करती है । गायत्री को 'सुधा' कहा गया है-क्योंकि जन्म मृत्यु के चक्र से छुड़ाकर सच्चा अमृत प्रदान करने की शक्ति से वह परिपूर्ण है । गायत्री को 'पारसमणि' कहा गया है, क्योंकि उसके स्पर्श से लोहे के समान कलुषित अन्तःकरणों का शुद्ध स्वर्ण जैसा महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हो जाता है । गायत्री को 'कल्पवृक्ष' कहा गया है, क्योंकि इसकी छाया में बैठकर मनुष्य उन सब कामनाओं को पूर्ण कर सकता है जो उसके लिये उचित एवं आवश्यक हैं ।

श्रद्धापूर्वक गायत्री माता का अञ्चल पकड़ने का परिणाम सदा कल्याणकारक ही होता है । गायत्री को 'ब्रह्मास्त्र' कहा गया है, क्योंकि कभी किसी की गायत्री साधना निष्फल नहीं जाती । इसका प्रयोग कभी व्यर्थ नहीं होता ।

सबसे उत्तम यह है कि निष्काम होकर अटूट श्रद्धा और भक्ति भाव से गायत्री की उपासना की जाय, कोई कामना पूर्ति की शर्त न लगाई जाय, क्योंकि मनुष्य अपने वास्तविक लाभ या हानि और आवश्यकता को स्वयं उतना नहीं समझता जितना

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

घट-घट वासिनी सर्वशक्तिमान माता समझती है । वह हमारी वास्तविक आवश्यकताओं को स्वयं पूरा करती है । प्रारब्धवश कोई अटल दुर्भाग्य न भी टल सके तो भी साधना निष्फल नहीं जाती । वह किसी न किसी अन्य मार्ग से साधक को उसके श्रम की अपेक्षा अनेक गुना लाभ अवश्य पहुँचा देती है । सबसे बड़ा लाभ आत्म-कल्याण है । जो यदि संसार के समस्त दुःखों को अपने ऊपर लेने से प्राप्त होता हो, तो भी प्राप्त करने ही योग्य है ।

हमारा व्यक्तिगत अनुभव

ईश्वर की कृपा से, उसके आशीर्वाद से हमारा जीवन प्रारम्भ से लेकर अन्त तक साधनामय रहा है । स्वाध्याय, चिन्तन, आत्मनिर्माण, उत्तरदायित्वों की पूर्ति और लोक सेवा के साथ हमें आध्यात्मिक साधनाएँ करने का भी सौभाग्य प्राप्त हुआ है । अनेक सुयोग्य और कई सिद्ध योगियों, ऋषिकल्प गुरुओं के सरंक्षण में हमने अनेकों दीर्घ कालीन कष्ट साध्य साधनाएँ की हैं, अनेकों तपश्चर्याओं में अपने को काफी तपाया है । इस लम्बे साधन काल में हमने जो अनुभव प्राप्त किये हैं, उनके आधार पर यह कहा जा सकता है कि अन्य सब साधना विधियों की अपेक्षा गायत्री की साधना अपेक्षाकृत सरल है, शीघ्र सफल होने वाली और अधिक उत्तम परिणाम उत्पन्न करने वाली है । इस साधना में वैसा कोई विक्षेप नहीं आता जैसा कि अन्य साधनाओं में आता है ।

ईश्वर प्राप्ति और आत्म-दर्शन की दक्षिण मार्गी साधनाएँ निर्बाध हैं । कथा, कीर्तन, भजन, व्रत, उपवास से आत्म-शुद्धि होती है । इन्हें निरन्तर करते रहने से मन के कषाय कल्मष दूर होते जाते हैं । यह पिपीलका मार्ग कहलाता है । चींटी धीरे-धीरे चलती हुई भी कालान्तर में सुदूर देशों की यात्रा कर लेती है ।

दूसरा विहंगम मार्ग है । यह जल्दी का रास्ता है । इसे हठ योग या धाममार्ग भी कहते हैं । इस मार्ग पर चलने वाला उग्र परिश्रम करता है, कष्ट साध्य तपश्चर्याएँ करता है और उस साहसिकता के आधार पर देर के रास्ते को जल्दी ही पार कर लेता है । इस मार्ग में ऐसी छोटी पगडंडियाँ भी हैं जो किसी छोटे सकाम प्रयोजन को पूरा करने में विशेष रूप से फलवती होती हैं । ऐसी पगडंडियों को तंत्र मार्ग कहते हैं । हमने इन तीनों मार्गों का अभिगमन काफी दूर तक किया है और उसके भले-बुरे परिणामों को देखा है ।

इस साधना काल में हमें व्यक्तिगत रूप से कितने ही अनुभव हुए हैं । राजमार्ग में-पिपीलका मार्ग में कथा, कीर्तन, सन्ध्या, पूजा प्रमुख हैं । इस मार्ग पर साधक को एक निष्ठा के साथ लम्बे समय तक चलते रहने की तैयारी करनी पड़ती है । यदि उसका मन फल की ओर झुका, या साधना के परिणामों को स्थूल दृष्टि से नापना शुरू किया, या नवीनता के अभाव में मन ऊबने लगा तो उत्साह ठंडा पड़ जाता है । देखा गया है कि पिपीलका मार्ग पर चलने वाले साधक कुछ समय पश्चात् हतोत्साह हो जाते हैं और अपना प्रयत्न छोड़ बैठते हैं । हठ योग का मार्ग कष्ट साध्य है । उसमें इतनी गर्मी में अपने को तपाना होता है कि यदि साधक में पर्याप्त साहस, धैर्य और शौर्य न हो तो उसके पैर लड़खड़ा जाते हैं और थोड़ा बहुत आगे चलकर वह बैठ जाता है । तंत्र शीघ्र फलदाता है-पर उसमें खतरे काफी हैं । साधना काल में तलवार की धार पर होकर गुजरना होता है । थोड़ी-सी भूल हो जाने पर अनर्थ हो सकता है । उस साधना के समय में विशेष रूप से ऐसे भय और प्रलोभन उपस्थित होते हैं जिससे फिसल जाने से सारा प्रयत्न निष्फल हो जाता है और साधना भ्रष्ट होने के कारण कोई विपत्ति सिर पर आ जाती है ।

राजमार्ग से ईश्वर प्राप्ति और आत्म-दर्शन का पारमार्थिक लाभ होता है । हठ मार्ग से अपने में कोई चमत्कारिक शक्तियाँ एवं सिद्धियाँ उत्पन्न होती हैं । तंत्र से कोई विशेष प्रयोजन सिद्ध होता है और किसी अदृश्य प्राणी से ऐसा सम्बन्ध हो जाता है कि वह साधक का आज्ञानुवर्ती बनकर उसके बहुत से ऐसे कार्य पूरे करता है जो साधारण रीति से होने कठिन हैं । इन तीनों मार्गों को क्रमशः सत्, रज, तम का मार्ग कह सकते हैं । चूँकि लोगों में से अधिकों की वृत्ति तम की ओर होती है, इसलिए

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

उन्हें तंत्र का मार्ग रुचता है । उससे कम रज में प्रवृत्त होते हैं वे साधना द्वारा राजसिक फल चाहते हैं । बहुत कम संख्या के लोग सत् प्रधान हैं, इसलिए ईश्वर प्राप्ति के लिए विरले ही साधना को पकड़ते हैं । तीनों मार्ग की साधनाएँ साधारणत: अलग-अलग हैं । कई बार तो उनमें भारी अन्तर होता है । राजमार्गी को अहिंसा का पालन करना होता है दूसरी ओर तंत्रमार्गी शक्ति, पशु बलि करने से भी नहीं हिचकते ।

साधना क्षेत्र के इन वन उपवनों में परिभ्रमण करने के उपरान्त हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि गायत्री साधना में उपरोक्त तीनों मार्गों का समन्वय है । उससे तीनों प्रयोजन सिद्ध होते हैं और जो विघ्न अन्य साधनाओं में होते हैं वे इसमें नहीं होते और सफलताएँ अपेक्षाकृत अधिक शीघ्रता पूर्वक मिलती हैं । हम ऐसे महात्माओं और महापुरुषों को जानते हैं जिन्होंने केवल गायत्री का आश्रय लेकर आत्म-साक्षात्कार किया है और ईश्वर के समीप पहुँचे हैं । समाधि सुख, परमानन्द, जीवन मुक्ति और तुरीयावस्था का सर्वोच्च सुख उन्होंने गायत्री की कृपा से प्राप्त किया है । हमने अपनी आँखों ऐसे सिद्ध पुरुष देखे हैं, उनके साथ रहे हैं जिन्होंने असाधारण आत्मिक बल संग्रह किया है और चमत्कारी सिद्धियाँ दिखाने की क्षमता प्राप्त की है । उनको यह सिद्धियाँ गायत्री द्वारा ही मिली हैं । हम ऐसे तांत्रिकों को भी जानते हैं जिनका उपास्य इष्ट गायत्री है और उसी के द्वारा वे अन्य तांत्रिक की भाँति पिशाच विद्या के सम्पूर्ण कार्य तथा काम्य प्रयोजनों में सफल होते हैं । इस प्रकार हमने देखा है कि अकेली गायत्री में वह शक्ति मौजूद है जिससे विविध स्वभावों के मनुष्य अपने उद्देश्यों को लेकर अध्यात्म मार्ग में प्रवेश कर सकें । निश्चय ही गायत्री इस भूलोक की कामधेनु हैं ।

अपने इस निष्कर्ष के आधार पर हमने अपना साधना का केन्द्र गायत्री को नियुक्त किया है । २४ महापुरश्चरणों के पश्चात् हमें दृढ़ विश्वास हो गया है कि इससे कम परिश्रम और कम खतरे में इससे अधिक सत्परिणाम उपस्थित करने वाला साधन शायद ही कोई होगा । जो सत्परिणाम हमारे स्वयं के अनुभव में आये हैं उन सबका वर्णन यहाँ सम्भव नहीं है, पर इतना कहा जा सकता है कि आत्मिक पवित्रता ईश्वर की ओर प्रगति तथा कष्ट ग्रस्त व्यक्तियों की सेवा में गायत्री शक्ति ने हमे महत्त्वपूर्ण सहायताएँ दी हैं और संकट पूर्ण क्षणों में हमारा प्रत्यक्ष पथ प्रदर्शन किया है ।

अपने व्यक्तिगत अनुभव तथा आर्ष ग्रन्थों और आप्त पुरुषों का आदेश दोनों ही प्रकार से गायत्री के महत्त्व पर हमें अटूट श्रद्धा है । उसी के आधार पर हमने यह कहने का साहस किया है कि गायत्री प्रत्यक्ष कामधेनु हैं । हमारा विश्वास है कि जो भी व्यक्ति गायत्री का आश्रय लेगा, वह कभी खाली हाथ नहीं लौटेगा ।

ब्राह्मण की कामधेनु गौ-गायत्री

यों तो गायत्री मन्त्र मानव मात्र के लिए उपास्य एवं कल्याण कारक है, उसकी शरण में जाने पर सभी का कल्याण होता है, पर जो लोग ब्रह्म परायण हैं जिन्होंने अपनी सात्त्विक प्रवृत्तियों को जागृत करके ब्राह्मणत्व प्राप्त किया है, उनके लिए गायत्री परम कल्याणकारिणी है । एक उत्तम औषधि सभी को लाभदायक होती है, पर जिनका पेट साफ होता है उन्हें वह तत्काल गुण दिखाती है । अपच के कारण जिनका पेट खराब है, उन्हें वही दवा कम लाभ पहुँचावेगी, देर में असर करेगी । गुणकारी इंजेक्शन भी जिनका खून खराब है, उन्हें इतना लाभ नहीं पहुँचाते जितना शुद्ध रक्त वालों को । इसमें दवा का कोई पक्षपात नहीं है और न इस बात का निषेध है कि जिन्हें अपच हो या खून खराब हो वे दवा या इंजेक्शन लें ही नहीं । ऐसा कोई प्रतिबन्ध नहीं है, पर स्पष्ट बात यह है कि जिनकी आत्मा में सत्गुण की मात्रा अधिक है, उन्हें गायत्री उन लोगों की अपेक्षा बहुत अधिक, बहुत शीघ्र लाभ पहुँचाती है जिनमें दुर्गुण और कुविचार भरे हुए हैं ।

सद्भावना युक्त व्यक्ति ब्राह्मण कहे जाते हैं, जिनमें ब्राह्मणत्व मौजूद है उनके लिए गायत्री परम

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तप है, परम साधन है, इस साधना का आश्रय लेकर वे अपना लोक-परलोक बड़ी सरलतापूर्वक सुख शान्तिमय बना सकते हैं । उनके लिए यह गायत्री माता इतनी दयालु और दानी सिद्ध होती है जितनी शरीर को जन्म देने वाली परम करुणामयी माता भी नहीं हो सकती ।

कहा भी है—

सर्व वेदमयी विद्या गायत्री पर देवता ।
परस्य ब्रह्मणो माता सर्व वेदमयी सदा ।।
महाभावमयी नित्या सच्चिदानन्द रूपिणी ।

-स्कन्द पुराण

अर्थात्— गायत्री सर्व वेदमयी परा विद्या है । यही ब्राह्मण की माता है । यही नित्य सच्चिदानन्द स्वरूप तथा महा भावमयी भी है ।

गायत्री वेद जननी गायत्री ब्राह्मणः प्रसूः ।
गातारं त्रायते यस्माद् गायत्री तेन गीयते ।।

-स्कन्द पुराण ९।५१

गायत्री वेदों की माता है, गायत्री ब्राह्मण की माता है । यह गायन करने वाले का त्राण-उद्धार करती है इसलिए गायत्री कहते हैं ।

किं ब्राह्मणस्यपितरं किमु पृच्छसि मातरं ।
श्रुतं चेदस्मिन् वेद्यं स पिता स पितामहः ।।

-काठक संहिता ३०।१

यह क्यों पूछते हो कि ब्राह्मण का बाप कौन है ? माता कौन है ? श्रुत (ब्रह्मज्ञान) ही उसका बाप और वही बाबा हैं ।

ओंकार पितृ रूपेण गायत्री मातरं तथा ।
पितरौ यो न जानाती स विप्रस्त्वन्यरेतसः ।।

-रुद्रयामल

ॐकार को पिता और गायत्री को माता रूप में जो नहीं जानता, वह ब्राह्मण वर्ण शंकर है ।

ब्राह्मण की माता गायत्री और पिता वेद है ।

कहा भी है—

मातात्वं च कुतः कश्च पिता एमात्समुद्भवः ।
कुलात्कस्य समुत्पन्नातिद ब्रह्मेति ब्राह्मणः ।।
गायत्री मातुमेवं तं पिता वेदोपि सम्भवः ।
ब्रह्मकुल समुत्पन्नमिदं ब्रह्मेति ब्राह्मणः ।।

-महोपनिषद्

मेरी माता कौन ? पिता कौन ? कुल कौन ? जो इस रहस्य को जानता है वह ब्राह्मण है । ब्राह्मण की गायत्री ही माता है, वेद ही पिता है, ब्रह्म ही कुल है ।

ब्राह्मण के जीवन का लक्ष आत्म-बल एवं ब्रह्मतेज को प्राप्त करना होता है । वह जानता है कि संसार में जो कुछ उत्तम है वह सभी आत्म-बल और ब्रह्मतेज उपलब्ध करने पर प्राप्त किया जा सकता है । इसलिए वह सम्पूर्ण आनन्दों के लिए वेद जननी गायत्री का ही आश्रय लेता है ।

तेजो वै ब्रह्मवर्चसं गायत्री, तेजस्वी ब्रह्मवर्चस्वी भवति ।

-ऐतेरय ब्राह्मण

अर्थात्— गायत्री में जो तेज है वही ब्रह्मवर्चस है । इससे उपासक तेजस्वी और ब्रह्मवर्चस्वी हो जाता है ।

जिसने ब्रह्मवर्चस प्राप्त किया उसके लिए गायत्री साक्षात् कामधेनु गौ के समान है । उसे इसी महाशक्ति के द्वारा अपनी अभीष्ट कामना पूर्ण करने वाले वरदान मिल जाते हैं । इसलिए गायत्री को वरदात्री कहा गया है । उसे परमदेवी भी कहते हैं । यों सभी दैवी शक्तियाँ 'देवी' कहलाती हैं । पर अन्य दिव्य शक्तियों की सीमा थोड़ी-थोड़ी है । वे उपासना करने पर मनुष्य का सीमित कल्याण करती हैं, किन्तु गायत्री के लिए ऐसा कोई सीमा बन्ध नहीं है, उसके गर्भ में समस्त शक्तियाँ सन्निहित होने से परम देवी कही जाती है । सच्चे मन से उपासना करके यदि उसका थोड़ा सा भी अनुग्रह प्राप्त किया जा सके तो साधक उस परम गति को प्राप्त कर लेता है जिसके कारण लोक में सुख और परलोक में अभीष्ट शान्ति प्राप्त होती है । कहा भी है—

वंदे तां परमां देवी गायत्री वरदां शुभाम् ।
यत्कृपालेशतो यान्ति द्विजा वै परमां गतिम् ।।

उस वरदात्री परम देवी गायत्री को नमस्कार है जिसकी लेश मात्र कृपा से द्विज परम गति को प्राप्त होते हैं ।

ब्राह्मण का ब्राह्मणत्व बहुत कुछ गायत्री उपासना पर निर्भर रहता है, क्योंकि जो सद्गुण

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सामान्य लौकिक प्रयत्न करने पर बहुत कठिनाई से प्राप्त होते हैं वे इस उपासना के माध्यम से स्वयंमेव विकसित होने लगते हैं और उन अन्तः स्फुरणाओं के जागरण से उसका ब्राह्मणत्व दिन-दिन सुदृढ़ होता जाता है । आत्मा में पवित्रता का अंश दिन-दिन बढ़ता जाता है ।

जपनिष्ठो द्विज श्रेष्ठोऽखिल यज्ञ फलं भवेत् ।
सर्वेषामेव यज्ञानां जायतेऽसौ महाफलः ।।
जपेन देवता नित्यं स्तूयमाना प्रसीदति ।
प्रसन्ना विपुलान् कामान् दयान्मुक्तिञ्च शाश्वतीम् ।।
यक्षरक्षः पिशाचाश्च ग्रहाः सर्पाश्च भीषणाः ।
जपिनं नोयसर्वन्ति भयभीताः समन्ततः ।।
यावन्तः कर्मयज्ञाः स्युः प्रदिष्ठानि तपांसि च ।
सर्वे ते जप यज्ञस्य कलां नार्हति षोडशीम् ।।

-तंत्र सार

अर्थात्— जप निष्ठ द्विज सब यज्ञों के फल को प्राप्त करता है । उस पर देवता प्रसन्न होते हैं और उनकी प्रसन्नता से लोक में सुख तथा परलोक में मुक्ति प्राप्त होती है । आसुरी शक्तियाँ उसे भयभीत नहीं करतीं । अन्य सभी साधना, कर्मों में जप, यज्ञ अधिक फलदायक एवं श्रेष्ठ हैं ।

जिस प्रकार जड़ को सींचने से पत्र, पल्लव, पुष्प, फल आदि सभी की प्राप्ति हो जाती है, उन सबके लिए अलग-अलग प्रयत्न नहीं करना पड़ता, उसी प्रकार गायत्री साधना में अन्य सभी साधनाओं द्वारा हो सकने वाले लाभ प्राप्त हो जाते हैं ।

जप्ययेनैवतुसंसिद्धचेत् ब्राह्मणोनात्र संशयः ।
कुर्यादन्यन्नवा कुर्यान्मैत्रो ब्राह्मण उच्यते ।।

-मनु २-९७

अर्थात्— ब्राह्मण चाहे कोई अन्य उपासना करे या न करे वह केवल गायत्री मन्त्र से ही सिद्धि प्राप्त कर सकता है ।

गायत्री सामुपासीनो द्विजो भवति निर्भयः ।

-शिव तत्व विवेक

गायत्री की भली प्रकार उपासना करने से द्विज निर्भय हो जाते हैं ।

यों दैनिक "पंच यज्ञों" को लौकिक नियमधर्मों में आवश्यक नित्यकर्म माना गया है और प्रतिदिन ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, भूतयज्ञ, अतिथियज्ञ इन पाँच यज्ञों का करना सभी के लिए विधान है, पर आध्यात्मिक दृष्टि में अकेले गायत्री जप में पाँच यज्ञों का समावेश है । गायत्री के पाँच अंग भी पाँच ब्रह्मयज्ञ कहे गये हैं । नित्य इस उपासना करने से पाँचों दैनिक यज्ञों का फल प्राप्त होता है ।

प्रणवो व्याहृतयः सावित्रि चेत्यैत पंच ब्रह्मयज्ञ ।
अहरह ब्राह्मिणं किल्विषात्मा वयन्ती ।।

-बोधायनस्मृति

एक प्रणव, तीन व्याहृति और गायत्री मन्त्र यही पाँच ब्रह्मयज्ञ हैं । इनकी निरन्तर उपासना करने वाला ब्राह्मण पवित्र हो जाता है ।

प्राचीन काल में अनेक साधकों ने इसी उपासना के द्वारा मानव जीवन की सफलता का सर्वोच्च प्रतीक 'ब्रह्मर्षि' पद पाया । इतना ही नहीं देवताओं ने भी इसी महामन्त्र की शक्ति से असुरों को परास्त कर अपना देवत्व स्थिर रखा ।

वृद्धैः काश्यप गौतम प्रभृतिभि र्भृग्वांपिरोत्र्यादिभिः ।
शुक्रागस्त्य बृहस्पति प्रभृतिभिर्ब्रह्मर्षिभिः सेवितम् ।।
भारद्वाजयतं ऋषीक तनयैः प्राप्तं वशिष्ठात् पुनः ।
सावित्रीमधिगम्य शक्रवसुभिः कृत्स्ना जिता दानवः ।।

-देवल

अर्थात्—इस गायत्री की उपासना करके काश्यप, गौतम, भृगु, अङ्गिरा, अत्रि, भारद्वाज, बृहस्पति, शुक्राचार्य, अगस्त्य, वशिष्ठ आदि ने ब्रह्मर्षि पद पाया और इन्द्र आदि देवताओं ने असुरों पर विजय पाई ।

इत्येवं संधिचार्याथ गायत्री प्रजपेत्सुधीः ।
आदि देवीं च त्रिपदा ब्राह्मणत्वादिदामजाम् ।।

-शि० कै० १३-५७

इन बातों पर विचार कर ब्राह्मण को चाहिए कि ब्राह्मणत्व प्रदान करने वाली गायत्री का जप किया करें ।

बहुनाकिम होक्तेन यथावत् साधु साधिता ।
द्विजन्मनामियं विद्या सिद्धि काम दुधास्मृता ।।

-शारदायां ०

अर्थात्— अधिक कहने की क्या आवश्यकता है । भली प्रकार साधना की हुई यह गायत्री विद्या द्विजों के लिए कामधेनु के समान सब सिद्धियों को देने वाली है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इस कामधेनु का दूध ही इस जगती तल का 'परम रस' कहलाता है । इसी को ब्रह्मानन्द कहते हैं । इससे मधुर आनन्द दायक और उल्लास भरी मादक वस्तु और कोई इस संसार में नहीं है । जिसे इस कामधेनु का दूध पीने को मिल गया, उसके सभी अभाव दूर हो जाते हैं, कोई वस्तु ऐसी नहीं रहती जो उसके कर-तल-गत न हो । ऐसी ब्रह्म सिद्धि प्राप्त गायत्री उपासक अपने आपको सर्व संतुष्ट, सर्व सुखी अनुभव करता है । उसके आन्तरिक आनन्द एवं उल्लास का ठिकाना नहीं रहता ।

ब्रह्मानन्द रसं पीत्वा ये उन्मत्त योगिनः ।
इन्द्रोऽपि रंक वद्भाति का कथा नृप कीटकः ।।

ब्रह्मानन्द रूपी परम रस को पीकर योगी जन आनन्द मग्न उन्मत हो जाते हैं । उनके सामने इन्द्र रंक प्रतीत होता है फिर साधारण राजा अमीर जैसे कीड़े-मकोड़ों की तो बात की क्या है ।

गायत्री महाशक्ति का रत्न भण्डार किसे मिलेगा ?

विद्याह वै ब्राह्मण माजगाम गोपाय मां शेवधिष्ठेऽह-मस्मि ।

-वशिष्ठ स्मृति

"ब्रह्मविद्या-गायत्री-ब्राह्मण के पास पहुँची और बोली मैं ही तेरा ही खजाना हूँ ।"

ब्राह्मण को भौतिक जीवन में भले ही निर्धन या अभावग्रस्त रहना पड़ता हो पर उसके पास आत्मिक सम्पन्नता इतनी प्रचुर मात्रा में होती है कि वह अपना ही नहीं दूसरे असंख्यों का भी कल्याण कर सकता है । अपने ही नहीं दूसरों के जीवनों को भी आनन्द एवं उल्लास से परिपूर्ण कर सकता है । स्वयं तो रोग, शोक रहित होता ही है दूसरों को भी निरामय, निःशंक, निर्मय एवं निर्मल बना सकता है । जिसके निज के पास विभूतियों का भण्डागार भरा पड़ा हो उसके लिए दूसरों की छुट-पुट सहायता कर सकना कुछ विशेष कठिन नहीं होता।

तपकल्प तत्वदर्शी ऋषियों के सम्पर्क एवं आशीर्वाद से अनेकों का भला होते नित्य ही देखा जाता है । यह अजस्र अनुदान वितरण करने की क्षमता उस ब्राह्मण को कहाँ से आती है उसका रहस्योद्घाटन उपरोक्त कण्डिका में किया गया है । ब्रह्मविद्या-गायत्री-ब्राह्मण के पास पहुँची और उसे उद्बोधन करते हुए कहा-"मैं ही तेरा खजाना हूँ ।" ऐसा खजाना जिसमें प्रत्येक स्तर की श्री समृद्धि और सफलता प्रचुर परिमाण में भरी पड़ी है । ऐसा खजाने का पता जिसे लग जाय अथवा जो उसके उपयोग का अधिकारी बन जाय उसे भला कमी रहेगी भी किस बात की । उसकी शक्ति एवं सामर्थ्य की सीमा भी क्या रहेगी ? ब्राह्मण द्वारा अपना और दूसरों का असीम उपकार इसी आधार पर होता है । परा और अपरा महाशक्तियों का बीज रहस्य जिसके हाथ लग गया हो उसे इस संसार की कौन-सी विभूति उपलब्ध होने से बच सकती है ।

महाशक्ति का यह महान् भण्डागार सबके लिए खुला नहीं है । खजाने की ताली विश्वस्त खजांची के हाथ में ही रहती है, हर कोई उसे अपने पास रखने का अधिकारी नहीं होता । उसी प्रकार गायत्री का वास्तविक एवं परिपूर्ण लाभ प्राप्त करने के लिए साधक को अपना ब्राह्मणत्व परिपक्व एवं परिपुष्ट करना होता है । उस महती अनुकम्पा को करतलगत करने से पूर्व इस बात की परीक्षा देनी होती है कि वह ब्राह्मण है या नहीं ? जो इस कसौटी पर खरा उतरता है उसे गायत्री महाशक्ति का साक्षात्कार होता है और वह सब कुछ मिल जाता है जो भगवती के पास है ।

गायत्री उपासना का छुट-पुट लाभ कोई भी उठा सकता है । सकाम उपासनाएँ, बीज मन्त्रों का प्रभाव, अनुष्ठान एवं पुरश्चरणों की शृंखला अपने ढंग के लाभ प्रदान करती रहती है, उनके द्वारा साधक के छुट-पुट कष्ट दूर होने एवं अभीष्ट सफलताएँ प्राप्त होने का क्रम चलता रहता है । ऐसे लाभ और चमत्कार आये दिन देखने को मिलते रहते हैं, पर यह सब हैं छोटे स्तर की वस्तुएँ । अमुक कष्ट को दूर कर लेना या अमुक सफलता को प्राप्त कर लेना कोई बहुत बड़ी बात नहीं है । ऐसा लाभ तो भौतिक प्रयत्नों से भी प्राप्त किया जा सकता है । उपासना का लाभ तो अन्तरात्मा को अनन्त सामर्थ्य से भर देना और चन्दन वृक्ष की तरह

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

स्वयं ही सुगन्धित होने के साथ-साथ समीपवर्ती झाड़ झंखाड़ों को भी अपने ही समान सुरभित कर देना है । ऐसा उच्चस्तरीय लाभ प्राप्त करने के लिए मनुष्य को ब्राह्मणत्व के अनुरूप गुण-कर्म स्वभाव अपने में उत्पन्न करने पड़ते हैं । तभी वह खजाना मिलता है, जिसके लिए ब्रह्मविद्या ने ब्राह्मण का उद्‌बोधन करते हुए उसे उस महान् भाण्डागार को हस्तगत कर लेने की प्रेरणा की है ।

गायत्री महामन्त्र में जिन देवशक्तियों का समावेश है वे सत्पात्र पर ही अवतरित होती हैं । स्वर्ग से उतर कर गंगा पृथ्वी पर आई तो उनके धारण करने के लिए शिवजी को अपनी जटाएँ फैलाकर अवतरण की पृष्ठ-भूमि तैयार करनी पड़ी थी । भगीरथ के तप से प्रसन्न होकर गंगा ने पृथ्वी पर उतरने का वरदान तो दिया था पर साथ ही यह भी कह दिया था कि यदि मेरी धारा को संभालने वाली भूमिका न बनी तो धारा पृथ्वी में छेद करती हुई पाताल को चली जायेगी, उसका लाभ भूलोक वासियों को न मिल सकेगा । इस आवश्यकता की पूर्ति जब शंकर भगवान् ने कर दी तभी गंगा अवतरण सम्भव हो सका । गायत्री महाशक्ति की भी ठीक यही स्थिति है उसे धारण करने के लिए समर्थ पृष्ठ-भूमि की अनिवार्य रूप से आवश्यकता है और इस आवश्यकता की पूर्ति ब्राह्मणत्व के गुण, कर्म, स्वभाव से सम्पन्न साधक ही कर सकता है । ऐसा ब्राह्मण मन्त्र की महाशक्ति को अपने में धारण कर सकता है और उससे व्यक्ति एवं समाज का महान् उपकार साध सकता है । कहा भी है-

दैवाधीनं जगत्सर्वं मन्त्राधीनाश्च देवता ।
ते मन्त्रा ब्राह्मणाधीनास्तत्स्याद् विप्रोहि देवता ।।

-मत्स्य पुराण

"देवताओं के अधीन सब संसार है । वे देवता मन्त्रों के अधीन हैं । वे मन्त्र ब्राह्मण द्वारा प्रयुक्त होते हैं, इसलिए ब्राह्मण भी देवता हैं ।"

महर्षि वशिष्ठ इस प्रकार के सुर-पृथ्वी के देवता थे । उनके पास नन्दिनी कामधेनु—अर्थात् गायत्री की महाशक्ति थी । राजा विश्वामित्र के साथ जब वशिष्ठ का युद्ध हुआ और राजा की विशाल सेना परास्त हो गई तो विश्वामित्र के मुख से यही निकला—"धिग् बलं क्षत्रिय बलं-ब्रह्म तेजो बलम्-बलम्" अर्थात् भौतिक बल धिक्कारने योग्य तुच्छ एवं नगण्य है । वास्तविक बल तो ब्रह्मबल ही है । वही मन्त्र बल है, वही सच्चा बल है । यह कहते हुए विश्वामित्र ने राजपाट का परित्याग कर दिया और ब्रह्मबल प्राप्त करने के लिए तप करने लगे ।

यहाँ किसी विरादरी की चर्चा नहीं की जा रही है । हर विरादरी में हर स्तर के लोग पाये जाते हैं । यहाँ गुण कर्म स्वभाव से ब्राह्मणत्व अपने भीतर विकसित कर सकें उन्हीं साधकों की चर्चा की जा रही है और उन्हीं के लिए ब्राह्मण शब्द प्रयुक्त किया जा रहा है । वे ही मन्त्र शक्ति के अधिकारी हो सकते हैं । शास्त्रकार ने कहा है—

यै शान्त दान्ताः श्रुतपूर्ण कर्णाः
जितेन्द्रियाः प्राणिव्यथान्निवृत्ताः ।
प्रतिग्रहे संकुचिताग्रहस्तास्ते
ब्राह्मणस्तरायितं समर्थाः ।।

-ब्रह्म वैवर्त०

"जो ब्राह्मण शान्त, दान्त, वेदज्ञ, जितेन्द्रिय, दयालु, दान न लेने वाले हैं वे ही दूसरों का उद्धार कर सकते हैं ।"

ब्राह्मणः समदृक् शान्ते दीनानां समुपेक्षकः ।
स्त्रवते ब्रह्म तस्यापि भिन्न भाण्डात् पयोयथा ।।

-कात्यायन

"जो ब्राह्मण समदर्शी, शान्तिवादी आदि का बहाना लेकर दीन-दुःखियों की उपेक्षा करता है, सेवा से जी चुराता है, उसका ब्रह्मज्ञान वैसे ही नष्ट हो जाता है जैसे फूटे बर्तन में से पानी टपक जाता है ।

अतपास्त्वनधीयाना प्रतिग्रहरुचिर्द्विजः ।
अम्भस्यश्मप्लवेनेव सह ते नैव मज्जति ।।

-मनुस्मृति

"ज्ञान और सेवाभाव से शून्य ब्राह्मण यदि दान लेता है तो वह उस दान देने वाले के साथ ही इस प्रकार डूब जाता है (नरकगामी होता है) जैसे पत्थर की नाव में बैठा मनुष्य नौका समेत डूब जाता है ।"

तपो विद्या च विप्रस्य निःश्रेयस्करं परम् ।
तपसा किल्विषं हंति विद्ययाऽमृतमश्नुते ।।

-मनुस्मृति

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

"ब्राह्मण के लिए तप और विद्या दोनों अत्यन्त श्रेयस्कर हैं । तप से पापों का नाश होता है और विद्या से अमर जीवन की प्राप्ति होती है ।"

ब्राह्मण की मान्यता, भावना एवं आकांक्षा किस स्तर की होती है इसका दिग्दर्शन—परिचय नीचे के दो श्लोकों में देखें ।

याचे न कञ्चन न कञ्चन वंचयामि,
सेवे न कञ्चन निरस्तसमस्तदैन्यः ।
श्लक्ष्णंवसे मधुरमद्मि भजे वरस्त्रीं,
देवी हृदि स्फुरति मे कुल कामधेनुः।।

-नीति दर्शन सार

"मैं किसी से याचना नहीं करता, न किसी को ठगता हूँ, न किसी की नौकरी करता हूँ, तो भी मुझे कभी दीन होकर रहना नहीं पड़ता, क्योंकि सुन्दर वस्त्र, मधुर भोजन, श्रेष्ठ स्त्री—ये सब चमत्कार मेरे हृदय में नित्य स्फुरण करने वाली मेरे कुल की कामधेनु, ब्रह्मविद्या स्वरूपिणी देवी के ही हैं ।"

निर्धनोऽपि सदा तुष्टोऽप्य सहायो महाबलः ।
नित्यतृप्तोऽप्यभुञ्जाना सर्वत्र समदर्शिनः ।।

-नीति दर्शन सार

"निर्धन होने पर भी सदैव सन्तुष्ट रहता है, असहाय होने पर भी महाबलिष्ठ होता है, उपवासी होने पर भी नित्य तृप्त रहता है, वही सच्चा ब्राह्मण है ।"

"गायत्री को ब्राह्मण का मन्त्र कहा जाता है ।" इसका तात्पर्य यह नहीं कि ब्राह्मण विरादरी के अतिरिक्त दूसरी विरादरी वाले उसकी साधना नहीं कर सकते, वरन् यह है कि—जो इस महाशक्ति का परिपूर्ण लाभ उठाना चाहे उसे जप-तप ही नहीं ब्राह्मणत्व का अवतरण भी अपने व्यावहारिक जीवन में करना चाहिये । जितना शुद्ध चरित्र होगा उतना ही यह महामन्त्र प्रखर होगा । सच्चरित्र की थोड़ी सी उपासना भी इतना अद्भुत लाभ दिखाती है जितनी कि दुःश्चरित्र एवं निर्धन व्यक्ति के आजीवन क्रिया कृत्य भी नहीं कर सकते । ब्राह्मणत्व यदि अपने भीतर पैदा कर लिया जाय तो गायत्री उपासना के जो लाभ शास्त्रकारों ने बताये हैं उसकी सत्यता अक्षरशः प्रत्यक्ष की जा सकती है ।

शास्त्र का कथन है—

गायत्र्युपासना नित्या सर्ववेदैः समीरता ।
यस्या विनात्वधः यातो ब्राह्मणस्यास्ति सर्वथा ।।

-देवी भागवत

गायत्री उपासना अनादिकाल से है, ऐसा वेदों में कहा गया है । इसके बिना ब्राह्मण की दुर्गति होती है ।

इत्येवं संविचार्यार्थ गायत्रीं प्रजपेत्सुधीः ।
आदि देवीं च त्रिपदां ब्राह्मणत्वादिदायजाम् ।।

-शिव कैवल्य

इन बातों पर विचार करके ब्राह्मण को चाहिए कि ब्राह्मणत्व प्रदान करने वाली गायत्री का जप नित्य किया करें ।

बहुनाकिमि होक्तेन यथावत् साधु साधिता ।
द्विजन्मनामियं विद्या सिद्धि कामदुधामता ।।

-शारदा तिलक

अधिक कहने की क्या आवश्यकता । भली प्रकार साधना की हुई यह गायत्री विद्या द्विजों के लिए कामधेनु के समान सब सिद्धियों को देने वाली है ।

स्वयं शुद्धो हि पूतात्मा नरोन संत्रन्नतुमर्हति ।
गायत्री जप शुद्ध ह शुद्धो ब्राह्मण उच्यते ।।

गायत्री जप से शुद्ध हुआ ब्राह्मण ही शुद्ध कहा जा सकता है । जो स्वयं शुद्ध हो चुका है वही दूसरों को भी शुद्ध कर सकता है ।

उपर्युक्त प्रमाणों में किसी जाति विशेष की महत्ता का प्रतिपादन नहीं है और न ही किसी जाति को उपासना के अधिकार से वंचित किया गया है । ईश्वरीय ज्ञान, वेद और उसकी उपासना के अधिकार से किसी भी मनुष्य को वंचित नहीं किया जा सकता । इन शास्त्र वचनों से तो इस तथ्य का प्रगटीकरण किया गया है कि जो अपने मानसिक, बौद्धिक एवं भावनात्मक स्तर को निर्मल बनाकर जितना ब्रह्मवर्चस प्राप्त कर लेगा उसे उतना ही अधिक, उतनी ही शीघ्र, उतनी ही उच्चस्तर की सिद्ध सफलता मिलेगी । गायत्री उपासना का आलम्बन ग्रहण करने वाले को जप, अनुष्ठानों के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भाँति ही अपनी मनोभूमि के परिष्कृत करने की साधना में संलग्न होना चाहिए ।

ब्राह्मणेत्तर वर्ण भी गायत्री उपासना का लाभ उठा सकते हैं, उसकी चर्चा शास्त्रों में जगह-जगह उपलब्ध होती है । यथा—

सोमादित्यान्वयाः सर्वे राघवाः कुरवस्तथाः ।
पठन्ति शुचयो नित्यं सावित्रीं परमां गतिम् ।।

-महाभारत

हे युधिष्ठिर, सम्पूर्ण चन्द्रवंशी, रघुवंशी तथा कुरुवंशी नित्य ही पवित्र होकर परमगतिदायक गायत्री मन्त्र का जप करते हैं ।

तस्यर्षेः परमोरं वचः श्रुत्वा नरोत्तमौ ।
स्नात्वा कृतादिको वीरो जपेतुः परमंजपम् ।।

-वाल्मीकि रामायण

परम उदार ऋषि के वचन सुनकर राम-लक्ष्मण दोनों भाई स्नान आचमन करके गायत्री का परम जप करने लगे ।

प्रभावेणैव गायत्र्याः क्षत्रियः कौशिकी वशी ।
राजर्षित्व परित्यज्य ब्रह्मर्षि पदमीयिवान् ।।
सामर्थ्य प्रापचात्युच्चै रन्यद् युवन स्त्रजन ।
किं किं न दयात् गायत्री सम्यगेवमुपासिता ।।

-स्कन्द पुराण

क्षत्रिय विश्वामित्र ने राजर्षिपद से उन्नति करते हुए ब्रह्मर्षि पद गायत्री मन्त्र की उपासना से ही प्राप्त कर लिया तथा दूसरी सृष्टि रच डालने की भी शक्ति प्राप्त की थी । भली प्रकार साधना की हुई गायत्री भला कौन-सा ऐसा अभीष्ट लाभ है जिसे प्राप्त नहीं करा सकती ?

वंदेतां परमां देवीं गायत्रीं वरदां शुभाम् ।
यत्कृपालेशतो यान्ति द्विजा वै परमांगतिम् ।।

उस वरदात्री परम देवी गायत्री को नमस्कार है, जिसकी लेश मात्र कृपा से द्विज-ब्राह्मण-क्षत्रिय, वैश्य परमगति को प्राप्त करते हैं ।

उपर्युक्त अभिवचनों में ब्राह्मणेत्तर जातियों द्वारा गायत्री उपासना करने और उसके आधार पर परम सिद्धियाँ प्राप्त करने का वर्णन है । इससे स्पष्ट है कि जातिगत बंधन लगाने का शास्त्रों में कोई उल्लेख नहीं है । केवल इतना ही कहा गया है कि जो इस महाशक्ति का वास्तविक लाभ उठाना चाहें वे अपने आन्तरिक एवं व्यावहारिक जीवन में ब्राह्मणत्व की विशेषताएँ उत्पन्न करें । जो इस दिशा में प्रयत्नशील रहे हैं उन्होंने इतना कुछ पाया है कि स्वयं धन्य हुए हैं और दूसरों को धन्य बनाया है । जिन्होंने जप ध्यान तक ही अपने को सीमित रखा वे लौकिक जीवन की छुट-पुट समृद्धियाँ प्राप्त कर सकने के स्वल्प लाभों से आगे बढ़कर कोई अधिक महत्त्वपूर्ण सफलता प्राप्त न कर सके । कारण स्पष्ट है । शारीरिक और मानसिक अनाचार बरतने से आत्मशक्ति का इतना क्षारण हो जाता है कि फिर साधक मटियाले सर्प की तरह निस्तेज ही रहता है । किसी मन्त्र तन्त्र के सहारे भी अपना आन्तरिक वर्चस्व बढ़ाने का अवसर नहीं मिलता । आज के अगणित पूजा-भवन में संलग्न व्यक्ति इसी प्रकार तेजरहित जीवन बिता रहे हैं । उनने उपासना को सरल जानकर उसे तो अपनाया पर जीवन शोधन की कठिन प्रक्रिया से बचते-कतराते रहे । ऐसे लोगों को आत्मबल और उसके आधार पर मिलने वाली महान् उपलब्धियाँ भला मिलें भी तो कैसे ? और वे अपने आशीर्वाद से किसी का भला न कर सकें तो कैसे ?

अनभ्यासेन वेदानामाचारस्य च वर्जनात् ।
आलस्यात् अन्न दोषाच्च मृत्युर्विप्रान् जिघांसति ।।

-मनु० ५-४

वेदों का अभ्यास न करने से, आचार छोड़ देने से, आलस्य से, कुधान्य से ब्राह्मण की मृत्यु हो जाती है ।

जिह्वा दग्धा परान्नेन करौ दग्धौ प्रतिग्रहात् ।
मनो दग्धं परस्त्रीभिः कथं सिद्धिर्वरानने ।।

पराया अन्न खाने से जिह्वा की शक्ति नष्ट हो गई, दान, दक्षिणा लेते रहने से हाथों की शक्ति चली गई, पर-नारी की ओर मन डुलाने से मन नष्ट हो गया । हे पार्वती ! इन ब्राह्मणों को सिद्धि कैसे मिले ?

वादार्थं पठ्यते विद्या परार्थं क्रियते जपः ।
ख्यात्यर्थं दीयते दानं कथं सिद्धिर्वरानने ।।

वाद-विवाद के लिए विद्या पढ़ी, दूसरों से दक्षिणा लेकर जप किया, कीर्ति के लिए दान दिया । ऐसे लोगों को हे पार्वती, सिद्धि कैसे मिले ?

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अनध्यापन शीलं च सदाचार विलंघनम् ।
सालसं च दुरन्नादं ब्राह्मणं वाधते यमः ।।

स्वाध्याय न करने से, आलस्य से और कुधान्य खाने से ब्राह्मण का पतन हो जाता है ।

देखा जाता है कि अभी भी कितने व्यक्ति गायत्री उपासना करते हैं और उसके फलस्वरूप ज्ञान एवं विज्ञान की उपलब्धि चाहते हैं, किन्तु कुछ कहने लायक सफलता नहीं मिलती । इसका कारण उनके उपासना क्रम का अधूरापन ही है । साधारण साधना का विधि-विधान शास्त्रों में सार रूप में लिखा हुआ है, उसमें कोई बड़ी पेचीदगी नहीं है । विधि-विधानों की मामूली जानकारी किन्हीं प्रामाणिक ग्रन्थों के आधार पर की जा सकती है । उन्हें कर सकना भी कुछ विशेष कठिन नहीं है । लोग करते भी हैं, कर भी रहे हैं, पर साधारण कठिनाइयों या मामूली-सी कामनाओं की पूर्ति के अतिरिक्त वस्तुतः कोई इतना बड़ा प्रभाव उन्हें नहीं दीखता, जिससे यह अनुमान लगाया जा सके कि गायत्री महामन्त्र के माध्यम से वेदों में वर्णित आत्म-विद्या के असंख्य चमत्कारी लाभों में से, ऋद्धि-सिद्धियों में से कुछ की उपलब्धि वे कर सकेंगे ।

इस असफलता से निराश होने की आवश्यकता नहीं, वरन् यह देखना है कि यह अवरोध उत्पन्न क्यों होता है । इसका एकमात्र कारण साधक का शरीर और मन उस उच्च स्तर का न होना ही है, जिसमें कि आध्यात्मिक साधनाएँ फलित हुआ करती हैं । गन्ने की, गुलाब की या दूसरी कीमती फसलें पैदा करने के लिए वाटिका को जमीन की आवश्यकता पड़ती है । उसमें खाद-पानी का समुचित प्रबंध करना होता है । यदि ऐसा न हो सके, तो ऊसर, बंजर में बिना जोते-बोए बीज बो दिया जाय, वहाँ खाद-पानी तथा सुरक्षा का प्रबन्ध न हो तो अच्छी फसल की आशा किस प्रकार की जा सकेगी ? आध्यात्मिक साधनाएँ, जिनमें गायत्री उपासना प्रमुख है, एक प्रकार की वैज्ञानिक कृषि है । उसके लिए उपयुक्त साधन आवश्यक है । इस संदर्भ में सबसे अधिक आवश्यकता साधक के उत्कृष्ट व्यक्तित्व की है । उसकी मनोभूमि बढ़िया किस्म की होनी चाहिए । यह बढ़ियापन जितना बढ़ा-चढ़ा होगा, उतना ही साधना की सफलता सुनिश्चित रहेगी ।

बढ़िया बन्दूक में रखकर चलाये जाने पर कारतूस जैसा ठीक काम करता है, वैसा घटिया, नकली बन्दूक में रखकर चलाने पर काम नहीं कर सकता है । कारतूस वही है पर बन्दूक के घटिया-बढ़िया होने पर वह अपना काम भी वैसा ही करता है । मन्त्र एक प्रकार का कारतूस है । व्यक्तित्व को बन्दूक कहना चाहिए । यदि साधक का चरित्र, स्वभाव, आचार, व्यवहार, दृष्टिकोण निकृष्ट स्तर का है तो गायत्री जैसे महान् शक्ति सम्पन्न मन्त्र की उपासना का प्रतिफल भी सन्तोषजनक न होगा । यदि कोई चरित्रवान्, इन्द्रिय संयमी, तपस्वी, उदारमना एवं देव-स्वभाव का मनुष्य उसी मन्त्र को जपेगा, उसी उपासना को करेगा तो निकृष्ट स्तर के व्यक्ति की तुलना में इसका परिणाम सैकड़ों गुना अधिक होगा । मन्त्र वही, विधान वही, फिर भी सफलता में इतना अन्तर ? इस विषय में किसी को शंकाशील नहीं होना चाहिए । गायत्री जादू नहीं, एक सर्वाङ्गपूर्ण विधान है । घटिया रेडियो खड़खड़ करती हुई जरा सी आवाज में बोलते हैं, जबकि बढ़िया, कीमती रेडियो बहुत साफ और बुलन्द आवाज में बोलता है । दिल्ली से एक ही तरह की आवाज बोली जाती है, आकाश में भी कम्पन एक-से हैं पर पास-पास रखे हुए दो रेडियो जिनकी सुई उसी स्टेशन पर है, यदि आवाज की दृष्टि से बहुत बड़ा अन्तर प्रगट करते हैं तो उसमें दोष किसी का नहीं । उन सस्ते और कीमती यन्त्रों का ही है । मीरा, सूर, तुलसी, कबीर आदि ने जो हरि-नाम लिया था, उसी को हम रोज लेते हैं पर उनके उत्कृष्ट व्यक्तित्वों से मन्त्र सफल हुए, भगवान् ने दर्शन दिये, पर हमारे लिये वही हरि-नाम कुछ भी प्रतिफल उत्पन्न नहीं करता तो उसका दोष बाहर किसी को न देकर अपनी आन्तरिक दुर्बलताओं को ही देना चाहिए ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गायत्री और उसकी पृष्ठभूमि

दशरथ जी को जब सन्तान-कामना की पूर्ति के लिए 'पुत्रेष्टि यज्ञ' कराने की आवश्यकता हुई तो उसका विधि-विधान भली प्रकार जानते हुए भी महर्षि वशिष्ठ ने उसे पूरा करा सकने में अपनी असमर्थता प्रकट की । इस पर दशरथ जी ने आश्चर्य के साथ इसका कारण पूछा । वशिष्ठ जी ने कहा- 'पुत्रेष्टि यज्ञ का विधान तो मैं जानता हूँ पर व्यक्तित्व की दृष्टि से पूर्ण ब्रह्मचारी न होने के कारण उस विधान को सफलतापूर्वक कार्यान्वित करने की सामर्थ्य से सम्पन्न नहीं । वर्तमान ऋषियों में यह कार्य शृङ्गी ऋषि ही ठीक तरह पूरा करा सकते हैं, क्योंकि वयस्क हो जाने पर भी वनवास में रहने के कारंण उन्होंने रमणी को न तो देखा है और उसकी कल्पना की है । ऐसे ब्रह्मचारी की आत्मा ही इतनी बलिष्ठ हो सकती है कि उसके द्वारा सफल पुत्रेष्टि यज्ञ कराया जा सके । अन्ततः शृङ्गी ऋषि को ही बुलाया गया और उन्हीं के पौरोहित्य में दशरथ का वह पुत्रेष्टि यज्ञ सफल हुआ जिसके प्रभाव से राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न जैसी आत्माओं को अवतरित होना पड़ा । यदि शृङ्गी ऋषि जैसे तपस्वी का पौरोहित्य न मिला होता तो विधि-विधान के पूर्ण ज्ञाता आचार्य द्वारा कराये जाने पर भी पुत्रेष्टि यज्ञ सफल न होता ।

मन्त्र वही है, विधि-विधान भी वही है, उनकी जानकारी वही है, उनकी जानकारी ग्रन्थों से तथा दूसरे विद्वानों से प्राप्त की जा सकती है । इतने पर भी उनकी वैसी महिमा जैसी कि बताई गई है, अक्सर दृष्टिगोचर नहीं होती । इसका कारण उस विद्या का मिथ्या होना या विधि-विधान में कोई फर्क रह जाना नहीं होता, वरन् यह होता है कि उसे करने वाले का व्यक्तित्व एवं चरित्र उस स्तर का उत्कृष्ट नहीं होता जैसा कि आत्म-विद्या के सच्चे पथिक का होना चाहिए । साधक के लिए मन्त्र विद्या का विधि-विधान जान लेना ही पर्याप्त नहीं वरन् यह भी आवश्यक है कि वह अपने चरित्र एवं मानसिक स्तर को पवित्र एवं उत्कृष्ट बनाने में संलग्न रहे ।

गायत्री उपासना के छुटपुट लाभ साधारण रीति से जप, अनुष्ठान करने वालों को भी मिल सकते हैं । गमलों में छोटे से फूल-पौधे उगाये जा सकते हैं, पर यदि कोई विशाल वृक्ष लगाना हो तो यह आवश्यक है कि उसके लिए ऐसी जमीन ढूँढ़ी जाय जिसमें होकर जड़ें नीचे गहराई तक प्रवेश कर सकें । बरगद और पीपल के वृक्ष गमलों में उग तो सकते, हैं पर फलने-फूलने की स्थिति तक नहीं पहुँच सकते । गायत्री जैसा महामन्त्र जिसकी सामर्थ्य की कोई तुलना नहीं, पूरी तरह अपना प्रभाव तभी प्रगट कर सकता है, जब साधक की मनोभूमि काफी परिष्कृत एवं सुसंस्कृत बनाई गई हो । उपासना का विधि-विधान ठीक तरह जानना और उसका कर्मकाण्ड उचित तरीके से पूरा करना अभीष्ट सफलता प्राप्त करने के लिए आवश्यक है पर उससे भी ज्यादा आवश्यक यह है कि साधक अपने भावना स्तर को अधिकाधिक ज्योतिर्मय बनाने के लिए हर सम्भव प्रयत्न करे ।

उपासना, भजन-पूजन के विधि-विधान को- जप, तप, धारणा, ध्यान आदि को कहते हैं, साधना अपने गुण, कर्म, स्वभाव को व्यवस्थित, सुसंस्कृत एवं परिष्कृत बनाने को कहते हैं । उपासना को बीज और साधना को भूमि कहते हैं । यदि भूमि अच्छी न होगी तो बीज के फलित होने की आशा नहीं की जा सकती । यदि किसी साधक ने अपने आहार-विहार, विचार-व्यवहार, क्रिया-कलाप, उद्देश्य-दृष्टिकोण को परिष्कृत बनाने के लिए श्रम नहीं किया है और केवल मन्त्र-विद्या के क्रिया-कलापों को ही पूरा करता रहता है तो समझना चाहिए, उसका श्रम ऊसर में गुलाब का बगीचा उगाने के प्रयास जैसा है । मन्त्रों की शक्ति बेशक बहुत बड़ी है पर उनका लाभ हर व्यक्ति नहीं उठा सकता । जिन्हें उपासना का चमत्कार देखना हो, उन्हें अपने आपको उसी तरह तपाना चाहिए जैसे अग्नि में सोने को तपा कर उसे विकार रहित किया जाता है । शुद्ध सोने का ही उचित मूल्य मिलता है ।

कच्ची मिट्टी से बने घड़े, खिलौने एवं ईंटें कमजोर रहते हैं पर जब उन्हें आग में पका लिया

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जाता है तो मजबूत हो जाते हैं और देर तक ठहरते हैं । अभ्रक एक सस्ती वस्तु है पर जब उसे सौ बार अग्नि संस्कार किया जाता है तो बहुमूल्य अभ्रक रसायन बन जाती है । साधक का चरित्र और व्यक्तित्व जितना निर्मल होगा उपासना उतनी ही जल्दी, उतनी ही अधिक प्रतिफलित होगी । दुष्ट, दुराचारी, स्वार्थी और संकीर्ण, गन्दे और निकम्मे आदमी मन्त्र शक्ति का चमत्कारी परिणाम प्राप्त कर सकने से वंचित ही रह जाते हैं ।

महाभारत में सावित्री द्वारा सत्यवान के वरण की कथा आती है । सावित्री किसी को अपना साथी बनाना चाहती थी, किसी के साथ अपने को घुला देना चाहती थी । ऐसे साथी की खोज में वह देश-देशान्तरों में घूमती रही । अन्ततः उसे उपयुक्त व्यक्ति मिल गया-वह था सत्यवान । लकड़हारे, निर्धन, असहाय सत्यवान को राजकन्या सावित्री ने इसलिए वरण किया कि वह आन्तरिक सम्पदाओं का धनी था । उसके गुण, कर्म, स्वभाव का स्तर ऊँचा था । वरण कृत्य हो गया । सत्यवान का आयुष्य एक वर्ष में ही पूरा हो चला, यम उसका प्राण ले जाने आए, पर सावित्री ने यम के हाथों से अपने सहचर को छुड़ा लिया । अपनी शक्ति द्वारा उसे अजर-अमर बना दिया ।

यह अलंकारिक कथा उपासना की सफलता का रहस्य भली प्रकार समझा देती है । सावित्री, गायत्री का ही दूसरा नाम है । वह अपनी सारपूर्ण कृपा प्रदान करने के लिए उपयुक्त व्यक्ति को खोजती है । ऐसा सहचर सत्यवान, सत्यनिष्ठ, सदाचारी, उत्कृष्ट आन्तरिक स्तर का व्यक्ति ही हो सकता है । जब दोनों का साथ हो जाता है तो गायत्री अपना चमत्कार दिखाती है । उसे यम के पाश से छुड़ा कर अजर-अमर बना देती है । सावित्री के—गायत्री के पास जितना कुछ विभूति भण्डार है वह सुसंस्कृत साधक-सत्यवान-को मिल जाता है । यदि किसी को इस महाशक्ति की सिद्धियों का साक्षात्कार करना हो तो उसे उपरोक्त कथानक में समाये हुए रहस्यपूर्ण तत्वज्ञान को हृदयंगम करना चाहिये ।

ब्राह्मणत्व का अभिवर्धन गायत्री उपासना की सफलता का मूलभूत आधार है । छुटपुट लाभ मामूली उपासना से सामान्य स्तर के साधक भी पा सकते हैं, पर यदि इस महामन्त्र का सच्चा स्वरूप और वास्तविक चमत्कार देखना हो तो अपने गुण, कर्म, स्वरूप में ब्राह्मणत्व की मात्रा निरन्तर बढ़ाते चलने के लिए साधकों को सच्चे मन से कटिबद्ध होना चाहिये । गायत्री माता इसी आधार पर अपने अक्षय कोष का अधिकार किसी को प्रदान करती है ।

गायत्री उपासना का लाभ और चमत्कार देखने के इच्छुकों को केवल साधना विधान के कर्मकाण्ड की बारीकियों को ही नहीं ढूँढ़ते रहना चाहिए वरन् अपनी शारीरिक एवं मानसिक भूमिका का भी परिष्कार करने के लिए सचेष्ट रहना चाहिए । ठीक है—विधि-विधानों का भी अपना महत्व है। ठीक है—बीज मन्त्र तथा दक्षिणमार्गी, वाममार्गी साधना-विधान अपना-अपना विशिष्ट प्रतिफल उत्पन्न करते हैं पर इसके लिए उनकी समुचित जानकारी इस महा विद्या के प्रयोगकर्ताओं को ठीक तरह अनुभव और अभ्यास में लानी चाहिए । इसके लिए अनुभवी मार्गदर्शक और ऋषि परम्परा की शास्त्रीय पद्धति का अवलम्बन ग्रहण करना चाहिए । साथ ही यह भी स्मरण रखना चाहिए कि आध्यात्मिक उपासनाओं के पथ पर गतिशील होने के आकांक्षी साधक को अपने व्यक्तित्व की उत्कृष्टता बढ़ाना तथा स्थिर रखना नितान्त आवश्यक है. । आत्मिक प्रगति की यह एक अनिवार्य शर्त है ।

बढ़िया किस्म का बाण भले ही हो पर उसे ठीक निशाने तक पहुँचाने के लिए बढ़िया मजबूत धनुष भी तो चाहिए । सड़ी घुनी लकड़ी के धनुष का तीर के लिए निशाने तक फेंक सकना तो कठिन ही है—इस खींच-तान में अपनी भी दुर्गति करा लेगा । ओछे आदमी घृणित और निकृष्ट दृष्टिकोण अपनाकर जीवन यात्रा कर रहे हैं । ऐसे कुसंस्कारी व्यक्ति भले ही जप-तप का बाह्य आवरण पूरा करते रहें, वह कर्मकाण्ड उनकी आन्तरिक प्रगति में कुछ विशेष सहायता न कर सकेगा ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्राचीन काल में ऐसे अनेक साधक हुए हैं जिनका साधना-विधान कोई बड़ी शास्त्रीय परम्परा पर आधारित न था फिर भी उन्हें अपने उद्देश्य की पूर्ति में आशाजनक सफलता मिली । कबीर की शिक्षा स्वल्प थी, उन्हें मार्गदर्शक भी अनुभवी नहीं मिला । सन्त रामानन्द उनके ऐसे ही गुरु थे जैसे एकलव्य के द्रोणाचार्य । वे प्रत्यक्ष में कबीर के गुरु होने की बात से इन्कार करते रहे । रैदास की वंश-परम्परा ने उन्हें शास्त्रीय साधना पद्धति का लाभ लेने से वंचित रखा । मीरा केवल भजन, कीर्तन, नृत्य एवं भावोन्माद तक अपना साधन विधान सीमित रख सकीं । शबरी किस प्रकार की उपासना पद्धति अपनाये रही कुछ पता नहीं चलता । वाल्मीक तो सीधा राम नाम भी न ले सके उन्हें 'मरा-मरा' का उल्टा नाम जप कर ही आगे बढ़ना पड़ा । ऐसे उदाहरण साधन इतिहास के पन्ने-पन्ने पर भरे पड़े हैं और आज भी ऐसे अनेक साधक मिलते हैं जिनकी शिक्षा एवं साधना पद्धति उपहासास्पद है । फिर भी उन्होंने काफी ऊँचाई तक आत्मिक प्रगति कर ली । इसका एकमात्र कारण उनके व्यक्तित्व की उत्कृष्टता ही थी । मानवीय सद्भावों का बाहुल्य ही उनकी यह विशेषता थी, जिसमें उच्चस्तरीय सफलता का अधिकारी उन्हें बना दिया ।

दूसरी ओर ऐसे भी उदाहरण मिलते हैं जिनमें उपासना का शास्त्रीय एवं वैज्ञानिक प्रकरण भली प्रकार जानते हुए भी साधक कुछ आशाजनक लाभ प्राप्त न कर सके । रावण, कुम्भकरण, मेघनाद, मारीच, भस्मासुर, बृकासुर, हिरण्यकश्यप, मधुकैटभ आदि अगणित व्यक्ति उच्च कुलों में उत्पन्न हुए थे, उनके गुरु भी शुक्राचार्य जैसे पारंगत थे । उन्होंने कठिन तपश्चर्यायें भी कीं और वरदान भी पाए, फिर भी इन सुविधाओं का कोई विशेष लाभ उन्हें नहीं मिला । उनकी आत्मिक प्रगति नगण्य रही । जो साधना तपश्चरण उनने की वह उनकी आत्मा का, उनके परिवार का, सारे समाज का कुछ भी हित साधन न कर सकी । अतएव हमें इसी निष्कर्ष पर पहुँचना होगा कि जिन्हें वस्तुतः आध्यात्मिकता का लाभ लेना हो, इस मार्ग पर चिरस्थायी और आशाजनक प्रगति करनी हो, उन्हें सबसे पूर्व-सबसे अधिक-ध्यान इस बात पर देना चाहिए कि उनका व्यक्तित्व, दृष्टिकोण, गुण कर्म, स्वभाव संस्थान-अन्तःकरण चतुष्टय उत्कृष्ट स्तर का बने । यही ब्राह्मणत्व है । ब्रह्मवर्चस की सारी शक्ति, चेतना एवं क्षमता इसी आधार पर उपलब्ध होती और बढ़ती है ।

प्राचीन काल के ब्राह्मण भूसुर कहलाते थे-भू-सुर अर्थात् पृथ्वी के देवता । देवताओं में जो शक्ति होती है वह सच्चे ब्राह्मण में देखी और पाई जाती है । यह उपलब्धि उसे मन्त्र बल से ही नहीं मिल जाती वरन् उत्कृष्ट स्तर के व्यक्तित्व का निर्माण करने की भी शर्त पूरी करने पर मिलती है । हममें से हर गायत्री उपासक को यह तथ्य भली प्रकार हृदयंगम करना चाहिए और अपना ब्राह्मणत्व बढ़ाना चाहिए । स्मरण रहे ब्राह्मणत्व का अभिवर्धन करने में किसी जाति विरादरी में जन्म लेना न तो सहायक है और न बाधक ।

गायत्री उपासना बनाम द्विजत्व-ब्राह्मणत्व

गायत्री उपासना केवल मानव मात्र के लिए है । सद्बुद्धि की देवी-ऋतम्भरा प्रज्ञा की अधिष्ठात्री इस महाशक्ति की आराधना और अन्तःकरण में प्रतिष्ठापना करना, हर किसी के लिए आवश्यक है । यह तत्व जिसे भी प्राप्त होगा वह ऊँचा उठेगा । जहाँ तक अधिकार का प्रश्न है प्रत्येक सत्प्रयोजन को सम्पन्न करने, सन्मार्ग की दिशा में कदम बढ़ाने की छूट और सुविधा हर किसी को है । प्रतिबन्ध तो अवांछनीय गतिविधियों पर ही लगाये जाते हैं । अथवा उन कार्यों से रोका जाता है जो रोकने की सामर्थ्य से बाहर होते हैं और क्षमता के अभाव में भारी वजन उठाने पर कठिनाई उत्पन्न होने की आशंका होती है । गायत्री उपासना में ऐसी कोई बात नहीं है । न तो उसमें कुछ अनैतिक है और न दुस्साध्य । उसका लक्ष्य सद्बुद्धि की शरण में जाना है । इसमें अधिकारी अनधिकारी का प्रश्न ही नहीं उठता ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सूर्य की धूप में, चन्द्रमा की चाँदनी में बैठने का मनुष्य को ही नहीं प्राणिमात्र को अधिकार है । गंगा स्नान पर किसी के लिए प्रतिबंध नहीं है । स्वच्छ वायु में साँस लेने, जल पीने और अन्न खाने से किसी को वंचित नहीं किया जाता । इसी प्रकार सत्य बोलने, उदारता बरतने, संयम से रहने, कर्त्तव्यपरायण रहने जैसे सत्प्रयोजनों के लिए किसी को रोका नहीं जाता वरन् प्रोत्साहित किया जाता है । ईश्वर का स्मरण भी ऐसा ही पवित्र कार्य है, जिसमें हानि की कोई आशंका नहीं है और न ऐसा कुछ है जिस पर विचार करके किसी को प्रभु प्रार्थना का अधिकारी, किसी को अनधिकारी ठहराया जा सके । गायत्री मन्त्र के बारे में भी यही बात है । वह सार्वभौम-सर्वजनीन उपासना मन्त्र है जिसे बिना धर्म, जाति, सम्प्रदाय, देश, वंश, लिंग आदि का भेद-भाव किये मनुष्य मात्र द्वारा अपनाया जा सकता है ।

यहाँ यह इसलिए कहा जा रहा है कि जहाँ-तहाँ ऐसे प्रतिपादन मिलते हैं जिनमें द्विजत्व और ब्राह्मणत्व को गायत्री के साथ जोड़ा गया है । इस प्रतिपादन का तात्पर्य इतना ही है कि उत्कृष्टतावादी चिन्तन और आदर्शवादी कर्तृत्व अपना कर चलने वाले जीवन क्रम में ईश्वरीय उपासना की दिव्य उपलब्धियाँ अधिक अच्छी तरह हो सकती हैं । द्विजत्व का अर्थ है दूसरा जन्म । दूसरे जन्म से तात्पर्य है पशु प्रवृत्तियों से जकड़े हुए सामान्य प्राणि जीवन से ऊँचा उठकर मानवी उत्तरदायित्वों की विशिष्टता भरी भूमिका को अपनाया जाना । नर पशु की रीति-नीति छोड़कर, देव जीवन की महानता को अपनाया जाना । इसके लिए व्रत लेना पड़ता है कि वासना तृष्णा की क्षुद्रता में कृमि कीटकों की तरह निरत नहीं रहा जायेगा वरन् मानवी उत्कृष्टता को जीवन क्रम से ओत-प्रोत करते हुए उच्च स्तरीय सिद्धान्तों को अपनाकर चला जायगा । ऐसा व्रतशील जीवन क्रम ही द्विजत्व है । पशु प्रवृत्तियों का त्याग और देव परम्परा को धारण करने का व्रत लेना भारतीय परम्परा में एक अत्यन्त आवश्यक एवं पवित्र कर्म है । इसलिए द्विजत्व का संस्कार समारोह पूर्वक किया जाता है । इसे यज्ञोपवीत संस्कार कहते हैं । इसका प्रतीक यज्ञोपवीत धारण है । ऐसे व्रतधारियों को द्विज संज्ञा दी गई है ।

द्विज के लिए आदर्शवादी रीति नीति अपनाना और लोकोपयोगी कार्यों में निरत रहने की योजना बनाकर चलना आवश्यक होता है । ऐसे कार्यों में तीन प्रमुख हैं—(१) अज्ञान का निवारण, (२) अनीति का उन्मूलन, (३) अभावों का समापन । व्यक्तिगत रुचि, योग्यता एवं परिस्थिति के अनुसार इनमें से कोई भी लक्ष्य चुना जा सकता है । संसार के समस्त कष्टों और संकटों के यह तीन कारण हैं । इन्हें जितना निरस्त किया जा सकेगा उतनी ही सुख-शान्ति स्थिर रह सकेगी और प्रगति की सम्भावना बढ़ेगी । अज्ञान का निवारण करने में प्रवृत्त वर्ग को ब्राह्मण-अनीति से जूझने वाले को क्षत्रिय-अभाव दूर करने में जुटे हुए लोगों को वैश्य कहते हैं । जिनमें इस प्रकार की आदर्शवादी आकांक्षायें नहीं हैं जो अपनेपन की आपा-धापी तक ही सीमित हैं । जिनकी उत्कृष्टता अपनाने में कोई रुचि नहीं है जो पेट प्रजनन में आगे की बातों में रुचि नहीं लेते, जिन्हें पशु प्रवृत्तियों में डूबे रहना ही पर्याप्त लगता है वह समस्त मनुष्य शूद्र हैं । यह भावनात्मक वर्गीकरण है । इसमें जाति वंश का कोई प्रश्न नहीं है । इसे विशुद्ध रूप से आचार प्रक्रिया या आदर्श पद्धति कहा जा सकता है । इस तथ्य को और भी स्पष्ट करना हो तो यों कह सकते हैं कि संकीर्ण स्वार्थपरता की पशु प्रवृत्तियों में संलग्न व्यक्ति शूद्र और उत्कृष्ट चिन्तन एवं आदर्श कर्तृत्व अपनाने वाले लोग द्विज हैं । इन वर्गों का स्थायित्व नहीं है । आज का स्वार्थी कल आदर्शवादी बन सकता है । इसी प्रकार आज का श्रेष्ठ व्यक्ति कल निकृष्ट भी बन सकता है । अस्तु शूद्र द्विज होते रहते हैं और द्विजों में से अगणित पतित होकर शूद्र वर्ग में चले जाते हैं । यह वर्ण भेद ही प्राचीन काल में वर्ण भेद कहा जाता है । जन्म जाति के आधार पर किसी को शूद्र या द्विज मानना निरर्थक है । सदाचारियों के बच्चे सदाचारी ही हों और दुराचारियों के यहाँ दुराचारी ही जन्मते रहें ऐसा कहाँ होता है । इसलिए अमुक वंश में जन्मे लोग शूद्र ही होते रहेंगे और अमुक परिवार

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

की पीढ़ियाँ द्विज ही होती रहेंगी, ऐसा नहीं कहा जा सकता ।

द्विजत्व के साथ गायत्री उपासना को सोना और सुगन्ध मिलने की तरह अधिक सराहा गया है और उससे अधिक लाभ होने का तथ्य समझाया गया है । ईश्वर उपासना कोई भी कर सकता है पर अधिक लाभ उसी को होगा जो प्रभु समर्पित आदर्शवादी जीवन प्रक्रिया भी अपनाने का प्रयत्न करेगा । ईश्वर उपासना गाड़ी का एक पहिया है और आदर्शवादिता अपनाने वाली जीवन साधना दूसरा । इन दोनों के सम्मेलन से ही सर्वतोन्मुखी प्रगति का रथ अग्रसर होता है । मात्र पूजा पाठ कर लेने से भी यों तो कुछ लाभ होता ही है पर पूरा सत्परिणाम देखना हो तो पवित्र जीवन क्रम अपनाने की साधना के साथ ईश्वर की उपासना करनी चाहिए । पवित्र जीवन उर्वरा भूमि है और भजन उपजाऊ बीज । दोनों की व्यवस्था पर समुचित ध्यान रखा जाना चाहिये । इसी प्रतिपादन को गायत्री और द्विजत्व का समन्वय करने की संगति बिठाकर किया गया है । तथ्य को समझा जाना चाहिए । यदि किसी की वंश या जाति को द्विज ठहराया जायगा और उसी परिवार में जन्मे लोगों को उपासना का, गायत्री का, अधिकारी कहा जायगा तब तो निश्चित रूप से अर्थ का अनर्थ ही हो जायगा । दुर्भाग्य से पिछले दिनों ऐसी ही भूल होती रही है और अमुक जाति, वंश के लोगों को इस पवित्र उपासना का अधिकारी अमुक को अनधिकारी ठहराया जाता रहा है । जबकि वास्तविकता इससे सर्वथा भिन्न है । तत्वदर्शी-मानवतावादी ऋषि इतने संकीर्ण हो ही नहीं सकते थे कि वे किसी अमुक जाति, वंश का आत्मिक प्रगति के साधनों को अपनाने का अधिकारी ठहराये और अन्यों को उससे वंचित कर दें । ऐसा पक्षपात तो बहुत ही ओछे स्तर के, संकीर्ण बुद्धि, पक्षपाती और विद्वेषी लोग ही कर सकते हैं । भारतीय धर्मशास्त्रों और उनके प्रस्तुत कर्त्ता ऋषियों पर ऐसे आक्षेप लगने लगेंगे तो यह उस महान् संस्कृति का अपमान ही होगा जिसके कारण समस्त विश्व ने इस देशवासियों को देव मानव माना था और जगद्गुरु कहकर अपना मस्तक नवाया था ।

गायत्री उपासना का अधिकार हर किसी को है । मनुष्य मात्र बिना किसी भेद-भाव के उसे कर सकता है । इस सामान्य बुद्धि संगत तथ्य के समर्थन में कुछ कहने की आवश्यकता नहीं तो भी इस संदर्भ में प्रमाण मिल ही जाते हैं ।

सर्वेषां वा गायत्री मनु ब्रूयात् ।

-पारस्कर गृह सूत्र २।३।१०

गायत्री का उपदेश सबको करें—

चतुर्णामपि वर्णानाम् आश्रमस्य विशेषतः ।
करोति सततं शान्ति सावित्रीं उत्तमां पठन् ।।

-महाभारत

"चारों वर्ण और चारों आश्रमों में रहने वाले कोई भी साधक जो इस उत्तम गायत्री मन्त्र का जप करते हैं वे परम शान्ति को प्राप्त करते हैं ।"

यथा कथं च जप्तैषा त्रिपदा परम पावनी ।
सर्व काम प्रदा प्रोक्ता विधिनां किं पुनर्नृप ।।

-विष्णु धर्मोत्तर

हे राजन् जैसे बने वैसे जप करने पर भी परम पावनी गायत्री कल्याण करती है । फिर विधिपूर्वक उपासना करने के नाम का तो कहना ही क्या है ?

अग्निदेव ने कहा है-

एवं सन्ध्या विधि कृत्वा गायत्रीं च जयेत् स्मरेत् ।
गायेचिष्यान् यत स्त्रायेदभार्यां प्राणांस्तथैव च ।।

अर्थात् "सन्ध्या विधि परिपूर्ण करने के पश्चात् गायत्री का स्मरण और जप करना । गायमान होने से अर्थात् उसकी उपासना, जप करने से वह गुरु, शिष्य, स्त्री और प्राणी सबका उद्धार करती है ।

ब्राह्मण शब्द मात्र विद्वान अथवा कर्मकाण्ड परायण के लिए नहीं होता वरन् जिसका जीवन ब्रह्मपरायण है जो आत्म शोधन और परमार्थ प्रयोजन में निरत रहकर ब्रह्मतेज की अभिवृद्धि करता है ब्राह्मणत्व का पद उसी को मिलता है और वही पूजनीय गिना जाता है ।

शास्त्राण्यधीत्यापि भवन्ति मूर्खा
यस्तु क्रियावान्पुरुषः स विद्वान् ।
सुचिन्तितं चौषधमातुराणां
न नाममात्रेण करोत्यरोगम् ।।

शास्त्र पढ़कर भी मूर्ख होते हैं परन्तु जो क्रिया में चतुर हैं वही पण्डित हैं, जैसे अच्छे प्रकार से

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

निर्णयकारी औषधि भी रोगियों को केवल नाम-मात्र से अच्छा नहीं कर देती है ।।१७१।।

सन्ध्या वंदन को नित्य कर्म माना गया है । उसकी आवश्यकता शौच, स्नान, भोजन, शयन जैसी दैनिक गतिविधियों की तरह समझी गई है और कहा गया है कि जिस प्रकार शरीर की स्वच्छता, सुविधा, पुष्टि के लिए साधन जुटाये जाते हैं उसी प्रकार अन्तःकरण पर आये दिन चढ़ने वाली मलीनता को स्वच्छ करने, आत्मिक आवश्यकताओं को पूरा करने एवं ब्रह्मतेजस को बढ़ाने के लिए नित्य ही ईश्वराधना नियत समय पर नियमित रूप से करनी चाहिए । सन्ध्या वन्दन इसी प्रक्रिया का नाम है । इसे अपनाने के लिए शास्त्रों ने कठोर निर्देश दिये हैं और उपेक्षा करने वालों की कटु भर्त्सना की है । सन्ध्या को नित्य कर्म ठहराते हुए स्थान-स्थान पर द्विजत्व की धारणा के लिए भी संकेत किये गये हैं और कहा गया है कि संध्या तो करनी ही करनी चाहिए पर उसका समुचित लाभ लेना हो तो द्विजत्व की जीवन साधना को भी अपनाये रहना चाहिए । यदि इस ओर उपेक्षा बरती गई और मात्र पूजा प्रक्रिया को ही पर्याप्त मान लिया गया तो काम नहीं चलेगा । उसके साथ-साथ उत्कृष्ट चिन्तन और आदर्श कर्तृत्व की समन्वित प्रक्रिया-द्विजत्व का जुड़ा रहना भी आवश्यक है । संध्या का सामान्य निर्देश तो हर किसी के लिए है पर साथ ही यह भी बताया जाता रहा है कि उपासना का पूरा लाभ लेना हो तो द्विजत्व के नाम से जानी जाने वाली जीवन साधना को अपनाया जाना भी अनिवार्य रूप से आवश्यक समझना चाहिए ।

सायं प्रातस्तु यः संध्यां सऋक्षां पर्युपासते ।
जप्त्वैव पावनीं देवीं सावित्री लोक मातरम् ।।

- याज्ञवल्क्य

प्रातःकाल तथा सांयकाल संध्योपासना और गायत्री जप जो ब्राह्मण करता है उसका सकल पाप नष्ट हो जाता है ।

सायं प्रातश्च संध्यां यो ब्राह्मणोऽभ्युपसेवते ।
प्रजपन् पावनीं देवीं गायत्रीं वेदमातरम् ।।८३।।
स तया पावितो देव्या ब्राह्मणो नष्टकिल्बिषः ।

-महा० वन पर्व

जो ब्राह्मण प्रातः और सायं इन दोनों समय की सन्ध्या और सबको पवित्र करने वाली वेदमाता गायत्री देवी के मन्त्र का जप करता है, वह ब्राह्मण उन्हीं गायत्री देवी की कृपा से परम पवित्र और निष्पाप हो जाता है ।

सन्ध्यामुपासते ये तु नियतं संशितव्रताः ।
विधूतपापास्ते यान्ति ब्रह्मलोक मनामयम् ।।

-यमस्मृति

जो लोग दृढ़प्रतिज्ञ होकर प्रतिदिन नियतपूर्वक सन्ध्या करते हैं, वे पापरहित होकर अनायमय ब्रह्मपद को प्राप्त होते हैं ।

उद्यन्तमस्तं यन्त मादित्यभिध्यानम् कुर्वन् ।
ब्राह्मणो विद्वान सकलं भद्रमुश्नते ।।

-तै० आ० प्र० २ अ० २

सूर्योदय और सूर्यास्त के समय गायत्री की उपासना करने वाला ब्राह्मण सब प्रकार के कल्याण को प्राप्त होता है ।

उत्थायावश्यकं कृत्वा कृतशौचः सान्तहितः ।
पूर्वां सन्ध्यां जपंस्तिष्ठेत् स्वकाले चापरां चिरम् ।।
ऋषयो दीर्घ सन्ध्यत्वा दीर्घ मायु खायु युः ।
प्रज्ञां यशश्च कीर्तिं च ब्रह्म वर्चस मैव च ।।

-स्कन्द पुराण

प्रातः शयन से उठकर आवश्यक मल-मूत्रादि का त्याग करके फिर शुद्ध तथा समाहित होकर पूर्व सन्ध्या को खड़े होकर जपे और समुचित समय पर दूसरी सन्ध्या की उपासना चिरकाल तक करनी चाहिए । ऋषि लोग दीर्घ काल तक सन्ध्या की उपासना करने ही के कारण लम्बी आयु की प्राप्ति किया करते थे और इसी के प्रभाव से वे प्रजा-यश-कीर्ति और ब्रह्मवर्चस को भी प्राप्त करते थे ।

उदयास्तमयादूर्ध्व यावत् स्याद् घटिकात्रयम् ।
तावत् सन्ध्यामुपासीत प्रायश्चितं ततः परम् ।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सूर्योदय तथा सूर्यास्त के बाद तीन घटिका तक सन्ध्योपासना का काल है । इसके बीत जाने पर प्रायश्चित करना होता है ।

प्रातः सन्ध्यां सनक्षत्रां नोपास्ते यः प्रमादतः ।
गायत्र्यष्टशतं तस्य प्रावश्चितं विशुद्धये ।।

प्रमादवश यथा समय सन्ध्योपासना न होने पर प्रायश्चित रूप से १०८ बार गायत्री जप करना होता है ।

सन्ध्याकाले त्वतिक्रान्ते स्थत्वाऽऽचम्य यथा विधी ।
जपदेष्टशतं देवीं ततः सन्ध्यां समाचरेत् ।।

सन्ध्या समय अतिक्रान्त हो जाय, तो यथाविधि स्नान आचमन करके १०८ बार गायत्री जप करने के बाद सन्ध्या करनी चाहिए ।

सव्याहृतिं स प्रणवां गायत्री शिर सा सह ।
ये जपन्ति सदा तेषां न भयं विद्यते क्वचित् ।
यथा कथञ्चिज्जप्तैषा देवी परम पावनी ।
सर्व काम प्रदा प्रोक्ता विधिना किं पुनर्नृप ।।

-विष्णु धर्मोत्रा पुराण

व्याहृति प्रणव एवं शिरोमन्त्र सहित गायत्री का जो जप करते हैं उन्हें किसी से भी डर नहीं रहता । परम पावनी गायत्री का जप किसी भी प्रकार किया जाय वह समस्त इष्ट कामनाओं को पूर्ण करता है । फिर यदि विधि पूर्वक किया जाय तब तो उसके सत्परिणाम का कहना ही क्या है ।

या सन्ध्या सा तु गायत्री द्विधा भूत्वा प्रतिष्ठिता ।
सन्ध्या उपासिता येन विष्णुस्तेन उपासिताः ।।
सच सूर्य समो विप्रस्तेजसा तपसा सदा ।
तत्पादपद्मरजसा सद्यः पूता वसुन्धरा ।।
जीवन्मुक्तः स तेजस्वी सन्ध्यापूतो हि यो द्विजः ।

जो सन्ध्या है वही गायत्री है, एक ही द्विधा होकर प्रतिष्ठित है । सन्ध्या की उपासना करने पर विष्णु की ही उपासना होती है ऐसे उपासक तेज तथा तपोबल से सूर्य तुल्य होते हैं । उनके पाद रज स्पर्श से पृथ्वी पवित्र होती है और उनको जीवनमुक्त पदवी पर प्रतिष्ठा मिलती है ।

उपास्ते सन्धिवेलायां निशाया दिवसस्य च ।
तामेव सन्ध्यां तस्मात् प्रवदन्ति मनीषिणः ।।

-महर्षि व्यास

दिवारात्रि के सन्धि समय में जो उपासना की जाती है, उसको भी इसलिए मनीषियों ने सन्ध्या कहा है ।

ऋषयो दीर्घ सन्ध्यत्वादीर्घ मायु श्वाप्नुयुः ।
प्रज्ञां यशश्च कीर्तिश्च ब्रह्मवर्चसमेव च ।।

दीर्घकाल तक सन्ध्या करके ऋषिगण दीर्घायु, प्रज्ञा, यश, कीर्ति और ब्रह्मतेज लाभ प्राप्त करते हैं ।

गायत्री सर्व मंत्राणां शिरोमणितया स्थित्य ।
विद्या नामपि ते नैतां साधयेत्सर्व सिद्धये ।।
त्रिव्याहृति युतां देवी औंकार युग संपुटाम् ।
उपास्य चतुऐ वर्गान् साधयेद्योन सो अऽन्धधीः ।।
देव्या द्विजत्वमासाद्य श्रेयसेऽन्यरतास्तु ये ।
ते रत्नमभिवांच्छन्ति हित्वा चिन्तामणि करोत् ।।

-वार्तिकसार

"गायत्री सब मन्त्रों तथा विधाओं में शिरोमणि है । इसलिये द्विजों को इसकी साधना करनी चाहिये । दो औंकारों द्वारा संपुट की गई और तीन व्याहृति वाली देवी गायत्री की उपासना करके जो धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन चारों वर्गों को नहीं साधता वह अन्धी बुद्धि वाला है । गायत्री के द्वारा द्विजत्व को प्राप्त करके जो अन्य देवताओं की साधना करते हैं वे वैसे ही हैं जैसे हाथ में आई चिन्तामणि को त्यागकर रत्नों की इच्छा करने वाले होते हैं ।

कहा गया है कि जिन्होंने ब्राह्मणत्व की साधना कर ली है, गुण, कर्म, स्वभाव एवं चिन्तन, चरित्र और व्यवहार की दृष्टि से अपने को उत्कृष्ट आदर्शवादिता के साथ जोड़ने की प्राम्भिक जीवन साधना सम्पन्न कर ली है, वे सच्चे अर्थों में ब्राह्मण हैं । ऐसे व्यक्तियों को ही ब्रह्मतेज उपलब्ध करने, सिद्धियों को हस्तगत करने में सफलता मिलती है । उन्हें ही साधारण उपासना तक सीमित न रहकर गुप्त और रहस्यमयी गायत्री साधना के क्षेत्र में प्रवेश करने का अधिकार मिलता है । ऐसे लोग योग और तप में संलग्न होकर उसका तत्वज्ञान हृदयंगम कर जीवन शोधन कर उसे ऊँचा उठा पाने में सफल होते हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

देवी भागवत में उल्लेख आता है **'ब्रह्मत्वं चेदासुकामऽस्युपास्व गायत्री चेल्लोक कामोऽन्यदेवम् ।'**

अर्थात्-जिसे ब्रह्मत्व ब्रह्मतेज प्राप्त करने की इच्छा हो, वह गायत्री महाशक्ति की उपासना करे । जिसे अन्य कामनाओं की ललक हो वह अन्य देवताओं को पूजे ।

गायत्री उपासना से साक्षी बुद्धि-ऋतम्भरा प्रज्ञा का उदय होता है । यही वेदों का सार है । पापों से निवृत्ति और पवित्रता की सिद्धि इसी से मिलती है । ब्रह्मतत्व की उपासना करने वाले के लिए यही साक्षात् ब्रह्म है, यह शिरोमणि मन्त्र है । इससे बढ़कर तन्त्र या पुराण में कोई भी मन्त्र नहीं है । इसी ग्रन्थ में आगे कहा गया है—

ब्रह्मण्य तेजो रूपा च सर्वसंस्कार रूपिणी ।
पवित्र रूपा सावित्री वांछति हयात्म शुद्धये ।।

अर्थात्-गायत्री ब्रह्मतेज रूप है, पवित्र एवं संस्कार रूपिणी है । आत्मशुद्धि के लिए उसी की उपासना करनी चाहिए ।

सावित्र्याश्चैव मन्त्रार्थ ज्ञात्वा चैव यथार्थतः ।
तस्या संयुक्त द्योपास्य ब्रह्म भूयाय कल्पते ।।

अर्थात्-सावित्री-गायत्री का गूढ़ मर्म और रहस्य जानकर जो उसकी उपयुक्त उपासना करता है, वह ब्रह्मभूत ही हो जाता है ।

सार यह कि गायत्री ब्रह्मरूपिणी है । ब्राह्मणत्व की स्थापना के लिए उसी की उपासना करने का निर्देश देते हुए कहा गया है । **'ब्रह्मत्वस्य स्थापनार्थं प्रविष्टा गायत्रीयं तावतास्य द्विजत्वम् ।** (ब्राह्मणत्व की स्थापना के लिए गायत्री की उपासना करें) इसी से द्विजत्व-दूसरा देव जन्म भी प्राप्त होता है ।

स्कन्द पुराण में महर्षि व्यास का कथन है—

'गायत्रेवतपो योगः साधनं ध्यानमुच्यते ।
सिद्धिनां सामता माता नातः किंचिद बृहत्तरम् ।।

अर्थात्-गायत्री ही तप है, गायत्री ही योग है, गायत्री सबसे बड़ा ध्यान और साधन है । इससे बढ़कर सिद्धिदायक प्रयोग और कोई नहीं है ।

भगवान् मनु भी इसी निष्कर्ष पर पहुँचते हुए कहते हैं-**'सावित्र्यास्तु परन्नास्ति ।'** अर्थात्-गायत्री से श्रेष्ठ और कुछ नहीं है ।

गायत्री मंजरी में शिवजी कहते हैं—

योगिकानां समस्तानां साधनानातु हे प्रिये,
गायात्र्येव मतालोंके मूलधारा विदोवरैः ।।

अर्थात्-हे पार्वती ! समस्त योग साधनाओं का मूलभूत आधार गायत्री ही है ।

देवल ऋषि के अनुसार गायत्री की उपासना करके ही कश्यप, गौतम, भृगु, अंगिरा, अत्रि, भारद्वाज, बृहस्पति, शुक्राचार्य, अगस्त्य, वशिष्ठ, विश्वामित्र आदि ने ब्रह्मर्षि पद पाया और इन्द्र, वसु आदि देवताओं ने असुरों पर विजय पाई ।

अथर्ववेद में कहा भी है—

'तदंब्रह्म च तपश्च सप्त ऋषयः उप जीवन्ति ब्रह्मवर्चस्युय जीवनीयो भवति य एवं वेद ।'

अर्थात्-सप्तऋषि ब्रह्मतेज के आधार पर ही प्रतापी हैं । यह ब्रह्मवर्चस् उन्होंने तप के द्वारा ही प्राप्त किया ।

महाभारतकार का स्पष्ट निर्देश है कि—

'परांसिद्धिमवाप्नोति गायत्रीमुत्तमां पठेत् ।'

अर्थात्-परासिद्धि प्राप्त करने के लिए सर्वश्रेष्ठ गायत्री को ही जपना चाहिए ।

गायत्री को सर्वसिद्धि प्रदाता कहा गया है । **'गायत्र्या सर्व संसिद्धिर्द्विजानां श्रुति संमता ।'** अर्थात्-वेद वर्णित सारी सिद्धियाँ गायत्री उपासना से मिल सकती हैं ।

वस्तुतः इस जड़ चेतन जगत में गायत्री ही शक्ति रूप से विद्यमान है । वही सोम और सावित्री भी है । साधना क्षेत्र में इसी को जीवनी शक्ति, प्राण ऊर्जा, कुण्डलिनी शक्ति आदि नामों से पुकारते हैं । ब्रह्मतेज की ब्रह्माग्नि की ब्रह्मवर्चस की प्रतिक्रिया है । ब्राह्मी ऊर्जा उपार्जित कर लेने वाले तेजस्वी ही सच्चे अर्थों में ब्राह्मण कहलाते हैं । ब्राह्मणत्व का आधार गायत्री महाशक्ति ही है, ओजस्, तेजस् एवं वर्चस् की उपलब्धि गायत्री साधना के क्षेत्र में प्रवेश करने पर ही हस्तगत होती है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गायत्री रहित ब्राह्मण की दुर्गति

गायत्री उपासना मानव मात्र की उपासना है । इस ईश्वर की वाणी को हृदयंगम करना और उसकी उपासना में तत्पर होना प्रत्येक आत्म-कल्याण के इच्छुक के लिए आवश्यक है । परन्तु ब्राह्मण कुल में उत्पन्न अथवा ब्राह्मणत्व की आकांक्षा करने वाले लोगों के लिए तो वह नितान्त आवश्यक है । शास्त्रकारों ने गायत्री उपासना को ब्राह्मण का अनिवार्य कर्त्तव्य बताया है और आदेश दिया है कि जीवन के अत्यन्त आवश्यक एवं महत्त्वपूर्ण कार्यों में गायत्री उपासना को प्रथम स्थान देना चाहिए । जो इस धर्म कर्त्तव्य का पालन नहीं करते, उनकी जगह-जगह तीव्र भर्त्सना की गई है और उन्हें शूद्र, चाण्डाल आदि कहा गया है । देखिए-

गायत्री रहितो विप्रः शूद्रादप्य शुचिर्भवेत् ।
गायत्री ब्रह्मतत्वज्ञाः संपूज्यंते जनै द्विजाः ।।

-पाराशर स्मृति २-३२

अर्थात्-जो ब्राह्मण गायत्री से रहित है वह शूद्र के समान अपवित्र है । जो ब्राह्मण ब्रह्मतत्व गायत्री को जानता है वही पूजने योग्य है ।

गायत्री यो न जानाति ज्ञात्वा नैव उपासयेत् ।
नाम धारक मात्रो सौ न विप्रो वृषली हि सः ।।

जो गायत्री को नहीं जानता, यदि जानता भी है तो उपासना नहीं करता । ऐसा नाम मात्र का ब्राह्मण 'वृषल' शब्द से निन्दित होता है ।

एवं यस्तु विजनाति गायत्रीं ब्राह्मण गुरुः ।
अन्यथा शूद्र धर्मस्या द्वेदानामपि पारगः ।।

-योगी याज्ञवल्क्य

जो ब्राह्मण गायत्री को जानता और जपता है वही सच्चा ब्राह्मण है । जो गायत्री की उपेक्षा करता है वह वेद में पारंगत होने पर भी शूद्र समान है ।

अज्ञात्वा चैव गायत्री ब्राह्मण्या देव हीयते ।
अपवादेन संयुक्तो भवेच्छुतिनिदर्शनात् ।।

-यो० द०

गायत्री को न जानने वाला ब्राह्मण ब्राह्मणत्व से हीन और लोक निन्दित हो जाता है । ऐसा वेदों में कहा गया है ।

गायत्र्युपासना नित्या सर्व वेदैः समीरितां ।
यस्या बिनात्वधः पातो ब्राह्मणस्यांति सर्वथा ।।

-देवी भागवत १२४

अर्थात्-वेदों में नित्य गायत्री उपासना करने का आदेश है । गायत्री उपासना न करने से ब्राह्मण की सब प्रकार अधोगति होती है ।

सन्ध्या नोपासते यस्तु ब्राह्मणो हि विशेषतः ।
सजीवन्नेव शूद्रः स्यान्मृतः स्याचैव जायते ।।

-दक्ष स्मृति १-२२

जो व्यक्ति, विशेषतया ब्राह्मण, सन्ध्या उपासना नहीं करता, वह जीवित रहते शूद्र है और मृत्यु के उपरान्त श्वान बनता है ।

केवलं वा जपेन्नित्यं ब्राह्मणस्य च पुर्तये ।
सहस्त्रभ्यसोन्नित्यं प्रातर्ब्राह्मण पुंगवः ।।

-शिव वि० १३-१८

ब्राह्मणत्व का आवश्यक कर्त्तव्य पालन करने के लिए प्रातः काल एक हजार गायत्री मन्त्र जपना आवश्यक है ।

गायत्रीष्वप्य विश्वासो यस्य विप्रस्य जायते ।
स एव यवनो देवि, गायत्री स कथं जपेत् ।।१।।
तस्य संसर्गिणो विप्राः पतिता स्तेऽत्र निन्दिताः ।
गायत्री रहितस्यान्नं यवनादधमं स्मृतम् ।।२।।
गायत्री रहितो विप्रः स एव पूर्व कुक्कुरः ।
स चाण्डाल समो देवि, किं तस्य जप पूजनम् ।।३।।

-गायत्री तंत्र, तृतीय पटल

अर्थात्-हे देवि, जिस ब्राह्मण का गायत्री पर विश्वास नहीं उसे यवन समान जानो । भला ऐसा व्यक्ति उपासना क्यों करेगा ? उसके तो साथ रहने वाला भी पतित और निन्दित हो जायगा । इसलिए उसका अन्न भी नहीं खाना चाहिए । जो ब्राह्मण गायत्री रहित है उन्हें इस जन्म के चाण्डाल और पूर्व जन्म के श्वान समझो । ऐसे को जप पूजन कैसा ?

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वेदभक्ति विहीनाश्च पाखण्ड मत गामिनः ।
अग्नि होत्रादि सत्कर्म स्वधा स्वाहा विवर्जिताः ।
पण्डिता अपि ते सर्वे दुराचार प्रवर्तकाः ।

वेद भक्ति से विहीन, पाखण्डियों के मत पर चलने वाले अग्निहोत्र और स्वाहा स्वधा से रहित, ऐसे दुराचार प्रवर्तक पण्डित नारकीय हैं ।

अन्य देवताओं की उपासनाएँ सांसारिक लाभों, सकाम प्रयोजनों, या सीमित लाभों के लिए होती हैं । पर आत्म-बल प्राप्त करने के लिए तो गायत्री का ही आश्रय लेना पड़ता है । गायत्री को त्याग कर अन्य उपासनाओं में लगा रहा जाय तो अन्य प्रकार के लाभ मिल सकते हैं पर आत्म-बल के लाभ से वंचित ही रहना पड़ेगा । इसलिए शास्त्रकारों ने ब्राह्मण के लिए यह आवश्यक बताया है कि गायत्री उपासना करने के अतिरिक्त यदि अन्य साधनाएँ करना चाहे तो कर सकता है, पर इस महामन्त्र को त्याग कर यदि उसने अन्य मन्त्रों या अन्य देवताओं का सहारा लिया है तो यह उसकी भूल है । इस भूल के फलस्वरूप उसे ब्रह्मतेज का अभाव ही रहेगा अन्य कोई वस्तु उसे चाहे भले ही मिल जाय । इस प्रकार उपासनाओं के लिए गायत्री का त्याग करना उचित नहीं । यदि अन्य उपासनाएँ करनी ही हों तो प्रथम स्थान गायत्री उपासना को देकर तब अन्य उपासनाएँ करे ।

गायत्री यः परित्यज्य चान्य मंत्रमुपासते ।
न साफल्य मवाप्नोति जन्म कोटिः शतैरपि ।।

-सन्ध्याभाष्य

जो मनुष्य गायत्री मन्त्र को त्याग कर अन्य मन्त्रों की उपासना करता है वह चिरकाल में भी सफलता प्राप्त नहीं कर सकता ।

विहायतां तु गायत्री विष्णु पास्ति परायणः ।
शिवो पास्ति रतो विप्रो नरकं याति सर्वथा ।।

-देवी भागवत्

जो विप्र गायत्री को त्याग कर विष्णु, शिव आदि की उपासना में रत हैं वह नरक को जाता है । यज्ञ, जप, संस्कार, ब्रह्मभोज आदि धर्म कार्यों में केवल उन्हीं ब्राह्मणों को सम्मिलित करने की आज्ञा शास्त्रकारों ने दी है जो गायत्री उपासना नियमित रूप से करके अपने ब्राह्मणत्व को जीवित रखे हुए हैं जिनने अपने इस कर्त्तव्य का त्याग कर दिया, जो गायत्री उपासना नहीं करते, उन्हें ऐसे धर्म कार्यों में सम्मिलित नहीं किया जाना चाहिए ।

न तिष्ठति तु यः पूर्वां नो पास्ते यश्च पश्चिमाम ।
स शूद्रवद् बहिष्कार्यः सर्वस्माद् द्विज कर्मणः ।।

अर्थात्— जो प्रातः और सायं संध्या उपासना नहीं करता उसे सर्व द्विजोचित कर्मों से बहिष्कृत कर देना चाहिए ।

अनभ्यासेन वेदानाम् आचारस्य च वर्जनात् ।
आलस्यात् अन्न दोषाय मृत्युर्विप्रान जिघांसति ।।

-मनु ५-४

वेदों का अभ्यास न करने से, आचार छोड़ देने से, आलस्य से, कुधान्य खाने से ब्राह्मण की मृत्यु हो जाती है ।

स्वयं शुद्धो हि पूतात्मा नयेन संत्रातु महंति ।
गायत्री जप शुद्धो हि शुद्ध ब्राह्मण उच्यते ।।

गायत्री जप में शुद्ध हुआ ब्राह्मण ही शुद्ध कहा जा सकता है । जो स्वयं शुद्ध हो चुका है वही दूसरों को भी शुद्ध कर सकता है ।

तत्स्माद्दानं जपे होमे पूजायां सर्व कर्मणि ।
दानं कर्तुं तथा त्रातुं पात्रं तु ब्राह्मणोर्हति ।।

इसलिए दान, जप, होम, पूजा आदि कर्मों में केवल सत्पात्र ब्राह्मण को ही लेना चाहिए ।

लक्ष द्वादश युक्तस्तु पूर्ण ब्राह्मण ईरितिः ।
गायत्र्या लक्ष हीनं तु वेद कार्ये न योजयेत् ।।

-शिव १३-४-६

बारह लाख गायत्री जपने पर ही पूरा ब्राह्मण कहलाता है । जिसने एक लाख भी जप न किया हो उसे वेद कार्यों में सम्मिलित न करना चाहिए ।

चतुर्विंशति लक्षं वा गायत्री जप संयुतः ।
ब्राह्मणस्तु भवेत्पात्रं सम्पूर्ण फल योगदम् ।।

-शि० वि० १५-१४

जिस ब्राह्मण ने २४ लक्ष गायत्री जप कर लिया हो वही 'सत्पात्र' कहलाता है । उसी से फल की आशा की जा सकती है ।

ब्राह्मण को भूसुर अर्थात् पृथ्वी का देवता कहते हैं । उसे अपने पद और गौरव की रक्षा के लिए ब्राह्मणोचित कर्म जिनमें गायत्री उपासना प्रथम है-करनी ही चाहिए । जो उन्हें न करके साधारण सांसारिक झंझटों में अपना जीवन नष्ट करता रहता

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है भारी भूल करता है । यों मनुष्य जन्म ही दुर्लभ है पर ब्राह्मण होना तो और भी बड़ा सौभाग्य है । जिन्हें यह सौभाग्य प्राप्त है वे अपनी इस देह को क्षुद्र कार्यों में न लगाकर आत्म-कल्याण का मार्ग अपनावें । उपासना द्वारा आत्म-बल प्राप्त करें और संसार में धर्मवृद्धि के लिए कटिबद्ध रहें ।

ब्राह्मणस्य च देहोऽयं क्षुद्र कामाय नेष्यते ।
कृच्छाय तपसे नेह प्रस्यानन्त सुखाय च ।।

अर्थात्—ब्राह्मण की यह देह क्षुद्र कामों के लिए नहीं है । वह इस लोक में कठिन तप करके परलोक में सद्गति प्राप्त करने के लिए ही है ।

सर्वोपरि सर्वसुलभ गायत्री योग

गायत्री उपासना के सत्परिणामों की चर्चा सदा सर्वदा सुनाई पड़ती रहती है । जिसने भी इस महामन्त्र का आश्रय लिया उन्होंने आशाजनक और उत्साह वर्धक फल पाया है । प्राचीन काल में भी ऐसी अनेकों महत्त्वपूर्ण घटनाएँ घटित होती रही हैं, जिनसे यह प्रमाणित होता है कि गायत्री उपासना साधारण से साधारण और असाधारण से असाधारण समस्याओं को सुलझाने में एक चमत्कारी उपाय की तरह सत्परिणाम उत्पन्न करती रहती हैं । शास्त्रों और पुराणों में ऐसे कई प्रसंगों की कथाएँ मिलती हैं जिनसे इस तथ्य का प्रतिपादन होता है कि देव-दानव, ऋषि मुनि, पुरुष और स्त्रियाँ समय-समय पर माता का आश्रय ग्रहण करके दुःखों से सुखों की ओर, अशान्ति से शान्ति की ओर अग्रसर होने में समर्थ होते रहे हैं ।

अनेक देवताओं, भक्तों और महापुरुषों ने भी अनेक अनुभवों की चर्चा इसी प्रकार की है, जिससे गायत्री की महिमा की भी महत्ता का प्रतिपादन होता है और तथ्य का समर्थन होता है कि इस कल्पवृक्ष के नीचे बैठने वाले की कामनाएँ पूर्ण होती ही रही हैं । इस कामधेनु का पयपान करने वाला सदैव अतृप्तियों की क्षुधा से छुटकारा पाकर पूर्ण रूप बना रहता है । यह उदाहरण हमारी श्रद्धा को जागृत करते हैं और प्रेरणा देते हैं कि उपासना में तथा जीवन साधना में उन तत्वों का समावेश किया जाय जिनका प्रतिपादन गायत्री तत्व ज्ञान के अन्तर्गत हुआ है ।

ध्रुव कुमार अपना अनुभव सुनाते हुए राजाओं से महामहिमामयी सावित्री (गायत्री) का प्रभाव परिणाम बताते हुए निर्देश करते हैं कि यही उपासना सर्वश्रेष्ठ तथा सर्वोपरि है—

किं ब्रवीमि महीपालास्तस्याश्चरितमुत्तमम् ।
ब्रह्मादयो न जानन्ति सेशाः सुरगणस्तथा ।।

ध्रुवकुमार से जब गायत्री का माहात्म्य पूछा गया तो उसने राजाओं से कहा—हे नृपगण ! मैं उस सावित्री देवी के अत्युत्तम चरित्र के विषय में क्या वर्णन करूँ । उसका चरित ऐसा अप्रमेय है कि ब्रह्मादिक बड़े-बड़े देवगण भी उसे नहीं जानते हैं ।

सर्वस्याद्या महालक्ष्मीवरिण्या शक्ति उत्तमा ।
सात्वकीयं महीपाला जगत्पालन तत्परा ।।

हे नृपगण ! यह देवी परम सात्त्विकी, सबसे आद्या महालक्ष्मी, वरेण्या और उत्तम शक्ति स्वरूपा है तथा इस जगत के पालन, रक्षण करने में सर्वदा तत्पर रहा करती है ।

सृजते या रजोरूपा सत्वरूपा च पालने ।
संहारे च तमो रूपा त्रिगुण सा सदा मता ।
निर्गुणा परमा शक्तिः सर्वकाम फल प्रदा ।
सर्वेषां कारणं साहि ब्रह्मादीनां नृपोत्तमाः ।
निर्गुणा सर्वथा ज्ञातुमराक्या योगिभिनृप्तः ।।

वह सावित्री देवी रजोगुण के स्वरूप वाली इस जगत का सृजन किया करती है और सत्त्व गुण का स्वरूप धारण करके इसका पालन करती है । जब इस प्रपंचात्मक विश्व का वह संहार करके लय करना चाहती है तो तमोगुण के रूप को धारण कर लेती है । इसके सर्वदा त्रिगुण सम्पन्न स्वरूप माने गये हैं । इसका जो निर्गुण स्वरूप है उसमें परमशक्ति है और समस्त कामनाओं के फलों को प्रदान करने वाला है । हे नृपोत्तमगण ! ब्रह्मा आदि सबका यह कारण स्वरूप है । हे नृपगण ! इसका निर्गुण स्वरूप तो बड़े-बड़े योगियों के द्वारा भी नहीं जाना जा सकता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यस्येच्छया सृजति विश्वमिदं प्रजेशी नानावतार कलनं कुरुते हरिश्च । नूनं करोति जगतः किल भस्म शम्भु स्तां शर्मदां न भजतेनु कथं मनुष्यः ।

जिसकी इच्छा से प्रजा का स्वामी ब्रह्मा इस सम्पूर्ण विश्व का सृजन किया करते हैं तथा भगवान् हरि अनेक अवतार धारण करते हैं एवं भगवान् शम्भु इस जगत को संहार करके भस्म कर देते हैं, यह मनुष्य कैसा है जो ऐसी कल्याणकारी सावित्री देवी का भजन नहीं किया करता है ।

स्वयं भुव मनु के सम्बन्ध में भी एक ऐसा आख्यान मिलता है जिसके अनुसार उनको ब्रह्मा ने गायत्री उपासना की प्रेरणा दी थी । स्वायंभुव मनु ने एक बार ब्रह्मा से अपने मन में घुमड़ रही यह इच्छा व्यक्त की कि वे अपनी गोदी में भगवान् जैसा पुत्र खिलाने की कामना रखते हैं जिससे उन्हें सृष्टि का आदि उद्घाटन कर्त्ता एवं नियम व्यवस्था बनाने का श्रेय प्राप्त हो, तो ब्रह्माजी ने उन्हें भगवती की शरण में जाने के लिए ही कहा । इस प्रसंग का विवरण इस प्रकार आता है ।

मनुः स्वायम्भुव स्खाद्यः पद्म पुत्रः प्रतापवान् ।
शतरूपा पतिः श्रीमान् सर्व मन्वन्तराधियः ।।
स मनुः पितरं देवं प्रजापतिमकल्मषम् ।
तक्ता पर्मचरत्पूर्वं तमुवाचात्मम् सुलम् ।।
पुत्र, पुत्र त्वया कार्य देव्याराधन मुत्तमम् ।
तत्प्रसादेन ते तात ! प्रजा सर्ग प्रसिद्धयाति ।।

अर्थ—समस्त मनुओं का स्वामी, शतरूपा के पति स्वायम्भुव मनु ने अपने पिता की परिचर्या की थी । उस समय ब्रह्मा जी ने उससे कहा—हे पुत्र ! तुमको देवी की आराधना करनी चाहिए । उसी के प्रसाद से प्रजा का सर्ग करने का तुम्हारा कार्य सफल होगा ।

एवमुक्तः प्रजास्त्रष्टा मनुः स्वायम्भुवो विराट् ।
जगद्योनिं तदा देवी तपसाऽतर्पयद् विभुः ।
तुष्टाव देवीं देवेशी सम्तहित मतिः किल ।

अर्थ—प्रजा के सृजन करने वाले पितामह के द्वारा इस प्रकार से आदेश दिये जाने पर विराट् स्वायम्भुव मनु ने इस जगत् की समुत्पत्ति करने वाली देवी को अपनी उत्कृष्ट तपश्चर्या द्वारा सन्तुष्ट कर दिया था । इस पर देवी ने प्रसन्न होकर कहा-

वरं वरय राजेन्द्र ! ब्रह्म पुत्र ! यदिच्छसि ।
प्रसन्नाहं स्तवेनात्र भक्त्या चाराधनेन च ।।
यदि देवि ! प्रसन्नाऽसि भक्त्या कासुणिकोत्तमे ।
तदा निर्विघ्नतः सृष्टिः प्रजायाः स्यातवाज्ञ या ।।
प्रजा सर्गः प्रभवतु ममानुग्रहतः किल ।
निर्विघ्नेन च राजेन्द्र ! वृद्धिश्चाप्युत्तरोत्तरम् ।।

अर्थ—देवी ने कहा—हे राजेन्द्र ! हे ब्रह्मा के पुत्र ! जो भी तुम चाहते हो वरदान माँग लो । तुम्हारे इस स्तवन और आराधना से मैं प्रसन्न हूँ । मनु ने कहा-यदि आप मुझ पर करुणा कर प्रसन्न हैं तो मैं यही चाहता हूँ, प्रजा की सृष्टि निर्विघ्न होवे । देवी ने कहा—हे राजेन्द्र ! तेरी सृष्टि की उत्तरोत्तर वृद्धि होगी ।

दानवों से उत्पीड़ित होकर देवताओं ने भी अपनी रक्षा के लिए इसी आद्य शक्ति का आश्रय ग्रहण किया था । इसका उल्लेख इस प्रकार मिलता है ।

आवयोर्जगतांचैव मङ्गलाय पदाम्बुजम् ।
महामुक्ति प्रदं चैव त्वदीयमति निर्मलम् ।।
अदृश्यमपि गोप्यं हि मातुराकार वर्जितम् ।
कथन्तत्पूजयिष्यावः सर्वमङ्गलदायकम् ।।
भूमौ स्थानं कल्पयस्व यजितुं तत्पदाम्बुजम् ।
सर्वदा पूजयिष्यावो महामङ्गल कारणम् ।।
आवयोश्चौव सर्वेषां महामुक्ति फलाय च ।
तदावयो दनिवाद्याः किं करिष्यन्ति चाशुभम् ।।
अवश्यं वै तरिष्या वो दुस्तरं त्वत्पदार्चनात् ।

अर्थ—एक बार ब्रह्मा और विष्णु दोनों महान् देवों ने सावित्री देवी का स्तवन किया । इन दोनों देवेशों ने गायत्री देवी से कहा—'हे माता ! हमारे और समस्त जगत के कल्याण के निमित्त आपके महामुक्ति प्रद, अत्यन्त निर्मल-अदृश्य और आंकार हीन एवं गोप्य तथा परम मङ्गलदायक महान् आपके चरणों की अर्चना हम किस प्रकार से करें । आप अपने चरण कमलों को पूजन के लिए पृथ्वी पर किसी स्थल की कल्पना करें । हम उसी स्थान पर एकत्रित होकर महान् मङ्गल के कारण स्वरूप एवं महामुक्ति प्रद आपके चरण कमलों की अर्चना करेंगे । इससे हमारा, समस्त देवगणों का तथा सभी जीवों का महान् मङ्गल होगा । आपके चरणों की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अर्चन करने पर दानवादि हमारा कुछ भी अनिष्ट नहीं कर सकेंगे । हम आपके चरणों की पूजा करके परम दुस्तर दुःखों से भी निस्तार प्राप्त कर सकेंगे । इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है ।'

अति संगुप्तभावेन ईप्सितं प्राप्यते फलम् ।
देव दानव गन्धर्वैरन्य रपि महामते ।।
यथा न शायते कैश्चितथार्चां त्वं कुरुच्च मे ।
सर्वायद्भयः परित्राणं कारिष्यामि चते सदा ।।

अर्थ-भगवती वेद जननी ने कहा—''अत्यन्त गुप्तभाव से पूजा करने पर अभीष्ट फल की प्राप्ति होती है । देव-दानवादि अन्य सभी को पूजा करने पर फल की प्राप्ति होती है, इसमें सन्देह नहीं है । जिसको दूसरा मनुष्य न जान सके, उसी भाँति मेरी पूजा करो । ऐसा करने पर सभी आपदाओं से मैं रक्षा करूँगी ।''

एक बार देव गुरु बृहस्पति जी ने देवसभा में अपने शिष्य देव पुरुषों को गायत्री का माहात्म्य बताते हुए कहा कि देव लोक पहुँचाने और देवत्व को स्थिर रखने का श्रेय गायत्री माता को ही प्राप्त है । उसी का आश्रय लेकर आत्मा को अन्धकार भरे नरकों से छूटकर सुरलोक का आनन्द प्राप्त होता है । परा और अपरा विद्या के रूप में भगवती के सुविस्तृत आवरण की उन्होंने चर्चा की और कहा कि आप लोगों की तरह ही जो अन्य लोग इस अवलम्बन को ग्रहण करेंगे, वे उच्च लोकों की भूमिका प्राप्त करेंगे और आत्मानन्द का सुख भोगेंगे ।

देवताओं ने सुर गुरु बृहस्पतिजी के आदेशानुसार हिमालय पर जाकर भगवती की उपासना की और उसके फलस्वरूप प्राप्त अनुभवों के आधार पर अपने भाव व्यक्त करते हुए इस प्रकार स्तवन किया—

इति तस्य वचः श्रुत्वा देवास्ते प्रययुर्गिरिम ।
हिमालयं महाराज ! देवी ध्यान परायणाः ।।
माया बीजं हृदा नित्यं जपन्तः सर्व एव हि ।
नमश्चक्रुर्महामायां भक्तानामभय प्रदाम् ।।

तुष्टुकुः स्तोत्रमंत्रैश्च भक्तया परमयायुताः ।

अर्थ—इस प्रकार का उनका वचन सुनकर वे समस्त देवगण गिरिराज हिमालय पर चले गये । हे महाराज ! वहाँ पर सब देवता देवी के ध्यान में तत्पर हो गये और माया बीज का हृदय में ध्यान करके मन्त्र का जाप करने लगे । अपने परम भक्तों को अभय प्रदान करने वाली महामाया को नमस्कार किया तथा अत्यन्त भक्ति की भावना से संयुक्त होकर स्तोत्रों और मन्त्रों द्वारा उसका स्तवन किया ।

ते कि न मन्दमतयो यतयो बिमूढास्त्वां
ये न विश्व जननीं समुपाश्रयन्ति ।
विद्यांपरां सकल काम फलप्रदां तां मुक्ति
प्रदां बिबुधवृन्द सुविन्द लाडिग्रम् ।।

अर्थ—देवों ने स्तुति की—''हे देवि ! वे यतिगण मन्द बुद्धि वाले ही हैं और महामूढ़ हैं, जो समस्त विश्व की जननी आपका आश्रय नहीं लेते हैं । आप तो परा विद्या हैं, सब कामनाओं को पूर्ण करने वाली-मोक्ष प्रदान करने वाली हैं । सब देवगण आपके चरणों की वन्दना करते हैं ।''

जलादि सकलं तत्वं ब्रह्माण्डादिक विस्तरम् ।
देवादि सकलं पूर्ण दिग्विदिक चराचरम् ।।
कार्य्यं च कारणं सर्वं तथो विष्णोः समुद्भवः ।
सर्व जानाति हि ब्रह्मा मत्कृतं मायया पुनः ।।
किन्तु सर्व हि मिथ्यैव मातुर्माया हि केवलम् ।
तां मायां हि भजन्ति ये तत्परं यान्तिते नराः ।।
तुष्टा सा परमा माया मुक्ति मात्रं प्रयच्छति ।
रुष्टा सा परमा माया भूमियोगं प्रयच्छति ।।
तस्याः पादास्तु जे नूनं वश्या मुक्तिः समाग्रिता ।
यस्य तुष्टा महादेवी मम माता महेश्वरी ।।
ददौ तस्मै च त्वं मुक्ति महामाया देवेश्वरी ।

अर्थ—सब जल प्रभृति तत्व और ब्रह्माण्ड आदि समस्त विस्तार-सम्पूर्ण देवगण एवं चराचर तथा कार्य कारण तथा विष्णु की उत्पत्ति यह सभी कौशल ब्रह्मा को माता गायत्री कहती हैं कि मेरी माया से ही अवगत हुआ है, किन्तु यह सभी मिथ्या है, केवल गायत्री माता की माया का ज्ञान ही प्राप्त करना चाहिए । जो मनुष्य उसकी माया महिमा को भजता है वह सांसारिक माया को पार कर लेता है अर्थात् उसका सर्वतोभाव से परम कल्याण होता है । यदि वह मातेश्वरी परम तुष्ट हो जाती है तो निस्सन्देह मुक्ति प्रदान किया करती है । यदि वह रुष्ट हुआ करती है तो फिर योनि योग प्रदान करती है । उसके चरण कमलों में मुक्तिवश्या होकर आश्रय किया करती है । वह माता गायत्री देवी जिस पर सन्तुष्ट होती है, उसी को प्राप्त होती है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अनादि गुरु-मंत्र गायत्री

गायत्री ही गुरु-मंत्र है

गायत्री मन्त्र को अनादि काल से गुरु-मंत्र कहा जाता है । गुरु का कार्य दिशा बोध कराना है । गायत्री मंत्र मनुष्य को देवत्व की, जीवन सार्थकता की दिशा प्रदान करने में सदैव अद्वितीय रहा है । इसीलिए यह गुरु-मंत्र है । ऋषि-महर्षियों से लेकर अवतारी पुरुषों तक ने अपने साधनाक्रम में इसे प्रधानता दी है । महर्षि वशिष्ठ, विश्वामित्र, याज्ञवल्क्य, व्यास, भगवान राम, कृष्ण आदि के उदाहरण इस सन्दर्भ में प्रमाण हैं । इस तरह गुरु-मन्त्र का सम्मान भारतीय धर्म में मात्र गायत्री को ही मिलता है ।

गुरु तत्व के द्वारा मिलने वाली श्रद्धा और प्रेरणा का भाव-सम्वेदना एवं अनुशासन की उत्कृष्टता का-जो प्रकाश मिलता है, वह बीज रूप से गायत्री मन्त्र में विद्यमान है । इसकी शब्द शृंखला में २४ अक्षरों के मणिमुक्तक गुथे हुए हैं । उनमें से प्रत्येक में अपने-अपने ढंग का शक्ति तत्व वर्चस् भरा पड़ा है । साधना द्वारा इस पक्ष को विकसित करने वाला सर्व समर्थ बन सकता है । इन्हीं अक्षरों में वह आलोक भी विद्यमान है जिसका अनुगमन करते हुए जीवन रथ आत्मिक प्रगति के मार्ग पर सुनिश्चित गति से चलता रह सकता है । महामानव, ऋषिकल्प, देव वर्ग की विविध कक्षाओं को उत्तीर्ण करता हुआ पूर्णता के लक्ष्य तक पहुँच सकता है ।

गायत्री में प्रज्ञा और प्रखरता के दोनों तत्व भरे होने से उसे 'ब्रह्मवर्चस्' कहा गया है । ब्रह्मवर्चस् की सृजनात्मक शक्ति को ब्रह्मविद्या कहते हैं और ध्वंसात्मक शक्ति को ब्रह्मास्त्र । परशुराम का फरसा, राम का धनुष, कृष्ण का चक्र, शिव का त्रिशूल, दुर्गा का खड्ग—प्रकारान्तर से ब्रह्मास्त्र ही हैं । ऋषियों की शाप शक्ति यही है । दधीचि की अस्थियों से बना ब्रह्म वज्र तत्कालीन वृत्रासुरी सत्ता का ध्वंस करने में अमोघ सिद्ध हुआ था । उसी के सहारे देव संकट टला और असुरता का साम्राज्य छिन्न-भिन्न हो सका ।

ऋषि रक्त का संचय घड़े में भरने के रूप में किया गया नियोजन ब्रह्मास्त्र का ही उपक्रम था सीता उसी से जन्मी और रावण परिकर के विनाश की भूमिका प्रस्तुत करने में समर्थ सिद्ध हुई । अनुसुइया के अभिशाप से ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र अपनी क्षमता को गँवा बैठे और बालकों जैसा आचरण करने लग गये थे । चाणक्य के शाप से नन्द वंश का जिस तरह विध्वंस हुआ वह सर्वविदित है । कपिल मुनि के शाप से साठ हजार सगर-सुतों की दुर्गति होना प्रसिद्ध है । मेघदूत के नायक यक्ष को शाप से प्रताड़ित होकर कितनी विरह-वेदना सहनी पड़ी, इसकी एक झाँकी उस महाकाव्य के पढ़ने वाले को सहज ही मिल जाती है । पुराण, साहित्य के पन्ने-पन्ने पर भरी पड़ी ऐसी असंख्यों घटनाएँ बताती हैं कि ब्रह्म वर्चस् का प्रहार कितना शक्तिशाली होता है । यह आत्म-शक्ति के ध्वंसात्मक पक्ष का परिचय है । यों इसका प्रयोग आपत्तिकालीन समस्याओं को हल करने के लिए यदा-कदा ही करना पड़ता है फिर भी उसकी क्षमता तो स्वीकार ही करनी होगी ।

ब्रह्म विद्या की सृजनात्मक शक्ति का परिचय तो पग-पग पर मिलता है । जीवन के प्रत्यक्ष पक्ष को सुखी समुन्नत बनाने में उसका असाधारण योगदान है । धन के आधार पर मिलने वाली सुविधाएँ सर्वविदित हैं । उस माध्यम से उन्नति करने वालों के उदाहरण अपने आस-पास ही असंख्यों देखे जा सकते हैं । इसी प्रकार बुद्धि बल से, शरीर बल से, कुशलता, प्रतिभा और साहसिकता जैसे गुणों से-उन्नति के उच्च शिखर तक जा पहुँचने वालों के उदाहरण भी पढ़ने पर सर्वत्र मिल जाते हैं । आत्मबल का चमत्कार इन भौतिक सामर्थ्यों की तुलना में असंख्य गुना बढ़ा-चढ़ा है । उससे व्यक्ति की आत्मसत्ता का निखार होता है और बढ़ी हुई आन्तरिक प्रखरता संसार की सर्वोच्च सामर्थ्य

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सिद्ध होती है । इतिहास को धन्य बनाने वाले-समय के प्रवाह को मोड़ने वाले महामानव, परिस्थितियों की दृष्टि से विन्न रहते हुए भी आन्तरिक प्रखरता के सहारे ही अपनी विशिष्टता सिद्ध कर सके और समय की समस्याओं का समाधान करने में महान् योगदान दे सके । इसे आत्म-शक्ति का सृजनात्मक पक्ष कह सकते हैं । ब्रह्म विद्या के तत्व दर्शन में इसी का प्रावधान है ।

गायत्री म्हामन्त्र की इन उभय-पक्षीय क्षमताओं से सुसम्पन्न साधक की तुलना राजहंस से की गई है । उसके उपर्युक्त दोनों पक्ष-दोनों पंखों की तरह खुलते हैं और उस पर गायत्री महाशक्ति आरूढ़ होती तथा समस्त ब्रह्माण्ड में विचरण करती है । साधक की सहायता के लिए जा पहुँचने में यह राजहंस ही प्रमुख माध्यम होता है । इस अलंकारिक प्रतीक प्रतिपादन में इसी तथ्य का निरूपण किया गया है कि इस गायत्री महाशक्ति के दो ही उपयोग हैं—कल्याणकारी श्रेय साधन में और दुःखदायी विघ्न विदारण में उसकी सामर्थ्य अपने अद्भुत प्रभाव का परिचय देती है ।

गायत्री को गुरु-मन्त्र क्यों कहा गया इसकी संगति उपर्युक्त विवेचन से ठीक बैठ जाती है । 'गु' का अर्थ है ज्ञान वर्धन । 'रु' का अर्थ है अशुभ निवारण । दोनों कार्य जो सत्ता सम्पन्न कर सकती है उसे 'गुरु' कहते हैं । व्यक्ति उसके प्रतीक हो सकते हैं, पर वस्तुतः यह ईश्वरीय शक्ति है और हर अन्तरात्मा के अन्तराल में विद्यमान रहकर ब्रह्म-चेतना का प्रतिनिधित्व करती रहती है । गायत्री मन्त्र में इसका प्रत्यक्ष परिचय मिलता है । दीक्षा गुरु शिष्य के लिए दो कार्य करते हैं । श्रद्धा सम्बर्धन और उपयोगी अनुशासन नियन्त्रण । आत्मिक प्रगति के यही दो मूलभूत आधार हैं, जिनके सहारे व्यक्ति क्रमशः ऊँचा, अधिक ऊँचा, असीम ऊँचा उठता चला जाता है । श्रद्धा का तात्पर्य है-अन्तरात्मा की सृजन-शक्ति । अनुशासन का अभिप्राय है काट-छाँट, तपाना, सुधारना, ढालना और परिवर्तित परिष्कृत करना । यह दोनों प्रयोजन गायत्री में सन्निहित प्रेरणा और समर्थता के सहारे सम्पन्न होते हैं । गुरु-मन्त्र का उच्चस्तरीय सम्मान गायत्री को क्यों मिला ? इसका समाधान इस तथ्य को समझने पर हो जाता है कि उसमें ज्ञान और विज्ञान की, अभिवर्धन और नियन्त्रण की, दोनों ही शक्तियाँ प्रचुर परिमाण में भरी पड़ी हैं । गुरु से जो आशा अपेक्षा की जाती है, उसका आधार गायत्री मन्त्र में मौजूद होने से उसे परोक्ष गुरु तत्व का उद्गम स्रोत मान लिया गया है ।

धार्मिक क्रिया-कृत्यों में संध्या-वदन नित्य कर्म है । उसमें आर्ष परम्परा के अनुसार गायत्री का उपयोग अनिवार्य है । विद्यारम्भ के समय उपनयन होता है । उस समय शिक्षण का शुभारम्भ गायत्री मन्त्र की दीक्षा के साथ होता है और गुरु-मन्त्र के रूप में समस्त शास्त्र परम्पराओं के अनुसार छात्र को गायत्री मन्त्र ही दिया जाता है । यज्ञोपवीत गायत्री की प्रतीक प्रतिमा है जिसे हर घड़ी शरीर के महत्त्वपूर्ण अंगों पर धारण किये रहने का व्रत धारण करना होता है । यही व्रत बंध है । कन्धे पर उत्तरदायित्व, हृदय में श्रद्धा, कलेजे में साहस, पीठ पर कर्मनिष्ठा का समावेश माना गया है । इन सभी महत्त्वपूर्ण अंगों पर यज्ञोपवीत लपेट देने का तात्पर्य है-मानवी परिकर को पूरी तरह गायत्री मन्त्र में सन्निहित उत्कृष्टता से, भावप्रेरणा से, लपेट देना-जकड़ देना । गायत्री का प्रतीक प्रतिमा को यज्ञोपवीत के रूप में धारण करना प्रकारान्तर से जीवन सत्ता को इसी महाशक्ति के आलोक से भर लेना है । विद्यारंभ संस्कार इन्हीं आस्थाओं की प्रतिष्ठापना, छात्र के अन्तराल में करने की दृष्टि से होता है । शुभारम्भ में गायत्री मन्त्र की ही प्रत्यक्ष और परोक्ष अवधारणा है । गुरु-मन्त्र गायत्री को क्यों कहा गया इसका आभास इस विवेचन तक पहुँचने वाले को सहज ही लग जाता है ।

कथा है कि महर्षि दत्तात्रेय अपनी ज्ञान-पिपासा जब कहीं तृप्त न कर सके तो सीधे प्रजापति के पास पहुँचे । ब्रह्माजी ने उनकी आकांक्षा जानी और बताया कि सद्गुरु के अतिरिक्त ज्ञान-पिपासा को तृप्त करने की सामर्थ्य और किसी में नहीं है । सद्गुरु अन्तःकरण की गहराई में विद्यमान है और वहाँ तक पहुँच कर ही उसका अनुग्रह पाया जा सकता है । दत्तात्रेय ने प्रजापति का परामर्श

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

शिराधार्य किया और अपने अन्तराल का गुरुतत्व खोज निकाला । उस गुरु कृपा से सुसम्पन्न होकर उन्होंने जिस भी पदार्थ या प्राणी पर दृष्टि डाली उसी में से सद्ज्ञान का स्रोत उमड़ने लगा, निर्झर बहने लगा ।

कथा में ऐसी २४ घटनाओं का वर्णन किया गया है जो थीं तो सामान्य पर उन्हीं से महर्षि को आत्मबोध के समस्त रहस्य उपलब्ध हो गये । इन रहस्यों का उल्लेख महर्षि दत्तात्रेय प्रणीत 'गुरु-गीता' में हुआ है । जिन पदार्थों और प्राणियों से महर्षि ने प्रकाश प्राप्त किया उन्हें गुरु माना और दत्तात्रेय के २४ गुरु प्रख्यात हुए । पुराणकारों ने उन सबका विस्तारपूर्वक वर्णन किया है । गुरुओं की संख्या २४ ही क्यों ? इससे न्यूनाधिक क्यों नहीं ? इस प्रश्न का एक ही उत्तर है-गायत्री के चौबीस अक्षर ही वे तथ्य हैं, जिन्हें अध्यात्म जगत में 'गुरु' एवं सद्गुरु की संज्ञा दी गई है । गुरु महात्म्य बताते हुए कहा गया है कि-'निगुरा की गति नहीं होती ।' अर्थात् गुरुविहीन को आत्मिक प्रगति में सफलता नहीं मिलती । इस शास्त्र वचन में जिस गुरु तत्व की महानता का प्रतिपादन है उसे गुरु-मन्त्र गायत्री में ही सन्निहित समझा जा सकता है ।

इन्हीं विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए दैनिक संध्या वन्दन में गायत्री को अनिवार्य रूप से जुड़ा रखा गया है । सन्ध्या नित्य कर्म है । सन्ध्या प्रकारान्तर से गायत्री का ही विस्तृत और व्यवस्थित कर्मकाण्ड है । इसे दैनिक गुरु-पूजा या गुरु-भक्ति भी कह सकते हैं । गायत्री मन्त्र की दीक्षा गुरु मुख से लेने का अभियान यह है कि प्रतीक के माध्यम से तथ्य को हृदयंगम किया जाय । शरीरधारी गुरु की सहायता से अन्तरंग में ब्रह्म सत्ता का प्रतिनिधित्व करने वाले सद्गुरु तक पहुँचा जाय ।

उपासना प्रयोजन में अनेक मन्त्रों का उपयोग होता है । अनेक देवताओं की अभ्यर्थना के लिए किये जाने वाले विधि-विधानों में तदनुरूप मन्त्रों के साथ उपयोग की परम्परा है । इन्हें साधना मन्त्र-देव मन्त्र-सम्प्रदाय मन्त्र आदि की संज्ञा दी जा सकती है । पर गुरु-मन्त्र भारतीय धर्म में एक ही है— गायत्री । उस सर्वोच्च पद पर आसीन होने की अधिकारी मात्र वेदमाता को ही ऋषि मान्यता मिली है । इसी में शास्त्र परम्परा का समर्थन है । मुसलमान धर्म में एक ही 'कलमा' मन्त्र की ही प्रमुखता है । ईसाई धर्म में 'बपतिस्मा' मन्त्र की ही प्रधानता है । भारतीय धर्म में गुरु-मन्त्र के ज्ञान से मात्र गायत्री मन्त्र को ही मान्यता दी गई है । यह अकारण नहीं । इस महामन्त्र की साधनात्मक और शिक्षात्मक विशेषताओं को, ज्ञान-विज्ञान की दिव्य धाराओं को, ध्यान में रखते हुए ही अनादि काल से गुरु-मन्त्र के रूप में मान्यता दी गई है ।

गायत्री मन्त्र तात्विक और दार्शनिक दृष्टि से अपने आप में पूर्ण है । उसमें ज्ञान और विज्ञान की समस्त दिव्य धाराओं से साधक को लाभान्वित करने की सामर्थ्य मौजूद है । महत्वपूर्ण ज्ञान-विज्ञान के तथ्यों को छात्र ठीक तरह समझ सके और लाभान्वित हो सके इसके लिए अध्यापक का सहयोग आवश्यक माना जाता है । ठीक इसी प्रकार गायत्री मन्त्र का उपयोग व्यक्ति विशेष को किस प्रयोजन के लिए, किस प्रकार करना चाहिए, इसकी सही जानकारी प्राप्त करने के लिए दीक्षा गुरु की आवश्यकता पड़ती है । इसी से गायत्री साधना की सफलता के लिए अपने विषय के निष्णात एवं अनुभवी गुरु की आवश्यकता बताई गई है । सही चिकित्सक की तरह सही शिक्षक भी सुनिश्चित सफलता के लिए आवश्यक है । इसी दृष्टि से आत्मिक प्रगति के पथ पर चलने वाले गायत्री उपासकों के लिए उपयुक्त गुरु का मार्ग-दर्शन एवं सहयोग आवश्यक माना गया है ।

गुरु और गुरु-मन्त्र का रहस्य

गायत्री को सनातन धर्म में गुरु-मन्त्र कहा गया है । आज भी देश भर में इसका प्रचार है और प्रायः सभी प्रान्तों के पंडित यज्ञोपवीत धारण कराते समय शिष्य को इस मन्त्र का उपदेश देते हैं । उनका यह कार्य केवल एक रूढ़ि पूजा के ढंग पर होता है क्योंकि अधिकांश में न तो वे स्वयं गायत्री की उपासना और साधना करने वाले होते हैं और

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

न शिष्य को उसकी विधिवत् शिक्षा देकर उसे साधन-मार्ग में अग्रसर कराने का प्रयत्न करते हैं । यही कारण है कि बहुत समय से लोग गुरु-मन्त्र का महत्त्व और उससे लाभ उठाने की विधि को भूल गये हैं । अगर गुरु सच्चे और ज्ञानी हों तो वे इस मन्त्र की शिक्षा देकर अपने अनुयाइयों का अपार हित कर सकते हैं । इस विषय में गुरु का महत्व बतलाते हुए शास्त्रवेत्ता कहते हैं-

गुकारस्त्वन्धकारस्यात् रुकारस्तन्निरोधकः ।
अन्धकार विनाशित्याद गुरुरित्य भिधीयते ।।

"गुकार अर्थात् अन्धकार और रुकार अर्थात् उस अन्धकार को मिटाने वाला प्रकाश, इस प्रकार जो शिष्य में पाये जाने वाले अन्धकार का विनाश करके उसे ज्ञान रूपी प्रकाश देता है, वही गुरु कहा जाता है ।"

गुरु तीन प्रकार के होते हैं "क्रियाशक्ति" प्रधान स्थूल देहधारी लौकिक गुरु, "इच्छाशक्ति" प्रधान सूक्ष्म देहधारी सिद्ध गुरु, "ज्ञानशक्ति" प्रधान कारण देहकारी ज्ञानी गुरु । कितने ही गुरु ऐसे भी हैं जो वंश परम्परा से मन्त्र का प्रयोग कर रहे हैं, पर उन्होंने स्वयं साधन द्वारा उसे चैतन्य शक्ति सम्पन्न नहीं किया है । लोग शक्तिहीन मन्त्र का प्रयोग करते रहते हैं जिससे उसका कोई प्रभाव दिखलाई नहीं पड़ता । ऐसे गुरुओं को सूक्ष्म देहधारी-सिद्ध गुरुओं की सहायता नहीं मिलती, जिससे अपना अथवा अन्य लोगों का विशेष उपकार नहीं कर सकते ।

साधारण रीति से 'गुरु' शब्द का अर्थ 'भारी' होता है । उसका विपरीत शब्द 'लघु' अर्थात् 'हल्का' होता है । इस दृष्टि से देखा जाय तो विश्व की समस्त जड़ और चेतन वस्तुएँ एक दूसरे के मुकाबले में भारी या हल्की सिद्ध होंगी । पर इनमें से किसी भी व्यक्ति या वस्तु के लिए यह नहीं कहा जा सकता कि वह सदैव और प्रत्येक परिस्थिति में गुरु (उपादेय अथवा वन्दनीय) ही है, अथवा कोई व्यक्ति या वस्तु सदैव प्रत्येक दशा में लघु ही है । इस हिसाब में कोई भी एक व्यक्ति, वह चाहे जितना भी विद्वान, ज्ञानी अथवा बुद्धिमान क्यों न हो, तो भी समस्त जगत का गुरु नहीं बन सकता । इसी प्रकार यदि किसी वंश में कोई विशिष्ट पुरुष हो गया हो और बहुत से व्यक्तियों को सत-मार्ग दिखलाकर गुरु की वन्दनीय पदवी प्राप्त कर गया हो तो उसके आगे वाले शिष्य अथवा पुत्र पौत्रादि भी वंश परम्परा के आधार पर गुरु होने का दावा नहीं कर सकते । जब से हमारे देश में पुत्र-परम्परा अथवा शिष्य-परम्परा से लोग गुरु बनने दावा करने लगे तभी से उनका आदर मान घटने लग गया और धीरे-धीरे प्रायः नष्ट हो गया । इसके फल से समाज में वास्तविक ज्ञान और ज्ञानी, गुण और गुणी का अभाव होकर भयंकर अन्धाधुन्धी का साम्राज्य फैल गया ।

अगर प्रायमरी स्कूल का कोई शिक्षक अपने शिष्यों से यह दावा करे कि केवल मैं ही गुरु हूँ और तुम लोग मेरे सिवाय और किसी को गुरु मत बनाना, तो इसका परिणाम यह होगा कि उसके शिष्य दो-चार दर्जा पढ़कर ही रह जायेंगे, उनमें से कोई बी० ए०, एम० ए० न हो सकेगा । इसलिए जो हमको विद्या, बुद्धि प्राप्त करने में जितने अंश तक सहायता दे सके, उसे उतने ही अंशों में गुरु मानना चाहिये । एम० ए० की डिग्री प्राप्त करने तक जितने शिक्षकों और आचार्यों के पास पढ़ा जाय उन सबको ही गुरु के समान मानना चाहिए । जिस प्रकार हमारे माता-पिता एक ही होते हैं और वे ही इस बात का दावा कर सकते हैं, वैसा नियम गुरु के सम्बन्ध में काम नहीं दे सकता । हाँ, अगर किसी को संयोगवश या भाग्य से कोई दैवी जगत का ज्ञानी गुरु मिल जाय तो उसकी बात दूसरी है, पर जब तक ऐसा अलौकिक गुरु नहीं मिलता तब तक शिष्य को गुरु बदलने का अधिकार भी होता है । शास्त्रों में लिखा है-

आमोदार्थी यथा भृंगो पुष्पात्पुष्पादन्तरंग गच्छेत् ।
विज्ञानार्थी तथाशिष्यो गुरु गर्वोन्तरं गच्छेत् ।।

अर्थात् "जिस प्रकार भौंरा आमोद अर्थात् सुगन्धि और मधु के लिए एक फूल से दूसरे, तीसरे फूल में जाता है, उसी प्रकार जब तक शिष्य की जिज्ञासा तृप्त न हो तब तक वह दूसरा, तीसरा गुरु कर सकता है ।" अगर एक ही गुरु से सब प्रकार के ज्ञान की तृप्ति हो जाय तो फिर गुरु बदलने की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आवश्यकता नहीं रहती । पर ऐसे उच्च अधिकारी और अलौकिक गुरु कभी भी शिष्य को ढूँढ़ने नहीं जाते, शिष्य ही आकर्षित होकर उनके पास आते हैं । तब भी वे तत्काल शिष्य को स्वीकार नहीं कर लेते, वरन् उसकी जाँच करके ही स्वीकार करते हैं । स्वीकार करने के बाद वे शिष्य के शरीर में शक्तिपात करते है जिससे शिष्य में पहले से पाई जाने वाली वासनाएँ दूर होने लगती हैं और वे क्रमशः गुरु की इच्छा और आदेश के अनुसार व्यवहार करने लगता है । यह कार्य प्रायः ऐसे ढंग से होता कि शिष्य को खबर भी नहीं पड़ती, वह अपने को स्वतन्त्र स्वाधीन समझता रहता है, पर मन्त्र उस पर निरन्तर प्रभाव डालकर उसे बदलता जाता है । शिष्य की जितनी इच्छाएँ और प्रवृत्तियाँ गुरु के विपरीत होती हैं, वे तरह-तरह के उपायों से दूर हो जाती हैं और अन्त में वे पूर्णतया गुरु आज्ञाधीन, उनका अनुवर्ती हो जाता है । इसीलिए कहा गया है कि मनुष्य अगर प्रयत्न करे तो कभी-कभी बाघ के मुँह में से भी छुटकारा पा जाता है पर अलौकिक शक्ति सम्पन्न गुरु जिसको एक बार पकड़ लेते हैं, अर्थात् स्वीकार करके शरण में ले लेते हैं, वे शिष्य हजार प्रयत्न करने पर भी उनसे छूटकर अलग नहीं हो सकते, अर्थात् वे गुरु की कल्याणकारी मार्ग पर नहीं चल सकते । इसके उद्देश्य की पूर्ति के लिये गुरु तरह-तरह के विचित्र उपाय भी करते हैं । इसीलिए साधारण मनुष्यों को उचित है कि यदि गुरु का कोई व्यवहार उनकी समझ में न आवे अथवा उल्टा जान पड़े, तो वे तुरन्त उनके विषय में भली-बुरी कल्पना न कर बैठें । जीव-तत्व, ईश्वर-तत्व, भाग्य-तत्व की अपेक्षा भी गुरु और गुरु-तत्व अधिक गहन, गंभीर है ।

हिन्दू शास्त्रों के अनुसार मन्त्र की महिमा बहुत अधिक है और हमारे पूर्वज अति प्राचीन काल से इसका प्रयोग करके आत्म-कल्याण और परमार्थ करते रहे हैं । अब भी करोड़ों व्यक्ति नियमित रूप से मन्त्र जपते रहते हैं, परन्तु मन्त्र-रहस्य और मन्त्र-विज्ञान से ठीक-ठीक परिचित न होने से यथोचित फल प्राप्त नहीं कर सकते इसलिए वे बार-बार मन्त्र को बदलते हैं, गुरु को बदलते हैं और अन्त में निराश होकर मन्त्र त्याग देते हैं और साथ-साथ मन्त्र-शास्त्र तथा मन्त्र-वेत्ता गुरुओं की मूर्खतापूर्ण निन्दा और चर्चा करने में लग जाते हैं । यह सब इसी कारण होता है कि वे अपने उपयुक्त गुरु प्राप्त करने में सफल नहीं होते । अगर वे सच्चे गुरु द्वारा मन्त्र के जप व साधन का ठीक मार्ग जान सकें तो वे भी प्राचीन काल के धर्मात्मा लोगों के समान संसार में सुख पूर्वक रहते हुए भी परमात्मा को प्राप्त कर सकते हैं । हमारे देश के वैदिक काल के ऋषि-मुनि अधिकांश में गृहस्थी ही थे और लौकिक कार्यों में लगे रहते थे, तो भी वे 'सत्य' और 'शिव' में संलग्न रहकर 'सुन्दर' जीवन बनाने का मार्ग बतला गये हैं । अगर अब भी हमारे गुरुओं और शिष्यों द्वारा उस वेद-विज्ञान सम्मत विधि-विधान और अनुशासन को शिरोधार्य करते हुए जीवन निर्माण किया जाय तो इस मायामय संसार और भौतिक पदार्थों का यथावत् भोग करते हुये आनन्दमय कल्याणकारी जीवन को प्राप्त किया जा सकता है ।

दीक्षा और गुरु मंत्र

दीक्षामादाय गायत्र्या ब्रह्मनिष्ठाग्रजन्मना ।
आरभ्यतां ततः सम्यग्विधिनोपासना सता ।।

(ब्रह्मनिष्ठाग्रजन्मना) ब्रह्मनिष्ठ ब्राह्मण से (गायत्र्याः) गायत्री की (दीक्षां आदाय) दीक्षा लेकर (ततः) तब (सता) सत्स्वभाव वाले व्यक्ति को (सम्यग् विधिना) ठीक विधि से (उपासना आरभ्यतां) उपासना आरम्भ करनी चाहिए ।

अयमेव गुरोर्मन्त्रः यः सर्वोपरिराजते ।
विन्दौ सिन्धुरिवास्मिंस्तु ज्ञान विज्ञानमाश्रितम् ।।

(अयमेव) यह ही (गुरोर्मन्त्रः) गुरुमंत्र है । (यः) जो (सर्वोपरि) सर्वोपरि (राजते) विराजमान है (विन्दौसिन्धुरिवः) एक बिन्दु से सागर के समान (अस्मिन्) इस मंत्र में (ज्ञान विज्ञान) समस्त ज्ञान और विज्ञान (आश्रितं) आश्रित हैं ।

आध्यात्मिक जगत में गुरु का बहुत ही महत्वपूर्व स्थान है । जन्म देने वाली माता और पालन करने वाले पिता के पश्चात् सुसंस्कृत बनाने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वाले गुरु का ही स्थान है । भारतीय समाज में ''निगुरा'' एक गाली समझी जाती है । जिसका गुरु नहीं उसे असंस्कृत, अविकसित माना जाता है । कारण यह है कि गुरु के बिना मनोभूमि का ठीक प्रकार निर्माण नहीं हो पाता । माता, पिता कितने ही सुशिक्षित क्यों न हों पर वे अपने बालकों का उचित निर्माण करने में समर्थ नहीं होते । उन्हें अपने बालको के प्रति स्वाभाविक, मोह, पक्षपात, स्नेह होता है, इस अति के कारण बालक के प्रति उनकी निष्पक्ष दृष्टि नहीं रहती, वे उसे ठीक प्रकार प्रकार समझ नहीं पाते, या समझने की स्थिति में नहीं होते । बच्चा तुतला कर बोल रहा हो तो माता-पिता को बड़ा अच्छा लगता है, वे स्वयं ही उसके साथ वैसी ही तोतली बोली में बात करने लगते हैं और चाहते हैं कि बालक बार-बार उसी प्रकार बोलते देखकर उन्हें बड़ा आनन्द आता है ।

ऐसे अवसरों पर गुरु का दृष्टिकोण दूसरा होता है । वह देखता है कि इस प्रकार बोलने से बालक को आदत पड़ सकती है और वे आगे के लिए तुतलेपन की बीमारी से ग्रस्त हो सकता है । अतएव गुरु उस प्रकार के मोह ग्रस्त लाड़-चाव से दूर रहकर बालक को तोतली बोली बोलना रोककर उसे शुद्ध आचरण की शिक्षा देता है । लाड़-चाव के कारण दुलार-स्नेह और असाधारण प्रेम के कारण माता-पिता न तो बालकों पर नियन्त्रण कर सकते हैं और उनकी आन्तरिक स्थिति की वास्तविकता को समझ पाते हैं । ऐसी दशा में उनके हाथ से बच्चों का अच्छा निर्माण नहीं हो पाता, इस कार्य को तो निष्पक्ष, निःस्वार्थ, मोह, ममता से रहित, दूरदर्शी, सच्चा, स्थायी हित चाहने वाले, ज्ञानबद्ध गुरु ही कर सकते हैं । यही कारण है कि भारतीय अपने बालकों को थोड़ा-सा समर्थ होते ही गुरुकुलों में भेज देते थे और वहाँ उसका निर्माण होता था ।

ज्ञान के दो अंग हैं एक-सिद्धान्त (थ्यौरी), दूसरा-अनुभव (प्रैक्टिस) । केवल सिद्धान्त समझने मात्र से कोई ज्ञान पूर्ण नहीं हो सकता । चिकित्सा, शिल्प, रसायन, चित्रकारी, संगीत, शास्त्रविद्या, यन्त्रसंचालन, विज्ञान आदि की शिक्षा यदि केवल पुस्तक रूप से प्राप्त हो तो निश्चित रूप से अधूरी रहेगी । जिसने कपड़ा बुनने की कला को केवल सिद्धान्त रूप से तो समझा है पर करघा, सूत बुनाई आदि का क्रियात्मक रूप से व्यवहार नहीं किया है, वह कपड़ा नहीं बुन सकता । इसी प्रकार जीवन की अगणित समस्याएँ जिनका ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक है, केवल स्कूल कॉलिजों की तोता रटंत से न तो समझी जा सकती हैं और न उनका हल मालूम होता है । इसलिए किसी भी विषय की शिक्षा प्राप्त करनी होती है तो उस विषय के अनुभवी द्वारा उस विषय का क्रियात्मक ज्ञान प्राप्त किया जाता है, तभी सर्वाङ्गपूर्ण शिक्षा मिल पाती है ।

आध्यात्म साधना के लिए तो अनुभवपूर्ण शिक्षा की अत्यधिक आवश्यकता है । क्योंकि प्रत्येक साधक की मनोभूमि, स्वास्थ्य एवं परिस्थिति में भिन्नता होती है । इस भिन्नता के कारण उनकी साधनाओं में अन्तर करने की आवश्यकता पड़ती है । किसी के लिए कोई विधि व्यवस्था उपयोगी बैठती है तो किसी के लिए उसमें हेर-फेर करना जरूरी होता है । इन बातों को साधक स्वयं नहीं जान सकता । स्कूल में जाने वाले बच्चे स्वयं यह निर्णय करने में समर्थ नहीं होते कि हमें कौन-सी पुस्तकें, किस क्रम में पढ़नी चाहिए, यदि वे अपने आप, अपनी इच्छा से, मन-मर्जी का पाठ्यक्रम चुनें और स्वयं अपनी शिक्षाविधि निर्धारित करें तो उनके लिए सफलता प्राप्त करना कठिन होगा, वे समय और शक्ति का दुरुपयोग करेंगे और उस लाभ से वंचित रहेंगे जो गुरु की मर्जी के अनुसार पढ़ने से उन्हें प्राप्त हो सकता था ।

साधना काल में कई बार कुछ विक्षेप उत्पन्न हो जाते हैं, उन विक्षेपों के, भूलों के, सुधार के लिए उपाय जानने की आवश्यकता होती है, कई बार विचित्र अनुभव आते हैं उनका कारण समझने की जरूरत पड़ती है, बीच-बीच में परीक्षा करने की आवश्यकता अनुभव होती है जिससें यह मालूम पड़ता रहे कि साधना की प्रगति किस दिशा में, किस गति से हो रही है । यों कोई भी रोगी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

किसी चिकित्सा पुस्तक को लेकर अपनी दवा दारू कर सकता है, पर इस उपाय से अभीष्ट लाभ प्राप्त होगा ही, यह नहीं कहा जा सकता । इसलिए किसी चतुर वैद्य के हाथ में चिकित्सा का उत्तरदायित्व सौंपना होता है । वैद्य देखता है कि रोगी को क्या रोग है, उसके लिए क्या चिकित्सा अच्छी पड़ेगी, इस निर्णय के लिए वह अपने चिर अनुभव को काम में लाता है और औषधि की व्यवस्था करता है, फिर देखता है कि औषधि का क्या असर हो रहा है, उनके अनुसार हेर-फेर करता है । मूत्र परीक्षा, जिह्वा परीक्षा, नाड़ी परीक्षा, वजन, थर्मामीटर, स्टेथेस्कोप आदि द्वारा यह जाँचता रहता है कि कितनी प्रगति हो रही है, उस प्रगति को सन्तुलित रखने के लिए वह रोगी को आवश्यक सलाह, पथ्य, परिचर्या आदि का आदेश करता रहता है । आध्यात्मिक साधना में साधक के लिए गुरु वही कार्य करता है जो रोगी के लिए वैद्य करता है ।

आध्यात्मिक मार्ग में आगे बढ़ने के लिए सबसे प्रथम श्रद्धा और विश्वास को दृढ़ करने की आवश्यकता होती है । जैसे यात्रा के लिए दो पैरों का होना आवश्यक है, तैरने के लिए हाथों की जरूरत है, वैसे ही योग मार्ग के लिए श्रद्धा और विश्वास दो मूलभूत तत्व हैं । इनके बिना इस मार्ग पर एक इंच भी प्रगति नहीं हो सकती । इन दोनों तत्वों को सबल बनाने के लिए उनका अभ्यास किसी ऐसे आधार पर करना होता है जो श्रेष्ठ हो, लाभदायक हो, प्राप्त हो तथा प्रत्युत्तर देता हो । ऐसा आधार गुरु ही हो सकता है । सूक्ष्म, निराकार, अप्रत्यक्ष, ईश्वर या उसकी शक्तियों पर दृढ़ आस्था आरोपित करने से पूर्व श्रद्धा-विश्वास को स्थूल आधार पर आरोपित करके उन्हें पुष्ट बनाया जाता है । गुरु के ऊपर आरोपित की हुई श्रद्धा-थोड़े ही समय में परिपक्व होकर ईश्वरीय निष्ठा के रूप में परिवर्तित हो जाती है । जैसे छोटी तीर कमान पर अभ्यास करते योद्धा लोग प्रचंड धनुष वाणों का प्रयोग करने में समर्थ हो जाते हैं वैसे ही गुरु भक्ति का अभ्यास, स्वल्प काल में ईश्वर भक्ति के रूप में परिणत हो जाता है ।

गुरु स्थापना के प्रत्यक्ष लाभ तो स्पष्ट हैं ही । यह एक प्रकार का आध्यात्मिक विवाह है । जिसमें दो व्यक्ति एक पवित्र उत्तरदायित्व को ओढ़ते हैं । गुरु अपने ऊपर उत्तरदायित्व लेता है कि शिष्य की आत्मा को ऊँचा उठाने में कोई कसर न रखूँगा । शिष्य अपने ऊपर उत्तरदायित्व लेता है कि गुरु के प्रति अगाध श्रद्धा रखता हुआ उनके आदेश को शिरोधार्य करूँगा । विवाह और दीक्षा में यद्यपि भौतिक दृष्टि से बहुत अन्तर है, पर आध्यात्मिक दृष्टि से उसमें विशेष अन्तर नहीं है । दो आत्माएँ जीवन-भर के लिए पूरी ईमानदारी से एक-दूसरे की उन्नति और सहायता का व्रत लेती हैं, यही दीक्षा कहलाती है । पति-पत्नी की इस प्रतिज्ञा को विवाह और गुरु-शिष्य की प्रतिज्ञा को दीक्षा, मित्र-मित्र की प्रतिज्ञा को मैत्री या "पगड़ी पलटना" कहते हैं । इस प्रकार के व्रत बन्ध के पश्चात् अधिक जिम्मेदारी से कर्तव्य-पालन के भाव दृढ़ होते हैं । शास्त्रों में कहा गया है कि शिष्य के पाप-पुण्यों का दसवाँ भाग गुरु को भी मिलता है । कारण स्पष्ट है कि शिष्य के निर्माण में गुरु का भारी उत्तरदायित्व उन कार्यों में उसे भागीदार बना देता है ।

गायत्री साधना के लिए गुरु की आवश्यकता होती है । इस कार्य के लिए ब्रह्मनिष्ठ आत्मदर्शी का वरण करना चाहिए । कोई श्रेष्ठ, अनुभवी, आत्मिक दृष्टि वाले सदाचारी व्यक्ति अपने समीप न हों तो दूरस्थ व्यक्तियों से भी यह हो सकता है । शरीर दूर-दूर रहते हुए भी आत्माओं के लिए दूरी का कोई प्रश्न नहीं । दूरस्थ आत्मा उसी प्रकार एक दूसरे की समीपता कर सकतीं हैं, जिस प्रकार पास-पास रहते हुए दो व्यक्ति आपस में निकटता का अनुभव करते हैं । यदि ऐसे दूरस्थ गुरु की भी व्यवस्था न हो सके, तो किसी स्वर्गीय महापुरुष की, आत्मा को गुरु स्वीकार किया जा सकता है । एकलव्य, कबीर आदि ने दूरस्थ व्यक्तियों को गुरु

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वरण करके अपने आप दीक्षा ले ली थी । इस प्रकार के दूरस्थ या अदृश्य गुरुओं के बारे में शिष्य को ऐसा भाव अन्तर में धारण करना पड़ता है कि वे अपने समझ से प्रसन्न हैं और गुरु के समस्त उत्तरदायित्वों को पूरा कर रहे हैं ।

दीक्षा के समय गुरु शिष्य को एक प्रधान विचार देते हैं । यह विचार-मन्त्र कहलाता है । मन्त्रों में सर्वश्रेष्ठ, सर्वोपरि मन्त्र गायत्री है, क्योंकि इसमें ज्ञान-सांसारिक ज्ञान, विज्ञान-आध्यात्मिक ज्ञान इस प्रकार भरा हुआ है जैसे बिन्दु में सिन्धु । जल की एक बूँद में वे सब तत्व मौजूद होते हैं जो समुद्र की विशाल जल-राशि में होते हैं । बीज में वृक्ष का सम्पूर्ण आधार छिपा होता है, वीर्य की एक बूँद में सारे शरीर का ढाँचा सन्निहित रहता है । गायत्री मन्त्र २४ अक्षरों का है पर इसके गर्भ में ज्ञान-विज्ञान के अनन्त भाण्डागार छिपे पड़े हैं । इससे बड़ा कोई मन्त्र नहीं, इसलिए इस वेदमाता को गुरु-मन्त्र के रूप में अन्तःस्तल में धारण करना अधिक होता है । दीक्षा और गुरु-मन्त्र ग्रहण करने की विधि के साथ आरम्भ की हुई गायत्री उपासना विशेष फलवती होती है, ऐसा शास्त्रों का मत है ।

प्रायः गुरुदीक्षा उपनयन संस्कार के समय दी जाती है । उपनयन संस्कार के बाद ही वेदारम्भ के शुभारम्भ में सर्व प्रथम चारों वेदों की जननी वेदमाता गायत्री की शिक्षा-दीक्षा दी जाती है, यही गुरु दीक्षा है । यह गुरु दीक्षा का सुनिश्चित मन्त्र गायत्री ही है । जिसका यज्ञोपवीत हुआ है उसका गुरुमन्त्र गायत्री ही है । प्राचीन काल में छात्र जब गुरु के आश्रम में, गुरुकुल में शिक्षा प्राप्त करने जाता था तो आचार्य उसे पाशविक जीवन से छुटकारा पाकर मानवीय आदर्शों के अनुकूल जीवन बनाने की शपथ दिलाते थे, जो इस शपथ को नहीं लेता था, उसे शिक्षा का अधिकारी नहीं मानते थे । यह शपथ ही द्विजत्व है । यज्ञोपवीत इस शपथ का प्रतीक, प्रमाण-पत्र एक स्मरण चिन्ह है ।

यज्ञोपवीत गायत्री की प्रतिमूर्ति है । जनेऊ के नौ धागे-गायत्री के नौ शब्द हैं, तीन लड़ें गायत्री के तीन पाद हैं, यज्ञोपवीत की चार ग्रन्थियाँ, गायत्री की लगी हुई तीन व्याहृतियो (भूर्भवः स्वः) एवं प्रणव ॐ की प्रतीक हैं । इस प्रकार यज्ञोपवीत एवं गायत्री में शब्द और रूप का अन्तर होते हुए भी वस्तुतः एक ही तत्व में दो प्रकार हैं ।

गुरु दीक्षा कोई स्वतन्त्र संस्कार नहीं है । गायत्री समेत उपनयन धारण करने को ही गुरु दीक्षा कहते हैं । चूँकि गायत्री केवल शिक्षा मन्त्र नहीं, शक्ति मन्त्र भी है और इस शक्ति मन्त्र सदा प्राण-शक्ति के साथ सम्मिश्रित होकर ही फलप्रद होते हैं । पुस्तक में पढ़कर किसी शक्ति मन्त्र को याद कर लिया जाय, तो उसका बहुत थोड़ा लाभ होगा । यदि उस शक्ति मन्त्र के साधक विशेषज्ञ व सिद्ध पुरुष की प्राण-शक्ति के समावेश के साथ गुरुमुख से उस मन्त्र को लिया जाय तो वह प्राणयोग मन्त्र साधक के लिए सफलता प्रदान करने वाला बन जाता है । इसीलिए प्रायः सभी शक्ति-मन्त्र गुरु मुख से लिये जाते हैं । वह मन्त्र पहले से ही याद हो तो भी उसकी साधना में समुचित प्रगति एवं सफलता की सम्भावना तभी रहती है जब उसकी विधिवत् दीक्षा ली गई है । 'राम' यह दो अक्षर का मन्त्र सर्वविदित है, फिर भी कबीर को इसे सफल बनाने के लिए इस 'राम' मन्त्र को श्री स्वामी रामानन्द जी से गुरु दीक्षा के रूप ग्रहण करने की आवश्यकता पड़ी थी ।

वेदारंभ एवं उपनयन के समय शास्त्रोक्त परम्परा के आधार पर गुरु-मन्त्र के रूप गायत्री को ही दिया जाना चाहिए । पर आजकल अनेक सम्प्रदाओं एवं मत-मतांतरों का बोलबाला है, सो अपनी-अपनी मन मर्जी के मन्त्रों को भी यज्ञोपवीत के समय कई पंडित देते हुए देखे जाते हैं । उसका कोई शास्त्रीय आधार नहीं है ।

प्राचीनकाल में उपनयन और वेदारम्भ कराने वाले ही विद्वान होते थे जो वेदों के निष्णात एवं तपस्या के धनी बनने के उपरान्त गुरु-मन्त्र चलाने के अधिकारी बन जाते थे । कथा आती है कि गायत्री को वशिष्ठ और विश्वामित्र का शाप लगा हुआ है । शाप मोचन किए बिना गायत्री सफल नहीं होती । इस कथन का रहस्य यह है कि इस महामन्त्र के तत्वदर्शी-वशिष्ठ, श्रेणी के एवं आत्मा को तपोवत करके स्वार्थपरायणता की सीमा को

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तोड़ देते हैं और स्वमित्र ही न रहकर विश्वमित्र श्रेणी में प्रतिष्ठित हो जाते हैं-ऐसे सत्पुरुष ही गायत्री मन्त्र की दीक्षा देने के अधिकारी हैं । उन्हीं में इतना प्राण होता है कि शिष्य की अन्तरात्मा के गहन प्रदेश तक उस मन्त्र की शक्ति को प्रतिष्ठित कर सकें । ऐसा अवसर जिन्हें प्राप्त नहीं होता उनकी साधना वैसी सफल नहीं होती जैसी होनी चाहिए और जिन्हें ऐसे संयोग, सुअवसर मिल जाते हैं, उनकी सफलता का मार्ग सरल हो जाता है । वशिष्ठ और विश्वामित्र का शाप लगने और उसका उत्कीलन करने पर मन्त्र सिद्ध होने की आख्यायिका का यही अलंकारिक रहस्य है । अन्यथा चारों वेदों की जननी को भला कोई क्यों शाप देगा और शाप देने की हिम्मत भी करेगा तो इतनी प्रचंड शक्ति के समीप जाते-जाते उस शाप की वही दुर्गति हो जायगी जो प्रचण्ड दावानल के निकट जाने पर एक तुच्छ तिनके की होती है ।

यज्ञोपवीत संस्कार का कर्मकाण्ड और विधान कोई भी पण्डित करा सकता है । वह सरल है । उपयुक्त विश्वामित्र-वशिष्ठ गुण सम्पन्न आचार्य के अभाव में गायत्री मन्त्र भी दे सकता है, पर वह वस्तुतः एक चिह्न पूजा है । विद्याध्ययन के लिए काशी गमन और गुरुकुल के लिए भिक्षा माँगने जैसे महान कार्यों का वास्तविक महत्त्व एवं लाभ उन कार्यों को वास्वविक रूप से ही करने में है पर जब वह सब नहीं बन पड़ता तो कल्याणमयी परम्परा का चिह्न पूजा के रूप में स्मरण रखने के लिए यज्ञोपवीत संस्कार के समय काशीगमन, ब्रह्मचर्य धारण, गुरुकुल प्रवेश, भिक्षाटन आदि की लकीर पीट लेते हैं, उसी प्रकार आदर्श मन्त्र निष्णात, विश्वामित्र-वशिष्ठ तत्वों से सुसम्पन्न गुरु न मिलने पर किसी से भी यज्ञोपवीत कराने वाले पण्डित से भी गायत्री मन्त्र लिया जा सकता है किन्तु जिस प्रकार यज्ञोपवीत के समय गुरुकुल प्रवेश का सुअवसर आने पर उसे ग्रहण करने का कोई प्रतिबन्ध नहीं है, उसी प्रकार यज्ञोपवीत के समय उपयुक्त मन्त्र दीक्षा प्राप्त न होने पर फिर कभी वैसा अवसर आवे तो उसका लाभ फिर उठा लेने में कोई प्रतिबन्ध नहीं है ।

एक व्यक्ति के कई गुरु होते हैं और होने चाहिये । शिक्षा क्षेत्र में विभिन्न विषयों एवं विभिन्न कक्षाओं के अनेक अध्यापकों-गुरुओं के द्वारा शिक्षा प्राप्त करनी पड़ती है । आध्यात्मिक एवं धार्मिक क्षेत्र में भी एक व्यक्ति के अनेक गुरु होते हैं । राम लक्ष्मण के कुलगुरु वशिष्ठ जी थे पर उन्होंने विश्वामित्र के गुरुकुल में रहकर भी बहुत कुछ पाया था और उन्हें भी गुरु माना था । अनेक मन्त्रों के निष्णात अनेक आचार्यों से उन मन्त्रों की आवश्यकता पड़ने पर उनको गुरु बनाना पड़ता है ।

गायत्री वैदिक छन्द है । श्रुतियों में अनेक छन्द गायत्री वर्ग के मिलते हैं, पर प्रख्यात गुरु मन्त्र गायत्री एक ही है । इसकी तुलना वेदों में उपलब्ध अन्य गायत्री छन्दों से नहीं की जा सकती । इसकी अपनी अलौकिकता एवं विशेषताएँ हैं ।

मन्त्रों की वेदों में प्रायः पुनरावृत्ति नहीं होती किन्तु गायत्री का चारों वेदों में समावेश है । ऋग्वेद के ३।६२।१० में यजुर्वेद के ३।३५ में ३०।२ में, तथा ३६।३।३ में, इसका समावेश है । सामवेद के १२।३।३ में यह विद्यमान है ।

गायत्री के २४ अक्षर होते हैं । गुरु-मन्त्र गायत्री में २३ अक्षर माने जायँ तो यह निचद् गायत्री बन जाती है । यदि उच्चारण वरेण्यम् का वरेणियम् किया जाय तो २४ अक्षर बन जाते हैं । अक्षरों सम्बन्धी मतभेद के कारण वेदमाता, देवमाता, विश्वमाता गायत्री की महत्ता एवं क्षमता में कोई अन्तर नहीं आता ।

गुरु-मन्त्र गायत्री में सविता देवता से सद्बुद्धि की प्रेरणा का आग्रह किया गया है । शंकराचार्य कृत गायत्री पुरश्चरण पद्धति में उसे त्रिकाल संख्या में प्रयुक्त करने के लिए ब्राह्मी, वैष्णवी और शाम्भवी कहा गया है और ध्यान के लिए उन्हीं का निर्देश है । प्रातःकाल उपासना के लिए सर्वोत्तम है । उस समय ब्रह्मतेज का आह्वान उपयुक्त पड़ता है । इसलिए हंसारूढ़ा भगवती का सर्वप्रचलित ध्यान ही उपयुक्त है । एक मुख और द्विभुजा वाली बात मनुष्यों और देवताओं के लिए समान रूप से सार्थक है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कहीं-कहीं उसके पाँच मुख और दस भुजाओं का वर्णन है । यह अलंकारिक व्याख्या एवं दार्शनिक विवेचना है । पाँच कोश, पाँच देव, पाँच प्राण, पाँच तत्व का गायत्री में समावेश होने से उसे पाँच मुखी के रूप में भी चित्रित किया गया है और दस इन्द्रियों का दस भुजा के रूप में चित्रण है । अन्यथा अनेक मुखों, अनेक भुजाओं, अनेक पैरों वाली बात बड़ी विचित्र लगती है । यह विचित्रता समझ से बाहर एवं उपहासास्पद भी प्रतीत होती है ।

छान्दोग्य और वृहदारण्यक उपनिषदों में गायत्री का महात्म्य और रहस्य विस्तार से बताया गया है । शतपथ ब्राह्मण में प्रमुखता के साथ और अन्य ब्राह्मण ग्रन्थों में उसका सामान्य विवेचन है । निरुक्त में "गायन्नं त्रायते" अर्थ कहते हुए कहा गया है कि वह गायन करने वाले का परित्राण करती है । स्मृतियों में से अधिकांश में उसकी आवश्यकता एवं अनिवार्यता का वर्णन है । गायत्री का देवता-सविता है । प्रातःकाल के उदीयमान स्वर्णिम सूर्य को सविता कहते हैं । इस महामन्त्र के जप-काल में सविता देवता का ध्यान ब्रह्मतेजस् का अभिवर्धक माना गया है । गीता में भगवान ने समस्त वेद मन्त्रों में गायत्री को अपना स्वरूप कहा है-"गायत्री छन्दसामऽहम् ।"

पुराणों में ऐसे अगणित प्रसंग हैं जिनमें गायत्री उपासना के फलस्वरूप आत्मकल्याण और लोक संसिद्धि के उभयपक्षीय प्रयोजनों की पूर्ति का विवरण है । यह मात्र सद्बुद्धि की प्रार्थना ही नहीं है वरन् उसकी अभीष्ट प्रेरणा देनें में भी समर्थ है । भगवान कृष्ण ने अर्जुन का रथ ही संचालित नहीं किया था वरन् बुद्धि जब भटक रही थी तब दबाव भरी प्रेरणा देकर भी उसे उपयुक्त रास्ते पर चलाया था । गायत्री मन्त्र में ऐसी ही प्रेरणा देने और साधक को सन्मार्ग पर चलाने की परिपूर्ण क्षमता है । गुरु-मन्त्र यही है । ऋतंभरा प्रज्ञा की अधिष्ठात्री यही है । इसका अवलम्बन लेने पर ही विवेक बुद्धि की, दिव्य दृष्टि की उपलब्धि होती है और सुख-शान्ति का, स्वर्ग-मुक्ति का मार्ग प्रशस्त होता है ।

इष्ट निर्धारण गायत्री का वरण

लक्ष्य ही इष्ट है । साधना में प्रायः किसी देवता, मन्त्र या गुरु का निर्धारण किया जाता है । इसका तात्पर्य है कहाँ पहुँचना है यह निश्चय करना । यदि यह पता न हो कि कहाँ पहुँचना है तो गन्तव्य स्थान की दूरी, दिशा आदि का पता ही न चलेगा और यह योजना भी न बन सकेगी कि वहाँ तक पहुँचने में कितने समय, श्रम, मनोयोग, साधन, सहकार आदि की आवश्यकता पड़ेगी । ऐसी अनिश्चित स्थिति में चल पड़ना शक्ति का अपव्यय मात्र ही सिद्ध होगा । अस्तु आत्मोत्कर्ष की साधना के लिए उत्साह जगाने और तत्परता का साहस जुटाने से पूर्व यह निश्चय करना चाहिए कि यह सब किया किस लिए जा रहा है । इष्ट का निर्धारण हो जाने पर सुनिश्चित योजना बनती है, नियत दिशा में क्रमबद्ध यात्रा चलती है और अभीष्ट को प्राप्त कर लेने की संभावना बनती है ।

साधना किस की ? इसका उत्तर एक ही है-उत्कृष्टता की । उत्कृष्टता का प्रतीक ही परमेश्वर है । भगवान की ध्यान-धारणा की सुविधा के लिए मनुष्य वृत्ति दी जाती है । उसका नाम रूप निर्धारण होता है क्योंकि इसके बिना किसी वस्तु को मस्तिष्क द्वारा समझना और अपनाना कठिन पड़ता है । मस्तिष्कीय संरचना को देखते हुए यह सम्भव नहीं कि मूल रूप में अदृश्य शक्तियों को जो स्तर है उसके सम्बन्ध में अभीष्ट जानकारी एवं सम्पर्क की प्रक्रिया बन सके । अतएव आवश्यक होता है कि इष्ट का कोई नाम रूप दिया जाय । इष्ट परमात्मा है । प्राप्त उसी को करना है ।

परमात्मा की उसकी समीपता एवं अनुकम्पा की प्राप्ति ही आत्मोत्कर्ष का लक्ष्य है । इसी के निमित्त विभिन्न विधि विधानों वाली उपासनाएँ की जाती हैं । परमात्मा की प्राप्ति से पूर्व उसके सम्बन्ध में आवश्यक जानकारी प्राप्त कर लेना आवश्यक है । वेदान्त दर्शन के प्रथम सूत्र में इसी तथ्य को प्राथमिकता देते हुए अथातो ब्रह्म जिज्ञासा, सूत्र का सृजन किया है । ब्रह्म को पाने से पूर्व उसे जानें ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अनजान को-अविज्ञात करो-कैसे पाया जाय ? फिर यदि भ्रान्त धारणाएँ बनाकर पाने का प्रयत्न किया जाय तब तो सारा प्रयास मात्र थकान और निराशा ही दे सकेगा ।

परब्रह्म इस ब्रह्माण्ड के भीतर और बाहर संव्याप्त वह सत्ता है जो निर्माण, पोषण एवं परिवर्तन की समस्त विधि व्यवस्था एक निर्धारित नियम के अनुसार चलती है । उसका अनुग्रह और आक्रोश एक ही तथ्य पर निर्धारित है कि नियत व्यवस्था का परिपालन कहाँ, किस प्रकार किया गया । आग, बिजली आदि शक्तियों का भी यही नियम है । वे न किसी पर प्रसन्न होती हैं न कुपित । विधिवत उपयोग करने वाले उसका लाभ उठाते हैं, और जो व्यतिक्रम करते हैं, वे हानि उठाते हैं । यह शक्तियाँ न दयालु हैं, न निर्दय, न मनुहार की अपेक्षा करती हैं, न अशिष्टता बरतने वालों से रुष्ट होती हैं । उन्हें न इसकी इच्छा है न आवश्यकता वे स्वयं नियम के साथ घुलकर अपनी सत्ता का परिचय देती हैं । साथ ही यह भी चाहती हैं कि जो भी उनके सम्पर्क में आये मर्यादा अपनाये । परब्रह्म की महाशक्ति भी मनुष्य समेत समस्त प्राणियों से यही अपेक्षा करती है कि व्यवस्था का परिपालन किया जाय और सुखी रहने-समुन्नत बनने का लाभ उठाया जाय ।

इस सुविधा के साथ व्यक्तिक्रम करने वालों के लिए दण्ड व्यवस्था भी है । आग और बिजली की तरह ही परब्रह्म के स्वभाव और स्वरूप को समझने वाले उसकी व्यवस्थाओं के अनुरूप रहते और अनुकूल चलते हैं । इन बुद्धिमानों को सुसंस्कृत, अन्तस् और समुन्नत वैभव का लाभ मिलता है । यही स्वर्ग है । व्यतिरेक करने वाले पिटते हैं । आग और कहाँ किसी को बख्शाती हैं । उच्छृंखलता बरतने वाले दण्ड भुगतते हैं । ब्रह्म व्यवस्था के साथ उद्दण्डता बरतने वाले कष्ट उठाते हैं, यही नरक है । परब्रह्म के अनुग्रह और अनुकूलन का उपाय उपचार इतना भर है कि नैतिक और सामाजिक मर्यादाओं का परिपालन निष्ठापूर्वक किया जाय और सुखी रहा जाय ।

कहा जा चुका है कि साधना का प्रथम चरण इष्ट निर्धारण है । साधना क्षेत्र में प्रयुक्त होने वाला भगवान परमात्मा है । यह परब्रह्म का प्रतिनिधि हर मनुष्य के भीतर विद्यमान है । यही इष्ट है । परमात्मा-चेतनात्मक उत्कृष्टता । शैतान और भगवान की उपस्थिति हर किसी के भीतर है । इनमें से शैतान को उपेक्षित करके भगवान का पल्ला पकड़ना । इसी का नाम देव जीवन में प्रवेश है । दूसरा जन्म द्विज-उपनयन-व्रतबन्ध आदि का ऊहापोह इसी संदर्भ में होता है कि मनुष्य को पशु प्रवृत्तियों से मुख मोड़ना चाहिए और सत्प्रवृत्तियों को अपनाने के लिए अग्रसर होना चाहिए ; मनुष्य जीवन की सार्थकता और लक्ष्य की पूर्ति भी इसी में है ।

ईश्वर की सबसे निकटवर्ती उपस्थिति, अन्तराल में है । उसे अतिमानव, अतिमानस, आत्मतत्व, आत्मज्योति आदि नामों से पुकारते हैं । उसी को सजग, सक्रिय एवं समर्थ बनाने के लिए साधना का उपक्रम अपनाना पड़ता है । ईश्वर भक्ति यही है । उसमें आत्मदेव को ही विभिन्न नाम रूपों में पूजा जाता है । परब्रह्म की उपासना तो सम्भव ही नहीं हो सकती । उससे तो मर्यादा परिपालन द्वारा ही प्रसन्न करके अनुकूलन रखा जा सकता है । अन्तः ज्योति को, परमात्मा मूर्छना से विरत करके प्रखर बनाने की प्रक्रिया ही साधना है । इसी में जो जितना सफल होता है उसे उसी अनुपात से सिद्धियाँ मिलती हैं ।

'परब्रह्म' बाहर है और 'परमात्मा' भीतर । यह जानने के उपरान्त ही स्पष्ट हो जाता है कि साधना जिस परमेश्वर की करनी होती है, वह अन्तराल में सन्निहित श्रेय तत्व ही है । वेदान्त में इसी तथ्य का निरूपण 'शिवोऽहम्'-सच्चिदानन्दोहम् अयमात्मा ब्रह्म-तत्वमसि आदि सूत्रों में किया है । संक्षेप में आत्मोत्कर्ष ही ईश्वर प्राप्ति है । आत्म साक्षात्कार और ईश्वर दर्शन एक ही बात है । विराट् का दर्शन उसके बीज रूप में ही हो सकता है । संव्याप्त महानता की झाँकी अन्तराल में सन्निहित 'उत्कृष्टता' के रूप में ही की जा सकती है । देव दर्शन के समस्त बहिरंग क्रिया-कलाप इसी तथ्य की ओर संकेत करते हैं कि अन्तराल में सन्निहित दिव्य आत्मदेव का प्रयत्नपूर्वक दर्शन किया जाय । उसे उपलब्ध करने में प्रयत्नरत हुआ जाय ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

चेतना की तृप्ति और शान्ति जिस ध्रुव केन्द्र के साथ जुड़ी है, उसे उत्कृष्टता कह सकते हैं । इस दिशा में जो जितना बढ़ सका उसे उसी अनुपात से साधना सिद्ध पाया गया । साधना जिस भगवान की करनी पड़ती है उसे व्यवहार में दिव्य जीवन भी कह सकते हैं । इसी की प्रतिमाएँ देवताओं के रूप में गढ़ी जाती हैं । उत्कृष्टताओं का समुच्चय ही मनुष्य की उपासना में प्रयुक्त होने वाला भगवान है । व्यक्ति के नाम रूप में उसी को गढ़ा गया है ।

परमात्मा का नाम रूप अनादि काल से "गायत्री" के रूप में निर्धारित है आत्मा और परमात्मा की मिलन सन्धि को गायत्री के रूप में जाना और माना गया है । बिजली के दो तार मिलते हैं तो चिनगारियाँ छूटती हैं या करेन्ट चल पड़ता है । आत्मा और परमात्मा का मिलन जिस भाव संवेदना का प्रवाह उत्पन्न करता है, उसे गायत्री कहा गया है । गायत्री ही जन-जन का इष्ट है । इसे सार्वभौम और सार्वजनीन कह सकते हैं । अध्यात्म विज्ञान को जब तक सम्प्रदायवाद द्वारा खण्ड-विखण्डों में विघटित नहीं किया था, तब तक एक ही मार्ग था, एक ही विधान, एक ही निर्धारण, एक ही लक्ष्य देव परम्परा, ऋषि परम्परा और मानव परम्परा में गायत्री ही उपास्य रही है । तथ्यों पर चढ़ी हुई तमिस्रा का अन्त होते ही फिर आलोक की आभा और ऊर्जा से समस्त मानव जाति को लाभान्वित होने का अवसर मिलेगा ।

चेतनात्मक उत्कृष्टता ही चरम सीमा को उपलब्ध करना यदि लक्ष्य हो तो इसके लिए गायत्री को इष्ट मानने में किसी को कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए । किसी पूर्वाग्रह हो इस मार्ग में आड़े नहीं आना चाहिए । प्राचीन काल में भी विश्व-चेतना एक थी-भविष्य काल में भी वह एक ही रहेगी । अतएव एक उपासना से विश्व-मानव का काम न चलने जैसा कोई कारण नहीं ।

गायत्री ऋतम्भरा प्रज्ञा है । ऋतम्भरा अर्थात् आत्यन्तिक कल्याण करने वाली, तथ्यों का अनावरण करने वाली, विशिष्टताओं और विभूतियों का दर्शन कराने वाली विवेक बुद्धि । इसी को दिव्य-दृष्टि कहते हैं । बोलचाल की भाषा में इसे दूरदर्शिता भी कहा जा सकता है । प्रज्ञा अर्थात् वह बुद्धि जिसमें न केवल विवेक का वरन् उदारता, करुणा एवं आत्मीयता की भाव संवेदनाओं का भी समुचित समन्वय हो, इसी भाव भूमिका को 'श्रद्धा' कहते हैं । संक्षेप में श्रद्धा और विवेक की समस्वरता को 'गायत्री' कह सकते हैं । जीवात्मा जब इस स्थिति तक पहुँचता है तब उसे परमात्मा की प्राप्ति का परमानन्द उपलब्ध होता है । यही विकास की चरम सीमा की पूर्णता है । इसी स्थिति में पहुँचने पर 'मुक्ति' का वह रसास्वादन उपलब्ध होता है, जिसे अमृत कहते हैं । अमृत पायी देवता कहलाते हैं । मानवी चेतना की अगली पदोन्नति देवता के रूप में ही होती है । गायत्री को देवमाता इसलिए कहा गया है कि उसे देवता की अभिव्यंजना से ओत-प्रोत पाया जाता है ।

आत्मा के अन्तराल में सन्निहित दिव्य ज्योति के जागरण में गायत्री उपासना का विधि-विधान असाधारण रूप से सहायक होता है । इस आधार पर हुए आत्मोत्कर्ष में एक दिव्य चुम्बकत्व होता है जो विराट् में संव्याप्त अनन्त दिव्य शक्तियों में से ऋतम्भरा प्रज्ञा को प्रचुर परिमाण में खींचने और आत्म-ज्ञान करने में समर्थ एवं सफल रहता है । परब्रह्म की क्षमताएँ एवं विशिष्टताएँ अनन्त हैं । उनमें मानवोपयोगी-आत्मोत्कर्ष में परम सहायक क्षमता का नाम है-गायत्री । वह संव्याप्त महतत्व हर किसी के लिए समान रूप से उपलब्ध है पर उसे धारण करने में पात्रता ही सफल होती है । वर्षा का जल टीले पर नहीं गड्ढे में ही जमा होता है । हरियाली चट्टान पर नहीं उर्वर भूमि पर ही उगती है । गायत्री उपासना से साधक के अन्तराल में वह पात्रता विकसित होती है जिसके चुम्बकत्व से परब्रह्म की ऋतम्भरा विभूति को प्रचुर परिमाण में आकर्षित एवं धारण कर सकना सहज सम्भव हो सके । भीतर से उभार और बाहर से उपहार का यह दुहरा लाभ उठाते हुए गायत्री उपासक का चरम लक्ष्य तक पहुँचाने वाला मार्ग सरल बनता है ।

आत्मोत्कर्ष के लिए अन्यान्य अवलम्बन भी हैं किन्तु जहाँ तक भारतीय परम्परा का और इस देश में उत्पन्न हुए अध्यात्म निष्णातों के दीर्घकालीन

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अनुभवों का सम्बन्ध है-आत्मिक प्रगति क्रम में गायत्री विद्या ही प्रमुख रही है । उसे वेदमाता का, सद्ज्ञान की अधिष्ठात्री का, गुरुमन्त्र का पद प्राप्त है । विश्व—मानव के लिए सभी आवश्यक विभूतियों को जुटा सकने की सामर्थ्य से परिपूर्ण होने के कारण, उसे विश्व— माता कहते हैं । अन्तःकरण के लिए अमृत, मस्तिष्क के लिए कल्प वृक्ष और काय कलेवर में पारस जैसी भूमिका वह निभाती है । जिसका पयपान करने वाले देवोपम व्यक्तित्व विकसित कर सकें, ऐसी कामधेनु गायत्री ही है । यह उसकी सृजनात्मक क्षमता हुई । अवांछनीयताओं को विदीर्ण करने में उसका प्रहार अमोघ है । इसलिए उसे ब्रह्मास्त्र या ब्रह्मदण्ड कहते हैं । ओजस्वी, तेजस्वी और मनस्वी के रूप में जिसका आलोक उन सभी को मिल सकता है जो सच्चे मन से उसके सान्निध्य में आते हैं ।

***

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

देवताओं, अवतारों और ऋषियों की उपास्य गायत्री

सर्वफलप्रदा उपास्य सर्वश्रेष्ठ गायत्री

भारतीय धर्म के उपासना विज्ञान में गायत्री को सर्वोपरि माना गया है और सर्वश्रेष्ठ कहा गया है । इसके कई कारण हैं, एक तो यह कि इस महामंत्र के अक्षरों में बीज रूप मानवी संस्कृति एंवं आदर्शवादिता के सारे सिद्धान्त सन्निहित हैं । इसे विश्व का सबसे छोटा मात्र २४ अक्षरों का वह ग्रन्थ कह सकते हैं, जिसमें धर्म और अध्यात्म का समूचा तत्वज्ञान साररूप से समाविष्ट मिल सकता है । इन अक्षरों की व्याख्या करते हुए जो कुछ मानवी प्रगति एवं सुव्यवस्था के लिए आवश्यक है, यही प्रज्ञा का, विवेकशीलता का मन्त्र है । कहना न होगा कि मनुष्य जीवन की समस्त समस्याएँ दुर्बुद्धि के कारण उत्पन्न होती हैं । संसार पर आये दिन छाये रहने वाले संकट के बादल अशुभ चिंतन के खारे समुद्र में ही उठते हैं । विवेक सर्वोपरि है । सद्बुद्धि से बढ़कर इस संसार में और कुछ नहीं है । यह तथ्य प्रज्ञा की देवी गायत्री को सर्वोपरि ठहराने में सन्निहित है ।

गायत्री सद्बुद्धि ही है । इस महा-मन्त्र में सद्बुद्धि के लिए ईश्वर से प्रार्थना की गई । इसके २४ अक्षरों में २४ अमूल्य शिक्षा संदेश भरे हुए हैं, वे सद्बुद्धि के मूर्त्तिमान प्रतीक हैं । उन शिक्षाओं में वे सभी आधार मौजूद हैं जिन्हें हृदयंगम करने वाले का सम्पूर्ण दृष्टिकोण शुद्ध हो जाता है और उस भ्रम-जन्य अविद्या का नाश हो जाता है, जो आये दिन कोई न कोई कष्ट उत्पन्न करती है । गायत्री महामन्त्र की रचना ऐसे वैज्ञानिक आधार पर हुई है कि उसकी साधना से अपने भीतर छिपे हुए अनेकों गुप्त शक्ति केन्द्र खुल जाते हैं और अन्तःस्थल में सात्विकता की निर्झरिणी बहने लगती है । विश्वव्यापी अपनी प्रबल चुम्बक शक्ति से खींचकर अन्तःप्रदेश में जमा कर देने की अद्भुत शक्ति गायत्री में मौजूद है । इन सब कारणों से कुबुद्धि का शमन करने में गायत्री अचूक रामबाण मन्त्र की तरह प्रभावशाली सिद्ध होती है । इस शमन के साथ-साथ अनेको दुःखों का समाप्त हो जाना भी पूर्णतया निश्चित है । गायत्री देवी प्रकाश की वह अखण्ड ज्योति है जिसके कारण कुबुद्धि का अज्ञानान्धकार दूर होता है और अपनी वही स्वाभाविक स्थिति प्राप्त हो जाती है, जिसको लेकर आत्मा इस पुण्यमयी धरती माता की परम शान्ति दायक गोदी में किलोल करने आया है ।

मनुष्य ईश्वर का उत्तराधिकारी एवं राजकुमार है । आत्मा परमात्मा का ही अंश है । अपने पिता के सम्पूर्ण गुण एवं वैभव बीज रूप से उसमें मौजूद है । जलते हुए अंगार में जो शक्ति है वही छोटी चिनगारी में भी मौजूद है । इतना होते हुए भी हम देखते हैं कि मनुष्य बड़ी निम्न कोटि का जीवन बिता रहा है । दिव्य होते हुए भी दैवी सम्पदाओं से वंचित हो रहा है ।

परमात्मा सत् है, परन्तु उसके पुत्र हम असत् में निमग्न हो रहे हैं । परमात्मा चित् है हम अन्धकार में डूबे हुए हैं । परमात्मा आनन्द स्वरूप है हम दुःखों से संत्रस्त हो रहे हैं । ऐसी उल्टी परिस्थिति उत्पन्न हो जाने का कारण क्या है । यह विचारणीय प्रश्न है ।

जब कि ईश्वर का अविनाशी राजकुमार अपने पिता के इस सुरम्य उपवन संसार में विनोद क्रीड़ा करने के लिए आया हुआ है तो उसकी जीवन यात्रा आनन्दमयी न रहकर दुःख दारिद्र से भरी हुई क्यों बन गयी है ? यह एक विचारणीय प्रहेली है ।

अग्नि स्वभावतः उष्ण और प्रकाशवान् होती है, परन्तु जब जलता हुआ अंगार बुझने लगता है तो उसका ऊपरी भाग राख से ढक जाता है । तब उस राख से ढके हुए अंगार में वे दोनों ही गुण

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दृष्टिगोचर नहीं होते जो अग्नि में स्वभावतः होते हैं । बुझा हुआ राख से ढका हुआ अंगार न तो गर्म होता है और न प्रकाशवान् वह काली-कलूटी कुरूप भस्म का ढेर मात्र बना हुआ पड़ा रहता है । जलते हुए अंगार को इस दुर्दशा में ले पहुँचाने का कारण वह भस्म है जिसने उसे चारों ओर से घेर लिया है । यदि यह राख की परत ऊपर से हटा दी जाय तो भीतरी भाग में फिर वैसी ही अग्नि मिल सकती है जो अपनी उष्णता और प्रकाश के गुण से सुसम्पन्न हो ।

परमात्मा सच्चिदानन्द है । वह आनन्द से ओत-प्रोत है । उसका पुत्र आत्मा भी आनन्दमय ही होना चाहिए । जीवन की विनोद क्रीड़ा करते हुए इस नन्दन बन में उसे आनन्द ही आनन्द अनुभव होना चाहिए । इस वास्तविकता को छिपाकर जो उसके बिल्कुल उल्टी दुःख-दरिद्र और क्लेश-कलह की स्थिति उत्पन्न कर देती है वह कुबुद्धि रूप राख है । जैसे अंगार को राख ढककर उसको अपनी स्वाभाविक स्थिति से वंचित कर देती है । वैसे ही आत्मा की परम सात्विक, परम आनन्दमयी स्थिति को यह कुबुद्धि ढक लेती है और मनुष्य निकृष्ट कोटि का दीन-हीन जीवन व्यतीत करने लगता है ।

'कुबुद्धि ' को ही माया, असुरता, अन्धतामिश्र, अविद्या आदि नामों से पुकारते हैं । यह आवरण मनुष्य की मनोभूमि पर जितना मोटा चढ़ा होता है वे उतना ही दुःखी पाया जाता है । शरीर पर मैल की जितनी मोटी तह जम रही होगी उतनी खुजली मचेगी और दुर्गन्ध उड़ेगी । यह तह जितनी ही कम होगी उतनी ही खुजली और दुर्गन्ध कम होगी । शरीर में दूषित विजातीय विष एकत्रित न हो तो किसी प्रकार का कोई रोग न होगा । पर यह विकृतियाँ जितनी अधिक जमा होती जायेंगी शरीर उतना ही रोगग्रस्त होता ही जायेगा । 'कुबुद्धि' एक प्रकार से शरीर पर जमी हुई मैल की तह या रक्त से भरी हुई विषैली विकृति है जिसके कारण खुजली, दुर्गन्ध, बीमारी तथा अनेक प्रकार की अन्य असुविधाओं के समान जीवन में नाना प्रकार की पीड़ा, चिन्ता बैचेनी और परेशानी उत्पन्न होती रहती हैं ।

लोग नाना प्रकार के कष्टों से दुःखी हैं । कोई बीमारी से कराह रहा है, कोई गरीबी से दुःखी है, किसी का दाम्पत्ति जीवन कष्टमय है, किसी को सन्तान की चिन्ता है व्यापार में घाटा, उन्नति में अड़चन, असफलता की आशंका, मुकद्दमा, शत्रु के आक्रमण का भय, अन्याय का उत्पीड़न, मित्रों का विश्वासघात,दहेज की चिन्ता, प्रियजनों का विछोह आदि दुःख आये दिनों दुःखी बनाये रहते हैं । व्यक्तिगत जीवन की भाँति धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक एवं अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्रों में अशान्ति कम नहीं है । यदि कोई व्यक्ति अपने आपको बहुत सम्भाल कर रखे, तो भी व्यापक बुराईयों एवं कुव्यवस्थाओं के कारण उसकी शान्ति नष्ट हो जाती है और जीवन का आनन्दमय उद्देश्य प्राप्त करने में बाधा पड़ती है ।

दुःख चाहे व्यक्तिगत हों या सामूहिक उनका कारण एक ही है और वह है कुबुद्धि । संसार में इतने प्रचुर परिमाण में सुख-साधन भरे पड़े हैं कि इन खिलौनों से खेलते-खेलते सारा जीवन हँसी-खुशी में बीत सकता है । मनुष्य को ऐसा अमूल्य शरीर, मस्तिष्क एवं इन्द्रिय समूह मिला हुआ है । कि इनके द्वारा साधारण वस्तुओं एवं परिस्थितियों में भी इतना आनन्द लिया जा सकता है कि स्वर्ग भी उसकी तुलना में तुच्छ सिद्ध हो । इतना सब होते हुए भी लोग बेतरह दुःखी हैं, जिन्दगी में कोई रस नहीं, मौत के दिन पूरे करने के लिए समय को एक बोझ की तरह काटा जा रहा है । मन में चिन्ता, बेबसी, भय, दीनता और बेचैनी की अग्नि दिन भर जलती रहती है । जिसके कारण पुराणों में वर्णित नारकीय यातनाओं जैसी व्यथाऐं सहनी पड़ती हैं ।

यह संसार चित्र सा सुन्दर है, इसमें कुरूपता का एक कण भी नहीं । यह विश्व मनोदमयी क्रीड़ा का प्रांगण है इसमें चिन्ता और भय के लिए कोई स्थान नहीं । यह जीवन आनन्द का निर्बाध निर्झर है इसमें दुःखी रहने का कोई कारण नहीं । स्वर्गादपि गरीयसी- इस जननी जन्म भूमि में वे सभी तत्व मौजूद हैं जो मानस की कली को खिलाते हैं । इस सुर दुर्लभ नर तन की रचना ऐसे सुन्दर ढंग से हुई

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है कि साधारण वस्तुओं को वह अपने स्पर्श मात्र से ही सरस बना लेता है । परमात्मा का राजकुमार आत्मा इस संसार में क्रीड़ा-किलोल करने आता है । उसे शरीर रूपी रथ, इन्द्रियों रूपी सेवक, मस्तिष्क रूपी मन्त्री देकर परमात्मा ने यहाँ इसलिए भेजा है कि इस नन्दन वन जैसे संसार की शोभा को देखे, उसमें सर्वत्र बिखरी हुई सरलता का स्पर्श और आस्वादन करे । प्रभु के इस महान उद्देश्य में बाधा उपस्थित करने वाली, स्वर्ग को नरक बना देने वाली कोई वस्तु है तो वह केवल कुबुद्धि ही है ।

स्वस्थता हमारी स्वाभाविक स्थिति है, बीमारी अस्वाभाविक एवं अपनी भूल से पैदा हुई है । पशु-पक्षी जो प्रकृति का स्वाभाविक अनुसरण करते हैं, बीमार नहीं पड़ते, वे सदा स्वास्थ्य का सुख भोगते हैं पर मनुष्य नाना प्रकार के मिथ्या आहार-विहार द्वारा बीमारी को न्योंत बुलाता है । यदि वह भी अपना आहार-विहार प्रकृति के अनुकूल रखे तो कभी बीमार न पड़े । इसी प्रकार सद्बुद्धि स्वाभाविक है । यह ईश्वर प्रदत्त है, दैवी है, जन्म जात है, जीवन संगिनी है । संसार में भेजते समय प्रभु हमें सद्बुद्धि रूपी कामधेनु भी देते हैं ताकि वह हमारे सम्पूर्ण सुख-साधन जुटाती रहे, परन्तु हम भूलवश भ्रमवश, अज्ञानवश, मायाग्रस्त होकर सद्बुद्धि को त्यागकर कुबुद्धि को अपना लेते हैं और जैसे मिथ्याचरण से बीमारी न्योंत बुलाई जाती है । वैसे ही मानसिक व्यवस्था के कारण कुबुद्धि को आमंत्रित किया जाता है यह पिशाचिनी जहाँ आई नहीं कि जीवन का सारा क्रम उलटा नहीं, दोनों एक साथ रह नहीं सकती । जहाँ कुबुद्धि होगी, वहाँ तो अशान्ति, चिन्ता, तृष्णा, नीचता, कायरता आदि की कष्टकारक स्थितियों का ही निवास होगा ।

रंगीन काँच का चश्मा पहन लेने पर आँखों से सभी वस्तुएँ रंगीन दिखाई देती हैं । यद्यपि उन वस्तुओं का वैसा रंग नहीं होता फिर भी चश्मे के काँच का रंग जैसा होता है, वैसा ही आस-पास का जगत् दिखाई देने लगता है । कुबुद्धि का चश्मा लगाने से बुद्धि भ्रम उत्पन्न हो जाने से सीधी साधारण सी परिस्थितियाँ और घटनायें भी दुःखदायी दिखाई देने लगती हैं । गायत्री महामंत्र का प्रधान कार्य कुबुद्धि का निवारण और ऋतंभरा प्रज्ञा का जागरण है ।

इसके अतिरिक्त गायत्री मन्त्र में एक और विशेषता यह है कि उसमें शब्द विज्ञान-स्वर शास्त्र का जैसा संगम हुआ है वैसा अन्य किसी मन्त्र में नहीं हुआ है । साधना रस योगियों और तेजस्वियों ने अपने प्रयोग, परीक्षणों और अनुभवों के आधार पर जो तुलनात्मक उत्कृष्टता देखी है, उसी से प्रभावित होकर उन्होंने गायत्री महाशक्ति को सर्वोपरि स्थान दिया । इस संदर्भ में मिलने वाले शास्त्र वचनों में से कुछ इस प्रकार हैं -

गायत्र्या न परं मन्त्रं न बीजं प्रणवादिकम् ।
गायत्र्या न परं जप्यं गायत्र्या न परं तपः ।।
गायत्र्या न परं ध्यानं गायत्र्या न परं हुतम् ।
हविष्यं घृत-संयुक्तं गायत्री मन्त्र पूर्वकम् ।।

-विश्वामित्र कल्प

अर्थात्- गायत्री से बढ़कर अन्य कोई मन्त्र, जप, ध्यान, तप, कहीं नहीं है । गायत्री यज्ञ से बढ़कर और कोई यज्ञ नहीं है ।

गायत्री परदेवतेति गहिता ब्रह्मैव चिद्रूपिणी।।

-देव्युपनिषद्

अर्थात्- "गायत्री परादेवता कही गई है और वह चित्स्वरूपा गायत्री साक्षात् ब्रह्म ही है ।"

'महाभारत' में भीष्म पितामह का वचन है कि-

"परां सिद्धिमवाप्नोति गायत्री मुत्तमां पठेत्" ।।

जो मनुष्य सर्वश्रेष्ठ गायत्री का जप करता है वह परम सिद्धि को पाता है ।

अष्टादशसु विद्यासु मीमांसाति गरीयसी ।
ततोऽपि तर्क शास्त्राणि पुराण तेभ्यो एव च ।
ततोऽपि धर्म शास्त्राणि तेभ्यो गुर्वी श्रुतिर्द्विज ।
ततोऽप्युपनिषच्छ्रेष्ठा गायत्री च ततोऽधिका ।
दुर्लभा सर्व मन्त्रेषु गायत्री प्रणवान्विता ।

-वृहत् सन्ध्या भाष्य

अठारह प्रकार की विद्याओं में मीमांसा (कर्मकाण्ड) श्रेष्ठ है । मीमांसा से तर्क विवेक उत्तम है । न्याय से पुराणों की महिमा अधिक है । पुराणों में धर्मशास्त्र और धर्मशास्त्रों में वेद की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

महिमा अधिक है । वेदों की व्याख्या करने वाली उपनिषदों की उपयोगिता और भी अधिक है । उपनिषदों से भी गायत्री श्रेष्ठ है समस्त मन्त्रों में प्रणव युक्त गायत्री की महिमा सर्वोपरि है ।

गायत्रीं यः परित्यज्य चान्यमन्त्रमुपासते ।
न साफल्यमवाप्नोति कल्प कोटि शतैरपि ।।

-वृहत संध्या भाष्य

जो गायत्री को त्यागकर अन्य मन्त्र की उपासना करता है वह सौ कोटि कल्पों में भी अभीष्ट सफलता प्राप्त नहीं कर सकता ।

जपतां जुह्यतां चैव नित्यं च प्रयतात्मनाम् ।
ऋषीणां परमं जप्यं गूह्य मेतन्नराधिप ।।

-महाभारत

नित्य जप करने के लिए, हवन करने के लिए ऋषियों का परम मन्त्र गायत्री ही है ।

गायत्री सर्व मन्त्राणां शिरोमणि तया स्थिता ।
विधानामपि तेनैतां साधयेत्सर्व सिद्धये ।
त्रिव्याहृति युतां देवीमोंकार युग सम्पुटाम् ।
उपास्य चतुरोवर्गान् साधयेद्यो न सोन्धकोः ।
देव्या द्विजत्व मासाद्य श्रेय सेव्य रतास्तुये ।
ते स्तमभिवांच्छन्ति हित्वा चिन्तामणि करात् ।

-ब्रह्म वार्तिक

गायत्री सब मन्त्रों में तथा विद्याओं में शिरोमणि है । उससे सब इन्द्रियों की साधना होती है । जो व्यक्ति इस उपासना से धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन चारों पदार्थों को प्राप्त नहीं करते वे अन्धबुद्धि वाले हैं । जो गायत्री जैसे मन्त्र के होते हुए भी अन्य मन्त्रों की उपासनाएँ करते हैं वे ऐसे ही मूर्ख हैं जैसे हाथ आई चिन्तामणि को फेंककर छोटे-छोटे रत्न कणों को ढूँढने वाले मूर्ख ।

गायत्री वेद जननी गायत्री लोक पावनी ।
न गायत्र्याः परं जप्यमेताद्विज्ञाय मुच्यते ।।

-कूर्म पुराण

"वेद जननी गायत्री इस संसार में सर्वाधिक पवित्र करने वाली है । विद्वानों का कथन है कि गायत्री से बढ़कर अन्य कोई जप नहीं है ।"

सावित्र्यास्तु परं नास्ति शोधनम् सर्व कर्मणाम् ।

-अग्नि वृद्धा वसम्बी

सब कर्मों को शुद्ध करने के लिए गायत्री से बढ़कर और कुछ नहीं है ।

अष्टादशसु विद्यासु मीमांसातिगरीयसी ।
ततोऽपि तर्कशास्त्राणि पुराणं तेभ्य एवच ।।
ततोऽपि धर्मशास्त्राणि तेभ्यो गुर्वी श्रुतिर्द्विज ।
ततोऽप्युप निषच्छ्रेष्ठा गायत्री च ततोऽधिका ।।

-स्कन्दपुराण काशीखण्ड ९ ।४९ ।५०

अष्टादश विद्याओं में मीमांसा शास्त्र, मीमांसा से तर्कशास्त्र, तर्कशास्त्र से पुराण शास्त्र, पुराण से धर्म शास्त्र, धर्मशास्त्र से वेद, वेद से उपनिषद् और उपनिषद् से गायत्री का महत्व अधिक है ।

कुर्यादन्यन्वा कुर्यादनुष्ठानादिकम् तथा ।
गायत्री मात्र निष्ठस्तु कृत्य कृत्यो भवेद्विजः ।।

-गायत्री तन्त्र

अन्य उपासना अनुष्ठान आदि करें न करें गायत्री मन्त्र की उपासना करने वाला द्विज कृतकृत्य हो जाता है ।

सप्त कोटि महा मन्त्रा गायत्री प्रायकाः स्मृताः ।
आदिदेवमुपासन्ते गायत्री वेदमातरम् ।।

-गायत्री कल्प

"करोड़ों मन्त्रों में सर्व प्रमुख गायत्री है जिसकी उपासना ब्रह्मा आदि देव भी करते हैं । वह गायत्री ही वेदों का मूल है ।

इत्युक्त्वा च महादेवी मूलप्रकृतिरीश्वरी ।।
अन्तर्धानं गता सद्यो भक्त्या देवैरभिष्टुता ।।
ततः सर्वे स्वगर्वं तु विहाय पदपकंजम् ।।
सम्यगाराधयामासुर्भगवत्याः परात्परम् ।।
त्रिसंध्यं सर्वदा सर्वे गायत्रीजपतत्पराः ।।
यज्ञभागादिभिः सर्वे देवीं नित्यं सिषेविरे ।।
न विष्णूपासना नित्या वेदेनोक्ता तु कुत्रचित् ।।
न विष्णुदीक्षा नित्यास्ति शिवस्यापि तथैव च ।।
गायत्र्युपासना नित्या सर्ववेदैः समीरिता ।।
यया विना त्वधः पातो ब्राह्मणस्याऽस्ति सर्वथा ।।
तावता कृतकृत्यत्वं नान्यापेक्षा द्विजस्य हि ।।
गायत्री मात्र निष्णातो द्विजो मोक्षमवाप्नुयात् ।।
कुर्यादन्यं न वा कुर्यादिति प्राह मनुः स्वयम् ।।

-देवी भागवत १२ ।८ ।८४ से ९१

व्यास जी बोले अपना निर्देश देकर-भगवती अन्तर्धान हो गई । पीछे सब देवता अभिमान और

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अज्ञान छोड़कर उसी परम शक्ति की उपासना में लग गये ।

सब त्रिकाल संध्याराधनापूर्वक गायत्री मन्त्र के जप में तत्पर रहने लगे । यज्ञ भाग देने लगे । विष्णु अथवा शिव की आराधना नित्य नहीं है । गायत्री उपासना को वेदों ने नित्य कहा है । इस गायत्री से रहित विप्र का अधः पतन हो जाता है । किसी भी अन्य उपासना का उतना सत्परिणाम नहीं, जितना गायत्री का । केवल गायत्री उपासना से ही मुक्ति प्राप्त हो सकती है । भले ही और कोई साधना न करें । मनु भगवान ने भी ऐसा ही कहा है ।

अष्टादशसुविद्यासु मीमांसातिगरीयसी ।
ततोपितर्कशास्त्राणि पुराणे तेभ्य एव च ।
ततोऽपिधर्मशास्त्राणितेभ्यो गुर्वीश्रुतिर्द्विज ।।
ततोप्युपनिषच्छेष्ठागायत्री च ततोधिका ।
दुर्लभासर्वमन्त्रेषु गायत्री प्रणवान्विता ।
न गायत्र्याधिकंकिञ्चित्त्रयीषु परिगीयते ।।
न गायत्रीसमो मन्त्रोनकाशीसदृशी पुरी ।

-स्कन्द पुराण

अठारह विद्याओं में मीमांसा विद्या अत्यन्त बड़ी है । इससे भी अधिक गुरु तर्क शास्त्र हैं । उनसे भी अधिक पुराण हैं और उनसे भी अधिक धर्म शास्त्र होते हैं और इनसे अधिक गुरु श्रुति हैं । हे द्विज ! श्रुतियों से भी अधिक गुरु उपनिषद् हैं और इनसे भी परम श्रेष्ठ गायत्री होती है । इससे अधिक कोई भी नहीं है । प्रणव से समन्वित गायत्री सभी मन्त्रों में दुर्लभा है । त्रयी में अर्थात् वेद त्रयी में गायत्री से अधिक कुछ भी नहीं परिगीत किया जाता है गायत्री के समान कोई अन्य मन्त्र नहीं है और काशी के समान अन्य कोई भी पुरी नहीं है ।

गायत्री वेद जननी गायत्री ब्राह्मणप्रसूः ।
गातारं त्रायतेयस्माद्गायत्री ते न गीयते ।।
वाच्यवाचक सम्बन्धोगायत्र्याः सवितुर्द्वयो : ।
वच्योसौ सविता साक्षात्गायत्री वाचिका परा ।।
प्रभावेणैवगायत्र्याः क्षत्रियः कौशिकोवशी ।
राजर्षित्वपरित्यज्य ब्रह्मर्षिपदमीयिवान् ।।
सामर्थ्यं प्राप चात्युच्चेरन्यद्भुवनसर्जने ।
किं किं ना दद्याद्गायत्री सम्यगेवमुपासिता ।।

यह गायत्री वेदों की जननी है । गायत्री ब्राह्मणों को प्रसूत करने वाली है । क्योंकि इसका जो गायन (जाप) करता है उसकी यह सुरक्षा (त्राण) किया करती है इसीलिए इसको गायत्री कहा जाता है । गायत्री और सविता इन दोनों का वाक्य-वाचक सम्बन्ध होता है । वाच्य तो भगवान् सविता देव हैं और गायत्री साक्षात् परा उनकी वाचिका होती है । इस गायत्री के प्रभाव से ही क्षत्रिय वंशी कौशिक (विश्वामित्र) राजर्षित्व का त्याग करके ब्रह्मर्षि के पद को प्राप्त हो गये । दूसरा बहुत ऊँचा भुवन निर्माण करने की भी उन्होंने सामर्थ्य प्राप्त कर ली थी । भली-भाँति से उपासना भी की हुई गायत्री देवी मनुष्य को क्या-क्या नहीं दे दिया करती है ?

अन्याय मन्त्रों की तुलना में गायत्री की श्रेष्ठता बताई है और यह भी कहा गया है कि इस एक ही बीज उपासना को अपनाने से वेदाध्ययन का लाभ मिल जाता है । अन्य मन्त्रों की तुलना में गायत्री की विशेषता से इन्कार नहीं किया जा सकता । इस प्रसंग में कुछ प्रमाण इस प्रकार मिलते हैं-

सर्वेषां जप सूक्तानामृचाञ्च यजुषां तथा ।
साम्नां चैकाक्षरा दीनां गायत्री परमो जपः ।।

-वृद्ध पाराशर स्मृति ४ । ४

वेदों के अनेक मन्त्र, जप, सूक्त, ओंकार आदि अनेक उपासनाएँ हैं । उन सब में गायत्री मन्त्र परम श्रेष्ठ है ।

अष्टादशसु विद्यासु मीमांसातिगरीयसी ।
ततोऽपि तर्क शास्त्राणि पुराणं तेभ्य एव च ।।
ततोऽपि धर्म शास्त्राणि तेभ्यो गुर्वी श्रुतिर्द्विज ।
ततोऽप्युनिषच्छेष्ठा गायत्री च ततोऽधिका ।।

-स्कन्द पुराण, काशी खण्ड १ । ४९-५०

अर्थात् - "अठारह विद्याओं में मीमांसा बहुत महत्वपूर्ण माना गया है । उससे अधिक तर्कशास्त्र, तर्कशास्त्र से अधिक पुराण, पुराण से धर्मशास्त्र, धर्मशास्त्र से वेद, वेद से उपनिषद् और उपनिषद से गायत्री का महत्त्व अधिक है ।"

सर्वेषां जप सूक्तानामृचाञ्च यजुषान्तथा ।
साम्नां चैकाक्षरादीनां गायत्री परमो जपः ।।
तस्याश्चैव तु ओंकारो ब्रह्मणा या उपासितः ।
आभ्यान्तु परमं जप्यं त्रैलोक्येऽपि न विद्यते ।।

-वृहत् पाराशर संहिता

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

"सम्पूर्ण सूक्तों में, ऋग्वेद, यजुर्वेद तथा सामवेद में तथा प्राणवादि जितने हैं उन सब में गायत्री को सर्वश्रेष्ठ कहा है । जिस ओंकार की उपासना ब्रह्माजी ने की थी वह भी उसी का अंग है । इन दोनों से बढ़कर जपने योग्य तीनों लोकों में और कुछ नहीं है ।"

पुराणं संहिताशास्त्रं स्मृतिशास्त्रं तथैव च ।
गायत्र्याः परमेशानि सदर्थं ब्रह्मसम्मितम् ।।

हे पदमेशास्त्रि ! पुराण- संहिता शास्त्र तथा स्मृति शास्त्र और गायत्री का सत् अर्थ यह सब ब्रह्म समित हैं ।।१०५।।

सांगंश्च चतुरोवेदानधीत्यापि सवाङ् गयात् ।
सावित्रीं यो न जानाति वृथा तस्य परिश्रम : ।।

-योगी याज्ञवल्क्य

समस्त अंग उप-अंगों समेत वेदों को पढ़ लेने पर भी जो गायत्री को नहीं जानता उसका परिश्रम व्यर्थ हीं गया समझना चाहिये ।

गायत्रीं चैव वेदांश्च तुलायां समतोलयत् ।
वेदा एकत्र सांगास्तु गायत्री चैकतः स्मृता ।।

-वृहद योगी याज्ञ ४-८०

अर्थात्- "जब ब्रह्माजी ने तराजू के एक पलड़े में चारों वेदों को और दूसरे में गायत्री को रखकर तोला तो गायत्री चारों वेदों की अपेक्षा भारी सिद्ध हुई ।

यहाँ माता और पुत्रों की तुलना में माता की गरिमा अधिक भारी सिद्ध करने का तात्पर्य है ।

इन्हीं सब विशेषताओं को देखते हुए गायत्री को धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष के चारों फल प्रदान करने वाली... पाप, ताप, शोक, संताप, निवारणी कहा गया है । उसे सर्वोपरि साधना बताया है ।

स्कन्द पुराण में महर्षि व्यास का कथन है-

गायत्र्येव तपो योगः साधनं ध्यानमुच्यते ।
सिद्धिनां सामता माता नातः किंचिद् वृहत्तरम् ।।

-स्कन्द पुराण

गायत्री ही तप है, गायत्री ही योग है, गायत्री ही सबसे बड़ा ध्यान और साधन है । इससे बढ़कर सिद्धिदायक साधन और कोई नहीं है ।

भगवान मनु भी इसी निष्कर्ष पर पहुँचते हुए कहते हैं-

सावित्र्यास्तु परन्नास्ति ।

मनु २ ।८३

गायत्री से श्रेष्ठ और कुछ नहीं है ।

मनुस्मृति में तो इस महान् तत्वज्ञान और उपासना की पग-पग पर महत्ता प्रतिपादित की गई है । कुछ उद्धरण इस प्रकार हैं :-

जप्येनैव तु संसिध्येद् ब्राह्मणो नात्रसंशयः ।
कुर्यादन्यन्त वा कुर्यान्मैमो ब्राह्म उच्यते ।।

-मनु० २ ।८७

अर्थात्-गायत्री उपासना सिद्धियों की आधारभूत है, गायत्री उपासक अन्य कोई अनुष्ठान न करे तो भी सबसे मित्रवत आचरण करता हुआ ब्रह्म को प्राप्त करता है क्योंकि जप से उसका चित्त ब्राह्मी चेतना की तरह शुद्ध व पवित्र हो जाता है ।

पूर्वां सध्यां जपस्तिष्ठेत्सावित्रीयार्क दर्शनात् ।
पश्चिमां तु समासीनः सम्यगृक्ष विभावनात् ।।

-मनु० २ ।१०

हे तात ! प्रातःकाल सूर्योदय के पूर्व से सूर्योदय तक खड़ा होकर गायत्री का जप करने वाला, सायंकाल तारों के निकलने तक बैठकर जप करने वाले उपासक भौतिक और आध्यात्मिक समृद्धि के अधिकारी बनते हैं ।

अपां समीपे नियतो नैत्यिकविधिमास्थितः ।
सावित्रीमप्य धीयति गत्वाण्यंसमाहितः ।।

-मनु २ ।२०२

अर्थात् - नगर की अशान्ति से दूर वन में किसी सरोवर के समीप जाकर की गई गायत्री उपासना से मन की एकाग्रता और असीम शान्ति का लाभ मिलता है ।

गायत्री मात्र सारोऽपि वरंविप्रः सुर्यान्मतः ।
नायन्नित्रिवेदोऽपि सर्वाशी सर्व विक्रयी ।।

-मनु० २ ।११८

अर्थात्- केवल गायत्री की उपासना करने वाला संयमी पुरुष सर्वभक्षी, सब कुछ बेचने वाले वेदपाठी ब्राह्मण से भी श्रेष्ठ कहलाता है ।

एतदक्षरमेतां च जपन् व्याहृति पूर्विकाम् ।
सन्ध्योर्वेदविडिप्रो वेद पुण्येन युज्यते ।।

-मनु २ ।७८

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अर्थात्-ओंकार और व्याहृति पूर्वक दोनों संध्याओं के समय गायत्री उपासना करने वाले को स्वयं ही वेद ज्ञान प्राप्त हो जाता है ।

योऽधीतेऽहन्य हन्येतां त्रीणि वर्षाण्यतन्द्रितः ।
स ब्रह्म परमभ्येति वायुभूतः खंमूर्तिमान् ।।

-मनु० २ ।८२

अर्थात्- यदि उपासक तीन वर्षों तक निरालस्य नियम पूर्वक गायत्री मन्त्र का जप करता है तो वह वायु और विराट् आकाश में व्याप्त चेतना को भली प्रकार जान लेता है और परमात्मा को प्राप्त करने का अधिकार पा लेता है ।

गीता में कहा गया है-

गायत्री छन्दसाऽम् । -अ० १० । ३५

छन्दों में गायत्री छन्द में हूँ ।

गायत्री पर देवतेति गदिता ब्रह्मैव चिद्रूपिणी ।।

-गायत्री पुरश्चरण प०

गायत्री परम श्रेष्ठ देवता और चित्तरूपी ब्रह्म है, ऐसा कहा गया है ।

गायत्री वा इदं सर्वभूतं यदिदंकिच ।

-छान्दोग्योपनिषद्

यह विश्व जो कुछ भी है वह समस्त गायत्री मय है ।

गायत्री प्रत्यग्ब्रह्मैक्य बोधिका ।

-शांकरभाष्य

गायत्री प्रत्यक्ष अद्वैत ब्रह्म की बोधक है ।

शास्त्रों, पुराणों में इस तरह के असंख्यों उदाहरण भरे पड़े हैं जिनमें गायत्री को भारतीय संस्कृति की जननी, परम उपास्या कहा गया है । यही नहीं गायत्री की उपासना न करने वालों की निन्दा, भर्त्सना भी की गयी है । उपरोक्त प्रतिस्थापनायें निःसन्देह बहुत महत्त्वपूर्ण थीं, जब तक इनका परिपालन हुआ देश, संसार में भौतिक और आध्यात्मिक दोनों ही दृष्टि से विश्व शिरोमणि रहा । इस महाशक्ति से वंचित हो जाने पर ही देश की नीवें खोखली हो गयीं । उन्हें सुदृढ़ बनाने के लिए गायत्री उपासना को व्यापक बनाया जाना अनिवार्य है ।

वेदमाता- देवमाता भगवती गायत्री

गायत्री को भारतीय संस्कृति की जननी और यज्ञ को भारतीय धर्म का पिता कहा गया है । उसे वेदमाता-देवमाता एवं विश्वमाता कहा गया है । वेदों से लेकर धर्म शास्त्रों तक का समस्त दिव्य ज्ञान गायत्री के बीजाक्षरों का ही विस्तार है । योग साधना और तपश्चर्या की शक्ति-धाराएँ गायत्री के हिमालय से ही प्रकटी हैं । उसकी साधना के सत्परिणाम अमृत-कल्पवृक्ष-कामधेनु और ब्रह्मानन्द बताये गये हैं । पाँच प्रमुख देवताओं के यही पाँच वरदान हैं । इसी रहस्य के कारण उसका एक स्वरूप पाँच मुख वाला भी चित्रित किया जाता है । भौतिक सिद्धियों और आत्मिक विभूतियों के अनन्त भण्डार इस महाशक्ति के अन्तराल में छिपे पड़े हैं । साधना से सिद्धि का सिद्धान्त विधिवत् गायत्री साधना से प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर हो सकता है । सांसारिक संकटों में भी गायत्री उपासना वरदान की तरह सिद्ध होती है । आद्या शक्ति गायत्री माता का अंचल पकड़ने वाला कभी निराश नहीं हुआ ।

गायत्री मन्त्र में चौबीस अक्षर हैं । तत्वज्ञानियों ने इन अक्षरों में बीज रूप में विद्यमान उन शक्तियों को पहचाना जिन्हें चौबीस अवतार, चौबीस ऋषि, चौबीस शक्तियाँ तथा चौबीस सिद्धियाँ कहा जाता है । देवर्षि, ब्रह्मर्षि तथा राजर्षि इसी उपासना के सहारे उच्च पदासीन हुये हैं । 'अणोरणीयान महतो महीयान' यही महाशक्ति है । छोटे से छोटा चौबीस अक्षर का कलेवर, उसमें ज्ञान और विज्ञान का सम्पूर्ण भाण्डागार भरा हुआ है । सृष्टि में ऐसा कुछ भी नहीं जो गायत्री में न हो । उसकी उच्चस्तरीय साधनायें कठिन और विशिष्ट भी हैं पर साथ ही सरल भी इतनी हैं कि उन्हें हर स्थिति में बड़ी सरलता और सुविधाओं के साथ सम्पन्न कर सकता है । इसी से उसे सार्वजनीन और सार्वभौम माना गया । नर-नारी, बाल-वृद्ध बिना किसी जाति व सम्प्रदाय भेद के उसकी आराधना प्रसन्नतापूर्वक कर सकते हैं और अपनी श्रद्धा के अनुरूप लाभ उठा सकते हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गायत्री के ही चार चरणों की व्याख्या स्वरूप चार वेद बने हैं, इसलिए गायत्री को वेदमाता कहते हैं । ज्ञान की विवेचना में ही अन्य शास्त्र पुराण रचे गये हैं । भारतीय तत्त्वदर्शन और ज्ञान-विज्ञान गायत्री बीज से ही उत्पन्न हैं । इसी की उपासना-आराधना के सहारे प्राचीन भारत के महान नागरिक देवोपम बने थे, अतएव गायत्री को देवमाता भी कहा गया ।

गायत्री साधना के तीन चरण

शरीर, मन और आत्मा को बलवान बनाने की प्रक्रिया-

गायत्री को त्रिपदा कहा गया है । त्रिपदा । अर्थात् तीन पद-चरण वाली । तीन शरीर, तीन लोक, तीन गुण, त्रैत ब्रह्म, तीन देव, तीन शक्ति, तीन काल के रूप में इस त्रिपदा शक्ति का विस्तार माना और विवेचन किया जाता है । इसके तीन फल हैं - अमृत, पारस और कल्पवृक्ष । त्रिपदा के यह तीन अनुग्रह- तीन वरदान तत्त्वदर्शियों ने बताये हैं । भौतिक सम्पत्तियाँ और आत्मिक विभूतियाँ इन तीनों के ही अन्तर्गत आ जाती हैं । आयु, प्राण, प्रज्ञा, पशु, कीर्ति, द्रव्य और ब्रह्मवर्चस् के जो सात प्रतिफल अथर्ववेद में बताये गये हैं वे सब भी इस अमृत, पारस, कल्पवृक्ष की परिधि गणना में ही समा जाते हैं ।

आधिभौतिक, आधिदैविक और आध्यात्मिक क्षेत्र की, सुविधा समृद्धियों का संवर्धन और अभाव-अवरोधों का निराकरण ही हर किसी को अभीष्ट होता है । सारी सुविधा की गणना इसी परिधि में की जा सकती है । कठिनाइयों के नाम रूप का विस्तार कितना ही बड़ा क्यों न हो वस्तुतः वे इन्हीं आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक क्षेत्र के अन्तर्गत आती हैं । इन सभी के समाधान को अमृत पारस और कल्पवृक्ष का अलंकारिक नामकरण किया गया है । गायत्री माता के अनुग्रह से यह तीनों ही विभूतियाँ उपलब्ध होने की बात शास्त्रकार ने कही है, सुसम्पन्न, सुसंस्कृत मनुष्यों को देवता, कहा गया है । देवत्व आकृति के साथ नहीं प्रकृति के साथ जुड़ा हुआ है । गुण, कर्म, स्वभाव से उसकी परख होती है । देवताओं का निवास-स्थल स्वर्ग लोक कहा गया है इसी बात को यों भी कहा जा सकता है कि जहाँ देवता निवास करते हैं वहाँ स्वर्गीय वातावरण बन जाता है ।

गायत्री को स्वर्गलोक की अधिष्ठात्री कहा गया है । उसका एक नाम कामधेनु भी है । कामधेनु का पयपान करने से देवताओं को देवत्व की प्राप्ति होती है । देवताओं के सुख-साधनों के स्रोत तीन हैं- (१) अमृत, (२) पारस,(३) कल्पवृक्ष । अमृत के आधार पर उन्हें आध्यात्मिक, पारस के आधार पर उन्हें आधिभौतिक और कल्पवृक्ष के आधार पर आधिदैविक सम्पदाओं की उपलब्धि होती है । त्रिपदा गायत्री की तात्त्विक उपासना में इन तीनों ही दिव्य वरदानों को, स्वर्गीय अनुदानों को प्राप्त कर सकना सम्भव बताया गया है ।

अमृत का अर्थ है वह पदार्थ जिसे पीने वाला अजर-अमर बनता है । बुढ़ापा और मृत्यु उसे छोड़कर चली जाती है । नव यौवन सदा बना रहता है तथा आनन्द-उल्लास में अन्तःकरण सदा पुलकित, हुलसित बना रहता है । कहा जाता है कि यह अमृत देवलोक में है । उसे देवता पीते हैं और वह लाभ प्राप्त करते हैं जो स्वर्गलोक के निवासियों में, दिव्य शरीर धारियों में पाये जाते हैं । अमृत पदार्थ का अस्तित्व प्राणि जगत में तो नहीं ही पाया गया है । यहाँ हर वस्तु जन्मती, बढ़ती और बदलती है । बढ़ने के क्रम में ही जवानी के बाद बुढ़ापे का पल्ला बँधा है । जीर्णता को दुबारा ढालना ही परिवर्तन है, इसी को मरण कहते हैं । यह स्वाभाविक सृष्टि का क्रम है ।

बुढ़ाता और मरता तो शरीर है । जब अपने को शरीर से भिन्न आत्मा मान लिया तो फिर अजर-अमर होने की अनुभूति सुनिश्चित हो जाती है । पुराने कपड़े बदलकर नये पहनने में तो बच्चे तक मोद मनाते हैं, फिर मृत्यु का भय आत्म-ज्ञानी को कैसे होगा ? आत्मा तो आदि काल से अन्त तक प्रौढ़ ही रहती है उसके लिए न कभी बचपन है और न बुढ़ापा । दुःख और अभाव भी शरीर को ही कष्ट देते हैं, गायत्री उपासना में अमृतत्व की उपलब्धि की प्रेरणा, दिशा एवं सुविधा प्राप्त होती है इसलिए उसे कामधेनु कहा गया है । कामधेनु को

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भी अमृत का ही एक स्वरूप माना गया है । देवता उसे पीते और धन्य बनते हैं । उसे पीने से दुर्भावनायें आक्रमण नहीं करती ईर्ष्या, द्वेष, रोष, प्रतिशोध के कोई लक्षण दिखाई नहीं पड़ते । फलतः आकाँक्षाओं की अशान्ति से सदा बचे रहते हैं । हर घड़ी मस्ती छाई रहती है । उल्लास समेटते और उमंगें बखेरते हुए उन्हें देखा जा सकता है ।

यह अमृतत्व और देवत्व एक ही बात है । देवताओं को मनुष्य की अपेक्षा अधिक समर्थ, सम्पन्न और सन्तुष्ट माना जाता है । दे देने की आकाँक्षा रखना, देते रहना देवताओं का धर्म है । आत्मज्ञान का अमृतत्व पीने वाले व्यक्ति उपयोग के लिए लालायित नहीं रहते । जो प्राप्त होता है उसे अपने से अधिक जरूरत मन्द को बाँटते रहते हैं । इस कारण स्वल्प रहते हुए भी आत्मा तो अपने आप में परिपूर्ण है उसे न किसी वस्तु की आवश्यकता है और न आकाँक्षा की । इसकी सही अर्थों में अनुभूति हो सके तो फिर चेहरे पर सदा तृप्ति और शांति ही छाई रहेगी । ऐसे लोग जीवन मुक्त कहलाते हैं । पृथ्वी के देवता समझे जाते हैं और अपने सम्पर्क क्षेत्र में स्वर्गिक वातावरण उत्पन्न करते हैं । अमृतत्व की उपलब्धि के यही लक्षण हैं ।

पारस उस पत्थर का नाम है जिसे छूने से लोहे जैसी काली-कलूटी, कुरूप और सस्ती धातु स्वर्ण बन जाती है । अर्थात् सुन्दर, बहुमूल्य, कीमती, चमकदार धातु । तथाकथित पारस का अस्तित्व संदिग्ध है । अभी उसके कहीं पाये जाने का प्रमाण नहीं मिला है । किन्तु अध्यात्म क्षेत्र का पारस 'पुरुषार्थ' के रूप में बहुत पहले से ही इस संसार में विद्यमान है । उसका सम्पर्क साधने वाले गई गुजरी स्थिति को पार करके द्रुतगति से आगे बढ़ते हैं और उन्नति के उच्च शिखर पर पहुँचते हैं ।

पुरुषार्थ का प्रथम चरण मानसिक है । उसे संकल्प, साहस, उत्साह, आशा, उमंग आदि सृजनात्मक अन्तः क्षमताओं के रूप में जाना जाता है । उसी का दूसरा चरण वह है जिसे तत्परता और तन्मयता के रूप में आँखों से प्रत्यक्ष देखा जा सकता है । आलस्य और प्रमाद ही पिछड़ेपन का अभिशाप लादने वाले दुष्ट दैत्य हैं वे जिस पर चढ़ते हैं उसे सदा दरिद्रता, आत्म-हीनता और तिरस्कार भरा पिछड़ा जीवन जीना पड़ता है । आलस्य, प्रमाद के उपरान्त तीसरा असुर है असंयम ।

पुरुषार्थ रूपी पारस जिनकी अन्तःभूमिका में उतरता है वह अपनी इन मलीनताओं को लात मारकर भगा देने के लिए संकल्प पूर्वक उठ खड़ा होता है । छाई हुई जड़ता को, अर्ध मूर्छित जैसी मनःस्थिति को झकझोरकर रख देता है । नये सिरे से जीवनचर्या बनाता है और आदर्शों का अभिनव निर्माण करता है । यह कायाकल्प जिस आन्तरिक पुरुषार्थ के सहारे सम्भव होता है उस उत्कृष्टतावादी प्रगतिशील सत्साहस को, प्रचण्ड संकल्प बल को पारस कहा गया है । इसका जहाँ उदय होगा रुग्णता, दुर्बलता, दरिद्रता, उदासी, अवमानना की लानतें सिर पर पैर रखकर भागती दिखाई पड़ेंगी ।

गायत्री का शब्दार्थ है प्राण का त्राण करने वाली । 'गय' कहते हैं प्राण को और त्री कहते हैं त्राण करने वाली को । प्राण अर्थात् पुरुषार्थ । जब आन्तरिक साहस और व्यावहारिक परिश्रम का समन्वय उच्चस्तरीय उद्देश्यों के लिए जुट जाता है तो उस समन्वय के परिणाम हर क्षेत्र में चमत्कार जैसे दिखाई पड़ते हैं । पारस का महत्व इसलिए है कि वह लोहे की तुच्छता को सोने की महानता में बदल देता है । आत्मिक पारस पुरुषार्थ भी ठीक वही भूमिका सम्पन्न करता है । गायत्री उपासना से जो प्रकाश मिलता और साहस जगता है उसे देखते हुए उस कायाकल्प को पारस की प्राप्ति कहा जाय तो उसमें अलंकारिता तो है पर अत्युक्ति तनिक भी नहीं ।

परिष्कृत व्यक्तित्व को कल्पवृक्ष के समतुल्य माना गया है । कल्पवृक्ष स्वर्ग में है । कहा जाता है उसके नीचे बैठकर जो भी कामना की जाती है, पूर्ण होती है । यह अलंकारिक रूप से परिष्कृत व्यक्तित्व का ही वर्णन है । गायत्री को सद्बुद्धि की देवी कहा गया है । यदि उसकी वास्तविक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

रूप में साधना की जा सके तो ईश्वर के दरबार में साधक को सद्बुद्धि का वरदान मिलता है । इस वरदान का प्रथम प्रभाव परिष्कृत व्यक्तित्व के रूप में सामने आता है । जिसे इतनी सफलता मिल गई, समझना चाहिए उसे कल्पवृक्ष की छाया में बैठने और आप्तकाम होने का सौभाग्य मिल गया । देवता आप्तकाम कहलाते हैं उनकी सभी कामनायें पूर्ण रहती हैं । उन्हें अभाव जन्य कभी कोई कष्ट नहीं उठाना पड़ता । इसी स्थिति को कल्प वृक्ष की सिद्धि कहा गया है ।

मनुष्य जीवन की आवश्यकतायें बहुत स्वल्प हैं । उसका पेट छोटा और हाथ तथा मस्तिष्क का मिला-जुला उत्पादन इतना अधिक है कि थोड़े से समय एवं श्रम से शारीरिक आवश्यकतायें सहज ही पूरी होती रह सकती हैं । 'औसत भारतीय' का निर्वाह स्तर स्वीकार हो और प्रस्तुत परिवार का उचित परिपोषण ही पर्याप्त माना जाय तो आवश्यक कामनाओं का बोझ सिर पर न चढ़ेगा और न उन्हें पूरा करने के लिए उचित-अनुचित रास्ते अपनाने एवं निरन्तर चिन्तित रहने की आवश्यकता पड़ेगी । यों आवश्यकतायें तो मानवी पुरुषार्थ से अत्यन्त सरलतापूर्वक पूरी होती रहती हैं । निरर्थक कामनायें बढ़ाते चलना और उनको तुर्त-फुर्त पूरी करने के लिए व्याकुल रहना, यही है मनोकामनाओं का जंजाल जिसके लिए अनपढ़ लोग निरन्तर आकुल-व्याकुल रहते और देवी-देवताओं के सामने नाक रगड़ते देखे जाते हैं । देव-बुद्धि के देवता लोग इस जंजाल से बचते हैं । सद्बुद्धि का आश्रय लेकर वे अपनी कामनाओं को सीमित करते और जो उचित है उनकी पूर्ति प्रबल पुरुषार्थ के सहारे सरलतापूर्वक करते रहते हैं । ऐसी दशा में उनका 'आप्तकाम' बने रहना, कल्पवृक्ष की छाया तले निवास करने जैसा आनन्द लेना सहज स्वाभाविक है । संक्षेप में सद्बुद्धि को ही कल्पवृक्ष समझा जाना चाहिए । गायत्री उपासना का मूल प्रयोजन वही है । उसका अनुग्रह जो जितनी मात्रा में प्राप्त कर लेता है वह उतनी मात्रा में पारस, अमृत, और कल्पवृक्ष के तीनों आध्यात्म लाभों को प्राप्त करके इसी धरती पर देव जीवन जीता और शरीर रहते ही स्वर्ग तथा मुक्ति का आनन्द प्राप्त करता है ।

गायत्री की आत्म शक्ति,ब्रह्मविद्या कहा गया है और उसको अमृत-कलश से उपमा दी गई है । आत्म-कल्याण और ईश्वर-दर्शन का अवलम्बन और मार्ग-दर्शन गायत्री मन्त्र से ओत-प्रोत है । उसे अपनाने वाले साधक अमृत पान करते हैं और देवताओं की तरह सच्चे अर्थों में अजर-अमर हो जाते हैं । गायत्री को अमृत कलश इसीलिए कहा गया है ।

गायत्री का चौथा नाम कामधेनु और पाँचवाँ ब्रह्मास्त्र है । कामधेनु अर्थात् माता की तरह परिपोषण करने वाली, प्रगति और समृद्धि के अजस्र वरदान देने वाली । ब्रह्मास्त्र अर्थात् वह अस्त्र जिसके प्रहार से पतन, संकट और विघ्न चूर-चूर होते चले जायें । जिसने सही रीति से गायत्री का अवलम्बन लिया है उसने अथर्ववेद की उस साक्षी रिचा को अक्षरशः सही पाया है जिसमें उस महाशक्ति को दीर्घजीवन प्राण, पराक्रम, सुसंतति सहयोगी परिवार, निर्मल यश, साधन, वैभव तथा ब्रह्मवर्चस आत्मबल का वरदान बताया गया है ।

सद्ज्ञान की अधिष्ठात्री-प्रत्यक्ष ऋतम्भरा प्रज्ञा-गायत्री के २४ अक्षरों में मानवी चिन्तन और चरित्र को उच्चस्तरीय बनाये रहने वाला सारा तत्व विद्यमान है । इस महाशक्ति की साधना में योगाभ्यास और तपश्चर्या के वे समस्त आधार, संकेत और विधान मौजूद हैं जिनके सहारे साधनकर्त्ता को ऋद्धि-सिद्धियों का समुचित लाभ मिल सकता है । आत्मिक प्रगति की दोनों उच्च भूमिकायें-स्वर्ग और मुक्ति को पाने के लिए गायत्री तत्त्वज्ञान का अवलम्बन अनुपम है ।

प्रत्येक धर्मपरायण को गायत्री का अवलम्बन आवश्यक ठहराया गया है । भारतीय धर्मानुसार नित्य उपासना का विधान ''संध्या वन्दन'' कहलाता है, संध्या विधान में गायत्री का स्थान वैसा ही है जैसा कि शरीर में मेरुदण्ड का भारतीय धर्म के दो प्रतीक चिन्ह हैं, एक शिखा, दूसरा सूत्र (यज्ञोपवीत) । ये दोनों ही गायत्री की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रतिमायें हैं । शिर के सर्वोच्च शिखर पर गायत्री की ज्ञान ध्वजा फहराने और कन्धे पर गायत्री के नौ शब्द, नौ धागे बनाकर, तीन व्याहृतियों को तीन ग्रन्थियों का रूप देकर यज्ञोपवीत के रूप में कन्धे पर धारण करने का अनुशासन है । मस्तिष्क, ज्ञान का और शरीर, कर्म का आधार है । दोनों पर ही शिखा और सूत्र के रूप में गायत्री की प्रतिष्ठापना की गई है । अर्थात् इन दोनों का उपयोग संचालन इन्हीं २४ अक्षरों में सन्निहित प्रेरणाओं के अनुरूप करने का निर्देश आर्ष ग्रन्थों और आप्त वचनों में किया गया है । शास्त्रों में "गुरु मन्त्र" नाम गायत्री को ही दिया गया है । विद्यारम्भ-वेदारम्भ-उपनयन आदि संस्कारों में गायत्री के आधार पर ही दीक्षा दी जाती है । अन्य मन्त्रों को देव-मन्त्र, साधना-मन्त्र, सम्प्रदाय-मन्त्र, आदि तो कहा जा सकता है, पर अनादि 'गुरु मन्त्र' गायत्री को ही कहा गया है । भगवान राम को गुरु वशिष्ठ ने, एवं भगवान कृष्ण को संदीपन ऋषि ने यही गुरु मन्त्र दिया था । महर्षि विश्वामित्र द्वारा राम को बला और अतिबला शक्तियाँ इसी साधना के माध्यम से प्राप्त हुई थीं । स्वयं विश्वामित्र क्षत्रिय से ब्रह्मर्षि इसी के प्रभाव से बने थे ।

विश्व-मूल में सक्रिय परा-अपरा शक्तियाँ

इस विश्व में दो शक्तियाँ काम करती हैं । एक चेतन दूसरी जड़ इन्हें परा एवं अपरा शक्तियाँ कहते हैं । जड़ पदार्थ देखने में ही स्थिर प्रतीत होते हैं, पर वस्तुतः उनमें भी अद्‌भुत क्रियाशीलता विद्यमान है ।

रेत, पर्वत, तालाब आदि को यों मोटी दृष्टि से स्थिर समझा जा सकता है, पर उनमें सृजन, अभिवर्धन और परिवर्तन का जो अनवरत क्रम चलता रहता है, उसे गम्भीरतापूर्वक देखने से प्रतीत होता है कि जीवधारी जिस प्रकार अपने विभिन्न प्रयोजनों में निरन्तर कुछ न कुछ सोचते और करते रहते हैं उसी प्रकार पदार्थ की दृश्य और अदृश्य गतिशीलता भी इस संसार को हलचल युक्त बनाये हुए है । अपनी पृथ्वी से लेकर असंख्य ग्रह-नक्षत्रों तक सभी ब्रह्माण्डीय पिण्ड द्रुतगति से अपनी धुरी और कक्षा पर भ्रमण कर रहे हैं और अपनी आकर्षण शक्ति के द्वारा एक दूसरे के साथ बँधे जकड़े हैं । इतना ही नहीं उनके अन्तःक्षेत्र में भी चित्र-विचित्र गति-विधियाँ अत्यन्त तीव्रगति से चलती रहती हैं । पदार्थ के साथ सक्रियता अविच्छिन्न रूप से जुड़ी होने के कारण ही उसका अस्तित्व बना हुआ है । पदार्थ की संरचना प्रचण्ड क्रियाशीलता के साथ हुई है । इसी के कारण वस्तुएँ स्वयमेव-उपजती और बदलती रहती हैं । पदार्थ की इस क्रियाशीलता को अपरा प्रकृति कहा गया है ।

परमाणु, पदार्थ की सबसे छोटी इकाई है । उसका संयुक्त और विराट रूप है ब्रह्माणु अथवा ब्रह्माण्ड इस जड़ शक्ति का तो यत्किंचित विश्लेषण अध्ययन हुआ भी है पर चेतना का विवेचन उस तरह सम्भव नहीं है । परन्तु इस शक्ति के कारण ही कोई प्राणी जीवित दिखाई देता है । यों किसी भी प्राणी का शरीर कलेवर तो रासायनिक पदार्थों से ही बना होता है, पर उसकी अतःचेतना मौलिक है जो पदार्थ की शक्ति से उत्पन्न नहीं होती पर अपने प्रभाव से कलेवर को तथा समीपवर्ती वातावरण को प्रभावित करती है । इसे ही चेतना कहते हैं । चेतना के दो गुण हैं-एक इच्छा और दूसरा आस्था । इच्छा को भाव और विचारणा की बुद्धि कहते हैं । एक को अंतरात्मा तथा दूसरे को मस्तिष्क कहा जा सकता है । मस्तिष्क जो सोचता है उसके मूल में आवास, आस्था, विवेचना एवं विचारण की सम्मिलित प्रेरणा ही काम करती है । जीव चेतना को परा प्रकृति कहते हैं ।

जड़ पदार्थों के विवेचन विश्लेषण करने वाले विज्ञान को भौतिक विज्ञान कहते हैं और चेतना का विवेचन अध्ययन प्रस्तुत करने वाले विज्ञान को अध्यात्म विज्ञान कहा जा सकता है । गायत्री आध्यात्मिक और भौतिक दोनों ही प्रकार की सूक्ष्म शक्तियों से ओत-प्रोत है । कहा जा चुका है कि परमाणु पदार्थ का सब से छोटा घटक है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उसका संयुक्त रूप ही ब्रह्माण्ड है । व्यष्टि और समष्टि के नाम से भी इस लघुता और विशालता को जाना जा सकता है । जीवाणु की चेतन सत्ता आत्मा कहलाती है और उसकी समष्टि विश्वात्मा अथवा परमात्मा ब्रह्माण्ड में भरी क्रियाशीलता से परमाणु प्रभावित होता है । इस बात को यों भी कह सकते हैं कि परमाणुओं की संयुक्त चेतना ब्रह्माण्ड व्यापी हलचलों को निर्माण करती है । इस प्रकार चेतना के क्षेत्र में इसी तथ्य को परमात्मा द्वारा आत्मा को अनुदान मिलना अथवा आत्माओं, की संयुक्त चेतना के रूप में परमात्मा का विनिर्मित होना कुछ भी कहा जा सकता है ।

गायत्री को परा और अपरा दोनों ही प्रकृतियों का उद्गम कहा जा सकता है । आध्यात्मिक क्षेत्रों में वह प्रधानतः ब्रह्मतेज के रूप में परिलक्षित होती है, वह परमब्रह्म-परमात्मा का प्रकट स्वरूप है । वह साधक को ब्रह्म निर्वाण पद तक सुविधापूर्वक पहुँचाती है । देवी भागवत पुराण में इस बात को स्पष्ट कर दिया गया है -

परब्रह्म स्वरूपा च निर्वाण पद दायिनी ।
ब्रह्म तेजोमयीशक्ति अधिष्ठातृ देवता ।।

अर्थात् - गायत्री परब्रह्मस्वरूप तथा निर्वाण पद देने वाली है । वह ब्रह्म तेज शक्ति की अधिष्ठात्री देवी है ।

गायत्री क्या है ? इस ब्रह्माण्ड में से व्याप्त उस चेतना मान सरोवर को गायत्री कह सकते हैं जो प्राणियों में ज्ञान संवेदना और पदार्थों में सृजन परिवर्तन वाली क्रियाशीलता बनकर काम करती है । इसे ब्रह्म चेतना से उद्भूत माना गया है ।

सृष्टि का विकास और विस्तार एक ही केन्द्र बिन्दु से हुआ है यह बात प्रकारान्तर से पश्चिमी विद्वान और भारतीय दार्शनिक दोनों ही मानते हैं । खगोल शास्त्रियों के मत में भी यह प्रारम्भ में एक ही महत्त्व था उसमें विस्फोट हुआ और तब से पदार्थ मन्दाकिनियों के रूपे में बहना प्रारम्भ हुआ जिससे ग्रह-नक्षत्रों बाली सृष्टि की संरचना हुई । इस भौतिकवादी मान्यता में पदार्थ के लिये स्थान तो है पर चेतना के लिये न होने से अपूर्ण जैसा है ।

भारतीय मनीषियों की गवेषणाऐं इससे कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण हैं । हमारे यहाँ की भी मान्यता यही है कि प्रारम्भ में एक मात्र सत्-तत्व वाली ब्रह्मी चेतना ही थी । उसके नाभि देश से स्फुरणा हुई "एकोऽहं बहुस्याम," मैं एक हूँ बहुत हो जाऊँ । उनकी यह इच्छा ही शक्ति बन गई और विश्व व्यवस्थापिका महाप्रकृति कहलाई उसी को गायत्री कहते हैं । आध्यात्मिक भाषा में यह शक्ति सत, रज, तम तीन शक्तियों में विभक्त होती है । गायत्री महाविज्ञान में उन्हें ही गायत्री की "ह्रीं" अर्थात् ज्ञान शक्ति या सरस्वती रूप "श्रीं" अर्थात्-साधन या लक्ष्मी-रूप "क्लीं" शक्ति प्रधान अर्थात् काली रूप कहा गया है । परमेश्वर और प्रकृति के संयोग से मिश्रित रज सत्ता उत्पन्न हुई 'वही' जीव कहलाई । जिस तरह पुत्र में माँ और पिता दोनों के ही युग सूत्र (क्रोमोसोम) विद्यमान रहते हैं उसी तरह जीव सत्ता में अपने पिता और माता दोनों की सत्ता विद्यमान रहती है । बालक अधिकांश जीवन अपनी माँ के सहारे व्यतीत करता है वह उसकी प्रकृति के अधिक अनुकूल पड़ती है इस तथ्य को भारतीय तत्त्व-दर्शियों ने बहुत गम्भीरता से अनुभव किया था । इसीलिए गायत्री उपासना को इतना महत्त्व दिया गया । उसमें भक्ति और कर्म, ज्ञान और वैराग्य सभी का समन्वय होने से गायत्री तत्त्वज्ञान लोक-परलोक दोनों में ही सहायक होता है:

सूक्ष्म प्रकृति वह है, जो आद्य शक्ति गायत्री से उत्पन्न होकर सरस्वती, लक्ष्मी, दुर्गा में बँटती है । सर्वव्यापी शक्ति-निर्झरणी पंच तत्वों से कहीं अधिक सूक्ष्म है । जैसे नदियों के प्रवाह में जल की लहरों का वायु के आघात होने का कारण 'कलकल' से मिलती-जुलती ध्वनियाँ उठा करती हैं, वैसे ही सूक्ष्म प्रकृति की शक्ति धाराओं से तीन प्रकार की शब्द-ध्वनियाँ उठती हैं । सत् प्रवाह में 'ह्रीं' रज प्रवाह में 'श्रीं' और तम प्रवाह में 'क्लीं' शब्द में मिलती जुलती ध्वनि उत्पन्न होती है । उससे भी सूक्ष्म ब्रह्म का ॐकार ध्वनि प्रवाह है । नादयोग की साधना करने वाले ध्यानमग्न होकर इन ध्वनियों को

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पकड़ते हैं उनका सहारा पकड़ते हुए ब्रह्म सायुज्य तक आ पहुँचते हैं ।

प्राचीनकाल में हमारे पूजनीय पूर्वजों, ने ऋषि-मुनियों ने अपनी सुतीक्ष्ण दृष्टि से विज्ञान के इस सूक्ष्म तत्त्व को पकड़ा था, उसी की शोध और सफलता में अपनी हस्तियों को लगाया था । फलस्वरूप वे वर्तमान काल के यशस्वी भौतिक विज्ञान की अपेक्षा अनेक गुने लाभों से लाभान्वित होने में समर्थ हुए थे । वे आदि शक्ति के सूक्ष्म शक्ति प्रवाहों पर अपना अधिकार स्थापित करते थे । यह प्रकट तथ्य है कि मनुष्य के शरीर से अनेक प्रकार की शक्तियों का आविर्भाव होता है । हमारे ऋषिगण योग द्वारा शरीर के विभिन्न भागों में छिपे पड़े हुए शक्ति-केन्द्रों को, चक्रों को, ग्रन्थियों को, मातृकाओं को, ज्योतियों को, भ्रमरों को जगाते थे और उस जागरण से जो शक्ति प्रवाह उत्पन्न होता था, उसे आद्य शक्ति के विभिन्न प्रवाहों में से जिनके साथ आवश्यकता होती थी उनके साथ सम्बन्धित कर देते थे जैसे रेडियो का स्टेशन के ट्रान्समीटर यन्त्र से सम्बन्ध स्थापित कर दिया जाता है तो दोनों की विद्युत शक्तियाँ सम श्रेणी की होने के कारण आपस में सम्बन्धित हो जाती हैं तथा उन स्टेशनों के बीच आपसी वार्तालाप का, सम्वादों के आदान-प्रदान का सिलसिला चल पड़ता है । इसी प्रकार साधना द्वारा शरीर के अन्तर्गत छिपे हुए और तन्द्रित पड़े हुए केन्द्रों का जागरण करके सूक्ष्म प्रकृति के शक्ति प्रवाहों से सम्बन्ध स्थापित हो जाता है तो मनुष्य और आद्य शक्ति आवास में सम्बन्धित हो जाते हैं । इस सम्बन्ध के कारण मनुष्य उस आद्य शक्ति के गर्भ में भरे हुए रहस्यों को समझने लगता है और अपनी इच्छानुसार उसका उपयोग करके लाभान्वित हो सकता है । चूँकि संसार में जो कुछ है वह सब उस आद्य शक्ति के भीतर है इसलिए वह सम्बन्धित शक्ति भी संसार के सब पदार्थों और साधनों से अपना सम्बन्ध स्थापित कर सकती है ।

वर्तमान काल के वैज्ञानिक पंचतत्त्वों की सीमा तक सीमित स्थूल प्रकृति के साथ सम्बन्ध स्थापित करने के लिए बड़ी-बड़ी कीमती मशीनों का, विद्युत, वाष्प, गैस, पैट्रोल आदि का प्रयोग करके कुछ आविष्कार करते हैं और थोड़ा सा लाभ उठाते हैं । यह तरीका बड़ा श्रम-साध्य, धनसाध्य और समय-साध्य है । उसमें खराबी, टूट-फूट और परिवर्तन की खटपट भी आये दिन लगी रहती है । उन यन्त्रों की स्थापना, सुरक्षा और निर्माण के लिए हर समय काम जारी रखना पड़ता है तथा उनका स्थान परिवर्तन तो और भी कठिन होता है । यह सब झंझट भारतीय योग विज्ञान के विज्ञानवेत्ताओं के सामने नहीं थे । वे बिना किसी यन्त्र की सहायता के तथा बिना संचालक, पेट्रोल आदि के, केवल अपने शरीर के शक्ति केन्द्रों का सम्बन्ध सूक्ष्म प्रकृति से स्थापित करके ऐसे आश्चर्यजनक कार्य कर लेते थे, जिनकी सम्भावना तक को आज के भौतिक विज्ञानी समझने में समर्थ नहीं हो पा रहे हैं ।

इन उपलब्धियों का आधार है साधना । व्यक्ति साधना द्वारा अपनी पात्रता का विकास करता हुआ उस महाशक्ति से लाभान्वित हो सकता है । यह महाशक्ति सत्, रज और तम इन तीनों प्रकृतियों को प्रमाणित कर मनुष्य जीवन में ज्ञान, क्रिया और आराधना के रूप में प्रकट होती है तथा उपासक को ज्ञानवान्, क्रियाशील और धनवान बना देती है ।

गायत्री साधना द्वारा जो व्यक्ति आत्मिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास के लिए प्रयत्न करते हैं वे अपनी अन्तर्निहित क्षमताओं को जागृत कर, उन पर अधिकार प्राप्त कर उन्हें वैसा ही उपयोगी बना लेते हैं जैसे बिजली, एटम, भाप आदि की शक्तियों पर अधिकार प्राप्त करके आज वैज्ञानिकों ने उन्हें मनुष्य की सेवा में प्रयुक्त कर दिया है । भौतिक जगत में जो शक्ति, भौतिक सम्पन्न दिखाई पड़ती है वही अन्तर्जगत में आध्यात्मिक क्षमता के रूप में प्रकट होती है । गायत्री की आध्यात्मिक शक्ति साधक के सामने वैसे ही सौभाग्य कहे जाने जैसे अवसर प्रस्तुत करती है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गायत्री उपासना का छुट-पुट लाभ कोई भी उठा सकता है । सकाम उपासनायें बीज मन्त्रों का प्रभाव अनुष्ठान एवं पुरश्चरणों की शृंखला अपने ढंग के लाभ प्रदान करती रहती हैं, उनके द्वारा साधक के छुट-पुट कष्ट दूर होने एवं अभीष्ट सफलताएँ प्राप्त होने का क्रम चलता रहता है । ऐसे लाभ और चमत्कार आये दिन देखने को मिलते रहते हैं, पर वह सब हैं छोटे स्तर की वस्तुऐं । अमुक कष्ट को दूर कर लेना या अमुक सफलता को प्राप्त कर लेना कोई बहुत बड़ी बात नहीं है । ऐसा लाभ तो भौतिक प्रयत्नों से भी प्राप्त किया जा सकता है । उपासना का लाभ तो अन्तरात्मा को अनन्त सामर्थ्य से भर देना और चन्दन के वृक्ष की तरह स्वयं ही सुगन्धित होने के साथ-साथ समीपवर्ती झाड़-झंखाड़ों को भी अपने ही समान सुरभित कर देना है । ऐसा उच्चस्तरीय लाभ प्राप्त करने के लिए मनुष्य को ब्राह्मणत्व के अनुरूप गुण, कर्म, स्वभाव अपने में उत्पन्न करने पड़ते हैं । तभी वह खजाना मिलता है, जिसके लिए ब्रह्मविद्या ने ब्राह्मण का उद्बोधन करते हुए उसे उस महान भाण्डागार को हस्तगत कर लेने की प्रेरणा दी है ।

गायत्री महामंत्र में जिन देव-शक्तियों का समावेश है वे सत्पात्र पर ही अवतरित होती हैं । स्वर्ग से उतरकर गंगा पृथ्वी पर आई तो उनके धारण करने के लिए शिवजी को अपनी जटाएँ फैलाकर अवतरण की पृष्ठभूमि तैयार करनी पड़ी थी । भागीरथ के तप से प्रसन्न होकर गंगा ने पृथ्वी पर उतरने का वरदान तो दिया था पर साथ ही यह भी कह दिया था कि यदि मेरी धारा को सँभालने वाली भूमिका न बनी तो धारा पृथ्वी में छेद करती हुई पाताल को चली जायगी, उसका लाभ भूलोक वासियों को न मिल सकेगा । इस आवश्यकता की पूर्ति जब शंकर भगवान ने कर दी तभी गंगा अवतरण सम्भव हो सका । गायत्री महाशक्ति की भी ठीक यही स्थिति है उसे धारण करने के लिए समर्थ पृष्ठ-भूमि की अनिवार्य रूप से आवश्यकता है और इस आवश्यकता की पूर्ति ब्राह्मणत्व के गुण, कर्म, स्वभाव से सम्पन्न साधक ही कर सकता है । ऐसा ब्राह्मण मन्त्र की महाशक्ति को अपने में धारण कर सकता है और उससे व्यक्ति एवं समाज का महान उपकार साध सकता है । कहा भी है-

देवाधीनं जगत्सर्वं मन्त्राधीनाश्च देवता ।
ते मन्त्रा ब्राह्मणाधीनास्तत्स्याद् विप्रोहि देवता ।।

-मत्स्य पुराण

"देवताओं के आधीन सब संसार हैं । वे देवता मन्त्रों के आधीन हैं । वे मन्त्र ब्राह्मण द्वारा प्रयुक्त होते हैं, इसलिए ब्राह्मण भी देवता है ।

महर्षि वशिष्ठ इसी प्रकार के सुर-पृथ्वी के देवता थे । उनके पास नन्दिनी कामधेनु- अर्थात् गायत्री की महाशक्ति थी । राजा विश्वामित्र के साथ जब वशिष्ठ का युद्ध हुआ और राजा की विशाल सेना परास्त हो गई तो विश्वामित्र के मुख से यही निकला "धिग् बल क्षत्रिय बलं-ब्रह्म तेजो बलम्-बलम्" अर्थात् भौतिक बल धिक्कारने योग्य तुच्छ एवं नगण्य है । वास्तविक बल तो ब्रह्मबल ही है । वही मन्त्रबल है, वही सच्चा बल है । यह कहते हुए विश्वामित्र ने राजपाट का परित्याग कर दिया और ब्रह्मबल प्राप्त करने के लिए तप करने लगे ।

गायत्री ब्रह्मशक्ति के स्वरूप क्रिया-कलाप एवं उपयोग को शास्त्रों में अनेक उदाहरणों के साथ बताया गया है । कहीं तो उस शक्ति ने स्वयं ही अपने स्वरूप का परिचय दिया है और कहीं देवताओं ने अथवा ऋषियों ने स्तवन के रूप में उसके स्वरूप का गुण-गान सहित वर्णन किया है । इन वर्णनों के आधार पर यह जाना जा सकता है कि गायत्री शक्ति तत्त्व का इस संसार में कहाँ, किस प्रकार उपयोग हो रहा है ?

गायत्री परदेवतेति गहिता ब्रह्मैव चिद्रूपणी ।

यह गायत्री सबसे परा देवता है- ऐसा कहा गया है । यह चित् स्वरूप वाली साक्षात् ब्रह्म ही है ।

गायत्री तु परं तत्त्वं गायत्री परमागतिः ।

-वृद्ध पाराशर ५ ।४

गायत्री ही परम तत्त्व है । गायत्री ही परमगति है ।

गायत्री सा महेशानी परब्रह्मात्मिका यता ।

-रुद्र तन्त्र

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यह गायत्री ही परब्रह्मात्मिका और महेश्वरी है ।

गायत्री परदेवतेति गहिता ब्रह्मैव चिद्रूपिणी ।

-गायत्री पुरश्चरण पद्धति

पर देवता, चित् रूपिणी एवं साक्षात् ब्रह्म गायत्री ही है ।

तदक्षरं तत्सवितुर्वरेण्यं प्रज्ञा च तस्याः प्रसृता परा सा ।

- गुह्योपनिषद्

वही अक्षर ब्रह्म है । वह तत्सवितुर्वरेण्यं प्रज्ञा है । सुविस्तृत परा शक्ति है ।

या देवी सर्व भूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।।
इन्द्रियाणामधिष्ठात्री भूतानां चाखिलेषु या ।
भूतेषु सततं तस्यै व्याप्त्यै देव्यै नमो नमः ।

-मार्कण्डेय पुराण

जो महाशक्ति सम्पूर्ण प्राणियों में शक्ति रूप विद्यमान है । इन्द्रियों की अधिष्ठात्री देवी है एवं पंच तत्त्वों की संचालिका है उसे बार-बार नमस्कार ।

गायत्री वा ꣳ इदꣳसर्वंभूतं यदिदं किं च वाग्वै गायत्री वाग्वा इदꣳसर्वं भूतं गायति च त्रायते च ।

या वै सा गायत्रीयं वाव सा यैयं पृथिव्यास्याꣳहीदꣳसर्वंभूतं प्रतिष्ठितमेतामेव नातिशीयते ।

-छान्दोग्य ३ । १२ । १ । २

गायत्री समस्त पंच भूतों में व्याप्त है । जो कुछ यहाँ है सो सब गायत्री ही है । वाणी ही गायत्री है । यह वाणी ही वर्णन और रक्षण करती है । यह पृथ्वी गायत्री है जिसमें सम्पूर्ण प्राणी रहते हैं ।

सेषा चतुष्पदा षड्विधा गायत्री तदेतदृचाभ्यनूक्तम् ।

तावानस्य महिमा ततो ज्यायाꣳश्च पूरुषः । पादोऽस्य सर्वाभूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवीति ।

-छान्दोग्य ३ । १२ । ५

यह गायत्री चार पद वाली और छः भेदों वाली है । इस गायत्री की अविच्छिन्न महिमा है । यह तीन पाद वाला परम पुरुष अमृत और प्रकाश बनकर आत्मा में स्थित हो । इसका एक पद सन्तोष विश्व है ।

गायत्री की चेतनात्मक धारा सद्बुद्धि के-ऋतम्भरा प्रज्ञा के रूप में काम करती है और जहाँ उसका निवास होता है वहाँ ब्राह्मणत्व एवं देवत्व का अनुदान बरसता चला जाता है, साथ ही आत्मबल के साथ जुड़ी हुई दिव्य-विभूतियाँ भी उस व्यक्ति में बढ़ती जाती हैं ।

गायत्री को ब्राह्मण का मन्त्र कहा जाता है, इसका तात्पर्य यह नहीं है कि ब्राह्मण विरादरी के अतिरिक्त दूसरी विरादरी वाले उसकी साधना नहीं कर सकते, वरन् इसका तात्पर्य यह है कि जो इस महाशक्ति का परिपूर्ण लाभ उठाना चाहें उन्हें जप, तप ही नहीं अपने व्यावहारिक जीवन में ब्राह्मण का अवतरण भी करना चाहिए । चरित्र जितना शुद्ध होगा यह महामन्त्र उतना ही प्रखर लाभ पहुँचायेगा । चरित्रवान व्यक्ति की थोड़ी सी उपासना भी इतना अद्भुत लाभ दिखाती है, जितनी कि दुश्चरित्र एवं व्यक्ति के आजीवन क्रिया-कृत्य भी नहीं कर सकते । ब्राह्मणत्व यदि अपने भीतर पैदा कर लिया जाय तो गायत्री उपासना के जो लाभ शास्त्रकारों ने बताये हैं उनकी सत्यता अक्षरशः प्रत्यक्ष की जा सकती है ।

गायत्री जप के कितने महत्त्वपूर्ण लाभ हैं, इसका आभास निम्नलिखित थोड़े से प्रमाणों से जाना जा सकता है -

सर्वेषां वेदानां गुह्योपनिषत्सारभूतां ततो गायत्रीं जपेत् ।

-छान्दोग्य परिशिष्टम् ।

'गायत्री' समस्त वेदों का और गुह्य उपनिषदों का सार है इसलिए गायत्री मन्त्र का नित्य जप करें ।

सर्ववेद सार भूत गायत्र्यास्तु समर्चना ।
ब्रह्मादयोऽपि संध्यायां तां ध्यायन्ति जपन्ति च ।।

-दे० भा० स्क० १६ । अ० १६ । १५

०गायत्री मन्त्र की आराधना समस्त वेदों का सारभूत है । ब्रह्मर्षि देवता भी सन्ध्या काल में गायत्री का ध्यान करते हैं और जप करते हैं ।

गायत्री मात्र निष्णातो द्विजो मोक्षमवाप्नुयात् ।

दे० भा० स्क० १२ अ० ८ । ९०

गायत्री मन्त्र की उपासना करने वाला ब्राह्मण भी मोक्ष को प्राप्त होता है ।

ऐहिकामुष्किकं सर्वं गायत्री जपतो भवेत् ।

-अग्नि पुराण

गायत्री जपने वाले को सांसारिक और पारलौकिक समस्त सुख प्राप्त हो जाते हैं ।

-मनुस्मृति

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

योऽधीतेऽहन्यहन्येतां त्रीणि वर्षाण्यतन्द्रितः ।
स ब्रह्म परमभ्येति वायुभूताः स्वमूर्तिमान् ।।

'जो मनुष्य तीन वर्ष तक प्रतिदिन गायत्री मन्त्र जपता है, वह अवश्य ब्रह्म को प्राप्त करता है और वायु के समान स्वेच्छा गमन वाला होता है ।

कुर्यादन्यन्न वा कुर्यात् इति प्राह मनुः स्वयम् ।
अक्षयमोक्षमवाप्नोति गायत्री मात्र जापनात् ।।

-शौनक

'इस प्रकार मनुजी ने स्वयं कहा है कि अन्य देवताओं की उपासना करे या न करे केवल गायत्री के जप से द्विज अक्षय मोक्ष को प्राप्त होता है ।'

ओंकार सहितां जपन् तां च व्याहृतिपूर्वकम् ।
संध्यायोर्वेदविद्विप्रो वेद-पुण्येन मुच्यते ।।

-मनुस्मृति अ० २/७८

'जो ब्राह्मण दोनों संध्याओं में प्रणव-व्याहृति सहित गायत्री मन्त्र का जप करता है, वह वेदों के पढ़ने के फल को प्राप्त करता है ।'

गायत्रीं जपते यस्तु द्विकाल ब्राह्मणः सदा ।
असत्प्रतिगृहीतोपि स याति परमां गतिम् ।।

-अग्नि पुराण

'जो ब्राह्मण सदा सायंकाल और प्रातः काल गायत्री का जप करता है वह ब्राह्मण अयोग्य प्रतिग्रह लेने पर भी परमगति को प्राप्त होता है ।'

सकृदपि जपेद्विद्वान् गायत्रीं परमाक्षरीम् ।
तत्क्षणात् संभवेत्सिद्धिर्ब्रह्म सायुज्यमाप्नुयात् ।।

-गायत्री पुरश्चरण २८

'श्रेष्ठ अक्षरों वाली गायत्री को विद्वान् यदि एक बार भी जपे तो तत्क्षण सिद्धि होती है और वह ब्रह्मा की सायुज्यता को प्राप्त करता है ।

जप्येनैव तु संसिद्धयेत् ब्राह्मणो नात्र संशयः ।
कुर्यादन्यन्न वा कुर्यान्मैत्रो ब्राह्मण उच्यते ।।

-मनु० ९७

'ब्राह्मण अन्य कुछ करे या न करे, परन्तु वह केवल गायत्री से ही सिद्धि पा सकता है ।

नास्ति गंगा समं तीर्थं न देवः केशवात्परः ।
गायत्र्यास्तु परं जापं न भूतं न भविष्यति ।।

-वृ० यो० याज्ञ० अ०-१०२-७९

'गंगाजी के समान कोई तीर्थ नहीं है, केशव से श्रेष्ठ कोई देवता नहीं है । गायत्री मन्त्र के जप से श्रेष्ठ कोई जप न आज तक हुआ और न होगा ।

सर्वेषां जप सूक्तानामृचश्च यजुषां तथा ।
साम्नां चैकाक्षरादीनां गायत्री परमो जपः ।।

-वृ० पाराशर स्मृति अ० ४ । ४

'समस्त जप सूक्तों में ऋक्-यजु सामवेदों में तथा एकाक्षरादि मन्त्रों में गायत्री मन्त्र का जप परम श्रेष्ठ है ।

यथा मधु च पुष्पेभ्यो धृतं दुग्धाद्रसात्यः ।
एवं हि सर्ववेदानां गायत्रा सार उच्यते ।।

-व्यास

'जिस प्रकार पुष्पों का सारभूत मधु, दूध का घृत, रसों का सारभूत पेय है, उसी प्रकार गायत्री मन्त्र समस्त वेदों का सार है ।'

तदित्युचः समो नास्ति मन्त्रो वेदचतुष्टये ।
सर्वे वेदाश्चं यज्ञाश्च दानानि च तपांसि च ।।
समानि कलया प्राहुर्मुनयो न तदित्यु च ।।

-विश्वामित्र

'गायत्री मन्त्र के समान मन्त्र चारों वेदों में नहीं है । सम्पूर्ण वेद, यज्ञ, दान, तप, गायत्री मन्त्र को एक कला के समान भी नहीं है, ऐसा मुनि लोग कहते हैं ।

सामादित्यान्वयाः सर्वे राघवाः कुरवस्तथा ।
पठन्ति शुचयो नित्यं सावित्री परमां गतिम् ।।

-महाभारत अनु० पर्व अ० १५ ।७८

हे युधिष्ठिर! सम्पूर्ण चन्द्रवंशी, सूर्यवंशी, रघुवंशी तथा कुरुवंशी नित्य ही पवित्र होकर परम गतिदायक गायत्री मन्त्र का जप करते हैं ।

एकाक्षरं परं ब्रह्म प्राणायामः परन्तपा : ।
सावित्र्यास्तु परन्नास्ति पावनं परमं स्मृतम् ।।

-मनुस्मृति अ० २/८३

'एकाक्षरं अर्थात् 'ॐ' परब्रह्म है । प्राणायाम परम तप है और गायत्री मन्त्र से बढ़कर पवित्र करने वाला कोई भी मन्त्र नहीं है ।

गायत्र्या : परमं नास्ति दिवि चेह न पावनम् ।
हस्तत्राण प्रदा देवीं पततां नरकार्णवे ।।

-संख स्मृति अ० २ ।८३

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

'नरक रूपी समुद्र में गिरते हुए को हाथ पकड़कर बचाने वाली गायत्री के समान पवित्र करने वाली वस्तु या मन्त्र पृथ्वी पर तथा स्वर्ग में भी नहीं है ।'

गायत्री संहिता में भी यही कहा गया है –

यथा पूर्वस्थितिञ्चैव न द्रव्यं कार्य-साधकम् ।
महासाधनोऽप्यस्मान्नाज्ञो लाभं तथाप्नुते ।।

जिस प्रकार धन पास में रहने से ही कार्य सिद्ध नहीं जो जाता उसी प्रकार से मूर्ख मनुष्य इस महासाधन से लाभ प्राप्त नहीं कर सकता ।

साधकः कुरुते यस्तु तन्त्रशक्तेरपव्ययः ।
नं विनाशयति सैव समूलं ना संशयः ।।

जो साधक मन्त्र शक्ति का दुरुपयोग करता है उसको वह शक्ति ही समूल नष्ट कर देती है ।

सततं साधनाभिर्यो याति साधकतां नरः ।
स्वप्नावस्थासु जायन्ते यस्य दिव्यानुभूतयः ।।

जो मनुष्य निरन्तर साधना करने से साधकत्व को प्राप्त हो जाता है उस व्यक्ति को स्वप्नावस्था में दिव्य अनुभव होते हैं ।

सफलः साधको लोके प्राप्नुतेऽनुभवान् नवान् ।
विचित्रान् विविधाश्चैव साधनासिद्धयनन्तरम् ।।

संसार में सफल साधक नवीन और विचित्र प्रकार के विविध अनुभवों को साधना को सिद्धि के पश्चात् प्राप्त करता है ।

भिन्नाभिर्विधिभि बुद्धया भिन्नासु कार्यपंक्तिसु ।
गायत्र्या सिद्ध मन्त्रस्य प्रयोगः क्रियते बुधैः ।।

बुद्धिमान पुरुष भिन्न-भिन्न कार्यों में गायत्री के सिद्ध हुए मन्त्र का प्रयोग भिन्न-भिन्न विधि से विवेकपूर्वक करता है ।

इस प्रकार शास्त्रों में गायत्री मन्त्र से होने वाले अनेक लाभों का विवरण कई स्थानों पर मिलता है । यह अनायास या गुणानुवाद ही नहीं है । मंत्रों के माध्यम से सिद्धि और भौतिक तथा आध्यात्मिक लाभ विज्ञानसम्मत है । अगले पृष्ठों पर हम देखेंगे कि मंत्रों के माध्यम से विश्वव्यापी ब्रह्माण्ड चेतना की शक्ति से किस प्रकार लाभ मिलता है ।

देव शक्तियों का केन्द्र-बिन्दु - गायत्री

भारतीय अध्यात्म-शास्त्र में अनेक देवी देवताओं की चर्चा है । कई स्वरूप और आकार-प्रकार के देवताओं का उल्लेख है । उनके प्रथक्-प्रथक् पूजा विधान, स्वभाव और प्रतिफल भी बताये गये हैं । इस सन्दर्भ में यह जान लेना आवश्यक है कि वे सभी एकाङ्गी एवं अपूर्ण हैं । शरीर में अनेक अवयव होते हैं । उनके स्वरूप एवं कार्य विधान भी अलग-अलग है । पर वे अन्ततः हैं एक ही शरीर के अन्तर्गत । उन सब पर नियन्त्रण एक मस्तिष्क ही करता है, पर हृदय ही उन सब का पोषण करता हैं । यों देखने भर को उनकी स्वतन्त्र सत्ता दृष्टिगोचर होती है, पर वस्तुतः उनका स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं है । समग्र शरीर के स्वस्थ, अस्वस्थ, सबल-निर्बल, जीवित अथवा मृत होने पर उन अवयवों की भी वही गति होती है । समस्त देवता एक ही महत्त्व के अन्तर्गत हैं ।

परब्रह्म की एक-एक शक्ति को एक-एक देवता के नाम से सम्बोधित किया गया है । जिस प्रकार जिह्वा में वाणी, नेत्रों में दृष्टि, मस्तिष्क में बुद्धि भुजाओं में बल, पैरों में गति होती है, उसी प्रकार परब्रह्म की अगणित शक्तियाँ पृथक्-प्रथक् देवताओं के नाम से कही गई हैं । यों उन्हें सशक्त बनाने के लिए, इन प्रथक् अवयवों की भी तेल-मालिस आदि प्रथक्-प्रथक् क्रियाओं द्वारा भी की जा सकती है, पर वास्तविकता को समझने वाले शरीर की मूल जीवनी-शक्ति, पाचन-क्रिया, रक्त-शुद्धता आदि पर ही ध्यान केन्द्रित करते हैं । क्योंकि जड़ को सींचने से सभी पत्तियाँ, डालियाँ स्वयंमेव हरी रह सकती हैं ।

देवताओं को पृथक्-पृथक् पूजन भी उपयोगी है, उसमें कुछ हानि नहीं, पर दूरदर्शी जड़ सींचने की तरह परब्रह्म की मूल शक्ति पर ही ध्यान केन्द्रित करते हैं और पृथक् दीखने वाले सभी अवयवों को सशक्त परिपुष्ट बनाते हुए, उनके द्वारा प्राप्त हो सकने वाले लाभों से लाभान्वित होते हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गायत्री परब्रह्म की मूलभूत एवं अवच्छिन्न शक्ति है । ब्रह्म तत्व में गतिशीलता उसकी ब्राह्मी-शक्ति गायत्री ही उत्पन्न करती है । उसी से अन्य सब अंश-अवयवों को देवताओं को पोषण मिलता है । इसलिए तत्त्वदर्शी जगह-जगह भटकने की अपेक्षा एक ही प्रमुख आश्रय का अवलम्बन करते हैं और जो दर-दर भटकने पर मिल सकता है, उसे एक ही स्थान पर प्राप्त कर लेते हैं । अन्यान्य देवताओं की पूजा-अर्चना से जो अधिक लाभ मिल सकते हैं, उनकी अपेक्षा अनेक गुना लाभ मूल शक्ति की उपासना का है । गायत्री मूल है । देव शक्तियाँ उसकी शाखा-उपशाखा मात्र हैं । वे शक्तियाँ भी अपनी समर्थता मूल-केन्द्र से ही उपलब्ध करके इस योग्य बनती हैं कि अपना क्रिया-कलाप विधिवत् जारी रख सकें, किसी साधक को अभीष्ट वरदान दे सकें ।

इस तथ्य को पुराणों तथा साधना शास्त्रों में इस प्रकार वर्णन किया गया है कि सब देवता गायत्री की उपासना एवं स्तुति करते हैं और उसी महाभण्डार से जो उपलब्ध करते हैं, उसका अनुदान अपने क्षेत्र में वितरित करते हैं ।

इस सन्दर्भ में उपलब्ध अनेक विवरणों में से कुछ नीचे प्रस्तुत किये जाते हैं-

सर्ववेद सारभूता गायत्र्यास्तु समर्थना ।
ब्रह्मादयोऽपि संध्यार्या तां ध्यायन्ति जपन्ति च ।।

-देवी भागवत १६ ।१६ ।१५

गायत्री उपासना वेदों का सारभूत तत्त्व है, ब्रह्मा, विष्णु, महेश आदि सभी देव संध्या सहित गायत्री की आराधना कर ते हैं ।

मा भयार्त्ता महेशान ब्रह्म विष्णु महेश्वराः ।
तिष्ठामि सततं देवा भित्याहुरहमव्यया ।।
सच्चिदानन्द रूपाहं ब्रह्मवाहं स्फुरन्प्रभम् ।
मम नास्ति कदा निस्सदेहास्तु तिष्ठत ।।
यद्रूपं दृष्टमस्माकं युष्माभिः परमं मतम ।
ध्यात्वा यद्रूपमतलम् जपं कुरुत मे मनुम् ।।
तदेव मंगल लाभं भविष्यति महाप्रभम् ।
इदानी ब्रह्मणो देहे विश विष्णो स्थिरो भव ।।
अहो महेश देवेश ब्रह्मदेहे प्रवरय तु ।
यावत्सृष्टिं कुरुष्वेशच्चेमां ज्ञानक्रियामयीम् ।।

अर्थ- देवगण ! जब माता गायत्री के वियोग में करुण क्रन्दन करके प्रार्थना करने लगे तो माता ने उनसे कहा- हे ब्रह्मन् ! हे विष्णो ! हे महेश्वर ! तुम लोग मुझे न देख पाकर भ्रम से पीड़ित मत होओ । मैं सदा ही तुम्हारे समीप में ही संस्थित रहा करती हूँ । मैं कहीं भी तुमको छोड़कर अन्यत्र नहीं जाया करती, क्योंकि मेरा स्वरूप नित्य एवं अविनाशी है । आप लोगों को भली-भाँति समझ लेना चाहिए कि मैं ही सच्चिदानन्द स्वरूप प्रकाशयुक्त कान्ति से समन्वित ब्रह्म हूँ । मेरा नाश कभी भी नही होता है । मैं सर्वदा स्थित रहा करती हूँ । इसमें लेशमात्र भी संशय नहीं है । आप लोगों ने जो मेरा परम निर्मल स्वरूप देखा है, उसी सुन्दर मेरे स्वरूप का ध्यान करके मेरे मन्त्र का भक्ति भाव से जाप किया करो । मन्त्र साक्षात् मेरा ही स्वरूप तो है ही- मन्त्र (गायत्री) के जापी के पास मैं सदा विद्यमान् रहती हूँ । इसी से गायत्री मन्त्र के जप से आपका परम मंगल होगा । अब हे विष्णो ! तुम ब्रह्म के देह में प्रवेश करके स्थिर रहो । हे महेश ! तुम भी ब्रह्म की देह में प्रवेश करो । जब तक ईश्वर ज्ञान और क्रियामयी सृष्टि का आरम्भ नहीं करते हैं, तब तक आप लोग इनके ही देह में अपना निवास करके रहो । उस समय समस्त देवगणों को वेद जननी माता गायत्री देवी ने इस प्रकार से सांत्वना प्रदान कर आदेश दिया तभी देवों को शान्ति हुई ।

आवयोर्जगतांचैव मंगलाय पदाम्बुजम् ।
महामुक्ति प्रदं चैव त्वदीयमति निर्मलम् ।।
अदृश्यमपि गोप्यं हि मातुराकार वर्जितम् ।
कथन्तत्पूर्जायष्यावः सर्वमंगलदायकम् ।।
भूमौ स्थानं कल्पयस्व यजितुं तत्पदाम्बुजम् ।
सर्वदा पूजयिष्यावो महामंगल कारणम् ।।
आवयोश्चौव सर्वेषां महामुक्ति फलाय च ।
तदावयो र्दानवाद्याः किं करिष्यन्ति चाशुभम् ।।
अवश्यं वै तरिष्या वो दुस्तरं त्वत्पदार्चनात् ।

अर्थ- एक बार ब्रह्मा और विष्णु दोनों महान् देवों ने सावित्री देवी का स्तवन किया था । इन दोनों देवेशों ने गायत्री देवी से कहा-"हे माता ! हमारे और समस्त जगत् के कल्याण के निमित्त आपके

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

महामुक्ति प्रद, अत्यन्त निर्मल- अदृश्य और अकारहीन एवं गेय तथा परमं मंगलदायक महान् आपके चरणों की अर्चा हम किस प्रकार से करें । आप अपने चरण कमलों को पूजन के लिए पृथ्वी पर किसी स्थल की कल्पना करें । हम उसी स्थान पर एकत्रित होकर महान् मंगल के कारण स्वरूप एवं महामुक्तिपद आपके चरण कमलों की अर्चना करेंगे । इससे हमारा, समस्त देवगणों का तथा सभी जीवों का महान् मंगल होगा । आपके चरणों का अर्चन करने पर दानवादि हमारा कुछ भी अनिष्ट नहीं कर सकेंगे । हम आपके चरणों की पूजा करके परम दुस्तर दुःखों से भी निस्तार प्राप्त कर सकेंगे । इसमें तनिक भी संदेह नहीं है ।''

अति संगुप्तभावेन ईप्सितं प्राप्यते फलम् ।
देव दानव गन्धर्वैरन्यैरपि महामते ।।
यथा न शायते कैश्चितथार्चां त्वं कुरुष्व मे ।
सर्वायद्भयः परित्राणं कारष्यामि चते सदा ।।

अर्थ- भगवती वेद जननी ने कहा - ''अत्यन्त गुप्तभाव से पूजा करने पर अभीष्ट फल की प्राप्ति होती है । देव-दानवादि अन्य सभी को पूजा करने पर फल की प्राप्ति होती है- इसमें सन्देह नहीं है । जिसको दूसरा मनुष्य न जान सके, उसी भाँति मेरी पूजा करो । ऐसा करने पर सभी आपदाओं से मैं रक्षा करूँगी ।''

इत्युक्त्वा वै सुरान्वेधा निगमानादि देश ह ।
देहयुक्तान् स्थितानग्रे सुरकार्यार्थ सिद्धये ।।
स्तुवन्तु परमां देवीं ब्रह्मविद्यां सनातनीम् ।
गूढ़ाङ्गी च महामायां सर्व कार्यार्थ साधनीम् ।।

इस प्रकार से ब्रह्मा जी ने देवगणों को भगवती की आराधना करने का उपदेश प्रदान कर फिर वेदों को आदेश दिया था, जो उनके सामने देह धारण करके देवगण के कार्य करने की सिद्धि के लिये उपस्थित थे । ब्रह्मा ने कहा-''हे निगमो ! आप सब परात्परा, सनातनी, गूढ़ अंगों वाली, सम्पूर्ण कार्यों की सिद्ध करने वाली महामाया ब्रह्मविद्या देवी का स्तवन करो ।

नमो देवि महामाये विश्वोत्पत्तिकरे शिवे ।
निर्गुणे सर्वभूतेशि मातः शंकर कामदे ।।
त्वं भूमिः सर्वभूतानां प्राणः प्राणवतां तथा ।
धी : श्रीः कान्तिः क्षमा शान्तिःश्रद्धा मेधा ।।
-धृतिः स्मृतिः ।।
त्वमुद्गीथेऽर्धमात्रासि गायत्री व्याहृतिस्तथा ।
जया च विजयाधात्री लज्जाः कीर्तिः स्पृहा दया।।
त्वांसंस्तुम्बोऽस्व भुवनत्रय संविधानदक्षां दया रस युतां जननीं जनानाम् ।
विद्यां शिवां सकललोकहितां वरेण्यां वाग्बीज वासनिपुणां भवनाश कर्त्रीम् ।
ब्रह्मा हर शौरि सहस्त्र नेत्र वाग्वाह्नि सूर्याभुवनाधिनाथा ।
ते त्वत्कृताः सन्ति ततो न मुख्या माता यतस्त्वं स्थिरजंगमानाम् ।।

अर्थ- सम्पूर्ण मूर्तिमान् वेदों ने ब्रह्मा का आदेश पाकर देवी का स्तवन किया था । उन्होंने कहा- ''हे देवि ! हम सब आपको प्रणाम करते हैं । आप महामाया हैं और हे शिवे ! आप इस समस्त विश्व की उत्पत्ति को करने वाली हैं । आप गुणों के विकार से रहित और समस्त भूतों की स्वामिनी हैं । हे माता ! आप शंकर की कामनाओं को पूरा करने वाली हैं । सब भूतों की आप भूमि अर्थात् आकार हैं तथा प्राणधारियों की प्राण स्वरूपा हैं । आप ही बुद्धि, श्री, कान्ति, क्षमा, शान्ति, श्रद्धा, मेधा, धृति, स्मृति है और आप उद्गीथ अर्धमात्रा हैं । आप गायत्री हैं तथा आप ही व्याहृति हैं । आपका स्वरूप ही जया-विजया, धात्री, लज्जा, कीर्ति, स्पृहा और दया के रूप में होता है । हे अम्बे ! तीनों भुवनों के विधान में कुशल दया से परिपूर्ण और समस्त प्राणियों की जननी आपकी हम सब स्तुति करते हैं । आप ही विद्या हैं- शिवा और सम्पूर्ण लोकों का उपकार करने वाली हैं । आप वरेण्य-वाग्वीज में निवास करने में दक्ष इस संसार के नाश करने वाली हैं । ब्रह्मा, शिव, विष्णु, इन्द्र, वाणी, अग्नि, और सूर्य में सब भुवनों के अधिनाथ है, किन्तु इन सबको बनाने वाली 'आप ही हैं और इनकी मुख्यता कुछ भी नहीं हैं, क्योंकि आप इस विश्व के स्थावर और जंगम अर्थात् जड़-चेतन सबकी माता हैं और उत्पन्न करने वाली हैं ।

एक बार देव गुरु वृहस्पति जी ने देवसभा में अपने शिष्य देव पुरुषों को गायत्री का माहात्म्य बताते हुए कहा कि देव लोक पहुँचाने और देवत्व को स्थिर रखने का श्रेय गायत्री माता को ही

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्राप्त है । उसी का आश्रय लेकर आत्मा को अन्धकार भरे नरकों से छूटकर सुरलोक का आनन्द प्राप्त होता है । परा और अपरा विद्या के रूप में भगवती के सुविस्तृत आवरण की उन्होंने चर्चा की और कहा कि आप लोगों की तरह ही जो अन्य लोग इस अवलम्बन को ग्रहण करेंगे, वे उच्च लोकों की भूमिका प्राप्त करेंगे और आत्मानन्द का सुख भोगेंगे ।

दुःखस्यान्तोऽद्य युष्माकं दृश्यते नात्र संशयः ।
तस्मिन् शैले सदा देवी तिष्ठतीति मयाश्रुतम् ।।
स्तुता सम्पूजिता सद्यो वांच्छितार्थान्प्रदास्यति ।
निश्चयं परमं कृत्वा गच्छध्वं वै हिमालयम् ।।
सुराः सर्वाणि कार्याणिः सावः कामं विधास्यति ।

अर्थ- सुरगुरु ने देवताओं से कहा- "आज मुझे तुम्हारे दुःखों का अन्त दिखलाई देता है । इसमें लेश मात्र भी कोई संशय नहीं है । मैंने ऐसा सुना है कि उस परम पावन पर्वत पर वह देवी सदा निवास किया करती है । जब वहाँ आपके द्वारा संस्तुत एवं भली-भाँति समर्चित होगी तो वह आपको अभीष्ट अवश्य ही प्रदान कर देगी । इसलिए पूर्ण और पक्का निश्चय करके आप लोग हिमालय पर देवी की समाराधना के लिये चले जाइये ।

देवताओं ने सुर गुरु वृहस्पति जी के आदेशानुसार हिमालय पर जाकर भगवती की उपासना की और उसके फलस्वरूप प्राप्त अनुभवों के आधार पर अपने भाव व्यक्त करते हुए स्तवन किया-

इति तस्य वचः श्रुत्वा देवास्ते प्रययुर्गिरिम् ।
हिमालयं महाराज ! देवी ध्यान परायणाः ।।
माया बीजं हृदा नित्यं जपन्तः सर्व एव हि ।
नमश्चक्रुर्महामायां भक्तानाम्भय प्रदाम् ।।
तुष्टुवुः स्तोत्रमंत्रैश्च भक्तया परमयायुताः ।

अर्थ- इस प्रकार का उनका वचन सुनकर वे समस्त देवगण गिरिराज हिमालय पर चले गये । हे महाराज ! वहाँ पर सब देवता देवी के ध्यान में तत्पर हो गये और माया बीज का हृदय में ध्यान करके मन्त्र का जाप करने लगे । अपने परम भक्तों को अभय प्रदान करने वाली महामाया को नमस्कार किया तथा अत्यन्त भक्ति की भावना से संयुक्त होकर स्तोत्रों और मन्त्रों के द्वारा उसका स्तवन किया ।

ते किं न मन्दमतयो यतयो विमूढास्त्वां ये न विश्व - जननी समुपाश्रयन्ति ।
विद्यांपरां सकल काम फलप्रदां तां मुक्ति प्रदां विबुधवृन्द सुवन्दि लाङ्घ्रिम् ।

अर्थ- देवों ने स्तुति की - "हे देवि ! वे यतिगण मन्द बुद्धि वाले ही हैं और महामूढ़ हैं, जो समस्त विश्व की जननी आपका आश्रय नहीं लेते हैं । आप तो परा विद्या हैं, सब कामनाओं को पूर्ण करने वाली- मोक्ष प्रदान करने वाली हैं । सब देवगण आपके चरणों की वन्दना करते हैं ।"

देवि ! त्वदंङ्घ्रि भजने न जवा रताये संसार कूप पलिताः पतिताः किलामी । ते कुष्ठ गुल्म शिर आधियुक्ता भवंति दारिद्रय दैन्य सहिता रहिता सुखौद्यैः ।। ये काष्ठभार वहने यवसावहारे कार्य्ये भवन्ति निपुणा धनदारहीनाः जानीमहेऽल्पमतिभिर्भवदंघि सेवा पूर्वे भवे जननि । तैर्न कृत कदापि ।। किमत्रास्ति चित्रं यदम्बासुतें स्वं मुदा पालयेत्पोषयेत्तप्यगेव । यतस्त्वं जनित्री सुराणांसहाया कुरुष्वैक चिन्तेन कार्य समग्रम् । ननाते गुणानापियत्तां स्वरूपं वयं देवि ! जानीमहे विश्ववन्द्ये ! कृपामा त्रमित्येव मत्वा तथास्मांन् भयेभ्यः सदा पाहिपांतु समर्थे ।।

अर्थ- देवगण ने प्रार्थना की हे देवि ! जो मनुष्य इस संसार में आकर आपके चरणों का सेवन करने में रति नहीं रखते हैं, वे निश्चय ही इस संसार रूपी कूप में गिरे हुए महान् पतित हैं । ऐसे पुरुष सदा कुष्ठ-गुल्म और मस्तक की आधि से युक्त रहा करते हैं और सर्वदा दरिद्रता-दीनता आदि से घिरे हुए रहकर सुखों के सागर से वंचित ही रहा करते हैं । जो काष्ठ के भार वहन करने और भवसागर के कार्य में निपुण होते हैं, वे धन और दारा से हीन हुआ करते हैं । हम ऐसा समझते हैं, उन अल्पमति वालों ने हे जननि ! अपने जन्म में आपके चरणों का आश्रय नहीं लिया है । इसमें कुछ भी आश्चर्य की बात नहीं है कि माता अपने पुत्र पर प्रेम कर उसका पोषण एवं पालन करती है । आप तो देवों की जननी हैं और सदा सहायता करने वाली रही हैं । देवगणों का सभी कार्य आप एक चित्तता के साथ किया करती हैं । हे देवि ! आपके इतने अनन्य शुभ गुण हैं कि उनकी गणना नहीं की जा सकती

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है और हे विश्व के द्वारा वन्दना करने के योग्य माँ ! हम लोग आपके पूर्ण स्वरूप का भी ज्ञान नहीं रखते हैं । हम तो केवल अपनें आपको आपकी कृपा का पात्र ही समझते हैं । आप रक्षा करने में पूर्ण समर्थ हैं । अतएव सब प्रकार के भयों से सर्वदा हमारा त्राण करती रहें - यही हम समस्त देवगणों का आपके श्री चरणों की सेवा में एकमात्र विनम्र निवेदन है -

जलादि सकलं तत्त्वं ब्रह्माण्डादिक विस्तरम् ।
देवादि सकलं पूर्णं दिग्विदिक च चराचरम् ।।
कार्य्य च कारणं सर्वं तथो विष्णोः समुद्भवः ।
सर्वं जानाति हि ब्रह्मा मत्कृतं मायया पुनः ।।
किन्तु सर्वं हि मिथ्यैव मातुर्माया हि केवलम् ।
तां मायां हि भजन्ति ये तत्परं यान्ति ते नराः ।।
तुष्टा सा परमा माया मुक्ति मात्रं प्रयच्छति ।।
रुष्टा सा परमा माया भूमियोगं प्रयच्छति ।।
तस्याः पादास्तु जे नूनं वश्या मुक्तिः समाग्रिता ।
यस्य तुष्टा महादेवी मम मीता महेश्वरी ।।
ददौ तस्मै च त्वं मुक्तिं महामाया देवेश्वरी ।।

अर्थ- सब जल प्रभृति तत्त्व और ब्रह्मांड आदि समस्त विस्तार- सम्पूर्ण देवगण आदि एवं चराचर तथा कार्य कारण तथा विष्णु की उत्पत्ति यह सभी कौशल ब्रह्मा को माता गायत्री कहती हैं कि मेरी माया से ही अवगत हुआ है । किन्तु यह सभी मिथ्या है, केवल गायत्री माता की माया का ज्ञान ही प्राप्त करना चाहिये । जो मनुष्य उसकी माया महिमा को भजता है, वह सांसारिक माया को पार कर लेता है अर्थात् उसका सर्वतोभाव से परम कल्याण होता है । यदि वह मातेश्वरी परम तुष्ट हो जाती है तो निस्सन्देह मुक्ति प्रदान किया करती है । यदि वह रुष्ट होती है तो फिर योनि योग प्रदान करती है । उसके चरण कमलों में मुक्ति वश्या होकर आश्रय किया करती है । वह माता गायत्री देवी जिस पर सन्तुष्ट होती है । उसी को प्राप्त होती है ।

देवशक्तियाँ भी गायत्री से अनुगृहीत

गायत्री उपासना आत्म-शक्ति का सरल किन्तु श्रेष्ठतम उपाय है । जो इसके लिए प्रयत्न करते हैं वे समर्थ, सफल और सार्थक जीवन जी कर धन्य हो जाते हैं । इतना ही नहीं गायत्री मंत्र की शक्ति से उनकी अनेकानेक कठिनाईयों का निवारण हो जाता है । इतिहास पुराणों में ऐसे अनेक कथानक भरे पड़े हैं जिनमें बताया गया हैं कि देव शक्तियों ने भी संकट एवं निराशा की घड़ियों में आत्मशक्ति की मूर्तिमान देवी का आश्रय लिया और उसकी सहायता से आपत्तियों के निवारण में सफल रहे हैं ।

देवाधिराज इन्द्र को पराजित स्थिति में से उबार कर विजयी बनाने में आदि शक्ति भगवती सावत्री का योगदान रहा है । ऋषियों महापुरुषों एवं सामान्य मनुष्यों ने इस शक्ति के आधार पर कैसे पराजित स्थिति से छुटकारा पा कर विजयी बनने में सफलता प्राप्त की, इसके कुछ प्रसंग इस प्रकार हैं -

मातः प्रसीद सुमुखी भव दीनसत्वां स्वायस्व, नो जननि दैत्य पराजितार्न्वं । त्वं देविनः शरणदा भुवने प्रमाणा शक्तासि दुःख शमनेऽखिल वीर्ययुक्ते । ध्यायन्ति येऽपि सुखिन नितरां भवन्ति । दुःखान्विता विगत शोकभयास्तथान्ये । मोक्षार्थिना विगतमान : विमुक्त सगाःसंसारिवारधजल प्रतरन्ति सतः । त्वं देवि विश्व जननि प्रथित प्रभावा संरक्षणाय मुदिताऽऽत्ति हर प्रतापा ।

इन्द्रादि देवगण सावित्री देवी का स्तवन करते हुए कहते हैं- 'हे माता ! आप प्रसन्न होइये और सुमुखी अर्थात् प्रसन्न मुख वाली होकर कृपा कीजिये । हे जननि ! हम हीन तत्व वालों की आप रक्षा कीजिये । जिन हम लोगों को दुष्ट दैत्य गण अहर्निश पराजित करने की चेष्टा किया करते हैं । हे देवि !आप लोक में शरण में आये हुओं की सुरक्षा करने वाली प्रसिद्ध हैं, और आप समस्त प्रकार के दुःखों को शमन करने में पूर्ण समर्थ हैं । आप परिपूर्ण पराक्रम से युक्त है । जो भी कोई आपका ध्यान किया करते हैं, वे अत्यन्त सुखी हो

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जाते हैं । जो भी कोई दुःखों से युक्त होते हैं, वे आपकी कृपा से शोक और भय से छुटकारा पा जाया करते हैं । जो मोक्ष की इच्छा रखने वाले हैं, वे मान और संग से रहित होकर सन्त पुरुष आपके प्रसाद से इस संसार रूपी समुद्र के जल को पार कर जाते हैं । हे देवि ! आप इस सम्पूर्ण विश्व की माता है । आपका यह प्रभाव सर्वत्र प्रसिद्ध है कि आप दुःखियों का संरक्षण करने के लिए ही प्रकट हुई हैं और आपका प्रताप समस्त दुःखों को मिटा देने वाला है ।

त्वत्तः सर्वमिदं विश्वं स्थावरं जंगम तथा ।
अन्ये निमित्त मात्रास्ते कर्तारस्तवः निर्मिताः ।

अर्थ- हे देवि ! यह सम्पूर्ण चराचर विश्व आपसे ही समुत्पन्न हुआ है । अन्य ब्रह्मादि जो इसके कर्त्ता हैं, वे तो केवल इसके निमित्त मात्र ही हैं, क्योंकि उनको भी आपने ही बनाया है ।

देवोद्याने पराशक्तेः प्रासादमकरोद्धरि : ।
पद्मरागमयी मूर्ति स्थापयामास वासव : ।।
त्रिकाल महत पूजा चक्रुः सर्वेऽपि निर्जराः ।
तदा प्रभृति देवानां श्री देवी कुल देवतम् ।।
विष्णु च त्रिभुवन श्रेष्ठं पूजया मास वासवः ।
ततो हते महावीर्यं वृत्रे देवभयकरे ।।

अर्थ- इसके अनन्तर इन्द्र ने देवोद्यान में पराशक्ति देवी का एक परम सुन्दर प्रासाद का निर्माण कसाया था और उसमें एक पद्मपुराग मणि की प्रतिमा को निर्मित करा कर संस्थापित किया था । वहाँ पर उस देवी की समस्त देवगण तीनों काल में महती अर्चना करते थे । उसी समय से देवताओं की श्रीदेवी कुल देवता मानी जाने लगी थी । उस महान् भयंकर शत्रु देवगण को त्रास देने वाले अत्यन्त पराक्रमी वृत्रासुर के वध हो जाने पर इन्द्र ने त्रिभुवन में श्रेष्ठ भगवान् विष्णु का भी पूजन किया था ।

देवासुर संग्राम में एक और अवसर पर देवताओं ने पराशक्ति का आश्रय लिया था । जिसका उल्लेख इस प्रकार आता है ।

पूर्व मदोद्धता दैत्या देवैर्युद्धं तु चक्रिरे ।
शतवर्ष महाराज महाविस्मय कारकम् ।
पराशक्ति कृपानेशात् देवैर्दैत्या जितायुधि ।

अर्थ- प्राचीन काल में कब से उद्धृत दैत्यों ने देवताओं से घोर युद्ध किया था । यह महाघोर युद्ध कोई सौ वर्षों तक विस्मय उत्पन्न करता हुआ चला था । उस समय पराशक्ति की कृपा से ही देवगणों ने युद्ध में दैत्यों को पराजित किया था । इस विजय के बाद देवी ने देवताओं को अभिमान रहित होकर आदिशक्ति की उपासना करने के लिए कहा-

अमः परं सर्व भावै हित्वा गर्वतु दैहजम् ।
मामेव शरणं यात सच्चिदानन्द रूपिणीम् ।।
इत्युक्त्वा च मतादेवी मूल प्रकृतिरीश्वरी ।
अन्तर्धान गता सद्यो भक्तया देवै रभिष्टुता ।
ततः सर्वे स्वगर्वतु विहाय पदपङ्कजम् ।
सम्यगाराधग्रामासु र्भगवत्या : परात्परम् ।
त्रिसन्ध्यं सर्वदा सर्वे गायत्री जप तत्पराः ।
यज्ञ भागादिभिः सर्वे देवी नित्यं सिषेविरे: ।

अर्थ- भगवती ने इन्द्र से कहा -''सर्वभाव से देह में उत्पन्न होने वाले अभिमान का त्याग करके परम सच्चिदानन्द स्वरूप वाली मेरी ही शरण ग्रहण करो । अर्थात्-केवल मेरी उपासना करो ।'' इतना कह कर मूल-प्रकृति ईश्वरी महादेवी अन्तर्ध्यान हो गई । देवगणों ने भक्ति भाव से उसकी स्तुति की थी । इसके अनन्तर समस्त देवों ने अपने गर्व का त्याग करके परस्परा भगवती के चरण कमल की आराधना की थी । सब लोग सर्वदा तीनों कालों में गायत्री का जप करने से तत्पर हो गये थे । सभी यज्ञ के भागों आदि के द्वारा नित्य देवी की सेवाराधना करने लगे थे ।

इस संसार में अगणित भौतिक और आध्यात्मिक कष्ट संकट एवं विघ्न है । जिनके कारण सत्यात्य स्तर का विघ्न रहित जीवन यापन कठिन हो जाता है । प्रयत्न करते हुए भी सफलता हाथ नहीं लगती । ऐसी दशा में हमें हताश न होकर भगवती आदि शक्ति-अध्यात्म सामर्थ्या - गायत्री माता का सहारा लेना चाहिये । आपत्तियों और संकटों के समय लोग नैतिक उपायों से उनके निवारण का उपाय तो करते हैं पर उनकी सामर्थ्य अतिस्वल्प एवं अस्थाई होती है । इसलिए निश्चयपूर्वक यह नहीं कहा जा सकता कि इन उपायों से वे संकट टल ही जायेंगे । अस्थिरता के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

लिए औषधियों का, शत्रु प्रतिरोध के लिए अस्त्र-शस्त्रों का, दरिद्रता निवारण के लिए व्यवसाय का, उलझनों को सुलझाने के लिए विद्याबुद्धि का और प्रयत्न पुरुषार्थ का हर कोई आश्रय लेता है । किन्तु इन उपायों का परिणाम अमोघ नहीं है । भौतिक पदार्थ और उपाय सभी स्वल्प सामर्थ्यवान् एवं अनिश्चत हैं इसलिए उनके परिणाम के बारे में भी कोई निश्चित नहीं कि अभीष्ट प्रतिफल मिल ही जायगा एवं प्रस्तुत संकट टल ही जायगा । आत्मबल ही वह शक्ति है, जिसकी क्षमता भौतिक माध्यमों की तुलना में असंख्य गुनी बढ़ी-चढ़ी है । इसलिए जब कोई संकट सामने आ खड़ा हो, जिसका निवारण अन्य उपायों से सम्भव न दीखता हो तो तब आत्म शक्ति का सहारा ही लिया जाना चाहिए । कहना नहीं होगा कि आत्मबल अभिवर्धन में गायत्री उपासना से अधिक कोई साधना सफल नहीं होती ।

देव शक्तियों की उपास्य गायत्री माता

संसार में जितनी भी शक्तियाँ हैं, उनमें आत्मबल का स्थान सर्वोपरि है । आत्मबल की शक्ति अमोघ है । उसकी क्षमता भौतिक साधनों और शक्तियों की तुलना में असंख्य गुना बढ़ी है । यही कारण है कि आदिकाल से अब तक जो भी कोई नर से नारायण के स्तर तक विकसित होकर पहुँच सका है, उसने आत्मशक्ति के उपार्जन पर ही मुख्य रूप से ध्यान दिया है ।

आत्मशक्ति के उपार्जन में गायत्री उपासना चमत्कारी ढंग से सफलता प्रदान करती है । इसीलिए देवताओं, महर्षियों से लेकर साधारण जनों तक हर किसी ने गायत्री का ही अवलम्बन लिया है । गायत्री उपासना के इतिहास क्रम पर ब्रह्मवैवर्त पुराण के २३वें अध्याय में आये सावित्र्युपाख्यान नाम से गायत्री महिमा पर एक सुन्दर कथानक आता है । महर्षि नारद भगवान विष्णु से पूछते हैं-भगवान गायत्री उपासना का इतिहास क्रम किस प्रकार चला । इसके उत्तर में भगवान कहते हैं -

ब्रह्मणा वेद जननी पूजिता प्रथमे मुने ।
द्वितीये च देवगणैस्तत्पश्चाद्विदुषां गणै : ।
तथा चाश्वपतिः पूर्व पूजया मास भारते ।

अर्थात् - हे नारद, वेदजननी गायत्री को पहले ब्रह्मा ने फिर देवताओं ने, फिर गृहस्थी ब्राह्मणों ने उपासना की राजाओं में प्रथम अश्वपति ने उपासना की ।

अश्वपति का परिचय और उपासना का नियम विधान बताने के उपरान्त भगवान ने नारद जी से कहा -

साच राज्ञी महासाध्वी वशिष्ठ स्योपदे शतः ।
चकाराराधने भक्त्या सावित्रीश्चैव नारदः ।

राजा और रानी को सावित्री की आराधना करते हुए जब बहुत दिन व्यतीत हो गये तो एक दिन आकाशवाणी हुई कि तुम दश लक्ष गायत्री का विशेष जप करो ।

शुश्रावाकाशवाणीञ्च नृपेन्द्रश्चा शरीरिणीम् ।
गायत्रीदश लक्षं च जपं कुर्वीति नारद ।

आकाशवाणी सुनकर उनने दश लक्ष जप का विशेष अनुष्ठान प्रारम्भ किया ।

इसी बीच एक बार महर्षि पाराशर राजा अश्वपति से मिले और उनने राजा को गायत्री उपासना की महत्ता बतायी । और कहा-

दत्वा ज्ञान नृपेन्द्राय प्रययौ स्वालय मुनीः ।
राजा सम्पूज्य सावित्री ददर्श वर मा प्रच ।।

राजा को ज्ञान देकर मुनि आश्रम चले गये और राजा ने गायत्री की उपासना कर भगवती का साक्षात्कार और वरदान प्राप्त किया ।

भगवती गायत्री ने प्रकट होकर कहा-

जानामि ते महाराज यत्तो मनसि वर्तते ।
वांछित तव पत्न्या च सर्व दास्यामि निश्चितम् ।।
साध्वी कन्याभिलाषच करोति तव कामिनी ।
त्वं प्रार्थयसि पुत्र, च भवष्यति क्रमेण ते ।।

"राजन् मैं तुम्हारी और तुम्हारी पत्नी की अभिलाषा को जानती हूँ ।" तुम दोनों की कामनाओं को पूर्ण करूँगी । रानी कन्या की और तुम पुत्र की कामना करते हो तो क्रमशः तुम दोनों की कामना पूर्ण करूँगी ।

तदनुरूप उन्हें पुत्र तथा कन्या की प्राप्ति भी हुई । अन्यान्य महापुरुषों ने तथा देवताओं ने भी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गायत्री उपासना का अवलम्बन लिया है । उसमें उन्हें अभीष्ट आत्म-शक्ति प्राप्त हुई और उस शक्ति भण्डार के अधिकारी बन उनने अपने को ऐसा प्रकाशवान बनाया है जिसके प्रकाश से अभी तक संसार में सर्वतोमुखी प्रकाश आलोकित हो रहा दिखाई देता है ।

गायत्री वेद मातास्ति साद्या शक्तिर्मता भुवि :
जगतां जननी चैव तामुपोसेऽहमेवहि ।।

भगवान् शंकर कहते हैं- गायत्री वेदमाता है । यही आदि शक्ति कहलाती है । वही विश्व-जननी है मैं उसी की उपासना करता हूँ ।

प्रभावेणैव गायत्र्या: क्षत्रिय: कौशिको वशी ।
राजर्षित्वं परित्यज्य ब्रह्मर्षिपदमीयिवान् ।।
सामर्थ्यं प्राप चातुच्चैरन्यद्भुवन सजने ।
किंकिं न दद्याद्गायत्री सम्यगेवमुपासिता ।।
दुर्लभा सर्वमंत्रेषु गायत्री प्राणवान्विता ।
न गायत्र्यधिकं किंचित त्र्योषु परिगीयते ।

-स्कन्द पुराण-काशीखण्ड

"संयमी एवं तपस्वी क्षत्रिय-विश्वामित्र महर्षि गायत्री मंत्र की आराधना के प्रभाव से ही राजर्षि पदवी को त्यागकर ब्रह्मर्षि बन गये थे । फिर उन्होंने अन्यान्य लोकों की सृष्टि करने की श्रेष्ठ सामर्थ्य भी प्राप्त कर ली थी । अच्छी प्रकार से श्रद्धापूर्वक समाराधित गायत्री कौन-कौन सा लाभ प्रदान नहीं करती ? निस्सन्देह प्रणव मंत्र से युक्त गायत्री समस्त मन्त्रों में अतीव दुर्लभ है । इसलिए वेदत्रयी में गायत्री मन्त्र से बढ़कर अन्य कोई मन्त्र नहीं माना जाता ।"

गायत्र्येव तपोयोग: साधनं ध्यानमुच्यते ।
सिद्धीनां सा मता माता नात: किञ्चिद् वृहत्तरम् ।।

-गायत्री महिमा

भगवान शंकर गायत्री महामन्त्र का गुणगान करते हुए कहते हैं कि तप, योग साधन एवं सिद्धियों की जननी गायत्री से बढ़कर कुछ भी नहीं है ।

"किं किं न दद्यात् गायत्री सम्यगेवमुपाणिता "

-स्कन्द पुराण

मां की अनुकम्पा से गायत्री साधक को किसी प्रकार का अभाव नहीं रहता है ।

शंकर जी ही नहीं प्रत्येक प्रमुख देवता तथा भूमण्डल के सभी महापुरुषों ने अपनी साधना में गायत्री का आश्रय लिया है । भगवान कृष्ण का कथन है ।

जपतां जुह्वतां चैव नित्यं च प्रयतात्मनाम् ।
ऋषीणां परमं जप्त्यं गुह्यमेतन्नराधिप ।।

-महाभारत

"हे युधिष्ठिर! नित्य जप और हवन करने के लिये ऋषियों का परम मन्त्र गायत्री ही हैं ।

अवतीर्य रथात् तूर्णं कृत्वा शौच यथाविधि ।
रथमोचनमादिश्य सन्ध्यामुपविवेश ह ।।

-महाभारत उद्योग पर्व

"हस्तिनापुर को जाते समय कृष्ण जी ने रथ से उतर कर शौचादि क्रिया करके यथाविधि सन्ध्या की ।"

कृतोदकानुजप्यः स हुताग्नि समलंकृत ।

-महाभारत

"फिर हस्तिनापुर पहुँचकर उन्होंने स्नान, हवन और गायत्री जप किया ।"

सप्त-कोटि महामन्त्र गायत्री नायका: स्मृता: ।
आदि देव उपासन्ते गायत्री वेद मातरम् ।।

'सप्त कोटि महामन्त्रों में गायत्री सर्वोपरि सेना नायक के समान है । देवता इसी की उपासना करते हैं, यही वेदों की माता है ।

यज्ञ रक्षा के लिए महर्षि विश्वामित्र राम और लक्ष्मण को अपने आश्रम में ले जाते हैं तो प्रस्तुत कार्य के साथ उनका शिक्षण क्रम भी चलता है । महर्षि राम लक्ष्मण को प्रात: काल उठाकर गायत्री जप के लिए कहते हैं । रामायण में इसका बड़ा सुन्दर वर्णन आता है ।

कौशिल्या सुप्रजा राम पूर्वा संध्या प्रवर्तते ।
उत्तिष्ठ नरशार्दूल कर्तव्यम् दैवमाह्निकम् ।।
तस्य र्षे: परमोदारं वच: श्रुत्वा नरोत्तमौ ।
स्नात्वा कृतोदको वीरो जपेतु परमं जपम् ।।

"हे कौशिल्या के सुपुत्र राम ! अब संध्या का समय हो गया है । अत: हे नरशार्दूल ! उठ कर अपने नित्य कर्मों को करो । विश्वामित्र जी के ऐसे प्रेमयुक्त वचनों को सुनकर दोनों भाई उठ बैठे और स्नान करके गायत्री जप में तत्पर हो गये ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भगवान राम इस शिक्षा को गाँठ से बांध लेते हैं और नित्य नियमित रूप से गायत्री उपासना करते रहते हैं-

तथैव गच्छतस्तस्य व्यापायद्रजनी शिवा ।
उपास्य तु शिवां संध्यां विषयानत्यगाहत ।।

-रामायण, अयोध्या काण्ड-सर्ग ४९।२

इस प्रकार चलते हुये रामचन्द्र को रात व्यतीत हो गई, प्रातःकाल की संध्या करके वे दूसरे देश में गये ।

ततश्चीरोत्तरासङ्ग संध्यामन्वास्यपश्चिमस ।
जलमेवाददे भोज्यं लक्ष्मेणनाहृतं स्वयम् ।।

-अयोध्याकाण्ड सर्ग ५० ।४

इसके बाद रामचन्द्र ने चीर ओढ़ कर सायंकाल की सन्ध्या की और लक्ष्मण का लाया हुआ जल ग्रहण किया ।

भगवान राम ही नहीं भगवान कृष्ण भी गायत्री की नियमित उपासना करते थे । श्री मद्भागवत् के दशम् स्कन्ध षष्ठम् अध्याय में आता है-

अथाप्लुतोऽम्भस्यमले यथा विधि ।
क्रिया कलाप परिधाय वाससी ।
चकार संध्यापगमादि रुत्तमे ।
हुतानलो ब्रह्मा जजाय वाग्यतः ।।

भगवान कृष्ण ने निर्मल एवं पवित्र जल से स्नान कर तथा स्वच्छ वस्त्र एवं दुपट्टा धारण कर बड़ी श्रद्धा एवं कुशलता से संध्योपासनादि कर्म किया तदुपरान्त हवन करके मानसिक गायत्री जप करने लगे ।

संसार में अनेक देवताओं के रूप में जो अनेकों शक्तियाँ दृष्टिगोचर हो रही हैं, जिनकी सहायता से हमारा जीवन धारण, पोषण, अभिवर्धन एक श्रेय साधन हो रहा है वे सभी गायत्री महाशक्ति के अन्तर्गत आती हैं । इसे यों भी कहा जा सकता है कि वे गायत्री स्वरूप ही हैं । विश्वव्यापी जलतत्त्व ही नदी सरोवर से, कूपों, तालाबों, जलाशयों, हिमिशृंगों समुद्र और बादलों में विभिन्न रूप स्वाद और स्थिति में दिखाई पड़ता है। उसी प्रकार एक ही गायत्री महातत्त्व को अगणित देवशक्तियों के रूप में देखा और जाना जा सकता है ।

नारायणोपनिषद् में कहा गया है -

आदित्य देवा गन्धर्वा मनुष्या - पितरो सुरा तेषां सर्वभूतानां माता मेदिनी मातामही, सावित्री, गायत्री जगत्युर्वी पृथ्वी बहुला विद्याभूता ।

देव, गन्धर्व, मनुष्य, पितर, असुंर इनका मूल कारण अदिति अविनाशी तत्त्व है । यह अदिति सब भूतों की माता मेदिनी और मातामही है । उसी विशाल गायत्री के गर्भ में विश्व के सम्पूर्ण प्राणी निवास करते हैं ।

सभी देवशक्तियाँ उसी महाशक्ति के स्फुल्लिंग है । नदियाँ जिस प्रकार सागर से मिलने के लिए समुद्र की ओर दौड़ती हैं उसी प्रकार देवशक्तियाँ गायत्री महाशक्ति के विभिन्न-घटक-अपने अवतरण का प्रयोजन पूरा करते हुए उसी महाशक्ति से पुनः सामुज्य प्राप्त करते हैं और सम्बद्ध रहते हैं ।

गायत्री की साधना :-

त्रिदेवों की परम उपास्य- गायत्री महाशक्ति

देवताओं में त्रिदेव प्रमुख हैं । ब्रह्मा, विष्णु, महेश की उत्पादक, पोषक, संहारक शक्ति के द्वारा ही इस विश्व की जीवन विकास एवं परिवर्तन की प्रक्रिया चल रही है । इन तीन देवों की अपनी निज की क्षमता नहीं वरन् वह आद्यशक्ति भगवती से ही उधार ली गई है । चन्द्रमा की चमक अपनी नहीं, वह सूर्य की आभा से चमकता है और उस आभा का प्रतिबिम्ब हमें चन्द्रमा की चन्द्रिका के रूप में परिलक्षित होता है ।

इस तथ्य को उपरोक्त पुराण में कतिपय कथा उपाख्यानों द्वारा इस प्रकार प्रतिपादित किया गया है-

इस सन्दर्भ में कुछ प्रमाण इस प्रकार हैं-

ये स्तुवन्ति जगन्मातर्भवतीमम्बिकेति च ।
जगत्मयीति मायेति सर्वतेषां प्रसिद्धयति ।।

जो आपकी जगत्माता- जगत् की माता, अंम्बिका जगतमयी और इसी अनादि कारण शक्ति के रूप में स्तुति किया करते हैं, उनके समस्त कार्य सिद्ध हो जाया करते हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सर्वशक्तिः पराविष्णोर्ऋग्यजुः साम संज्ञिता ।
सैषा त्रयीतपत्यंहो जगतश्च हिनस्ति या ।।
सैष विष्णुः स्थितिः स्थित्यां जगतः पालनोद्यतः ।
ऋग्यजुः सामभूतोऽन्तः सवितुर्द्विज ! तिष्ठति ।।

सम्पूर्ण संसार को सृजन, पालन एवं संहारात्मक रूप में प्रकट करने वाली भगवती अपरा स्वयं सर्वतन्त्र, स्वतन्त्र, शक्ति है, सर्वशक्ति विष्णु की पराशक्ति एवं ऋग्यजुः और साम संज्ञा वाली है । यही त्रयी रूप में संसार में प्रकाशित होकर सृष्टिस्थिति और संहार करती है ।

मासि मासि खेर्या यस्तत्र तत्रहि सा परा ।
त्रयी मयी विष्णु शक्तिरनस्थानं करोतिवै ।।
ऋचः स्तुवन्ति पूर्वाह्णे मध्याह्ने च यजूंषि वैः ।
वृहद्रथन्तरादीनी सामान्यङ्गक्षये रविम् ।।
अंग सैषा त्रयी विष्णो ऋग्यजुः साम संज्ञिता ।
विष्णु शक्ति खथानं सदादित्ये करोति सा ।।

ब्रह्मा द्वारा रजोगुण धारण करने से सृजन, विष्णु द्वारा सत्त्व गुण को धारण करने से जगत् का पालन तथा सर्ग के अन्त में इस सम्पूर्ण विश्वाण्ड को अपने में लीन करने यह त्रिमूर्ति स्वरूप वाली है और सविता में ऋग् यजुः और सामभूत होकर यह निवास किया करती हैं । पूर्वाह्न में ऋक् मध्याह्न में यजुः और सायंकाल में वृद्धद्रथन्तरादि साम श्रुतियाँ सूर्य की स्तुति किया करती हैं । यही आदित्य में निवास करने वाली वेदत्रयी है ।

न केवलं रथेः शक्तिर्वैष्णवी सा त्रयीमयी ।
ब्रह्माऽथ पुरुषो रुद्रस्त्रयमेतत्त्रयी मयम् ।।
एवं सा सात्विकी शक्तिर्वैष्णवी या त्रयीमयी ।
आम समगणस्थं तं भास्वन्तमधितिष्ठति ।।

यह केवल रवि की शक्ति विष्णु स्वरूपिणी ही नहीं है । प्रत्युत ब्रह्मा, विष्णु और रुद्र इन तीनों से युक्त एवं त्रयीमयी है । इस प्रकार से यह त्रयीमयी आद्या शक्ति अपने सातों गणों में अवस्थित सूर्यदेव में समाविष्ट है ।

देवी भागवत पुराण में भगवती गायत्री महाशक्ति की महत्ता का सविस्तार वर्णन है । उसे समस्त देवताओं का उपास्य और समस्त मन्त्रों का शिरोमणि बताया गया है । अनादि काल से उसी की सर्वत्र महिमा गाई जाती है और उपासना को प्रधानता दी जाती रही है । शास्त्र-इतिहासों में ऐसा ही विवरण मिलता है और देवताओं द्वारा अपनी उपासना का रहस्योद्घाटन करते हुए, इसी महाशक्ति को अपना इष्टदेव प्रतिपादित किया जाता रहा है । शक्तियों का केन्द्र वस्तुतः यही महामन्त्र है । इसी की उपासना से मनुष्यों से लेकर देवताओं तक का कल्याण होना सिद्ध होता रहा है ।

तस्मान्नाहं स्वतन्त्रोऽस्मि शक्तियधीनोऽस्मि सर्वथा ।
तामेव शक्तिं सततं ध्यायामि च निरन्तरम् ।
नातः परतरं किञ्चिज्जानामि कमलोद्भव ।।

भगवान् विष्णु ने शक्ति स्वरूपा देवी की प्रशंसा करते हुये एक बार पद्मयोनि ब्रह्माजी से कहा था कि मै भी स्वाधीन नही हूँ और देवी की शक्ति की अधीनता में रहता हूँ । उसी के बलबूते पर सब कुछ करने की सामर्थ्य मुझमें है । अतएव में निरन्तर उसी का सर्वदा ध्यान किया करता हूँ, क्योंकि इससे परे हे कमलोद्भव ! मै किसी को नहीं जानता हूँ ।

तेन चाप्यहमुक्तोऽस्मि तथैव मुनिपुङ्गव ।
तस्मात्त्वमपि कल्याण पुरुषार्थासिहेतवे ।।
असंशय हृदाम्भोजे भज देवी पदाम्बुजम् ।
सर्व दास्यति सा देवी यद्यदिष्टं भवेत्तव ।
नारदेनैव मुक्तस्तु व्यासः सत्यवती सुतः ।।
देवी पादाब्ज निष्णातस्तपसे प्रययौ गिरौ ।

देवर्षि नारद जी ने व्यास महर्षि ने कहा कि ब्रह्मा जी ने फिर मुझसे भी, हे मुनियों में परम श्रेष्ठ ! यही देवी का प्रबल-शक्ति के विषय में कहा था । इसलिये हे कल्याण ! आप भी पूर्ण पुरुषार्थ प्राप्ति के लिये बिना किसी सन्देह के अपने हृदय कमल में उसी देवी का भजन करो । उसके चरण कमल की भक्ति से वह भगवती आपको जो-जो भी अभीष्ट होगा, वह सभी कुछ प्रदान करेगी । इस प्रकार से नारद के द्वारा कहे जाने पर सत्यवती के पुत्र व्यास जी देवी के चरणों में निष्प्राण होकर पर्वतों में तपश्चर्या करने के लिये चले गये थे ।

चिन्तयन्तु महामायां विद्या देवीं सनातनीम् ।
सा विधास्यति नः कार्य निगुणा प्रकृतिः परा ।।
ब्रह्म विद्यां जगद्धात्री सर्वेषां जननीं तथा ।
मया सर्वमिहं व्यास त्रैलोक्य सचराचरम् ।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

एक बार परम दु:खित देवी से ब्रह्मा जी ने कहा कि महामाया सनातनी भगवती विद्यादेवी का ध्यान करो । वही परा निर्गुण स्वरूपा हमारा सम्पूर्ण कार्य कर देगी । वह ब्रह्मा-विद्या, जगत् की धात्री और सब की माता है, जिसके द्वारा यह सम्पूर्ण चराचर त्रैलोक्य व्याप्त हो रहा है ।

गायत्री का ही दूसरा नाम सावित्री है । शास्त्रों में कही उसे गायत्री, कही सावित्री कहा गया है । आत्मकल्याण के क्षेत्र में जब उसे प्रयुक्त किया जाता है, तब गायत्री नाम से और लौकिक सुख, सुविधाओं की आम वृद्धि में जब उसका प्रयोग होता है, तब सावित्री कहते हैं । यह प्रयोग भेद से नामों में अन्तर आता है । मूलत: वह उसी एक महातत्व का वर्णन है । दिव्य-भाव सम्पन्न होने से उसे देवी कहते हैं और समस्त ऐश्वयों का उद्‌गम केन्द्र होने से उसे भगवती कहा जाता है । बार-बार एक ही शब्द का उच्चारण अटपटा लगता है, इसलिये साहित्यक सुविधा एवं सौन्दर्य की दृष्टि से गायत्री, सावित्री, देवी, भगवती आदि नामों का उल्लेख है । उसी महाशक्ति का आधार लेकर समस्त देव सत्तायें अपने कार्य संचालन में समर्थ हो रही हैं -

मन्त्राणां चैव सावित्री पापनाशे हरिस्मृति: ।
अष्टादश पुराणामां देवी भागवतं यथा ।।

समस्त मन्त्रों में सावित्री का मन्त्र सर्वोपरि एवं श्रेष्ठ होता है, जिस तरह हरि के स्मरण से पापों का नाश होता है और अठारह पुराणों में देवी भगवती पर्वोत्तम पुराण है, वैसे ही सावित्री मन्त्र होता है ।

न गायत्र्या: परो धर्मो न गायत्र्या: परन्तप: ।
न गायत्र्या: समो देवो न गायत्र्या: पाते मनु: ।।
गातारं त्रायते यस्माद गायत्री तेन सोच्यते ।

गायत्री से परे कोई भी नही है- गायत्री से परम अन्य कोई भी तपश्चर्या नही है । गायत्री के समान अन्य कोई भी देवता नही है । गायत्री का मन्त्र सब मन्त्रों में श्रेष्ठ है । जो कोई इस गायत्री गायन अर्थात् जाप किया करता है, उसकी यह सावित्री त्राण किया करती है । इसीलिये इसका गायत्री-यह नाम कहा जाता है ।

यस्या: प्रभावमखिलं नौह वैदधाता तो वा हरिर्नगिरिशोनहिं चाप्यनन्त: । अंशांशकी अपिचते किमुतान्य देवा स्तस्यै नमोऽस्तु सततं जगदम्बि काया : ।

जिस देवी का पूर्व प्रभाव ब्रह्मा, हरि, शिव और शेष कोई भी नही जानता है, इनके अंशांश भी नही जानते हैं । अन्य देवों की तो बात ही क्या ? उस जगत् की माता को सर्वदा नमस्कार है ।

समय-समय पर ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र ने माता गायत्री का स्तवन करते हुए अपनी क्षमता का मूल आधार इसी महाशक्ति को स्वीकार किया है । ऐसे उपाख्यानों तथा स्तवनों से इतिहास, पुराणों के अगणित पृष्ठ भरे पड़े हैं -

देवि त्वमस्य जगत: किल कारणं हि ज्ञातं मया सकल वेद वचोभिरम्ब । सांख्या वदन्ति पुरुषे प्रकृतिं च मां तां, चैतन्य भावरहितां जगतश्च कर्त्रीम् । किं तादृशासि कथमत्र जगन्निवासश्चै, तन्यता विरहितो विहितस्त्वयाऽद्य ।। नाद्‌यं तनोषि सगुणा विविध प्रकारं नो वेत्तिकोऽपि तन कृत्य विधान योगम् । ध्यायन्ति यां मुनिगणा: नियतं त्रिकालं सन्ध्येति नाम परिकल्प्य गुणा सुरेशि ।। बुद्धिर्हि बोध करणा जगतां सदा त्वं श्रीश्चासि देवि । सततं सुखदा सुष्णाम् । कीर्त्तिस्तथा मतिधृनी किल कान्तिरेव, श्रद्धा रतिश्च सकलेषु जनेषु मात: ।

ब्रह्मा जी भगवती सावित्री का स्तवन करते हुए कहते हैं - "हे देवि ! आप इस सम्पूर्ण जगत् की कारण स्वरूप हैं, इसका ज्ञान मैंने समस्त वेदों के वचनों से प्राप्त किया है । जनता और सांख्यवादी जिसको प्रकृति-पुरुष कहते हैं और उसको चैतन्य भाव से रहित जगत् को करने वाली बताते हैं । क्या आप ऐसी ही हैं ? यदि ऐसा ही है तो यह चैतन्य रहित जगत् का निवास कैसे किया है । आप सगुण होकर विविध बाह्य क्रिया करती हैं । आपके विधान के योग को कोई भी नहीं जान पाता है । मुनिगण आपको तीनों कालों में ध्यान किया करते हैं । हे सुरेशि ! इसीलिए आपका नाम सन्ध्या - यह परिकल्पित किया गया है । जगतों में बोध करने वाली, आप बुद्धि सदा सुरों को सुखद श्री हैं । हे माँ ! आप समस्त जनों में कीर्ति-मति धृति-श्रद्धा और रति रूप वाली हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

नातः परं किल वितर्द्धशतैः प्रमाणं प्राप्तं मया यदिह दुःखगतिं गतेन । त्वं चात्र सर्व जगतां जननीति सत्यं निहालुतां वितरता हरिणात्र दृष्टम् । त्वं देवि विदुषामयि दुर्विभाव्या वेदोऽपि नूनमखिलार्थ तया न वेद । यस्मात्त्व मुद्भवमसौ श्रुतिराप्नुवाना प्रत्यक्षमेवसकलं तृव कार्य मतत् । कस्तै चरित्रम खिलम्भुवि वेद श्रीमान् नाहं हरिर्नच भवो न सुरास्तथान्ये । ज्ञातुं क्षमाश्च मुनयो न ममात्मजाश्च दुर्वाच्य एव महिमा तव सर्वलोके । यज्ञेषु देवि ! यदि नाम न ते वदन्ति स्वाहेति वेद विदुषी हवने कृतेऽपि । न प्राप्नुवन्ति सततं मखमागधेयं देवास्त्वमेव विबुधेष्वपि वृत्तिहासि ।

अत्यन्त दुःखित दशा को प्राप्त करने वाले मैंने सैकड़ों ही वितर्क करके भी इससे अधिक अन्य कोई भी प्रमाण प्राप्त नहीं किया है । निद्रित अवस्था में पहुँचने वाले स्व हरि ने यही देखा है कि आप सम्पूर्ण जगतों की जननी हैं । हे देवि ! बड़े-बड़े वेदों के तत्त्व ज्ञाता, विद्वानों की भी समझ में आपका स्वरूप नहीं आता है । साक्षात् स्वयं कोई भी सम्पूर्णतया आपको नहीं जानता है । इस श्रुति का उद्भव भी आपसे ही हुआ है, आपका यह समस्त कार्य प्रत्यक्ष ही है । कौन-सा ऐसा बुद्धिमान् है, जो इस भूमण्डल में आपका पूर्ण चरित्र जानता है ? मैं स्वयं नहीं जानता हूँ, न विष्णु और न शिव ही जानते हैं । तथा अन्य सुर गण भी कोई आपके चरित्र को नहीं जानते हैं । मुनिगण और मेरे पुत्र कोई भी स्वार्थ नहीं हैं । आपकी महिमा समस्त लोक में अनिर्वचनीय ही है । हे देवि ! यज्ञों में वे ज्ञाता लोग स्वाहा, इस आपके नाम को नहीं कहते हैं वे हवन करने पर भी देवगण मख का भाग प्राप्त नहीं करते हैं । देवों की वृत्ति आप ही देवी हैं ।

जाग्रन्ति ये न तव देवि ! परं प्रभावं ध्यायन्ति हरिहराययपि मन्द चिन्तां । ज्ञातं मयाऽद्य जननि । प्रकट प्रमाणं यद्विष्णुरप्यतितरां विवशोऽद्यशैतं । धयास्त एव भुवि भक्तिपरास्तवांघ्रौ त्यक्त्वान्य देव भजनं त्वयि लीन भावाः । कुर्वन्ति देवि ! भजनं सकलं निकामं ज्ञात्व समस्त जननी किल कामधेनुम् । त्वं शक्तिरेव जगतामखिर प्रभावा त्वन्निर्मितं च सकलं खलुभाव मात्रम् । त्वं कीडरे निजविनिर्मित मोह जाले नाट्ये यथा विहरते क्वकूले वहोवै ।। विष्णु स्वयं प्रकटितः प्रथमं युगादौदत्ता च शक्ति रमलाखलुणनाय नातं च सर्वमखिलं विवशीकृतोऽद्य यद्रो चते तव त्थाम्ब करोषि नूनम् ।

सावित्री देवि की महिमा का वर्णन करते हुए ब्रह्मा जी कहते हैं, हे देवि ! जो आपका अतुल प्रभाव न जानते हैं, वे ही लोग आपको त्याग कर मन्दबुद्धिता के कारण हरि और हर का ध्यान, भजन किया करते हैं इस महीमंडल में वे पुरुष परम भाग्यशाली एवं धन्य हैं, जो अन्य देवों को छोड़कर आपके चरणों में भक्तिभाव से लीन रहते हैं । हे देवि ! आपको सब की माता और कामनाओं की पूर्ति करने वाली समझकर, समस्त जगत् आपका निष्काम भजन किया करता है । यह सम्पूर्ण जगत् आपका ही बनाया हुआ है । आप ही की शक्ति इसमें विद्यमान् है । एक नर की भाँति इसमें आप ही विहार किया करती हैं । विष्णु को आपने ही पालन के लिये प्रकट किया है और उसे शक्ति प्रदान की है, आपकी रुचि के अनुरूप ही वह सब करते हैं ।

भगवान विष्णु को अपने कार्य संचालन की शक्ति कहाँ से प्राप्त हुई ? इसका वर्णन इस प्रकार आता है कि एक बार उन्हें अन्तःप्रेरणा यज्ञ करने की हुई । उस समय यज्ञ से गायत्री तेज प्रादुर्भूत हुआ और उसने आकाशवाणी के माध्यम से वरदान देकर विष्णु को सामर्थ्य सम्पन्न बनाया । यह प्रकट ही है कि भगवान् राम और भगवान् कृष्ण जिनकी उपासना इन दिनों बहु प्रचलित है, विष्णु देव के ही अवतार हैं ।

एकस्मिन्समये विष्णु र्बैकुण्ठे संस्थितः पुरा ।
सुधासिन्धु स्थितं द्वीपं सस्मार मणिमण्डितम् ।।
यत्र दृष्टवा महामाया मनजश्चासादितः शुभः ।
यज्ञं कर्तु मनशचक्रे आम्बिकाया रमापतिः ।।
जुहुवुस्ते हविः कामं विधिवत्परिकल्पिते ।
कृतेतु विते होमे वागुवस्व हा शरीरिणी ।।
विष्णुं तदा समाभाष्य सुस्वरा मधुराक्षरा ।
विष्णो त्वं भव देवानां हरेः श्रेष्ठतमः सदा ।।
त्वो जनाः पूजयिष्यन्ति वरहस्त्वं भविष्यसि ।
अवतारेषु सर्वेषु शक्तिस्ते सहचारिणी ।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भविष्येति ममांशेन कार्यं प्रसाधिनी ।
साधयिष्यसि तत्सर्वं महत्त्व वरदानतः ।।
तास्त्वया नावमन्तव्या सर्वदा गर्वलेशतः ।
पूजनीयाः प्रपलेन माननीयश्च सर्वथा ।।

अर्थ- एक समय विष्णु बैकुण्ठ में विराजमान थे । उस समय उन्होंने सुधोदधि में मणियों से मंडित एक मण्डप का दर्शन किया था और वहाँ से ही महादेवी के मन्त्र को प्राप्त किया था । फिर रमा के स्वामी के हृदय में देवी का यज्ञ करने की प्रेरणा हुई । सविधि परिकल्पित हवि से होम किया । विस्तृत होम के बाद आद आकाशवाणी के द्वारा देवी ने कहा था, जिसको सुस्वर मधुराक्षरों में विष्णु ने सुना था । आकाशवाणी में कहा-"हे विष्णु ! मैं परम प्रसन्न होकर तुमको वरदान देती हूँ कि तुम हरि से भी श्रेष्ठ देवों में प्रमुख बन जाओगे । लोग तुम्हारी पूजा करेंगे और तुम मेरीकृपा से वरदान दे सकोगे । तुम जो भूभार हरणार्थ अवतार धारण करोगे, उनमें मेरी शक्ति तुम्हारे साथ रहेगी । मेरे ही अंश से वह समस्त कार्य सिद्ध करेगी । यह मेरा वरदान होगा कि वह सभी कुछ करेगी अतः तुम उसका अपमान गर्व में आकर मत करना और उसका सदा अर्चन एवं समादर करना ।

देवी की महिमा का वर्णन भगवान् विष्णु अपने मुख से इस प्रकार से करते हैं -

ज्ञातं मयाऽखिलमिदं त्वपि सन्निविष्टं त्वत्तोऽस्थ सम्भ वलयावपि मातरद्य । शस्तिश्च तेऽस्य करणे विनत प्रभा वा ज्ञाताधुना सकल लोकयीति नूनम् ।। विस्तीर्म्य सर्वमखिलं सदसद्विकारं संदर्शयस्य विकलं पुरुषाय काले । तत्वैश्च षोड़शभिरेव च सप्तभिश्च भासीन्द्रजालमिव नः किल रञ्जनाय ।।

हे माता ! मैंने भली भाँति समझ लिया है कि यह सम्पूर्ण विश्व आपके ही अन्दर सन्निविष्ट हो रहा है और अब आप ही से इसका सम्भव और लय भी होता है । इसकी रचना करने में आपकी शक्ति विस्तृत प्रभाव वाली है और अब यह जान लिया है कि आप निश्चय ही समस्त लोकों से परिपूर्ण हैं । सद् और असद् विकारों से युक्त इस विश्व का विस्तार करके समय पर पुरुष को आप इसका विकल स्वरूप दिखा देती हैं । सोलह और सात तत्वों से यह हमारे रंजन के लिये एक इन्द्रजाल की भाँति प्रतीत होता है ।

विद्या त्वमेव ननु बुद्धिमतां नराणां शक्तिस्त्वमेव किल शक्तिमतां सदैव । त्वं कीर्ति कान्ति कमलामल तुष्टिरूपा मुक्तिप्रदा विरतिरेव मनुष्यलोके । गायत्र्यसि प्रथम वेदकला त्वमेव स्वाहा स्वधा भगवती सगुणा धर्मात्रा । आम्नाय एव विहितो निगमो भवत्या संजीवनाय सततं सुर पूर्वजान्तम् ।

भगवान् विष्णु सावित्री देवी से कहते हैं कि जो बुद्धिमान् पुरुष हैं, उनकी विद्या आप ही हैं और जो शक्तिशाली हैं, उनकी शक्ति भी आपका ही स्वरूप है । इस मनुष्य लोक में आप ही कीर्ति-कांति और अमल, तुष्टि स्वरूपिणी मुक्तिप्रदा विभूति भी हैं । वेद की प्रथम कला गायत्री आप ही हैं । स्वाहा-स्वधा और सगुणा, अर्धमात्रा भगवती आप ही हैं । आपने देवों और पूर्वजों के रंजनार्थ आम्वाय और निगम का विधान किया है ।

भगवान् शिव भी सावित्री का स्तवन करते हुए कहते हैं -

भुविं विहाय तवान्तक सेवनं क इहवाञ्छिछति राज्यमकणकम् । त्रुटिरसौ किल याति युगात्मतां न निकटं यदि तेऽङ्घ्रि सरोरुहम् । तयसि ते निरता मुनयोऽमला स्तव विहाय पदाम्बुज पूजनम् । जननि ते ! विधिना किल वञ्चिताः परिभवो विभवे परिकल्पितः ।। न तपसा न हमेन समाधिना न च तथा विहितैः क्रतुभिर्यथा । तब पदाब्ज पराग निषेवणाद्भवति मुक्ति रजेभव सागरान् ।।

हे माता ! कौन ऐसा मूर्ख है, जो इस भूमण्डल में आपकी सान्निध्य-सेवा का परित्याग करके निष्कण्टक राज्य की इच्छा किया करता है, अर्थात् आपके समीप में स्थित रहकर सेवा के महत्त्व के सामने राज्य की प्राप्ति भी तुच्छ है । ऐसी त्रुटि फिर युगों तक दुःखद होती है, यदि कोई आपके चरण-कमल के समीप में नहीं पहुँचता है । जो मुनिगण आपके चरण-कमल का त्याग कर निरन्तर तपस्या करने में ही निरत रहा करते हैं हे जननि ! वास्तव में विधाता ने उन्हें वंचित ही कर दिया है, और

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विभव में भी उनका परिभव कर दिया है । तप, समाधि, दम तथा ऋतुओं के करने पर भी इस भवसागर से छुटकारा उस प्रकार का नहीं हो सकता है, जैसा केवल आपके चरण-कमलों का समाश्रय लेने से होता है ।

एवं सत्ययुगे सर्वे गायत्री जप तत्परा : तार हलेखयो चापि जपे निष्णात मानसाः ।।
न विष्णुपासना नित्या देदेनोक्ता तु कुत्रचित् ।
न विष्णु दीक्षा नित्यास्ति शिवस्योपि तथैवच ।।
गायत्र्युपासना नित्या सर्ववेदैः समीरिता ।
यया बिना स्वधः पातो ब्राह्मणस्यास्ति सर्वथा ।।
तावता कृतकृत्यत्वं नान्यापेक्षा द्विजस्य हि
गायत्री मात्र निष्णातो द्विजो मोक्षमवाप्नुयात् ।
युयदिन्यत्र वा कुर्यादिति प्राह मनुः स्वयम् ।।
विहाय तां तु गायत्रीं विष्णू पास्ति परायणः ।
शिवोवास्ति रतो विप्रो नरकं याति सर्वथा ।।
तस्मादाद्य युगे राजन् गायत्री जप तत्पराः ।
देवी पदाम्बुजरता आसन्सर्वे द्विजोसमाः ।।

अर्थ- सत्ययुग में सभी लोग गायत्री के जाप करने में तत्पर थे । अन्य युगों में भी जाप में सब निष्प्राण मन वाले थे । भगवान् विष्णु की उपासना नित्य है- ऐसा वेद में कहीं पर भी नहीं कहा गया है । विष्णु और शिव की दीक्षा भी नित्य नहीं है । केवल एक गायत्री की उपासना ही नित्य है - ऐसा सभी वेदों ने स्पष्टतया बतलाया है, जिसके बिना ब्राह्मण का तो सर्वथा अधःपतन हो जाता है । ब्राह्मण के लिये उतना ही अर्थात् गायत्री मन्त्र का जाप करना सफलता प्राप्त करने के लिये पर्याप्त होता है । उसे फिर अन्य किसी की अपेक्षा नहीं रहती है । केवल एकमात्र गायत्री की उपासना में निष्णात द्विज मानव जीवन के परम पुरुषार्थ स्वरूप मोक्ष को प्राप्त कर लिया करता है । महर्षि मनु ने कहा है कि गायत्री के जपाराधना करने वाला द्विज अन्य कुछ करे या कुछ भी न करे अर्थात् अन्य किसी के भी करने की उसे संगतिप्राप्त करने के लिये आवश्यकता नहीं होती है । गायत्री का त्याग करके जो केवल विष्णु की उपासना करने में निरत रहता है अथवा शिवोपासना में प्रेम करता है, ऐसा विप्र सर्वथा नरकगामी होता है । इसलिये हे राजन् ! आप अर्थात् कृत युग में सभी गायत्री के जप करने में परायण रहा करते थे । सभी द्विज भगवती के चरण-कमल में रति करने वाले हुये थे ।

अनेक क्षत्रिय परिवारों की उपासना पद्धति गायत्री पर ही अवलम्बित रही है इसका वर्णन महाभारत में इस प्रकार मिलता है-

सोमादित्यान्वयः सर्वे राघवा कुरुवस्तथा ।
पठन्ति शुचयो नित्यं सावित्रीं परमागतिम् ।।

-महाभारत अन्न० १५० ।७८

हे राजन् समस्त सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी, रघुवंशी कुरुवंशी सदा से पवित्रतापूर्वक गायत्री का जप करने आये हैं-

श्रीकृष्ण की गायत्री उपासना के सम्बन्ध में महाभारत में कहा गया है-

कृत्व पौर्वाह्निकं कृत्यं स्नातः शुचिरलंकृता ।
उपतस्थे विवस्वतं पावकं च जनार्दन ।।

-महा० उद्योग पर्व०

प्रातःकाल स्नान पौर्वाह्निक कर्म करने के पश्चात् भगवान कृष्ण के उपस्थान मन्त्रों से सविता-उपासना की और हवन भी किया ।

वाल्मीकि रामायण में राम, लक्ष्मण और सीता का नियमित रूप से सन्ध्योपासना करने का उल्लेख है-

लक्ष्मणेन तदानीत पीतं वारि महात्मना ।
औपवास्यं तदाकिर्षीत राघवः सह सीतया ।।
ततस्तु जलशेषेण लक्ष्मणो ऽप्यकरोत्तदा ।
वाग्यतास्ते त्रयः संध्या समुपासन्त संहता ।।

'तब लक्ष्मणजी जाकर जल लाये और रामचन्द्र तथा सीताजी ने उसको पिया । शेष बचा जल लक्ष्मणजी ने पिया और फिर तीनों ने मौन बैठकर सन्ध्योपासन किया ।

ऐसे-ऐसे अनेकों कथा उपाख्यान पुराणों में वर्णित हैं, जिनमें गायत्री को ब्रह्मा, विष्णु, महेश आदि सभी देवताओं की अवतारों की उपास्य बताया गया है । इतना ही नहीं गायत्री को समस्त ज्ञान-विज्ञान, विद्या और शक्ति का स्रोत भी बताया गया है -

सर्ववेदोद्धतः सारो मन्त्रो अन्यं समुदोहृतः ।
ब्रह्मादिदेवादि गायत्री परमात्मा समीरितः ।।

''यहाँ गायत्री मन्त्र समस्त वेदों का सार कहा गया है । गायत्री ही परमात्मा कही गयी है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गायत्री मंजरी में उल्लेख आता है कि एक बार पार्वती ने शंकर जी से उनकी उपास्यशक्ति के सम्बन्ध में पूछा । तो शंकर जी ने अपने द्वारा गायत्री को ही नित्य उपासना किये जाने की बात कही । गायत्री मंजरी में कहा गया है-

गायत्री यो विजानाति सर्व जानाति स ननु ।
जानात्ययां न यतस्य सर्वाः विद्यास्तु निष्फला ।।

जो गायत्री को जानता है वह सब कुछ जानता है । जो इसको नहीं जानता उसकी सब विद्या निष्फल है ।

गायत्र्यैव तपो योगः साधन ध्यानामुच्यते ।
सिद्धिजनानां सा माता, नातः किंचित् वृहत्तरम् ।।

गायत्री ही तप है, योग है, साधन है, ध्यान है और सिद्धियों की माता मानी गई है । इस गायत्री से बढ़कर कोई दूसरी वस्तु नहीं है ।

गायत्री साधना लोके न कस्यापि कदापि हि ।
याति निष्फलतामेतत् ध्रुवं सत्यं हि भूतले ।।

कभी भी किसी की गायत्री साधना संसार में निष्फल नहीं जाती, यह पृथ्वी पर ध्रुव सत्य है ।

प्राप्स्यन्ति परमां सिद्धिं ज्ञास्यन्त्येतत् तु ये जनः ।
गुप्त मनुं रहस्यं यत् पार्वती त्वां पतिव्रताम् ।।

हे पार्वती ! जो इस पवित्र रहस्य को जानेंगे वे परम सिद्धि को प्राप्त करेंगे ।

सभी शास्त्रों ने गायत्री को समस्त देवशक्तियों का उपास्य बताया है । अनादिकाल से प्रचलित और सर्वश्रेष्ठ मानी गयी । गायत्री उपासना का आश्रय लेकर कोई भी व्यक्ति आत्मिक और भौतिक समृद्धियों से पूरी तरह लाभान्वित हो सकते हैं ।

गायत्री का जप करते थे, महादेव भगवान

सर्व समर्थ माँ गायत्री की साधना सार्वभौम और सार्वजनीन हैं । गायत्री-मन्त्र में सन्निहित प्रेरणाएँ प्रत्येक कल्याण कामी व्यक्ति के हित सम्पादन में पूर्णतया सक्षम हैं । किसी भी धर्म-सम्प्रदाय को मानने वाला व्यक्ति भी इस मन्त्र की शिक्षाओं के प्रकाश में अपना पथ प्रशस्त कर सकता है, अपने लक्ष्य तक पहुँच सकता है । गायत्री मन्त्र की इस सर्वोत्कृष्टता का शास्त्रों में प्रमाण वहाँ विशेष रूप से मिलता है जहाँ सभी, देवताओं में महान् महादेव द्वारा गायत्री-साधना से प्राप्त सर्वज्ञता और सर्वेश्वरता का वर्णन आता है । गायत्री-मंजरी में महादेव और शिव पार्वती का यह प्रसंग कितना प्रेरणादायी है-

एक बार कैलाश पर्वत पर विराजमान् भगवान् शिव से पार्वती जी ने पूछा कि हे योगेश्वर ! आप किस साधना से इतनी सिद्धियाँ प्राप्त किये हैं, वह कौन-सी उपासना है जिसने आपको सिद्ध बना दिया है ! ''सर्वे सर्वे न जानन्ति सर्वे जानाति शंकर'' सभी लोग सब कुछ नहीं जानते हैं, सब कुछ तो भगवान शंकर ही जानते हैं, ऐसा कहते हुए लोग आपकी सर्वज्ञता को, तथा महेश्वर कह कर आपकी प्रभुता को स्वीकार करते हैं- इन विशिष्टताओं की उपलब्धि किस योग-साधना द्वारा हुई है, कृपया बताने का कष्ट करें ।

इसके उत्तर में महादेव जी कहते हैं -

गायत्री वेदमातास्ति साऽऽद्याशक्तिर्मता भुवि ।
जगतां जननी चैव तामुपासेऽहमेव हि ।।

गायत्री वेदमाता है । वही आद्यशक्ति कही जाती है । विश्व की वही जननी है । मैं उन्हीं गायत्री की उपासना करता हूँ ।

योगिकानां समस्तानां साधनानां तु हे प्रिये ।
गायत्र्येव मता लोके मूलाधारा विदांवरैः ।।

भगवान् शंकर पार्वती जी से कहते हैं; हे प्रिये समस्त यौगिक साधनाओं का आधार गायत्री ही को माना गया है । गायत्री-साधना के माध्यम से समस्त यौगिक साधनाएँ सहज ही सम्पन्न की जा सकती हैं और सफलता या सिद्धि को हस्तगत किया जा सकता है ।

भूलोकस्यास्य गायत्री कामधेनुर्मता बुधै : ।
लोक आश्रयणेनामुं सर्वमेवाधिनगच्छति ।।

विद्वानों ने गायत्री को भूलोक की कामधेनु कहा है । इसका आश्रय लेकर सब कुछ प्राप्त किया जा सकता है ।

कलौयुगे मनुष्याणां शरीराणीति पार्वती ।
पृथ्वी तत्व प्रधानानि जानास्येव भवन्ति हि ।।

हे पार्वती यह तो तुम जानती ही हो कि कलियुग में मनुष्यों के शरीर पृथ्वी तत्व प्रधान होते हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सूक्ष्मतत्व प्रधानान्ययुगोद्भूत नृणामतः ।
सिद्धीनां तपसामेते न भवन्त्यधि कारिणः ।।

इसलिए अन्य युगों में उत्पन्न हुए सूक्ष्म तत्व प्रमाण मनुष्यों की सिद्धि और तप के ये अधिकारी नहीं होते ।

पञ्चांगयोग संसिद्ध्या गायत्र्यास्तु तथापि ते ।
तद्युगानां सर्वं श्रेष्ठां सिद्धि सम्प्राप्नुवन्ति हि ।।

वे गायत्री पञ्चागयोग की सिद्धि द्वारा उन युगों की सर्वश्रेष्ठ सिद्धियाँ प्राप्त कर सकते हैं । इस प्रकार गायत्री साधना को योगसिद्धि का प्रधान कारण बताते हुए भगवान शंकर निष्कर्ष रूप में पुनः पार्वती से कहते हैं -

गायत्र्येव तपोयोगः साधनं ध्यानमुच्यते ।
सिद्धिनां सा मता माता, नातः किंचित् वृहत्तरम् ।।

गायत्री ही तप, योग एवं साधन है । इसे ही सिद्धियों की माता कहा गया है । इस गायत्री से बढ़कर अन्य कोई दूसरी चीज नहीं है ।

प्राप्स्यन्ति परमां सिद्धि ज्ञास्यन्त्येतत् तुये जनाः ।
गुप्तमेनं रहस्यं यत् पार्वती त्वां पतिव्रताम् ।।

हे परम पतिव्रता पार्वती । जो मैंने यह गुप्त रहस्य कहा है, इसे जो लोग जानेंगे और गायत्री-साधना में प्रवृत्त होंगे वे परमसिद्धि को प्राप्त करेंगे ।

भगवान शिव और पार्वती के इस कथोपकथन से एक तथ्य यह निश्चित रूप से समझ में आ जाता है कि गायत्री साधना द्वारा समस्त यौगिक साधनाएँ सुगम हो जाती हैं । वैसे तो योग साधना सुयोग्य गुरु के मार्ग दर्शन में पर्याप्त समय साध्य और श्रमसाध्य होती है । परन्तु गायत्री मन्त्र के सहयोग से वह सरल और सुगम ही नहीं हो जाती अपितु निरापद भी हो जाती है । गायत्री मन्त्र द्वारा जिस (सद्बुद्धि) तत्त्व की याचना परमात्मा से की जाती है वास्तव में वह उससे ही साधक के भटकाव का भय दूर हो जाता है और नियमित साधना में संलग्न साधक उन सभी साधनाओं की सिद्धि का स्वामी बन जाता है, जिनका उल्लेख शास्त्रों में सर्वत्र किया जाता रहा है । इस अमूल्य लाभ से वंचित नहीं रहना चाहिए ।



Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गायत्री द्वारा मनुष्य-जीवन की सार्थकता

हिन्दू धर्म-शास्त्रों में मनुष्य को आत्मिक शक्ति प्रदान करने वाले और मनोकामनाओं को सिद्ध करने वाले जो अनेक मंत्र बतलाये गये हैं, उन सब में गायत्री को सर्वश्रेष्ठ कहा गया है । विश्वामित्र ऋषि का मत है कि "चारों वेदों में गायत्री के समान कोई मंत्र नहीं है । इतना ही नहीं सम्पूर्ण वेद गायत्री मंत्र की एक कला के समान भी नहीं है ।" भगवान मनु ने कहा है कि "ब्रह्माजी ने तीन वेदों के सार रूप गायत्री मंत्र को खोज कर निकाला है । इस मंत्र के पढ़ने से वेद जानने का फल प्राप्त होता है ।" याज्ञवल्क्य, पाराशर, शंख, शोनक आदि ऋषियों ने भी गायत्री को मनुष्य के उद्धार और मोक्ष प्राप्ति के निमित्त सर्वश्रेष्ठ उपाय बतलाया है ।

वर्तमान समय के महापुरुष भी गायत्री की महिमा स्वीकार करते हैं । महात्मा गाँधी ने कहा है कि "स्थिर चित्त और शान्त हृदय से किये हुये गायत्री जप में आपत्तिकाल के संकटों को दूर करने की शक्ति है ।" लोकमान्य तिलक ने कहा है कि "गायत्री मंत्र में कुमार्ग से हटाकर सत्य-मार्ग पर चलाने की प्रेरणा विद्यमान है ।" पं० मदनमोहन मालवीय की सम्मति है कि "ऋषिओं ने हमको जो अनेक रत्न दिये हैं उनमें गायत्री सर्वश्रेष्ठ रत्न है ।" कविवर रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने कहा है कि "गायत्री मंत्र ही राष्ट्र की आत्मा को जागृत करने वाला है इसमें सन्देह नहीं ।" स्वामी दयानन्द कहते हैं कि "चारों वेदों का मूल गुरुमंत्र गायत्री ही है । आदिकाल में सभी ऋषि-मुनि इसी का जप किया करते थे ।" स्वामी रामतीर्थ कहा करते थे कि "राम को प्राप्त करना सबसे बड़ा काम है और गायत्री, मनुष्य के मन को सांसारिक वासनाओं से हटाकर राम में लगा देती है ।" योगी अरविन्द के कथनानुसार "गायत्री में महत्वपूर्ण शक्ति मौजूद है ।" श्री रामकृष्ण परमहंस ने स्वानुभव से बतलाया है कि "गायत्री द्वारा बड़ी से बड़ी सिद्धि प्राप्त की जा सकती है ।" स्वामी विवेकानन्द का मत है कि "गायत्री मंत्र समस्त मंत्रों की मुकुटमणि है ।"

इसमें सन्देह नहीं कि जिस प्रकार आयुर्वेद शास्त्रों में अनेक ऐसे प्रयोग बतलाये गये हैं कि जिनके द्वारा मनुष्य शरीर के परमाणु बदल कर उसके शरीर का कायाकल्प हो जाता है, इसी प्रकार गायत्री मंत्र का सच्चे हृदय से जप करने से मनुष्य का आत्मिक कायाकल्प हो जाता है और उसे ऐसा जान पड़ता है कि उसके हृदय से सब प्रकार के विकार दूर होकर सत्त्वगुणी तत्वों की अभिवृद्धि हो रही है । इसके प्रभाव से विवेक, दूरदर्शिता, तत्वज्ञान का उदय होकर अनेक अज्ञान जनित दुखों का निवारण होता है । गायत्री-साधना से मनुष्य के अन्तर में ऐसी दृढ़ श्रद्धा का आविर्भाव होता है कि वह सब प्रकार के विघ्न-बाधाओं और प्रतिकूल परिस्थितियों को हँसते-हँसते सहन कर लेता है । भली-बुरी सब प्रकार की अवस्थाओं में वह साम्यभाव रखकर शान्तिपूर्ण जीवन व्यतीत करता है । उसको संसार की सबसे बड़ी शक्ति 'आत्मबल' प्राप्त हो जाती है जिसके द्वारा फिर वह अनेक प्रकार के सांसारिक लाभों और मनोकामनाओं को भी सहज में प्राप्त कर लेता है ।

गायत्री मंत्र देखने में बहुत बड़ा नहीं है और उसका अर्थ भी ऐसा सरल है कि कोई भी साधारण पढ़ा-लिखा मनुष्य उसको सहज में समझ सकता है और याद कर सकता है । पर इस सीधे-सादे मंत्र में ऐसी अमोघ शक्ति भरी है कि लोक और परलोक का बड़े से बड़ा काम उसके द्वारा सिद्ध हो सकता है । स्वामी दयानन्द के उपदेशों को सुनने एक गरीब धुनिया आया करता था । एक दिन अवसर पाकर वह स्वामी जी से पूछ बैठा--"महाराज, मैं तो कुछ पढ़ा लिखा नहीं हूँ और आपके उपदेश विद्वतापूर्ण होते हैं । इसलिये कोई ऐसा उपाय बतलाइये कि मेरे जैसे मूर्ख का भी कल्याण हो

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सके।'' यह सुनकर स्वामी जी ने गायत्री-मंत्र अर्थ सहित लिखकर उसे दे दिया और कहा--''इस मंत्र का उसके अर्थ को स्मरण कर जप करते रहो और साथ ही रुई धुनने के धन्धे में सच्चे और ईमानदार रहने का प्रण करो । इसी से तुम्हारा कल्याण हो जायगा ।'' इसी प्रकार स्वामी विवेकानन्द ने एक अवसर पर उपदेश देते हुये कहा था कि ''आत्मघात करने के लिये मनुष्य के पास एक मामूली-सा चाकू होना ही काफी है । उसको गले में घुसा कर वह अपने जीवन का अन्त कर सकता है । पर दूसरे को मारने के लिये बड़े-बड़े हथियारों की आवश्यकता पड़ती है । इसी प्रकार किसी व्यक्ति के लिये अपने उद्धार के लिये 'ॐ' और गायत्री मंत्र का जप ही पर्याप्त है ।''

मनुष्य जन्म का सबसे बड़ा फल सन्मार्ग पर चलकर परमात्मा की भक्ति प्राप्त करना ही बतलाया गया है । इसके लिये भी गायत्री की विधिवत् उपासना और उसके आदेशानुसार आचरण करना अत्यन्त फलदायी होती है । मनुस्मृति में कहा गया है --

कामान्माता पिता चैनं यदुत्पादयतो मिथः ।
सं भूतिं तस्य तांविद्याद् यद्योनावभिजायते ।।
आचार्यस्त्वस्य यांजातिं विधिवद्वेद पारगः ।
उत्पादयति सावित्र्या सा सत्या साऽजराऽमरा ।।

-मनु० अ० २ श्लोक १४७-१४८

अर्थात् ''माता-पिता तो काम वश होकर भी बालक को उत्पन्न करते हैं, इससे जिस योनि में वह जाता है, उसी प्रकार के उसके हस्तपादादिक हो जाते हैं । परन्तु सम्पूर्ण वेद का जानने वाला आचार्य विधिवत् गायत्री उपदेश द्वारा इस बालक की जो जाति उत्पन्न करता है, वही जाति सत्य है और अजर अमर है ।''

गायत्री की महिमा भारतवर्ष में अति प्राचीन काल से चली आई है, जिसका प्रमाण सभी शास्त्रों, इतिहासों और पुराणों में मिलता है । हिन्दुओं के षोडश संस्कारों में यज्ञोपवीत सबसे मुख्य और सर्वमान्य समझा जाता है । इस संस्कार के अवसर पर गुरु-शिष्य को इसी मंत्र का उपदेश करता है । इसी प्रकार संन्यास ग्रहण करने के अवसर पर भी जल में खड़े होकर ''ॐ भूर्भुवः स्वः । सावित्री प्रवश्यामि''--का पाठ करना पड़ता है, जिसका आशय यह है कि ''आज से मेरी माता सावित्री (गायत्री) है ।''

बाल्मीकीय रामायण में लिखा है कि जिस समय विश्वामित्र राम-लक्ष्मण को यज्ञ की रक्षा के लिये साथ ले जा रहे थे उस समय रात्रि के समय विश्राम के लिये मार्ग में ठहरे । प्रातः होने पर ऋषि ने उनको उठाकर कहा--

कौशल्या सुप्रजा राम पूर्वा संध्या प्रवर्तते ।
उत्तिष्ठ नरशार्दूल कर्तव्य दैव मान्हिकम् ।।
तस्यर्षेः परमोदारं वचः श्रुत्वा नरोत्तमौ ।
स्नात्वा कृतो दकौ वीरौ जपेतुः परमं जपम् ।।

''राम, तू कौशल्या का सुपुत्र है, अब उठकर आह्निक कर्म करो । इस परम हितकारी वचन को सुनकर दोनों भाई स्नान आचमन करके गायत्री-जप करने लगे ।''

इसी प्रकार महाभारत में कहा गया है कि जब श्री कृष्ण पांडवों की तरफ से संधि का प्रस्ताव लेकर हस्तिनापुर जा रहे थे तो उन्होंने मार्ग में रथ से उतर कर नित्य कर्म करके यथाविधि सन्ध्या की-

अवतीर्य रथात् तूर्णं कृत्वा शौचं यथाविधि ।
रथ मोचन मादिश्य सन्ध्यामुपविवेश ह ।।

-उद्योग पर्व ८४-२१

इसके पश्चात् हस्तिनापुर पहुँच कर स्नान, हवन और जप करके वे कौरवों की सभा की ओर चले-

''कृतोदकानुजप्यः सहुताग्नि समलंकृतः ।''

-उद्योग० ९४-६

भारतीय ही नहीं विदेशों के विद्वानों ने भी गायत्री की महिमा को स्वीकार किया है । सर मोनियर विलियम ने अपनी 'बुद्धिज्म' नाम की पुस्तक में लिखा है कि ''ईसाई धर्म ईसा के बिना कुछ नहीं, इस्लाम धर्म हजरत मुहम्मद के बिना कुछ नहीं, बौद्ध धर्म महात्मा बुद्ध के बिना कुछ नहीं । परन्तु मुझे यह सत्य बात कहने में कोई संकोच नहीं, यद्यपि मैं ईसाई हूँ, किन्तु हिन्दुओं का मूल-मंत्र गायत्री है, जो बिना किसी ऋषि, मुनि या महान पुरुष के जीवित रह सकता है । हिन्दू धर्म का आधार किसी विशेष मनुष्य पर नहीं है । इस मंत्र के द्वारा हर एक मनुष्य सीधा परमेश्वर से ही ज्ञान प्राप्त कर सकता है ।''

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इन उदाहरणों से स्पष्ट हो जाता है कि गायत्री मंत्र मनुष्य के आत्मिक और मानसिक उत्थान का सबसे बड़ा साधन है । जिस प्रकार गीता को समस्त उपनिषदों का सार कहा गया है, इसी प्रकार गायत्री मंत्र वेदों का सार है इसमें कोई संदेह नहीं । गायत्री मन्त्र के जप से सब देवताओं का अनुग्रह प्राप्त किया जा सकता है । इसके द्वारा देवी की आराधना की जा सकती है, विष्णु की आराधना की जा सकती है, सूर्य की आराधना की जा सकती है और निर्गुण परमात्मा की भी आराधना की जा सकती है ।

ब्रह्मचारी में जो तेज पाया जाता है वह गायत्री मंत्र के जप का ही होता है । गृहस्थ के यहाँ जो वैभव अथवा समृद्धि दिखलाई पड़ती है वह भी गायत्री की ही होती है । वानप्रस्थ में जो शक्ति और संतोष प्राप्त होता है वह भी गायत्री का ही है । इस प्रकार जिस क्षण से बालक यज्ञोपवीत धारण करता है और जिस समय वह संन्यास की सर्वोच्च स्थिति में प्रवेश करता है, उसकी मार्ग दर्शक, सहायक, शक्ति दाता गायत्री ही रहती है । उसके लिये गायत्री ही सर्वस्व होती है । सत्य तो यह है कि एक हिन्दू का आध्यात्मिक जीवन गायत्री से ही आरम्भ होता है और अन्त समय तक गायत्री उसका साथ देती है। यही कारण है कि शास्त्रों ने गायत्री का जप प्रत्येक हिन्दू का अनिवार्य कर्त्तव्य बतलाया है । चाहे उसका कुल देवता कोई भी हो, चाहे वह किसी भी ईश्वरीय अवतार की पूजा क्यों न करता हो, पर नित्य प्रति गायत्री का उच्चारण करके सूर्य को अर्घ्य देना प्रत्येक हिन्दू का धर्म है । इस मंत्र के रूप में हमारे प्राचीन ऋषि मुनि हमको ऐसी शक्ति प्रदान कर गये हैं कि जिसकी तुलना की अन्य कोई शक्ति संसार में नहीं मिल सकती ।

गायत्री का अद्भुत प्रभाव

यजुर्वेद के पहले अध्याय में एक मंत्र आया है जिसमें बतलाया गया है कि यह मानव देह कहाँ से आया और इसका क्या प्रयोजन है ? वास्तव में ये दोनों विषय सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण हैं । इनका ज्ञान न होने से ही मनुष्य अज्ञानान्धकार में ठोकरें खाता है और कुमार्गगामी हो जाता है । यदि हमको निश्चय रूप से यह समझ में आ जाय कि, हम वास्तव में कौन हैं और इस संसार में हमारे आने का उद्देश्य क्या है ? तो फिर हमारे मार्ग की अधिकांश कठिनाइयाँ हल हो जाती हैं और हम निरन्तर प्रगति के मार्ग पर अग्रसर हो सकते हैं । यजुर्वेद का वह मंत्र इस प्रकार है-

कस्त्वा युनक्ति स त्वा युनक्ति कस्मै त्वा युनक्ति ।
तस्मै त्वा युनक्ति । कर्मणे वांवेषायवाम् ।।

-१-६ यजुर्वेद

अर्थात- तुमको किसने युक्त किया ? अर्थात् इस शरीर के साथ आत्मा का सम्बन्ध किसने जोड़ा ? इसका उत्तर यह दिया गया कि उस परमात्मा ने तुम्हारे शरीर और आत्मा को युक्त किया । दूसरा प्रश्न है कि तुमको किस प्रयोजन के लिये युक्त किया गया ? इसका उत्तर है कि- (१) उस परमात्मा के भजन-दर्शन मिलाप के लिये (२) सत्यव्रत, यज्ञ, धर्म प्रचार, शुभ गुणों और विद्याओं को धारण करने के लिये तथा (३) ज्ञान की उपलब्धि के लिये । इस प्रकार वेद ने मनुष्य-जन्म के तीन प्रधान प्रयोजन बतलाये-ज्ञान, कर्म और उपासना, इन्हीं तीनों तथ्यों का निरूपण चारों वेदों में किया गया है । गायत्री मंत्र में भी इन्हीं तीनों तथ्यों का समन्वय विज्ञान और तर्कयुक्त ढंग से किया गया है और वह भी ऐसे संक्षिप्त रूप में कि प्रत्येक मनुष्य सर्वदा उसे स्मरण रख सकता है और उसका मनन कर सकता है । यही कारण है कि इसे 'गुरु मंत्र' अथवा 'महा मंत्र' का दर्जा दिया गया है । इसी ज्ञान के प्रभाव से प्राचीनकाल में हमारे देश ने इतनी उन्नति की थी कि वह 'जगद् गुरु' के नाम से विख्यात हो गया था। आज भी आध्यात्मिक विषयों में संसार भर के जिज्ञासु उसको उसी प्राचीन भाव से देखते हैं और आत्मिक शान्ति प्राप्त करने के निमित्त यहाँ आते हैं। इस सम्बन्ध में महात्मा आनन्द स्वामी ने अपने अनुभव की एक घटना बतलाई है-

"पहली बार सन् १९५० में जब मैं गंगोत्री गया और वहाँ एक कुटिया में रहकर योगाभ्यास करने लगा, तो उन्हीं दिनों अमरीका के एक अच्छे पढ़े-लिखे पति-पत्नी वहाँ पहुँचे । एक दिन बातचीत में दुनिया के दु:खी होने की चर्चा जो चली, तो मैंने अमरीकन सज्जन से पूछा "हम लोग अभी तक यही सुनते रहते हैं कि अमरीका बड़ा धनी देश है, वहाँ वैज्ञानिक उन्नति भी बहुत हो गई है; मानव के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सुख, आराम तथा ऐश्वर्य के हर प्रकार के साधन विद्यमान हैं; जितना सोना, अन्न, दूध, कपड़ा, मोटरें, शानदार इमारतें अमरीका में हैं और कहीं भी नहीं। तब इतने सब के सब सुभीते, आराम के साधन छोड़कर आप गंगोत्री जैसे स्थान पर क्यों आये यहाँ न ठहरने का स्थान है, न बिजली है, न मोटर, न रेडियो, न कोलतार की सड़कें, न फल मिलते हैं, न शाक, न होटल है, न सिनेमा । यहाँ तो केवल बीहड़ जंगल है, देवदार और भोजपत्र के वृक्षों का। कोई भी आराम का साधन यहाँ नहीं । तब आपको अमरीका जैसे वैभवशाली देश से कौनसी वस्तु इस तपोभूमि में खींच लाई ?''

"इस प्रश्न के उत्तर में अमरीकन महिला तो मुस्करा के रह गई, पर उसके पति ने बड़ी गम्भीरता से लम्बा श्वास लेकर कहा-''ठीक है, अमरीका में सब कुछ है, परन्तु वहाँ एक चीज नहीं । उसी को प्राप्त करने के लिये, उसी की खोज में अमरीका से निकल कर हम कठिन पैदल यात्रा करते गंगोत्री पहुँचे हैं और वह वस्तु जो वैभवशाली अमरीका में नहीं है, परन्तु यहाँ हमको प्राप्त हो गई, उसका नाम 'शांति और आनन्द' है ।''

श्रीकृष्णमूर्ति आध्यात्मिक-जगत के एक प्रसिद्ध व्यक्ति हैं । भारत ही नहीं संसार के अनेक देशों में उनके भक्त और अनुयायी मौजूद हैं, जो उनसे उपदेश और प्रेरणा लेकर आध्यात्मिक साधन में संलग्न हैं । इन कृष्णमूर्ति ने आरम्भ में मद्रास के अद्यार स्थान में रहकर गायत्री उपासना द्वारा आत्म साक्षात्कार प्राप्त किया था । इसके फल से उनकी आत्मिक शक्ति की ऐसी वृद्धि और विकास हुआ कि लाखों मनुष्य उनको भगवान का अवतार मानने लग गये । उन्होंने इस सम्बन्ध में अपना जो अनुभव प्रकट किया था उसका कुछ अंश पाठकों के लाभार्थ यहाँ दिया जाता है-

''विशेष रूप से गायत्री मंत्र का प्रयोग करके उसका अवलोकन किया गया तो परिणाम अद्भुत जान पड़ा । इस मंत्र का उपयोग स्वार्थ के लिये नहीं, परार्थ के लिये करना चाहिये । मुझे स्वयं ऐसा अनुभव हुआ है कि जहाँ गायत्री मंत्र का उच्चारण होता है वहाँ देवता भी सहायता देते हैं ।

गायत्री भगवान सूर्य नारायण का आवाहन मंत्र है । गायत्री मंत्र का उच्चारण होते ही जप करने वाले के ऊपर प्रकाश की एक शक्तिशाली झलक स्थूल सूर्य में से पड़ जाती है । प्रार्थना के समय चाहे सूर्य उदय हो रहा हो, चाहे मध्याह्न का समय हो, चाहे सूर्य अस्त हो रहा हो, चाहे आधी रात का समय हो, पर जिस दिशा में सूर्य होगा, उसी तरफ से झलक आयेगी । रात्रि के समय तो झलक पृथ्वी को भेदकर आती है । यह झलक श्वेतवर्ण की कुछ सुनहलापन लिये होती है । जब उससे जप करने वाले का हृदय पूर्ण हो जाता है, तो वह मेघ-धनुष के सात रंगों में बाहर निकलती है और जप करने वाले के सामने जो कोई होता है उस पर उसका शुभ प्रभाव पड़ता है । यह प्रभाव केवल जप करने वाले के हृदय से ही बाहर नहीं निकलता, वरन् उसकी प्रभा (ओरा) में से भी अर्द्धचन्द्र के आकार में निकलता है । प्रत्येक किरण त्रिकोणाकार और जीवनी शक्ति युक्त होती है । उस किरण के सामने जो मनुष्य बैठा हो अथवा सामने से आता हो तो यह किरण उसके हृदय और मस्तक को स्पर्श करती है और इन अंगों के दोनों चक्रों को अल्प समय के लिए जाग्रत करती है । प्रत्येक किरण एक नहीं अनेक मनुष्यों पर प्रभाव डालने में समर्थ होती है और ऐसी किरणें संख्या में सात होने से उनका असर अनगिनती मनुष्यों पर पड़ सकता है ।

''यदि एक साधारण मनुष्य की प्रभा उसके शरीर से १८ इंच बाहर तक फैलती हो तो उसकी प्रभा द्वारा जो किरणें निकलेंगी उनसे नीचे का भाग नौ फीट लम्बा और पाँच फीट चौड़ा होगा । जिस मनुष्य का अधिक विकास हो चुका है उसकी प्रभा यदि हर तरफ ५०मीटर तक फैलती हो तो उसका प्रभाव क्षेत्र बहुत विस्तीर्ण होगा । मनुष्य की ऐसी प्रभा उसकी वासना तथा मानसिक प्रकृति की बनी होती है और उसकी देह में ओतप्रोत रहती है । यह प्रभा मस्तक से जितने ऊपर तक जाती है उतनी ही पैरों के नीचे पृथ्वी के भीतर भी फैलती है । गायत्री मंत्र जप करने वाले की प्रभा जितनी अधिक विस्तीर्ण होगी उतना ही अधिक प्रभाव उसका पड़ेगा । यदि एक बड़ा समुदाय गायत्री मंत्र का उच्चारण कर रहा हो तो उससे बहुत बड़ी झलक उत्पन्न होती है । इससे मंत्र का उच्चारण करने वाले सब एक रूप हो जाते हैं और उन सब में से सात-

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सात किरणें निकलती हैं । ये किरणें कितने विशाल क्षेत्रफल में फैलेंगी और उनका प्रभाव कितना अधिक होगा यह सहज में समझा जा सकता है ।''

अब आधुनिक विज्ञान ने भी यह पता लगा लिया है कि संसार में कोई शब्द या विचार नष्ट नहीं होता । जो बात मनुष्य कहता या सोचता है वे तरंग रूप में आकाश में फैल जाती हैं और हजारों लाखों वर्ष तक आकाश मंडल में व्याप्त रहती हैं । बहुत से वैज्ञानिकों ने तो यहाँ तक कल्पना की है कि हम दो-चार हजार वर्ष पुराने समय में कही गई बातों की इन तरंगों को यन्त्र द्वारा फिर से ज्यों का त्यों सुनकर उसका रिकार्ड बना सकते हैं । वैज्ञानिकों के लिये इस कल्पना को व्यवहारिक रूप देना चाहे अभी असम्भव हो पर जो भारतीय योगी त्रिकाल की बातें जान लिया करते थे वे इस शक्ति से सम्पन्न अवश्य थे । साारांश यह कि शब्दों और विचारों का अस्तित्व नष्ट नहीं होता । यही बात गायत्री-मन्त्र के विषय में है । अब तक असंख्यों महापुरुष श्रद्धा और साधनापूर्वक जो गायत्री का जप करते आये हैं उसका प्रभाव नष्ट नहीं हो गया है, वरन् सूक्ष्म जगत में उसका अस्तित्व बना हुआ है । इतना ही नहीं एक प्रकार के पदार्थों का एक स्थान पर सम्मिलन होने के नियमानुसार उस समस्त गायत्री साधना का सूक्ष्म जगत में एकीकरण होकर एक ऐसी प्रबल आध्यात्मिक शक्ति उत्पन्न हो गई है, कि यदि उसे विधिपूर्वक आकर्षित किया जाय तो उसके द्वारा बड़े-बड़े कार्य सम्पन्न किये जा सकते हैं । यही कारण है कि गायत्री साधना में हम जितना श्रम करते हैं उससे कई गुना फल हमको इस एकत्रित गायत्री-शक्ति से प्राप्त हो जाता है । अनेक बार हम देखते हैं कि कोई व्यक्ति गायत्री-साधना करते ही बड़े-बड़े चमत्कार अनुभव करने लगता है, बड़ी-बड़ी आपत्तियों से बच जाता है, तो इसका रहस्य यही है कि वह हार्दिक श्रद्धा या विश्वास के फलस्वरूप गायत्री के असीम शक्ति-भंडार से सहायता पा जाता है, और उसके असंभव समझे जाने वाले कार्य दैवी रीति से सिद्ध हो जाते हैं ।

पर गायत्री का मुख्य प्रभाव केवल कुछ सांसारिक लाभ प्राप्त कर लेना अथवा विपत्तियों से रक्षा पा जाना नहीं है । उसका सबसे बड़ा प्रभाव तो यह है कि वह मनुष्य के मन को, अन्तःकरण को, मस्तिष्क को, विचारधारा को सन्मार्ग की तरफ प्रेरित करती है और एक सच्चे मनुष्यत्व का विकास करती है । सत्-तत्त्व की वृद्धि करना ही इसका प्रधान कार्य है । साधक जब इस महामंत्र के अर्थ पर विचार करता है तो वह समझ जाता है कि संसार की सबसे बड़ी समृद्धि और जीवन की बड़ी सफलता यही है कि हमारी बुद्धि-शुद्ध हो जाय और हम सत्य-मार्ग पर चलने लगें । इस विचार के प्रभाव से उसकी मानसिक और शारीरिक क्रियाएँ सतोगुणी होने लग जाती हैं और वह आध्यात्मिक क्षेत्र में अग्रसर होता हुआ अपना और दूसरों का कल्याण करने में समर्थ होता है ।

शरीर और मन में सतोगुण की मात्रा बढ़ने से और भी अनेक लाभ होते हैं । हमारे अन्तर जगत से तमोगुण और रजोगुण का हटकर उनके स्थान पर सत्-तत्त्व का बढ़ना ऐसा ही है, जैसे शरीर में भरे हुये रोग, मल, विष और विजातीय पदार्थों का घटकर उनके स्थान पर शुद्ध, सजीव रक्त और वीर्य की मात्रा का बढ़ जाना । यह परिवर्तन चाहे हमको प्रत्यक्ष होता न जान पड़े पर उसका प्रभाव हमारे शारीरिक स्वास्थ्य पर स्पष्ट रूप से जान पड़ेगा । गायत्री द्वारा सतोगुण की वृद्धि होकर नीची श्रेणी के तत्त्वों का निवारण होता है, और इससे साधक का सूक्ष्म काया कल्प हो जाता है। इसका प्रभाव हमारे मन और विचारों पर पड़ता है और इन्द्रियों के भोगों की हानिकारक लालसा मन्द पड़ जाती है । चटोरपन, तरह-तरह के स्वादों के पदार्थों के लिये मन ललचाते रहना, बार-बार खाने की इच्छा करना, अधिक मात्रा में खा लेना, भक्षाभक्ष का विचार न रहना, चटपटे, मीठे, गरिष्ठ पदार्थों की रुचि जैसी बुरी आदतें धीरे-धीरे कम होने लगती हैं । हल्के, सुपाच्य, सरस, सात्विक भोजनों से तृप्ति मिलने लगती है । इस प्रकार जिह्वा के वश में आ जाने से कुपथ्य का एक भारी संकट दूर हो जाता है । इसी प्रकार कामेन्द्रिय की उत्तेजना सतोगुणी विचारों के द्वारा शांत हो जाती है । कुमार्ग में, व्यभिचार में, वासना में मन कम दौड़ता है, ब्रह्मचर्य के प्रति श्रद्धा बढ़ने लगती है । फलस्वरूप वीर्य रक्षा होकर शारीरिक और मानसिक शक्ति की वृद्धि होने लगती है । स्वादेन्द्रिय

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

और कामेन्द्रिय दो ही इन्द्रियाँ विशेष बलवान हैं जो मनुष्य को पतन की ओर आकर्षित करती हैं । इनका संयम हो जाने पर स्वास्थ्य की उन्नति और मन का निर्विकार होना स्वाभाविक ही है । इनके साथ-साथ साधना के फल से स्नान, समय पर सोना और जागना, सफाई, सादगी आदि अन्य बातों का भी समावेश होने लगता है और इससे आरोग्य और दीर्घ जीवन की जड़ें मजबूत हो जाती हैं ।

शरीर की तरह मानसिक क्षेत्र में भी सतोगुण की वृद्धि से अभूतपूर्व उन्नति हो जाती है । काम, क्रोध, लोभ, मोह, मत्सर आदि दोष कम होने लगते हैं । इनके स्थान पर संयम, नियम, त्याग, सत्यनिष्ठा, निरालस्यता आदि गुणों का आविर्भाव होने लगता है। इस परिवर्तन के फल से जीवन में नित्य अनुभव होने वाले दु:खों से अधिकांश में छुटकारा मिल जाता है । विद्या, बुद्धि, विवेक के जागृत होने से अनेक प्रकार की चिन्ताओं, भय, आशंका, मोह, ममता आदि मनोविकारों में कमी होने लग जाती है । धर्म-प्रवृत्ति की वृद्धि के फल से अन्याय, अनाचार से चित्त वृत्ति हटने लगती है । इस प्रकार शारीरिक और मानसिक दोनों क्षेत्रों में सत् तत्त्व की वृद्धि होने से मनुष्य हो वास्तविक आनन्द की प्राप्ति होने लगती है और साधक स्वयं ही सांसारिक दुर्गुणों से दूर हटकर आत्मानन्द का अनुभव करने लगता है । इसीलिए शास्त्र में कहा गया है-

गायन्तं त्रायते यस्मात् गायत्रीत्वं ततः स्मृता

अर्थात्- जो साधक जन गायत्री का गान करते, सदैव उसका जप करते रहते हैं गायत्री उनकी रक्षा करती है । गायत्री मंत्र की साधना करने से सब तरह की कामनायें सिद्ध होती हैं । जो व्यक्ति निष्काम भाव से इसका जप करते हैं उनको सब प्रकार से सांसारिक फलों की प्राप्ति के साथ मुक्ति की प्राप्ति होती है । इसीलिये हमारे प्राचीन ऋषि मुनियों ने संसार के कल्याणार्थ इसको प्रकट किया और परम्परा द्वारा इसकी उपासना अनिवार्य रूप से प्रचलित की । इसी गायत्री-उपासना के फल से यह देश लाखों वर्ष तक उन्नति करता हुआ जगत का सिरमौर बना रहा । जब कालक्रम से भोगों में फँस कर अथवा आपस में लड़कर देश का पतन हुआ तब भी आंशिक गायत्री के प्रभाव से दूसरे राष्ट्रों की तरह इसका जड़मूल से नाश न हो सका । राजनैतिक दृष्टि से अपनी करके बहुत कुछ रक्षा कर सका। विदेशी आक्रमणकारियों ने साम-दाम-दण्ड-भेद चारों उपायों का उपयोग बहुत कुछ प्रयत्न किया कि इसे धर्मच्युत करके पूर्ण रूप से हजम कर लिया जाय पर न तो मुसलमानों को और न ईसाइयों को इस उद्देश्य में सफलता मिली । इसका कारण स्पष्टतया यही था कि यहाँ के धर्म का आधार उन लोगों के धर्मों के आधार से कहीं अधिक उच्च, दृढ़ और सत्य था, जिसके सामने ये नये धर्म निस्तेज प्रतीत होते थे । इस आपत्तिकाल में भी यहाँ धर्म के अनेक साधक गायत्री की महान उपासना में संलग्न रहे और समय-समय पर उन्हीं ने ऐसी शक्तियाँ उत्पन्न करदीं जिन्होंने विदेशियों के प्रभाव को नष्ट करके उनके पैर न जमने दिये । इस दृष्टि से देखा जाय तो गायत्री उपासना सदा से भारतीय जनता की उन्नति और सुरक्षा आधार रही है और उसके प्रभाव से यहाँ का सामाजिक और व्यक्तिगत जीवन प्रगति की ओर अग्रसर होता रहा है ।

गायत्री से मनुष्यत्व की प्राप्ति

मनुष्यत्व का सबसे बड़ा लक्षण विवेक और सदासद-सम्बन्धी ज्ञान है । केवल चार हाथ पैर हो जाने और आँख, कान, मुँह आदि इन्द्रियों के होने से मनुष्य नहीं कहा जा सकता, सब लक्षण तो पशुओं में भी होते हैं और अनेक अंशों में पशुओं की कुछ इन्द्रियाँ हमसे अधिक शक्तिशाली होती हैं। गायत्री इसी विवेक शक्ति का विकास करने वाला महामंत्र है और इसी से उसकी श्रेष्ठता सभी विद्वान स्वीकार करते हैं, चाहे वे किसी धर्म के मानने वाले अथवा किसी देश के रहने वाले हों ।

गायत्री-मन्त्र का सबसे पहला शब्द ॐ है । यह ईश्वर का बोध कराने वाला मुख्य शब्द है । 'अ' से सृष्टि की उत्पत्ति, 'उ' से जगत की स्थिति या विस्तार और 'म' से सृष्टि का अन्त या प्रलय का बोध होता । यही तीनों ऐसे गुण हैं जिनसे हम परमात्मा के अस्तित्व और उसकी शक्ति का अनुमान और अनुभव करते हैं । इस सम्बन्ध में 'मुण्डकोपनिषद्' में कहा गया है-

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अराइव रथनाभौ संहता यत्र नाड्यः ।
स रोषो अन्तश्चरते बहुधा जायमानः ।।
ओमित्येवं ध्यायथ आत्मानं ।
स्वस्ति वः पाराय तमसः परस्तात ।।

अर्थात्-''रथ की नाभि-(धुरे) में अरों की भाँति जिस हृदय देश में सब नाड़ियाँ आश्रित हैं, परमात्मा उसी हृदय-देश के भीतर विचरता है । उस परमात्मा का 'ओम्' के रूप में ध्यान करो । अन्धकार से पार होने के लिए यह ओम् का ध्यान तुम्हारे लिये कल्याणकारी हो ।''

गुरु नानकदेव ने सिक्ख-धर्म की जो मुख्य प्रार्थना बनाई है उसके आरंभ में ही कहा जाता है-

''एक ओंकार, सत नाम, कर्ता पुरुष, निर्भो, निर्वैर, अकालमूर्त, अयोनि से भंग, गुरु परसाद जप, आद सच, जुगाद सच है भी सच, नानक होसी भी सच ।''

अर्थात्-''वह परमेश्वर जिसका सत्य नाम ओंकार है, अथवा ओंकार ही सत् नाम ईश्वर का है। वह सृष्टि कर्ता तीनों कालों-भूत, भविष्यत् वर्तमान में है । अपने आप होने वाला, भय रहित और वैर रहित है--जो अजन्मा और अमर है, उसी का जाप गुरु कृपा से करो । वह परमात्मा आदि में सत् था, युगों के आदि में सत् था, वर्तमान में सत् है और भविष्य में भी सत् रहेगा ।''

गायत्री का प्रथम वाक्य ''भूर्भुवः स्वः'' यह शिक्षा देता है कि परमात्मा ही स्वयं प्राण स्वरूप है और उसी से समस्त प्राणियों को जीवन प्राप्त होता है । वह परमात्मा सब प्रकार के दुःखों से दूर है और हमारे समस्त दुःखों का प्रतिकार उसी की सहायता से सम्भव है । संसार में और कोई साधन ऐसा नहीं जो वास्तविक रूप से हमारे कष्टों को दूर कर सके । जो स्वयं बन्धन में पड़ा है, स्वयं कामना और याचना करता है, वह दूसरे को कैसे दुःखों या अभावों से मुक्त कर सकता है ? परमात्मा ही आनन्द स्वरूप है और उसी का आश्रय प्राप्त करके हम सब प्रकार के विकारों से छूट कर स्थायी सुख को प्राप्त कर सकते हैं । यही स्थायी सुख मनुष्यत्व का अन्तिम लक्ष्य है ।

यदि विचार किया जाय तो गायत्री-मन्त्र के इससे छोटे से वाक्य में अपार शिक्षाएँ भरी हुई हैं । जिस समय हमको यह ज्ञान हो जाता है कि एक ईश्वर ही सब प्राणियों में व्याप्त है, उसी का विस्तार होने से असंख्यों प्रकार के प्राणियों की, जिनमें मनुष्य भी सम्मिलित है, उत्पत्ति हुई है, तो हम अनेक प्रकार के पापों से, अन्याय और अत्याचार के कामों से बच सकते हैं । उस समय हम सहज ही में यह अनुभव करने लगते हैं कि जिन बातों से हमको कष्ट होता है या पीड़ा पहुँचती है, वे बातें दूसरों के लिये भी हितकारी नहीं मानी जा सकतीं । परमात्मा की दृष्टि में एक छोटा सा कीड़ा भी उतना प्रिय है जितना कि एक राजा-महाराजा । इसलिए किसी कमजोर या असमर्थ मनुष्य के साथ निर्दयता या कठोरता का व्यवहार करना मनुष्यत्व के विपरीत है । हमको सब प्राणियों में समदृष्टि रखनी चाहिये, कुल, वंश, देश, जाति आदि के कारण किसी को नीच-ऊँच नहीं समझना चाहिये ।

दूसरी शिक्षा यह है कि मनुष्य को कर्म करने का अधिकार है और किसी भी दशा में उसको अपने कर्त्तव्य से विमुख नहीं होना चाहिये । अनेक मनुष्य पुण्य-कर्मों का उत्तम फल न मिलते देखकर यह विचार करने लगते हैं कि इस संसार में पाप-पुण्य की बातें केवल भ्रम हैं और हमको दूसरों के भले-बुरे का ख्याल छोड़कर अपने लाभ, स्वार्थ का ही ध्यान रखना चाहिये । पर गायत्री की शिक्षा है कि ऐसा विचार बहुत गलत है । जब समस्त संसार एक ईश्वर से उत्पन्न हुआ है तो उसमें अपने को सबसे अलग समझना और दूसरों के हित-अनहित का ख्याल छोड़ देना बुद्धिहीनता का सबसे बड़ा लक्षण है । इससे प्रकट होता है कि उस मनुष्य को आत्मा का कोई ज्ञान ही नहीं है, और वह अपने को केवल हाड़-मांस का एक पुतला मानता है । यह मनुष्य का निकृष्टतम स्वरूप है । इसलिये हमको गायत्री की शिक्षानुसार अपने उच्च आध्यात्मिक रूप को समझना चाहिये और अपने उचित कर्त्तव्य से किसी दशा में विमुख न होना चाहिये ।

मनुष्यत्व को प्राप्त कराने वाली तीसरी शिक्षा यह है कि हमको प्रत्येक दशा में अपने विवेक की रक्षा करनी चाहिये और प्रत्येक काम में उचित-अनुचित का निर्णय कर लेना चाहिये । बहुत से मनुष्य थोड़ी सी सफलता सम्पत्ति, सम्मान आदि पाकर खुशी से फूल उठते हैं और अभिमान वश

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दूसरों को छोटा और अपने को सर्वोच्च समझने लगते हैं । इसी प्रकार ऐसे ही मनुष्य विपरीत परिस्थिति में पड़ जाने से गरीबी, निर्धनता, रोग, शोक, निर्बलता का शिकार हो जाने एक दम हताश और निराश होकर अपने को मृतक तुल्य समझ लेते हैं । ये दोनों ही अविवेकी पुरुषों के लक्षण हैं । जो मनुष्य विवेक से काम लेता है वह दोनों ही तरह की परिस्थितियों में अपना मानसिक संतुलन स्थिर रखता है और यह समझ कर कि संसार परिवर्तन शील है, अनुकूल या प्रतिकूल परिस्थितियों से कभी विशेष चलायमान नहीं होता । ऐसा ही स्थिर चित्त व्यक्ति संसार में अपना और दूसरों का हित साधन करने में असमर्थ हो सकता है ।

गायत्री का दूसरा वाक्य 'तत्सवितुर्वरेण्यं' मनुष्य के आत्म निर्माण सम्बन्धी अन्य कर्त्तव्यों की शिक्षा देता है । मनुष्य का जीवन अनिश्चित है । किसी भी समय कोई स्वाभाविक घटना उसका अन्त कर सकती है । बड़े से बड़ा शक्तिशाली व्यक्ति भी यह दावा नहीं कर सकता कि वह दैहिक, दैविक और भौतिक प्रकोपों से कभी आक्रान्त नहीं होगा । यह समझ कर मनुष्य को जीवन का सदैव उत्तम से उत्तम उपयोग करना चाहिये । परोपकार, समाज सेवा, धर्म-प्रचार आदि श्रेष्ठ कामों में कभी विलम्ब न करना चाहिये । साथ ही जीवन की क्षण भंगुरता को समझ कर खोटे कर्मों से दूर रहना भी आवश्यक है, क्योंकि थोड़े समय के लिये कुमार्ग पर चलना भी मनुष्य को पतन के गड्ढे में डालने वाला होता है । जब मनुष्य एक बार पतन की ओर अग्रसर हो गया तो उसके उद्धार की सम्भावना कठिन हो जाती है, क्योंकि पतन का मार्ग निम्नगामी होने से मनुष्य को सुगम जान पड़ता है और वह शीघ्र ही एक के बाद दूसरा अवगुण ग्रहण करके उनके फंदे में इस प्रकार फँस जाता है जब तक भगवान की विशेष कृपा न हो उसका पाप-पंक से मुक्त हो सकना असम्भव होता है । इसलिये मनुष्य को सदैव श्रेष्ठ मार्ग पर आरूढ़ रहने का प्रयत्न करना चाहिये और फिसलने का कोई भी अवसर सामने आते ही सावधान होकर ठससे दूर हट जाना चाहिये । यह कोई आवश्यक बात नहीं कि हम कोई बहुत बड़ा कार्य करें । पर जिस परिस्थिति में हम हों उसके अनुकूल उत्तम कार्य हमको अवश्य करना चाहिये । अपना भाग्य-निर्माण करना मनुष्य के अपने हाथ में है । इसलिये यदि हम अपनी वर्तमान साधारण परिस्थिति में भी कर्त्तव्यशीलता का परिचय देंगे और नीच कर्मों से बचते रहेंगे तो हमको यथा समय उच्च स्थिति भी अवश्य प्राप्त हो सकती है । इसलिंये हमको सदैव श्रेष्ठ कार्यों और श्रेष्ठ विचारों की तरफ ही अपना झुकाव रखना चाहिए । जो व्यक्ति निरन्तर उत्तम मनुष्यों की संगति में रहेगा, सत् साहित्य का पठन-पाठन करेगा, कल्याणकारी विचार मन में लायेगा और वैसी बातचीत करेगा, तो उसके नीचे गिरने की संभावना बहुत कम रहेगी, और वह स्वयं भी श्रेष्ठता के मार्ग का पथिक बनेगा।

इसी प्रकार गायत्री के तीसरे वाक्य 'भर्गो देवस्य धीमहि' में 'भर्ग' शब्द बड़े महत्व का है । इसका संदेश यह है कि मनुष्य को पापों का नाश करके प्रभु की कृपा को प्राप्त करने योग्य बनना चाहिये । संसार में मनुष्य को जो तरह-तरह के कष्ट, यंत्रणाएँ, त्रास दिखलाई पड़ते हैं उनका मूल कारण पाप ही है । जो मनुष्य पापों की तरफ से सावधान रहकर उनको अपने भीतर प्रवेश नहीं करने देता और जो पाप पूर्व जन्म या इस जन्म की पिछली भूलों के कारण हो चुके हैं उनको प्रयत्नपूर्वक नष्ट करता है वही आत्मिक, उन्नति करने में समर्थ होता है । तभी वह यह अनुभव करने लगता है कि परमात्मा की सृष्टि में जो कुछ है वह पवित्र और आनन्दमय ही है । पाप और बुराइयाँ तो ऐसे विकार हैं, जो परमात्मा के नियमों के प्रतिकूल चलने से उत्पन्न होते हैं । इसलिये सच्चा मनुष्य वही है जो सदैव अपनी और दूसरों की बुराइयों को दूर करते रहने का प्रयत्न करें । इस प्रकार वह सृष्टि को निर्मल और आनन्ददायक बनाने में सहायक होगा, जो परमात्मा को प्रसन्न करने वाला कार्य है । इससे मनुष्य देवत्व के गुणों को धारण करने योग्य बनने लगता है । उसको वह ज्ञान प्राप्त होता है जिसके द्वारा मनुष्य अपने को भौतिक-स्वरूप के स्थान में आत्म-स्वरूप में देखने लगता है । चूँकि आत्मा का स्वभाव अजर-अमर है, इसलिये आत्म-स्वरूप के समझ लेने से मनुष्य संसार के झूठे भय और प्रलोभनों से मुक्त हो जाता है और उस मार्ग का

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पथिक बन जाता है जो वास्तव में श्रेष्ठ पुरुषों में उपयुक्त कहा गया है ।

यह ठीक है कि वर्तमान समय में भौतिक उन्नति की तरफ ही लोगों का ध्यान विशेष रूप से लगा है । प्रत्येक मनुष्य अपनी शक्ति को अधिक से अधिक धन, वैभव, प्रतिष्ठा, नामवरी प्राप्त करने में लगा रहा है । आत्मिक उन्नति का महत्त्व या तो लोग भूल गये हैं अथवा उसे अव्यवहारिक चीज समझते हैं । पर यदि गम्भीर विचार किया जाय तो स्पष्ट जान पड़ता है कि ये भौतिक सफलताएँ भले या बुरे किसी भी मार्ग से प्राप्त की जायें, वे स्थायी नहीं हो सकतीं । वर्तमान समय में तो हम ऐसे परिवर्तन बड़े उग्र रूप में होते देख रहे हैं । बड़े से बड़े राजा, महाराजा सम्राट, बादशाह अपने ऊँचे पदों से गिरते और साधारण श्रेणी में मिलते देखे जा चुके हैं । ऐसी अवस्था में भौतिक उन्नति को सर्वोपरि महत्त्व देना और उसी को मनुष्यता की कसौटी समझ लेना बड़ी भूल है । हमको सबसे पहले विवेक, संयम, सत्य, दया, परमार्थ आदि दैवी गुणों को प्राप्त करने का प्रयत्न करना चाहिये । इन्हीं के द्वारा मनुष्य की आत्मोन्नति होती है । इनका पालन करते हुये जो भौतिक लाभ स्वभावतः प्राप्त हो जाते हैं, वे ही वास्तव में उपयोगी और कल्याणकारी होते हैं । अन्याय, अत्याचार अथवा चालाकी और धूर्तता आदि द्वारा प्राप्त की गई, सांसारिक सफलता कभी स्थायी नहीं होती और उससे मनुष्य का आत्मिक पतन ही होता है । इसलिये मनुष्यत्व की प्राप्ति की आकांक्षा रखने वाले को सदैव दैवी गुणों को ही प्रधानता देनी चाहिये ।

गायत्री का अन्तिम वाक्य 'धियोयोनः प्रचोदयात्' में परमात्मा से यह प्रार्थना की गई है कि वह हमारी बुद्धि को ऐसी प्रेरणा दे कि जिससे हम असत् मार्ग को त्याग कर सत्-मार्ग को जानने और उस पर चलने में समर्थ हो सकें । हमारे सब प्रकार के मनोरथों और प्रयत्नों के सफल होने का प्रधान साधन सद्बुद्धि ही है । जिन लोगों की बुद्धि लोभ, मोह अथवा अहंकार के वशीभूत होकर विपरीत हो जाती है, वे संसार में सच्चा सुख कभी नहीं पा सकते । चाहे प्रकट में वे वैभव सम्पन्न अच्छे मकानों में रहते और बढ़िया वस्त्र पहिनते दिखलाई पड़े, और चाहे वे ऊपर से दूसरे लोगों पर अपना रौब, शान अथवा आतंक जमालें, पर अपने मन के भीतर वे स्वयं अपने को श्रेष्ठ अनुभव नहीं कर सकते । इसलिये मनुष्य के लिये सबसे पहला आवश्यक गुण सद्बुद्धि ही है, जिससे वह प्रत्येक कार्य में भले-बुरे अथवा उचित-अनुचित का निर्णय करके सत्पथ पर चल सके ।

सद्बुद्धि की दूसरी विशेषता यह भी है कि वह अनेक मार्गों में से अपने अनुकूल मार्ग का निर्णय कर सके । संसार में अनेक महापुरुष हो चुके हैं और उन्होंने अपने युग के देश-काल के अनुसार उपदेश मनुष्यों को दिये हैं । इनमें से बहुत सी बातें एक दूसरे के विरुद्ध भी जान पड़ती हैं । विभिन्न देशों और मजहबों की बात छोड़ दें तो हमारे धर्मशास्त्रों में ही ऐसे विभिन्न सिद्धान्त पाये जाते हैं जिनके आधार पर लोग विभिन्न सम्प्रदायों में बँट गये हैं और एक दूसरे के सत पर आक्षेप करते हैं । ऐसी अवस्था में सद्बुद्धि द्वारा ही हम इस बात का निर्णय कर सकते हैं कि हमारी वर्तमान परिस्थिति में किस मार्ग का कितना अंश उपयोगी है । इसका यह आशय नहीं कि हम किसी सम्प्रदाय या उसके संचालक की निन्दा करें, पर हमको सब में से वे ही बातें ग्रहण करनी चाहिये जो विवेक, बुद्धि और तर्क के द्वारा वर्तमान परिस्थिति के अनुकूल सिद्ध हों और जिनसे अपना ही नहीं वरन् सभी का हित साधन हो ।

यह बात भी सत्य है कि ज्ञान, बल, वैभव आदि शक्तियाँ मनुष्यों में समान रूप से नहीं होतीं और वे परमात्मा की कृपा से ही मिलती हैं । पर जो व्यक्ति इनका प्रयोग केवल अपने लिये न करके लोकहित के लिये करते हैं वे ही उनके सच्चे अधिकारी होते हैं और उन्हीं में आगे चलकर इन शक्तियों का विशेष रूप से विकास होता है कि जिसे ज्यों-ज्यों खर्च किया जाता है, त्यों-त्यों ही वह बढ़ता है, ऐसी ही बात अन्य सद्गुणों के लिये भी सत्य है । विद्वान, धनवान या बलवान की सार्थकता और गौरव इसी में है कि वह अपने से कम ज्ञान वालों, निर्बलों, निर्धनों को ऊँचा उठाने में सहायता दें । ऐसा करने से केवल हमीं को सुख प्राप्त नहीं होगा, वरन् जगत में सुख का साम्राज्य स्थापित हो

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सकेगा । इसके विपरीत यदि हम अपनी विशेष शक्तियों का उपयोग इस दृष्टि से करेंगे कि दूसरे लोग आगे न बढ़ सकें, तो परिणाम यह होगा कि दुनिया की अवनति तो होगी ही हम स्वयं भी अपने को प्राप्त दैवी वरदानों का समुचित लाभ न उठा सकेंगे । खेद का विषय है कि वर्तमान समय में अधिकतर लोगों की मति ऐसी ही दिखलाई पड़ती है । वे दूसरे लोगों को आगे बढ़ाने, ऊँचा उठाने के बजाय, उनको नीचे ढकेलने उनकी उन्नति के मार्ग को अवरुद्ध करने में ही अपना लाभ समझते हैं । वे ख्याल करते हैं कि ऐसा करने से उन लोगों को मिलने वाला लाभ भी हमको प्राप्त हो जायगा और हम ही सबसे बड़े बने रहेंगे । पर ऐसी नीयत का परिणाम प्राय: उलटा ही देखने में आता है, अपनी संकीर्णता अथवा लोभ की प्रवृत्ति के कारण वे लोग सर्वसाधारण में बदनाम हो जाते हैं और इसके फल से उनकी स्थिति उच्च होने के बजाय गिरने लगती है। अगर हम आँख खोलकर देखें तो ऐसे उदाहरण समाज में लाखों की संख्या में मिल सकते हैं ।

इसलिये जो व्यक्ति इस मनुष्य-जन्म को वास्तव में सार्थक करना चाहता है, उसका कर्त्तव्य है कि परमात्मा से सदैव यही प्रार्थना करे कि वह उसकी बुद्धि को ऐसी प्रेरणा दे जिससे वह सत्पथ पर स्थिर रह सके । हमारे देश के भक्तों ने भगवान से जो यह प्रार्थना की है कि उनको ऐसी भक्ति प्राप्त हो जिससे उनका ध्यान किसी सांसारिक विषय की ओर न जाय, उसका आशय भी यही है । मनुष्य का वास्तविक लक्षण यही है कि वह श्रेष्ठ गुणों को प्राप्त करे और फिर उनका उपयोग लोकहित के लिये करे । हमारे बड़े-बड़े महापुरुष बता गये हैं कि दीन-दु:खी और किसी भी प्रकार के अभावग्रस्त व्यक्तियों की सेवा, सहायता करना ही भगवान की सच्ची भक्ति है । परमात्मा इसी प्रकार के कार्यों से प्रसन्न हो सकता है । इसलिये हमारा कर्त्तव्य यही है कि हमको जो भी शक्ति और साधन अब तक प्राप्त हो चुके हैं और आगे प्राप्त होने वाले हैं उनका सर्वोपरि उपयोग लोकहित-दूसरों के साथ भलाई करना ही समझें । अपना और अपने परिवार का भरण-पोषण करना तो मनुष्य का सहज स्वभाव है, उसके लिये किसी प्रकार की शिक्षा या चिन्तन की आवश्यकता नहीं होती । पर यदि हम परमात्मा की दया से अच्छी शक्ति और साधन पाकर भी उन सबका उपयोग केवल अपना पेट भरने के लिये करते हैं, तो हम वास्तविक मनुष्य कहलाने के अधिकारी नहीं हैं । इसलिये सम्पूर्ण गायत्री-मंत्र का आशय यही है कि हम परमात्मा से ऐसी शुद्ध-बुद्धि प्रदान करने की प्रार्थना करें जिससे अपना और दूसरों का कल्याण करने का भाव सदैव बना रहे और स्वार्थ के साथ ही परमार्थ को प्रधानता देकर हम इस मनुष्य जन्म हो सफल बनावें ।

हमारा कर्त्तव्य

गायत्री की महिमा, उसकी अमोघ शक्ति और मानव-जीवन पर उसके कल्याणकारी प्रभाव को भली प्रकार समझ लेने पर, इस बात को कहने की बहुत आवश्यकता रह जाती है कि मनुष्य का परम कर्त्तव्य है कि इस अमूल्य साधन से लाभ उठाकर अपने जीवन को सार्थक बनायें । जैसे हिन्दू-शास्त्रों में साधनों की कमी नहीं है, ज्ञान, योग, भक्ति, वैराग्य आदि अनेक साधन परलोक को सुधारने और मुक्ति प्राप्त करने के बतलाये गये हैं इसी प्रकार सांसारिक विषयों में कृतकार्य होने के लिये अनेक प्रकार के यज्ञ, जप-तप, जंत्र-मंत्र आदि का विधान है, पर गायत्री के समान लोक परलोक के उद्देश्यों को एक साथ पूरा करने वाला और सर्व सुलभ साधन दूसरा कदाचित् ही मिलेगा । इसके सम्बन्ध में एक विद्वान् ने निम्न सम्मति दी है :-

"इस महामंत्र के २४ अक्षरों का संगठन इतना अद्भुत है कि इसके मानसिक अथवा वाणी द्वारा उच्चारण करने से विशेष दिव्य तरंगें उठती हैं, जो बुद्धि-मंडल, मन-मंडल, मूलाधार चक्र तथा अन्य मर्म-स्थलों पर जाकर चोट लगाती हैं । जिस प्रकार वीणा के तार छेड़ने से अद्भुत मधुर स्वर सुनाई पड़ते हैं, उसी प्रकार गायत्री मंत्र का जप करने से, अथवा इसके शब्दों के मौन अथवा मुख के भीतर ही उच्चारण से भी हृदय-देश में तरंगें उठने लगती हैं, जो एक अलौकिक प्रभाव डालती हैं। यह क्रिया इतनी सूक्ष्म होती है कि इसे पूरे सावधान और समाहित चित्त वाले साधक ही अनुभव कर सकते हैं । परन्तु यह अनुभव सिद्ध है कि गायत्री-जप

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

करने तथा तदनुकूल आचरण बनाने से साधक का हृदय-कमल खिलने लग जाता है । उसे जीवन में एक ऐसा माधुर्य प्रतीत होने लगता है कि जगत के कार्य फिर अधिक घबराहट उत्पन्न नहीं करते ।

"यह कहना तो अत्युक्ति होगी कि इस साधन के पश्चात् सांसारिक कष्ट तथा चिन्ताएँ आती ही नहीं । आती तो हैं बड़े-बड़े योगियों, तपस्वी महानुभावों पर भी आपत्तियाँ आती हैं, परन्तु गायत्री उपासक या साधक की बुद्धि तथा हृदय इस प्रकार का बनने लगता है कि आपत्ति आने पर भी वह शान्त रहता है, सच पूछा जाय तो साधक और असाधक-भक्त और अभक्त में यही मुख्य अंतर है । "योग दर्शन" में जो "**वृत्ति सारूप्यमितरत्र**" सूत्र दिया गया है उसका अर्थ यही है कि सांसारिक व्यवहार में योगी की वृत्ति तो सदा हर्ष-शोक रहित, आनन्द से प्रकाशित होकर उत्साह और उल्लासयुक्त रहती है । इसके विपरीत सांसारिक मनुष्य की वृत्ति सदा हर्ष-शोक रूपी समुद्र में डूबती और उछलती रहती है ।

गायत्री का जप ऐसी मनोवृत्ति बनाने में बड़ा सहायक होता है । चौबीस अक्षरों से जो गायत्री के शब्द बने हैं, उनके उच्चारण से शरीर, मन, बुद्धि और हृदय पर दिव्य प्रभाव पड़ता है । जब निरन्तर प्रतिदिन यह क्रिया जारी रहती है तो बुद्धि का मोटापन दूर होने लगता है और वह तीक्ष्ण बनने लगती है । मनोविज्ञान के ज्ञाताओं ने भी अब यह स्वीकार कर लिया है कि "एक ही शब्द के बार-बार दुहराने--जप करने से मन पर स्थायी प्रभाव पड़ता है और वह बार-बार दुहराया हुआ विचार जीवन में ओत-प्रोत होने लगता है, जिससे हृदय तथा बुद्धि दोनों की मलिनता दूर हटाने में पूरी सहायता मिलती है ।"

गायत्री की साधना का मुख्य उद्देश्य यही है कि बुद्धि की मलिनता को दूर करके शुद्धता, निर्मलता प्राप्त करने के निमित्त परमात्मा से प्रार्थना की जाय । जब मनुष्य की बुद्धि, शुद्ध और सुमार्ग पर चलने वाली हो जाती है, तो मनुष्य स्वयमेव ही धन, बल, विद्या आदि सांसारिक विषयों में सफलता प्राप्त करने लगता है । महाभारत में कहा गया है--

न देवा दण्डमादाय रक्षान्त पशुपालवत् ।
यं तु रक्षितुमिच्छन्ति बुद्ध्या संसंविभजन्तितम् ।।
यस्मै देवाः प्रयच्छन्ति पुरुषाय पराभवम् ।
बुद्धि तस्यापकर्यन्ति सोऽवाचीनानि पश्यति ।।

-उद्योग पर्व ३४/८०, ८१

अर्थात्--"देवता दण्ड लेकर पशु-रक्षक की भाँति पुरुष की रक्षा नहीं करते । वे जिसकी रक्षा करना चाहते हैं उसें बुद्धि देते हैं, और जिसे असफल बनाना चाहते हैं उसकी बुद्धि पहले छीन लेते हैं ।"

इसलिये जो मनुष्य लौकिक और पारलौकिक उन्नति करके आत्म-कल्याण की अभिलाषा रखते हैं--मनुष्य जीवन को सफल बनाना चाहते हैं उनके लिये गायत्री-साधना द्वारा सद्बुद्धि की प्राप्ति करना ही सर्वश्रेष्ठ मार्ग है । इसमें कुछ लोग संदेह कर सकते हैं कि योरोप, अमरीका आदि के देश, जो गायत्री से कोई सम्बन्ध नहीं रखते, क्या विद्या-बुद्धि में हमसे किसी प्रकार कम हैं ? इस विषय में हमारा उत्तर यह है कि उन देशों के लोग विद्या-बुद्धि में हमसे आजकल बहुत बढ़े-चढ़े हैं, पर हमको देखना चाहिये कि उनका क्या परिणाम निकल रहा है । इन देशों ने पिछले दो-डेढ़ सौ वर्षों में विज्ञान की विविध शाखाओं में अभूतपूर्व उन्नति करके दिखलाई है । पर उस उन्नति का नतीजा यही निकला है कि वे सदैव एक दूसरे के संहार की योजना करते रहते हैं और परिणामस्वरूप सभी नाशोन्मुख हो रहे हैं । ऐसी उन्नति को हम आसुरी उन्नति कह सकते हैं और प्राचीन ग्रंथों से पता चलता है कि रावण, मेघनाद आदि राक्षसों ने भी इन सब विषयों में अद्भुत उन्नति करली थी, पर उससे न तो वे स्वयं सुखी हो सके और न उन्होंने दूसरों का हित किया । वे जब तक जीवित रहे तब तक मानवता का उच्छेद ही करते रहे, और अन्त में अपने कर्मों के फल से स्वयं जड़मूल से नष्ट हो गये । इसलिए केवल विद्या बुद्धि अथवा उसके द्वारा धन और बल की प्राप्ति को ही उन्नति समझना भूल है । विद्या और बुद्धि वही श्रेष्ठ है जिसका आधार अध्यात्मिकता पर हो । इसी विचार से बुद्धि के दैवी और आसुरी, दो विभाग कर दिये गये हैं । मनुष्य का सच्चाहित दैवी बुद्धि अथवा सद्बुद्धि से ही हो सकता है । भगवान् कृष्ण ने कहा है--

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

नास्ति बुद्धिरयुक्तस्य न चायुक्तस्य भावना ।
न चाभावयतः शान्तिरशान्तस्य कुतः सुखम् ॥

"साधन रहित पुरुष के अन्तःकरण में श्रेष्ठ बुद्धि नहीं हो सकती और बिना श्रेष्ठ भावना का विकास भी नहीं हो सकता । बिना श्रेष्ठ भावना के शान्ति प्राप्त नहीं हो सकती और शान्ति रहित पुरुष सुख प्राप्त नहीं कर सकता ।"

गायत्री द्वारा जो बुद्धि प्राप्त होती है वह श्रेष्ठ बुद्धि या सद्बुद्धि होती है । उसके द्वारा हमारे भीतर वास्तविक मनुष्यता का विकास होता है और हम अपना तथा दूसरों का कल्याण कर सकते हैं ।

आत्मबुद्धि जागृत कीजिये

मानव जीवन की सफलता के लिये सबसे मुख्य बात यह भी है कि हम अपने भीतर 'आत्म बुद्धि' को जागृत करें, अर्थात् संसार के अन्य व्यक्तियों और प्राणियों को भी अपने ही समान समझें और उनके साथ सदैव ऐसा ही व्यवहार करें जो हितकारी हो । गायत्री-मन्त्र तो आध्यात्मिकता का महान स्रोत है और उसकी शिक्षाओं पर आचरण करने से मनुष्य में आत्मबुद्धि का विकास होना अवश्यम्भावी है । गायत्री की शिक्षा आध्यात्मवाद की व्यवहारिक क्रिया है । श्रेष्ठ नागरिक बनने का मर्म इसमें है कि अन्य लोगों को अपने समान समझा जाय । दूसरे शब्दों में इसी बात को यों कह सकते हैं कि "दूसरों से वैसा व्यवहार करना चाहिये जैसा कि आप अपने लिये चाहते हैं ।" आप जैसा व्यवहार अपने साथ होता हुआ देख कर प्रसन्न होते हैं, जिस आचरण की दूसरों से आशा करते हैं वैसा ही आप स्वयं भी दूसरों के साथ में कीजिए । दूसरों के सुख में सुखी होने से मुफ्त में ही वह सुख प्रचुर मात्रा में मिल जाता है जिसको प्राप्त करने में बहुत खर्च करना पड़ता है। सुख के लिये बहुत प्रयत्न करने की आवश्यकता होती है। यदि आप दूसरों को सुखी देखकर प्रसन्न हुआ करें, दूसरों की बढ़ती देखकर आनन्द अनुभव किया करें तो अनायास ही सुखी होने के असंख्य अवसर प्राप्त होते रह सकते हैं । पास पड़ोस में, सगे सम्बन्धियों में, परिचितों अपरिचितों में ईश्वर की कृपा से सुखदायक घड़ियों का आगमन हुआ ही करता है । यदि उनकी बढ़ती को देखकर उदार हृदय व्यक्ति की नाईं खुश होने की आदत डाली जाय तो निस्संदेह अपने आनन्द की सीमा अनेक गुनी बढ़ सकती है । जिसके घर में मुफ्त का माल आकर जमा होता रहता है उसका अमीर बन जाना स्वाभाविक है, जिसको दूसरों के सुख में आनन्द आता है उसका हर घड़ी प्रसन्नता से परिपूर्ण रहना स्वाभाविक है । यदि आनन्द और सुख की प्राप्ति के लिए आप लालायित हैं तो आत्मबुद्धि को जागृत करके अपना आत्मभाव दूसरों के साथ छोड़ दें, उनके सुख में अपने को सुखी करने का अभ्यास करें तो जिसके लिये आप लालायित हैं उस वस्तु को आसानी से पा सकते हैं। वाटिका में खिले हुए पुष्पों को देखकर, सुन्दर चित्रों को देखकर, मन मोहक प्राकृतिक दृश्यों को देखकर आपका चित्त प्रसन्न हो जाता है, जड़ पदार्थों का वैभव देखकर दिल की कली खिल उठती है तो क्या कारण है कि चैतन्य स्वजातीय प्राणियों के उत्कर्ष पर हृदय आनन्द से पुलकित नहीं होता ? ईर्षा, डाह, कुढ़न, जलन के दुर्गुणों को यदि आपने अपना लिया तो कोई कारण नहीं कि अपने सुखी पड़ोसियों के सौभाग्य पर आनन्द प्रकट न करें ।

दूसरों के दुःख में दुखी होने की वृत्ति को अपना कर आप दया, करुणा, उदारता, सेवा, सहायता जैसी अमूल्य निधियों को प्रचुर मात्रा में संचय कर सकते हैं । यह संचय कुछ कम मूल्यवान नहीं है । दूसरों के दुःख में दुःखी होने से तामसी कष्ट नहीं होता, जो कष्ट होता है उसे पीड़ा नहीं कहते, पराये दुःख में दुःखी होने की वृत्ति को शब्दों में दुःख अवश्य कहा जाता है पर यथार्थ में वह एक प्रकार का आर्द्र सुख है । उससे कर्त्तव्य की प्रेरणा करने वाली एक कसक उठती है जो प्रेम की तरह मीठी, श्रद्धा की तरह पवित्र और करुण की तरह तरल होती है । वह दुःख स्वर्गीय शान्ति को अपने अन्दर छिपाये रहता है । पराये दुःख को देख कर जो आँसू गिरता है वह भीतर के अनेक पापों को बहा ले जाता है और हृदय को हल्का तथा पवित्र बना देता है ।

पराये सुख में सुखी और पराये दुःख में दुःखी होने की वृत्तियाँ परम सात्विक एवं उच्चकोटि की हैं । इनका संचार जिसके अन्दर होने लगता है

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उसको भीतर ही भीतर शान्ति और सन्तोष की आनन्ददायक सरिता बहती हुई दृष्टिगोचर होती है । अन्य सद्गुणों और उत्तम स्वभावों की खेती इस शीतल जल को प्राप्त करके फलने फूलने लगती है । केवल अपने ही हानि लाभ से प्रभावित होने वाले और दूसरों की स्थिति में कुछ भी दिलचस्पी न लेने वाले स्वार्थी लोग बहुत ही सीमित क्षेत्र में बँधे रहते हैं, वे ऐश आराम, या दुःख दर्द का निकृष्ट कोटि का हर्ष विषाद अनुभव करते रहते हैं । सात्विक और उच्च आध्यात्मिक अनुभूतियाँ स्वार्थ में नहीं परमार्थ में मिलती हैं । जिनको पराये सुख-दुःखों में दिलचस्पी है वे ही उस ऊँचे आनन्द का अनुभव कर सकते हैं ।

आप दूसरों से यह आशा करते होंगे कि यदि कोई व्यक्ति कुछ चीज उधार ले जाय तो उसे अच्छी हालत में ठीक समय पर वापिस कर दे । यदि किसी ने कुछ वचन दिया है तो उसे यथोचित रीति से पालन करें । सभ्य व्यवहार की, समय की पाबंदी की, दूसरों से आशा की जाती है और यह ख्याल किया जाता है कि यदि कुछ कष्ट हमारे ऊपर आ पड़ेगा तो अन्य लोग हमारी सहायता करेंगे । जिस प्रकार की आशायें आप दूसरे लोगों से करते हैं । ठीक वैसी ही का दूसरे आपसे करते हैं । यह भलमनसाहत का तकाजा है । मनुष्यता के प्रारम्भिक कर्त्तव्यों का पालन करना हर मनुष्य का कर्त्तव्य है । कोई नहीं चाहता कि उसे बेढंगे बरताव का सामना करनाा पड़े, इसलिए उसे भी चाहिए कि इस प्रकार का आचरण स्वयं भी न करें ।

मनुष्य जीवन की सार्थकता के लिये जितनी बातों या गुणों की आवश्यकता है, उनमें यह 'आत्मबुद्धि' की भावना अत्यावश्यक है । क्योंकि जो मनुष्य केवल अपने व्यक्तिगत हित का ही ध्यान रखता है और दूसरों की भलाई-बुराई के प्रति उपेक्षा का भाव रखता है, वह चाहे कैसा भी गुणी या त्यागी तपस्वी भी क्यों न हो कभी सम्माननीय पद का अधिकारी नहीं हो सकता । मनुष्य का सर्व प्रथम लक्षण यही है कि अपनी शक्ति और साधनों का उपयोग दूसरों के हितार्थ करे । यही कारण है कि वेद से लेकर आज तक के ज्ञानी मनुष्यों ने एक स्वर से यही कहा है कि जो केवल अपने लिये जीता है उसका जीवन व्यर्थ है । मनुष्य में परोपकार या परमार्थ की भावना का होना परमावश्यक है और यह तब तक सम्भव नहीं जब तक हम अन्य प्राणियों के प्रति आत्मबुद्धि का भाव न रखें । इसी से शास्त्रों में कहा गया है--

नहीदृशं संवननं त्रिषुलोकेषु विद्यते ।
दया मैत्री च भूतेषु दानं च मधुरा चवाक् ।।

"परमेश्वर को प्रसन्न करने का सर्व प्रधान मार्ग यही है कि दुखियों पर दया करनी, समान स्थिति वालों से प्रेम रखना, उदारता का व्यवहार करना और मीठी वाणी बोलना ।"

तप्यन्ते लोक तापेन प्रायशः साधवो जनाः ।
परमाराधनं तद्धि पुरुषस्याखिलात्मनः ।।

"सज्जन पुरुष दूसरे मनुष्यों की विपत्ति देखकर व्याकुल हो जाते हैं और उसे दूर करने के लिये स्वयं दुःख उठाते हैं । यही भगवान की सबसे बड़ी आराधना है ।"

तितिक्षया करुण या मैत्र्याचाखिल जन्तषु ।
समत्वेन च सर्वात्मा भगवान स प्रसीदति ।।

"सहनशीलता, करुणा, सम्पूर्ण प्राणियों से मित्रता, सब के साथ समता का व्यवहार करने से भगवान प्रसन्न होते हैं ।"

गायत्री-मंत्र का यही उपदेश है कि मनुष्य भगवान से ऐसी सद्बुद्धि की प्रार्थना करता रहे जिससे वह झूठ, अहंकार, मोह, लोभ आदि से बचकर मनुष्य के वास्तविक कर्त्तव्यों का पालन करता रहे । स्वयं उन्नति के मार्ग पर चले और दूसरों को भी उसी मार्ग पर चलने की प्रेरणा दे, सहायक बने । क्योंकि मनुष्य ने आर्थिक, सामाजिक, मानसिक, आत्मिक क्षेत्रों में जो भी प्रगति की है वह ऐसी ही सामूहिक भावना से हो सकी है । अकेला मनुष्य तो बिलकुल बेकार अथवा असमर्थ है । अगर उसने कुछ शक्ति भी प्राप्त की है, उसमें कुछ विशेषतायें भी हैं, तो जब तक उनका उपयोग दूसरों के लिये नहीं किया जायगा तब तक उनका कोई महत्त्व नहीं हो सकता । इसलिये मनुष्य-जीवन को सार्थक बनाने का मुख्य उपाय यही है कि हम अपने हित के साथ दूसरों के हित, कल्याण का भी ध्यान रखें ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विपत्ति निवारणी गायत्री

पाप-नाशिनी गायत्री

गायत्री को धर्म ग्रन्थों में 'पाप-नाशिनी' कहा गया है । इसके अनेक प्रमाण मिलते हैं ।

गायत्र्यास्तु परन्नास्ति शोधनं पाप कर्मणाय ।

-सम्वर्त स्मृति २१८

अर्थात्- पापों का संशोधन करने में गायत्री के समान और कोई उपाय नहीं है ।

गायत्री जप कृद् भक्त्या सर्व पापै प्रयुज्यते ।

-पाराशर

भक्तिपूर्वक गायत्री जपने वाला सब पापों से छूट जाता है ।

सहस्त्र कृत्वस्त्यकभ्यस्य वहिरेतत्रिकं द्विजः ।
महातोप्येन सो मासात्वचे वाहिर्विमुच्यते ।।

-मनुस्मृति २।७९

अर्थात्-गायत्री ! का विधिवत् जप करने वाला द्विज सब प्रकार के पापों से छुटकारा प्राप्त कर लेता है ।

यदाह्नात्कुरुते पापं तदह्नात्प्रति मुच्यते ।
यद्रात्रियात्कुरुते पापं तद्रात्रियात्प्रति मुच्यते ।।

-तै० आ० प्र० १० ।३४

हे गायत्री! तुम्हारे प्रभाव से दिन में किये पाप दिन में नष्ट हो जाते हैं और रात्रि में किये पाप रात्रि में ही नष्ट हो जाते हैं ।

गायत्री उपनिषद के तेईसवें चौबीसवें मन्त्र में उल्लेख है-

सायमधीयानो दिवस कृतं पापं नाशयति । प्रातरधीयानो रात्रि कृतं पापं नाशयति । तत् सायं प्रातरधीयानो पापीऽपापी भवति ।। अपेय पानात् पूतो भवति । अभक्ष भक्षणात् पूतो भवति । अज्ञानात्पूतो भवति । स्वर्णस्तेयात् पूतो भवति । अब्रह्मचारी सब्रह्मचारी भवति ।।

अर्थात्-सायंकाल में गायत्री उपासना करने से दिन में किये हुए पाप नष्ट हो जाते हैं । प्रातःकाल में जप करने से रात्रि में किए हुए पाप नष्ट हो जाते हैं । सायं प्रातः दोनों समय जप करने से पापी भी निष्पाप हो जाते हैं । मद्यादि अपेय पीने वाले, माँस आदि अभक्ष खाने वाले, अज्ञानी, चोर, व्यभिचारी भी इन दुष्कर्मों से छुटकारा प्राप्त करके निष्पाप बनते हैं ।

इस प्रकार के अनेकों अभिवचन-धर्म ग्रन्थों में मिलते हैं जिनसे प्रकट होता है कि पापों से छूटना गायत्री-उपासना के द्वारा सर्वथा सुलभ है । गायत्री-उपासना की यह विशेषता है कि इन २४ अक्षरों में सन्निहित शक्तियों का गुंजन जब अन्तःकरण में होता है तो आत्मा में समाया हुआ सतोगुण जाग्रत होता है । भावना क्षेत्र में उच्चकोटि के सात्विक विचारों की दिन-दिन अभिवृद्धि होती है और उसके फलस्वरूप स्वभाव एवं कार्यक्रम में भी परिवर्तन होने लगता है । जिसकी आत्मा में सतोगुणी विचार बढ़ेंगे, उसके कार्यों में भी वह उत्तमता अवश्य ही परिलक्षित होगी ।

स्वभाव कोई सुनिश्चित या चिरस्थायी वस्तु नहीं है । वह परिस्थितियों एवं भावनाओं के अनुरूप बदलता रहता है । आज जो पापी है वह आगे सारे जीवन भर पापी ही रहे यह आवश्यक नहीं । इसी प्रकार यह भी नहीं कहा जा सकता कि जो व्यक्ति आज सज्जन और सदाचारी है उसकी यह प्रवृत्ति आगे भी सदा बनी रहेगी । परिस्थितियाँ और भावनाएँ मनुष्य में इतना परिवर्तन कर सकती हैं कि वह बिल्कुल ही बदला हुआ प्रतीत हो ।

पाप एक प्रकार की मानसिक परिस्थिति एवं आदत है । उसे मनोबल के द्वारा छोड़ देना मनुष्य के अपने हाथ की बात है । इस परिवर्तन में, पाप-त्याग में जिस मनोबल की आवश्यकता है वह गायत्री-उपासना द्वारा आशाजनक मात्रा में प्राप्त होता है और आन्तरिक कायाकल्प के साधन सहज ही जुट जाते हैं । पापों से छुटकारा पाना उतना ही सरल है जितना बढ़ी हुई दाढ़ी को मुड़ा डालना । किसी कुमार्गगामी का यह सोचना उचित नहीं कि हम अब तक कुमार्गगामी बने रहे हैं । बुरे विचारों को, बुरे कार्यों को अपनाये रहे हैं तो आगे हमारा सुधार किस प्रकार सम्भव है ? ऐसी निराशा उचित

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

नहीं, हर गिरने वाला उठ सकता है, हर पापी पवित्र बन सकता है ।

इतिहास बताता है कि एक चाण्डाल कुलोत्पन्न भयंकर तस्कर बदल कर महर्षि बाल्मीकि हो गया । जीवन भर वेश्यावृत्ति करने वाली गणिका आन्तरिक परिवर्तन के कारण परम साध्वी देवियों को प्राप्त होने वाली परमगति की अधिकारणी हुई, कसाई का पेशा करते हुए जिन्दगी गुजारे देने वाला अजामिल और सदन, परम भागवत कहलाये । इस प्रकार अनेकों नीच काम करने वाले उच्चता को प्राप्त हुए हैं और हीन कुलोत्पन्नों को उच्च वर्ण की प्रतिष्ठा मिली है । रैदास चमार, कबीर जुलाहे, रामानुज शूद्र, षट्कोपाचार्य खटीक, तिरुवल्लुवर अन्त्यजवर्ण में उत्पन्न हुए थे, पर उनकी स्थिति अनेकों ब्राह्मणों से ऊँची थी । विश्वामित्र क्षत्री से ब्राह्मण बने थे ।

जहाँ पतित स्थान से ऊपर चढ़ने के उदाहरणों से इतिहास भरा पड़ा है, वहाँ उच्च स्थिति के लोगों के पतित होने के भी उदाहरण कम नहीं हैं । पुलिस्त के उत्तम ब्रह्मकुल में उत्पन्न हुआ चारों वेदों का महापण्डित रावण, मनुष्यता से भी पतित होकर राक्षस कहलाया, खोटा अन्न खाने से द्रोण और भीष्म जैसे ज्ञानी पुरुष, अन्यायी कौरवों के समर्थक हो गए । विश्वामित्र ने क्रोध में आकर वशिष्ठजी के निर्दोष बालकों की हत्या कर डाली, व्यास ने धीवर की कुमारी कन्या से व्यभिचार करके सन्तान उत्पन्न की, विश्वामित्र ने वेश्या पर आसक्त होकर उसे लम्बे समय तक अपने पास रखा, चन्द्रमा जैसा देवता गुरु-माता के साथ कुमार्गगामी बना, देवताओं के राजा इन्द्र को व्यभिचार के कारण शाप का भाजन होना पड़ा, ब्रह्मा अपनी पुत्री पर ही मोहित हो गए, ब्रह्मचारी नारद मोहग्रस्त होकर विवाह करने को स्वयम्बर में पहुँचे, सड़ी-गली काया वाले वयोवृद्ध च्यवन ऋषि को सुकुमार सुकन्या से विवाह करने की सूझी, बलि राजा के दान में भाँजी मारते हुए शुक्राचार्य ने अपनी आँख गँवा दीं । धर्मराज युधिष्ठिर तक ने अश्वत्थामा के मरने की पुष्टि करके अपने मुख पर कालिख पोती और धीरे से 'नरोवा कुञ्जरोवा' गुन-गुनाकर अपने को छद्म से बचाने की प्रवञ्चना की । कहाँ तक कहें, किस-किस की कहें, इस दृष्टि से इतिहास देखते हैं तो बड़ों-बड़ों को स्थान-च्युत हुआ पाते हैं । इससे प्रकट होता है कि आंतरिक स्थिति में हेर-फेर हो जाने से भले मनुष्य बुरे और बुरे मनुष्य भले बन सकते हैं ।

कई बार ऐसा भी प्रतीत होता है कि मनुष्य मजबूरी, अज्ञान, कुसंग, कौतूहल या परिस्थितिवश बुराई कर बैठता है । उस समय वह उस पाप की कोई बहुत बड़ी भयंकरता नहीं समझता । पीछे उसका मानसिक विकास होने पर वही बुराई बहुत बढ़ी-चढ़ी मालूम पड़ती है । ऐसे पाप चूँकि उस समय की घटिया मानसिक स्थिति के कारण किये गये थे, इससे उनके मूल्य का दण्ड भी उतना ही छोटा होता है । बिल्ली रोज ही चूहे पकड़ती है । चिड़ियाँ रोज ही कीड़े-मकोड़े खाती हैं, उनकी मानसिक स्थिति के अनुसार यह कार्य साधारण एवं स्वाभाविक है, पर मनुष्य की अन्तरात्मा के अनुसार जीव हिंसा के समय करुणा उत्पन्न होती है इसलिए वह उसके लिए पाप है । मनुष्य की मानसिक परिस्थितियों में भी कारणवश बिल्ली और मनुष्य में जितना न्यूनाधिक अन्तर हो सकता है । ऐसी दशा में उस दुर्बल मनोवृत्ति के व्यक्ति द्वारा अज्ञानावस्था में किए हुए पाप ईश्वर की दृष्टि में उतने गम्भीर नहीं माने जाते जितने कि प्रचलित आहार संहिता के अनुसार भयंकर माने जाते हैं ।

कई बार ऐसा भी होता है कि मनुष्य सदुद्देश्य से कुछ ऐसे काम कर डालता है जो प्रचलित आचार-संहिता के कारण भारी पाप मालूम पड़ते हैं । पर न्याय की तुलना पर वे उतने गर्हित नहीं मालूम पड़ते, वरन् अनेक बार क्षम्य ही नहीं वे बुरे कार्य प्रशंसनीय भी बन जाते हैं । कोई व्यक्ति दूसरों का धन अपहरण करने के लिए किसी की हत्या करता है यह हत्या घोर पाप हुई । कोई न्यायाधीश या जल्लाद समाज के शत्रु अपराधी को न्याय की रक्षा करने के लिए प्राण-दण्ड देता है, वह उसके लिए कर्त्तव्य-पालन है । कोई व्यक्ति आततायी डाकुओं के आक्रमण से किसी असहाय का प्राण बचाने के लिए अपने को जोखिम में डालकर उन

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अत्याचारियों का वध कर देता है तो वह पुण्य है । हत्या तीनों ने की पर तीनों की हत्याएँ अलग-अलग परिणाम वाली हैं । तीनों हत्यारे डाकू, न्यायाधीश एवं आततायी से लड़कर उसका वध करने वाले- समान रूप से पापी नहीं गिने जा सकते ।

चोरी एक बुरा कर्म है । परन्तु परिस्थितियों-वश वह भी सदा बुरा कर्म नहीं रहता । स्वयं सम्पन्न होते हुए भी जो अन्यायपूर्वक दूसरों का धन हरण करता है वह पक्का चोर है । दूसरा उदाहरण लीजिए—भूख से प्राण जाने की मजबूरी में किसी सुसम्पन्न आदमी का कुछ चुराकर आत्म-रक्षा करना कोई बहुत बड़ा पाप नहीं है । तीसरी स्थिति में-किसी दुष्ट की साधना सामिग्री चुराकर उसे शक्तिहीन बना देना और उस चुराई हुई सामिग्री को सन्मार्ग में लगा देना पुण्य का काम है । तीनों चोर समान श्रेणी के पापी नहीं ठहराये जा सकते ।

परिस्थिति, मजबूरी, धर्मरक्षा तथा बौद्धिक स्वल्प विकास के कारणोंवश कई बार ऐसे कार्य होते हैं जो स्थूल दृष्टि से देखने में निन्दनीय मालूम पड़ते हैं पर वस्तुतः उनके पीछे पाप-भावना छिपी नहीं होती । ऐसे कार्य पाप नहीं कहे जा सकते । बालक का फोड़ा चिरवाने के लिए माता को उसे अस्पताल ले जाना पड़ता है और बालक को कष्ट में डालना पड़ता है । रोगी की प्राण-रक्षा के लिए डाक्टर को कसाई के समान चीर-फाड़ करने का क्रूर कार्य करना पड़ता है । रोगी की कुपथ्यकारक इच्छाओं को टालने के लिए उपचारक को झूँठे बहाने बनाकर किसी प्रकार समझाना पड़ता है । बालकों की जिद का भी प्रायः ऐसा ही समाधान किया जाता है । हिंसक जन्तुओं, शस्त्रधारी दस्युओं पर सामने से नहीं बल्कि पीछे से छिपकर आक्रमण करना पड़ता है ।

प्राचीन इतिहास पर दृष्टिपात करने से प्रतीत होता है कि महापुरुषों को भी धर्म की स्थूल मर्यादाओं का उल्लंघन करना पड़ता है । लोक-हित, धर्म-वृद्धि और अधर्मनाश की सद्भावना के कारण उन्हें वैसा पापी नहीं बनना पड़ा जैसे कि वही काम करने वाले आदमी को साधारणतः बनना पड़ता है ।

भगवान विष्णु ने भस्मासुर से शंकरजी के प्राण बचाने के लिए मोहनी रूप बनाकर उसे छला और नष्ट किया । समुद्र-मन्थन के समय अमृत-घट के बँटवारे पर जब देवताओं और असुरों में झगड़ा हो रहा था तब भी विष्णु ने मायामोहिनी रूप बनाकर असुरों को धोखे में रखा और अमृत देवताओं को पिला दिया । सती वृन्दा का सतीत्व डिगाने के लिए भगवान ने जालन्धर का रूप बनाया था । राजा बलि को छलने के लिए वामन का रूप धारण किया था । पेड़ की आड़ में छिपकर राम ने अनुचित रूप से बाली को मारा था ।

महाभारत में धर्मराज युधिष्ठिर ने अश्वत्थामा की मृत्यु का छलपूर्ण समर्थन किया । अर्जुन ने शिखण्डी की ओट में खड़े होकर भीष्म को मारा, कर्ण का रथ कीचड़ में गड़ जाने पर भी उसका वध किया । घोर दुर्भिक्ष में क्षुधा-पीड़ित होने पर विश्वामित्र ऋषि ने चाण्डाल के घर से कुत्ते का माँस लाकर खाया । प्रहलाद का पिता की आज्ञा का उल्लंघन करना, विभीषण का भाई को त्यागना, भरत का माता की भर्त्सना करना, बलि का गुरु शुक्राचार्य की आज्ञा न मानना, गोपियों का परपुरुष श्री कृष्णजी से प्रेम करना, मीरा का अपने पति को त्याग देना, परशुरामजी का अपनी माता का शिर काट देना आदि कार्य साधारणतः अधर्म प्रतीत होते हैं, पर इनके कर्त्ताओं ने सदुद्देश्य से प्रेरित होकर कार्य किया था इसलिए धर्म की सूक्ष्म दृष्टि से यह कार्य पातक श्रेणी में नहीं गिने गये ।

शिवाजी ने अफजलखाँ का वध कूटनीतिक चातुर्य से किया था । भारतीय स्वाधीनता के इतिहास में क्रांतिकारियों ने ब्रिटिश सरकार के साथ जिस नीति को अपनाया था उसमें चोरी, डकैती, जासूसी, हत्या, कत्ल, झूँठ बोलना, छल, विश्वासघात आदि ऐसे सभी कार्यों का समावेश हुआ था, जो मोटे तौर से अधर्म कहे जाते हैं । परन्तु उसकी आत्मा पवित्र थी, असंख्य दीन-दुखी प्रजा की करुणाजनक स्थिति से द्रवित होकर अन्यायी शासकों को उलटने के लिए ही उन्होंने ऐसा किया था । कानून उन्हें भले ही अपराधी बतावे पर वस्तुतः वे पापी कदापि नहीं कहे जा सकते ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अधर्म का नाश और धर्म की रक्षा के लिए भगवान को युग-युग में अवतार लेकर अगणित हत्याएँ करनी पड़ती हैं और रक्त की धार बहानी पड़ती है । इसमें पाप नहीं होता । सदुद्देश्य के लिए किया हुआ अनुचित कार्य भी उचित के समान ही उत्तम माना गया है । इस प्रकार मजबूत किये गये, सताये गये, विभुक्षित, संत्रस्त, दुखी, उत्तेजित, आपत्तिग्रस्त अथवा अज्ञानी, बालक, रोगी, पागल कोई अनुचित कार्य कर बैठते हैं, तो वह क्षम्तव्य माने जाते हैं, कारण यह है कि उस मनोभूमि का मनुष्य, धर्म और कर्त्तव्य के दृष्टिकोण से किसी बात पर ठीक विचार करने में समर्थ नहीं होता ।

पापियों की सूची में जितने लोग हैं उनमें से अधिंकांश ऐसे होते हैं जिन्हें उपरोक्त किन्हीं कारणों से अनुचित कार्य करने पड़े, पीछे वे उनके स्वभाव में आ गये । परिस्थितियों ने, मजबूरियों ने, आदतों ने उन्हें लाचार कर दिया और वे बुराई की ढालू सड़क पर फिसलते चले गये । यदि दूसरे प्रकार की परिस्थितियाँ, सुविधाएँ उन्हें मिलतीं, ऊँचा उठाने वाले और सन्तोष देने वाले साधन मिल जाते तो निश्चय ही वे अच्छे बने होते ।

कानून और लोकमत चाहे किसी को कितना ही दोषी ठहरा सकता है, स्थूल दृष्टि से कोई आदमी अत्यन्त बुरा हो सकता है पर वास्तविक पापियों की संख्या इस संसार में बहुत कम है । जो परिस्थितियों के वश में बुरे बन गये हैं, उन्हें भी सुधारा जा सकता है, क्योंकि प्रत्येक की आत्मा ईश्वर का अंश होने के कारण तत्वतः पवित्र है । बुराई उसके ऊपर छाया मैल है । मैल को साफ करना न तो असम्भव है न कष्टसाध्य । वरन् यह कार्य आसानी से हो सकता है ।

कई व्यक्ति सोचते हैं कि हमने अब तक इतने पाप किये हैं, इतनी बुराइयाँ की हैं, हमारे प्रकट और अप्रकट पापों की सूची बहुत बड़ी है । हम अब सुधर नहीं सकते । हमें न जाने कब तक नरक में सड़ना पड़ेगा । हमारा उद्धार और कल्याण अब कैसे हो सकता है ? ऐसा सोचने वालों को जानना चाहिए कि सन्मार्ग पर चलने का प्रण करते ही उनकी पुरानी मैली-कुचैली पोशाक उतर जाती हैं और उसमें भरे हुए जुएँ भी उसी में रह जाते हैं । पाप-वासनाओं का परित्याग करने और उनका सच्चे हृदय से प्रायश्चित करने से पिछले पापों के बुरे फलों से छुटकारा मिल सकता है । केवल वे परिपक्व प्रारब्ध कर्म जो इस जन्म के लिये भाग्य प्रारब्ध बन चुके हैं, उन्हें तो किसी समय भोगना ही पड़ता है । वे इसके अतिरिक्त अनेकों पापों का साधन हो सकते हैं । बुराइयों के आगे न करने एवं पिछले समय में किये हुए पापों का प्रायश्चित करने से ईश्वरीय दण्ड व्यवस्था हल्की हो सकती है, क्षमादान भी मिल सकता है ।

गायत्री उपासना से उत्पन्न आत्मबल निश्चय ही साधक की अनेक बुराइयों, बुरी आदतों, पाप वृत्तियों को छुड़ाने में सहायक होता है । कई लोग पूछते हैं हम में अमुक बुराई है, भोजन में भक्ष-अभक्ष का अब तक हमने ध्यान नहीं रखा है, अमुक-अमुक दुष्कर्म किये हैं ? क्या हम भी गायत्री-उपासना के अधिकारी हो सकते हैं ? ऐसे लोगों को भली प्रकार समझना चाहिए कि गायत्री एक प्रकार का साबुन है जो हर मैले कपड़े को साफ कर सकता है, हर मैले कपड़े को साबुन का उपयोग करने का अधिकार है । साबुन का निर्माण ही मैल काटने के लिए हुआ है, फिर यह सोचना व्यर्थ है कि उसका उपयोग करने का अधिकारी मैला कपड़ा है या नहीं ? मनोभूमि पर छाये हुए कुसंस्कारों, मतभेदों को साफ करने के लिए गायत्री का उपयोग एक अध्यात्मिक साबुन की तरह है । उसका उपयोग करने से किसी मैले कपड़े को, पापी मनुष्य को, संकोच करने की आवश्यकता नहीं है ।

आन्तरिक स्थिति में परिवर्तन होने से पाप-वृत्तियों से छुटकारा पूर्ण सुनिश्चित एवं सरल है । आज जो पापी है कल ही यदि वह सन्त बन जाय तो इसमें कुछ भी असम्भव या आश्चर्य की बात नहीं है । इसी सीधी-सी बात को शास्त्रकारों ने गायत्री द्वारा पाप-नाश का महात्म्य बताते हुए बहुत जोर देकर कहा है । इस पर अविश्वास या सन्देह करने का कोई कारण दिखाई नहीं देता ।

यह दूसरा प्रश्न है कि जो पाप अब तक किये जा चुके हैं उनके कर्म फल से, दण्ड या नरक से

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

छुटकारा मिलेगा या नहीं ? इस सम्बन्ध में यह आशंका होती है कि यदि यह माना जाय कि अमुक उपाय से पिछले कर्मों के दण्ड से छुटकारा मिल जाता है तो कुमार्गगामी लोग पाप कर्म करते रहेंगे और उस शोधन उपाय-उपासना आदि को करके यह सोच लिया करेंगे कि हमारे पिछले पाप तो नष्ट हो ही गये । अब आगे भी उन पाप कर्मों को जारी रखें और उस पाप-नाशक उपासना को कर लिया करें, जिससे पाप के द्वारा होने वाले लाभ भी मिलते रहें और उपासना द्वारा उनके दण्ड से छुटकारा प्राप्त करने का लाभ भी मिलता रहे ।

यह आशंका हर विचारशील को निर्मूल कर लेनी चाहिए । यदि पाप कर्म आगे भी जारी रहें तो वह व्यक्ति पापी ही रहा । उसके पाप-मुक्त होने का प्रश्न ही उत्पन्न नहीं हुआ । जब मनुष्य पापों से घृणा करने लगे और घृणित विचारों से, घृणित कार्यों से उसी प्रकार बचे जैसे स्वच्छता की दृष्टि से मल-मूत्र की गंदगी से बचा जाता है । ऐसी स्थिति प्राप्त होने पर उस व्यक्ति की मनोदशा यह नहीं रह सकती कि पाप कर्मों को अपनाये रहे और यह आशा करें कि केवल थोड़े से भजन की रिश्वत पाकर परमात्मा उसके निरन्तर किये जाने वाले दुष्कर्मों को क्षमा कर देगा ।

परन्तु जिन्होंने पाप कर्म छोड़ दिये हैं, पाप-वृत्तियों का परित्याग ही नहीं, पिछली भूलों का प्रायश्चित भी किया है उनकी पिछली भूलों पर परमात्मा की कचहरी में उदार दृष्टि से विचार किया जाता है ।

अपराधों की निवृत्ति के लिए सर्वत्र 'दण्ड विधान' काम में लाया जाता है । बच्चों ने गड़बड़ी की कि माता की डाँट, चपत पड़ी । शिष्य ने प्रमाद किया कि गुरु ने छड़ी सँभाली । सामाजिक नियमों को भंग किया कि पंचायत ने दण्ड दिया । कानून का उल्लंघन हुआ कि जुर्माना, जेल, काला पानी या फाँसी तैयार है । ईश्वर दैविक, दैहिक, भौतिक दुःख देकर पापों का दण्ड देता है । यह दण्ड विधान प्रतिशोध या प्रतिहिंसा मात्र नहीं है । 'खून का बदला खून' की जंगली प्रथा का कारण नहीं, दण्ड विधान का निर्माण उच्च आध्यात्मिक विज्ञान के आधार पर किया गया है । कारण यह है कि दण्ड स्वरूप जो कष्ट दिये जाते हैं, उनसे मनुष्य के भीतर एक खलबली मचती है, प्रतिक्रिया होती है, तेजी आती है, जिससे उसका गुप्त मानस चौंक पड़ता है और भूल को छोड़कर उचित मार्ग पर आ जाता है । 'तप' में ऐसी शक्ति ही है । तप की गर्मी से अनात्म तत्त्वों का संहार होता है ।

दूसरों द्वारा दण्ड के रूप में बलात् तप कराके हमारी शुद्धि की जाती है । इस प्रणाली को हम स्वयं ही अपना लें, अपने गुप्त-प्रकट पापों का दण्ड स्वयं ही अपने को देकर स्वेच्छापूर्वक तप करें तो वह दूसरों द्वारा बलात् कराये हुए तप की अपेक्षा असंख्य गुना उत्तम है । उसमें न अपमान होता है न प्रतिहिंसा एवं न आत्म-ग्लानि से चित्त क्षुभित होता है, वरन् स्वेच्छा तप से एक आध्यात्मिक आनन्द आता है, शौर्य और साहस प्रकट होता है तथा दूसरों की दृष्टि में अपनी श्रेष्ठता, प्रतिष्ठा बढ़ती है । पापों की निवृत्ति के लिए आत्म-तेज की अग्नि चाहिए, इस अग्नि की उत्पत्ति से दुहरा लाभ होता है, एक तो हानिकारक तत्त्वों का , कषाय-कल्मषों का नाश होता है, दूसरे उसी ऊष्मा और प्रकाश से दैवी तत्त्वों का विकास, पोषण एवं अभिवर्धन होता है, जिसके कारण साधक तपस्वी, मनस्वी एवं तेजस्वी बन जाता है । हमारे धर्म-शास्त्रों में पग-पग पर व्रत, उपवास, दान, स्नान, आचार-विचार आदि के विधि-विधान इसी दृष्टि से किए गये हैं कि उन्हें अपनाकर मनुष्य इन दुहरे लाभों को उठा सके ।

अपने से कोई भूल, पाप या बुराइयाँ बन पड़ी हों उनके अशुभ फलों के निवारण के लिए सच्चा प्रायश्चित तो यही है कि उन्हें फिर न करने का दृढ़ निश्चय किया जाय, पर यदि इस निश्चय के साथ-साथ थोड़ी तपश्चर्या भी की जाय तो उस प्रतिज्ञा को बल मिलता है और उसके पालन में दृढ़ता आती है । साथ ही यह तपश्चर्या सात्विकता की तीव्र गति से वृद्धि करती है, चैतन्यता उत्पन्न करती है और ऐसे उत्तमोत्तम गुण, कर्म, स्वभावों को उत्पन्न करती है जिससे पवित्रतामय, साधनामय, मंगलमय जीवन बिताना सुगम हो जाता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गायत्री-शक्ति के आधार पर की गई तपश्चर्या बड़े से बड़े पापों को भी निष्पाप बनाने, उसके पाप-पुञ्जों को नष्ट करने तथा भविष्य के लिए उसे निष्पाप रहने योग्य बना सकती है ।

पापों से छुटकारा प्राप्त करना सम्भव है या नहीं ? इस प्रश्न पर विचार करते हुए हमें यह बात भली प्रकार समझ लेनी चाहिए कि आत्मा सर्वथा स्वच्छ, निर्मल, पवित्र, शुद्ध बुद्ध और निर्लिप्त है । श्वेत काँच या पारदर्शी पात्र अपने आप में स्वच्छ होता है, उसमें कोई रंग नहीं होता, पर पात्र में किसी रंग का पानी भर दिया जाय तो वह उसी रंग का दीखने लगेगा । साधारणत: उसे उसी रंग का पात्र कहा जायेगा, इतने पर भी पात्र का मूल सर्वथा रंग रहित ही रहता है । एक रंग का पानी उस काँच के पात्र में भरा हुआ है, उसे फैलाकर यदि दूसरे रंग का पानी भर दिया जाय तो इस परिवर्तन के साथ ही पात्र दूसरे रंग का दिखाई देने लगेगा । मनुष्य की यही स्थिति है । आत्मा स्वभावत: निर्विकार है, पर उसमें जिस प्रकार के गुण, कर्म, स्वभाव भर जाते हैं, वह उसी प्रकार की दिखाई देने लगती है ।

गीता में कहा गया है कि-'विद्या विनय सम्पन्न, ब्राह्मण, गौ, हाथी, कुत्ता तथा चाण्डाल आदि को जो समत्व बुद्धि से देखता है, वह पण्डित है ।' इस समत्व का रहस्य यह है कि आत्मा सदा निर्विकार है, उसकी मूल स्थिति में परिवर्तन नहीं होता, केवल मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार का अन्त:करण चतुष्टय रंगीन-विकारग्रस्त हो जाता है, जिसके कारण मनुष्य अस्वाभाविक, विपन्न, विकृत दशा में पड़ा हुआ प्रतीत होता है । इस स्थिति में यदि परिवर्तन हो जाय तो आज के 'दुष्ट' का कल ही 'सन्त' बन जाना कुछ भी कठिन नहीं है ।

कोई मनुष्य अपने पिछले जीवन का अधिकांश भाग कुमार्ग में व्यतीत कर चुका है या बहुत-सा समय निरर्थक बिता चुका है तो इसके लिए केवल दुख मानने, पछताने या निराश होने से कुछ प्रयोजन सिद्ध न होगा । जीवन का जो भाग शेष रहा है, वह भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं है । राजा परीक्षित को मृत्यु से पूर्व एक सप्ताह आत्म-कल्याण को मिला था, उसने इस छोटे से समय का सदुपयोग किया और अभीष्ट लाभ प्राप्त कर लिया । सूरदास को अपनी जन्म भर की व्यभिचारी आदतों से छुटकारा मिलते न देखकर अन्त में आँखें फोड़ लेनी पड़ी थीं । तुलसीदास का कामातुर होकर रातों-रात सुसराल पहुँचना और परनाले में लटका हुआ साँप पकड़ कर स्त्री के पास जा पहुँचना प्रसिद्ध है । इस प्रकार के असंख्यों व्यक्ति अपने जीवन का अधिकांश मार्ग बुरे कार्यों में व्यतीत करने के उपरान्त सत्पथगामी हुये और थोड़े से ही समय में योगी और महात्माओं को प्राप्त होने वाली सद्गति के अधिकारी हुये हैं ।

यह एक रहस्य तथ्य है कि मन्द बुद्धि, मूर्ख, डरपोक, कमजोर तबियत के 'सीधे' कहलाने वालों की अपेक्षा वे लोग अधिक जल्दी आत्मोन्नति कर सकते हैं, जो अब तक सक्रिय, जागरूक, चैतन्य, पराक्रमी, पुरुषार्थी एवं बदमाश रहे हैं । कारण यह है कि मन्द चेतना वालों में शक्ति का स्रोत बहुत ही न्यून होता है, वे पूरे सदाचारी और भक्त रहें तो भी मन्द शक्ति के कारण उनकी प्रगति अत्यन्त मन्दगति से होती है । पर जो लोग शक्तिशाली हैं, जिनके अन्दर चैतन्यता और पराक्रम का निर्झर तूफानी गति से प्रवाहित होता है वे जब भी, जिस दिशा में भी, लगेंगे उधर ही सफलता का ढेर लगा देंगे । अब तक जिन्होंने बदमाशी में अपना झण्डा बुलन्द रखा है, वे निश्चय ही शक्ति सम्पन्न तो हैं पर उनकी शक्ति कुमार्गगामी रही है, यदि वह शक्ति सत्पथ पर लग जाय तो उस दिशा में भी आश्चर्यजनक सफलता उपस्थित कर सकते हैं । गधा दस वर्ष में जितना बोझ ढोता है, हाथी उतना एक दिन में ढो सकता है । आत्मोन्नति भी एक पुरुषार्थ है । इस मंजिल पर भी वे ही लोग पहुँच सकते हैं जो पुरुषार्थी हैं, जिनके स्नायुओं में बल और मन में अदम्य साहस तथा उत्साह है ।

जो अब तक पथ-भ्रष्ट रहे हैं, कुमार्ग पर चलते रहे हैं, अनेक बुराइयाँ कर चुके हैं, उनके लिए भी गायत्री माता का स्नेहमय अंचल खुला हुआ है । वे अब तक की भूलों पर पश्चाताप करें, आगे उन्हें न करने का व्रत लें, सन्मार्ग पर चलने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

को तत्पर हों तो वे पुनः अपने स्वाभाविक आध्यात्मिक गुण पवित्रता को उपलब्ध करके महान बन सकते हैं । गायत्री-उपासना से इस मार्ग पर प्रगति निश्चित रूप से होती है । सारी बुराइयाँ एक साथ पूर्णरूप से भले ही न छूटें पर उपासना शक्ति के अनुसार बुराइयों में कमी अवश्य होती चलती है । सतोगुण की, सद्विचार और सतकर्मों की अभिवृद्धि होना गायत्री उपासना का सुनिश्चित परिणाम है ।

गायत्री के प्रथम पाद द्वारा पापों की निवृत्ति

गायत्री के ॐ भूर्भुवः स्वः इस प्रथम पाद की शिक्षा यह है कि सर्वत्र तीनों लोकों में परमात्मा व्याप्त है । इसलिए उसको सर्वव्यापी एवं निष्पक्ष न्यायकारी समझ कर पापों से उसी प्रकार बचना चाहिए जैसे कि राजा को सामने खड़ा देखकर चोर को चोरी करने का साहस नहीं होता । इसके अतिरिक्त सब में जब अपनी आत्मा, अपना प्रभु ही व्यापक है तो किसी के साथ अनुचित, अनीतिपूर्ण, अनिष्ट व्यवहार न करना चाहिए । हम अपने लिए जैसा व्यवहार दूसरों द्वारा होने की आशा करते हैं, वैसा व्यवहार हमें दूसरों के साथ करना चाहिए । दूसरों के हितों को आघात पहुँचाकर अपना स्वार्थ साधन करने की नीति से हमें प्रयत्नपूर्वक बचना चाहिए ।

यह प्रकट है कि संसार में अधिकांश दुःख हमारे पापों के परिणामस्वरूप होते हैं । कई बार कर्म-फल तुरन्त मिल जाता है, जिसके साथ बुराई की गई उसके द्वारा, प्रत्याक्रमण द्वारा, सामाजिक अपकीर्ति द्वारा, लोगों के असन्तोष एवं असहयोग के कारण होने वाली हानि द्वारा, राजदंड द्वारा उस बुराई का दण्ड मिल जाता है । इनसे भी कोई व्यक्ति बच जाय तो ईश्वरीय निष्पक्ष न्याय द्वारा प्राप्त होने वाले दण्ड से कोई व्यक्ति बच नहीं सकता । अंग-भंग, अपूर्ण, रोग ग्रस्त, हीन बुद्धि लोगों को देखकर यह सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि इनको दैवी दण्ड भुगतना पड़ रहा है । अपना कर्त्तव्य ठीक प्रकार पालन करते हुए भी कई बार अनायास कोई आकस्मिक दैवी विपत्ति आ जाती है या प्रयत्न करते हुए भी सफलता नहीं मिलती तो यही कहना पडता है कि हमारे पूर्व कृत कर्म का, प्रारब्ध का फल है ।

यदि मनुष्य पाप कर्मों से बचा रहे तो निश्चय ही वह दुःखों से बचा रहेगा । यद्यपि दुःखों के अन्य कारण भी हैं । निर्दोष व्यक्ति भी कभी अत्याचारियों द्वारा सताये जाते हैं या सामूहिक दोषों का फल भी व्यक्ति को भोगना पड़ता है, परन्तु यह बात ध्रुव सत्य है कि पाप का परिणाम तो दुःख ही हो सकता है । यदि कोई व्यक्ति पाप न करे तो उसके प्रारब्ध में दुःखों का विधान किस प्रकार हो सकता है ?

काँटे में लिपटी हुई आटे की गोली खाते समय मछली अपने आपको बुद्धिमान समझ सकती है कि मुफ्त में ही मैंने इतना आटा पा लिया । जाल में फैले हुए दानों को खाते समय चिड़िया गर्व कर सकती है कि मैंने बिना परिश्रम के एक स्थान पर पड़ा हुआ इतना अन्न सहज पा लिया, पर उसे थोड़ी ही देर में अपनी भूल का पता चल जाता है ।

आटे की गोली के साथ पेट में पहुँचा हुआ काँटा जब मछली का पेट फाड़ता है, तब उसे मालूम पड़ता है कि मैं बुद्धिमान हूँ या नहीं । चिड़िया जब जाल में फँसकर बहेलिये के हाथ में पहुँचती है, तब उसे मालूम पड़ता है कि मैं चतुर एवं सौभाग्यशाली हूँ या नहीं ? पापी लोग जब जरा से प्रयत्न से बहुत-सा लाभ कमा लेते हैं तो फूले नहीं समाते । धर्म अधर्म के पचड़े से बचकर अपना काम बना लेने की प्रचुरता पर उन्हें गर्व होता है पर जब उन कर्मों का प्रारब्ध भोग कराल काल दण्ड की तरह उनके पीछे पड़ता है तब उनकी समझ में आता है कि वे उस दिन कमा रहे थे या गँवा रहे थे, वे चतुर थे या फूहड़, उन्होंने बुद्धिमानी का मार्ग चुना था या बेवकूफी का ।

गायत्री खतरे की घण्टी है, चौराहे पर खड़ी पुलिस है । वह बताती है कि-पाप की ओर मत चलो । ईश्वर सर्वव्यापक है, वह किसी का पक्षपात नहीं करता, उससे तुम्हारा कोई पाप छिपा नहीं रह

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सकता और तुम किसी पाप के प्रतिफल से बच नहीं सकते । ॐ भूर्भुवः स्वः के अक्षर निरन्तर हमें यही शिक्षा देते हैं । रेल की पटरी के किनारे पर जो सिगनल खड़े होते हैं वे बताते हैं कि किधर जाना चाहिए किधर नहीं । यदि सिगनल का आदेश न मानकर कोई ड्राईवर रेलगाड़ी को मनमानी रीति से दौड़ा ले जाय तो परिणाम कितना भयंकर होगा, इसकी कल्पना सहज ही की जा सकती है । वह रेल किसी से टकरा जायगी या उलट जायगी और ड्राईवर को अपनी हेकड़ी का नतीजा भोगना पड़ेगा । गायत्री का सिगनल हमें सावधान करता है कि अपनी जीवन-नीति की रेल को सही मार्ग पर ले चलो अन्यथा अपने स्वाभाविक सुखों से हाथ धोना पड़ेगा और दुःखों की यातनाओं से पीड़ित होना पड़ेगा ।

गायत्री के प्रथम चरण में दूसरों के प्रति आत्मीयता, ममता, प्रेम, उदारता, ईमानदारी, सेवा एंवं मधुरता का व्यवहार करने की शिक्षा है । यह शिक्षा जिसके अन्तःकरण में विराज गई होगी, माता ने जिसको अपने प्रथम चरण का स्पर्श करने दिया होगा, वह अनेक सामाजिक कष्टों से अनायास ही छूट गया होगा ।

अपने कुटुम्बियों, पड़ोसियों, समीपवर्ती लोगों के साथ यदि विरोध, मनोमालिन्य, द्वेष, संघर्ष, कलह चलता हो वे हमें उतना सहयोग नहीं देंगे जितना कि देना चाहिए । जबकि उनकी सद्भावना की आशा की जाती है तब भी वह प्राप्त नहीं होगी । इसके अतिरिक्त वे विरोधी होने के कारण तरह-तरह की बाधाएँ उत्पन्न करते रहेंगे और हानि पहुँचाने वाले आयोजन, षडयन्त्र या आकर्षण करने का जब भी उन्हें अवसर मिलेगा, न चूकेंगे । मुकद्दमा, फौजदारी, चोरी, डकैती, कत्ल, बहिष्कार, अपमान, शिकायत, चुगली, निन्दा, दोष, प्रदर्शन आदि हानियाँ अकस्मात् तो कभी-कभी ही होती हैं, अधिकांश उनके पीछे पुरानी शत्रुता या किसी विरोधी का गहरा मनोमालिन्य काम करता रहता है । जो व्यक्ति अपने से असन्तुष्ट या द्वेष रखते हैं बहुधा उन्हीं का ऐसे कार्यों में विशेष हाथ रहता है ।

यदि शत्रुता न हो तो इस प्रकार की आपत्तियों की संख्या अत्यन्त ही न्यून हो जाय । अपनी उन्नति में सबसे बड़ी बाधा यह होती है कि जो लोग हमारी सहायता कर सकते हैं वे अपना हाथ खींच लेते हैं । यदि थोड़े से व्यक्ति किसी की पीठ पर सहायक होते हैं तो वह उनके थोड़े-थोड़े सहयोग का सहारा पाकर आशाजनक उन्नति कर सकता है । संसार में जितने भी सफल और समुन्नत व्यक्ति हुए हैं उनकी सफलता का एक महत्त्वपूर्ण कारण उनके सहायक भी हैं । कोई व्यक्ति चाहे कितना ही विद्वान, बुद्धिमान, चतुर, शक्तिमान क्यों न हो पर सहयोग के अभाव में लुंज पुंज ही रहेगा, उससे कोई महत्त्वपूर्ण कार्य न बन सकेगा । असहयोग भले ही द्वेष के बराबर हानिकारक न हो पर वह भी जीवन की प्रगति रोक देने में एक विशाल पर्वत की तरह अड़ कर खड़ा हो जाता है । द्वेष तीव्र रोग है, असहयोग मन्द रोग । दोनों एक ही जाति के हैं । अन्तर केवल तापमान का है परिणाम दोनों का एक ही अनिष्टकारक होता है ।

द्वेष और असहयोग जन्य विपत्तियाँ, बाधाएँ अकारण नहीं आतीं । संसार में बुरे आदमी भी कम नहीं हैं पर उनकी बुराई तभी उग्र रूप से प्रकट होती है जब सामने से उसके प्रकट होने का कोई अवसर हो । सिंह खूँखार जानवर है पर उसका खूँखारपन प्रकट तभी होता है जब उसका आहार सामने आवे । पेड़, पत्थर, नदी, तालाब के प्रति वह खूनी नहीं होता । अग्नि में जलने का गुण है पर वह जलाती उन्हीं चीजों को है जो जलाने लायक हों । यदि ईंधन न हो तो प्रचण्ड अग्नि को भी हार माननी पड़ेगी, वह बुझकर ठण्डी हो जायगी । इसी प्रकार दुष्ट प्रकृति के मनुष्य भी अपनी दुष्टता का पूर्ण प्रकाशन करने में तभी सफल होते हैं जब सामने वाले के स्वभाव में पर्याप्त त्रुटियाँ मौजूद हों । यदि गायत्री के प्रथम चरण की आराधना करके हमने अपने स्वभाव को आत्मीयतापूर्ण एवं मधुर बना लिया है तो बुरे आदमियों की उग्रता देर तक नहीं ठहर सकती वे भी सद्व्यवहार से पिघलाये जा सकते हैं और उनके अन्दर जो थोड़ी भलमनसात है उससे भरपूर लाभ उठाया जा सकता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कुछ नरपिशाच अत्यन्त ही दुष्ट होते हैं । ऐसे लोगों को काबू में रखने, डराने, दण्ड देने या दुष्टता छोड़ने के लिए विवश करने की आवश्यकता होती है । पर ऐसी शक्ति एक आदमी में पर्याप्त नहीं होती । इसे लोकमत से ही दबाया जा सकता है । अपने पक्ष में अनुकूल लोकमत एवं सहयोग प्राप्त करने के लिए जिस जन-शक्ति की आवश्यकता है, वह हमारे उत्तम स्वभाव के बिना प्राप्त नहीं हो सकती । गवाही के अभाव में सच्चे मुकदमे खारिज हो जाते हैं और झूठे मुकदमे में सजा होती है । दुष्टों के विरुद्ध यदि हम अपने सद्गुणों से आवश्यक मित्रों का संगठन कर लें तो उसे राजदंड दिलाया जा सकता है तथा अन्य अनेक नये तरीकों से रगड़ दिया जा सकता है । परन्तु जब अपने पक्ष में जन-बल, लोक-मत, संगठन न हो तो कोई तुच्छ-सा मनुष्य हमें नाकों चने चबाने के लिए विवश कर सकता है ।

आत्मीयता का अर्थ है—दूसरों के प्रति हार्दिक रूप से सद्व्यवहार करना । यह सम्मोहन अस्त्र है जिसके द्वारा अनेक व्यक्तियों को वशवर्ती बनाया जा सकता है । कई धूर्त इस स्वभाव से अनुचित लाभ भी उठा लेते हैं और कई बार अपने को ठगा जाना पड़ता है, पर इस हानि से कुछ बहुत बिगाड़ नहीं होता, इस प्रकार ठग जाने से भी अपनी कीर्ति, साधुता एवं प्रतिष्ठा बढ़ती है जो पीछे जाकर उस हानि से कई गुना लाभ दे जाती है ।

जिसके अधिक मित्र हैं, अधिक सहयोगी और स्वजन हैं, उसके प्रारब्ध भोग भी हलके हो जाते हैं और सुनिश्चित भवतव्यता का जो कष्ट होना चाहिए उससे कहीं कम होता है । कल्पना कीजिए कि दो व्यक्तियों को प्रारब्धवश एक साथ रोग होता है, इनमें से एक को सब घृणा और द्वेष करते हैं । बीमारी हालत में उसे कोई सहायता नहीं मिलती । वह भूखा, प्यासा, मल-मूत्र से सना हुआ, सर्दी, गर्मी के दुःख सहता हुआ, बिना दवा तथा सेवा के अकेला पड़ा रहता है, ऐसी दशा में उसका शारीरिक और मानसिक कष्ट अनेक गुना बढ़ जायगा । प्रारब्धवश उसे एक सप्ताह रोगी रहना था तो एक सप्ताह में ही उसे रौरव नरक के दर्शन हो जाते हैं । इसके विपरीत दूसरा वह रोगी जिसे प्रारब्धवश इतना ही रोगी रहना था, अपने स्वजन सहयोगियों से घिरा हुआ है । उसे उचित परिचर्या, चिकित्सा, सेवा, मनोरंजन आदि मिलता रहता है, उसका दुख हँसते बोलते बातों ही बातों में कट जाता है । दूसरों की सेवा सहानुभूति में अपने कष्टों को भूला रहता है । अब इन दोनों रोगियों के एक समान प्रारब्ध की तुलना की जाय तो पता चलता है एक ने बहुत अधिक और दूसरे ने बहुत कम कष्ट सहकर अपना भोग पूरा किया है । दैवी आपत्तियाँ जो अनिवार्य हैं, आती हैं परन्तु गायत्री के प्रथम चरण से अपने उच्च स्वभाव के कारण वे भी कष्ट देकर भुगत जाती हैं ।

स्वजनों की मृत्यु या वियोग के समय कितने ही व्यक्तियों को असाधारण दुःख होता है वे उनके विछोह में दिन-रात घुलते रहते हैं । इस शोक-भावना का कारण आत्मीयता की भावना का परित्याग करके मोह ममता के बौद्धिक मनोविकार में उलझ जाना ही है । आत्मीयता एक व्यापक एवं उदार तत्त्व है, उसमें कुटुम्बियों को ईश्वर की अमानत और अपनी सेवा-वृत्ति को चारितार्थ करने का माध्यम समझने का भाव रहता है । जो ऐसा समझेगा उसे ईश्वर के अंश किसी जीव द्वारा अपना शरीर बदलने की साधारण क्रिया करने पर दुःख क्यों होगा ? ईश्वर ने सेवा करने का एक माध्यम उठा लिया तो और किसी के पुत्र की सेवा करने में लगाया जा सकता है । इसमें शोक की क्या बात हुई ? शोक की भूल में मृत व्यक्ति को अपनी सम्पत्ति समझने और उसके चले जाने से अपने विनोद, स्वार्थ, आशा आदि में हानि हुई समझना ही दुःखी होने का प्रधान कारण होता है । जिसके प्रति अपनी मोह ममता जितनी ही कम होगी उसकी मृत्यु या वियोग का उतना ही दुःख कम होगा । आत्मीयता के अभाव में ममता का विकार मन में जम जाता है । जिसका दृष्टिकोण उदार है, विस्तृत है, व्यापक आत्मा को सब में देखता है, उस 'उदार चरितानांतु वसुधैव कुटुम्बकम्' मानने वाले के लिए सभी अपने हैं, जब प्रतिक्षण अनेक 'अपने' मरते रहते हैं और उनकी मृत्यु का कोई

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कष्ट नहीं होता तो किसी विशेष 'अपने' की मृत्यु में ही दुःख क्यों होगा ?

आत्मीयता को एक विशेष स्थान पर केन्द्रित कर देने से प्रेम का लोप होकर मोह उत्पन्न हो जाता है । मोह ही शोक का कारण है । जिस मनुष्य के हृदय में सबके प्रति व्यापक एवं विस्तृत सहानुभूति होती है, सबकी आत्माओं में उसे अपनेपन की आत्मीयता परिलक्षित होती है । ऐसी दशा में अपने बच्चे की मृत्यु का उतना ही शोक हो सकता है जितना कि पड़ोसी के बच्चे के मरने का । यदि उस व्यापक आत्मीयता को दूसरों पर से हटाकर किसी एक ही व्यक्ति तक सीमित कर लिया जाय तो ही ऐसा हो सकता है कि दूसरों के मरने पर ही जरा भी दुःख न हो और अपने सम्बन्धी के मरने पर शोक से विह्वल हो जाया जाय । गायत्री का प्रथम चरण हमें व्यापक आत्मीयता प्रदान करता है और बताता है कि कोई भी प्राणी किसी दूसरे की सम्पत्ति नहीं, सब ईश्वर के अंश हैं और अपने स्वतन्त्र कर्मभोग के आधार पर जन्म-मरण के चक्र में घूम रहे हैं । हम उस चक्र को रोक नहीं सकते, केवल सामयिक कर्त्तव्य का पालन कर सकते हैं । यदि हम अपने कर्त्तव्य को ठीक प्रकार पालन नहीं करते तो ही शोक की बात है अन्यथा प्रभु के विशाल विधान चक्र में अपनी टांग अड़ाकर व्यर्थ ही दुःखी होने की समझ को बल-बुद्धि ही कहा जा सकता है ।

गायत्री का प्रथम चरण जब हृदय में आता है तो मनुष्य इस प्रकार की अनेक कुबुद्धियों से बच जाता है जो समय-समय पर दुःखों के पर्वत सिर पर पटकती हैं । आस्तिकता और आत्मीयता के कारण वह पाप करने से बच जाता है । जो पापों से बचा होगा, वह दुःखों से बचा रहेगा । माता का प्रथम आशीर्वाद वह सद्बुद्धि देता है जिससे हमारे सामाजिक दुःख दूर होते हैं । दूसरे व्यक्तियों के सम्पर्क से उत्पन्न होने वाले, व्यवहार की भूल से मिलने वाले, दुःखों की जड़ गायत्री के प्रथम प्रकाश से ही कट जाती है ।

गायत्री के द्वितीय पाद द्वारा दिव्य दृष्टि की प्राप्ति

पिछले पृष्ठों पर कुबुद्धि का पहला लक्षण और उसके कारण उत्पन्न होने वाले दुःखों को बताया जा चुका है । कुबुद्धि का दूसरा लक्षण—'अदूरदर्शिता' है । आज का, इसी समय का, तुरन्त का लाभ देखना और भविष्य के परिणामों पर विचार न करना इसे अदूरदर्शिता कहते हैं । इसके चंगुल में फँसकर अनेक व्यक्ति विविध कष्ट भोगते हैं ।

स्वास्थ्य को नष्ट करने में अदूरदर्शिता सबसे बड़ा कारण है । इन्द्रियों के भोग भोगने की लिप्सा में लोग इतने निमग्न हो जाते हैं कि यह नहीं देखते कि आगे इसका परिणाम क्या होगा ! जीभ के स्वाद में पेट की मर्यादा से अधिक भोजन किया जाता है । मसाले और चीनी मिलाकर अनुपयुक्त पदार्थों को पेट में ठूसा जाता है । जब तक पहला भोजन पचने नहीं पाया कि और नया बोझ पेट पर लाद दिया । इन अत्याचारों से पेट की पाचन-शक्ति खराब हो जाती है, कब्ज रहने लगता है, भूख नहीं लगती, दस्त साफ नहीं होता, आँतो में मल इकट्ठा होकर सड़ने लगता है, उस सड़न से उत्पन्न हुआ विष खून में मिलकर विविध प्रकार के रोग उत्पन्न करता है ।

काम-सेवन की मर्यादा यह है कि जब सन्तानोत्पत्र करने की आवश्यकता अनुभव हो तब पति-पत्नी का संयोग हो । इस प्राकृतिक मर्यादा का अदूरदर्शी लोग बेतरह उल्लंघन करते हैं । क्षणिक खुजली को शान्त करने के लिए अपने जीवन-रस को निचोड़ते रहते हैं और अन्त में स्वास्थ्य को खोखला बनाकर सिर धुनते पछताते हैं ।

रात्रि को तेज रोशनी में सिनेमा, नाच-रंग देखने या अन्य काम करने से आँखें खराब हो जाती हैं । तात्कालिक लोभ या मनोरंजन के वशीभूत होकर लोग आँखों से अधिक काम लेते हैं और उनकी रोशनी से हाथ धो बैठते हैं । यदि नेत्रों से उसकी सामर्थ्यानुसार काम लिया जाय तो वे वृद्धावस्था तक ठीक काम करते रह सकते हैं । इसी प्रकार

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

शरीर के अन्य अवयव हैं यदि इनका ठीक उपयोग हो, तात्कालिक स्वाद, लोभ या मनोरंजन के लिए उनकी शक्ति को अनुचित रूप से नष्ट न किया जाय तो बीमार पड़ने का, असमय शक्तिहीन होने का, अकाल मृत्यु का अवसर न आवे । पशु-पक्षी प्रकृति के नियमों का पालन करते हैं । स्वाद के लिए नहीं, वरन् शरीर की स्वाभाविक आवश्यकताओं के अनुरूप कार्य करते हैं । फलतः न वे बीमार पड़ते हैं और न उन्हें वैद्य डाक्टरों की आवश्यकता पड़ती है ।

गायत्री के दूसरे चरण 'तत्सवितुर्वरिण्यं' में उस तेजस्वी एवं वरण करने योग्य श्रेष्ठ भविष्य की ओर संकेत किया गया है जो वर्तमान काल का दूरदर्शितापूर्ण उपयोग करने से ही प्राप्त हो सकता है । आज हमें जो साधन प्राप्त हैं, जो शक्तियाँ, सहयोग, सामर्थ्य योग्यताएँ एवं सुविधाएँ उपलब्ध हैं यदि उनका संयम एवं समझदारी से उपयोग किया जाय तो निश्चय ही आशाजनक भविष्य की आधार शिला रखी जा सकती है ।

किसान धैर्यपूर्वक अपनी खेती में श्रम करता रहता है । घर से अन्न ले जाकर उसमें बीज बो देता है । अदूरदर्शिता की दृष्टि से देखा जाय तो उसका यह सब कार्य बेवकूफी से भरा हुआ प्रतीत होगा । रोज-रोज कठिन परिश्रम करना और शाम को खाली हाथ वापिस लौट आना, साथ ही घर में रखा हुआ अन्न भी मिट्टी में बिखेर आना, कोई समझदारी की बात नहीं मालूम होती । पर दूरदर्शी किसान यह जानता है कि मेरा परिश्रम कभी व्यर्थ नहीं जा सकता । इसका समुचित परिणाम मुझे मिलकर रहेगा । वह मिलता भी है । समयानुसार खेती पकती है और किसान का घर धन-धान्य से पूरा कर देती है, उसका परिश्रम सफल हो जाता है ।

किसान जैसी दूरदृष्टि को अपनाकर हम भी अपने जीवन को सुख-शान्ति की राशि से भर सकते हैं । विद्यार्थी जानता है कि मुझे आगामी जीवन में सफलता और प्रतिष्ठा प्राप्त करनी है तो आरम्भ में कठिन परिश्रमपूर्वक विद्याध्ययन करना पड़ेगा । विद्याध्ययन के समय, उसका समय, श्रम और पैसा सभी लगता है, तत्काल उसे कुछ लाभ नहीं होता वरन् हानि ही रहती है परन्तु यह निश्चित है कि इस हानि की आगे चलकर ब्याज समेत भरपाई हो जाती है । विद्यार्थी और किसान का दृष्टिकोण अपनाकर जो लोग आशाजनक भविष्य के लिए आज कठिनाई उठाने को तैयार हैं, उन्हें गायत्री का सच्चा आज्ञाकारी पुत्र कहा जा सकता है । माता अपने आज्ञाकारी बालकों को दुलारने में कमी नहीं रखती, पर अवज्ञाकारी को दुत्कारने में उसे संकोच नहीं होता ।

ब्रह्मचारी संयमपूर्वक वीर्य-रक्षा करता है । उस समय उसे अपना मन मारना पड़ता है । दूसरे उच्छृंखल युवक कामुकता की इन्द्रिय लिप्सा में अपना शरीर निचोड़ते हैं । आरम्भ में वह उच्छृंखल लड़के अपने आपको बड़ा चतुर समझते हैं और ब्रह्मचारी को मूर्ख मानते हैं । पर कुछ दिन बाद जबकि उनका शरीर खोखला होकर अनेक रोगों का घर बन जाता है और उधर वह ब्रह्मचारी दिन-दिन स्वस्थ, सुदृढ़, बलवान और सुन्दर बनता जाता है तब उन्हें पता चलता है कि वस्तुतः कौन मूर्ख और कौन बुद्धिमान था । जीभ के चटोरेपन में वशीभूत होकर जो लोग चटपटे, मसालेदार और मीठे जायकेदार पदार्थ दिन भर चाटते रहते हैं वे आरम्भ में उस संयमी पुरुष को मूर्ख कह सकते हैं जो स्वाद के लिए नहीं वरन् शरीर पोषण के लिए औषधि रूपी आहार लेता है । औषधि में स्वाद कौन देखता है, उसके गुण ही देखे जाते हैं । यही बात आहार के सम्बन्ध में होनी चाहिए । शरीर की आवश्यकता पूर्ण करने वाला आहार उतनी ही मात्रा में उस समय लिया जाना चाहिए जब कि पेट को जितनी मात्रा में, आवश्यकता हो । जीभ के स्वाद के मारे असमय, अनावश्यक, अनुचित मात्रा में जो लोग भोजन करते हैं वे अपनी पाचन-शक्ति से हाथ धो बैठते हैं । पेट खराब होने से आवश्यक मात्रा में शुद्ध रक्त नहीं बन पाता, फलतः अनेक प्रकार के रोग सामने आ खड़े होते हैं । परन्तु जिसने जीभ पर काबू रखा है, तात्कालिक स्वाद लोलुपता को ठुकरा कर भविष्य के स्थिर स्वास्थ्य का ध्यान रखा है, वह निरोग दीर्घ जीवन का आनन्द लेता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आज 'निकट दृष्टि' की बीमारी बुरी तरह फैली हुई है । लोग आज का, अभी का, इसी समय का, लाभ देखते हैं और यह भूल जाते हैं कि जल्दी की हविस में जो अनुचित कार्य प्रणाली अपनाई जा रही है उसका परिणाम कल क्या होगा । जैसे बने वैसे, जितनी जल्दी हो सके उतनी जल्दी, जितना अधिक प्राप्त किया जा सके उतना अधिक धन प्राप्त करने के लालच में अन्धा होकर मनुष्य बुरे-बुरे काम करता है । चोरी, डकैती, लूट, ठगी, धोखाधड़ी की सारी योजनाएँ इसी मनोभावना से बनती हैं । जिसके नेत्रों में 'दूर दृष्टि' का रोग होता है उसे पास की चीजें तो साफ दिखाई पड़ती हैं पर दूर की वस्तुएँ दिखाई नहीं पड़तीं । इसी प्रकार का बौद्धिक रोग 'अदूरदर्शिता' है । इससे ग्रसित रोगी तात्कालिक लाभ को देखता है । उसे यह नहीं सूझ पड़ता कि इसका परिणाम आगे चलकर क्या होगा । इसके कारण मनुष्य चिरस्थायी, सुस्थिर, प्रतिष्ठा-युक्त, शान्तिदायी बड़े लाभ से वंचित हो जाता है ।

चोर मनोवृत्ति के धोखेबाज व्यापारी सस्ती, खराब, नकली वस्तुएँ लोगों को उलटा सीधा समझाकर भेड़ देते हैं और तात्कालिक लाभ उठा लेने पर बड़े प्रसन्न होते हैं । परन्तु उनसे एक बार जो व्यवहार कर लेता है वह सदा के लिए उनका विरोधी हो जाता है । ऐसी दशा में उनका व्यापार चमक नहीं पाता । इसके विपरीत जो लोग अच्छी, असली वस्तुओं का व्यापार प्रामाणिकता के आधार पर करते हैं, आरम्भ में उनकी दुकान कम चलती है पर अन्त में अपनी प्रतिष्ठा और प्रामाणिकता के आधार पर वे मालामाल हो जाते हैं । वेस्ट एण्ड वाच कम्पनी की घड़ियाँ और फोर्ड मोटरें यद्यपि महँगी होती हैं तो भी अपनी प्रामाणिकता के कारण खूब बिकती हैं और उनके मालिक मालामाल हो गये हैं । इसके विपरीत ऐसे अनेक चोर व्यापारी हैं जो सस्ती और खराब चीजें अनुचित रीति से ग्राहक को भेड़ने में बड़े चतुर हैं परन्तु वे सदा कंगाल ही रहते हैं । उनको कभी स्थिर प्रतिष्ठा या सम्पत्ति प्राप्त नहीं हो सकती । अदूरदर्शी लोग अपने को चतुर समझते हैं, तात्कालिक लाभ कमाने में अपनी बड़ी सफलता समझते हैं पर समय बतला देता है कि उनकी वह चतुरता और सफलता कितनी पोली, कितनी अवास्तविक और कितनी अस्थिर है ।

'लोभ' की शास्त्रों में निन्दा की गई है । वह निन्दा न्यायोचित रीति से परिश्रमपूर्वक कमाने और मितव्यतापूर्वक सत्कार्यों के लिए बचाने की नहीं है । उसके लिए तो कहा गया है कि "सौ हाथों से कमा और हजार हाथों से दान कर ।" लोभ वह है जिसमें ललचाकर अनुचित रीति से धन, भोग या यश का अपहरण किया जाता है । लोभ को पाप का मूल बताया गया है । तात्कालिक प्रलोभन के आकर्षण में अन्धे होकर घुस पड़ना और भविष्य के दुष्परिणाम को भूल जाना इसी का नाम लोभ है । इस लोभ की मनोवृत्ति से प्रेरित होकर ही लोग नाना प्रकार के दुष्कर्म करते हैं और अन्त में जब उन दुष्कर्मों का दुखदायी परिणाम सामने उपस्थित हो जाता है उसकी दारुण वेदनाओं से चीत्कार करते हैं ।

यदि जीभ और ज्ञानेन्द्रिय पर काबू रखा जाय, इनको चटोरी न बनाया जाय तो यह निश्चित है कि शरीर को बीमारियों का दुख न भोगना पड़ेगा और न अकाल में काल का चवेना बनना पड़ेगा । यदि इन इन्द्रियों को बेलगाम छोड़ दिया गया है तो किसी भी अन्य प्रयत्न से शरीर को स्वस्थ और दीर्घजीवी नहीं बनाया जा सकता । यदि लोभ के वशीभूत होकर आज अनुचित रीति से धन कमाते रहने का कार्यक्रम बना हुआ है तो निश्चित है कि कल यह सम्पदा तो ओस के मोतियों की तरह झड़ जायगी पर पापों का इतना बड़ा बोझ सिर पर लदा छोड़ जायगी कि इसे ढोते-ढोते अनेक जन्मों तक दुःख भोगना पड़ेगा । व्यभिचार के मनोविनोद में फँसकर जिन्होंने 'आतशाक' खरीदी है वे जानते हैं कि उन्होंने कितना कम मजा लूटा और उसके बदले में कितना बड़ा संकट मोल लिया ।

मनुष्य-जीवन जैसी सुरदुर्लभ सम्पदा को पाकर लोग ताँबे पीतल या सोने चाँदी के टुकड़े जमा करने में चिपटे हुये हैं और उस बाल-क्रीड़ा की पूर्ति के लिए उचित अनुचित का भी विचार नहीं करते, ऐसे लोग अपने को चतुर कहते हैं तो कहें, किसी दूरदर्शी की दृष्टि में वे परले सिरे के मूर्ख ही

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हैं । इन्द्रिय-भोगों का आनन्द तब है जब उन्हें अपनी मर्जी के अनुसार चलाया जाय । जब इन्द्रियों के वश में स्वयं हो गये, वे हमे बन्दर की तरह नचाने लगीं तो उसमें क्या आनन्द रह गया ? आनन्द की वस्तु लोभ नहीं हो सकता । जीवन उन्हीं विचारों, गुणों और कार्यों को अपनाने के लिए है जो आत्मा के महान् गौरव के अनुकूल हैं, जिनके लिए उन्हें मनुष्य शरीर मिला है ।

क्षणिक सुख बड़े आकर्षक, मोहक एवं ललचाने वाले होते हैं । मन्द दृष्टि वाला व्यक्ति उनमें लुभा जाता है और आटे के लोभ में जान देने वाली मछली तथा दाने के लोभ से जाल में फँसने वाले पक्षी की तरह दुख भोगते हैं । इस प्रलोभन की माया से गायत्री हमें सावधान करती है और सिखाती है कि-पुत्र ! तुम शरीर नहीं, आत्मा हो । लोभ और भोग के लालच में पड़कर आत्म-कल्याण का मार्ग कुंठित मत करो । अपना स्थायी लाभ देखो, अपने स्थिर स्वार्थ को देखो और छोटे-छोटे प्रलोभनों को उन पर निछावर कर दो । इन्द्रिय-भोग क्षण भर रहते हैं पर उनकी हानि देर तक ठहरती है । धनी बनने की खुशी थोड़ी देर रहती है पर अनीति का धन जो बुराइयाँ सिखा जाता है और भविष्य के लिए जो काँटे बो जाता है उसका दुष्परिणाम देर तक ठहरता है । अदूरदर्शी लोग अनेक प्रकार के व्यसनों में फँस जाते हैं । शौक-मौज में नशेबाजी आदि की कुटेवें सीख लेते हैं और पीछे उनके द्वारा तबाह होते रहते हैं । शरीर को सजाने में, सांसारिक आकर्षणों के माया मोह में जीवन बीत जाता है और जब सत्य का समय आता है तब दुःख होता है कि ऐसी अमूल्य सम्पत्ति को इस प्रकार गँवा दिया गया । भविष्य को उत्तम बनाना तो दूर, पापों का नारकीय त्रास आगे के लिए जमा कर लिया गया । आरम्भ में यह भूल मालूम नहीं पड़ती पर जब अन्त में आँखें खुलती हैं तो हाथ मलकर पछताना ही शेष रह जाता है ।

अदूरदर्शी लोग थोड़ी-सी बात पर उत्तेजित हो जाते हैं और न करने योग्य कार्य कर बैठते हैं । यदि वे भविष्य के दुष्परिणाम का विचार कर लिया करें तो आवेश में जो उपद्रव किये जाते हैं वे न हों । शेखीखोरी के प्रदर्शन में, बाहबाही लूटने में, दूसरों के बढ़ावे में आकर कई व्यक्ति अपनी सामर्थ्य से बाहर पैर फैला देते हैं और पीछे पछताते हैं ।

गायत्री पर जिसकी श्रद्धा है, वह माता की दूसरी आज्ञा को मानकर दूरदर्शी बनता है । वह दुर्व्यसनों को अपना प्राण-घातक शत्रु समझ कर उनके परित्याग के लिए तुरन्त कटिबद्ध हो जाता है । वह नशेबाजी की आदत का विरोधी बन जाता है । अपने में कोई ऐसी लत पड़ गई हो तो उसे साहसपूर्वक छोड़ता है और दूसरों को उससे सावधान करता है । कामेन्द्रिय और स्वादेन्द्रिय को काबू में करके उन्हें विचार और बुद्धिमत्तापूर्वक प्रयोग करता है । देर तक ब्रह्मचर्य रखना और नियत समय पर सात्विक आहार करना उसकी नीति बन जाती है । उपवास की सहायता लेकर वह इन्द्रियों पर काबू करता है । समय का एक-एक क्षण काम में आवे, एक क्षण भी निरर्थक व्यतीत न हो, इसका ध्यान रखकर वह अपना व्यस्त कार्यक्रम बनाता है । परिश्रम उसे प्राणप्रिय होता है, अपने हाथ से काम करते हुए उसे बड़ी प्रसन्नता होती है । बिना काम के क्षण भर भी उससे नहीं बैठा जाता । यह माता का द्वितीय चरण प्राप्त होने का प्रत्यक्ष चिन्ह है । जिसका झुकाव इन गुणों की ओर न हो, वह गायत्री उपासक नहीं कहा जा सकता । माता का द्वितीय चरण पकड़ने का अर्थ इन गुणों को हृदयंगम करना है ।

व्यसन, आलस्य और असंयम से जो बचता है वह अस्वस्थता के दुःख को नहीं भोगता । पिछला कोई रोग बना आता होगा तो वह भी शीघ्र ही दूर हो जायगा या हलका पड़ जायगा । संयमी पुरुषों की जीवन-शक्ति व्यर्थ नष्ट नहीं होती इसलिए वे दीर्घजीवी होते हैं । आलस्य छूट जाने से इन्द्रियाँ अन्तिम समय तक काम करती रहती हैं । स्वास्थ्य-लाभ के साथ-साथ धन-उपार्जन, सुसन्तति, शत्रुओं से प्रतिरक्षा, सौन्दर्य की स्थिरता, मनोविनोद की स्थिति आदि सुख अत्यन्त दृढ़तापूर्वक जुड़े हैं । बीमार आदमी को इन सबसे वंचित रहना पड़ता है, परन्तु स्वस्थ पुरुष अनायास ही अनेक दिशाओं में उन्नति करते और आनन्द भोगते हैं । अस्वास्थ्य

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जन्य विपत्तियों को, विपत्ति निवारणी गायत्री का द्वितीय चरण बात की बात में दूर कर देता है ।

जैसे माता उँगली के इशारे से बालक को चन्द्रमा दिखाती है, वैसे ही गायत्री अपने द्वितीय चरण की शिक्षा द्वारा हमें बताती है कि-"पुत्र, दूर तक देखो, अपनी दृष्टि लम्बी फेंको, मृत्यु की घड़ी को निकट समझकर उसके लिए समुचित तैयारी करो, इसी क्षण की लिप्साओं में इतने बेखबर न हो जाओ कि भविष्य का कुछ ध्यान न रहे । किसान और विद्यार्थी से शिक्षा लो, वे भविष्य-निर्माण के लिए आज तप करते हैं तुम भी अपने दूरवर्ती भविष्य को आनन्दमय बनाने के लिए आज के प्रलोभनों पर विजय प्राप्त करो ।"

माता की इस शिक्षा को मानकर यदि हम दूरदर्शी बनने का प्रयत्न करें तो निश्चय ही हम उन बाल-क्रीड़ाओं को छोड़ देंगे जो आरम्भ में बड़ी लुभावनी मालूम पड़ती हैं पर अन्त में दुःखों के पर्वत पटक देती हैं । अदूरदर्शिता की मूर्खता से बचा कर गायत्री का दूसरा चरण हमें उस स्थिति तक ले पहुँचता है जिसमें जीव अपने जन्मजात अधिकार आनन्द का शान्त चित्त से आस्वादन करता है ।

गायत्री के तृतीय पाद द्वारा सद्गुणों की वृद्धि

गायत्री के तीसरे 'भर्गोदेवस्य धीमहि' पाद में दिव्य गुणों को धारण करने के लिए कहा गया है । बहुमूल्य आभूषण, वाहन-साधन आदि के द्वारा साधारण लोग अपने को गौरवान्वित समझते हैं, पर गायत्री उपासकों को अपनी शोभा, महिमा, बढ़ाई एवं विशेषता सद्गुणों से सुसज्जित होने में समझनी चाहिए ।

धन से जीवनोपयोगी वस्तुएँ खरीदी जाती हैं । धन की उपयोगिता इतनी ही है कि उससे हमारी अन्न, वस्त्र आदि की आवश्यक वस्तुएँ खरीदी जा सकें । अन्न, वस्त्र आदि की आवश्यकताएँ एक सीमा तक होती हैं और वे एक नियत मात्रा में धन-उपार्जन करने पर आसानी से पूरी हो सकती हैं । इन दिनों दुर्भाग्यवश महँगाई का कुचक्र चल पड़ा है जिससे साधारण जनता को दुर्भिक्ष जैसी स्थिति का सामना करना पड़ रहा है । यह कुचक्र सामयिक है । कुछ दिन पूर्व ऐसे दुर्दिन नहीं थे और आशा है कि आगे भी यह नहीं रहेंगे । साधारण परिस्थितियों के समय में एक स्वस्थ मनुष्य अपने परिवार की उचित आवश्यकताओं को पूरा करने लायक आसानी से कमा सकता है । फिर भी देखा जाता है कि लोग अधिक कमाने और जोड़ने की धुन में बेतरह लगे हुए हैं । जिनके पास अपनी आवश्यकताओं लायक पहले से काफी मौजूद हैं वे भी सब काम छोड़कर दिन-रात अधिकाधिक धन कमाने में प्रवृत्त हैं, उनके समय का सारा भाग इसी उधेड़-बुन में लगा रहता है ।

धन की शक्ति बड़ी सीमित है, उससे शरीर का निर्वाह करने वाले पदार्थ खरीदे जा सकते हैं, जिनकी वास्तविकता बहुत ही सीमित है । जमा किया अत्याधिक धन किसी के कुछ काम नहीं आता । सब जहाँ का तहाँ पड़ा रह जाता है । जिन उत्तराधिकारियों के लिए उसे जोड़ा जाता है वे उसे मुफ्त के माल से बेरहम अय्यासी करते हैं और उसे बारूद की तरह फूँककर तमाशा देखते हैं । मुफ्त की मिली हुई पैतृक सम्पत्ति उत्तराधिकारियों को निकम्मा, आलसी, व्यसनी, फिजूलखर्च एवं दुर्गुणी बना देती है इसलिए सन्तान के लाभ के लिए जोड़ा गया धन वस्तुतः उनकी हानि ही करता है । कितने ही लड़के उस मुफ्त के माल पर बेतरह लड़ मरते हैं, मुकदमेबाजी में वह सारी सम्पत्ति बात की बात में फूँक जाती है । धनी व्यक्ति दूसरों की आँखों से सुखी दीखते हैं पर अपने आप में वे काफी चिन्तित और परेशान रहते हैं । धन कमाने की कष्टसाध्य प्रक्रिया, हानि से बचने की चिन्ता, सुरक्षा आदि व्यवस्थाओं में इतनी जानमारी करनी पड़ती है कि वे लोग वस्तुतः गरीब एवं मजदूरों की अपेक्षा आन्तरिक दृष्टि से अधिक उद्विग्न रहते हैं । यह उद्विग्नता उनके शारीरिक स्वास्थ्य और मानसिक संतुलन को खा जाती है ।

इन कठिनाइयों को जानते हुए भी लोग जैसे बने वैसे धन कमाने के लिए तत्परता के साथ जुते

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हुए हैं इसका कारण यह है कि ''धन की प्रतिष्ठा होने'' लगी है । जिसके पास धन है, उसे बड़ा आदमी, महापुरुष, आदरणीय समझा जाने लगा है । पूर्व काल में जिसके पास ज्ञान, विद्या, चरित्र, त्याग आदि की दैवी सम्पदाएँ थीं उसका सबसे अधिक आदर होता था । मध्य युग में पराक्रम, पुरुषार्थ, साहस, वीरता, शक्ति, प्रतिष्ठा रही । जो जितना शक्ति सम्पन्न होता था उसकी उतनी ही प्रतिष्ठा होती थी । आज धन की प्रतिष्ठा है । चाहे कोई मनुष्य मूर्ख, दुश्चरित्र, दुर्बल, कायर आदि कितनी अयोग्यताओं से घिरा हुआ हो पर यदि उसके पास पैसे हैं तो लोग उसके प्रति आदर प्रकट करेंगे, उसे मान देंगे, उसे अगुआ, नेता या पंच मानेंगे, उसकी हाँ में हाँ मिलाने वाले अनेक लोग तैयार हो जायेंगे ।

साधारण जनता अनुकरण करने के स्वभाव की होती है । जब देखा जाता है कि धनवान व्यक्ति सर्वत्र आदर पाते हैं । उनका गौरव, बड़प्पन और मान होता है । समान मनोभूमि के लोग भी बड़प्पन प्राप्त करने के लिए, प्रतिष्ठा प्राप्त करने के लिए धनी बनने का प्रयत्न करते हैं जिनके पास वस्तुतः धन नहीं है वे भी धनी बनने के आडम्बर बनाते हैं । विवाह शादियों के अवसर पर तो यह पाखण्ड हद दर्जे की मूर्खता तक पहुँच जाता है । बराती लोग ऐसे सजकर आते हैं मानो इनमें से हरेक कुबेर का भाई-बन्धु है । आतिशबाजी, गाजे-बाजे, रोशनी, सवारी, इत्र, पान, रुपये-पैसों की बखेर, शाही ज्यौनार आदि के द्वारा यह प्रकट करने की कोशिश की जाती है कि हम कितने बड़े अमीर हैं । दहेज की बड़ी-बड़ी रकमें और वधू के लिए चढ़ाये जाने वाले कीमती वस्त्राभूषण यही प्रकट करने के लिए होते हैं कि हम कितने बड़े अमीर हैं, हमारे पास आवश्यकताओं से अधिक कितना अधिक पैसा फालतू बचता है, जिसे आज हम इस तरह मुक्त हस्त से लुटाते हुए भी कोई कठिनाई अनुभव नहीं करते । विवाह के अवसर पर अपने को धनी प्रदर्शित करके यह सिद्ध करना चाहते हैं कि हम कितने बड़े आदमी, कितने आदरणीय, कितने महान पुरुष, कितने यशस्वी हैं । ठीक भी है, जब मनुष्य की महानता धन पर केन्द्रित हो गई तो इस प्रकार के प्रदर्शनों द्वारा ही अपना धनीपन प्रकट करके अपने गौरव का झंडा गाढ़ा जा सकता है ।

आत्मा वस्तुतः महान है । अतएव वह अपने को महान ही प्रकट करना चाहता है । हर मनुष्य की आन्तरिक अभिलाषा रहती है कि वह प्रतिष्ठित, आदरणीय एवं महान समझा जावे । वह देखता है कि आज वे ही लोग प्रतिष्ठित हैं जिनके पास धन है, तो उसका पक्ष धनी बनना हो जाता है । आज अधिकांश मनुष्यों का जीवन-लक्ष्य यही बना हुआ है । चूँकि न्यायपूर्वक, परिश्रम के साथ सन्मार्ग से उतना ही कमाया जा सकता है जो काम चलाने लायक हो । अधिक कमाने के लिए वे मार्ग अपनाने पड़ते हैं जो पापपूर्ण हैं । बड़े आदमी कानूनी लूटमार और शोषण करते हैं, छोटे आदमी गैर कानूनी छापा मारते हैं । जिसको जितना मौका मिलता है अपनी घात चलाता है । आज समाज में व्यापक रूप से जो अनैतिकता फैली हुई है । उसका कारण यह धनी बनकर बड़े आदमी होने की हविस ही काम कर रही है ।

हम देखते हैं एक आदमी दूसरे को खाये जा जा रहा है । एक दूसरे की आँते निकाल लेने के लिए घात लगाए बैठा है । जिसका जैसे मतलब सिद्ध होता है वह वैसा ही प्रपंच बना लेता है । आपसी प्रेम और सद्भाव विदा हो रहे हैं और उनके स्थान पर स्वार्थ का पिशाच नंगा होकर नाच रहा है । बाप अपने बेटी बेटों को बेच रहा है । भाई का भाई जानी दुश्मन बना हुआ है । बुड्ढे माँ-बाप को रोटी खिलाना बेटों के लिए असह्य बोझ बना हुआ है । निर्धन पति पत्नी को आँखों देखा नहीं सुहाता । बेटे की बहू यदि दहेज साथ नहीं लाई है, तो उसका परित्याग कर दिया जाता है या उसे मारकर दूसरे विवाह की योजना सोची जाती है । नौकर चोर-डाकुओं से मिलकर मालिक की जान लेने पर दाँत लगाये बैठा है । मित्र बनकर कलेजा निकाल ले जाने वाले नर-पिशाचों की कमी नहीं । निकट सम्बन्धियों की पारस्परिक मनोदशा जब यह है तब दूरवर्ती लोग धन कमाने के लिए दूसरों के साथ जो भी नीति बरतें, वह कम है । रिश्वतखोरी, चोरबाजारी, बेईमानी, मिलावट,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

धोखाधड़ी, और ठगी आज व्यापक रूप से फैली हुई है । चोरी, डकैती करने का साहस तो किन्हीं-किन्हीं को ही होता है पर सभ्य तरीके से सभी लोग धन-उपार्जन के लिए सब कुछ कर रहे हैं । सतीत्व, धर्म, ईमान, मजहब, बुद्धि, विद्या, न्याय, कर्त्तव्य, बफादारी यहाँ तक कि जान तक पैसे के लिए बिक रही हैं ।

पूर्वकाल में जब विद्या, तप और चरित्र की प्रतिष्ठा थी, उनके आधार पर मनुष्य का बड़प्पन आँका जाता था, तो लोग इसके लिए बड़ी-बड़ी कुर्बानियाँ करते थे । प्रहलाद, विश्वामित्र, हरिश्चन्द्र, गौतम बुद्ध, अम्बपाली, मीरा, गोपीचन्द जैसे साधन-सम्पन्न लोग अपने वैभव को लात मारकर तपश्चर्या का मार्ग अपनाते थे । जब विद्या की अपेक्षा शक्ति में बड़प्पन माना गया तो अपनी शूरता का परिचय देने के लिए राजपूतों और राजपूतानियों ने वे कार्य कर दिखाये जिन्हें सुनने वालों के कलेजे काँप उठते हैं । जान गँवा देना उनके लिए एक खेल हो गया था । प्रतिष्ठा के लिए मनुष्य बड़े से बड़ा खतरा उठाने को तत्पर हो सकता है । आज भी जब कि धन की प्रतिष्ठा बढ़ी है तो लोग धन के लिए बड़े से बड़ा खतरा मोल लेने को तैयार हैं । पर कठिनाई तो यह है कि लोग जैसे विद्या, तप, चरित्र, पुरुषार्थ आदि अपने आप में स्वयं उत्पन्न कर सकते हैं वैसे सोना, चाँदी अपने आप में से अधिक मात्रा में पैदा नहीं कर सकते, उसके लिए तो सुलभ मार्ग 'अपहरण' ही दिखाई पड़ता है, जिसके लिए लोग राजदंड का, प्रत्याक्रमण का, निन्दा का खतरा खुशी-खुशी उठा लेते हैं और जैसे बने धनी बनने में जुट पड़ते हैं । इस मनोवृत्ति ने आज घर-घर में कलह, विरोध, क्लेश एवं दुर्भाग्य पैदा कर दिये हैं जिनसे अनेक प्रकार के दुःखदायी अपराध हो रहे हैं । इस गति-विधि से सर्वत्र असन्तोष की अग्नि जल रही है और व्यापक रूप से लोगों के मन निराश, शुष्क, खिन्न, नीरस एवं दुखित हो रहे हैं ।

धन की उपयोगिता है, इससे कोई इन्कार नहीं कर सकता । पर उसको मनुष्य की महानता का चिन्ह समझना भारी भूल है । इस कुबुद्धि से ग्रसित होकर आज सारी मनुष्य जाति दुःख पा रही है । भारतीय धर्मशास्त्रों में परिग्रह को सदा से हेय माना जाता रहा है । विद्या और बल के पश्चात् धन को तीसरे दर्जे की घटिया शक्ति माना है, उस तीसरे दर्जे की चीज को जब पहले दर्जे का सम्मान दिया गया तो उसका दुष्परिणाम होना ही चाहिए ।

गायत्री रूपी सद्बुद्धि द्वारा हम इस कुबुद्धि का परिमार्जन कर सकते हैं । तीसरे पाद (भर्गो देवस्य धीमहि) की शिक्षा हमारे लिए यह है कि हम दिव्य शक्तियों को धारण करें, दिव्य को बढ़ावें, दैवी सम्पत्तियों का संचय करें, हम धन के आधार पर नहीं वरन् सद्विचारों और सत्कार्यों के आधार पर किसी का सम्मान करें, हम अपना बड़प्पन अपने सद्गुणों से तोलें और दूसरों को बड़ा तभी माने जब उनमें उच्च आदर्श, श्रेष्ठ चरित्र और लोक-सेवा के तत्त्व समुचित मात्रा को देखें । हमें धनपतियों का अनुसरण करने की कोई आवश्यकता नहीं । हम अपना नेता, पथ-प्रदर्शक एवं आदर्श मानें, जो गुणों की दृष्टि से, दैवी सम्पदाओं की दृष्टि से सुसम्पन्न हों । जब यह मान्यता बढ़ेगी और यह समझा जाना लगेगा कि धन की उपयोगिता शरीर-निर्वाह मात्र के लिए एक सीमित मर्यादा में ही है और उसका मनुष्य की प्रतिष्ठा से कोई सम्बन्ध नहीं है तो निश्चय है कि आज जो धन के पीछे पागल दौड़ लग रही है, वह बन्द हो जायेगी और लोगों का ध्यान उन विचार एवं कार्यों की ओर मुड़ेगा जो वास्तव में प्रतिष्ठा के योग्य हैं ।

किसी जमाने में गुलामों को रखना बड़प्पन का चिन्ह रहा है । जिसके पास जितने अधिक गुलाम खरीदे हुए होते थे, वह उतना ही बड़ा आदमी समझा जाता था, लेकिन पीछे जब लोगों ने देखा कि मनुष्य को मनुष्य के द्वारा गुलाम बनाकर अपने बन्धन में रखना एक पाप है तो प्रथा का लोप हो गया । जब गुलाम रखने वाला अमीर, लोगों की दृष्टि में घृणास्पद ठहराया गया तो उसे विवश होकर अपनी गति-विधि बदलनी पड़ी । इसी प्रकार एक जमाने में बहुत स्त्रियाँ रखना भी मनुष्य के लिए गौरव का चिन्ह रहा है । जिसके पास जितनी अधिक स्त्रियाँ होती थीं वह उतना ही बड़ा आदमी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

माना जाता था । पीछे जब विवेक, बुद्धि द्वारा इस प्रथा का विरोध हुआ तो वह घृणित प्रथा नष्ट हो गई । जब राजा जनक और राजा दशरथ जैसे साधु राजाओं के घर में क्रमशः १०० और ३०० रानियाँ थीं तब तामसी राजसी स्वभाव के सम्पन्न लोगों के घर में कितनी रानियाँ होंगी । राजा जरासिंध के यहाँ १६ हजार रानियाँ थीं । ऐसे भूतकाल के अनेक उदाहरण हैं । अब तक राजा रईसों के यहाँ इस प्रथा के चिन्ह व अवशेष पाये जाते हैं पर चूँकि लोकमत अब इसके विरुद्ध है इसलिए यह बुराई अपने आप विदा होती चली जा रही है । गायत्री की शिक्षा का जब संसार में पुनः प्रकाश होगा तो निश्चय ही 'धन के कारण प्रतिष्ठा' के विरुद्ध भी ऐसे ही प्रचण्ड लोकमत तैयार होंगे । तब इस दिशा में पागल दौड़ लगाना रुक जायगा । फलस्वरूप वे अगणित बुराइयाँ भी बन्द हो जायेंगी जो आज 'जैसे बने वैसे' धनी बन जाने की हविस ने पैदा कर दी हैं ।

धन पदार्थ है, इसलिए साधन है । जितने भी पदार्थ संसार में हैं वे साधन हैं पदार्थ कभी साध्य नहीं हो सकते । धन के द्वारा शारीरिक आवश्यकतायें पूरी की जा सकती हैं । शरीर को सजाया जा सकता है पर जीव की आन्तरिक उन्नति या तृप्ति उससे नहीं हो सकती । इसलिए धन कमाने की भाँति ही सद्ज्ञान, सद्गुण एवं सद्विनोद को प्राप्त करने के लिए भी समय लगाया जाना चाहिए । जब धन ही लक्ष्य बन जाता है तो अन्य दिशाओं में मन नहीं लगता, समय का अधिकांश भाग उसी उधेड़-बुन में लगने के पश्चात् अन्य प्रकार की उन्नतियों के लिए न इच्छा रहती है न शक्ति न सुविधा । इसलिए यह आवश्यक है कि धन को उतना ही महत्त्व दिया जाय जितना कि वस्तुतः उसे मिलना चाहिए । कोई व्यक्ति अध्ययन का श्रम न करना चाहे तो करोड़ों रुपया खर्च कर देने पर भी वह विद्वान नहीं बन सकता । कोई व्यक्ति बिना अभ्यास किये प्रचुर धन व्यय करने पर भी संगीतज्ञ नहीं बन सकता । किसी का सच्चा प्रेम सहस्रों रुपयों में भी नहीं खरीदा जा सकता है । रुपयों का पहाड़ खर्च करने के बदले में भी स्वास्थ्य नहीं मिल सकता । इन सब बातों के लिए अपना समय और मनोयोग लगाना पड़ता है । मनोयोग और श्रम लगाने के लिए कोई मनुष्य तभी तैयार होगा जब धन की तुलना में उनका महत्त्व भी बहुत कम न आँका जाय । आज लोग धन को इतना महत्त्व देते हैं कि और कुछ कमाने में उन्हें आवश्यकता ही प्रतीत नहीं होती ।

स्वाध्याय के लिए लोगों को फुरसत नहीं, व्यायाम के लिए अवकाश नहीं, भजन के लिए समय नहीं मिलता, लोकसेवा के लिए छुटकारा नहीं, चित्त को प्रफुल्लित करने वाले संगीत, देशाटन, तैरना, सत्संग आदि के लिए टाइम नहीं । कारण एक ही है कि जिस कार्य को सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण मान लिया गया है उसकी तुलना में ये सब बातें इतनी तुच्छ, इतनी गौण समझी गई हैं कि उनकी ओर ध्यान करने की आवश्यकता नहीं समझी जाती । फुरसत उसी काम के लिए नहीं मिलती जो अनावश्यक और महत्त्वहीन समझा जाता है । जिस काम को हम आवश्यक समझते हैं उसे अन्य कामों की उपेक्षा करके भी सबसे पहले करते हैं । धन का आकर्षण जब अति प्रबल होता है तो जीवन को सुखी और समुन्नत करने का अवकाश नहीं मिल सकता । यदि जीवन की सर्वांगीण उन्नति करनी है तो यह तभी सम्भव हो सकेगा जब कि धन का आकर्षण कम किया जाय, उसे साध्य नहीं, साधन मात्र माना जाय । विद्या प्राप्त करना, स्वास्थ्य को सँभालना, अपनी विविध योग्यताएँ और शक्तियाँ विकसित करना, शान्तिदायक विनोदों द्वारा आन्तरिक उल्लास को बढ़ाना, अपने स्वभाव का निर्माण करना, सामाजिक कर्त्तव्यों का पालन करना, परमार्थ कार्यों में समय देना, आत्म-चिन्तन करना भी हमारे लिए धन कमाने से कम महत्त्वपूर्ण न होना चाहिए । इन कार्यों के लिए भी उतना ही समय और मनोयोग लगाना चाहिए जितना कि धन के लिए लगता है । पर यह सम्भव तभी है जब कि धन की अत्यधिक बढ़ी प्रतिष्ठा को घटाकर उतना ही रखा जाय जितना कि वास्तव में है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गायत्री के तृतीय चरण का मानव जाति के लिए यह संदेश है कि वस्तुओं को उतना ही महत्त्व दिया जाय जितनी कि उनकी उपयोगिता है । प्रधान लक्ष्य गुणों और विशेषताओं की ओर होना चाहिए । विविध वस्तुओं के स्वामी बनने की कुबुद्धि छोड़कर विविध सद्गुणों के अधिकारी बनने की योजना होनी चाहिए । धन को नहीं, गुणों को पूजा जाना चाहिए । जब इस प्रकार की मनोवृत्ति बनेगी तो वस्तुओं के संचय के लिए लोग पागल दौड़ लगाना और एक दूसरे को नोंच खाना छोड़ देंगे एवं सद्गुणों के द्वारा एक दूसरे की सेवा सहायता करते हुए, एक दूसरे के प्रति प्रेम, सौजन्यता, उदारता एवं आत्मीयता का व्यवहार करते हुए शान्तिपूर्ण जीवन व्यतीत करेंगे ।

गरीबी और अभावग्रस्तता का दुःख कुवेर का भण्डार मिल जाने पर भी नहीं छूट सकता, क्योंकि जितना मिलेगा उससे अधिक की तृष्णा उपजकर गरीबी और दीनता को ज्यों का त्यों कायम रखेगी । पर यदि हम धन की महत्ता को सीमित कर दें तो सीमित वस्तुएँ होने पर भी अमीरी का सन्तोष मिल सकता है । अनेक व्यक्ति सन्तान के लिए बड़े प्यासे से फिरते हैं । वे सोचते हैं कि सन्तान भी कोई सम्पत्ति है जिसके स्वामी बनकर वे वैभववान् बनते हैं । यदि वे अपनी समझ को पलट कर यह सोचने लगें कि भारत की अन्धाधुन्ध बढ़ी हुई आबादी के कारण जब कि अन्न के अभाव से लोग बेतरह परेशान हैं, नई सन्तान के लिए व्याकुल फिरना कितनी मूर्खता है । प्रभु सन्तान इसलिए देता है कि उसकी सेवा द्वारा हमारी त्याग-वृत्ति, सेवा-भावना, उदारता और कोमल भावनाओं का समुचित विकास होता रहे । आज तो हमारे समाज की इतनी बुरी दशा है कि कहीं भी हम अपनी उदारता, सेवा-भावना, त्याग-वृत्ति और वात्सल्य का परिचय दे सकते हैं । अपनी सम्पत्ति का उत्तराधिकारी हमारा ही पुत्र हो यह आवश्यक नहीं ! अनेक शुभ कार्य ऐसे हैं, जिनके लिए अपनी कमाई को सुकृत के लिए वसीयत की जा सकती है । सन्तान न होने से स्वर्ग में अन्न-जल न मिलने की बात उपहासास्पद है । इतने ऋषि, तपस्वी, ब्रह्मचारी सन्तान रहित मरते हैं क्या वे सब परलोक में भूखे प्यासे ही रहते हैं । सन्तान न होने पर दुःखी रहना भी औंधी अक्ल का एक नमूना है । गायत्री की सद्बुद्धि पाकर मनुष्य जब यह सोचता है कि प्रभु ने मुझ पर सन्तान का भार न लाद कर अन्य शुभ कर्मों के लिए अवकाश दिया है तो उसे अपने बारे में उससे अधिक आनन्द और सन्तोष होता है जितना किसी औंधी अक्ल के व्यक्ति को सन्तान पर सन्तानें उत्पन्न करते हुए नगाड़े बजते समय होता है ।

गायत्री का तीसरा चरण हमारी आर्थिक कठिनाइयों को सुलझा देता है क्योंकि साधक के समझ में यह बात भली प्रकार आ जाती है कि धन केवल सांसारिक सुविधाएँ दे सकता है, मनुष्य की आन्तरिक एवं वास्तविक सुख-शान्ति से उसका कोई विशेष सम्बन्ध नहीं है । ऐसा निश्चय हो जाने के पश्चात् वह धन को अनावश्यक महत्त्व देना छोड़कर अपने गुणों पर अपना ध्यान केन्द्रित करता है । तब उसे दिन-रात धन की हाय नहीं रहती । साधारण प्रयत्न से काम चलाऊ उपार्जन करके मितव्ययता के साथ अपना गुजारा करता है और प्रसन्न रहता है । धन को जोड़ने की या अनावश्यक मात्रा में बढ़ते चलने की हविस में पड़कर मनुष्य अपने जीवन की अन्य दिशाओं का विकास करना भूल जाता है । सर्वतोन्मुखी उन्नति और प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक है कि किसी एक ही बात पर मस्तिष्क का सारा ध्यान एवं समय का सारा भाग न लगा दिया जाय । स्वास्थ्य, ज्ञान-वृद्धि, मनोरंजन, परमार्थ आदि के लिए भी धन की भाँति ही इच्छा, बुद्धि, श्रम और समय को लगाया जाना चाहिए । यह तभी हो सकता है जब सद्बुद्धि की कृपा से हम सर्वांगीण उन्नति का महत्त्व और धन-शक्ति की सीमित मर्यादा को भली प्रकार समझ लें ।

कई व्यक्ति कन्याओं के विवाह के लिए दहेज देने की स्थिति न होने से दुःखी रहते हैं । इस दुःख में सामाजिक कुरीतियाँ, अनैतिकता, बेटे वालों की अनुदारता तो प्रधान कारण है ही, पर बेटी वाले भी यदि अपने दृष्टिकोण में आवश्यक परिवर्तन कर लें

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तो बहुत-सी कठिनाइयों का हल सहज में ही हो सकता है । धनवानों के बेटे हम क्यों तलाश करें ? लड़की के सुख का सम्बन्ध वर के अच्छे स्वभाव और सद्गुणों से है, धन से नहीं । धनी घरों की बहुएँ वस्त्राभूषणों से भले ही लदी रहें पर मानसिक दृष्टि से उन्हें उलझनें ही अधिक रहती हैं । निर्धन घर के होनहार लड़के आसानी से मिल सकते हैं फिर धनी लोगों की खुशामद करने और उनके लिए अपने बाल-बच्चे बेचकर धन जुटाने की क्या आवश्यकता है ? माता की कृपा से जिसे ऐसी सुबुद्धि रहेगी वह धनी लड़के ढूँढ़ना छोड़कर गरीब और सद्गुणी लड़के ढूँढ़ता है और उपजातियों तक ही सीमित रहने की कट्टरता को शिथिल करके अपने वर्ण के अन्य परिवारों पर भी दृष्टि दौड़ाता है । ऐसी दशा में उसकी दहेज की चिन्ता का बहुत कुछ समाधान हो जाता है ।

मकान खरीदने, जमीन जायदाद बढ़ाने, कारोवार में अधिक पूँजी डालने की अपनी-अपनी सहज स्थिति हो तो वैसा कर लेने में कुछ हर्ज नहीं । पर जिनके पास स्वल्प साधन हैं उन्हें बड़ी-बड़ी योजनाएँ और महत्त्वाकांक्षाएँ बनाकर परेशान नहीं होना चाहिए । उन्नति करना मनुष्य का स्वाभाविक धर्म है, पर उन्नति क्रमबद्ध और शान्तिमय तरीके से होनी चाहिए । जो साधन, शक्ति और स्थिति की तुलना में बहुत बड़ी आकांक्षाएँ ले बैठते हैं वे अकारण एक चिन्ता, व्यथा एवं दीनता अपने ऊपर लाद लेते हैं । सद्बुद्धि इस भूल को सुधार कर "वर्तमान काल में सर्वोत्तम प्रयत्न" करने के लिए प्रेरित करती है और आशा-तृष्णाओं के अनावश्यक जंजाल से बचा लेती है । वस्तुओं का अनुभव करना ही 'दीनता' है और वर्तमान स्थिति में प्रसन्न रहना ही अमीरी है । एक करोड़पति भी मानसिक दृष्टि से दीन, दरिद्री, गरीब, कंगाल हो सकता है और एक गरीब भी अपनी स्थिति में अमीरी का अनुभव कर सकता है । सर्वांगीण उन्नति के लिए प्रयत्नशील रहना अलग बात है और तृष्णा की कल्पनाओं में लार टपकाते रहना अलग बात है । सद्बुद्धि यह है कि हम आज की स्थिति में पूर्ण सन्तुष्ट और प्रसन्न रहें तथा कल के लिए उत्साहपूर्ण अच्छे प्रयत्न करें ।

गायत्री का प्रकाश जब हमारे मस्तिष्क में बढ़ता है तो दीनता, कंगाली, गरीबी, अभावग्रस्तता का घटना आरम्भ हो जाता है और मनुष्य अपने को वेपैसे का अमीर और वेताज का बादशाह अनुभव करने लगता है । उसे अपने कर्त्तव्य पर सन्तोष होता है । जितने साधन उपलब्ध हैं, उन्हीं के अनुरूप योजना बनाकर वह सन्तोष का सरंजाम कर लेता है । बढ़िया कपड़े, जेवर, फैशन एवं विलासिता की सामिग्रियों को वह बौद्धिक बचपन की प्रतीक मानकर उनको उपहासास्पद समझता है और सादगी की सात्विकता में अपने बड़प्पन का अनुभव करता है । वे लोग दूसरों को, दृष्टिदोष वालों को, गरीब दिखाई पड़ सकते हैं पर वस्तुतः वे इतने अमीर होते हैं कि बड़े-बड़े धनपति भी उनके लिए ईर्ष्या कर सकते हैं ।

सद्बुद्धि हमारी अनेक गुत्थियों को सुलझा देती है अनेक कष्टों की जड़ बात की बात में काट देती है । धन-सन्तान के लिए अनेक दुःखी रहने वाले व्यक्ति जब गायत्री के तीसरे चरण पर विचार करते हैं तो उनकी आँखें खुल जाती हैं, उन्हें अपनी भूल प्रतीत हो जाती है । तब वे सोचते हैं कि इन वस्तुओं का न होना या कम होना कुछ बुरा नहीं है । इस अभाव के कारण उन्हें अन्य दिशाओं में अपनी उन्नति करने के लिए पर्याप्त अवकाश और अवसर मिल सकता है । अनेक चिन्ताओं, बोझों और बुराइयों से वे बच जाते हैं । काम चलाऊ कमाई करने वाला व्यक्ति निश्चय ही उनकी अपेक्षा अधिक लाभ में रहता है जो 'जैसे बने वैसे' अन्धाधुन्ध कमाने में और अनेक वस्तुओं के स्वामी बनने की हविस में दिन-रात डूबे रहते हैं ।

गायत्री के चतुर्थ पाद द्वारा आन्तरिक काया-कल्प

गायत्री का चौथा पाद 'धियो योनः प्रचोदयात्' अपनी आन्तरिक सद्बुद्धि को प्रेरित करने की शिक्षा देता है । हम अपनी कठिनाइयों एवं कष्टों का कारण बाहर ढूँढ़ते हैं और दूसरों पर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दोषारोपण करते हैं । पर अधिकांश उलझनें ऐसी होती हैं जो हमारी अपनी भूलों, कमियों, भ्रान्तियों एवं अयोग्यताओं के कारण होती हैं । यदि अपनी मनोभूमि परिमार्जित हो जाय तो संसार में अनेक दोष रहते हुए भी हम सुखपूर्वक जीवन-यापन कर सकते हैं ।

सन्त इमर्सन कहा करते थे कि—यदि मुझे नरक में रखा जाय तो मैं वहाँ भी अपने लिए स्वर्ग का निर्माण कर लूँगा । वस्तुतः बात ऐसी ही है । यदि हम अपने भीतर पर्याप्त मात्रा में समझदारी और सद्गुण पैदा कर लें तो सहज ही अनेक कठिनाइयों से बच सकते हैं । दुनियाँ दर्पण के समान है जिसमें अपनी ही सूरत दिखलाई पड़ती है । जो व्यक्ति क्रोधी है उसे प्रतीत होगा कि सारी दुनिया उससे लड़ती-झगड़ती है, जो व्यक्ति झूठा है उसे सब लोग अविश्वासी दीखते हैं । जो स्वयं नीच है वह सारी दुनियाँ को नीच समझता है । जो निकम्मा और आलसी है उसे सर्वत्र बेकारी मालूम देती है । इसी प्रकार व्यभिचारी, लम्पट, मूर्ख, कंजूस, गँवार, सनकी, पागल, भिखारी, चोर या अन्य मनोविकारों वाले लोग अपने गज से सबको नापते हैं और दूसरों को अपने ही जैसा बुरा मानकर उन पर दोषारोपण करते हैं । यदि हम समझदारी से अपनी भूल पहिचान लें और दूसरों के साथ नम्रता, मधुरता, सहनशीलता, उदारता एवं संजीदगी से काम लें तो अधिकांश झगड़े उत्पन्न ही न हों, यदि हों भी तो बड़ी आसानी से बात की बात में सुलझ जावें ।

पात्रता के अनुसार वस्तुएँ मिलती हैं । हम यदि अपनी योग्यताएँ बढ़ाते चलें तो संसार को हमारे लिए वे सभी वस्तुएँ देनी पड़ेंगी जिनके कि हम वस्तुतः अधिकारी हैं । संसार में बुरे आदमी हैं पर उनकी बुराई तभी सफल हो सकती है जब हम में भी कुछ दोष हो । यदि अपना रक्त पूर्ण शुद्ध हो तो विषैले रोग-कीटाणुओं से भी कुछ हानि नहीं हो सकती । इसी प्रकार यदि हम समझदारी और सद्भावना से काम लें, न केवल स्वयं सुखी रहें बल्कि बुरे आदमियों की बुराई में भी बहुत हद तक सुधार कर सकते हैं ।

जब हम दोषारोपण की दृष्टि से दुनिया को देखते हैं, तो हर एक में ढेरों बुराइयाँ मालूम पड़ती हैं, लगता है कि सभी लोग अपने शत्रु हैं । पर जब दूसरे प्रकार से सोचना आरम्भ करते हैं और किस किस ने कब कब, कितना कितना उपकार हमारे ऊपर किया है, तो मालूम पड़ता है कि अपने ऊपर दूसरों की सेवा सहायता का इतना भार लदा हुआ है कि उससे सिर उठाना मुश्किल है । पत्नी में कोई एक दोष हो तो लोग उसकी सारी सेवाओं को धूल में मिलाकर केवल उसे पापों की पुतली ही समझने लगते हैं । माता-पिता कोई कटु बात कह दें तो उनकी सारी सेवाओं को भुलाकर लड़के उन पर आग-बबूला हो जाते हैं । इसी प्रकार अन्य स्वजन सम्बन्धियों, मित्रों या सत्पुरुषों की एकाध बुराई को लोग बहुत बढ़ा-चढ़ाकर अपने मन में दुर्भाव बढ़ाते रहते हैं और उनकी अनेक इच्छाओं को भुला देते हैं । जितना ध्यानपूर्वक हम दूसरों की बुराइयों को देखते रहते हैं, उनकी भूलों से दुःखी होते हैं, उसकी अपेक्षा यदि उतने ही ध्यानपूर्वक उनकी अच्छाइयों को देखें तो प्रतीत होगा कि चारों ओर से हमारे ऊपर प्रेम, वात्सल्य, सहयोग, सद्भाव एवं कृपा की वर्षा हो रही है ।

किसी एक वस्तु का अभाव रहता है तो लोग ईश्वर को कोसते हैं पर उसकी उन अनन्त कृपाओं को नहीं गिनते जो पग-पग पर उपलब्ध होती रहती हैं । कोई आपत्ति आती है तो उसके दुःख को तो देखते हैं पर यह नहीं देखते कि इसके कारण हमें कितनी बहुमूल्य नसीहत मिलेगी तथा प्रारब्ध का कितना बोझ हलका हो जावेगा । ईश्वर अत्यन्त दयालु है वह द्वेषवश या निष्ठुर होकर हमें कोई कष्ट नहीं देता वरन् जिस प्रकार हमारा अत्यन्त हित और दूरवर्ती लाभ देखता है, वैसा ही आयोजन करता है, भले ही वह कष्टप्रद एवं असुविधाजनक हो । अध्यापक के पीटने में, माता के धमकाने में, डाक्टर के आपरेशन में, जिस प्रकार बालक का हित ही हित भरा होता है उसी प्रकार अनेक कष्टों के पीछे प्रभु की करुणापूर्ण कृपाएँ ही छिपी रहती हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अच्छी स्थिति प्राप्त करने के लिए प्रयत्न करना मनुष्य का स्वाभाविक कर्त्तव्य है । इसलिए प्रत्येक अपराध से बचने के लिए और उत्तम स्थिति प्राप्त करने के लिए उसे उत्साह और परिश्रमपूर्वक प्रयत्न करना चाहिए । यदि वह ऐसा नहीं करता केवल भाग्य के भरोसे बैठा रहता है तो कर्त्तव्य घात का दोषी बनकर अपनी ड्यूटी पूरी न करने के पाप का दण्ड पाता है । प्रत्येक व्यक्ति का कर्त्तव्य है कि पूरी समझदारी, योग्यता और तत्परता से अपनी कठिनाइयों को हल करने के लिए जी-जान से कोशिश करे । परन्तु यह ध्यान रखना चाहिए कि फल देना परमात्मा के हाथ में है । जो हम चाहते हैं प्रयत्न द्वारा वह अवश्य ही प्राप्त हो जाय, यह आवश्यक नहीं ।

अनेक अज्ञात कारण ऐसे हैं जो सत्प्रयत्नों को भी निष्फल कर देते हैं और वैसी परिस्थिति में रहना पड़ता है जो कष्टकारक एवं असुविधाजनक होती हैं । ऐसी दशा में खिन्न होने की कोई बात नहीं । हमारे लिए यह प्रसन्नता की, सन्तोष की, गौरव की बात है कि शक्ति भर अपना कर्त्तव्य-पालन किया गया । मनुष्य के हाथ में केवल कर्त्तव्य-पालन ही है, फल ईश्वर के हाथ है । जो वस्तु अपने हाथ की नहीं उसके लिए चिन्तित या परेशान होने का कोई कारण नहीं । कई व्यक्ति काम को आरम्भ करते ही बड़ी उतावली से बड़े-बड़े मन के महल बनाने लगते हैं । जब वे सपने पूरे नहीं होते तो बेतरह रोते चिल्लाते हैं और निराश होकर आवश्यक प्रयत्न और कर्त्तव्य को भी छोड़ बैठते हैं । इस शेखचिल्ली प्रकृति के मनुष्य अपनी मर्यादा को भूल जाते हैं । वे यह भूल जाते हैं कि हम अल्पज्ञ एवं अपूर्ण मनुष्य है, हमारे हाथ में केवल कर्त्तव्य करना ही है, फल हमारे हाथ में नहीं है ।

ईश्वर को अपनी मर्जी पर चलने के लिए हम विवश नहीं कर सकते वरन् उसकी मर्जी से प्रसन्न रहकर मानसिक सन्तोष को कायम रख सकते हैं । इनका अर्थ यह नहीं कि वे समझे बूझे, बिना आगा-पीछा सोचे यों ही अन्धाधुन्ध काम किये जायें, ऐसा तो कोई मूर्ख या पागल ही कर सकता है । दूरदर्शिता और समझदारी से लाभदायक योजना बनाना तो अपना कर्त्तव्य है पर इतना साहस सदा ही अपने में होना चाहिए कि असफलता में भी अपनी प्रसन्नता कायम रह सके ।

गायत्री का चौथा पद यह शिक्षा देता है कि अपने भीतर से प्रेरणा ग्रहण करो, अपने ऊपर निर्भर रहो । बाहरी व्यक्तियों एवं वस्तुओं पर अपने सुख को निर्भर मत रखो । यह तो एक पराधीनता हुई यदि वस्तुएँ और परिस्थितियाँ अनुकूल हुईं तब तो प्रसन्न रहे और यदि प्रतिकूल हो गईं तो रो-रो कर सिर धुनने लगे । इसका अर्थ तो यह है कि हम गुलाम हैं । दूसरे मनुष्य हमारे सुख-दुःख के स्वामी हैं । बाहर की वस्तुओं और परिस्थितियों के इशारे पर हँसने-रोने वाले पुतले मात्र अपने को सिद्ध करना आत्मा के महान गौरव के विरुद्ध है । गायत्री कहती हैं कि अपनी महानता को इस प्रकार तिरष्कृत मत करो । अपना दृष्टिकोण बदल देने मात्र से जादू की तरह दुःखों के पर्वत को राई के समान हलका किया जा सकता है और राई के बराबर सुख में नन्दन बन जैसा स्वर्गीय सुख उपलब्ध किया जा सकता है । जब हमारे दृष्टिकोण में पारस पत्थर जैसी क्षमता भरी हुई है तो उसी को क्यों न सँभाला जाय ? उसी का सदुपयोग क्यों न किया जाय ? अपनी समझ, अकल, मान्यता, भावना, इच्छा, आकांक्षा, रुचि, दृष्टि एवं आन्तरिक स्थिति में थोड़ा-सा हेर-फेर कर उतना सुख मिल सकता है, जितना कि हर एक इच्छा के पूरे होते रहने का सुअवसर मिलते रहने पर भी प्राप्त होना सम्भव नहीं है ।

कई सामाजिक प्रथाएँ और परम्पराएँ ऐसी हैं जो प्राचीन काल में उपयुक्त भले ही रही हों, पर आज की परिस्थिति में उनकी उपयोगिता समाप्त हो गई है । ऐसी प्रथा और परम्पराओं के बन्धन में जकड़े रहकर कई व्यक्ति आत्महनन करते रहते हैं और यह तलाश करते रहते हैं कि कोई ऐसा दैव योग उत्पन्न हो जाय जिससे कठोर एवं अनावश्यक सामाजिक बन्धनों का तनिक भी विरोध न करना पड़े और मनचाहा सौभाग्य प्राप्त हो जाय । इस टेढ़े मार्ग की प्रतीक्षा में बैठे-बैठे जो लोग निराशा के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गर्त में गिर रहे थे और अपनी विषम परिस्थिति पर आँसू बहाया करते थे उन्हें गायत्री का चौथा पाद एक नई प्रेरणा से परिपूर्ण विवेक बुद्धि प्रदान करता है जिससे उत्साह और साहस पाकर अनावश्यक प्रतिबन्धों की साधक उपेक्षा कर देता है और अत्यन्त कठिन दिखाई पड़ने वाले मनोरथ को सहज ही प्राप्त कर लेता है ।

आज अधिकांश लोग लकीर के फकीर हैं । वस्तु स्थिति को विवेकपूर्वक समझने का कष्ट उठाना उन्हें मन्जूर नहीं । वे चाहते हैं कि कोई बर्बाद होता हो तो हो जाय पर अन्धी परम्पराएँ यथावत् कायम रहें । ऐसे लोगों की सम्पत्ति अन्धी भेड़ों के मिमियाने के बराबर भी महत्त्व नहीं रखती । ऐसे लोगों की निन्दा, प्रशंसा दोनों ही उपेक्षणीय है । गायत्री अपने अनुयायी के मन में आवश्यक साहस देकर इतना मनोबल उत्पन्न कर देती है कि वह विवेक के अनुसार अपना पथ निर्धारित करे और मेढकों के टर्राने से भयभीत न हो । आज इस प्रकार के कष्टों की कमी नहीं है जो सामाजिक कुप्रथाओं के प्रतिबन्धों के कारण लोगों को उठाने पड़ते हैं । यह अज्ञान जन्य सड़े गले बन्धन, साहसी और विवेकवान व्यक्ति द्वारा आसानी से झटक कर तोड़ दिये जाते हैं और उसकी पिसती हुई अन्तरात्मा पुनः विकसित होने लगती है ।

कोई व्यक्ति अत्यन्त साधारण-सी बात पर बड़े उत्तेजित हो जाते हैं । छोटी-छोटी बातों को बहुत अधिक महत्त्व देते हैं और हर्ष, शोक, चिन्ता, भय, क्रोध, आवेश आदि उत्तेजनाओं के वशीभूत होकर ऐसे कार्य कर बैठते हैं जिन पर पीछे भारी पश्चाताप करना पड़ता है । डरपोक स्वभाव के आदमी बहुधा भविष्य में किसी विपत्ति या अनिष्ट की आशंका किया करते हैं उन्हें कोई न कोई डर लगा रहता है और छाती धड़कती रहती है कि कहीं ऐसा न हो जाय, कहीं वैसा न हो जाय । किसी से मामूली कहा-सुनी हो जाय तो उन्हें ऐसा लगता है कि मानों विश्व-युद्ध में फँस गये । कोई मामूली-सा मुकदमा लग जाय तो ऐसा सोचते हैं मानों अब उन्हें कोल्हू में ही पेला जाने वाला हो । छोटी-छोटी बातों पर उनके क्रोध का पारा आसमान पर चढ़ जाता है । आत्म-हत्या कर बैठना, घर छोड़कर भाग जाना, साधू, बाबाजी का वेष बना लेना और न जाने क्या-क्या ऊटपटाँग कर बैठना उनके लिए साधारण-सी बात होती है । ऐसे लोग थोड़ा साधन या वैभव पाकर बेहिसाब इतराते हैं और अभिमान के नशे में चूर हो जाते हैं । मामूली सी जिम्मेदारियाँ सिर पर हों तो ऐसे चिन्ता मग्न हो जाते हैं मानों शेषनाग की तरह सारी पृथ्वी के बोझ को ही अपने ऊपर उठाये हुए हैं ।

इस प्रकार की उत्तेजित मनोदशा आत्मिक अज्ञान का फल है । गायत्री का साधक अपनी आत्मिक महानता को भली प्रकार समझ लेता है और जानता है कि संसार में जो आये दिन रंग-बिरंगी घटनाएँ घटित होती रहती हैं वे धूप-छाँह की तरह क्षण में बदलने वाली होती हैं । उनका महत्त्व बहुत कम है । इसलिए इन तुच्छ-सी बातों को अनावश्यक महत्त्व क्यों दिया जाय ? जीवन शान्ति, स्थिरता हल्के दृष्टिकोण से जीने की वस्तु हैं । इसे एक क्रीड़ा कल्लोल, विनोद विलास ही समझना चाहिए । इस तत्वज्ञान को अपनाकर वह अनावश्यक शोक, मोह, चिन्ता, भय और क्रोध-आवेश से बचा रहता है । शान्तिपूर्वक कतत्तव्य-मार्ग में प्रवृत्त रहने से उसका मस्तिष्क स्वस्थ रहता है और अगणित मानसिक पीड़ाओं से उसे छुटकारा मिल जाता है । जो मानसिक शान्ति उसे विशाल फौज, राज-पाट, धन-भंडार मिलने पर भी नहीं मिल सकती थी वह जीवन को हल्के दृष्टिकोण से जीने की नीति समझ में आ जाने पर सहज ही मिल जाती है । गायत्री का चौथा पाद हमें आत्मज्ञान और आत्मबल देता है जिसके कारण अन्तःकरण में उत्पन्न होने वाले कष्टों का विनाश बड़ी सरलतापूर्वक हो जाता है । असफलता और सफलता में उसे कोई बहुत बड़ा अन्तर मालूम नहीं देता । उनका ध्यान केवल कर्त्तव्य पर रहता है हानि लाभ या असफलता-सफलता पर नहीं ।

अपने आन्तरिक क्षेत्र का, मनोभूमि का संशोधन करना, समस्या की जड़ अपने अन्दर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

खोजना, यही 'अध्यात्म' है । यही गायत्री के तृतीय चरण का संदेश है । इसे हृदयंगम करने वाला कभी भी, किसी भी स्थिति में दुःखी एवं असन्तुष्ट नहीं रह सकता, उसे हर स्थिति में प्रसन्नतादायक अवसर ही दृष्टिगोचर होते हैं, वह हर घड़ी हँसता मुस्कराता है, आनन्दित और उल्लसित रहता है ।

गायत्री की शिक्षा है कि हम हर घड़ी हर परिस्थिति में प्रसन्न रहें क्योंकि प्रसन्नता हमारी आध्यात्मिकता का प्रमुख लक्षण है । आत्मा आनन्दमयी है, उसकी बाह्य आवरण की दिनचर्या भी आनन्दमयी होनी चाहिए । हर घड़ी प्रसन्न रखने की आदत डालने के लिए हर गायत्री-प्रेमी को जी जान से कोशिश करनी चाहिए । मुँह फुलाये रहना, निराश, उदास और चिन्तित बैठे रहना किसी व्यक्ति की दीनता-हीनता का ही परिचायक हो सकता है । जिसे अपने स्वरूप का थोड़ा-सा भी ज्ञान होगा वह अपनी महानता पर प्रभु की आनन्दमयी रचना को देखकर सदा हँसता-मुस्कराता ही रह सकता है ।

गीता के अध्याय २ श्लोक ६५ में बताया गया है कि 'प्रसन्न रहने से मनुष्य के सब दुःखों का विनाश होता है और बुद्धि की स्थिरता बढ़ती है, हँसोड़े आदमी बहुधा स्वस्थ और मोटे-ताजे पाये जाते हैं । कारण यह है कि हँसने से नस नाड़ियों में खून का दौरा भली प्रकार होता है, माँस पेशियों में फुर्ती और चैतन्यता रहती है क्योंकि कण्ठ, श्वास नाड़ियों, फेफड़ों और पेट का अच्छा व्यायाम होता रहता है । आँख, कान, नाक सभी पर इसका असर पड़ता है जिससे यह इन्द्रियाँ भली प्रकार अपना काम करती रहती हैं । इसके विपरीत अप्रसन्न, निराश, दुःखी, शोकग्रस्त, क्रोधी, ईर्षालु स्वभाव के मनुष्य अपने स्वास्थ्य को भट्टी में पड़ी हुई लकड़ी की तरह जलाते रहते हैं ।

मन का, मस्तिष्क का नाश करने में अप्रसन्नता से बढ़कर और कोई घातक शत्रु नहीं । जिसका चित्त किसी न किसी कारण दुःखी बना ही रहता है जो आशंका, भय, असफलता से चिन्तित रहता है, जिसे द्वेष, कुढन, शोक, आवेश, उद्वेग घेरे रहते हैं, जो अहंकार से गर्दन फुलाये रहता है, सीधे मुँह किसी से बात करना जिसे सुहाता नहीं ऐसे बदमिजाज आदमी अपनी मानसिक शक्तियों का सत्यानाश करते रहते हैं, ऐसे लोग अक्सर अनिद्रा, मधुमेह, बवासीर, कब्ज, जिगर बढ़ जाना, मुँह से बदबू आना, दाँतों से मवाद आना, रक्त की कमी, दिल की धड़कन, मुँह में छाले, सनक, पागलपन जैसे रोगों से ग्रसित हो जाते हैं और ये रोग कितना ही इलाज करने पर भी जड़ से नहीं जाते । मानसिक अप्रसन्नता और उद्विग्नता के कारण रक्त के श्वेत कीटाणु अशक्त हो जाते हैं । फलस्वरूप शरीर की रोग निरोधक शक्ति में शिथिलता आ जाती है । हड्डियों के भीतर की मज्जा सूख जाती है, नसें सख्त पड़ जाने से पैरों में हड़फूटन होती रहती है । चिन्ता से रज-वीर्य निस्तत्व हो जाते हैं । फलतः ऐसे लोगों को सुसन्तति से वंचित रहना पड़ता है ।

प्रसन्न रहने से मानसिक शक्तियाँ बढ़ती हैं और बुद्धि बढ़ने से मनुष्य अनेक प्रकार की सफलताएँ प्राप्त करता है । हँसता हुआ चेहरा एक प्रकार का खिलता हुआ फूल है जिसे देखकर दर्शक का मन अनायास ही उस ओर खिंच जाता है । कुरूप मनुष्य भी जब प्रसन्न-मुद्रा में होता है तो अधिक सुन्दर, अधिक स्वस्थ एवं सुखी दिखाई देता है । हँसने वाले के अनेक मित्र बन जाते हैं । प्रसन्नता के मधुपान के लिए अनेक व्यक्ति उसके इर्द-गिर्द जमा हो जाते हैं ।

प्रसन्न मुख मुद्रा प्रमाणिकता की साक्षी देती है जो स्थिर चित्त है, सुखी है, सन्तुष्ट है वह प्रसन्न रहेगा अथवा यों कहिए कि जो प्रसन्न रहता है उसके पास चारों सम्पदाएँ होंगी । यह चारों सम्पदाएँ जिसके पास हैं वह निश्चय ही बुद्धिमान, गम्भीर, विश्वसनीय, साहसी, कुशल एवं सुयोग्य समझा जाता है । प्रसन्न रहना देखने में मामूली बात है पर उसके पीछे अनेक आशाजनक रहस्य छिपे हुए हैं । प्रसन्नता का हर जगह स्वागत होता है ।

परमात्मा के इस पुनीत उद्यान में, संसार में विनोद क्रीड़ा करने के लिए जिस आत्मा का अवतरण हुआ है उसे हर घड़ी प्रसन्न रहना चाहिए । काले-सफेद, भले-बुरे, प्रिय-अप्रिय तथ्यों से भरा हुआ यह संसार कितना सुन्दर है, इसे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

देखकर उसका हृदय-कमल खिल जाता है । अच्छाइयों का मधुर स्पर्श करना और बुराइयों से लड़ना, यह उभय पक्षीय कार्यक्रम सामने रखकर मानों भगवान ने मीठे और तीखे षट्रस व्यंजन हमारे जीवन काल में परोसे हैं । हानि-लाभ के विविध स्वादों का विविध प्रकार अनुभव करते हुए हमें उसी प्रकार आनन्दित रहना चाहिए जैसे स्वादिष्ट षट्रस भोजनों का आस्वादन करते हुए हम प्रसन्न होते हैं । सुख-दुःख, अमीरी-गरीबी, लाभ-हानि अपने-अपने ढंग के व्यंजन हैं । यह सभी अपने ढंग के स्वादिष्ट हैं । एक से दूसरे का महत्त्व है । विरोधी भाव न हो तो हर वस्तु नीरस हो जाय । दिन का महत्त्व रात के कारण होता है । यदि रात न हो तो दिन के आनन्द का अनुभव ही न हो, इसी प्रकार सुख का आनन्द तभी है जब दुःख का अस्तित्व भी हो । दुःख न हो तो जिन बातों को आज सुख समझा जाता है उनमें तनिक भी आनन्द एवं आकर्षण प्रतीत न होगा ।

गायत्री के चौथे पाद का संदेश यह है कि अनुकूल एवं प्रतिकूल परिस्थितियों का हम बुद्धिमत्तापूर्ण उपयोग करें । अच्छे से अच्छे भविष्य की आशा करें और बुरे से बुरे परिणाम का मुकाबला करने को तैयार रहें । यदि कठिनाइयों को अपने प्रयत्न को बढ़ाने की चुनौती मात्र समझा जाय, उनसे भयभीत न हुआ जाय, तो निश्चय ही कोई अप्रिय परिस्थिति हमें दुःखी नहीं कर सकती, अपनी प्रसन्नता में बाधक नहीं हो सकती । प्रसन्न रहना अपना स्वभाव बना लेने की सद्बुद्धि को अपना लिया जाय तो जरा-जरा से तुच्छ कारणों से दुःखी होने की कुबुद्धि से सहज ही छुटकारा मिल सकता है । जीवन खिलाड़ी की भावना से खेलने के लिए है । खिलाड़ी पूरे उत्साह से खेलते हैं पर जीत हार की विशेष परवाह नहीं करते । रंगमंच पर पार्ट करने वाले नट अनेक प्रकार के अभिनय करते हैं पर स्वयं उनसे प्रभावित नहीं होते । इसी खिलाड़ी नट की भावना के साथ जीवन का खेल खेलना चाहिए । किसी भी घटना को, किसी भी परिस्थिति को बहुत अधिक महत्त्व नहीं देना चाहिए । जो कष्ट या अभाव हमें बहुत परेशान करते हैं उन्हें यदि हल्की दृष्टि से देखें तो वे बहुत ही तुच्छ प्रतीत होते हैं । इन अभावों के होते हुए भी अनेकों से अपनी स्थिति बहुत अच्छी है, जितनी सुविधाएँ प्राप्त हैं उनकी तुलना में दुःख तो नाम मात्र का है । ऐसी दशा में यदि हम चाहें तो अपनी सम्पन्नताओं और सुविधाओं पर प्रसन्न होकर छोटे-मोटे अभावों की सहज ही उपेक्षा कर सकते हैं ।

आनन्द भीतर है। उसे बाहर की वस्तुओं में नहीं ढूँढ़ना चाहिए । वरन् भीतर से प्रेरित करना चाहिए । सद्बुद्धि रूपी प्रसन्नता हमारे अन्तर में छिपी पड़ी है, उसे प्रेरित ससन्नत करते ही कष्टों की निशा समाप्त हो जाती है और आनन्द रूपी सूर्य की किरणें अपने चारों ओर बिखरी हुई दिखाई पड़ती हैं ।

विपत्ति में भी भगवान की दया

भगवान जिसे अपनी शरण में लेते हैं, जिसे बन्धन मुक्त करना चाहते हैं, उसके अनिवार्य कर्म भोगों को जल्दी-जल्दी भुगतवा कर उसे ऐसा ऋण-मुक्त बना देते हैं कि भविष्य के लिए कोई बन्धन शेष न रहे और भक्त को फिर जन्म-मरण के चक्र में न पड़ना पड़े । एक ओर विपत्ति द्वारा प्रारब्ध-भोग समाप्त हो जाते हैं दूसरी ओर उसकी आन्तरिक पवित्रता इतनी बढ़ती है इन उभय पक्षीय लाभों से वह बड़ी तीव्र गति से परम लक्ष्य की ओर प्रगति करता है । तपस्वी लोग ऐसे कष्टों को प्रयत्न-पूर्वक अपने ऊपर आमंत्रित करते हैं ताकि उनकी लक्ष्य यात्रा शीघ्र पूरी हो जाय ।

साधारणतः अनेक सद्गुणों के विकास के लिए भगवान समय-समय पर अनेक कटु अनुभव कराते हैं । बच्चे की मृत्यु होने पर उसके शोक में 'वात्सल्य' का हृदयगत पर सात्विक तत्व उमड़ता है जिसके कारण वह अन्य बालकों पर अधिक प्रेम करना सीखता है । देखा गया है कि जिसकी पहली पत्नी गुजर जाती है वह अपनी दूसरी पत्नी से अधिक सद्व्यवहार करता है क्योंकि एक पत्नी खोने के कारण जो भावोद्रेक मन में हुआ उसके

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कारण दाम्पत्य कर्त्तव्य का उसे ज्ञान हुआ है और अपने प्रथम दाम्पत्य की अपेक्षा दूसरे जीवन में अधिक सफल सिद्ध होता है । एक वियोग उन्हें उस खोई हुई वस्तु के महत्त्व को भली प्रकार हृदयगत ही करा देता है । धन खोकर मनुष्य यह सीखता है कि धन का सदुपयोग किस प्रकार किया जाना चाहिए । रोगी हो जाने पर आदमी यह जान पाता है कि संयम, आहार, विहार का क्या महत्त्व है । गाली देने पर जिसका मुँह पिट जाता है, उसको यह अक्ल आती है कि गाली देना बुरी बात है । जिसको अत्याचार सहना पड़ा है, वही जानता है कि दूसरों पर यदि जुल्म करूँ तो उन्हें कितना कष्ट होगा । जब हम आपत्तिग्रस्त होकर दूसरों की सहायता के लिए हाथ पसारते हैं और दीन नेत्रों से दूसरों की ओर ताकते हैं तब यह पता चलता है कि दूसरे दुखियों की सहायता करना हमारे लिए भी कितना आवश्यक कर्त्तव्य है ।

कई मूर्ख यह कह बैठते हैं कि जब विपत्ति ईश्वरीय कृपा है तो उसे दूर करने के लिए कोई प्रयत्न क्यों करें ? यह तो ऐसी ही बात है जैसी कि कोई विद्यार्थी कहे कि "मास्टर साहब का मारना भी जब हित के लिए है तो रोज खूब पिटना चाहिए, इस पिटते रहने से ही हमारा कल्याण हो जायेगा ।" ऐसे मूर्ख नहीं जानते कि मास्टर चाहता है कि विद्यार्थी अधिक सावधानी, अधिक परिश्रम-शीलता को अपनावे । इसी उद्देश्य के लिए वह मारपीट का कठोर कार्य हाथ में लेता है । जो विद्यार्थी मास्टर के मारने का प्रयोजन न समझ कर, उसकी इच्छा और प्रेरणा को न समझकर, उल्टा यह समझ बैठे कि पिटते रहने से ही मैं विद्वान हो जाऊँगा, पढ़ने में परिश्रम क्यों करूँ ? ऐसी औंधी समझ के छात्र को किन शब्दों में क्या कहा जाय ? इसी प्रकार जो व्यक्ति दुःखों को ईश्वरीय कृपा समझकर उनके प्रतिकार का प्रयत्न नहीं करते वे प्रभु के सारे प्रयत्न को ही व्यर्थ कर देते हैं ।

जब गायत्री माता सद्बुद्धि के रूप में साधक के हृदय-कमल पर अवस्थित होती है तो अज्ञान जन्य अधिकांश दुःख, दरिद्र तो मनोभूमि में से अपने आप पलायन कर जाते हैं तथा अनेक प्रकार की सुख सम्पत्तियों का द्वार स्वयं ही खुल जाता है ।

***

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गायत्री एक समग्र धर्म-शास्त्र

तत्वज्ञान और विवेचन

गायत्री वैदिक संस्कृत का एक छन्द है जिसमें आठ-आठ अक्षरों के तीन चरण-कुल २४ अक्षर होते हैं । गायत्री शब्द का अर्थ है- प्राण-रक्षक । गय कहते हैं प्राण को, त्री कहते हैं त्राण- संरक्षण करने वाली को । जिस शक्ति का आश्रय लेने पर प्राण का, प्रतिभा का, जीवन का संरक्षण होता है उसे गायत्री कहा जायेगा । और भी कितने अर्थ शास्त्रकारों ने किये हैं । इन २४ अक्षरों में से प्रत्येक की अलग-अलग संगतियाँ मिलकर २४ ऐसे प्रेरक सूत्र प्रस्तुत किये हैं जिन्हें चरित्र-निष्ठा एवं समाज-निष्ठा के, व्यक्ति और समाज की प्रगति सुव्यवस्था के, आधारभूत सिद्धान्त कहा जा सकता है । इस महामन्त्र के शब्दों को नवधा भक्ति के सिद्धान्त-ब्रह्म तत्व रूपी सूर्य के नव ग्रह कहा गया है । रामायण के राम-परशुराम सम्वाद में ब्राह्मण के परम पुनीत नौ गुणों की चर्चा है । यह धर्म के दस लक्षणों से मिलते-जुलते हैं । इन सब अर्थों पर विचार करने पर यह कहा जा सकता है कि यह छोटा-सा मन्त्र भारतीय संस्कृति, धर्म एवं तत्वज्ञान का बीज है । इसी के थोड़े से अक्षरों में सन्निहित प्रेरणाओं की व्याख्या स्वरूप चारों वेद बने । ॐ भूर्भुवः स्वः यह गायत्री का शीर्ष कहलाता है । शेष आठ-आठ अक्षरों के तीन चरण हैं । जिनके कारण उसे त्रिपदा कहा गया है । एक शीर्ष तीन चरण, इस प्रकार उसके चार भाग हो गये, इन चारों का रहस्य एवं अर्थ चारों वेदों में है । कहा जाता है कि ब्रह्माजी ने अपने चार मुखों से गायत्री के इन चारों भागों का व्याख्यान चार वेदों के रूप में दिया । इस प्रकार उसका नाम वेदमाता पड़ा ।

गायत्री में सन्निहित तत्वज्ञान की दो प्रकार से व्याख्या होती रही है । एक ज्ञान परक दूसरी विज्ञान परक । ज्ञान परक को ब्रह्मविद्या और विज्ञान परक को ब्रह्मशक्ति कहते हैं । इन दोनों पक्षों को अलंकारिक रूप में ब्रह्मा की दो पत्नियों के रूप में चित्रित किया गया है । एक का नाम गायत्री, दूसरी का सावित्री; गायत्री में योगाभ्यास की ध्यान-धारणा है और सावित्री में तपश्चर्या की प्रेरणा । एक को दर्शन दूसरे को प्रयोग कह सकते हैं । सिद्धान्त और व्यवहार के समन्वय से ही एक बात पूरी होती है । गायत्री में अपने ही भीतर दोनों पक्ष हैं । उसमें आत्म-कल्याण की गंगा और भौतिक समृद्धि की यमुना दोनों का उद्गम है । उद्गम छोटे होते हैं किन्तु आगे बढ़ते चलने पर उनका विकास होता चलता है । गायत्री के बीज मन्त्र का अर्थ और रहस्य समूचे आर्ष साहित्य के रूप में विस्तृत होता चला गया है ।

गायत्री का सार-शब्दार्थ इसी प्रार्थना में समाविष्ट हो जाता है कि-'हे तेजस्वी परमात्मा हम आपके श्रेष्ठ प्रकाश को अपने में धारण करते हैं । हमारी बुद्धि को सन्मार्ग पर प्रेरित कीजिए ।' शिक्षा की दृष्टि से इन शब्दों का सार बुद्धि को सन्मार्ग पर चलाने के लिए प्रयत्न करना है । सद्बुद्धि ही वह तत्त्व है जिसके आधार पर व्यक्तित्व निखरने-उभरते हैं । इसी के अभाव में पतन और पिछड़ापन पल्ले बँधता है । हाड़-माँस की दृष्टि से सभी मनुष्यों के शरीरों की स्थिति प्रायः एक जैसी ही है । मानसिक रोगियों, अविकसितों को छोड़कर मस्तिष्कीय स्तर भी एक जैसा ही होता है । प्रयत्न करने पर शरीरों को बलिष्ठ और मस्तिष्कों को विद्वान बनाया जाता है । मूलतः सभी मनुष्यों प्राणियों की स्थिति लगभग एक जैसी ही मानी जा सकती है ।

इतने पर भी एक ऋषि बनता है । दूसरा तस्कर । एक श्रेष्ठ-सज्जन का श्रेय-सम्मान पाता है दूसरा दुष्ट-दुर्जन के रूप में धिक्कारा जाता है । एक को असीम सहयोग मिलता है और पग-पग पर सफलता की सीढ़ियाँ सामने खड़ी दीखती हैं । दूसरा अविश्वस्त, अप्रामाणिक माना जाता है और असहयोग के कारण हर काम में असफल रहता है । यह अन्तर मात्र बुद्धि के स्तर का है । वह जिधर भी घसीट ले जाती है उधर ही जीवन का

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रवाह बहने लगाता है । कौन क्या बना ? किसे कितनी सफलता मिली ? किसने कितना श्रेय-सम्मान पाया ? उसका श्रेय समुन्मत लोगों की सद्बुद्धि को ही दिया जा सकता है । जो दुर्गति के दलदल में फँसे हैं उनके दुर्भाग्य का सूत्र-संचालन दुर्बुद्धि ही करती दिखाई देगी । स्वर्ग तक ऊँचा उठा ले जाने और नरक के गर्त में गिराने का कार्य मानवीय बुद्धि की स्थिति और दिशाधारा पर ही अवलम्बित रहता है ।

तत्वदर्शी महामनीषियों ने इस तथ्य को समझा और मनुष्य मात्र को शिक्षा दी कि वे बुद्धि का महत्व समझें और उसे शालीनता की रीति-नीति अपनाने के लिये प्रशिक्षित अभ्यस्त बनाने का प्रयत्न करें । यही है गायत्री मन्त्र का मूल विषय । कहने सुनने में बात सरल सी है पर व्यवहार में बड़ी कठिनाई से उतरती है । क्योंकि आस्था, श्रद्धा, निष्ठा, प्रज्ञा की चतुर्विधि समन्वय अन्तःकरण कहलाता है । यही वह मरुस्थल है जहाँ से दिशा देने वाली प्रेरणायें उठती हैं और उसे कार्यान्वित करने के लिए मन, बुद्धि एवं चित्त का मस्तिष्कीय संस्थान क्रियाशील होता है । अन्तःकरण को प्रभावित, परिवर्तित एवं परिष्कृत करने की क्षमता जिन विशिष्ट उपचारों में है उन्हीं को अध्यात्म साधना कहते हैं । गायत्री मन्त्र के अक्षरों में ज्ञान की उच्चस्तरीय भूमिका विद्यमान है । उस विचार प्रक्रिया को अन्तरात्मा की गहरी परत में प्रतिष्ठापित करने के लिए गायत्री मन्त्र की उपासना की जाती है । इस कथन का सार इतना ही है कि मन्त्रार्थ को उत्कृष्ट चिन्तन के रूप में ग्रहण करना मस्तिष्क का काम है और उसकी दिव्य प्रेरणाओं को चेतना के मर्मस्थल में प्रतिष्ठित करना अन्तःकरण का । मस्तिष्क और अन्तःकरणों में जो सद्भावना सुस्थिर होती और प्रखर बनती है उसी को परम पावनी सद्बुद्धि ऋतम्भरा प्रज्ञा एवं गायत्री माता कहा गया है । जो इतना प्रयोजन पूरा कर सके वही इस महामन्त्र का वास्तविक तात्विक एवं रहस्यमय गूढ़ार्थ है ।

शब्दों की दृष्टि से इस महामन्त्र का भावार्थ सरल है- ॐ परमात्मा का स्वयंभू स्वोच्चारित नाम । प्रकृति के गहन अन्तराल से एक दिव्य ध्वनि झंकार घरघरांहट के रूप में गूँजती है । ब्रह्म और प्रकृति का बार-बार संयोग आघात होने से ही तीन गुण, पाँच प्राण और पाँच तत्व उत्पन्न होते हैं । उन्हीं से आघात और प्राणियों की संरचना होती है । शब्द ब्रह्म को सृष्टि का आदि कारण माना गया है । इसी की प्रकृति और पुरुष को मिलन प्रक्रिया का अनवरत क्रम कहा गया है । यहीं से अनहद-नाद उत्पन्न होता है । यही ॐकार है । घड़ियाल पर हथौड़े की चोट पड़ते रहने से जिस प्रकार झंकार थरथराहट होती है, जिस तरह घड़ी का पेण्डुलम हिलने से आवाज भी होती है और मशीन भी चलती है, ठीक उसी तरह प्रकृति पुरुष के मिलन संयोग से ॐकार उत्पन्न होता है और उस सृष्टि-बीज से स्थूल प्रकृति का आकार बनता जाता है । परा प्रकृति के अपरा बनने की अदृश्य से दृश्य होने की यही प्रक्रिया है । इस प्रकार ॐकार ईश्वर का स्वच्चरित सर्वश्रेष्ठ नाम माना गया है । प्रत्येक वेन्दमन्त्र के सम्मानार्थ सर्व्रप्रथम ॐकार लगाये जाने की परम्परा भी है । गायत्री मन्त्र में ॐकार का प्रयोग इसी दृष्टि से हुआ है ।

भूः भुवः स्वः यह तीन लोक हैं । यों उन्हें पृथ्वी, पाताल और स्वर्ग-मध्य,ऊपर,नीचे-के रूप में भी जाना जाता है । पर अध्यात्म प्रयोजनों में भूः स्थूल शरीर के लिए- भुवः सूक्ष्म शरीर के लिए और स्वः कारण शरीर के लिए प्रयुक्त होता है । वाह्य जगत और अन्तर्जगत के तीनों लोकों में ॐकार अर्थात् परमेश्वर सर्वव्याप्त है । व्याहृतियों में इसी तथ्य का प्रतिपादन है । इसमें विशाल विश्व को विराट् ब्रह्म के रूप में देखने की वही मान्यता है जिसे भगवान ने अर्जुन को अपना विराट् रूप दिखाते हुए हृदयंगम कराया था । ॐ व्याहृतियों का समन्वित शीर्ष भाग इसी अर्थ और इसी प्रकाश को प्रकट करता है ।

तत् अर्थात् वह । सवितु- प्रकाश और ऊर्जा से-ज्ञान और वर्चस से ओत-प्रोत परमेश्वर । वरेण्यं-श्रेष्ठ, भर्ग-तेजस्वी, विनाशक, देव दिव्य इन चार शब्दों में परब्रह्म परमात्मा के उन गुणों का वर्णन है जिन्हें अपनाने का प्रयत्न करना हर अध्यात्मवादी के लिए, हर आत्मिक प्रगति के आकांक्षी के लिए नितान्त आवश्यक है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सविता-प्रातःकालीन स्वर्णिम सूर्य को कहते हैं । यह परमेश्वर की स्वनिर्मित प्रतिमा है । उससे बाह्य जगत में प्रकाश और अन्तर्जगत में सद्ज्ञान का अभिवर्षण होता है । सूर्य से गर्मी-ऊर्जा बाह्य जगत को मिलती है । सत्संकल्प और सत्साहस से भरी हुई आत्मशक्ति का अनुदान अन्तर्जगत को मिलता है । सविता शब्द का गायत्री मन्त्र में सर्वप्रथम उल्लेख इसी दृष्टि से हुआ है कि साधक को प्रज्ञावान और शक्तिवान बनने के लिए अथक पुरुषार्थ करना चाहिए ।

वरेण्यं- श्रेष्ठ चुनने योग्य-स्वीकार करने योग्य-वरिष्ठ । इस संसार में उत्कृष्ट-निकृष्ट, भला-बुरा सब कुछ विद्यमान है । उसमें से जो श्रेष्ठ है, उसी को स्वीकार करना चाहिए । हंस जिस प्रकार नीर-क्षीर का विवेक करता है- मोती-ही चुनता है, उसी प्रकार हमारा चयन मात्र उत्कृष्टता का ही होना चाहिए । निकृष्टता का तिरस्कार बहिष्कार करना ही उचित है । आकर्षक और हितकर में से किसका चयन करें - इसी प्रश्न पर प्रायः भयंकर भूल होती रहती है । तात्कालिक लोभ के लिए दूरगामी हित साधन की उपेक्षा की जाती है । यह भूल न होने देने की ओर गायत्री मन्त्र में संकेत है ।

भर्ग शब्द तेजस्विता का बोधक है । इसमें प्रतिभा, साहसिकता, तत्परता, तन्मयता जैसे तत्वों का समावेश है । क्रिया में ओजस-विचारणा में तेजस और भावनाओं में वर्चस का आभास जिस, दिव्य तत्व के आधार पर मिलता है उसे भर्ग कहते हैं । भर्ग में एक भाव भूनने-नष्ट करने का भी है । अवांछनीयता, अनैतिकता, मूढ़-मान्यता जैसी दुष्प्रवृत्तियाँ छाई रहें तो मनुष्य माया और पतन के दल-दल में फँसा ही रहेगा इनसे छुटकारा पाने के लिए ऐसी प्रखरता का उद्भव होना चाहिए जो अन्तर के कषायों और भीतर के कल्मषों से लोहा लेने में शौर्य पराक्रम का परिचय देती रहे ।

परमेश्वर के अनन्त नाम हैं और इच्छानुसार नये रखे जा सकते हैं । किन्तु आत्मिक प्रगति के लिए जिन चार विशिष्टताओं की नितान्त आवश्यकता है, उनके बोधक शब्दों का समावेश गायत्री मन्त्र में हुआ है । सविता, वरेण्य, भर्ग के उपरान्त चौथी विभूतिमत्ता का नाम है 'देव' । देवताओं की गरिमा महिमा के सम्बन्ध में मोटी मान्यता और कल्पना प्रायः सभी को होती है । वे सुन्दर होते हैं, सदा युवक रहते हैं, उन्हें किसी बात की कमी नहीं पड़ती, प्रसन्न रहते हैं । वे दिव्य गुण, कर्म, स्वभाव के होते हैं । ईश्वर की 'देव' शब्द से सम्बोधन करने में यह आत्म-शिक्षण है कि हम परमात्मदेव के भक्त बनें और देवत्व की विशेषता में उनका अनुकरण अनुगमन करें ।

देव और दैत्यों की यों अलंकारिक रूप से आकृतियाँ भी बनी हैं । देव सुन्दर और दैत्य कुरूप हैं । वस्तुतः उस चित्रण में आन्तरिक प्रकृति का ही संकेत समझा जाना चाहिए । देवत्व श्रेष्ठता की प्रकृति, आस्था, परम्परा एवं रीति-नीति है जिसे अपनाकर मनुष्य महामानवों की श्रेणी में जा पहुँचता है । काय-कलेवर तो सामान्य ही रहता है पर दृष्टि, योजना एवं क्रिया में उत्कृष्टता ही कूट-कूटकर भरी होती है । देवात्मा ही महात्मा कहलाते हैं । स्तर और ऊँचा उठने पर वे ही परमात्मा के देवदूत अथवा अवतारों के रूप में प्रकट होते और सृष्टि का सन्तुलन सँभालते हैं । गायत्री मन्त्र से जन-जन को इसी देवत्व की दिशा में बढ़ चलने की प्रेरणा देने के लिए ईश्वर को 'देव' शब्द से सम्बोधित किया गया है ।

उपर्युक्त चारों विशेषताओं की आवश्यकता एवं उपयोगिता समझ लेने पर ही काम नहीं चलता । उनके प्रति अन्तःकरण से गहन निष्ठा जमनी चाहिए और आचरण में इन्हीं का अभ्यास व्यवहार परिलक्षित रहना चाहिए । इसी को धारणा कहते हैं । धीमहि शब्द का अर्थ है- धारण करना । आदर्शों को व्यवहार में उतारना ही उनकी धारणा है । कल्पनायें करते रहने-कहने सुनने मात्र में उलझे रहने से कुछ बनने वाला नहीं है । परिणाम ही क्रिया उत्पन्न करता है । क्रियावान ही सच्चा ज्ञानवान माना जाता है । उसी को सद्ज्ञान का सत्परिणाम उपलब्ध होता है जो चिन्तन को क्रिया में परिणित करने का साहस दिखाता है ।

शीर्ष भाग में ईश्वर के सर्वव्यापी होने की आस्था को विकसित करके पदार्थों के प्रति

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सदुपयोग की और प्राणियों के प्रति सद्व्यवहार की नीति अपनाने का निर्देश है । प्रथम चरण में सविता और वरेण्य की तथा द्वितीय चरण में भर्ग और देव की अवधारणा का प्रशिक्षण है । गायत्री के अन्तिम तृतीय चरण धियो योनः प्रचोदयात् के अन्तर्गत परम पिता परमेश्वर से प्रार्थना की गई है कि वह साधक अकेले नहीं वरन् समस्त जन समुदाय में प्राणिमात्र में धी तत्व की-सद्बुद्धि की प्रेरणा करें । नः हम सबको और धियः बुद्धियों को कहते हैं । यहाँ एक व्यक्ति की बुद्धि सुधर जाने को अपर्याप्त माना गया है । यह सुधार व्यापक रूप से हो तभी काम चलेगा । बहुमत दुर्बुद्धिग्रस्तों का बना रहा तो एकाकी सज्जनता मात्र से कोई बड़ा प्रयोजन पूरा न हो सकेगा ।

भगवान से प्रार्थना की गई है कि अपना अनुग्रह व्यक्ति विशेष पर वर्षा कर हाथ रोक न लें वरन् सद्भाव के प्रकाश को उदीयमान सूर्य की तरह सर्वत्र बिखेरें । वैदिक शिक्षण की पद्धति यह है कि किसी विभूति एवं सम्पत्ति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करने के रूप में आत्म-शिक्षण की व्यवस्था है । प्रार्थना एक शैली है जिसके आधार पर अपने लिए, सबके लिए प्रबल पुरुषार्थ करने का भी निर्देश संकेत है । माँगने भर से ही सब कुछ मिल नहीं जाता । याचना में तो आकांक्षा की आवश्यकता का प्रकटीकरण मात्र है । किसी से कुछ पाना हो तो उसके लिए पात्रता की शर्त आवश्यक है । कुपात्रों को कौन कुछ देता है । किसी प्रकार मिल भी जाय तो उसका सदुपयोग कुपात्रता के रहते हो नहीं सकता । उपलब्ध साधनों का दुरुपयोग होने से वे उलटे विघातक सिद्ध होते हैं, दुष्टता के रहते तो अभावग्रस्तता भी श्रेयस्कर होती है । परमेश्वर से याचना करने का तात्पर्य यह नहीं है कि जो कुछ माँगा जा रहा है वह अन्धाधुंध बरसा दिया जाय वरन् अन्तःकरण में विराजमान आत्मदेव से यह अनुरोध करना है कि वे अपनी पात्रता और प्रौढ़ता विकसित करें ताकि सहज ही उपलब्ध होती रहने वाली ईश्वरीय अनुकम्पा का अभीष्ट लाभ उपलब्ध हो सके ।

प्रचोदयात् शब्द में प्रेरणा का अनुरोध है । वस्तुतः यही ईश्वरीय अनुग्रह करने का केन्द्र भी है । प्रेरणा का तात्पर्य है अन्तःकरण में प्रबल आकांक्षा की उत्पत्ति । यह ही समूचे व्यक्तित्व का सारतत्व है । अन्तःकरण का अनुसरण मनः संस्थान करता है । मन के निर्देश पर शरीर काम करता है । क्रिया का परिणाम और परिस्थिति के रूप में सामने आता है तदनुसार सुख-दुःख के वे स्वरूप सामने आते हैं जिन्हें पाने या हटाने के लिए मनुष्य इच्छा करता है । इच्छा की पूर्ति होने न होने में सहायक बाधक और कोई नहीं, अन्तःकरण की प्रेरणा का स्तर ही आधारभूत कारण होता है ।

गायत्री के चौबीस अक्षरों में २४ ऐसी शिक्षायें सन्निहित हैं, जिन्हें धर्म का सार तत्त्व कह सकते हैं । यह किसी देश, जाति, समाज सम्प्रदाय के लिए नहीं वरन् समस्त मानव समाज का नीति शास्त्र है । अतीत के स्वर्णिम काल में इन २४ अक्षरों को ही नीति-मर्यादा का अनुशासन माना जाता था । भविष्य में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के सूत्र अपनाकर समस्त मानव समाज को एकता के सूत्र में बाँधना पड़ेगा । एकता के चार सूत्र हैं । (१) विश्व राष्ट्र (२) विश्व-भाषा (३) विश्व संस्कृति (४) विश्व मानस । इनके लिए आधारभूत एकता, विश्वदर्शन से ही बनेगी । इसे विश्व धर्म भी कह सकते हैं । इसके लिए आदर्श एवं सिद्धान्त पहले से ही निर्धारित करने होंगे । एकता की दिशा में प्रगति का प्रथम आधार यही है ।

इसके लिए नये सिरे से खोज या निर्धारण करने की आवश्यकता नहीं है । तत्वदर्शी ऋषियों ने अपने समय के सतयुग में इस दिशा में पहले ही बहुत अन्वेषण, परीक्षण एवं अनुभव सम्पादित कर लिए हैं । इन सिद्धान्तों को अपनाने के लिए, जन-समाज को सहमत किया था । फलतः मनुष्यों में देवत्व के उदय और धरती पर स्वर्ग के अवतरण की अपनी भावी कामना का प्रत्यक्ष स्वरूप उन दिनों सर्वत्र ही दृष्टिगोचर होता रहा था ।

गायत्री मन्त्र के २४ अक्षरों में उन्हीं २४ सूत्रों का समावेश है जिन्हें चिन्तन एवं व्यवहार में लाने में मनुष्य का व्यक्तित्व देवोपम बन सकता है । यह स्थापना नहीं, अनुभूति है । अतीत का गौरव भरा इतिहास इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है । अगले दिनों

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

नवयुग की संरचना के लिए प्रबल प्रयत्न चलते हैं । इसके लिए जीवन क्रम की दिशा-धारा एवं व्यवहार की रीति-नीति का निर्धारण आवश्यक है । इसके लिए कोई आयोग बिठाने की आवश्यकता नहीं है । भूतकाल के महान प्रयोगों की पुनरावृत्ति करने भर से काम चल जायगा ।

गायत्री मन्त्र के २४ अक्षरों में जिन २४ सूत्रों का समावेश है, उसमें मनुष्य के आचार-विचार-व्यवहार का समग्र निर्धारण मौजूद है । इन्हें अपनाने से आचारिक शालीनता, सामाजिक प्रगति, समृद्धि एवं व्यापक सुख-शान्ति की सुव्यवस्था बन सकती है । प्राचीन को अपना लिया जाय, अथवा नये सिरे से ढूँढ लिया जाय, विश्व शान्ति के लिए उन्हीं सिद्धान्तों को अपनाना होगा, जिनमें चिर प्राचीन एवं चिर नवीन का आश्चर्यजनक समन्वय है । गायत्री को मात्र २४ अक्षरों में लिखा हुआ, सबसे छोटा धर्मशास्त्र कह सकते हैं । इसे मानवी एकता एवं गरिमा के अनुकूल बना हुआ शाश्वत संविधान कह सकते हैं । इसमें मानवी एवं दैवी उत्कृष्टता का उच्चस्तरीय समावेश देखा जा सकता है । इन सूत्रों में ब्रह्म विद्या का सार तत्व भरा हुआ है । आधुनिक विधि विधान की दृष्टि से उनमें नीति शास्त्र, नागरिक शास्त्र, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, राजनीति, धर्मशास्त्र, आदि के उच्चस्तरीय सभी सिद्धान्तों का समावेश किया जा सकता है । भूतकाल की तरह भविष्य में भी मनुष्य जाति को सुस्थिर सुख-शान्ति के लिए उन्हीं २४ सिद्धान्तों को हृदयंगम करना होगा, जो अनादिकाल में ऋषियों ने अपनी सूक्ष्म दृष्टि से विश्व कल्याण की समस्त सम्भावनाओं को ध्यान में रखते हुए निर्धारित किये थे । उनकी उपयोगिता एवं आवश्यकता तो सदा एकरस बनी रहेगी ।

गायत्री उपासना का उद्देश्य है व्यक्ति का ऐसा अनुकूलन जिसमें ईश्वर के अजस्र अनुग्रह को धारण कर सकने की पात्रता हो । उपजाऊ भूमि में ही वर्षा के बादलों के अनुग्रह से हरियाली उपजती है । कठोर चट्टानों पर तो एक पत्ता भी नहीं उगता । गायत्री उपासक का पूरा ध्यान आत्म-परिष्कार में नियोजित हो यही है संक्षेप में गायत्री मन्त्र का अर्थ और तात्पर्य । जो उसका पालन कर सकेगा वह उन सभी लाभों से लाभान्वित होगा जो गायत्री उपासना के सन्दर्भ में शास्त्रकारों और ऋषियों ने बताये हैं ।

गायत्री महाशक्ति का स्वरूप और रहस्य

किसी वस्तु के सम्बन्ध में विचार करने के लिए यह आवश्यक है कि उसकी कोई मूर्ति हमारे मनः क्षेत्र में हो । बिना कोई प्रतिमूर्ति बनाये मन के लिए किसी भी विषय में सोचना असम्भव है । मन की सक्रिया ही यही है कि पहले वह किसी वस्तु का आकार निर्धारित कर लेता है तब उसके बारे में कल्पना शक्ति काम करती है । समुद्र भले ही किसी ने न देखा हो, पर जब समुद्र के बारे में कुछ सोच-विचार किया जायगा, तब एक बड़े जलाशय की प्रतिमूर्ति मनःक्षेत्र में अवश्य रहेगी । भाषा-विज्ञान का यही आधार है । प्रत्येक शब्द के पीछे एक आकृति रहती है । गाय शब्द जानना तभी सार्थक है, जब 'गाय' शब्द उच्चारण करते ही प्राणी विशेष की आकृति सामने आ जाय । न जानी हुई विदेशी भाषा को हमारे सामने कोई बोले तो उसके शब्द कान में पड़ते हैं, पर वे शब्द चिड़ियों के चहचहाने की तरह निरर्थक जान पड़ते हैं । कोई भाव मन में उदय नहीं होता । कारण यह है कि शब्द के पीछे रहने वाली आकृति का हमें पता नहीं होता । जब तक आकृति सामने न आवे, तब तक मन के लिए असम्भव है कि उस सम्बन्ध में कोई सोच-विचार करे ।

ईश्वर या ईश्वरीय शक्तियों के बारे में भी यही बात है । चाहे उन्हें सूक्ष्म माना जाय या स्थूल, निराकार माना जाय या साकार, इन दार्शनिक और वैज्ञानिक झमेलों में पड़ने से मन को कोई प्रयोजन नहीं । उससे यदि इस दिशा में कोई सोच-विचार का काम लेना है तो कोई आकृति बनाकर उसके सामने उपस्थित करनी पड़ेगी अन्यथा वह ईश्वर या उसकी शक्ति के बारे में कुछ भी न सोच सकेगा । जो लोग ईश्वर को निराकार मानते हैं वे साकार का कोई न कोई आकार बनाते हैं । आकाश जैसा निराकार, प्रकाश जैसा तेजोमय, अग्नि जैसा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

व्यापक, परमाणुओं जैसा अदृश्य । आखिर कोई न कोई आकार उस निराकार का भी स्थापित करना ही होगा । जब तक आकार की स्थापना न होगी, मन, बुद्धि और चित्त से उसका कुछ भी सम्बन्ध स्थापित न हो सकेगा ।

इस महासत्य को ध्यान में रखते हुए निराकार औचित्य बुद्धि से अलभ्य वाणी से अतीत परमात्मा का मन से सम्बन्ध स्थापित करने के लिए भारतीय आचार्यों ने ईश्वर की आकृतियाँ स्थापित की हैं । इष्टदेवों के ध्यान की सुन्दर, दिव्य प्रतिमाएँ गढ़ी हैं । उनके साथ दिव्य आयुध, दिव्य वाहन, गुण, दिव्य स्वभाव एवं शक्तियों का सम्बन्ध किया है । ऐसी आकृतियों को भक्तिपूर्वक ध्यान करने से साधक उनके साथ एकीभूत होता है, दूध और पानी की तरह साध्य और साधक का मिलन होता है । भृङ्गी, झींगुर को पकड़ ले जाती है और उसके सामने भिनभिनाती है, झींगुर उस गुंजन को सुनता है और उसमें इतना तन्मय हो जाता है कि उसकी आकृति बदल जाती है और वह झींगुर भृङ्गी बन जाता है । दिव्य-कर्म स्वभाव वाली देवाकृति का ध्यान करते रहने से साधक में भी उन्हीं दिव्य शक्तियों का आविर्भाव होता है । जैसे रेडियो यन्त्र को माध्यम बनाकर सूक्ष्म आकाश में उड़ती फिरने वाली विविध ध्वनियों को सुना जा सकता है, उसी प्रकार ध्यान में देवमूर्ति की कल्पना करना एक आध्यात्मिक रेडियो स्थापित करना है, जिसके माध्यम से सूक्ष्म जगत् में विचरण करने वाली विविध ईश्वरीय शक्तियों को साधक पकड़ सकता है । इसी सिद्धान्त के अनुसार अनेक इष्टदेवों की अनेक आकृतियाँ साधकों को ध्यान करने के लिए बनाई गई हैं । इन देव आकृतियों का स्वतन्त्र विज्ञान है । अमुक देवता की अमुक प्रकार की आकृति क्यों रखी गई है ? इसका एक क्रमबद्ध रहस्य है । इसकी चर्चा तो अलग से करेंगे, यहाँ तो इतना ही जान लेना पर्याप्त होगा कि अमुक प्रयोजन के लिए अमुक ईश्वरीय शक्तियों को अपनी ओर आकर्षित करने के लिये जो आकृति योगी लोगों को ठीक सिद्ध हुई है, वही आकृति उस देवता की घोषित कर दी गई है ।

जहाँ अन्य प्रयोजनों के लिए अन्य देवाकृतियाँ हैं वहाँ इस विश्व ब्रह्मांड को ईश्वरमय देखने के लिए 'विराट रूप' परमेश्वर की प्रतिमूर्ति विनिर्मित की गई है । मनुष्य की सारी आत्मोन्नति और सुख-शान्ति इस बात पर निर्भर है कि उसका आन्तरिक और बाह्य जीवन पवित्र एवं निष्पाप हो, समस्त प्रकार के क्लेश, दुःख, अभाव एवं विक्षोभ के कारण मनुष्य के शारीरिक और मानसिक पाप हैं । यदि वह इन पापों से बचता जाता है तो फिर और कोई कारण ऐसा नहीं जो उसकी ईश्वर प्रदत्त अनन्त सुख शान्ति में बाधा डाल सके । पापों से बचने के लिए ईश्वरीय भय की आवश्यकता होती है । ईश्वर सर्वत्र व्यापक है इस बात को जानते तो सब हैं, पर अनुभव बहुत कम लोग करते हैं । जो मनुष्य यह अनुभव करेगा कि ईश्वर मेरे चारों ओर छाया है और वह पाप का दण्ड अवश्य देता है - जिसके यह भावना अनुभव में आने लगेगी, वह पाप न कर सकेगा । जिस चोर के चारों ओर सहस्र पुलिस घेरा डाले खड़ी हो और हर तरफ से उस पर आँखें गड़ी हुई हों, वह ऐसी दशा में भला किस प्रकार चोरी करने का साहस करेगा ?

परमात्मा की आकृति चराचरमय ब्रह्माण्ड में देखना ऐसी साधना है, जिसके द्वारा परमात्मा अनुभव करने की चेतना जागृत हो जाती है । यही विश्वमानव की पूजा है, इसे ही विराट् दर्शन कहते हैं । रामायण में भगवान राम ने अपने जन्म-काल में कौशल्या को विराट् रूप दिखाया, एक बार भोजन करते समय भी राम ने माता को विराट् रूप दिखलाया था । उत्तराकाण्ड में काकभुशुण्डि जी के सम्बन्ध में वर्णन है कि वे भगवान् के मुख में चले गये तो वहाँ सारे ब्रह्माण्ड को देखा । भगवान् कृष्ण ने भी इसी प्रकार कई बार विराट् रूप दिखाये । मिट्टी खाने के अपराध में मुँह खुलवाते समय यशोदा को विराट् रूप दिखाया, महाभारत के उद्योग पर्व में दुर्योधन ने भी ऐसा ही रूप देखा । अर्जुन को भगवान ने युद्ध के समय विराट्-रूप दिखाया, जिसका गीता के ११ वें अध्याय में सविस्तार वर्णन किया गया है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इस विराट् रूप को देखना हर किसी के लिए सम्भव है । अखिल विश्व ब्रह्माण्ड में परमात्मा की विशालकाय मूर्ति देखना और उसके अन्तर्गत उसके अंग-प्रत्यंगों के रूप में समस्त पदार्थों को देखने, प्रत्येक स्थान को ईश्वर से ओत-प्रोत देखने की भावना करने से भगवद् बुद्धि जाग्रत होती है और सर्वत्र प्रभु की सत्ता से व्याप्त होने का सुदृढ़ विश्वास होने से मनुष्य पाप से छूट जाता है । फिर उससे पाप कर्म नहीं बन सकते । निष्पाप होना इतना बड़ा लाभ है कि उसके फलस्वरूप सब प्रकार के दुःखों से छुटकारा मिल जाता है । अन्धकार के अभाव का नाम है - प्रकाश और दुःख के अभाव का नाम है-आनन्द । विराट् दर्शन के फलस्वरूप निष्पाप हुआ व्यक्ति सदा अक्षय आनन्द का उपभोग करता है ।

गायत्री महाशक्ति के सम्बन्ध में यही तथ्य लागू होता है । वस्तुतः गायत्री न तो कोई स्त्री शरीर धारी सत्ता है, न पुरुष रूप धारी, न तो कोई उसके हाथ-पाँव हैं, न मुख । वह विशुद्ध दिव्य चेतना है । भगवान की ऋतभरा प्राण शक्ति है । उसके साक्षात्कार दिव्य विभूतियों, दिव्य सफलताओं के रूप में होते हैं । कोई भौतिक स्वरूप देना ही हो तो दिव्य प्रकाश की संज्ञा दी जा सकती है ।·प्राणों का तेज पुञ्ज या चैतन्य स्फुलिंग सत्ता कह सकते हैं । किन्तु शास्त्रकारों ने देखा कि बिना किसी स्थूल माध्यम के श्रद्धा और प्रेम जैसे तत्व को विकसित करना और अन्तःकरण को उसके अभीष्ट लाभ प्रदान कराना सम्भव नहीं है इस कारण भगवती गायत्री की एकमुखी हंसारूढ़ प्रतिमा का प्रचलन हुआ । यह आद्य शंकराचार्य द्वारा प्रतिपादित तीन प्रतिमाओं में से सर्वप्रथम- सर्व प्रधान है । त्रिकाल संध्या में तीन आकृतियों में गायत्री ध्यानों का उल्लेख है । प्रातः ब्राह्मी, मध्याह्न वैष्णवी, सायंकाल शाम्भवी । उनकी संगति ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र के साथ मिलाई गई है और उन्हीं से मिलती-जुलती नारी आकृति में गायत्री को चित्रित किया गया है । प्रातः हंसारूढ़, मध्याह्न गरुड़ारूढ़ और सायं वृषाभारूढ़ हैं । यही वाहन ब्रह्मा, विष्णु, महेश के हैं । इस प्रतिमा के माध्यम से जन-श्रद्धा को विकसित करने का उद्देश्य तो पूरा हुआ ही आकृति, आयुध, वाहन आदि के माध्यम से उन रहस्यों का भी समावेश कर दिया गया जिनके आधार पर साधक महामहिमामयी शक्ति का साक्षात्कार सरलतापूर्वक कर सके । कहीं-कहीं पर गायत्री को पंचमुखी चित्रित किया जाता है । यह उस ब्राह्मी शक्ति के दर्शन को सर्वसुलभ बनाने के लिए एक तरह की प्रतीक पहेली है । इस पहेली को सुलझाता हुआ साधक माँ के दर्शन करता है । पंचमुखी गायत्री में जीवात्मा के पाँच शक्ति स्रोतों का समावेश है, उन्हीं का इन पाँच मुखों में समावेश है । अन्नमय कोश, प्राणमय कोश, मनोमय कोश, विज्ञानमय कोश और आनन्दमय कोश इन पाँच कोशों में समाई हुई दिव्य शक्ति पंचमुखी है । पाँच तत्व, पाँच प्राण, पाँच तन्मात्रायें, पाँच तत्त्व इन्हीं सबको मिलाकर हमारा प्राण शरीर बना है । यही है पंचमुखी गायत्री का सांकेतिक एवं अलंकारिक तत्व दर्शन । पाँच मुखी गायत्री का ध्यान करना हो तो प्राण शरीर में संव्याप्त सत्ता के विराट् रूप की दार्शनिक झाँकी साथ-साथ ही पाँच प्रज्ञा चक्षुओं से करनी चाहिए और इस पराशक्ति के प्रकटीकरण के लिए अभीष्ट तपश्चर्या की साधना का संकल्प करना चाहिए ।

गायत्री महामन्त्र भारतीय तत्वज्ञान एवं अध्यात्म विद्या का मूलभूत आधार है । चारों वेदों में उन्हीं २४ अक्षरों की व्याख्या हुई है । वट-वृक्ष की समस्त विशालता उसके नन्हे से बीज में जिस प्रकार सन्निहित रहती है, उसी प्रकार वेदों में जिस अविच्छिन्न ज्ञान-विज्ञान का विशद् वर्णन है, उसे बीज-रूप से गायत्री मन्त्र में पाया जा सकता है ।

भारतीय धर्म में प्रचलित उपासना-पद्धतियों में सर्वोत्तम गायत्री ही है । उसे अनादि माना गया है । देवता, ऋषि, मनीषी उसका अवलम्बन लेकर आत्मिक प्रगति के पथ पर आगे बढ़े हैं और इसी आधार पर उन्होंने समृद्धियाँ, सिद्धियाँ, एवं विभूतियाँ उपलब्ध की हैं । हमारा प्राचीन इतिहास बड़ा गौरवपूर्ण है । इस गौरव-गरिमा का श्रेय हमारे पूर्व पुरुषों द्वारा उपार्जित आत्म-शक्ति को ही है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कहना न होगा कि इस दिव्य उपार्जन में गायत्री महामन्त्र का ही सर्वोत्तम स्थान है ।

स्थूल प्रकृति की शक्तियों का वैज्ञानिकों ने बहुत कुछ पता लगा लिया है, तथापि जो खोज शेष है वह प्राप्त उपलब्धियों की तुलना में कहीं अधिक है, फिर तो निस्सन्देह इस दिशा में बहुत प्रयत्न हुआ है । जो सफलता मिली है, वह सराहनीय है । प्राचीनकाल के तत्वदर्शी विज्ञानवेत्ता भौतिक विज्ञान की शक्ति और उसके उपार्जन को कष्ट-साध्य प्रणाली से भली-भाँति परिचित थे, इसलिये वे उसे बाल क्रीड़ा जैसी उपहासास्पद एवं उपेक्षरणीय मानते थे । उनकी दृष्टि में सूक्ष्म जगत् और उसमें सन्निहित अद्भुत, अनुपम एवं दिव्य शक्तियों की महत्ता थी । इसलिए उन्होंने अपना सारा ध्यान उसी ओर लगाया था, श्रम भी उसी दिशा में किया था । फलस्वरूप पाया भी इतना अधिक था कि धरती पर स्वर्ग अवतरित करना, मनुष्य में देवत्व का दर्शन करना सम्भव हो सका था । आज के वैज्ञानिक जिस प्रकार भौतक शक्तियों का पता लगाकर उनका उपयोग यन्त्रों द्वारा कर रहे हैं, और अपनी सफलता से मानव जाति को लाभान्वित कर रहे हैं, उसी प्रकार प्राचीन काल के तत्वदर्शी वैज्ञानिकों ने, ऋषियों ने चेतन-जगत में समाविष्ट एक-से-एक महत्तर शक्तियों की जानकारी प्राप्त की थी और उनके उपयोग का लाभ मानव-जाति को दिया था । इस प्रकार की उनकी अगणित उपलब्धियों में गायत्री-शक्ति का मानव उपयोग के लिए अवतरण हो सकना, एक बहुत बड़ा वरदान है ।

जड़ जगत् में काम करने वाली विद्युत् गुरुत्वाकर्षण अणु-विकिरण, ब्रह्माण्ड व्यापी ईथर, उद्भव और विलय आदि अगणित शक्तियों का पता लगाया गया है । उसी प्रकार चेतन जगत् में व्याप्त शक्ति-पुंजों में से जितना कुछ ढूंढा जा सका है उसका महत्त्व, उपयोग एवं परिणाम इतना अधिक है कि यदि उसमें से कोई थोड़ा सा भी उपयोग कर सके तो अपने व्यक्तित्व को सुनिश्चित करते हुए महामानव, अतिमानव, नरदेव एवं नर-नारायण बन सकता है ।

अणु-समूह की गतिशीलता से उस भौतिक जगत् का सारा क्रियाकलाप चलता है । उसी प्रकार सूक्ष्म जगत् के महदाकाश में चेतना की एक अविच्छिन्न धारा बहती है । उसी के फलस्वरूप जीवन के जितने भी स्वरूप विकसित एवं अविकसित जीवों में पाये जाते हैं वे उस दिव्य चेतना की गतिशीलता ही प्रदर्शन करते हैं । इस अचिन्त्य, अगोचर, अनुपम, विश्व ब्रह्माण्ड में लहराती हुई चेतना का नाम 'ब्रह्म' है । ब्रह्म इस समस्त विश्व ब्रह्माण्ड में व्याप्त है । कोई कण उसकी उपस्थित से रहित नहीं । भौतिक जगत् की गतिविधियों की प्रेरणा इस ब्रह्म से ही मिलती है । आइन्स्टीन प्रकृति चोटी के गणमान्य वैज्ञानिकों ने निस्संकोच भाव से यह स्वीकार किया है कि प्रकृति को सक्रिय रखने वाली अणुगतिशीलता वस्तुतः किसी अज्ञात चेतनशक्ति के नियन्त्रण में काम करती है और उसी की शक्ति का अनुदान लेकर यह निर्जीव संसार सजीव जैसी चेष्टा कर रहा है । आज के वैज्ञानिक भले ही उस ब्रह्म-चेतना का स्वरूप ठीक तरह समझने में समर्थ न हो पा रहे हों, पर वह दिन दूर नहीं, जब उसका अस्तित्व भावना क्षेत्र तक सीमित न रहकर स्थूल जगत् में भी प्रत्यक्ष अनुभव किया जाने लगेगा । भारतीय तत्वदर्शियों ने इस ब्रह्म-चेतना की सत्ता चिर अतीत में ही जान ली थी और उस शक्ति के मानव जीवन में उपयोग करने की प्रक्रिया का एक व्यवस्थित विधान बनाकर मानव प्राणी के नगण्य अस्तित्व को इतनी महत्तम स्थिति में परिणित किया था, जिससे स्वयं तक ब्रह्मभूत हो सकें । इस विज्ञान का नाम 'अध्यात्म' रखा गया ।

नगण्य दृष्टिगोचर होने वाली अणु आत्मा जिस प्रक्रिया का अवलम्बन करने से विभु बन सके, नर से नारायण के रूप में विकसित हो सके, परम आत्मा-परमात्मा बन सके, उस विद्या का नाम अध्यात्म अथवा ब्रह्म-विद्या रखा गया । ब्रह्म अपने आप में दृष्टा मात्र है । वह ऐसा है तो सही पर अपनी महत्ता एवं गरिमा के अनुरूप उत्पादन एवं व्यवस्था की प्रक्रिया का भी निर्धारण करता है । उसकी सक्रियता-शक्ति यद्यपि उसी का अंग है तो भी उसकी क्रिया प्रणाली की भिन्नता देखते हुए उसे ब्रह्म की पूरक-सामर्थ्य भी कहा जा सकता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पुराणों में गायत्री महाशक्ति का निरूपण ब्रह्माजी की पत्नी के रूप में हुआ । अर्थात् ब्रह्म-पत्नी, अर्धांगिनी अर्थात् क्षमता । पौराणिक उपाख्यान के अनुसार अलंकार यह है कि ब्रह्माजी की दो पत्नियाँ थीं, एक गायत्री, दूसरी सावित्री । गायत्री अर्थात् चेतन जगत् में काम करने वाली शक्ति । सावित्री अर्थात् भौतिक जगत् को संचालित करने वाली शक्ति । भौतिक विज्ञान सावित्री उपासना का विधान प्रस्तुत प्रस्तुत करता है । विभिन्न प्रकार के वैज्ञानिक आविष्कार एवं उपकरण सावित्री शक्ति की अनुकम्पा के ही प्रतीक हैं । गायत्री वह शक्ति है जो प्राणियों के भीतर विभिन्न प्रकार की प्रतिभाओं, विशेषताओं और महत्ताओं के रूप में परिलक्षित होती है । जो इस शक्ति के उपयोग का विधान-विज्ञान ठीक तरह जानता है यह उससे वैसा ही लाभ भी उठाता है जैसा कि भौतिक जगत् के वैज्ञानिक अपनी प्रयोगशालाओं, मशीनों तथा कारखानों के माध्यम से उपार्जित करते हैं ।

सामान्य स्थिति का नरपशु व्यक्तित्व की दृष्टि से विकसित होकर मानव, महा-मानव, अति-मानव, बनता है तो उसे अनन्त चैतन्य सागर में कल्लोल करने वाली इस ब्राह्मी शक्ति का ही आश्रय लेना पड़ेगा । आकाशवाणी के विभिन्न स्टेशनों से विभिन्न स्तरों पर विभिन्न अभिभाषण प्रसारित होते रहते हैं । हमारा रेडियो यन्त्र यदि निष्क्रिय पड़ा हो तो उसमें कोई ध्वनि सुनाई न देगी, पर यदि उसमें बिजली चालू कर दी जाय और सुई निर्धारित मीटर पर लगा दी जाय तो जिस भी स्टेशन का प्रसारण मन्द या तीव्र ध्वनि में सुनना हो सुना जा सकेगा । ठीक इसी प्रकार ब्राह्मी महाशक्ति- गायत्री सर्वव्यापक होते हुए भी असम्बद्ध लोगों का कोई विशेष हित साधन नहीं कर पाती, पर जो उसके साथ अन्तःचेतना को जोड़ देते हैं वे उस धारा का अवतरण अपने में होता हुआ देखते हैं और उसका लाभ उठाते हैं । गायत्री उपासना की शास्त्रोक्त पद्धति एक ऐसी ही वैज्ञानिक प्रणाली है जो जीव को ब्राह्मी सत्ता के साथ जोड़कर वैसा ही लाभ उठाने का अवसर प्रस्तुत करती है जैसा कि खाली तालाब को तालाब के साथ नाली द्वारा जोड़ दिया जाय तो कुछ ही देर में जल से भर जाने का लाभ ले लेता है ।

यों साधारण उपासना क्रम में गायत्री को एक देवी के रूप में चित्रित, अंकित किया गया है । त्रिकाल सन्ध्या में ब्राह्मी, वैष्णवी शाम्भवी आकार-प्रकार में उसका ध्यान भजन किया जाता है । माता के रूप में उसकी भावना करते हैं और नारी आकृति की प्रतिमा में उसका पूजन-वन्दन सम्पन्न करते हैं । पर यह तो ध्यान की एकाग्रता और भक्ति भावना के जागरण का एक तरीका मात्र है । उपासना के लिये मानवीय मनोभूमि की रचना के अनुरूप शब्द रूप एवं भावों का निर्धारण करना पड़ता है । विद्युत् महाशक्ति के विश्वव्यापी सूक्ष्म रूप को वैज्ञानिक जानते हैं । साधारण लोग तो उसे बत्ती-पंखा, आदि के रूप में कार्य करते हुए ही देखते हैं । उनकी दृष्टि में ये उपकरण ही विद्युत् महाशक्ति के प्रत्यक्ष रूप हैं । ठीक इसी प्रकार उपासना प्रकरण में गायत्री की माता के रूप में पूजा-अर्चना की जाती है और उसके साथ वैसा ही सम्बन्ध जोड़ा जाता है जैसा कि सांसारिक माँ-बेटे का होता है । यह प्रक्रिया आवश्यक है, क्योंकि निराकार तत्व के साथ पंचभौतिक मन अपना सम्बन्ध जोड़ ही नहीं सकता । निराकार का ध्यान सम्भव नहीं, और न उसके साथ किसी प्रकार आत्मीयता की भावना उठ सकती है । इसलिये ब्राह्मी शक्ति के निराकार होते हुए भी उपासना के लिये उसे साकार रूप में ही प्रतिष्ठापित करना पड़ता है । यदि ऐसा न किया जाय तो ध्यान जैसी उपासना की प्रमुख प्रक्रिया का द्वार ही बन्द हो जायगा । इसलिये गायत्री माता के साकार स्वरूप की उपयोगिता आवश्यकता मानते हुये भी हमें जानना होगा कि ब्राह्मी महाशक्ति वस्तुतः एक विश्वव्यापी चेतना तत्त्व है जो प्राणियों के प्राण के रूप में देखा जा सकता है । गायत्री उपासना द्वारा हम अपने सामान्य प्राण को महाप्राण में परिणित-विकसित करते हैं ।

साधारणतया मानव शरीर में रहने वाला अकिंचन-सा प्राण स्फुल्लिंग इतना ही प्रयोजन सिद्ध

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

करता है कि प्राणी अपनी शारीरिक एवं मस्तिष्क की गतिविधियाँ जारी रख सके जो जीवन धारण किये रहने के लिये आवश्यक हैं । प्राण के अन्तराल में से शक्ति कम्पन क्षण-क्षण पर उद्‌भूत होते हैं वे कोई अन्य उपयोग न होने के कारण यों ही शून्य में जाते और समाप्त होते रहते हैं । इसका कोई विशेष लाभ प्राणधारी को मिल नहीं पाता । पर यदि कोई ऐसा उपाय निकल आवे जिससे इस प्राणतत्व के अति कम्पनों को सुरक्षित रखा जा सके तो यह कोष एक वृहद् भण्डागार के रूप में संचय होकर प्राणी को सच्चे अर्थों में शक्तिवान् बना सकता है ।

गायत्री शब्द का नामकरण उसके क्रियाकलाप एवं स्वभाव को ध्यान में रखकर ही किया गया है । इस महाशक्ति के साथ सम्बन्ध होने की प्रथम प्रतिक्रिया यह होती है कि साधक का प्राण प्रवाह शून्य में बिखरना रुक जाता है और उसका ऐसा संरक्षण होता है जिससे कोई महत्त्वपूर्ण प्रयोजन सिद्ध किया जा सके । वर्षा का जल नदी-नालों में बहता हुआ यों ही अस्त-व्यस्त हो जाता है, पर यदि उसे बाँध लगाकर रोका जा सकेगा तो सिंचाई, विद्युत् उत्पादन आदि कई कार्य सिद्ध हो सकते हैं । गायत्री उपासना प्राण शक्ति के क्षरण को रोकती है, उसकी रक्षा करती है और इस संरक्षण से लाभान्वित उपासक दिन-दिन प्रगति पथ पर अग्रसर होता है । इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए उस महती शक्ति का नाम गुण के अनुरूप-तत्वदर्शी मनीषियों ने 'गायत्री' रखा । शास्त्रों में ऐसा ही उल्लेख मिलता है -

सा हैषा गायत्री गयांस्तत्रे । प्राथाः वै गयांस्तत् प्राणांस्तत्रे तद् यद् गायां स्तत्रे तस्माद् गायत्री नाम ।

-शतपथ

''प्राणों का त्राण करने वाली गायत्री है । उपासना करने वाले के प्राण को निर्मल एवं समर्थ बनाती है, इसलिये गायत्री कहते हैं ।''

गयाः प्राणा उच्यन्ते, गयान् प्राणात् त्रायते सा गायत्री । गायतं त्रायते इति वा गायत्री प्रोच्यते तस्मात् गायन्तं त्रायते यतः

-गायत्री सन्ध्या

''जो प्राणों की रक्षा करती है, जिसकी उपासना से जीवन प्राणवान बनता है, जो उपासक का परित्राण करती है, त्रिविधि तापों से बचाती है, वह गायत्री है ।''

प्राणियों में जितनी तेजस्विता दृष्टिगोचर हो, समझना चाहिये कि उसमें उतना ही प्राणांश अधिक है । निर्जीव, निस्तेज और निष्क्रिय लोगों में इस तत्व की न्यूनता होती है और तेजस्वी मनस्वियों में, पुरुषार्थी साहसियों में अधिकता । फिर भी यह तत्व न्यूनाधिक मात्रा में रहता सभी के अन्दर है । परमात्मा की इस पवित्र शक्ति का दर्शन हम प्रत्येक प्राणी में कर सकते हैं । इसलिये गायत्री को जगत्मय और जगत् को गायत्रीमय कहा गया है ।

परमात्मास्तु या लोके ब्रह्म शक्तिर्विराजते ।
सूक्ष्मा च सात्विका चैव गायत्रीत्वाभिधीयते ।

-स्कन्द

''सब लोगों में विद्यमान, जो सर्वव्यापक परमात्मा शक्ति है, वह अत्यन्त सूक्ष्म सत्प्रकृति ही चेतन शक्ति गायत्री है ।''

अपना परिचय देते हुए इस महाशक्ति ने शास्त्रों के विभिन्न कथा-प्रसंगों में इस रहस्य का रहस्योद्‌घाटन किया है, कि मनुष्य के अन्दर जो सचेतन विशेषता होगी उसके मूल में ब्राह्मी-शक्ति का ही वैभव रहा होगा । धन सम्पत्ति तो लोग उचित-अनुचित कई तरीकों से कमा लेते हैं, समृद्ध और श्रीमान तो भाग्यवश मूर्ख भी बन जाते हैं, पर यदि किसी का व्यक्तित्व विकसित हो रहा होगा, तो उसके अन्तराल में यही ब्राह्मी-चेतना-गायत्री-काम कर रही होगी । जिस सामर्थ्य के बल पर लोग विभिन्न प्रकार की सफलताएँ उपलब्ध करते हैं, उस शक्ति को भौतिक नहीं, आत्मिक ही समझना चाहिये । आत्म-बल के अभाव में समृद्धि का उपार्जन तो दूर, व्यक्ति उसकी रखवाली भी नहीं कर सकता । इस रहस्य का उद्‌घाटन उसी शक्ति के श्रीमुख से इस प्रकार हुआ है ।

अहं बुद्धि रहं श्रीश्च धृतिः कीर्तिः स्मृतिस्तथा ।
श्रद्धा मेधा दया लज्जा क्षुधा तृष्णा तथा क्षमा ।
कान्तिः शान्तिः पिपासा च निद्रातंद्रा जराजरा ।
विद्याऽविद्या स्पृहावाञ्छा शक्तिश्चाशक्ति देव च ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वसा मज्जा च त्वज चाह दृष्टि र्वांगनृत ऋता ।
परमध्या च पश्यन्ती नाड्योऽहं विविधाश्चया : ।
किं नाहं पश्य संसारे मद्वियुक्तं क्रियस्ति हि ।
सर्वनेवाहमित्येवं निश्चयं विद्धि पद्मज ।।

-देवी भागवत

"मैं क्या नहीं हूँ ? इस संसार में ये मेरे सिवाय और कुछ नहीं है । बुद्धि, धृति, कीर्ति, स्मृति, श्रद्धा, मेधा, लज्जा, क्षुधा, तृष्णा, क्षमा, कान्ति, शान्ति, पिपासा, निद्रा, तन्द्रा, जरा, अजरा, विद्या, अविद्या, स्पृहा, वाञ्छा, शक्ति, अशक्ति, वसा, मज्जा, त्वचा, दृष्टि, असत् और सत्, वाणी परा मध्यमा पश्यन्ती नाड़ी संस्थान आदि सब कुछ मैं ही हूँ ।"

मयासो अन्नमत्ति यो विपस्यति यः प्राणिति य ईं श्रृणोत्युक्तम् । ऊमन्त वो मां त उप क्षियन्ति श्रुधि श्रुत श्रद्धि वं ते वदामि ।

- महार्णव०

"यह विश्व मुझसे ही जीवित है । मेरे द्वारा ही उसे अन्न मिलता है । मेरी शक्ति से ही वह बोलता और सुनता है । जो मेरी उपेक्षा करता है, वह नष्ट हो जाता है । हे श्रद्धावान् ! सुनो, यह रहस्य में तुम्हारे कल्याणार्थ ही कहती हूँ ।"

प्रकृति ने जड़ पदार्थ बनाये, पदार्थों की रचना उसने की, पर उन पदार्थों को व्यस्थित करने और उपयोग में लाने की क्षमता चेतना में ही रहती है । चेतन की अनुपस्थिति अथवा न्यूनता में सुख-साधनों के प्रचुर परिमाण में उपस्थित रहने पर भी उनका कोई उपयोग नहीं । सोना जमीन में गड़ा है, पर किसी सजीव प्राणी को उसकी जानकारी न हो अथवा निकालने की क्रिया करने वाला कोई न हो, तो वह सोना जहाँ का तहाँ पड़ा रहेगा, उससे किसी का कुछ भी लाभ न होगा । उसी प्रकार शरीर जैसा बहुमूल्य यन्त्र जो मस्तिष्क बहुत कुछ सोचता, हाथ- पैरों से बहुत कुछ करता एवं इन्द्रियों से बहुत कुछ रसास्वादन करता है, चेतन-तत्त्व निकल जाने पर निकम्मा बन जाता है । इसलिए सांसारिक सुख-साधनों की उपयोगिता होने पर भी महत्ता चेतन तत्त्व की ही है । समस्त सुख-साधनों का वास्तविक आधार और मूल स्रोत वही है ।

इस चेतन के आरम्भिक स्तर से लेकर ऊँचे-ऊँचे अनेक स्तर हैं । सामान्य समझदारी में जितनी चेतना है, संसार की स्वाभाविक व्यवस्था के अनुसार जीवधारियों को मिलती रहती है, पर ऊँचे स्तरों की क्षमता प्राप्त करने के लिए उसे कुछ विशेष प्रयत्न करने होते हैं । उन विशेष प्रयत्नों का नाम ही साधना एवं उपासना है । इस पुण्य प्रक्रिया द्वारा पुरुषार्थी साधक अपनी आन्तरिक स्थिति इतनी विकसित कर लेते हैं कि इस निखिल महदाकाश में संव्याप्त उस ब्राह्मी महाशक्ति- गायत्री- से अपना सम्बन्ध स्थापित कर सकें । यह सम्बन्ध जितना स्पष्ट और जितना प्रौढ़ होता है, उतनी ही उच्चस्तरीय विभूतियाँ मनन-क्षेत्र में अवतरित होती हैं । यह अवतरण ही मनुष्य को महापुरुष, सिद्ध-पुरुष एवं अतिमानव के रूप में विकसित करता है ।

लौकिक प्रयत्नों से मस्तिष्कीय मनोबल को बढ़ाया जा सकता है । सांसारिक साधनों की सहायता से अध्ययन, अभ्यास, प्रशिक्षण एवं परिश्रम से इतना ही हो सकता है कि गुण-कर्म-स्वभाव की सुव्यवस्था बन जाय । इतने क्षेत्र में थोड़ी सी उन्नति हो जाय । यह उन्नति आत्मिक दृष्टि से नगण्य ही मानी जाती है । कितने ही चतुर, सुशिक्षित, शिष्ट और व्यवस्थित व्यक्ति संसार में पाये जाते हैं । उन्हें सज्जनोचित आदर, सहयोग और सन्तोष तो मिलता है, पर इससे आगे की विभूतियाँ उपलब्ध नहीं होतीं । जिन दिव्य शक्तियों के बलबूते मनुष्य महान् आध्यात्मिक लक्ष्यों को प्राप्त कर सकता है, वे उसे तभी मिलते हैं, जब उच्चस्तरीय महदाकाश में संव्याप्त व दिव्य चेतना ब्राह्मी शक्ति-गायत्री- के साथ अपना सम्बन्ध जोड़े ।

जितने हॉर्स पावर की मोटर होती है, बिजलीघर में उत्पन्न होने वाले लाखों किलोवाट विद्युत भंडार में से उस मोटर को उतनी ही शक्ति मिलती है । मोटर की पात्रता पर ही उसमें विद्युत्-धारा कितनी प्रवेश करे, यह निर्भर रहता है । साधक ने साधना द्वारा अपना आन्तरिक स्तर कितना परिष्कृत किया है, इसी आधार पर वह ब्राह्मी-शक्ति अवतरित होती है । मनोभूमि में अधिकाधिक पात्रता उत्पन्न करने के प्रयोजन से ही

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उपासना की जाती है । महाशक्ति ने अपनी जिन विभूतियों का वर्णन उपर्युक्त श्लोकों में आत्म-परिचय देते हुए किया है, वे सभी उसमें प्रचुर परिमाण में विद्यमान हैं । आवश्यकता केवल उतनी भर रह जाती है कि व्यक्ति अपने में पात्रता उत्पन्न करे और उन लाभों से लाभान्वित हो, उन विभूतियों को धारण करके दैवी-जीवन जी सकने की स्थिति तक पहुँचे ।

जिस साधक पर उसकी पात्रता के अनुरूप उस महाशक्ति का अनुग्रह अवतरित होता है वह सर्वतोभावेन धन्य हो जाता है । माता गायत्री का प्यार अनुग्रह जिसे मिला, उसे इस संसार की कोई वस्तु अप्राप्त नहीं रह जाती । उसके भीतर से ही दिव्य प्रेरणाएँ उठनी आरम्भ हो जाती हैं और उनके प्रकाश में, जो सर्वसाधारण के लिये अप्रकट एवं अज्ञात है, वह उसके लिये हस्तामलकवत् स्पष्ट हो जाता है । जो दूसरों के लिये लालसा एवं कामना का क्षेत्र है वह उसकी मुट्ठी में होता है । उसे वह ऋतम्भरा प्रज्ञा मिलती है जिसके प्रकाश में अदृश्य को देख सकना उसकी सामर्थ्य के अन्तर्गत होता है । ऐसा व्यक्ति ऋषि बन जाता है । उसे ब्रह्म शक्ति गायत्री का सर्वोपरि उपहार ब्रह्म पद प्राप्त होता है । ब्रह्म विशेषताओं और विभूतियों से विभूषित वह ब्रह्म परायण मानव-प्राणी कहलाते हुए भी वस्तुतः देवत्व की भूमिका में ही विचरण करता है ।

शक्ति तन्त्र में उस महाशक्ति ने अपने इसी विशेषता की चर्चा की है । वह जिसका पथ-प्रदर्शन करती है, जिसे प्यार करती है उसे अपना सर्वोत्तम उपहार प्रदान करने में संकोच नहीं करती -

अहमेक स्वयमिदं वदामि जुष्टं देवेभिरुत मानुषेभियं कामये तं तमुग्रं कृणोमि तं ब्रह्माणं तमर्षिं तं सुमेधा ।

-शक्ति तंत्र

"तत्वज्ञान की उपदेशक मैं ही हूँ । मैं जिसे प्यार करती हूँ उसे समुन्नत करती हूँ, उसे सुबुद्धि देती हूँ; ऋषि बनाती हूँ और ब्रह्मपद प्रदान करती हूँ ।"

दैवी शक्तियों का स्वरूप और क्रियाकलाप शास्त्रों में विस्तारपूर्वक वर्णित हुआ है । उन शक्तियों को धारण करने वाले दृश्यमान मनुष्य भी हो सकते हैं और अदृश्यमान शक्ति-केन्द्र भी । सूक्ष्म जगत् में ऐसे शक्ति-केन्द्र विद्यमान हैं, जो विशेष-विशेष प्रकार की सामर्थ्य अपने अन्दर धारण किये हुए हैं । उन केन्द्रों में से जो जिस स्तर का सम्बन्ध बना लेता है, वह उतना ही शक्तिमान बन जाता है । देववाद और देवस्वरूप, देव शक्ति और देवाराधन का एक स्वरूप यह है ।

दूसरे सर्वगुण सम्पन्न मानव भी देवता कहलाते हैं । इन दोनों प्रकार के देवताओं के नाम अलग-अलग प्रकार के हैं । सूक्ष्म शक्ति-केन्द्रों को रुद्र, आदित्य, वसु, विश्वदेवा, त्वष्टा, पूषा, इन्द्र, मारुत, अर्यमा, अग्नि कहा जाता है और दृष्टमान देव-मानवों को ऋषि, मनीषी, दृष्टा, जीवन मुक्त अर्हत-अवतारो आदि नामों से पुकारते हैं । दोनों ही वर्ग के इन देवताओं की महत्ता का आधार वह ब्राह्मी-शक्ति-गायत्री ही है । उसका जितना अंश जिसे मिला, वह उतना ही शक्तिशाली हो गया । ऋग्वेद में इस तथ्य को इस प्रकार प्रकट किया गया है-

अहं रुद्रेभिर्वसुभिश्चराम्यहमादित्यै रुत विश्व देवैः । अहं मित्रा वरुणोभा विभर्म्य हविद्राग्नी अहिमाश्विनोभा ।

-ऋग्वेद

"मैं ही रुद्र, वसु, आदित्य और विश्वेदेवाओं में विचरण करती हूँ । मैं ही मित्र, वरुण, अग्नि और अश्विनीकुमारों का रूप धारण करती हूँ ।"

इसी गायत्री तत्व का उपनिषदों में अदिति के नाम से उल्लेख हुआ है । सम्पूर्ण प्राणी इस अदिति के प्रभाव से ही अपनी हलचल जारी रखे रहने में समर्थ होते हैं । इतना ही नहीं, वे देव, गन्धर्व, पितर आदि का दिव्य स्तर प्राप्त करते हैं । सच्चा मनुष्य भी इसी शक्ति की सहायता से बनता है और दानवी क्षमता भी उसी का दुरुपयोग करने वालों को मिलती है -

आदित्य देवा गन्धर्वा मनुष्याः पितरो सुराः तेषां सर्वभूतानां माता मेदिनी माता मही सावित्री गायत्री जगत्युर्वी पृथ्वी बहुला विद्याभूता ।

-नारायणोपनिषद

गन्धर्व, मनुष्य, पितर, असुर इनका मूल कारण अदिति अविनाशी तत्व है । वह अदिति सब मूलों की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

माता, मेदिनी और मातामही है । उसी विशाल गायत्री के गर्भ में विश्व के सम्पूर्ण प्राणी निवास करते हैं ।

ब्रह्मा, विष्णु और महेश देव-जगत् के तीन प्रधान आधार हैं । उत्पत्ति, पालन और संहार इन तीनों के द्वारा ही होता है । तदनुसार यह सृष्टि-क्रम अपनी निर्धारित धुरी पर घूमता रहता है । इन त्रिदेवों में भी जो शक्ति काम कर रही है, वह तत्वतः गायत्री ही है । कहा गया है-

गायत्र्यैव परोविष्णु, गायत्र्यैव परः शिवः ।
गायत्र्यैव परोब्रह्मा, गायत्र्यैव त्रयी ततः ।।

-गरुण पुराण

"गायत्री में ब्रह्मा-विष्णु-महेश की तीनों शक्तियाँ समाई हुई हैं । गायत्री में तीनों वेद सन्निहित हैं ।

जिस प्रकार चन्द्रमा का प्रकाश सूर्य की किरणें उस पर पड़ने से होता है, उसी प्रकार इन तीनों देवताओं की क्षमता एवं क्रियाशीलता गायत्री महाशक्ति के द्वारा ही सुसंचालित होती है । वे अपने इसी शक्ति-केन्द्र से अपना कर्तव्य-पालन करने योग्य सामर्थ्य ग्रहण करते हैं -

सर्ववेदसारं भूता गायत्र्यास्तु समर्चना ।
ब्रह्मादयोऽपि संध्यायां तां ध्यायन्ति जपन्ति च ।

-देवी भागवत १६ ।१६ ।१५

"गायत्री-अर्चना वेदों का सारतत्व है । ब्रह्मा-विष्णु-महेश सभी प्रातःसायं गायत्री का जाप करते हैं ।'

ब्रह्माजी द्वारा चारों वेद बनाये गये । उनमें ज्ञान-विज्ञान के समस्त सूत्र संकेत समाविष्ट किये गये । इस महान् रचना की प्रेरणा उन्होंने गायत्री से ही ली । सृष्टि के आदि में आकाशवाणी के निर्देशानुसार कमल-पुष्प पर बैठकर उन्होंने शत वर्ष पर्यन्त गायत्री-उपासना की और उसी के फलस्वरूप वे वेद-ज्ञान निष्णात बने । वेद की रचना का मूल आधार गायत्री ही है और वही विधाता की कृतियों का उद्गम प्रेरक भी है । गायत्री से बढ़कर इस संसार में और कुछ है भी तो नहीं ।

वेदों में ज्ञान और विज्ञान का असीम भण्डाङ्गार भरा पड़ा है । उन मन्त्रों के आधार पर जीवन को सुख-शान्तिमय समर्थ और समृद्ध बनाने की शिक्षा प्राप्त की जा सकती है और भौतिक जगत् में मिल सकने वाली समस्त सिद्धियों, सफलताओं को उपलब्ध किया जा सकता है । वेद-ज्ञान के माध्यम से ही ऋषियों ने अपना और इस महान् देश का वर्चस्व बढ़ाया था । कहना न होगा कि वह वेद-ज्ञान और कुछ नहीं गायत्री महामन्त्र के २४ अक्षरों की व्याख्या मात्र ही है जिसने गायत्री को समझ लिया और जिसे गायत्री प्राप्त हो गई, उसके लिये और कुछ प्राप्त करना शेष नहीं रहा ।

गायत्री महाशक्ति और उसकी सुविस्तृत 'माया'

गायत्री माता केवल पूजा, उपासना का जप करने का छोटा सा मन्त्र मात्र नहीं है । वह इस विश्व ब्रह्माण्ड की एक सर्वोपरि शक्ति है । उस शक्ति के साथ उपासना के माध्यम से हम अपना सम्पर्क बना लेते हैं तो सम्पर्कजन्य लाभ उठाने का सुअवसर प्राप्त करते हैं । उपासना में जितना समय लगता है, उसकी तुलना में कहीं अधिक लाभ हम अपने भीतर उस सम्पर्क की ऊष्मा एवं शक्ति के बाहुल्य रूप में अनुभव करते हैं । बुद्धिमानों के सम्पर्क से ज्ञान और धनवानों के सम्पर्क से धन प्राप्त करने के सुअवसर सहज ही मिलते रहते हैं, फिर सर्वशक्तियों की उद्गमभूत गायत्री माता के सम्पर्क से हमें कुछ भी लाभ न मिले, ऐसा नहीं हो सकता ।

किन्तु यही न मान बैठना चाहिये कि गायत्री का उपयोग उपासना में ही है या वह इतने भर काम के लिये ही अवतरित हुई है । वस्तुतः इस महाशक्ति के प्रभाव एवं प्रकाश में सारा ब्रह्माण्ड गतिशील हो रहा है । प्राणियों की प्राण-शक्ति जो बीज रूप में सुषुप्तावस्था में पड़ी रहती है, उसका जागरण, पोषण और अभिवर्धन इसी महत्त्व के प्रभाव से होता है । जड़ जगत् में जो अणु हलचल दृष्टिगोचर होती है और प्रत्येक पदार्थ गतिशील दिखाई देता है, उसके मूल में भी वही महाशक्ति काम कर रही है । आकर्षण-विकर्षण के ऋण धन

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

द्वन्द्वात्मक जितने भी विधान एवं संचरण प्रकृति के अन्तराल में काम कर रहे हैं, उनके पीछे एक अति प्रचण्ड शक्ति काम कर रही है । उसकी इच्छा एवं प्रेरणा इस जगत् को वर्तमान रूप में प्रतिष्ठित किये हुए है । उसी सत्ता केन्द्र का नाम गायत्री है ।

यह जगत् गायत्रीमय है । यों वह जड़ रूप में पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाश पञ्च तत्वों से बना हुआ है । चेतन रूप से सत, रज, तम तीन गुणों से विनिर्मित प्रतीत होता है पर इस तत्व और गुण प्रकरण के भीतर एक ऐसी शक्ति काम कर रही है जिसका वर्णन अनिर्वचनीय है । उसकी गति सर्वत्र है । निम्न से निम्न और उच्च से उच्च स्तर पर हो रही गतिविधियों के पीछे जिसका सर्वतोमुखी अस्तित्त्व एवं प्रभाव दीख पड़ता है, उसका ठीक से विवेचन और अनुभव कर सकना मनुष्य की स्वल्प बुद्धि मर्यादा के अन्तर्गत सम्भव भी नहीं है ।

फिर भी जिज्ञासा तो मनुष्य का स्वभाव है । वह जानना भी चाहता है कि वह शक्ति आखिर है क्या जिसके प्रभाव से यह समस्त जगत निर्जीव से सजीव बना है, विभिन्न स्तर की गतिविधियों का अद्‌भुत अम्बार दृष्टिगोचर होता है । इस जिज्ञासा का समाधान देवी भागवत के माध्यम से उस महामहिमामयी शक्ति ने स्वयं ही दिया है ।

पदार्थ विज्ञानवेत्ता उसे पावर और एनर्जी नाम से पुकारते हैं । अध्यात्म क्षेत्र में उसे परा और अपरा प्रकृति कहकर सम्बोधित किया जाता है । चेतना और भावना क्षेत्र में इस शक्ति के प्रभाव की जो मानवीय प्रतिक्रिया होती है उसे 'माया' कहते हैं । पेट ठीक न होने पर खाया हुआ उत्तम भोजन भी जिस प्रकार विकार उत्पन्न करता है, उसी प्रकार अवास्तविक एवं अज्ञानग्रस्त दृष्टिकोण वाले व्यक्ति उस आलोक की प्रतिक्रिया उल्टी ग्रहण करते हैं और वासना तृष्णा के माध्यम से उसका उपयोग करने के लिये लालायित हो उठते हैं । उल्टा अनुभव, उल्टे काम करने में प्रेरणा देता है, फलस्वरूप दुःख-दारिद्रय एवं शोक-संताप से भरा जीवन-यापन करने के लिये विवश होना पड़ता है ।

इस माया से छुटकारा पाने के लिये अध्यात्म शास्त्र में बहुत विस्तार से वर्णन है । इस वर्णन में बार-बार माया शब्द का प्रयोग होता है । मायाबद्ध अर्थात् अज्ञानग्रस्त । माया बन्धनों से छूटना अर्थात् दृष्टिकोण परिष्कृत करके तत्व का यथार्थ दर्शन करना और वस्तुस्थिति के अनुरूप अपनी विचारणा एवं कार्य पद्धति को सही करना । माया के बंधनों में जीव नाना प्रकार के दुःख पाता है और उससे छूटने पर स्वर्ग एवं मुक्ति का आनन्द अनुभव करता हैं । यह माया बन्धन अपने दृष्टिकोण की निकृष्ट स्थिति का और माया मुक्ति परिष्कृत दृष्टिकोण का बोधक है । वस्तुतः भगवान की माया तो परा-अपरा प्रकृति के रूप में समस्त ब्रह्माण्डों में अनादि काल से व्याप्त है । उससे छुटकारे का प्रश्न ही नहीं । हम सबको माया की शरण में रहना पड़ता है । माता की गोद में किसी को कष्ट भी क्या हो सकता है, उसमें अहर्निश सुख ही सुख है । माता गायत्री की शरण में, उसकी अंचल छाया में हम केवल सुख-शान्ति ही उपलब्ध कर सकते हैं ।

उपर्युक्त तथ्य का भगवती ने स्वयं भी यथा-अवसर रहस्योद्‌घाटन किया है । उनमें से कुछ उद्धरण नीचे देखिये -

रूपं मदीयं ब्रह्मैतत्सर्व कारण कारणम् ।
मायाधिष्ठान भूतं तु सार्वसाक्षि निराममम् ।।
सर्ववेदा यत्पदमामनन्ति तपांसि सर्वाणि च यद्धवन्ति ।
यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्य चरन्ति तत्ते पद संगहेण ब्रबीमि ।।

सम्पूर्ण कारणों का कारण भूत ब्रह्म मेरा ही स्वरूप है, वह माया का अधिष्ठान भूत सम्पूर्ण का साक्षी और निरामय है । सम्पूर्ण वेद जिस पद का कथन किया करते हैं, समस्त तपस्याओं का ध्येय एक वह ही है, जिसे उत्कट अभिलाषा से प्राप्त करने के लिये योगी-ऋषिगण एवं मुनि ब्रह्म (वेद) की कठिन चर्या ब्रह्मचर्य का पालन किया करते हैं, उस अभीप्सित पद को मैं संक्षेप से स्वयं बतलाती हूँ । इससे मेरे स्वरूप का स्पष्ट ज्ञान हो सकता है ।

युष्मानहं नर्त्तयामि काष्ठ पुत्तलिकोपमाम् ।
तां मां सर्वात्मिकां यूयं विस्मृत्य निजगर्वतः ।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अहंकारा वृतात्मानो मोहमाप्ता दुरन्तकम् ।
अनुग्रहं ततः कर्त्तु युष्मद्देश दनुत्तमम् ।।
निःसृत सहसा तेजो मदीयं यक्षमित्यपि ।
अतः परं सर्व भावैर्हित्वा गर्व तु देहजम् ।।
मामेव शरणं यात सच्चिदानन्द रूपिणीम् ।

मैं आप सब के हृदयान्तश्चारिणी होकर आप सबको काठ की पुतली के समान नचाती हूँ । अपने अहंकार से अभिभूत होकर सर्वात्मिका मुझे निज गर्व से भूल कर आप लोग दुर्दान्त को, मोह को प्राप्त होते हैं । उस समय आपके कार्यों की सिद्धि के लिये अनुग्रह करके आविर्भूत होकर तेजः स्वरूप में अवस्थित होती हूँ । इसलिये अब आप लोग सार्वभाव से देह के गर्व का त्याग कर सच्चिदानन्द रूपिणी मुझमें ही शरण लीजिये । आपका सर्वत्र शुभोदय होगा ।

मन्माया शक्ति संक्लप्तं जगत्सर्व चराचरम् ।
सापि मत्तः पृथङ्माया नास्त्येव परमार्थतः ।।
अहमेवाऽऽसं पूर्वतुनान्यत्किञ्चिन्न राधिणः ।
तदात्म रूपंचित् सम्वित् परब्रह्मैक नामकम् ।।
तस्य करचित्स्वतः सिद्धा शक्तिर्मायेति विश्रुता ।
पानकस्योष्णते नेम मुष्णांशोरिन दीधित : ।।
स्व शत्येश्च समायोगावहं बीजात्मतांगता ।

यह सम्पूर्ण चराचर जगत् मेरी माया शक्ति से ओत-प्रोत है । वास्तव में परमार्थ रूप से मुझसे पृथक् माया नाम की कोई भी वस्तु नहीं है । यह सब मेरा ही सर्वत्र निवास है । हे नागाधिप ! पहले मैं ही स्थित थी और कुछ भी नहीं था । मेरा आत्म-स्वरूप ही चित् सम्वित् और परब्रह्म नामक ही एक है । उसकी ही स्वतः सिद्धा शक्ति माया नाम से विख्यात है । जैसे अग्नि की उष्णता और सूर्यदेव की किरणों की अभिन्नता है, उसी प्रकार से शक्ति में शक्तिमान् के साथ अभेद रूप में रहती हूँ । अपनी स्वतः प्रकाश शक्ति के योग से ही मैं बीजात्मक हूँ ।

अत ऊर्ध्वं परं ब्रह्म मद्रूपं रूप वर्जितम् ।
निर्गुणं सगुणं चेति द्विधा मद्रूप मुच्यते ।।
निर्गुण मायया हीनं सगुण मायया युतम् ।
साहं सर्व जगत्सृष्ट्वा तदन्तः सम्प्रविश्य च ।।
प्रेरयाम्य निशं जीवं यथा कर्म यथाश्रुतम् ।
सृष्टि स्थिति तिरोधाने प्रेरयाम्यहमेवहि ।।

इससे ऊपर रूप से वर्जित मेरा स्वरूप ही पर-ब्रह्म है । वह मेरा स्वरूप निर्गुण और सगुण दो रूपों वाला कहा गया है । मेरा जो निर्गुण रूप होता है, वह माया से हीन है और सगुण रूप माया से युक्त होता है । अपनी सत्य संकल्प भावना से इस सम्पूर्ण जगत् का सृजन करके और उसमें अन्दर प्रवेश करके यथा कर्म और यथाश्रुत मैं अहर्निश जीवों को प्रेरणा दिया करती हूँ । जगत् के उत्पादन-स्थिति और तिरोधान के कर्म में ब्रह्मादिक को मैं ही प्रेरित किया करती हूँ ।

ओ३मित्येकाक्षरं ब्रह्म तदेवाहुश्च ह्रींमयम् ।
द्वे बीजे मम मन्जोस्तो मुख्यत्वेन सुरोत्तम ।।
भागद्वयवती यस्मान्सृजामि सकलं जगत् ।
तत्रैक भागः सम्प्रोक्तः सच्चिदानन्द नामकः ।।
माया प्रकृति संज्ञस्तु द्वितीयो भाग ईरितः ।
सा च माया पराशक्तिः शक्तिमत्यहमीश्वरी ।।

'ॐ' यह एकाक्षर नित्य ब्रह्म है । इसे ही ह्रीं मय कहा गया है । हे सुरोत्तम ! मुख्यतया ॐ और ह्रीं बीज मेरे ही मन्त्र हैं । इस सम्पूर्ण संसार को दो भागों वाली होकर मैं इससे निर्मित किया करती हूँ । एक भाग सच्चिदानन्द नाम वाला है और दूसरा भाग माया और प्रकृति वाला है । वही माया पराशक्ति शक्तिमती ईश्वर मैं ही हूँ ।

चन्द्रस्य चन्द्रिकेवेयं ममाभिन्न त्वमागता ।
साम्यावस्थात्मिका चैषा माया मम सुरोत्तम ।।
प्रलये सर्वजगतो मदभिन्नैव तिष्ठति ।
प्राण कर्म परीमाक वशतः पुनरेवहिम ।।
रूपं तदेव मध्यक्तं व्यक्ती भाव मुपैति च ।
अन्तर्मुखा तु यावस्था सा मायेत्यभिधीयते ।।
वहिर्मुखा तु या माया तमः शब्देन चोच्यते ।
बहिर्मुखात्तमो रूपाज्जायते सत्व सम्भवः ।।
रजोगुणस्त दैव स्यात्सर्गाहौ सुरसत्तम ।
गुणत्रयात्मकाः प्रोक्ता ब्रह्म विष्णु महेश्वरा : ।।
रजो गुणाधि को ब्रह्मा विष्णुः सत्वाधिको भवेत ।
तमो गुणाधिको रुद्र ! सर्व कारण रूप धृक् ।।
स्थूल देहो भवेद ब्रह्मां लिंग देहो हरिः स्मृत ।
रुद्रस्तु कारणो देह स्तुरीया त्वहमेव हि ।।
साम्यावस्था तु या प्रोक्ता सर्वान्तर्यामि रूपिणी ।

चन्द्र और चन्द्रिका (चाँदनी) के समान ही ये सब मुझसे अभिन्न हैं । हे सुरोत्तम ! यह मेरी माया

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सम्पूर्ण संसार में प्राणिमात्र के प्रलय होने पर सम्यावस्था धारण करती हुई, मुझसे अभिन्न ही रहा करती है । फिर सर्ग के आदि में कर्मों के परिपाकवश वह अव्यक्त रूप ही व्यक्त होता है । अन्तर्मुखी जो अवस्था है वह माया कहलाती है, बहिर्मुखी अवस्था जो माया है, वह 'तम' इस शब्द से कही जाती है । हे सुरश्रेष्ठ ! बहिर्मुख तमोरूप से ही सत्व की उत्पत्ति होती है और सर्ग के आदि में वही रजोगुण होकर उत्पत्ति का कारण बना करती है । ब्रह्मा, विष्णु और महेश्वर , ये गुण त्रयात्मक हैं । रजोगुणाधिष्ठाता ब्रह्मा, सत्वाधिष्ठाता विष्णु और तमोगुणाधिक रुद्र सम्पूर्ण कारण रूप धारण करने वाले हैं । स्थूल देह वाले ब्रह्मा, लिंग देह हरि (विष्णु) हैं और रुद्र कारण देह है । तुरीया तो मैं ही हूँ, जो कि सर्वान्तर्यामी रूपिणी साम्यावस्था कही जाती है ।

माया-मोह की जोड़ी प्रसिद्ध है । जहाँ माया होगी वहाँ मोह होगा । जहाँ मोह हो समझना चाहिये, वहाँ माया का प्रभाव है । यह अर्थ सामान्य लोक-व्यवहार में प्रयुक्त होता है । साधारणतः अज्ञान के अर्थ में माया शब्द का प्रयोग प्रचलित है । पर वस्तुतः यह समस्त प्रकृति वैभव ही माया है और उस माया से प्रेरित मनुष्यों से लेकर देवताओं तक चैतन्य प्राणधारियों की ओर दृश्य पदार्थों से लेकर आण्विक हलचलों एवं आकर्षण विकर्षण अदृश्य शक्तियों की गतिविधियों में एक माया को ही ओत-प्रोत समझना चाहिये । इस तथ्य का देवी भागवत् में इस प्रकार उल्लेख है -

अन्येषां चैव का संसारेऽस्मिन्नृयोत्तम !
मायाधीनं जगत्सर्वं सदेवासुर मानुषम् ।।
तस्माद्राजन्म कर्त्तव्यः सन्देहोऽत्र कदाचन ।
देही मायापराधीन श्रेष्ठते तद्वशा नुगः ।।
सा च माया परे तत्वे सम्विद्रूपेऽति सर्वदा ।
तदधीना प्रेरिता च तेन जीवेषु सर्वदा ।।
ततो माया विशिष्टां तां सम्विदं परमेश्वरीम् ।
मायेश्वरी भगवतीं सच्चिदानन्द रूपिणीम् ।।
ध्यायेत्तथाऽऽराधयेश्च प्रणमेच्च जयेदपि ।
तेन सा सदयाभूत्वा मोचमत्येव देहिनम् ।।

अर्थ- व्यास-नारद सम्वाद में देवर्षि नारद ने कहा है- इस संसार में साधारण जीवों के विषय में कहा ही क्या जाय, यह संसार सम्पूर्ण जगत् जिसमें देव-असुर और मानव सभी आते हैं, माया के अधीन रहता है । इसलिये हे राजन् ! इस विषय में कभी भी सन्देह नहीं करना चाहिये । यह देहधारी माया के पराधीन है और उसी का अनुगामी होकर चेष्टा किया करता है । वह माया सम्विद स्वरूप पर-तत्व में सर्वदा संस्थित रहती है । वह उसके अधीन और उसी के द्वारा प्रेरित होकर सर्वदा जीवों में व्याप्त होती है । इसलिये माया से विशिष्ट, मायेश्वरी, सत्चित् और आनन्दस्वरूप वाली, परमेश्वरी भगवती सम्विद का ध्यान करना, उसी की आराधना करना, उसका जाप करना और उसका प्रणमन सदा करना चाहिये । ऐसा करने से वह अपनी स्वाभाविक दया प्रकट करके देही का मोचन निश्चय ही कर दिया करती है ।

तस्मान्माया निरासार्थं नान्य द्वै देवतान्तरम्।
समर्थन्तु बिना देवीं सच्चिदानन्द रूपिणीम् ।।
तस्मान्मायेश्वरीमम्बां स्वप्रकाशां तु सम्विदम् ।
आराधयेदति प्रीत्या माया गुण निवृत्तणो ।।

अर्थ- इसलिये माया का निरसन करने के लिये सच्चिदानन्द स्वरूप वाली देवी के बिना अन्य कोई भी देवता समर्थ नहीं है । अतएव माया की स्वामिनी स्व-प्रकाश स्वरूपा अम्बा सम्विद की माया की निवृत्ति के लिये अत्यन्त प्रेम-भक्ति के साथ आराधना करनी चाहिये ।

बृहदस्य शरीरं तु यद प्रमेय प्रमाणतः ।
धातुर्महेति पूजायां महादेवी ततः स्मृतः ।।
वर्त्तते सर्वभूतेषु शक्तिः सर्वात्मना नृप ।
शव वच्छक्तिः हीनस्तु प्राणी भवति सर्वदा ।।
चिच्छक्तिः सर्वभूतेषु रूपं तस्यास्तदेव हि ।

इसकी परम विशाल देह है, जो किसी भी प्रमाण के द्वारा प्रमेय नहीं होती है । इसी को पूजा में धाता का तेज स्वरूप कहते हैं और इसी का 'महादेवी'-यह नाम कहा गया है । हे राजन् ! यह सम्पूर्ण प्राणियों में सर्वात्मना व्याप्त है । और इसकी शक्ति से हीन होकर तो सर्वथा प्राणी शव के समान हो जाया करता है । उस चिच्छक्ति का रूप ही समस्त प्राणियों में व्याप्त रहता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सा विश्वं कुरुते कामं सा पालयति पालितम् ।
कल्पान्ते संहरत्येव त्रिरूपा विश्वमोहिनी ।।
तया युक्तः सृजेद ब्रह्मा विष्णुः पाति तयान्वितः ।
रुद्रः संहरते कामे तया सम्मिलितो जगत् ।।
सा बधनाति जगत्कृत्स्नं माया पाशेन मोहितम् ।
अहं ममेति पाशेन सुदृढ़ेन नराधिप ।।
योगिनो मुक्त संगाश्च मुक्ति कांमा मुमुक्ष वः ।
तामेव समुपासन्ते देवी विश्वेश्वरीं शिवाम् ।।

वह महामाया ही इस विश्व का सृजन, पालन और कल्पान्त में संहार करती है, वह त्रिरूपा विश्व को मोहित करने वाली है । उससे युक्त होकर ही ब्रह्मा, विष्णु और रुद्र इस विश्व का सृजन, पालन और संहार किया करते हैं । उसी से यह जगत् व्याप्त है, वही मायापाश से मोहित सम्पूर्ण जगत् को बाँध लेता है । वह मैं और मेरे इस सुदृढ़ पाश से हे राजन् ! बँधा रहता है । संसार के संग से मुक्त योगी जो मुक्ति की कामना करते हैं, वे इस विश्वेश्वरी की उपासना अपने अभीष्ट की सिद्धि के लिये किया करते हैं ।

मोहो नैवायसरति किं तत्कारण मद्भतम् ।
स्वामिं स्त्वमसि सर्वज्ञः सर्व संशय नाशंकृत् ।।
कारणं ब्रूहि मोहस्य ममास्य च दयानिधे ।
इति पृष्टस्तदा राजा सुमेधा मुनि सत्तमः ।।
तमुवाच परं ज्ञानं शोक मोह विनाशतम् ।

अर्थ- राजा ने मुनि से पूछा-हे स्वामिन् ! यह मेरे हृदय का मोह क्यों नहीं दूर हटता है ? इसका कौन सा अद्भुत कारण है ? आप तो सभी कुछ के ज्ञाता हैं और सब प्रकार के संशयों के नाश कर देने वाले हैं । हे कृपा के सागर ! मेरे इस हार्दिक मोह का कारण बतलाइये । व्यास जी ने कहा- इस प्रकार से पूछे जाने पर मुनियों में परम श्रेष्ठ सुमेधा ने उस राजा को शोक और मोह के नाश करने वाला परम ज्ञान बतलाया था ।

शृणु राजन् प्रवक्ष्यामि कारणं बन्ध मोक्षयोः ।
महामायेति विख्याता सर्वेषां प्राणिनामिह ।।
ब्रह्मा विष्णुस्तथे शान स्तुराषछ वरुणोऽनितः ।
सर्वे देवा मनुष्याश्च गन्धर्वोरगराक्षसाः ।।
वृक्षाश्च विविधा पल्य पशवो मृगपक्षिणः ।
मायाधी नाश्चते सर्वे भाजनं बन्ध मोक्षयोः ।।
तया सृष्टमिदं सर्वं जगत्स्थावर जङ्गमम् ।
तद्वशे वर्त्तते नूनं मोह जालेन यान्त्रितम् ।।
त्वं क्रियान् मानुषेष्येकः क्षत्रियो रजसाऽविलः ।
ज्ञानिनामयि चेतांसि मोहय त्यनिशं हिया ।।
ब्रत्मेश वासुदेवा द्या ज्ञाने सत्यपि शेषतः ।
तेपि रागवशाल्लोके भ्रमन्ति परिमोहिताः ।।

अर्थ- महर्षि ने कहा- हे राजा ! मैं तुम्हारे सामने संसार में बन्ध और उससे छुटकारा प्राप्त करने का कारण बतलाता हूँ, उसका तुम श्रवण करो ! इस संसार में समस्त प्राणियों के ऊपर पूर्ण प्रभाव रखने वाली भगवती महामाया है, जो परम विख्यात है । ब्रह्मा, विष्णु, शिव, तुराषाड, वरुण, अनिल आदि सब देवगण, मनुष्य, गन्धर्व, उरग और राक्षस, वृक्ष, अनेक वल्ली, पशुगण और पक्षी आदि सभी उस महामाया के अधीन रहते हैं और ये समस्त बन्ध और मोक्ष के पात्र भी होते हैं । अर्थात् इनके लिये भवबन्धन होता है तो इनका इस बन्धन से मोक्ष भी होता है । ये सभी माया के अधीन रहते हैं, क्योंकि उसी के द्वारा इस स्थावर (अचर) ओर जंगम (चर) जगत् की सृष्टि हुई है । मोह के जाल में यन्त्रित होकर यह जगत् उसी महामाया के वश में रहता है । तुम तो एक साधारण मनुष्य हो और रजोगुण से लिप्त क्षत्रिय हो । तुम यदि मोह में आबद्ध हो तो क्या आश्चर्य है ? वह भगवती तो बड़े-बड़े ज्ञानियों के चित्त को भी निरन्तर मोहित करती रहा करती है । ब्रह्मा, ईश और वासुदेव आदि पूर्ण ज्ञान के रहते हुए भी राग के वश में वशीभूत होकर मोहित होते हुए, इस लोक में भ्रमण किया करते हैं- उस महामाया का ऐसा प्रबल प्रभाव है ।

सा च ब्रह्म स्वरूपा च नित्थ्य सा च सनातनी ।
यथात्मा च तथा शक्तिर्यथाग्नौदाहिका स्थिता ।।
अत एव हि योगीन्द्रैः स्त्री युग्भेदो न मन्यते ।

यह आत्म स्वरूपा देवी अग्नि में जिस प्रकार से दाहकत्व शक्ति अनुस्यूत रहती है, उसी तरह ब्रह्म स्वरूपा नित्या-सनातनी यह आद्याशक्ति है । इसलिये योगियों में शिरोमणि लोग इस महामाया के विषय में स्त्री एवं पुल्लिग का भेद नहीं माना करते हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्माणं च तथा विष्णुं रुद्रं वै कारणात्मकम् ।
मद्भयाद्वाति पवनोभीत्या सूर्यश्च गच्छति ।।
इन्द्राग्नि मृत्यवस्तद्वत्साऽहं सर्वोत्तमा स्मृता ।
मत्प्रसादाद्भवद्भिस्तु जयोलब्धोऽस्ति सर्वथा ।।

इस जगत् के कारण स्वरूप जो ब्रह्मा, विष्णु और रुद्र हैं, वह सब मुझसे ही प्रेरणा प्राप्त कर जगत की उत्पत्ति स्थिति और लय किया करते हैं । पवन मेरे ही भय से बहता है । सूर्य गमन करता है और इन्द्र, अग्नि और मृत्यु सब मेरी भीति से अपना-अपना काम करते, मैं सब में उत्तम हूँ । और हे देवगण ! मेरी ही कृपा से आप लोगों को जय प्राप्त होती है ।

इस रहस्यमय अध्यात्म को जो जान लेता है वह अपने भ्रम और संशय से छुटकारा पाकर लोभ-मोह से मुख फेर लेता है । वासना, तृष्णा की प्रीति छोड़ आत्म-कल्याण के मार्ग पर चलना आरम्भ करता है । भगवती की प्रेरणा जो अन्तःप्रेरणा के रूप में परमार्थ पथ पर चलने को निरन्तर मिलती रहती है उसका अनुसरण करने वाला भवबन्धनी की दुर्गति से छूटकर शाश्वत सुख-शान्ति का अधिकारी बनता और जीवन के परम लक्ष्य को प्राप्त करता है । इस तथ्य को इस प्रकार समझाया गया है-

छित्वा भित्वा च भूतानि हत्वा सवमिद जगत् ।
देवीं नमति भक्त्या यो न स पापै र्विलिप्यते ।।
रहस्यं सर्व शास्त्राणां मया राजनुदीरितम् ।
विमृश्ये तदशेषेण भज देवी पदाम्बुजम् ।।
अजयां नाम गायत्रीं जपन्ति निखिलाजनाः ।
महिमान न जानन्ति मायामां वैभवं महत् ।।
गायत्री ब्राह्मणाः सर्वे जपन्ति हृदयान्तरे ।
एतत्सर्वं समाख्यातं यत्पृष्टं त्वया नघ ।।

समस्त भूतों का छेदन एवं भेदन करके और इस सम्पूर्ण जगत् का हनन करके जो दृढ़ भक्ति की भावना से देवी को नमन किया करता है, वह फिर पापों में कभी भी विलिप्त नहीं होता है । हे राजन् ! मैंने यह समस्त शास्त्रों का रहस्य तुमको बतला दिया है । इस पर भली-भाँति विमर्श करके देवी के चरण कमलों का समाराधन करो । समस्त मनु अजया गायत्री का जाप किया करते हैं, किन्तु उसकी माया का, जो परम महान् वैभव है, उसकी महिमा को लोग नहीं जानते हैं । समस्त ब्राह्मण अपने हृदय-स्थल के अन्दर गायत्री का जाप किया करते हैं, किन्तु इसका महत्त्व पूर्णतया नहीं जानते हैं । हे अनघ ! तुमने जो पूछा है, वह मैंने सब बतला दिया है ।

प्रज्ञा की देवी गायत्री और उसकी विभूतियाँ

गायत्री मन्त्र वेदों में कई-कई बार आता है । ऋग्वेद में ६।६२।१० सामवेद में २।८।१२ यजुर्वेद वा० सं० में ३।३५-२२ ।९ -३०। २-३६।३ अथर्व वेद में १९ । ७ १ । १ में गायत्री की महिमा विस्तार-पूर्वक गाई गई है ।

ब्राह्मण ग्रन्थों में गायत्री मन्त्र का उल्लेख अनेक स्थाना पर है । यथा - ऐतरेय ब्राह्मण ४। ३२। २-५।५। ६-१३।८ १९।८ कौशतकी ब्राह्मण २३।३-२६ । १०-गोपथ ब्राह्मण १।१। ३४ दैवत ब्राह्मण ३। २५ शतपथ ब्राह्मण २। ३।४।३९-२३। ६।२।९-१४।९। ३। ११

तैत्तरीय सं० १।५।६।४-४।१।१ ।१ मैत्रायणी सं० ४ ।१०। ३-१४९।१४

आरण्यकों में गायत्री का उल्लेख इन स्थानों पर है- तैत्तरीय आरण्यक १।१।२१०। २७।१ वृहदारण्यक ६।३।११।४।८ उपनिषदों में इस महामन्त्र की चर्चा निम्न प्रकरणों में है । नारायण उपनिषद् १५-२ मैत्री उपनिशद ६।७।३४ जैमिनी उपनिषद् ४।२८।१ श्वेताश्वर उपनिषद ४। १८

सूत्र ग्रंथों में गायत्री का विवेचन निम्न प्रसंगों में आया है- आश्वालायन स्रोत सूत्र ७ । ६ । ६-८ । १ । १८ शाखायन स्रोत सूत्र २। १०। २-१२ ।७-५ ।५ । २-१० । ६ । १०-९ । १६ आप स्तम्भ श्रौत सूत्र ६ । १८ । १ शांखायन गृह्य सूत्र २ ।५ । १२,७ । १९, ६ । ४ । ८ कौशीतकी सूत्र ९१ । ६ खगटा गृह्य सूत्र २ । ४ । २१ आपस्तम्भ गृह्य सूत्र २ । ४ । २१ बोधायन ध० शा० २ । १० । १७ । १४ मान० ध० शा० २ ।७७ ऋग्विधान १ । १२ ।५ मान० गृ० सू० १ । २ । ३-४ । ४ । ८-५ । २ ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इस निखिल ब्रह्माण्ड में ईश्वर की अनन्त शक्तियाँ बिखरी पड़ी हैं और उनमें से जिनकी आवश्यकता होती है उन्हें मनुष्य अपने प्रबल पुरुषार्थ द्वारा प्राप्त कर लेता है । विज्ञान द्वारा प्रकृति की अनेक शक्तियों को मनुष्य ने अपने अधिकार में लिया है । विद्युत, ताप, प्रकाश, चुम्बक शब्द, अणु-शक्ति जैसी प्रकृति की कितनी ही अदृश्य और अविज्ञात शक्तियों को उसने ढूँढ़ा और करतलगत किया है, पर ब्रह्म की चेतनात्मक शक्तियाँ भी कितनी ही हैं, उन्हें आत्मिक प्रयासों द्वारा करतलगत किया जा सकता है । मनुष्य का अपना चुम्बकत्व असाधारण है । वह उसी क्षमता के सहारे भौतिक जीवन में अनेकों को प्रभावित एवं आकर्षित करता है । उसी आधार पर वह साधन जुटाता, सम्पन्न बनता और सफलताएँ उपलब्ध करता है । इसी चुम्बक शक्ति के सहारे वह व्यापक ब्रह्म चेतना के महासमुद्र में से उपयोगी चेतन तत्वों को आकर्षित एवं करतलगत कर सकता है ।

प्रज्ञा की अभीष्ट मात्रा विद्यमान हो तो फिर और कोई ऐसी कठिनाई शेष नहीं रह जाती जो नर को नारायण—पुरुष को पुरुषोत्तम बनाने से वंचित रख सके । श्रम और मनोयोग तो आत्मिक प्रगति में भी उतना ही लगाना पर्याप्त होता है जितना कि भौतिक समस्याएँ हल करने में आये दिन लगाना पड़ता है । महामानवों को उससे अधिक कष्ट नहीं सहने पड़ते हैं जितने कि सामान्य जीवन में आये दिन हर किसी को सहने पड़ते हैं । लोभ और मोह की पूर्ति में जितना पुरुषार्थ और साहस करना पड़ता है उससे कम में ही उत्कृष्ट आदर्शवादी जीवन का निर्माण-निर्धारण किया जा सकता है । मूल कठिनाई एक ही है प्रज्ञा-प्रखरता की । वह प्राप्त हो सके तो समझना चाहिए कि जीवन को सच्चे अर्थों में सार्थक बनाने वाली ऋद्धि-सिद्धियों की उपलब्धियों से भर देने वाली संभावनाओं को प्राप्त कर सकने में अब कोई कठिनाई शेष नहीं रह गई ।

गायत्री महाशक्ति को तत्व ज्ञानियों ने सर्वोपरि दिव्य क्षमता कहा है । उसका अत्यधिक माहात्म्य बताया है । गायत्री-प्रज्ञा तत्व का ही दूसरा नाम है । इसे दूरदर्शी, विवेकशीलता एवं आत्मोत्कर्ष के लिए अभीष्ट बल प्रदान करने वाली साहसिकता भी कह सकते हैं । आत्मिक प्रगति के लिए किये जाने वाले अभीष्ट पुरुषार्थों में गायत्री उपासना को अग्रणी माना गया है । यह विशुद्ध रूप से 'प्रज्ञा' को प्राप्त करने की वैज्ञानिक पद्धति है ।

'प्रज्ञा' शक्ति मनुष्य को आत्मिक दृष्टि से सुविकसित एवं सुसम्पन्न बनाती है । वह अपने जीवन-स्तर को ऊँचा उठाकर महामानवों के उच्च- स्तर तक पहुँचाता है और सामान्य जीवात्मा न रह कर महात्मा, देवात्मा एवं परमात्मा स्तर की क्रमिक प्रगति करता चला जाता है । जहाँ आत्मिक सम्पन्नता होगी वहाँ उसकी अनुचरी भौतिक समृद्धि की भी कमी न पड़ेगी । यह बात अलग है कि आत्मिक क्षमताओं का धनी व्यक्ति उन्हें उद्धत प्रदर्शन में खर्च न करके किसी महान प्रयोजन में लगाने के लिए नियोजित करता रहे और सांसारिक दृष्टि से निर्धनों जैसी स्थिति में बना रहे । इसमें दूसरों को दरिद्रता प्रतीत हो सकती है, पर आत्मिक पूँजी का धनी अपने आप में संतुष्ट रहता है और अनुभव करता है कि वह सच्चे अर्थों में सुसम्पन्न है ।

गायत्री उपासना उस 'प्रज्ञा' को आकर्षित करने और धारण करने की अनुभूत प्रक्रिया है जो परब्रह्म की विशिष्ट अनुकम्पा, दूरदर्शी-विवेकशीलता और सन्मार्ग अपना सकने की प्रखरता के रूप में साधक को प्राप्त होती है । इस अनुदान को पाकर वह स्वयं धन्य बनता है और समूचे वातावरण में मलय पवन का संचार करता है । उसके व्यक्तित्व से सारा सम्पर्क क्षेत्र प्रभावित होता है और सुखद सम्भावनाओं का प्रवाह चल पड़ता है ।

गायत्री महाशक्ति का उसकी उपासना का उपलब्धियों का परिचय देते हुए तत्वदर्शियों ने बहुत कुछ कहा है । शास्त्र वचनों में इस तथ्य का उल्लेख स्थान - स्थान पर हुआ है उनमें से कुछ प्रसंग इस प्रकार हैं-

या देवी सर्वभूतेषु बुद्धि रूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ।।

जो देवी सब प्राणियों मे बुद्धि रूप से अवस्थित है, उसे बार-बार नमस्कार है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मेधासि देवि विदिता खिल शास्त्र सारा : ।

जिससे समस्त शास्त्रों के सार-तत्व को जाना जाता है वह मेधा शक्ति आप ही हैं ।

विद्या त्वमेव ननु बुद्धिमतां नराणां
शक्तिस्त्वमेव किल शक्तिमतां सदैव ।
त्वं कीर्तिकांतिकमलामलतुष्टिरूपा
मुक्तिप्रदा विरतिरेव मनुष्य लोके ।।
गायत्र्यसि प्रथमवेदकला त्वमेव
स्वाहा स्वधा भगवती सगुणाऽर्धमात्रा ।
आम्नाय एव विहितो निगमो भवत्यै
संजीवनाय सततं सुरपूर्जानाम् ।।

-देवी भागवत्

आप ही बुद्धिमानों में बुद्धि, बलवानों में शक्ति हैं । आप ही कमला, निर्मला, कीर्ति, कान्ति, तुष्टि और मुक्ति प्रदान करने वाली हैं ।

वेद की प्रधान शक्ति गायत्री आप ही हैं । स्वाहा, स्वधा, सगुण, अर्ध मात्रा आपको ही कहते हैं । देवता और प्राणियों का निस्तार आप ही करती हैं । आपने ही वेद और तन्त्र, आगम और निगम रचे हैं ।

सर्वस्य बुद्धि रूपेण जनस्य हृदि संस्थिते ।
सवर्गापवर्ग हे देवि नारायणि नमोस्तुते ।।

बुद्धि रूप में सब प्राणियों के हृदय में विराजमान स्वर्ग तथा मोक्ष प्रदान करने वाली हे भगवती आपको नमस्कार है ।

स्मृतिस्त्वं धृतिस्त्वं त्वमेवासि बुद्धिः
जरापुष्टितुष्टी धृतिः कांतिशांति ।
सुविद्या सुलक्ष्मीर्गति कीर्तिमेधे
त्वमेवासि विश्वस्य बीजं पुराणम् ।।
उषसीं चैव गायत्रीं सावित्री च सरस्वतीम् ।
वेदानां मातरम् पृथ्वीमजां चैव तु कौशिकीम् ।

-देवी भागवत्

स्मृति, धृति, बुद्धि, जरा, पुष्टि, तुष्टी, धृति, कांति, शान्ति, विद्या, लक्ष्मी, गति, कीर्ति, मेधा और विश्व बीज आप ही हो । उषसी, गायत्री, सावित्री, सरस्वती, पृथ्वी, अजा, कौशिकी उसे वेदमाता कहते हैं ।

स्मृतिशक्ति र्ज्ञानशक्तिबुद्धिशक्तिस्वरूपिणी ।
प्रतिभा कल्पनाशक्तिर्या च तस्यै नमो नमः ।।

-ब्रह्म वैवर्त

जो स्मृति शक्ति-ज्ञान शक्ति और बुद्धि शक्ति के स्वरूप वाली है और जो प्रतिभा और कल्पना शक्ति के रूप वाली है, उस देवी के लिए मेरा बार-बार प्रणाम है ।

अह बुद्धिरहं श्रीश्च धृतिः कीर्ति स्मृतिस्तथा ।
श्रद्धा मेधा दया लज्जा क्षुधा तृष्णा तथा क्षमा ।।

-देवी भागवत्

मैं ही (१) बुद्धि (२) सम्पत्ति (३) धृति (४) कीर्ति (५) स्मृति (६) श्रद्धा (७) मेधा (८) दया (९) लज्जा (१०) क्षुधा (११) प्यास (१२) क्षमा, हूँ ।

या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्व लक्ष्मीः ।
पापात्मनाम्, कृतधियाम् हृदयेषु बुद्धिः ।।
श्रद्धा सतां कुलजन प्रभवस्य लज्जा ।
तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम् ।।

"जो देवी सज्जनों के गृह में स्वयं लक्ष्मी के रूप में रहती है और कुबुद्धि वालों को सद्बुद्धि प्रदान करती है, जो सत्पुरुषों के हृदय में श्रद्धा और कुलीन जनों में लज्जा रूप में रहती है, उस विश्व का पालन करने वाली देवी को मैं नमस्कार करता हूँ ।

स्वस्ति श्रद्धति मेधा मधुमति मधुरासंशयः प्रज्ञक्रांति
विंद्या बुद्धिर्बलं श्रीरतुलधनमति सौम्यवाक्यावतीश्च

वह स्वस्ति, श्रद्धा, अतिमेधा, मधुमती, मधुरा, असंशया, प्रज्ञक्रान्ति, विद्या, बुद्धि, बल, श्री, अतुलधन वाली है और अत्यन्त सौम्य वचनों वाली है ।

मेधा प्रज्ञा प्रतिष्ठा मृदुमधुरगिरा पूर्णविद्या प्रपूर्ण ।
प्राप्ताप्रत्यूषचिन्ता प्रणवपश्वशात् प्राणिनां नित्यकर्म

वे मेधा की प्रज्ञा-प्रतिष्ठा- मृदु और मधुर वाणी वाली पूर्ण विद्या से प्रपूर्णा-प्राप्त प्रत्यूष काल में चिन्ता और प्रणव के परवशा तथा प्राणियों का नित्य कर्म स्वरूपा है ।

'प्रज्ञा' तत्व का प्रधान कार्य मनुष्य में सत्-असत् निरूपिणी बुद्धि का विकास परिष्कार करती है । इसके मिलने का प्रथम चमत्कार यह होता है कि मनुष्य वासनाः तृष्णा की पशु प्रवृत्तियों से ऊँचा उठ कर मनुष्योचित कर्म-धर्म को समझने और तदनुसार उत्कृष्टवादी रीति-नीति अपनाने के लिए अन्तः प्रेरणा प्राप्त करता है और साहसपूर्वक आदर्शवादी जीवन

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जीने की दिशा में चल ही पड़ता है । ऐसे व्यक्ति स्वभावतः दुष्कर्मों से विरत हो जाते हैं और उनके क्रिया-कलाप में से फिर अवांछनीयताएँ एक प्रकार से चली ही जाती हैं । इस परिवर्तन को धर्मस्थापना और अधर्म निवारण के रूप में देखा जा सकता है ।

धर्मोन्नति मधर्मस्य नाशनं जनहृद् छुचिम्
मागल्ये जगतो माता गायत्री कुसनात्सदा ।

धर्म की उन्नति, अधर्म का नाश, भक्तों के हृदय की पवित्रता तथा संसार का कल्याण गायत्री माता करें ।

य एतां वेद गायत्रां पुण्यां सर्व गुणान्विताम् ।
तत्वेन भरत श्रेष्ठ स लोके न प्रणश्यति ।

-महाभारत भीष्म पर्व १ ।४ ।१६

हे राजन् ! जो इस सर्वगुण सम्पन्न परम पुनीत गायत्री के तत्व ज्ञान को समझकर उसकी उपासना करता है उसका संसार में कभी पतन नहीं होता ।

गीता ७-१० में भगवान् कहते हैं-

बुद्धिर्बुद्धिमता यास्मि ।

अर्थात् बुद्धिमानों में बुद्धि मैं ही हूँ ।

चाणक्य ने भगवान् से प्रार्थना की है-

मा गातु बुद्धिर्मम ।

अर्थात् भले ही मेरा सब कुछ चला जाय पर सद्बुद्धि बनी रहे ।

मस्तिष्क को, सिर को गायत्री का केन्द्र संस्थान बताया गया है । इस प्रतिपादन का तात्पर्य गायत्री को दूसरे शब्दों में विवेक उक्ति बुद्धिमता ही ठहराया गया है । सिर उसी का तो स्थान है ।

कहा भी है-

आस्याश्च बुद्धिर्महत्त्वं स्वेतर सकल कार्य
व्यापकत्वाद् महैश्वर्यच्च मन्तव्यम् ।

-सांख्य दर्शन २ ।१३ (विज्ञान भिक्षु भाष्य)

यह बुद्धि ही संसार के समस्त कार्यों में प्रकाशित है । इसी की बड़ी सामर्थ्य है ।

मस्तिष्क की तीक्ष्णता-चतुरता, सूझ-बूझ, स्मरण क्षमता, व्युत्पन्न मति को आमतौर से बुद्धिमता समझा जाता है । पर अध्यात्म के चर्चा प्रसंग में दूरदर्शी विवेकशीलता को 'प्रज्ञा' कहा जाता है । यही आध्यात्मिक बुद्धिमता है । गायत्री महाशक्ति का अवतरण इसी प्रज्ञा शक्ति के रूप में होता है और साधक को प्रत्यक्ष उपहार यही मिलता है कि वह अपनी चिन्तन क्षमता को निष्कृष्ट प्रयोजनों से विरत करके उस तरह सोचना आरम्भ करता है; जिससे जीवनचर्या का सारा ढाँचा ही बदल जाय और मात्र आदर्शवादी गतिविधियों को कार्यान्वित करने की ही सम्भावना शेष रहे ।

सद्बुद्धि से प्रेरित सुव्यवस्थित क्रिया पद्धति और उत्कृष्ट रीति-नीति अपनाने वाला निश्चित रूप से सर्वतोमुखी प्रगति के मार्ग पर बढ़ता चला जाता है । जिन ऐश्वर्यों को प्राप्त करने के लिए लोग लालायित रहते हैं वे प्रबल पुरुषार्थ के आधार पर ही पाये जा सकते हैं । देवता किसी को छप्पर फाड़कर अशर्फियों का घड़ा नहीं दे जाते । वे मात्र ऐसी सत्प्रेरणा उल्लसित करते हैं; जिससे चिन्तन और कर्तव्य के दोनों ही क्षेत्र सद्ज्ञान एवं सत्कर्म से ओत-प्रोत हो चलें । प्रबल पुरुज्ञार्थ से तात्पर्य इसी क्षेत्र में आगे बढ़ने से है, अन्यथा सामान्य पुरुषार्थ तो दुष्ट दुर्गणी भी करते ही हैं । जहाँ सद्बुद्धि की प्रेरणा से सत्कर्म परायणता का प्रबल पुरुषार्थ जगेगा; वहाँ किसी को किसी वस्तु का, किसी बात का अभाव नहीं रहेगा ।

न देवा दण्डमादाय रक्षन्ति पशुपाल वत् य तु
रक्षितुमिच्छन्ति बुद्धया संयोजयन्ति तम् ।

ग्वाला जिस प्रकार लाठी लेकर पशुओं की रक्षा करते हैं, उस तरह देवता किसी की रक्षा नहीं करते । वे जिसकी रक्षा करना चाहते हैं, उसकी बुद्धि को सन्मार्ग पर नियोजित कर देते हैं ।

गायत्री का निवास शिरोभाग में बताया गया है । देवताओं का निवास ब्रह्मरंध्र में, मस्तक में बताया गया है । सैकड़ों दिव्य शक्तियों का केन्द्र होने के कारण उस केन्द्र को शत दल कमल कहते हैं । यह संख्या हजारों असंख्यों हैं । इसलिए उसे सहस्त्र दल कमल भी कहते हैं ।

गायत्रं हि शिरः । शिरो गायत्र्यः ।
अर्कवतीषु गायत्रीषु शिरो भवति

-ताण्डव ब्राह्मण

सूर्य के समान तेजस्वी गायत्री का स्थान शिर है । कलाष और कल्मषों का निराकरण होने पर आत्मा के भीतर की दिव्य विशेषतायें सहज ही प्रकट

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

होती और प्रखर बनती हैं । अंगारे पर चढ़ी राख की परत को हटा देने पर उसकी धूमिल आभा पुनः प्रकट होती है और उसका वर्चस्व सहज ही दृष्टिगोचर होने लगता है । यही वह स्थिति है जिसमें कई प्रकार की दिव्य विशेषताओं का आभास मिलता है । दिव्य जीवन स्वभावतः रहस्यमय सिद्धियों का भण्डार होता है । वह अन्तः क्षेत्र में स्वर्ग और मुक्ति जैसा आनन्द उठाता है और अपने साथ-साथ अनेकों को धन्य बनाता है । शंख स्मृति का वचन है-

अभीष्टं लोकमाप्नोति प्राप्नुयात्कामभीप्सितम् ।
गायत्री वेदजननी गायत्री पापनाशिनी ।।
गायत्र्या परमं नास्तिदिवि चेह न पावनम् ।
हस्तत्राणप्रदा देवी पततां नरकार्णवे ।।
तस्मात्तामभ्यसेन्नित्यं ब्राह्मणो नियतः शुचिः ।
गायत्रीजाप्यनिरतं हव्यकव्येषु भोजयेत् ।।
तस्मिन्न तिष्ठते पापमब्बिन्दुरिव पुष्करे ।
जपे नैव तु संसिध्येद् ब्राह्मणो नात्र संशयः ।।
कुर्यादन्यन्न वा कुर्यान्मंत्री ब्राह्मण उच्यते ।
उपांशु स्याच्छतगुणः साहस्रो मानसः स्मृतः ।।
नोच्चैर्जपं बुधः कुर्यात्सावित्र्यास्तु विशेषतः ।
सावित्रीजाप्यनिरतः स्वर्गमाप्नोति मानवः ।।
गायत्रीजप्यनिरतो मोक्षोपायं च विन्दति ।
तस्मातसर्वप्रयत्नेन स्नातः प्रयतमानसः ।।
गायत्री तु जपेद्भक्त्या सर्वपापप्रणाशिनीम् ।

-शंख स्मृति १२ । २४ से ३१

गायत्री का जप करने वाला अभीष्ट लोकों को प्राप्त होता है और उसकी अभीप्सित कामनायें पूर्ण होती हैं ।

गायत्री वेद जननी है, पापों का नाश करने वाली है । इससे बड़ी पवित्र करने वाली शक्ति न इस लोक में है न स्वर्ग लोक में । नरक रूपी समुद्र में गिरे हुए को वह हाथ का सहारा देकर उबारती है । अतएव गायत्री की नित्य उपासना करनी चाहिए और हवन करना चाहिए । गायत्री जप करने वाला कमल पत्रवत् रहा है । इसके ऊपर पाप नहीं चढ़ सकता ।

गायत्री जप से निःसन्देह समस्त सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं । मनुष्य अन्य कोई साधना न भी करे तो भी ब्राह्मण गायत्री का आश्रय लेकर पार हो जाता है । इस उपासना से स्वर्ग भी मिलता है और मोक्ष भी । अतएव नित्य नियमित रूप से गायत्री की भक्तिपूर्वक जप साधना करनी चाहिये ।

गायत्री मन्त्र में जिस प्रज्ञा को धियः शब्द से सम्बोधित किया है और अन्तःचेतना के कण-कण में ओत-प्रोत करने की घोषणा की है, उसी की शास्त्रकारों ने अन्यत्र ऋतम्भरा प्रज्ञा 'भूमा' आदि नामों से चर्चा की है । यह शब्द सामान्य व्यवहार बुद्धि के लिए प्रयुक्त नहीं होता । चतुरता, कुशलता एवं जानकारी की जो शिक्षा स्कूलों, कारखानों एवं बाजार में सीखने को मिलती है, 'प्रज्ञा' उससे सर्वथा भिन्न है । जिस विद्या के आधार पर आत्म-बोध होता है- जीवन का महत्त्व, स्वरूप लक्ष्य एवं उपयोग विदित होता है- सत्-असत् का, उचित-अनुचित का भेद कर सकने वाली नीर-क्षीर विवेचनी वृत्ति विकसित होती है; उसी को गायत्री कहा जा सकता है ।

गायत्री उपासना के द्वारा प्रज्ञा शक्ति प्राप्त करने के साथ-साथ साधक को वे सभी विशिष्ट क्षमताएँ प्राप्त होती हैं जिनका वर्णन विद्याविधा के अवगाहन तथा योग तप आदि के साधन-विधान के साथ जुड़ा हुआ है । गायत्री उपासक की आत्मिक पूँजी निरन्तर बढ़ती चली जाती है और वह यदि धैर्य और साहस के साथ आत्म-संशोधन करते हुए अपने मार्ग पर बढ़ता ही चले तो एक दिन नर से नारायण स्तर पर पहुँचा हुआ सिद्ध पुरुष बनकर रहता है । कहा भी है-

योगनिद्रा योगरूपा योगदात्री च योगीनाम् ।
सिद्धिस्वरूपा सिद्धानां सिद्धिदा सिद्धियोगिनी ।।
विद्याविद्यावतांत्वश्च बुद्धिर्बुद्धिमतांसताम् ।
मेधास्मृतिस्वरूपाच प्रतिभाप्रतिभावताम् ।।
वन्द्या पूज्या स्तुतात्वच्चब्रह्मादीनाञ्च सर्वदा ।
ब्राह्मण्यरूपविप्राणां तपस्याचतपस्विनाम् ।

-ब्रह्म वैवर्त पुराण

आप योग निद्रा-योग रूपा- योगदात्री हैं जो कि योगियों को योग प्रदान किया करती हैं । आप सिद्धों को सिद्धियों के देने वाली हैं । आप सिद्धिक्ष और सिद्धियों की योगिनी हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आप विद्वानों की विद्या और बुद्धिमान सत्पुरुषों की बुद्धि हैं । जो प्रतिभा वाले पुरुष हैं उनकी आप मेधास्मृति और प्रतिभा के स्वरूप वाली हैं ।

आप ब्रह्मा आदि समस्त देवताओं द्वारा पूजित हैं । ब्राह्मणों में ब्राह्मणत्व और तपस्वियों में तप आप ही हैं ।

वृहदारण्यक उपनिषद् में गायत्री को ब्रह्म विद्या का-वेद विद्या का- परब्रह्म शक्ति का स्वरूप बताया गया है और कहा गया है कि इस महाशक्ति का आश्रय लेकर साधक ब्रह्म तेज का अधिकारी बनता है और यह सब कुछ प्राप्त कर लेता है जो इस संसार में पाने योग्य है ।

तेजोऽसि शुक्रमस्यमृतयसि धामनायसि ।
प्रियं देवा नायना धृष्ट देव यजनयसि
गायत्र्यस्येकपदी द्विपदी त्रिपदी चतुष्पद्यपदसि
नहि पद्यते नमस्ते तुरीयाय दर्शनाय पदाय
परोरजसेऽसा वदो मा प्रापत् ।

-कृ० ५ ।१४ ।७

हे गायत्री, तुम तेज रूप हो, निर्मल प्रकाश रूप हो, अमृत एवं मोक्ष रूप हो, चित्तवृत्तियों का निरोध करने वाली हो, देवों की प्रिय आराध्य हो, पूजन का सर्वोत्तम साधन हो ।

हे गायत्री ! तुम इस विश्व ब्रह्माण्ड की स्वामिनी होने से एकपदी, वेद विद्या की आधारशिला होने से द्विपदी, समस्त प्राण शक्ति का संचार करने से त्रिपदी और सूर्य मण्डल के अन्तर्गत परम तेजस्वी पुरुषों की आत्मा होने से चतुष्पदी हो । रज से परे हे भगवती श्रद्धालु साधक सदा तुम्हारी उपासना करते हैं ।

भूलोकस्यास्य गायत्री कामधेनुर्मता बुधैः ।
लोक आश्रायणे नामुं सर्वं मेवाधि गच्छति ।।

-गायत्री मंजरी

"विद्वानों ने गायत्री को भूलोक की कामधेनु माना उसका आश्रय लेकर हम सब कुछ प्राप्त कर सकते हैं ।"

स्तुतामया वरदा वेदमाता
प्रचोदयन्तां पावमानी द्विजानाम ।
आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्ति-
द्रविणं ब्रह्मवर्चस महां दत्वा व्रजत ब्रह्मलोकम् ।

-अथर्व १९ ।३१ ।१

"द्विजों को प्रेरणा देने वाली पवित्र वेदमाता गायत्री की मैं स्तुति करता हूँ । अब मुझे आयु, बल, संतति, पशु, कीर्ति, धन, ब्रह्मवर्चस अर्थात् वेद ज्ञान देकर ब्रह्मलोक पहुँचावे ।"

गायत्र्या सर्व संसिद्धिर्द्विजानां श्रुति संमता ।

वेद वर्णित सारी सिद्धियाँ गायत्री उपासना से मिल सकती हैं ।

यद्यत्स्पृशति हस्तेन यच्च पश्यति चक्षुषा ।
पूतं भवति तत् सर्वं गायत्र्या न परं विदुः ।।

-गरुड़ पुराण

जिस-जिसका हाथ स्पर्श करता है और जो-जो नेत्र से देखता वह सभी पूत हो जाता है । गायत्री से परे अन्य कुछ भी नहीं है । यह गायत्री सर्वोपरि शिरोमणि मन्त्र है ।

"यतः साक्षात् सर्वदेवतात्मनः सर्वात्मद्योतकः सर्वात्म प्रतिपादकोऽयं गायत्री मन्त्रः ।"

"इस प्रकार यह गायत्री मन्त्र साक्षात् सर्व देवता स्वरूप सर्वशक्तिमान्, सबको प्रकाश देने वाला और परमात्मा के सर्वात्मा स्वरूप का ज्ञान कराने वाला है ।"

ओजश्शक्ति बल प्रभाव सुषमा तेजस्सु वीर्यप्रभा ।
ज्ञानैश्वर्य महस्सहो जययशस्स्थैर्य प्रतिष्ठाश्रियः।।
विज्ञान प्रतिभा मतिस्मृ तिधृति प्रज्ञाप्रथस्सु ज्वलाः ।
वर्णास्त्वन्मानुगै स्त्रिरषभि-रहो बर्ध्यन्त एवात्रमे ।।

"ओज, शक्ति, बल, महिमा, कान्ति, तेज, पराक्रम, प्रकाश, ज्ञान, ऐश्वर्य, सहनशक्ति, जय, कीर्ति, स्थिरता, प्रतिष्ठा, लक्ष्मी, विज्ञान, प्रतिभा, मति, स्मृति, धृति, प्रज्ञा ख्याति यह चौबीस गुण हे माता ! तुम्हारे मन्त्र में रहने वाले चौबीस वर्णों द्वारा मुझमें अभिवृद्धि पा रहे हैं ।"

देवीं वाचमजनयन्त देवास्तां विश्वरूपा पशवो वदन्ति
सा नो मन्द्रेषमूर्जं दुहाना धेनुर्वागस्मानुपसुष्टुतैतु ।।

-देव्युपनिषद १०

देवताओं द्वारा उत्पन्न की हुई जिस वाणी को सब बोलते हैं जो कामधेनु के समान सुखदायक है बल और धन देने वाली है, उसका हम स्तवन आराधन करते हैं ।

यतः साक्षात् सर्व देवतात्मकः सर्वात्मद्योतकः
सर्वात्मप्रतिपादकोऽयं गायत्री मन्त्रः ।

--सन्ध्या भाष्य

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यह गायत्री मन्त्र साक्षात् सर्व देवता स्वरूप सर्व-शक्तिमान, सर्वत्र प्रकाश करने वाला तथा सर्वत्र आत्मा को प्रखर बनाने वाला है ।

गायन्ति त्वा गायत्रिणोऽर्चन्त्यर्कमर्किणः ।
ब्रह्माणस्त्वा शतक्रिता उदवंशमिव येमिरे ।

-ऋग्वेद १ ।१९ ।१

मन्त्र वेत्ता मनीषी गायत्री का ही गान करते हैं । कर्मयोगी, याज्ञिक सविता की इस परम शक्ति गायत्री की ही उपासना करते हैं । वेदवेत्ता विद्वान तेरी ही यश पताका उड़ाते फिरते हैं ।

सद्बुद्धि की अधिष्ठात्री गायत्री

मनुष्य जिस विभूति के कारण अन्य प्राणियों से श्रेष्ठ है, वह विभूति है बुद्धि । परमात्मा ने मनुष्य को यह विभूति वरदान स्वरूप दी है । अन्यथा शारीरिक दृष्टि से तो वह अन्य प्राणियों की तुलना में इतना क्षुद्र बैठता है कि वह उनके सामने कहीं टिक नहीं सकता । एक बुद्धि ही है जिसके बल पर वह हिंस्र से हिंस्र पशुओं पर भी नियन्त्रण कर लेता है, उन्हें अपना यशवर्ती बना लेता है । प्रकृति पर नियन्त्रण पाने, मौसम को प्रभावित करने से लेकर जीवन में आने वाली जटिल गुत्थियों को सुलझाने तक जिस आधार पर वह सफल हो सका है, वह केवल बुद्धि ही है । बुद्धि को यदि मनुष्य का सर्वस्व कहा जाए तो भी कोई अत्युक्ति नहीं होगी । संसार के मनीषियों और सफल व्यक्तियों ने अपनी सफलता के मूल में बुद्धि को ही आधार बताया है ।

बुद्धि तो सहज रूप में सभी मनुष्यों को प्राप्त होती है । किसी को कम, किसी को ज्यादा । बुद्धि प्राप्त होने से भी अधिक महत्त्वपूर्ण है सद्बुद्धि का प्राप्त होना । बुद्धि यदि भ्रष्ट होकर कुमार्गगामी बन जाए तो वह व्यक्ति का स्वयं का पतन तो करती ही है, उसके क्रिया-कलाप समाज को भी क्षति पहुंचाते हैं । यदि मनुष्य सद्बुद्धि सम्पन्न हो तो वह अपना निज कल्याण करने के साथ-साथ समाज को भी अपनी विभूतियों से लाभान्वित करता है । गायत्री उपासना का सर्वोपरि लाभ सद्बुद्धि के जागृत और प्रखर होने के रूप में ही साधक को मिलता है ।

गायत्री महामन्त्र का सार-संक्षेप समझना हो तो उसके तृतीय चरण पर ध्यान देना होगा जिसमें सविता देव से प्रार्थना की गई है कि वे हम सब की बुद्धियों को शुद्ध करें अथवा सही दिशाधारा अपनाने की प्रेरणा भरें । यह न केवल प्रार्थना है वरन् उसमें क्षमता भी है जिससे उपासक का मनोबल, आत्मबल और बुद्धिबल बढ़ता है । जिसे इस विभूति से लाभान्वित होने का अवसर मिले । समझना चाहिए कि उसके भविष्य का हर दृष्टि से उज्जवल होने का सुयोग बन गया ।

बुद्धि भ्रष्ट होने पर मनुष्य का सब कुछ नष्ट हो जाता है । दुर्मति ही दुर्गति का प्रधान कारण है । दूरदर्शी विवेकवान व्यक्ति इस प्रकार सोचता है । जिसमें उत्कृष्टता का समन्वय है, जिसका चिन्तन सही है, उसका चरित्र भी आदर्शवादी होगा । व्यवहार सज्जनोचित बन पड़ेगा । मनःस्थिति के सज्जनोचित होने पर परिस्थितियाँ भी ऐसी बनती हैं जिनमें सुख-शांति की कमी नहीं रहती । गायत्री मन्त्र में यही विशेषता भरी पड़ी है ।

गायत्री की महिमा बताते हुए महाभारत में कहा गया है-

य एषां वेद गायत्रीं पुण्यां सर्वगुणान्विताम् ।
तत्त्वेन भरत श्रेष्ठ स लोकेन प्रणाश्यति ।।

-महा० भीष्म ४ ।१५

अर्थात् सर्वगुणों से भरी हुई वेदमाता गायत्री को जो जानता है उसका इस संसार में कभी कोई अनिष्ट नहीं होता ।

चाणक्य को लोगों ने सूचना दी कि आपके समर्थकों में से अधिकांश विपक्ष में जा मिले हैं और आपका अनिष्ट करना चाहते हैं । इस पर चाणक्य ने हँसते हुए कहा-

"मा गातु बुद्धिर्धर्म" अर्थात् सब कुछ चला जाय, एक मेरी सद्बुद्धि न जाय ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गीता में भगवान ने अपना स्वरूप गायत्री अर्थात् सद्बुद्धि बताया है । "बुद्धिर्बुद्धिमाता ह्यस्मि ।" अर्थात् बुद्धिमानों में बुद्धि मैं हूँ । "गायत्री छन्दसामहम् " अर्थात् श्रुतियों में गायत्री मैं हूँ ।

सद्बुद्धि मनुष्य की पग-पग पर सहायता करती है । उसके सहारे वह कुछ से कुछ बन जाता है ।

एक वृद्धा कुमारी ने तप किया । देवता प्रसन्न होकर प्रकट हुए और बोले वर माँग ।

उसने एक ही वर माँगा- "मैं अपने पुत्र को सोने के पालने में झूलता और दूध-भात खाते देखना चाहती हूँ ।" वर तो एक ही था पर उसमें स्वयं का युवती बन जाना-विवाह हो जाना, पुत्र होना और इतनी लक्ष्मी मिलने की याचना है कि पुत्र को सोने के पालने में झूलता हुआ देखे अर्थात् साथ में प्रचुर लक्ष्मी भी उसे मिल जाय ।

इसी प्रकार एक जन्मांध निर्धन वृद्ध की कथा है । उसने भी तप किया । देवता ने एक वर माँगने के लिए कहा- उसने माँगा - मैं अपने क्षेत्र के राज्य-सिंहासन पर अपने पौत्र को बैठते हुए देखना चाहता हूँ । इस एक ही वरदान से उसकी आँखें खुल जाना, युवा हो जाना, पुत्र-पौत्र हो जाना और राज्याधिकारी बन जाना इतने सारे लाभ मिलने की बात है ।

गायत्री को बुद्धि की देवी कहा गया है-शास्त्र कहता है कि जिसमें बुद्धि है उसी में बल है । बुद्धिहीन में बल कहाँ से आया ?

नीति वचन है कि काल ने दण्ड लेकर किसी को नहीं मारा, उसकी विवेक बुद्धि और विवेक शक्ति का अपहरण कर लिया है । इतने से ही उसका सर्वनाश हो जाता है । "विनाश काले विपरीत बुद्धि" अर्थात् जब मनुष्य का विनाश काल आता है तब बुद्धि विपरीत हो जाती है ।

हमें गायत्री मन्त्र की उपासना भी करनी चाहिए और साथ ही अपनी विवेक, बुद्धि को अधिकाधिक पवित्र एवं प्रखर बनाने में संलग्न रहना चाहिए । यह दोनों अवलम्बन अपनाने पर मनुष्य का सब प्रकार कल्याण ही कल्याण है ।

गायत्री का वाहन राजहंस

भगवती गायत्री का वाहन राजहंस माना गया है । यह उस हंस वृत्ति का प्रतीक है जिसके सम्बन्ध में शास्त्रकारों की अपनी कल्पना और मान्यता है । जलाशयों के निकट पाये जाने वाले हंस पक्षी उन गुणों से युक्त नहीं पाये जाते जिन्हें भगवती गायत्री के वाहन राजहंसों से विभूषित माना गया है ।

नीर-क्षीर विवेक राजहंसों की विशेषता है । दूध पानी मिला होने पर वे दूध पीते हैं और पानी अलग कर देते हैं । यह गुण सामान्य हंसों में नहीं पाया जाता । उन्हें दूध कौन पिलायेगा ? वे दूध कहाँ पायेंगे ? फिर यदि दूध मिल भी जाय तो उनमें पानी को पृथक करके दूध पीने की विशेषता कहाँ होती है । इसी प्रकार यह भी कहा जाता है- "कै हंसा मोती चुगै कै लंघन मरि जायँ " अर्थात् हंस या तो मोती चुगेंगे या लंघन निराहार- मर जायेंगे । अर्थात् मोती के अतिरिक्त वे कुछ और नहीं खाते । उपलब्ध हंसों पर यह उक्ति लागू नहीं होती । वे कीड़े-मकोड़े खाते हैं । मोती गहरे समुद्रों में पाये जाते हैं, उतनी गहराई तक डुबकी लगा कर जाना और मोती की सीपें तलाश करके उनका पेट चीर कर मोती पाना इन हंसों के लिए सम्भव नहीं । वे सामान्य पक्षियों जैसे ही होते हैं ।

राजहंसों का अलंकारिक रूप हंस पक्षियों जैसा चित्रित किया तो गया है पर वस्तुतः वे शुभ्र पवित्रता, विवेकशीलता एवं शालीनता के प्रतीक हैं । यह विशेषताएँ जिन व्यक्तियों में हों उन्हें हंस कहा गया है और यह माना गया है कि दिव्य सत्ता उन्हीं को अपने अनुग्रह का पात्र हंस नियत करेगी ।

हंस गुणों का वर्णन कितने ही काव्य ग्रन्थों में कितनी ही प्रकार से वर्णित किया गया है । वस्तुतः वह हंस पक्षियों पर लागू नहीं होता वरन् शालीनता युक्त श्रेष्ठ व्यक्तियों पर ही घटित होता है ।

एक वर्णन में राजहंस से कहा गया है, श्वेत जल अथवा काला जल उनके शुभ्र कलेवर को प्रभावित नहीं कर सकता । किसी भी भली-बुरी परिस्थिति में रहकर श्रेष्ठ व्यक्ति अपनी मौलिक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

शालीनता को अक्षुण्ण बनाये रहते हैं ? यही उस प्रतिपादन के पीछे अलंकारिक तथ्य है ।

एक सुभाषित है –

गांगमम्बुसितमम्बु यामुनं
कज्जलाभमुभयत्र मज्जतः ।
राजहंस तब सैव शुभ्रता
चीयते न च न चापचीयते ।।

हे राजहंस ! गंगा का जल श्वेत है और यमुना का काजल जैसा काला है । तुम दोनों में से किसी में स्नान करो, तुम्हारा अपना शुभ्र वर्ण हल्का होने की जगह अधिक निखर उठता है ।

बहुसंख्यक क्रिया-कुशल व्यक्तियों की तुलना में महानता युक्त एक व्यक्ति ही किसी देश या युग का गौरव होता है । इस तथ्य का वर्णन कवियों ने एक हंस और अनेक बगुलों के झुण्ड के साथ करते हुए कहा है ।

एकेन राजहंसेन या शोभा सरसो भवेत् ।
न सा बकसहस्त्रेण परितस्तीरवासिना ।।

तालाब में रहने वाले एक राजहंस से तालाब की जो शोभा बढ़ती है, वह किनारे पर घूमने वाले हजारों बगुलों से भी नहीं हो सकती ।

सुख-सुविधाओं के साधन एक से एक बढ़कर जहाँ-तहाँ पाये जा सकते हैं पर राजहंस प्रवृत्ति के व्यक्ति अपने लिए श्रेष्ठतम कर्त्तव्य पालन का स्थान ही चुनते हैं और नवीनताओं का, सुविधाओं का विचार न करते हुए अपने कर्म क्षेत्र में ही जमे रहते हैं । इस तथ्य का वर्णन इस प्रकार है–

अस्ति यद्यपि सर्वत्र नीरं नीरजमण्डितम् ।
रमते न मरालस्य मानसं मानसं विना ।।

यद्यपि सभी स्थानों पर कमलों से सुशोभित जलाशय विद्यमान हैं; परन्तु हंस का मन मानसरोवर के अतिरिक्त अन्यत्र कहीं नहीं रमता ।

विपन्नताओं के रहते हुए भी श्रेष्ठ व्यक्ति अपने कर्तव्य पथ को नहीं छोड़ते । भले ही उन्हें हेय स्थिति अपनाने पर कितनों का ही सहयोग या कितनी ही सम्पदा क्यों न मिले । कहा भी है–

पुरा सरसि मानसे विकचसारसालिस्खलत्
परागसुरभीकृते प्रयसि यस्य यातं वयः ।
स पल्वलजलेऽधुना मिलदनेकभेकाकुले
मरालकुलनायकः कथय रे कथं वर्तताम् ।।

जिस हंसों के राजा ने खिले हुए कमलों से झड़ते हुए पराग से सुगन्धित, मानसरोवर के जल में आयु व्यतीत की है, अब वह मेंढकों की भीड़ के कारण विक्षुब्ध पोखर के पानी में कैसे निवास करेगा ?

आश्रयदाता के प्रति कृतज्ञता, उपकारी का प्रत्युपकार, मित्र का स्नेह निर्वाह का ध्यान रखते हुए सदा उनके प्रति कोमल अभिव्यञ्जनायें रखना यह सज्जनों की विशेषता होती है । उपकारी के प्रति अनुपकार करना, मित्र के साथ विश्वासघात करना– वे सबसे बड़ा पातक मानते हैं । शास्त्र ने मित्रद्रोही को सबसे बड़ा पापी कहा है । "ब्रह्म हत्या मुच्यते पापै मित्र द्रोही न मुच्यते" "ब्रह्म हत्या करनें वाला प्रायश्चित करके पापमुक्त हो सकता है, पर मित्र द्रोही का पाप पंक से कभी छुटकारा नहीं मिलता । यह सोचकर वह मित्र कर्तव्य का पालन हर स्थिति में अनवरत रूप से करता रहता है । कवि कहता है । –

भुक्ता मृणालपटली भवता निपीतान्यम्बनि
यत्र नलिनानि निषेवितानि ।
रे राजहंस ! वद तस्य सरोवरस्य
कृत्येन केन भविताऽसि कृतोपकारः ।।

हे राजहंस ! जिस सरोवर के कोमल मृणालों का तुमने भोजन किया, जल रूपी अमृत का पान किया और नलिने का उपभोग किया, उसके उपकार का बदला कैसे चुका सकोगे ?

निन्दकों, कटुभाषियों ओर विद्वेषियों के आरोपों से विचलित न होकर अपने सन्तुलन को अक्षुण्य बनाये रहना । उनके प्रतिरोध में लगने वाली शक्ति को बचा कर अपने निर्धारित लक्ष्य में अविचल भाव से लगे रहना राजहंस की विशेषता बताई गई है ।

अपसरणमेव शरण मौन वा तत्र राजहंसस्य ।
कटु रटति निकटवर्ती वाचालष्टिट्टिभो यत्र ।।

यदि समीप बैठा हुआ कोइ टिटिभ (टिटहरी) कर्ण कठोर स्वर में निरन्तर टें-टें करता रहे, तो हंस के लिए बस दो मार्ग खुले रह जाते हैं – या तो वह वहाँ से हटकर दूसरी जगह चला जाये अथवा चुपचाप बैठा रहे ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

नीर-क्षीर विवेक की प्रख्यात विशेषता को भी कवियों ने बड़े भावपूर्ण शब्दों में स्मरण किया है-

नीरक्षीरविवेके हंसालस्यं त्वमेव तनुषेचेत् ।
विश्वस्मिन्नधुनान्यः कुलव्रतं पालयिष्यति कः ?

हे हंस ! यदि तुम्हीं नीर-क्षीर विवेक से प्रमाद करने लगे तो संसार में अपने कुल के व्रत का पालन और कौन करेगा ? जिस प्रकार गायत्री का वाहन 'हंस' नीर-क्षीर विवेक बुद्धि का परिचायक है, उसी प्रकार गायत्री मन्त्र का 'धीमहि' शब्द सद्विवेक को धारण करने की प्रेरणा प्रदान करता है और 'प्रचोदयात्' शब्द सन्मार्ग पर चलने को प्रेरित करता है । गायत्री मन्त्र द्वारा की गई परमात्मा से प्रार्थना का सार तत्व यही है- हे परमात्मन् ! हमें सद्विवेक प्रदान करो, सन्मार्ग पर ले चलो । सन्मार्ग पर चलना, सुपथगामी होना ही गायत्री साधक को अभीष्ट होता है । उच्चादर्शों एवं महान् लक्ष्यों की प्राप्ति सन्मार्गगामी बनने से ही होती है । श्रेष्ठ क्रियाकलापों का उत्कृष्ट विचारण से अन्योन्याश्रित सम्बन्ध होता है । क्रियाकलाप श्रेष्ठ होंगे० तो विचार उत्कृष्ट होंगे अथवा विचार उत्कृष्ट होंगे तो क्रियाकलाप भी श्रेष्ठ होते जायेंगे । इसी समन्वय का सुयोग मिलने पर व्यक्ति जीवन लक्ष्य को सुगमता से प्राप्त कर लेता है ।

चारों वेद गायत्री मन्त्र की व्याख्या स्वरूप प्रादुर्भूत माने जाते हैं, इसलिए गायत्री को वेदमाता भी कहा जाता है । गायत्री मन्त्र के 'प्रचोदयात्' शब्द की प्रेरणा सत्पथ गमन का वेदों में पर्याप्त उल्लेख है । उसके कुछ उदाहरण यहाँ प्रस्तुत हैं -

ऋतस्य पथा प्रेत ।

- यजु० ७ । ४५

हे मनुष्यों ! तुम सब ऋत-सत्य मार्ग से आगे बढ़ो ।

शीभं राजन् सुपथा याह्या वार्ड०

-अथर्व २० । ९४ । २

हे मेरी आत्मा ! तू उत्तम मार्ग से आगे बढ़ ।

वैदिक ऋषि को अन्य कुछ नहीं चाहिए उसकी आकांक्षा केवल श्रेष्ठ मार्ग पर आगे बढ़ने की है । वह इन्द्र से परमेश्वर से प्रार्थना करता हुआ कहता है -

मा प्र गाम पथो वयं मा यज्ञादिन्द सोमिनः ।
मान्त स्थुर्नो अरातयः ॥ *-अथर्व ३ । ११ । ५९*

हे इन्द्र ! हे परमेश्वर हम अपने सत्पथ से कभी विचलित न हों । शान्तिदायक श्रेष्ठ कर्मों से हम कभी च्युत न हों । काम-क्रोध आदि शत्रु हमें कभी पराजित न करें ।

श्रुति निकृष्ट मार्ग पर न चलने की प्रेरणा देती है, क्योंकि इसी का कुपरिणाम शोक सन्ताप अशान्ति प्रदान करने वाला होता है-

मैतं पन्थामनु गा भीम एष येन पूर्व नेयथ तन्नवीमि ।
तंम् एतत पुरुष माप्त पत्था भयं परस्ताद भयं ते अर्वाक ॥

-अथर्व० ८ । १ । १०

हे मनुष्यो ! इस तुच्छ कुटिल मार्ग का अनुसरण मत करो । यह मार्ग बहुत भयंकर है । यह अन्धकारपूर्ण है । तुम इस कुटिल अधर्म पथ की ओर मत जाओ क्योंकि यह घोर विपत्ति के गर्त में धकेलता है ।

सन्मार्ग अपनाना ही श्रेयस्कर होता है । इसलिए उसी को अपनाना बुद्धिमत्तापूर्ण है ।

सुग पन्था अनुक्षर आदित्यास ऋतं यते ।
नात्रावखादो अस्ति वः

- ऋ १ । ४१ । ४

इस संसार में सत्पथगामी के लिए जीवन यात्रा सुगम और बाधा रहित है ।

वैदिक ऋषि परमात्मा से श्रेष्ठ पथ पर ले चलने की प्रार्थना करता है ।

ॐ अग्नेनय सुपथाराये अस्मान् ।
विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् ।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ॥
ते नम उक्ति विधेम ।

-यजु० ४० । १६

हे प्रकाश स्वरूप परमात्मन् ! हमें विज्ञान, धन और ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिए सुपथ से ले चलो । आप उत्तम ज्ञानों के ज्ञाता हैं, अतः हमसे कुटिलता युक्त व्यवहार को दूर कीजिए ।

श्रेष्ठ मार्ग का वरण करना ही अभीष्ट है । उसी पर चलकर व्यक्ति अपना व्यक्तित्व विकसित करते हुए जीवन लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है । प्रचोदयात् की प्रेरणा को आचरण में उतारा जाय तभी 'असतो मां सद्गमय' असत् से विरत होकर सत् मार्ग पर चलना सम्भव होगा ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भगवती गायत्री का वाहन राजहंस जलाशयों के समीप पाया जाने वाला सामान्य हंस पक्षी नहीं वरन् अनेक दिव्य गुणों से विभूषित शालीनता सम्पन्न महामानव ही है । उसी पर दिव्य शक्तियों का अनुग्रह बरसता है । वे ही अपनी पीठ पर भगवान को प्रतिष्ठापित देखने का सौभाग्य प्राप्त करते हैं ।

ऋतम्भरा प्रज्ञा की अभ्यर्थना

गायत्री को ऋतम्भरा-प्रज्ञा भी कहा जाता है । गायत्री साधना द्वारा ऋतम्भरा प्रज्ञा की प्राप्ति होती है । ऋत (सत्) तत्व से साधक की प्रज्ञा (बुद्धि) को आपूरित कर देने वाली देवी को 'ऋतम्भरा-प्रज्ञा' कहा गया । सामान्य सी बुद्धि जब ऋत् तत्व से ओत-प्रोत हो जाती है तब उसकी संज्ञा मेधा-बुद्धि हो जाती है । सद्बुद्धि और सद्विवेक भी इसी के पर्याय होते हैं । बुद्धि में केवल सकल्पन विकल्पन होता है- सोचने-विचारने और किसी निर्णय पर पहुँचने की क्षमता होती है, लेकिन मेधा-बुद्धि में उचित अनुचित के निर्धारणोपरान्त, उचित को स्वीकारने और अनुचित को अस्वीकारने की सामर्थ्य होती है ।

इसी विवेकशीलता की प्राप्ति के लिए साधक गायत्री-साधना में प्रवृत्त होता है । गायत्री-मन्त्र ऐसे सारगर्भित शब्द समुच्चय से निर्मित है, जिसके एक-एक शब्द में अनेकों शिक्षाएँ एवं प्रेरणाएँ सन्निहित हैं । इस मन्त्र की साधना से साधक केवल शब्दोच्चारण के स्थूल लाभों से ही लाभान्वित नहीं होता, वरन् वह उसके शब्दों में सन्निहित सूक्ष्म प्रेरणाओं का भी लाभ उठाता है ।

गायत्री-मन्त्र में प्रयुक्त 'धियः' शब्द ही सद्बुद्धि का बोधक है । इस मन्त्र द्वारा परमात्मा से अन्य कुछ नहीं केवल सद्-बुद्धि सद्विवेक की ही याचना की गई है । गायत्री-मन्त्र का सारांश है -हें परमात्मन् ! हमें सद्बुद्धि प्रदान करें, सन्मार्ग पर चलायें । सन्मार्ग पर चल पाना श्रेष्ठ मार्ग का वरण कर पाना सद्बुद्धि-सद्विवेक द्वारा ही सम्भव हो पाता है । गायत्री-साधक इसी सद्विवेक मेधाशक्ति से युक्त होना चाहता है ।

मेधा-बुद्धि ही प्रत्येक तथ्य को गहराई से सोच सकती है, तदनुसार श्रेष्ठ क्रिया-कलापों का निर्धारण कर पाना उसी के सहारे सम्भव हो पाता है । इसलिए साधक प्रार्थना करता है-

'सं न शिशीहि भुरिजोरिव क्षुरम् ।'

-ऋ० ८ ।४ ।१६

प्रभो! हमारी बुद्धियों को धुरे के समान तीक्ष्ण बना दीजिए ।

परमात्मा से माँगने की यदि कोई वस्तु है, तो वह 'सद्बुद्धि' ही है, क्योंकि समस्त भौतिक व आध्यात्मिक उपलब्धियों के मूल में यही कार्य करती है । भौतिक समृद्धियाँ और आत्मिक-विभूतियाँ, विवेकशीलता से नियन्त्रित सत्प्रयासों द्वारा ही उपलब्ध होती हैं ।

'मेधा-शक्ति' ही चिन्तन में विवेकशीलता का समावेश करती है । उचित-अनुचित का विवेक कर पाना- मेधा शक्ति से सम्पन्न व्यक्ति के लिए ही सम्भव हो पाता है । गायत्री मन्त्र की साधना का यही उद्देश्य है । उसमें मेधा शक्ति धी-तत्व की अभ्यर्थना सविता-देवता से की गई है ।

अथर्ववेद की ऋचा साधक को मेधा-शक्ति से भरा पूरा रहने की प्रेरणा देती है-

मेधां सायं मेधां प्रातर्मधां मध्यन्दिनं परि ।
मेधां सूर्यस्य रश्मिभिर्वचसा वेशयामहे ।।

-अथर्व० ६ ।१०८ ।५

'हम प्रातः, मध्याह्न और सायं को सूर्य-सविता की किरणों के माध्यम से मेधा-शक्ति प्राप्त करते हैं ।

समस्त तत्वज्ञानी, आत्मज्ञानी लोक सेवी अथवा श्रेयार्थी इस मेधावी बुद्धि की ही उपासना करते हैं यजुर्वेद का साधक ऐसी ही श्रेयपथानुगामिनी 'मेधा शक्ति' की अभ्यर्थना करता है -

या मेधां देवगणः पितरश्चा पासते ।
तया मामाद्य मेधयाग्ने मेधाविन कुरू स्वाहा ।।

-यजु० ३२ ।१४

'जिस मेधा-शक्ति की देवगण, पितृगण आदि उपासना करते हैं, हे अग्नि देव ! उसी मेधा-शक्ति से हमें भी पूर्ण बना दो ।'

जिस मेधा-शक्ति को शास्त्रकारों ने अत्यधिक महत्त्व दिया है, जिसके लिए श्रेयार्थी ने परमात्मा से

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भावभरी अभ्यर्थना की है, वह मेधा-बुद्धि-सद्बुद्धि-गायत्री-साधना द्वारा सहज ही उपलब्ध हो जाती है । ऋतम्भरा प्रज्ञा का अनुग्रह साधकों को ऋतुम्भरा-प्रज्ञा के रूप में ही प्राप्त होता है ।

प्रज्ञा शक्ति के प्रभाव से मनुष्य के अन्त:करण में उस उच्चस्तरीय आस्था प्रवाह का संचार होता है जिससे जीव और ब्रह्म के बीच आदान-प्रदान की शृंखला बनती है । गायत्री को ब्राह्मी शक्ति कहा गया है । यह ब्रह्मांडीय चेतना का वह भाग है जो मानवी सत्ता को समुन्नत एवं समर्थ बनाने में अतीव महत्त्वपूर्ण है । गायत्री विद्या का उद्देश्य आत्मा और परमात्मा के बीच सम्भव हो सकने वाले आदान-प्रदानों के सन्दर्भ में अभीष्ट जानकारी प्रदान करना है । यह जानकारी जब चरितार्थ होने लगती है, गुण, कर्म स्वभाव में परिलक्षित होने लगती है तो उससे अर्जित ब्राह्मी शक्ति ही ऋतम्भरा प्रज्ञा बन जाती है ।

पौराणिक गाथाओं के अनुसार ब्रह्माजी ने गायत्री के चार चरणों की व्याख्या चार मुखों से, चार वेदों के रूप में की है । गायत्री का प्राकट्य आकाशवाणी द्वारा ब्रह्म निर्देश से, अन्त:प्रेरणा के रूप में हुआ माना जाता है । जीवन की हर समस्या का समाधान और प्रगति के हर क्षेत्र का मार्ग-दर्शन हम इस महामन्त्र में सन्निहित संकेतों के आधार पर प्राप्त कर सकते हैं । यही नहीं गायत्री की उपासना व्यक्ति में स्वयं इस प्रकार की स्थिति विकसित कर देती है कि उसका निर्मल अन्त:करण अधिकाधिक गायत्री महाशक्ति का, ऋतम्भरा प्रज्ञा का प्रवाह समाविष्ट होने लगे । प्रज्ञा रूप में गायत्री महाशक्ति की अभिवन्दना करते हुए कहा गया है- 'हे गायत्री, आप ही बुद्धिमानों में प्रज्ञा, शक्तिवानों में शक्ति बनकर निवास करती हैं । आप ही कीर्ति, क्रान्ति, तुष्टि एवं मुक्ति दायिनी हैं । आप ही वेदों का सार हैं । यज्ञ कर्मों में स्वाहा स्वधा हैं । आपका ही विस्तार आगम और निगम में हुआ है । आप ही देव पूजित संजीवनी हैं ।'

गायत्री सद्ज्ञान की गंगोत्री हैं । उसे अपनाने से अन्त:करण में सद्ज्ञान का, ब्रह्म विद्या का अवतरण होता है । ऐसा ब्रह्म चेता मनुष्य ब्राह्मण कहलाता है । ब्राह्मण अपने तेज से स्व-पर कल्याण कर सकने में समर्थ होता है । उसकी ब्रह्म तेजस्विता का स्तर ब्रह्म तुल्य हो जाता है ।

ब्रह्म ब्राह्मणे ब्रह्मविदि प्रतिष्ठितम् ।

"वह ब्रह्म ब्रह्मवेत्ता ब्राह्मण पर प्रतिष्ठित है ।"

ब्रह्म विद्या अथवा ऋतम्भरा प्रज्ञा और ब्राह्मण दोनों अन्योन्याश्रित हैं । ऋतम्भरा प्रज्ञा का अवगाहन करने वाला सच्चा ब्राह्मण बनकर रहता है और ब्राह्मण को ही ब्रह्म-विद्या, ब्राह्मी चेतना प्राप्त होती है ।

त्रिपदा गायत्री की आध्यात्मिक त्रिवेणी

गंगा, यमुना, सरस्वती ये तीन धारायें मिलकर त्रिवेणी संगम बनता है । यह संगम ही तीर्थराज है । इसी के स्नान का सबसे बड़ा पुण्य माना गया है । रामायण में तीर्थराज के स्नान-अवगाहन का पुण्यफल बताते हुए कहा गया है-

मज्जन फल देखिय तत्काला ।
काक होहि पिक बकहु मराला ।।

अर्थात् तीर्थराज के स्नान का पुण्य फल उसी समय-तत्काल दिखाई पड़ता है । उसमें विलम्ब नहीं लगता । कौए, कोयल हो जाते हैं और बगुले हंस बन जाते हैं । इस उपमा में संकेत यह है कि आकृति तो ज्यों की त्यों रहती है पर आध्यात्मिक-कायाकल्प से प्रकृति बदल जाती है ।

आध्यात्मिक त्रिवेणी- त्रिपदा गायत्री है । उसके तीन चरण मिलकर त्रिवेणी संगम बनते हैं । परब्रह्म का निरूपण करते हुए इन्हें ईश्वर की तीन सर्वोच्च विशेषता सत्-चित्-आनन्द कहा गया है । मानव-जीवन में उसकी झांकी 'सत्यं शिवं सुन्दरम्' के रूप में होती है । इनका अधिक विस्तृत तत्व ज्ञान कर्मयोग-ज्ञानयोग और भक्तियोग के रूप में किया गया है ।

मानवी सत्ता तीन भागों में विभक्त है-स्थूल शरीर, सूक्ष्म शरीर और कारण शरीर । इन तीनों को पवित्र परिष्कृत बनाने के लिए जिस दृष्टि, नीति और मर्यादा का विधान किया गया है, उन्हीं को कर्म, ज्ञान और भक्ति कहते हैं । अध्यात्म-दर्शन

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इन्हीं तीन खण्डों में विभक्त है । व्यवहार में इन्हीं तीनों का रूप धार्मिकता, आध्यात्मिकता और आस्तिकता के रूप में दृष्टिगोचर होता है । (१) धार्मिकता का अर्थ है- कर्तव्य-परायणता । धर्म और कर्म एक ही तथ्य के दो नाम हैं । धर्मनिष्ठ- कर्तव्य परायण अथवा कर्मयोगी इनमें से किसी भी शब्द का उपयोग किया जा सकता है । सद्ज्ञान-तत्वज्ञान आत्मज्ञान-ब्रह्मज्ञान में स्तर का अन्तर है । वस्तुतः वे सब आते एक ही श्रेणी में हैं । यह आध्यात्मिकता का क्षेत्र है । (२) आध्यात्मिकता अर्थात् अपने आप के सम्बन्ध में जानकारी -अपने लिए श्रेयस्कर मार्ग का चयन-विवेकपूर्ण रीति-नीति का निर्धारण (३) तीसरा क्षेत्र है-भक्तियोग, इसे आस्तिकता कहते हैं । ईश्वर की आस्था प्रकारान्तर से कर्मफल व्यवस्था पर विश्वास कराती है । सुखी रहने के लिए सन्मार्ग पर चलने और दुखी बनने के लिए अनीति अपनाने की सुनिश्चितता पर विश्वास कराती है । ईश्वर प्रदत्त जीवन धरोहर के सदुपयोग का संकेत देती है । भक्ति का अर्थ है प्रेम । ईश्वर से प्रेम करने का अर्थ है उसके बनाये पदार्थों का सदुपयोग अर्थात् प्राणियों के साथ सद्व्यवहार करना, संक्षेप में उदारता, करुणा, दया, सेवा, सहायता जैसी सद्भावनाओं के लिए 'भक्ति' शब्द का प्रयोग होता है । उच्चस्तरीय प्रेम का यही एक मात्र स्वरूप है ।

वामन अवतार ने राजा बलि से तीन कदम भूमि माँगी थी । राजा ने उसे दिया । वामन ने अपने कदम लम्बे करके इतने से ही उसका तीनों लोकों का राज नाप लिया । इस प्रसंग में त्रिपदा के मापदण्ड का संकेत है । "ईशावास्य मिदं सर्वं यत्किंन्चित जगत्यां जगत् ।" इस संसार में जो कुछ भी है वह सब ईश्वर में ओत-प्रोत है । इस तथ्य को हृदयंगम कराने के लिए भगवान ने समय-समय पर अर्जुन, यशोदा, कौशिल्या, काकभुशुण्ड आदि को अपने विराट् रूप दिखाये हैं । यह समस्त संसार गायत्री रूप है । तीनों लोक उसी की परिधि में है । सर्वत्र उसी दिव्य शक्ति को संव्याप्त देखा जाय और सम्पूर्ण जड़-चेतन सृष्टि के साथ सद्व्यवहार किया जाय, यह तत्व दृष्टि गायत्री के त्रिपदा शब्द के साथ जुड़ी हुई है । इसे अपनाकर तत्त्व ज्ञानी बन सकता है और हर घड़ी कण-कण में प्रभु दर्शन का आनन्द लेता रह सकता है ।

खगोल विद्या के अनुसार इस ब्रह्माण्ड को मध्य- नीचे-ऊपर इन तीनों भागों में विभक्त किया गया है और उन विभागों को भूः भुव : स्वः कहा गया है । इस विभाजन में ब्रह्माण्ड की सारी परिधि का समावेश है । इसे प्रकृति अथवा परमेश्वर का विस्तार क्षेत्र कह सकते हैं । इन तीन शब्दों के अन्तर्गत विराट् ब्रह्म की व्याख्या हो जाती है ।

जीव-जगत् के भी यही तीन क्षेत्र हैं । इन्हें जीव, प्रकृति और ब्रह्म कहते हैं । यही है त्रैत-विज्ञान । क्रियाशक्ति के रूप में शरीर -ज्ञानशक्ति के रूप में सूक्ष्म शरीर और भावशक्ति का प्रतीक कारण शरीर है । कारण शरीर को ही अन्तःकरण कहते हैं । इसी में आकांक्षायें, भावनायें, मान्यतायें जगी होती हैं । यही जीव-ब्रह्माण्ड है । आत्म विवेचना के लिए अध्यात्म-शास्त्र में इन्हीं तीन लोकों का वर्णन है । गायत्री मन्त्र में सन्निहित तीन व्याहृतियों में इसी जीव-चेतना का वर्णन है । ब्रह्म-विवेचना में ये तीन व्याहृतियों ब्रह्माण्ड वाचक हैं ।

सृष्टि संचालन में तीन शक्तियां काम करती हैं (१) सृजन (२) अभिवर्धन (३) परिवर्तन । इसी धुरी पर यह प्रकृति चक्र चल रहा है । 'जगत जड़ है' इसका अर्थ इतना ही है कि पदार्थों में चेतना-शक्ति नहीं है । वह चिन्तन या निर्णय नहीं कर सकता है । इतने पर भी उसमें हलचल तो है । हलचल न होती तो सर्वत्र स्थिरता दृष्टिगोचर होती । स्तब्धता छाई रहती । पर ऐसा नहीं है । हर पदार्थ हलचल करता है । उत्पन्न होता, बढ़ता और मरता है । पेड़-पौधों से लेकर प्राणियों के शरीर तक इसी प्रक्रिया में होकर गुजरते हैं । धातु पाषाण जैसी स्थिर और कठोर वस्तुयें इसी व्यवस्था में बँधी हुई हैं । गति मन्द होने से वे स्थिर लगती हैं । इन तीनों गतिविधियों के क्षेत्र जिस चेतना-शक्ति से प्रभावित और संचालित होते हैं, उसे त्रिपदा कहा गया है । गायत्री-महामन्त्र की तीन व्याहृतियों में चेतना--क्षेत्र के इस विस्तार का वर्णन है । उसे ब्रह्मा, विष्णु, महेश कहा गया है । शक्तियों का विवेचन करते हुए इन्हीं तीन आधारों को सरस्वती, लक्ष्मी और

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

काली कहते हैं । ये तीनों ही गायत्री-महाशक्ति की तीन धारायें हैं ।

तीन शरीरों में जो प्राण-विद्युत्-जीवनी शक्ति भरी रहती है उसका नामकरण-ओजस्-तेजस् और वर्चस् हुआ है । सुन्दरता, बलिष्ठता, सक्रियता, दक्षता को ओजस् कहते हैं । इसी के अनुदान से शरीर प्रतिभा सम्पन्न एवं आकर्षक लगता है । यह तत्व कम पड़ जाय तो मुर्दनी छाई रहती है, आलस्य घेरे रहता है और कुछ करते-धरते नहीं बनता । बड़ी कठिनाई से ही आधा-अधूरा काम हो पाता है । तेजस्- मानसिक प्रखरता का नाम है । कुशाग्र बुद्धि, सूझ-बूझ वाले, दूरदर्शी, विवेकवान, बुद्धिमान इसी क्षमता से सम्पन्न होते हैं । शरीर शरीर से प्रभावित होता है और मन मन से । आँखें रूप और क्रिया देखकर- कान मधुर वचन सुन-सुनकर प्रभावित होते हैं । एक शरीर दूसरे शरीर से क्या लाभ ले सकता है, यही उनके आकर्षण का आधार है । किन्तु बुद्धिक्षेत्र दूसरे की बुद्धिमत्ता, समझदारी, सुझाव, परामर्श प्रतिपादन आदि विशेषताओं से ही प्रभावित होता है । तेजस् का परिचय इसी बौद्धिक प्रखरता के रूप में मिलता है । शरीर के बलिष्ठ पहलवान और बुद्धि से सशक्त विद्वान बुद्धिमान कहलाते हैं । ओजस् शरीर में और तेजस् बुद्धि में अपनी विशिष्टता का परिचय देते हैं । साहस, शौर्य, पराक्रम, सन्तुलन संकल्प इसी शक्ति बाहुल्य का परिचय देते हैं ।

शक्ति-विवेचना में त्रिपदा-गायत्री का तीसरा चरण वर्चस् है । इसे आत्मबल, आत्मतेज कहा गया है । उत्कृष्टता, आदर्शवादिता, श्रद्धा, श्रमशील जैसी विशेषतायें इसी केन्द्र में भरी होती हैं । सदुदेश्यों के लिए भौतिक सुखों की उपेक्षा करने वाली तपस्वी प्रकृति वर्चस् की ही देन है । ब्राह्मणत्व इसी क्षेत्र में पनपता है । ऋषित्व के मणि मुक्तक इसी रत्नाकर की देन है । वर्चस् का पूरा नाम ब्रह्मवर्चस् है, इसे ब्रह्म-तेज भी कहते हैं । आत्मा के भीतर परमात्मा का अंश जितना अवतरित होता है उसी अनुपात से ब्रह्मवर्चस् का आभास मिलता है । यह वर्चस् ही देवत्व है । मनुष्य में देवत्व के प्रकट होने को वर्चस् का ही अनुदान कह सकते हैं । ओजस्, तेजस् और वर्चस् के रूप में त्रिपदा गायत्री अपना अनुग्रह चमत्कार वरदान साधक को प्रदान करती है । इन्हीं हुण्डियों को संसार के बाजार में भुनाकर सुख-साधनों की अभीष्ट वस्तुयें तथा परिस्थितियाँ खरीदी जा सकती हैं ।

शरीर का आहार अन्न, जल, वायु है । उसका विभाजन सिर, धड़ और पैरों के रूप में किया जा सकता है । लेखन कार्य में कलम, स्याही और कागज चाहिये । प्राणी जलचर, नभचर होते हैं । प्राणियों की प्रकृति सतोगुणी, रजोगुणी और तमोगुणी होती है । ये तत्व के अन्तर्गत सत्, रज, तम के आधारभूत कारण हैं । उन्हीं से पाँच तत्व पंच तन्मात्रायें आदि का उद्भव होने से इस समूचे दृश्य जगत् का निर्माण हुआ है । इस प्रकृति या ब्रह्म का यह त्रिधा अस्तित्व त्रिपदा-गायत्री का ही क्रीड़ा-क्षेत्र है । भूः भुवः स्वः तीन इन व्याहृतियों में यही संकेत है कि इस समस्त विस्तार के भीतर से वह सारतत्व उपलब्ध किया जा सकता है जो मानवी चेतना में पूर्णता तक पहुँचाने के लिए अभीष्ट है ।

यज्ञोपवीत में एक ब्रह्म-ग्रन्थि और तीन देव-ग्रन्थियाँ लगाई जाती हैं । ब्रह्म-ग्रन्थि ॐकार की प्रतीक है और तीन व्याहृतियों के रूप में तीन देवग्रन्थियाँ लगती हैं । ॐकार-व्याहृति एवं गायत्री के तीन चरणों की प्रतिमा यज्ञोपवीत रूप में बनती है । शरीर रूपी देव-मन्दिर में गायत्री माता की प्रतिमा यज्ञोपवीत रूप में ही प्रतिष्ठित की जाती है । यह प्रतिमा धातु-पाषाण की इसलिए नहीं बनाई गई कि उसे हर समय शरीर पर धारण किये रहना कठिन पड़ता । सूत की बनी गायत्री की मूर्ति को बिना किसी कठिनाई के शरीर-मन्दिर में हर समय प्रतिष्ठित रखा जा सकता है । गायत्री में सन्निहित शिक्षाओं तथा प्रेरणाओं को हृदयंगम किये रहने-कलेजे से चिपकाये रहने और उस उत्तरदायित्व को कन्धे पर रखे रहने, पीठ पर लदे रहने की आवश्यकता समझी गई । इसलिए यज्ञोपवीत का धारण-क्रम ऐसा है जिससे उसे हृदय, जिगर, पीठ और कन्धे पर लपेटा जा सकेगा । समझना चाहिए कि गायत्री में सन्निहित आदर्शों एवं मर्यादाओं में मानवी काया को सही दिशाओं में पूरी तरह जकड़ दिया गया है । यज्ञोपवीत को देवत्व का चिह्न माना

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जाता है । द्विजत्व का अर्थ है- पशु प्रवृत्तियों का परित्याग और मानवी-उत्कृष्टता का अवधारण । मनुष्य के शरीर का एक जन्म मानवी-माता के पेट से होता है । दूसरा गायत्री माता के पेट से । इस जन्म में सद्बुद्धि की-सद्भावना की प्रधानता रहती है । इस व्रतशीलता की अवधारणा ही द्विजत्व है । उसी को यज्ञोपवीत कहते हैं । गायत्री के प्रतीक चिह्न यज्ञोपवीत को धारण करना इसी व्रतशीलता को स्वीकार करने की घोषणा है ।

ॐकार एक है । वर्गीकरण करने पर उसके तीन विभेद सामने आते हैं । अ-उ-म् । इन तीनों का विस्तार तीन व्याहृतयों के रूप में हुआ है । भूः भुवः स्वः में ॐकार के तीन भागों का ही विस्तार है । इन तीन व्याहृतियाँ की विवेचना गायत्री के तीन चरणों में हुई है । गायत्री मन्त्र में आठ-आठ अक्षरों के तीन चरण सर्वविदित हैं । एक-एक चरण में तीन-तीन शब्द हैं । इस प्रकार वे नौ बन जाते हैं । यज्ञोपवीत के यही नौ धागे हैं । जिन्हें भारतीय धर्म एवं तत्वज्ञान के प्रतीक रूप में कन्धे पर धारण किया जाता है । राम और परशुराम ने संसार में जिन परम पुनीत नौ मानवी गुणों का संकेत किया है यज्ञोपवीत के नौ धागों द्वारा उनका निरन्तर स्मरण किया-कराया जाता है । इसे नैतिक प्रशिक्षण भी कह सकते हैं ।

गायत्री को वेदमाता माना गया है । वेदों की गणना चार भी होती है और तीन भी । गायत्री के चार खण्ड भी हैं और तीन भी । शीर्ष समेत गायत्री के चार चरण होते हैं और गोपथ ब्राह्मण की-गायत्री उपनिषद् में उसे चतुष्पदी भी कहा गया है । त्रिपदा तो उसका नाम प्रसिद्ध ही है । चार वेद-ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद ओर सामवेद हैं । इनमें से तीन ही प्रधान हैं । चौथा सामवेद तो उन्हीं तीनों में से गायन के उद्देश्य से संकलन भर किया गया है । उसमें स्वतन्त्र, मन्त्र तो नगण्य जितनी संख्या में हैं । दोनों ही दृष्टियों से गायत्री को वेदमाता कहना उपयुक्त है । तीन वेद माने जायें तो उनकी त्रिपदा और चार वेद माने जायें तो उनकी संज्ञा चतुष्पदी बनती है । तीनों वेदों का विषय ज्ञान, कर्म और उपासना है । इन्हीं को ज्ञानयोग, कर्मयोग और भक्तियोग कहा गया है । इनके आधार पर मानवी विपत्तियों के तीनां कारणों का निवारण होता है । विपत्ति के कारण अशक्ति, अभाव और अज्ञान हैं । इन्हीं तीनों को रावण, कुम्भकरण, मेघनाद की उपमा दी गई है । यही तीन महिषासुर, मधुकैटभ और शुम्भ-निशुम्भ हैं । त्रिपदा गायत्री की दिव्य शक्ति से इन सभी संकटों के निवारण का होना माना गया है ।

विपत्तियाँ तीन भागों में विभक्त हैं । आधि भौतिक, आधि दैविक, आध्यात्मिक । आये दिन क्रिया की अनुपयुक्तता के कारण अनाचरणों से उत्पन्न कठिनाइयाँ आधि भौतिक हैं । आधि दैविक वे हैं जो प्रारब्धवश, अप्रत्याशित रूप में दुर्घटनायें बनकर सामने आती हैं । उन पर मनुष्य का अपना वश नहीं होता और न प्रत्यक्षतः वह उनका दोषी ही होता है । तीसरा आधि आत्मिक है जो विकृत चिन्तन के कारण मनोविकारों की प्रतिक्रिया बनकर सामने खड़ी रहती है । त्रिपदा गायत्री का प्रकाश उदय होने पर उन तीनों के ही निराकरण निवारण का आधार बनने लगता है ।

महाकाल के त्रिशूल में तीन नोंकें हैं । त्र्यंबक शिव के तीन नेत्र भी हैं । इनमें पाप, ताप और अभिशाप -मल आवरण विक्षेप विनाश की परिपूर्ण शक्ति है । काल समय को भी कहते हैं । भूत, भविष्य, वर्तमान इसके ये तीन चरण हैं । भूतकाल की संचित, वर्तमान की उपार्जित और भविष्य की सम्भावित परिस्थितियों को सन्तुलित बनाने की क्षमता जिन तीन दिव्य समाधानों में विद्यमान है उन्हें महाकाल की त्रिधा गतिविधियों में जाना जा सकता है । इन्हीं क्षमताओं को त्रिपदा गायत्री कहा गया है ।

मानवी आयुष्य तीन भागों में विभक्त है । बचपन, यौवन और वृद्धता । इनकी परिस्थितियाँ समस्यायें और आवश्यकतायें एक-दूसरे से सर्वथा भिन्न हैं । एक ही जन्म में तीन योनियां भुगतना इसी को कहते हैं । शारीरिक परिवर्तन के साथ कई बार मानसिक विकास नहीं हो पाता । बचपन का बचकानापन जवानी में भी छाया देखा गया है । जवानी की लिप्सा वृद्धावस्था में भी नहीं बदलती । जबकि प्रगति के अनुरूप दृष्टिकोण और व्यवहार में भारी अन्तर किये जाने की आवश्यकता रहती है । सामयिक सद्विवेक उत्पन्न होते रहने पर ही मानव

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जीवन की सफलता सम्भव होती है । त्रिपदा-गायत्री अपनी अनुकम्पा से यथासमय उपयुक्त प्रकाश देती और इस सुर-दुर्लभ अवसर को सार्थक बनाने का अवसर प्रदान करती है ।

तत्वज्ञान का सारा क्षेत्र इन्हीं तीनों विचारणाओं-प्रेरणाओं और आस्थाओं से आच्छादित है । हलवाई की दुकान पर मिठाइयां तो अनेकों नाम रूप तथा स्वाद की होती हैं पर उन सब में अन्न, गन्ना और चिकनाई यही तीन वस्तुएँ उलट-पुलट कर प्रयुक्त होती रहती हैं । धर्म शक्ति और आप्त वचनों में अनेकों तर्क-तथ्य एवं प्रतिपादन अनेक प्रकार समझाये गये हैं । उन समस्त प्रशिक्षणों के मूल में यही सत्कर्म, सद्ज्ञान और सद्भाव की शिक्षा है । इसे त्रिपदा गायत्री का ही विस्तार कह सकते हैं ।

गायत्री उपासना से अर्जित तीन दिव्य विभूतियाँ - अमृत, पारस और कल्पवृक्ष

उपासना से ईश्वर सम्पर्क, ईश्वर सम्पर्क से आत्मबल का सम्वर्धन, आत्मबल के सम्वर्धन से सुव्यस्थित और परिष्कृत जीवन, परिष्कृत जीवन से प्रखरता प्रामाणिकता और प्रतिभा की प्राप्ति, प्रखरता से आकर्षण जनसम्मान और सहयोग, जन सहयोग से पग-पग पर सफलताएं, सफल व्यक्ति का प्रसन्न रहना और प्रगति करना, क्रम पर बढ़ती हुई भौतिक समृद्धियों और आत्मिक विभूतियों का सहज सम्पादन, विभूतिवान की जीवन लक्ष्य की पूर्णता प्राप्त करना, यही है क्रम जिसे अपना कर साधक को सिद्ध पुरुष बनने का अवसर मिलता है ।

गायत्री उपासना का तारतम्य ठीक इसी प्रकार का है । उसके माध्यम से भौतिक प्रगति की अनेकानेक उपलब्धियों का अभिवर्धन और विपत्ति बाधाओं का निराकरण यह दोनों ही प्रतिफल मिलते देखे जाते हैं । बहुधा लोग इन्हीं दो आशाओं को लेकर जप तप करते हैं । इस मार्ग पर चलने वालों में अनेकों को इस प्रकार की अदृश्य सहायता मिलती भी है जिन्हें उपासना के चमत्कार की संज्ञा दी जाती है । यह सब कैसे होता है इसमें मोटी बुद्धि तो इतना भर मानती है कि पूजा से प्रसन्न होकर देवता ने वरदान बरसाया । पर तथ्य इससे अधिक गूढ़ है । उपासना के वैज्ञानिक और भावनात्मक दोनों ही आधार ऐसे हैं जिनसे व्यक्तित्व के अन्तराल का परिष्कार होता है । इस अभिवर्धन के साथ वे विभूतियां स्वयमेव खिंची चली आती हैं जिन्हें ऋद्धि-सिद्धि के नाम से जाना जाता है ।

गायत्री को त्रिपदा कहा गया है । त्रिपदा अर्थात् तीन-पद चरण वाली । तीन शरीर, तीन लोक, तीन गुण, त्रैत ब्रह्म, तीन देव तीन शक्ति, तीन काल के रूप में इस त्रिपदा को शक्ति का विस्तार माना और विवेचन किया जाता है । इसके तीन फल हैं । अमृत, पारस और कल्पवृक्ष । त्रिपदा के यह तीन अनुग्रह तीन वरदान तत्वदर्शियों ने बताये हैं । भौतिक सम्पतियाँ और आत्मिक विभूतियाँ इन तीनों के ही अन्तर्गत आ जाती हैं । आयु, प्राण, प्रज्ञा, पशु, कीर्ति, द्रव्य और ब्रह्मवर्चस के जो सात प्रतिफल अथर्ववेद में बताये गये हैं वे सब भी इस अमृत, पारस, कल्पवृक्ष की परिधि गणना में ही समा जाते हैं ।

आधि भौतिक, आधि दैविक और आध्यात्मिक क्षेत्र की सुविधा समृद्धियों का संवर्धन और अभाव-अवरोधों का निराकरण ही हर किसी को अभीष्ट होता है । सारी सुविधा की गणना इसी परिधि में की जा सकती है । कठिनाइयों के नाम रूप का विस्तार कितना ही बड़ा क्यों न हो वस्तुतः वे सब इन्हीं आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक क्षेत्र के अन्तर्गत ही आती हैं । इन सभी के समाधान को अमृत, पारस, और कल्पवृक्ष का अलंकारिक नामकरण किया गया है । गायत्री माता के अनुग्रह से यह तीनों ही विभूतियाँ उपलब्ध होने की बात शास्त्रकार ने कही है । सुसम्पन्न सुसंस्कृत मनुष्यों को देवता कहा गया है । देवत्व आकृति के साथ जुड़ा हुआ है । गुण, कर्म, स्वभाव से उसकी परख होती है । देवताओं का निवास-स्थल स्वर्गलोक कहा गया है । इसी बात को यों भी कहा जा सकता है कि जहाँ देवता निवास करते हैं , वहाँ स्वर्गीय वातावरण बन जाता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गायत्री को स्वर्ग लोक की अधिष्ठात्री कहा गया है । उसका एक नाम कामधेनु भी है । कामधेनु का पयपान करने से देवताओं को देवत्व की प्राप्ति होती है । देवताओं के सुख-साधनों के स्रोत तीन हैं- (१) अमृत (२) पारस (३) कल्पवृक्ष । अमृत के आधार पर उन्हें आधिभौतिक और कल्पवृक्ष के आधार पर आधिदैविक सम्पदाओं की उपलब्धि होती है । त्रिपदा गायत्री की तात्त्विक उपासना में इन तीनों ही दिव्य वरदानों को स्वर्गीय अनुदानों को प्राप्त कर सकना सम्भव बताया गया है ।

अमृत का अर्थ है वह पदार्थ जिसे पीने वाला अजर-अमर बनता है । बुढ़ापा और मृत्यु उसे छोड़ कर चली जाती है । नवयौवन सदा बना रहता है । तथा आनन्द-उल्लास से अन्तःकरण सदा पुलकित बना रहता है । कहा जाता है कि यह अमृत देव लोक में है । उसे देवता पीते हैं और वह लाभ प्राप्त करते हैं जो स्वर्ग लोक के निवासियों में दिव्य शरीरधारियों में पाये जाते हैं । अमृत पदार्थ का अस्तित्व प्राणि जगत में तो नहीं ही पाया गया है । यहाँ हर वस्तु जन्मती, बढ़ती और बदलती है । बढ़ने के क्रम में ही जवानी के बाद बुढ़ापे का पल्ला बँधा है । जीर्णता को दुबारा ढालना ही परिवर्तन है, इसी को मरण कहते हैं । यह स्वाभाविक सृष्टिक्रम है । यदि अपने लोक में अक्ल रही होती तो फिर या तो नये प्राणी जन्मते ही नहीं तो काम चलता । पर यदि जन्मते तो जाते किन्तु मरते नहीं तो इस धरती पर कुछ ही समय में इतने प्राणी भर जाते कि उनके खड़े होने तक को जगह नहीं बचती । फिर उन्हें निर्वाह के साधन तो मिल ही कहाँ से पाते ?

अध्यात्म प्रसंगों में सदा चेतना धाराओं की ही चर्चा होती है । जहाँ भी प्रकाश का उल्लेख हो वहाँ जलने वाली रोशनी का नहीं, ज्ञान का ही अर्थ लिया जाता है । अमृत भी खाने-पीने की वस्तु नहीं हो सकती वह पारस और कल्पवृक्ष की तरह कोई पदार्थ न होकर चेतना की स्थिति ही है । जिसे भाव संवेदना की दिव्य भूमिका कह सकते हैं । इस स्थिति में अपने आपको शरीर नहीं आत्मा होने की मान्यता सुदृढ़, सुनिश्चित एवं परिपक्व हो जाती है और जब अपना आपा परमात्मा के उत्तराधिकारी राजकुमार के रूप में परिलक्षित होता है तो लगभग वैसी ही मनःस्थिति बन जाती है जैसी कि परमात्मा की है । इस स्तर की आत्मानुभूति में सत्यं शिवं सुन्दरम् का ही आभास मिलता है और सर्वत्र सत् चित आनन्द का मंगलमय समुद्र लहराता दीखता है ।

बुढ़ाता और मरता तो शरीर है । जब अपने शरीर से भिन्न आत्मा मान लिया गया तो फिर अजर अमर होने की अनुभूति सुनिश्चित हो जाती है । पुराने कपड़े बदलकर नये पहनने में तो बच्चे तक मोद मनाते हैं फिर मृत्यु का भय आत्म-ज्ञानी को कैसे होगा ? आत्मा तो आदि काल से अन्त तक प्रौढ़ ही रहती है उसके लिए न कभी बचपन है और न बुढ़ापा । दुःख और अभाव भी शरीर को ही कष्ट देते हैं । कुबेर और इन्द्र भी बढ़े-चढ़े वैभव आनन्द लेते रहते हैं । इस स्थिति को प्राप्त कर लेना मनुष्य जीवन की सर्वोच्च सफलता मानी जाती है । गायत्री उपासना में अमरत्व की उपलब्धि की प्रेरणा, दिशा एवं सुविधा प्राप्त है इसलिए उसे कामधेनु कहा गया है कामधेनु का दूध भी अमृत का ही एक स्वरूप माना गया है । देवता उसे पीते और धन्य बनते हैं । उसे पीने से दुर्भावनाएँ आक्रमण नहीं करतीं, ईर्ष्या, द्वेष, रोष, प्रतिशोध के कोई लक्षण दिखाई नहीं पड़ते । फलतः आकांक्षाओं की अशान्ति से सदा बचे रहते हैं । हर घड़ी मस्ती छाई रहती है । उल्लास समेटते और उमंगें बटोरते हुए उन्हें देखा जाता है ।

यह अमरत्व और देवत्व एक ही बात है । देवताओं को मनुष्य की अपेक्षा अधिक समर्थ, सम्पन्न और संतुष्ट माना जाता है । सामान्य मनुष्य की तुलना में देवत्व की अन्तः विशेषताओं से सम्पन्न व्यक्ति वस्तुतः अत्यधिक ऊँची स्थिति में होते हैं । दे देने को आकांक्षा रखना, देते रहना, देवताओं का धर्म है । आत्म-ज्ञान का अमरत्व पीने वाले व्यक्ति उपयोग के लिए लालायित नहीं रहते । जो पास होता उसे अपने से अधिक जरूरतमन्द को बांटते रहते हैं । इस कारण स्वल्प साधन रहते हुए भी आत्मा तो अपने आप में परिपूर्ण है । उसे न किसी वस्तु की आवश्यकता है और न आकांक्षा ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इसकी सही अर्थों में अनुभूति हो सके तो फिर चेहरे पर सदा तृप्ति और शान्ति ही छाई रहेगी । ऐसे लोग जीवन मुक्त कहलाते हैं, पृथ्वी के देवता समझे जाते हैं और सम्पर्क क्षेत्र में स्वर्गिक वातावरण उत्पन्न करते हैं । अमरत्व की उपलब्धि के यही लक्षण हैं ।

पारस उस पत्थर का नाम है जिसे छूने से लोहे जैसी काली कलूटी कुरूप और सस्ती धातु स्वर्ण बन जाती है । अर्थात् सुन्दर बहुमूल्य की सी चमकदार धातु । तथाकथित पारस का अस्तित्व संदिग्ध है । अभी उसके कहीं पाये जाने का प्रमाण नहीं मिला है । किन्तु अध्यात्म क्षेत्र का पारस पुरुषार्थ बहुत पहले से ही इस संसार में विद्यमान है । उसका सम्पर्क साधने वाले गई गुजरी स्थिति को पार करके द्रुतगति से आगे बढ़ते हैं और उन्नति के उच्च शिखर पर पहुँचते हैं ।

पुरुषार्थ का प्रथम चरण मानसिक है । उसे संकल्प, साहस, उत्साह आशा, उमंग आदि सृजनात्मक अन्तःक्षमताओं के रूप में जाना जाता है । उसी का दूसरा चरण वह है जिसे तत्परता और तन्मयता के रूप में आँखों से प्रत्यक्ष देखा जा सकता है । आलस्य और प्रमाद ही पिछड़ेपन का अभिशाप लादने वाले दुष्ट दैत्य हैं । वे जिस पर चढ़ते हैं उसे सदा दरिद्रता, आत्महीनता और तिरस्कार भरा पिछड़ा जीवन जीना पड़ता है । आलस्य और प्रमाद के उपरान्त तीसरा असुर है असंयम । इन्द्रियों का असंमय स्वास्थ्य को चौपट करके रख देता है । दुर्बलता और रुग्णता से ग्रसित बनाये रहता है और अन्ततः अकाल मृत्यु के मुख में धकेल देता है । अर्थ असंयम से आर्थिक कष्ट सहना ही पड़ता है । मन का असंयम उसकी सृजन शक्ति को निरर्थक कल्पना करते रहने में समाप्त कर देता है । समय का असंयम बरतने वाले अनियमित और अव्यवस्थित व्यक्ति कभी कोई महत्त्वपूर्ण काम कर ही नहीं सकते । उनके साधारण दैनिक काम भी आधे-अधूरे पड़े रहते हैं और आत्म-लज्जा से लेकर दूसरे के व्यंग्य तिरस्कार तक के आघात निरन्तर सहने पड़ते हैं ।

पुरुषार्थ का पारस जिसकी अन्तः भूमिका में उतरता है वह अपनी इन मलीनताओं को लात मार कर भगा देने के लिए संकल्प पूर्वक उठ खड़ा होता है । छाई हुई जड़ता को अर्ध मूर्छित जैसी मनः स्थिति को झकझोर कर रख देता है । नये सिरे से जीवनचर्या बनाता है और आदतों का अभिनव निर्माण करता है । यह कायाकल्प जिसे आन्तरिक पुरुषार्थ के सहारे सम्भव होता है उस उत्कृष्टता-वादी प्रगतिशील सत्साहस को प्रचंड संकल्प बल को पारस कहा गया है । इसका जहाँ उदय होगा रुग्णता, दुर्बलता, दरिद्रता, उदासी, अवमानना की लानतें सिर पर पैर रखकर भागती दिखाई पड़ेंगी । मनुष्य पर छाई हुई कुरूपता, दरिद्रता स्वाभाविक नहीं है । यह तो आन्तरिक दुर्बलताओं की प्रतिक्रिया मात्र है । जब पुरुषार्थ जागे और आदि से अन्त तक पुनर्निर्माण के लिए कमर बाँध कर तत्पर होगा तो वे बुरी आदतें जो शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक, आर्थिक, सामाजिक कठिनाइयों की मूलभूत कारण होती हैं सहज ही सुधरने लगती हैं । अपने ऊपर अपना शासन हो सके तो समझना चाहिए कि तीन-चौथाई समस्याओं का समाधान अपने आप हो गया । जो कमी रह जाती है उसे प्रबल पुरुषार्थ की उत्पादन शक्ति सहज ही पूरा करके रख देती है ।

गायत्री का शब्दार्थ है प्राण का त्राण करने वाली । 'गय' कहते हैं प्राण को और 'त्री' कहते हैं त्राण करने वाली को । प्राण अर्थात् पुरुषार्थ । जब आन्तरिक साहस, और व्यावहारिक परिश्रम का समन्वय उच्चस्तरीय उद्देश्यों के लिए जुट जाता है तो उस समन्वय के परिणाम हर क्षेत्र में चमत्कार जैसे दिखाई पड़ते हैं । पारस का महत्व इसीलिए है कि वह लोहे की तुच्छता को सोने की महानता में बदल देता है । आत्मिक पारस पुरुषार्थ भी ठीक वही भूमिका सम्पन्न करता है । गायत्री साधना से जगा हुआ आन्तरिक पौरुष जब अपने अस्तित्व को नये सिरे से सुधारने-संभालने में जुटता है तो टूट-फूट की मरम्मत करना दुर्दशाओं को शोभा-सुसज्जा में बदल देना कठिन नहीं रहता । दीपक जलने पर अंधेरा भागता है, पुरुषार्थ जगने पर अंधेरे में

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भटकता हुआ वर्तमान-उज्ज्वल भविष्य में परिणित होता हुआ दृष्टिगोचर होता है, इस आधार पर उत्पन्न हुई अगणित सुखद परिस्थितियों को देखकर उसे पारस स्पर्श की उपमा दी जा सकती है । गायत्री उपासना से जो प्रकाश मिलता और साहस जागता है उसे देखते हुए कायाकल्प की, पारस की प्राप्ति कहा जाय तो उसमें अलंकारिता तो है पर अत्युक्ति तनिक भी नहीं ।

परिष्कृत व्यक्तित्व को कल्पवृक्ष के समतुल्य माना गया है । कल्पवृक्ष स्वर्ग में है । कहा जाता है उसके नीचे बैठकर जो भी कामना की जाती है पूर्ण होती है । यह अलंकारिक रूप में परिष्कृत व्यक्तित्व का ही वर्णन है । रहस्यमय तथ्य यही है कि ओछा व्यक्ति अपनी आन्तरिक विकृतियों के कारण अपना सामान्य जीवनक्रम ओछा बनाये रहता है । उनका चिन्तन निरर्थक और अनर्थ मूलक विचारणाओं में उलझा रहता है । वह उन्हें सूझता ही नहीं, जो मनुष्य की मौलिकता में महानता का समावेश करता है और गौरव गरिमा को बढ़ाकर गगनचुम्बी बनाता है । श्रेष्ठता का सत्परिणाम तो असीम है पर खराबी इतनी ही है कि वह अति निकट कुछ फासले पर रहता है । उसे विवेक बुद्धि के सहारे ही समझ सकना सम्भव होता है । तुच्छ बुद्धि तो तत्काल का लाभ ही देखती है और जाल में फंसने वाले पक्षी की तरह, आटे की गोली के लिए जान गँवाने वाली मछली की तरह, चासनी में गिर पड़ने वाली मक्खी की तरह बेमौत मरने के सरंजाम खड़े करती है । यही है भूल-भूलैयों का खेल जिसका अनभिज्ञ आनन्द लेते और अनगढ़ बेहिसाब उलझते, और सिर धुनते देखे जाते हैं । गायत्री को सद्बुद्धि की देवी कहा गया है । यदि उसकी वास्तविक रूप में साधना की जा सके तो ईश्वर के दरबार में साधना को सद्बुद्धि का वरदान मिलता है । उस वरदान का प्रथम प्रभाव परिष्कृत व्यक्तित्व के रूप में सामने आता है । जिसे इतनी सफलता मिल गई, समझना चाहिए उसे कल्पवृक्ष की छाया में बैठने और आप्तकाम होने का सौभाग्य मिल गया । देवता आप्तकाम कहलाते हैं । उनकी सभी कामनाएँ पूर्ण रहती हैं । उन्हें अभावजन्य कभी कोई कष्ट नहीं उठाना पड़ता । इसी स्थिति को कल्पवृक्ष की सिद्धि कहा गया है ।

मनुष्य-जीवन की आवश्यकताएँ बहुत स्वल्प हैं । उसका पेट छोटा और हाथ तथा मस्तिष्क का मिला-जुला उत्पादन इतना अधिक है कि थोड़े से समय एवं श्रम से शारीरिक आवश्यकताएँ सहज ही पूरी रह सकती हैं । औसत भारतीय का निर्वाह स्तर स्वीकार हो और प्रस्तुत परिवार का उचित परिपोषण ही पर्याप्त माना जाय तो अनावश्यक कामनाओं का बोझ सिर पर चढ़ेगा और उन्हें पूरा करने के लिए उचित अनुचित रास्ते अपनाने एवं निरन्तर चिन्तित रहने की आवश्यकता पड़ेगी । यों आवश्यकताएँ तो मानवी पुरुषार्थ से अत्यन्त सरलतापूर्वक पूरी होती रहती हैं । निरर्थक कामनायें बढ़ाते चलना और उनको तुर्त-फुर्त पूरी करने के लिए व्याकुल रहना यही है मनोकामनाओं का जंजाल जिसके लिए अनगढ़ लोग निरन्तर आकुल-व्याकुल रहते और देवी देवताओं के सामने नाक रगड़ते देखे जाते हैं । देव बुद्धि के देवता लोग इस जंजाल से बचते हैं । सद्बुद्धि का आश्रय लेकर वे अपनी कामनाओं को सीमित करते और जो उचित है उनकी पूर्ति प्रबल पुरुषार्थ के सहारे सरलतापूर्वक करते रहते हैं । ऐसी दशा में उनका आप्तकाम बने रहना कल्पवृक्ष की छाया तले निवास करने जैसा आनन्द लेना सहज स्वाभाविक है । संक्षेप में सद्बुद्धि को ही कल्पवृक्ष समझा जाना चाहिए । गायत्री उपासना का मूल प्रयोजन वही है । उसका अनुग्रह जो जितनी मात्रा में प्राप्त कर लेता है वह कामनाजन्य शोक सन्तापों से सहज ही छुटकारा पा लेता है । वह निश्चिन्त रहता, निर्द्वन्द जन्य विचरता और शान्तिपूर्ण जीवन यापन करता है ।

आद्यशक्ति गायत्री का वेदमाता, देवमाता और विश्वमाता नाम भी है । (१) ज्ञान विज्ञान की अधिष्ठात्री देवी के रूप में वेदमाता । (२) शरण में आने वालों का चिन्तन चरित्र देवों जैसा बनाती है इसलिए देवमाता । (३) विश्व परिवार का बोध कराने वाली, प्राणियों और पदार्थों की जन्मदात्री, महामाया, परा प्रकृति के रूप में विश्वमाता ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इन्हीं का विस्तार पुरुष वाचक नामों में ब्रह्मा, विष्णु, महेश तथा नारी नामों में सरस्वती, लक्ष्मी, काली के रूप में है । अलंकार की भाषा में इन्हें आद्यशक्ति के पुत्र और पुत्रियाँ कह सकते हैं । इन छहों की सामर्थ्य आद्यशक्ति गायत्री की अनुकम्पा ही कही जाती है ।

गायत्री को त्रिपदा कहा गया है । उसके कई अलंकारिक नाम हैं । जैसे- पारस; कल्पवृक्ष, अमृत । क्योंकि इनसे सम्पदा, बुद्धिमत्ता और पूर्णता की प्राप्ति होती है । इन्हें आध्यात्मिक त्रिवेणी कहा गया है, जिसमें नहाकर "काक होंहि पिक, बकहु मराला" जैसा कायाकल्प सत्यं शिवं सुन्दरम् की उपलब्धि होती है ।

गायत्री उपासना कोई भी कर सकता है । जाति, लिंग का कोई भेद नहीं है । माँ की गोद में हानि का भय नहीं, कल्याण ही होता है । अनादि काल से गुरुमंत्र इसे ही माना जाता रहा है । मानव देह धारण करने वाले अवतारों, ऋषियों, महामानवों ने इसी की साधना से महान शक्ति निखारी और महान कार्यों में सफलता पायी । पूज्य गुरुदेव ने भी इसी महाशक्ति की गोद में बैठकर सिद्धियाँ पायीं । यह राजमार्ग सभी के लिए खुला हुआ है ।

माँ गायत्री के अनुदान

माँ की गोद में बालक निर्भय तो होता ही है विकसित समर्थ भी बनता है । उसके दिव्य अनुदान अगणित शक्तियाँ और सुविधाएँ देने में समर्थ हैं ।

जैसे सूर्य से ठंडक मिटना, दुर्गंध, सीलन हटना, फसल पकना, प्रकाश मिलना, आदि ढेरों लाभ मिलते हैं । पानी बरसने से सिंचाई उर्वरता बढ़ना सरोवरों का भरना, नदियों का स्तर बढ़ना आदि अनेक लाभ हैं । इसी प्रकार महाप्रज्ञा के अनुदानों के अगणित लाभ हैं । उन्हें सहस्रधारा-सहस्रनाम कहा गया है । नाम और धारा का अर्थ होता है गुण प्रभाव अनुदान ।

गायत्री महाप्रज्ञा है- मनुष्य में असाधारण विभूतियाँ भरी पड़ी हैं । महाप्रज्ञा के प्रकाश से विभूतियों के विकास और प्रयोग की विवेकयुक्त- दूरदर्शिता पूर्ण व्यवस्था बन जाती है । इसी आधार पर मां अपने साधक को अगणित संकटों से बचाती और लौकिक-पारलौकिक विभूतियों से, सम्पदाओं से निहाल कर देती है । माँ अनुचित आकांक्षाओं के बन्धन से छुड़ाकर उचित आवश्यकताओं की पूर्ति का ऐसा क्रम बनाती है कि साधक पूर्ण काम स्थिति में पहुँच जाता है । माँ की कृपा के अगणित लाभ हैं उनमें से कुछ यहाँ प्रदर्शित हैं-

पहला- सद्ज्ञान । इससे विद्या, बुद्धि, मेधा, प्रज्ञा, स्मृति, धारणा, दूरदर्शिता, आदि मानसिक-बौद्धिक विभूतियों की प्राप्ति ।

दूसरा- भव बन्धनों से मुक्ति । प्रतिकूल परिस्थितियों, दुष्ट मनोवृत्तियों, अशुभ आकांक्षाओं के बन्धन पाश से छुटकारा ।

तीसरा- भाग्योदय । पूर्व संचित भाग्य विधान में सुधार-परिवर्तन एवं उज्ज्वल भविष्य का अभिनव निर्धारण ।

चौथा- चिरस्थाई आरोग्य । असंयम एवं दुर्व्यसनों से पीछा छूटने पर स्वाभाविक आरोग्य एवं दीर्घ जीवन हस्तगत होना ।

पाँचवाँ- संकट निवारण । लोभ, मोह, विलास, अहंकार, क्रोध, छल जैसे अंतरंग तथा बहिरंग शत्रुओं से रक्षा ।

छठा- अर्थ संतुलन । आलस्य, प्रमाद, अपव्यय एवं पिछड़े दृष्टिकोण के कारण उत्पन्न दारिद्र्य एवं ऋण का निवारण ।

सातवाँ- सुखी गृहस्थ । परिवार में सत्परम्पराओं के प्रचलन से पारस्परिक स्नेह, सौजन्य एवं सुसंस्कारों की अभिवृद्धि से परिवार में स्वर्गीय वातावरण की स्थापना ।

आठवाँ- सुसंतति । संतान के स्वस्थ, सुसंस्कृत, बुद्धिमान, सच्चरित्र एवं समुन्नत होने के आधारभूत सिद्धान्तों का गायत्री कृपा से हृदयंगम होना तथा व्यवहार में क्रियान्वित होना ।

नौवाओ- भव सागर से उबारना । मनोविकारों, अन्धविश्वासों एवं अनीति आचरण के फलस्वरूप उत्पन्न होने वाले अनेकानेक संकटों का निवारण ।

दसवाँ- दिव्य दृष्टि, दिव्य विभूति । दूर श्रवण, दूरदर्शन, विचार प्रेरणा, भविष्य ज्ञान जैसी अतीन्द्रिय क्षमता का जागरण ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ग्यारहवाँ- सर्वतोमुखी उत्कर्ष । ऊर्ध्वगमन अभ्युदय । भौतिक क्षेत्र में आगे बढ़ना । अध्यात्म क्षेत्र में ऊँचा उठना ।

बारहवाँ- स्वर्ग लोक में आधिपत्य । उत्कृष्ट दृष्टिकोण-श्रेष्ठ आचरण, गुण, कर्म, स्वभाव में उत्कृष्टता का अभिवर्धन । इस आधार पर मिलने वाले सहज उपहार आत्मदर्शन ईश्वर दर्शन के अजस्र आनन्द का रसास्वादन ।

त्रिपदा गायत्री का विकास विस्तार

गायत्री को त्रिपदा कहा गया है । उसके तीन चरण हैं । छन्द शास्त्र की दृष्टि से आठ-आठ अक्षरों के तीन चरण जिसमें हों उसे गायत्री कहते हैं । यह गीत रचना की बात सामान्य है । गहरी शोध करने पर इस त्रिपदा में अनेकों रहस्य भरे हुए मिलते हैं । उन्हें समझने से यह पता चलता है कि किन कारणों से नामकरण किया गया । त्रिपदा के रूप में अनेक स्थानों पर गायत्री का उल्लेख किया है ।

-त्रिपदा गायत्री ताण्डच० ।५ ।४

गायत्री के तीन चरण है ।

गायत्रस्य समिधस्तिस्त्र आह, स्ततो मन्हा मरिरिचे महित्वा ।

- ऋग्वेद ।१६४ ।२५

त्रिपदा गायत्री जीवन की तीन समिधाएँ हैं जिनके जानने से जीवन यज्ञ पूरा होता है । शैशव, यौवन और वृद्धावस्था यह तीन ही जीवन समिधाएँ हैं जिन्हें गायत्रीमय होना चाहिए ।

गायत्री त्रिपदा देवी त्र्यक्षरी भुवनेश्वरी ।
चतुर्विंशाक्षरा विद्या सा चैवाभीष्ट देवता ।

-रुद्रयामज तन्त्र

गायत्री तीन चरण वाली विश्व की स्वामिनी और तीन अक्षर (ओ३म्) वाली है । चौबीस अक्षर वाली यह गायत्री अभीष्ट फल देने वाली देवी है ।

शब्द को ब्रह्म कहा गया है । सृष्टि के आदि में भगवान शब्द रूप में प्रकट हुए । लीला करने की इच्छा ब्रह्म ने की । यह इच्छा ही उनकी पत्नी बन गई । प्रकृति रूपी घड़ियाल पर ब्रह्म की चोट पड़ने से ॐ की झंकार हुई । यह शब्द ब्रह्म है । सृष्टि का आरम्भ यहीं से होता है । ॐ से तीन धाराएँ निसृत हुईं । इन्हीं तीनों को त्रिपदा कहते हैं । स्थूल रूप में यही तीन चरण तीन लोक बने । स्थूल रूप से इन्हें सत्-चित-आनन्द के तीन गुण कह सकते हैं । भगवान का नाम सच्चिदानन्द है । सत्-चित् आनन्द, सत्यं-शिवं-सुन्दरम्, सत-रज-तम की त्रिधाराओं में इनका विवेचन ब्रह्म विद्या शास्त्र में हुआ है । इन तीन धाराओं का तीन देवियों, तीन व्याहृतियों एवं अन्यान्य कितने ही त्रिकों के रूप में विवेचन हुआ है ।

ओंकारद् व्याहृतिर्भवति, व्याहृतितो गायत्री भवति, गायत्र्याः सावित्री भवति, सावित्र्याः सरस्वती भवति, सरस्वत्या वेदा भवन्ति, वेदेभ्यो लोकाः ।

गायत्री हृदय हुई । व्याहृतियों से गायत्री । गायत्री से सावित्री, सावित्री से सरस्वती, सरस्वती से वेद और वेद से लोक उत्पन्न हुए ।

गायत्री सावित्री और सरस्वती के नाम से इस एक ही महाशक्ति के तीन स्तरों को जाना जा सकता है । गायत्री अर्थात् ऋतम्भरा प्रज्ञा-आत्म शक्ति ब्रह्म तेजस् । सावित्री अर्थात् दूरदर्शी सूक्ष्म अन्वेषिणी, नीर क्षीर विवेचनी विवेक बुद्धि । सरस्वती अर्थात् कला कुशलता सृजनात्मक शिल्प प्रक्रिया । गंगा-यमुना-सरस्वती की तीन धाराएँ मिलने से तीर्थराज प्रयाग का उद्भव हुआ है । इसी प्रकार कई प्रकार के त्रिक इस महामन्त्र में समाविष्ट हैं । तीन लोक, तीन देव, तीन यज्ञाग्नियाँ, तीन गुण, आदि को त्रिविक्रम नाम से सम्बोधित किया गया है । इन्हें भगवान विष्णु के तीन चरण कह सकते हैं । इन तीनों का समन्वय गायत्री के तीन चरणों से हुआ है । ॐकार में अ, उ, म्, यह तीन वर्ग हैं । व्याहृतियों में भूः भुः स्वः यह तीन भाग हैं । गायत्री के तीन चरण सर्वविदित हैं । यह त्रिधा प्रक्रिया की समन्वित महाशक्ति को त्रिपदा गायत्री कहते हैं । उसकी उपासना से आत्म- बल, बुद्धि बल, और समृद्धि-बल उपलब्ध होता है । समृद्धि बल के अन्तर्गत शारीरिक सुहृदयता और धन वैभव की सम्पन्नता के दोनों वर्ग गिने जाते हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

''इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्– मन्त्र में इन तीनों भुवनों को विष्णु के तीन चरण माना गया है । इस समस्त विश्व को तीन भुवनों का संयुक्त रूप माना गया है । ऋग्वेद के १।१५४।२ मन्त्र हैं ।' 'यस्योरूषु त्रिषु विक्रमेणध्व धिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा'' इसमें पृथ्वी, अन्तरिक्ष और द्यौः को तीन लोक विश्व भुवना कहा गया है । विष्णु के यही तीन चरण हैं । इस परिधि को तीन योजन की यात्रा भी बताया गया है । 'विश्व रूप्यं त्रिषु योजनेषु' इसमें ऋग्वेद १।१६४।९ के मन्त्र में इस परिधि को तीन योजन कहा गया है ।

गायत्री रहस्योपनिषद में वर्णित गायत्री के तीन चरणों का विस्तार इस प्रकार है–

देव– अग्नि, वायु, सूर्य
अग्नि– आहवनीय, गहिपत्य, दक्षिणाग्नि
वेद– ऋक्, यजु, साम,
लो– भूः, भुवः स्वः
काल– प्रातः, मध्याह्न, सायं,
गुण– सत्व, रज, तम
अवस्था– जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति
आदित्य–वसु, रुद्र, आदित्य
छन्द– गायत्री, त्रिष्टुप, जगति
त्रिदेव– ब्रह्मा, विष्णु, महेश
शक्ति–इच्छा, ज्ञान, क्रिया
ब्रह्म–स्वराट् , विराट्, वषट्

व्याहृति शब्द की निष्पत्ति है–

''वि+आ+हृ+क्तिन् इसका अर्थ है–उच्चारण, कथन, वर्णन तथा मंत्र विशेष'' शब्द कल्पद्रुम भा० ४ पृष्ठ ५५२ पर तथा वाचस्यत्यम् षष्ठो भाग– पृष्ठ ४९८९ पर यही अर्थ किया गया है । श० ब्रा० १।११।१३–२।५।१३१।१।१।२–१२।८।१तथा ता० ब्रा० में ४ ।२ ।१८ पर व्याहृति शब्द की इसी प्रकार विवेचना है ।

वेदों में यजुर्वेद संहिता के मन्त्र में गायत्री के साथ व्याहृतियाँ भी जुड़ी हुई हैं । अन्य वेदों में मात्र २४ अक्षर वाला गायत्री मन्त्र ही है ।

तै० आरण्यक के ७।५।१।३ में कहा गया है जो व्याहृतियों का रहस्य जानता है देवता उसे बलि का पुण्य–फल प्रदान करते हैं ।

व्याहृतियों का उल्लेख उपनिषदों में अनेक स्थानों पर हुआ है । तै० उपनिषद में तै० आ० के ७।५१।१–३ को ज्यों का त्यों उद्धृत कर लिया गया है । छान्दोग्य उपनिषद के ४।१७।३ में तीन व्याहृतियों को तीन वेदों का मूल माना गया है । यह उद्धरण एत० ब्राह्मण के ५।३२ के समान ही है । एतरेय ब्राह्मण के २।३२ में की श्रुति है–

भूरग्नि ज्योतिरग्निरिति प्रातः सवनस्य चक्षुषी । इन्द्रो ज्योतिर्भुवो ज्योतिरिन्द्र इति । माध्यन्दिनस्य सवतस्य चक्षुषी । चक्षुष्मद्भिः सवनैः स्वर्ग लोक मोतिय एवं वेद ।

अर्थात् तीन व्याहृतियाँ क्रमशः अग्नि, इन्द्र, और सूर्य की प्रतिनिधि हैं । वे ज्योतिर्मय हैं । वे प्रातः मध्यान्ह और सायं के रूप में आदित्य के तीन नेत्र हैं । वे सविता देव सर्वत्र ज्योतिर्मय प्राणों का संचार करते हैं ।

वौधायन श्री सू० २७।३।४ में गौ० ब्रा० १।१। की तरह ही उल्लेख है–'व्याहृतिभिः यज्ञस्य विशिष्ट शमयति' अर्थात् यज्ञ प्रयोजन में रही हुई त्रुटियों का निराकरण कर सकने की सामर्थ्य से मुक्त होने के कारण उन्हें व्याहृति कहा जाता है । आगे वोधायन के ही २७।३।४ में कहा गया है कि समस्त यज्ञ ॐकार सहित व्याहृतियों में समाहित हैं । उनके प्रयोग से यज्ञ पूर्ण होते हैं । ताण्डव ब्राह्मण के २।२।४।१–३ में व्याहृतियों की उपासना को समस्त कामनाओं की पूर्ति करने वाली तथा समृद्धियाँ देने वाली कहा गया है । शांखायन ब्राह्मण के ६।१२ में व्याहृतियों समेत अग्नि होत्र करने का विधान है और उन्हें प्रायश्चित्य प्रयोजन में प्रयुक्त करने का निर्देश है । इस उपासना में शारीरिक रोगों से निवृत्ति का भी संकेत है ।

पीछे से बने कई ग्रन्थों में चार सात अठारह एवं तैंतीस व्याहृतियों का वर्णन है पर वेद तथा वेदांग के रूप में जानने वाले ग्रन्थों में तीन व्याहृतियों का उल्लेख है । कितने ही आर्ष ग्रन्थों में विभिन्न प्रसंगों में व्याहृतियों की चर्चा है । का० या० श्रौ० सू० २।१।६–१९ में गोमिल १।८।१५–२ ।१०। १४ में आश्वि० श्रौ० सू० २, १४, २८ में निसक्त १३ । ९ में पाणिनि अष्टाध्यायी८। २। ७१ । ५६ में आश्व ग्रह० सू० ३।४।८ में गोमिल सू० २।१।४० में

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मात्र तीन व्याहृतियों की ही चर्चा है । मन्त्र तीन प्रकार के होते हैं-(१) शक्ति परक (२) अर्थ परक (३) प्रार्थना । शक्ति परक मन्त्रों में बीजाक्षरों को गिना जाता है । उनमें शब्द शक्ति ही आधार है । ह्रीं, श्रीं, क्लीं, ऐं, हुँ, यं, वं, रं आदि बीज मन्त्र अर्थ का प्रकटीकरण नहीं करते । इनमें उच्चारणों से उत्पन्न ध्वनि के दिव्य प्रभाव का ही महत्त्व है । दूसरे वर्ग के मन्त्र वे हैं जिनमें शिक्षाएँ और प्रेरणाएँ भरी पड़ी हैं । वेद मन्त्रों में अधिकांश इसी प्रकार के हैं । उनमें सन्निहित ज्ञान को मन्त्रार्थ जानने के उपरान्त ही समझा जा सकता है और तभी उस मार्ग-दर्शन को कार्य रूप में परिणत करके लाभ उठाया जा सकता है ।

प्रार्थनापरक मन्त्र वे हैं जिनमें जीव और ईश्वर के बीच भावनात्मक आदान-प्रदान है । बन्धन मुक्त होकर परमानन्द प्राप्त करने के लिए जीव अपनी आकुलता व्यक्त करता है और परमेश्वर यह आश्वासन देता है कि पवित्रता की मात्रा बढ़ाते चलने के अनुपात से वह उसे प्राणप्रिय होता चला जायगा ।

गायत्री मन्त्र में यह तीनों ही विशेषताएँ विद्यमान हैं । भुः भुवः स्वः को तीन बीज मन्त्र समझा जा सकता है और शेष २४ अक्षरों वाले तीन चरणों को अर्थ परक माना जा सकता है ।

इस शब्द शृंखला में प्रेरणा और पवित्रता की याचना है और यह संकल्प है- उसके वरेण्य का भर्ग अन्तःकरण में धारण किया जायगा । शिक्षा तो स्पष्ट ही है देवस्य के अनुरूप देव जीवन जीने का मार्ग दर्शन अति स्पष्ट है । इस प्रकार इस महामन्त्र में शक्ति शिक्षा एवं प्रार्थना के तीनों तत्व विद्यमान हैं ।

प्रार्थना को भक्तियोग, शिक्षा को ज्ञान योग और शक्ति उद्भव को कर्म योग कहा गया है । योगत्रियै के तीनों तत्वों का गायत्री के तीनों चरणों में समावेश है ।

तीन व्याहृतियों में ईश्वर द्वारा जीव को तीन प्रकार का सहयोग मिलने का आश्वासन है । भूः अर्थात् जीवन देने वाला । भुवः अर्थात् रक्षा करने वाला । स्वः अर्थात् ऐश्वर्य दाता । यह तीन उपलब्धियां जिसे जितनी मात्रा में मिलती जाती हैं वह उसी स्तर का सिद्ध पुरुष महामानव बनता जाता है । भूः में जिस जीवन दान का आश्वासन है उसे आत्म बल अथवा ब्रह्म तेजस् कह सकते हैं । भुवः में जिस संरक्षण का संकेत है वह ऋतम्भरा प्रज्ञा द्वारा विनिर्मित अभेद्य दुर्ग है जिसके भीतर रहने वाले किसी को शोक संताप द्वारा आघात नहीं पहुँचाया जा सकता है । इस कवच से जो आच्छादित है उस पर आधि व्याधि का आक्रमण नहीं हो सकता । स्वः में ऐश्वर्य दान का संकेत है । सुविकसित व्यक्तित्व को कभी भी अभावग्रस्त नहीं रहना पड़ता । सफलता सत्प्रवृत्तियों की अनुचरी है । प्रकाश के पीछे-पीछे छाया फिरती है और प्रखर प्रतिभावान जहाँ भी रहते हैं वहीं ऐश्वर्य उनके सामने हाथ बांधे खड़ा रहता है ।

व्याहृति भाग को प्रथम चरण कहा गया है । इसमें ईश्वर की उपासना का महात्म्य वर्णन है । शेष तीन चरणों को कर्मयोग, ज्ञानयोग और भक्तियोग का मार्गदर्शन कह सकते हैं ।

'तत्सवितुर्वरेण्यं के द्वितीय चरण में उस तेजस्वी सविता के वरण करने का संकल्प है । यह साहस भरा कदम कर्मयोग हुआ ।' ''भर्गो देवस्य धीमहि '' यह तृतीय चरण है । इसमें उस परम प्रज्ञा को अन्तःकरण में धारण करने का निश्चय है, इसे ज्ञान योग कहा जायगा । ''धियो योनः प्रचोदयात्'' इसमें आकुल प्रार्थना है । इसे भक्तियोग का बीज सूत्र माना जायगा ।

त्रिपदा गायत्री की महिमा गरिमा

आत्मिक प्रगति और आध्यात्मिक स्तर को ऊँचा उठाने के लिए उपासना भी उतनी ही आवश्यक है जितनी कि शरीर रक्षा के लिए पौष्टिक खाद्य वस्तुएँ । प्राचीन काल में इस ओर पर्याप्त ध्यान दिया गया था तथा आध्यात्मिक प्रगति के सभी इच्छुक जनों को उपासना, आत्मशोधन और परमार्थ की त्रिविध प्रक्रिया अपनानी पड़ती थी । भारतीय मनीषियों ने इसके लिए गायत्री साधना को ही सर्वोपरि सार्वभौम साधना बताया है तथा उसे प्रत्येक व्यक्ति के लिए अनिवार्य धर्मकृत्य बताया तथा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उसे प्रत्येक व्यक्ति के लिए अनिवार्य धर्मकृत्य बताया गया है । इस सन्दर्भ में महर्षि मनु ने निम्न निर्देश दिया है-

अकारं चाप्युकारं च मकारं च प्रजापतिः ।
वेदमयान्निरदुहद् भूर्भुवः स्वरितीति च ॥
त्रिभ्यं एव तु वेदेभ्यः पाद पादमदूहत् ।
तदित्यृचोऽस्याः सावित्र्याः परमेष्ठी प्रजापतिः ॥
एतदक्षरमेतां च जपन् व्याहृतिपूर्विकाम् ।
सन्ध्ययोर्वेदविद् विप्रो वेदपुण्येन युज्यते ॥
सहस्र कृत्वस्त्वभ्यस्य बहिरेतत् त्रिकं दिजः ।
महतोऽप्येनसो मासात् त्वचेवाहिर्विमुच्यते ॥
एतयर्चा विसंयुक्तः काले च क्रियया स्वया ।
ब्रह्म समिय विद्ययोनिर्गर्हणां याति साधुषु ॥
ओंकारपूर्विकास्तिस्त्रो महाव्याहृतयोऽव्ययाः ।
त्रिपदा चैव सावित्री विज्ञेयं ब्रह्मणो मुखम् ॥
योऽधीतेऽहन्यहन्येतां त्रीणि वर्षाण्यन्द्रितः ।
स ब्रह्म परमभ्येति वायुभूतः खमूर्तिमान् ॥
एकाक्षरं परं ब्रह्म प्राणायामः परं तपः ।
सावित्र्यास्तु परं नास्ति मौनात्सत्यं विशिष्यते ॥

प्रजापति ब्रह्मा ने ऋग्-पद्य, यजु-गद्य, साम-गानमय तीनों वेदों से अकार, उकार और मकार (अ, उ, म) तथा भूः भुवः स्वः का दोहन किया । परमश्रेष्ठ प्रजापति ने तीन वेदों से 'तत्स वितुर ..... । इस गायत्री मन्त्र के एक-एक पाद का दोहन किया । इस ओम् अक्षर और भूः भुवः स्वः रूपी सावित्री ऋचा को प्रातः सायं दोनों संध्याओं में जपने वाला विप्र मेधावी तथा वेदाध्ययन के पुण्यों से युक्त हो जाता है । एक माह बाहर रहकर प्रतिदिन एक हजार गायत्री मन्त्र जपने वाला ब्राह्मण भारी पापों से भी मुक्त हो जाता है । जैसे सर्प केंचुली से छूट जाता है । इस सावित्री मन्त्र के जप से रहित तथा अपने कर्तव्यों का पालन न करने वाला द्विज सज्जनों में घृणा का पात्र बनता है । ओंकार सहित तीनों महाव्याहृतियाँ तथा सावित्रीमन्त्र वेद का मुख कहा गया है, जो व्यक्ति आलस्य का परित्याग कर जप करता है वह प्राणवान् होकर आकाश की भांति निर्लिप्त होकर परब्रह्म को प्राप्त कर लेता है । एकाक्षर ओम् परब्रह्म की प्राप्ति करने का साधन है । प्राणायाम श्रेष्ठ तप है । सावित्री गायत्री मन्त्र से अन्य कुछ भी श्रेष्ठ नहीं है । मौन की अपेक्षा सत्य में अधिक विशेषता है ।

गायत्री को त्रिपदा कहा गया है । त्रिपदा अर्थात् तीन पद वाली- तीन चरण वाली । 'ॐ' प्रणव है, "भूः भुवः स्वः" व्याहृति है । इसके बाद गायत्री मन्त्र के तीन पद इस प्रकार हैं- पहला पद 'तत्सवितुर्वरेण्यं' दूसरा पद 'भर्गोदेवस्य धीमहि' तीसरा पद 'धियो योनः प्रचोदयात् ।' इन तीनों पदों को मिलाकर गायत्री मन्त्र बना है ।

गायत्री के तीन पदों का अर्थ विश्लेषण भी शास्त्रों में समझाया गया है । गोपथ ब्राह्मण की चौतीसवीं कंडिका में गायत्री की महत्ता बताते हुए प्रथम पद का विश्लेषण इस प्रकार है -

ब्रह्म हेदं श्रियं प्रतिष्ठामायतनमैक्षत् ।
तत् तपस्वः यदि तद् व्रते धियेत् ।
तत्सत्ये प्रतिष्ठितं । स सविता सावित्र्या ब्राह्मणं
सृष्ट्वा तत्सावित्री पर्य्यदधात् तत्सवितुर्वरेण्यम्
इति सावित्र्याः प्रथमः पादः ।
पृथिव्यर्चं समदधात्, ऋचाऽग्निम्, अग्निनाश्रियम्,
श्रिया स्त्रियम, स्त्रिया मिथुनम, मिथुने प्रजाम् ,
प्रजया कर्म्म, कर्म्मणा तपः, तपसा सत्यम्,
सत्येन ब्रह्म, ब्रह्मणा ब्राह्मणाम्, ब्रह्मणेन व्रतम् ।
व्रतेन वै ब्राह्मणः संशितोभवत्यशून्यो भवति,
अविच्छिन्नो भवति अविच्छिन्नोऽस्य तन्तु,
अविच्छिन्न जीवनं भवनं भवति, य एवं वेद यश्चैव
विद्वान एवमेतं सावित्र्याः प्रथमं पादं व्याचष्टे ।

ब्रह्म ने स्वयं ही सावित्री (गायत्री) की प्रतिष्ठा व गरिमा को स्वीकार किया है । इसे समझने के लिए नियम और व्यवस्थापूर्वक यदि तप करने में प्रवृत्त हो सको, तो करो । साथ ही यह विशेष तप के सहारे ही स्थिर रह सकता है । इस सविता (सूर्य) देवता ने सावित्री द्वारा ब्राह्मण की रचना करके उस सावित्री को धारण किया । 'तत्सवितुर्वरेण्यम्' (अर्थात् विशेष तप द्वारा ग्रहण करने योग्य) यह सावित्री का पहला चरण (ब्रह्मविद्या का प्रथम सोपान) है । पृथ्वी से ऋचा, ऋचा से अग्नि, अग्नि द्वारा सौन्दर्य, सौन्दर्य से स्त्री, स्त्री द्वारा दम्पत्ति, दम्पत्ति द्वारा सन्तान, सन्तान से कर्म, कर्म के साथ तप, तप से सत्य, सत्य से ब्रह्म अर्थात् ज्ञान,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म-ज्ञान से ब्राह्मण, ब्राह्मण के साथ व्रत अर्थात् तप निरत दिनचर्या व्रत द्वारा ही ब्राह्मण परिशुद्ध होता है, निर्दोष होता है, (उस ब्रह्म तेज से) अविच्छिन्न (युक्त) होता है जो इस प्रकार जान लेता है और जानकर (गायत्री) सावित्री के प्रथम चरण की व्याख्या करता है । (वह ब्रह्मतत्व से युक्त हो जाता है) ।

द्वितीय पद का अर्थ विवेचन करते हुए गोपथ ब्राह्मण के पैतीसवें कण्डिका में कहा गया है-

भर्गो देवस्य धीमहि सावित्र्या द्वितीय: पादः । अन्तरिक्षेण यजुः समदधात्, वजुषां वायुं, वायुनाऽभ्रम, अभ्रेण वर्षम्, वर्षणोषधिवनस्पतीन्, ओषधिवनस्पतिभिः, पशून, पशुभिः कर्म्म, कर्म्मणां तपः, तपसा सत्यं, सत्येन ब्रह्म, ब्रह्मणा ब्राह्मणं, ब्राह्मणेन व्रतं, व्रतेन वै ब्राह्मणः संशितोभवति, अशून्यो भवति, अविच्छिन्नो भवति, अविच्छिन्नोऽस्य तन्तुः अविच्छिन्नं जीवनं भवनं भवति, य एवं वेद, यश्चैवं विद्वानेवमेवं सावित्र्या द्वितीयं पादं व्याचष्टे ।।

देव के भर्ग (तेज को धारण करे, यह गायत्री मन्त्र का द्वितीय पाद है । अर्थात् तप के उपरान्त ध्यान द्वितीय चरण है । भगवान ने यजु का सम्बन्ध अन्तरिक्ष से स्थापित किया । अन्तरिक्ष के साथ वायु, वायु का बादल से, बादल के द्वारा वृष्टि को, वृष्टि से औषधि वनस्पतियों को, औषधि वनस्पतियों से पशुओं को, पशुओं से कर्म को, कर्म द्वारा तप, तप से सत्य, सत्य से ब्रह्म, ब्रह्म द्वारा ब्राह्मण तेजस्वी होता है तथा दोष रहित हो जाता है और अविच्छिन्न हो जाता है । इसका तन्तु अविछिन्न होता है । जो मनुष्य इस रहस्य को समझ लेता है और ऐसा समझ कर गायत्री के द्वितीय पाद का इस प्रकार उपदेश देता है उसका जीवन प्रतिष्ठायुक्त एवं सुख साधनों से भरपूर रहता है ।

गोपथ ब्राह्मण के छत्तीसवें कण्डिका में गायत्री मन्त्र के तीसरे पाद की व्याख्या है-

'धियो योनः प्रचोदयात् इति'

सावित्र्यास्तृतीयः पादः । दिवा साम समदधात्, साम्नादित्यम्, आदित्येन रश्मीन्, रश्मिभिर्वर्ष, वर्षेण .....।

वह सविता देव हमारी सद्बुद्धि तथा क्रियाओं को सन्मार्ग पर प्रेरित करें । यह सावित्री का तीसरा पाद है । भगवान ने साम को द्यौ से जोड़ दिया । साम के साथ रश्मियों को, रश्मियों के द्वारा वर्षा को जोड़ दिया था ।

इस प्रकार तप, ध्यान और सत्कर्मों के द्वारा गायत्री के वे सभी लाभ उठाये जा सकते हैं जिसका उल्लेख अथर्ववेद में इस प्रकार किया गया है-

स्तुता मन्त्रा वरदा वेदमाता प्रचोदयताम् । आयुः प्राणः प्रजा पशुं कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चसम् महादत्वा ।

अर्थात्-मेरे द्वारा स्तवन की गई वेदमाता गायत्री मुझे आयु, प्राण, मनोबल, प्रजा (लोक श्रद्धस) पशु (सम्पत्ति) कीर्ति, धन और ब्रह्मवर्चस प्रदान करे ।

भली भाँति ठीक प्रकार श्रद्धा निष्ठापूर्वक की गई गायत्री उपासना दिव्य वरदान अपने उपासकों को प्रदान करती है, इसमें कोई सन्देह नहीं है ।

त्रिपदा गायत्री का रहस्य

गायत्री महामन्त्र को त्रिपदा कहा गया है । इसके कई कारण हैं । एक तो यही कि इस महाशक्ति का आधिपत्य दैहिक, दैविक और भौतिक तीनों ही क्षेत्र में व्याप्त है । कहा जाता है कि भगवान वामन ने तीन चरणों में राजा बलि के तीनों लोकों में फैले राज्य को माप लिया था । गायत्री के तीन चरण तीनों लोकों में व्याप्त हैं । अर्थात् उनके प्रभाव से तीनों लोकों में अपनी स्थिति सुख-शान्तिमय बनाई जा सकती है । तीनों लोकों से सामान्यतः आकाश, पाताल और पृथ्वी का आशय समझा जाता है । पर यहाँ तात्पर्य दैविक, दैहिक और भौतिक क्षेत्र से है । गायत्री का प्रकाश इनमें से जिस क्षेत्र में भी पहुँचता है उसमें ही आनन्द और उल्लास की परिस्थितियाँ उत्पन्न हो जाती हैं ।

गायत्री विद्या के आचार्यों का यह मत भी है कि इस उपासना का प्रभाव मनुष्य के स्थूल, सूक्ष्म और कारण तीनों शरीरों पर पड़ता है इसलिए उसे त्रिपदा कहा गया है । स्थूल का शक्ति केन्द्र नाभि चक्र में है । उसे रुद्र ग्रन्थि कहते हैं । भूः का उच्चारण इसे प्रभावित करता है । ध्यान मुद्रा में भूः उच्चारण के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

साथ-साथ इस स्थान पर हुआ विशेष स्पन्दन अनुभव किया जा सकता है ।

सूक्ष्म शरीर का शक्ति केन्द्र मस्तिष्क में ब्रह्मरंध्र में है । उसे विष्णु ग्रन्थि कहते हैं । भुवः का प्रभाव इस मर्म स्थल पर पड़ता है । कारण शरीर का केन्द्र स्थल हृदय चक्र माना गया है । यह स्थान दोनों पसलियों के जोड़ के अधोभाग में है । रक्त फेंकने वाली थैली को अध्यात्म की परिभाषा में हृदय नहीं कहते वरन् काया के मध्य भाग को कहते हैं । यही सूर्य चक्र है । स्वः का प्रभाव इसी शक्ति संस्थान के जागरण रूप में होता है । अनाहत ध्वनियाँ उन्हीं तीन केन्द्रों से निकलती हैं । वे आहत कानों से सुनी जा सकने वाली ध्वनियों की तुलना में असंख्य गुनी अधिक प्रभावशाली होती हैं । रुद्र ग्रन्थि से सक्रियता, विष्णु ग्रन्थि से सद् विचारणा और ब्रह्म ग्रन्थि से सद्भावना का विकास विस्तार होता है । क्रिया शक्ति, ज्ञान शक्ति और इच्छा शक्ति के रूप में मानवी चेतना की त्रिविध क्षमताओं का अध्यात्म शास्त्र में विविध विधि उल्लेख हुआ है ।

इन तीनों ग्रन्थियों में परिभ्रमण करने वाली शक्ति एक गतिचक्र बनाती है जिससे परिपोषण शक्ति का आविर्भाव होता है । सामान्य रूप से फेंका गया पत्थर थोड़ी ही दूर जाता है किन्तु वही पत्थर जिसे गोफन में रखकर चारों और घुमाते हुए किसान लोग फेंकते हैं वह बन्दूक की गोली के समान बड़ी दूर तक पहुँचता है । यह शक्ति एक गतिक्रम में घुमाये जाने के कारण ही उत्पन्न होती है । सामान्य स्थिति में उपर्युक्त ग्रन्थियाँ उतनी ही शक्ति उत्पन्न कर पाती हैं जिससे कि दैनिक जीवन का सामान्य निर्वाह क्रम चलता रहे और प्राणी जीवित रह कर उदर पूर्ति एवं प्रजा प्रजनन की गतिविधियां चलाता रहे । पर आत्मिक प्रगति के लिए ,आध्यात्मिक लक्ष्य प्राप्त करने के लिए विशिष्ट शक्ति चाहिए । वह शक्ति तीनों ग्रन्थियों में परिभ्रमण के परिणामस्वरूप उत्पन्न होने वाली पोषण शक्ति से उत्पन्न होती है । इस शक्ति क्रम के द्वारा सामान्य दीखने वाले शक्ति स्रोतों से असामान्य उत्पादन किया जा सकता है ।

लोहा, सोना, चांदी आदि धातुयें यों सामान्य प्रयोजन ही पूरे करती हैं पर जब रासायनिक प्रक्रिया द्वारा उनकी भस्में बना ली जाती हैं तो वे असाध्य रोगों के निवारण एवं बलवर्धन के चमत्कारी प्रभाव उत्पन्न करती हैं । त्रिपदा गायत्री उपासना की शक्ति साधना को इसी भस्म निर्माण की रासायनिक प्रक्रिया के समतुल्य माना जा सकता है जिसके आधार पर नाभि, मस्तिष्क और हृदय के सामान्य दीखने वाले अवयव अपनी अंतर्निहित शक्तियों के द्वारा चमत्कारी प्रभाव उत्पन्न करते हैं तथा उनसे साधक सहित सामाजिक वातावरण के लाभान्वित होने का सत्परिणाम सामने आता है ।

तीन व्याहृतियों का तीनों लोकों के रूप में ,तीन देवताओं के रूप में' तीन प्राणों के रूप में भी उल्लेख हुआ है-

भूर्भुवः स्वारिति वा एताति जो व्याहृतः य त सामह स्मैता चतुर्थी माहाध्यमध्यः प्रवेदयते । यह इति तद् ब्रह्म स आत्मा अगानन्या देवता भूरितिवा अयं लोकः भुवः इत्यन्तरिक्षम् सुव इत्यसो लोकः ।

-प्रश्नोपनिषद् चतुर्थवाक्:

''भूः भुः स्वः यह तीनों व्याहृतियाँ ब्रह्म को प्रतिपादित करती हैं । जो सम्पूर्ण सृष्टि को प्राण रूप चेष्टा प्रदान करे वह भूः, जिससे सम्पूर्ण भूत प्राणि उत्पन्न हों वह भुवः, सुख स्वरूप का नाम स्वः, जो दूसरों से पूजा जाय वह 'महः' । इस प्रकार भूः से पृथ्वी, भुव से अन्तरिक्ष, स्वः से सुख प्रधान लोक और मह से आदित्य लोक का प्रतिपादन होता है ।

भूरिति वा अग्नि भुवः इति वायु । सुवरित्यादित्यः यह इति चन्द्रमा, चन्द्रमसावाव सर्वाणिज्योति, एषमहीयते ।

''अग्नि भूः है , वायु भुवः है, सूर्य स्वः है, चन्द्रमा 'मह' । क्योंकि चन्द्रमा से ही सारे नक्षत्र महिमा वाले होते हैं ।''

भूरिति वे प्रजापतिः इमां भज नयभुवः इत्यन्तरिक्षं, स्वरिति दिवमेता इदं सर्वयावहिये लोकः सर्वेणैवाधीयते । भूरिति वै प्रजापतिः ब्रह्माऽज नायत भुव इति क्षत्रं स्वरिति विशयेता वद्धा इयं सर्व यावद ब्रह्मं क्षत्रं विट स्वेंणैवाधीयते । भूरिति वे प्रजापति आत्मन यजनयत् भुव इति प्रजा स्वरिति पशूनेतावद्धा इदं सर्व यावदास्ता प्रजा प्रशवः सर्वेणैवाधीयते ।

-शतपथ ब्रा० २-१४

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अर्थात्-''प्रजापति ने भूः शब्द से पृथ्वी को उत्पन्न किया । 'भुवः' शब्द से अन्तरिक्ष और 'स्व' से द्युलोक को प्रकट किया । सम्पूर्ण विश्व इन तीन के ही अन्तर्गत है । फिर प्रजापति ने ही भूः पूर्वक ब्राह्मण को, भुवः पूर्वक क्षत्रिय को और स्वः पूर्वक वैश्य को, उत्पन्न किया । सब मनुष्य इन तीनों के अन्तर्गत हैं । तत्पश्चात् भूः शब्द से उसने अपने को प्रकट किया, भुवः से सन्तान और स्वः से पशुओं को ।''

भूरिति वै प्राणः । भुवः इत्यपानः सुवरित्वे व्यानः मह इत्यन्नम् । अन्नेनवाव सर्वे प्राणः महीयेते ।

''भूः प्राण है, भुवः अपान है, स्व व्यान है और महः अन्न है । अन्न से ही प्राण महिमा वाले होते हैं ।

प्रजापतिर्वैयदग्रे व्याहरत्स त्यमेव व्याहरत ।
एतद्वा स त्रिव्यहिरत 'भू' र्भुवः स्वः
या एवं विद्वाने तेना वत्तेसं भवत्वेव ।।

अर्थात्- प्रजापति के मुख से पहला शब्द व्याहृति के रूप में निकला । उन्होंने भुः भुवः स्वः इन शब्दों को तीन बार कहा । जो इस रहस्य को जानता है वह इन व्याहृतियों से अग्न्याधान करता है और सुसम्पन्न बनता है ।

गोपथ ब्राह्मण के १।१।१६,१७,१८ में सृष्टि निर्माण के आरम्भ में चर्चा है । ब्रह्मा जी ने तप किया तप के कारण तीन ज्योतियाँ प्रकट हुई वे तीनों ॐकार तथा तीन व्याहृतियों के रूप में अनुभव में आईं ।

ॐकार और व्याहृतियों के रूप में शब्द ब्रह्म का प्रकटीकरण होने के उपरान्त ज्ञान और विज्ञान की दो धारणाओं का प्रवाह उमड़ा । एक ब्रह्मविद्या,तत्वदर्शन, आचार शास्त्र आदि के रूप में चली । श्रुति स्मृति एवं वर्णन विवेचन उपाख्यान इसी के अन्तर्गत आते हैं । दूसरी धारा विज्ञानपरक है । इसमें सृष्टि का निर्माण क्रम आता है । सत-रज- तम तीन गुण, पंच तत्व तन्मात्राएँ और सृजन अभिवर्धन परिवर्तन को प्रकृति प्रक्रिया कहा गया है । पुराण साहित्य में इन्हीं को ब्रह्मा-विष्णु-महेश की संज्ञा दी गई है । इन धाराओं को परा और अपरा प्रकृति भी कहा गया है ।

ज्ञान धारा का शब्द ब्रह्म से किस प्रकार प्रादुर्भाव हुआ । इस सम्बन्ध में कुछ उल्लेख इस प्रकार है । -

ऐतरेय आरण्यक के ५।३ ।२ में तीन व्याहृतियों का उल्लेख है और आगे चलकर २।२।२ में कहा गया है- **ता वा एताः सर्वा ऋचः सर्वे वेदाः सर्वे एकैव व्याहृति, घ्राण एवं प्राण ऋच इत्येव विद्यात् ।** अर्थात् व्याहृतियों से समस्त वेद ऋचाएँ समस्त शब्द, समस्त प्राण एवं घ्राण आदि अनुभव का प्राकट्य हुआ ।

ऐतरेय ब्रा० ५।३२ में कहा गया है कि सृष्टि रचना के लिए प्रजापति ने तप किया और तीनों लोक बनाये । उन्हें तपाया । इससे अग्नि, वायु आदित्य नामक तीन ज्योतियाँ उत्पन्न हुई । यही तीन व्याहृतियाँ हैं । इन्हीं से तीन वेद उत्पन्न हुए । ऐतरेय ब्राह्मण के ७।७ में व्याहृतियों को बल, धन, यश तथा ब्रह्म तेजस देने वाली बताया गया है और ८।१४ में उन्हें स्वर्ग देने वाली कहा गया है ।

पुराकल्पे समुत्पन्ना भूर्भुवः स्वर्गनामतः ।
महाव्याहृतयस्तिस्त्रः सर्वाशुभनिबर्हणाः ।।
प्रधानं पुरुषा कालो ब्रह्माविष्णुमहेश्वराः ।
सत्यं रजस्तमस्तिस्त्र कामा व्याहृतयस्त्रयः ।।
आंकाःर स्तत्परं ब्रह्म गायत्री स्यात्तदक्षरम् ।
एवं मन्त्रो महायोगः साक्षात्सार उदाहृत :।।
योऽधीतेऽहन्यहन्यमाने तां गायत्री वेदमातरम् ।
विज्ञायार्थ ब्रह्मचारी स याति परमाङ्गतिम् ।।
न गायत्र्याः परं जप्यमेताद्विज्ञानमुच्यंते ।

-- औशनस स्मृति १५८ से १६१

सृष्टि के आरम्भ में भूः, भुवः, स्वः यह तीन व्याहृतियाँ उत्पन्न हुईं । उससे काल पुरुष, ब्रह्मा विष्णु, महेश, सत-रज तम उत्पन्न हुए । इसके पश्चात् गायत्री मन्त्र के समस्त अक्षर । यह गायत्री महायोग है । समस्त साधनाओं का सार है जो इस महामन्त्र की उपासना अर्थ समझते हुए श्रद्धापूर्वक करता है, ब्रह्मचर्यपूर्वक रहता है सो परम गति पाता है । यह परम विज्ञान है । इससे श्रेष्ठ मन्त्र और कोई नहीं है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

त्रिपदा की तीन प्रमुख शक्ति धाराएँ

गायत्री त्रिगुणात्मक है । महामन्त्र की तीन व्याहृतियों में भौतिक एवं आध्यात्मिक विकास में योगदान देने वाली तीनों ही महाशक्तियों का समावेश है । भूः में प्राण-शक्ति, भुवः में जीवनोपयोगी साधन शक्ति और स्वः में ज्ञान-शक्ति समाहित है । विश्व की समस्त भौतिक एवं आत्मिक शक्तियों की उद्गम स्रोत यही तीनों महाशक्तियाँ हैं । शतपथ ब्राह्मण में वर्णन है-

'गा' कारो गतिदः प्रोक्त 'य' कारो शक्तिदायिनी ।
त्र स्त्राता च तथा बुद्धि 'ई' कार स्वयं परम् ।।

अर्थात्- 'गा' कार से गति देने वाली 'य' कार से शक्तिदायक 'त्र' से त्राण करने वाली और 'ई' कार स्वयं परम तत्व की बोधक है, ।

'गा' चेति सर्वगा शक्ति 'यत्री' तत्र नियंत्रिका ।

-शतपथ

अर्थात् 'गा' शब्द सर्वगामिनी शक्ति बोधक है । उस शक्ति पर नियन्त्रण करने वाली है ऐसा अर्थ 'यत्री' शब्द में सन्निहित है ।

गायत्री विश्वव्यापी जीवन शक्ति, चेतन शक्ति एवं प्राण शक्ति का स्वरूप है । ब्रह्म निष्क्रिय है । उसे साक्षी द्रष्टा, निर्लिप्त माना गया है । विश्व के विविध कार्यों में उसका सीधा हस्तक्षेप नहीं है । विश्व में जो भी हलचल हो रही है- विकास परिवर्धन एवं विनाश का जो भी क्रम चल रहा है उसमें शक्ति की महिमा काम कर रही है । विश्व की रचना का आधार ही ब्रह्म की यह इच्छा शक्ति है । **'एकोऽहं बहुस्याम'** 'मैं अकेला हूँ' बहुत हो जाउँ की ईश्वरीय इच्छा ने ही संसार की रचना की और व्यवस्था का इतना विशाल ढाँचा खड़ा कर दिया । वह इच्छा ही शक्तिरूपिणी होकर इस विश्व में ओतप्रोत हो रही है और सम्पूर्ण व्यवस्था का संचालन एवं नियन्त्रण कर रही है ।

इस मूल परा-प्रकृति का नाम ही गायत्री है । पीछे आवश्यकतानुसार उसी से सत् रज तम तीन गुण प्रस्फुटित हुए । जिन्हें ब्रह्मा, विष्णु, महेश या सरस्वती, लक्ष्मी और काली के नाम से पुकारा जाता है । रचना, विकास और विनाश के लिए- ज्ञान, शक्ति और सम्पत्ति के लिए पीछे यह त्रिगुणात्मक विकास गायत्री से ही हुआ है । गायत्री के तीन अक्षरों में एक-एक करके यह तीनों तत्व समाए हुए हैं । तीनों ही शक्तियों के उद्गम स्रोत होने के कारण गायत्री को 'आद्यशक्ति', 'शक्ति-बीज' कहा गया है और उसकी उपासना को सर्वोपरि ठहराया गया है ।

इस महामन्त्र के भावार्थ को समझने से स्पष्ट हो जाता है कि यह उस प्रधान शक्ति के आकर्षण संवर्धन का मन्त्र है जिसे प्राण कहते हैं । प्राण को जीवन ज्ञान एवं शक्ति का उद्गम केन्द्र माना गया है, प्राण के आधार पर ही विश्व की समस्त क्रियाएँ चल रही हैं । गायत्री महामन्त्र की उपासना द्वारा ब्रह्माण्ड में संव्याप्त प्राण तत्त्व को खींचा एवं अपने अन्दर संचित किया जाता है । गायत्री प्राणों की रक्षा करती है-

स हैषा गयांस्तत्रे । प्राणाः वैगयास्तत्प्राणास्तत्रे ।
तदद्य गायांस्तत्रे तस्याद्गायत्रीनाम ।

-शतपथ

''गायत्री प्राणों का त्राण-रक्षण करती है । 'गय' कहते हैं- प्राण को, उस प्राण का जो रक्षण करे उसका नाम गायत्री है ।''

प्राण के अन्तर्गत जो गतिशीलता, क्रिया एवं शक्ति सन्निहित है उसके लिए गायत्री मन्त्र में सविता शब्द का प्रयोग हुआ है और उसमें निहित शक्ति के लिए भर्ग शब्द का प्रयोग हुआ है । सविता की शक्ति 'भर्ग' है । गायत्री उपासक सविता रूपी प्राण की महाशक्ति 'भर्ग' को-तेज को अपने गर्भ में धारण करता है और प्रचण्ड तेजस्विता का प्रसव करता है । जिस प्रकार सूर्य की गर्मी से संसार के जड़ चेतन सभी का जन्म एवं विकास होता है उसी प्रकार आध्यात्मिक सविता के प्राण के द्वारा मानव शरीर पिण्ड में अन्तर्हित असंख्य प्रकार के शक्ति बीजों का उद्भव एवं विकास होता है ।

गायत्री प्राण का अजस्र भण्डार है । वह इस विश्व का महान तत्व है । इस महाप्राण के छोटे भाग पर भी अधिकार कर लेने पर साधक अपार

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

शक्ति का स्वामी बन जाता है । प्राण की महिमा का वर्णन शास्त्र इस प्रकार करते हैं –

प्राणोस्मि प्रज्ञात्मा । ते मामायुरमृतमित्यु पास्स्वायुः ।

–शांखायन ५ । २

'मैं प्राण की प्रज्ञारूपी आत्मा हूँ । मुझे ही आयु और अमृत जानो, और मेरी उपासना करो ।'

प्राणस्येद वशे सर्वं त्रिदिवे यत्प्रतिष्ठितम् ।
मातेन पुत्रान् रक्षस्व श्रींच प्रज्ञाचविधेहिनइति ।।

–प्रश्नोपनिषद्

''इस विश्व में जो कुछ है वह सब प्राण के अधीन है । जो कुछ स्वर्ग में है वह भी प्राण के ही अधीन है । हे प्राण ! तू हमें माता के समान प्रज्ञा और लक्ष्मी तथा प्राण हमें प्रदान कर ।''

प्राणाद्वये व खल्वियान भूताानि जायन्ते ।
प्राणानि जातानि जीवन्ति । प्राणं प्रयन्त्यभि संविशन्तीति ।

–तैतरीय

''प्राणशक्ति से ही समस्त प्राणी पैदा होते हैं । पैदा होने पर प्राण के कारण ही जीवित रहते हैं और प्राण में ही विलीन हो जाते हैं ।''

प्राणो वै वलम । प्राणो व अमृतम् ।
आयुर्नः प्राणः राजा ये प्राणः ।।

–वृहदारण्यक

''प्राण ही व्रत है । प्राण ही अमृत है । प्राण ही आयु है । प्राण ही राजा है । ''

अथर्ववेद में प्राण को परमात्मा का श्रेष्ठतम प्रतीक मानकर उसका अभिनन्दन करते हुए स्तुति की गई है–

नमस्ते प्राणक्रान्दाय नमस्ते स्तायित्नवे ।
नमस्ते प्राण विद्युते नमस्ते प्राण वर्णवे ।।

प्राण में जिस-जिस शक्ति एवं तेजस्विता का अजस्र भण्डार है उसे गायत्री में सविता शब्द से स्मरण किया जाता है । यह सविता ही गायत्री का देवता है । सविता की उपासना वस्तुतः प्राण की तेज की उपासना है । इससे आत्मा सब प्रकार के मलीनता के आवरणों से मुक्त होकर तेजस्वी प्रकाशवान हो जाता है ।

योगी जिस कुण्डलिनी शक्ति को जागृत करके परम सिद्धि को प्राप्त करते हैं वह इस शरीर में समाए हुए महाप्राणरूपी सूर्य की महाशक्ति ही है । वह गायत्री ही है और कुछ नहीं ।

सवितुर्देवस्य पर ब्रह्मणः कुण्डलिनी गायत्री एव ।

–ब्रह्मयामल तन्त्र

परब्रह्म स्वरूप सविता देव की कुण्डलिनी शक्ति गायत्री है ।

कुण्डलिन्यां समुद्भूता प्राण धारिणी ।
प्राणविद्या महाविद्या यस्तां वेत्तिस वेदमृत ।।

–योग चूड़ामणि

''कुण्डलिनी शक्ति से उत्पन्न हुई गायत्री प्राणधारिणी शक्ति है । इस महाविद्या को जो जानता है वही ज्ञानी है ।''

गायत्री की दूसरी महाशक्ति है– ज्ञान एवं चेतना । 'वरेण्य' एवं 'धिय' इन दो शब्दों में उस चेतना का संकेत है जिसे विवेक एवं ऋतम्भरा प्रज्ञा कहते हैं । पराविद्या यही है । आत्म-ज्ञान, आत्म-निर्माण, आत्म-साक्षात्कार इसी महातत्व के अन्तर्गत आते हैं । प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि की, राजयोग की साधनायें इसी की प्राप्ति के लिए की जाती हैं । वेदांत शास्त्र इसी तत्वज्ञान का परिमार्जन करता है । यह तो उच्च भूमिका की बात हुई । साधारण लौकिक जीवन में स्मरण शक्ति, बुद्धि की तीक्ष्णता व्यवहार कुशलता, विवेकशीलता, दूरदर्शिता जैसी बौद्धिक शक्तियाँ एवं साहस, धैर्य, प्रसन्नता, एकाग्रता, दृढ़ता जैसी मानसिक शक्तियाँ इसी श्रेणी में आती हैं । गायत्री का प्राणतत्व इस चेतना और ज्ञान को भी अपने अन्दर भरे हुए है ।

प्राणतत्व ही दूसरी भूमिका में प्रज्ञा होकर चेतना एवं बुद्धि के रूप में परिलक्षित होता है । इस ज्ञान के प्राप्त होने पर मनुष्य दिव्य दृष्टि सम्पन्न बन जाता है और ऋषि की श्रेणी में जा पहुँचता है । प्रज्ञा गायत्री की दूसरी शक्ति धारा है । इसी को स्पर्श कर मनुष्य 'प्राणी विश्व' का मुकुट मणि बनता है । इसके अभाव में अनेकों व्यक्ति दुःख दारिद्र में पड़े हुए रोते-कलपते रहते हैं जबकि प्रज्ञातत्व से सम्पन्न व्यक्ति देवताओं की तरह पूजनीय बन जाते हैं । अपने जीवन को सार्थक करते हैं और दूसरों को भी प्रेरणा-प्रकाश देते हैं । प्रज्ञातत्व की-ज्ञान की महत्ता का गुणगान शास्त्रों में अनेकों स्थानों पर किया गया है–

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

'नहि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते'

-गीता ४ । ३८

''इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र और कोई वस्तु नहीं ।''

तेषां सतत युक्तानां भजतां प्रीति पूर्वकम् ।
ददामि बुद्धि योगतं येन मामुपयान्ति ते ।
तेषा मेवानुकम्पार्थ महमज्ञानजं तमः ।
नाशयाम्यात्मभावस्थो ज्ञान दीपेन भास्वता ।

-गीता १७ । १० । ११

''सदा मुझे प्रीतिपूर्वक भजने वाले साधक को मैं बुद्धि योग प्रदान करता हूँ जिसके द्वारा वे मुझे प्राप्त कर लेते हैं । उनके अन्तःकरणों में निवास करता हुआ मैं प्रकाशवान ज्ञान दीप द्वारा अज्ञान जन्य अन्धकार दूर कर देता हूँ ।''

भगवान् ने अर्जुन को मोह बन्धन से छुड़ाने एवं अपना विराट स्वरूप दिखाने के लिए यही ऋतम्भरा प्रज्ञारूपी दिव्य चक्षु प्रदान किए थे । गीता में भगवान् नें अर्जुन को दिव्य चक्षु देते हुए कहा -

दिव्यं ददामि ते चक्षुः पश्यमे योगमैश्वरम् ।

''हे अर्जुन ! तू इन साधारण चर्म चक्षुओं से मेरा योग ऐश्वर्य नहीं देख सकता, इसलिए तुझे दिव्य चक्षु प्रदान करता हैं ।''

यह दिव्य चक्षु गायत्री में सन्निहित प्रज्ञातत्व है । यही ईश्वरीय विभूति अध्यात्म मार्ग के साधकों के अन्तःकरण में सद्बुद्धि के रूप में निवास करती है । इस ज्ञान शक्ति को उपलब्ध करने के लिए वेद निर्देश देता है-

उतिष्ठध्वं जागृध्वर्यानिमिच्छध्वं मारताःश्रुति ।

'' हे बुद्धिमानो ! जागो, उठो और ज्ञान की इच्छा करो ।''

प्रज्ञा की प्राप्ति से मनुष्य अपने विचार ही नहीं आचरण को भी श्रेष्ठ बना लेता है । गायत्री उपासना के अवलम्बन से साधक की प्रज्ञाशक्ति जाग्रत होती है ।

गायत्री का तीसरा शक्ति तत्व है-जीवन । मन्त्र के देवस्य (दिव्य) और प्रचोदयात (प्रेरणा) यह दो शब्द इसी प्रयोजन की आपूर्ति करते हैं । शरीर को स्वस्थ एवं निरोग रखना, दीर्घ जीवन, मन को अनेकानेक विकारों से बचाये रहना, शान्ति एवं सन्तोष का भरा-पूरा जीवनक्रम, जीवन-यापन के लिए सभी आवश्यक साधनों की उपलब्धि, स्वास्थ्य, सौन्दर्य, इन्द्रिय शक्ति, धन, विद्या, ऐश्वर्य आदि अनेक साधनों की उपलब्धि, दिव्य जीवन प्रेरणाप्रद जीवन की सीमाओं में आती हैं । मनुष्य जीवन को सन्तुष्ट एवं प्रगतिशील बनाने वाले सभी आवश्यक साधन इन शब्दों में सन्निहित शक्तियों को धारण कर साधक प्राप्त कर सकता है ।

गायत्री की विभूतियों का वर्णन निम्न प्रकार मिलता है-

कामान्दुग्धे विप्रकर्षत्य लक्ष्मी ।
पुण्यं सूते दुष्कृतं या हिनास्ति ।।
शुद्धा शान्तां मातरं मंगलानां ।
धेनु धीरा गायत्री मन्त्र याहुः ।।

अर्थात् गायत्री आवश्यक वस्तुएँ प्रदान करती है । दुर्भाग्य, दारिद्रय कष्टों को दूर करती है । पुण्य बढ़ाती है । पाप का विनाश करती है । ऐसी परम शुद्ध शान्त कल्याणकारी जननी को विज्ञ पुरुष गायत्री कहते हैं ।

त्रिपदा गायत्री के अवलम्बन से साधक प्राण-शक्ति, ज्ञान-शक्ति एवं जीवनी-शक्ति का अभिवर्धन करता है । इन तीन शक्तियों में ही समस्त भौतिक सिद्धियां एवं आध्यात्मिक ऋद्धियां समाहित हैं जिसे गायत्री उपासक अपनी श्रद्धा एवं निष्ठा के अनुरूप प्राप्त करता है ।

त्रिपदा और ब्रह्मवर्चस्

जीव को तीन भव बन्धनों से बँधा हुआ माना गया है । हाथों में हथकड़ी, पैरों में बेड़ी और कमर में रस्सी से बंधे हुए चोर तस्कर इधर से उधर ले जाये जाते हैं । घोड़े के पैरों में पिछाड़ी, गले में रस्सी और मुँह में लगाम लगी होती है । भव बन्धन भी वासना-तृष्णा और अहंता के तीन ही हैं । इन्हीं के कारण निरन्तर खिन्न उद्विग्न रहना पड़ता है । इन तीन के अतिरिक्त मानव जीवन में अशान्ति छाई रहने का और कोई कारण नहीं । इन्हीं को काम, क्रोध, लोभ कहा गया है । इन्हीं तीनों के सम्मिश्रण से अनेकों प्रकार के मनोविकार उठते हैं और उन्हीं की प्रेरणा से अनेकानेक पाप कर्म बन पड़ते हैं । इन तीनों बन्धनों को खोला काटा जा सके तो

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

समझना चाहिए बन्धन मुक्ति का सौभाग्य बन गया । साधना विज्ञान में इन तीन बन्धनों के खुलने पर तीन दिव्य शक्तियों के दर्शन एवं अनुग्रह का लाभ मिलने की बात कही गई है । बन्धन की स्थिति ही कष्टकारक है । इनके खुलने पर ही आनन्द है । अन्तर्गत की दिव्य सम्पदाओं के अलौकिक सिद्धि भण्डार पर यही तीन ताले जड़े हुए हैं । उनके खुलने पर वह सब कुछ उपलब्ध होता है जो परम पिता ने अपने राजकुमारों को जीवन यात्रा पर भेजते समय आवश्यक साधनों के रूप में साथ ही बांध कर रख दिया है । यह पाथेय गुम हो जाने के कारण ही अभावों, विक्षोभों और संकटों से भरा जीवन जीना पड़ सकता है । इन्हें खोज निकालने-तिजोरी खोल कर उपयोग में ला सकने का अवसर प्राप्त करना ही ग्रन्थि भेद की साधना है ।

साधना विज्ञान के तत्वदर्शी वैज्ञानिकों ने तीन ग्रन्थियों का विस्तृत विवेचन एवं निरूपण किया है । उन्हें खोलने के साधन एवं विधि-विधान बनाये हैं । उनके नाम हैं ब्रह्म ग्रन्थि, विष्णु ग्रन्थि और रुद्र ग्रन्थि । रुद्र ग्रन्थि का स्थान नाभि स्थान माना गया है । इसे अग्नि चक्र भी कहते हैं । माता के शरीर से बालक के शरीर में जो रस रक्त प्रवेश करता है । उसका स्थान ये नाभि स्थान ही है । प्रसव के उपरान्त नाल काटने पर ही माता और सन्तान के शरीरों का सम्बन्ध विच्छेद होता है । इस नाभि चक्र द्वारा ही विश्व ब्रह्माण्ड की वह अग्नि प्राप्त होती रहती है जिसके कारण शरीर को तापमान मिलता और जीवन बना रहता है । स्थूल शरीर को प्रभावित करने वाली प्राण क्षमता का केन्द्र यही है । शरीर शास्त्र के अनुसार नहीं अध्यात्म शास्त्र के सूक्ष्म विज्ञान के अनुरूप प्राण धारण का केन्द्र यही है । कुण्डलिनी शक्ति इसी नाभि चक्र के पीछे अधो भाग में अवस्थित है । मूलाधार चक्र का मुख द्वार नाभि स्थान में है और अधो भाग में मल-मूत्र छिद्रों के मध्य केन्द्र में । इस केन्द्र में जागरण अनावरण का जो विज्ञान विधान है वह त्रिपदा गायत्री के प्रथम चरण का क्षेत्र समझा जा सकता है ।

दूसरी ग्रन्थि है विष्णु ग्रन्थि, यह मस्तिष्क मध्य ब्रह्मरन्ध्र में है । आज्ञा चक्र, द्वितीय नेत्र इसी को कहते हैं । पिट्यूटरी और पीनियल हॉर्मोन ग्रन्थियों का शक्ति चक्र यही बनता है ।

मस्तिष्क के खोखले को विष्णु लोक भी कहा गया है । इसमें भरे हुए भूरे पदार्थ को क्षीर सागर की उपमा दी गई है । सहस्रार चक्र को हजार फन वाला शेष सर्प कहा गया है जिस पर विष्णु भगवान सोये हुए हैं । ब्रह्मरन्ध्र की तुलना पृथ्वी के ध्रुव प्रदेश से की गई है । अनन्त अन्तरिक्ष में अन्तर्ग्रही प्रचण्ड शक्तियों की वर्षा निरन्तर होती रहती है । ध्रुवों में रहने वाला चुम्बकत्व इस अन्तर्ग्रही शक्ति वर्षा में से अपने लिए आवश्यक सम्पदायें खींचता रहता है । पृथ्वी के वैभव की जड़ें इसी ध्रुव प्रदेश में हैं । वही से उसे आवश्यक पोषण निखिल ब्रह्माण्ड की सम्पदा में से उपलब्ध होता रहता है । ठीक इसी प्रकार मानवी काया एक स्वतन्त्र पृथ्वी है । उसे अपनी अति महत्त्वपूर्ण आवश्यकताओं को पूरा करने का अवसर इसी ब्रह्मरन्ध्र के माध्यम द्वारा उपलब्ध होता है । यह ध्रुव प्रदेश अवरुद्ध रहने से, मूर्छित स्थिति में पड़े रहने से सूक्ष्म जगत् के अभीष्ट अनुदान मिल नहीं पाते और पिछड़ेपन की आत्मिक दरिद्रता छाई रहती है । विष्णु ग्रन्थि के जाग्रत होने पर वह द्वार खुलता है जिससे दिव्य अनुदानों की अभीष्ट मात्रा आकर्षित और उपलब्ध की जा सके ।

मस्तिष्क का बहुत थोड़ा अंश प्रायः सात प्रतिशत ही जाग्रत होता है । उसी से तथाकथित विद्वता,बुद्धिमानी आदि की ज्ञान सम्पदा से जिन्दगी की गाड़ी घसीटी जाती है । शेष ९३ प्रतिशत ज्ञान संस्थान प्रसुप्त स्थिति में पड़ा है । उसी को विष्णु भगवान का शेष शैय्या शयन कहा गया है । इस क्षेत्र के बन्द कपाट खोले जा सकें और उस अँधेरी कोठरी में प्रकाश पहुँच सके तो वहाँ की रत्न राशि टटोली और काम में लाई जा सकती है, अतीन्द्रिय ज्ञान का केन्द्र उसी प्रसुप्त संस्थान में छिपा पड़ा है । दूरदर्शन, दूरश्रवण, भविष्य ज्ञान, विचार संचालन, प्राण प्रहार आदि अनेक योग और तत्त्व में वर्णित शक्तियों का निवास इसी क्षेत्र में है । सिद्धियों की चौसठ योगिनियाँ यहीं समाधिस्थ बनकर लेटी हुई हैं । उन्हें यदि जगाया जा सके तो मनुष्य सहज

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ही सिद्धि पुरुष बन सकता है । उसकी आंवज्ञात क्षमता विकसित होकर देव तुल्य समर्थता का लाभ दे सकती है ।

बुद्धिमत्ता प्राप्त करने के लौकिक उपाय शिक्षा, स्वाध्याय, अनुभव, अभ्यास, परामर्श आदि हैं । यह साधन जिसे जितनी मात्रा में मिल जाते हैं वह उतना ही बुद्धिमान विद्वान बन जाता है । यह सर्वविदित उपाय हुए । सूक्ष्म विज्ञान के अनुसार रहस्यमय उपाय मस्तिष्कीय क्षेत्र की ध्यान धारणा तथा दूसरे साधनात्मक उपाय उपचारों से विशाल क्षेत्र की ढूँढ खोज की जा सकती है और उस अन्वेषण का असाधारण लाभ उठाया जा सकता है । कोलम्बस ने अमेरिका महाद्वीप, खोज निकाला तो योरोप निवासियों ने उसका पूरा-पूरा लाभ उठाया, वैज्ञानिक शोधों का लाभ समस्त मानव जाति उठा रही है । मनः संस्थान की सुनिश्चित सम्पदाओं को ख़ोजना नहीं पड़ता, उन्हें जगाने भर की मेहनत करनी पड़ती है । इसी प्रयास को विष्णु ग्रन्थि खोलने की साधना कहते हैं ।

भ्रान्तियों का जंजाल ही माया बन्धन है । तरह-तरह के कुसंस्कार भ्रम कुविचार ही मन को भटकाते और कुमार्ग पर चलने के लिए बहकाते हैं । मृगतृष्णा में भटकने और कस्तूरी को खोजने मारे-मारे फिरने वाले हिरन जैसी ही मूर्खता अपना मन भी करता रहता है । जाल में फँसने वाले पक्षी, काँटे में गला फँसाने वाली मछली की तरह मन भी सस्ते प्रलोभन में आतुरतापूर्वक टूट पड़ता और भारी विपत्ति में फँसता है । सारा शहद एक साथ खा जाने के लिए व्याकुल मक्खी अपने पंखों को फँसा बैठती है और सस्ते लाभ के बदले प्राण-घातक संकट उठाती है । ऐसी ही दुर्गति भ्रम ग्रसित मन की होती है । यदि जीवन का स्वरूप और लक्ष्य समझने में भूल न हो तो सामान्य स्थिति का मनुष्य भी महामानवों के स्तर तक पहुँच सकता है । भ्रम ही है जो मनुष्य को पथभ्रष्ट करता और उसके अनुपम सौभाग्य को व्यर्थ की बर्बादी में नष्ट करता है । इस विपत्ति से छुटकारा मिल सकने के साधनात्मक उपाय को विष्णु ग्रन्थि खोलना कहते हैं । यह द्वार खुल जाने पर अनन्त आकाश में बिखरी पड़ी बहुमूल्य ज्ञान सम्पदा को बटोर लेना भी सहज संभव हो सकता है । सामान्य शिक्षा से जितना जिस स्तर का ज्ञान सम्पादन किया जाता है, उसकी तुलना में कहीं ऊँचा और कहीं अधिक सुविस्तृत, परिष्कृत ज्ञान जागृत मनः संस्थान से अनायास ही उपलब्ध किया जा सकता है । विष्णु ग्रन्थि के जागरण से मिलने वाली सफलता के अनुपात में इस प्रकार के अनेकों दिव्य ज्ञान साधना प्रयोगों द्वारा सहज ही उपलब्ध होने लगते हैं । त्रिपदाँ गायत्री का दूसरा चरण विष्णु ग्रन्थि खुलने से सम्बन्धित है ।

त्रिपदा का तीसरा चरण ब्रह्म ग्रन्थि से सम्बन्धित है । इसका स्थान हृदय चक्र माना गया है । इसे ब्रह्म चक्र भी कहते हैं । ब्रह्म परमात्मा को कहते हैं । भाव श्रद्धा सम्वेदना एवं आकांक्षाओं का क्षेत्र यही है । शरीर शास्त्र के अनुसार भी रक्त का संचार एवं संशोधन करने वाला केन्द्र यही है । इस धड़कन को ही पेण्डुलम की खट-खट की तरह शरीर रूपी घड़ी का चलना माना जाता है । अध्यात्मशास्त्र की मान्यता इससे आगे की है । उसके अनुसार हृदय की गुहा में प्रकाश ज्योति की तरह यहाँ आत्मा का निवास है । परमात्मा भाव रूप में ही अपना परिचय मनुष्य को देते हैं । श्रद्धा और भक्ति के शिकंजे में ही परमात्मा को पकड़ा जाता है । यह सारा मर्म स्थल यही है । किसी तथ्य का हृदयंगम होना किसी प्रियजन का हृदय में बस जाना जैसी उक्तियों से यह प्रतीत होता है कि आत्मा का स्थान निरूपण इसी क्षेत्र में किया गया है । उर्दू का प्रसिद्ध शेर है "दिल के आइने में है तस्वीरे यार की, अब जरा गरदन उठाई देख ली ।"

हृदय चक्र ब्रह्म ग्रन्थि है । वहाँ से भावनाओं का, आकांक्षा अभिरुचि का परिवर्तन होता है । जीवन की दिशा धारा बदलती है । वाल्मीकि अंगुलिमाल, अम्बपाली, बिल्वमंगल, अजामिल आदि का प्रत्यावर्तन-हृदय परिवर्तन ही उन्हें कुछ से कुछ बना देने में समर्थ हुआ । जीवन का समग्र शासन सूत्र इन्हीं आकांक्षाओं से संचालित होता है । आकांक्षायें विचारों को निर्देश देती हैं, और मनः संस्थान को अपनी मर्जी पर चलाती हैं । मन के अनुसार शरीर चलता है । शरीर कर्म करता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कर्म के अनुरूप विचार, परिणाम और परिस्थितियाँ सामने आती हैं । परिस्थितियों में सुधार करना अभीष्ट हो तो कर्म ठीक करने होंगे । शरीर पर कर्म नियन्त्रण मस्तिष्क का और मस्तिष्क का अधिपति हृदय है । प्रियतम को हृदयेश्वर और हृदयेश्वरी कहा जाता है । मानवी सत्ता पर का स्वामित्व हृदय का ही है ।

इस स्थान पर जो शक्ति चक्र काम करते हैं उन्हीं के कारण सूक्ष्म जगत से महत्त्वपूर्ण अनुदान प्राप्त करने का अवसर मिलता है और यहाँ से अन्तर्जगत् की कुरेद बीन का सिलसिला चलता है । यह हृदय ग्रन्थि जाग्रत होने पर महान जागरण की सर्वतोमुखी प्रक्रिया सम्पन्न होती है ।

तेज प्रवाह में बहती हुई नदी के मध्य जो भँवर पड़ते हैं उनकी शक्ति सामान्य प्रवाह की तुलना में सैकड़ों गुनी अधिक होती है । सुदृढ़ नावों, जहाज और मल्लाहों को भँवर में फंस कर डूबते देखा गया है । हवा गरम होने पर चक्रवात उठते हैं । उनकी तूफानी शक्ति देखते ही बनती है । मजबूत छत, छप्पर, पेड़ और मकानों को वे उठाकर कहीं से कहीं पटक देते हैं । रेत को आसमान में छोड़ते हैं और आंधी-तूफान के बवंडर उठकर अपने प्रभाव क्षेत्र को बुरी तरह अस्त-व्यस्त कर देते हैं । ऐसे ही कुछ चक्रवात केन्द्र-भँवर चक्र अपने शरीर में भी हैं । उनकी गणना षट्चक्रों के नवचक्रों के रूप में की जाती है । छोटे चक्र और भी हैं । जिनकी गणना १०८ तक की गई है । इन सबमें तीन प्रधान हैं । इन्हें रुद्र ग्रन्थि, विष्णु ग्रन्थि और ब्रह्म ग्रन्थि कहा गया है । वे तीनों परस्पर भी जुड़े हुए हैं और सूक्ष्म जगत् के साथ आदान-प्रदान का सिलसिला भी बनाये हुए हैं। स्थूल शरीर नाभिचक्र के नियंत्रण में है । सूक्ष्म शरीर पर आज्ञाचक्र का कारण शरीर पर हृदय चक्र का आधिपत्य है । ताले खोलने वाली चाबी डालने के छिद्र यही तीन हैं । योगाभ्यास से इन्हीं की साधना को रुद्र, विष्णु और ब्रह्मा की साधना माना गया है । इसी समूचे सत्ता क्षेत्र को त्रिपदा गायत्री की परिधि कहा गया है ।

गुणों की दृष्टि से त्रिपदा को निष्ठा, प्रज्ञा और श्रद्धा कहा गया है । निष्ठा का अर्थ है तत्परता दृढ़ता । प्रज्ञा कहते हैं-विवेकशीलता दूरदर्शिता को, श्रद्धा कहते हैं आदर्शवादिता और उत्कृष्टता को । कर्म के रूप में0 निष्ठ, गुण के रूप में प्रज्ञा और स्वभाव के रूप में श्रद्धा की सर्वोपरि गरिमा है । स्थूल-सूक्ष्म और कारण शरीरों के परिष्कार का परिचय इन्हीं तीनों के आधार पर मिलता है । गुण, कर्म, स्वभाव ही किसी व्यक्तित्व की उत्कृष्टता निकृष्टता के परिचायक होते हैं ।

त्रिपदा का एक पक्ष सृजनात्मक है, दूसरा ध्वंसात्मक । एक आध्यात्मिक है, दूसरा भौतिक । अध्यात्म के सृजन पक्ष को गायत्री कहते हैं और भौतिक विज्ञान पक्ष को सावित्री । अवांछनीयताओं के निराकरण का उत्तरदायित्व भी सावित्री का है । पौराणिक गाथा के अनुसार ब्रह्माजी की इन्हें दो पत्नियाँ माना गया है । सृजन पक्ष के रूप में त्रिपदा की चर्चा अधिक हुई है । श्रुति ने असतो मा सद्गमय तमसो मा ज्योतिर्गमय-मृत्योर्मामृत गमय के रूप में त्रिपदा के तीन चरणों की अभ्यर्थना की है और तृप्ति, तुष्टि एवं शान्ति का वरदान मांगा है ।

दूसरे सावित्री पक्ष की चर्चा कम ही हुई है पर है वह भी महत्त्वपूर्ण । खेत जोतने से लेकर फसल पकने तक की प्रक्रिया लम्बी और समय साध्य है । काटने का काम तो दो-चार दिन में ही पूरा हो जाता है । शरीर के परिपोषण में ही अधिक समय लगता है । बीमार पड़ने पर सुई लगाने पर ऑपरेशन होने का काम तो यदा-कदा ही होता है । मित्रता निर्वाह में ही जीवन का अधिकांश भाग बीतता है । शत्रु से लड़ने के अवसर तो थोड़े ही आते हैं । भौतिक उपार्जन और उपभोग के लिए तो काया अपने आप ही काम करती रहती है । सन्तुलन बनाने के लिए आध्यात्मिक प्रयत्नों पर ही जोर देना पड़ता है । ऐसे ही अनेकों कारणों से त्रिपदा के गायत्री पक्ष का ही विवेचन और विधान शासकारों ने विस्तारपूर्वक बनाया है । यह दक्षिण मार्ग है, इसे देवयान भी कहते हैं । यह देवत्व का लक्ष्य प्राप्त कराती है ।

त्रिपदा का वाम मार्ग तन्त्र है । उसे अपनाने से भौतिक पक्ष सुदृढ़ होता है । दैत्य शब्द वैभव, बड़प्पन, विस्तार बल का बोधक है । पुराणों में

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दैत्यों की भौतिक और देवताओं की आत्मिक शक्ति का वर्णन है । दूरदर्शी ऋषि गायत्री की उपासना करते थे और भौतिक लाभों के लिए लालायित हो वाममार्गी साधना करनी पड़ती थी । देव पक्ष के आचार्य वृहस्पति थे । दैत्य पक्ष का प्रशिक्षण शुक्राचार्य करते थे, तप साधना दोनों को ही करनी पड़ती थी । ऋषि और देवताओं का सात्त्विक तप होता था, दैत्यों का तामसिक । रावण, कुम्भकरण मेघनाद, मारीच, हिरण्यकश्यपु, हिरण्याक्ष, भस्मासुर, वृत्रासुर, सहस्त्रबाहु महिसासुर आदि अनेक दुर्दान्त दैत्यों के वैभव और पराक्रमों का वर्णन पुराणों में मिलता है । यह सावित्री पक्ष की उपासना का परिणाम है ।

दुष्टता को निरस्त करने के लिए आक्रामक अस्त्र के रूप में त्रिपदा के सावित्री पक्ष का प्रयोग होता है । इस प्रकार के प्रयोग उपचार को ब्रह्मास्त्र कहते हैं । मेघनाद के पास ऐसी ही ब्रह्म शक्ति थी जिसे उसने लक्ष्मण जी के विरुद्ध प्रयुक्त किया था । तन्त्र ग्रन्थों में ब्रह्मास्त्र का उल्लेख ब्रह्म शाप, ब्रह्म दण्ड के रूप में भी हुआ है । इसका उपयोग दुष्टता के विरुद्ध किये जाने के कितने ही उल्लेख इतिहास पुराणों में मिलते हैं । शृंगी ऋषि ने परीक्षित को, श्रवण कुमार के पिता ने दशरथ को, गौतम ने इन्द्र को, गान्धारी ने कृष्ण को, कपिल ने सगर सुतों को, ऋषियों को नहुष को शाप देने के उपाख्यान सर्व विदित हैं । वरदानों की तरह शापों का भी सुविस्तृत इतिहास है । मारण, मोहन वशीकरण, उच्चाटन, स्तम्भन, आदि के तांत्रिक प्रयोगों का विवरण एवं विधान गायत्री तन्त्र एवं अन्यान्य ग्रन्थों में संकेत रूप से दिया गया है । विस्तारपूर्वक उसे इसलिए नहीं लिखा गया कि अनधिकारी व्यक्ति उसे स्वार्थ सिद्धि के लिए अनीतिपूर्वक प्रयुक्त कर सकते हैं । रिवाल्वर आदि के लाइसेन्स हर किसी को नहीं मिलते । प्रामाणिक व्यक्तियों को ही उन्हें रखने की आज्ञा मिलती है । ठीक इसी प्रकार तांत्रिक प्रयोगों की शिक्षा सर्वसुलभ नहीं की गई है । किन्तु है वह भी त्रिपदा का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष । गायत्री का ज्ञान पक्ष ब्रह्म विद्या कहलाता है और विज्ञान पक्ष ब्रह्म तेजस् । दोनों के समन्वय से ब्रह्मवर्चस् शब्द बना है । इसमें आत्मज्ञान और आत्मबल दोनों का समन्वय कर सकते हैं । अथर्ववेद में गायत्री विद्या की सात सिद्धियाँ गिनाई गई हैं । सबसे अन्तिम सोपान ब्रह्मवर्चस् कहा गया है । उसकी उपलब्धि के लिए जो सन्तुलित यात्रा करनी पड़ती है उसमें दक्षिण और वाम मार्ग का ब्रह्म योग और तन्त्र योग दोनों का समन्वय सम्मिलित है । इसी से उसे पूर्णयोग की संज्ञा दी गई है ।

व्याहृतियों में विराट् का दर्शन

भूर्भुवः स्वस्त्रयो लोका व्याप्तमोम्ब्रह्म तेषुहि

स एव तथ्यतो ज्ञानी यस्तद्वेति विचक्षणः ।।

-गायत्री स्मृति

शास्त्रों का कथन है कि "भू, र्भुवः और स्वः ये तीन लोक हैं । इन तीनों लोकों में ॐ ब्रह्म व्याप्त है । जो बुद्धिमान उस व्यापकता को जानता है, वह ही वास्तव में ज्ञानी है ।"

यह विश्व तीन भागों में विभक्त है । प्रत्येक को लोक की संज्ञा दी गयी है । भूः लोक, भुवः, लोक तथा स्वः लोक ये तीनों प्रसिद्ध हैं । सामान्य भाषा में इन्हें पृथ्वी, पाताल एवं स्वर्ग कहा जाता है तो अध्यात्म की भाषा में इन्हें सांसारिक, शारीरिक और आत्मिक क्षेत्र मानते हैं । इन तीनों में ॐ नाम का परमात्मा समाया है । गायत्री मन्त्र के आरम्भ में प्रयुक्त प्रणव और व्याहृतियों में यही तत्वज्ञान छिपा पड़ा है ।

परमात्मा का वैदिक नाम ॐ है । ब्रह्म की स्फुरणा सूक्ष्म प्रकृति पर निरन्तर आघात करती रहती है । सृष्टि में दृष्टिगोचर गतिशीलता इन्हीं आघातों एवं स्पन्दनों के कारण है । ब्रह्म प्रकृति के मिलन स्थल पर सतत् ॐ की झंकार होती रहती है । इसलिये इसे ही परमात्मा का स्वघोषित नाम कहा गया है ।

यह ॐ ही तीनों लोकों में व्याप्त है । भूः शरीर, भुवः संसार, स्वः आत्मा ये तीनों ही परमात्मा के कार्य क्षेत्र क्रीड़ा-स्थल हैं । गायत्री मन्त्र यही प्रारम्भिक शिक्षण देता है कि इन सभी स्थलों को,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

निखिल ब्रह्माण्ड को भगवान का विराट् रूप समझकर अध्यात्म की उच्चतम भूमिका प्राप्त करने का प्रयास किया जाना चाहिये । ॐ भूर्भुव स्वः का तत्वज्ञान समझ लेने वाला साधक एक प्रकार से जीवनमुक्त हो जाता है । परमात्मा को सर्वज्ञ, सर्वव्यापक देखने वाला मानव माया, मोह, ममता, संकीर्णता, अनुदारता, कुकर्म, दुष्चिन्तन की अग्नि में झुलसने से बच जाता है एवं प्रतिपल परमात्मा का दर्शन कर परमानन्द का रसपान करता रहता है । गीता में भगवान कृष्ण ने अर्जुन को यही विराट् स्वरूप दिखाकर माया से मुक्ति दिलाई थी । इसी विशालता की सृष्टि में व्याप्त अपने स्वरूप की झांकी भगवान राम ने अपने जन्मकाल में कौशल्या को कराई थी । परमात्मा की इसी भूमिका को प्रत्येक द्विज के मानवता का उत्तरदायित्व समझने वाले व्यक्ति के अन्तःकरण में स्थापित कर देना गायत्री मन्त्र का प्रथम उद्देश्य है ।

भगवान के इस विराट् स्वरूप को देख सकना हर किसी के लिये सम्भव है । समस्त विश्व ब्रह्माण्ड को परमात्मा की विशालकाय प्रतिमा मानकर उसके अंग प्रत्यंगों के रूप में समस्त पदार्थों को देखने की भावना ही विराट् रूप का दर्शन है । स्थूल आँखों से यह दर्शन नहीं किया जा सकता है । इसलिये भगवान ने "दिव्यं ददामि ते चक्षु" सम्बोधित कर अर्जुन के लिये इस रूप का दर्शन सम्भव किया था । ये दिव्य चक्षु और कुछ नहीं पवित्र, निष्पाप अन्तःकरण ही है । मलिनतारहित, कषाय-कल्मषों के आवरण से रहित, रससिक्त अन्तःस्थली में ही प्रभु की प्रतिच्छाया बनती है । विराट की यह लघु झांकी हर व्यक्ति के अन्दर विराजमान है । गायत्री का तत्वज्ञान साधक को इसका दर्शन कर सकने का पथ दिखाता है । उसे इसका पात्र बनाता है ।

भारतीय संस्कृति का मूल है- ईश्वर विश्वास । दर्शन का आरम्भ ही आस्तिकवाद से होता है । भारतीय जीवन के रग-रग में ईश्वर की सत्ता घुली हुई है । समस्त विचारधाराओं और परमेश्वर की सत्ता में अटूट विश्वास रहा है । संस्कृति की अक्षुण्णता, परम्पराओं की विविधता होते हुए भी परस्पर एकता तथा अनेकानेक मत पथ होते हुए भी समभाव इसी एक सिद्धान्त के आधार पर बने रह सके हैं । जब-जब इसमें कुछ विकृतियाँ, विसंगतियाँ आयीं- तब-तब पतन का पथ प्रशस्त होता चला गया । ईश्वरीय तथ्य को विचारधारा से पृथक् कर दिया जाय तो फिर इस सृष्टि की सारी महत्ता ही समाप्त हो जाती है । संसार को जड़ ईश्वर रहित मानने से उसे भोग्य समझने की, स्वयं के लाभ के लिए मनमाना उपयोग करने की इच्छा प्रधान होने लगती है । उपभोग का भौतिक दृष्टिकोण अत्याचार एवं शोषण को जन्म देता है । वस्तुओं को जोड़-जोड़कर उनका संचय एवं सम्पत्तिवान बनने का लोभ असंख्यों अभावग्रस्तों को दुःखी रहने को विवश कर देता है । अनीश्वरवादी भौतिक दृष्टिकोण पदार्थों का मनमाना उपभोग कर स्वसन्तुष्टि की इच्छा पैदा करता है । जबकि इसके विपरीत प्रत्येक जड़-चेतन पदार्थों में , परमाणु में, तीनों लोकों में, भूर्भुवः स्व में, सर्वत्र ॐ को, परमात्मा को व्याप्त देखने से दूसरे ही दृष्टिकोण की उत्पत्ति होती है ।

विचार पद्धति के संशोधन में ही वर्तमान समस्याओं का हल अन्तर्निहित है । प्रत्येक वस्तु में सच्चिदानन्द शक्ति का दर्शन, सब प्राणियों में परमात्मा की झांकी एक ऐसी आत्मिक विचार प्रणाली है जिससे विश्व सेवा, लोक सुरक्षा, समस्त सृष्टि की सुव्यवस्था की भावना पैदा होती है । प्रभु की चलती-फिरती प्रतिमाओं को स्वस्थ, सुन्दर और सुखी बनाये रखना ही मनुष्य का प्रयत्न हो, ऐसी भावना उठने लगती है । संसार के सभी पदार्थों, प्रकृति वैभव में ईश्वर का निवास है, अतः इसे दैवी अमानत मानकर स्वयं के लिये न्यूनतम रखकर शेष को सबके लिये छोड़ देना ही उचित है, यह संकल्प मन में दृढ़ होने लगता है । इस प्रकार विश्व में, भुर्भूवः स्वः में परमात्मा की झांकी करने से संसार के प्रति सृष्टा के प्रति एक श्रद्धामय भावना उत्पन्न होती है जो भोगवादी मान्यता को हटाकर उत्सर्ग की भावना को मुखरित करती है ।

मनुष्य की पशुता, पाशविक मनोवृत्तियों पर अंकुश लगाना और उसके स्थान पर सद्प्रवृत्तियों

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

की स्थापना ही अध्यात्मवाद का मुख्य लक्ष्य है । युगों-युगों से इसी लक्ष्य की पूर्ति हेतु नियामक सत्ता के विराट् स्वरूप का ध्यान करने एवं तदनुसार अपने चिन्तन को परिष्कृत करने का सन्देश गायत्री मन्त्र देता आया है । इसके व्याहृति भाग की यही प्रेरणा है कि प्रभु की सुरम्य वाटिका के किसी भी कण का दुरुपयोग हम अपनी पाशविक वृत्तियों-लिप्साओं को सन्तुष्ट करने में न करें ।

कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ टैगोर ने अपने ग्रन्थ "मानवसत्य" में लिखा है " मैंने गायत्री मन्त्र को मौखिक भाव से नहीं अन्तःकरण से बार-बार दुहराया है । हर बार इसकी चिंतन करते हुए मुझे यही लगता कि विश्व के और मेरे अस्तित्व में आत्मीयता है- एकरसता है । भूर्भुवः स्वः- इस भूलोक के साथ अन्तरिक्ष के साथ मेरा अखण्ड योग है । इस विश्व ब्रह्माण्ड का आदि अन्त जो ईश्वर है, उसने ही हमारे मन में चेतना को जाग्रत किया है । गायत्री मन्त्र के ध्यान द्वारा हम जिसे उपलब्ध करने का प्रयास करते हैं, वह विश्वात्मा से एवं हमारी आत्मा से चैतन्य के सम्बन्ध से अविच्छिन्न रूप से जुड़ा हुआ है ।

भूः संसार को, भूवः शरीर को स्वः अन्तरात्मा को कहते हैं । गायत्री साधक इन तीनों को परम प्रभु की सत्ता व प्रकाश से ओत-प्रोत मानता है । वह लोक सेवा के माध्यम से संसार की उपासना, शरीर व मन को स्वस्थ, संयत, ऊर्ध्वगामी, सद्गुण सम्पन्न बनाकर काया रूपी प्रभु की साधना तथा अन्तरात्मा को पवित्र, उदार बनाकर अन्तःकरण में विराजमान ईश्वर की प्रतिमूर्ति की पूजा करता है । सर्वत्र ईश्वर ही ईश्वर परिलक्षित होना ही परमानन्द की, ब्रह्म निर्वाण की, सहज समाधि की स्थितप्रज्ञ की, परमहंस की स्थिति है । जितनी मात्रा में साधक इस तथ्य को हृदयंगम करता चला जाता है, उसी अनुपात में वे मायामुक्त होता चला जाता है । इस जीवन में ही वह स्वर्ग का आनन्द उठा लेता है ।

समस्त उपासना पद्धतियाँ इसीलिये हैं कि मनुष्य प्रभु की सत्ता को अपने समीप देखे एवं उसे मनोभूमि में प्राथमिकता दे । जो कार्य किसी भी उपासना से सम्पन्न होता है, वह प्रणव और व्याहृतियों में सन्निहित भावनाओं को अपनाने से हो सकता है । इन भावनाओं का मनन-चिन्तन एक आत्मानुशासन स्थापित करता है । व्याहृतियों का दर्शन वस्तुतः मनुष्य की अन्तःभूमि को सुसम्बद्ध रूप से विकसित करने की एक सुव्यवस्थित विद्या है ।

गायत्री से बढ़कर और कुछ नहीं

भारतीय धर्म के उपासना विज्ञान में गायत्री को सर्वोपरि माना गया है और सर्वश्रेष्ठ कहा गया है । इसके कई कारण हैं । एक तो यह कि इस महामन्त्र के अक्षरों में बीज रूप में मानवी संस्कृति एवं आदर्शवादिता के सारी सिद्धान्त सन्निहित हैं । इसे विश्व का सबसे छोटा मात्र चौबीस अक्षरों का वह ग्रन्थ कह सकते हैं जिसमें धर्म और अध्यात्म का समूचा तत्व ज्ञान सार रूप से समाविष्ट मिल सकता है । इन अक्षरों की व्याख्या करते हुए जो कुछ मानवी प्रगति एवं सुव्यवस्था के लिये आवश्यक है; यही प्रज्ञा का विवेकशीलता का मन्त्र है । कहना न होगा कि मनुष्य जीवन की समस्त समस्याएँ दुर्बुद्धि के कारण उत्पन्न होती हैं । संसार पर आये दिन छाये रहने वाले संकट के बादल अशुभ चिन्तन के खारे समुद्र में ही उठते हैं । विवेक सर्वोपरि है । सद्बुद्धि से बढ़कर इस संसार में और कुछ नहीं है । यह तथ्य प्रज्ञा की देवी गायत्री को सर्वोपरि ठहराने में सन्निहित है ।

समस्त विश्व को एकता के केन्द्र पर आज नहीं तो कल केन्द्रित होना ही पड़ेगा । भिन्नता के बीच एकता के सूत्र ढूँढने पड़ेंगे अन्यथा लोग एक-दूसरे से लड़ने में अपनी शक्ति नष्ट करते रहेंगे । सृजन के लिए जो लगना चाहिए वह यदि विवाद, भटकाव और संघर्ष में ही नष्ट होता रहे तो फिर शान्ति और समृद्धि को उपलब्ध करने के लिए जो आवश्यक है वह हाथ में रहेगा ही नहीं । भाषा, देश, आचार एवं तत्व दर्शन की ही तरह धर्म और अध्यात्म का भी केन्द्रीकरण होना चाहिए । उपासना के क्षेत्र में भी यही होना चाहिए । अनेकानेक धर्म,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सम्प्रदाय, मतमतान्तर एवं उपासना विधान भले ही कुछ समय तक अलग बने रहें, पर उनके बीच एकता का सूत्र तो जुड़ा ही रहना चाहिए । गायत्री उपासना को सार्वभौम माना जाना चाहिए और उसे सर्वजनीन श्रद्धा समर्थन मिलना चाहिए । मानवी एकता की सम्भावना ऐसे ही सार्वभौम सूत्रों को अपनाने से सम्भव हो सकती है । घर में अनेक सदस्य होते हैं । सभी का सम्मान एवं सहयोग मिलता है, पर गृहस्वामी का सब पर अनुशासन रहता है इसलिए वह सर्वोपरि है । विश्व में बिखरे हुए तत्व दर्शनों एवं साधना विद्वानों के परिवार में मूर्धन्य मन्त्र गायत्री को ठहराया जाय । यह भी एक कारण मनीषियों का गायत्री मन्त्र को सर्वोपरि ठहराने का रहा होगा ।

शब्द विज्ञान, स्वरशास्त्र की सूक्ष्म धाराएँ गायत्री महामन्त्र में जिस उत्तमता के साथ मिली हुई हैं, वैसा संगम अन्य किसी मन्त्र में नहीं हुआ है । साधनारत योगियों और तपस्वियों ने अपने प्रयोग परीक्षणों और अनुभवों के आधार पर जो तुलनात्मक उत्कृष्टता देखी है उसी से प्रभावित होकर उन्होंने इस महाशक्ति की सर्वोपरि स्थिति बताई है । यह निष्कर्ष अभी भी जहाँ का तहाँ है । मात्र जप पूजन से तो नहीं, अभीष्ट साधन प्रक्रिया अपनाते हुए अभी भी कोई इस साधना को कर सके तो उसका निजी अनुभव शास्त्र प्रतिपादित इस सर्वश्रेष्ठता का समर्थन ही करेगा । इस सन्दर्भ में मिलने वाले शास्त्र वचनों में से कुछ इस प्रकार हैं-

गायत्री जप का मत समस्त शास्त्रों में पाया जाता हैं-

गायत्र्यां न परम् जप्यम् - *पद्मपुराण सर्ग ५३ । ५८*
न गायत्र्याः परम् जप्यम् - *कूर्म पुराणउत्तरार्ध १४ । ५८*
न गायत्र्याः परम् जाप्यम् - *उशनः संहिता ३ । ५४*
न गायत्र्याः समम् जाप्यम् - *पद्मपुराण पाताल० ९४ । ५०*
न गायत्री समो जपः- *यवक्रपाद स्मृति ३६९*
गायत्री तु परम तत्वं गायत्री परमागतिः ।
-पाराशर स्मृति ५ । ४

अर्थात्- "गायत्री ही परम तत्व और गायत्री ही परम गति है ।"

इन अभिवचनों में गायत्री विद्या की उत्कृष्टता का संकेत किया गया है । अन्य ऋषियों ने भी ऐसा ही कुछ कहा है-

न गायत्र्याः परंपरम् । - *भारद्वाजस्मृति १२ । ४२*
गायत्री परमो मन्त्रः । - *अग्नि पुराण २८४ । २*
गायत्र्यास्तु परं नास्ति । - *सम्वर्तस्मृति १ । १४*
सावित्र्यास्तु परं नास्ति । - *मनुस्मृति २ । ८३*
सावित्र्यास्तु परं नास्ति । - *वृहद्योगि या० स्मृ० २ ।६३*
गायत्र्यतिगरीयसी । - *बृहत्पाराशर स्मृति ४ । १६*
न गायत्री समो मन्त्रः । - *स्कन्दपुराण काशीखण्ड ९ । ५२*

गायत्र्या न परं मन्त्र न बीज प्रणवादिकम् ।
गायत्र्या न परं जप्यं गायत्र्या न परं तपः ।
गायत्र्या न परं ध्यानं गायत्र्या न परं हुतम् ।
हविष्यं घृति संयुक्तं गायत्री मन्त्र पूर्वकम् ।
-विश्वामित्र कल्प

अर्थात् गायत्री से बढ़कर अन्य कोई मन्त्र, जप ध्यान, तप, कही नहीं है । गायत्री यज्ञ से बढ़कर और कोई यज्ञ नहीं है ।

गायत्री परदेवतेति गहिता ब्रह्मैव चिद्रूपिणी ।
--देव्युपनिषद्

अर्थात् " गायत्री परादेवता कही गई है और वह चित्स्वरूपा गायत्री साक्षात् ब्रह्म ही है ।"

'महाभारत' में भीष्म पितामह का वचन है कि -

"परां सिद्धिमवाप्नोति गायत्री मुक्तमां पठेत्"

जो मनुष्य सर्वश्रेष्ठ गायत्री का जप करता है वह परम सिद्धि को पाता है ।

अष्टादशसु विद्यासु मीमांसाति गरीयसी ।
ततोऽपि तर्क शास्त्राणि पुराण तेभ्य एव च ।
ततोऽपि धर्म शास्त्राणि तेभ्यो गुर्वी श्रुतिर्द्विज ।
ततोऽप्युपनिंषच्छेष्ठा गायत्री च ततोऽधिका ।
दुर्लभा सर्व मन्त्रेषु गायत्री प्रणवान्विता ।
-वृहत् सन्ध्या भाष्य

अठारह प्रकार की विद्याओं में मीमांसा (कर्मकाण्ड) श्रेष्ठ है । मीमांसा से तर्क विवेक उत्तम है । न्याय से पुराणों की गरिमा अधिक है । पुराणों में धर्मशास्त्र और धर्मशास्त्रों में वेद की महिमा अधिक है । वेदों की व्याख्या करने वाली उपनिषदों की उपयोगिता और भी अधिक है । उपनिषदों से भी गायत्री श्रेष्ठ है । समस्त मन्त्रों में प्रणव युक्त गायत्री की महिमा सर्वोपरि है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गायत्रीं यः परित्यज्य चान्यमन्त्र मुपासते ।
न साफल्यभवाप्नोति कल्प कोटि शतैरपि ।

-वृहत संध्या भाष्य

जो गायत्री त्याग कर अन्य मंत्रों की उपासना करते हैं वे सौ कोटि कल्पों में भी अभीष्ट सफलता प्राप्त नहीं कर सकते ।

गायत्री यः परित्यज्य चान्य मन्त्र मुपासते ।
न साफल्य भवाप्नोति जन्म कोटिः शतैरपि ।

-संध्या भाष्य

जो गायत्री मन्त्र को त्याग कर अन्य मन्त्रों की उपासना करता है वह चिरकाल में भी सफलता प्राप्त नहीं कर सकता ।

जपतां जुह्वतां चैव नित्यं च प्रयतात्मनाम् ।
ऋषीणां परमं जप्यं गुह्य मेतन्नराधिप ।

-महाभारत

नित्य जप करने के लिए, हवन करने के लिए, ऋषियों का परम मन्त्र गायत्री ही है ।

गायत्री सर्व मन्त्राणां शिरोमणि तया स्थिता ।
विधानामपि तेनैतां साधयेत्सर्व सिद्धये ।
त्रिव्याहृति युतां देवीमोंकार युग सम्पुटाम् ।
उपास्य चतुरोवर्गान् साधयेद्यो न सोन्धकोः ।
देव्या द्विजत्व मासाद्य श्रेय सेव्य रतास्तुये ।
ते रत्नमभिवांछन्ति हित्वा चिन्तामणि करात् ।

-ब्रह्म वार्तिक

गायत्री सब मन्त्रों में तथा विद्याओं में शिरोमणि हैं । उससे सब इन्द्रियों की साधना होती है । जो व्यक्ति इस उपासना से धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन चारों पदार्थों को प्राप्त नहीं करते वे अन्धबुद्धि वाले हैं । जो गायत्री जैसे मन्त्र के होते हुए भी अन्य मन्त्रों की उपासनाएँ करते हैं वे ऐसे ही मूर्ख हैं जैसे हाथ आई चिन्तामणि को फेंक कर छोटे-छोटे रत्न कणों को ढूँढने वाले मूर्ख ।

गायत्री वेद जननी गायत्री लोक पावनी ।
न गायत्र्याः परं जप्यमेतद्विज्ञाय मुच्यते ।

-कूर्म पुराण

"वेद्र जननी गायत्री इस संसार में सर्वाधिक पवित्र करने वाली है । विद्वानों का कथन है कि गायत्री से बढ़ कर अन्य कोई जप नहीं है ।"

सावित्र्यास्तु परं नास्ति शोधनम् सर्व कर्मणाम्

- अग्नि वृद्धा चस्तम्बौ

सब कर्मों को शद्ध करने के लिए गायत्री से बढ़कर और कुछ नहीं है ।

अष्टादशसु विद्यासु मीमांसातिगरीयसी ।
ततोऽपि तर्कशास्त्राणि पुराणं तेभ्य एवच ।।
ततोऽपि धर्मशास्त्राणि तेभ्यो गुर्वी श्रुतिर्द्विज ।
ततोऽप्युप निषच्छ्रेष्ठा गायत्री च ततो धिका ।।

-स्कन्दपुराण काशीखण्ड ९ ।४९ ।५०

अष्टादश विद्याओं में मीमांसा शास्त्र, मीमांसा से तर्कशास्त्र, तर्कशास्त्र से पुराण, पुराण से धर्म शास्त्र, धर्मशास्त्र से वेद, वेद से उपनिषद् और उपनिषद् से गायत्री का महत्व अधिक है ।

कुर्यादन्यन्नवा कुर्यादनुष्टानादिकम् तथा ।
गायत्री मात्र निष्ठस्तु कृत्य कृत्यो भवेद्विजः ।

-गायत्री तन्त्र

अन्य उपासना करें न करें, गायत्री मन्त्र की उपासना करने वाला द्विज कृतकृत्य हो जाता है ।

सप्त कोटि महामन्त्रा गायत्री नायका : स्मृताः ।
आदिदेवमुपासन्ते गायत्री वेदमातरम् ।।

-गायत्री कल्प

"करोड़ों मन्त्रों में सर्वप्रमुख गायत्री है जिसकी उपासना ब्रह्मा आदि देव भी करते हैं । वह गायत्री ही वेदों का मूल है ।

इत्युक्त्वा च महादेवी मूलप्रकृतिरीश्वरी ।।
अन्तर्धानं गता सद्यो भक्त्या देवैरभिष्टुता ।।
ततः सर्वे स्वगर्व तु विहाय पदपङ्कजम् ।।
सम्यगाराधयामासुर्भगवत्याः परात्परम् ।।
त्रिसंध्यं सर्वदा सर्वे गायत्रीजपतत्पराः ।।
यज्ञभागादिभिः सर्वे देवीं नित्य सिषेविरे ।।
न विष्णुपासना नित्या वेदेनोक्ता तु कुत्रचित् ।।
न विष्णुदीक्षा नित्यास्ति शिवस्यापि तथैव च ।।
गायत्र्युपासना नित्या सर्ववेदैः समीरिता ।।
यथा बिना त्वधःपातो ब्राह्मणस्याऽस्ति सर्वथा ।।
तावता कृतकृत्यत्वं नान्यापेक्षा द्विजस्य हि ।।
गायत्री मात्र निष्णातो द्विजो मोक्षमवाप्नुयात् ।।
कुर्यादन्यं न वा कुर्यादिति प्राह मनुः स्वयम् ।।

-देवी भागवत् १२ ।८ ।८४ से ९१

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

व्यास जी बोले अपना निर्देश देकर भगवती अन्तर्धान हो गईं । पीछे सब देवता अभिमान और अज्ञान छोड़ कर उसी परम शक्ति की उपासना में लग गये ।

सब त्रिकाल संध्याराधनापूर्वक गायत्री मन्त्र के जप में तत्पर रहने लगे । यज्ञ भाग देने लगे । विष्णु अथवा शिव की उपासना नित्य नहीं है । गायत्री उपासना को वेदों ने नित्य कहा है । इस गायत्री से रहित विप्र का अधः पतन हो जाता है । किसी भी अन्य उपासना का उतना सत्परिणाम नहीं, जितनी गायत्री का । केवल गायत्री उपासना से ही मुक्ति प्राप्त हो सकती है भले ही और कोई साधना न करें । मनु भगवान ने भी ऐसा ही कहा है ।

अष्टादशसुविद्यासु मीमांसातिगरीयसी ।
ततोपितकशास्त्राणि पुराणे तेभ्य एव च ।।
ततोपिधर्मशास्त्राणितेभ्यो गुर्वोश्रुतिर्द्विज ।
बतोप्युपनिषच्छ्रेष्ठागायत्री चततोधिका ।।
दुर्लभासर्वमन्त्रेषु गायत्री प्रणवान्विता ।
न गायत्र्याधिकं किञ्चित्त्रयीषु परिगीयते ।।
न गायत्रीसमो मन्त्रोनकाशीसदृशी पुरी ।

--स्कन्द पुराण काशीखण्ड १ ।४९ ।५१

अठारह विद्याओं में मीमांसा विद्या अत्यन्त बड़ी है । इससे भी अधिक गुरु तर्क शास्त्र हैं । उनसे भी, अधिक पुराण हैं और उन से भी अधिक धर्म शास्त्र होते हैं और इनसे अधिक गुरु श्रुति है । हे द्विज ! श्रुतियाँ में भी अधिक गुरु उपनिषद हैं और इनसे भी परम श्रेष्ठ गायत्री होती है । इससे अधिक कोई भी नहीं है । प्रणव से समन्वित गायत्री सभी मन्त्रों में दुर्लभ है । त्रयी में अर्थात् वेदत्रयी में गायत्री से अधिक कुछ भी नहीं परिगीत किया जाता है । गायत्री के समान कोई अन्य मन्त्र नहीं है और काशी के समान अन्य कोई भी पुरी नहीं है ।

गायत्री वेद जननी गायत्री ब्राह्मणप्रसूः ।
गातारं त्रायतेयस्माद्गायत्री ते न गीयते ।।
वाच्यवाचकसम्बन्धोगायत्र्याः सवितुर्द्वयोः ।
वच्योसौ सविता साक्षाद्गायत्री वाचिका परा ।
प्रभावेणैवगायत्र्याः क्षत्रियः कौशिकोवशी ।
राजर्षित्वपरित्यज्य ब्रह्मर्षि पदमीयिवान् ।।
सामर्थ्यं प्राप चात्युच्चेरन्यद्भुवनसर्जने ।
किं किं न दद्याद्गायत्री सम्यगेवमुपासिता ।

यह गायत्री वेदों की जननी है । गायत्री ब्राह्मणों को प्रसूत करने वाली है । क्योंकि इसका जो गायन (जाप) करता है उसकी यह सुरक्षा (त्राण) किया करती है इसीलिए इसको गायत्री कहा जाता है । गायत्री और सविता इन दोनों का वाक्य-वाचक सम्बन्ध होता है । वाच्य तो भगवान् सविता देव हैं और गायत्री साक्षात् परा उनकी वाचिका होती है । इस गायत्री के प्रभाव से ही क्षत्रिय वंशी कौशिक (विश्वामित्र) राजर्षित्व का त्याग करके ब्रह्मर्षि के पद को प्राप्त हो गये । दूसरा बहुत ऊँचा भुवन निर्माण करने की भी उन्होंने सामर्थ्य प्राप्त कर ली थी । भली-भाँति से उपासना की हुई गायत्री देवी मनुष्य को क्या-क्या नहीं दे दिया करती हैं ?

अन्यान्य मन्त्रों की तुलना में गायत्री की श्रेष्ठता बताई गई है और यह भी कहा गया है कि इस एक ही बीज उपासना को अपनाने से वेदाध्ययन का लाभ मिल जाता है । अन्य मन्त्रों की तुलना में गायत्री की विशेषता से इन्कार नही किया जा सकता । इस प्रसंग में कुछ प्रमाण इस प्रकार मिलते हैं-

सर्वेषा जप सूक्तानामृचाञ्च यजुषां तथा ।
साम्नां चैकाक्षरा दीनां गायत्री परमो जपः ।

-वृद्ध पाराशर स्मृति ४ ।४

वेदों के अनेक मन्त्र, जप, सूक्त ओंकार आदि अनेक उपासनाएँ हैं । उन सब में गायत्री मन्त्र परम श्रेष्ठ है ।

वृहदारण्यक उपनिषद् में गायत्री को ब्रह्मविद्या का, वेदविद्या का, परब्रह्म शक्ति का स्वरूप बताया गया है और कहा गया है कि इस महाशक्ति का आश्रय लेकर साधक ब्रह्मतेज का अधिकारी बनता है और वह सब कुछ प्राप्त कर लेता है जो इस संसार में पाने योग्य है ।

वृहत्पाराशर संहिता में कहा गया है -

सर्वेषां जप सूक्तानामृचाञ्च यजुषान्तथा ।
साम्नां चैकाक्षरादीनां गायत्री परमो जपः ।।
तस्याश्चैव तु ओंकारो ब्रह्मणा या उपासितः ।
आभ्यान्तु परमं जप्यं त्रैलोक्येऽपि न विद्यते ।।

अर्थात् "सम्पूर्ण सूक्तों में, ऋग्वेद, यजुर्वेद तथा सामवेद में तथा प्राणवादि जितने हैं उन सब में

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गायत्री को सर्वश्रेष्ठ कहा है । जिस ओंकार की उपासना ब्रह्माजी ने की थी वह भी उसी का अंग है । इन दोनों से बढ़कर जपने योग्य तीनों लोकों में और कुछ नहीं है ।''

पुराणं संहिताशास्त्रं स्मृतिशास्त्रं तथैव च ।
गायत्र्याः परमेशानि सदर्थं ब्रह्मसम्मितम् ।।

हे पदमेशात्रि ! पुराण-संहिता शास्त्र तथा स्मृति शास्त्र और गायत्री का सत् अर्थ यह सब ब्रह्म समित है

सांगश्चतुरोवेदानधीत्यापि सवाङ्.स यथात् ।
सावित्रीं यो न जानाति वृथा तस्य परिश्रम : ।।

-योगी याज्ञवल्क्य

समस्त अंग-उपअंगों समेत वेदों को पढ़ लेने पर भी जो गायत्री नहीं जानता उसका परिश्रम व्यर्थ हो गया समझना चाहिए ।

गायत्रीं चैव वेदांश्च तुलया समतोलयत् ।
वेदा एकत्र सांगास्तु गायत्री चैकतः स्मृता।।

-वृहद् योगी याज्ञ० ४-८०

अर्थात्- '' जब ब्रह्माजी ने तराजू के एक पलड़े में चारों वेदों और दूसरे में गायत्री को रखकर तोला तो गायत्री चारों वेदों की अपेक्षा भारी सिद्ध हुई ।''

यहाँ माता और पुत्रों की तुलना में माता की गरिमा अधिक भारी सिद्ध करने का तात्पर्य है।

इन्हीं सब विशेषताओं को देखते हुए गायत्री को धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष के चारों फल प्रदान करने वाले पाप, ताप, शोक, संताप, निवारणी कहा गया है । उसे सर्वोपरि साधना बताया गया है ।

स्कन्द पुराण में महर्षि व्यास का कथन है-

गायत्र्येव तपो योगः साधनं ध्यान मुच्यते ।
सिद्धिनां सामता माता नातः किंचिद् वृहत्तरम् ।।

-स्कन्द पुराण

गायत्री ही तप है, गायत्री ही योग है, गायत्री ही सबसे बड़ा ध्यान और साधन है । इससे बढ़कर सिद्धिदायक साधन और कोई नहीं है ।

भगवान मनु भी इसी निष्कर्ष पर पहुँचते हुए कहते हैं-

सावित्र्यास्तु परन्नास्ति ।

-मनु २ ।८

गायत्री से श्रेष्ठ और कुछ नहीं है ।

शास्त्रकारों ने भी गायत्री की सर्वोपरि शक्ति, स्थिति और उपयोगिता को एक स्वर से स्वीकारा है । इस सन्दर्भ में पाये जाने वाले अगणित प्रमाणों में से कुछ निम्नानुसार हैं-

तदित्यृचा समोनास्ति मन्त्रो वेद चतुष्टये ।
सर्ववेदञ्च यज्ञाश्च दानानि च तपासि च ।
समानि कलया प्राहुर्मुनयो न तदित्य चः ।।

-याज्ञवल्क्य

अर्थ- गायत्री के समान चारों वेदों में कोई मन्त्र नहीं है । समस्त वेद, यज्ञ, दान तप मिलकर भी गायत्री की एक कला के बराबर भी नहीं हो सकते, ऐसा ऋषियों ने कहा है ।

दुर्लभा सर्व मन्त्रेषु गायत्री प्रणवान्विता ।
न गायत्र्याधिक किंचित् त्रधीषुपरिगीयते ।।

-हारीत

अर्थ - इस संसार में गायत्री के समान परम समर्थ और दुर्लभ मन्त्र कोई नहीं है । वेदों में गायत्री से श्रेष्ठ और कुछ नहीं है ।

यथा कथं च जप्तैषा त्रिपदा परम पावनी ।
सर्वकामप्रदा प्रोक्ता विधिनाकिं पुनर्तृय ।।

-विष्णु धर्मोत्तर

अर्थ- हे राजन् ! जैसे-तैसे उपासना करने वाले की भी गायत्री माता कामना पूर्ण करती है, फिर विधिवत् साधना करने के सत्परिणामों का तो कहना ही क्या है ।

गायत्री को सबसे अधिक महत्त्व देना अकारण नहीं है । उसका कारण है कि गायत्री मन्त्र द्वारा परमात्मा से उसी तत्व की प्रार्थना की गई है, जो कि मनुष्य जीवन में अधिक आवश्यक है । अर्थ की दृष्टि से उसे सद्बुद्धि कहते हैं, पर 'धियः' शब्द का मूल तात्पर्य प्रज्ञा है, यह शब्द सामान्य व्यवहार बुद्धि के लिए प्रयुक्त नहीं होता । चतुरता, कुशलता एवं जानकारी में जो शिक्षा स्कूलों, कारखानों एवं बाजारों में सीखने को मिलती है, प्रज्ञा उससे सर्वथा भिन्न है । जिस विद्या के आधार पर आत्मबोध होता है- जीवन का महत्त्व स्वरूप लक्ष्य एवं उपयोग विदित होता है सत्-असत् का, उचित-अनुचित का भेद कर सकने वाली नीर-क्षीर विवेचन वृत्ति ही प्रज्ञा कही जा सकती है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गायत्री उपासना से प्रज्ञाशक्ति प्राप्त होने के साथ-साथ वे सभी विशिष्ट क्षमतायें प्राप्त होती हैं जिनका वर्णन विद्या-अविद्या के अवगाहन तथा योग-तप आदि के साधना विधान के साथ जुड़ा हुआ है । साधक अन्य कोई साधना न भी करे तो भी गायत्री का आश्रय लेकर उसे वे समस्त सफलतायें प्राप्त हो जाती हैं जो अन्य साधनाओं से प्राप्त होती हैं । क्योंकि इस उपासना से उपासक की आत्मिक पूँजी निरन्तर बढ़ती चली जाती है और यदि वह धैर्य तथा साहस के साथ आत्म संशोधन करते हुए अपने मार्ग पर बढ़ता ही चले तो एक दिन नर से नारायण के स्तर पर पहुँचता हुआ सिद्ध पुरुष बन जाता है । ब्रह्म वैवर्त पुराण में कहा भी है-

योगनिद्रा योगरूपा योगदात्री च योगिनाम् ।
सिद्धिस्वरूपा सिद्धानां सिद्धिदा सिद्धियोगिनी ।।
विद्याविद्यावतांत्वञ्च बुद्धि र्बुद्धिमतासताम् ।
मेधास्मृतिस्वरूपा च प्रतिभाप्रतिभावताम् ।।
वाहेन्द्या पूज्या स्तुतात्वञ्चब्रह्मादीनाञ्च सर्वदा ।
ब्राह्मण्यरूपाविप्राणां तपस्याचतपस्विनाम् ।।

-ब्रह्म वैवर्त पुराण

आप योग निद्रा, योग रूपा, योग दात्री हैं जो कि योगियों को योग प्रदान किया करती हैं । आप सिद्धों को सिद्धियों को देने वाली हैं । आप सिद्धिक्ष और सिद्धियों की योगिनी हैं ।

आप विद्वानों की विद्या और बुद्धिमान सत्पुरुषों की बुद्धि हैं । जो प्रतिभा वाले पुरुष हैं उनकी आप मेधास्मृति और प्रतिभा के स्वरूप वाली हैं ।

आप ब्रह्मा आदि समस्त देवताओं द्वारा पूजित हैं । ब्राह्मणों में ब्राह्मणत्व और तपस्वियों में तप आप ही हैं ।

भगवती ने इस तथ्य को स्वयं श्रीमुख से इस प्रकार उद्घाटित किया है:-

अहं बुद्धि रहे श्रीश्च धृतिः कीर्तिः स्मृतिस्तथा ।

श्रद्धा मेधा दया लज्जा क्षुधा तृष्णा तथा क्षमा ।
कान्तिः शान्तिः पिपासा च निद्रातंद्रा जराऽजर ।
विद्याऽविद्या स्पृहावाञ्छाशक्तिश्चाशक्ति देव च ।
वसा मज्जा चत्वच चाह दृष्टिर्वागनृत ऋता ।
परमध्या च पश्यन्ती नाड्योऽहं विविधाश्चया ।
कि नाहं पश्य संसारं मद्वियुक्तं क्रियस्ति हि ।
सर्वनेवाहमित्येवं निश्चय विद्धि पद्मज ।।

-देवी भागवत

"मैं क्या नहीं हूँ ? इस संसार में मेरे सिवाय और कुछ नहीं है । बुद्धि, धृति, कीर्ति, स्मृति, श्रद्धा, मेधा, दया, लज्जा, क्षुधा, तृष्णा, क्षमा, कान्ति, शान्ति, पिपासा, निद्रा, तंद्रा, जरा, अजरा, विद्या, अविद्या, स्पृहा, वांछा, शक्ति, अशक्ति, वसा, मज्जा, त्वचा, दृष्टि, असत और सत् , वाणी, परा, मध्यमा, पश्यन्ती, नाड़ी-संस्थान आदि सब कुछ मैं ही हूँ ।" इस संदर्भ में वृहवृचोपनिषद् में उल्लेख है-

देवीहयेकाऽग्र आसीत् । सैव जगदण्डमसृजत.....
तस्या एव ब्रह्मा अयोजनत् । विष्णुरजी जनत्.....
सर्वमजी जनत्..... । सैषा पराशक्तिः ।

-वृहवृचोपनिषद

सृष्टि के आरम्भ में वह एक ही देवी शक्ति थी । उसी ने वह ब्रह्माण्ड बनाया । उसी से ब्रह्मा उपजे । उसी ने विष्णु, रुद्र उत्पन्न किये । सब कुछ उसी से उत्पन्न हुआ । ऐसी है वह पराशक्ति ।

निर्दोषो निरधिष्ठेयो निरवद्यसनातनः ।
सर्वकार्यकरी साहं विष्णोरव्यय विरूपिणः ।।

-लक्ष्मीतन्त्र

वह ब्रह्म तो निर्दोष, निरधिष्ठ, निरवद्य, सनातन अव्यय है । उनकी सर्वकारिणी शक्ति तो मैं ही हूँ ।

इस महाशक्ति की सर्वव्यापकता का, सभी पदार्थों की अधिष्ठात्री विभूति एवं सभी हलचल की मूल प्रेरिका होन का वर्णन अनेक ग्रन्थों में मिलता है; देखिये-

त्वं भूमि सर्व भूतानां प्राणः प्राणवतां तथा ।
धीः श्रीः कान्तिः क्षमा शान्ति श्रद्धा मेधा धृतिः स्मृति : त्वं मुद्गीथेऽर्ध मात्रासि गायत्री व्यहृति स्तथा ।

-देवी० भा० १-५

तुम्हीं सब प्राणियों को धारण करने वाली भूमि हो । प्राणवानों में प्राण हो । तुम्हीं धी, श्री, कान्ति, क्षमा, शान्ति, श्रद्धा, मेधा, धृति, स्मृति हो । तुम ही ओंकार की अर्धमात्रा, उद्गीथ हो । तुम ही गायत्री व्यहृति हो ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पूषार्यमा मरुत्वांश्च ऋषयोऽपि मुनीश्वराः ।
पितरोनागयक्षाश्च गन्धर्वाप्सरसा गणाः ।।
ऋग्यजु सामवेदाश्च अथर्वाङ्गि रसानि च ।
त्वमेव पञ्चभूतानि तत्वानि जगदीश्वरि ।।
ब्राह्मी सरस्वती सन्ध्या तुरीया त्वं महेश्वरी ।
त्वमेव सर्वं शास्त्राणि त्वमेव सर्वं संहिता ।
पुराणानि च तन्त्राणि महगम मतानि च ।।
तस्मद् ब्रह्म स्वरूपां त्वं किञ्चित्सव सदात्मिका ।
परात्परेशी गायत्री नमस्ते मातरम्बिके ।।

–वशिष्ठ संहिता

पूषा, अर्यमा, मरुत, ऋषि, मुनीश्वर, पितर, नाग, यक्ष, गन्धर्व, अप्सरा, ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, अंगिरस, पंचभूत, ब्राह्मी, सरस्वती एवं सन्ध्या, महेश्वरि तुम ही हो । सर्वशास्त्र, संहिता पुराणं, तन्त्र, आगम, निगम तथा और भी जो कुछ इस संसार में है, हे ब्रह्मरूपिणी, पराशक्ति गायत्री तुम ही हो । हे माता तुम्हें प्रणाम है ।

त्वमेव सर्वजनीन मूलप्रकृतिरीश्वरी ।
त्वमेवाद्या सृष्टिविधौस्वच्छये त्रिगुणात्मिका ।
कार्यार्थे सगुणा त्व च वस्तुतो निर्गुणा स्वयम् ।
पर ब्रह्म स्वरूपा त्वं सत्या नित्या सनातनी ।।
तेजः स्वरूपा परमा भक्तानुग्रहविग्रहा ।
सर्वस्वरूपा सर्वेशा सर्वाधारा परात्परा ।।
सर्व बीज स्वरूपा च सर्वपूज्या निराश्रया ।
सर्वज्ञा सर्वतो भद्रा सर्व मंगल मंगला ।।

–ब्रह्मवैवर्त पु० प्रकृति २१६६ ।७ ।१०

"तुम्हीं विश्वजननी, मूल प्रकृति ईश्वरी हो, तुम्हीं सृष्टि उत्पत्ति के समय आद्यशक्ति के रूप में विराजमान रहती हो और स्वेच्छा से त्रिगुणात्मिका बन जाती हो यद्यपि वस्तुतः तुम निर्गुण हो तथापि प्रयोजनवश सगुण हो जाती हो । तुम परब्रह्मस्वरूप सत्य, नित्य एवं सनातनी हो । परम तेजस्वरूप और भक्तों पर अनुग्रह करने के हेतु मानव शरीर धारण करती हो तुम सर्वस्वरूप सर्वेश्वरी सर्वाधार एवं परात्पर हो । तुम सर्वबीजस्वरूप, सर्वपूज्या एवं आश्रय रहित हो । तुम सर्वज्ञ, सब प्रकार से मंगल करने वाली और सर्व मंगलों की भी मंगल हो ।

आदित्य देवा गन्धर्वा मनुष्या : पितरो सुराः तेषां सर्व भूतानां माता मेदिनी मही सावित्री गायत्री जगत्युर्वी पृथ्वी बहुला विद्या भूता ।

–नारायणोपनिषद्

अर्थात् देव, गन्धर्व, मनुष्य, पितर, असुर इनका मूल कारण अदिति अविनाशी तत्त्व है । वह अदिति सब भूतों की माता मेदिनी और माता मही है । उसी विशाल गायत्री के गर्भ में विश्व के सम्पूर्ण प्राणी निवास करते हैं ।

परमात्मास्तु या लोके ब्रह्मशक्ति विराजते ।
सूक्ष्मा च सात्विकी चैव गायत्री त्यभिधीयते ।।

अर्थात् सब लोकों में विद्यमान जो व्यापक परमात्मा की शक्ति है वह अत्यन्त सूक्ष्म एवं सतोगुणी प्रकृति में निवास करती है । यह चेतन शक्ति गायत्री ही है ।

अहं रुद्रेभिर्वसुभिश्चराम्यहमादित्यैरुत विश्वदेवैः ।
अहं मित्रावरुणोभाविभर्म्य हमिन्द्राग्नी अहिमश्वि नोभा ।

मैं ही रुद्र, वसु, आदित्य और विश्वेदेवता में विचरण करती हूँ । मैं ही मित्र वरुण, इन्द्र, अग्नि और अश्विनी कुमारों का रूप धारण करती हूँ ।

– ऋग्वेद ।७ ।११

मया सो अन्नमत्ति यो विपश्यति यः प्राणिति यई श्रृणोत्युक्तम् । अनन्त व मांत उप क्षियन्ति श्रुत श्रद्धि व ते वदामि ।

यह विश्व मुझसे ही जीवित है । मेरे द्वारा ही उसे अन्न मिलता है । मेरी शक्ति से ही वह बोलता और सुनता है । जो मेरी उपेक्षा करता है वह नष्ट हो जाता है । श्रद्धावानो, सुनो ! यह सब मैं तुम्हारे कल्याण के लिये कहती हूँ ।

अहमेक स्वयमिदं वदाति जुष्टंदेवेभिरुत मानुषेभिः
या कामये त तमुग्र कृणोमि त ब्राह्मणं तं सुमेधा ।।

मैं तत्त्वज्ञान का उपदेश करती हूँ, मैं जिसे चाहती हूँ उसे समुन्नत करती हूँ, सद्बुद्धि देती हूँ ऋषि बनाती हूँ और ब्रह्मपद प्रदान करती हूँ ।

इस महाशक्ति का विस्तार अत्यन्त व्यापक है जब समस्त सृष्टि की अगणित प्रक्रियाओं का संचालन उसी के द्वारा होता है तो कितने प्रकार की शक्तियाँ उसके अन्तर्गत काम करती होंगी, इसकी कल्पना कर सकना भी कठिन है । पर मनुष्य

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सीमित है । उसकी आवश्यकतायें एवं शंकायें भी सीमित हैं । जिन वस्तुओं को प्राप्त करके उसका व्यक्तित्व निखर उठता है एवं मन उल्लसित हो जाता है वे विभूतियाँ भी सीमित हैं । यह सीमित वस्तुयें गायत्री का एक बहुत छोटा अंश मात्र हैं । मनुष्यों में भी जो कुछ प्रशंसनीय एवं आकर्षक विशेषतायें दिखाई पड़ती हैं उन सबको उस महाशक्ति का छोटा सा प्रमाद ही समझना चाहिए । विभूतियों के इस भण्डागार को जो लोग समझते हैं स्वयं उन जैसे तेजस्वी और महिमामय हो जाते हैं अतएव उन्हीं ध्यान और अवगाहन करना चाहिए ।

गायत्री उपासना सनातन और सर्वोपरि

देवी भागवत पुराण में एक बड़े महत्त्वपूर्ण उपाख्यान का उल्लेख है, जिसमें गायत्री उपासना की महत्ता को सर्वोपरि बताया है । इस उपाख्यान में इस शंका का समाधान किया गया है कि गायत्री के रहते अन्य देवताओं अथवा मन्त्रों को महत्त्व क्यों दिया जाता है । उपाख्यान में अनादि मन्त्र गायत्री को ही बताया गया है और उसे सर्वोपरि प्रतिपादित किया गया है ।

अन्य देवताओं अथवा देव-मन्त्रों की भले ही उपासना की जाय पर ध्यान यही रहना चाहिये । कि भारतीय धर्मानुयायियों का प्रधान उपास्य गायत्री ही है ।

ब्रह्मा, विष्णु, महेश यह तीन देवता प्रधान माने गये हैं । मन्त्र भी प्रायः इन्हीं के हैं । अन्य देवता-देवियाँ इन्हीं के पुत्र, परिजन और देवियाँ इन्हीं की पत्नियाँ हैं । उन्होंने समय-समय पर अनेक रूप-अनेक प्रयोजनों के लिये धारण किये हैं । इसलिये वे सभी इन तीन देवों के अन्तर्गत आ जाते हैं । इन प्रधान तीनों देवों का उपासना तत्व गायत्री ही रहा है । वे सभी इस महाशक्ति की आराधना करके अपनी शक्ति और महिमा को अक्षुण्ण बनाये रखने में समर्थ रहे हैं । इसलिये सर्व-साधारण के लिये भी यही उचित है कि भले ही अन्य देवी-देवता की वे उपासना करते हों , पर गायत्री महामन्त्र की उपेक्षा न करें । प्रधानता गायत्री को दें । अनिवार्य उसी को रखें और फिर जिस भी देवता या उसके मन्त्र की आराधना करनी हो, करते रहें ।

गायत्री का तिरस्कार अथवा उपेक्षा करके न तो किसी देवता को प्रसन्न किया जा सकता है और न कोई मन्त्र सिद्ध हो सकता है । फाटक का बड़ा द्वार खुले बिना किसी महल में प्रवेश करना सम्भव नहीं होता । फाटक खुल जाने पर जब भीतर प्रवेश कर सकना सम्भव हो जाय, तभी महल के भीतरी छोटे कमरों के दरवाजे खोलने की बात सोची जा सकती है । गायत्री, उपासना क्षेत्र का प्रवेश-द्वार है । नित्य-कर्म, सन्ध्या-वन्दन उसी की प्रमुखता में सम्पन्न होता है और यह सुविदित तथ्य है कि बिना सन्ध्या वंदन किये किसी भी देवता की उपासना का न तो अधिकार मिलता है और न सफलता मिलती है ।

इस तथ्य पर प्रकाश डालते हुए 'देवी भागवत' के एक महत्त्वपूर्ण प्रकरण का उद्धरण प्रस्तुत है -

भगवन्सर्वधर्मज्ञ सर्व शास्त्रावतां वरः ।
द्विजातीनां तु सर्वेषां शक्त्युपास्तिः श्रुतीरिता ।।
सन्ध्याकाल त्रयेऽप्यस्मिन् काले नित्य तयाविभो ।
तां विहाय द्विजाः कस्माद् गृह्णीयुश्चान्य देवताः ।।

अर्थ- राजा जनमेजय ने व्यास जी से पूछा था- "हे भगवन्! आप तो समस्त धर्मों के ज्ञाता हैं और सम्पूर्ण शास्त्रों के ज्ञाताओं में परमश्रेष्ठ हैं । सब द्विजातियों के लिये शक्ति की उपासना ही वेद ने बतलाई है । हे विभो ! फिर क्या कारण है कि तीनों संध्याकाल की वन्दना में तथा अन्य समय में भी नित्य ही उस शक्ति का त्याग करके द्विजगण अन्य देवों की उपासना को क्यों ग्रहण किया करते हैं ।"

सर्वसाधारण की भाँति राजा जनमेजय के मन में भी यह जिज्ञासा उत्पन्न होनी स्वाभाविक थी कि जब इतना शक्तिशाली एक सनातन उपास्य मौजूद है, तब गंगा का सहारा छोड़ छोटे नदी-नालों का आसरा ताकते फिरने में क्या लाभ ?

इस शंका के समाधान में महर्षि व्यास ने बताया कि प्राचीनकाल में सभी कोई केवल गायत्री उपासना करते थे । अब समय की विपरीतता और अदूरदर्शिता के कारण लोग इधर-उधर भटक रहे हैं । इतने पर भी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सुनिश्चित तथ्य जहाँ का तहाँ है । इसकी महिमा एवं महत्ता कम नहीं होती । इस अनादि उपासना का इतिहास बताते हुए महर्षि व्यास कहते हैं ।

नूनं सत्ययुगे राजन् ब्राह्मणा वेदपारागाः ।
परा शक्त्यर्चनरता देवी दर्शन लालसाः ।।
गायत्री प्रणवासक्ता गायत्री ध्यान कारिणः ।
गायत्री जप ससक्ता माया बीजैक जापिनः ।।
ग्रामे ग्रामे पराम्बायाः प्रासाद करणोत्सुकाः ।
स्वकर्म निरताः सर्वे सत्यशौचदयान्विताः ।।

अर्थ- व्यास जी ने राजा जनमेजय से कहा - " हे राजन् ! निश्चय ही सतयुग में सभी ब्राह्मण वेदों के पारगामी महान् विद्वान होते थे और सब पराशक्ति गायत्री की अर्चना करने में रुचि रखने वाले थे । सभी देवी के दर्शन करने की परम लालसा रखा करते थे । सब लोग गायत्री और प्रणव के जाप में आसक्ति रखते थे तथा निरन्तर गायत्री के ध्यान करने वाले होते थे । माया बीज के जपने वाले गायत्री का जप करने में संलग्न रहते थे । हर एक ग्राम में परात्परा अम्बा के प्रासाद की रचना कराने की उत्कण्ठा रखा करते थे । सब लोग अपने-अपने कर्मों में निरत और सत्य, पवित्रता तथा दया से युक्त होते थे ।"

ब्रह्मा, विष्णु और महेश द्वारा वेद-माता गायत्री की महिमा और शक्ति का जो अनुभव कहा है और उस महान् उपासना के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त की है, उसका संदर्भ इस प्रकार है-

ध्यायान्ति या मुनिगण नियतं त्रिकालं,
सन्ध्येति नाम परिकल्प्य गुणान् भवानि ।
बुद्धिर्हि बोध करणा जगतां सदा त्वं,
श्रीश्चासि देवि ! सततं सुखदा नराणाम् ।।
कस्ते चरित्रमखिलं भुवि वेदधीमान् ।
नाहं हरिर्नचाभवो न सुरास्तथान्ये ।
ज्ञातुं क्षमाश्च मुनयो न ममात्मताश्च,
दुर्वाच्य एव महिमा तव सर्व लोके ।।

अर्थ- पितामह ब्रह्मा, देवी की स्तुति करते हैं - "मुनिगण नियत रूप से तीनों कालों में जिसका ध्यान किया करते हैं । हे देवि ! उस आपको 'सन्ध्या' यह नाम से पुकार कर आपके गुणों का गान किया करते हैं । उन्होंने आपका ही सन्ध्या ऐसा नाम परिकल्पित कर लिया है । आप सदा जगत् का ज्ञान कराने वाली बुद्धि हैं और हे देवि ! निरन्तर सुख प्रदान करने वाली मनुष्यों की आप ही श्री हैं । इस संसार में कौन ऐसा बुद्धिमान् है, जो आपके सम्पूर्ण चरित्र को जानता हो ? अर्थात् कोई भी नहीं है । न मैं ही जानता हूँ और न हरि-शिव तथा अन्य देवगण ही जानते हैं । मेरे पुत्र एवं मुनिगण भी आपके चरित्र का ज्ञान रखने की क्षमता नहीं रखते हैं । समस्त लोक में आपकी ऐसी महिमा है कि उसे कोई भी कह ही नहीं सकता है ।"

आराध्या परमाशक्तिः सर्वैरपि सुरासुरैः ।
नातः परतरं किञ्चिदधिकं भुवने त्रये ।
सत्यं सत्यं पुनः सत्यं वेदशास्त्रार्थ निर्णयः
पूजनीया पराशक्तिनिर्गुण सगुणाथवा ।।

अर्थ- समस्त सुरासुरों के द्वारा आराधना के योग्य उस परमशक्ति का पूजन करना चाहिये । इससे बड़ा त्रिभुवन में अन्य कोई नहीं है, पर वेद-शास्त्रों का परमसत्य निर्णय है, वह सर्वोपरि है, चाहे निर्गुण हो या सगुण हो ।

अद्याहं तव पादपङ्कज परागादान गर्वेण वै
धन्योऽस्मि- इति यथार्थवाद निपुणो जाताप्रसादाच्चते ।
याचे त्वां भवभीति नाश चतुरां मुक्तिप्रदांचेश्वरीं
हित्वा मोह कृतं महाति निगडं त्वद्भक्ति युक्तं कुरु ।।
न जानन्ति ये मानवस्ति वदन्ति प्रभुं मां
तवाद्यं चरित्रं पवित्रम् । जस्तीह ये याजकाः स्वर्गकामा
नते ते प्रभावं विदन्त्येन काममम् ।।

अर्थ- पितामह ब्रह्मा जी देवी का स्तवन करते हुए पुनः उनकी महिमा इस प्रकार बताते हैं- 'हे देवि ! मैं आपके चरणारविन्द के पराग को प्राप्त कर बड़े ही गर्व के साथ कहता हूँ कि आज मैं परमधन्य हुआ हूँ और आपके ही प्रसाद से मुझे यथार्थवाद में निपुणता प्राप्त हुई है। अब तो मेरी यही याचना आपकी सेवा में है, क्योंकि आप इस भव के भय के नाश करने में बड़ी दक्ष हैं, मुक्ति प्रदान करने वाली हैं और समस्त विश्व की स्वामिनी हैं । यह जो मोह-जाल का बहुत अधिक निगड़ बन्धन है, उसका नाश कर अर्थात् उससे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

छुड़ाकर आप अपनी भक्ति की भावना से मुझे युक्त कर देवें । जो मनुष्य मुझको ही प्रभु समझकर मेरा समादर किया करते हैं, उनको आपके सर्वोत्तम एवं पवित्र चरित्र का ज्ञान सर्वथा नहीं है । स्वर्ग की कामना से याजकगण मेरा भजन किया करते हैं । हे देवि ! वे आपके वास्तविक प्रभाव को बिल्कुल नहीं जानते हैं ।"

विद्या त्वमेव ननु बुद्धिमतां नराणां शक्तिस्वमेव किल शक्तिम नां सदैव । त्वं कीर्ति कान्ति कमलामल तुष्टि रूपा मुक्तिप्रदा विरतिरेव मनुष्य लोके । गायत्र्यसि प्रथम वेद कला त्वमेव स्वाहा स्वधा भगवती सगुणार्धा गमा । आम्नाय एव विदितो निगमो भवत्या सञ्जीवनाय सततं सुर पूर्वजानाम् ।।

अर्थ- भगवान् विष्णु ने देवी का स्तवन करते हुए प्रार्थना की है - " हे भगवती ! बुद्धिमान मनुष्यों में जो ज्ञान है, वह आपका ही स्वरूप है । जो परम शक्तिशाली पुरुष हैं, उनमें जो शक्ति विद्यमान है, वह भी आप ही उस रूप में विराजती हैं । बिना आपकी कृपा कण के ज्ञान और शक्ति हो ही नहीं सकती है । कीर्ति, कान्ति, कमल और अमल तुष्टि भी आप ही का स्वरूप हैं । इस मनुष्य लोक में मुक्ति के प्रदान करने वाली विरति भी आप ही हैं । वेद की प्रथम कला स्वरूपिणी आप गायत्री हैं और सगुणार्थ मात्र स्वाहा तथा स्वधा भी आप ही हैं । आपने ही सुरों के पूर्वजों के संजीवन के लिये आम्नाय निगम की रचना की है ।

तपसि ये निरताः मुनयोऽमलास्तवः
विहाय पदाम्बुजपूजनम् ।
जननि ! ते विधिना किलवञ्चिता ।
परिभवो विभवे परिकल्पजः ।।
न तपसो न दमेम समाधिना न च तथा
विहितैः क्रतुभिर्यथा ।
तव पदाब्ज पराग निषेवणाद्भवति
मुक्तिरजे भवसागरात ।।

अर्थ - भगवान् शंकर स्वयं भगवती की स्तुति करते हुए प्रार्थना करते हैं- " हे देवि! आपके चरणकमलों का समाश्रय त्याग कर जो मुनिगण परम अमल होते हुये भी सर्वदा तपश्चर्या में निरत रहा करते हैं, हे जननि ! वे विधाता के द्वारा वंचित किये हुये हैं, अर्थात् उनका दुर्भाग्य ही है कि विभव में उनका परिभव निर्मित कर दिया है । इस संसार रूपी अगाध सागर से मुक्ति की प्राप्ति आपके चरणकमल के पराग का सेवन करने ही से हो सकती है, अन्य इसका कोई भी उपाय नहीं है । तपस्या के द्वारा भी मोक्ष नहीं हो सकता है तथा ध्यान और योग के द्वारा समाधिस्थ होने से एवं विधिपूर्वक किये हुए यज्ञों से भी भवसागर का बन्धन नहीं छूटता है । इसे तो आपके ही चरणों का समाश्रय प्रदान कर करता है ।

तस्यात् ब्रह्मादियो राजन् सन्ति यद्यअधीश्वराः।
तथापि माया कल्लोल योग संक्षुभितान्तराः ।।
तदधीनाः स्थिताः सर्वे काष्ठ पुतलिकोपमाः ।
यद्यायथा पूर्वभवं कर्म तेषां तथा तथा ।।
प्रेरयत्यनिशं माया परब्रह्म स्वरूपिणी ।
न वैषम्यं न नैर्सृणयं भगवत्यां कदाचन ।।

अर्थ- राजा ने व्यास जी से बहुत सी शंकायें की थीं । जिनमें राम, कृष्ण, विष्णु, ब्रह्मा आदि सभी को उनकी लीलाओं में मोह आदि का उल्लेख किया था । ऐसे महान् देवों में और भगवदावतारों को ऐसा समय-समय पर व्यामोह कैसे हुआ ? इसके समाधान में व्यास जी ने कहा- "हे राजन् ! यद्यपि ब्रह्मादिक सब ही निस्सन्देह अधीश्वर तो हैं, किन्तु ये सभी माया की तरंगों के योग से संक्षुभित अन्तःकरण वाले हैं । उस महामाया के ही ये सब अधीन हैं, जैसे काठ की पुतली नचाने वाले के हाथ में रहा करती है, ठीक वैसी ही इन सबकी स्थिति है । जैसे इनका पहले होने वाला कर्म होता है, वैसे ही यह परब्रह्म स्वरूप वाली माया उनको सर्वदा प्रेरित किया करती है । महामाया भगवती में न तो कोई विषम भावना है और न कभी घृणा ही है । यह भुवनों की अधीश्वरी तो केवल जीवों के कल्याण के लिये ही सदा किया करती है ।

तस्मात्सर्वात्मना राजन् संसेव्या परमेश्वरी ।
नित्या चेग्न्यनसना शक्तेर्या बिना तु पतत्यधः ।।

अतएव हे राजन् ! सर्वात्मभाव से परमेश्वरी गायत्री का सेवन करना ही चाहिये । शक्ति की उपासना ही नित्या है । जिसके बिना द्विज का निश्चय ही अधःपतन हो जाता है ।

0गायत्री को 'वेद माता' और 'विश्व माता' कहा गया है । उसके स्तवन में 'नमो वेद माता-

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

नमो विश्व माता ' की स्वर लहरी निनादित होती है । यह भावुकता एवं साधक की श्रद्धा अभिव्यक्ति ही नहीं श्रुति प्रतिपादित भी है । सृष्टि के आरम्भ में शब्द ब्रह्म का प्रकट होना और उसी की शाखा-प्रशाखायें विकसित होते-होते वेद का तथा विश्व का निर्माण होना एक तथ्य है । शब्द ब्रह्म की सर्वप्रथम सुव्यवस्थित प्रतिक्रिया गायत्री महामन्त्र के रूप में ही प्रकट हुई है । अस्तु, उसे वेदमाता और विश्व माता का श्रेय मिलना स्वाभाविक ही है ।

गायत्री को वेदमाता कहा गया है । आर्ष मान्यता यह है कि सृष्टि के आदि में ॐकार का ध्वनि प्रवाह उत्पन्न हुआ । वही नाद ब्रह्म का प्रथम स्वरूप था । ॐ का खण्ड वर्गीकरण तीन अक्षरों के रूप में हुआ- अ उ म् । इन तीनों का विकास तीन व्याहृतियों भूः भुवः स्वः के रूप में हुआ । इन व्याहृतियों से आठ-आठ अक्षरों वाले तीन चरणों का गायत्री मन्त्र प्रादुर्भूत हुआ । इस महामन्त्र की व्याख्या स्वरूप वेदों के व्याख्यान किये गये । उनका विस्तार विवेचन ब्राह्मण आरण्यक, उपनिषद् आदि के रूप में हुआ है । इनमें प्रस्तुत तथ्यों का विस्तारपूर्वक उपख्यानों सहित वर्णन पुराणों में तथा निर्णयात्मक निष्कर्ष की तरह स्मृतियों एवं सूत्रों में हुआ है ।

ॐकार तथा व्याहृतियाँ बीज मन्त्र हैं । वे ध्वनि प्रधान हैं । शिक्षा तथा निर्देशों के लिए शास्त्र रचना का शुभारम्भ वेदों से ही हुआ । इसलिए ब्रह्मवाणी का सुव्यवस्थित रूप वेद को ही माना गया है । वेद, गायत्री की व्याख्या माना जाता है इसलिए उसे वेद माता कहा जाता रहा है ।

ॐकार शब्द ब्रह्म से व्याहृतियों का उत्पन्न होना और उनके विस्तार स्वरूप वेदों का प्रकाश में आना कई प्रमाणों के आधार पर जाना जा सकता है ।

अण्डं विभज्य भगवांस्तस्मादोमित्य जायत ।।३१
ततो भूरभवत्तस्माद्भुव इत्यपरः स्मृतः ।
त्वः शब्दश्च तृतीयोऽभूद्भूवःस्वेति संज्ञिता ।।३२
तस्यां तेजः समभवत्तत्सवितुर्वरेण्यं यत् ।

-वामन पु०

भगवान ने अण्ड को विभक्त कर दिया और फिर उससे "ओम्" -यह उत्पन्न हुआ था । ३१ । फिर उससे 'भू' हुआ दूसरा 'भुव' हुआ और तृतीय शब्द 'स्व' यह हुआ था । इस तरह भूः भुवः स्वः संज्ञा वाले तीन शब्द हुए थे ।३२। उसमें जो 'सवितुर्वरेण्यं' तेज था वह हुआ था अर्थात् सविता का वरेण्य तेज हुआ था ।

अकारञ्चाप्यु कारञ्च मकराञ्च प्रजापतिः ।
वेदत्रयान्निरदुहद् भूर्भुवः स्वरितीति च ।।७६।।
त्रिभ्य एव तु वेदेभ्यः पादं पादमदूदुहत् ।
तदित्यु चोऽस्याः सावित्र्या परमेष्ठी प्रजापतिः ।।७७ ।।

प्रजापति ने अकार, उकार और मकार का तीनों वेदों से दोहन किया था । भूर्भवः स्वः - ये भी तीन वेदों से पाद-पाद को दोहन किया । सावित्री की तत्-इस ऋचा का परमेष्ठी प्रजापति ने इसी प्रकार से दोहन किया था ।। ७६ ।। ७७ ।।

भूरितिवास चः । भुवः इति सामानि । सुवरिति यजुषि महइति ब्रह्म । ब्रह्मणावाय सर्वे वेदा महीयन्ते ।

"भू ऋग्वेद है, भुवः सामवेद है, स्वः यजुर्वेद और मह ब्रह्म है । क्योंकि ब्रह्म से ही सारे वेद महिमा को प्राप्त होते हैं ।

यथा भवेन्महादेव्या गायत्र्याः श्रुतिचोदिता ।
सर्व वेदसारभूता गायत्र्यास्तु समर्चना ।।८ ।।
ब्रह्मादयोऽपि संध्याया तां ध्यायंति जपंति च ।
वेदा चपंति तां नित्यं वेदोपास्या ततः स्मृता ।।

-देवी भागवत

गायत्री चारों वेदों का सार तथा उपास्य है । ब्रह्मा आदि देवता भी सन्धवन्दन में गायत्री की आराधना करते हैं । गायत्री वेद उपासना ही है ।

इस प्रकार गायत्री को वेदमाता और विश्व-माता कहा जाता है और उसे सृष्टि की सर्वोपरि सत्ता माना जाता है ।

सर्वतोमुखी समर्थता की अधिष्ठात्री गायत्री महाशक्ति

इस विश्व में दो शक्तियाँ काम करती हैं- एक चेतन दूसरी जड़। जड़ पदार्थ देखने में ही स्थिर प्रतीत होते हैं, पर वस्तुतः उनमें भी अद्भुत क्रियाशीलता विद्यमान है । पदार्थ की सबसे छोटी इकाई है-परमाणु । वह चर्मचक्षुओं से स्थिर स्तब्ध

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दिखाई पड़ता है, पर जब सशक्त सूक्ष्म दर्शक यन्त्रों से उनकी अन्तरंग स्थिति को देखा जाता है, तो प्रतीत होता है कि कितनी प्रचण्ड शक्ति और कितनी द्रुतगामी हलचल उनके भीतर काम कर रही है । अणु विश्लेषण अणु विस्फोट के प्रयोगकर्ता जानते हैं कि पदार्थ का सबसे छोटा यह घटक भी अपने भीतर कितनी भयंकर क्षमता दबाये हुए है और वह क्षमता स्थिर न रह कर कितनी सक्रिय हलचलों में संलग्न है । अणु भट्टियों से उत्पन्न ताप द्वारा जो विशालकाय विद्युत् उत्पादन योजनाएँ चल रही हैं और अणु आयुधों द्वारा संसार भर का सर्वनाश करने की जो विभीषिका सामने खड़ी है, उसके मूल में परमाणु के अन्तराल में काम करने वाली प्रचण्ड सक्रियता ही मूल कारण है ।

रेत, पर्वत, तालाब आदि को यों मोटी दृष्टि से स्थिर समझा जा सकता है, पर उनमें सृजन, अभिवर्धन और परिवर्तन का जो अनवरत क्रम चलता रहता है, उसे गम्भीरतापूर्वक देखने से प्रतीत होता है कि जीवधारी जिस प्रकार अपने विभिन्न प्रयोजनों में निरन्तर कुछ न कुछ सोचते और करते रहते हैं उसी प्रकार पदार्थ की दृश्य और अदृश्य गतिशीलता भी इस संसार को हलचल युक्त बनाये हुए है । अपनी पृथ्वी से लेकर असंख्य ग्रह-नक्षत्रों तक सभी ब्रह्माण्डीय पिण्ड द्रुतगति से अपनी धुरी और कक्षा पर भ्रमण कर रहे हैं और अपनी आकर्षण शक्ति के द्वारा एक-दूसरे के साथ बँधे जकड़े हैं । इतना ही नहीं उनके अन्तः क्षेत्र में भी चित्र-विचित्र गतिविधियाँ अत्यन्त तीव्रगति से चलती रहती हैं । पदार्थ के साथ यह सक्रियता अविच्छिन्न रूप से जुड़ी होने के कारण ही उसका अस्तित्व बना हुआ है । पदार्थ की संरचना प्रचण्ड क्रियाशीलता के साथ हुई है । इसी के कारण वस्तुएँ स्वयमेव उपजती और बदलती रहती हैं । पदार्थ की इस क्रियाशीलता को अपरा प्रकृति कहा गया है ।

परमाणु की तरह दूसरा घटक है- जीवाणु । जीवाणु का शरीर कलेवर तो रासायनिक पदार्थों से ही बना होता है, पर उसकी अन्तः चेतना मौलिक है जो पदार्थ की शक्ति से उत्पन्न नहीं होती, पर अपने प्रभाव से कलेवर को तथा समीपवर्ती वातावरण को प्रभावित करती है । इसे चेतना कहते हैं । चेतना के दो गुण हैं एक इच्छा एवं आस्था, दूसरी विवेचना एवं विचारणा है । इच्छा को भाव और विचारणा को बुद्धि कहते हैं । एक को अन्तरात्मा दूसरी को मस्तिष्क कह सकते हैं । मस्तिष्क जो सोचता है उसके मूल में आकांक्षा, आस्था, विवेचना एवं विचारणा की सम्मिलित प्रेरणा ही काम करती है । इस जीव चेतना को परा प्रकृति कहते हैं ।

परमाणु उसका सबसे छोटा घटक है, इसका संयुक्त रूप ब्रह्माणु अथवा ब्रह्माण्ड हैं । व्यष्टि और समष्टि के नाम से भी इस लघुता और विशालता को जाना जाता है । जीवाणु की चेतन सत्ता आत्मा कहलाती है और उसकी समष्टि विश्वात्मा अथवा परमात्मा है । ब्रह्माण्ड में भरी क्रियाशीलता से परमाणु प्रभावित होता है । इसी बात को यों भी कह सकते हैं कि परमाणुओं की संयुक्त चेतना ब्रह्माण्ड-व्यापी हलचलों का निर्माण करती है । इसी प्रकार चेतना के क्षेत्र में इसी तथ्य को परमात्मा द्वारा आत्मा को अनुदान मिलना अथवा आत्माओं की संयुक्त चेतना के रूप में परमात्मा का विनिर्मित होना कुछ भी कहा जा सकता है ।

परमाणु का गहनतम विश्लेषण करने पर जाना गया है कि वह मूलतः ऋण और धन विद्युत् प्रवाहों के मिलन से उत्पन्न होने वाली हलचल मात्र है । परिस्थिति के अनुसार यह हलचल ही दृश्य रूप धारण करती और पदार्थ के रूप में दृश्य होती चली जाती है । इसी प्रकार जीवात्मा भी यों स्थूल, सूक्ष्म और कारण शरीर धारण किये अनेक प्रकार के साधन उपकरण सँभाले दीखता है, उसकी अपनी अहंता और इच्छा भी है किन्तु मूलतः वह व्यापक चेतना का एक स्फुल्लिंग मात्र है । उसे विभिन्न प्रकार की क्षमताएँ विश्वात्मा के महासमुद्र में से ही मिलती हैं । मछली का शरीर, आहार, निर्वाह

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सब कुछ जलाशय पर ही अवलम्बित है इसी प्रकार जीव भी ब्रह्म पर आश्रित है । इतने पर भी विचित्रता यह है कि मछली तालाब को गन्दा कर सकती है और जीव ब्रह्म को प्रभावित कर सकता है ।

गायत्री क्या है ? इस ब्रह्माण्ड में संव्याप्त उस चेतना मानसरोवर को गायत्री कह सकते हैं जो प्राणियों में ज्ञान सम्वेदना और पदार्थों में सृजन परिवर्तन वाली क्रियाशीलता बनकर काम करती है । इसे ब्रह्म चेतना से उद्भूत माना गया है । ज्ञान से कर्म बना और दृश्य ने अपना दृश्य कलेवर धारण कर लिया । इस प्रकार यह विश्व मूलतः अद्वैत होते हुए भी द्वैत बन गया । ब्रह्म से प्रकृति बनी और फिर वे दोनों मिल-जुलकर सृष्टि का इतना विकास कर सके जैसा कि हमें दृष्टिगोचर होता है । इसी तथ्य को पुराणों में अनेकों अलंकारिक कथा, उपाख्यानों के रूप में बताया गया है ।

ब्रह्माजी की दो पत्नियाँ थीं । एक गायत्री दूसरी सावित्री । ब्रह्म की दो क्षमताएँ हैं- एक परा प्रकृति चेतन सत्ता, दूसरी अपरा प्रकृति पदार्थ सत्ता । एक का धर्म ज्ञान, दूसरी का कर्म है । एक अदृश्य है दूसरी दृश्य । एक सजीव है दूसरी निर्जीव । इतने पर भी उनका उद्गम स्रोत एक है । हिमालय के अन्तराल में से गंगा और यमुना दोनों ही धारा निकली हैं । ब्रह्म से ही परा और अपरा प्रकृति का उद्भव हुआ है ।

गायत्री को मूलतः ब्राह्मी शक्ति कह सकते हैं । समुद्र की असंख्य लहरें पृथक्-पृथक् दीखती हैं और उनकी आकृति-प्रकृति में भी भिन्नता रहती है । इतने पर भी समुद्र की सतह पर होने वाली हलचल ही इन लहरों का सृजन करने का मूल कारण है । गायत्री महाशक्ति के चेतन और जड़ विभाजन तो आरम्भिक हैं । आगे चलकर गंगा और यमुना में उठने वाली अनेकों लहरें, धाराएँ तथा भँवर आदि के रूप में उत्पन्न होने वाली हलचलों की तरह उस ब्रह्म शक्ति की भी अनेकानेक धाराएँ हैं । इन्हें विभिन्न नाम दिये गये हैं । गायत्री के भी अनेकों नाम, रूप हैं । गायत्री सहस्रनाम में उसके एक हजार नाम गिनाये गये हैं । इन्हें उस महान शक्ति सागर की लहरें, तरंगें कह सकते हैं । हर सहस्र नाम से तात्पर्य उस ब्राह्मी शक्ति के प्रकारों को अमुक गणना में सीमाबद्ध कर देना नहीं वरन् उसका तात्पर्य है- असंख्य । सहस्रनाम तो नमूने भर के लिए गिनाये गये हैं ।

गायत्री ब्रह्मशक्ति के स्वरूप क्रिया-कलाप एवं उपयोग को शास्त्रों में अनेक उदाहरणों के साथ बंताया गया है । कहीं तो उस शक्ति ने स्वयं ही अपने स्वरूप का परिचय दिया है और कहीं देवताओं ने अथवा ऋषियों ने स्तवन के रूप में उसके स्वरूप का गुण-गान सहित वर्णन किया है । इन वर्णनों के आधार पर यह जाना जा सकता है कि गायत्री शक्ति तत्व का इस संसार में कहाँ किस प्रकार उपयोग हो रहा है ?

गायत्री परदेवतेति गहिता ब्रह्मैव चिद्रूपिणी ।

यह गायत्री सबसे परा देवता है - ऐसा कहा गया है । यह चित् स्वरूप वाली साक्षात् ब्रह्म ही है ।

गायत्रीं तु परं तत्त्वं गायत्री परमागतिः ।

- वृद्ध पाराशर ५ ।४

गायत्री ही परम तत्त्व है । गायत्री ही परम गति है ।

गायत्री सा महेशानी परब्रह्मात्मिका यता ।

-रुद्र तन्त्र

यह गायत्री ही परब्रह्मात्मिका और महेश्वरी है ।

गायत्री परदेवतेति गदिता ब्रह्मैव चिद्रूपणी ।

- गायत्री पुरश्चरण पद्धित

पर देवता, चित् रूपिणी एवं साक्षात् ब्रह्म गायत्री ही है ।

तदक्षरं तत्सतवितुर्वरेण्यं ,
प्रज्ञा च तस्याः प्रसृता परा सा ।

- गृह्योपनिषद

वही अक्षर ब्रह्म है । वह तत्सवितुर्वरेण्यं प्रज्ञा है । सुविस्तृत परा शक्ति है ।

या देवी सर्व भूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।।
इन्द्रियाणामधिष्ठात्री भूतानां चाखिलेषु या ।
भूतेषु सततं तस्यै व्याप्त्यै देव्यै नमो नमः ।।

-मार्कण्डेय पुराण

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जो महाशक्ति सम्पूर्ण प्राणियों में शक्ति रूप विद्यमान है । इन्द्रियों की अधिष्ठात्री देवी है एवं पंच तत्वों की संचालिका है, उसे बार-बार नमस्कार ।

गायत्री वा इदꣳसर्वं भूतं यदिदं कि च वाग्वै गायत्री वाग्वा इदꣳसर्वं भूतं गायति च त्रायते च ।
यो वै सा गायत्रीयं वाव सा येयं पृथिव्यास्याꣳहीदꣳसर्वं भूतं प्रतिष्ठितमेतामेव नातिशीयते ।

-छान्दोग्य ३ ।१२ ।१ ।२६

गायत्री समस्त पंच भूतों में व्याप्त है । जो कुछ यहाँ है सो सब गायत्री ही है । वाणी ही गायत्री है । यह वाणी ही वर्णन और रक्षण करती है । यह पृथ्वी गायत्री है जिसमें सम्पूर्ण प्राणी रहते हैं ।

सैषा चतुष्पदा षड्विधा गायत्री तदेतदृचाभ्यनूक्तम ।
तावानस्य महिमा ततो जयायाꣳश्च पूरुषः ।
पादोऽस्य सर्वाभूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवीति ।

-छान्दोग्य ३ ।१२ ।५

यह गायत्री चार पद वाली और छः भेदों वाली है । इस गायत्री की अविच्छिन्न महिमा है । यह तीन पाद वाला परम पुरुष अमृत और प्रकाश बनकर आत्मा में स्थित है । इसका एक पद सन्तोष विश्व है ।

गायत्री की चेतनात्मक धारा सद्बुद्धि के-ऋतम्भरा प्रज्ञा के रूप में काम करती है और जहाँ उसका निवास होता है वहाँ ब्राह्मणत्व एवं देवत्व का अनुदान बरसता चला जाता है, साथ ही आत्मबल के साथ जुड़ी हुई दिव्य विभूतियाँ भी उस व्यक्ति में बढ़ती चली जाती हैं । इस तथ्य का उल्लेख शास्त्रों में इस प्रकार हुआ है-

सर्वदा स्फुरसि सर्वहृदि यासयसि । नमस्ते परारूपे नमस्ते पश्यन्तीरूपे नमस्ते मध्यमारूपे नमस्ते वैखरीरूपेसर्व तत्त्वात्मिके सर्वविद्याऽऽत्मिके । सर्वकत्यात्मिके सर्वदेवात्मिके वशिष्ठेम मुनिनाऽऽराधिते विश्वामित्रेण मुनिनोपसेव्यमाने नमस्ते नमस्ते ।

-अक्षिमालिकोपनिषद

हे महाशक्ति तुम सर्व विद्यमान हो, सर्वत्र स्फुरण करती हो, सभी हृदयों में तुम्हारा निवास है, परा, पश्यन्ती, मध्यमा और वैखरी वाणियाँ तुम्हारे ही रूप हैं, तुम तत्व रूपिणी हो, सर्व विद्यामय हो, समस्त शक्तियों की अधिष्ठात्री हो, सब देवताओं की आराध्य हो । वशिष्ठ और विश्वामित्र ऋषियों ने तुम्हारी ही उपासना करके सिद्धि पाई । तुम्हें बार-बार नमस्कार है ।

मन्त्राणां मातृका देवी शब्दानां ज्ञान रूपिणी ।
ज्ञानानां चिन्मयातीता शून्यानां शून्यसाक्षिणी ।।

वह महाशक्ति मन्त्रों में मातृका रूप, शब्दों में ज्ञान रूप, ज्ञानियां में चिन्मयातीत और शून्यवादियों में शून्य रूप है ।

ब्रह्मविद्यां जगद्धात्रीं सर्वेषां जननीं तथा ।
यया सर्वमिद व्याप्तं त्रैलोक्यं सचराचरम् ।।
त्वं भूमिः सर्वभूतानां प्राणाः प्राणवतां तथा ।
धीः श्रीः कांतिः क्षमा शांतिः श्रद्धा मेधाःधृतिः स्मृतिः
त्वमुद्गाथेऽर्धमात्राऽसि गायत्री व्याहृतिस्तथा ।
जया च विजया धात्री लज्जा कार्तिःस्पृहा दया ।।

-देवी भागवत

आप ही समस्त भूतों की भूमि और प्राणियों की प्राण हो । आप ही जगद्धात्री ब्रह्म विद्या हैं । धी, श्री, कान्ति, क्षमा, शान्ति, श्रद्धा मेधा, धृति स्मृति आप ही हैं । आप ही ओंकार के मस्तक पर विराजमान अर्ध बिन्दु हैं । गायत्री व्याहृति, जया, विजया, धात्री, लज्जा, कीर्ति, स्पृहा, और दया आप ही हैं ।

गायत्री द्वारेण चोच्यते ब्रह्म ब्रह्मणः सर्व विक्षेप रहितस्य नेति नेतीत्यादिविशेष प्रतिषेध गम्यस्य दुर्बोध त्वात् । सत्स्वने केषु छन्दःसु गायत्र्या एव ब्रह्मज्ञान द्वारतयोपादानं प्राधान्यात् । सोमा हरणात् इतरछन्दोऽक्षराहरणे नेतरछन्दो व्याप्त्यां च सर्व सघन व्यापकत्वाच्च यज्ञे प्राधान्यं गायत्र्याः । गायत्री सारत्वाच ब्राह्मणस्य मातरभिव हित्वा गुरुतरां गायत्रीं ततोऽन्यद् गुरुतरम् न प्रतिपद्यते यथोक्तं ब्रह्मापीति । तस्यामव्यन्त गौरवस्य प्रसिद्ध त्वात् । अतो गायत्री मुखनैव ब्रह्मोच्यते ।

-छान्दोग्य ३ ।१२ ।१ शंकरभाष्य

अर्थात् ब्रह्म का निरूपण गायत्री के द्वारा ही किया जाता है । ब्रह्म जाति गुण रहित, नेति-नेति और निर्निवेष होने से जानने में बहुत ही कठिन दुर्विज्ञेय है । पर वह गायत्री द्वारा जाना जा सकता है । यों अनेक मन्त्र हैं, पर ब्रह्म ज्ञान को प्राप्त कराने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वाला प्रधान छन्द गायत्री ही है । सोमरस की प्रधानता, इतर छन्दों का सारतत्व एवं समस्त कर्मों के उपयुक्त होने के कारण यज्ञ कर्म में गायत्री की ही प्रधानता मानी गई है । ब्राह्मणत्व का सारतत्व गायत्री है । अर्थात् जिसमें यह गायत्री तत्व सन्निहित है वही सच्चा ब्राह्मण है । माता के समान इस अनन्त महिमामयी गायत्री को छोड़कर अन्यत्र नहीं भटकना चाहिए । यही सर्वोत्तम सिद्धि मन्त्र है । स्फुट ब्रह्म का प्रतिपादन इसी में है । सर्वाधिक गुण गरिमा युक्त गायत्री का गौरव प्रसिद्ध है । ब्रह्म का निरूपण गायत्री द्वारा ही किया जाता है ।

गायन्तित्वा गायत्रिणो ऽर्चन्त्यर्क मर्किणः ।
ब्रह्मणस्त्वा शतक्रता उदवंशमिव मेमिरे ।।

-ऋग्वेद १ ।१० ।१

हे माता गायत्री, मन्त्रवेत्ता तेरा ही गुणगान करते हैं । गायत्री मन्त्र द्वारा यजन करने वाले कर्मयोगी, याजक यज्ञ योग द्वारा सविता शक्ति सावित्री की ही अर्चना करते हैं । हे करुणामयी माँ, वेदवेत्ता विद्वान तेरे ही नाम की यश पताका लिये फिरते हैं ।

देवी दात्री च भोक्त्री च देवी सर्वं मिंदंजगत् ।
देवी जयति सर्वत्र या देवी साहमेव च ।।
सर्वात्मना हि सा देवी सर्वं भूतेषु संस्थिता ।
गायत्री मोक्ष हेतुर्वै मोक्ष स्थानम लक्षणम् ।।

-ऋष्यसृंग

अर्थात् " गायत्री देवी देने वाली और भोगने वाली है । यह समझ लेना चाहिए कि समस्त जगत गायत्रीमय ही है । सर्वत्र देवी की ही विजय होती है और जो गायत्री देवी है वही मैं हूँ । वही देवी सबकी आत्मा है जो सब में निवास करती है । गायत्री मोक्ष का हेतु है और वही मोक्ष का लक्ष्य है ।"

ब्राह्मण्यशक्तिर्विप्रेषु देवशक्तिः सुरेषु सा ।
तपस्विनां तपस्या गृहिणां गृहदेवता ।
मुक्तिशक्तिश्च मुक्तानामाशा सांसारिकस्य सा ।
मुद्भक्तानां भक्तिशक्तिर्मयि भक्तिप्रदा सदा ।

- ब्रह्मवैवर्त

वह ही विप्रों में ब्राह्मण्य शक्ति होती है और सुरों में वही देवशक्ति है । तपस्वियों में वही तपस्या है और गृहियों में गृह देवता भी वही होती है । मुक्त जनों में वही मुक्त शक्ति होती है और सांसारिक पुरुष में वह ही आशा होती है तथा मेरे भक्तों में वही भक्ति के रूप में रहा करती है जो मुझ में सदा भक्ति प्रदा होती है ।

या देवी सर्वभूतेषु चैतन्येत्यभिधीयते ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।।

जो शक्ति सब प्राणियों में चेतना रूप से विद्यमान है, उसे अनेक बार नमस्कार ।

सं उतत्वः पश्यन्नददर्शवाचमुतत्तः शृवन्नशृणोत्येनाम्
उतो त्वस्मैतन्वां विसस्त्रे जायेपत्यवउशतीसुवासाः

-सरस्वती रहस्योपनिषद्

हे भगवती वाक् तुम्हारी कृपा से ही सब लोग बोलते हैं । तुम्हारी कृपा से ही विचार करना सम्भव होता है । तुम्हें जानते हुए भी जान नहीं पाते । देखते हुए भी देख नहीं पाते । जिस पर तुम्हारी कृपा होती है वही तुम्हें समझ पाता है ।

सच्चिदानन्दरूपाम् तां गायत्री प्रतिपादिताम् ।
नमामि ह्रींमयीं देवीं धियो यो नः प्रचोदयात् ।।

-देवी भागवत्

ही शक्ति सम्पन्न, सच्चिदानन्द रूप में प्रतिपादित महिमामयी गायत्री माता को नमस्कार । वे हमारी बुद्धियों को सन्मार्ग पर प्रेरित करें ।

पुरस्सरी में पुरुषार्थदात्री ।
मित्रोभवित्री भजताभवित्री
पवित्रयन्ती सुपदक्रमैर्गा
सावित्री वेलार्चित ॐन्नमस्ते ।।

"मेरे सम्मुख चलने वाली, पुरुषार्थ देने वाली, मित्र होने वाली, भक्तों का रक्षण करने वाली, सुन्दर चरणों के विन्यास से भूतल को और सुन्दर वचनों की रचनाओं से वाणी को पवित्र करने वाली, याज्ञिकों से त्रिकाल पूजित हे माता ! प्रणव स्वरूप तुझको नमस्कार है ।"

या प्राणेन सम्भवत्यदितिर्देवतामयी
गुहां प्रविश्य तिष्ठन्ती या भूतेभिर्व्यजायत । एतद्वैतत् ।

-कठ० २ ।१ ।७

अर्थात् " जो देवतामयी अदिति प्राण रूप से प्रकट होती है तथा जो बुद्धि रूप से गुहा (हृदय) में स्थिति है और सब भूतों (पंचभूतों) के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

साथ उत्पन्न हुई है, उसे देखो । निश्चय ही यही वह तत्व है ।''

नमस्ते देवि गायत्रि, सावित्रि त्रिपदेऽक्षरे ।
अजरे-अमरे मातस्त्राहि मां भवसागरात् ।
नमस्ते सूर्य संकाशे सूर्य सावित्रि केऽयले
ब्रह्मविद्ये । महाविद्ये वेद मातर्नमोस्तुते ।
अननन्त कोटि ब्रह्माण्डव्यापिनि ब्रह्मचारिणि ।।
नित्यानन्दे महामाये परेशानि नमोस्तुते ।
त्वं ब्रह्मा त्वं हरिः साक्षात् सद्रस्त्वं चेन्द्र देवता ।
भित्रस्तं वरुणस्त्वं च त्वमग्निरश्विनौ भगः ।
पूषाऽर्यमा मरुत्वांश्च ऋषियोऽपि मुनीश्वरा ।
पितरो नागयक्षाश्च गन्धर्वाप्सर सां गणाः ।
रक्षो भूतपिशाचा त्वमेव परमेश्वरि ।।
ऋग्यजुः सामवेदाश्च अर्थर्वाङ्गिरसानि च ।
त्वमेव पंच भूतानि तत्वानि जगदीश्वरी ।
ब्राह्मी सरस्वती सन्ध्या तुरीयां त्वं महेश्वरी ।
त्वमेव सर्वशास्त्राणि त्वमेव सर्व संहिताः ।
पुराणि च तन्त्राणि महागममतानि च ।
तत्सद् ब्रह्म स्वरूपा त्वं किञ्चित्सद सदात्मिका ।
परात्परेशी गायत्री नमस्ते मातरम्बिके ।
चन्द्रे कलात्मिके नित्ये कालरात्रि स्वधेस्वरे ।।
स्वाहाकारे अग्निवक्त्रे त्वां नमानि जगदीश्वरि ।
नमो नमस्ते गायत्रि सावित्रि त्वांनमान्यहम् ।
सरस्वति नमस्तुभ्यं तुरीये ब्रह्म रूपिणि ।

-वशिष्ठ संहिता

हे देवि गायत्री, सावित्री, त्रिपदे, अक्षरे, अजरे, अमरे आपको नमस्कार है । मेरी भवसागर से रक्षा करें । हे सूर्य सदृश्य तेजस्विनी, सविता की शक्ति सावित्री, आपको नमस्कार है । ब्रह्मविद्या महाविद्या, वेदमाता, अनन्त कोटि ब्रह्माण्डों में व्याप्त, ब्रह्म में विचरण करने वाली, नित्य आनन्द स्वरूप, महामाया आपको नमस्कार है । आप ही ब्रह्मा, विष्णु, महेश, चन्द्र, मित्र, वरुण, अग्नि, अश्वनी कुमार, भगपूषा अर्यमा मरुत हैं । आप ही ऋषि मुनि, पितर नाग, यक्ष, गन्धर्व, अप्सरा, गण, भूत, पिशाच आदि में व्याप्त है । आप ही चारों वेदों में तथा अंगरिस मन्त्र में संव्याप्त हैं । पंचभूत एवं तत्व आप ही हैं । ब्राह्मी, सरस्वती, सन्ध्या, तुरीयावस्था, महेश्वरी आप ही हैं । समस्त शास्त्र, संहिताएँ, पुराण, तन्त्र महागम, यत, सत्-असत् एवं ब्रह्म स्वरूप परात्पर आप को नमस्कार है । माता, अम्बिका, चन्द्रकला, नित्य, कालरात्रि स्वधा, स्वाहा, अग्निमुख, हे गायत्री सावित्री आपको बार बार नमस्कार है ।

यह दृश्य जगत् पदार्थमय है । इसमें जो सौन्दर्य, वैभव, उपभोग सुख दिखाई पड़ता है वह ब्रह्म की अपरा प्रकृति का अनुदान है । यह सब गायत्रीमय है । सुविधा की दृष्टि से इसे सावित्री नाम दे दिया गया है ताकि पदार्थ क्षेत्र में उसके चमत्कारों को समझने में सुविधा रहे । गायत्री की स्थूल धारा सावित्री को जो जितनी मात्रा में धारण करता है वह भौतिक क्षेत्र में उतना ही समृद्ध सम्पन्न बनता जाता है । इस विश्व में बिखरी हुई शोभा सम्पन्नता को उसी महाशक्ति का इन्द्रियों से अनुभव किया जा सकने वाला स्वरूप कह सकते हैं । इसकी चर्चा इस प्रकार हुई है -

ईश्वरोऽहम् च सूत्रात्माविराडात्माऽहमस्मि च ।
ब्रह्माऽहम् विष्णुरुद्रौ च गौरी ब्राह्मी च वैष्णवी
सूर्योऽहम् तारकाश्चाहं तारकेशस्तथाऽम्यहम् ।
यच्च किंचित्कवचिद्वस्तु दृश्यते श्रूयतेऽपि वा ।
अन्तर्बहिश्च तत्सर्व व्याप्याहम् सर्वदा स्थिता ।।
अपश्यस्ते महादेव्या विराड्रूपं परात्पराम् ।
द्यौर्मस्तकं भवेद्यस्य चन्द्रसूर्यौ च चक्षुषी ।।
दिंशः श्रोत्रे वचो वेदाः प्राणो वायुः प्रकीर्तितः ।
विश्वं हृदयमित्याहुः पृथ्वी जघन स्मृतम् ।
नभस्तल नाभिसरो ज्योतिश्चक्रमुरःस्थलम् ।
महर्लोकस्तु ग्रीवा स्याज्जनलोको मुख स्मृतम् ।
तपोलोको ररादिस्तु सत्यलोकादधः स्थितः ।
इन्द्रादयो बाहवः स्युः शब्दः श्रोत्रं महेशितुः ।
नासत्यदस्त्रौ नासे स्तो गन्धो घ्राणं स्मृतो बुधैः ।
मुखमग्नि समाख्यातो दिवारात्री च पक्ष्मणी ।
एतादृशं महारूपं ददृशुः सुरपुंगवाः ।
ज्वालामालासहस्त्रद्य लेलिहान च जिह्वया ।
सहस्त्रशीर्षनयनं सहस्त्रचरणं तथा ।
कोटि सूर्यप्रतीकाश विद्युत्कोटिसमप्रभम् ।
भयकरं महाघोरं हृदक्ष्णोस्त्रासकारकम् ।

-देवी भागवत

मैं ही अणु, मैं ही विभु हूँ । ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, गौरी, ब्रह्मी, वैष्णवी मैं ही हूँ । सूर्य ,चन्द्र, तारागण मैं

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ही हूँ । जो कुछ भी दिखाई पड़ता है या सुना जाता है जो कुछ भीतर बाहर है उस सब में मैं ही व्याप्त हूँ ।

देवताओं ने उसका विराट् रूप देखा । उसका मस्तक-आकाश, सूर्य-चन्द्रमा-नेत्र, दिशायें कान, वेद-वाणी, वायु-प्राण, विश्व-हृदय, पृथ्वी- जंघा, पाताल-नाभि, मह:लोक-ग्रीवा, जन:लोक-मुख, सत्यलोक-अध:, तपोलोक-ललाट, इन्द्र-बाहु, शब्द-कान, अश्विनीकुमार - नासिका, गन्ध-नासिका, दिन-रात पलकें देखी ।

देवताओं ने भगवती के ऐसे विराट् रूप के दर्शन किये । उसके शरीर में से असंख्य ज्वालाएँ निकल रही थीं । उसके हजारों सिर, हजारों नेत्र, हजारों चरण थे । करोड़ों सूर्यों और बिजलियों जैसी दीप्ति निकल रही थी ।

शक्तिवान के साथ शक्ति जुड़ी होती है । यह ब्रह्म शक्ति का समन्वय युग्म है । प्रत्येक शक्तिवान की सामर्थ्य को उसी संव्याप्त क्षमता का स्वरूप कहा जा सकता है। इसे पति-पत्नी के रूप में उदाहरणों सहित चित्रित किया गया है । समर्थों की सामर्थ्य के रूप में, विशिष्टों की विशेषता के रूप में इस महाशक्ति के दर्शन स्थान-स्थान पर किये जा सकते हैं । इसका अलंकारिक वर्णन देवी भागवत में इस प्रकार हुआ है । -

ईशानपत्नी सम्पत्तिः पूजिता च सुरैरिः ।
सर्वे लोका दरिद्राश्च विश्वेषु च यया विना ।
पुण्यपत्नी प्रतिष्ठा सा पूजित पुण्यदा सदा ।
सुकर्मपत्नी संयिद्धा कार्तिधन्यैश्च पूजिता ।
क्रियातूद्योगपत्नी च पूजिता सर्वसंमता ।
शान्तिलज्जा च भार्ये द्वे सुशीलस्य च पूजिते ।
ज्ञानस्य तिस्त्रो भार्याश्च बुद्धिर्मेधा धृतिस्तथा ।
कालाग्नी रुद्रपत्नी च निद्रा सा सिद्धयोगिनी ।
कालस्य तिस्त्रो भार्याश्च सन्ध्या रात्रिर्दिनानि च ।
वैराग्यस्य च द्वे भार्ये श्रद्धा भक्तिश्च पूजिते ।
अहिल्या गौ तमस्त्री साऽप्यनसूयाऽत्रिकामिनी ।

-देवी भागवत

ईशान पत्नी सम्पत्ति तुम्ही हो । तुम्हारे बिना समस्त संसार दरिद्र हो जाता है । पुण्य की पत्नी प्रतिष्ठा तुम्ही हो । सुकर्म की पत्नी कीर्ति के रूप में तुम्ही को देखा जाता है । उद्योग की पत्नी क्रियाशील की दो पत्नियाँ शान्ति और लज्जा तुम्हारी ही प्रतीक हैं । ज्ञान की तीन पत्नियाँ बुद्धि, मेधा और धृति तुम्ही हो । धर्म की पत्नी- कान्ति, रुद्र पत्नी तुम्ही हो । काल की संध्या रात्रि और दिन के रूप में तुम्ही दृश्यमान हो । वैराग्य की दो पत्नियाँ श्रद्धा और भक्ति के रूप में तुम्ही पूजी जाती हो । वृहस्पति की पत्नी तारा, वशिष्ठ की पत्नी अरुन्धती, गौतम की पत्नी अहिल्या, अत्रि पत्नी अनुसूया तुम्ही हो ।

संसार में जितने भी अभाव और कष्ट हैं जितनी भी आधि व्याधियाँ हैं उन सब को शक्ति की न्यूनता का प्रतिफल ही समझा जाना चाहिए । आत्म शक्ति के अभाव में मनुष्य की विचारणा निकृष्ट बनती है और प्रतिभा के अभाव में सुखसाधनों से वंचित रहना पड़ता अस्तु शक्ति संचय के निरन्तर प्रयत्न करने चाहिए भौतिक समर्थता किस प्रकार प्राप्त होती है इसे सब जानते हैं पर आत्मिक तेजस्विता किस प्रकार पाई जा सकती है इसका मार्ग अध्यात्म विज्ञान में बताया गया है । गायत्री साधना उसी के लिये की जाती है । शक्ति के अभाव में दुर्बलता और दुर्गति होने की चर्चा इस प्रकार आती है ।

अनुमानमिदं राजन्कर्त्तव्यं सर्वथा बुधैः ।
दृष्ट्वा रोगयुतान्दीनान्क्षुधतान्निर्धनाञ्छठान् ।।
जनानार्तांस्तथा मूर्खान्पीडि तान्वैरिभिः सदा ।
दासानाज्ञाकरान्क्षुद्रान्विकला न्विह्वलानथ ।
अतृप्तान्भोजने भोगे सदार्तानाजितेद्रियान् ।
तृष्णाधिकानशक्तांश्च सदाधिपरिपीडितान ।

-देवी भागवत

हे राजन् तुम कहीं पर लोगों को रोगी, दीन, दरिद्र, भूखे, प्यासे, शठ, आर्त, मूर्ख, पीड़ित, पराधीन, क्षुद्र, विकल, विह्वल, अतृप्त, असंतुष्ट, इन्द्रियों के दास, अशक्त और मनोविकारों से पीड़ित देखो तो समझना इन्होंने शक्ति का महत्त्व नहीं समझा और उसकी उपेक्षा अवहेलना की है ।

गायत्री उपासना आत्मशक्ति अभिवर्धन का सरल किन्तु श्रेष्ठतम उपाय है । जो इसके लिए प्रयत्न करते हैं वे समर्थ, सफल और सार्थक जीवन जी कर धन्य बनते हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

समस्त शक्तियों की आदि माता गायत्री

धर्म शास्त्रों में अनेक देवी देवताओं की चर्चा आती है । उनके अलग-अलग स्वरूप और अलग-अलग आकारों-प्रकारों का उल्लेख है । उसी प्रकार उनके पूजा विधान,/स्वभाव और प्रतिफल भी भिन्न-भिन्न बताये गए हैं । साथ ही यह भी स्पष्ट किया गया है कि वे सभी एकांगी और अपूर्ण हैं । शरीर में अनेक अवयव होते हैं, उनके स्वरूप एवं कार्यविधि भी अलग-अलग होते हैं पर वे सब एक ही शरीर के अन्तर्गत आते हैं । उन सब पर मस्तिष्क नियन्त्रण करता है, हृदय उनका पोषण करता है । देखने भर को उनका अलग अस्तित्व मालूम पड़ता है पर वस्तुतः वैसा होता नहीं । समग्र शरीर के स्वस्थ, अल्पस्थ, सबल, निर्बल, जीवित अथवा मृत होने पर उन अवयवों की एक ही गति होती है ।

इस तथ्य को अच्छी प्रकार समझ लेना चाहिए कि समस्त देवता एक ही महातत्त्व के अन्तर्गत आते हैं । परब्रह्म की एक-एक शक्ति को एक-एक देवता के नाम से सम्बोधित किया गया है । जिस प्रकार जिह्वा में वाणी, नेत्रों में दृष्टि, मस्तिष्क में बुद्धि, भुजाओं में बल, पैरों में गति होती है, उसी प्रकार परब्रह्म की अगणित शक्तियाँ पृथक्-पृथक् देवताओं के नाम से कही गयी हैं यों उन्हें सशक्त बनाने के लिये, इन पृथक् अवयवों की भी तेल-मालिश आदि प्रथक्-प्रथक् क्रियायें भी की जा सकती हैं, पर वास्तविकता को समझने वाले शरीर की मूल जीवनी – शक्ति, पाचन क्रिया, रक्त-शुद्धता, आदि पर ही ध्यान केन्द्रित करते हैं । क्योंकि जड़ को सींचने से सभी पत्तियाँ, डालियाँ स्वयंमेव हरी रह सकती हैं ।

देवताओं का पृथक्-पृथक् पूजन भी उपयोगी है, उसमें कुछ हानि नहीं, पर दूरदर्शी जड़ सींचने की तरह परब्रह्म की मूल शक्ति पर ही ध्यान केन्द्रित करते हैं और पृथक् दीखने वाले सभी अवयवों को सशक्त परिपुष्ट बनाते हुए उनके द्वारा प्राप्त हो सकने वाले लाभों से लाभान्वित होते हैं ।

गायत्री परब्रह्म की मूलभूत एवं अविच्छिन्न शक्ति है । ब्रह्म तत्व में गतिशीलता उसकी ब्राह्मी-शक्ति गायत्री ही उत्पन्न करती है । उसी से अन्य सब अंश-अवयवों को देवताओं को पोषण मिलता है । इसलिए तत्वदर्शी जगह-जगह भटकने की अपेक्षा एक ही प्रमुख आश्रय का अवलम्बन करते हैं और जो दर-दर भटकने पर मिल सकता है, उसे एक ही स्थान पर प्राप्त कर लेते हैं । अन्यान्य देवताओं की पूजा-अर्चा से जो आंशिक लाभ मिल सकते हैं, उनकी अपेक्षा अनेक गुना लाभ मूल शक्ति की उपासना का है । गायत्री मूल है । देव शक्तियाँ उसकी शाखा-उपशाखा मात्र हैं । वे शक्तियाँ भी अपनी समर्थता मूल केन्द्र से ही उपलब्ध करके इस योग्य बनती हैं कि अपना क्रिया-कलाप विधिवत् जारी रख सकें, किसी साधक को अभीष्ट वरदान दे सकें ।

इस तथ्य को पुराणों तथा साधना शास्त्रों में इस प्रकार वर्णन किया गया है कि सब देवता गायत्री की उपासना एवं स्तुति करते हैं और उसी महाभण्डार से जो उपलब्ध करते हैं, उसका अनुदान अपने क्षेत्र में वितरित करते रहते हैं ।

इस सन्दर्भ में उपलब्ध अनेक विवरणों में से कुछ नीचे प्रस्तुत किये जाते है-

सर्ववेद सारभूता गायत्र्यास्तु समर्थना ।
ब्रह्मादयोऽपि संध्यायां तां ध्यायन्ति जपन्ति च ।

-देवी भागवत १६ । १६ । १५

गायत्री उपासना वेदों का सारभूत तत्व है । ब्रह्मा, विष्णु, महेश आदि सभी देव सन्ध्या सहित गायत्री की आराधना करते हैं ।

मा भयार्त्ता महेशान ब्रह्म, विष्णु, महेश्वराः ।
तिष्ठामि सततं देवा भित्याहुरहमव्यया ।।
सच्चिदानन्द रूपाहं ब्रह्मैवाहं स्फुरन्प्रभम् ।
मम नास्ति कदा निस्संदेहास्तु तिष्ठतः।।
यद्रूपं दृष्टमस्माकं युष्माभिः परमं मतम् ।
ध्यात्वा यद्रूपममलम् जपं कुरुत मे मनुम् ।।
तदेव मंगल लाभ भविष्यति महाप्रभुम् ।
इदानी ब्रह्मणो देहे विश विष्णो स्थिरो भव ।।
अहो महेश दवेश ब्रह्मदेहे प्रवरयातु ।
यावत्सृष्टिं कुरुष्वेशच्चेमां ज्ञानक्रियामयीम् ।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अर्थ- देवगण ! जब माता गायत्री के वियोग में करुण क्रन्दन करके प्रार्थना करने लगे तो माता ने उनसे कहा - "हे ब्रह्मन् ! हे विष्णो ! हे महेश्वर ! तुम लोग मुझे न देख पाकर भ्रम से पीड़ित मत होओ । मैं सदा ही तुम्हारे समीप में ही संस्थित रहा करती हूँ । मैं कहीं भी तुमको छोड़कर अन्यत्र नहीं जाया करती, क्योंकि मेरा स्वरूप नित्य एवं अविनाशी है । आप लोगों को भली-भाँति समझ लेना चाहिए कि मैं ही सच्चिदानन्द प्रकाशयुक्त कान्ति से समन्वित ब्रह्म हूँ । मेरा नाश कभी भी नहीं होता है । मैं सर्वदा स्थित रहा करती हूँ । इसमें लेशमात्र भी संशय नहीं है । आप लोगों ने जो मेरा परम निर्मल स्वरूप देखा है, उसी सुन्दर मेरे स्वरूप का ध्यान करके मेरे मन्त्र का भक्तिभाव से जाप किया करो । मन्त्र साक्षात् मेरा ही स्वरूप तो है- मन्त्र (गायत्री) के जापी के पास मैं सदा विद्यमान् रहती हूँ । इसी से गायत्री मन्त्र के जप से आपका परम मंगल होगा । अब हे विष्णो ! तुम ब्रह्म के देह में प्रवेश करके स्थिर रहो । हे महेश ! तुम भी ब्रह्म की देह में प्रवेश करो । जब तक ईश्वर ज्ञान और क्रियामयी सृष्टि का आरम्भ नहीं करते हैं, तब तक आप लोग इनकी ही देह में अपना निवास करके रहो । उस समय समस्त देवगणों को वेद जननी माता गायत्री देवी ने इस प्रकार से सांत्वना प्रदान कर आदेश दिया तभी देवों को शान्ति हुई ।

आवयोर्जगतांचैव मंगलाय पदाम्बुजम् ।
महामुक्ति प्रदं चैव त्वदीयमति निर्मलम् ।।
अदृश्यमपि गौर्ण्यं हि मातृशकार वर्जितम् ।
कथन्तत्पूजयिष्यावः सर्वमंगलदायकम् ।।
भूमौ स्थानं कल्पयस्व यजितुं तत्पदाम्बुजम् ।
सर्वदा पूजयिष्यावो महामंगल कारणम् ।।
आवयोश्चौव सर्वेषां महामुक्ति फलाय च ।
तदावयो दनिवाद्याः किं करिष्यन्ति चाशुभम् ।।
अवश्यं वै तरिष्या वो दुस्तरं त्वत्पदार्चनात् ।

अर्थ- एक बार ब्रह्मा और विष्णु दोनों महान देवों ने सावित्री देवी का स्तवन किया था । इन दोनों देवेशों ने गायत्री देवी से कहा- "हे माता ! हमारे और समस्त जगत् के कल्याण के निमित्त आपके महामुक्ति प्रद,अत्यन्त निर्मल, अदृश्य और आकारहीन एवं गोप्य तथा परम मंगलदायक महान् आपके चरणों की अर्चा हम किस प्रकार से करें । आप अपने चरण कमलों को पूजन के लिए पृथ्वी पर किसी स्थल की कल्पना करें । हम उसी स्थान पर एकत्रित होकर महान् मंगल के कारण स्वरूप एव महामुक्तिप्रद आपके चरण कमलों की अर्चना करेंगे । इससे हमारा, समस्त देवगणों का तथा सभी जीवों का महान् मंगल होगा । आपके चरणों का अर्चन करने पर दानवादि हमारा कुछ भी अनिष्ट नहीं कर सकेंगे । हम आपके चरणों की पूजा करके परम दुस्तर दुखों से भी निस्तार प्राप्त कर सकेंगे । इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है ।

अति संगुप्तभावेन ईप्सितं प्राप्यते फलम् ।
देव दानव गन्धर्वैन्यैरपि महामते ।।
यथा न शायते कैश्चितथार्चा त्वं कुरुष्व मे ।
सर्वायद्भयः परित्राणं कारष्यामि चते सदा ।।

अर्थ- भगवती वेद जननी ने कहा -" अत्यन्त गुप्तभाव से पूजा करने पर अभीष्ट फल की प्राप्ति होती है । देवदानवादि अन्य सभी को पूजा करने पर फल की प्राप्ति होती है - इसमें सन्देह नहीं है । जिसको दूसरा मनुष्य न जान सके, उसी भाँति मेरी पूजा करो । ऐसा करने पर सभी आपदाओं से मैं रक्षा करूँगी ।"

एक बार देव गुरु वृहस्पति जी ने देव सभा में अपने शिष्य देव पुरुषों को गायत्री का महात्म्य बताते हुए कहा कि देवलोक पहुँचाने और देवत्व को स्थिर रखने का श्रेय गायत्री माता को ही प्राप्त है । उसी का आश्रय लेकर आत्मा को अन्धकार भरे नरकों से छूटकर सुरलोक का आनन्द प्राप्त होता है । परा और अपरा विद्या के रूप में भगवती के सुविस्तृत आवरण की उन्होंने चर्चा की और कहा कि आप लोगों की तरह ही जो अन्य लोग इस अवलम्बन को ग्रहण करेंगे, वे उच्च लोकों की भूमिका प्राप्त करेंगे और आत्मानन्द का सुख भोगेंगे ।

दुःखस्यान्तोऽद्य युष्माकं दृश्यते नात्र संशयः ।
तस्मिन् शैले सदा देवी तिष्ठतीति मयाश्रुतम् ।।
स्तुता सम्पूजिता सद्यो वांछितार्थान्प्रदास्यति ।
निश्चयं परमं कृत्वा गच्छध्वं वै हिमालयम् ।।
सुराः सर्वाणि कार्याणि सावः कामं विधास्यति ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अर्थ- सुरगुरु ने देवताओं से कहा- "आज मुझे तुम्हारे दुःखों का अन्त दिखलाई देता है । इसमें लेश मात्र भी कोई संशय नहीं है । मैंने ऐसा सुना है कि उस परम पावन पर्वत पर वह देवी सदा निवास किया करती है । जब वहाँ आपके द्वारा संस्तुत एवं भली-भाँति समर्चित होगी तो वह आपको अभीष्ट अवश्य ही प्रदान कर देगी । इसलिए पूर्ण और पक्का निश्चय करके आप लोग हिमालय पर देवी की समाराधना के लिये चले जाइये ।

देवताओं नै सुर गुरु बृहस्पति जी के आदेशानुसार हिमालय पर जाकर भगवती की उपासना की और उसके फ़लस्वरूप प्राप्त अनुभवों के आधार पर अपने भाव व्यक्त करते हुए स्तवन किया -

इति तस्य वचः श्रुत्वा देवास्ते प्रययुर्गिरिम् ।
हिमालयं महाराज ! देवी ध्यान परायणाः ।।
माया बीजं हृदा नित्यं जपन्तः सर्व एव हि ।
नमश्चक्रुर्महामायां भक्तानामभय प्रदाम् ।।
तुष्टुकः स्तोत्रमंत्रैश्च भक्तया परमयायुताः ।

अर्थ- इस प्रकार का उनका वचन सुनकर वे समस्त देवगण गिरिराज हिमालय पर चले गये । हे महाराज ! वहाँ पर सब देवता देवी के ध्यान में तत्पर हो गये और माया बीज का हृदय में ध्यान करके मन्त्र का जाप करने लगे । अपने परम भक्तों को अभय प्रदान करने वाली महामाया को नमस्कार किया तथा अत्यन्त भक्ति की भावना से संयुक्त होकर स्तोत्रों और मन्त्रों के द्वारा उसका स्तवन किया ।

ते किं न मन्दमतयो यतयो विमूढ़ास्त्वां ये नं विश्व-जननीं समुपाश्रयन्ति ।
विद्यापरां सकल काम फलप्रदां तां मुक्ति प्रदां । विबुधवृन्द सुवन्दि लाडिघ्रम् ।

अर्थ- देवों ने स्तुति की - " हे देवि ! वे यतिगण मन्द बुद्धि वाले ही हैं और महामूढ़ हैं, जो समस्त विश्व की जननी आपका आश्रय नहीं लेते हैं । आप तो परा विद्या हैं, सब कामनाओं को पूर्ण करने वाली मोक्ष प्रदान करने वाली हैं । सब देवगण आपके चरणों की वन्दना करते हैं ।"

इस तरह के और भी ढेरों ढेर प्रसंग हैं, जिनसे स्पष्ट होता है कि देवशक्तियाँ भी उस आदि शक्ति की आराधना करती हैं । शरीर के सभी अंग अवयव जिस प्रकार पूरे शरीर की सेवा करते हैं उसे दूसरे शब्दों में शरीर की आराधना उपासना भी कहा जा सकता है । उसी प्रकार समस्त देवशक्तियाँ एक आद्यशक्ति का ही अंग होते हुए भी परमात्म सत्ता की आराधना करती कही जा सकती हैं ।

गायत्री की अमोघ शक्ति - सामर्थ्य

गायत्री उपासना में ज्ञान और विज्ञान दोनों का समन्वय है । ज्ञान-पक्ष को ब्रह्म विद्या कहते हैं, और विज्ञान पक्ष योग-साधन कहलाता है । प्रज्ञा की उपासना से अमरत्व की प्राप्ति होती है और भर्गशक्ति का अवलम्बन करने से तेजस्वी बना जाता है । ब्रह्म तेज ही ब्रह्म वर्चस् है । इसी को ब्रह्मबल या आत्मबल कहा जाता है ।

समर्थता ही सफलता का उद्गम है । अध्यात्म क्षेत्र की सफलता को आत्मबल-ब्रह्मबल कहा गया है और सशक्तता तपश्चर्या के आधार पर उपार्जित की जाती है । जिसके पास उसकी जितनी मात्रा होती है, वह उसी अनुपात से सिद्ध पुरुष बन जाता है । शरीर बल, बुद्धिबल, साधन बल के सहारे भौतिक वैभव उपलब्ध होते हैं और आत्मबल के सहारे प्रखरता प्राप्त होती है । इसके सहारे सामान्य स्थिति रहते हुए भी असामान्य बना जा सकता है । ऐसे ही समर्थ व्यक्ति ऐश्वर्यवान कहलाते हैं । आत्मशक्ति की महत्ता शास्त्रों में पग-पग पर बताई गई है । इसे प्रकारान्तर से गायत्री का ही माहात्म्य वर्णन कहना चाहिये । आत्मशक्ति प्राप्त करने के लिए गायत्री उपासना अमोघ उपाय है ।

शक्ति विना महेशानि सदाऽहंशव रूपकः ।
शक्ति युक्तो महादेवि शिवोऽहं सर्व कामदः ।।

शक्ति के बिना महादेव केवल शव मात्र हैं । शक्ति युक्त होने पर ही वे समर्थ शिव बनते हैं ।

शववच्छक्ति हीन स्तु प्राणी भवति सर्वदा ।

शक्ति हीन प्राणी तो मृतक तुल्य है ।

रुद्र हीनं विष्णु हीनं न वदन्ति जनः किल ।
शक्ति हीनं यथा सर्वे प्रवदन्ति नराधमम् ।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

किसी का तिरस्कार करना हो तो उसे रुद्रहीन विष्णुहीन नहीं कहा जाता, वरन् उसे शक्तिहीन, अशक्त, निकम्मा कहकर ही तिरस्कार किया जाता है ।

प्रभावेणैव गायत्र्याः क्षत्रिय कौशिको वशी ।
राजर्षित्वं परित्यज्य ब्रह्मर्षि पद मीयिवान् ।।
सामर्थ्य प्रायचात्युच्चै रत्यद्भुवन सर्जने ।
किं किं न दयात् गायत्री सम्येगव मुपासित ।।

-स्कन्ध पुराण

क्षत्रिय विश्वामित्र ने राजर्षि पद से उन्नति करते हुए ब्रह्मर्षि पद गायत्री उपासना के बल पर ही प्राप्त किया । दूसरी नई सृष्टि रच डालने की शक्ति भी प्राप्त की थी । भली प्रकार साधना की हुई गायत्री से भला कौन सा लाभ प्राप्त नहीं किया जा सकता ।

आध्यात्मिक और भौतिक प्रगति गायत्री के ज्ञान और विज्ञान दोनों ही पक्षों को अपनाने से सम्भव होती है । अस्तु उसकी सावित्री तेजस्विता को भी उपलब्ध करने के लिए प्रयत्नशील रहा जाना चाहिये ।

तस्या एष तृतीयः पादः स्वर्षियो यो नः प्रचोदयादिति
स्त्री चैव पुरुषश्चः प्रजयनतः ।
यो वा एतां सावित्रीमेवं वेद स पुनर्मृत्युं जयति ।

- सावित्र्युपनिषद १२ । १३ । १४

इस सावित्री देवी की जो स्त्री, पुरुष, गृहस्थ धर्म का पालन करते हुए उपासना करते हैं, वे श्रेष्ठ सन्तान उत्पन्न करते हैं । उनकी बार-बार मृत्यु नहीं होती ।

जो इस सावित्री विद्या को जानता है, वह विद्वान कृत-कृत्य हो जाता है और सावित्री लोक को प्राप्त करता है । यह उपनिषद है ।

लिंग पुराण में राजा क्षुप और दधीचि के मध्य हुए एक कटु प्रसंग का वर्णन आता है जिससे यह ज्ञात होता है कि प्राचीन काल में ब्रह्मास्त्र के रूप में गायत्री महाशक्ति का ही प्रयोग होता रहा है । इसीलिए इस ब्रह्मशक्ति के वर्णन के लिए हर व्यक्ति समुद्यत रहता था । क्षुप अपनी सामर्थ्य की धमकी देते हुए दधीचि के ब्रह्मतेज के सन्दर्भ में कुछ अपमान जनक शब्द कहने लगे तो इस पर दधीचि ने ब्रह्मबल के गौरव का स्मरण राजा को दिलाया और बिना उत्तर की प्रतीक्षा किये राजा की उपेक्षा करते हुए स्वाभिमान प्रदर्शित करते हुए राजा को जहाँ का तहाँ बैठा छोड़कर अपनी कुटिया में चले गये । इस प्रसंग का उल्लेख इस प्रकार हुआ है-

देवैश्च पूज्या राजेन्द्र नृपैश्च विविधैर्गणैः ।
ब्राह्मणा एवं राजेन्द्र बलिनः प्रभविष्णुवः ।।
इत्युक्त्वा स्वोटजं विप्रः प्रविवेश महाद्युति : ।
दधीचमाभिवंद्यैव जगाम स्वं नृपः क्षयम् ।।

-लिंग पुराण

अर्थात् "देवों के द्वारा, नृपों के द्वारा तथा अन्य सब व्यक्तियों के द्वारा ब्राह्मण सम्मान के योग्य और अधिक शक्तिशाली होता है । इतना कहकर वे महातेजस्वी मुनि अपनी कुटिया में प्रवेश कर गये और राजा उनकी वन्दना करके अपने नगर को चला गया ।"

शत्रुतो न भयं तस्य दस्युतो वावान राजनः
न शास्त्रानल तो यौद्धा स्कदाचित्सं भविष्यति ।

ब्रह्मतेज सम्पन्न को न शत्रुओं का भय रहता है न दस्युओं का, न राजा का, न शस्त्र का, न अग्नि का । वह सब प्रकार के भयों से मुक्त होकर निर्भय बन जाता है ।

शिव-उमा सम्वाद में भी एक ऐसा ही उल्लेख है -

तक्षकेषापि दष्टस्य प्रतीकारो हि तत्क्षणात् ।
ब्रह्म शाप प्रसक्तस्य कल्पान्तेस्यात् प्रतिक्रिया ।
नरकाग्निष्कृति नास्ति तस्या भावात्र संशयः ।
एवं तद्वंशजाः सर्वे पीडयन्तेऽहर्निशं प्रिये ।

तक्षक सर्प के काटे का उपचार हो सकता है, पर ब्रह्म शाप से पीड़ित का नहीं । उन अभिशप्तों को चिरकाल तक नारकीय अग्नि में जलना पड़ता है ।

ब्रह्म-शक्ति के तीन अस्त्र गिनाये गये हैं- (१) ब्रह्मास्त्र (२) ब्रह्मदण्ड (३) ब्रह्मशीर्ष । इनका उल्लेख विश्वामित्र कल्प में इस प्रकार हुआ है ।

ब्रह्मास्त्रं ब्रह्म दण्डं च ब्रह्मशीर्ष च संयुतम् ।
अर्घ्य त्रियं प्रयोगार्थं एक मेवा युदाहृतम् ।

-विश्वामित्र कल्प

तन्त्र ग्रन्थों में गायत्री की ब्रह्मास्त्र शक्ति का वर्णन ब्रह्मशाप आदि के रूप में आता है । इस

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सन्दर्भ में कितने ही प्रयोगों की भी चर्चा है । एक गायत्री स्तवन में आता है-

ब्रह्मास्त्रं ब्रह्मशापं च ब्रह्म विद्या सनातची ।

हे गायत्री माता आप ब्रह्म विद्या की ही तरह ब्रह्मास्त्र और ब्रह्मशाप भी हैं ।

ब्रह्मास्त्रमिति विख्यातं त्रिषु लोकेषु विश्रुतम् ।
सत्पात्राय दातव्यं न देयं यस्य कस्य चित् ।

यह ब्रह्मास्त्र परम प्रचण्ड है । इसका विधान केवल सत्पात्रों को ही बताया जाय । जिस-तिस को न सिखाया जाय ।

ब्रह्मास्त्राख्यो मनुः पातुसर्वांगे सर्व सन्धिषु ।

यह ब्रह्मास्त्र समस्त मर्मस्थलों की सुरक्षा रख सकने में समर्थ है ।

ब्रह्मशक्ति ने अपनी असुर संहारिणी शक्ति का परिचय देते हुए कहा है-

अहं रुद्राय धनुरातनेमि ब्रह्मद्विषे शर वे हन्तवा उ ।
अहं जनाय समदं कृणोम्यहं द्यावापृथिवी आविवेश ।

"मैं ब्रह्म ज्ञान विरोधी विनाश योग्य रुद्र (एकादश इन्द्रियों) को हनन करने के लिए धनु में शर का संधान करती हूँ । इस प्रकार मनुष्यों के लिए संघर्ष करती हूँ और स्वर्ग तथा मर्त्यलोक में आविर्भूत होती हूँ ।

मोक्षार्थिभिर्मुनिभिरस्त समस्त दोषै ।
विद्यासि सा भगवती परमा हि देवी ।।

-महर्षि मार्कण्डेय

"वीतराग योगीजन मोक्ष प्राप्ति के लिए तेरे ब्रह्म विद्यारूप की ही उपासना करते हैं ।"

ऋषयो ऋग्यजुः सामाथर्वच्छब्दासि नारद ।
ब्रह्म रूपा देवातोक्ता गायत्री परमा कला ।।
तद्बीज भर्ग इत्येषा शक्ति रूपा मनीषिभी : ।
कीलकं च धियः प्रोक्तं मोक्षाये विनियोजनम् ।।

-देवी भागवत

अर्थात्-ऋषि, तत्वमयी, ऋग्, यजु, अथर्व, साम स्वरूप ब्रह्म रूप, परम कला, गायत्री ही है । उसका बीज भर्ग है मेधा शक्ति वही है, धिय उसका कीलक है, मोक्ष के लिए उसका विनियोग होता है ।

गायत्री महामन्त्र में ज्ञान और विज्ञान की दोनों धाराओं का समावेश है । इन २४ अक्षरों में से प्रत्येक में जो शिक्षा एवं प्रेरणा भरी पड़ी है उसे हृदयगंम करके मानव जीवन में देवत्व का उदय हो सकता है । संसार क सबसे छोटा किन्तु सबसे महत्त्वपूर्ण धर्म-ग्रन्थ यदि तलाश करना हो तो वह गायत्री के २४ अक्षरों को देखा समझा जा सकता है । गायत्री महाशक्ति की उपासना को साधना विज्ञान का सबसे शक्तिशाली पक्ष कह सकते हैं । २४ अक्षरों का गुंथन इस प्रकार हुआ है कि उनकी पुनरावृत्ति करते रहने से प्रसुप्त गुह्य शक्तियों का जागरण हो सकता है और निष्कृष्टता को उत्कृष्टता में परिणत करने का पथ प्रशस्त हो सकता है । विधिवत् की गई गायत्री उपासना साधक में भौतिक सफलतायें सम्भव करने वाली सिद्धियों और आत्मिक प्रगति का द्वार खोलने वाली विभूतियों से परिपूर्ण बना सकती है ।

गायत्री ज्ञान का समुद्र है । उसे वेद-माता कहा गया है । ब्रह्म-विद्या के तत्व दर्शन की समस्त शाखा-प्रशाखाएँ उसी से प्रस्फुटित हुई हैं । आत्मोत्कर्ष के लिए, ईश्वर दर्शन के लिये जिस आत्मिक स्तर की आवश्यकता पड़ती है उसे उपलब्ध कराने में गायत्री उपासना अत्यन्त महत्त्व-पूर्ण भूमिका प्रस्तुत कर सकती है ।

प्राचीनकाल में ऋषि, तपस्वी और अवतारों महामानवों ने इसी महामन्त्र के सहारे अपने को उत्कर्ष के चरम शिखर पर पहुँचाया था । इन २४ अक्षरों में सन्निहित मानव-जीवन को सफल बनाने वाले- सर्वतोमुखी प्रगति का पथ प्रशस्त करने वाले तत्वों को ध्यान में रखते हुए धर्म-शास्त्रों ने इस उपासना को दैनिक अनिवार्य धर्म कर्तव्यों में सम्मिलित किया है ।

अन्य समस्त मन्त्रों का जो फल एवं महात्म्य है वह अकेले गायत्री मन्त्र में विद्यमान है । अन्य मन्त्रों की साधना में तभी सफल होती है जब सर्वप्रथम गायत्री मन्त्र द्वारा अपनी भाव भूमिका को चैतन्य कर लिया जाय । इस सन्दर्भ में शास्त्र का अभिमत स्पष्ट है ।

कुर्यादन्यत्र वा कुर्यादनुष्ठानादिकम् तथा ।
गायत्रीमात्रनिष्ठस्तु कृतकृत्यो भवेद द्विजः ।

-देवी भागवत

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

और कोई साधना करे या न करे अकेले गायत्री मन्त्र का आश्रय लेने से ही मनुष्य कृतकृत्य हो जाता है ।

सा गायत्री समिद्धऽन्यानि छन्दांसि समिन्धे ।

-ज्ञ. प. १ । ३ । ४ । ६

गायत्री के जाग्रत होने पर ही अन्य मन्त्र जाग्रत होते हैं ।

गायत्री महामन्त्र की महत्ता बताने वाले अनेक शास्त्र वचनों में से कुछ इस प्रकार हैं-

वेदानां मातरं सावित्रासम्पदमुपनिषद मुपास्ते ।

-गी० ब्र १ । १ । ३२

सावित्री (गायत्री) वेदों की माता है ।

द्विजातिजातिरूपा च जपरूपा तपस्विनी ।
ब्रह्मण्यतेजोरूपा च सर्वसंस्काररूपिणी ।।३१
पवित्ररूपा सावित्री गायत्री ब्राह्मणप्रिया ।
तीर्थानि यस्याः संस्पर्श वांछतिद्ध ह्यात्मशौद्धये ।।३२

-देवी भागवत

वह महाशक्ति ही जप स्वरूप है । उन्हें ही तपस्या ब्रह्म तेज और सर्वसुसंस्कार कहते हैं । सब प्रकार पवित्र वे ही बनाती हैं । सावित्री और गायत्री उन्हीं को कहते हैं । उन्हीं के स्पर्श से तीर्थों में पवित्र करने की शक्ति रहती है ।

सावित्री प्रवेशपूर्वकमप्सु सर्वविद्यार्थस्वरूपां
ब्राह्मण्याधारां वेदमातरम् ।

-परमहंस परिव्रजकोपनिषद ३

समस्त विद्याओं की आधार स्वरूप ब्राह्मणत्व की आधार, वेदमाता गायत्री की साधना में प्रवेश करें ।

साधका भीष्टदां सिद्धां सिद्धदां सिद्ध सेवितां ।
पञ्च प्राणमयं वर्ण पीत विद्युल्लतामयं ।।
त्रिविन्दु सहितं मन्त्रमात्मादित्व संयुतं ।
पञ्च देव मयं वर्णं त्रिशक्ति सहितं सदा ।
चतुर्वर्ग प्रदं शान्तं सर्व सिद्धि प्रदायकं ।।
कामिनी या महेशानि स्वयं प्रकृति सुन्दरी ।
माता सा सर्व वेदानां कैवान्य पद दायिनी ।।

-साधन सिद्धान्त

सब वेदों की माता गायत्री साधकों को अभीष्ट फलदायक, सिद्धियों की आकांक्षा वालों को सिद्ध पुरुष बनाने वाली और ब्रह्मवादियों को कैवल्य पद देने वाली है । पाँच प्राण उनके पाँच मुख हैं । चमकती हुई बिजली की तरह उनकी द्युति है । त्रिविन्दु सहित आदित्य स्वरूप, पंच देवमय, त्रिशक्ति समन्वित है । धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष चतुर्वर्गों को सफलता देने वाली, परब्रह्म की पराशक्ति और प्रकृति सुन्दरी वे गायत्री माता हैं ।

सर्वकाम प्रदा प्रोक्ता

गायत्री मन्त्र प्राचीन महापुरुषों के कथनानुसार एक सर्वश्रेष्ठ मन्त्र है । उसका जप विविध फलों का प्रदाता बताया गया है । परन्तु आधुनिक शिक्षा प्राप्त व्यक्ति उसकी उपेक्षा करने लगे हैं । वे पूर्वजों की चलाई वस्तुओं को केवल इसी आधार पर नहीं चाहते क्योंकि वह प्राचीन हैं । बुद्धिवाद की कसौटी पर जो चीज सच्ची सिवकठ हो सके उसे तो वे मानने को तैयार हो जाते हैं, परन्तु हमारे प्राचीन विद्वान सामान्यतः ऐसे विषयों में तर्क प्रधान प्रणाली पर चल सकना असम्भव सा मानते हैं । ऐसे विषय में वे श्रद्धा की दुहाई देना ही योग्य मानते हैं । जिसमें श्रद्धा होगी वही धर्माचार का अधिकारी है, और चिकित्सा या कसौटी का इसमें कोई स्थान नहीं ऐसी उनकी धारणा बन गई है । सम्भवतः इसी कारण नवशिक्षित तथा पुरानी प्रथा के मानने वालों के बीच एक अनुल्लंघनीय पर्वत सा खड़ा हो गया है । परन्तु वास्तव में यह स्थिति सत्य नहीं है । बुद्धिवाद और श्रद्धा इनमें विरोध मानना एक प्रकार से प्राचीन प्रथा के प्रति अज्ञान प्रकट करना है । प्राचीन प्रथा में भी बुद्धिवाद और तर्क को पूर्ण रूप से स्थान है । इस सिद्धान्त की पुष्टि अनेक उदाहरणों से की जा सकती है, पर इस समय गायत्री मन्त्र का प्रसंग उपस्थित होने से हम उसी के आधार पर इस सिद्धान्त को सिद्ध करना चाहते हैं ।

गायत्री बिल्कुल छोटा सा मन्त्र है । उसके तीन पाद या चरण होने से उसे त्रिपदा भी कहते हैं । उसका सीधा सादा अर्थ यह है कि- "भगवान सविता (सूर्य) के श्रेष्ठ तेज का हम ध्यान करते हैं । वह हमारी बुद्धि को प्रेरणा दें ।" इस मन्त्र के अन्तिम चरण (धियो यो नः प्रचोदयात्) में बुद्धि की माँग है न कि किसी भौतिक साधन, संपत्ति की । अन्न-वस्त्र इत्यादि वस्तुओं की माँग यह एक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मामूली चीज है । देवता के पास ऐसी साधारण नित्योपयोगी वस्तुओं की माँग गायत्री मन्त्र में नहीं की गई है । मानव जीवन की महत्ता बुद्धि के उत्कर्ष में है । उस बुद्धि को यदि भगवान सूर्य जैसे तेजस्वी तत्व से प्रेरणा मिल जाय, तो उससे सब प्रकार के साधन सम्पत्ति प्राप्त कर सकते हैं । केवल सांसारिक ही नहीं किन्तु आध्यात्मिक उन्नति भी बुद्धि को योग्य प्रकार से प्रेरणा मिलने पर ही प्राप्त होती है । स्वर्ग, आत्मा, ईश्वर, पुनर्जन्म को न मानने वाले नास्तिक बुद्धि के आधार पर अपना विवेचन करते हैं, अर्थात् बुद्धि का आदर उनको भी अनिवार्य है । ऐसी सर्वमान्य तथा सबको माननीय 'बुद्धि' को प्रेरणा मिले, इस प्रकार की प्रार्थना का प्रतिवाद नास्तिक भी नहीं कर सकते।स्वर्ग, मोक्षादि गूढ़ वस्तुओं में विभाजन न होने के कारण नास्तिक उनका खण्डन कर सकते हैं । स्वर्ग, मोक्षादि का हर एक के अनुभव में आना भी असम्भव है । मानो यही संकट देखकर ऋषि ने गायत्री मन्त्र में 'बुद्धि' की ऐसी माँग रख दी है जिसका विरोध या प्रतिवाद कोई भी नहीं कर सकता ।

इस मन्त्र में 'धियः' अर्थात् 'बुद्धि' का प्रयोग बहुवचन में किया है । ''अनेक प्रकार की बुद्धि'' ऐसा अर्थ उससे निकलता है । हिन्दू संस्कृति केवल आध्यात्मिकता का विचार करती है, ऐसा मानकर अनेक व्यक्ति आधिभौतिक की उपेक्षा करना अपना आदर्श बतलाते हैं । परन्तु ''धियः'' शब्द के प्रयोग से उसका खण्डन हो जाता है । केवल आध्यात्मिक ही नहीं किन्तु भौतिक, आर्थिक, राजकीय सब प्रकार की बुद्धि बढ़ जाय, यह गायत्री मन्त्र की प्रार्थना है । भूत विद्या, मनुष्य विद्या, बाकोवाक्य, राशि, क्षात्र विद्या, नक्षत्र विद्या, जन विद्या इत्यादि नाम उपनिषदों में पाये जाते हैं । अर्थात् अनेक प्रकार की बुद्धि यह अर्थ 'धियः'' से लिया जाय तो उसमें अनौचित्य का कुछ भी संदेह नहीं होना चाहिये ।

नास्तिक युग में भी बुद्धि की श्रेष्ठता जिस प्रकार निर्विवाद है उसी प्रकार सूर्य देवता की श्रेष्ठता भी त्रिकाल बाधित है । सूर्य को चाहे कोई देवता न माने परन्तु उसका जागतिक जीवन के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध मानना सबको अनिवार्य है । दो दिन बादल घिरे रहें और सूर्य का दर्शन न हो तो वायु दूषित बन जाती है, बीमारियाँ फैलती हैं । अतएव सूर्य का महत्त्व सुस्पष्ट है । नास्तिक भी इससे इन्कार नहीं कर सकता । गायत्री मन्त्र का देवता सूर्य है । सूर्य या सविता का प्रभाव निरपवाद होने से इस विषय में भी शंका होना असम्भव है । आदमी जिस -जिस चीज का ध्यान करता है उसी प्रकार की उसकी वृत्ति बन जाती है, यह प्राकृतिक सिद्धान्त है । सूर्य भगवान के भास्कर तेज का हम ध्यान करते हैं- ऐसा गायत्री मन्त्र के प्रथम चरण का अर्थ है । ऐसे तेजस्वी पदार्थ का ध्यान करने वाले स्वयं तेजस्वी बनेंगे । यह मानस शास्त्र अथवा मनोविज्ञान द्वारा सत्य सिद्ध हो चुका है । किसी से न दबते हुए तेजस्वी रहने की किसकी इच्छा न होगी ?

'प्रब्रवाम शरदः शतम । अदीनः स्याम शरदः शतम् ।

''सौ वर्ष तक अधिकारपूर्ण वाणी से बोलते रहेंगे । सौ वर्ष तक हम दैन्य रहित जीवन बितायेंगे ।'' इस प्रकार की आकांक्षायें वेद में (वाजसनेय संहिता ३६-२४) भी स्पष्ट है । सूर्य सर्वश्रेष्ठ तेजस्विता का प्रतीक है । वही गायत्री मन्त्र का देवता है । यह सराहनीय सर्वोच्च देवता का ध्यान मानवीय उन्नति का साधन मानने में किसी को आपत्ति नहीं होनी चाहिए । गायत्री मन्त्र का देवता इस प्रकार सबके लिये सराहनीय है ।

आजकल गायत्री मन्त्र का पठन गुप्तता से किया जाना आवश्यक बतलाया जाता है । एकान्त में इस मन्त्र का जप अकेले-दुकेले किया करते हैं । परन्तु ऊपर दिये हुए मंत्रार्थ पर ध्यान देने से सत्य बात कुछ और ही मालूम पड़ती है । इस मन्त्र में ''धीमहि'' (हम ध्यान करते हैं) और '' नः'' (हमारी) ये बहुवचन युक्त प्रयोग इस मन्त्र की सामुदायिकता पर प्रकाश डालते हैं । वास्तव में देखा जाय तो गायत्री मन्त्र सामुदायिक प्रार्थना मन्त्र है । अकेले-दुकेले में भी इस मन्त्र का जप करना हानिकारक नहीं, किन्तु उस समय में भी जपकर्ता को चाहिये कि वह अपने को व्यक्तिगत रूप में न मानकर समाज का एक घटक समझ कर जप

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

करे । इस प्रकार गायत्री जप जैसे बने वैसे करने की शास्त्राज्ञा है –

यथा कथचिज्जतैषा देवी परम पावनी ।
सर्वकामप्रदा प्रोक्ता विधिना किं पुनर्नप ।।

– विष्णु धर्मोत्तरे १ । १६५ । १५

इस श्लोक में मार्कण्डेय ऋषि ने वज्र राजा से निश्चयपूर्वक कहा है कि "गायत्री जप जैसे बने वैसे करने से भी मनुष्य को पवित्र कर उसकी सब कामनायें सफल बना देता है, फिर वैध रीति से जपानुष्ठान करने वाले के विषय में कहना ही क्या ?" अर्थात् जीवन व्यवसाय में फंसे हुए आदमी को भी इस मन्त्र से लाभ उठाना सहज है । कहा गया है–

पुंष्कलं धन समृद्धि : सहयोगश्चं सर्वतः ।
स्वास्थ्यं वा त्रय एते स्युस्तस्माल्लाभश्च लौकिकाः ।

सन्तोषजनक धन की वृद्धि, सब ओर से सहयोग और स्वस्थता ये तीन सांसारिक लाभ इससे होते हैं ।

काठिन्य विविधं चोरं ह्यापदा संहतिरतथा ।
शीघ्रं विनाशतां यान्ति विविधा विघ्नराजयः ।१५।

नाना प्रकार की घोर कठिनाई और विपत्तियों का समूह, नाना प्रकार के विघ्नों का समूह इससे शीघ्र ही नष्ट हो जाते हैं ।

गायत्री साधना द्वारा आत्मोन्नति होती है आत्मबल बढ़ता है यह सुनिश्चित तथ्य है । मनुष्य के अंतःक्षेत्र के संशोधन, परिमार्जन, संतुलन एवं विकास के लिये गायत्री मन्त्र से बढ़कर और कोई ऐसा साधन नहीं है जो अतीतकाल से असंख्यों व्यक्तियों के अनुभवों में सदा खरा उतरता आया हो । मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार का अंतःकरण चतुष्टय, गायत्री महामंत्र की उपासना के द्वारा शुद्ध कर लेने वाले व्यक्ति के लिए सांसारिक जीवन में सब ओर से सब प्रकार की सफलताओं का द्वार खुल जाता है । उत्तम स्वभाव, अच्छी आदतें स्वस्थ मस्तिष्क, दूर दृष्टि, प्रफुल्ल मन, उच्च चरित्र, कर्त्तव्य निष्ठा की प्रवृत्ति को प्राप्त करने के पश्चात् गायत्री साधक के लिये संसार में कोई दुःख कष्टकर नहीं रह जाता, उसके लिये सामान्य परिस्थितियों में भी सुख ही सुख उपस्थित रहता है । इन रहस्यों को गायत्री उपासना में निमग्न सभी साधकों ने अनुभव किया है ।

अथर्ववेद १९।१७।१ में गायत्री की स्तुति करते हुए कहा गया है कि वह आयु, प्राण, प्रज्ञा, पशु, कीर्ति, शक्ति, यश, धन और ब्रह्मतेज प्रदान करने वाली है । "सम्पूर्ण वेद, यज्ञ, दान, तप, गायत्री मन्त्र की एक कला के समान हैं । ये मंतव्य गायत्री के उद्गाता महर्षि विश्वामित्र के हैं । महर्षि याज्ञवल्क्य तो गायत्री को वेद वाङ्मय की सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि मानते हैं । गायत्री और समस्त वेदों को तराजू में तोला गया तो उन्हें गायत्री वाला पलड़ा भारी लगा । उन्हीं के विचार से "वेदों का सार उपनिषद् एवं उपनिषदों का सार व्याहृतियों समेत गायत्री है । गायत्री वेदों की जननी है, पापों का नाश करने वाली है, इससे अधिक पवित्र करने वाला अन्य कोई मन्त्र पृथ्वी पर नहीं है ।"

नारकीय दावानल में फँसे हुए को हाथ पकड़ कर बचाने वाली गायत्री ही है । उससे उत्तम वस्तु स्वर्ग और पृथ्वी पर कोई नहीं । अन्य उपासनायें करें चाहे न करें, केवल गायत्री उपासना से व्यक्ति जीवन मुक्त हो जाता है । गायत्री उपासना आत्मा का परम शोधन करने वाली है । उसके प्रभाव से कठिन दोष और दुर्गुणों का परिमार्जन हो जाता है । जो मनुष्य गायत्री तत्व को भली प्रकार समझ लेता है, उसके लिए संसार में कोई सुख शेष नहीं रह जाता । ऋषि अत्रि, शौनिक, शंख, पाराशर एवं भगवान मनु जैसे गायत्री के परम उपासकों ने अपने जीवन की उपासना सम्बन्धी अनुभूतियों को इसी रूप में उपर्युक्त पंक्तियों के माध्यम से दर्शाया है ।

महर्षि व्यास तो इनसे भी आगे अपने गूढ़तम साधना के परिणामों को दर्शाते हुए कहते हैं – "जिस प्रकार समस्त फूलों का सार शहद, एवं दूध का सार घृत है, उसी प्रकार समस्त वेदों का सार गायत्री है ।" गायत्री कामधेनु के समान है । गंगा शरीर के पापों को निर्मल करती है, गायत्री रूपी ब्रह्म गंगा से आत्मा पवित्र होती है । जो साधक गायत्री महामंत्र को छोड़कर अन्य उपासनायें करता है वह पक्वान्न छोड़कर भिक्षा माँगने वाले के समान है । राम, कृष्ण, हनुमान, भगवान शंकर,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गणेश, कार्तिकेय, जैसी अवतारी सत्ताओं ने स्वयं गायत्री महाशक्ति की उपासना की और उपार्जित शक्ति का उपयोग असुरता से लड़ने के लिए किया । अपने भक्तों को भी गायत्री की ही शरण में आने का संदेश उन्होंने दिया । काम्य, सफलता तथा तप की सिद्धि के लिए गायत्री से श्रेष्ठ और कुछ नहीं है ।

गायत्री ब्रह्म साक्षात्कार कराने वाली है । अनुचित काम करने वालों के दुर्गुण गायत्री के कारण छूट जाते हैं । जो ब्रह्मचर्यपूर्वक गायत्री की उपासना करता है और आहार में ताजे आंवले के फलों का सेवन करता है, वह दीर्घजीवी होता है । ऐसा कहा गया है । मंदमति, कुमार्गगामी और अस्थिर मति भी गायत्री के प्रभाव से उच्च पद को प्राप्त करते हैं । जो पवित्रता और स्थिरतापूर्वक गायत्री की उपासना करते हैं वे आत्म-लाभ प्राप्त करते हैं । योग का मूल आधार गायत्री है । गायत्री से ही सम्पूर्ण योगों की साधना होती है । उपर्युक्त अभिमतों से मिलते-जुलते विचार प्रायः सभी ऋषियों के हैं । ऋषि प्रवर भरद्वाज, चरक, नारद, वशिष्ठ, गौतम, उद्दालक, देवगुरु वृहस्पति, शृंगी ऋषि, वैशम्पायन, दुर्वासा परशुराम, दत्तात्रेय, अगस्त, सनत्कुमार, कण्व, शौनिक जैसे ऋषियों के जीवन वृत्तांतों से स्पष्ट है कि उनकी महान सफलताओं का मूल हेतु गायत्री उपासना ही था । कोई भी ऋषि अन्य विषयों में चाहे परस्पर विचारों की भिन्नता रखते रहे हों, पर गायत्री के बारे में उन सबमें समान श्रद्धा थी और सभी उपासना क्रम में उसे प्रमुख स्थान दिया ।

गायत्री मन्त्र का निरन्तर जप रोगियों को अच्छा करने मैं और आत्मा की उन्नति के लिए उपयोगी है । गायत्री महामन्त्र का स्थिर चित्त और शांत हृदय से किया हुआ जप आपत्ति काल के संकटों को दूर करने का प्रभाव रखता है । यह कहते हुए महात्मा गाँधी ने स्वीकार किया है कि "उपासना एवं प्रार्थना में मैंने गायत्री महामंत्र को प्रथम स्थान दिया है ।"

रामकृष्ण परमहंस का कथन है कि लोगों को लम्बी एवं क्लिष्ट साधना की जरूरत नहीं । इस छोटी सी गायत्री की साधना करके देखें । गायत्री की उपासना से बड़ी से बड़ी सिद्धियाँ मिल जाती हैं । यह मन्त्र छोटा है, किंतु इसकी शक्ति भारी है । गायत्री की उपासना करने से आत्म-बल बढ़ता है । धीरे-धीरे जन्म बन्धन रहित परमात्मा की समीपता प्राप्त होती है ।

गायत्री का अवलम्बन परम श्रेयस्कर

गायत्री-उपासना से मानव शरीर में सन्निहित अगणित संस्थानों में से कितने ही जाग्रत एवं प्रखर हो चलते हैं । इन जागृति का प्रभाव मनुष्य के व्यक्तित्व को समान रूप से विकसित होने में सहायक सिद्ध होता है ।

व्यायाम से शरीर पुष्ट होता है, अध्ययन से विद्या आती है, श्रम करने से धन कमाया जाता है, सत्कर्मों से यश मिलता है, सद्गुणों से मित्र बढ़ते हैं । इसी प्रकार उपासना द्वारा अन्तरंग जीवन में प्रसुप्त पड़ी हुई अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण शक्तियाँ सजग हो उठती हैं और उस जागृति का प्रकाश मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में एक विशिष्टता का रूप धारण करके प्रकट करता हुआ प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर होता है । गायत्री-उपासक में तेजस्विता की अभिवृद्धि स्वाभाविक है । तेजस्वी एवं मनस्वी व्यक्ति स्वभावतः हर दिशा में सहज सफलता प्राप्त करता चलता है ।

मानवीय मस्तिष्क में जो शक्ति-केन्द्र भरे पड़े हैं उनका पूरी तरह उपयोग कर सकना तो दूर, अभी मनुष्य को उनका परिचय भी पूरी तरह नहीं मिला है । मनोवैज्ञानिकों को अन्तर्मन की जितनी जानकारी अभी तक विशाल अनुसन्धानों के बाद मिल सकी है उसे वे २ प्रतिशत के लगभग ही मानते हैं । प्रसुप्त मन की ९८ प्रतिशत जानकारी प्राप्त करना अभी शेष है । इसी प्रकार शरीर शास्त्री डाक्टरों ने बाहरी मस्तिष्क का केवल ८ प्रतिशत ज्ञान प्राप्त किया है शेष के बारे में वे भी अभी अनजान हैं । मस्तिष्क सचमुच एक जादू का पिटारा है । इसमें सोचने समझने की क्षमता तो है ही, साथ ही उसमें ऐसे चुम्बक तत्व भी हैं जो अनन्त आकाश में भ्रमण करने वाली अद्भुत

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सिद्धियों, विभूतियों एवं सफलताओं को अपनी ओर खींचकर आकर्षित कर सकते हैं, सूक्ष्म जगत् में अपने अनुकूल वातावरण बना सकते हैं । जिन व्यक्तियों के साथ अपनी कामना आकांक्षा का सम्बन्ध है उन पर ऐसा प्रभाव डाला जा सकता है कि उसे हमारे अनुकूल गतिविधि ही अपनानी पड़े । गायत्री-उपासना के द्वारा उपासक में ऐसे ही मानसिक चुम्बक तत्व सक्रिय हो उठते हैं । मनोबल बढ़ने से ऐसी विद्युत् धारा अन्तर्मन के प्रसुप्त क्षेत्रों में गतिशील हो जाती है कि अब तक अपने प्रयोजन में आया हुआ मस्तिष्कीय चुम्बक सक्रिय हो उठता है और वे उपलब्धियाँ सामने लाकर खड़ी कर देता है जिन्हें आमतौर से सिद्धियाँ, विभूतियों का वरदान एवं दैवी सहायता कहा जा सके ।

उपासना में बरती गई तपश्चर्या से द्रवित होकर गायत्री माता ने अमुक सिद्धि या सफलता प्रदान की - यह भावुक भक्त का दृष्टिकोण है । इसी तथ्य का वैज्ञानिक दृष्टिकोण यह है कि कठोर नियम, प्रतिबन्धों का पालन करने में जो प्रतिरोधात्मक क्षमता बढ़ी, उसने मनोबल का विकास किया । उसने अन्तर्मन के प्रसुप्त शक्ति-केन्द्रों का चुम्बकत्व जगाया और उसी जागरण ने अभीष्ट सफलतायें खींचकर सामने ला खड़ी कर दीं । मनुष्य अपने आप में एक देवता है । उसके भीतर वे समस्त दैवी शक्तियाँ बीज रूप में विद्यमान रहती हैं जो इस विश्व में अन्यत्र कहीं भी हो सकती हैं । अन्यत्र रहने वाले देवता अपनी निर्धारित जिम्मेदारियाँ पूरी करने में लगे रहते हैं । वे हमारे व्यक्तिगत कामों में इतनी अधिक दिलचस्पी नहीं ले सकते कि अगणित उपासकों या भक्तों की अगणित प्रकार की समस्याओं के सुलझाने में संलग्न हो सकें । हमारी समस्याओं को हल करने की क्षमता हमारे अपने भीतर रहने वाले देवता में ही होती है और उसी को किसी अनुष्ठान द्वारा सशक्त एवं गतिशील बना करके साधक को अपना प्रयोजन वस्तुतः आप ही पूरा करना पड़ता है ।

गायत्री--उपासना मनुष्य जीवन को बहिरंग एवं अन्तरंग दोनों ही दृष्टियों में समृद्ध और समुन्नत बनाने का राजमार्ग है । वाह्य उपचार से वाह्य-जीवन की प्रगति होती है, पर अन्तरंग विकास के बिना उसमें पूर्णता नहीं आ पाती । बाहरी जीवन की विशेषताएँ छोटा सा शोक, सन्ताप, रोग, कष्ट अवरोध एवं दुर्दिन सामने आते ही अस्त-व्यस्त हो जाती हैं, पर जिस व्यक्ति के पास आन्तरिक दृढ़ता, समृद्धि एवं क्षमता है वह बाहर के जीवन में बड़े से बड़ा अवरोध आने पर भी सुस्थिर बना रहता है और भयानक भँवरों को चीरता हुआ अपनी नाव पार ले जाता है । भौतिक समृद्धि और आत्मिक शान्ति के लिए उपासना की वैज्ञानिक प्रक्रिया अचूक साधना है और कहना न होगा कि उपासनाओं में सर्वश्रेष्ठ एवं सर्वोपरि एकमात्र गायत्री महामन्त्र की उपासना ही है ।

शास्त्रकारों ने गायत्री की सर्वोपरि शक्ति, स्थिति और उपयोगिता को एक स्वर में स्वीकार किया है । इस सन्दर्भ में पाये जाने वाले अगणित प्रमाणों में से कुछ नीचे प्रस्तुत हैं-

सर्वेषां जप सूक्तानां ऋचाश्च यजुषां तथा ।
साम्नां चैकाक्षरादीनां गायत्री परमो जपः ।

-बृहत् पाराशर स्मृति

अर्थ- समस्त जप सूत्रों में- समस्त वेद मन्त्रों में- एकाक्षर बीज मन्त्रों में- गायत्री ही सर्वश्रेष्ठ है ।

इति वेद पवित्राण्य भिहतानि एभ्य सावित्री विशिष्यते ।

-शंख स्मृति

अर्थ- यों सभी वेद मन्त्र पवित्र हैं पर इन सबमें गायत्री मन्त्र सर्वश्रेष्ठ है ।

सप्त कोटि महामन्त्रा, गायत्री नायिका स्मृता ।
आदि देवा ह्युपासन्ते गायत्री वेद मातरम् ।।

-कूर्म पुराण

अर्थ- गायत्री सर्वोपरि- सेनानायक के समान है । देवता इसी की उपासना करते हैं । यही चारों वेदों की माता है ।

तद्धित्मृचा समोनास्ति मन्त्रो वेद चतुष्टये ।
सर्ववेदश्च यज्ञाश्च दानानि च तपांसि च ।
समानि कलया प्राहुमुनयो न तदित्यृच ।

-याज्ञवल्क्य

अर्थ- गायत्री के समान चारों वेदों में कोई मन्त्र नहीं है । समस्त वेद, दान, तप मिलकर भी गायत्री

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

की एक कला के बराबर भी नहीं हो सकते, ऐसा ऋषियों ने कहा है-

दुर्लभा सर्व मन्त्रेषु गायत्री प्रणवान्विता ।
न गायत्र्याधिकं किंचित् त्रयीषुपरिगीयते ।

-हारीत

अर्थ- इस संसार में गायत्री के समान परम समर्थ और दुर्लभ मन्त्र कोई नहीं है । वेदों में गायत्री से श्रेष्ठ और कुछ नहीं है ।

नास्ति गंगा समं तीर्थं न देवः केशवात्परः ।
गायत्र्यास्तु परं जाप्यं न भूतं न भविष्यति ।

-अत्रि

अर्थ-गंगा के समान कोई तीर्थ नहीं, केशव के समान कोई देवता नहीं, गायत्री से श्रेष्ठ कोई जप न कभी हुआ है और न आगे होगा ।

गायत्री सर्व मन्त्राणां शिरोमणिस्तथा स्थिता ।
विधानामपि तेनैतां साधने सर्व सिद्धये ।।
त्रिव्याहृति युतां देवीमोंकार युगसम्पुटाम् ।
उपास्यचतुरो वर्गान्साधयेद्योन सीऽन्धधीः ।।
देव्या द्विजत्व मासाद्य श्रेयसेन्यरतास्तु ये ।
ते रत्नभिववांछन्ति हित्वा चिंतामणिं करात् ।।

-महावार्तिक

अर्थ- गायत्री सब मन्त्रों तथा सब विद्याओं में शिरोमणि है । उससे सब इन्द्रियों की साधना होती है । जो व्यक्ति इस उपासना के द्वारा धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन, चारों पदार्थों को प्राप्त करने से चूकते हैं, वे मन्द बुद्धि हैं । जो द्विज गायत्री मन्त्र के होते हुए भी अन्य मन्त्रों की साधना करते हैं वे ऐसे ही हतभागी हैं जैसे कि चिन्तामणि को फेंककर छोटे-छोटे चमकीले पत्थर ढूँढ़ने वाले ।

यथा कथं च जप्तैषा त्रिपदा परम पावनी ।
सर्वकामप्रदा प्रोक्ता विधिना किं पुनर्तुय ।

-विष्णु धर्मोत्तर

अर्थ- हे राजन जैसे-तैसे उपासना करने वाले की भी गायत्री माता कामना पूर्ण करती है, फिर विधिवत साधना करने के सत्परिणामों का तो कहना ही क्या है ।

कामान्दुधे विप्रकर्षत्य लक्ष्मी,
पुण्यं सूते दुष्कृतं य हिनास्ति ।
शुद्धां शान्तां मातरं मंगलानां
धेनुं धीरां गायत्री मन्त्र माहुः ।।

-वशिष्ठ

अर्थ-गायत्री कामधेनु के समान मनोकामनाओं को पूर्ण करती है, दुर्भाग्य, दरिद्रता, आदि कष्टों को दूर करती है, पुण्य को बढ़ाती है, पाप का नाश करती है । ऐसी परम शुद्ध, शान्तिदायिनी, कल्याणकारिणी महाशक्ति को ऋषि लोग गायत्री कहते हैं ।

जीवन का कायाकल्प

गायत्री मन्त्र से आत्मिक कायाकल्प हो जाता है । इस महामन्त्र की उपासना आरम्भ करते ही साधक को ऐसा प्रतीत होता है कि मेरे आन्तरिक क्षेत्र में एक नई हलचल एवं रद्दोबदल आरम्भ हो गई है । सतोगुणी तत्वों की अभिवृद्धि होने से दुर्गुण, कुविचार, दुःस्वभाव एवं दुर्भाव घटने आरम्भ हो जाते हैं और संयम, नम्रता, पवित्रता, उत्साह, स्फूर्ति, श्रमशीलता, मधुरता, ईमानदारी, सत्यनिष्ठा, उदारता, प्रेम, सन्तोष, शान्ति, सेवाभाव, आत्मीयता आदि सद्गुणों की मात्रा दिन-दिन बड़ी तेजी से बढ़ती जाती है । फलस्वरूप लोग उसके स्वभाव, एवं आचरण से सन्तुष्ट होकर बदले में प्रशंसा, कृतज्ञता, श्रद्धा एवं सम्मान के भाव रखते हैं, और समय-समय पर उसकी अनेक प्रकार से सहायता करते रहते हैं । इसके अतिरिक्त सद्गुण स्वयं इतने मधुर होते हैं कि जिस हृदय में इनका निवास होगा वहाँ आत्म-संतोष की परम शान्तिदायक शीतल निर्झरणी सदा बहती रहती है ।

गायत्री साधना से साधक के मनः क्षेत्र में असाधारण परिवर्तन हो जाता है । विवेक, दूरदर्शिता, तत्वज्ञान और ऋतम्भरा बुद्धि की अभिवृद्धि हो जाने के कारण अनेक अज्ञान जन्य दुःखों का निवारण हो जाता है प्रारब्धवश अनिवार्य कर्मफल के कारण कष्ट साध्य परिस्थितियाँ हर एक जीवन में आती रहती हैं । हानि, शोक, वियोग, आपत्ति, रोग, आक्रमण, विरोध, आघात आदि की विभिन्न परिस्थितियों में जहाँ साधारण मनोभूमि के लोग मृत्युतुल्य कष्ट पाते हैं, वहाँ आत्म-बल सम्पन्न गायत्री साधक अपने विवेक, ज्ञान, वैराग्य, साहस, आशा, धैर्य, सन्तोष, संयम और ईश्वर-विश्वास के आधार पर इन

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कठिनाइयों को हँसते-हँसते आसानी से काट लेता है। बुरी अथवा साधारण परिस्थितियों में भी अपने आनन्द का मार्ग ढूँढ़ निकालता है और मस्ती एवं प्रसन्नता का जीवन बिताता है ।

संसार का सबसे बड़ा लाभ "आत्म बल" गायत्री साधक को प्राप्त होता है । इसके अतिरिक्त अनेक प्रकार के सांसारिक लाभ भी होते देखे गये हैं । बीमारी, कमजोरी, बेकारी, घाटा, गृहकलह, मनोमालिन्य, मुकदमा, शत्रुओं का आक्रमण, दाम्पत्ति सुख का अभाव, मस्तिष्क की निर्बलता, चित्त की अस्थिरता, सन्तान-दुख, कन्या के विवाह की कठिनाई, बुरे भविष्य की आशंका, परीक्षा में अनुत्तीर्ण होने का भय, बुरी आदतों के बन्धन आदि कठिनाइयों में ग्रसित अगणित व्यक्तियों ने गायत्री आराधना करके अपने दुःखों से छुटकारा पाया है ।

कारण यह है कि हर एक कठिनाई के पीछे जड़ में निश्चय ही कुछ न कुछ अपनी त्रुटियाँ, अयोग्यतायें एवं खराबियाँ रहती हैं । सतोगुण की वृद्धि के साथ अपने आहार-विहार, विचार, दिनचर्या, दृष्टिकोण, स्वभाव एवं कार्यक्रम में परिवर्तन होता है । यह परिवर्तन ही आपत्तियों के निवारण का, सुख-शांति की स्थापना का राजमार्ग बन जाता है । कई बार हमारी इच्छाएँ, तृष्णाएँ, लालसाएँ, कामनाएँ ऐसी होती हैं जो अपनी योग्यता एवं परिस्थितियों से मेल नहीं खातीं, मस्तिष्क शुद्ध होने पर बुद्धिमान व्यक्ति उन मृग-तृष्णाओं को त्यागकर अकारण दुखी रहने व भ्रम-जंजाल से छूट जाता है । अवश्यम्भावी, न टलने वाले प्रारब्ध का भोग जब सामने आता है तो साधारण व्यक्ति बुरी तरह रोते-चिल्लाते हैं । किन्तु गायत्री साधक में इतना आत्म-बल एवं साहस बढ़ जाता है कि वह उन्हें हँसते-हँसते झेल लेता है ।

किसी विशेष आपत्ति का निवारण करने एवं किसी आवश्यकता की पूर्ति के लिये भी गायत्री की उपासना की जाती है । बहुधा इसका परिणाम बड़ा ही आशाजनक होता है । देखा गया है कि जहाँ चारों ओर निराशा, असफलता, आशंका और भय का अन्धकार ही अन्धकार छाया हुआ था, वहाँ वेदमाता की कृपा से एक दैवी प्रकाश उत्पन्न हुआ और निराशा आशा में परिणत हो गई, बड़े कष्टसाध्य कार्य तिनके की तरह सुगम हो गये । ऐसे अनेकों अवसर अपनी आँखों के सामने देखने के कारण हमारा यह अटूट विश्वास हो गया है कि कभी किसी की गायत्री साधना निष्फल नहीं जाती ।

गायत्री साधना आत्म-बल बढ़ाने का एक अचूक आध्यात्मिक व्यायाम है । किसी को कुश्ती में पछाड़ने एवं दंगल में जीतकर इनाम पाने के लिए कितने लोग पहलवानी और व्यायाम का अभ्यास करते हैं । यदि कदाचित कोई अभ्यासी किसी कुश्ती को हार जाय तो भी ऐसा नहीं समझना चाहिए कि उसका प्रयत्न निष्फल गया । इसी बहाने उसका शरीर तो मजबूत हो गया, वह जीवन भर अनेक प्रकार से अनेक अवसरों पर बड़े-बड़े लाभ उपस्थित करता रहेगा । निरोगता, सौन्दर्य, दीर्घजीवन, कठोर परिश्रम करने की क्षमता, दाम्पत्य सुख, सुसन्तति, अधिक कमाना, शत्रुओं से निर्भयता आदि कितने ही लाभ ऐसे हैं जो कुश्ती पछाड़ने से कम महत्त्वपूर्ण नहीं । साधना से यदि कोई विशेष प्रयोजन प्रारब्धवश पूरा भी न हो तो भी इतना तो निश्चय है कि किसी न किसी प्रकार साधना की अपेक्षा कई गुना लाभ अवश्य मिलकर रहेगा ।

आत्मा स्वयं अनेक ऋद्धि-सिद्धियों का केन्द्र है । जो शक्तियाँ परमात्मा में हैं वे ही उसके अमर युवराज आत्मा में हैं । समस्त ऋद्धि-सिद्धियों का केन्द्र आत्मा में है । परन्तु जिस प्रकार राख से ढँका हुआ अंगार मन्द हो जाता है, वैसे ही आन्तरिक मलीनताओं के कारण आत्म-तेज कुंठित हो जाता है । गायत्री साधना से वह मलीनता का पर्दा हटता है और राख हटा देने से जैसे अंगार अपने प्रज्वलित स्वरूप में दिखाई पड़ने लगता है वैसे ही साधक की आत्मा भी अपने ऋद्धि-सिद्धि समन्वित ब्रह्म तेज के साथ प्रकट होती है । योगियों को जो लाभ दीर्घकाल तक कष्टसाध्य तपस्यायें करने से प्राप्त होता है वही लाभ गायत्री साधकों को स्वल्प प्रयास से प्राप्त हो जाता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्राचीन काल में महर्षियों ने बड़ी-बड़ी तपस्याएँ और योग साधनाएँ करके अणिमा, महिमा आदि ऋद्धि-सिद्धियाँ प्राप्त की थीं । उनकी चमत्कारी शक्तियों के वर्णन से इतिहास पुराण भरे पड़े हैं, वह तपस्या और योग साधना गायत्री के आधार पर ही की थी । अब भी अनेकों महात्मा ऐसे मौजूद हैं जिनके पास दैवी शक्तियाँ और सिद्धियों का भण्डार है । उनका कथन है कि गायत्री से बढ़ कर योग मार्ग में सुगमतापूर्वक सफलता प्राप्त करने का दूसरा मार्ग नहीं है । सिद्ध पुरुषों के अतिरिक्त सूर्यवंशी और चन्द्रवंशी सभी चक्रवर्ती राजा गायत्री के उपासक रहे हैं । ब्राह्मण लोग गायत्री की ब्रह्मशक्ति के बल पर जगद्गुरु थे, क्षत्रिय गायत्री के मर्म, तेज को धारण करके चक्रवर्ती शासक थे ।

यह सनातन सत्य आज भी वैसा ही है । गायत्री माता का अंचल श्रद्धापूर्वक पकड़ने वाला मनुष्य कभी भी निराश नहीं रहता ।

गायत्री का भर्गतत्व

ब्रह्म-वर्चस्

गायत्री का एक पक्ष है- ब्रह्म विद्या -दृष्टिकोण एवं क्रियाकलाप का परिष्कार । उसका दूसरा पक्ष है- प्रसुप्त अन्तःशक्तियों का जागरण- ब्रह्मतेज का सम्वर्धन । पौराणिक गाथाओं में ब्रह्माजी की दो पत्नियाँ बताई गई हैं- एक गायत्री, दूसरी सावित्री । गायत्री को ब्रह्म विद्या और सावित्री को ब्रह्माग्नि नाम दिया गया है ।अग्नि की तेजस्विता सर्वविदित है । अग्नि ऊर्जा से कितने प्रयोजन सधते हैं यह सभी जानते हैं । आन्तरिक ब्रह्माग्नि भी अगणित भौतिक और आध्यात्मिक प्रयोजन सिद्ध कर सकने में समर्थ है ।

साधना विज्ञान के दो पक्ष हैं- एक योग, दूसरा तप । योग कहते हैं जोड़ने मिलाने को । जीव जब अपनी भौतिक महत्वाकांक्षाओं का परित्याग करके ईश्वरीय निदेशों को, आत्म-संकेतों को, स्वीकार करता है तब उसे समर्पित, शरणागत, भक्त अथवा योगी कहा जाता है । योग से आत्मा को देवात्मा-परमात्मा स्तर तक विकसित होने का अवसर मिलता है । तप से शक्ति उभरती है । अरणि मंथन से अग्नि उत्पन्न होती है । तितीक्षा के कष्ट कारक विधि-विधानों से आत्म-संयम, मनोनिग्रह एवं उदात्त सेवा साधनों के लिए कष्ट उठाने से प्रसुप्त अन्तःक्षेत्र को प्रखर बनने का अवसर मिलता है । इस प्रखरता के सहारे विभिन्न स्तर की उपलब्धियाँ प्राप्त कर सकना सम्भव होता है । तितीक्षा और साधना एक ही तथ्य के दो नाम रूप हैं । साधना से सिद्धि मिलने की मान्यता के पीछे शक्ति सम्पादन का रहस्य ही काम करता है । सशक्तता ही प्रगति, समृद्धि और विभूति के त्रिविध सत्परिणाम उत्पन्न करती रहती है ।

गायत्री से शान्ति का, मोक्ष का द्वार खुलता है और सावित्री से सर्वतोमुखी समर्थता उपलब्ध होती है । सर्वतोमुखी प्रगति के पथ पर सफल यात्रा तभी हो सकेगी जब यह दोनों ही रथ-चक्र समान रूप से लुढ़कते रह सकें । गायत्री और सावित्री दो पृथक सम्प्रदाय या मार्ग नहीं हैं । समग्र आत्मिक प्रगति के लिए दोनों को एक-दूसरे का पूरक यहाँ तक कि अविच्छिन्न भी कहा जा सकता है । ज्ञान की ही तरह विज्ञान भी आवश्यक है । सुसंस्कारों के साथ-साथ पराक्रम की क्षमता भी रहनी चाहिए । अन्यथा एकांगी-प्रगति का अधूरापन अभीष्ट उद्देश्य की पूर्ति न होने देगा ।

गायत्री के ब्रह्म विद्या स्वरूप का संकेत 'धियः' शब्द में किया गया है । 'भर्गः' में उसके 'तेजस्' का प्रतिपादन है । दोनों के समन्वय से ही गायत्री तत्व के यथार्थ स्वरूप का प्रकटीकरण होता है । शास्त्रों में गायत्री की ज्ञान गरिमा के साथ-साथ उसके तेजस्वी पक्ष का भी उल्लेख किया गया है ।

ब्रह्मत्वं चेदामु कामोऽस्युयास्व गायत्रीं चेल्लोक कामोऽन्यदेवम् । बुद्धेः साक्षी बुद्धिगम्यो जयादौ गायत्र्यर्थः सोऽनद्यो वेदसारः तद् ब्रह्मैव ब्रह्मतोपासकस्या प्येवं मंत्रः कोऽस्ति तंत्रे पुराणे ।

-देवी भागवत

ब्रह्म तेज प्राप्त करने की इच्छा हो तो वेदमाता गायत्री की ही उपासना करनी चाहिए । अन्य कामनाओं के लिए अन्य देवताओं को पूजे ।

इसी से साक्षी बुद्धि, ऋतम्भरा प्रज्ञा का उदय होता है । यही वेदों का सार है । पापों से निवृत्ति

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

और पवित्रता की सिद्धि इसी से मिलती है । ब्रह्मत्व की उपासना करने वाले के लिए यही साक्षात् ब्रह्म है । यह शिरोमणि मन्त्र है । इससे बढ़कर और कोई मन्त्र-तन्त्र आदि नहीं है ।

यो वा अन्नाग्निर्गायित्री स निदानेन ।

-शत० १ ।८ ।२ ।१५

गायत्री को ही निदान (ब्रह्म ज्ञान) और अग्नि (ब्रह्मशक्ति) का रूप समझना चाहिए ।

गायत्री वा इदꣳसर्वभूतं यदिदंकिञ्च ।

-छान्दोग्य ३ ।१२ ।१

इस जड़ चेतन जगत में गायत्री ही शक्ति रूप से विद्यमान है ।

ब्रह्मण्य तेजो रूपा च सर्व संस्कार रूपिणी पवित्र रूपा सावित्री, वांछतिह्यात्म शुद्धये ।

-देवी भागवत

गायत्री 'ब्रह्म तेज' रूप है । पवित्रता एवं संस्कार रूपिणी है । उससे आत्म-शुद्धि होती है ।

गायत्री को सोम और सावित्री को अग्नि कहा गया है । यहाँ अग्नि से तात्पर्य है ब्रह्माग्नि, योगाग्नि । साधना क्षेत्र में इसी को जीवनी-शक्ति, प्राण-ऊर्जा, कुण्डलिनी शक्ति आदि नामों से पुकारते हैं । ब्रह्मतेज इसी ब्रह्माग्नि की प्रतिक्रिया है । ओजस्, तेजस्, एवं वर्चस् इसी को कहते हैं । ब्रह्माग्नि और ब्रह्मवर्चस् शब्दों में लेखन उच्चारण का ही अन्तर है । तथ्यों की दृष्टि से दोनों को एक ही कहा जा सकता है । ब्राह्मी ऊर्जा उपार्जित कर लेने वाले तपस्वी अपने ढंग के अनौखे शक्तिवान् होते हैं । उनकी समर्थता अन्य किसी सामर्थ्य के साथ आँकी नहीं जा सकती ।

ब्रह्माग्नि की चर्चा शास्त्रों में स्थान-स्थान पर हुई है ।

द्वयं वा इदं न तृतीयमस्ति । आर्द्रंचैव शुष्कं च यदार्द्र तत् सौम्य यच्छुष्कं तदाग्नेयम् ।

-शतपथ

यह संसार दो पदार्थों से मिलकर बना है - (१) अग्नि, (२) सोम । इनके अतिरिक्त तीसरा कुछ नहीं है ।

अग्नि र्वा अहः सोमारात्रिरथ यदन्तरेण तद् विष्णु ।

- श० प० ३ ।४ ।४ ।१५

अग्नि और सोम के मिलन को विष्णु कहते हैं ।

इमौ ते पक्षावजरौ पतत्रिणौ याभ्यां रक्षांस्यपहंस्यग्ने । ताभ्यां पतेम सुकृतामु लोकं यत्र ऋषयो जग्मुः प्रथमजाः पुराणाः।

-यजु० १८ ।५२

हे अग्नि ! तेरे दोनों पंख फड़फड़ाते हैं । उनसे पाप और तम का हनन होता है । इन्हीं पंखों के सहारे हम उस पुण्य-लोक तक पहुँचते हैं जहाँ पूर्ववर्ती ऋषि पहुँचे थे ।

इन्दुर्दक्षः श्येन ऋतावा हिरण्य पक्षः शकुनो भुरण्युः । महान्तसधस्थे ध्रुव आ निषतो नम ते अस्तु मा मा हिंसी ।

-यजु० १८ ।५३

हे अग्नि ! तू सोम रस से परिपूर्ण है । तू दक्ष है । तू ही ऋत युक्त है । तेरे अमृत सिक्त पंख है । तू शक्तिशाली है, पोषक हैं, तू मस्तिष्क में ध्रुव केन्द्र बनकर विराजमान है । तुझे नमस्कार । तू हमें जलाना मत ।

अग्निर्ललाटं यमः कृकाटम् ।

-अथर्व ९ ।७ ।१

तुम्हारे ललाट में यह अग्नि उत्पन्न हो जो शिव रूप बनकर काम विकृतियों को भस्म कर सके ।

ब्रह्म ह्यग्नि स्तस्मादाहः ब्राह्मणेति ।

-शतपथ० १ ।४ ।२ ।८

मनुष्य शरीर में विद्यमान यह आत्मा रूपी अग्नि ब्रह्म ही है ।

येन ऋषयस्तपसा सत्रमायन्निन्धाना अग्निं स्वराभरन्तः । तस्मिन्नहं निदधे नाके अग्निं यमाहुर्मनवस्तीर्णबर्हिषम् ।

-यजु० १५ ।४९

इस आन्तरिक अग्नि को ऋषि लोग अपने तप बल से प्रदीप्त करते हैं और उसे स्वर्गलोक तक पहुँचाकर मस्तिष्क को प्रकाश से भरते हैं । यही दिव्य अग्नि है ।

अग्निः पूर्वेभि र्ऋषिभिरीड्यो नूतनैरुत । स देवां एह वक्षति ।

-ऋ० १ ।१ ।२

प्राचीन और अर्वाचीन सभी ऋषि अग्नि का आश्रय लेते हैं क्योंकि वही देवताओं को धारण करती है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तामग्ने अस्मे इषमेरयस्व वैश्वानरद्यामतीं जातवेदः ।
यया राधः पिन्वसि विश्ववार पृथुश्रवो दाशुषे मर्त्याय ।

-ऋ० ७ ।५ ।८

हे अग्नि ! हमारे भीतर वे उदात्त आकांक्षाएँ पैदा करो जिनसे प्रभावित होकर तुम प्रसन्न होते हो और कीर्ति एवं सिद्धियाँ प्रदान करते हो ।

अग्ने विवस्वदुषसश्चित्रं राधो अमर्त्य ।
आ दाशुषे जातवेदो वहात्वमद्या देवां उषर्बुधः ।।

-ऋ० १ ।४४ ।१

हे अग्नि मेरे जीवन की ऊषा बनकर प्रकटो । अज्ञान के अन्धकार को दूर करो । ऐसा आत्म-बल प्रदान करो । जिससे देवों का अनुग्रह खिंचा चला आवे ।

त्वदग्ने काव्यास्त्वन्मनीषास्त्वदुक्था जायंते राध्यानि ।
त्वदेति द्रविणं वीरपेशा इत्थाधिये दाशुषे मर्त्याय ।।

-ऋ० ४ ।११ ।३

हे अग्नि ! आप सत्य को धारण करने वाले उदार व्यक्ति के अन्तःकरण में कवित्व जैसी करुणा भर देते हो । तुम्हारी ऊष्मा से ही साहसी लोग सिद्धियाँ और सफलताएँ प्राप्त करते हैं ।

अग्ने तवश्रवो वयो महि भ्राजन्ते अर्चयो विभावसो ।
बृहद्भानो शवसा बाजमुक्थ्यं दधासि दाशुषे कवे ।।

-ऋ० १० ।१४० ।१

हे अग्नि ! शरीर से संव्याप्त होकर आपकी प्रशंसनीय ज्वालाएँ हर दिशा में चमकती हैं । भाव-विभोर उदात्त व्यक्ति को आप ही उत्थान की प्रेरणा और प्रतिभा प्रदान करती हैं ।

यत् ते पवित्रमर्चिषि, अग्नि विततमन्तरा ।
ब्रह्म तेन पुनीहि नः ।।

-ऋ० ९ ।६७ ।२३

हे अग्नि देव ! जो पवित्र और विशाल ब्रह्म तेरी ज्वाला में लस-लस कर रहा है, उससे हमें पवित्र करो ।

इदं वर्चो अग्निना दत्तमागन्,
भगों यशः सहः ओजो वयो बलम् ।
त्रयस्त्रिंशद्यानि च वीर्याणि,
तान्यग्निः प्र ददातु मे ।।

-अथर्व० १९ ।३० ।१

मुझे अग्नि द्वारा क्या कुछ नहीं मिल रहा ? प्रकाश, तेज, यश, प्रभाव, पराक्रम और बल सभी मेरे अन्दर आ रहे हैं । मुझ पर अग्नि की कृपा बनी रहे और मुझे तैंतीस प्रकार के सभी वीर्य प्राप्त होते रहें ।

अग्नेऽभ्यावर्तिन्नभि मा निवर्तस्वायुषा वर्चसा प्रजया धनेन सन्या मेधया सत्या पोषेण ।

-यजु० १२ ।७

हे अग्नि ! तू आयु, वर्चस, प्रज्ञा, धन, दान, मेधा, पुष्ट बनकर अपना अनुग्रह हमें प्रदान करे ।

इस ब्रह्माग्नि के, योगाग्नि के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए उसे गायत्री का ही ब्रह्म तेजस् कहा गया है ।

यो वा अत्राग्नि गायत्री

-शतपथ ८ ।२ ।९५

गायत्री दिव्य अग्नि है ।

गायत्री के २४ अक्षरों में सन्निहित २४ शक्तियों की व्याख्या करते हुए शास्त्र कहता है -

आजश्शक्ति बल प्रभाव सुषमा तेजस्सु वीर्यप्रभा ।
ज्ञानैश्वर्य महस्सहो जययशस्स्थैर्य प्रतिष्ठाश्रियः ।।
विज्ञान प्रतिभा मतिस्मृ तिधृति प्रज्ञाप्रथस्सु ज्वलाः ।
वर्णास्त्वन्मानुगै स्त्रिरषभि रहो बर्ध्यन्त एवात्रमे ।।

"ओज, शक्ति, बल, महिमा, कान्ति, तेज, पराक्रम, प्रकाश, ज्ञान, ऐश्वर्य, विकास, सहनशक्ति, जय, कीर्ति, स्थिरता, प्रतिष्ठा, लक्ष्मी, विज्ञान, प्रतिभा, मति, स्मृति, धृति प्रज्ञा, ख्याति - यह चौबीस गुण हे माता ! तुम्हारे मन्त्र में रहने वाले चौबीसों वर्णों द्वारा मुझ में अभिवृद्धि पा रहे हैं ।"

इस सावित्री शक्ति की गरिमा को भगवान् मनु सशक्तता के क्षेत्र में सर्वोपरि मानते हैं ।

सावित्र्यास्तु परान्नास्ति ।

-मनु० २ ।८३

सावित्री से बढ़कर श्रेष्ठ और कुछ नहीं है ।

ज्ञान को ब्रह्म और विज्ञान को क्षत्र कहा गया है । भारतीय धर्म में दोनों को समान महत्त्व दिया गया है और दोनों के उपार्जन में समान प्रयत्न करने का निर्देश दिया गया है-

द्रोणाचार्य के शास्त्र और शस्त्र धारण का कारण- ब्रह्म और क्षत्र दोनों को समान उपयोगिता के रूप में बताया गया है ।

अग्रतः चतुरो वेदा पृष्ठतः सशरं धनु ।
इदं ब्राह्मं इदं क्षात्र शास्त्रादपि शरादपि ।।

-महाभारत

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हम वेदों को आगे रखकर लोगों को समझाने और सन्मार्ग पर लाने का प्रयत्न करते हैं । साथ ही पीठ पर धनुष बाण भी रखते हैं । यह धर्म शिक्षा 'ब्राह्म' है और यह शस्त्र धारण 'क्षात्र' है । दोनों शक्तियों के समन्वय से ही समस्याएँ सुलझती हैं ।

नाब्रह्म क्षत्रमृध्नोति नाक्षत्रं ब्रह्म वर्धते ।
ब्रह्म क्षत्रं च संपृक्तमिह चामुत्र वर्धते ।।

ब्रह्म-शक्ति के बिना क्षात्र-शक्ति नहीं बढ़ती और क्षात्र-शक्ति के बिना ब्रह्म-शक्ति नहीं बढ़ती । परस्पर मिली हुई ब्रह्म-शक्ति और क्षात्र-शक्ति ही इस लोक और परलोक में वृद्धि को प्राप्त होती है ।

यत्र ब्रह्म च क्षत्रं च सम्यंचौ चरतौ सह ।
तं लोकं पुण्यं प्रज्ञेषं यत्र देवाः सहाग्निना ।।

-यजुर्वेद २० । २५

"जहाँ ब्रह्म-शक्ति और क्षात्र-शक्ति साथ-साथ रहती हैं, वही लोक पुण्यशाली होता है ।" इस मन्त्र में आये हुए 'ब्रह्म' और 'क्षत्र' पद क्रमशः ज्ञान और कर्म के वाचक हैं । ये दोनों शक्तियाँ जहाँ होंगी वहीं प्रगति के आधार बनेंगे ।

ब्रह्मणि खलु वै क्षत्रं प्रतिष्ठितम् क्षत्रे ब्रह्म ।

-अथर्व० ८ । १२

ब्रह्म में क्षत्र की स्थिति होती है और क्षत्र में ब्रह्म की ।

ब्रह्म च क्षत्रं च संश्रिते ।

-अथर्व० ३ । ११

ब्रह्म और क्षत्र परस्पराश्रित होते हैं ।

नायमात्मा बलहीनेन लभ्यो न च
प्रमादात्तपसो वाप्यलिंगात् ।
एतैरुपायैर्यतते यस्तु विद्वांस्ततस्यैष
आत्मा विशते ब्रह्मधाम

-मुण्डकोपनिषद ३ । २ । ४

वह परमात्मा निर्बल मनुष्य से भी नहीं जाना जाता अथवा पाखण्ड रूप तप से भी वह नहीं मिलता । हाँ जो विद्वान् बल, कर्म, अप्रमाद आदि उपायों का अभ्यास करता है उसी की आत्मा ब्रह्म लोक में प्रवेश करती है ।

ज्ञान को शिव और बल को शक्ति का प्रतीक माना गया है । मात्र ज्ञान ही सम्पादित किया जाय और बल की उपेक्षा होती रहे तो उस एकपक्षीय प्रगति से कुछ काम चलने वाला नहीं है । शक्ति पक्ष की गरिमा बताते हुए कहा गया है-

शक्ति विना महेशानि सदाऽहंशव रूपकः ।
शक्ति युक्तो महादेवि शिवोऽहं सर्व कामदः ।।

शक्ति के बिना महादेव केवल शव मात्र हैं । शक्तियुक्त होने पर ही वे समर्थ शिव बनते हैं ।

शववछक्ति हीन स्तु प्राणी भवति सर्वदा ।

शक्ति हीन प्राणी तो मृतक तुल्य है ।

रुद्र हीनं विष्णु हीनं न वदन्ति जनः किल ।
शक्ति हीनं यथा सर्वे प्रवदन्ति नराधमम् ।।

किसी का तिरस्कार करना हो तो उसे रुद्र-हीन, विष्णुहीन नहीं कहा जाता, वरन् शक्ति हीन, अशक्त निकम्मा कहकर ही तिरस्कृत किया जाता है ।

प्रभावेणैव गायत्र्याः क्षत्रिय कौशिको वशी ।
राजर्षित्वं परित्यज्य ब्रह्मर्षि पद मीयिवान् ।।
सामर्थ्य प्रायचात्युच्चै रन्यद्भुवन सर्जने ।
किं किं न दयात् गायत्री सम्यगेव मुपासिता ।।

-स्कन्द पुराण

क्षत्रिय विश्वामित्र ने राजर्षि पद से उन्नति करते हुए ब्रह्मर्षि पद गायत्री उपासना के बल पर ही प्राप्त किया । दूसरी नई सृष्टि रच डालने की शक्ति भी प्राप्त की थी । भली प्रकार साधना की हुई गायत्री से भला कौन सा लाभ प्राप्त नहीं किया जा सकता ।

आध्यात्मिक और भौतिक प्रगति गायत्री के ज्ञान और विज्ञान दोनों ही पक्षों को अपनाने से सम्भव होती है । अस्तु उसकी सावित्री तेजस्विता को भी उपलब्ध करने के लिए प्रयत्नील रहा जाना चाहिए ।

तस्या एष तृतीयः पादः स्वर्षियो यो नः प्रचोदयादिति
स्त्री चैव पुरुषश्च प्रजयनतः ।
यो वा एतां सावित्रीमेव वेद स पुनर्मृत्युं जयति ।

-सावित्र्युपनिषद् १२ । १३ । १४

इस सावित्री देवी की जो स्त्री, पुरुष, गृहस्थ धर्म का पालन करते हुए उपासना करते हैं, वे श्रेष्ठ सन्तान उत्पन्न करते हैं । उनकी बार-बार मृत्यु नहीं होती ।

जो इस सावित्री विद्या को जानता है; वह विद्वान् कृत कृत्य हो जाता है और सावित्री लोक को प्राप्त करता है । यह उपनिषद है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यह आत्मशक्ति दो प्रकार के प्रयोजन पूरे करती है । एक तो उसके सहारे सर्वतोमुखी प्रगति के आधार हस्तगत होते हैं, दूसरे दुष्टता को निरस्त करने के लिए ब्रह्म दण्ड के रूप में इसका प्रयोग हो सकता है । सुसम्पन्नता प्राप्त करने के लिए जिस आन्तरिक बलिष्ठता की आवश्यकता है वह सावित्री उपासनात्मक और साधनात्मक अवलम्बन ग्रहण करने से उपलब्ध हो सकती है । उपासना को व्यायाम और साधना को आहार-विहार की सुव्यवस्था के समतुल्य माना गया है । अन्तःशक्ति के सहारे व्यक्तित्व को परिष्कृत बनाया जाता है और उस आधार पर अनेकानेक सिद्धियाँ, सफलताएँ प्राप्त करने का पथ-प्रशस्त होता चला जाता है ।

ब्रह्मण्य तेजो रूपा च सर्व संस्कार-रूपिणी ।
पवित्र रूपा सावित्री गायत्री ब्राह्मण प्रिया ।।

-देवी भागवत्

यह सावित्री ब्रह्म तेज रूप है । इस गायत्री को अपनाने से सुसंस्कारिता, पवित्रता एवं ब्रह्म परायणता प्राप्त होती है ।

सावित्री प्रवेश पूर्वकमप्सु सर्व विद्यार्थ
स्वरूपां ब्राह्मण्या धारां वेदमातरम् ।

-परमहंस परिव्राजकोपनिषद्

सर्व विद्याओं की अधिष्ठात्री ब्रह्म धारा, वेदमाता गायत्री में प्रवेश करते हुए साधना करनी चाहिए ।

तपः संपादिनी सद्यो भारतेषु तपस्विनाम् ।

- देवी भागवत

तपस्वियों में तप शक्ति बनकर तुम्हीं विराजमान हो ।

तपः स्वरूपा तपसां फलदात्री तपस्विनाम् ।
सिद्धिविद्यास्वरूपा च सर्वसिद्धिप्रदा सदा ।
यया विना तु विप्रौधो मूको मृतसमः सदाः ।

-देवी भागवत

वह तप स्वरूपिनी है, तपस्वियों को फल प्रदान करती है । उसी को सिद्धि कहते हैं, उसी को विद्या । उसके अभाव में साधक मूक और मृतक तुल्य ही बना रहता है । समस्त सिद्धियों के देने वाली तो वह भगवती ही है ।

सद्भावना का सम्वर्धन जिस प्रकार जीवन विकास का महत्त्वपूर्ण तथ्य है, उसी प्रकार दुष्टता का निराकरण भी उतना ही आवश्यक है । अन्यथा आसुरी तत्व उपार्जित सज्जनता को भी जीवित नहीं रहने दे सकते । शास्त्रकार ने अहंकार जन्य क्रोध की निन्दा की है किन्तु अनीति के विरुद्ध तन कर खड़े हो जाने वाले 'मन्यु' की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा भी की है । वन्य पशुओं से रक्षा न की जाय तो न कृषि फलीभूत होगी और न उद्यान से कुछ उपार्जित किया जा सकेगा । सुरक्षा के अभाव में तो श्रम उपार्जित आजीविका भी दस्युओं के उदर में चली जायगी । न्याय की रक्षा के लिए अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करना ही होता है । देवत्व की रक्षा, असुरत्व के उन्मूलन बिना हो ही नहीं सकती । अस्तु अन्य सुरक्षा साधनों की तरह ब्रह्म शक्ति का उपयोग भी होता रहा है ।

राजा विश्वामित्र का आक्रमण महर्षि वशिष्ठ पर हुआ तो उन्होंने प्रतिरोध के लिए अपनी नन्दिनी ब्रह्म-शक्ति का ही उपयोग किया । इस प्रतिरोध से विश्वामित्र का आक्रमण परास्त हो गया । तब उन्होंने भौतिक और आत्मिक बल की तुलना करते हुए आत्म-बल की, ब्रह्म-बल की गरिमा को ही श्रेष्ठ माना और राजपाट छोड़ कर उसी के उपार्जन में जुट गये ।

परास्त विश्वामित्र ने भौतिक बल को-क्षत्रिय बल को- धिक्-तुच्छ कहा और ब्रह्म-बल की गरिमा को बार-बार स्वीकार करते हुए, उसी को उपलब्ध करने की प्रतिज्ञा की । उन्होंने कहा -

धिग्बलं क्षत्रिय बलं ब्रह्म तेजोबल बलम् ।
एकेन ब्रह्म दण्डेन सर्वास्त्राणि हतानि मे ।

-महाभारत

राजा विश्वामित्र ने कहा- भौतिक बल तुच्छ है । ब्रह्म बल ही महान् बल है । एक ही ब्रह्म दण्ड ने मेरे समस्त शस्त्र बल को निरस्त कर दिया ।

लिंग पुराण में राजा क्षुप और दधीचि के मध्य हुए एक कटु प्रसंग का वर्णन आता है । क्षुप अपनी सामर्थ्य की धमकी देते हुए दधीचि से ब्रह्म तेज के सन्दर्भ में कुछ अपमानजनक शब्द कहने लगे । इस पर दधीचि ने ब्रह्म बल के गौरव का स्मरण राजा को दिलाया और बिना उत्तर की प्रतीक्षा किये राजा की उपेक्षा करते हुए स्वाभिमान प्रदर्शित करते

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हुए राजा को जहाँ का तहाँ बैठा छोड़कर अपनी कुटिया में चले गये । इस प्रसंग का उल्लेख इस प्रकार हुआ है -

देवैश्च पूज्या राजेन्द्र नृ पैश्च विविधैर्गणैः ।
ब्राह्मणा एव राजेन्द्र बलिनः प्रभविष्णुवः ।।
इत्युक्त्वा स्वोटजं विप्रः प्रविवेश महाद्युतिः ।
दधीचमभिवंद्यैव जगाम स्वं नृपः क्षयम् ।।

-लिंग पुराण

अर्थात् "देवों के द्वारा, नृपों के द्वारा तथा अन्य सब व्यक्तियों के द्वारा ब्राह्मण सम्मान के योग्य और अधिक शक्तिशाली होता है । इतना कहकर वे महातेजस्वी मुनि अपनी कुटिया में प्रवेश कर गये और राजा उनकी वन्दना करके अपने नगर को चला गया ।"

शत्रु तो न भयं तस्य दस्युतो वत्रान राजनः
न शस्त्रानल तो यौधा स्कदाचित्सं भविष्यति ।

ब्रह्म तेज सम्पन्न को न शत्रुओं का भय रहता है न दस्युओं का, न राजा का, न शस्त्र का, न अग्नि का, वह सब प्रकार के भयों से मुक्त होकर निर्भय बन जाता है ।

शिव-उमा सम्वाद में भी एक ऐसा ही उल्लेख है -

तक्षकेषापि दंष्टस्य प्रतीकारो हि तत्क्षणात् ।
ब्रह्म शाप प्रसक्तस्य कल्पान्तेस्यात् प्रतिक्रिया ।
नरकाग्निष्कृति नास्ति तस्या भावान्न संशयः ।
एवं तद्वंशजाः सर्वे पीडयन्तेऽहर्निशं प्रिये ।

तक्षक सर्प के काटे का उपचार हो सकता है, पर ब्रह्म शाप पीड़ित का नहीं । उन अभिशप्तों को चिरकाल तक नारकीय अग्नि में जलना पड़ता है ।

ब्रह्म-शक्ति के तीन अस्त्र गिनाये गये हैं- (१) ब्रह्मास्त्र (२) ब्रह्म दण्ड (३) ब्रह्मशीर्ष । इनका उल्लेख विश्वामित्र कल्प में इस प्रकार हुआ है ।

ब्रह्मास्त्रं ब्रह्मदण्डं च ब्रह्मशीर्षं च संयुतम् ।
अर्घ्य त्रियं प्रयोगार्थं एक मेवा युदाहृतम् ।

-विश्वामित्र कल्प

तन्त्र ग्रन्थों में गायत्री की ब्रह्मास्त्र शक्ति का वर्णन ब्रह्मशाप आदि के रूप में आता है । इस सन्दर्भ में कितने ही प्रयोगों की भी चर्चा है । एक गायत्री स्तवन में आता है -

ब्रह्मास्त्रं ब्रह्मशापं च ब्रह्म विद्या सनातची ।

हे गायत्री माता आप ब्रह्म विद्या की ही तरह ब्रह्मास्त्र और ब्रह्म शाप भी हैं ।

ब्रह्मास्त्रमिति विख्यातं त्रिषु लोकेषु विश्रुतम् ।
सत्पात्राय दातव्यं न देयं यस्य कस्य चित् ।

यह ब्रह्मास्त्र परम प्रचण्ड है । इसका विधान केवल सत्पात्रों को ही बताया जाय । जिस-तिस को न सिखाया जाय ।

ब्रह्मास्त्राख्यो मनुः पातु सर्वांगे सर्व सन्धिषु ।

यह ब्रह्मास्त्र समस्त मर्मस्थलों की सुरक्षा रख सकने में समर्थ है ।

ब्रह्म शक्ति ने अपनी असुर संहारिणी शक्ति का परिचय देते हुए कहा है-

अहं रुद्राय धनुरात्नेमि ब्रह्मद्विषे शर वे हन्तवा उ ।
अहं जनाय समदं कृणोम्यहं द्यावापृथिवी आविवेश ।

"मैं ब्रह्म ज्ञान विरोधी विनाश योग्य रुद्र (एकादश इन्द्रियों) को हनन करने के लिए धनु में शर का संधान करती हूँ । इस प्रकार मनुष्यों के लिए संघर्ष करती हूँ और स्वर्ग तथा मृत्यलोक में आविर्भूत होती हूँ ।"

मोक्षार्थिभिर्मुनिभिरस्त समस्त दोषै।
विद्यासि सा भगवती परमा हि देवी ।।

- महर्षि मार्कण्डेय

"वीतराग योगीजन मोक्ष-प्राप्ति के लिए तेरे ब्रह्म विद्या रूप की ही उपासना करते हैं ।"

ऋषयो ऋग्यजुः सामाथर्वच्छन्दासि नारद ।
ब्रह्म रूपा देवतोक्ता गायत्री परमा कला ।
तद्वीज भर्ग इत्येषा शक्ति रूपा मनीषिभी : ।
कीलकं च धियः प्रोक्तं मोक्षाये विनियोजनम् ।

-देवी भागवत्

अर्थात् ऋषि तत्वमयी, ऋग्, यजु, अथर्व, साम स्वरूप, ब्रह्म रूप, परम कला गायत्री ही है । उसका बीज भर्ग है, मेधा शक्ति वही है, धियः उसका कीलक है, मोक्ष के लिए उसका विनियोग होता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

'भर्ग' की सार्थकता 'देवस्य' के समावेश से

भौतिक सम्पदायें एवं आध्यात्मिक विभूतियाँ उत्कृष्ट व्यक्तित्व का ही वरण करती हैं । व्यक्तित्व की उत्कृष्टता के आधार पर ही विभूतियों एवं सम्पदाओं का स्वामी बन पाना सम्भव होता है । व्यक्तित्व उत्कृष्ट बनाने की सर्वश्रेष्ठ प्रक्रिया दोष दुर्गुणों को दूर करना और उसके स्थान पर सद्गुणों की स्थापना करना है ।

मनीषियों द्वारा गायत्री मन्त्र की अवधारणा के पीछे यही मन्तव्य सन्निहित देखा जा सकता है । गायत्री मन्त्र का भर्ग शब्द पापों, सन्तापों को भून डालने, नष्ट करने का प्रेरक है और उसके स्थान पर देवस्य शब्द दिव्य गुणों की, सद्गुणों की प्रतिस्थापना का विधायक है ।

शास्त्रों में इन्हीं दो को, दोष-निवारण एवं सद्गुण स्थापना की, व्यक्तित्व की श्रेष्ठता का विधायक माना गया है । व्यक्तित्व का परिष्कार अंत:करण की निर्मलता, निर्दोषता से ही सम्भव हो सकता है ।

'वि मृ धो नुदस्व ।'

- अथर्व० १३ ।१ ।२७

हे मानव ! तू अपने चित्त के सब दोषों को दूर कर दे । दोष दुर्गण पापपूर्ण विचार ही अन्त:करण को दुष्प्रवृत्तियों में संलग्न कर देते हैं - सत्कर्मों से विरत करके दुष्कर्मों के प्रेरणा स्रोत बनते हैं । अतएव इनका निष्कासन आवश्यक है । साधक अपने पाप संकल्पों की भर्त्सना करता हुआ कहता है-

अपेहि मनसस्पतेऽप क्राम परश्चर ।
परो निर्ऋत्या आ चक्ष्व बहुधा जीवितो मन: ।

हे अन्त:करण को पतित करने वाले पाप-संकल्प तू दूर हट, तुरन्त भाग, तू ही मनुष्य के चित्त में दुखदायी पाप प्रवृत्ति का प्रेरक है । दूर हट जा, भक्त परमात्मा से केवल एक ही प्रार्थना करता है ।

अपैतु संव्र मत् पापम् ।

- अथर्व० १० ।१ ।१०

हे परमात्मन् ! मेरे समस्त पाप मुझसे दूर हो जायें । व्यक्ति की अवांछनीयतायें, बुरी आकांक्षाएँ आसुरी प्रवृत्तियाँ, कटु वाणी इत्यादि दुर्गुण ही उसके व्यक्तित्व को निकृष्ट स्तर का बना देते हैं । इन्हें दूर करके ही व्यक्तित्व को उत्कृष्ट बनाना सम्भव हो पाता है । इसलिए अथर्ववेद ७।२३।१ साधक अपना मन्तव्य प्रकट करते हुए कहता है ।

दौष्वप्न्यं दौर्जीवित्यं रक्षो अभ्वमराय्य: ।
दुर्णाम्नी: सर्वा दुर्वाचस्ता अस्मन्नाशयामसि ।।

बुरी कल्पनाएँ स्वप्न (बुरी आकांक्षायें) दुष्ट जीवन राक्षसी भाव (आसुरी प्रवृत्तियाँ) दरिद्रता, कटुवाणी को हम अपने से दूर करते हैं ।

भगवान से याचना करने की एक ही वस्तु होती है वह है दोषों-दुर्गुणों को दूर कर देना ।

दोषों का निष्कासन ही बहुत नहीं है, उसके स्थान पर सद्गुणों की स्थापना भी आवश्यक है अन्यथा तो उसके स्थान पर अन्य दोष दुर्गुण आ जायेंगे । श्रुति की वाणी में भक्त प्रार्थना करता है -

विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव ।
यद्भद्रं तन्न आसुव ।।

-यजु० ३० ।३

हे परमात्मन् ! सविता! देवता ! आप कृपा करके हमारे समस्त दुर्गुणों को दूर कर दीजिए और जो हमारे लिए कल्याणकारक हो उसे प्रदान कीजिए । उत्तम गुण ही कल्याण के विधायक होते हैं । इन्हीं का सम्वर्धन आवश्यक है । ऋग्वेद १ । १२।१० में कहा गया है ।

स न: पावक दीदिवोऽग्ने देवां इहा वह ।

हे प्रभो ! हमारे कल्याण के लिए हममें उत्तम गुणों को स्थापित कीजिये ।

गायत्री मन्त्र के 'भर्ग:' और 'देवस्य' की इन प्रेरणाओं को हृदयंगम किया जा सके - दोषों को दूर करके उत्तम गुणों-सद्गुणों की स्थापना की जा सके तो हमारा व्यक्तित्व नि:सन्देह इतना प्रभावशाली बनता चला जायेगा, जिससे भौतिक सम्पदाओं और आध्यात्मिक विभूतियों का स्वामी बनना सम्भव हो सके । हमें इसका लाभ अवश्य उठाना चाहिये ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गायत्री का धियः तत्व ब्रह्म-विज्ञान

गायत्री विद्या का तत्वज्ञान मनुष्य की अन्तरंग स्थिति को सुसंस्कृत बनाने में समर्थ है । उसका साधना विज्ञान बहिरंग परिस्थितियों को समुन्नत बनाने की भूमिका प्रस्तुत कर सकता है । दोनों ही दृष्टियों से उसकी गरिमा एवं उपयोगिता को देखते हुए अध्यात्मवेत्ताओं ने उसे 'परम' सर्वोपरि-सर्वोत्कृष्ट ऐसा आधार बताया है जिसके सहारे सर्वतोमुखी प्रगति के पथ पर अग्रसर हो सकना सम्भव बनता है । यों अपने-अपने स्थान पर सभी तत्वज्ञान एवं उपासनात्मक विधि-विधान महत्त्वपूर्ण हैं, पर तुलनात्मक अध्ययन करने के उपरान्त जिन ब्रह्मवेत्ताओं ने वरिष्ठता के निष्कर्ष निकाले हैं, उन्होंने गायत्री को 'परम' कहा है और बताया है कि इसकी सार्थकता एवं समर्थता पर सन्देह करने की आवश्यकता नहीं है । शास्त्रकार कहते हैं -

एकाक्षरं परं ब्रह्म प्राणायामः परं तपः ।
सावित्र्यास्तु परं नास्ति पावनं परमं स्मृतम् ।।

-अग्नि पुराण

ॐकार एकाक्षर परं ब्रह्म है । प्राणायाम परम तप है । गायत्री से बढ़कर पवित्र करने वाला साधन और कोई इस संसार में नहीं है ।

यदक्षरैकसंसिद्ध : स्पर्धते ब्राह्मणोत्तमः ।
हरिशंकरकंजोत्थ सूर्यचन्द्रहुताशनैः ।।

-गायत्री तन्त्र

"जो सच्चा साधक गायत्री के एक अक्षर की भी सिद्धि कर लेता है, उसकी स्पर्धा हरि, शंकर, ब्रह्मा, सूर्य, चन्द्रमा और अग्नि से होने लगती है ।

ऐहिकायुष्मिकं सर्वं गायत्री जपतो भवेत् ।

-अग्नि पुराण

इह लोक और परलोक के समस्त इष्ट फलों की प्राप्ति गायत्री जप से होती है ।

गायत्र्येव तपोयोगः साधनं ध्यान मुच्यते ।
सिद्धानां सामता माता नातः किंचिद् वृहत्तरम् ।

गायत्री ही तप है । गायत्री ही योग है । गायत्री ही सबसे बड़ा ध्यान और साधन है । इससे बढ़कर सिद्धि दायक साधन और कोई नहीं है ।

परांसिद्धिमवाप्नोति गायत्री मुत्तमां पठेत् ।

- शक्ति समुच्चय

गायत्री का जप करने से पर सिद्धि प्राप्त होती है।

यतः साक्षात् सर्व देवतात्मनः सर्वात्म द्योतकः सर्वात्म प्रतिपादकोऽयं गायत्री मन्त्रः ।

-कौडन्य

यह गायत्री मन्त्र साक्षात् देव रूप, सर्व शक्तिमान, सबको प्रकाश देने वाला और सर्वात्म ज्ञान का प्रतिपादक है ।

गायत्री को ब्राह्मी शक्ति कहा गया है । यह ब्रह्माण्डीय चेतना का वह भाग है जो मानवी सत्ता को समुन्नत, समृद्ध एवं समर्थ बनाने की दृष्टि से अतीव महत्त्वपूर्ण है । गायत्री विद्या का उद्देश्य आत्मा और परमात्मा के बीच सम्भव हो सकने वाले आदान-प्रदानों के सन्दर्भ में अभीष्ट जानकारी प्रदान करना है । इसी प्रकार गायत्री उपासना का प्रयोजन यह है कि मानवी कलेवर के तीनों स्तर स्थूल, सूक्ष्म, और कारण शरीर - इस योग्य बन सकें कि उन पर दिव्य अवतरण सम्भव हो सके और स्थिर रह सके । तथ्य को ध्यान में रखते हुए गायत्री को ब्राह्मी कहा गया है । उसे ब्रह्म तत्व माना गया है । ब्रह्म और गायत्री की एकता के अनेकों प्रतिपादन शास्त्रों में मिलते हैं-

ब्रह्म हि गायत्री । *-ताण्ड्य ११ । ११ । ९*
ब्रह्म उ गायत्री । *- जै, उ० १ । १ । ८*
ब्रह्म वै गायत्री । *-ऐत ४ । ११ कौ० ३ । ५*
ब्रह्म गायत्री । *-शत० १ । ३ । ५८*

अर्थात् निश्चित रूप से गायत्री ब्रह्म ही है ।

देवी दात्री च भोक्त्री च देवी सर्वमिदं जगत् ।
देवी जयति सर्वत्र यो देवी साऽहमेवच ।
सर्वात्मना हि सा देवी सर्वभूतेषु संस्थिता ।
गायत्री मोक्ष हेतुर्वै मोक्ष स्थानम लक्षणम् ।

-ऋषिशृंग

दिव्य, देने वाली, भोक्ता सम्पूर्ण विश्व में व्याप्त जिसकी सर्वत्र जय ही जय है, ऐसी गायत्री परब्रह्म है । वही मोक्ष का आधार है, वही मोक्ष का स्थान है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जीव और ब्रह्म के बीच आदान-प्रदान की शृंखला रहने के कारण इस दिव्य-चेतना को 'ब्रह्म विद्या' कहते हैं । उसके माध्यम से मनुष्य के अन्त: करण में ऐसे उच्चस्तरीय आस्था प्रवाह का संचार होता है जिसे ब्रह्म ज्ञान, तत्व ज्ञान आदि नाम दिये जाते हैं । व्यक्ति में गायत्री शक्ति के समावेश होने का परिचय इस सद्ज्ञान की अभिवृद्धि से ही मिलता है ।

सर्वे देवा देवी मुपतस्तु: कासित्वं महादेवि ।
साब्रवीदहं ब्रह्मरूपिणी ।।

-देवी उपनिषद

सब देवताओं ने महादेवि के सम्मुख जाकर पूछा- आप कौन हैं ? तो उन्होंने उत्तर दिया, मैं ब्रह्मरूपिणी हूँ ।

स ब्रह्म विद्यां सर्व विद्या प्रतिष्ठितम् ।

-मुण्डक

सम्पूर्ण विद्याओं में ब्रह्म विद्या ही श्रेष्ठ है ।

पौराणिक गाथाओं के अनुसार ब्रह्माजी ने गायत्री के चार चरणों की व्याख्या चार मुखों से, चार वेदों के रूप में की है । गायत्री का प्राकट्य आकाशवाणी के, ब्रह्म निर्देश के, अन्त:प्रेरणा के रूप में हुआ माना जाता है । जीवन की हर समस्या का समाधान और प्रगति के हर क्षेत्र का मार्गदर्शन हम इस महामन्त्र में सन्निहित संकेतों के आधार पर प्राप्त कर सकते हैं । भारतीय तत्वज्ञान को और भी अधिक सुबोध रीति से कथा प्रमाणों के आधार पर प्रस्तुत करने के लिये अन्यान्य धर्म ग्रन्थों की रचना हुई है । यह विशाल वाङ्मय फलत: वेदों का ही सुबोध भाष्य है । वेद ज्ञान की जन्मदात्री होने के कारण गायत्री को सर्वत्र 'वेद मातरम्' के नाम से सम्बोधन किया जाता रहा है ।

वेदानां मातरं सावित्रा सम्पदमुपनिषद मुपास्ते ।

-गो० ब्रा० १ ।१ ।३२

सावित्री वेदों की माता है । उस दिव्य विभूति की उपासना की जाती है ।

सर्व वेद सारभूता गायत्र्यास्तु समर्थना । ब्रह्मादयोपि संध्या यां तां ध्यायन्ति जंपन्ति

-देवी भागवत १६ ।१६ ।१५

गायत्री उपासना वेदों का सारभूत तत्व है । ब्रह्मा, विष्णु,महेश आदि सभी देव संध्या सहित गायत्री की आराधना करते हैं ।

विद्यात्वमेव ननु बुद्धिमतां नराणांशक्तिस्त्वमेव किल शक्ति मतां सदैव । त्वं कीर्ति कान्ति कमलामल तुष्टि रूपा मुक्ति प्रदा विरति रेव मुनष्य लोके । गायत्र्यसि प्रथम वेदकला त्वमेव स्वाहा स्वाधा भगवती सगुणार्थमात्रा । आम्नाय एव विहितो निगमो भवत्या संजीवनाय सततं सुरपूर्व जान्तम् ।

हे गायत्री, आप ही बुद्धिमानों में प्रज्ञा, शक्तिवानों में शक्ति बनकर निवास करती हैं । आप ही कीर्ति, कान्ति, तुष्टि एवं मुक्ति दायिनी हैं । आप ही वेदों का सार हैं । यज्ञ कर्मों में स्वाहा स्वधा हैं । आपका ही विस्तार आगम और निगम में हुआ है । आप ही देव पूजित संजीवनी हैं ।

गायत्री सद्ज्ञान की गंगोत्री है । उसे अपनाने से अन्त:करण में सद्ज्ञान का, ब्रह्म विद्या का, अवतरण होता है । ऐसा ब्रह्म चेता मनुष्य ब्राह्मण कहलाता है । ब्राह्मण अपने ब्रह्मतेज से स्व पर कल्याण कर सकने में समर्थ होता है । उसकी ब्रह्म तेजस्विता का स्तर ब्रह्म तुल्य हो जाता है ।

ब्रह्म ब्राह्मणे ब्रह्मविदि प्रतिष्ठितम् ।

"वह ब्रह्म ब्रह्मवेत्ता ब्राह्मण पर प्रतिष्ठित है ।"

यो ह वाएवं वित्स ब्रह्मवित् पुण्यांच कीर्ति लभते सुरभींश्च गन्धान् । सोऽपहत् पाप्मानन्तां श्रियमश्नुते य एवं वेद । यश्चैवं विद्वनेवमेतां वेदानांमातरं सावित्री सम्पदमुपनिषद मुपास्त इति ब्राह्मणम् ।

-गायत्री उपनिषद

"जो इस प्रकार जानता है, वह ब्रह्मवेत्ता ब्रह्मज्ञानी पुण्य-कीर्ति और सुरभि-गन्ध को प्राप्त करता है । उसके समस्त पाप दूर हो जाते हैं । वह अनन्त श्री-ऐश्वर्य वैभव का उपभोग करता है । जो इस प्रकार जानता है और जो इस प्रकार ज्ञान सम्पादन करके समस्त वेदों की माता सावित्री के इस उत्तम सम्पत् प्रद उपनिषद की उपासना करता है वही ब्राह्मण है ।

परब्रह्म स्वरूपा च निर्वाण पद दायिनी ।
ब्रह्म तेजोमयी शक्ति स्तधिष्ठातृ देवता ।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गायत्री परब्रह्म स्वरूप तथा निर्वाणपद देने वाली है । वह ब्रह्म तेज की अधिष्ठातृ देवी है ।

परब्रह्मम स्वरूपा च निर्गुण पद दायिनी ।
ब्रह्म तेजोमयी शक्ति स्तदधिष्ठातृ देवता ।।

-देवी भागवत ९ ।१ ।४२

वह ब्रह्म स्वरूप, निर्विकल्प पद देने वाली, ब्रह्म तेज मयी परम शक्ति तथा अधिष्ठातृ देवी गायत्री ही है ।

तस्मिस्तज्जने भेदाभावत् ।
ब्रह्म विद् ब्रह्मैव भवति।।

"इस प्रकार सब भेद जाता रहता है । ब्रह्म का जानने वाला ब्रह्म ही हो जाता है ।"

सावित्र्याश्चैव मंत्रार्थ ज्ञात्वा चेव ययार्थतः तस्यां ययुक्तं चोपास्यं ब्रह्म भूयाय कल्पते ।

-योगी याज्ञवल्क्य

गायत्री का गूढ़ मर्म और रहस्य जानकर जो उसकी उपयुक्त उपासना करता है वह ब्रह्म भूत ही हो जाता है ।

यश्चैवं विद्वानैव मेता वेदानां मातरं सावित्री सम्पद मुपनिषद मुपास्ते इति ।

-गोपथ

वेदमाता गायत्री की उपासना करने वाले विद्वान और श्रद्धावान होते हैं ।

ब्रह्मविद्या और ब्राह्मण दोनों अन्योन्याश्रित हैं । ब्रह्म विद्या का सही अवगाहन करने वाला सच्चा ब्राह्मण बन कर रहता है । इसी बात को यों भी कह सकते हैं कि ब्राह्मण को ही ब्रह्म विद्या प्राप्त होती है । यहाँ जाति वंश के आधार पर जाने वाले ब्राह्मण कुल की चर्चा नहीं है । ब्राह्मणत्व तो एक मनोभूमि है जिसमें आत्म-परिष्कार और लोक मंगल के तत्व कूट-कूट कर भरे होते हैं । ऐसे ही ब्रह्म परायणों की अवधारणा से ब्रह्म विद्या यशस्विनी होती है । दोनों एक-दूसरे के सहयोग से धन्य बनते हैं ।

उपनिषद में वर्णित ब्रह्म विद्या और ब्राह्मण के बीच यह एक अलंकारिक सम्वाद इस तथ्य को और भी अधिक स्पष्ट करता है । उस सम्वाद में बताया गया है कि ब्रह्म परायण, उदात्त दृष्टिकोण युक्त व्यक्ति ही ब्रह्मचर्चा करे तो उत्तम है । वाचालता एवं छद्म उद्देश्यों के लिए उसे प्रयुक्त करने से तो न करना ही उपयुक्त है ।

विद्या ब्राह्मण मेत्याह सेवधिस्तेऽसिप रक्षमाम् ।
असूयकाय मां मादास्तथा स्यां वीर्यवित्तम्त।।

विद्या ब्राह्मण के समीप में आकर कहती है कि मैं तेरी धरोहर हूँ, तुझे मेरी भली-भाँति रक्षा करनी चाहिए । मुझे किसी भी निन्दक पुरुष को मत देना । ऐसा तेरे करने पर मैं अधिक वीर्य-पराक्रम वाली हो जाऊँगी ।

विद्या ह वै ब्राह्मण मा जगाम गोपाय मां शेवधि स्ते ऽ हमस्मि । असूय माया नृजवेऽयताय न मां ब्रूया वीर्यवती तथा स्याम् ।।

ब्रह्म विद्या ब्राह्मण के समीप में आकर उससे कहती हैं कि मेरी रक्षा करो, मैं तुम्हारी निधि हूँ । जो असूया (निन्दा) करने वाला हो, कुटिल हो और संयम से शून्य हो ऐसे पुरुष को मुझे कभी मत देना, तभी मैं वीर्य वाली होऊँगी ।

ब्रह्म विद्या की उपहासास्पद स्थिति तब बनती है जब उसका अवगाहन करने वाले व्यक्तित्व की उत्कृष्टता को आवश्यक न मानकर कर्मकाण्डों और विधि-विधानों को ही सब कुछ मान लेते हैं । अग्नि बिना ईंधन ज्वलनशील कहाँ होता है । ज्योति के अभाव में तेल बत्ती युक्त दीपक भी कहाँ प्रकाश दे पाता है उसी प्रकार व्यक्तित्व को निकृष्टता के रहते, उपासनात्मक कर्मकाण्ड भी कब सफल होते हैं । ब्राह्मण की दुर्दशा का, असफलता का एकमात्र कारण उसकी उत्कृष्टता का स्तर गया-गुजरा होना ही है, साधना विधानों में अन्तर रहने की बात इस सन्दर्भ में कोई बड़ा व्यवधान प्रस्तुत नहीं करती । कहा भी है-

अनध्यापन शीलं च सदाचार विलंघनम् ।
सालसं चे दुन्नादें ब्राह्मणं बाधते यमः ।।

स्वाध्याय न करने से, आलस्य से और कुधान्य खाने से ब्राह्मण का पतन हो जाता है ।

अनभ्यासेन वेदनामा चारस्य च वर्जनात ।
आलस्यात् अन्न दोषाच्च मृत्युर्वि प्रान् जिथा सति ।।

-मनु० ५ ।४

वेदों का अभ्यास न करने से, आचार छोड़ देने से, आलस्य से, कुधान्य खाने से ब्राह्मण की मृत्यु हो जाती है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जिह्वादग्धा परान्नेव करौ दग्धौ प्रति ग्रहात् ।
मनोदग्धं परस्त्री भि: कथं सिद्धि र्वरानने ।
वादार्थं पठयते विद्या, परार्थं क्रियते जप: ।
ख्यात्यर्थं दीपते दानं कथं सिद्धि र्वरानने ।

पराया अन्न खाने से जिह्वा की शक्ति नष्ट हो गई । दान-दक्षिणा लेते रहने से हाथों की शक्ति चली गई, पर नारी की ओर मन डुलाने से मन नष्ट हो गया, फिर हे पार्वती इन ब्राह्मणों को सिद्धि कैसे प्राप्त हो ?

ब्रह्म विद्या परायण-गायत्री उपासक इस दिव्य साधना का आश्रय लेकर सब प्रकार धन्य बनता है इसे कल्प-वृक्ष, कामधेनु, अमृत, पारस आदि नामों से सम्बोधन किया गया है । परा विद्या यही है । कूर्म पुराण में उसका गुणानुवाद गाते हुए कहा गया है-

वाग्देवी वरदा वाच्या कीर्ति: सर्वार्थसाधिका ।
योगीश्वरी ब्रह्मविद्या महाविद्या सुशोभना ।।
गुह्यविद्याऽऽत्मविद्या च धर्म्मविद्यात्मभाविता ।
स्वाहा विश्वम्भरा सिद्धि: स्वधा मेधा धृति श्रुति ।।

-कूर्म पुराण

वाक् देवी, वरदात्री, सर्व अर्थों का साधन करने वाली गायत्री है । उसी को योगेश्वरी, ब्रह्म विद्या, महाविद्या, गुह्य विद्या, अध्यात्म विद्या, धर्म विद्या कहते हैं । वही स्वाहा, स्वधा, मेधा, धृति, श्रुति आदि है ।

एवं विच्छान्तोदान्त उपरतस्तितिक्षु: समाहितो भूत्वाऽत्मनोवात्मानं पश्यति । सर्व्वमात्मानं पश्यति नैनं पाप्मातरति सर्व्वं पाप्मानं तरति नैनं पाप्मा तपति
सर्व्वं पाप्मान तपति विपापो विरजोऽविचिकित्सो ब्राह्मणो भवति ।।

-बृहदा ४ अ ४ । २३

अर्थ- इस प्रकार से जानने वाला शान्त, उपरत, तितिक्षु, (और) समाहित होकर आत्मा में ही परमात्मा को देखता है, सब जीवों का जो अन्तरात्मा उसे देखता है । ऐसे ब्रह्म परायण को पाप दबा नहीं सकता । वह समस्त पापों का उल्लंघन कर जाता है । उसे पाप तपाता नहीं । वह उलटा पापों को ही तपाता है । पाप रहित-वासना रहित-व्यक्ति निस्सन्देह ब्राह्मण ही होता है ।

'धीमहि' की प्रेरणा और 'प्रचोदयात्' की परिणति

गायत्री महामन्त्र को सद्ज्ञान का उद्गम स्रोत माना जाता है । उसके मध्य बिन्दु 'धिय:' को 'धीमहि' में परिणत करने का निर्देश है । 'धी' अर्थात् दूरदर्शी, न्यायनिष्ठ 'विवेकशीलता' । इसी तत्व ज्ञान को श्रुति-स्मृति से लेकर आचार-शास्त्र और कथा पुराणों में अनेक शैली अपनाते हुए विभिन्न मन स्थितियों के अनुरूप प्रतिपादित किया गया है ।

यह अति महत्त्वपूर्ण है कि मनुष्य दूरदर्शी विवेकशीलता अपनाकर अपना दृष्टिकोण परिष्कृत करे और श्रेयस्कर नीतिमार्ग अपनाकर जीवन लक्ष्य तक पहुँचने में सफलता प्राप्त करे ।

यह एक पक्ष हुआ । दूसरा पक्ष है कि सद्ज्ञान का कार्यान्वयन । गायत्री महामन्त्र में जहाँ सद्ज्ञान की महत्ता प्रतिपादित की गई है, वहाँ इस बात पर भी जोर दिया गया है कि जो मस्तिष्क द्वारा समझा गया है, उसे निष्ठापूर्वक हृदयंगम किया जाय । इतना ही नहीं उसे व्यवहार में परिणत भी किया जाय । 'प्रचोदयात्' शब्द में, प्रवृत्त होने, कर्म पथ पर चल पड़ने का प्रतिपादन है । ज्ञान और कर्म की समन्वित प्रक्रिया ही सफलता में परिणत होती है और श्रेयस्कर परिणाम उत्पन्न करती है ।

चिन्तन और क्रिया को ही अध्यात्म की भाषा में ज्ञान और कर्म कहा जाता है । 'ज्ञानयोग' और 'कर्मयोग' ही प्रधानतया दो साधक हैं जिनकी सहायता से हमें आत्मा का, परमात्मा का साक्षात्कार करने, अनुभव करने का अवसर प्राप्त होता है, लेकिन इन दोनों को भी अलग-अलग नहीं किया जा सकता । जिस प्रकार बिना 'चिन्तन और क्रिया' के संयोग के भौतिक कार्य सफल नहीं हो पाते, उसी प्रकार बिना सद्ज्ञान और सत्कर्म के मिले हुए यह आत्मिक उद्देश्य भी सफल नहीं हो सकता ।

ज्ञान और कर्म का अलग होना लँगड़े और अन्धे का अलग-अलग रहकर लक्ष्य तक पहुँचने का असफल प्रयास कहा जायेगा । लँगड़ा अकेले लक्ष्य तक किस प्रकार चल सकेगा, क्योंकि चलने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

के साधन पैर उसके पास नहीं हैं । अन्धा भी अपने लक्ष्य को आँख के अभाव में मार्ग न देख पाने से कैसे प्राप्त कर सकने में सफल हो सकेगा । लेकिन यदि दोनों का मिलन हो जाय, अन्धे और लँगड़े का गठबन्धन बन जाय तो दोनों ही सहयोगपूर्वक अपने लक्ष्य को बड़ी सरलता और प्रसन्नतापूर्वक प्राप्त कर सकते हैं । लँगड़ा अपनी आँख से रास्ता बताता चले और अन्धा संकेतानुसार अपने पैरों से चलता चले तो लक्ष्य की सिद्धि में असुविधा रहते हुए भी सफलता मिल जायेगी ।

ज्ञान की महत्ता निःसन्देह अधिक है । किसी भी भ्रान्ति को जो कि व्यक्ति के कार्य में अवरोधक बन रही हो, ज्ञान द्वारा ही दूर किया जा सकता है । सच्चा साधक अपने इष्ट से 'ज्ञान' ही माँगता है । 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' के श्रुति वचन में 'अज्ञानान्धकार' से प्रकाश की ओर ही ले चलने का संकेत है । गायत्री-मन्त्र की उपासना सद्विवेक ज्ञान की प्राप्ति के लिए ही की जाती है । 'धियो यो नः प्रचोदयात्' मन्त्र भाग सद्बुद्धि की ही याचना करता है ।

गीता में भगवान् कृष्ण ने ज्ञान की महत्ता का प्रतिपादन किया है । जब अर्जुन के मार्ग को अज्ञानान्धकार ने आच्छन्न कर लिया, तब भगवान ने ज्ञान सूर्य उदित करके, उसे पुनः अपने कर्म पथ पर अग्रसर किया । बोध प्रदान करते हुए भगवान् कृष्ण ने कहा-

'सर्वकर्माखिलं पार्थं ज्ञानं परिसमाप्यते ।'

'सम्पूर्ण कर्म, ज्ञान में ही समाप्त होते हैं या सम्पूर्ण ज्ञान द्वारा ही सम्पन्न होते हैं, एक उदाहरण के माध्यम से आगे समझाते हुए वे कहते हैं-

यथैधांसि समिद्धोऽग्निर्भस्मसात् कुरुतेऽर्जुन ।
ज्ञानाग्नि सर्व कर्माणि भस्मसात् कुरुते तथा ।।

-गीता ४ । ३७

जिस प्रकार प्रज्वलित अग्नि ईंधन को भस्म कर देती है, उसी प्रकार ज्ञान सम्पूर्ण कर्मों को, उसके कुपरिणामों को भस्म कर देता है ।

अपि चेदसि पापभ्यः सर्वेभ्यः पापकृतमः ।
सर्व ज्ञानं प्लवे नैव वृजितं सन्तरिष्यसि ।। ४ । ३६ ।।

हे अर्जुन ? यदि तुम सब पापियों से भी अधिक पापयुक्त हो, तो भी ज्ञान रूपीनौका द्वारा सब पापों से तर जाओगे - मुक्त हो जाओगे ।

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते ।
तत्स्वयं याग ससिद्धः कालेनात्मनि विन्दति ४ । ३८

'इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसन्देह कुछ भी नहीं है, और वह ज्ञान सभी की आत्मा में बहुत दिनों से विद्यमान है ।

उस ज्ञान की प्राप्ति हो जाने पर आत्मा को परम शान्ति की उपलब्धि हो जाती है-

'ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति ।'

'ज्ञान को प्राप्त कर व्यक्ति ईश्वर प्राप्ति रूप परम शान्ति का अनुभव करता है । इस प्रकार ज्ञान द्वारा आत्मज्ञान- परमात्मा ज्ञान जैसे लक्ष्य सहज ही प्राप्त किये जा सकते हैं ।

जहाँ ज्ञान की इतनी महत्ता है वहीं कर्म की महत्ता भी कम नहीं । सतत कर्म करके ही मनुष्य अपने लक्ष्य को पाने में सफल होता है । उपनिषद्कार ने कर्म द्वारा ही मुक्ति पाने का मार्ग सुझाया है, उनकी दृष्टि में भवबन्धन से छुटकारा पाने का अन्य कोई मार्ग ही नहीं है-

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छत ꣳ समाः ।
एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे ।।

-ईशावास्योपनिषद्

इस संसार में शास्त्र विहित कर्मों को करते हुए ही सौ वर्षों तक जीवित रहने की इच्छा करनी चाहिए इस प्रकार किये जाने वाले कार्य से मनुष्य भवबन्धन में बँधता नहीं, इसके अतिरिक्त भवबन्धन से छुटकारा पाने का अन्य कोई उपाय नहीं है ।

भगवान द्वारा दिये हुए ज्ञान को सच्चे मन से हृदयंगम करने का प्रमाण अर्जुन ने इसी रूप में दिया कि वह तदनुसार आचरण करेगा । ज्ञान की सार्थकता उसे कार्यान्वित करने में ही है । अन्यथा मस्तिष्क पर लदा हुआ एक अतिरिक्त भार ही उसे माना जायेगा । अर्जुन ने ज्ञान को स्वीकार ही नहीं

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वरन् उसे कर्म में उतारा । गीता ज्ञान को शिरोधार्य करते हुए उसने कहा -

'करिष्ये वचन तव'

अर्थात् आपका निर्देश कार्यान्वित करूँगा ।

स्वाध्याय, सत्संग, मनन-चिन्तन आदि उपायों का अवलम्बन करके ज्ञान की उपलब्धि होती है । इस बीजारोपण का सिंचन उसे कार्यरूप में परिणत करने से ही हो सकता है । मात्र श्रवण पठन से अभीष्ट लक्ष्य तक पहुँच सकना सम्भव नहीं हो सकता । शास्त्र कहता है-

केवलात् कर्मणो ज्ञानान्नहि मोक्षीऽभिजायते ।
किन्तु ताभ्यां भवेन्मोक्षः साधनं तू भयं विदुः ।।

केवल कर्म अथवा ज्ञान से ही मोक्ष की प्राप्ति नहीं होती है, दोनों के योग से ही होती है, इसलिए दोनों को ही मोक्ष प्राप्ति का साधन जानना चाहिए ।

उभाभ्यामेव पक्षाभ्यां यथात्वे पक्षिणां गतिः ।
तथैव ज्ञानकर्माभ्यां जायते परमं पदम ।।

जिस प्रकार पक्षी आकाश में दोनों पंखों के द्वारा उड़ता है, उसी प्रकार मनुष्य ज्ञान और कर्म - इन दोनों के माध्यम से परमपद (मोक्ष) को प्राप्त कर लेता है ।

अध्यात्म चर्चा इन दिनों पठन श्रवण तक सीमित होती जा रही है । बहुत हुआ तो चिन्तन-मनन तक उसे अग्रसर करके यह मान लिया जाता है कि लक्ष्य की प्राप्ति के लिए इतना ही कृत्य पर्याप्त है । इस भ्रान्ति का निराकरण होना चाहिए और यह अनुभव किया जाना चाहिए कि सद्ज्ञान की सार्थकता सत्कर्म में प्रवृत्त होने पर ही सिद्ध होती है । ज्ञान से मार्ग दर्शन होता है और कर्म पथ पर पुरुषार्थ के चरण बढ़ाते हुए लक्ष्य तक पहुँचना सम्भव होता है ।

गायत्री-महामन्त्र में 'धियः' को 'धीमहि' तक पहुँचाने की प्रज्ञा को निष्ठा में बदलने की प्रेरणा है । साथ ही 'प्रचोदयात्' पर समापन करते हुए कहा गया है कि सद्ज्ञान द्वारा निरूपित सत्कर्म को अपनाने के लिए साधक को निष्ठापूर्वक कर्म पथ पर प्रवृत्त ही होना चाहिए । श्रेय-साधना की सफलता का यही उपाय है ।

ब्रह्म विद्या और आत्मबल बढ़ा सकने वाली शक्ति महाप्रज्ञा

गायत्री उपासना के दो पक्ष हैं-एक ज्ञान पक्ष और दूसरा विज्ञान पक्ष । इन्हें ब्रह्मविद्या और ब्रह्मशक्ति भी कह सकते हैं । आत्मिक प्रगति के लिए इन दोनों पक्षों पर समान रूप से ध्यान देना पड़ता है । सामान्य जीवनक्रम में भी शक्ति और ज्ञान का समन्वय हुए बिना अभीष्ट दिशा में कोई प्रगति नहीं होती । केवल ज्ञान हो और शक्ति न हो तो भी अभीष्ट दिशा में कदम नहीं बढ़ाये जा सकते और केवल साधन शक्ति हो किन्तु उनके उपयोग की कला न आती हो तो भी कोई परिणाम प्राप्त नहीं किये जा सकते ।

आत्मिक जीवन में भी यही नियम लागू होता है । आत्मा को परमात्मा से जोड़ने के लिए, जीव और ब्रह्म के मिलन के लिए जिस विद्या की जानकारी आवश्यक है उसे ब्रह्मविद्या कहते हैं तथा अन्तःकरण की शुद्धि, चेतना के परिष्कार के लिए जो क्रिया कृत्य किये जाते हैं, उन्हें तप कहते हैं । दोनों का समवेत प्रयोजन ब्रह्म ज्ञान और आत्मबल अर्जित करना है । इन दोनों का अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है । इनकी आवश्यकता बतातै हुए कहा गया है-

यत्र ब्रह्म च क्षत्रं च सम्यंचौ चरता सह ।
तं लोकं पुण्यं प्रज्ञेष यत्र देवाः सहाग्निना ।।

-यजुर्वेद २० । २५

"जहाँ ब्रह्म शक्ति और क्षत्र-शक्ति साथ-साथ रहती हैं, वही लोक पुण्यशाली होता है ।" इस मन्त्र में आये हुए 'ब्रह्म' और 'क्षत्र' पद क्रमशः ज्ञान और कर्म के वाचक हैं । ये दोनों शक्तियाँ जहाँ होंगी वहीं प्रगति के आधार बनेंगे ।

ब्रह्मणि खलु वै क्षत्रं प्रतिष्ठितम् क्षत्रे ब्रह्म ।

-अथर्व० ८ । १२

ब्रह्म में क्षत्र की स्थिति होती है और क्षत्र में ब्रह्म की ।

ब्रह्म च क्षत्रं च संश्रयते

-अथर्व० ३ । ११

ब्रह्म और क्षत्र परस्पराश्रित होते हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

द्रोणाचार्य के शास्त्र और शस्त्र धारण की आवश्यकता ब्रह्म और क्षत्र-ज्ञान और कर्म दोनों की समान उपयोगिता के रूप में इस प्रकार बतायी जाती गयी है -

अग्रतः चतुरा वेदा पृष्ठतः शसर धनु ।
इदं ब्राह्मं इदं क्षात्रं शास्त्रादपि शरादपि ।।

-महाभारत

हम वेदों को आगे रखकर लोगों को समझाने सन्मार्ग पर लाने का प्रयत्न करते हैं । साथ ही पीठ पर धनुष बाण भी रखते हैं । यह धर्म शिक्षा 'ब्राह्म' है और यह शस्त्र धारण 'क्षात्र' है । दोनों शक्तियों के समन्वय से ही समस्याएँ सुलझती हैं ।

नाब्रह्म क्षत्रमृध्नोति नाक्षत्रं ब्रह्म वर्धते ।
ब्रह्म क्षत्रं च संपृक्तमिह चामुत्र वर्धते ।।

ब्रह्म-शक्ति के बिना क्षत्र-शक्ति नहीं बढ़ती और क्षत्र-शक्ति के बिना ब्रह्म-शक्ति नहीं बढ़ती । परस्पर मिली हुई ब्रह्म-शक्ति और क्षत्र-शक्ति ही इस लोक और परलोक में वृद्धि को प्राप्त होती हैं ।

ब्रह्म-शक्ति और क्षत्र-शक्ति से तात्पर्य ज्ञान और कर्म से है, ब्रह्मविद्या और आत्मबल से है । गायत्री के ज्ञानपक्ष को उद्घाटित करते हुए शास्त्रों में कहा गया है

सर्ववेदोद्धृतः सारो मन्त्रोऽयं समुदाहृत :।
ब्रह्मादेवादि गायत्री परमात्माः समीरितः ।।

"यह गायत्री मन्त्र समस्त वेदों का सार कहा गया है । गायत्री ही ब्रह्मा आदि देवता है । गायत्री ही परमात्मा कही गई है ।"

-गायत्री तन्त्र

सर्वशास्त्रमयी गीता गायत्री सैव निश्चिता ।
गयातीर्थं च गोलोकं गायत्री रूपमद्भुतम् ।।

'गीता में सब शास्त्र भरे हुए हैं । वह गीता निश्चय ही गायत्री रूप है । गया तीर्थ और गोलोक यह भी गायत्री के ही रूप हैं ।"

इस स्थिति को प्राप्त करने के साथ ही साधक में वह तेजस् धारण करने की पात्रता भी विकसित होती है जिसे आत्मबल, ब्रह्मवर्चस् आदि नामों से पुकारा जाता है । शास्त्रों में इस तत्व की चर्चा ब्रह्माग्नि के नाम से स्थान-स्थान पर हुई है ।

द्वयं वा इदं न तृतीयमस्ति । आर्द्रंचैव शुष्कं च यदार्द्र तत सौम्यं यच्छुष्कं तदाग्नेयम् ।

-शतपथ

यह संसार दो पदार्थों से मिलकर बना है - (१) अग्नि, (२) सोम । इनके अतिरिक्त तीसरा कुछ नहीं है ।

अग्नि र्वा अहः सोमारात्रिरथ यदन्तरेण तद् विष्णु ।

-श० प० ३ ।४ ।४ ।१५

अग्नि और सोम के मिलन को विष्णु कहते हैं ।

इमौ ते पक्षावजरौ पतत्रिणो याभ्यां रक्षांस्यपहस्यग्ने ।
ताभ्यां पतेम सुकृतामु लोकं यत्र ऋषयो जग्मुः प्रथमजाः पुराणाः ।

-यजु० १८ ।५२

हे अग्नि ! तेरे दोनों पंख फड़फड़ाते हैं । उनसे पाप और तम का हनन होता है । इन्हीं पंखों के सहारे हम उस पुण्य-लोक तक पहुँचते हैं जहाँ पूर्ववर्ती ऋषि पहुँचे थे ।

अग्नेऽभ्यावर्तिन्नभि मा निवर्तस्वायुषा वर्चसा प्रजया धनेन सन्या मेधया रय्या पोषेण ।

-यजु० १२ ।७

अर्थात् हे अग्नि तू आयु, वर्चस्, प्रजा, धन, दान, मेधा, रयि और पुष्ट बनकर अपना अनुग्रह हमें प्रदान करे ।

गायत्री के २४ अक्षरों में सन्निहित २४ शक्तियों की व्याख्या करते हुए शास्त्र कहता है

आजश्शक्ति बन प्रभाव सुषमां तेजस्सु वीर्यप्रभा ।
ज्ञानैश्वर्य महस्सहो जय यशस्स्थैर्य प्रतिष्ठाश्रियः ।।
विज्ञान प्रतिभा मतिस्मृ तिधृति प्रज्ञाप्रथस्सु ज्वला ।
वर्णास्त्वन्मानुगै स्त्रिरषभि रहो बर्ध्यन्त एवात्रमे ।।

(१) ओज (२) शक्ति (३) बल (४) महिमा (५) कान्ति (६) तेज (७) पराक्रम (८) प्रकाश (९) ज्ञान (१०) ऐश्वर्य (११) विकास (१२) सहनशक्ति (१३) जय (१४) कीर्ति (१५) स्थिरता (१६) प्रतिष्ठा (१७) लक्ष्मी (१८) विज्ञान (१९) प्रतिभा (२०) मति (२१) स्मृति (२२) धृति (२३) प्रज्ञा (२४) ख्याति- यह चौबीस गुण हें माता ! तुम्हारे मन्त्र में रहने वाले चौबीसों वर्णों द्वारा मुझमें अभिवृद्धि पा रहे हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इस सावित्री शक्ति की गरिमा को भगवान् मनु सशक्तता के क्षेत्र में सर्वोपरि मानते हैं ।

सावित्र्यास्तु परान्नास्ति ।

-मनु० २ ।८ ३

सावित्री से बढ़कर श्रेष्ठ और कुछ नहीं है ।

कहा जा चुका है कि ज्ञान को ब्रह्म और विज्ञान को क्षत्र माना गया है । भारतीय धर्म में दोनों का समान महत्त्व है और गायत्री भारतीय संस्कृति की जननी है तो उसमें यह दोनों पक्ष की आवश्यकता पूरी करती है । अतः आत्मिक प्रगति की समग्र आवश्यकता गायत्री साधना से पूरी हो जाती है ।

गायत्री ही समस्त शक्तियों का स्रोत

कोई भी व्यक्ति जितना कुछ वैभव, उल्लास और साधन सम्पत्ति अर्जित करता है, वह उपार्जन एक ही मूल्य पर होता है । वह मूल्य है- शक्ति । जिसमें जितनी क्षमता है, जितनी शक्ति है वह उतना ही वैभव और उल्लास अर्जित कर लेता है । इन्द्रियों में शक्ति हो तो विभिन्न भोगों को भोगा जा सकता है और इन्द्रियाँ यदि अशक्त हो जायें, उनमें कोई सामर्थ्य न रहे तो आकर्षक से आकर्षक भोग भी उपेक्षणीय लगते हैं । उनकी ओर देखने का भी जी नहीं करता । नाड़ी संस्थान की क्षमता यदि क्षीण हो जाय तो शरीर का सामान्य क्रिया-कलाप भी ठीक प्रकार से नहीं चल पाता । मानसिक शक्ति यदि घट जाय तो मनुष्य की गणना विक्षिप्त व्यक्तियों में होने लगती है और विक्षिप्तों जैसी नहीं भी हो तो वह ऐसी हरकतें करने लगता है कि उसकी स्थिति उपहासास्पद बन जाती है । धन की शक्ति में यदि कोई व्यक्ति, शून्य हो तो वह दीन-हीन बना रहता है । अभावग्रस्तता से उसकी स्थिति दयनीयों जैसी बनी रहती है और वह जीवन की सामान्य आवश्यकतायें भी भली प्रकार पूरी नहीं कर पाता । मित्रता को भी शक्ति कहा जा सकता है, जिसका स्वरूप सामाजिक होता है । यदि मित्र शक्ति न रहे तो व्यक्ति अपने आप को एकाकी अनुभव करने लगता है और जीवन निरर्थक-निरीह लगने लगता है ।

इन सभी शक्तियों में प्रधान है- आत्मबल । आत्मबल आध्यात्मिक पक्ष से सम्बन्धित होने के कारण अन्य सभी शक्तियों से उच्च स्तर का समझा जाता है । यदि यह शक्ति पास में न रहे तो मनुष्य प्रगति के पथ पर एक कदम भी आगे नहीं बढ़ सकता । जीवनोद्देश्य की पूर्ति आत्मबल से रहित व्यक्ति के लिए प्रायः असम्भव ही रहती है । कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि क्या आध्यात्मिक और क्या भौतिक सभी क्षेत्रों में अभीष्ट सफलता प्राप्त करने के लिए शक्ति का सम्पादन नितान्त आवश्यक है । शक्ति सम्पादन के सम्बन्ध में यह तथ्य ध्यान में रखना चाहिए कि इनका स्वरूप चाहे जो हो, स्रोत एक ही है । आभूषण चाहें कान के बनें, चाहे गले के, उन्हें बनाने के लिए सोने का ही उपयोग किया जाता है । पृथ्वी पर व्याप्त समस्त ऊष्माओं का केन्द्र सूर्य ही है, चाहे वह शरीर की गर्मी हो या आग की । भारतीय मनीषियों ने इसी प्रकार समस्त शक्तियों का स्रोत साधन एक ही माना है और उसे गायत्री नाम दिया है । भौतिक जगत में पंचभूतों को प्रभावित करने वाली जितनी भी शक्तियाँ हैं और आध्यात्मिक जगत में जितनी भी विचारात्मक, भावनात्मक, तथा संकल्पात्मक शक्तियाँ हैं, उन सब का मूल उद्गम एवं अजस्र भण्डार एक ही है, जिसे गायत्री नाम से सम्बोधित किया गया है । इस भण्डार में शक्ति सागर में जितना भी गहरे उतरा जाय उतना ही बहुमूल्य रत्न राशि उपलब्ध होने की सम्भावना बढ़ती चली जाती है ।

मनीषियों ने परब्रह्म परमात्मा की चेतना, प्रेरणा सक्रियता एवं समर्थता को गायत्री कहा है तथा इसे विश्व की सर्वोपरि शक्ति बताया है । विभिन्न देवशक्तियाँ जो अन्यान्य छुट-पुट प्रयोजनों के लिए प्रयुक्त होती हैं और विभिन्न देवनामों से पुकारी जाती हैं इसी शक्ति के ज्योति स्फुलिंग हैं । वे समस्त शक्तियाँ उस परमशक्ति की ही किरणें हैं । उत्पादन, विकास एवं संहार में संलग्न ब्राह्मी, वैष्णवी और शांभवी शक्तियों के प्रतीक प्रतिनिधि, ब्रह्मा, विष्णु, महेश, परमब्रह्म की इसी सर्वोपरि

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

शक्ति से अपना काम चलाते हैं और अभीष्ट कार्य सम्पादन के लिए आवश्यक शक्तियाँ प्राप्त करते हैं । पंचतत्वों की चेतना को आदित्य, वरुण, मरुत, द्यौ, और अन्तरिक्ष कह कर पुकारते हैं । उनकी शक्ति का स्रोत भी परब्रह्म की वही चेतना है, जिसे गायत्री कहा गया है । इन्द्र, वृहस्पति, अर्यमा, पूषा, तृष्टा गणेश, अश्विनी, वसु, विश्वर्देवा आदि सृष्टि के विभिन्न प्रयोजनों में संलग्न शक्तियाँ उसी परब्रह्म चेतना का अंश हैं । चूँकि ये शक्ति और दिव्य हैं इसलिए इन्हें देवता कहा जाता है और इनकी श्रद्धापूर्वक पूजा-अर्चना की जाती है । पर वस्तुतः इनका कोई भिन्न स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं । यह सभी दिव्य दिखाई पड़ने वाली शक्तियाँ उसी परमशक्ति का अंश हैं, जिसे गायत्री कहा गया । जलते हुए अग्नि कुंड से जिस प्रकार चिनगारियाँ उछलती हैं, उसी प्रकार विश्व की महान् शक्ति सरिता 'गायत्री' की लहरें उन देव शक्तियों के रूप में देखी जा सकती हैं ।

यही कारण है कि आत्मिक उत्कर्ष के लिए प्रायः सभी साधकों ने इसी परमशक्ति का आश्रय लिया । कुछ लोगों ने नाम-भेद भले ही अपनाया हो, पर मूलतः उपासना उसी परमशक्ति की की है । नाम भेद भी थोड़े ही लोगों ने अपनाया, अन्यथा अधिकांश ने तो इस शक्ति की गायत्री रूप में ही उपासना की है । प्राचीन संस्कृति साहित्य का अवलोकन अवगाहन करने से इसी निष्कर्ष पर पहुँचना पड़ता है कि अपने चरित्र को उज्ज्वल तथा विचारों को उत्कृष्ट रखने के अतिरिक्त हमारे महान् पूर्वजों ने उपासनात्मक सम्बल के रूप में गायत्री महामन्त्र को ही अपनाया था और इस आधार पर आत्मिक प्रगति करते हुए देव पुरुषों में गिने जाने योग्य स्थिति को प्राप्त हुए थे । देवताओं, अवतारों, गृहस्थियों, महिलाओं, साधु, सिद्धपुरुषों और ब्राह्मणों की ही नहीं, सर्वसाधारण की भी आराध्य -उपास्य गायत्री रही है और इसके अवम्बन के द्वारा उन्होंने न केवल आत्म कल्याण का प्रसाधन किया है वरन् भौतिक सुख सम्पदाओं की सांसारिक आवश्यकताओं को भी आवश्यक मात्रा में उपलब्ध किया है । इस तरह के कितने ही प्रमाण शास्त्रों में देखने को मिलते हैं । ब्रह्मवैवर्त पुराण के २३ वें अध्याय में 'सावित्र्युपख्यान' में से गायत्री महिमा पर एक सुन्दर कथानक का वर्णन किया है , जिसमें कठोर तप कर रहे राजा अश्वपति को लोक गायत्री पुरश्चरण करने से उन्हें पुत्र और कन्या की प्राप्ति हुई । स्कन्द पुराण के काशीखण्ड में उल्लेख मिलता है- महर्षि विश्वामित्र गायत्री उपासना के प्रताप से ब्रह्मर्षि बन सके थे और इसी उपासना का अवलम्बन लेकर वे अन्यान्य लोकों की सृष्टि करने की सामर्थ्य प्राप्त कर सके थे ।

गायत्री महिमा के सम्बन्ध में शास्त्र पुराणों में अनेक वर्णन आये हैं । नारायणोपनिषद में कहा गया है कि देव, गन्धर्व, मनुष्य, पितर, असुर इन सब का मूल कारण अदिति अविनाशी तत्व ही है । यह अदिति सब भूतों की माता, मेदिनी और महामही है । उसी विशाल गायत्री के गर्भ में विश्व के सम्पूर्ण प्राणी निवास करते हैं ।

यथा वशिष्ठ संहिता में कहा गया है -

पूषार्यमा मरुत्यश्च महर्षियोऽपि मुनीश्वराः,
पितरो नाग यक्षाश्च गन्धर्वप्सरा गणाः,
ऋग्यजु सामवेदाश्च अथर्वभर्ग रसानि च ।
त्वमेव पंचभूतानि तत्वानि जगदीश्वरि,
ब्राह्मी सरस्वती संध्या तुरीया त्वं महेश्वरी ।
त्वमेव सर्वशास्त्रभर्ग त्वमेव सर्व संहिता,
पुरानि च तन्त्राणि महागम मतानि च ।
तत्सद् ब्रह्म स्वरूपा किंचित्सद् सदात्मिका,
परात्परेशी गायत्री नमस्ते मातरिम्बके ।।

पूषा, अर्यमा, मरुत, ऋषि, मुनि, पितर, नाग, यक्ष, गन्धर्व, अप्सरा, ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्व वेद, अग्नि रस, पंचभूत, ब्राह्मी, सरस्वती, संध्या हे मातेश्वरी तुम्हीं हो । सर्वशास्त्र संहिता पुराण तन्त्र आगम-निगम तथा और भी जो कुछ संसार में है सो हे ब्रह्मरूपिणी पराशक्ति तुम ही हो ।"

कहा जा चुका है कि संसार में जिन अनेक देवी-देवताओं की शक्तियाँ दृष्टिगोचर हो रही हैं और जिनकी सहायता से हमारा जीवन धारण पोषण अभिवर्धन एवं श्रेय साधन हो रहा है, वे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सभी गायत्री महाशक्ति के अन्तर्गत आती हैं । इसे यों भी कहा जा सकता है कि वे गायत्री स्वरूप ही हैं । विश्वव्यापी जलतत्व ही नदी, सरोवरों, कुओं, तालाबों, जलाशयों, हिमगिरों, समुद्र और विभिन्न स्थितियों के रूप में दिखाई देता है । उसी प्रकार एक ही गायत्री महातत्व अगणित देव शक्तियों के रूप में देखा जाना, और अनुभव किया जा सकता है ।

क्षात्रबल का जागरण गायत्री के वरण से

क्षत्रित्व समाज एवं राष्ट्र की वह शक्ति है जिसके सहारे समाज की सुव्यवस्था बनी रहती है । अवांछनीयताओं की बेल फैलने नहीं पाती । अनाचार, अत्याचार पनपने नहीं पाता । क्षत्रित्व जीवन्त हो तो प्रगति के मार्ग में आये हुए गतिरोध अवरोध कटते चले जाते हैं । जिस देश एवं समाज का क्षत्रित्व सो गया हो उसकी प्रगति की सम्भावना नहीं रहती । पतन का द्वार खुल जाता है । संरक्षण, परिवर्धन एवं सामाजिक सुव्यवस्था को कायम रखने में क्षत्रित्व की असाधारण भूमिका होती है । जिस भी समाज में शालीनता, शिष्टता एवं सुव्यवस्था का दर्शन होता हो वहाँ यह समझना चाहिए कि जीवन्तता विद्यमान है, क्षत्रित्व जिन्दा एवं सक्रिय है । अव्यवस्था, उद्दण्डता अस्त-व्यस्तता आतंक इस बात का परिचायक है कि इस समाज का क्षत्रित्व मूर्छित अथवा ठण्डा पड़ा है जिसके रहते प्रगति की कामना मात्र एक कपोल कल्पना बन कर रह जायेगी ।

गायत्री मन्त्र का प्रथम अक्षर तत् ब्राह्मणत्व को जागृत करने की प्रेरणा देता है । दूसरे अक्षर 'स' में क्षत्रित्व को जगाने एवं सामर्थ्यवान बनाने की बहुमूल्य प्रेरणा भरी है । गायत्री स्मृति में वर्णन आता है ।-

सन्तावन्नस्तथा शुराः क्षत्रिया लोक रक्षकाः ।
अन्याया शक्ति सम्भूतानां ध्वंसये युर्हिव्यापदः ।।

-गायत्री स्मृति-१

शक्ति सामर्थ्य से युक्त क्षत्रित्व गुणों को धारण करने वाले शूरवीर अन्याय और अशान्ति से उत्पन्न होने वाली आपत्तियों को नष्ट करें ।

क्षत्रित्व एक गुण है जिसका सम्बन्ध जाति, कुल, वंश एवं वर्ण से नहीं है । यह एक प्रवृत्ति है जो न्यूनाधिक रूप में प्रत्येक मनुष्य में पायी जाती है । अनीति, अत्याचार, दुराचार जैसी अवांछनीयताओं से लड़ने के लिए अन्दर से जो उमंग उठती है, उसी का नाम क्षत्रित्व है । यह प्रत्येक मानव जाति से सम्बन्धित एक गुण है जिसका प्रधान लक्षण है शूरता अर्थात् कार्य, साहस, निर्भयता, पुरुषार्थ, दृढ़ता एवं पराक्रम । यह गुण जिनमें हैं अवांछनीयताओं से लड़ने की जिनमें भी 'मन्यु' प्रकट होता हो वह क्षत्रिय है, क्षत्रित्व के गुणों से सम्पन्न है ।

ब्राह्मणत्व के साथ क्षत्रित्व का अन्योन्याश्रित सम्बन्ध रहा है । ज्ञान के साथ बल का क्रम सदा से जुड़ा है, दोनों ही एक-दूसरे के पूरक हैं । प्रत्येक का अपना महत्त्व एवं उपयोगिता है । दोनों के परस्पर एक साथ मिल-जुलकर चलने से ही सामाजिक सुव्यवस्था बनी रहती है । प्रगति का क्रम आगे बढ़ता है । मस्तिष्क समर्थ हो, प्रखर हो पर शरीर में बल न हो तो उसकी ज्ञान सम्पदा का इतना लाभ नहीं मिल पाता । शारीरिक सामर्थ्य के जुड़ जाने, सहयोग मिलने से ही ज्ञान का भी समुचित लाभ उठाया जा सकता है । ब्राह्मणत्व एवं क्षत्रित्व महान लक्ष्य की पूर्ति के दो अनिवार्य घटक हैं । ब्राह्मण ज्ञान सम्पदा एकत्रित करता है । क्षात्र बल उसे संरक्षण देता, समाज की सुव्यवस्था के लिए उपयोग करता है । नेतृत्व क्षत्रित्व का अनिवार्य गुण है । तेजस्विता क्षत्रित्व का भी प्राण है, आत्मिक बल से सम्पन्न व्यक्ति को ब्राह्मण कहते हैं । सामर्थ्य, शौर्य, प्रतिभा, तेजस्विता जैसी शारीरिक एवं मानसिक विभूतियों से सम्पन्न व्यक्ति को क्षत्रिय । आवश्यक नहीं कि ब्राह्मणत्व एवं क्षत्रित्व अलग-अलग दो ही व्यक्तियों में प्रकट हों, दोनों एक साथ,एक समय ,एक ही व्यक्ति के अन्दर भी विद्यमान हो सकते हैं । कितने ही महापुरुष ऐसे हुए हैं जो दोनों ही विशेषताओं से युक्त रहे हैं, ज्ञानवान भी और सामर्थ्यवान भी ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ब्राह्मण का ब्रह्मतेज उसके निज के उपयोग के लिए या स्वार्थ साधन के लिए नहीं होता है । वह अपनी गुप्त सम्पदा का उपयोग व्यापक स्तर पर फैले हुए अज्ञान के अन्धकार को दूर करने के लिए करता है । अन्धकार की तमिस्रा में डूबे हुए व्यक्तियों को प्रकाश की ओर बढ़ाता, उन्हें सन्मार्ग दिखाता है । क्षत्रित्व शारीरिक बलिष्ठता, मानसिक प्रखरता, तेज़, शौर्य एवं पराक्रम से सम्पन्न व्यक्ति भी अपनी इन विशेषताओं का उपयोग व्यक्तिगत स्वार्थ की पूर्ति के लिए नहीं करता । समाज के हित के लिए विकास क्रम में आ रहे गतिरोध को दूर करने अवांछनीय तत्वों के जड़ से उखाड़ने में करता है । क्षत्रित्व की यही विशेषता होती है कि सुव्यवस्था एवं शालीनता क्रो बनाये रखने के लिए अपनी सामर्थ्य का उपयोग करे । गायत्री महामन्त्र का 'स' अक्षर उसी बात की ओर इंगित करता है । मनुष्य के अन्तरंग में निवास करने वाले 'मन्यु' को जगाने की प्रेरणा देता है ।

सर्वविदित है कि समाज में आज भी शौर्य, पराक्रम, साहस किसी बात की कमी नहीं है । ढूँढ़ने पर एक से बढ़कर एक साहसी मिल जायेगा । डाकू आतातायी, अत्याचारी असामान्य साहसी होते हैं । आवश्यकता आ पड़ने पर मरने और मारने पर उतारू हो उठते हैं पर उनमें क्षत्रित्व नहीं होता । क्षत्रित्व रहा होता तो वे विध्वंसात्मक गतिविधियाँ नहीं अपनाते । सृजन में अपनी सामर्थ्य लगाते । पर ऐसा नहीं होता । क्षत्रित्व के अभाव में वे व्यक्तिगत संकीर्ण स्वार्थों के लिए क्या से क्या नहीं कर गुजरते हैं । हत्या, लूटपाट की घटनाओं से उनकी आन्तरिक कठोरता का ही परिचय मिलता है । समाज की पीड़ा एवं कष्ट का अनुभव तो क्षत्रित्व के गुणों से सम्पन्न व्यक्ति ही कर सकता है । आतंक एवं अत्याचार के विरोध में तो उनका आक्रोश "निशिचर हीन करि हूँ महि, भुज उठाहि प्राण कीन, के रूप में प्रकट होता है जिसके समक्ष आतंक भी काँप उठता है । दूर भगने की, अपना सिर छिपाने की तैयारी करने लगता है ।"

आज भी ऐसे व्यक्तियों की कमी नहीं हैं जिनमें शौर्य एवं पराक्रम की कमी हो । पर उनमें से अधिकांशतः दुरुपयोग ही करते दिखाई पड़ते हैं । आतंक, अत्याचार, अन्याय, अनैतिकता, अशिष्टता व्यसन, दुराचार आदि बुराइयों को भी बढ़ावा देते हैं । अभिप्राय यह है कि क्षत्रित्व सो गया है । क्षत्रिय के नाम पर शोषण, दमन एवं आतंक को बढ़ावा देने वाले तो अनेकों मिल जायेंगे पर इन अवांछनीयताओं को दूर करने, संघर्ष करने वाले विरले ही दीख पड़ते हैं । जिस प्रकार आज ब्राह्मण ठगी और हीनता का प्रतीक बन गया है उसी प्रकार क्षत्रिय भी आतंक और अतीति का गढ़ बना हुआ है ।

गायत्री महामन्त्र का दूसरा अक्षर 'स' इस स्थिति का विरोध करता तथा प्रेरणा देता है कि क्षत्रिय को तपस्वी ब्राह्मण की तरह ही त्यागी एवं परमार्थी होना चाहिए । उसे जो शक्ति एवं सत्ता मिली है वह ईश्वरीय धरोहर है जिसका उपयोग अनीति के प्रोत्साहन में नहीं, निवारण में होना चाहिए । जो अपने व्यक्तिगत स्वार्थ, सनक एवं अहंकार की आपूर्ति के लिए अपनी शक्ति का प्रयोग करते हैं उनमें क्षत्रित्व नहीं हैं । यह तो असुरता का परिचायक है । गायत्री महामन्त्र से यह बोध होता है कि असुरता एवं क्षत्रित्व दोनों प्रवृत्तियाँ एक साथ नहीं चल सकतीं । ये दोनों ही परस्पर विरोधी हैं । इनमें उतना ही अन्तर है जितना कि एक डाक्टर और कसाई में । स्थूल दृष्टि से देखने पर दोनों ही चीर-फाड़ करते दिखाई पड़ते हैं, पर एक का लक्ष्य मरीज को आरोग्य प्रदान करना तथा दूसरे का स्वाद-लिप्सा के लिए हत्या करना होता है ।

जिस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति में थोड़ा बहुत ब्राह्मणत्व का, ज्ञान का अंश होता है, इसी प्रकार क्षत्रिय में शक्ति और सामर्थ्य का अंश भी विद्यमान रहता है । इसका उपयोग दैवी प्रयोजन के लिए, लोक कल्याण के लिए होना चाहिए । गायत्री मन्त्र का 'स' अक्षर यह प्रेरणा देता है कि प्रत्येक मनुष्य को सदा आत्म निरीक्षण करते रहना चाहिए कि हमारी शक्ति सामर्थ्य, प्रतिभा, सत्ता का उपयोग क्षात्र धर्म के अनुकूल हो रहा है या नहीं । प्रतिकूल उपयोग से तो क्षात्र धर्म की, गायत्री महामन्त्र की अवज्ञा होती है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गायत्री मन्त्र के 'स' अक्षर ने अन्तरंग में निवास करने वाले क्षत्रित्व को जाग्रत करने, विकसित करने का सन्देश दिया है । जागरण से जहाँ क्षत्रित्व के गुणों से मनुष्य सम्पन्न बनता है वहीं विशेषताओं का सदुपयोग भी बन पड़ता है । यह आत्म-बोध गायत्री मन्त्र के अवलम्बन से सदा बना रहता है ।

गायत्री मंत्र में समाहित दर्शन एवं शिक्षण

देव संस्कृति को गायत्री महामन्त्र का उद्‌गम माना गया है । पुराणों में कथा है कि सृष्टि के आदि में जब ब्रह्माजी को विश्व-ब्रह्माण्ड की संरचना का काम सौंपा गया तो वे विचारने लगे कि मैं एकाकी उस महान कार्य को सम्पन्न करूँ, न उसका ज्ञान अनुभव है और न साधन उपकरण, फिर सौंपा हुआ कार्य कैसे पूरा हो ?

असमंजस को दूर करने के लिए आकाश से आकाशवाणी हुई कि इन उपलब्धियों के लिए तप करना चाहिए । तप शब्द से क्या तात्पर्य है, यह वे न समझ सके, तो दूसरी बार बताया गया कि गायत्री मन्त्र के अवगाहन को 'तप' कहते हैं । अगली जिज्ञासा के उत्तर में उन्हें गायत्री मन्त्र के २४ अक्षर बताये गये । उसके साथ तीन व्याहृतियाँ लगी हुई थीं । आदेशानुसार ब्रह्माजी गायत्री उपासना करने लगे । इसके पश्चात् समयानुसार उन्हें ज्ञान और विज्ञान के रूप में दो उपलब्धियाँ हस्तगत हुईं । ज्ञान पक्ष को 'गायत्री' और विज्ञान पक्ष को 'सावित्री' कहा गया । गायत्री चेतना हुई और सावित्री प्रकृति । प्रकृति से पदार्थ बना और उसे गतिशील रखने वाली चेतना का इस विश्व - व्यवस्था में समावेश हुआ ।

प्राणी बने । उनके शरीर पंच तत्वों से बने और उन सब में चेतना का प्रादुर्भाव हुआ । अन्य जीवों में साधारण चेतना थी, किन्तु मनुष्य में पाँच प्राणों से मिली आत्म-चेतना । इस प्रकार जड़ और चेतन का ढाँचा बनकर खड़ा हो गया । अन्य प्राणी तो प्रकृति पदार्थों से अपना निर्वाह करने लगे, पर मनुष्य को उचित अनुचित का निर्णय करने के लिए विशिष्ट ज्ञान की आवश्यकता पड़ी । ब्रह्माजी ने इस प्रयोजन के निमित्त चार मुखों से चार वेदों के व्याख्यान किये । वेदों में कर्त्तव्य का, उचित-अनुचित का ज्ञान भी था और प्रकृति वस्तुओं का उपयुक्त उपयोग करके प्रगति साधनों की उपलब्धि का विज्ञान भी ।

वेद दुरूह थे । उनकी विवेचना क्रमशः अन्यान्य ग्रन्थों में होती गई । उपनिषदें, ब्राह्मण ग्रन्थ, सूत्र, स्मृतियाँ, दर्शन आदि का विकास उन्हीं वेदों की सरस सुबोध विवेचना के रूप में हुआ, जिन्हें गायत्री के चार पुत्र माना जाता है । यह चार वेद ही ब्रह्मा जी के चार मुख हैं । इस प्रकार धर्मशास्त्रों का समग्र ढाँचा बन गया। यह सभी एक वृक्ष के शाखा-पल्लव हैं । इन्हें ज्ञान-विज्ञान का भाण्डागार, उद्‌गम केन्द्र कह सकते हैं । ऐसे हैं यह गायत्री के चार पुत्र । प्रकारान्तर से भारतीय संस्कृति का, ज्ञान-विज्ञान का समग्र ढाँचा इसी एक महामन्त्र के प्रसार विस्तार के रूप में खड़ा हुआ है । इस महासमुद्र में से जिसे जिस स्तर के मणि-मुक्तकों की आवश्यकता होती है, वे उन्हें उसी अनुपात में उपलब्ध कर सकते हैं ।

इन विद्याओं के विस्तार ने ही इस भारत भूमि को ''स्वर्गादपि गरीयसी'' कहलाने का सौभाग्य प्रदान किया और इस तत्व ज्ञान का अवगाहन करने वाले मनीषियों की ३३ कोटि गणना को धरती निवासी देव मानव के रूप में समस्त संसार में प्रख्यात किया । इन्हीं विशेषताओं विभूतियों के कारण इस देव-भूमि को चक्रवर्ती, शासक, जगद्‌गुरू एवं स्वर्ण सम्पदाओं का स्वामी बनाया । उपलब्ध ज्ञान-चेतना से हमारे महान पूर्वज स्वयं ही लाभान्वित नहीं हुए, वरन् संसार के प्रत्येक क्षेत्र में जहाँ जिस प्रकार की आवश्यकता समझी, वहाँ उस प्रकार के अनुदान देकर उन्हें ऊँचा उठाया, आगे बढ़ाया । पुरातत्व शोधों से यह तथ्य प्रकट होता है कि भारत ने समस्त विश्व को अजस्र अनुदान प्रदान किये हैं । उन अनुग्रहों के लिए समस्त विश्व उसका सदा ऋणी रहेगा । प्रकारान्तर से यह सम्पदा गायत्री के रत्न भण्डार से ही विकसित हुई, जिसका समस्त संसार ने लाभ उठाया ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पुरातन काल में मानवी काया में से देव-संस्कृति और देव-सम्पदा उपलब्ध करने का एक ही आधार था गायत्री मन्त्र । उसके दक्षिणमार्गी प्रयोग करके देवत्व विकसित हुआ और वाममार्गी तन्त्र-उपचारों से, दैत्य प्रकृति चमत्कारों से साधन सम्पन्न बढ़े । दिति की अदिति की सन्तानें देव और दैत्य हुईं । दिति गायत्री का, अदिति सावित्री का ही नाम है । दोनों ही प्रजापति ब्रह्मा की पत्नियाँ थीं ।

इन महाविधाओं का आगे चलकर विशेष विस्तार होता गया । कालान्तर में वे एक से दो और दो से नौ हो गईं । इन्हीं को नव दुर्गायें कहते हैं । नवग्रहों में भी इनका देव आरोपण है । विश्वामित्र ने राम-लक्ष्मण को यज्ञ रक्षा के बहाने अपने आश्रम में ले जाकर बला और अतिबला विद्यायें सिखाई थीं । बला अर्थात् 'सावित्री', अतिबला अर्थात् 'गायत्री' । बला के प्रताप से समुद्र सेतु बाँधा गया और लंकादहन हुआ।

अतिबला के प्रताप से रामराज्य की स्थापना हुई । बला के बलबूते शिव धुनष तोड़ा गया और अतिबला के माध्यम से शक्ति रूपा सीता को प्राप्त किया गया । इसी प्रकार अन्य अवतार भी गायत्री का अवलम्बन लेते रहे हैं । देवताओं ने भी उसी को माध्यम बनाया । ऋषि उसी के उपासक रहे ।

भूः भुवः स्वः की तीन व्याहृतियाँ ब्रह्मा, विष्णु, महेश बनीं । इन्हीं से सरस्वती, लक्ष्मी और काली का प्रादुर्भाव हुआ । आगे का देव परिवार इन्हीं की शाखायें, प्रशाखायें हैं। षट्शास्त्र षड्दर्शनों का प्रादुर्भाव भी इन्हीं से हुआ । समुद्र मन्थन का उपाख्यान भी इसी प्रकरण के साथ जुड़ता है ।

गायत्री के चौबीस अक्षर, २४ अवतार, २४ देवता, २४ ऋषि माने गये हैं । दत्तात्रेय के २४ गुरु भी यही हैं ।

शरीर में २४ प्रमुख शक्ति केन्द्र माने गये हैं । मस्तिष्क में २४ शक्ति केन्द्र । गायत्री उपासना में जिन चौबीस अक्षरों का उच्चारण किया जाता है, उनसे इन सभी केन्द्रों में मन्थन जैसी हलचल मचती है और वे प्रसुप्त स्थिति से जागृत हो अपने-अपने चमत्कार दिखाने लगते हैं । उन्हीं को ऋद्धि-सिद्धियों के नाम से जाना जाता है ।

स्थूल शरीर, सूक्ष्म शरीर और कारण शरीर यह आत्मा के ऊपर चढ़े हुये तीन आवरण हैं, उन्हें तीन व्याहृतियाँ समझा जा सकता है । ज्ञानयोग, कर्मयोग और भक्तियोग में इन्हीं तीनों की विवेचना हुई है । आकाश, पाताल और भू-भाग यही तीन हैं । उत्पादन, अभिवर्धन और परिवर्तन भी इन तीनों को कह सकते हैं । उपासना, साधना और आराधना का विज्ञान भी इन तीन व्याहृतियों के साथ जुड़ा हुआ है ।

गायत्री को अमृत, कल्पवृक्ष और पारस कहा गया है । कल्पवृक्ष वह जिसकी छाया में बैठने से सभी मनोकामनायें पूर्ण हों । अमृत वह जिसे पीकर अमर बना जाय । पारस वह जो स्पर्श मात्र से लौह जैसी सस्ती धातु को स्वर्णवत् बहुमूल्य बना दें । यह तीनों वस्तुयें कहाँ हैं ? या कहाँ हो सकती हैं ? यह पता नहीं । यह अलंकारिक हैं । कल्पवृक्ष नाम इसलिए दिया गया है कि अनावश्यक कामनाओं का समापन हो जाता है । जो उपयुक्त कामनायें हैं, उन्हें तो मनुष्य अपने भुजबल और बुद्धिबल के सहारे सहज पूरा करता रह सकता है । अमर शरीर तो नहीं हो सकता । अवतारी तक अमर नहीं हुये । जो जन्मा है उसे मरना भी पड़ेगा, पर जिसका यश विद्यमान है,उसे अमर ही समझना चाहिए । ऋषि अमर हैं, महामानव अमर हैं । यही बात पारस के बारे में कही जा सकती है । साधारण और हेय परिस्थितियों में जन्मे, रहे व्यक्ति जिस ज्ञान के सहारे प्रगति के उच्च शिखर तक पहुँचे, कायाकल्प जैसी स्थिति प्राप्त कर सके, उस तत्वज्ञान को पारस कायाकल्प कहा जाय तो तनिक भी अत्युक्ति न होगी ।

गायत्री की प्रतिमा नवयौवना नारी के रूप में की गयी है और साथ ही उसे माता के रूप में मान्यता मिली है । इसका तात्पर्य नारी की श्रेष्ठता और वरिष्ठता स्वीकार करने से है । मनु ने कहा है कि जहाँ नारी की पूजा होती है वहाँ देवता बसते हैं । इस तथ्य को प्रत्यक्ष करने के लिए नवयौवना गायत्री के कलेवर में मातृ बुद्धि स्थापित करने के साथ अभ्यास में उतारने के लिए की गई है । यह अभ्यास नारी मात्र के लिए विकसित होना चाहिए ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

और जिस अर्जुन एवं शिवाजी ने नारियों के प्रति मातृ भाव का प्रदर्शन किया था वैसी ही अवधारणा नर की नारी के प्रति और नारी की नर के प्रति होनी चाहिए । पवित्र एवं उच्चस्तरीय समाज की स्थापना का यही आधार हो सकता है ।

संसार में अपनी-अपनी रुचि के अनुरूप अनेक लोग अनेक वस्तुओं को महत्त्व देते हैं, किन्तु आप्त पुरुषों ने सद्बुद्धि को सर्वोपरि विभूति माना है । रामायणकार ने कहा है कि "जहाँ सुमति तहँ सम्पत्ति नाना ।" गीताकार का कथन है-'नहि ज्ञानेन सदृश्य पवित्र मिह विद्यते ।" अर्थात् इस संसार में ज्ञान के समान और कुछ पवित्र नहीं है । जिसे सद्बुद्धि उपलब्ध हुई वह अपनी और दूसरों की अनेकानेक समस्याओं का सहज समाधान निकाल लेता है, किन्तु जिसे दुर्बुद्धि ने आ घेरा है उसका निज का तथा सम्पर्क क्षेत्र का सर्वनाश निश्चित है । इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए सद्बुद्धि की अधिष्ठात्री गायत्री को यदि प्रथम स्थान मिला है तो इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं है ।

गायत्री के तीन चरणों में एकता, समता और ममता के तीन सूत्रों का समावेश है । भविष्य में एक राष्ट्र, एक भाषा, एक कानून विश्व में चलेगा । सभी लोगों के मौलिक अधिकार और सुविधा साधन समानता के स्तर तक लाने होंगे । विषमता चाहे आर्थिक क्षेत्र की हो, चाहे सामाजिक क्षेत्र की, वह हटानी होगी । तीसरा चरण, ममता है, जिसका तात्पर्य है- उदारता आत्मीयता । इसी के अन्तर्गत वसुधैव कुटुम्बकम् और आत्मवत् सर्वभूतेषु की मान्यता आती है और यह निर्देशन मिलता है कि जो बरताव हम दूसरों द्वारा अपने लिए किया जाना पसन्द नहीं करते वह दूसरों के साथ भी न बरतें । इसमें सज्जनता, शालीनता और सद्भावना का उत्कृष्टता का पूरी तरह समावेश हो गया है ।

चिन्तन में उत्कृष्टता, चरित्र में आदर्शवादिता और व्यवहार में न्याय निष्ठा का समावेश यह तीनों मानवी गरिमा को अक्षुण्ण रखती है । गायत्री के तीन चरणों में इन तीनों को अपनाये जाने का निर्देश है ।

इस तरह गायत्री महामन्त्र के तीनों चरणों में एक-एक सत्प्रेरणाओं का समावेश है । वे वैसी हैं जिनको यदि हृदयंगम किया जा सके, जीवनक्रम में उतारा जा सके तो समझना चाहिए कि सर्वतोमुखी प्रगति का पथ प्रशस्त हो गया । भौतिक और आत्मिक अभ्युदय का द्वार खुल गया ।

प्रथम चरण में सविता का वरण-अधिग्रहण किया गया है । 'सविता' तेज पुंज सूर्य को कहते हैं । सूर्य में आभा और ऊर्जा की प्रमुखता है । आभा अर्थात् चमक रोशनी ऊर्जा अर्थात् गर्मी शक्ति । प्रगतिशील व्यक्ति इन दोनों गुणों को अपनाते हैं । प्रखर प्रतिभावान बनते हैं । ओजस्वी, तेजस्वी, वर्चस्वी बनकर अपनी समर्थता को विकसित करते हैं । जो असमर्थ हैं, दुर्बल हैं, दीन हीन स्तर की अनगढ़ एवं पिछड़ी हुई स्थिति में रहने के अभ्यस्त हैं, उनकी विशिष्टताएँ मूर्च्छित हो पड़ी रहेंगी । किसी प्रकार दिन ही कट सकेंगे । निर्वाह के अतिरिक्त और कुछ पराक्रम उनसे करते न बन पड़ेगा । इस दुर्गति से बचने के लिए आवश्यक है कि अपने को सशक्त बनाया जाय । शारीरिक दृष्टि से भी और मानसिक स्तर पर भी । पराक्रम साहस को स्वभाव का अंग बनाया जाय । कार्यरत रहा जाय । उद्योगी, पुरुषार्थी, जागरूक एवं उमंगों, आशाओं से अपने को भरा पूरा रखने के लिए प्रयत्नरत रहा जाय । आलस्य पास न फटके । उदासी रहे नहीं । कठिन समय आने पर धैर्य न खोया जाय और उपस्थित अड़चनों से जूझने कठिनाइयों से निबटने का साहस सँजोये रहा जाय । प्रगति की दिशा में बढ़ने का यह प्रथम आधार है । संकोची, दब्बू, कायर, कृपण बन कर न रहा जाय । आत्म-निर्भर रहने और आत्म-विश्वास को दुर्बल न पड़ने देने के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहा जाय । अपनी सामर्थ्य को इस स्तर तक बढ़ाया जाय कि उसके सहारे दूसरों की सेवा सहायता कर सकना भी बन पड़े ।

गायत्री के दूसरे चरण के देवस्य में संकेत है कि अपना मानस, चिन्तन देवोपम रहे । चरित्र पर निकृष्टता का दाग धब्बा न लगने दिया जाय । देवत्व से प्रयोजन है व्यक्तित्व के परिष्कार का । गुण, कर्म, स्वभाव में सज्जनोचित आदर्शवादिता को समाविष्ट किये रहना । इसी में मानवी गरिमा की शोभा है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मर्यादाओं का परिपालन, वर्जनाओं का उल्लंघन न करने का व्रतधारण यही है मनुष्य में देवत्व के उदय का स्वरूप । शालीनता का निर्वाह इसी प्रकार बन पड़ता है ।

नर पशुओं की तरह असंख्य लोग जीवित रहते हैं । उन्हें पेट प्रजनन के अतिरिक्त और कुछ सूझता ही नहीं । इन्हीं के निमित्त निरन्तर मरते खपते रहते हैं । लोभ, मोह और अहंकार की पूर्ति के लिए अपनी समूची क्षमता नियोजित करते रहते हैं, फिर भी तृप्ति का दर्शन नहीं मिल पाता । तृष्णा की खाई इतनी गहरी है कि उसमें सभी सम्भव उपलब्धियों को झोंकते रहा जाय तो भी पट सकने की सम्भावना बन नहीं पड़ती । आग में ईंधन डालते जाने पर वह बुझती नहीं वरन् अधिकाधिक प्रज्वलित होती जाती है । यही हाल वासना, तृष्णा का है । उससे अब तक कोई तृप्त नहीं हो सका । विचारशील जन सादा जीवन उच्च विचार की नीति अपनाते हैं । औसत नागरिक स्तर के निर्वाह में संतुष्ट रहते हैं । उपार्जन में कमी नहीं करते । संयम बरतते हैं । जो बचता है उसे ऐसे पुण्य प्रयोजन में लगाते हैं जिनसे आत्म-संतोष और सेवा-धर्म का निर्बाह होता रहे । लोक-परलोक के उज्ज्वल होने का सुयोग बनता रहे ।

गायत्री के तीसरे चरण में सद्बुद्धि की महिमा बखानी गयी है और अर्जित करने की प्रेरणा दी गई है । दृष्टिकोण ही है जो उच्चस्तरीय होने पर स्वर्ग का सृजन करता है और निकृष्टता पर उतर आने से सब ओर नरक ही बिखरा दीख पड़ता है । मनः-स्थिति ही परिस्थितियों की जन्मदात्री है । जो जैसा सोचता है वह वैसा बन जाता है । उत्थान और पतन अपने ही नीति निर्धारण पर अवलम्बित रहते हैं । मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता इसीलिए कहलाता है कि वह अपने चिन्तन को दिशा धारा देने में पूर्णतया समर्थ है । प्रेरणाएँ मस्तिष्क में उभरती हैं । शरीर उनका परिपालन करने लगता है । दुर्बुद्धि अपनाने वाले दुर्गति के भाजन बनते हैं । जिनकी समझ-सूझबूझ नीति निष्ठा अपनाती है उन्हें न कुसंगजन्य दुख भोगना पड़ता है और न कुकर्म करने पर जो संकट उठाने पड़ते हैं उनमें फँसने की आवश्यकता होती है । मनुष्य जन्म देकर भगवान ने अपने चरम अनुग्रह का परिचय दिया है और इसके लिए स्वतन्त्र छोड़ा है कि वह सद्बुद्धि का उपार्जन करके सुख शान्ति भरे स्वर्गीय वातावरण का अपने तथा सम्बन्धियों के लिए सृजन करे, अथवा दुर्बुद्धि अपना कर स्वयं नरक के गर्त में गिरे और साथी सम्बन्धियों को भी उसी में गिरने के लिए बाधित करे ।

प्रत्यक्षतः जो कुछ भी वैभव, सुयश, सहयोग किसी को उपलब्ध होते हों तो समझना चाहिए कि वे सद्बुद्धि की देन हैं । उसी के प्रकाश में सन्मार्ग पर चल सकना सम्भव होता है । सन्मार्ग अपनाने वाले ही उन उपलब्धियों का पग-पग पर रसास्वादन करते हैं जिनके हस्तगत करने में जीवन की सार्थकता है ।

'धियः' की याचना का अर्थ है, अपने से उसे उपार्जित करने के लिए कटिबद्ध होने का प्रकाश प्राप्त करना । यह किसी दूसरे से वरदान, अनुग्रह की तरह उपलब्ध नहीं होती । विभूतियाँ स्वयं ही उपार्जित करनी पड़ती हैं । प्रयत्नशीलों को अभीष्ट स्तर का सहयोग भी मिल जाता है और अनुकूलताओं की भी कमी नहीं रहती । काँटे तो उनके पैरों में गड़ते हैं जो झाड़-झंखाड़ भरे कुमार्ग पर चल पड़ने के लिए अनर्थ और अनिष्ट को जान-बूझकर आमन्त्रित करते हैं । सद्बुद्धि के प्रकाश में यदि सन्मार्ग पर आरूढ़ रहा जाय तो फिर सुख-शान्ति से भरी पूरी परिस्थितियाँ आजीवन साथ रहती हैं । कभी प्रारब्धवश अनिष्ट आ भी पड़ें तो वे सहज अपनाये रहने पर देर तक टिक नहीं पाते ।

गायत्री के इसी चरण में एक शब्द आता है- 'नः' अर्थात् हम सब । "आई" नहीं "वी" । इन दिनों हर किसी पर व्यक्तिवाद का नशा बुरी तरह चढ़ा है । हर कोई अपनी ही सुख-सुविधा बढ़ाने में लगा है । अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए यदि दूसरों का अहित करना पड़े तो इसमें भी नहीं चूकता । यह संकीर्ण स्वार्थपरता ही अनाचारों, भ्रष्टाचारों, अपराधों का निमित्त कारण बनकर रह रही है । क्रिया की प्रतिक्रिया होनी स्वाभाविक है । आक्रमण प्रत्याक्रमण का, प्रतिशोध प्रति-प्रतिशोध

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

का कुचक्र चल पड़ता है । फलतः समय, कौशल और साधन ऐसे कृत्यों में ही लगाने लगता है जिसमें अपनी और दूसरों की केवल हानि ही बन पड़ती है ।

स्थिति को उलटने के लिए आवश्यक है कि समूहवाद के प्रति सर्वसाधारण में निष्ठा उत्पन्न की जाय । सहकारिता का, सहिष्णुता का वातावरण बने और हिलमिल कर रहने, मिल बाँट कर खाने की परम्परा को प्रश्रय मिले । व्यक्ति अपने आपको समाज का एक अविच्छिन्न घटक समझे । सबके लाभ में अपना लाभ और सबके हित में अपना हित समझे । यही वह रीति नीति है जो संगठन शक्ति को विकसित करती और सत्प्रवृत्ति संवर्धन के लिए हर किसी का उत्साह उमगाती है । व्यक्ति और समाज का बहुमुखी हित साधन इसी में है ।

गायत्री मन्त्र का संक्षिप्त सारांश दूरदर्शी विवेकशीलता का अभिवर्धन है । तात्कालिक लाभ के लिए अदूरदर्शी अक्सर अपना भविष्य अधंकारमय बनाते रहते हैं । दूरदर्शिता भविष्य की सम्भावनाओं का स्मरण कराती है और बताती है कि श्रेय पथ पर चलने में ही सबका सब प्रकार कल्याण है । सज्जनों की संघ शक्ति यदि विकसित हो सके तो समझना चाहिए कि धरती पर स्वर्ग अवतरित होने में विलम्ब नहीं । दूरदर्शिता और प्रखर प्रतिभा के अर्जन में संलग्न रहना यही है गायत्री मन्त्र का तत्वदर्शन ।

सत्यं, शिवं, सुन्दरम् की अभिव्यक्ति गायत्री मन्त्र में

परमात्मा सत्य है शिव है, और सुन्दर भी । उसकी स्थूल अभिव्यक्ति यह सृष्टि है । जीवात्मा भी उसी का अंश है । इन्हीं गुणों से ओत-प्रोत है । इसी तथ्य की व्याख्या करने के लिए धर्म का इतना बड़ा कलेवर ऋषियों ने खड़ा किया । उपनिषद यही सन्देश देते हैं । शास्त्रों की रचना का मूल प्रयोजन यही है, आत्म स्वरूप परमात्म स्वरूप का बोध कराना । शास्त्रों में गूढ़ एवं विशद व्याख्या परमात्मा के दिव्य स्वरूप की ही की गई है । जिसका लक्ष्य है मनुष्य यह जाने कि परमात्मा का अंशी होने के कारण विरासत में उसे भी वह विशेषताएँ मिली हैं । दैवी क्षमताओं से वह सम्पन्न है । प्रसुप्त के कारण, अज्ञान के कारण मनुष्य को अपनी दिव्यता का बोध नहीं रहता और अन्धकार में भटकता रहता है ।

ऋषियों की यह विशेषता रही है कि गूढ़ रहस्यों को उन्होंने सूत्रों के रूप में व्यक्त किया है । वेद शास्त्रों उपनिषदों में जिन तथ्यों की विशद व्याख्या की गई है वे सारे के सारे गायत्री महामन्त्र के छोटे सूत्र में समाहित हैं । मन्त्र शिरोमणि कहे जाने एवं भारतीय संस्कृति में सर्वोच्च स्थान पाने का कारण गायत्री मन्त्र की विशेषताएँ ही हैं जो सूत्र रूप में आबद्ध हैं । परमात्मा के सत्य, शिव एवं सुन्दर स्वरूप की अभिव्यक्ति गायत्री मन्त्र में है । इसके तीन पद इसी शाश्वत सत्य का बोध कराते हैं ।

भूः भुवः एवं स्वः लोक में संव्याप्त ॐ परमात्मा का दिव्य स्वरूप ही वरेण्य है । 'तत् सवितुर्वरेण्यं गायत्री का प्रथम पद इस गूढ़ रहस्य का उद्घाटन करता है । वही एक मात्र सत्य है । सत्ता अस्तित्व इसी का है । तीनों लोकों में वह विद्यमान है । मानवी सत्ता में भूः स्थूल अभिव्यक्ति शरीर के रूप में भुवः सूक्ष्म मन के रूप में, और स्वः कारण अभिव्यक्ति अन्तःकरण में विद्यमान आत्मा के रूप में है । प्रथम पद सत को जानने की प्रेरणा देता है, प्रेरणा ही नहीं वरेण्य करने, धारण करने की शिक्षा देता है ।

आज मनुष्य में वरण करने की क्षमता नहीं रही । वरेण्य शक्ति के अभाव में समस्त मानव जाति अज्ञान के अन्धकार में भटक रही है । हम चयन करते हैं भौति वस्तुओं का, जड़ पदार्थों का नष्ट हो जाने वाले तत्वों का । फलतः अज्ञानान्धकार में आजीवन भटकते रहते हैं । धन-सम्पत्ति पद-प्रतिष्ठा की प्राप्ति के लिए कितना श्रम एवं पुरुषार्थ करते हैं । अपना सम्पूर्ण मनोयोग लगा देते हैं । विभूति के रूप में मिली हुई शारीरिक बलिष्ठता एवं मानसिक प्रखरता की शक्ति को इन्हीं प्रयोजनों के लिए झोंक देते हैं । आकांक्षा की केन्द्र बिन्दु सांसारिक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वस्तुएँ ही रहती हैं । पुत्र की, धन की, पद एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति के लिए प्रयास चलते हैं । सम्पूर्ण प्रयास असत् को, नश्वर आकर्षणों को वरण करने में ही लग जाता है । सत् की उपेक्षा बनी रहती है । परमात्मा आत्मा के अस्तित्व एवं सामर्थ्य से अपरिचित बने रहते हैं । गायत्री का प्रथम पद सत् को वरण करने 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' की प्रेरणा देता है । वह सर्वत्र संव्याप्त है, शाश्वत है । उसकी दिव्यता ही वरणीय है इसी तथ्य का उद्घोष करता है । नश्वर, अस्तित्व रहित वस्तुओं के आकर्षण को ही वास्तविक मानकर मनुष्य सतत् उनके पीछे दौड़ता रहता है । मृगमरीचिका की भाँति भटकता है । यह भटकाव अपने साथ असन्तोष एवं अतृप्ति का अभिशाप साथ लेकर प्रकट होता तथा मानवी प्रवृत्तियों में काम, क्रोध और मोह के विकारों के रूप में उतरता है । गायत्री मन्त्र का 'वरेण्यं' साधक को वरण करने, चयन करने की सामर्थ्य देता है । सत्ता जो सत है, दिव्यताओं से ओत-प्रोत है, उसी का वरण करने में मनुष्य का कल्याण निहित है ।

द्वितीय चरण 'भर्गो देवस्य धीमहि' सुन्दरम् की, शाश्वत सौन्दर्य की अभिव्यक्ति है । जो दिव्य है, पापनाशक, निष्कलंक है, देवतुल्य है, दैवी गुणों से भरपूर है, उसको अन्तःकरण में धारण करें । सौन्दर्य की अनुभूति अन्तःकरण ही करता है । भावनाओं, सम्वेदनाओं का मर्मस्थल यही है । इस केन्द्र बिन्दु से उठने वाली भाव-तरंगें ही वस्तुओं-पदार्थों में टकराकर आकर्षण उत्पन्न करती हैं । दृश्य जगत् का सौन्दर्य अपना निज का नहीं है । अदृश्य चेतन तरंगें ही उनमें गति प्रदान कर सौन्दर्य का कारण हैं । चेतना अपनी तरंगें खींच ले तो दृश्य संसार नीरस, आकर्षण रहित दृष्टिगोचर होगा । अपनापन जहाँ भी आरोपित किया जाता है सौन्दर्य, आकर्षण वहीं दिखायी पड़ने लगता है । चाहे वस्तुओं में किया जाय अथवा व्यक्तियों में । अपना घर, अपना सामान, अपना बच्चा, अपनी पत्नी, अपने सगे सभी अच्छे लगते हैं । अपनापन हट जाने पर वे ही वस्तुएँ अप्रिय लगने लगती हैं ।

गायत्री के द्वितीय चरण में शाश्वत सौन्दर्य की अनुभूति का भाग प्रशस्त होता है । उसका दर्शन कैसे करें, सुन्दरम् अनुभूतियों में कैसे उतरें, इसका समाधान द्वितीय पद में विद्यमान है । परमात्मा के उस दिव्यतम स्वरूप को हम धारण करें जो दुःखों से रहित, आनन्ददायक, पापनाशक तथा दिव्य है । हम धारण करते हैं संकीर्ण स्वार्थों से युक्त प्रवृत्तियों को, काम, क्रोध, लोभ एवं अहंकार की वृत्तियों को, इसी कारण अन्तःकरण मलीनताओं से ढँक जाता है । आवरण से अन्तः में निवास करने वाली दिव्य सत्ता के दिग्दर्शन से वंचित बने रहते हैं । देव प्रवृत्तियों को न अपना पाने के कारण अपनी दिव्यता का बोध नहीं हो पाता । फलतः आत्म सत्ता की गरिमा के प्रतिकूल कृत्य करते हैं । सौन्दर्य का दर्शन पाप रहित, दुःख रहित होने पर भी सम्भव है। अनीति अत्याचार करने और उनके ताप-संताप में जलते रहने से सम्भव नहीं है । नीति, सदाचार से युक्त राजमार्ग ही सौन्दर्य के उद्गम स्थल तक पहुँचा सकता है ।

गायत्री महामन्त्र का तृतीय पद मानव मात्र के लिए शिवम् का, कल्याण का मार्ग प्रशस्त करता है । ईश्वर प्रदत्त मनुष्य सर्वोत्तम विभूति बुद्धि है । उत्थान-पतन, प्रगति-अवगति का क्रम इस पर ही टिका हुआ है । यह मनुष्य को देवता बना सकती है और दानव भी । नर से नारायण बना सकती है और नर पशु भी । यह बुद्धि की दिशा धारा पर निर्भर करता है ।

सामान्यतः यह शरीर एवं मन की ही पक्षधर बनती है । शरीर की पुष्टि एवं मन की तुष्टि ही इसे भी रुचती है । फलतः प्रत्यक्ष लाभों का ही समर्थन करती है । उसे त्याग-बलिदान का मार्ग अपनाने, परमार्थ पर चलने से मिलने वाले आत्म-सन्तोष एवं आनन्द का दूरवर्ती लाभ नहीं दीख पड़ता है । बुद्धि की इस प्रवृत्ति से परिचित ऋषियों ने मार्ग दर्शाया । गायत्री महामन्त्र के अवलम्बन की प्रेरणा दी ।

गायत्री मन्त्र में अपने लिए किसी वस्तु की कामना नहीं की गई है । 'योन ' समष्टिगत प्रज्ञा के अवतरण के लिए प्रार्थना हुई है । गायत्री मन्त्र व्यक्ति नहीं समूह, व्यष्टि नहीं समष्टि के कल्याण में विश्वास व्यक्त करता है । यही कारण है कि कल्याण साधन सद्बुद्धि की प्रार्थना की गई है । वह

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मात्र अपने लिए नहीं वरन् सबके लिए - नः (हम सब की) की गई है । सद्मार्ग पर चलने में ही मनुष्य का कल्याण निहित है । सेवा, सहयोग, परमार्थ का मार्ग प्रत्यक्ष तो घाटे का लगता है, पर परोक्ष में इससे बढ़कर लाभ संसार में दूसरा और कुछ नहीं हो सकता । आत्म-सन्तोष जीवन की सर्वोत्तम उपलब्धि है जिसकी प्रगति के लिए ही सम्पूर्ण भौतिक प्रयास चलते हैं । यह उपलब्धि परमार्थ पथ को अपनाने वाले को सहज ही प्राप्त हो जाती है । शिवं का, कल्याण का यही वास्तविक स्वरूप है ।

सत्यं शिवं एवं सुन्दरम् की तीनों धाराएँ गायत्री महामन्त्र में फूटती तथा साधक के अन्तःकरण में जाकर एकाकार हो जाती हैं । इस त्रिवेणी में स्नान करने वाला अमृत तुल्य दिव्यताओं का रसास्वादन करने वाला व्यक्ति अपने शाश्वत स्वरूप का, परमात्मा का दर्शन करता है । आत्मस्वरूप सत्यं शिवं एवं सुन्दरम् के दिग्दर्शन के उपरान्त उसे किसी अन्य सांसारिक वस्तु की कामना नहीं रहती ।

ब्रह्म विद्या का मूल गायत्री

मनुष्य की अन्तरंग स्थिति को सुसंस्कृत बनाने में समर्थ सभी साधनाओं में गायत्री का सर्वोपरि स्थान है । उसकी उपासना बहिरंग परिस्थितियों को समुन्नत बनाने की दृष्टि से भी अति समर्थ है । दोनों ही दृष्टियों से उसकी गरिमा एवं उपयोगिता को देखते हुए अध्यात्मवेत्ताओं ने उसे परम सर्वोपरि और सर्वोत्कृष्ट एक ऐसा आधार बताया है जिसके सहारे सर्वतोमुखी प्रगति के पथ पर अग्रसर हो सकना सम्भव बनता है । यों अपने स्थान पर सभी तत्वज्ञान एवं उपासनात्मक विधि-विधान महत्वपूर्ण हैं, पर तुलनात्मक अध्ययन करने पर ब्रह्मवेत्ताओं ने वरिष्ठता के निष्कर्ष निकाले हैं, उन्होंने गायत्री को परम कहा है और बताया गया है कि उसकी सार्थकता एवं समर्थता पर संदेह करने की आवश्यकता नहीं है । शास्त्रकार कहते हैं -

यदक्षरैकसंसिद्धे : स्पर्धते ब्राह्मणोत्तम : ।
हरिशंकरकंजोत्थ सूर्यचन्द्रहुताशनै : ।।

-गायत्री तन्त्र

"जो सच्चा साधक गायत्री के एक अक्षर की भी सिद्धि कर लेता है, उसकी स्पर्धा हरि, शंकर ब्रह्मा, सूर्य, चन्द्रमा और अग्नि से होने लगती है ।

ऐहिकायुष्मिकं सर्वं गायत्री जपतो भवेत् ।

-अग्नि पुराण

इहलोक और परलोक के समस्त इष्ट फलों की प्राप्ति गायत्री जप से होती है ।

गायत्र्येव तपोयोगः साधनं ध्यान मुच्यते ।
सिद्धानां सामता माता नातः किंचिद् वृहत्तरम् ।।

-स्कन्द पुराण

गायत्री ही तप है । गायत्री ही योग है । गायत्री ही सबसे बड़ा ध्यान और साधन है । इससे बढ़कर सिद्धि दायक साधन और कोई नहीं है ।

परांसिद्धिमवाप्नोति गायत्री मुत्तमां पठेत् ।

-शक्ति समुच्चय

गायत्री का जप करने से परा सिद्धि प्राप्त होती है ।

यत : साक्षात् सर्व देवतात्मनः सर्वात्म द्योतक,
सर्वात्म प्रतिपादकोऽयं गायत्री मन्त्र ।

-कौडन्य

यह गायत्री मन्त्र साक्षात् देव रूप , सर्व शक्तिमान, सबको प्रकाश देने वाला सर्वात्म ज्ञान का प्रतिपादक है ।

गायत्री को ब्राह्मी शक्ति कहा गया है । यह ब्रह्मांडीय चेतना का वह भाग है जो मानवी सत्ता को समुन्नत, समृद्ध एवं समर्थ बनाने की दृष्टि से अति महत्त्वपूर्ण है । गायत्री विद्या आत्मा और परमात्मा के बीच सम्भव हो सकने वाले आदान-प्रदानों के सन्दर्भ में अभीष्ट जानकारी प्रदान करती है । इसी गायत्री उपासना का प्रयोजन मानवी कलेवर के तीनों स्तर-स्थूल, सूक्ष्म और कारण शरीर को इस योग्य बनाना है कि उन पर दिव्य अवतरण हो सके, इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए ही गायत्री को ब्राह्मी कहा गया है और ब्रह्मतत्व से उसकी एकता प्रतिपादित की गयी है । गायत्री और ब्रह्म की एकता के ऐसे अनेकों प्रतिपादन शास्त्रों में मिलते हैं । यथा-

ब्रह्म हि गायत्री - *ताण्ड्य ११।११।९*
ब्रह्म उ गायत्री । - *जै, उ० १।१८*

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म वै गायत्री । - ऐत ४।११ को० ३।५

ब्रह्म गायत्री । -शत० १।३।५८

अर्थात् निश्चित रूप से गायत्रीत ब्रह्म ही है ।

देवी दात्री च भोक्त्री च देवी सर्वमिदं जगत् ।
देवी जयति सर्वत्र यो देवी साऽहमेवच ।
सर्वात्मना हि सा देवी सर्व भूतेषु संस्थिता ।
गायत्री मोक्ष हेतुर्वै मोक्ष स्थान मलक्षणम् ।

-ऋषि शृंग

दिव्य, देने वाली, भोक्ता, सम्पूर्ण विश्व में व्याप्त जिसकी सर्वत्र जय ही जय है ऐसी गायत्री परब्रह्म है । वही मोक्ष का आधार है, वही मोक्ष का स्थान है ।

पौराणिक गाथाओं के अनुसार ब्रह्माजी ने गायत्री के चार चरण की व्याख्या, चार वेदों के रूप में की है । इसका प्राकट्य आकाशवाणी के, ब्रह्म निर्देश के अन्त:प्रेरणा के रूप में हुआ माना जाता है । इस प्रक्रिया को जीव और ब्रह्म के बीच आदान-प्रदान की शृंखला भी कह सकते हैं ।

जीव और ब्रह्म के बीच आदान-प्रदान की शृंखला रहने के कारण इस दिव्य-चेतना को 'ब्रह्म विद्या' कहते हैं । उसके माध्यम से मनुष्य के अन्त:करण में उच्चस्तरीय आस्था प्रवाह का संचार होता है जिसे ब्रह्मज्ञान, तत्वज्ञान आदि नाम दिये जाते हैं । व्यक्ति में गायत्री शक्ति के समावेश होने का परिचय इस सद्ज्ञान की अभिवृद्धि से ही मिलता है । जीवन की हर समस्या का समाधान और प्रगति के हर क्षेत्र का मार्गदर्शन इस महामन्त्र में सन्निहित संकेतों के आधार पर किया जा सकता है । इसी से गायत्री को ब्रह्म विद्या कहा गया है ।

स ब्रह्म विद्यां सर्व विद्या प्रतिष्ठितम् ।

-मुण्डक

सम्पूर्ण विद्याओं में ब्रह्म विद्या ही श्रेष्ठ है ।

गायत्री सद्ज्ञान की गंगोत्री है । उसे अपनाने से अन्त:करण में सद्ज्ञान का, ब्रह्मविद्या का अवतरण होता है । ऐसा ब्रह्मचेता मनुष्य ब्राह्मण कहलाता है । ब्राह्मण अपने ब्रह्म तेज से स्व-पर कल्याण कर सकने में समर्थ होता है । उसकी ब्रह्म तेजस्विता का स्तर ब्रह्म तुल्य हो जाता है ।

ब्रह्म ब्राह्मणे ब्रह्मविदि प्रतिष्ठितम् ।

"वह ब्रह्म ब्रह्मवेत्ता ब्राह्मण पर प्रतिष्ठित है ।"

यो ह वा एवं वित्स ब्रह्मवित् पुण्यांच कीर्तिं लभते सुरभींश्च गन्धान् । सोऽपहत् पाप्मानन्तां श्रियमश्नुते य एवं वेद । यश्चैवं विद्वनेवमेतां वेदानां मातरं सावित्री सम्पदमुपनिषद मुपास्त इति ब्राह्मणम् ।

-गायत्री उपनिषद

"जो इस प्रकार जानता है, वह ब्रह्मवेत्ता ब्रह्मज्ञानी पुण्य-कीर्ति और सुरभि-गन्ध को प्राप्त करता है । उसके समस्त पाप दूर हो जाते हैं । वह अनन्त श्री ऐश्वर्य वैभव का उपभोग करता है । जो इस प्रकार जानता है और जो इस प्रकार ज्ञान सम्पादन करके समस्त वेदों की माता सावित्री के इस उत्तम सम्पत्प्रद उपनिषद् की उपासना करता है वही ब्राह्मण है ।

परब्रह्म स्वरूपा च निर्वाण पद दायिनी ।
ब्रह्मतेजोमयी शक्ति स्तधिष्ठातृ देवता ।।

गायत्री परब्रह्म स्वरूप तथा निर्वाण पद देने वाली है । वह ब्रह्म तेज की अधिष्ठातृ देवी है ।

परब्रह्म स्वरूपा च निर्गुण पद दायिनी ।
ब्रह्मतेजोमयी शक्ति स्तदधिष्ठातृ देवता ।।

-देवी भागवत ९ ।१ ।४२

वह ब्रह्म स्वरूप निर्विकल्प पद देने वाली, ब्रह्म तेज यही परम शक्ति तथा अधिष्ठातृ देवी गायत्री ही है ।

तस्मिस्तज्जने भेदाभावत् ।
ब्रह्म विद् ब्रह्मैव भवति ।।

"इस प्रकार सब भेद जाता रहता है । ब्रह्म का जानने वाला ब्रह्म ही हो जाता है ।"

सावित्र्याश्चैव मन्त्रार्थ ज्ञात्वा चैव ययार्थत: तस्यां ययुक्तं चोपास्यं ब्रह्म भूयाय कल्पते ।

-योगी याज्ञवल्क्य

गायत्री का गूढ़ मर्म और रहस्य जानकर जो उसकी उपयुक्त उपासना करता है वह ब्रह्मभूत ही हो जाता है ।

यश्चैवं विद्वानेव मेता वेदानां मातरं सावित्री सम्पद मुपनिषद मुपास्ते इति ।

-गोपथ

ब्राह्मण वेद माता गायत्री की उपासना करने वाले विद्वान और श्रद्धावान् होते हैं ।

ब्रह्मविद्या और ब्राह्मण दोनों अन्योन्याश्रित हैं । ब्रह्मविद्या का सही अवगाहन करने वाला सच्चा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ब्राह्मण बनकर रहता है । इसी बात को यों भी कह सकते हैं कि ब्राह्मण को ही ब्रह्म विद्या प्राप्त होती है । यहाँ जाति, वंश के आधार पर जाने वाले ब्राह्मण कुल की चर्चा नहीं है । ब्राह्मणत्व तो एक मनोभूमि है, जिसमें आत्म-परिष्कार और लोक मंगल के तत्व कूट-कूटकर भरे होते हैं । ऐसे ही ब्रह्म परायणों की अवधारणा से ब्रह्म विद्या यशस्विनी होती है । दोनों एक-दूसरे के सहयोग से धन्य बनते हैं ।

उपनिषद में वर्णित ब्रह्मविद्या और ब्राह्मण के बीच यह एक अलंकारिक सम्वाद इस तथ्य को और भी अधिक स्पष्ट करता है । उस सम्वाद में बताया गया है कि ब्रह्म परायण, उदात्त दृष्टिकोण युक्त व्यक्ति ही ब्रह्म चर्चा करे तो उत्तम है । वाचालता एवं छद्म उद्देश्यों के लिए उसे प्रयुक्त करने से तो न करना ही उपयुक्त है ।

विद्या ब्राह्मण मेत्याह सेवधिस्तेऽसिप रक्षमाम् ।
असूयैकाय मां मादास्तथा स्यां वीर्यवत्तम ।।

विद्या ब्राह्मण के समीप में आकर कहती है कि 'मैं तेरी धरोहर हूँ तुझे मेरी भली-भाँति रक्षा करनी चाहिए । मुझे किसी भी निन्दक पुरुष को मत देना । ऐसा तेरे करने पर मैं अधिक वीर्य-पराक्रम वाली जाऊँगी ।

विद्या ह वै ब्राह्मण मा जगाम गोपाय मां शेवधि स्तेऽहमस्मि । असूय माया नृजवेऽयताय न मां ब्रूया वीर्यवती तथा स्याम् ।।

ब्रह्म विद्या ब्राह्मण के समीप में आकर उससे कहती है कि मेरी रक्षा करो, मैं तुम्हारी निधि हूँ । जो असूया (निन्दा) करने वाला हो, कुटिल हो और संयम से शून्य हो ऐसे पुरुष को मुझे कभी मत देना, तभी मैं वीर्य वाली होऊँगी ।

ब्रह्म विद्या की उपहासास्पद स्थिति तब बनती है जब उसका अवगाहन करने वाले व्यक्तित्व की उत्कृष्टता को आवश्यक न मानकर कर्मकाण्डों और विधि-विधानों को ही सब कुछ मान लेते हैं । अग्नि बिना ईंधन ज्वलनशील कहाँ होता है । ज्योति के अभाव में तेल बत्ती युक्त दीपक भी कहाँ प्रकाश दे पाता है, उसी प्रकार व्यक्तित्व की निकृष्टता के रहते, उपासनात्मक कर्मकाण्ड भी कब सफल होते हैं । ब्राह्मण की दुर्दशा का, असफलता का एक मात्र कारण उसकी उत्कृष्टता का स्तर गया गुजरा होना ही है, साधना विधानों में अन्तर रहने की बात इस सन्दर्भ में कोई बड़ा व्यवधान प्रस्तुत नहीं करती । कहा भी है-

अनध्यापन शीलं च सदाचार विलघनम् ।
सालस चे दुरन्नादं ब्राह्मण बाधते यमः ।।

स्वाध्याय न करने से, आलस्य से और कुधान्य खाने से ब्राह्मण का पतन हो जाता है ।

अनभ्यासेन वेदनामा चारस्य च वर्जनात् ।
आलस्यात् अन्न दोषाच्च मृत्युर्विप्रान् जिथा सति ।।

-मनु० ५ ।४

वेदों का अभ्यास न करने से, आचार छोड़ देने से, आलस्य से, कुधान्य खाने से ब्राह्मण की मृत्यु हो जाती है ।

जिह्वा दग्धा परान्नेव करौ दग्धौ प्रति ग्रहात् ।
मनोदग्धं परस्त्रीभिः कथं सिद्धिर्वरानने ।
वादार्थं पठयते विद्या, परार्थं क्रियते जपः ।
ख्यात्यर्थं दीपते दानं कथं सिद्धिर्वरानने ।

अर्थात्- पराया अन्न खाने से जिह्वा की शक्ति नष्ट हो गयी । दान-दक्षिणा लेते रहने से हाथों की शक्ति चली गई, पर नारी की ओर मन डुलाने से मन नष्ट हो गया, फिर हे पार्वती इन ब्राह्मणों को सिद्धि कैसे प्राप्त हो सकती है ।

ब्रह्म विद्या परायण, सदाचार निष्ठा, सच्चरित्र और परायण रहते हुए गायत्री उपासक साधना का आश्रय लेकर सब प्रकार धन्य बनता है । ऐसे व्यक्तियों का गुणानुवाद करते हुए वृहदारण्यक उपनिषद् में कहा गया है-

एवं विच्छान्तोदान्त उपरतस्तितिक्षुः समाहितो भूत्वाऽत्मनोवात्मानं पश्यति । सर्व्वमात्मानं पश्यति नैनं पाप्मातरति सर्व्वं पाप्मानं तरति नैन पाप्मा तपति ।

सर्व्वं पाप्मान तपतिविपापो विरजोऽविचिकित्सो ब्राह्मणो भवति ।।

-वृहदा ४ अ ४ । २३

अर्थ- इस प्रकार से जानने वाला शान्त, उपरान्त तितिक्षु (और) समाहित होकर आत्मा में ही

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

परमात्मा को देखता है, सब जीवों का जो अन्तरात्मा उसे देखता है ऐसे ब्रह्म परायण को पाप दबा नहीं सकता । वह समस्त पापों का उल्लंघन कर जाता है । उसे पाप तपाता नहीं । वह उलटा पापों को ही तपाता है । पाप रहित, वासना रहित व्यक्ति निस्संदेह ब्राह्मण ही होता है ।

हस्त त्राणप्रदा देवी, पततां नरकार्णवे ।
तस्मात्ता मभ्य सेन्नित्यं, ब्राह्मणो नियतः शुचिः ।।

जो मनुष्य नर्क रूपी समुद्र में पड़े हैं, उनका हाथ पकड़ कर रक्षा करने वाली गायत्री ही है .। इसलिए नियमपूर्वक पवित्रता से ब्राह्मण नित्य गायत्री का अभ्यास करे ।

गायत्री जाप निरत, हव्य कत्थेपु भोजयेत ।
तस्मिन्न तिष्ठते पाप मब्वि दुखि पुष्केर ।
जापे नैव तु सं सिद्धयेब्राह्मणो नात्र संशयः ।।

गायत्री में तत्पर ब्राह्मण को हव्य कव्य से जिमावे । क्योंकि उस ब्राह्मण में पाप इस भाँति नहीं टिकते जैसे कमल के पत्ते पर जल ।

ब्राह्मण गायत्री जप करने से ही सिद्धि पाता है । इसमें कोई सन्देह नहीं ।

उपांशु रयाच्छत गुणः, सहस्त्रो मानसः स्मृतः ।
नोच्चै जाप्यं बुधः कुर्यात् । सावित्र्यास्तु विशेषतः

उपांशु जप सौ गुना फल देने वाला है, मानस जप हजार गुना । विशेषकर गायत्री जप ऊँचे स्वर से न करें ।

सावित्री जाप्य निरतः स्वर्ग माप्नोपित मानवः ।
गायत्री जाप्य निरतो, मोक्षो पापं च च विदति ।।

जो मनुष्य गायत्री के जप में तत्पर है वह स्वर्ग पाता है और गायत्री जप करने से मोक्ष की प्राप्ति होती है ।

तस्मात् सर्व प्रयत्नेन, स्नातः प्रपत मानसः ।
गायत्री तु जपेद्धता सर्व पाप प्रणाशिनीम् ।

इस कारण प्रयत्न पूर्वक स्नान कर, पवित्रता पूर्वक स्वस्थ चित्त हो, पाप नाशक एवं वरदात्री, वेद माता गायत्री का निरन्तर जप करे ।

गायत्री गान से सबका सब प्रकार कल्याण

शब्द का साधारण प्रभाव जानकारी देने तक सीमित रहता है । पैरों की चाप सुनकर अमुक प्राणी के आगमन का पता चल जाता है । बादलों की गड़गड़ाहट, पत्तों की खड़खड़ाहट, हवा की सनसनाहट सुनकर बिना देखे भी मौसम का अनुमान लगा लिया जाता है । मुख की आवाज सुनकर यह पता चलता है कि यह शब्द किस प्राणी का है और वह कहाँ है ? बातचीत से, घटनाओं, परिस्थितियों एवं समस्याओं की जानकारी मिलती है । सामान्यतया शब्दोच्चार जानकारी के आदान-प्रदान में प्रयुक्त होता है । उसकी बौद्धिक उपयोगिता इतनी ही है । स्कूलों में, कारखानों में, यात्राओं में, व्यवसाय में, कुटुम्ब में, मित्रों में प्रायः इसी प्रकार का वार्तालाप होता पाया जाता है ।

शब्द की एक विशेष स्थिति है, जिसमें जानकारी के आदान-प्रदान की मस्तिष्कीय आवश्यकता तो कम पूरी होती है, पर उसमें अन्तरात्मा की भाव संवेदनाएँ पर्याप्त मात्रा में जुड़ी रहती हैं । ऐसे शब्दों को 'गान' कहते हैं । स्थूल शरीर हलचलें करता है और आवाज निकालता है । सूक्ष्म शरीर शब्द द्वारा जानकारियों का आदान-प्रदान करता है । कारण शरीर की सत्ता भाव परक है । जब अन्तःकरण बोलता है तो उसमें भावनाएँ भरी रहती हैं । 'गान' का यही स्वरूप है ।

'गान' का प्रत्यक्ष स्वरूप गीत है । शब्दों को लयबद्ध करके गाया या गुनगुनाया जाना- उसमें भावनात्मक मस्ती का जुड़ा रहना 'गान' है । इसे और भी अधिक सुसंस्कृत किया जाता है तो ताल स्वर आदि का समावेश हो जाता है । ऐसी स्थिति में उसे छन्द नाम दे दिया जाता है । काव्य या कविता भी इसी लयबद्ध भाव प्रवाह को कहते हैं । उसे जब वाद्य यन्त्रों के साथ मिला दिया जाता है तो संगीत बन जाता है ।

वेदों की ऋचाएँ छन्द कही जाती हैं । मन्त्रों की शक्ति में शब्द गुंथन का असाधारण महत्त्व है । गायत्री मन्त्र को ही लें । उसका शब्दार्थ बहुत

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सामान्य सा है । तेजरूप भगवान से सद्बुद्धि की याचना भर उसमें की गई है । इस अर्थ की बोधक अनेक कविताएँ प्रायः सभी भाषाओं में मौजूद हैं अथवा बन सकती हैं । इनका प्रभाव वह नहीं हो सकता जो गायत्री मन्त्र का है । कारण कि उन कविताओं में शब्द विज्ञान और भाव विज्ञान का उतना अद्भुत समन्वय सम्भव नहीं है । सूक्ष्मदर्शी तत्व वेत्ताओं की विशेष मनःस्थिति में ही ऐसे दिव्य अवतरण सम्भव होते हैं । इसलिए वेद मन्त्रों की संरचना को 'अपौरुषेय' कहा गया है ।

गायत्री वह जो गाई जाने पर अपना चमत्कार प्रस्तुत करे । इस तथ्य का रहस्योद्घाटन करने वाले अनेकों प्रमाण मौजूद हैं । यहाँ गायन का अर्थ संगीत से नहीं, वरन् यह है कि भावनापूर्वक भावभरी मनःस्थिति में उसका उपासना क्रम चलना चाहिए । साधक के अन्तस् में मस्ती छाई रहनी चाहिए और बेगार भुगतने की तोता रटन्त की तरह नहीं, भाव तरंगों में लहराते हुए उसे गाया, गुन-गुनाया जाना चाहिए । जिह्वा का शब्दोचार मात्र तो बकवास कहलाता है । अन्य प्राणी, छोटे बच्चे अथवा अविकसित मस्तिष्क वाले प्रायः बेसिलसिले की बकझक करते रहते हैं । वाणी की प्रौढ़ता, सुविज्ञ मस्तिष्क की ज्ञान सम्पदा जुड़ जाने से बनती है । वह प्रखर भी होती है और प्रभावशाली भी । इस उच्चारण से बोलने वाले का भी लाभ होता है और सुनने वाले का भी । इसके बाद दिव्य वाणी है जिसमें परिष्कृत व्यक्तित्व के साथ जुड़ी रहने वाली उच्चस्तरीय भाव सम्वेदना का समावेश होता है । ऋचाओं का यही स्तर है । उनकी विशेषता सामगान को निखारती है । उपासना प्रक्रिया में भी मन्त्रोच्चार के साथ श्रद्धा भरी अनन्य तन्मयता का समावेश होना चाहिए । ऐसा समावेश जिसमें क्रमबद्ध, लयबद्ध, स्वरबद्ध, गुनगुनाहट तो हो ही, साथ ही इष्ट के साथ एकाकार होने की आकुलता भी हो । इसी को भक्ति भावना कहते हैं । मन्त्रों का वास्तविक लाभ इसी 'गान' मनः स्थिति में मिलता है ।

'गायत्री' शब्द के अनेक अर्थ हैं । 'गय' प्राण को भी कहते हैं । ''गीत'' को भी । गीता में भगवान ने ''गायत्रीच्छन्दसामहम्'' वाक्य में गायत्री छन्द को अपना रूप बताया है । यहाँ छन्द से तात्पर्य 'गीत ' से है । यह मनोरंजन के लिए नहीं । दिव्य तन्मयता की भावभरी लहरों में लहराने के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला 'नादब्रह्म' है । यह 'गान' गायनकर्ता को ऐसी भाव-भूमिका में उड़ा ले जाता है जो सर्वतोमुखी कल्याण का अनुदान दे सके । गाने वाले का त्राण करने वाली मन्त्र शक्ति को गायत्री कहा गया है । प्राण का त्राण करने वाली भी उसका एक अर्थ है जिस पर अन्यत्र चर्चा होगी, यहाँ तो उसके उस स्वरूप पर विचार करना है जिसमें उसे 'गाने वाला' का त्राण करने वाली कहा गया है ।

बसन्तः प्राणायनो गायत्री बासन्ती

-यजु० १३ । २५

गायत्री वह है जो बसन्त में गाई जाती है और गाने वाले की रक्षा करती है ।

गायन्ति त्वागायत्रिणोऽर्चन्त्यर्कमर्किणः ।

-ऋग्वेद १ । १० । १

गायत्री का गान करने वाले तेरे ही गुण गाते हैं । तेज के उपासक उसी से सूर्य की उपासना करते हैं ।

यद्गायत्रे अधिगायत्र माहितम् ।

-ऋग्वेद १ । १६४ । २३

जिसका गायन करते हैं, उसे गायत्री कहते हैं ।

यद् गायतं तद् गायत्री ।

-शत०

जिसे गाते हैं वह गायत्री ।

गायन्त त्रायत इति गायत्री ।

- गोपथ०

जो गाने वाले का त्राण करे वह गायत्री ।

त्रायन्ती गायतः सर्वान् गायत्रीत्यभिधीयते ।

-अहि० बु० स० ३ । १६

सभी गान करने वालों की रक्षा करती है इससे गायत्री कहते हैं ।

तमेत देव गायत्रं साम गायन्न त्रायत ।
यद् गायन्न त्रायत तद् गायत्र स्य गायत्रत्वम् ।।

-जै० ब्रा० ३ । ३८ । ४

जो गायत्री का गान करता है, गायत्री उसकी रक्षा करती है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गायत्री प्रोच्यते तस्यात् गायन्तं त्रायते यतः ।
गायनात् त्रायते यस्मात् गायत्री तेन कथ्यते ।

गायन करने वाले का त्राण-उद्धार करती है इसलिए इस महाशक्ति को गायत्री कहते हैं ।

गायन्तं त्रायते यस्माद् गायत्री तिस्मृता बुधै ।

-भारद्वाज स्मृति ६ ।१४६

अर्थात् "गायन करने वाले का त्राण करने वाली होने से यह गायत्री कहलाती है ।

गातार त्रायते यस्माद् गायत्री ते न गीयते ।

-स्कन्द पुराण काशी खण्ड

"गाने वाले की रक्षा करती है, इसी से इसको गायत्री कहा जाता है ।"

गायत्री प्रोच्यते तस्मात् गायंत त्रायते यतः ।
गायनात् त्रायते यस्मात् गायत्री तेन कथ्यते ।

गायन करने वाले के प्राणों का उद्धार करती है । जिसका गान करने से उत्कर्ष होता है, उसे गायत्री कहते हैं ।

गायतो मुखाद् उदपतदिति गायत्री ।

-निरुक्त ७ ।१२

सबसे प्रथम गान करते हुए परमेश्वर के मुख से जो गीत निकला वही गायत्री है ।

सर्वेषामेव वेदानां गुह्योपनिषदां तथा ।
सार भूता तु गायत्री निर्गता ब्रह्मणो मुखम् ।

सब वेदों और गुह्य उपनिषदों को सार रूप ब्रह्माजी के मुख से गायत्री मन्त्र प्रकट हुआ ।

मन्त्र छन्द की दो विशेषताएँ हैं । एक तो उसमें साधक की अन्तरात्मा के गहन मर्मस्थल से निकलने वाली दिव्य सम्वेदनाएँ घुली रहती हैं दूसरे विशिष्ट शब्द गुंथन के आधार पर रचे हुए मन्त्र जब गुनगुनाये जाते हैं तो उनसे अलौकिक ध्वनि तरंगें निसृत होती हैं । इस दुहरे समन्वय से शब्द की अणु विस्फोट स्तर जैसी प्रचण्ड शक्ति का उद्भव होता है । इसका प्रभाव साधक के समूचे व्यक्तित्व पर छा जाता है और समीपवर्ती वातावरण के विशेष रूप में तथा दूरवर्ती वातावरण को सामान्य रूप में प्रभावित करता चला जाता है । इसी मन्त्र साधना से व्यष्टि और समष्टि को समान रूप से लाभ मिलता है ।

मन्त्रों में अक्षरों का गुंथन स्वर शास्त्र की विशिष्ट प्रक्रिया के साथ सम्पन्न हुआ है । उनके उच्चारण में जो ध्वनि तरंगें निकलती हैं वे न केवल साधनकर्ता को वरन् समस्त वातावरण को प्रभावित करती हैं । किसी विशेष प्रयोजन के लिए भी उनका प्रयोग हो सकता है । जिस चूल्हे में आग जलाई जाती है वह गरम होता है । उसके निकट बैठने वाला शीत कष्ट से मुक्त होता है । चूल्हे के समीपवर्ती वातावरण में गर्मी आती है और फिर उस आग पर दाल पकाने जैसा कोई काम लेना हो तो वह भी पूरा होता है । मन्त्रानुष्ठान को चूल्हा जलाने की उपमा दी जा सकती है जिससे कई प्रयोजन एक साथ सिद्ध होते हैं ।

सर्प को संगीत शास्त्र का ज्ञान नहीं होता और न वह उस वादन के साथ गाये जा रहे गीत का भाव समझता है, इस पर भी स्वर लहरी मात्र से वह तरंगित हो उठता है । बहेलियों द्वारा बजाये हुए मधुर वादन पर मोहित होकर हिरन खड़े हो जाते हैं और उस सरसता पर मुग्ध होकर अपने तन की सुधि-बुधि गँवा बैठने से पकड़े जाते हैं । छोटे बच्चे तथा अन्य प्राणी जिन्हें संगीत के रहस्यों की जानकारियाँ नहीं हैं, वे भी उन मधुर ध्वनि तरंगों पर प्रसन्नता व्यक्त करते देखे जाते हैं । यह स्वर लहरी अपने आप में अतीव उल्लास भरी होती है और अपनी अदृश्य क्षमता से प्राणधारियों में अद्भुत हलचल उत्पन्न करती है । यह भौतिक वाद्य यन्त्रों और उनके द्वारा निसृत कानों द्वारा सुनी जा सकने वाली संगीत ध्वनियों की बात हुई । मानव शरीर रूपी वाद्य यन्त्र अपने ढंग का अद्भुत है इसमें षटचक्र और सप्तम सहस्रार कमल सात स्वर दिव्य संगीत के आधार हैं । इस वीणा का मध्य भाग मेरुदण्ड, ऊर्ध्व भाग सिर और नीचे का हिस्सा नितम्ब क्षेत्र है । नासिका द्वारा पहुँचने वाली वायु, इड़ा, पिंगला के रूप में दो उँगलियों के सहारे इससे जो दिव्य ध्वनियाँ प्रवाहित करती हैं उनका संगीत यदि सुना जा सके तो प्रतीत होगा कि नाद ब्रह्म के श्रवण का ब्रह्मानन्द कितना दिव्य एवं कितना आह्लादकारी है । इससे न केवल साधक वरन् सृष्टि का कण-कण गुंजित और प्रतिध्वनित होता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गायत्री मन्त्र तारवाद्य से निनादित जो स्वर लहरी उत्पन्न करता है उसे एक शब्द में अलौकिक ही कह सकते हैं । मेरुदण्ड में लगे कोटि-कोटि तार जब झंकृत होते हैं और चक्र संस्थानों में जब अनाहत नादों का गुंजन होता है तो उसे नादयोग के साधनकर्ता सुनते-सुनते मन्त्र मुग्ध बनकर रह जाते हैं ।

संगीत वाद्य यन्त्रों में स्वर सप्तक एक व्यवस्थित क्रम शृंखला से लगाये जाते हैं और अमुक ध्वनि बजाने के लिए उँगलियों का संचालन एक विशेष क्रम से किया जाता है । ठीक वही प्रक्रिया शरीर में लगे सूक्ष्म शक्ति स्रोतों की मूर्छना जगाकर प्रखरता उत्पन्न करने के लिए कार्यान्वित की जाती है । गायत्री मन्त्र में अक्षर इसी क्रम में जुड़े हुए हैं कि उनका उच्चारण सूक्ष्म शक्तियों के जागरण में आवश्यक गतिशीलता उत्पन्न कर सके । उसका उच्चारण क्रम भी अपने आप में ऐसा अद्भुत है कि उससे उत्पन्न गतिशीलता एक नहीं अनेक दिव्य उत्पादनों के रूप में परिलक्षित हो सकती है ।

जानुदघ्नं चिन्वीत प्रथमं चिन्वानो गायत्रियवेमं
लोकमभ्यारोहति नाभिदघ्नं चिन्वीत ।

-तै० सं० ५ ।६ ।८

गायत्री का उच्चारण मुख से लेकर नाभि पर्यन्त अपना प्रभाव विस्तीर्ण करता है ।

एक शब्दः सम्यग् ज्ञातः ज्ञामः सुष्ठु प्रयुक्तः
स्वर्गे लोके च कामयुग् भवति ।

-श्रुति

"शब्द के अर्थ का सम्यक् ज्ञान होने और उसका उचित रीति से प्रयोग करने से स्वर्गलोक और समस्त मनोरथों की पूर्ति होती है ।"

शतपथ ब्राह्मण की उक्ति है-

शब्दो वै ब्रह्म ।

अर्थात्- शब्द निश्चित रूप से ब्रह्म है ।

तीक्ष्णेषवो ब्राह्मणा हेतिमन्तो,
यामस्यन्ति शरव्यां न सा मृषा ।
अनुहाय तपसा मन्युना चोत,
दूरादेव भिन्दन्त्येनम् ।।

-अथर्व ५ ।१८ ।९

जीभ जिसकी प्रत्यंचा है, उच्चारण किया हुआ शब्द जिसका बाण है, संयम जिसका वाणाग्र है, तप से जिसे तीक्ष्ण किया गया है, आत्मबल जिसका धनुष है, ऐसा ब्राह्मण अपने मन्त्र बल से समस्त देवद्रोही तत्वों को वेध डालता है ।

श्रीमद् भागवत के छठे स्कन्द के सोलहवें अध्याय में आता है -

"शब्द ब्रह्म परब्रह्म मागेभ्यां शाश्वती तनु"

अर्थात् 'शब्द ब्रह्म' और 'परब्रह्म' यह दोनों ही भगवान के नित्य और चिन्मय शरीर हैं ।

ब्राह्मण ग्रन्थों में, समस्त लोकों में संव्याप्त और उसका निर्धारण नियन्त्रण करने वाली प्रकृति सत्ता को गायत्री कहा गया है-

"तमेत देव साम गायन्न त्रायत ।
यद् गायन्न त्रायत तद् गायत्रस्य गायत्रत्वम् ।

-जै० उ० ३ ।३८ ।४

अर्थात् समस्त लोकों में संव्याप्त साम गान को ऋषियों ने गायत्र्य कहा है ।

वाणी का स्थान मुख है । इसलिए मुख को भी गायत्री कहा गया है ।

मुखं गायत्री । *-कौ० ११ ।२*
मुखमेव गायत्री । *-ताण्ड० ७ ।३ ।७*

मुख भी गायत्री ही है ।

वाग्वै गायत्री; गायत्री वा इदं सर्वंभूतम् ।

-शतपथ

वाणी गायत्री है । सम्पूर्ण विश्व गायत्री से ओतप्रोत है ।

गायत्री की शब्द-शक्ति लय एवं ताल शक्ति से उत्पन्न ध्वनि प्रवाह के प्रभाव परिणाम को देखते हुए उसे वाक् देवी के नाम से पुकारा गया है । शब्द शक्ति की महिमा तथा गायत्री से निसृत ध्वनि प्रवाह की चर्चा शास्त्रों में इस प्रकार आती है ।

गायत्री वा इद ꣳ सर्वं भूतं यदिदं किंचवाग्वै ।
गायत्री वाग्वा इद ꣳ सर्वं भूतं गायत्री च त्रायत्रे च ।

-छान्दोग्य -३

"यह जो कुछ है, निश्चय ही गायत्री है । गायत्री ही समस्त जगत की सार और वाणी है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वाणी ही सारे संसार को गाती और बचाती है ।

गायत्री में सन्निहित शब्द शक्ति के साथ जो ब्रह्म वर्चस् जुड़ा हुआ है उसका लाभ श्रद्धापूर्वक साधना करने वाला सहज ही उठा लेता है ।

गायत्री की ऐसी विशेषताओं को देखते हुए श्रद्धा भरा साधक स्तवन करता है ।

सच्चिदानन्द रूपां तां गायत्री प्रतिपादिताम् ।
नमामि ह्रीं मंत्री देवी धियो यो न : प्रचोदयात् ।।
ततः परा-परा शक्तिः परमात्वे हि गीयसे ।
इच्छा शक्तिः क्रिया शक्ति र्ज्ञान शक्ति स्त्री शक्तिदा ।।
त्वमेव ब्रह्मणोलोके अमर्त्यानुग्रह कारिणी ।
सप्तर्षि प्रिति जननी त्रिपदा वहु वर प्रदा ।।
आदि शक्ते जगत्माता भक्तानुग्रह कारिणी ।
सर्वत्र कादिके अनन्तेश्ची संध्येतेनमो प्रस्तुते ।।
त्वमेव संध्या गायत्री सावित्री च सरस्वती ।

-गायत्री स्तोत्र

अर्थात्- गायत्री सत्चित, आनन्द स्वरूपा, बीज वाली, सद्बुद्धि को प्रेरित करने वाली, पराशक्ति, इच्छाशक्ति, ज्ञानशक्ति, क्रियाशक्ति शक्तिदात्री नारी है । ब्रह्मलोक निवासिनी, देव अनुग्रह करने वाली, सत ऋषियों की जननी, त्रिपदा वरदायिनी, आदिशक्ति, विश्व माता, भक्तों पर अनुग्रह करने वाली, सर्वव्यापी, अनन्त और संध्या गायत्री ही है । वही सावित्री और सरस्वती भी है ।

मूर्धा ब्रह्मा शिखान्तो विष्णुर्ललाटं रुद्रश्चक्षुषी चन्द्रादित्यौ कर्णौ शुक्रबृहस्पती नासापुटे अश्विनौ दन्तोष्ठावुभे सन्ध्ये मुखं मरुतः स्तनौ वस्वादयो हृदयं पर्जन्य उदरमाकाशो नाभिरग्निः कटिरिन्द्राग्री जघनं प्राजापत्यमूरू कैलासमूलं जानुनी विश्वेदेवौ जंघे शिशिरः गुल्फानि पृथिवीवनिस्पत्यादीनि नखानि महती अस्थीनि नवग्रहा असृक्के तुर्मासमृतुसन्धयः कालद्वमास्फालनं संवत्सरोनिमेषोऽहोरात्रमति वाग्देवी गायत्रीं शरणमहं प्रपद्ये ।

य इदं गायत्रीरहस्यमधाते तेन ऋतसहस्त्रभिष्टं भवति । य इदं गायत्रीरहस्यमधीते विसकृत पापं नाशयति । सर्वान् वेदानधीतो भवति । सर्वेषु तीर्थेषु स्नातो भवति ।

-गायत्री रहस्योपनिषद

गायत्री वाणी की अधिष्ठात्री देवी है । उसका सिर ब्रह्ममय, शिखान्त विष्णु, ललाट रुद, दोनों नेत्र सूर्य, चन्द्र, कानों के दो छेद- शुक्राचार्य, वृहस्पति, नाक के दो छेद, दोनों अश्विनी कुमार,दाँत-होठ, दोनों संध्याए मुख मरुत, स्तन वसु, हृदय मेघ, पेट आकाश, नाभि, अग्नि, कटि-इन्द्र, जंघा-प्रजापति, उरु-कैलाश, घुटने-विश्वदेव, जंघा-शिशिर, गुल्फ-पृथ्वी, नख महतत्व, अस्थि नवग्रह, आँतें केतु माँस ऋतु सन्धि, दोनों काल वर्ण निमेष दिन रात ।

ऐसी विराट् ब्रह्म स्वरूपिणी महाशक्ति गायत्री की शरण में अपने को समर्पित करता हूँ ।

इस गायत्री गुह्य रहस्य का जो अवगाहन करता है सौ हजारों यज्ञ करने वाले की तरह श्रेयाधिकारी बनता है । उसके पाप नष्ट हो जाते हैं । जिसने यह रहस्य जाना उसने मानो समस्त वेदों का अध्ययन कर लिया । सब तीर्थों में स्नान कर लिया ।

गायत्री अनुग्रह की प्राप्ति पात्रता

गायत्री मन्त्र सर्वजनीन- सर्वउपास्य मन्त्र है । उसकी उपासना कर कोई भी व्यक्ति वे सभी लाभ उठा सकता है जिनकी शास्त्रों में चर्चा की गई है । अथर्ववेद में आयु, प्राण, प्रजा, पशु, कीर्ति, धन और ब्रह्मवर्चस् प्राप्ति के लिए गायत्री उपासना का स्पष्ट निर्देश आया है पर उसके साथ गायत्री के इन दिव्य वरदानों के लिए पात्रता की शर्त भी जुड़ी हुई है । उस तथ्य का विवेचन नागाधिराज हिमिवान् एवं भगवती के संवाद प्रसंग में बड़ी सुन्दरतापूर्वक किया गया है ।

मार्गासजयो मे विख्याता मोक्ष प्राप्तो नगाधिप ।
कर्म्म योगो ज्ञान योगो भक्ति योगश्च सत्तम ।।
गुणभेदान्मनुष्याणां सा भक्ति स्त्रिविधामता ।
पर पीड़ा समुद्दश्य दम्भं कृत्वा पुरः सरम् ।।
मात्सर्य क्रोध युक्तो यस्तस्थ भक्ति स्तुतमसी ।
पर पीड़ादि रहितः स्वकल्याणार्थ मेव च ।।
नित्यं सकामो हृदयं यशोऽर्थी भोग लोलुपः ।
तत्तत्फलसमावाप्ल्यै मामुपास्तेऽति भक्तितः ।।
भेद बुद्धचर तु.मां स्वस्मादन्यांजानाति पामरः ।
तस्य भक्तिः समाख्याता नगाधिप तु राजसी ।।
परमेशार्यणं कर्म्म पाप संक्षाल नाय च ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वेदोक्तत्वाध्वश्य तत्कर्त्तव्य तु मया निशम् ।।
इति निश्चित बुद्धिस्तु भेद बुद्धि मुपाश्रितः।
करोति प्रीतये कर्म भक्तिः सा नग सात्त्विकी ।।

अर्थ- मेरी उपासना करने के तीन मार्ग सुविख्यात हैं । हे नगाधिप ! इन तीनों मार्गों से मेरी आराधनोपासना करने पर मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है । हे सत्तम ! वे तीन मार्ग कर्मयोग, ज्ञानयोग, और भक्तियोग इन तीन नामों से प्रसिद्ध हैं । गुणों के भेद होने से वह मनुष्यों के द्वारा की हुई भक्ति भी तीन प्रकार की होती है । दूसरे को पीड़ा पहुँचाने के उद्देश्य से दम्भपूर्वक मात्सर्य और क्रोध से युक्त होकर जो कोई मनुष्य मेरी भक्ति किया करता है, वह उसकी भक्ति तामसी कही जाती है, क्योंकि उसमें तमोगुण की प्रधानता रहती है । दूसरों को पीड़ा देने की भावना से रहित होकर केवल अपने ही कल्याण करने की कामना वाला, यश प्राप्त करने का इच्छुक एवं भोगों के भोगने का लालची मनुष्य अपने समुदिष्ट फलों की प्राप्ति के लिए जो भक्तिपूर्वक मेरी उपासना किया करता है और भेद की बुद्धि से मुझे वह पामर अपने से अन्य ही समझता है । हे नगाधिराज ! उसकी भक्ति राजसी कही गई है । क्योंकि इस प्रकार की भक्ति और आराधना में रजोगुण की प्रधानता विद्यमान रहा करती है । क्योंकि सर्वदा अपने सुखोपभोग प्राप्त करने की ही भावना इस उपासना का एक मात्र लक्ष्य होता है । जो कर्म परात्पर के निमित्त किया जाता है, अर्थात् उसका कोई भी फल अपने लिए न चाहकर जो कुछ भी हो वह सब अपने आराध्य के ही चरणों में समर्पित कर दिया जावे और केवल पापों के पक्षालन होने से अपनी आत्मशुद्धि की भावना रहे और उपासना करने वाले के हृदय में ऐसी निष्ठा बनी रहे कि यह वेदोक्त विधान का करना मेरा परम कर्तव्य है, अतएव मुझे यह अनवरत करना ही चाहिये । ऐसी बुद्धि का उपाश्रेय करके देव के प्रीत्यर्थ जो कर्म अर्थात् आराधना की जाती है, जिसमें एक प्रकार का हृदय से सुदृढ़ निश्चय बना रहता है, उस देव भक्ति को सात्विक कहा जाता है, क्योंकि इसमें सतोगुण की प्रधानता रहती है और केवल अपने समाराध्य की प्रीति के लिए ही यह कर्तव्य कर्म समझकर की जाती है और इसके द्वारा अपनी आत्मशुद्धि इष्टदेव की कृपा से हो जाने की भावना सुदृढ़ रहती है ।

इस वर्णन से स्पष्ट है कि साधक का अन्तःकरण जितना निर्मल और चरित्र कितना उज्ज्वल होगा उसी अनुपात से उसे दिव्य अनुग्रह भी उपलब्ध होगा ।

गायत्री का दिव्य अनुग्रह किसे प्राप्त होगा, इस रहस्य का सुबोध विवेचन करने के लिए शास्त्रों में अनेक अलंकारिक उद्धरण तथा कथा प्रसंग मिलते हैं । इनके आधार पर गायत्री के रहस्यमय तत्वज्ञान को समझने तथा उसका उपयोग किस प्रकार किया जाय यह समझने में बड़ी सहायता मिलती है । उदाहरण के लिए गायत्री के २४ अक्षरों को दक्ष प्रजापति ब्रह्मा की २४ कन्यायें बताया गया है । इनका पाणिग्रहण धर्म ने किया, ऐसा उल्लेख मिलता है । इसमें यह संकेत छुपा हुआ है कि धर्मात्मा व्यक्ति ही इस महामन्त्र की २४ उपलब्धियों से लाभान्वित हो सकता है-

चतुर्विंशति कन्याश्च सृष्टवान दक्ष उत्तमः ।
श्रद्धा, लक्ष्मी र्ध तस्तुष्टिः पुष्टिमेधा क्रियातथा ।।
बुद्धिर्लज्जा बपु : शान्ति ऋद्धि कीर्तिस्त्रयोदशी ।
पत्यर्थं प्रति जग्राह धर्मोदाक्षायणः प्रभु ।।

-गरुण पुराण

"दक्ष ने चौबीस कन्याओं को जन्म ग्रहण कराया था जिनके शुभ नाम श्रद्धा, लक्ष्मी, धृति, तुष्टि, पुष्टि, मेवा, क्रिया, बुद्धि, लज्जा, बपु, शान्ति, ऋद्धि, कीर्ति, आदि थे । इनको दाक्षायण प्रभु धर्म ने अपनी पत्नियाँ बनाने के लिए ग्रहण किया था ।

देवी भागवत के अश्वपति उपाख्यान में गायत्री महाशक्ति के अवतरण तप, साधन, एवं अनुदान का वर्णन इस प्रकार आता है -

ततः सावित्र्युपाख्यानं तन्मे व्याख्यातुमर्हसि ।
पुराकेन समुद्भूता सा श्रुता च श्रुतेः प्रसूः ।
केप वा पूजिता लोके प्रथमे कंश्च वापरे ।
ब्रह्मणा वेद जननी प्रथमे पूजिता मुने ।
द्वितीये च वेदगणैस्तत्पश्चा द्विदुषां गणैः ।
तदा चाश्च पतिर्भूप : पूजया मास भारते ।
तत्पश्चात्पूजयामा सुर्वर्णाश्चत्वार एव च ।।

-देवी भागवत सावित्री उपाख्यान

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

"नारदजी ने भगवान से पूछा-प्रख्यात है कि श्रुतियाँ गायत्री से उत्पन्न हुई हैं । कृपा करके उस गायत्री की उत्पत्ति बताइये ।"

भगवान ने कहा वेद जननी गायत्री की उपासना सर्वप्रथम ब्रह्मा जी ने की । फिर देवता उनकी आराधना करने लगे । राजा अश्वपति ने विशेष रूप से उसकी तपश्चर्या की । फिर तो चारों ही वर्ण उस गायत्री की उपासना में तत्पर हो गये ।

महाभारत वन पर्व में भगवती सावित्री का अग्नि होत्र की अग्नि में से प्रकट होने और राजा की साधना युक्त उपासना से प्रसन्न होकर उसे वरदान देने की चर्चा इस प्रकार आती है -

रूपिणी तु तदा राजन् दर्शयामास तं नृपम् ।
अग्नि होत्रात् समुत्थाय हर्षेण महतान्विता ।
उवाच चैनं वरदा वचनं पार्थिवं तदा ।
सा वतमश्वपति राजन् सावित्री नियमेस्थितम् ।

-महाभारत वनपर्व

राजन् ! तब मूर्तिमती सावित्री देवी ने अग्निहोत्र की, अग्नि से प्रकट होकर बड़े हर्ष के साथ राजा को प्रत्यक्ष दर्शन दिया और वर देने के लिए उद्यत हो अनुष्ठान के नियमों में स्थित उस राजा अश्वपति से इस प्रकार कहा-

ब्रह्मचर्येण शुद्धेन दमेन नियमेन च ।
सर्वात्मा च भक्तया च तुष्टास्मि तव पार्थिव ।

सावित्री बोली- राजन् ! मैं तुम्हारे विशुद्ध ब्रह्मचर्य, इन्द्रिय संयम, मनोनिग्रह तथा सम्पूर्ण हृदय से की हुई भक्ति के द्वारा बहुत सन्तुष्ट हुई हूँ ।

इन उदाहरणों से स्पष्ट है कि गायत्री शक्ति का अनुग्रह सच्चरित्र, संयमी और परोपकारी व्यक्तियों को ही प्राप्त होता है ।

गायत्री की दो भुजायें, योग और तप

मनुष्य संपत्तियों से नहीं विभूतियों से ही सुखी और समुन्नत हो सकता है । गुण-कर्म, स्वभाव को उच्चस्तरीय बनाये बिना, कर्त्तव्य को आदर्शवादी बनाये बिना आत्मिक उत्कर्ष को प्राप्त कर सकना तो दूर रहा, प्रचुर संपत्ति प्राप्त कर लेने पर भी चैन से नहीं रहा जा सकता । व्यक्ति की अन्त:चेतना यदि निकृष्ट स्तर की बनी रहे तो कुबेर जैसा धनी और इन्द्र जैसा समर्थ होते हुए भी उसे निरन्तर असंतोष एवं विक्षोभ की आग में ही जलते रहना होगा, अस्तु मनुष्य जीवन की सबसे बड़ी सम्पदा, सबसे बड़ी सफलता आत्मिक उत्कर्ष ही है । इस सफलता को प्राप्त कर कोई व्यक्ति बड़ा आदमी भले ही न बन पाये पर महान तो निश्चित रूप से बन ही जाता है ।

यह महानता परलोक रूप के ही लिये उपयोगी नहीं है इस लोक में भी उपार्जनकर्ता को देवोपम स्तर पर ले जाकर रख देती है । भले ही उसके पास भौतिक साधन स्वल्प हों, पर उसके स्थान पर जो आत्मिक कमाई उसके पास संग्रहीत रहती है वह क्षणभंगुर सम्पत्तियों की तुलना में हजारों, लाखों, गुना हर्षोल्लास, गौरव, वर्चस्व प्रदान करती है । ऐसा व्यक्ति जहाँ भी रहता है वहीं स्वर्गीय वातावरण उत्पन्न करता है । उसके भीतर की सुगन्ध चन्दन वृक्ष की तरह दूर-दूर तक फैलती है और समीपवर्ती झाड़-झंखाड़ों को भी सुगन्ध युक्त कर देती है । मनुष्य में देवत्व का उदय कोई कल्पना नहीं है । स्वयं प्रकाशित और समीपवर्ती क्षेत्र को प्रकाशित करने वाला व्यक्ति सच्चे अर्थों में देव है । उसे किसी देवलोक में जाने की अपेक्षा नहीं रहती क्योंकि जहाँ-कहीं भी उसका रहना होता है, वहाँ सहज ही देव वातावरण बनकर खड़ा होता है । अध्यात्म किसी को स्वर्ग में भेजना नहीं वरन् साधक को कहीं भी स्वर्ग का सृजन कर लेने की सामर्थ्य प्रदान करता है । अस्तु, हमें अध्यात्म की गरिमा समझनी चाहिए और उसकी उपलब्धि के लिए धन, बल, शिक्षा, स्वास्थ्य आदि संग्रह करने में भी अधिक ध्यान देना चाहिए । शरीरगत वासनाएँ और मनोगत तृष्णाएँ अपनी तृप्ति माँगती हैं और उसके लिए हमारा सारा समय, श्रम एवं मनोयोग हथिया लेती है । आत्मा की भूख और पुकार की और नितान्त उपेक्षा बढ़ती जाती हैं, उसके क्षुधार्त रहने से कितनी क्षति उठानी पड़ती है उसे हम वासना, तृष्णा के गुलाम नर कीटक देख समझ ही नहीं पाते । हमारी दृष्टि और दिशा बदली जानी चाहिए ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मनुष्य की दृष्टि और दिशा जिस आधार पर बदलती है उसी का नाम अध्यात्म है । यों सुख, शान्ति, सफलता और समुन्नति के लिए मनुष्य बाहरी प्रयासों में ही उलझा रहता है । वे आवश्यक भी हैं पर सब कुछ यही नहीं है । अध्यात्म मनुष्य का इस वस्तुस्थिति से साक्षात्कार कराता है कि सुख समुन्नति का केन्द्र जो अपने भीतर है, उस पर केन्द्र पर पहुँच कर आत्मिक उत्कर्ष का मार्ग अपना कर मनुष्य महानता, देवत्व और ईश्वरीय सामर्थ्य से सम्बन्ध सूत्र जोड़ लेता है, जगा लेता है ।

समूचा अध्यात्म देखा जाय तो गायत्री का ही विस्तार है । अध्यात्म दर्शन के आद्यग्रंथ वेद ही कहे जाते हैं और वेदों का मूल गायत्री मन्त्र है । गायत्री में वे समस्त तत्व निहित हैं जिन्हें अपनाकर कोई व्यक्ति महान् बन सकता है और देवताओं की स्थिति में पहुँच सकता है ।

गायत्री के एकमुखी चित्र में दो भुजाएँ चित्रित हैं । ये दोनों भुजाएँ अध्यात्म के दो पक्षों को इंगित करती हैं । अध्यात्म के इन पहलुओं को उसकी दो भुजाएँ भी कह सकते हैं और वे दो भुजाएँ हैं एक योग दूसरी तप । योग का अर्थ है अपनी कामनाएँ लिप्साएँ, तृष्णाएँ, वासनाएँ सब कुछ ईश्वर रूपी समष्टि में, उत्कृष्ट आदर्शवादिता में जोड़ देना, व्यक्तिवाद को समूहवाद में बदल देना । तृष्णा के अनगढ़ लोहे को संयम, अपरिग्रह की आग में पका कर बहुमूल्य लौह भस्म बना देना । मनोकामनाओं को पूर्ण करने के लिए उन्हें समाप्त अथवा परिष्कृत करने के लिये अध्यात्म का सहारा लिया जाता है । तृष्णाएँ असीम है । एक व्यक्ति की कामनाएँ समस्त देवता मिलकर भी पूरी नहीं कर सकते । संसार में जितनी सामग्री है वह एक व्यक्ति की इच्छाएँ पूरा कर सकने में भी स्वल्प हैं । एक की पूर्ति होते ही नई हजार उठ खड़ी होती हैं । उनकी प्राप्ति नहीं सुरक्षा भी अत्याधिक कष्टसाध्या है । फिर वह जंजाल इतना बड़ा है कि उलझा हुआ व्यक्ति जीवन-लक्ष्य की ओर चलना तो दूर अपनी व्यस्तता के कारण उस दिशा में कुछ सोच तक नहीं सकता । अस्तु आत्म-कल्याण की आवश्यकता अनुभव करने वाले का पहला कदम न्यूनतम निर्वाह के साधन मिलने पर सन्तुष्ट रहना और अपनी बची हुई शक्तियों को सद्भावनाओं एवं सत्प्रवृत्तियों के अभिवर्धन में लगाना है । अध्यात्म का प्रतिफल मनोकामनाओं की पूर्ति नहीं वरन् उस अनावश्यक जंजाल की मनःक्षेत्र में जड़ कट जाना है । ऐसे ही लोग आप्तकाम कहलाते हैं । उन्हीं को अपनी दिव्यता विकसित करने का, अन्तरात्मा को निर्मल बनाने का अवसर मिलता है । ऐसे लोगों को ही अपने भीतर ईश्वर की झाँकी होती है । वे ही अपना और दूसरों का कल्याण कर सकने में समर्थ बनते हैं ।

उपर्युक्त पंक्तियों में अध्यात्म की एक धारा योग का उल्लेख हुआ । नाला अपने आपको गंगा में मिलाकर गंगा बनता है, भक्त अपनी समस्त आकाँक्षाएँ ईश्वर के आदेशों में घुलाकर भगवान बनता है । वह ईश्वर को अपनी इच्छानुसार नहीं नचाना चाहता वरन् उसकी इच्छानुसार नाचना चाहता है । अध्यात्म की दूसरी धारा है तप । तप का अर्थ है तपना, कष्ट सहना । कुछ लोग धूप में खड़ा होना, ठण्ड में नहाना, नंगे बदन, नंगे पाँव रहना, मौन रहना, अन्न जल ग्रहण न करना, आदि शारीरिक कष्ट सहन करने को तप समझते हैं और सोचते हैं इन बातों से दया-द्रवित होकर ईश्वर हमारे प्रति कृपालु हो जायेंगे । ऐसा सोचना ईश्वर जैसी महान् और नियामक सत्ता के सम्बन्ध में ओछा दृष्टिकोण अपनाना है । शारीरिक कष्ट सहने वालों से, शरीर को हठपूर्वक जलाने वालों से ईश्वर को क्यों और क्या सहानुभूति हो सकती है ? तप के नाम पर इन दिनों इसी प्रकार की अन्धमान्यताओं का बोलबाला है ।

तप का वास्तविक अर्थ है- संसार में संव्याप्त पीड़ा और पतन की निवृत्ति के लिये अपनी सुख सम्पदा का बड़े से बड़ा भाग दे डालना । दूसरों के कष्ट अपने कन्धों पर ओढ़ लेना, अपने सुख दूसरों पर बिखेर देना । स्वभावतः दुख बँटाने वाले लोग, सुख बाँटने वाले लोग भौतिक दृष्टि से गरीबी जैसे स्तर पर निर्वाह करते हैं । अमीरी का उपभोग तो केवल वे पाषाण हृदय कर सकते हैं जिन्हें दूसरों के कष्टों से कोई सहानुभूति नहीं । जब समस्त मानव

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जाति के लोग हमारे कुटुम्बी हैं तो हमारा निर्वाह स्वभावतः अपने भाइयों के स्तर पर होना चाहिए । गरीबी में रहने से न किसी का स्वास्थ्य खराब होता. है और न अन्य दिशा में हानि होती है । ऋषि जीवन इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है ।

यही सच्चा अध्यात्म है - गायत्री का तत्वदर्शन है । जिनके मन में इस तरह की उमंग उठती अनुभव हो और जो इस दिशा में कदम उठाने के लिए यत्नशील हों उन्हें ही सच्चा अध्यात्मवादी गायत्री का सच्चा उपासक कहा जा सकता है ।

आदर्शों की चर्चा से नहीं उन्हें जीवन में उतारने से काम चलता है । हमें ध्यान रखना चाहिए कि अगणित व्यक्तिगत दोष, दुर्गुणों को अलग-थलग करके एक-एक करके नहीं हटाया जा सकता है । रानी मधुमक्खी जहाँ रहती है वहाँ पूरा शहद का छत्ता जमा रहता है और अन्य मक्खियों का पूरा झुण्ड वहाँ जमा रहता है । समस्त दोष, दुर्गुण, लोभ और मोह के इर्द-गिर्द जमा रहता है । संकीर्ण, स्वार्थपरता की रानी मक्खी जब तक उड़ेगी नहीं तब तक दुर्भावनाओं और दुष्प्रवृत्तियों का छत्ता ज्यों का त्यों बना रहेगा । विचार किया जाना चाहिए कि पेट और प्रजनन के लिए, वासना और तृष्णा के लिए, सर्वतोभावेन समर्पित हमारा जीवन क्या परमेश्वर के लिए, आदर्शों के लिए नियोजित किया जा सकता है । स्मरण रखा जाना चाहिए कि जितना स्वार्थ पर अंकुश लगाया जा सकेगा उतना ही परमार्थ बन पड़ेगा । जितना अपने गुण कर्म स्वभाव का परिष्कार किया जा सकेगा उतना ही स्वविकसित होगा । यह आध्यात्मिक आस्थाएँ बढ़ाई जा सकें तो अपने पास इतना वैभव दृष्टिगोचर होगा जितना कि देवताओं के पास होने की कल्पना की जाती है ।



Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

परा-अपरा विधा की अधिष्ठात्री महाशक्ति-गायत्री तत्वदर्शन

गायत्री उपासना का बड़ा महत्व एवं माहात्म्य है । उसे आत्म-कल्याण और बाह्य जीवन में अपरिमित विभूतियाँ प्राप्त करने का आधार बताया गया है । आत्म-शक्ति बढ़ने से मनुष्य की भौतिक प्रतिभा का बढ़ना स्वाभाविक है । आत्म-शक्ति बढ़ाने के लिए उच्चतम चरित्र और व्यवस्थित जीवन-क्रम की तो आवश्यकता है ही, साथ ही गायत्री उपासना जैसी तपश्चर्याओं को भी इस सन्दर्भ में अविच्छिन्न रूप से जुड़ा हुआ समझना चाहिए । आत्म-बल अभिवर्धन के लिए जिन उपासनाओं का प्रतिपादन किया गया है उनमें गायत्री सर्वश्रेष्ठ है ।

उपासना से पूर्व गायत्री का तात्विक स्वरूप जानना आवश्यक है । वस्तुस्थिति को जाने बिना कार्य करने लगना एक प्रवंचना मात्र है, उससे अभीष्ट प्रयोजन सिद्ध नहीं होता । इसलिए साधना मार्ग पर चलने वाले प्रत्येक व्यक्ति को अपने मार्ग की दिशा एवं तात्विकता को भी समझना चाहिए । अनजान रहने पर न तो पूरा विश्वास होता और न पक्की श्रद्धा जमती है । अज्ञान एक अन्धकार है जिसमें पग-पग पर आशङ्का की सम्भावना बनी रहती है । ऐसी मनःस्थिति में आध्यात्मिक सफलता का पथ कण्टकाकीर्ण ही बना रहता है ।

रामायण में कहा गया है-

जाने बिनु न होई परतीती ।
बिना परतीत होई किमि प्रीती ।।
बिना प्रीति किमि भक्ति दृढ़ाई ।
जिमि खगेश जल की चिकनाई ।।

आवश्यक जानकारी के बिना प्रतीति अर्थात् विश्वास में दृढ़ता नहीं आती । जब प्रतीति (विश्वास) ही परिपक्व नहीं तो प्रेम, लगन, निष्ठा, तत्परता कैसे उत्पन्न हो । जब सच्ची प्रीति ही नहीं तो भक्ति किस बात की । पानी में थोड़ी-सी चिकनाई (तेल) डालने पर वे परस्पर मिलते नहीं । तेल ऊपर ही तैरता रहता है, उसी प्रकार वस्तुस्थिति का सम्यक ज्ञान हुए बिना उपासना क्रम का अन्तः करण में गहरा प्रवेश नहीं हो पाता । अस्थिर मति और भक्ति-रहित अन्तःस्थिति से किया हुआ पूजा-पाठ कोई विशेष फलप्रद नहीं होता, इसलिए मनीषियों ने साधना के लिए जितना बल दिया है उतना ही उसका तत्वज्ञान जानने के लिए भी कहा गया है । ज्ञान की उपेक्षा कर केवल कर्मकाण्ड करते रहने से अभीष्ट प्रयोजन पूरा नहीं होता ।

इस तथ्य को स्पष्ट करने के लिए 'शतपथ ब्राह्मण' में एक मार्मिक उपाख्यान का उल्लेख मिलता है । राजा जनक तो गायत्री उपासना से पूर्णता को प्राप्त कर सके, पर उनका पुरोहित जो उनसे भी अधिक पूजा-पाठ में संलग्न रहता था उसे कुछ भी फल प्राप्त न हुआ वरन् पशु की योनि में चला गया ।

काण्डिका इस प्रकार है-

एतद्धैव तज्जनकौद्दालेहो बुडिलमाश्वतं राश्विमुवाच यन्तु हो तद गायत्री विदबूथाऽअथ कथꣳ हस्ती भूतोव्वह सामि मुखह्यस्या सम्प्राशन विवाञ्च करेति हो वाच । तस्याऽग्निरेव मुखं यदि हयाऽअपि वह्नि वाग्नावभ्यादधति सर्व मेव तत्सनन्द हत्येव वꣳहै वैव विद्यद्यपि वह्निव पापङ्करोति सर्वमेव सत्सरसा शुद्धः पूतोऽजरोमृतः संभवति ।

-शतपथ

अर्थात् राजा जनक के पूर्व जन्म के पुरोहित 'बुडिल' मरने के उपरान्त अनुचित दान लेने के पाप में हाथी बन गये । किन्तु राजा जनक ने विज्ञान तप किया और उसके फल से वे पुनः राजा हुए । राजा ने हाथी को उसके पूर्व जन्म का स्मरण दिलाते हुए कहा-आप तो पूर्व जन्म में कहा करते थे कि मैं गायत्री ज्ञाता हूँ ? फिर अब हाथी बनकर बोझ क्यों ढोते हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हाथी ने कहा-मैं पूर्व जन्म में गायत्री का मुख नहीं समझ पाया था । इसलिए मेरे पाप नष्ट न हो सके ।

गायत्री का प्रधान अङ्गमुख अग्नि है । उसमें जो ईंधन डाले जाते हैं, उन्हें अग्नि भस्म कर देती है । वैसे ही गायत्री का मुख जानने वाला आत्मा-अग्निमुख होकर पापों से छुटकारा पाकर अजर-अमर हो जाता है ।

मुख के तात्पर्य तत्सम्बन्धी प्रशिक्षण में आवश्यक जानकारी से है । ज्ञान को मुख से कहा जाता है । गायत्री को 'गुरु मन्त्र' कहते हैं । गुरु मन्त्र से उस मन्त्र का प्रयोजन है जो विस्तारपूर्वक विवेचना के साथ शिष्य के मस्तिष्क एवं अन्तः करण में उतारा जाय । स्पष्ट है कि इस महाविद्या की उपासना करना ही पर्याप्त नहीं वरन् उसका आवश्यक विवेचन, विश्लेषण भी हृदयङ्गम करना आवश्यक है ।

गायत्री क्या है ? इस सम्बन्ध में शास्त्रकारों ने बहुत कुछ कहा है । विश्व-ब्रह्माण्ड के निर्माता, संचालक एवं नियामक परब्रह्म परमात्मा की चेतना एवं क्रिया-शक्ति का नाम 'गायत्री' है । उसके साथ जिस वैज्ञानिक विधि के साथ सम्पर्क स्थापित किया जा सकता है उसका नाम 'उपासना' है । गायत्री उपासना-अर्थात् वह क्रिया जिसके द्वारा मनुष्य अपनी अन्तःचेतना को परा-शक्ति के साथ जोड़कर ब्रह्मवर्चस के अनुपम लाभ का अधिकारी बनता है ।

गायत्री क्या है? कैसे उत्पन्न हुई ? उसका प्रयोजन तथा स्वरूप क्या है ? इन प्रश्नों का उत्तर इस प्रकार मिलता है-

सर्व वै देवा देवीमयतस्थु कासि त्वं महादेवी । सा ब्रवीदह ब्रह्मरूपिणी, मनः प्रकृति पुरुषात्मक जगदत्पन्नम् ।

-श्रुति

सब देवगणो भगवती महाशक्ति के पास गये और उन्होंने पूछा-"हे भगवती आप कौन हैं ? इस पर भगवती ने कहा-"मैं ब्रह्मरूपिणी हूँ । मुझसे ही यह प्रकृति पुरुषात्मक संसार हुआ है ।"

स वै नैव रेमे । तस्मादेकाकी न रमते, स द्वितीयमैच्छत । सहैतावानास यथा स्त्रीपुमासौ संपरिष्वक्तो इस ममेवात्मानं द्वेधापात यत्ततः पतिश्च पत्नी चाभवताम् ।

-महोपनिषद्

"वह रमण नहीं कर सका क्योंकि अकेला कोई भी रमण नहीं कर सकता । उसने दूसरों की इच्छा की । वह ऐसा था जैसे स्त्री-पुरुष मिले हुए होते हैं । उसने अपने इस रूप के दो भाग किये, जो पति और पत्नी हो गये ।"

न हि क्षमस्तथात्मात्र सृष्टि सृष्टुं तया विना ।

-देवी भा० १ ।२ ।९

"बिना तुम्हारी शक्ति के आत्मदेव सृष्टि की रचना नहीं कर सकते ।"

देवीह्येकाऽयम् आसीत् । सैव जगदण्डमसृजत्------तस्या एवं ब्रह्मा अजीजनत् । विष्णुरजीजनत्---सर्वमजीजनन्---सवा पराशक्तिः ।

-वृहवृचोपनिषद्

"सृष्टि के आरम्भ में वह एक ही दैवी शक्ति थी । उसी ने ब्रह्माण्ड बनाया, उसी से ब्रह्मा उपजे । उसी ने विष्णु रुद्र उत्पन्न किये । सब कुछ उसी से उत्पन्न हुआ । ऐसी है वह पराशक्ति ।"

कारणत्वेन चिच्छक्त्या रजस्सत्वतमोगुणैः ।
यथै व वटबीजस्थः प्राकृतोऽयं महाद्रुमः ।।

"वटबीज में जिस प्रकार महावृक्ष सूक्ष्म रूप से विद्यमान रहता है और उत्पन्न होकर एक महावृक्ष के रूप में परिणत हो जाता है, वैसे ही प्राकृत ब्रह्माण्ड चित्-शक्ति से उत्पन्न होता है ।"

आत्मा वा इदमेक ऐवाग्र आसीत् नानयत् किंचन मिषत् प्रज्ञा प्रतिष्ठा ।

-ऐतरेयोपनिषद्

"सृष्टि से पहले आत्म-शक्ति के अतिरिक्त अन्य कुछ न था ।"

आसीदेवेदमग्र आसीत् तत्सम भवत् ।

-छान्दोग्य

"सृष्टि से पहले चित्-शक्ति ही सूक्ष्म सत्ता से विराजमान रहती है ।"

निर्दोषो निरविष्ठेयो निरवद्यः सनातनः ।
सर्वकार्यकरी साहं विष्णोरव्यय रूपिणः ।।

-लक्ष्मी तन्त्र

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वह ब्रह्म जो निर्विकार, निरविष्ठ, निरवद्य, सनातन एवं अव्यय है, उनकी सर्व कार्यकारिणी शक्ति तो मैं ही हूँ ।

या परमास्तु लोकेषु ब्रह्मशक्ति विराजते ।
सूक्ष्मा च सात्विकी चैत्र गायत्रीत्यभिधीयते ।।

-गायत्री संहिता

सब लोकों में विद्यमान् जो सर्वव्यापक परमात्मा की शक्ति है, वह अत्यन्त सूक्ष्म एवं सतोगुणी प्रकृति में निवास करती है । वह चेतन-शक्ति गायत्री है ।

निर्दोषो निधिष्ठेयो निरवद्यस्सनातनः ।
निष्णर्नारायणः श्रीमान् परमात्मा सनातनः ।।
षाड्गुण्यविग्रहो नित्यं परं ब्रह्माक्षरं परम् ।
तस्य मां परमां शक्ति नित्यं तद्धर्मधर्मिणीम् ।।
सर्व भावानुगां विद्धि निर्दोषामनपायिनीम् ।
सर्व कार्य करी साहं विष्णोरध्यय रूपिणः ।।
व्यापारस्तस्य साहमास्मि न संशयः ।
मयाकृतं हि यत्कर्म तेन तत्कृतमुच्यते ।।

"मैं नित्य, निर्दोष, निरवयव, परब्रह्म परमात्मा श्री मन्नारायण की शक्ति हूँ । उनके सब कार्य मैं ही करती हूँ । इस सृष्टि का संचालन करने वाला जो ब्रह्म कहा जाता है उसकी परम शक्ति मैं ही सदैव उन कार्यों की पूर्ति किया करती हूँ, मैं उनकी व्यापार रूप हूँ । अतएव मैं जो कार्य करती हूँ वह उन्हीं का किया हुआ कहा जाता है ।"

उपरोक्त प्रमाणों से यही स्पष्ट होता है कि अचिन्त्य निर्विकार परब्रह्म को जब विश्व रचना की क्रीड़ा करना अभीष्ट हुआ तो उनकी वह आकांक्षा शक्ति के रूप में परिणत हो गई । वह शक्ति जड़ और चेतन दो भागों में विभक्त होकर परा-अपरा प्रकृति कहलाई। उसी का नाम गायत्री-सावित्री पड़ा । यह महाशक्ति ही सृष्टि निर्माण के लिए सभी आवश्यक उपकरण जुटाती है और उनका निर्माण, विकास एवं विनाश प्रस्तुत करती है । इस दृश्य जगत् में जो कुछ विद्यमान है वह उसी महाशक्ति का स्वरूप है । उसमें जो परिवर्तन हो रहे हैं-उपक्रम चल रहे हैं उनके पीछे उसी महान् शक्ति की सामर्थ्य सक्रिय है । ब्रह्म तो साक्षी द्रष्टा है । उसका समस्त क्रिया-कलाप इस गायत्री महाशक्ति द्वारा ही परिचालित हो रहा है । प्रमाण देखिये-

स्पन्दशक्तिस्तेथेच्छेदं दृश्याभसं तनोति सा ।
साकारस्यं नरस्येक्षा यथा वै कल्पनापुरम् ।।

-योग व० ६ ।२ ।८४ ।६

"भगवान की स्पन्द-शक्ति रूपी इच्छा उसी प्रकार इस दृश्य जगत् का प्रसार करती है जैसी कि मनुष्य की इच्छा कल्पना नगरी का निर्माण कर लेती है ।"

तत्सद् ब्रह्मस्वरूपा त्वं किंचित्सद्सदात्मिका ।
परात्परेशी गायत्री नमस्ते मातरम्बिके ।।

-स्कन्द०

इस संसार में जो कुछ सत्-असत् है, वह सब हे ब्रह्मस्वरूपा गायत्री ! तुम्हीं हो, परा और अपरा शक्ति गायत्री माता आपको प्रणाम है ।

गायत्री वा इदं सर्व भूतं यदिदं किंच ।

-छान्दोग्य० ३ ।१२ ।१

जो कुछ था और जो कुछ है अर्थात् यह समस्त विश्व गायत्री रूप है ।

उपरोक्त वाक्य की व्याख्या करते हुए भगवान शंकराचार्य ने लिखा है-

"**गायत्रीद्वारेण चोच्यते ब्रह्म, ब्रह्मणः सर्व विशेष परहितस्य नेतिनेतीत्यादि विशेष प्रतिषेधगम्यस्य दुर्बोधत्वात् ।**"

"जाति गुणादि समस्त विशेषणों से रहित अर्थात् निर्विशेष होने के कारण ब्रह्म केवल निषेध मुख से ही सम्यग्रूपेण जाना जाता है, अतः वह दुर्विज्ञेय है । उसी को सर्व साधारण के लिए सुलभ करने को भगवती श्री गायत्री द्वारा संविशेष ब्रह्म का उपदेश करती है ।"

अपरा विद्या-

अपरा ऋग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदोऽथर्ववेदः शिक्षा कल्पो व्याकरणं निरुक्तं छन्दो ज्योतिषमिति ।

-मुण्डकोप० १ ।१ ।५

"अपरा विद्या का आशय है-ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद और उनके अङ्ग शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द और ज्योतिष ।"

अपराविद्यागोचरं संसारं व्याकृतविषयं साध्यसाधन लक्षणं अनित्यम् ।

-शङ्कराचार्य कृत प्रश्नोपनिषद् भाष्य

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

"अपरा विद्या प्रत्यक्ष विषयों से और विनाशशील पदार्थों से सम्बन्धित, साध्य विषयों का समाधान करने वाली और अनित्य होती है ।"

पराविद्यागम्यम् असाध्य साधन लक्षणम् अग्राणमनोगोचरम् अतीन्द्रियाविषयं शिवं शान्तम् अविकृतमक्षरं सत्यं पुरुषाख्यम् ।

-शङ्कराचार्य कृत प्रश्नोपनिषद् की व्याख्या

"पराविद्या से असाध्य विषय भी साध्य हो जाता है अन्तरङ्ग का ज्ञान कराती है, अतीन्द्रिय विषयों को प्रत्यक्ष कर देती है, अविनाशी, अक्षर सत्य और भगवत स्वरूप है ।"

परास्य शक्तिर्विविधैव श्रूयते ।
स्वाभाविकी ज्ञान बल क्रिया च ।।

-श्वेता० ६ ।८

"उस परमेश्वर की पराशक्ति ज्ञान, बल, क्रियायुक्त विभिन्न प्रकार की सुनी गई है ।"

सदैकत्वं न भेदोऽस्ति सर्वदैवममास्य च ।
योऽसो साहमहं योऽसौ भेदोऽस्ति मतिविभ्रमात् ।।

-देवी भागवत

"मेरा और ब्रह्म का सदा एकत्व है, किसी प्रकार का कभी भेद नहीं रहता । जो वे हैं वही मैं हूँ और जो मैं हूँ वही वे हैं । केवल बुद्धिभ्रम से इसमें भेद प्रतीत होता है ।"

एकैव माया परमेश्वरस्य, स्वकार्यभेदाद्भवति चतुर्धा ।
भोगे भवानी समरे च दुर्गा, क्रोधे च काली पुरुषे च विष्णुः ।।

"यह महामाया परमेश्वर की एकमात्र शक्ति है जो कार्यभेद से चार प्रकार की हो जाती है । भोग की दृष्टि से वह भवानी है, समर के लिए दुर्गा है, क्रोध के समय काली बन जाती है और पुरुष रूप में विष्णु हो जाती है ।"

आराध्या परमाशक्तिः सर्वैरपि सुरासुर ।
नातः परतरं किञ्चिधिकं भुवनत्रये ।।

-शुकदेव

"वह पराशक्ति सब की आराध्या है, सुर और असुर सब उनकी उपासना करते हैं । तीनों लोकों में कोई उनके समान नहीं है, उनसे बढ़कर होने का तो प्रश्न ही नहीं है ।"

कारणावस्थथापन्ना सदाहं धातृरूपिणी ।
नाकार्यं मे हि यत् किञ्चित सदाहं ह्यक्षरा परा ।।
कार्यभाव समापन्ना सदा प्रकृतिरूपिणी ।
तदा ब्रह्मादया सर्वे सर्वेऽप्याविर्भवन्ति हि ।।

"कारणावस्था को प्राप्त होकर मैं सदा ब्रह्मरूपिणी रहती हूँ । जो कुछ दिखाई दे रहा है वह सब मेरा ही कार्य है । मैं सदा से अक्षर रूपिणी और पराशक्ति हूँ । कार्यावस्थापन्न होकर मैं प्रकृतिरूपिणी हो जाती हूँ, उसी समय ब्रह्मादि देव और अन्य सभी मुझसे प्रकट होते हैं ।"

यस्यादृष्टो नैव भूमण्डलांशो,
यस्यादासो विद्यते न क्षितीशः ।
यस्याज्ञातं नैव शास्त्रं किमन्यैः,
यस्याकारः सा पराशक्तिरेव ।।

-योगी उमानन्द

"पराशक्ति वह है जिसके लिए संसार का कोई भी भाग अदृष्ट नहीं है । कोई ऐसा राजा नहीं जो उसका दास न हो, कोई ऐसा शास्त्र नहीं जिसे वह न जानती हो ।"

तं विलोक्य महेशानि सृष्टयुत्पादन कारणात् ।
आदिनाथं मानसिकं स्वभर्तारं प्रकल्पयेत् ।।

-शक्ति संगम तन्त्र

"हे महेशानि ! अपना रूप देखकर उस पराशक्ति ने अपने पति आदिनाथ को जगत् की सृष्टि के लिए अपने मन से उत्पन्न किया ।"

भगवान् की सामर्थ्य भगवान् का अङ्ग होते हुए भी उससे पृथक् अस्तित्व में दृष्टिगोचर होती है । सूर्य की किरणें यद्यपि निकलती उसी से हैं पर वे गर्मी और रोशनी के रूप में अपने अस्तित्व का अलग परिचय भी देती हैं । उसी प्रकार ब्रह्म की सामर्थ्य, चेतना एवं सक्रियता उसी के कारण है पर उसका पृथक् अस्तित्व भी अनुभव किया जा सकता है । हमारा सीधा सम्बन्ध उस सामर्थ्य से ही है । संसार में जो असीम विद्युत भाण्डागार संव्याप्त है वह मूलतः विश्वव्यापी अग्नि तत्व की सत्ता के कारण ही है । तथापि हमें जो काम चलाऊ बिजली मिलती है उसका केन्द्र स्थानीय बिजली घर ही है । गायत्री हमारे सीधे सम्पर्क में आने वाली शक्ति है । प्राणियों का तथा संसार की हलचलों का केन्द्र-

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बिन्दु उसे ही कहा जा सकता है । यदि यह शक्ति इस जगत् को प्रेरित प्रभावित न करे तो फिर यहाँ सब कुछ निर्जीव, निष्क्रिय ही बन जाय ।

शक्ति के बिना 'शिव' भी 'शव' बन जाता है । वर्णाक्षरों में 'ि' मात्रा को शक्ति का प्रतीक माना गया है । जीव और ब्रह्म के बीच संचार, सम्पर्क व्यवस्था इस शक्ति मात्रा के ऊपर ही निर्भर है । ईश्वर अपना अस्तित्व इसी आधार पर प्रकट करता है । इसलिये उसे ब्रह्म का प्राण भी कहते हैं । गायत्री विश्व का-जीवों का प्राण ही नहीं ब्रह्म का भी प्राण है । कहा गया है-

शक्तिं बिना महेशानि सदाऽहं शवरूपकः ।
शक्तियुक्तो महादेवि शिवोऽहं सर्वकामदः ।।

ब्रह्म का कथन है-"शक्ति के बिना मैं सदा ही शव के समान अर्थात् प्राणरहित हूँ । जब शक्तियुक्त होता हूँ तभी मैं सब इच्छाओं को पूर्ण करने वाला मङ्गलरूप हूँ ।"

वर्तते सर्वभूतेषु शक्ति सर्वात्मना नृप ।
शववच्छक्ति हीनस्तु प्राणी भवति सर्वदा ।।

-देवी भागवत

"हे राजन् ! सम्पूर्ण भूतों में सर्वरूप से शक्ति वर्तमान है । शक्तिहीन प्राणी तो सदा शव की भाँति हो जाता है ।"

न हि तया बिना परमेश्वरस्य सृष्टृत्वं सिद्धति ।
शक्तिरहितस्य तस्य प्रवृत्त्यनुपपत्तेः ।।

-ब्र० सू० शां० भ० १।४।३

"उसके बिना परमेश्वर स्रष्टा नहीं हो सकते, क्योंकि वे शक्ति के बिना क्रियाशील नहीं हो सकते ।"

ब्रह्मादयोऽपि यदपाङ्गतरङ्गभङ्ग्य ।
सृष्टि स्थिति प्रलय कारणतां व्रजन्ति ।।
लावण्य वारिनिधि वीचि परिप्लुतायै ।
तस्मै नमोस्तु सततं हरवल्लभायै ।।

"जिनकी कृपादृष्टि मात्र से ब्रह्मा में सृष्टि रचना करने की, विष्णु में पालन की, शिव में संहार की शक्ति आ जाती है, सौन्दर्य सागर की तरङ्गों से व्याप्त इस जगदम्बा के लिए मेरा सतत प्रणाम हो ।"

प्रकाशरूपा प्रथमे प्रमाणे अमृतरूपिणी इति ,
अतः सा एव सर्वाराध्या स्वतन्त्रता विश्वसिद्धि हेतु रिति ।

-श्रुति

"वह स्वयं ही प्रकाशमयी और अमृतरूपिणी है । वह सब की आराध्या है, स्वतन्त्र है और विश्व की निर्माणकर्ती है ।"

रुद्रहीनं विष्णुहीनं न वदन्ति जनः किल ।
शक्तिहीनं यथा सर्वे प्रवदन्ति नराधमम् ।।

"यदि किसी का तिरस्कार करना हो तो उसे 'रुद्रहीन' या 'विष्णुहीन' नहीं कहा जाता वरन् उसे 'शक्तिहीन' यशवत या निकम्मा कहकर ही तिरस्कृत किया जाता है ।"

सर्वशक्ति परं ब्रह्म नित्यमापूर्ण व्ययम् ।
न तदस्ति तस्मिन्यद्विद्यते विततात्मनि ।।

-योग वशिष्ठ ३ ।१०० ।५

"नित्य, सर्वथा पूर्ण, अव्यय, परम ब्रह्म सर्वशक्तिमय है । ऐसा कोई पदार्थ नहीं जो उस विस्तृत रूप में न हो ।"

ज्ञानशक्तिः क्रियाशक्तिः कर्तृताऽकर्तृताऽपि च ।
इत्यादिकानां शक्तीनामन्तो नास्ति शिवात्मनः ।।

-योग व० ६ ।१.।३७ ।१६

"ज्ञानशक्ति, क्रियाशक्ति, कर्तृत्व, अकर्तृत्व आदि शक्तियों का उस शिवात्मा में कोई अन्त नहीं है ।"

चिच्छक्तिर्ब्रह्मणो राम शरीरेष्वभिदृश्यते ।
स्पन्दनशक्तिश्च वातेषु जड़शक्तिस्तथोपले ।।

-यो० व० ३-१००

"चेतन शरीरों में उस ब्रह्म की चित्शक्ति, वायु में स्पन्दन-शक्ति, पत्थर में जड़-शक्ति दिखाई देती है ।"

सर्वधारा च प्रकृतिः सर्वत्माहं जगत्सु च ।
अहमात्मा मनोब्रह्मा ज्ञानरूपी महेश्वरः ।
पञ्च प्राणाः स्वयं विष्णुर्बुद्धिः प्रकृतिरीश्वरी ।।

"इस समस्त जगत् की आधारभूत प्रकृति शक्ति ही है, श्री नारायण आत्मा हैं । ब्रह्माजी मन और सदाशिव महेश्वर ज्ञानरूप हैं । पञ्च प्राण स्वयं विष्णु हैं और प्रकृति ईश्वरी ही बुद्धि है ।"

विभिन्न स्तर की, विभिन्न रूपों में, विभिन्न प्रयोजन के लिये जो भी सक्रियता एवं सामर्थ्य दृष्टिगोचर होती है वह गायत्री का ही स्वरूप है । जो कुछ भी सिद्धियाँ, विभूतियाँ, समृद्धियाँ इस संसार में दृष्टिगोचर हो रही हैं वह सामर्थ्य का ही

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रतिफल है । यह सामर्थता चेतन प्राणियों में तो है ही, जड़ कहे जाने वाले परमाणुओं में भी उतनी ही सक्रिय है । इलेक्ट्रॉन, प्रोटोन, नाइट्रोन आदि अणु घटक अपनी धुरी तथा कक्षा में भ्रमण करते हैं । ग्रह नक्षत्र अपने यात्रा पथ पर भ्रमण करते हैं तथा पंच तत्वों से विनिर्मित विभिन्न पदार्थ अपनी परम्परा के अनुरूप विधि व्यवस्था में-क्रमबद्ध मर्यादाओं में बँधकर सृष्टि का निर्धारित क्रम चलाते रहते हैं । यह खेल उसी महत-तत्व का है जिसे ब्रह्म की स्फुरणा अथवा गायत्री के नाम से अध्यात्मवादी शब्दावली में स्थान दिया गया है ।

इस महाशक्ति से हम जितने भी असम्बद्ध रहते हैं उतने ही दुर्बल होते जाते हैं । जितने-जितने उसके समीप पहुँचते हैं, सान्निध्य लाभ लेते हैं, उपासना करते हैं, उतना ही अपना लाभ होता है । अग्नि के जो जितनी समीप पहुँचता है उसे उतनी ही अधिक गर्मी मिलती है, जो जितना दूर रहता है उसे उतना ही उस लाभ से वंचित रहना पड़ता है । इसलिये उस महाशक्ति का सान्निध्य लेकर अधिक बल प्राप्त करें यही उचित है ।

पूछा गया कि हे देवि, महाशक्ति, आप कौन हैं ? क्या करती हैं, इस ब्रह्माण्ड में आपकी क्या स्थिति है ? ब्रह्म और उसके बीच क्या सम्बन्ध है ? तो उसने तथ्य का स्पष्टीकरण करते हुए वस्तुस्थिति का दिग्दर्शन इस प्रकार कराया है-

सर्वे वै देवा देवीमुपतस्थुः कासि त्वं महादेवि । साब्रवीदहं ब्रह्म स्वरूपिणी । अजाहमनजाहं अधश्चोर्ध्वञ्च तिर्यक्चाहम् ।।

-देवी उपनिषद्

"जब ब्रह्मादि समस्त देवों ने देवी के समीप जाकर प्रश्न किया कि-हे देवि ! तुम्हारा स्वरूप क्या है ? तब देवी ने बताया कि मैं परब्रह्मस्वरूपिणी हूँ । परमार्थतः अजन्मा होते हुए भी व्यवहारतः नाना देव-देवी रूप में जन्म लेती हूँ । मैं ही ऊपर, नीचे, बगल में सर्वत्र पूर्ण हूँ तथा देश-काल वस्तु से अपरिच्छिन्न हूँ ।"

तस्य या परमा शक्तिर्ज्योत्स्नेव हिमदीधितेः ।
सर्वावस्थां गता देवी स्वात्मभूतानपायिनी ।
अहन्ता ब्रह्मणस्तस्य साहमस्मि सनातनी ।।

-लक्ष्मी तन्त्र २ । ११-१२

महाशक्ति इन्द्र के प्रति कहती है- "उस परब्रह्म की जो चन्द्रमा की चाँदनी की भाँति समस्त अवस्थाओं में साथ देने वाली, स्वात्मभूता अनपायिनी अहंता नाम की परमाशक्ति है, वह सनातनी शक्ति मैं ही हूँ ।"

अहं सुवे पितरस्थमूर्धन मम योनिरप्स्वन्तः समुद्रे । ततो वितिष्ठे भुवनानु विश्वोतामूं द्यां वर्ष्मणोप स्पृशामि ।

"मैं जगत पिता 'हिरण्य-गर्भ' को प्रसव करती हूँ । इसके ऊपर आनन्दमय-कोष मध्यस्थ विज्ञानमय-कोष में मेरु कारण-शरीर अवस्थित है । मैं समग्र भुवन में अनुप्रविष्ट होकर अवस्थित हूँ । वह सामने स्वर्गलोक है, उसे भी मैं अपने शरीर द्वारा स्पर्श कर रही हूँ ।"

अहमेव वात इव प्रवाम्यारभमाणा भुवनानि विश्वा । परो दिवा पर राना पृथिव्यैतावती महिमा सम्बभूव ।।८।।

"जब मैं वायु के सदृश्य प्रवाहित होती हूँ तभी इस समग्र भुवन की सृष्टि का आरम्भ होता है । इन स्वर्ग तथा मर्त्य लोक के पेट में भी मैं विद्यमान हूँ । यही मेरी महिमा है ।"

अहं राष्ट्री सङ्गमनी वसूनां चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम् । तां मा देवा व्यदधुः पुरुत्रा भूरिस्थात्रां भूर्यावेशयन्तीम् ।।३।।

-देवी सूक्त

"मैं सृष्टि-स्थिति प्रलय कारिणी जगदीश्वरी हूँ । मैं धन को देने वाली हूँ । मैं उस ज्ञान को देने वाली हूँ जिससे जीव आत्म-भाव को प्राप्त हो सके । यही ज्ञान सब उपासनाओं का आदि है । मैं बहुभावों में अवस्थित हूँ और देवगण मेरे अनेक रूपों की उपासना किया करते हैं ।"

मया सो अन्नमत्ति यो विपश्यति यः प्राणिति य ईं शणोत्युक्तम् । अमन्तवो मां त उपक्षियन्ति श्रुधि श्रुत श्राद्धिवं ते वदामि ।

"जीव जो कुछ अन्नादि खाता है, जो कुछ देखता है, जिस श्वास-प्रश्वास क्रियादि द्वारा जीवित रहता है और जो कुछ सुनता है-वे सब क्रियायें मेरे ही द्वारा निष्पन्न होती हैं । मुझे जो नहीं जानते, वे संसार में क्षीणता को प्राप्त होते हैं । हे सौम्य! मैं जो कुछ कहती हूँ उसे श्रद्धा से सुनो ।"

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सृष्टि का संचालन, व्यवस्था, प्रगति, समृद्धि और सुन्दरता का मूल आधार वह महाशक्ति ही है । जिस प्रकार बिजली, भाप, तेल की शक्ति से विविध प्रकार के यंत्र चलते हैं उसी प्रकार उस महाशक्ति की सत्ता से ही इस जगत् का सारा क्रिया-कलाप चल रहा है ।

देव शक्तियाँ इस सृष्टि के विभिन्न प्रयोजनों को पूरा करती हैं । जैसे पाचन क्रिया से संलग्न जीवनी शक्ति को जठराग्नि, मस्तिष्क में काम करने वाली को मेधा, प्रजनन संस्थान में काम करने वाली को कामोत्तेजना, चेहरे पर चमकने वाली को ओजस्विता कहते हैं, पर वस्तुतः वह एक ही शक्ति है, जो विभिन्न प्रयोजनों में प्रयुक्त होने के कारण अलग-अलग नामों से पुकारी जाती है । देव शक्तियों के अलग-अलग नाम रूप भी इसी प्रकार रखे गये हैं । ब्रह्मा, विष्णु, महेश, इन्द्र, वरुण, अग्नि, पूषा, अर्यमा, आदि के कार्य, प्रयोजन और स्वरूप अलग-अलग वर्णन किये गये हैं, पर वस्तुतः वे एक ही महाशक्ति द्वारा विभिन्न प्रयोजनों के लिए प्रयुक्त किये जाने वाले उपकरण मात्र हैं । इनका वही निर्माण करती है, प्रयोजन में लाती है और कार्य कर सकने की क्षमता प्रदान करती है, इसलिए उसे देव जननी अथवा देवाधिष्ठात्रि भी कहा गया है । अन्यान्य देवताओं की उपासना से जो कुछ प्रयोजन सिद्ध हो सकता वह सारे का सारा देव आत्मा के सान्निध्य से भी प्राप्त हो सकता है ।

महाशक्ति ने देवताओं के साथ अपने सम्बन्ध की चर्चा करते हुए कहा है-

अहं रुद्रेभिर्वसुभिश्चरामि । अहमादित्यैरुत विश्वदेवैः । अहं मित्रावरुणावुभौ विभार्मि । अहमिन्द्राग्नी अहमश्विनावुभौ ।

"मैं रुद्रों और वसुओं के रूप में संचार करती हूँ । मैं आदित्यों और विश्वदेवों के रूप में फिरा करती हूँ । मैं दोनों मित्रावरुण का, इन्द्राग्नि का और दोनों अश्विनीकुमारों का पोषण करती हूँ ।"

न विष्णुर्न हरः शक्तो न ब्रह्मा न च पावकः ।
न सूर्यो वरुणः शक्तः स्वे स्वे कार्ये कथञ्चन ।
तथा युक्ता हि कुर्वन्ति स्वानि कार्याणि ते सुराः ।

-दे. भा. १-८-३९

"विष्णु, शिव, ब्रह्मा, अग्नि, सूर्य, वरुण आदि स्वयं कुछ भी नहीं कर सकते । (मैं महाशक्ति) ही इन सब को कार्य करने में समर्थ बनाती हूँ ।"

नूनं सर्वेषु देवेषु नाना नाम धरा ह्यहम् ।
भवामि शक्ति रूपेण करोमि च पराक्रमम् ।।
गौरी ब्राह्मी तथा रौद्री वाराही वैष्णवी शिवा ।
वारुणी चाथ कौवेरी नारसिंही च वैष्णवी ।।

-देवी भागवत्

समस्त देवों में मैं ही तरह-तरह के नाम रखकर उनकी शक्ति बनती हूँ और पराक्रम करती हूँ । गौरी, ब्राह्मी, रुद्राणी, वाराही, वैष्णवी, शिवा, वारुणी, कावेरी, नारसिंही आदि सब मेरे ही नामान्तर हैं ।"

मानव प्राणियों में जो विभिन्न प्रकार की प्रतिभायें, विशेषतायें और महानतायें दृष्टिगोचर होती हैं वे उस महाशक्ति की उपस्थिति का ही परिचय देती हैं । जड़ शरीर में जितनी चेतना, चमक, स्फूर्ति एवं सुन्दरता है उसे उसी सत्ता का चमत्कार कहना चाहिए । जिसने अपने पुरुषार्थ से उसे अपने भीतर जितनी मात्रा में धारण कर लिया है, वह उतना ही बड़ा महा-मानव दिखाई देता है । यह शक्ति जब घटने लगती है तो शरीर निर्बल, निस्तेज, एवं निष्क्रिय हो जाता है । मन में जब यह शक्ति कम पड़ने लगती है तो उसे मन्द-बुद्धि, मूर्ख, अविवेकी आदि लांछनाओं से तिरस्कृत किया जाता है । इसी शक्ति की अत्यधिक न्यूनता होने से मनुष्य की मृत्यु हो जाती है । सारांश यह है कि संसार में जितनी महानता, विशेषता, चमत्कार देखने में आता है वह उस आदि शक्ति की क्रीड़ा ही है । चाहे सांसारिक और चाहे आध्यात्मिक कोई भी क्षेत्र हो इस शक्ति के बिना सफलता असम्भव है ।

भारतीय धर्म का एक ही उद्गम स्रोत गायत्री

गायत्री उपासना हिन्दू-धर्म के एक अंग विशेष की नहीं वरन् वह भारत की राष्ट्रीय उपासना है । राष्ट्रीय ही क्यों सार्वभौम भी कहा जा सकता है । सद्भावनाओं में ईश्वर की स्थिति और आभा का

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दर्शन कराने वाला कोई मंत्र ही मानव-जाति के भविष्य को उज्ज्वल बनाने वाला हो सकता है । गायत्री के २४ अक्षरों में जिस तत्वज्ञान को कूट-कूटकर भरा गया है उसे मानवीय धर्म कर्तव्य की ईश्वरीय प्रेरणा ही मानना चाहिए । ऐसे तत्व-ज्ञान की उपासना ही मनुष्य जाति के भाग्य का निर्माण करने में प्रमुख आधार बन सकती है ।

मुसलिम-धर्म में जिस प्रकार 'कलमा' मूल मन्त्र माना जाता है वैसे ही हिन्दू-धर्म का अनादि गुरुमन्त्र गायत्री है । चारों वेद भारतीय-संस्कृति के आदि उद्गम हैं । उन चारों वेदों का प्रादुर्भाव गायत्री के चार चरणों से हुआ है । गायत्री के एक-एक चरण की व्याख्या स्वरूप एक-एक वेद बना है । वेदों की ऋचाओं में जिस ज्ञान-विज्ञान का अक्षय भंडार भरा पड़ा है वह बीज रूप से गायत्री में मौजूद है । समस्त भारतीय सभ्यता, भावना और विचारणा को यदि अत्यन्त संक्षिप्त रूप में कहना चाहें तो उसे गायत्री के २४ अक्षरों में व्यक्त किया जा सकता है । इसलिए ऋषियों ने यह आवश्यक समझा कि भारतीय धर्म और संस्कृति में आस्था रखने वाला प्रत्येक व्यक्ति गायत्री को अपना उपास्य माने और उससे जीवन का मार्ग दर्शन करने वाली ईश्वरीय प्रेरणा का अनुभव करते हुए आत्म-कल्याण की ओर जीवन की सार्थकता के लिए निष्ठापूर्वक अग्रसर होता रहे ।

शास्त्रकारों ने गायत्री रहित को हेय एवं तिरस्कृत माना है, उसकी कटु शब्दों में भर्त्सना की है और उसे धर्म कृत्यों में सम्मिलित होने का अनधिकारी बताया है । प्राचीनकाल में जो लोग इस राष्ट्रीय उपासना की उपेक्षा करके धर्म अनुशासन की उपेक्षा करते थे उन्हें समाज से बहिष्कृत कर अछूत बना दिया जाता था । यह एक सामाजिक दंड विधान था और इसलिए बनाया गया था कि लोग इस प्रकार की अवज्ञा एवं उपेक्षा का साहस न करें । अब तो वह दंड-विधान अधिकार-अनधिकार का प्रश्न बन बैठा है और इसी आधार पर यह कहा जाता है कि अमुक जाति में उत्पन्न हुए लोग उसे जप सकते हैं, अमुक जाति में जन्मे नहीं । इस भेदभाव का स्वरूप आज विकृत रूप में भले ही समझा जाय प्राचीनकाल में यह अवज्ञाकारियों के लिए भर्त्सना भरी दंड व्यवस्था मात्र थी । यों ईश्वरीय प्रत्येक कृति पर उसके सभी पुत्रों का अधिकार रहता है । पृथ्वी, सूर्य, चन्द्रमा, हवा, वर्षा, शीत, ग्रीष्म, अन्न, जल आदि का उपभोग सभी धर्म और वर्ण के लोग करते हैं तो उसी प्रभु की महान प्रेरणा गायत्री पर देश-धर्म, जाति के आधार पर प्रतिबंध हो ही कैसे सकता है ?

यह चर्चा यहाँ इसलिए की जा रही है कि यह समझ लिया जा सके कि गायत्री-मन्त्र हमारा अनिवार्य उपास्य है और उसकी उपेक्षा ऋषियों की दृष्टि में एक धर्म अपराध माना गया है । नित्यकर्म में इस उपासना को इतनी कठोरता के साथ सम्मिलित करने का उद्देश्य यह है कि मनुष्य नित्य ही इस बात का अनुभव करता रहे कि उसके उत्थान पतन का हेतु केवल उसकी आस्था, विचारणा एवं भावना ही है । उसे उत्कृष्ट बनाने में ही मानव-जीवन की सार्थकता है और उसे अपना कर ही भौतिक क्षेत्र में सुख एवं आत्मिक क्षेत्र में शान्ति को प्राप्त किया जा सकता है । इसके विपरीत जिसकी मनोभूमि कुविचारों और दुर्भावनाओं से भरी रहेगी उसे दुःख दरिद्र के शोक-सन्ताप के अधःपतन रूप गर्त में गिरकर नष्ट ही होना होगा ।

इस अकाट्य जीवन-दर्शन को समझ लेने और हृदयंगम कर लेने से जीवन नीति का उचित निर्धारित कर सकना सरल हो जाता है । जिसने विचारों का महत्व न समझा, जो भावना की शक्ति से अपरिचित है, जिसे अपनी मनोभूमि के परिष्कार एवं निर्माण की चिन्ता नहीं उसे बिना पतवार के नाव चलाने वाले मल्लाह की तरह अनाड़ी ही मानना होगा । उसे पग-पग पर आपत्तियों की संभावना का सामना करना पड़ेगा । अधिकांश व्यक्ति ऐसा ही निरुद्देश्य जीवन व्यतीत करते हैं और रोते-कलपते हुए भव-बन्धनों की यन्त्रणा सहते हुए नरतन का लाभ उठाने के स्थान पर हाथ मल-मलकर पछताते हुए यहाँ से विदा होते हैं । ऋषि नहीं चाहते कि भारतीय धर्म के अनुयायी इस प्रकार का असफल जीवन व्यतीत करें । इसीलिए

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उन्होंने प्रत्येक विचारशील मानव के लिए गायत्री उपासना को अनिवार्य ठहराया और उसकी उपेक्षा करने वाले की भरपेट भर्त्सना की ।

भारतीय धर्म के अनुयायियों को द्विज कहा जाता है । द्विज का अर्थ है दो बार जन्म होना । ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य द्विज माने जाते हैं । एक जन्म माता-पिता के द्वारा उत्पन्न शरीर का माना जाता है । इसमें पाशविक वृत्तियाँ ही प्रधान होती हैं । दूसरा जन्म यज्ञोपवीत संस्कार के समय गायत्री माता और यज्ञ पिता द्वारा होता है । इसे आदर्शवाद, धर्म, सदाचार, परमार्थ एवं देवत्व का प्रवेश द्वार कह सकते हैं । इस संस्कार में मनुष्य को यही शिक्षा दी जाती है कि उसे स्वार्थी, असंयमी, निरुद्देश्य, पाशविक दृष्टिकोण का परित्याग कर वह सोचना चाहिए, वह करना चाहिए जो मानव के महान गौरव को समुज्ज्वल बना सके । इस प्रकार के व्रत-बंध के साथ यज्ञोपवीत धारण करने वाला व्यक्ति एक प्रकार से दिव्य-जीवन जीने की प्रतिज्ञा करता है । उस समय मार्ग-दर्शक गुरु का काम गायत्री मन्त्र ही करता है । सनातन धर्म और आर्य-समाज दोनों की ही संस्कार विधियों में गायत्री को गुरु मंत्र कहा गया है । प्रत्येक यज्ञोपवीतधारी को गायत्री मंत्र को जीवन सूत्र मानकर कंधे पर, हृदय पर, कलेजे पर और पीठ पर अन्तःकरण को आवृत करते हुए धारण करना पड़ता है ।

यज्ञोपवीत गायत्री की ही प्रति-मूर्ति है । नौ शब्दों को लेकर नौ धागे लिए गये हैं । त्रिपदा गायत्री के तीन चरणों की प्रतीक तीन लड़ें हैं । भूर्भुवः स्वः इन तीन व्याहृतियों से तीन गाँठें लगाई जाती हैं और ॐ का प्रतिनिधि ब्रह्मा के रूप में ब्रह्मग्रन्थि को माना गया है । इस प्रकार यज्ञोपवीत को गायत्री की ही प्रतिमा कहा जाता है । उसे धारण करने वाले की यही भावना रहती है कि भारतीय-धर्म के मूल उपास्य गायत्री मन्त्र को शरीर रूपी मन्दिर पर देवता के रूप में स्थापित किया और उसकी नित्य उपासना का, उस भावना को हृदयंगम किये रहने का व्रत लिया । जो लोग इस सुसंस्कार का तिरस्कार करते थे उच्छृंखल बन कर इस आध्यात्मिक अनुशासन को अस्वीकार करते थे उन्हें सामाजिक बहिष्कार के रूप में शूद्र बनना पड़ता था ।

शिखा और सूत्र यह दो प्रतीक हिन्दू धर्म के हैं । शिर पर चोटी के बालों के रूप में भी गायत्री की ही ध्वजा फहराई जाती है । जिस प्रकार राष्ट्रीय झंडा पार्लियामेंट भवन पर सदा फहराता ही रहता है उसी प्रकार मस्तिष्क रूपी किले पर सदुद्देश्य के लिए जीवन जीने की प्रतिज्ञा का उद्घोष करने वाली धर्म-पताका-शिखा को भी फहराये रखना पड़ता है । चोटी का वर्णन शास्त्रकारों ने धर्म-ध्वजा के रूप में ही किया है और गायत्री का उसे प्रतीक बनाया है । इस प्रकार प्रत्येक शिखा-सूत्रधारी हिन्दू अनिवार्यतः गायत्री का उपासक बनता है । ईश्वर प्रार्थना के रूप में पूजा अर्चना को अनिवार्य माध्यम मानने के अतिरिक्त उसे यह भी ध्यान रखना पड़ता है कि मेरा जीवन क्रम इस गुरु मन्त्र में सन्निहित भावनाओं के अनुरूप ढलता चले । उपासना की अधिकृत विधि को 'सन्ध्या' कहते हैं । संध्या की कई विधियाँ प्रचलित हैं, पर गायत्री का जप प्रत्येक में अनिवार्य है । ऐसी कोई संध्या विधि नहीं जिसमें गायत्री की उपेक्षा की गई हो । शिखा-सूत्र धारण करने वाला-संध्या-वन्दन में विश्वास रखने वाला कोई भी भारतीय धर्मानुयायी स्वभावतः गायत्री उपासक बनता है ।

हमारा देश दार्शनिकों और कवियों का देश है । यहाँ वस्तुओं और भावनाओं को भी प्रतीक रूप से देवता के अलंकारिक रूप दिये गये हैं । चेतन जगत् की सूक्ष्म-शक्तियों और स्थूल-जगत के पंच-तत्वों में जो गुह्य आत्मा रहती है, उसे भावनापूर्वक देवत्व के रूप में प्रकल्पित किया गया है । यों ईश्वर एक अत्यन्त सूक्ष्म एवं निराकार व्यापक शक्ति है, पर उपासना का आयोजन पूरा करने के लिए उसे मानव रूप में प्रतिष्ठित किया जाता है । शिव, विष्णु, गणेश, सूर्य, सरस्वती, दुर्गा, राम, कृष्ण आदि को ईश्वर के रूप में इसलिए प्रतिष्ठापित करना पड़ा कि नाम, रूप के बिना कल्पना एवं ध्यान की गति नहीं बनती और इसके बिना उपासना का कोई स्वरूप ही नहीं बन पाता । उपासना के बिना न मन एकाग्र होता है और न

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

परम तत्व की उपलब्धि सम्भव होती है । इसलिए संसार में सर्वत्र ईश्वर को मानव रूप में, मानव गुणकर्म स्वभाव में परिकल्पित करके उसके पूजा विधान का प्रचलन किया है । इन स्वरूपों में गायत्री का ध्यान सर्वोत्तम है क्योंकि उसमें माता का स्नेह वात्सल्य, महत्व एवं पवित्रता की अनुभूति साधक को पग-पग पर होती चलती है ।

नारी की गरिमा और पवित्रता को भारतीय धर्म में अत्युच्च स्थान प्राप्त है । भगवान के नामों में उनकी पत्नी को भी सम्मिलित रखा गया है, सम्मिलित ही नहीं रखा गया वरन् प्रथम स्थान भी दिया गया है । लक्ष्मीनारायण, सीताराम, राधेश्याम, गौरीशंकर आदि ईश्वर के नामों से इसी तथ्य का प्रतिपादन होता है । माता, बहिन और पुत्री के रूप में नारी को अत्यन्त पवित्र, पूज्य और उच्च स्थान प्रदान किया गया है । विवाहिता पत्नी को भी विलास एवं विकार के लिए नहीं धर्म वृद्धि के लिए ग्रहण किया जाता है । इसलिए उसे धर्म-पत्नी कहते हैं । रमणी का नारकीय स्वरूप यहाँ सर्वथा निन्दनीय माना गया है और उसकी कटु से कटु शब्दों में निन्दा करते हुए उस मृग मरीचिका से बचने पर निरन्तर जोर दिया गया है । सन्त साहित्य में नारी निन्दा का बहुत वर्णन है । उसका तात्पर्य कामिनी रमणी की विकारग्रस्त भावना का परित्याग करने मात्र से है ।

देखा जाता है कि मनुष्य की निकृष्ट वृत्तियाँ धन और नारी के प्रति लोलुपता का परिचय देती रहती हैं । इनका शमन किये बिना मानवीय महानता की उपलब्धि संभव नहीं । नारी में पवित्र एवं पूज्य भाव रखने से ही आध्यात्मिक-ब्रह्मचर्य के द्वारा ब्रह्मतेज की प्राप्ति, शारीरिक जीवनी-शक्ति का संरक्षण, गृहस्थ जीवन की सफलता, दाम्पत्य-निष्ठा की परिपक्वता, सुसन्तति, परिवार का आर्थिक एवं स्नेह संतुलन, समाज में सुख-शान्ति, गृहस्थ की सार्थकता संभव होती है । इस तथ्य को जीवनचर्या में उतारने के लिए यह एक महत्वपूर्ण उपाय है कि ईश्वर को नारी के रूप में पूजा जाय । गायत्री को माता के रूप से आराध्य मानने का भी यही रहस्य है ।

यों ईश्वर एक सूक्ष्म शक्ति है । न वह पुरुष है न नारी । अपनी उपासनात्मक आवश्यकता के लिए ही उसे विभिन्न रूपों में कल्पित और प्रतिष्ठित करते हैं । "त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव भ्रातश्च सखा त्वमेव" की उक्ति से उस परमात्मा को माता, पिता, भ्राता, सखा आदि के रूप में मान्यता दी है ।

जिस स्वरूप या रिश्ते से उपासना में सुविधा हो उसी से उसका ध्यान, पूजन किया जा सकता है । इस संदर्भ में नारी के रूप में या माता के रूप में परमात्मा की उपासना अधिक श्रेयस्कर है क्योंकि नारी को निरन्तर पुन्य वृत्ति में ध्यान करने पर लौकिक जीवन में भी वही प्रवृत्ति विकसित होती है और व्यक्ति सच्चे अध्यात्म की ओर द्रुत-गति से अग्रसर होता है । दूसरा लाभ यह भी है कि जिस स्वरूप में प्रभु का ध्यान किया जाता है उसी भावना के अनुरूप प्रत्युत्तर एवं प्रतिध्वनि भी लौटकर साधक को मिलती है । माता का रिश्ता सबसे अधिक उत्कृष्ट प्रेम का परिचायक है । वात्सल्य से अधिक मधुर और कोई रस नहीं । माता के रूप में प्रभु की आराधना करने से उसका प्रत्युत्तर साधक को वात्सल्य स्नेह के रूप में प्राप्त होता है और वह उस अनुभूति से कृत-कृत्य हो उठता है । यह लाभ पुरुष प्रतीकों की उपासना में संभव नहीं । पिता से माता का स्नेह स्वभावतः अधिक होता है । इसलिए परमात्मा का अधिक उच्च-स्तरीय वात्सल्य प्राप्त करने के लिए गायत्री शक्ति का माता के रूप में ध्यान करना ही अधिक श्रेयस्कर माना गया है और ऋषियों एवं शास्त्रकारों ने वैसी ही प्रतिष्ठा एवं भावना करने का हमें आदेश किया है । गायत्री का मातृ-मूर्ति के रूप में ध्यान स्तवन पूजन करने का प्रायः सभी उपासना ग्रन्थों में निर्देश मिलता है । इस स्थापना के पीछे उपरोक्त तथ्यों का तो स्पष्ट समाधान है ही और भी कितने अज्ञात एवं रहस्यमय कारण हो सकते हैं ।

रुचि भिन्नता के लिये भारतीय धर्म में उदार स्थान दिया गया है । कोई साधक अपनी अभिरुचि एवं आकांक्षा के अनुरूप किसी भी देवता, मन्त्र या इष्ट की उपासना कर सकता है । इतनी छूट होते हुए भी गायत्री को अनिवार्य उपास्य माना गया है । समस्त भारतीय समाज को एकता के सूत्र में पिरोये

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

रखने के लिए गायत्री को एक जातीय जीवन तत्व का स्थान प्राप्त है । इसे राष्ट्रीय संगठन मन्त्र भी कह सकते हैं । भिन्नताओं में एकता की अनुभूति हम गायत्री को सार्वभौम-सर्वजनीन बना कर ही कर सकते हैं । भारतीय दर्शन की व्यापकता इसी माध्यम से परिपुष्ट हो सकती है । कोई व्यक्ति अपनी विशेष उपासना किसी भी विधि या माध्यम से करे पर उसे तत्व दर्शन के रूप में गायत्री को तो प्रथम स्थान देना ही चाहिए । विभिन्न धर्म, सम्प्रदाय, संस्थान, संगठन अपने-अपने अलग-अलग झंडे रखें तो हर्ज नहीं पर राष्ट्रीय ध्वज तो उनसे भी ऊँचा माना जाना चाहिए । इसी प्रकार भिन्न उपासना विधियों को काम में लाने वालों को भी गायत्री उपासना तो करनी ही चाहिए । शास्त्रकारों ने कहा है-"जो गायत्री उपासना नहीं करता उसके अन्य मन्त्र भी निष्फल चले जाते हैं ।" इस निर्देश के पीछे एक महत्व का तथ्य छिपा हुआ है और उसे हम सबको गंभीरतापूर्वक समझना चाहिए और श्रद्धापूर्वक अपनाना भी चाहिए ।

गायत्री उपासना का सहज स्वरूप है व्याहृतियों वाली त्रिपदा गायत्री का जप । "ॐ भूर्भुवः स्वः"- यह शीर्ष भाग है, जिसका तात्पर्य है कि आकाश, पाताल और धरातल के रूप में जाने-जाने वाले तीनों लोकों में उस दिव्य सत्ता को समाविष्ट अनुभव करना । जिस प्रकार न्यायाधीश की, पुलिस अधीक्षक की उपस्थिति में अपराध करने का कोई साहस नहीं करता, उसी प्रकार सर्वदा सर्वव्यापी, न्यायकारी सत्ता की उपस्थिति अपने सब ओर सदासर्वदा अनुभव करना और किसी भी स्तर की अनीति का आचरण न होने देना । "ॐ" अर्थात् परमात्मा । उसे विराट् विश्व ब्रह्माण्ड के रूप में व्यापक भी समझा जा सकता है । यदि उसे आत्मसत्ता में समाविष्ट भर देखना हो, तो स्थूल शरीर, सूक्ष्म शरीर, कारण शरीर में परमात्म सत्ता की उपस्थिति अनुभव करनी पड़ती है और देखना पड़ता है कि इन तीनों ही क्षेत्रों में कहीं ऐसी मलिनता न जुटने पाये, जिसमें प्रवेश करते हुए परमात्मसत्ता को संकोच हो । साथ ही इन्हें इतना स्वस्थ, निर्मल एवं दिव्यताओं से सुसम्पन्न रखा जाय कि जिस प्रकार खिले गुलाब पर भौंरे अनायास ही आ जाते हैं, उसी प्रकार तीनों शरीरों में परमात्मा की उपस्थिति दीख पड़े और उनकी सहज सदाशयता की सुगंधि से समीपवर्ती समूचा वातावरण सुगंधित हो उठे ।

गायत्री मन्त्र का अर्थ सरल और सर्वविदित है- सवितुः-तेजस्वी । वरेण्यं-वरण करना-अपनाना । भर्गो- अनौचित्य को तेजस्विता के आधार पर दूर हटा फेंकना । देवस्य-देवत्व की पक्षधर विभूतियों को, धीमहि अर्थात् धारण करना । अन्त में ईश्वर से प्रार्थना की गई कि इन विशेषताओं से सम्पन्न परमेश्वर हम सबकी बुद्धियों को सन्मार्ग की ओर प्रेरित करे, सद्बुद्धि का अनुदान प्रदान करे । कहना न होगा कि ऐसी सद्बुद्धि प्राप्त व्यक्ति, जिसकी सद्भावना जीवन्त हो, वह अपने दृष्टिकोण में स्वर्ग जैसी भरी-पूरी मनःस्थिति एवं भरी-पूरी परिस्थितियों का रसास्वादन करता है । वह जहाँ भी रहता है वहाँ अपनी विशिष्टताओं के बलबूते स्वर्गीय वातावरण बना लेता है ।

स्वर्ग प्राप्ति के अतिरिक्त दैवी अनुकम्पा का दूसरा लाभ है-मोक्ष । मोक्ष अर्थात्-मुक्ति । कषाय कल्मषों से मुक्ति, दोष-दुर्गुणों से मुक्ति, भव-बन्धनों से मुक्ति । यही भव-बन्धन है, जो स्वतंत्र अस्तित्व लेकर जन्मे मनुष्यों को लिप्साओं और कुत्साओं के रूप में अपने बन्धनों में बाँधता है । यदि आत्मशोधन पूर्वक इन्हें हटाया जा सके, तो समझना चाहिए कि जीवित रहते हुए भी मोक्ष की प्राप्ति हो गई । इसके लिए मरणकाल आने की प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ती । गायत्री की पूजा-उपासना और जीवन-साधना यदि सच्चे अर्थों में की गयी हो, तो उसकी दोनों आत्मिक ऋद्धि-सिद्धियाँ स्वर्ग और मुक्ति के रूप में निरन्तर अनुभव में उभरती रहती हैं और उनके रसास्वादन से हर घड़ी कृत-कृत्य हो चलने का अनुभव होता है ।

गायत्री उपासना द्वारा अनेकों भौतिक सिद्धियों, उपलब्धियों के मिलने का भी इतिहास पुराणों में वर्णन है । वशिष्ठ के आश्रम में विद्यमान नन्दिनी रूपी गायत्री ने राजा विश्वामित्र की सहस्रों सैनिकों वाली सेना की कुछ ही पलों में भोजन की व्यवस्था

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बनाकर, उन सबको चकित कर दिया था । गौतम मुनि को माता गायत्री ने अक्षय-पात्र प्रदान किया था, जिसके माध्यम से उन दिनों की दुर्भिक्षपीड़ित जनता को आहार प्राप्त हुआ था । दशरथ का पुत्रेष्टि यज्ञ सम्पन्न कराने वाले शृंगी ऋषि को गायत्री का अनुग्रह ही प्राप्त था जिसके सहारे चार देव पुत्र उन्हें प्राप्त हुए । ऐसी ही अनेकों कथा-गाथाओं से पौराणिक साहित्य भरा पड़ा है, जिनमें गायत्री साधना के प्रतिफलों की चमत्कार भरी झलक मिलती है ।

गायत्री के नौ शब्द ही महाकाली की नौ प्रतिमाएँ हैं, जिन्हें चैत्र तथा आश्विन की नवदुर्गाओं में विभिन्न उपचारों के साथ पूजा जाता है । देवी भागवत में गायत्री की तीन शक्तियों का-ब्राह्मी, वैष्णवी, शाम्भवी के रूप में निरूपित किया गया है और नारी वर्ग की महाशक्तियों को चौबीस की संख्या में निरूपित करते हुए, उनमें से प्रत्येक के सुविस्तृत माहात्म्यों का वर्णन किया है । इन चौबीस शक्तियों की प्रतिमाओं का उनके बीज मन्त्र व व्याख्या सहित अवलोकन ब्रह्मवर्चस् की शक्ति पीठ में किया जा सकता है ।

गायत्री के चौबीस अक्षरों का अलंकारिक रूप से अन्य प्रसंगों में भी निरूपण किया गया है । भगवान के दस ही नहीं, चौबीस अवतारों का पुराणों में वर्णन है । ऋषियों में सप्त ऋषियों की तरह उनमें से चौबीस को प्रमुख माना गया है-यह गायत्री के अक्षर ही हैं । देवताओं में से त्रिदेवों की ही प्रमुखता है, पर विस्तार में जाने से पता चलता है कि वे इतने ही नहीं, वरन् चौबीस की संख्या में भी मूर्धन्य प्रतिष्ठा प्राप्त करते रहे हैं । महर्षि दत्तात्रेय ने ब्रह्माजी के परामर्श से चौबीस गुरुओं से अपनी ज्ञान-पिपासा को पूर्ण किया था । यह चौबीस गुरु प्रकारान्तर से गायत्री के चौबीस अक्षर ही हैं ।

सौर मंडल के नौ ग्रह हैं । सूक्ष्म शरीर के छः चक्र और तीन ग्रन्थि समुच्चय विख्यात हैं, इस प्रकार उनकी संख्या नौ हो जाती है । इन सबकी अलग-अलग अभ्यर्थनाओं की रूप-रेखा साधना-शास्त्रों में वर्णित है । गायत्री के नौ शब्दों की व्याख्या में निरूपित किया गया है कि इनसे किस पक्ष की, किस प्रकार साधना की जाय, तो उसके फलस्वरूप किस प्रकार उनमें सन्निहित दिव्य शक्तियों की उपलब्धि होती रहे । अष्टसिद्धियों और नौ निधियों को इसी परिकर के विभिन्न क्षेत्रों की प्रतिक्रिया समझा जा सकता है । अतीन्द्रिय क्षमताओं के रूप में परामनोविज्ञानी मानवीय सत्ता में सन्निहित जिन विभूतियों का वर्णन निरूपण करते हैं, उन सबकी संगति गायत्री मन्त्र के खण्ड-उपखण्डों के साथ पूरी तरह बैठ जाती है । दैवी भागवत सुविस्तृत उपपुराण है । उसमें महाशक्ति के अनेक रूपों की विवेचना तथा शृंखला है । उसे गायत्री की रहस्यमय शक्तियों का उद्घाटन ही समझा जा सकता है । ऋषि युग के प्रायः सभी तपस्वी गायत्री का अवलम्बन लेकर ही आगे बढ़े हैं । मध्यकाल में भी ऐसे सिद्ध पुरुषों के अनेक कथानक मिलते हैं, जिनमें यह रहस्य सन्निहित है कि उनकी सिद्धियाँ-विभूतियाँ गायत्री पर ही अवलम्बित हैं ।

अन्यान्य धर्मों में अपने-अपने सम्प्रदाय से सम्बन्धित एक-एक ही प्रमुख मन्त्र है । भारतीय धर्म का भी एक ही उद्गम स्रोत है-गायत्री । उसी के विस्तार रूप में पेड़ के तने, टहनी, पत्ते, फल-फूल आदि के रूप में वेद, शास्त्र, पुराण, उपनिषद्, स्मृति, दर्शन, सूक्त आदि का विस्तार हुआ है । एक से अनेक और अनेक से एक होने की उक्ति गायत्री के ज्ञान और विज्ञान से सम्बन्धित अनेकानेक दिशाधाराओं से सम्बन्धित साधनाओं की विवेचना करके विभिन्न पक्षों को देखते हुए विस्तार-रहस्य को भली प्रकार समझा जा सकता है ।

अन्तः चेतना को प्रभावित करने में गायत्री ही सक्षम

तर्क, विचार, प्रमाण और परामर्श मनुष्य को प्रभावित तो करते हैं परन्तु वह प्रभाव बहुत ही उथला रहता है । अध्ययन, मनन, चिंतन व्यक्ति की स्वैच्छिक प्रक्रियायें हैं-इनसे मनुष्य दूसरों द्वारा प्रभावित होने की अपेक्षा कुछ अधिक प्रभावित होता है । क्योंकि प्रभाव ग्रहण करने के लिए इन प्रक्रियाओं में वह स्वयं चुनाव करता है और स्वयं

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

चुनाव करने के कारण उसका पहले से ही इस या उस दिशा में रुझान रहता है । लेकिन इस तरह के प्रभाव की भी एक सीमा है, जिसे जीवन का कायाकल्प कहा जा सके । वह परिवर्तन उच्चस्तरीय अध्यात्म साधनाओं द्वारा ही सम्भव है और कहना नहीं होगा कि गायत्री उपासना उच्चस्तरीय साधनाओं में सिरमौर है ।

दूसरों के द्वारा प्रभावित करने और अभीष्ट दिशा में विकसित करने के प्रयास उतने सफल नहीं होते जितने कि स्वयं के प्रयास । अध्यापक अपने छात्रों के मस्तिष्क को विकसित करते हैं । पहलवान अपने शार्गिदों को कुश्ती सिखाते, कसरत बताते और उन्हें पहलवान बनाते हैं । वक्ता, लेखक और विचारक विचारों से हलचल उत्पन्न करते और लोगों के सोचने में नया मोड़ देते हैं । परन्तु इस स्तर के प्रयास जानकारी भर प्रदान करते हैं । वे चिंतन की शैली, आकांक्षा और व्यक्तित्व की दिशा नहीं बदल सकते । अखाड़े में पहलवान उस्ताद अपने शार्गिदों की माँस-पेशियाँ मजबूत कर सकते हैं, उनमें मनोबल उत्पन्न नहीं कर सकते । अखाड़े में जाकर कोई संयमी, सदाचारी, मनस्वी, साहसी बन जाय-यह कोई आवश्यक नहीं है क्योंकि पहलवानी की शिक्षा शारीरिक अभ्यास तक ही पहुँच कर समाप्त हो जाती है, वह अंतरङ्ग की गहराई में नहीं उतरती है । लेखक, वक्ता, नेता और अन्य प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति भी अपनी तेजस्विता के सम्मोहन से कुछ आवेश तो उत्पन्न कर लेते हैं पर वह भी क्षणिक और उथला ही रह जाता है । आवेश ठण्डा पड़ते ही लोग वापिस अपने पुराने ढर्रे पर आ जाते हैं और उत्पन्न किया गया उत्साह अपनी क्षणिक चमक पैदा कर तिरोहित हो जाता है ।

इसका क्या कारण है ? स्पष्ट है जो शिक्षण दिया गया था वह अन्त:करण की गहराई तक प्रवेश नहीं कर सका । केवल ऊपरी बौद्धिक स्तर तक टकरा कर ही बिखर गया । उस टकराहट की प्रक्रिया जितनी देर रह सकती थी उतनी देर रही और इसके बाद व्यक्ति की वही संस्कारगत स्थिति आ गई । अन्त:चेतना को प्रभावित करने के लिए उच्चस्तरीय आध्यात्मिक प्रयास चाहिए वह भी स्वयं के द्वारा ।

परमात्मा ने यह विशेषता मनुष्य के साथ ही जोड़ रखी है कि यदि वह नहीं चाहे तो उसे स्वयं भगवान भी नहीं बदल सकता । अन्य जानवर तो मारपीट कर डरा धमका कर जोर जबर्दस्ती से, डण्डे की मार से इच्छित अभीष्ट दिशा में चलाये और हांके जा सकते हैं । धीरे-धीरे उनमें वैसा ही अभ्यास पड़ जाता है । पर मनुष्य को बाहरी दबाव पैदा कर, दूसरे प्रभाव उत्पन्न कर उसकी इच्छा के बिना नहीं बदला जा सकता । मनुष्य केवल अपनी इच्छा से ही बदल सकता है और चाहने पर अपने समग्र व्यक्तित्व को विकसित एवं परिवर्तित कर अपनी गरिमा तथा महत्ता बढ़ा सकता है । यदि वह चाहे तो अपने व्यक्तित्व को गिराकर नरपशु तथा नर पिशाच भी बन सकता है । वातावरण तथा समीपवर्ती लोगों का प्रभाव इसमें बहुत थोड़ा ही सहायक होता है । इन प्रभावों के कारण मनुष्य की कोई प्रवृत्तियाँ उभरती और कोई दबती हैं । परन्तु उस प्रभाव से पहले इच्छा-आकांक्षा ही उत्पन्न होती है, परिवर्तन तो बाद में प्रस्तुत होता है ।

ऐसा नहीं है कि बाहरी प्रभावों से ही यह प्रवृत्तियाँ उभरती उत्पन्न होती हैं । उसके बीज तो मनुष्य में पहले से ही विद्यमान रहते हैं । प्रभाव केवल उन बीजों को पोषण भर देता है और अंकुरित होने की परिस्थितियाँ मात्र उत्पन्न करता है-कहा भी गया है कि मनुष्य में सभी प्रकार की संभावनायें, अच्छाइयाँ और बुराइयाँ विद्यमान हैं । मनुष्य है ही सत् और तम् का सम्मिश्रण, कौन-सी सम्भावना साकार होती है ? यह बाहरी प्रभावों पर उतना निर्भर नहीं होता जितना कि आन्तरिक आकांक्षाओं पर । विज्ञान मनुष्य की आन्तरिक इच्छाओं को बदलने के लिए प्रयोग कर रहा है, परन्तु उसमें आंशिक सफलतायें ही मिल पा रही हैं । उसके व्यक्तित्व का वह स्तर जहाँ से चेतना सत्ता का कार्यक्षेत्र आरम्भ होता है । अभी वैज्ञानिक प्रयोगों से अप्रभावित ही है और इस बात की भी कोई सम्भावना नहीं दीखती कि आगे चल कर उसे प्रभावित करने में सफलता मिल सकेगी, क्योंकि

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विज्ञान का क्षेत्र भौतिक है, वह पदार्थ और जड़ को ही प्रभावित कर सकता है । जबकि मनुष्य की मूलसत्ता-चेतन है और चेतन को प्रभावित करने में केवल आध्यात्मिक उपाय ही समर्थ है ।

मस्तिष्क को प्रभावित कर मनुष्य के स्वभाव में थोड़ा बहुत परिवर्तन करने में जो सफलतायें मिल सकी हैं वे शारीरिक और मनोवैज्ञानिक ही हैं आत्मिक क्षेत्र में इन प्रयोगों का कोई असर नहीं दिखाई दे रहा है । यद्यपि शारीरिक और मानसिक प्रभाव भी कुछ कम महत्व नहीं रखते, पर जिस आधार पर मनुष्य नर से नारायण और मनुष्य से देवता बन सकता है-वह आधार आत्मिक ही है उस आधार को आत्मबल द्वारा ही पुष्ट किया जा सकता है ।

मानवीय मस्तिष्क के नियमन नियन्त्रण करने में रेडियो विद्युत धाराओं का उपयोग किया जाता है । इन प्रयोगों में अभी जहाँ तक सफलता मिली है उसके अनुसार रेडियो विद्युत धाराओं के द्वारा मनुष्य के भाव संस्थान को ही प्रभावित किया जा सकता है । इस आधार पर मनुष्य की भावनात्मक रुग्णग्रन्थियों को खोला और उनका उपचार किया जा सकेगा और उसे संस्थान में उपयोगी भाव बीज बोये जा सकेंगे, जो किसी विशेष दिशा में चलने के लिए आवश्यक रुचि एवं स्फूर्ति उत्पन्न कर सकते हैं । इस दिशा में प्रगति कहाँ तक हो सकी है ? इसका खुलासा करते हुए मिशिगन विश्वविद्यालय अमेरिका के वैज्ञानिक डा० ओटोशिमल ने कहा है कि अब हमारे हाथ में मनुष्य के मस्तिष्क को नियन्त्रित करने की शक्ति आ गई है । अमेरिका के प्रतिरक्षा विभाग ने एक गधे पर यह प्रयोग किया था और उसे उपकरणों से प्रभावित कर अकेले छोड़ दिया गया था । इसके बाद उसे जिधर चलने और करने के निर्देश दिये गये-उसने वही सब किया । इस तरह के प्रयोग और सफलताओं का अर्जन केवल मस्तिष्क तक ही सम्भव हो सका है । कहा जा सकता है कि भौतिक विज्ञान की पहुँच केवल मस्तिष्क तक ही है । क्योंकि मस्तिष्क भी शरीर का ही एक अंग है और शरीर का अंग होने से उसे भौतिक क्षेत्र में सम्मिलित रखा गया है । मन को तो छटी या ग्यारहवीं इन्द्रिय माना गया है और वह अभी अछूता-अप्रभावित ही है । मन से भी गहरी परत आत्मिक चेतना की है । उस तक पहुँचने और उसे प्रभावित करने की क्षमता भौतिक विज्ञान के पास कहाँ ? भौतिक विज्ञान तो केवल भौतिक और स्थूल पदार्थों पर ही अपना प्रभाव डाल सकता है । आत्मिक और भौतिक जगत को प्रभावित करने की कल्पना वैसी ही है जैसे बढईगीरी का ज्ञान रखने वाले से उसी स्थिति में उसी ज्ञान से अणुबम बनाने की आशा करना ।

आत्मबल तो संसार का सबसे बड़ा लाभ है यह लाभ गायत्री साधक को प्राप्त होने लगता है । आत्मा स्वयं अनेक ऋद्धि-सिद्धियों का केन्द्र है । जो शक्ति परमात्मा में है वे ही उसके अंश युवराज आत्मा में भी है । किन्तु जिस प्रकार राख से ढका हुआ अंगार मन्द हो जाता है-वैसे ही अतिरिक्त मलीनताओं के कारण आत्मतेज भी कुंठित हो जाता है । गायत्री साधना में मलीनता का आवरण हटता है और राख हटा देने से जैसे अंगार प्रज्वलित स्वरूप में दिखाई पड़ने लगता है, वैसे ही साधक की आत्मा भी अपनी ऋद्धि-सिद्धियों सहित ब्रह्मतेज के साथ प्रकट होने लगती है । योगियों को जो लाभ दीर्घकाल तक कष्टसाध्य तपस्यायें करने से प्राप्त होता है-वही लाभ गायत्री उपासकों को स्वल्प प्रयासों से ही प्राप्त हो जाता है । इसका कारण यही है कि आत्मचेतना के गहन स्तर को प्रभावित करने में गायत्री उपासना अपना विशिष्ट प्रभाव उत्पन्न करती है ।

गायत्री का भावनात्मक एवं वैज्ञानिक महत्व

गायत्री उपासना का भावनात्मक और वैज्ञानिक दोनों ही दृष्टियों से बड़ा ही महत्व है । भावना की दृष्टि से विचार किया जाय तो मानव-जीवन के चरित्र-उत्कर्ष का बीज-मन्त्र उसे कहा जा सकता है । सामान्यतया सबसे अधिक उपेक्षा सद्बुद्धि की ही करता है । जिस औजार से उसे निर्माण कार्य करना है उसे ही टूटा-फूटा, भौंथरा और अनगढ़

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

रखता है, इस भूल के फलस्वरूप ही उसे जीवन लक्ष्य से वंचित रहना पड़ता है ।

सृष्टि के समस्त प्राणियों की तुलना में सबसे श्रेष्ठ साधन-सम्पन्न शरीर मनुष्य को ही मिला है । बोलने, सोचने, लिखने, करने, मिल-जुलकर रहने और खोजने की जो विशेषतायें मनुष्य को प्राप्त हैं उन्हीं के बलबूते पर उसने उन्नति के उच्च शिखर तक पहुँचने में सफलता पायी है ।

जितनी सुविधायें मनुष्य को प्राप्त हैं उसका हजारवाँ भाग भी सृष्टि के अन्य प्राणियों को प्राप्त रहा होता तो वे अपने को धन्य मानते । आश्चर्य इस बात का है कि इतनी सुविधायें रहते हुए भी लोग दु:खी क्यों हैं ? निरन्तर चिन्तित, खिन्न, उदास, क्षुब्ध और अशान्त क्यों हैं ? इसका एक ही कारण है कि उनकी विचारणा का-सद्बुद्धि का परिष्कार नहीं हुआ । यदि वे सोचने का तरीका सही बना लेते तो आज जो अगणित समस्यायें और कठिनाइयाँ सामने उपस्थित हैं उनमें से एक भी दृष्टिगोचर न होती । सोचने का सही तरीका यदि सीख लिया जाय तो फिर इसी जीवन में स्वर्ग की अनुभूतियाँ बिखरी हुई दिखाई पड़ने लगें । निस्सन्देह विचारणा की अशुद्ध प्रणाली ने ही स्वर्गीय सुविधाओं से सम्पन्न मानव प्राणी को नारकीय परिस्थितियों में-दु:ख-दारिद्रय में पड़े रहने के लिए विवश किया है । यदि सुख-शान्ति की स्थिति सचमुच अभीष्ट हो तो उसके लिए एक उपाय अनिवार्यत: करना पड़ेगा और वह उपाय है-अपनी विकार पद्धति का संशोधन ।

गायत्री महामन्त्र में इसी मर्म रहस्य का उद्घाटन किया गया है। मानव जाति को सन्देश दिया गया है कि कोल्हू के बैल बने फिरने, मृगतृष्णा में भटकते रहने की अपेक्षा मूल लक्ष को समझो । सुख प्राप्ति के लिए प्रयत्न तो करो, पर प्रयत्नों से पूर्व स्थिति को भी समझ लो कि वह कहाँ से और कैसे मिलेगा ?

गायत्री मन्त्र बताता है कि विचार-संशोधन, भावनात्मक परिष्कार वह आवश्यक तत्व है जिसे प्राप्त किये बिना न किसी को आज तक सुख-शान्ति मिली है और न आगे मिलेगी ।

वस्तुयें क्षणिक सुख दे सकती हैं । वासना और तृष्णा की मदिरा में कुछ ही क्षण उन्मत रहा जा सकता है । उसकी परिणति तो दूनी अशान्ति, दूनी हानि, असफलता में ही होती है । इसलिए हमें मानसिक संस्थान को शुद्ध करने का सबसे अधिक प्रयत्न करना चाहिए । अपनी एक प्रवृत्ति का सूक्ष्म निरीक्षण करना चाहिए-और उन पर चढ़े हुए कुसंस्कारों को, साहसपूर्वक परिष्कार करना चाहिए । वस्तुत: इसी का नाम साधना है । साधना का केन्द्र बिन्दु इसी प्रयास एवं पुरुषार्थ को कहा जाता है ।

गायत्री मन्त्र में ईश्वर से यही माँगा गया है कि-प्रभु हमें आपने मानव शरीर देकर असीम अनुकम्पा की है अब मानव-बुद्धि देकर हमें उपकृत और कर दीजिए ताकि हम सच्चे अर्थों में मनुष्य कहला सकें और मानव जीवन में आनन्द का लाभ उठा सकें । गायत्री के २४ अक्षरों में परमात्मा के 'सवितु:' 'वरेण्यं' 'भर्ग' और देव गुणों का चिन्तन करते हुए उन्हें अपने जीवन में धारण करने की आस्था बनाते हुए संकल्प किया गया है, कि परमात्मा का अनुग्रह एवं वरदान की एकमात्र विभूति सद्बुद्धि को ही हम प्राप्त करते रहेंगे । अपने जीवन को उसी ढाँचे में ढालेंगे, जिसमें कि सद्बुद्धि सम्पन्न महामानव ढालते चले आये हैं । उसी संकल्प को बार-बार पूरी निष्ठा और भावना पूर्वक दुहराने का नाम गायत्री जप है । जप का सच्चा स्वरूप समझते हुए जो उस उपासना को करते हैं, वह उसका अनिर्वचनीय लाभ प्राप्त भी कर लेते हैं । वे इस अमृत को पाकर अमर बन जाते हैं और इस मृत्यु-लोक में रहते हुए भी दिव्य-लोक में निवास करने का स्वर्गीय आनन्द पग-पग पर अनुभव करने लगते हैं ।

वैज्ञानिक दृष्टि से गायत्री उपासना के अगणित भौतिक लाभ भी हैं । कष्टों और आपत्तियों में पड़े हुए, विपत्तियों में फँसे हुए, अभाव और दरिद्र से पीड़ित असफलता की ठोकरों से विक्षुब्ध व्यक्ति यदि इस महामन्त्र का आश्रय लेते हैं तो उन्हें आशा की किरणें दृष्टिगोचर होती हैं । जिन्हें अपना भविष्य अन्धकारमय दीख रहा था और आपत्तियों के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

कुचक्र में पीसे जाने का भय सता रहा था, उन्हें इस उपासना से नया प्रकाश मिला है । अभावग्रस्त व्यक्ति दारिद्रय से और रुग्ण मनुष्य पीड़ाओं से छुटकारा प्राप्त करते देखे गये हैं ।

कामनाओं की जलती हुई आग वृत्ति और शान्ति में परिणत होते देखी गई है । इस अवलम्बन का सहारा लेकर गिरे हुए लोग ऊपर उठते हैं । इस प्रकार के प्रतिफल किसी जादू से नहीं, वरन् एक वैज्ञानिक पद्धति से उपलब्ध होते हैं । गायत्री उपासना मनुष्य के विचारों और कार्यों में एक नया मोड़, एक नया परिवर्तन प्रस्तुत करती है । जिसका अन्तर्जगत बदले तो उसके बाह्य-जीवन में परिवर्तन प्रस्तुत होना ही चाहिए, होता भी है । इसे ही लोग गायत्री माता का अनुग्रह एवं वरदान भी मानते हैं ।

अनेक व्यक्तियों को गायत्री उपासना के फलस्वरूप अनेक प्रकार के कष्टों से छुटकारा पाते और अनेक सुविधाएँ उपलब्ध करते हुए देखकर हमें यही अनुमान लगाना चाहिए कि उस साधन पद्धति में ऐसे वैज्ञानिक तथ्यों का समावेश है, जिनके कारण साधक की अन्त:भूमि में आवश्यक हेर-फेर उपस्थित होते हैं और वह असफलताओं एवं शोक-सन्तापों पर विजय प्राप्त करते हुए तेजी से समुन्नत, समर्थ एवं सफल-जीवन की ओर अग्रसर होता है ।

गायत्री का माहात्म्य भावनात्मक दृष्टि से भी है और वैज्ञानिक दृष्टि से भी । इसी से उस महान अध्यात्म सम्बल को श्रद्धापूर्वक अपनाये रहने और उसे नित्य कृत्यों में स्थान दिये रहने का शास्त्रकार ने निर्देश दिया है । ऋषियों ने प्रत्येक विवेकशील व्यक्ति के लिए गायत्री की निष्ठापूर्वक उपासना करने के लिए जोर दिया है और जो उस उपयोगी व्यवस्था का लाभ नहीं उठाना चाहते, उनकी भूल को उन्होंने कटु भर्त्सना के साथ निन्दनीय भी ठहराया है । गायत्री उपासना न करने वालों को उन्होंने चाण्डाल तक कहा है ।

गायत्री उपासना हमारे अपने हित में ही है । इस माध्यम से मनुष्य निश्चय ही अपनी बहुत आत्मोन्नति कर सकता है । अपने परिवार के सदस्यों को यह प्रेरणा निरन्तर दी जाती रही है और प्रसन्नता की बात है कि उनमें अधिकांश इस सम्बल को अपने जीवन का आधार बना भी चुके हैं । जिन्होंने अभी इस मार्ग पर चलना आरम्भ नहीं किया है, उन्हें चाहिए कि अवलम्बन के एक परीक्षण के रूप में गायत्री उपासना आरम्भ करें और देखें कि उनके उज्ज्वल भविष्य की सम्भावना उत्पन्न करने में कैसे आश्चर्यजनक ढंग से यह उपासना सहायक हो रही है ।

गायत्री उपासना एवम् उसके चमत्कारी सत्परिणाम

गायत्री को आद्यशक्ति कहते हैं । उससे पहले इस संसार में कुछ नहीं था । पुराण कथन के अनुसार सृष्टि के आरम्भ में सर्वत्र जल भरा था । विष्णु की नाभि से कमल उत्पन्न हुआ । उसके पुष्प पर ब्रह्माजी अकेले बैठे हुए थे । असमंजस में थे कि क्या सोचूँ और क्या करूँ ? इतने में आकाशवाणी से गायत्री मंत्र का उद्घोष हुआ । कहा गया कि इस आदि शक्ति का सौ वर्ष तक तप कीजिए । उससे कर्तव्य बुद्धि की महाप्रज्ञा और साधन जुटाने की प्रचण्ड शक्ति उपलब्ध होगी । ब्रह्माजी ने वैसा ही किया । उन्हें कर्तव्य बोध के निमित्त गायत्री का दर्शन हुआ । सृष्टि सृजन का उद्देश्य जाना । पर इसके लिए महाशक्ति और साधनों की आवश्यकता थी । उसकी पूर्ति के लिए आद्यशक्ति अपने दूसरे सावित्री रूप में प्रकट हुई । पंचमुखी हुए सावित्री के रूप में । उससे पाँच तत्त्व, पाँच प्राण उत्पन्न हुए और जड़ चेतन सृष्टि बनकर खड़ी हो गई ।

इसके उपरान्त ब्रह्माजी ने गायत्री के रहस्य की चार मुखों से चार वेदों के रूप में विवेचना की । उससे शास्त्र, उपनिषद, दर्शन, पुराण आदि का तत्त्वज्ञान के रूप में प्रकटीकरण हुआ ।

इसके उपरान्त गायत्री के एक-एक अक्षर से प्रचण्ड सत्ताओं का प्रकटीकरण हुआ । चौबीस अक्षरों में चौबीस अवतार , चौबीस देवता, चौबीस चक्रवर्ती प्रकट हुए । उन सबने मिलकर सृष्टि की समस्त साधन सामग्री उत्पन्न की । इन सबने गायत्री

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

महामन्त्र की उपासना की और उसके कारण उपलब्ध शक्ति एवम् सामर्थ्य से सृष्टि का विकास और संचालन करने लगे । यह क्रम अब तक चला आया है । जब कभी जिस किसी को कोई महत्त्वपूर्ण कदम उठाना पड़ता है तब-तब आवश्यक क्षमता की उपलब्धि के लिए इसी महाशक्ति का आश्रय लेते हुए अपना मनोरथ पूरा करते हैं ।

शास्त्रों में गायत्री को देव संस्कृति की माता और यज्ञ को तत्त्व ज्ञान का पिता कहा गया है । दोनों का परस्पर संयोग है । आग और ईंधन के समन्वय से ज्वाला प्रकट होती है । इसी प्रकार गायत्री साधना के साथ यज्ञ प्रक्रिया का समन्वय हो जाने से वे चमत्कार उत्पन्न होते हैं जिन्हें ऋद्धि-सिद्धियाँ, स्वर्ग-मुक्ति, शान्ति-समृद्धि आदि विभूतियों के रूप में जाना जाता है ।

यज्ञ में कुछ होम किया जाता है । जलाया जाता है, ऐसा नहीं सोचना चाहिए वरन् वस्तुतः होम द्रव्य की कारण शक्ति को अग्नि-ऊर्जा एवम् मंत्र शक्ति के द्वारा सुविस्तृत व्यापक किया जाता है । इस प्रक्रिया से इन तीनों की शक्ति असंख्यों गुनी हो जाती है और जो भी उसके सम्पर्क में आता है, असंख्यों गुना लाभ उठाता है । इसलिए जहाँ कहीं भी गायत्री की साधना होती है, वहाँ उसके साथ-साथ यज्ञ को भी जोड़े रखने की व्यवस्था की जाती है । माता और पिता दोनों का परिपूजन साथ-साथ हो जाता है ।

प्राचीन इतिहास को पढ़ते हैं तो गायत्री की अपार शक्ति के अनेकानेक उल्लेख मिलते हैं । जहाँ भी यह ऊर्जा प्रकट हुई है, वहीं उसका परिणाम ऐसा देखने को मिलता रहा है जिसे अनुपम अद्‌भुत कहा जा सके । इसके माध्यम से संकटों का निवारण, अभ्युदय के सम्बर्धन और लोक-परलोक के श्रेय उत्कर्ष से भरा पूरा बनाए रहने में सहायता मिलती रही है ।

ऋषियों ने हर देव संस्कृति के अनुयायी को, इन दोनों को दैनिक जीवन में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से समन्वित किए रहने का आदेश दिया है । सद्‌बुद्धि की अधिष्ठात्री महाप्रज्ञा को सिर के किले पर ध्वजा के रूप शिखा बनाकर स्थापित किया जाता है । यज्ञ से पवित्र किया हुआ प्रतीक सूत्र यज्ञोपवीत को जनेऊ रूप में कंधे पर धारण किया जाता है । गायत्री के तीन चरण और नौ शब्द ही यज्ञोपवीत में तीन लड़ों और नौ धागों के रूप में विनिर्मित किए गए हैं और हर शरीर को देवालय बनाकर और इन दोनों को प्रतीक रूप में धारण किए रहने, इनकी पूजा, अभिनन्दन करने का निर्देश दिया है । जन्म से लेकर मरण तक सोलह संस्कार होते हैं । सभी में यज्ञ कर्म प्रधान होते हैं । जब शरीर का अन्त होता है तो भी उसे यज्ञ पिता की गोदी में, चिता में सुला दिया जाता है । नई फसल पकती है तो उसे खाने से पूर्व कच्चे अन्न का ही होली के रूप में नवान्ह वार्षिक यज्ञ किया जाता है । विवाह की वेदी पर भी यज्ञ की साक्षी में दो आत्माएँ जन्म भर के लिए एक साथ जुड़ती हैं । दुर्भाग्य ही कहना चाहिए कि देव संस्कृति के इन रहस्यों और क्रियाकलापों को हम भूलते जा रहे हैं और उनकी चिन्ह पूजा मात्र शेष रह गयी है । होली के अवसर पर कूड़ाकचरा एकत्र करके जला दिया जाता है, यह वस्तुतः होली का महत्व न समझकर उस पावन यज्ञ की मखौल उड़ाना ही है । विवाह के बाद भी गठ बन्धन से जुड़े दायित्वों को पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियाँ अधिक स्मरण रखती हैं । पुरुष चोटी नहीं रखते तो बहुत-सी महिलाएँ दोनों के बदले की चोटी बना लेती हैं । पर्व त्यौहारों के अवसर पर चूल्हे की अग्नि निकाल कर उस पर लौंग-बतासा आदि ही जलाकर अग्निहोत्र की चिन्हपूजा कर लेती हैं । पुत्रों की अपेक्षा पुत्रियों का व्यवहार अपने माता-पिता के प्रति अधिक स्नहेसिक्त और भावपूर्ण होता है। इसका प्रमाण गायत्री और यज्ञ के प्रति महिलाओं में अभी भी पाई जाने वाली श्रद्धा के रूप में देखा जा सकता है । कई निष्ठुर यह भी कहते सुने जाते हैं कि माता-पिता की गोदी में खेलने का पुत्रों को तो अधिकार है, बेटियों को नहीं । वे महिलाओं पर अकुंश लगाने, यज्ञ और गायत्री की उपेक्षा अवज्ञा तक करने हेतु प्रतिबद्ध करने की धृष्टता करते हैं । सारे शास्त्र, स्मृति आदि ग्रन्थ स्त्रियों के गायत्री

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उपासना व यज्ञ करने के अधिकार का प्रतिपादन करते हैं तो यह प्रतिबन्ध क्यों ? नर द्वारा नारी रूपी दैवी शक्ति पर अकुंश क्यों ?

जब गायत्री और भारतीय धर्म तत्त्वज्ञान परस्पर इस प्रकार अविच्छिन्न रूप से जुड़े हुए हैं और उनकी आराधना को नित्यकर्म बताया गया है, प्राचीन काल के सभी महामानव उसी उपासना को अपनाते रहे हैं तो आश्चर्य लगता है कि आज क्यों इनकी इतनी अवज्ञा हो रही है ? सद्बुद्धि और सत्कर्म की अवहेलना सर्वत्र क्यों होती दिखाई देती है ? लोग अपने आध्यात्मिक माता-पिता तक को क्यों भूलते जा रहे हैं ? जो माता-पिता का स्वरूप, व्यवहार और उन्हें नमन, अभिवादन तक करना भुला दें, इन्हें अपने समाज में बुरा कहा जाता है । वर्णशंकर जैसे नाम से तिरस्कृत किया जाता है । सद्ज्ञान रूपी गायत्री और सत्कर्म रूपी यज्ञ की अवहेलना करने का ही परिणाम है कि सर्वत्र "आस्था संकट" जैसा दुर्भिक्ष फैल रहा है । इसी अभाव के कारण लोग अपना शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, पारिवारिक एवं सामाजिक सन्तुलन गंवा बैठे हैं । बुद्धि, विज्ञान और व्यवसाय कौशल में पूर्वजों की तुलना में कहीं आगे बढ़ जाने पर भी दुःखदारिद्रय का शोकसंताप का संकट सह रहे हैं ।

कितनों को ही गायत्री महाशक्ति के अमृत, पारस, कल्पवृक्ष जैसे चमत्कारी रहस्यों पर विश्वास नहीं होता । वे भूतकाल के इतिहास पर विश्वास नहीं करते । शास्त्रों के उल्लेख और आप्त वचनों पर उसका कोई विश्वास नहीं है और गायत्री उपासना एवं यज्ञायोजन का जब प्रसंग आता है तब नाक-भौं सिकोड़ते, उसकी उपेक्षा-अवज्ञा करते देखे जाते हैं । बहु प्रचलन आज ऐसा ही दृष्टिगोचर होता है । विचारणीय है कि हीरे की टूटे काँच के टुकड़ों के कूड़े में फेंक देने जैसी दुर्गति आज किस कारण हुई ?

गम्भीरतापूर्वक विचार करने पर एक ही कारण प्रतीत होता है कि जो महिमा और माहात्म्य बताया गया है, वह प्रत्यक्ष फलित होता दृष्टिगोचर नहीं होता । कई पूजा-पाठ के प्रेमी गायत्री उपासना तो करते हैं पर उनको भौतिक या आत्मिक स्थिति में कोई उत्साहवर्धक परिवर्तन होता दिखाई नहीं पड़ता । उलटे वे भाग्यवादी, परावलम्बी, आलसी, प्रमादी जैसे बन जाते हैं । इस प्रत्यक्ष को देखने से ही यह संशय उपजता है कि जब इतने लोगों को कोई कहने लायक लाभ नहीं मिला तो हमें ही क्या हाथ लगने वाला है ? यह असमंजस और अविश्वास ही वह कारण है जिससे उस पुरातन परम्परा का लोप जैसा होता चला जाता है ।

अधिक चिंता की बात इसलिए है कि वर्तमान की विनाशकारी विभीषिकाओं का अदृश्य लोक से, दैवी शक्तियों की ओर से एक ही समाधान सुझाया जा रहा है कि अगले दिनों प्रस्तुत संकटों का निवारण महाप्रज्ञा का आश्रय लेने से ही निकलेगा । उस परमशक्ति के अनुसार दुर्बुद्धि के कारण विकृत हुई मनःस्थिति ने ही परिस्थितियों को विनाशकारी बनाया है और आतंक का वातावरण उत्पन्न हुआ है । यदि प्रस्तुत संकटों से उबरना है तो दूरदर्शी विवेकशीलता का महाप्रज्ञा का ही आश्रय लेना होगा । उलटी परिस्थितियों को उलट कर ही सीधा किया जायगा । प्रज्ञा युग का उज्ज्वल भविष्य ही आज की विपन्नताओं से त्राण दिला सकेगा ।

महाप्रज्ञा की उपासना तत्वदर्शन और माहात्म्य

मानवीय सत्ता में सन्निहित समझ को दो भागों में विभक्त किया जा सकता है । एक 'बुद्धि' जो शरीर यात्रा के काम आती है, तदनुरूप चिन्तन, प्रयास एवं व्यवहार का ताना-बाना बुनती है । दूसरी वह जो ईश्वरीय नियम-मर्यादाओं में रस लेती है । क्षुद्र को महान के साथ एकीभूत बनाने के लिए उत्कृष्टता अपनाती और उच्चस्तरीय प्रगति के लिए साहस सँजोती है । इसे 'प्रज्ञा' कहते हैं । बुद्धि दैत्य का वैभव का समर्थन करती है और प्रज्ञा देवत्व का समर्थन करती है।दिव्य के साथ तादात्म्य होने की उमंगों से भरी रहती है । बुद्धि का उपार्जन सम्पदा भर है । ललक-लिप्सा की पूर्ति भर से उसका काम चल जाता है किन्तु प्रज्ञा के लिए विभूतियों से कम में चैन नहीं । विभूतियाँ अर्थात्

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

श्रेष्ठता के साथ रमण करने की सरसतायें, और उस मार्ग पर रास्ते में मिलने वाले परमार्थ प्रयोजनों में काम आने वाली सिद्धियाँ ।

व्यापक आकाश ब्रह्माण्ड में संव्याप्त है । पिण्ड में, काया में जो थोड़ी-सी पोल भरी होती है, उसे पिण्ड आकाश कहते हैं । तत्व-दर्शन की भाषा में विस्तृत को मठाकाश और सीमित को घटाकाश कहा जाता है । प्रज्ञा व्यक्तिगत जीवन को अनुप्राणित करती है । इसे ऋतम्भरा अर्थात् श्रेष्ठ में ही रमण करने वाली कहते हैं । महाप्रज्ञा इस ब्रह्माण्ड में संव्याप्त है । उसे दूरदर्शिता, विवेकशीलता, न्यायनिष्ठा, सद्भावना, उदारता के रूप में प्राणियों पर अनुकम्पा बरसाते और पदार्थों को गतिशील, सुव्यवस्थित एवं सौन्दर्ययुक्त बनाते देखा जा सकता है । परब्रह्म की वह धारा जो मात्र मनुष्य के काम आती एवं बढ़ाने, ऊँचा उठाने की भूमिका निभाती है-महाप्रज्ञा है । ईश्वरीय अगणित विशेषताओं एवं क्षमताओं से प्राणि जगत एवं पदार्थ जगत उपकृत होते हैं किन्तु मनुष्य को जिस आधार पर ऊर्ध्वगामी बनने परमलक्ष्य तक पहुँचने का अवसर मिलता है, उसे महाप्रज्ञा ही समझा जाना चाहिए । इसका जितना अंश जिसे जिस प्रकार भी उपलब्ध हो जाता है, वह उतने ही अंश में कृत-कृत्य बनता है । मनुष्य में देवत्व का, दिव्य क्षमताओं का उदय उद्भव मात्र एक ही बात पर अवलम्बित है कि महाप्रज्ञा की अवधारणा उसके लिये कितनी मात्रा में सम्भव हो सकी ।

महाप्रज्ञा को अध्यात्म की भाषा में गायत्री कहते हैं । इसके दो पक्ष हैं-एक दर्शन, दूसरा व्यवहार । तत्व-दर्शन अर्थात् अध्यात्म । शालीनता युक्त आचरण अर्थात् धर्म । आत्मिकी के क्षेत्र पर गायत्री का आधिपत्य है और भौतिकी का सूत्र संचालन सावित्री करती है । यह दोनों नाम एक ही सत्ता के हैं, यह नाम भेद उनकी प्रयोग प्रक्रिया को देखकर किया गया । एक ही व्यक्ति को कुश्ती लड़ते समय पहलवान, प्रवचन करते समय विद्वान कहा जा सकता है । दो समयों पर दो नामों से संबोधित किये जाने पर भी वस्तुतः वह रहता एक ही है । महाप्रज्ञा है तो एक ही, पर उसे श्रद्धा भक्ति के और पुण्य प्रयोजनों में अपनी भूमिका अलग-अलग ढंग से निभाते हुए भी देखा जा सकता है । बिजली कभी हीटर जलाकर गर्मी पैदा करती है और कभी रेफ्रीजरेटर के माध्यम से बर्फ जमाती है । यह एक ही शक्ति की दो प्रक्रियायें मात्र हैं । गायत्री की महाप्रज्ञा की परिणति अन्तःक्षेत्र में दिव्य लोक में, विभूतियों की तरह भौतिक क्षेत्र में, लोक व्यवहार में, सम्पदाओं में, रूप में, दृष्टिगोचर होती है । इन्हीं को ऋद्धि एवं सिद्धि भी कहते हैं ।

गायत्री को मोटी बुद्धि से संस्कृत भाषा के चौबीस अक्षरों का एक शब्द गुच्छक-मन्त्र समझा जा सकता है और उसे आमतौर से पूजा प्रयोजनों में जप के रूप में प्रयुक्त होते देखा जा सकता है । वस्तुतः उनका विस्तार अत्यधिक व्यापक है । समग्र चेतना को विराट् ब्रह्म-प्रज्ञा पुरुष कहा जाता है । उसका अवगाहन, अवधारण करने वाले का क्रमशः महामानव, सिद्ध पुरुष, ऋषि एवं देवदूत बनते हुए पूर्ण सत्ता के साथ तादात्म्य हो जाता है । आत्मा की उसी उत्कृष्टतम स्थिति को व्यवहार-क्षेत्र में स्वर्ग की एवं अन्तरंग क्षेत्र में मुक्ति की उपलब्धि कहा जाता है ।

महाप्रज्ञा असंख्य समर्थताओं की जन्मदात्री है । गायत्री को त्रिपदा कहा गया है । उसके तीन चरण सत्, चित, आनन्द के नाम से जाने जाते हैं । उन्हें गंगा, यमुना, सरस्वती का त्रिवेणी संगम भी कहा जाता है । देव प्रतिपादन में इन्हीं का ब्रह्मा, विष्णु, महेश एवं सरस्वती, लक्ष्मी, काली के नाम से अलंकारिक उल्लेख होता है । इन्हीं त्रिविध प्रवाहों को सत्, रज, तम की संज्ञा देते और समग्र सृष्टि का आधारभूत कारण मानते हैं । गायत्री को वेदमाता, देवमाता, विश्वमाता कहा गया है । वेद अर्थात् दिव्य ज्ञान । वेदमाता अर्थात् दिव्य ज्ञान की अधिष्ठात्री । देव अर्थात् पवित्र और प्रखर । देवमाता अर्थात् अपने अंचल में बैठने वाले की सत्ता को देवोपम बना देने वाली । विश्व अर्थात् विराट् । विश्वमाता अर्थात् अनेकता को एकता में, बिखराव को केन्द्रीकरण में समेटने वाली-'वसुधैव कुटुम्बकम्' के आधार पर आत्मीयता को व्यापक बनाने वाली । इस त्रिवेणी में मनुष्य की आस्था,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विचारणा एवं प्रवृत्ति को, समग्र चेतना को स्नान करने का अवसर मिलता है, तो स्थिति कायाकल्प जैसी बन जाती है । इन त्रिविध अनुदानों की प्राप्ति के लिये भक्ति योग, ज्ञान योग और कर्म योग की पुण्य प्रक्रिया का सुविस्तृत साधना तन्त्र खड़ा किया गया है । इन्हीं के सहारे कारण शरीर, सूक्ष्म शरीर और स्थूल शरीर को परिष्कृत किया जाता है ।

देव संस्कृति का भाव पक्ष 'ब्रह्म-विद्या' कहलाता है । ब्रह्म-विद्या का विवेचन आर्ष वाङ्मय में हुआ है । आप्त वचनों में उसी की चर्चा होती है । वेद, उपनिषद्, दर्शन, आरण्यक, ब्राह्मण, सूत्र, पुराण आदि के रूप में जितना भी शास्त्र विवेचन है, उसे ब्रह्म-विद्या की व्याख्या-विवेचना कह सकते हैं । इस सारे विस्तार में महाप्रज्ञा गायत्री का ही विभिन्न स्तरों पर प्रकाश डाला गया है । भगवान के अवतार २४ हुए हैं । यह गायत्री के चौबीस अक्षरों में सन्निहित मर्मों का एक-एक करके, एक-एक प्रयोजन के लिए किया गया रहस्योद्घाटन ही समझा जा सकता है । एक ही तथ्य को मानवीय संरचना एवं आवश्यकता को ध्यान में रखकर किया गया यह विवेचन भी है जिसे 'ब्रह्म-विद्या' के अन्तर्गत किया गया विशालकाय शास्त्रीय निर्धारण कहा समझा जा सकता है । एक शब्द में इस समस्त परिकर को गायत्री का तत्त्वदर्शन भी कह सकते हैं । इस प्रतिपादन में वह समूचा निर्धारण विद्यमान है जो मनुष्य को उच्चस्तरीय मार्ग पर चलते हुए अभीष्ट-अनिवार्य होता है ।

ज्ञान और कर्म का युग्म है । सिद्धान्त और अभ्यास के समन्वय से ही किसी तथ्य को हृदयंगम करना, स्वभाव, व्यवहार में उतारना शक्य होता है । ज्ञान का दूसरा पक्ष विज्ञान है । ज्ञान अर्थात् आस्था, विज्ञान अर्थात् पराक्रम । दोनों के समन्वय से ही पूरी बात बनती है । बिजली के धन और ऋण प्रवाहों के मिलन-समन्वय से ही 'करेण्ट' उत्पन्न होता है । महा-प्रज्ञा का ब्रह्म-विद्या पक्ष अन्तःकरण को उच्चस्तरीय आस्थाओं से आनन्द विभोर करने के काम आता है । दूसरा पक्ष साधना है, जिसे विज्ञान या पराक्रम कह सकते हैं । इसके अन्तर्गत आस्था को उछाला और परिपुष्ट किया जाता है । मात्र ज्ञान ही पर्याप्त नहीं होता, कर्म के आधार पर उसे संस्कार, स्वभाव और अभ्यास के स्तर तक पहुँचाना होता है । साधना का प्रयोजन श्रद्धा को निष्ठा में-निर्धारण को अभ्यास की स्थिति में पहुँचाना है । इसलिये तत्त्वज्ञानियों को भी साधना का अभ्यास क्रम नियमित रूप से चलाना होता है ।

चिन्तन को उत्कृष्टता के साथ जोड़ने की प्रक्रिया योग से और आदतों को निकृष्टता से विरत कर उत्कृष्टता क्षेत्र में उछाल देने की आवश्यकता तप के सहारे सम्पन्न की जाती है । प्रवाह को तोड़ने-मरोड़ने के लिये इससे कम में बात बनती ही नहीं । मान्यतायें और आदतें बड़ी ढीठ होती हैं । समझाने-बुझाने से वे औचित्य के सामने हतप्रभ तो हो जाती हैं, पर अपनी स्थिति बदलने को तैयार नहीं होतीं । तर्क में हार जाने पर ऊपरी मन से स्वीकार करना एक बात है और उस आधार पर अपने स्वभाव, व्यवहार में परिवर्तन कर लेना दूसरी । तर्क, प्रमाणों से काम चल गया होता, तो स्वाध्याय, सत्संग की प्रचलित प्रक्रिया ने ही लोकमानस का कायाकल्प कर दिया होता । लेखनी वाणी से ही अवांछनीयता का प्रवाह कब का उलट गया होता । किन्तु यथार्थता दूसरी ही है । गुण, कर्म, स्वभाव की-मान्यता और आदत के रूप में अन्तरंग की जैसी भी संरचना बन गयी होती है, उसे रास्ता बदलने के लिए तत्पर कर लेना टेढ़ी खीर है । सदाशयता का ढोल बजाने वाले दुष्ट प्रयोजनों में निरत देखे गये हैं । कारण एक ही है-हठी अन्तराल, अभ्यस्त आदतों को बदलने के लिये जितने दबाव की जरूरत थी, उतना दबोचा नहीं गया । अनुपयोगी को गलाने और ढालने के लिये ऊँचे तापमान की भी भट्टी जलानी पड़ती है । उससे कम में, मात्र उलट-पुलट करने भर से अशुद्ध धातुओं का परिशोधन कहाँ बन पड़ता है ? हठी अन्तराल को उत्कृष्टता की दिशा में उछालने के लिये योग और तप का साधना-क्रम अपनाये बिना काम नहीं चलता ।

ऊपर से नीचे को घसीट लेने के लिए तो पृथ्वी की प्रचण्ड गुरुत्वाकर्षण शक्ति बिना किसी प्रयत्न के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सदा सर्वत्र विद्यमान रहती है । पानी को गिराते ही नीचे की ओर बहने लगता है, किन्तु ऊंपर चढ़ने-चढ़ाने के लिये नये साधन जुटाने पड़ते हैं और उछालने में लगने वाली शक्ति जुटाने का प्रबन्ध करना होता है अन्यथा उठने, उभरने और उछलने की बात कल्पना मात्र ही बनी रहेगी । कथा-प्रवचन सुनना, पूजा-पाठ करना अपने स्थान पर सही है और उसका सीमित लाभ भी होता है किन्तु व्यक्तित्व के अंतरंग एवं बहिरंग को यदि निकृष्टता से विरत करने और उत्कृष्टता के साथ जोड़ने का कायकल्प करना हो, तो उस प्रत्यावर्तन के लिये साधन की ऊर्जा अनिवार्य रूप से जुटानी पड़ेगी । इसी प्रयोजन के लिए योग-तप की उभय पक्षीय साधना करनी पड़ती है । योग से विचारणा पर और तप से आदतों पर नियंत्रण प्राप्त कर सकना सम्भव होता है ।

महाप्रज्ञा की साधना में कई प्रकार के उपचार कृत्यों की, कर्मकाण्डों की, साधना विधानों की आवश्यकता पड़ती है । व्यक्ति विशेष की मनःस्थिति और परिस्थिति को ध्यान में रखते हुए साधनाओं का निर्धारण तो पृथक-पृथक ही होता है, पर सिद्धान्त एक ही रहता है । चिन्तन क्षेत्र में समाविष्ट पशु-प्रवृत्तियों के समानान्तर देव-प्रवृत्तियों के पक्ष को मल्ल-युद्ध के लिए मोर्चे पर खड़ा कर दिया जाता है और योग साधना के अन्तर्गत ऐसा सरंजाम जुटाया जाता है जिससे अनास्थाओं को हटाने और देवत्व को जिताने का मूलभूत प्रयोजन पूरा हो सके । योग में निकृष्टता से पीछा छुड़ाना और उत्कृष्टता के साथ सघन सम्बन्ध जोड़ देना-यह दोनों ही कदम उठाने पड़ते हैं । मात्र निकृष्टता से पीछा छूटना भर पर्याप्त नहीं, उत्कृष्टता का संवर्धन क्रम भी चलना चाहिये । रोग से पीछा छूटना आवश्यक तो है किन्तु पर्याप्त नहीं । चिकित्सा उपचार की ही तरह व्यायाम, पौष्टिक आहार, उपयुक्त जलवायु का प्रबन्ध भी स्वास्थ्य संवर्धन के लिये करना पड़ता है । चिकित्सा और परिचर्या दोनों ही आवश्यक हैं । योग धारणा में उन आस्थाओं को हृदयंगम किया और अन्तराल में जमाया जाता है, जो आत्मा को परमात्मा तक पहुँचाने के लिये अनिवार्य रूप से आवश्यक होती है ।

योग मन को उलटता, मरोड़ता है । गलाई, ढलाई के लिये आवश्यक श्रद्धा साहसिकता का, उमंग-उल्लास का माहौल अन्तःक्षेत्र में बनाता है । तप का भी उद्देश्य तो यही है, किन्तु कार्यक्षेत्र एवं विधि-विधान में पृथकता है । तप क्षेत्र शरीर है । शरीर पर आदतें, प्रवृत्तियाँ छाई रहती हैं । विलासिता, सुविधा की माँग इन्द्रियाँ करती रहती हैं । मन पर तृष्णा और अहंता की ललक छाई रहती है । लोभ, मोह और बड़प्पन मन का रुचिकर विषय है । शरीर को इन्द्रिय जन्य अनेकानेक भोग-उपभोगों के जायके चाहिये । इन समस्त ललक-लिप्साओं के विरुद्ध विद्रोह खड़ा कर देना, हठपूर्वक पूर्वाभ्यासों का प्रतिरोध-परित्याग करना तपश्चर्या का आधारभूत प्रयोजन है ।

योग के क्षेत्र में स्वाध्याय, सत्संग, चिन्तन, मनन के चार व्यावहारिक एवं जप, ध्यान, प्राणायाम, मुद्रा, बन्ध, नाद, लय आदि कितनी ही प्रतिक्रियायें बताई-अपनाई जाती हैं । तप में अस्वाद उपवास, ब्रह्मचर्य शरीर सेवा में आत्म-निर्भरता, भूमि, शयन, ऋतु प्रभावों का सहन, मौन आदि ऐसे क्रिया-कृत्य आते हैं, जिनमें शरीर को यह अनुभव करना पड़े कि उसे उच्चस्तरीय प्रगति के मार्ग पर चलने के लिये तितीक्षा, सहनशीलता का अभ्यास करना पड़ रहा है ।

आत्म-शोधन और आत्म-विकास की विसर्जन-ग्रहण प्रक्रिया अपनाने के माध्यम में एक महत्वपूर्ण कार्य आता है-प्रायश्चित्य विधान का । पूर्व संचित अथवा कुछ ही समय पूर्व किये गये दुष्कर्मों के कषाय-कल्मष अन्तःकरण पर एक तमसाछन्न परत की तरह कुसंस्कार बन कर जम जाते हैं । उनकी प्रतिक्रिया आत्मोत्कर्ष के प्रयत्नों को असफल बनाने में भारी अवरोध बनकर अड़ी रहती है और येनकेन प्रकारेण ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न करती है, जिससे दुष्कर्मों का दण्ड टलने न पाये । मन का उच्चाटन, साधना में अरुचि, अस्वस्थता, परिस्थितियों की प्रतिकूलता जैसे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कितने ही व्यवधान साधना के दिनों में इसलिये आते हैं कि यदि इस मार्ग में सफलता मिलने लगी तो फिर दण्ड भुगतने का अवसर कैसे मिलेगा ? साधना से जो नये सुसंस्कारों की हरियाली उगाई जाती है, उन्हें कुसंस्कारों के वन्य पशु झुण्ड बनाकर आते और देखते-देखते चर जाते हैं । सभी जानते हैं कि मैले कपड़े पर रंग नहीं चढ़ता, पथरीली जमीन में उद्यान नहीं लगता । दुष्कर्मों के घटाटोप से विकृत हुई मनोभूमि ऐसी हठीली होती है कि उस पर साधना के माध्यम से संस्कारों का रंग चढ़ाना या उपवन लगाना बन ही नहीं पड़ता । सारे प्रयास निष्फल जाते रहते हैं ।

इस अवरोध को हटाने के लिये अध्यात्म विज्ञानी पूर्वकृत पापों के प्रायश्चित को साधना-विधान का अविच्छिन्न अंग मानते हैं । इसे भूमि-शोधन कहा जाता है । कायाकल्प चिकित्सा में सर्वप्रथम नाड़ी-शोधन कराया जाता है । आत्मिक प्रगति के मार्ग पर चलने वालों को सर्वप्रथम यही करना होता है । ईश्वरीय दण्ड या समाज दण्ड पाने से पूर्व अपने दुष्कृत्यों का स्वयं ही दण्ड भुगत लेना, अपनी कुसंस्कारी मनोभूमि की अपने ही हाथों खुदाई, गुड़ाई करके उर्वरा बनाने का कार्य प्रायश्चित कहा जाता है ।

दूसरों को, समाज को जो क्षति पहुँचाई जाती है, उसकी भरपाई करने के लिए सत्प्रवृत्तियों का संवर्धन करना, उसके लिए अपने समय साधनों को लगाकर खोदी गयी खाई को पाट देना आवश्यक है । तप-तितीक्षा के अमुक उपचार अपनाकर शारीरिक, मानसिक, आर्थिक कठिनाई का स्वेच्छापूर्वक वरण करना-यही है प्रायश्चित की प्रक्रिया । इसके लिए मार्गदर्शक के सम्मुख अपने स्मृति पटल पर जितने भी शरीर से या मन से किये गये पाप कर्मों का स्मरण हो, उन सभी को विस्तारपूर्वक कहना पड़ता है । इसे निष्कासन तप कहते हैं । दुराव की गाँठें खोल देने, संचित विषाक्तता को उगल देने से मन में तुरन्त हल्कापन आता है । (१) पूर्व कृत्यों पर दुःख मनाना (२) भविष्य में वैसा न करने की प्रतिज्ञा करना (३) जो किया है उसके लिए तप-तितीक्षा के रूप में दण्ड भुगतना और (४) खोदी गई खाई को पाटने के लिये लोकोपयोगी सत्कर्म करना इन चार उपचारों से प्रायश्चित की पूर्ण प्रक्रिया सम्पन्न होती है । यह सब एकाकी स्वयं ही निर्णय नहीं कर लेना चाहिये वरन् विश्वस्त, अनुभवी, उदार और मनीषी स्तर के किसी विशिष्ट महामानव के, मानसोपचारक के तत्वावधान में किया जाना चाहिये । इस प्रसंग में कई प्रकार के व्रत, उपवास, तीर्थ सेवन, दान-पुण्य आदि के कष्ट साध्य कृत्य करने की आवश्यकता पड़ती है । प्रायचित्य से हलके किये गये मन पर साधना की फसल भली प्रकार उगती और अपने निर्धारित प्रतिफल उत्पन्न करती है ।

अन्तराल में परिमार्जन एवं उन्नयन में जिस पुरुषार्थ की आवश्यकता पड़ती है, उसे महाप्रज्ञा की अभ्यर्थना कहा जाता है । इसी का दूसरा नाम गायत्री उपासना है । निखिल ब्रह्माण्ड में जिस महाप्राण का भण्डार भरा पड़ा है, उसे अभीष्ट परिमाण में ग्रहण-धारण करने की आवश्यकता पड़ती है । यह कार्य अनुभवी तपस्वियों द्वारा निर्धारित गायत्री उपासना की पुण्य प्रक्रिया अपनाने से सम्भव हो सकता है । इस संदर्भ में जप, ध्यान और प्राणायाम की तीन पद्धतियाँ काम में लानी पड़ती हैं । किसको-किस प्रयोजन के लिए इन तीनों में से किसे किस परिमाण में, किस क्रम से अपनाना चाहिये, इसका निर्धारण अनुभवी मार्गदर्शक साधक की मनःस्थिति का पर्यवेक्षण गम्भीरतापूर्वक करने के उपरान्त ही निश्चित करते हैं । सबके लिए एक जैसा विधान तो नित्य कर्म में ही प्रयुक्त होता है । साधना का नित्य कर्म हर दिन आक्रमण करने वाले कुसंस्कारों को-वातावरण के प्रभाव को निरस्त करने के लिये किया जाता है । नित्य का स्नान, कपड़े धोना, मंजन करना, कमरे में झाड़ू लगाना, बर्तन मलना आदि जिस तरह हर दिन का सफाई का कृत्य माना जाता है, उसी तरह मनःक्षेत्र पर मलीनता की परतें न जमने देने के लिये उपासनात्मक नित्य कर्म भी करने होते हैं । विशिष्ट साधना इसके अतिरिक्त है । आत्मोन्नति के लिये उसी की अतिरिक्त तैयारी करनी पड़ती है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गायत्री जप की कई विधियाँ हैं । उसमें कभी-कभी कुछ अतिरिक्त बीजाक्षर भी सम्मिलित करने पड़ते हैं । ध्यान में नाभिचक्र, हृदयचक्र और आज्ञा चक्र को त्रिविध शक्तियों का उद्गम केन्द्र कहा गया है । नाभि चक्र में प्राण की प्रखरता भरी पड़ी है, जिसे कुण्डलिनी कहते हैं । हृदय चक्र में परमतत्व के साथ एकात्म जोड़ने वाली भक्ति एवं तल्लीनता रहती है । आज्ञा चक्र के माध्यम से दिव्य ज्ञान की, अतीन्द्रिय क्षमताओं की, दूरदर्शिता, विवेकशीलता एवं दिव्य-दृष्टि की गंगोत्री प्रवाहित होती है । शाप, वरदान देने वाले तन्तु इसी केन्द्र में केन्द्रीभूत हैं । त्रिपदा गायत्री इन्हीं तीन दिव्य धाराओं से विनिर्मित होती है और त्रिवेणी कहलाती है । ज़प के साथ-साथ ध्यान करने के लिए अनेकों निर्धारण हैं, जिनमें उपरोक्त तीन चक्रों के उन्नयन को ग्रन्थि भेद कहते हैं । ज़ीव और ब्रह्म के मध्य भेदभाव-अलगाव रखने वाले जो तीन अवरोध हैं, उन्हें इन तीन क्षेत्रों में ध्यान ऊर्जा का प्रयोग अभिचार करके प्रसुप्ति को जागृति में बदला जाता है ।

प्रकाशवान छवि-माध्यम के द्वारा किये गये ध्यान को 'बिन्दु योग' के नाम से, सूक्ष्म कर्णेन्द्रिय के माध्यम से दिव्य ध्वनियों का आभास देने वाली प्रक्रिया को 'नाद योग' के नाम से जाना जाता है । तीसरा 'लय योग' है जिसमें तादात्म्य, भाव-विभोर, आनन्द मग्न होने की समाधि साधना की जाती है । सहस्त्रार से सम्बन्धित खेचरी मुद्रा का यही स्वरूप है । शांभवी मुद्रा मूलाधार को प्रभावित करती है । हृदय चक्र में ज्योति मुद्रा का-अमृत कलश का ध्यान किया जाता है । यह सभी प्रयोग गायत्री उपासना के अन्तर्गत आते हैं और साधक की सतोगुण प्रधान, रजोगुण प्रधान, तमोगुण प्रधान प्रकृति का पता चलने के उपरान्त निर्धारित किये जाते हैं । नित्य कर्म की साधना तो थोड़े बहुत हेर-फेर के साथ सभी के लिए एक जैसी है किन्तु विशेष साधनायें उसी प्रकार की हैं, जैसी कि पहलवानों को अखाड़े का आश्रय लेकर उस्तादों की देख-रेख में विशेष प्रकार की कसरतों के माध्यम से करनी पड़ती है । दंगल में कुश्ती पछाड़ने के लिए यही प्रक्रिया अपनानी पड़ती है । इस स्तर तक पहुँचने के लिए मात्र टहलने, हल्की-फुल्की कसरतों से काम नहीं चलता ।

जीवात्मा के तीन शरीर हैं-स्थूल, सूक्ष्म और कारण । इन तीनों को परिष्कृत करने के लिये क्रमशः हठयोग की, राजयोग की और लययोग की साधना करनी पड़ती है । उनके अनेकों भेद-उपभेद और सम्मिश्रण हैं ।

औषधि विज्ञान की तरह साधना विज्ञान का भी एक स्वतन्त्र शास्त्र है । चिकित्सा उपचार में रोगियों की स्थिति का विशेष रूप से ध्यान रखना होता है, उसी प्रकार श्रेयार्थियों के लिये भी अनुभवी मार्गदर्शक अमुक साधना अथवा कई योग प्रयोजनों का सम्मिश्रण करके ऐसा निर्धारण करते हैं, जो अभावों की पूर्ति एवं उलझनों से निवृत्ति करा सकने में समर्थ हो सके । मेरुदण्ड में प्रवाहित होने वाली त्रिविध शक्ति धारायें इड़ा, पिंगला और सुषुम्ना के नाम से जानी जाती हैं । किसे किस शरीर को प्रधानता देनी है, किसे किस क्षेत्र में प्रवेश करना है, वे इन्हीं तीनों के साथ अपना तादात्म्य बिठाते हैं । इन्हीं तीनों को तीन लोकों में प्रवेश पाने के तीन राजमार्ग कहते हैं । भूः लोक इड़ा से, भुवः लोक पिंगला से और स्वः लोक सुषुम्ना से सम्बन्धित माना गया है । इन तीनों का समग्र रूप त्रिपदा गायत्री के रूप में बनता है ।

गायत्री मन्त्र प्रधान है । उसमें शब्द शक्ति का अवलम्बन होकर तीन शरीरों में सन्निहित तीन शक्ति स्त्रोतों के साथ सम्बन्ध बनाया जाता है । निखिल ब्रह्माण्ड को तीन लोकों के रूप में विभाजित किया गया है । इनके साथ सम्बन्ध जोड़ने में शब्द-शक्ति का आश्रय लिया जा सकता है । मन्त्रयोग के समस्त उपचार शब्द शक्ति पर आधारित हैं । विज्ञान के छात्र जानते हैं कि ऊर्जा के अनेक विभाजनों में ताप, ध्वनि और प्रकाश की तरंगों को प्रमुखता दी गई है । इन तीनों का रूपान्तर विभिन्न स्तर के परमाणुओं और जीव कोशों में होता रहता है । पदार्थ जगत में पाँच तत्वों का और चेतन जगत में पाँच प्राणों का आधिपत्य है । इन दोनों ही क्षेत्रों में गतिविधियाँ जिस ऊर्जा के बलबूते चलती रहती हैं, उनमें से एक अति महत्वपूर्ण है-ध्वनि । उसी को

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अध्यात्म तत्वज्ञानी 'ॐ' कार के रूप में अधिग्रहण करते हैं । 'ॐ' कार के भूः, भुवः, स्वः तीन व्याहृतियाँ और इनमें से प्रत्येक से तीन-तीन शब्द निःसृत होने पर नौ शब्द वाली-चौबीस अक्षरों वाली गायत्री का महामन्त्र बन जाता है । सामान्यतया इसे हंसवाहिनी, आदि शक्ति के रूप में-सविता के भर्ग 'ब्रह्मवर्चस्' में तथा महाप्रज्ञा की ध्यान धारणा में अपनाया और हृदयंगम किया जाता है । इतने पर भी यह मानकर चलना चाहिए कि गायत्री का तत्वज्ञान और प्रयोग विधान जिस धारा से प्रभावित होता है-वह ब्रह्म विद्या 'शब्द' परक है । मन्त्र योग का रहस्य यही है । उसकी समस्त विधि शब्द शास्त्र के अन्तर्गत समझी-समझाई जा सकती है ।

जड़ और चेतन के मध्य में दोनों को जोड़ने वाली शक्ति का नाम शब्द है । वह पदार्थों पर अपनी प्रभाव प्रतिक्रिया का तत्काल परिचय देती है । प्रतिध्वनि के रूप में, ईथर से बहने वाले प्रवाह के रूप में उसकी सामर्थ्य अपना परिचय देती रहती है । ठोकर लगने पर शब्द की उत्पत्ति यह बताती है कि पदार्थ जगत में होने वाली हलचलें अपनी सूचना व्यापक क्षेत्र में भेजती हैं और वे शब्द परक होती हैं । ठीक इसी प्रकार व्यक्ति की अन्तरंग और बहिरंग हलचलों की जानकारी प्राप्त करने का सुनिश्चित तरीका शब्द है । रक्त संचार, धड़कन आदि में होने वाली ध्वनि को समझते हुए स्वास्थ्य संकट का पता लगाते हैं । चलने-फिरने से लेकर करवट बदलने और साँस लेने जैसी सामान्य गतिविधियों का स्वरूप एवं स्तर उस आधार पर होने वाली ध्वनि के सहारे जाना जा सकता है । ब्रह्माण्ड भर की गतिविधियों को प्रकाश की तरह ध्वनि संकेतों से भी जाना समझा जाता है । अन्तर्ग्रही परिस्थितियों को इसी माध्यम से जाना जाता है । सभी प्राणी मनःस्थिति का परिचय दूसरों को देने के लिए वाणी का ही प्रयोग करते हैं । मनुष्य तो इस विद्या में एक प्रकार से प्रवीण-पारंगत ही बन चुका है ।

आत्मा और परमात्मा के बीच सम्बन्ध बनाने के लिये साधनात्मक प्रयोजनों में शब्द शक्ति का ही प्रयोग करना पड़ता है । जप, स्तवन, कथा, मन्त्रोच्चार, पाठ, कीर्तन, प्रवचन, आशीर्वाद, अभिचार आदि में शब्द का ही किसी न किसी रूप में प्रयोग होता है । नादयोग के माध्यम से ईश्वरीय सन्देश सुनने एवं अदृश्य जगत में चल रही हलचलों की जानकारी प्राप्त करने की बात बनती है । विज्ञान ने प्रकृति के अन्तराल से ऐसी ध्वनि तरंगें ढूँढ़ निकाली हैं, जो अब तक के समस्त आविष्कारों की तुलना में अधिक सामर्थ्यवान शक्ति स्रोत सिद्ध होंगी । चेतन जगत तथा पदार्थ जगत के दोनों ही क्षेत्रों में उच्चस्तरीय अनुकूलतायें उत्पन्न करने तथा अभीष्ट उपलब्धियाँ प्राप्त करने के लिये शब्द शक्ति का जो विशेष विनियोग उपचार किया जाता है उसी को मन्त्र कहते हैं । आज यंत्रों की धूम है । उनकी उपयोगिता तथा समर्थता का परिचय सभी को है । भूतकाल में ठीक इसी तरह मन्त्र शक्ति का प्रयोग होता रहा है और उसकी प्रभाव शक्ति आज के अति महत्वपूर्ण यन्त्रों की तुलना में किसी भी प्रकार कम नहीं थी ।

मन्त्र विद्या को-उच्चस्तरीय शब्द-विज्ञान कह सकते हैं । मन्त्रों के अक्षरों का गठन-गुन्थन आत्म-विज्ञान के पारंगतों ने इस प्रकार किया है कि उनसे साधक की काया में सन्निहित अनेक रहस्य भरे शक्ति संस्थानों का उभार अभिवर्धन होता चला जाता है । गायत्री महाविद्या में उच्चस्तरीय रहस्यमय शक्ति का ऐसा समावेश है जिसका सिद्धान्त एवं प्रयोग करने वाला सिद्ध-पुरुष स्तर की चमत्कारी सिद्धियों का परिचय दे सकता है । बहुमूल्य यन्त्रों को भी ईंधन की जरूरत पड़ती है । दोनों के सहयोग से ही वे अपना काम कर सकने में समर्थ होते हैं । मानवी काया के अन्तराल में अंग-अवयवों, जीव-कोषों, हारमोनों आदि की संरचना तो अद्भुत है ही । इसके अतिरिक्त उसका विद्युत संस्थान इतना रहस्यमय है कि उससे हल्की और पैनी सामर्थ्य इस सृष्टि में अन्यत्र कहीं भी देखने को नहीं मिलती । इस यन्त्र का रचयिता सर्व-समर्थ परमेश्वर है । उसने अपनी कलाकारिता की इस निर्माण में अति कर दी है । यहाँ तक कि जो कुछ भी उसकी स्वयं की सामर्थ्य है-उसे भी बीज रूप

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

से इसी भाण्डागार में जहाँ-तहाँ छिपा कर रख दिया है । सामान्य क्रियाकलाप तो अन्न, जल तथा वायु के माध्यम से चलता रहता है, पर जब उसकी रहस्यमय शक्तियों की व्यक्ति विशेष के लिए, कारण विशेष के लिए, वातावरण में उलट-पुलट करने के लिए ब्रह्माण्डीय शक्तियों के साथ सम्पर्क साधने की आवश्यकता पड़ती है तो अन्य प्रकार के ईंधन की आवश्यकता पड़ती है । सभी जानते हैं कि आयल इंजिन सस्ते 'क्रूड आइल' से चलते रहते हैं किन्तु वायुयानों के इन्जनों को अधिक सामर्थ्यवान पेट्रोल चाहिये । मानवीय सत्ता को ऊँचे दर्जे के रहस्यमय पराक्रम करके अदृश्य जगत में कुछ विशिष्ट प्रयोजन पूरे करने होते हैं, तो ऊर्जा के अतिरिक्त स्रोत उपलब्ध करने होते हैं । यह शब्द शक्ति ही है जो वैसी स्थिति उत्पन्न कर सकती है जैसी कि दिव्य मानवों की दिव्य प्रयोजनों के लिये अभीष्ट होती है ।

मन्त्र विद्या द्वारा शब्द शक्ति के माध्यम से उत्पन्न की गयी ऊर्जा इतनी प्रचण्ड होती है कि उसके चमत्कार असामान्य स्तर के होते हैं । इस संदर्भ में शाप-वरदानों का लम्बा इतिहास पढ़कर तथ्यों को जाना जा सकता है । मन्त्र साधना द्वारा निजी जीवन के भौतिक एवं आत्मिक पक्षों में असाधारण प्रगति सम्भव हो सकती है । इतना ही नहीं, दूसरों का भी उस माध्यम से हित-साधन हो सकता है । नियति के रहस्यों को भी उस आधार पर जाना जा सकता है और आवश्यकतानुसार विश्व-प्रवाह का अदृश्य वातावरण में हेर-फेरकर सकना भी सम्भव हो सकता है ।

मन्त्र विद्या की महत्ता सभी देशों और सभी धर्मों में मान्यता प्राप्त करती रही है । यों इस संदर्भ में धूर्तता भी कम नहीं बरती गयी और ठगने तथा भ्रम बिखेरने में भी इस विद्या की आड़ में कम अहित नहीं हुआ । इतने पर भी तथ्य तो अपने स्थान पर भी यथावत् ही रहेंगे । वेद, कुरान, बाइबिल, जिन्दावस्ता आदि की ऋचायें अभी भी ज्ञान और विज्ञान दोनों प्रयोजनों के लिये प्रयुक्त होती हैं ।

गायत्री मन्त्र एक शब्द गुच्छक है । उसका प्रयोग जप, उच्चारण के माध्यम से सीमित प्रयोजनों के लिये होता है । किन्तु गायत्री विद्या एक समग्र शास्त्र है । उसे अध्यात्म-विज्ञान के क्षेत्र में अनुपम एवं अद्भुत कह सकते हैं । गायत्री को ब्रह्मवर्चस् भी कहते हैं । 'ब्रह्म' अर्थात् ब्रह्म विद्या, आत्म-विज्ञान, तत्व दर्शन । 'वर्चस्' अर्थात् आन्तरिक ओजस्-तेजस् । प्रतिभा-प्रखरता । समर्थता-विशिष्टता । संक्षेप में इन्हें उच्चस्तरीय दृष्टिकोण भाव-संवेदन एवं महान प्रयोजनों में काम आने वाला साहसिक पराक्रम भी कह सकते हैं । यही हैं वे विभूतियाँ जिन्हें उपलब्ध करके मनुष्य में सामान्य योग्यता एवं परिस्थिति के रहते हुए भी आत्मबल के सहारे ऊँचा उठता और आगे बढ़ता चला जाता है ।

विभिन्न साधनाओं से मिलने वाली सिद्धियों में से सभी को एक गायत्री विद्या का आश्रय लेकर प्राप्त किया जा सकता है । इस महाविज्ञान का तत्त्व-ज्ञान और विधि-विधान ऐसा है, जिसे जानने एवं कमाने के लिए जितनी गहराई तक उतारा जा सके, उत्तम है ।

गायत्री और उसकी पृष्ठभूमि

दशरथजी को जब सन्तान-कामना की पूर्ति के लिए 'पुत्रेष्टि यज्ञ' कराने की आवश्यकता हुई तो उनका विधि-विधान भली प्रकार जानते हुए भी महर्षि वशिष्ठ ने उसे पूरा कर सकने में अपनी असमर्थता प्रकट की । इस पर दशरथजी ने आश्चर्य के साथ इसका कारण पूछा । वशिष्ठ जी ने कहा- "पुत्रेष्टि यज्ञ का विधान तो मैं जानता हूँ, पर व्यक्तित्व की दृष्टि से पूर्ण ब्रह्मचारी न होने के कारण उस विधान को सफलतापूर्वक कार्यान्वित करने की सामर्थ्य से सम्पन्न नहीं । वर्तमान ऋषियों में यह कार्य शृङ्गी ऋषि ही ठीक तरह पूरा करा सकते हैं, क्योंकि वयस्क हो जाने पर भी वनवास में रहने के कारण उन्होंने रमणी को न तो देखा है और उसकी कल्पना की है । ऐसे ब्रह्मचारी की आत्मा ही इतनी बलिष्ठ हो सकती है कि उसके द्वारा सफल पुत्रेष्टि यज्ञ कराया जा सके ।" अन्ततः शृङ्गी ऋषि को ही बुलाया गया और उन्हीं के पौरोहित्य में दशरथजी का वह पुत्रेष्टि यज्ञ सफल

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हुआ जिसके प्रभाव से राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न जैसी आत्माओं को अवतरित होना पड़ा । यदि शृङ्गी ऋषि जैसे तपस्वी का पौरोहित्य न मिला होता तो विधि-विधान से पूर्ण ज्ञाता आचार्य द्वारा कराये जाने पर भी पुत्रेष्टि यज्ञ सफल न होता ।

मन्त्र वही है, विधि-विधान भी वही है, उसकी जानकारी वही है । उसकी जानकारी ग्रन्थों से तथा दूसरे विद्वानों से प्राप्त की जा सकती है इतने पर भी उनकी वैसी महिमा जैसी कि बताई गई है, अक्सर दृष्टिगोचर नहीं होती । इसका कारण उस विद्या का मिथ्या होना या विधि-विधान में कोई फर्क रह जाना नहीं, वरन् यह होता है कि उसे करने वाले का व्यक्तित्व एवं चरित्र उस स्तर का उत्कृष्ट नहीं होता-जैसे कि आत्म-विद्या के सच्चे पथिक का होना चाहिए । साधक के लिए मन्त्र-विद्या का विधि-विधान जान लेना ही पर्याप्त नहीं वरन् यह भी आवश्यक है कि वह अपने चरित्र एवं मानसिक स्तर को पवित्र एवं उत्कृष्ट बनाने में संलग्न रहे ।

गायत्री उपासना के छुट-पुट लाभ साधारण रीति से जप, अनुष्ठान करने वालों को भी मिल सकते हैं, गमलों में छोटे-से फूल-पौधे उगाये जा सकते हैं, पर यदि कोई विशाल वृक्ष लगाना हो तो यह आवश्यक है कि उसके लिए ऐसी जमीन ढूँढ़ी जाय जिसमें होकर जड़ें नीचे गहराई तक प्रवेश कर सकें । बरगद और पीपल के वृक्ष गमलों में उगा तो सकते हैं, पर फलने-फूलने की स्थिति तक नहीं पहुँच सकते । गायत्री जैसा महामन्त्र जिसकी सामर्थ्य की कोई तुलना नहीं, पूरी तरह अपना प्रभाव तभी प्रकट कर सकता है जब साधक की मनोभूमि काफी परिष्कृत एवं सुसंस्कृत बनाई गई हो । उपासना का विधि-विधान पूरी तरह जानना और उसका कर्मकाण्ड उचित तरीकों से पूरा करना अभीष्ट सफलता प्राप्त करने के लिए आवश्यक है, पर उससे भी ज्यादा आवश्यक यह है कि साधक अपने भावना स्तर को अधिकाधिक ज्योतिर्मय बनाने के लिए हर सम्भव प्रयत्न करे ।

उपासना भजन-पूजन के विधि-विधान को-जप, तप, धारण, ध्यान आदि को कहते हैं । साधना अपने गुण, कर्म, स्वभाव को व्यवस्थित, सुसंस्कृत एवं परिष्कृत बनाने को कहते हैं । उपासना को बीज और साधना को भूमि कहते हैं । यदि भूमि अच्छी न होगी तो बीज के फलित होने की आशा नहीं की जा सकती । यदि किसी साधक ने अपने आहार-बिहार, विचार-व्यवहार, क्रिया-कलाप, उद्देश्य-दृष्टिकोण को परिष्कृत बनाने के लिए श्रम नहीं किया है और केवल मन्त्र विद्या के क्रिया-कलापों को ही पूरा करता रहता है तो समझना चाहिए-उसका श्रम ऊसर में गुलाब का बगीचा उगाने के प्रयास जैसा है । मन्त्रों की शक्ति बेशक बहुत बड़ी है, पर उनका लाभ हर व्यक्ति नहीं उठा सकता । जिन्हें उपासना का चमत्कार देखना हो, उन्हें अपने आपको उसी तरह तपाना चाहिए जैसे अग्नि में सोने को तपाकर उसे विकार रहित किया जाता है । शुद्ध सोने का ही उचित मूल्य मिलता है ।

कच्ची मिट्टी से बने घड़े, खिलौने एवं ईंटें कमजोर रहते हैं, पर जब उन्हें आग में पका लिया जाता है तो मजबूत हो जाते हैं और देर तक ठहरते हैं । अभ्रक एक सस्ती वस्तु है, पर जब उसका सौ बार अग्नि संस्कार किया जाता है तो बहुमूल्य अभ्रक रसायन बन जाता है । साधक का चरित्र और व्यक्तित्व जितना निर्मल होगा उपासना उतनी ही जल्दी, उतनी ही अधिक प्रतिफलित होगी । दुष्ट-दुराचारी, स्वार्थी और संकीर्ण, गन्दे और निकम्मे आदमी मन्त्र शक्ति का चमत्कारी परिणाम प्राप्त कर सकने से वंचित ही रह जाते हैं ।

महाभारत में सावित्री द्वारा सत्यवान के वरण की कथा आती है । सावित्री किसी को अपना साथी बनाना चाहती थी, किसी के साथ अपने को भुला देना चाहती थी । ऐसे साथी की खोज में वह देश-देशान्तरों में घूमती रही । अन्ततः उसे उपयुक्त व्यक्ति मिल गया-वह था सत्यवान । लकड़हारे निर्धन, असहाय सत्यवान को राज-कन्या सावित्री ने इसलिए वरण किया कि वह आन्तरिक सम्पदाओं का धनी था । उसके गुण, कर्म, स्वभाव का स्तर ऊँचा था । वरण कृत्य हो गया । सत्यवान का आयुष्य एक वर्ष में पूरा हो चला, यम उसका प्राण

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ले चले । पर सावित्री ने यम के हाथों से अपने सहचर को छुड़ा लिया । अपनी शक्ति द्वारा उसे अजर-अमर बना दिया ।

यह अलंकारिक कथा उपासना की सफलता का रहस्य भली प्रकार समझा देती है । सावित्री, गायत्री का ही दूसरा नाम है । वह अपनी सारपूर्ण कथा प्रदान करने के लिए उपयुक्त व्यक्ति को खोजती है । ऐसा सहचर सत्यवान, सत्यनिष्ठ, सदाचारी, उत्कृष्ट आन्तरिक स्तर का व्यक्ति ही हो सकता है। जब दोनों का साथ हो जाता है तो गायत्री अपना चमत्कार दिखाती है । उसे यम के पास से छुड़ाकर अजर-अमर बना देती है । सावित्री के-गायत्री के पास जितना विभूति भंडार है वह सुसंस्कृत साधक-सत्यवान को मिल जाता है । यदि किसी को इस महाशक्ति की सिद्धियों को साक्षात्कार करना हो तो उसे उपरोक्त कथानक में समाये हुए रहस्यपूर्ण तत्त्वज्ञान को हृदयंगम करना चाहिए ।

ब्राह्मणत्व का अभिवर्धन गायत्री उपासना की सफलता का मूलभूत आधार है । छुट-पुट लाभ मामूली उपासना से सामान्य स्तर के साधक भी पा सकते हैं, पर यदि इस महामन्त्र का सच्चा स्वरूप और वास्तविक चमत्कार देखना हो तो अपने गुण, कर्म, स्वरूप में ब्राह्मणत्व की मात्रा निरन्तर बढ़ाते चलने के लिए साधकों को सच्चे मन से कटिबद्ध होना चाहिए । गायत्री माता इसी आधार पर अपने अक्षय कोष का अधिकार किसी को प्रदान करती है ।

गायत्री उपासना का लाभ और चमत्कार देखने के इच्छुकों को केवल साधना विधान के कर्मकाण्ड की बारीकियों को ही नहीं ढूँढ़ते रहना चाहिए वरन् अपनी शारीरिक एवं मानसिक भूमिका का भी परिष्कार करने के लिए सचेष्ट रहना चाहिए । ठीक है-विधि-विधानों का भी अपना महत्व है । ठीक है-बीज मन्त्र तथा दक्षिणमार्गी, वाममार्गी साधना-विधान अपना-अपना विशिष्ट प्रतिफल उत्पन्न करते हैं, पर इसके लिए उनकी समुचित जानकारी इस महाविद्या के प्रयोगकर्त्ताओं को ठीक तरह अनुभव और अभ्यास में लानी चाहिए । इसके लिए अनुभवी मार्ग-दर्शक और ऋषि-परम्परा की शास्त्रीय पद्धति का अवलम्बन ग्रहण करना चाहिए । साथ ही यह भी स्मरण रखना चाहिए कि आध्यात्मिक उपासनाओं के पथ पर गतिशील होने के आकांक्षी साधक को अपने व्यक्तित्व की उत्कृष्टता बढ़ाना तथा स्थिर रखना नितान्त आवश्यक है । आत्मिक प्रगति की यह एक अनिवार्य शर्त है ।

बढ़िया किस्म का वाण भले ही हो, पर उसे ठीक निशाने तक पहुँचाने के लिए बढ़िया मजबूत धनुष भी तो चाहिए । सड़ी-घुनी लकड़ी के धनुष का तीर के लिए निशाने तक फेंक सकना तो कठिन ही है-इस खींच-तान में अपनी भी दुर्गति करा लेगा । ओछे आदमी-घृणित और निकृष्ट दृष्टिकोण अपनाकर जीवन यात्रा कर रहे हैं । ऐसे कुसंस्कारी व्यक्ति भले ही जप-तप का बाह्य आवरण पूरा करते रहें वह कर्मकाण्ड उनकी आन्तरिक प्रगति में कुछ विशेष सहायता न कर सकेगा ।

प्राचीन काल में ऐसे अनेक साधक हुए हैं जिनका साधन-विधान कोई बड़ी शास्त्रीय परम्परा पर आधारित न था फिर भी उन्हें अपने उद्देश्य की पूर्ति में आशाजनक सफलता मिली । कबीर की शिक्षा स्वल्प थी, उन्हें मार्ग-दर्शक भी अनुभवी नहीं मिला । सन्त रामानन्द उनके ऐसे ही गुरु थे जैसे एकलव्य के द्रोणाचार्य । वे प्रत्यक्ष में कबीर के गुरु होने की बात से इनकार करते रहे । रैदास की वंश परम्परा ने उन्हें शास्त्रीय साधना पद्धति का लाभ लेने से वंचित रखा । मीरा केवल भजन, कीर्तन, नृत्य एवं भावोन्माद तक अपना साधन-विधान सीमित रख सकी । शवरी किस प्रकार की उपासना पद्धति अपनाये रही कुछ पता नहीं चलता । वाल्मीकि तो सीधा राम नाम भी न ले सके। उन्हें 'मरा' 'मरा' का उलटा नाम जप कर ही आगे बढ़ना पड़ा । ऐसे उदाहरण साधना इतिहास के पन्ने पर भरे पड़े हैं और आज भी ऐसे अनेक साधक मिलते हैं जिनकी शिक्षा एवं साधना-पद्धति उपहासास्पद है । फिर भी उन्होंने काफी ऊँचाई तक आत्मिक प्रगति कर ली । इसका एकमात्र कारण उनके व्यक्तित्व की उत्कृष्टता ही थी । मानवीय सद्भावनाओं का बाहुल्य ही उनकी यह विशेषता

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

थी, जिसने उच्चस्तरीय सफलता का अधिकारी उन्हें बना दिया ।

दूसरी ओर ऐसे भी उदाहरण मिलते हैं जिसमें उपासना का शास्त्रीय एवं वैज्ञानिक प्रकरण भली प्रकार जानते हुए भी साधक कुछ आशाजनक लाभ प्राप्त न कर सके । रावण, कुम्भकरण, मेघनाथ, मारीच, भस्मासुर, वृकासुर, हिरण्यकश्यपु, मधुकैटभ आदि अगणित व्यक्ति उच्च कुलों में उत्पन्न हुए थे, उनके गुरु भी शुक्राचार्य पारंगत थे । उन्होंने कठिन तपश्चर्याएँ भी कीं और वरदान भी पाये, फिर भी इन सुविधाओं का कोई विशेष लाभ उन्हें नहीं मिला । उनकी आत्मिक प्रगति नगण्य रही । जो साधना तपश्चर्या उन्होंने की वह उनकी आत्मा का, उनके परिवार का, सारे समाज का कुछ भी हित साधन न कर सकी । अतएव हमें उसी निष्कर्ष पर पहुँचना होगा कि जिन्हें वस्तुतः आध्यात्मिकता का लाभ लेना हो, इस मार्ग पर चिरस्थायी और आशाजनक प्रगति करनी हो उन्हें संबसे पूर्व, सबसे अधिक ध्यान इस बात पर देना चाहिए कि उनका व्यक्तित्व, दृष्टिकोण, गुण, कर्म, स्वभाव संस्थान-अन्तःकरण चतुष्टय उत्कृष्ट स्तर का बने । यही ब्राह्मणत्व है। ब्रह्म-वर्चस्व की सारी शक्ति, चेतना एवं क्षमता इसी आधार पर उपलब्ध होती और बढ़ती है ।

गायत्री महामन्त्र का तत्त्वज्ञान उसके शक्तिशाली अक्षरों में

गायत्री वैदिक संस्कृत का एक छन्द है जिसमें आठ-आठ अक्षरों के तीन चरण-कुल २४ अक्षर होते हैं । गायत्री शब्द का अर्थ है-प्राण रक्षक । गय कहते हैं प्राण को, त्री कहते हैं त्राण-संरक्षण करने वाली को । जिस शक्ति का आश्रय लेने का प्राण का-प्रतिभा का-जीवन-जीवट का संरक्षण होता है उसे गायत्री कहा जायगा और भी कितने अर्थ शास्त्रकारों ने किये हैं । इन २४ अक्षरों में से प्रत्येक की अलग-अलग संगतियाँ मिलाकर २४ ऐसे प्रेरक सूत्र प्रस्तुत किये हैं जिन्हें चरित्र-निष्ठा के व्यक्ति और समाज की प्रगति सुव्यवस्था के आधार भूत सिद्धान्त कहा जा सकता है । इस महामन्त्र के ९ शब्दों को नवधा भक्ति के सिद्धान्त-ब्रह्म तत्व रूपी सूर्य के नवग्रह कहा गया है । रामायण के राम-परशुराम सम्वाद में ब्राह्मण के परम पुनीत नौ गुणों की चर्चा है । यह धर्म के दस लक्षणों से मिलते जुलते हैं । इन सब अर्थों पर विचार करने पर यह कहा जा सकता है कि यह छोटा सा मन्त्र भारतीय संस्कृति, धर्म एवं तत्व-ज्ञान का बीज है । इसी के थोड़े से अक्षरों में सन्निहित प्रेरणाओं की व्याख्या स्वरूप चारों वेद बने । ॐ भूर्भुवः स्वः यह गायत्री का शीर्ष कहलाता है । शेष आठ-आठ अक्षरों के तीन चरण हैं जिनके कारण उसे त्रिपदा कहा गया है । एक शीर्ष तीन चरण, इस प्रकार उसके चार भाग हो गये । इन चारों का रहस्य एवं अर्थ चारों वेदों में है । कहा जाता है कि ब्रह्माजी ने अपने चार मुखों से गायत्री के इन चारों भागों का व्याख्यान चार वेदों के रूप में दिया । इस प्रकार उसका नाम वेद माता पड़ा ।

गायत्री में सन्निहित तत्वज्ञान की दो प्रकार से व्याख्या होती रही है-एक ज्ञान परक, दूसरी विज्ञान परक । ज्ञान परक को ब्रह्म विद्या और विज्ञान परक को ब्रह्म शक्ति कहते हैं । इन दोनों पक्षों को अलंकारिक रूप में ब्रह्मा की दो पत्नियों के रूप में चित्रित किया गया है । एक का नाम गायत्री, दूसरी का सावित्री । गायत्री में योगाभ्यास की ध्यान धारणा है और सावित्री में तपश्चर्या की प्रेरणा, एक को दर्शन दूसरे को प्रयोग कह सकते हैं ।

गायत्री का सार-शब्दार्थ इसी प्रार्थना में समाविष्ट हो जाता है कि "हे तेजस्वी परमात्मा ! हम आपके श्रेष्ठ प्रकाश को अपने में धारण करते हैं । हमारी बुद्धि को सन्मार्ग पर प्रेरित कीजिए " । शिक्षा की दृष्टि से इन शब्दों का सार 'बुद्धि को सन्मार्ग की दिशा पर चलाने के लिए प्रयत्न करना' है । सद्बुद्धि ही वह तत्व है जिसके आधार पर व्यक्तित्व निखरते-उभरते हैं कौन क्या बना ? किसे कितनी सफलता मिली?किसने कितना श्रेय सम्मान पाया ? उसका श्रेय समुन्नत लोगों की सद्बुद्धि को ही दिया जा सकता है जो दुर्गति के दलदल में फँसे,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उनके दुर्भाग्य का सूत्र संचालन दुर्बुद्धि ही करती दिखाई देगी । स्वर्ग तक ऊँचा उठा ले जाने और नरक के गर्त में गिराने का कार्य मानवीय बुद्धि की स्थिति और दिशा धारा पर ही अवलम्बित रहता है ।

तत्वदर्शी महा-मनीषियों ने इस तथ्य को समझा और मनुष्य मात्र को शिक्षा दी है कि वे बुद्धि का महत्व समझें और उसे शालीनता की रीति-नीति अपनाने के लिए प्रशिक्षित-अभ्यस्त बनाने का प्रयत्न करें । यही है गायत्री मन्त्र का मूल विषय ।

शब्दों की दृष्टि से इस महामन्त्र का भावार्थ सरल है-ॐ परमात्मा का स्वयंभू स्वोच्चारित नाम । प्रकृति को गहन अन्तराल से दिव्य ध्वनि, झंकार, घर-घराहट के रूप में गूँजती है । ब्रह्म और प्रकृति का बार-बार संयोग आघात होने से ही तीन गुण-पाँच प्राण और पाँच तत्व उत्पन्न होते हैं । उन्हीं से पदार्थों और प्राणियों की संरचना होती है । शब्द-ब्रह्म को सृष्टि का आदि कारण माना गया है । इसी को प्रकृति और पुरुष की मिलन प्रक्रिया का अनवरत क्रम कहा गया है । यहीं से अनहद-नाद उत्पन्न होता है । यही ॐ कार है । घड़ियाल पर हथौड़े की चोट पड़ते रहने से जिस प्रकार झंकार-थरथराहट होती है । जिस तरह घड़ी का पेण्डूलम हिलने से आवाज भी होती है और मशीन भी चलती है ठीक उसी तरह प्रकृति पुरुष के मिलन संयोग से ॐकार उत्पन्न होता है और उस सृष्टि बीज से क्रमशः सूक्ष्म प्रकृति से स्थूल प्रकृति का आकार बनता जाता है । परा प्रकृति के अपरा बनने की-अदृश्य के दृश्य होने की यही प्रक्रिया है । इस प्रकार ॐकार ईश्वर का स्वच्चरित सर्व श्रेष्ठ नाम माना गया है । प्रत्येक वेद मन्त्र के सम्मानार्थ सर्व प्रथम ॐकार लगाये जाने की परम्परा भी है गायत्री मंत्र में ॐकार का प्रयोग इसी दृष्टि से हुआ है ।

भूः भुवः स्वः यह तीन लोक हैं । यों उन्हें पृथ्वी, पाताल और स्वर्ग-मध्य 'ऊपर' नीचे के रूप में भी जाना जाता है । पर आध्यात्म प्रयोजनों में भूः स्थूल शरीर के लिए, भुवः सूक्ष्म शरीर के लिए और स्वः कारण शरीर के लिए प्रयुक्त होता है । बाह्य जगत और अन्तर्जगत के तीनों लोकों में ॐकार अर्थात् परमेश्वर संव्याप्त है । व्याहृतियों में इसी तथ्य का प्रतिपादन है । इसमें विशाल विश्व को, विराट्, ब्रह्म के रूप में देखने की वही मान्यता है जिसे भगवान ने अर्जुन को अपना विराट् रूप दिखाते हुए हृदयंगम कराया था । ईश्वर के सर्वव्यापी होने की भावना यदि ठीक तरह हृदयंगम हो सके तो फिर न तो छिपकर दुष्कर्म कर सकना बन पड़ेगा और न किसी पदार्थ का दुरुपयोग या किसी प्राणी से दुर्व्यवहार करते बन पड़ेगा । ॐ और व्याहृतियों का समन्वित शीर्ष भाग इसी अर्थ और इसी प्रकाश को प्रकट करता है ।

तत् अर्थात् वह । सवितु-प्रकाश और ऊर्जा से-ज्ञान और वर्चस् से ओत-प्रोत परमेश्वर । वरेण्य-श्रेष्ठ । भर्ग-तेजस्वी, विनाशक । देव दिव्य इन चार शब्दों में परब्रह्म परमात्मा के उन गुणों का वर्णन है जिन्हें अपनाने का प्रयत्न करना हर अध्यात्मवादी के लिए, हर आत्मिक प्रगति के आकांक्षी के लिए नितान्त आवश्यक है ।

सविता-प्रातः कालीन स्वर्णिम सूर्य को कहते हैं । यह परमेश्वर की स्वनिर्मित प्रतिमा है । उससे बाह्य जगत में प्रकाश और अन्तर्जगत में सद्ज्ञान का अभिवर्षण होता है । सूर्य से गर्मी-ऊर्जा बाह्य जगत को मिलती है । सत्संकल्प और सत्साहस से भरी हुई आत्म शक्ति का अनुदान अन्तर्जगत को मिलता है । सविता शब्द का गायत्री मन्त्र में सर्व प्रथम उल्लेख इसी दृष्टि से हुआ है कि साधक को प्रज्ञावान और शक्तिवान बनने के लिए अथक पुरुषार्थ करना चाहिए ।

वरेण्यं-श्रेष्ठ चुनने योग्य-स्वीकार करने योग्य वरिष्ठ । इस संसार में उत्कृष्ट-निकृष्ट, भला-बुरा सब कुछ विद्यमान है । उसमें से जो श्रेष्ठ है उसी को स्वीकार करना चाहिए । हंस जिस प्रकार नीर-क्षीर का विवेक करता है-मोती ही चुनता है उसी प्रकार हमारा चयन मात्र उत्कृष्टता का ही होना चाहिए । निकृष्टता का तिरस्कार बहिष्कार करना ही उचित है । आकर्षक और हितकर में से किस का चयन करें इसी प्रश्न पर प्रायः भयंकर भूल होती रहती है । तात्कालिक लोभ के लिए दूरगामी हितसाधन की उपेक्षा की जाती है । यह भूल न होने देने की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ओर गायत्री मन्त्र में संकेत है । कहा गया है कि नीति निर्धारण करते एवं कदम उठाते समय हजार बार ठोक बजा कर देख लिया जाय कि यह वरेण्य है या नहीं । औचित्य, न्याय, हित का समिश्रण है या नहीं ।

भर्ग शब्द तेजस्विता का बोधक है । इसमें प्रतिभा, साहसिकता, तत्परता, तन्मयता जैसे तत्वों का समावेश है । क्रिया में ओजस्-विचारणा में तेजस् और भावनाओं में वर्चस् का आभास जिस दिव्य तत्व के आधार पर मिलता है उसे भर्ग कहते हैं । भर्ग में एक भाव भूनने नष्ट करने का भी है । अवांछनीयता अनैतिकता, मूढ़ मान्यता जैसी दुष्प्रवृत्तियाँ छाई रहें तो मनुष्य माया और पतन के दलदल में फँसा ही रहेगा । इनसे छुटकारा पाने के लिए ऐसी प्रखरता का उद्भव होना चाहिए जो अन्तर के कषायों और भीतर के कल्मषों से लोहा लेने में शौर्य पराक्रम का परिचय देती रहे । भर्ग तत्व की विशिष्टता ओजस्वी, तेजस्वी, मनस्वी और तपस्वी लोगों में देखी जाती है । इसी का सम्पादन करके प्रगति के पथ पर बढ़ चलना सम्भव हो सकता है ।

परमेश्वर के अनन्त नाम हैं और इच्छानुसार नये रखे जा सकते हैं । किन्तु आत्मिक प्रगति के लिए जिन चार विशिष्टताओं की नितान्त आवश्यकता है उनके बोधक शब्दों का समावेश गायत्री मंत्र में हुआ है । सविता, वरेण्य, भर्ग के उपरान्त चौथी विभूतिमत्ता का नाम है 'देव' । देवताओं की गरिमा महिमा के सम्बन्ध में मोटी मान्यता और कल्पना प्रायः सभी को होती है । वे सुन्दर होते हैं, सदा युवक रहते हैं, उन्हें किसी बात की कमी नहीं पड़ती, प्रसन्न रहते हैं । वे दिव्य गुण कर्म स्वभाव के होते हैं । दूसरों की सहायता करते हैं, उनका निवास ऊँचाई पर होता है, जिस क्षेत्र में रहते हैं, वह स्वर्ग कहलाता है । असुरता से वे सदा जूझते रहते हैं । प्रायः इन्हीं विशेषताओं से युक्त स्वर्ग लोक के निवासी देवता माने जाते हैं । मानवीय प्रगति की अगली सीढ़ी देवत्व ही है । पशुता के पाताल से वह ऊपर उठ आया । इन दिनों पृथ्वी के धरातल पर मनुष्य के कलेवर तक आ गया है । इसे सार्थक बनाते ही उसका प्रवेश देव कक्षा में होता है । ईश्वर को 'देव' शब्द से सम्बोधन करने में यह आत्म-शिक्षण है कि हम परमात्म देव के भक्त बनें और देवत्व की विशेषता में उनका अनुकरण-अनुगमन करें ।

धीमहि शब्द का अर्थ है-धारण करना । आदर्शों को व्यवहार में उतारना ही उनकी धारणा है । कल्पनाएँ करते रहने-कहने सुनने मात्र में उलझे रहने से कुछ बनने वाला नहीं है । परिणाम ही क्रिया उत्पन्न करता है । क्रियावान ही सच्चा ज्ञानवान माना जाता है । उसी को सद्ज्ञान का सत्परिणाम उपलब्ध होता है जो चिन्तन को क्रिया में परिणत करने का साहस दिखाता है । आत्मानुशासन की साहसिकता को प्रखर बनाने के लिए ही विविध योग साधनाएँ और तपश्चर्याएँ सम्पन्न की जाती हैं ।

शीर्ष भाग में ईश्वर के सर्वव्यापी होने की आस्था को विकसित करके पदार्थों के प्रति सदुपयोग की ओर प्राणियों के प्रति सद्व्यवहार की नीति अपनाने का निर्देश है । प्रथम चरण में सविता और वरेण्य की तथा द्वितीय चरण में भर्ग और देव की अवधारणा का प्रशिक्षण है । गायत्री के अन्तिम तृतीय चरण धियो योनः प्रचोदयात् के अन्तर्गत परम पिता परमेश्वर से प्रार्थना की गई है कि वह साधक अकेले की नहीं वरन् समस्त जन समुदाय में प्राणि मात्र में धी तत्व की-सद्बुद्धि की प्रेरणा करे नः हम सबको और धियः बुद्धियों को कहते हैं यहाँ एक व्यक्ति की बुद्धि सुधर जाने को अपर्याप्त माना गया है । यह सुधार व्यापक रूप से हो तभी काम चलेगा । बहुमत दुर्बुद्धि ग्रस्तों का बना रहा तो एकाकी सज्जनता मात्र से कोई बड़ा प्रयोजन पूरा न हो सकेगा । राक्षसों की लंका में अकेला विभीषण तो किसी प्रकार अपना निर्वाह ही कर सका था । सच तो यह है कि दुष्टता के वातावरण से एकाकी सज्जनता भी घनी घटाओं से घिरे चन्द्रमा की तरह धूमिल ही बनी रहती है ।

भगवान से प्रार्थना की गई है कि अपना अनुग्रह व्यक्ति विशेष पर वर्षा कर हाथ रोक न लें वरन् सद्भाव के प्रकाश को उदीयमान सूर्य की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तरह सर्वत्र बिखेरें । वैदिक शिक्षण की पद्धति यह है कि किसी विभूति एवं सम्पत्ति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करने के रूप में आत्म-शिक्षण की व्यवस्था है । प्रार्थना एक शैली है जिसके आधार पर अपने लिए,सबके लिए प्रबल पुरुषार्थ करने का भी निर्देश संकेत है । माँगने भर से ही सब कुछ मिल नहीं जाता । याचना से तो आकांक्षा का, आवश्यकता का प्रकटीकरण मात्र है । किसी से कुछ पाना हो तो उसके लिए पात्रता की शर्त आवश्यक है । परमेश्वर से याचना करने का तात्पर्य यह नहीं है कि जो कुछ माँगा जा रहा है वह अन्धाधुन्ध बरसा दिया जाय, वरन् अन्तःकरण में विराजमान आत्म देव से यह अनुरोध करना है कि वे अपनी पात्रता और प्रौढ़ता विकसित करें, ताकि सहज ही उपलब्ध होती रहने वाली ईश्वरीय अनुकम्पा का अभीष्ट लाभ उपलब्ध हो सके ।

प्रचोदयात् शब्द से प्रेरणा का अनुरोध है । वस्तुतः यही ईश्वरीय अनुग्रह के प्रकट होने का केन्द्र भी है । प्रेरणा का तात्पर्य है अन्तःकरण में प्रबल आकांक्षा की उत्पत्ति । यह ही समूचे व्यक्तित्व का सारतत्व है । अन्तः प्रेरणा का अनुसरण मनः संस्थान करता है । मन के निर्देश पर शरीर काम करता है । क्रिया का परिणाम सम्पत्ति और परिस्थिति के रूप में सामने आता है।तदनुसार सुख-दुःख के वे स्वरूप सामने आते हैं जिन्हें पाने या हटाने के लिए मनुष्य इच्छा करता है । इच्छा की पूर्ति न होने में सहायक बाधक और कोई नहीं, अन्तःकरण की प्रेरणा का स्तर ही आधार भूत कारण होता है ।

गायत्री उपासना का उद्देश्य है व्यक्तित्व का ऐसा अनुकूलन जिसमें ईश्वर के अजस्र अनुग्रह को धारण करा सकने की पात्रता हो । उपजाऊ भूमि में ही वर्षा के बादलों के अनुग्रह से हरियाली उपजती है । कठोर चट्टानों पर तो एक पत्ता भी नहीं उगता । गायत्री उपासना का पूरा ध्यान आत्म परिष्कार में नियोजित हो यही है संक्षेप में गायत्री मंत्र का अर्थ और तात्पर्य । जो उसका पालन करता है, वह उन सभी लाभों से लाभान्वित होता है, जो गायत्री उपासना के सन्दर्भ में शास्त्रकारों और ऋषियों ने देव संस्कृति के विधान के अन्तर्गत बताये एवं समझाये हैं ।

ऐतरेय ब्राह्मण में गायत्री शब्द का अर्थ करते हुए कहा गया है "गयान् प्राणान् त्रायते सा गायत्री" अर्थात्-जो गय (प्राणों की) रक्षा करती है वह-गायत्री है । प्राण कहते हैं-चैतन्यता एवं सजीवता को । हमारे भीतर जो गति, क्रिया, विचार शक्ति, विवेक एवं जीवन धारण करने वाला तत्व है, वह प्राण कहलाता है । इस प्राण के कारण हम जीवित हैं । जब प्राण निकल गया तो जीवन का अन्त ही समझिये, प्राण रहित देह से कुछ प्रयोजन नहीं सधता । उसे तो नष्ट कर देना ही हितकर समझा जाता है । इसलिए उसे गाड़ या जला देते हैं । प्राण होने के कारण जीव को प्राणी कहते हैं, बिना प्राण का पदार्थ तो जड़ होता है । जब किसी प्राणी का प्राण निर्बल पड़ जाता है तो उसका बाह्य शरीर ठीक दिखाई देते हुए भी वह भीतर ही भीतर खोखला हो जाता है । कई व्यक्ति शरीर से मोटे दीखते हुए भी भीतर से बड़े निर्बल होते हैं । कोई कष्टसाध्य परिश्रम उनसे नहीं होता, वे थोड़ा-सा श्रम करने में बेतरह थक जाते हैं । सिर घूमने लगता है, हाथ-पाँव शिथिल हो जाते हैं, दम फूलने लगता है । उनका चेहरा, निस्तेज, प्रभाव रहित, आँखें गीली मटीली होती हैं और वाणी में जरा भी प्रभाव नहीं होता । कोई छोटी-मोटी बीमारी हो जाने पर उसे ठीक होने में मुद्दतें लग जाती है । इस प्रकार की भीतरी निर्बलतायें शरीर में दीख पड़ती हैं । उनमें बलवीर्य की बहुत न्यूनता हो जाती है ।

प्राणशक्ति के अभाव में मन का बुरा हाल हो जाता है, भय या अनिष्ट की आशंकाएँ अकारण मन में उठती रहती हैं, ऐसा लगता रहता है कि कहीं-अमुक प्रकार की आपत्ति न आ जाय । कहीं अमुक संकट उपस्थित न हो जाय । कोई विपत्ति सचमुच ही ऊपर आ जाय तब तो उनका बुरा हाल हो जाता है । हर घड़ी दिल धड़कता है । रात को नींद नहीं आती ऐसा अनुभव होता है मानो कोई उसे बुरी तरह कुचल रहा है । भीरुता एवं निराशा उसे घेरे रहती है।जिस काम को करने की सोचता है

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उसी में असफलता सूझती है । दुनिया के सब लोग स्वार्थी, धूर्त, बेवकूफ एवं शत्रु दिखाई पड़ते हैं । किसी की सचाई सदा-शयता एवं सद्भावना पर विश्वास नहीं होता । यह सब प्राण की कमी के लक्षण हैं । दुःस्वप्न, घबरा जाना, चिन्तातुर रहना, धैर्य खो देना, निराशाजनक भविष्य की कल्पनाएँ करते रहना, नास्तिक-सा बन जाना आदि बातें प्राणशक्ति की न्यूनता से होती हैं । निष्प्राण तो उसे कहते हैं जो पूरी तरह प्राण रहित हो जाता है, जड़ बन जाता है पर न्यूनप्राण उसे कहते हैं जो भीतरी और बाहरी दृष्टि से निर्बल हो गया है और उन निर्बलताओं का दुःख प्रतिक्षण भुगतता रहता है ।

प्राणवान की स्थिति इससे भिन्न होती है । उसकी नस-नस में उत्साह होता है, मन में हर घड़ी नई तरंगें उठती हैं, हृदय में दृढ़ता, साहस, धैर्य, आशा एवं स्फूर्ति की भावनाएँ गूँजती रहती हैं । वह प्रत्यक्षतः चाहे दुबला पतला दिखाई देता हो, कम पढ़ा लिखा हो, पिछड़ी हुई परिस्थितियों में रहता हो तो भी वह प्राण बल के आधार पर ऐसे-ऐसे अवसर प्राप्त करता है, ऐसे-ऐसे कार्य कर दिखाता है जिसे देखकर अधिक साधन सामर्थ्य रखने वाले व्यक्तियों को भी आश्चर्य से दाँतों के तले उँगली दबानी पड़ती है । मनुष्य में जो शक्ति है वह हाड़, माँस, रक्त, रस की नहीं, प्राण की शक्ति है । मरने के बाद हाड़ माँस सब मौजूद रहते हैं, पर केवल प्राण निकल जाते हैं । इस प्राण के हटते ही शरीर के सारे कल पुर्जे निरर्थक सिद्ध होते हैं । जीवन का सार प्राण है, क्योंकि सभी प्रकार की भौतिक शक्तियाँ प्राण के अन्तर्गत रहती हैं । जिसका प्राण जितना ही सबल है, अधिक है, सुरक्षित है, वह उतना ही पुरुषार्थी एवं शक्तिशाली है और अपने प्रयत्न से वह सब बात प्राप्त करेगा, जिसके द्वारा आन्तरिक और वाह्य सुख शान्ति को प्राप्त किया जा सकता है ।

इन सब तथ्यों पर विचार करने से प्रकट हो जाता है कि जीवन का सार प्राण है । यह प्राण स्वभावतः परमात्मा ने हमें प्रचुर मात्रा में दिया है । प्राण का अक्षय भण्डार हमारे चारों ओर लहलहा रहा है । उसमें से मनमानी मात्रा में हम अपने लिए ग्रहण कर सकते हैं । इतना होने पर भी जो लोग निर्बल प्राण देखे जाते हैं, वे अपनी इस दैवी शक्ति को सुरक्षित नहीं रखते हैं । उनकी प्राण शक्ति का बहुत सारा अंश निरर्थक खर्च हो जाता है । इस व्यय को रोकने से मनुष्य प्राणवान बन सकता है । व्यय किस तरह रुके, इसका समाधान ऐतरेय ब्राह्मण ने कर दिया है । श्रुति का कथन है कि गायत्री प्राणों की रक्षा करती है । ऐसे अन्य प्रमाण भी मिलते हैं जिनसे प्रकट होता है कि गायत्री नाम इसलिए पड़ा है कि वह प्राणों की रक्षा करती है ।

"प्राणागयाइति प्रोक्तात्रायते तान थापि वा ।"

-भट्टाज

अर्थात्-गय प्राणों को कहते हैं और जो प्राणों की रक्षा करती हैं वह गायत्री है ।

तद्यत्प्राणं त्रायते तस्माद् गायत्री ।

-वृहदारण्यक ४।१४।४

अर्थात्-जिससे प्राणों की रक्षा होती है वह गायत्री है ।

गयान् त्रायते गायत्री ।

-शंकरभाष्य

अर्थात्-प्राणों की रक्षा करे वही गायत्री है ।

गायस्त्रायते देवि ! तद्गायत्रीति गद्यसे ।
गयः प्राण इति प्रोक्तस्तस्य त्राणादपीति वा ।

-वशिष्ठ

अर्थात्-हे देवि ! तुम उपासक की रक्षा करती हो इसलिए तुम्हारा नाम गायत्री पड़ा है । गय प्राणों को कहते हैं, प्राणों की रक्षा करने से गायत्री नाम होता है ।

गायत्री प्रोच्यते तस्माद् गायन्तां त्रायते यतः ।

-याज्ञवल्क्य

अर्थात्-उसे गायत्री इसलिए कहा जाता है क्योंकि वह प्राणों की रक्षा करती है ।

आद्य शंकाराचार्य अपने भाष्य में लिखते हैं-

"गीयते तत्वमनया गायत्रीति"

अर्थात्-जिससे परम तत्व को जाना जाये, वह गायत्री है । जिस विवेक बुद्धि से, ऋतम्भरा प्रज्ञा से तत्व को, वास्तविकता को जाना जा सकता है, वह गायत्री है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तत्व और अतत्व का, सत्य और असत्य का, श्रेय और अश्रेय का जो बुद्धि निर्णय कर देती है, हमें क्या करना क्या न करना, इसका निर्णय दिव्य प्रकाश के आधार पर करने वाली ऋतम्भरा बुद्धि एक ऐसी अद्भुत शक्ति है, जिसकी तुलना में विश्व की और कोई शक्ति मनुष्य के लिए हितकारी नहीं । तमसाच्छादित बुद्धि में चाहे कितना ही चातुर्य क्यों न हो, चाहे वह कितनी ही तीक्ष्ण, कितनी ही उपजाऊ कमाऊ क्यों न हो, उससे मनुष्य का सच्चा हित नहीं हो सकता और न उससे आत्मिक सुख-शान्ति के दर्शन हो सकते हैं । भोग विलास के थोड़े से उपादान वह जरूर जमा कर सकती है, पर उन उपादानों के कारण चिन्ता, भय, आशंका, तृष्णा, मोह, मद आदि की मात्रा इतनी बढ़ जाती है कि उनका भार आत्मा के लिए असाधारण रूप से कष्टदायक सिद्ध होता है । जो सम्पत्ति नीति-अनीति का ध्यान रखकर इसलिए कमाई जाये कि इससे सुख की बृद्धि होगी, वह उलटा परिणाम उपस्थित करती है । थोड़ी सी बाहरी तड़क-भड़क दिखाकर भीतर का सारा आनन्द नष्ट कर देती है । उस आन्तरिक अशान्ति के कारण छोटे-मोटे अनेकों शारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक रोग उपज पड़ते हैं और वे हर घड़ी उस आदमी को बेचैन बनाये रहते हैं, जो अपने को बुद्धिमान समझने का दम भरता है । तमसाच्छन्न बुद्धि जितनी अधिक तीक्ष्ण होगी उतना अधिक विपत्ति का कारण बनेगी, ऐसी बुद्धि तो जितनी मन्द हो उतना ही उत्तम है ।

गायत्री उस बुद्धि का नाम है जो सतोगुणी दैवी तत्वों से आच्छादित होती है, जिसकी प्रेरणा से मनुष्य का मस्तिष्क और शरीर ऐसे मार्ग पर होता है, जिस पर चलते हुए पग-पग पर कल्याण के दर्शन होते हैं, जिससे हर कदम पर आनन्द का संचार होता है । सात्विक विचार और कार्यों को अपनाने से मनुष्य की प्रत्येक शक्ति की रक्षा और वृद्धि होती है । उनकी प्रत्येक क्रिया उसे अधिक पुष्ट, सशक्त एवं सुदृढ़ बनाती है और वह दिन-दिन अधिक शक्ति सम्पन्न बनता है ।

तमसाच्छादित बुद्धि द्वारा उत्पन्न हुए विचार और कार्य हमारी प्राण शक्ति को दिनों-दिन घटाते हैं । भोग प्रधान कार्यों से शरीर दिनों-दिन क्षीण होता है, स्वार्थप्रधान विचारों से मन दिनों-दिन अथाह पाप पंक में फँसता है। इस प्रकार जीवन की पैंदी में असंख्य छिद्र हो जाते हैं जिनमें होकर सारी उपार्जित शक्ति नीचे नष्ट हो जाती है । चलनी में चाहे कितना भी दूध दुहा जाय, सब नीचे गिर जायगा और चलनी खाली की खाली रह जायेगी, यही बात तमसाच्छन्न बुद्धि के लोगों के बारे में है । कितना ही कीमती भोजन हो सब विषय-भोगों की चटोरपन की उष्णता में जल जायेगा । वे चाहे जितनी बुद्धि दौड़ाकर नई कमाई करें पर तृष्णा, स्वार्थपरता, भय, अहंकार, लोभ आदि कारणों से चित्त सदा दुःखी ही रहेगा और उससे मानसिक शक्तियाँ नष्ट होती रहेंगी । इन दोनों के कारणों से प्राण निर्बल होता रहेगा और वह न्यूनप्राण व्यक्ति संसार में नाना प्रकार के उद्वेगों में किसी प्रकार हीन जीवन ही व्यतीत करता रहेगा ।

सतोगुणी, ऋतम्भरा विवेक बुद्धि हमारे शारीरिक आहार-बिहारों को सात्विक रखती हैं । संयम, ब्रह्मचर्य, अस्वाद, श्रमशीलता, सादगीमय प्राकृतिक दिनचर्या होने से बल-वीर्य बढ़ता और शरीर सक्रिय रहता है और दीर्घायुष्य की प्राप्ति होती है । मन में अपरिग्रह परमार्थ, सेवा, त्याग, सहिष्णुता, तितीक्षा, दया, सहानुभूति, मैत्री, करुणा, नम्रता, निरहंकारिता, धर्म, श्रद्धा, ईश्वरपरायणता आदि की भावना काम करती है । यह भावना जहाँ रहती है, वहाँ के परमाणु सदैव प्रफुल्ल और चैतन्य रहते हैं तथा उनका विकास होता है । इस प्रकार गायत्री सद्बुद्धि देकर हमारी प्राण रक्षा का हेतु बनती हुई अपने नाम को सार्थक करती है ।

अज्ञानान्धकार में भटकते हुए माया बन्धनों से बँध कर तड़पड़ाते हुए निम्न स्तरीय तत्वों के दल-दल में फँसे हुए प्राणी इस दुर्लभ जीवन को दुःख दारिद्रय की यातनाओं में घुला-घुलाकर नष्ट करते हैं । उनके लिए गायत्री एक प्रकाश है । एक आशापूर्ण सन्देश है । एक दिव्य प्रकाश है, जिससे कि उनके अन्तर्गत समस्त भौतिक, आध्यात्मिक, सांसारिक और मानसिक आनन्दों का स्रोत खुला हुआ है । वह हमारे मुँदे हुए विवेक के तृतीय नेत्र

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

को खोलती है, उसे ज्योति देकर इस योग्य बनाती है कि संसार को हम विवेक दृष्टि से देख सकें और जीवन-लक्ष्य को प्राप्त कर सकें । यही गायत्री का तत्व दर्शन है ।

नन्हें से वट बीज में विशालकाय बरगद का वृक्ष सन्निहित रहता है । मनुष्य की समूची काया का सार संक्षेप नगण्य से शुक्राणु में समाया होता है । विशालकाय ग्रन्थ जरा से माइक्रो-फिल्म पर उतार लिये जाते हैं । ठीक इसी प्रकार समूची देव संस्कृति का सार तत्व छोटे से गायत्री मन्त्र में समाविष्ट है । गायत्री को भारतीय संस्कृति की जननी और अधिष्ठात्री कहा गया है ।

गायत्री ब्रह्म-विद्या है । उसी को कामधेनु कहते हैं । स्वर्ग के देवता इसी का पयपान करके सोमपान का आनन्द लेते और सदा निरोग, परिपुष्ट एवं युवा बने रहते हैं । गायत्री को कल्प-वृक्ष कहा गया है । इसका आश्रय लेने वाला अभावग्रस्त नहीं रहता । गायत्री ही पारस है जिसका आश्रय सान्निध्य लेने वाला लोहे जैसी कठोरता कालिमा खोकर स्वर्ण जैसी आभा और गरिमा उपलब्ध करता है । गायत्री ही अमृत है । इसे अन्तराल में उतारने वाला अजर-अमर बनता है । स्वर्ग और मुक्ति को जीवन का परम लक्ष्य माना गया है । यह दोनों ही गायत्री द्वारा साधक को अजस्र अनुदान के रूप में अनायास ही मिलते हैं । मान्यता है कि गायत्री माता का सच्चे मन से अंचल पकड़ने वाला कभी कोई निराश नहीं रहता । संकट की घड़ी में वह तरण-तारिणी बनती है । उत्थान के प्रयोजनों में उसका समुचित वरदान मिलता है । अज्ञान के अन्धकार का भटकाव दूर करने और सन्मार्ग का सही रास्ता प्राप्त करके चरम प्रगति के लक्ष्य तक जा पहुँचना गायत्री माता का आश्रय लेने पर सहज सम्भव होता है ।

गायत्री को वेदमाता, देवमाता, विश्वमाता कहा गया है । वेदमाता इसलिए कि दिव्य ज्ञान के समस्त सूत्र उन चौबीस अक्षरों वाले अति संक्षिप्त किन्तु सार तत्व जैसे गायत्री मन्त्र में सन्निहित हैं । गायत्री के चार चरणों का व्याख्यान ब्रह्माजी ने चार वेदों के रूप में चार मुखों से किया था । वेदों के दुरूह ज्ञान का विस्तार-ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद्, स्मृति, सूत्र, पुराण आदि में होता चला गया है । आर्षग्रन्थों का समूचा वाङ्मय गायत्री मन्त्र की ही व्याख्या विस्तार समझा जा सकता है । संकेत-सूत्रों में महत्वपूर्ण जानकारियों का समावेश रहता है । गायत्री के चौबीस अक्षरों में नीतिशास्त्र, धर्मशास्त्र, समाजशास्त्र के समूचे सिद्धान्त सन्निहित हैं । इतना छोटा और इतना समग्र धर्मशास्त्र संसार भर में अन्य कहीं कोई नहीं है ।

गायत्री को देवमाता कहा गया है । उसका पयपान करने वाला मनुष्य ऊपर उठकर देवत्व का वरण करता है । दैवी शक्तियों से सुसज्जित होता है । देवताओं में जो विभिन्न स्तर की दिव्य सामर्थ्य हैं वे गायत्री का पयपान करने से ही उपलब्ध हुई हैं । अवतार चौबीस हुए हैं । इसका रहस्य यह है कि गायत्री के एक-एक अक्षर को अवतार के रूप में प्रतिपादित किया गया है । अवतारों की शिक्षा, लीला एवं सामर्थ्य का रहस्य इन्हीं चौबीस अक्षरों में सन्निहित समझा जाना चाहिए । इसी संक्षेप को पुराणों में अवतारों के सुविस्तृत कथानकों के रूप में मनोरंजक एवं सुबोध शैली में समझाया गया है । धरती पर रहते हुए देवत्व प्राप्त करने में गायत्री साधना से बढ़कर और कोई अवलम्बन नहीं । निष्ठावान साधक इस महामन्त्र की विभिन्न प्रयोजनों के लिए साधना करते और चमत्कारी ऋद्धि-सिद्धियाँ उपलब्ध करते हैं ।

गायत्री एक सार्वभौम दर्शन-गायत्री के बीजाक्षरों में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के आधारभूत सिद्धान्तों का समावेश है । वह किसी जाति, देश, धर्म, लिंग की बपौती नहीं । उसे मनुष्य समाज का कोई भी नागरिक प्रसन्नतापूर्वक अपना और भरपूर लाभ उठा सकता है । सूर्य, चन्द्र, धरती, वायु, बादल आदि की तरह गायत्री भी विश्व-सम्पदा है । उसकी प्रेरणा सभी कृत्रिम भेद-भावों को मिटाकर विश्व नागरिक की तरह परस्पर स्नेह, सहयोग करने और मिल बाँटकर खाने की दिशा निर्देश करती है । निकट भविष्य में युग बदलेगा और विश्व-कुटुम्ब का निर्माण होगा । विभेद और बिलगाव की दीवारें गिरेंगी । एकराष्ट्र, एकभाषा,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

एक धर्म, एक व्यवस्था अपनाकर एकात्मकता का आदर्श सर्वमान्य बनेगा । इससे कम में प्रस्तुत संकटों और विग्रहों के समाधान की सम्भावना नहीं, उज्ज्वल भविष्य की संरचना में-विश्व के नये निर्माण-निर्धारण में-गायत्री तत्व दर्शन समूचे मनुष्य समाज को नये ढाँचे में ढलने के लिए विवश करेगा । विश्वमाता अपने पुत्र-परिजनों को विश्व-नागरिकता की उदार दृष्टि अपनाने और विश्व-शान्ति के आधार पर बनाने के लिए समर्थ वातावरण उत्पन्न करेगी । भूतकाल में भी वे विश्व व्यवस्था में उत्पन्न होते रहने वाले असन्तुलनों को सम्भालने के लिए अपने अवतारी देव-दूतों को कार्य क्षेत्र में उतारती रही हैं । इन दिनों भी उन्हीं की प्रेरणा से नये विश्व का नया निर्माण कर सकने वाला प्रवाह-युगान्तरीय चेतना के रूप में तूफानी गति से आविर्भूत हो रहा है ।

गायत्री मन्त्र का एक समूचा योगशास्त्र है । उसके चौबीस अक्षरों में चौबीस प्रकार के योगाभ्यासों एवं तप-साधनों का दर्शन-विधान समाविष्ट है । विभिन्न साधकों द्वारा इन्हीं में से किसी का-किन्हीं का-अवलम्बन ग्रहण करके अपनी रुचि का साधन-पथ अपनाया जाता है । अध्यात्म साधनाओं का समस्त समुच्चय खोजना हो तो उसे गायत्री मन्त्र के चौबीस शक्ति गुच्छकों में तलाश करना चाहिए ।

गायत्री के चौबीस अक्षरों का शास्त्रकारों ने विभिन्न प्रकार के निरूपणों में अपनी-अपनी शैली के अनुसार प्रस्तुतीकरण किया है । चौबीस देवताओं, चौबीस देवियों, चौबीस ऋषियों, चौबीस साधनाओं, चौबीस सिद्धियों का वर्णन आध्यात्मिक ग्रन्थों में रहस्यमय भाषा में निरूपित किया गया है । वस्तुतः यह गायत्री के दर्शन स्वरूप एवं प्रतिफल का ही आलंकारिक वर्णन-विवेचन है ।

गायत्री उपासना की क्रिया-प्रक्रिया

गायत्री उपासना को नित्य कर्म माना गया है । शरीर की भूख बुझाने जीवन-यापन के लिए उपयुक्त शक्ति संग्रह के लिए आहार करना नित्य कर्म है । मल विसर्जन स्नान आदि की स्वच्छता भी नित्य कर्म है । इसी प्रकार आत्मा को भोजन देने-आत्मबल संचय करके उत्कर्ष की क्षमता प्राप्त करने के लिए उपासना भी नित्य कर्म है । कपड़े धोना, झाड़ू लगाना, स्नान, दन्तमंजन आदि स्वच्छता कर्मों की तरह ही मनः क्षेत्र पर आये दिन जमने वाले कषाय-कल्मषों का परिशोधन करना भी नित्य उपासना का एक प्रयोजन है । आहार और स्वच्छता की व्यवस्था न करने पर शरीर निर्वाह कठिन हो जाता है उसी प्रकार उपासना न करने पर आत्मा दिन-दिन दुर्बल होती है । आत्मिक क्षेत्र विकृतियों से भरा चला जाता है । अस्तु, आजीविका उपार्जन-विश्राम आदि दैनिक कृत्यों की तरह उपासना को भी आध्यात्मिक नित्य कर्म माना गया है ।

भारतीय संस्कृति में उपासना के लिए जो नित्य विधान है, उसे संध्या कहते हैं । संध्या, दिन और रात्रि के मिलन काल को कहते हैं । प्रातःकाल सूर्योदय से पूर्व का और सायं सूर्यास्त के पीछे का समय संध्या काल माना गया है । इस समय संध्या वन्दन कृत्य आवश्यक है । कहीं-कहीं प्रातः, मध्याह्न और सायं त्रिकाल संध्या का भी विधान है । अन्यथा दो बार संध्या करने की परम्परा निवाहने पर तो बहुत जोर दिया गया है । इस कृत्य के निर्वाह की प्रशंसा की गई है । पुण्य फलदायक एवं अन्य सत्परिणामदायक बताया गया है । जो इस दिशा में आलस बरतते हैं उपेक्षा करते हैं, उनकी शास्त्रकारों ने कटु भर्त्सना की है ।

संध्या के कई विधान प्रचलित हैं, पर उन सब में गायत्री उपासना अनिवार्य है । गायत्री के बिना किसी भी विधान के अनुसार संध्या कृत्य पूर्ण नहीं हो सकता । जिन्हें अन्य विधान न आते हों वे केवल गायत्री जप करके भी संध्या कृत्य पूर्ण कर सकते हैं ।

संध्या कृत्य के साथ गायत्री उपासना का शास्त्रीय निर्देश अनेक स्थानों पर मिलता है । यथा-

एतदक्षरमेतां जपन् व्याहृति पूर्वकाम ।
सन्ध्ययोर्वेदविद् विप्रो वेद पुण्येन मुच्यते ।।

-मनु० २।७८

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

संध्या करते हुए व्याहृति सहित गायत्री जप करने से वेदाध्ययन का फल प्राप्त होता है ।

आचार्यस्त्वस्य यां जातिं विधिवद् वेद पारगः ।
उत्पादयति सावित्र्या सा सत्या साऽजराऽमरा ।।

-मनु०

वेदों का ज्ञाता आचार्य सावित्री का उपदेश देकर जन्म देता है वही जाति सच्ची और अजर, अमर होती है ।

पूर्वां सन्ध्यां जपंस्तिष्ठेत् सावित्रीमार्कदर्शनात् ।
पश्चिमां तु समासीनः सम्यगृक्षविभावनात् ।।

-मनु० २।१०१

सूर्योदय से पूर्व प्रातःकालीन संध्या में खड़े होकर और सायंकालीन संध्या में जब तक सूर्य दीखे तब तक बैठकर जप करने से मन का निग्रह होता है ।

संध्यासु चार्य्यदानं च गायत्री जपमेव च ।
सहस्त्रत्रितयं कुर्वन्सुरैः पूज्यो भवेन्मुने ।।

-वशिष्ठ

"तीनों संध्याओं में अर्घ्य देवे और प्रत्येक संध्या में एक हजार गायत्री जप करे तो हे मुने ! वह मनुष्य देवताओं द्वारा भी पूज्य हो जाता है ।"

समस्तसमतन्तुभ्यो जपयज्ञ परः स्मृतः ।
हिंसान्ये प्रर्वतन्ते जपयज्ञो न हिंसया ।।
ते सर्वे जप यज्ञश्च नाहति षोडशीकलां ।
जपने देवता नित्यं स्तूयमाना प्रसीदति ।।
प्रसन्ना विपुलान् भोगान् दधान्मुक्तिश्च शाश्वतीम् ।
यक्ष राक्षस वैतालः भूतप्रेत पिशाचकः ।
जपाश्रयीं द्विज दृष्टा, दूरं ते यान्ति भीतितः ।।

-भारद्वाज

जप यज्ञ अधिक श्रेष्ठ है । उसमें हिंसा आदि का दोष नहीं है ।

जप द्वारा प्रसन्न हुए देवता प्रचुर योग साधन तथा अक्षय शक्ति प्रदान करते हैं ।

जप करने वाले साधक को देखते ही यक्ष, राक्षस, वैताल, भूत-प्रेत, पिशाच आदि डर कर भाग जाते हैं ।

जप की श्रेष्ठ साधना को निरन्तर श्रद्धापूर्वक अपनाना चाहिए ।

एवं संध्या विधि कृत्वा गायत्री च जपेद स्मरेत् ।
गायेच्चिष्यान् यत स्त्रायेदभार्यां प्राणांस्तथैव च ।।

-अग्नि पुराण

"संध्या विधिपूर्ण करने के पश्चात् गायत्री का जप और स्मरण करना चाहिये । गायमान होने से अर्थात् उपासना करने से वह गुरु, शिष्य, स्त्री और प्राणी सब का उद्धार करती है ।"

महाभारत में महर्षि मार्कण्डेय और राजा युधिष्ठिर के संवाद रूप में गायत्री का विस्तृत माहात्म्य बताया गया है । उसके कुछ श्लोक इस प्रकार हैं-

चिन्तच्छौचं भवेद्येन विप्रः शुद्धः सदा भवेत् ।
तदिच्छामि महा प्राज्ञ श्रोतुधर्माभृतांवर ।।

हे धर्म धुरीण युधिष्ठिर मैं वह विधान सुनना चाहता हूँ जिस आचरण से ब्राह्मण का ब्राह्मणत्व परिष्कृत होता है ।

युधिष्ठिर ने कहा-

सायं प्रातश्च सन्ध्यां ब्राह्मणोह्युप पुसेवते ।
प्रजपन पावनीं देवीं गायत्री वेदमातरम् ।
स तयापावितो देव्या ब्राह्मणो नष्ट किल्विष्यः ।
न सीदेत् प्रतिग्रह नो महीमपि सागरात् ।

जो ब्राह्मण प्रातः सायं परमपावनी वेदमाता गायत्री का जप सन्ध्योपासन सहित करता है, वह पाप प्रवृत्तियों से छुटकारा पाकर परम पवित्र हो जाता है और प्रतिग्रह पाप से बचा रहता है ।

ध्यामाच्छान्तो जपेन्मन्त्रं जपाच्छान्तश्च चिन्तयेत् ।
जपध्यानादियुक्तस्य विष्णुः शीघ्रं प्रसीदति ।।
जपिनं नोपसर्पन्ति व्याधयश्चाऽऽधयो ग्रहाः ।
भुक्तिर्मुक्तिर्मृत्युंजयो जपेन प्राप्नुयात्फलम् ।।

-अग्नि पुराण

शान्त चित्त होकर मन्त्र का जप करना चाहिए । जप और ध्यान दोनों की संयुक्त साधना में भगवान की प्राप्ति जल्दी ही होती है ।

जप करने वाले को शारीरिक व्याधियाँ और मानसिक व्यथाएँ नहीं सतातीं । जप करने वाला भुक्ति और मुक्ति दोनों ही प्राप्त करता है ।

गायत्री साधना की अगणित प्रभावपूर्ण धाराएँ हैं । उनमें वैदिकी, दक्षिणमार्गी या तांत्रिकी वाममार्गी दोनों का ही समोवश है । विशिष्ट

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

साधनाएँ साधक विशेष की आन्तरिक स्थिति के अनुरूप ही की या कराई जाती है । सर्वसाधारण के लिए उन्हें न तो करने का निर्देश दिया जा सकता है और न ही उन्हें हर कोई अपना सकता है । पर सामान्य जनों के लिए उपयोगी तथा सर्वांगपूर्ण साधन भी है, जिन्हें अपनाकर किसी भी स्थिति का व्यक्ति अपना आत्मिक स्तर ऊँचा उठा सकता है और महापुरुषों गायत्री सफलता उन जैसा व्यक्तित्व प्राप्त कर सकता है ।

इस सर्वांग पूर्ण सर्व सुलभ साधन को तीन चरणों में बाँटा जा सकता है : (१) उपासना, (२) आत्म शोधन, और (३) परमार्थ । इन तीन चरणों को त्रिपदा गायत्री के तीन पाद भी कहा जा सकता है । इस साधना प्रक्रिया में कोई विशेष विधि विधान, कर्मकाण्ड भी नहीं करने पड़ते हैं और लाभ वे सभी प्राप्त हो जाते हैं जो आत्म कल्याण के पथिकों को अभीष्ट होते हैं । इन तीनों को साथ-साथ लेकर ही आगे बढ़ना पड़ता है, इनमें एक भी ऐसा नहीं जिसे छोड़ा जा सके और एक भी ऐसा नहीं कि अकेले के सहारे आत्मोत्कर्ष का लक्ष्य पूरा हो सके । अन्न जल और वायु के सहारे जिस प्रकार जीवन चर्या चलती है, उसी प्रकार उपरोक्त तीनों आधारों को अपनाने से ही समग्र प्रगति का उद्देश्य पूरा होता है ।

इन तीन आधारों में से प्रथम है उपासना । उपासना का तात्पर्य है ईश्वर के निकट बैठना । भजन, पूजन, जप, ध्यान इसीलिए किया जाता है कि अन्तःक्षेत्र में विद्यमान महानता का दिव्य दर्शन करने, उसके निकट बैठने और श्रेष्ठता का आलोक चिन्तन तथा व्यवहार में भरते रहने का नियमित प्रयास अनवरत गति से चलता रहे । उपासना, आत्मा की तात्विक आवश्यकता है । ईश्वर के साथ घनिष्टता बढ़ाने और अनुग्रह अनुदान पाने के लिए उपासना की अनिवार्य आवश्यकता रहती है । उसमें आलस्य प्रमाद नहीं ही किया जाना चाहिए । इसके लिए बरती गई उपेक्षा समय की बचत नहीं अन्ततः भयंकर क्षति ही सिद्ध होती है । ईश्वर से अलग-थलग पड़कर हम बचाते कम और गँवाते अधिक हैं ।

उपासना की दृष्टि से गायत्री का अवलम्बन ऐसा है जिसे बिना किसी साम्प्रदायिक भेद-भाव के अपनाया जा सकता है । न्यूनतम पाँच मिनट का जप ध्यान और अधिकतम जितना बन पड़े छः घंटे नित्य तक उसकी विशिष्ट साधनाओं में लगाये जा सकते हैं । व्यक्ति विशेष की मनःस्थिति और परिस्थिति से तालमेल बिठाते हुए गायत्री उपासना का उपक्रम कई प्रकार से अपनाया जा सकता है । इसका निर्धारण विज्ञ-व्यक्तियों से कराना उपयुक्त रहता है । प्रयत्न यही होना चाहिए कि उपासना के लिए-गायत्री आराधना के लिए दिनचर्या में सुनिश्चित स्थान बना ही रहे ।

उपासना आवश्यक है और अनिवार्य भी । पर उतने से ही आत्मिक प्रगति का उद्देश्य पूरा नहीं हो सकता । उसके साथ-साथ आत्म-शोधन का प्रयास भी चलना चाहिए । जन्म-जन्मान्तरों से संगृहीत पशु प्रवृत्तियों को उखाड़ना और उनके स्थान पर मानवीय सत्प्रवृत्तियों को आरोपित करना एक बहुत बड़ा काम है । इसके लिए आत्म निरीक्षण-आत्मशोधन का पुरुषार्थ करना पड़ता है ।

प्रातःकाल उठते ही जीवन उद्देश्य और उसके सदुपयोग का स्मरण किया जाय और एक दिन को एक जन्म मानकर उसका श्रेष्ठतम सदुपयोग करने की योजना-दिनचर्या बनाई जाय । उठने से लेकर सोने तक का चिन्तन और क्रिया-कलाप उत्कृष्टता से युक्त रखने का प्रयत्न किया जाय । भूलों के लिए आत्म प्रताड़ना की जाय और अगले कदम अधिक सावधानी बरतने की सतर्कता रखी जाय । इस प्रकार जीवन का दैनिक क्रम चलेगा । फलतः निरन्तर आत्मिक प्रगति की दिशा में चरण निरन्तर बढ़ते चलेंगे । लक्ष्य तक पहुँचने का यही मार्ग है । आत्म परिष्कार ही सर्वतोन्मुखी प्रगति और चिरस्थायी सुख-शान्ति का एकमात्र मार्ग है । जीवन साधना के अभ्यासी को रात्रि को सोते समय इस प्रकार सोचना पड़ता है मानो नींद ही मृत्यु है । प्रातः जीवन के अरुणोदय का और रात्रि को उसके अस्त अवसान का ध्यान रखने से वह प्रकाश मिलता है जिसके आधार पर अनगढ़ जीवन क्रम को सुगढ़, असभ्य को सुसंस्कृत, पिछड़े को समुन्नत

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बनाया जा सकना संभव हो सके । सधाये हुए घोड़े, हाथी, शेर, रीछ, बन्दर, सांप आदि तक सम्मान पाते और उपयोगी सिद्ध होते हैं । जीवन को साधने और सुसंस्कृत बनाने का पुरुषार्थ ऐसा ही महत्वपूर्ण है ।

आत्म-शोधन का नियमित अभ्यास इसलिए भी आवश्यक है कि प्रस्तुत अवांछनीय वातावरण का प्रदूषण अन्तःकरण पर निरन्तर जमता रहता है । सर्वव्यापी दुष्प्रवृत्तियाँ अपना प्रभाव छोड़ती हैं और पतनोन्मुख रीति नीति अपनाने के लिए विवश करती हैं । इस प्रभाव के निरस्त करने के लिए चिन्तन की पवित्रता, मस्तिष्क का संतुलन एवं इन्द्रियों का संयम आवश्यक मानकर चलना चाहिए । यह संयम साधना भी आत्म-शोधन का ही एक अंग है ।

विचारों को उपयोगी एवं सामयिक कार्यों में मनोयोगपूर्वक लगाये रहने के लिए नियोजित रखना चाहिए । उन्हें अव्यावहारिक आवश्यक कुकल्पनाओं के जंजाल में नहीं भटकने देना चाहिए । एकाग्रता की शक्ति पग-पग पर चमत्कारी परिणाम उत्पन्न करती है । ध्यान योग से एकाग्रता उपार्जित की जाती है । यह कार्य सैद्धान्तिक सुनिश्चय से भी हो सकता है । सामने प्रस्तुत कार्यों में तन्मयतापूर्वक जुट जाना, उनमें पूरा रस लेना और काम को उत्कृष्टता की प्रतिष्ठा का प्रश्न बना लेना-ऐसा स्वभाव है जिसका परिणाम कार्यों की सफलता और उस आधार पर मिलने वाले श्रेय सन्तोष के रूप में ही मिलना चाहिए । वैज्ञानिक, कलाकार, साहित्यकार, दार्शनिक स्तर के बुद्धिवादी एकाग्रता के आधार पर ही गौरवान्वित होते हैं । विचारों को हर घड़ी आवश्यक कामों में लगाने और अस्त-व्यस्त उड़ानों में उड़ने से रोकने का अभ्यास डाला जा सके तो यह समझना चाहिए कि विचार संयम की तपश्चर्या की जा रही है और इसके फलस्वरूप निश्चित रूप से उज्ज्वल भविष्य का निर्धारण होगा ।

समय के संयम का तात्पर्य है-एक क्षण भी निरर्थक न गँवाना । श्रम और विश्राम सभी योजना बद्ध होने चाहिए । काम चोरी-हराम खोरी में एक क्षण का भी अपव्यय नहीं होना चाहिए । काम को ईश्वर की पूजा माना जाय । निरन्तर श्रम संलग्न रहा जाय । कामों में आदर्शों का समन्वय रखा जाय उन्हें ईमानदारी और जिम्मेदारी से किया जाय तो समझना चाहिए कि सामान्य क्रिया-कलाप ही कर्मयोग कहलावेंगे और योगियों जैसा सत्परिणाम उत्पन्न करेंगे । कर्तव्य पालन को इतना महत्व दिया जाय कि उसी से पूरा-पूरा संतोष मिलने लगे । सफलता-असफलता की चिन्ता ही न रहे । यही गीता का कर्मयोग है । जिसे भगवान ने जीवन की अति महत्वपूर्ण साधना बताया है । यह श्रम, साधना, समय के एक-एक क्षण को सुनियोजित रखने से ही संभव होती है । ईश्वर प्रदत्त धन-वैभव हमें साँसों के रूप में मिला है । उसे व्यर्थ गँवाने, कुकर्मों में लगाने अथवा सदुद्देश्यों में नियोजित रखकर जीवन लाभ प्राप्त करने के चयन को देखकर ही मनुष्य की मूर्खता एवं बुद्धिमत्ता का परिचय मिलता है ।

धन कमा लेना सरल है पर उसका सदुपयोग अति कठिन है । लोग कमाते तो बहुत हैं पर उसे व्यसन, विलासिता एवं अहंकार की पूर्ति के उद्धत कामों में अपव्ययी बनकर गँवा देते हैं । कुछ लालची, संग्रही, कृपणता बरतते हैं और न स्वयं उसका कुछ लाभ उठाते हैं, न दूसरों को उठाने देते हैं । संग्रह सड़न पैदा करता है । उससे अहंकार बढ़ता है और दुर्व्यसन-उत्पन्न होते हैं । उत्तराधिकारी भी इस हराम की कमाई को खाकर कुछ सुविधाएँ भले ही उठा लें व्यक्तित्व में प्रखरता उत्पन्न करने की दृष्टि से नितान्त घाटे में ही रहते हैं ।

धन कमाया तो कितना ही जा सकता है । उपार्जन उत्पादन में शिथिलता बरतने की आवश्यकता नहीं है पर जो कमाया गया है उसका उपयोग क्या होना है-इस पर अत्यन्त पैनी नजर रखी जाय । अनावश्यक खर्च न बढ़ाये जायें । वर्तमान परिस्थितियों में अनावश्यक सन्तानोत्पादन भी विशुद्ध अपव्यय है । जो पैसा घर के वर्तमान सदस्यों को समुन्नत बनाने में लगाया जा सकता था उससे अनेकों सत्प्रवृत्तियाँ पनपाई जा सकती थीं उसे अनावश्यक सन्तान उत्पन्न करके उनका बढ़ा-

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

चढ़ा व्यय भार उठाने में गँवाते चलना किसी भी दृष्टि से बुद्धिमत्तापूर्ण नहीं कहा जा सकता । इन्द्रिय संयम, विचार संयम, समय संयम और धन संयम के लिए योजनाबद्ध जीवन क्रम निर्धारित किया जा सके और उन पर दृढ़तापूर्वक चला जा सके तो इसे आत्म संयम की तपश्चर्या ही कहा जायगा । कसी हुई दिनचर्या और चतुर्विध संयम को मिलाकर आत्म कल्याण का लक्ष्य पूरा होता है ।

आत्मिक प्रगति का तीसरा चरण है-परमार्थ । इसे सेवा भी कहा जा सकता है । मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है । उसका निर्वाह संतोष एवं उत्कर्ष दूसरों के सहयोग पर ही आश्रित है । उसका ऋण चुकाया जाना चाहिए । ईश्वर ने अपना श्रेष्ठतम अनुदान-मानव जीवन दिया ही इसलिए है कि उसके द्वारा विश्व उद्यान को अधिक सुरम्य समुन्नत बनाने में सृष्टा का हाथ बँटाया जाय यह कार्य सेवा साधना में अधिकाधिक योगदान करने से भी सम्पन्न होता है । व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं का जो जितना स्वल्प रखेगा- औसत देशवासियों का निर्वाह स्वीकार करेगा वह सेवा साधना के लिए उतने ही उपयुक्त अवसर प्राप्त कर सकेगा । श्रेयाधिकारी समस्त महामानवों को सेवा-साधना के लिए अधिकाधिक अनुदान प्रस्तुत करने से ही गौरवास्पद बनने का अवसर मिला है । आत्म सन्तोष खरीदने का मूल्य सेवा के रूप में ही चुकाना पड़ता है । स्वार्थी मनुष्य की सदा भर्त्सना ही होती है । उसका दोष इतना ही है कि अपने मतलब को सोचने और करने में लगा रहता है । पीड़ा और पतन के निवारण में-सत्प्रवृत्तियों के संवर्धन में उसका अंशदान स्वल्प होता है । इस प्रवृत्ति की निन्दा, निष्ठुरता, कृपणता, संकीर्ण स्वार्थपरता आदि नामों से की जाती है और सुसम्पन्न होने पर भी उसे सर्वत्र घृणास्पद निकृष्ट स्तर का ही माना जाता है । उदारता आत्मीयता जैसी सत्प्रवृत्तियों को सुविकसित करने के लिए सेवा साधना में अधिकाधिक रुचि लेना और समय देना ही एकमात्र भाव है । दान पुण्य आदि को धर्म का अंग इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए माना गया है ।

और धन से भी कई तरह के दान पुण्य सेवा प्रयोजन पूरे होते हैं, पर मनुष्य की वास्तविक सेवा उसके भावनात्मक वैचारिक स्तर में उत्कृष्टता का समावेश करना ही हो सकता है । सद्गुणों में की सम्पदा से सुसम्पन्न व्यक्ति ही दुःख दारिद्र के चंगुल से छूट सकता है । आज व्यक्ति और समाज के सामने जो अगणित समस्याएँ एवं विपत्तियाँ मुँह बाये खड़ी हैं, उनका एकमात्र कारण विचार विकृति को ही कहा जा सकता है । ज्ञानदान को सर्वोत्तम सेवा कार्य सदा से माना जाता रहा है और आज भी उसी को सर्वोपरि प्रमुखता दी जा सकती है ।

परमार्थ का एक दूसरा अर्थ भी है उत्कृष्ट दृष्टि-कोण । सामान्यतः सभी मनुष्य अपने हित को या 'स्व' को केन्द्र मानकर ही अपने क्रियाकलाप चलाते है । में 'मेरा' मेरे घर वालों का यही विचार मनुष्य की गतिविधियों के केन्द्र बनते हैं । इस दृष्टिकोण को संकीर्ण कहा जा सकता है और जहाँ इस तरह की गई आशा फलवती नहीं होती वहीं दुःख होने लगता है । यदि मनुष्य स्वार्थ भरे संकीर्ण दृष्टिकोण को अपना कर ही काम करता है तो उसे प्रायः दुःखी ही होना पड़ता है । यदि उत्कृष्ट दृष्टिकोण को-कर्तव्य पालन की भावना को विकसित कर जीवन में अनासक्त योगी की भाँति कार्य किया जाय तो चारों ओर आनन्द ही आनन्द की वृष्टि होती रहती है । गायत्री की सर्वसुलभ साधना के ये तीन चरण हैं । इन्हें एक साथ चलाते हुए गायत्री साधना के वे सभी लाभ प्राप्त किये जा सकते हैं, जिनका विवेचन शास्त्रों में किया गया है ।

गायत्री की सर्वांगपूर्ण साधना जिन्हें करनी हो उन्हें समझ लेना चाहिए कि उसके भी पाँच चरण हैं, पाँच अध्याय हैं । कहा जा सकता है समग्र साधना विधान पाँच सोपानों में बँटा हुआ है । पाँच तत्वों से बना काय कलेवर पाँच प्राणों से बने हुए चेतना संस्थान भी पाँच प्रकार की तपश्चर्याओं से प्रभावित परिष्कृत होता है । गायत्री उपासना को सफल बनाने वाली पाँच तपश्चर्याएँ (१) उपवास, (२) ब्रह्मचर्य, (३) मौन, (४) तितीक्षा, (५) अनुदान इन पाँच नामों से प्रसिद्ध हैं । साधना के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

साथ-साथ इनका समन्वय जितना हो सकेगा उसी अनुपात से उसकी कार्यक्षमता बढ़ती चली जायगी ।

उन पाँच तपश्चर्याओं में सर्वप्रथम उपवास है जिसका प्रयोजन है आहार की संयमशीलता और सात्विकता । शारीरिक आवश्यकता भूख के रूप में प्रकट होती और आहार माँगती है । धर्म श्रद्धा के साथ जुड़ी हुई संकल्प शक्ति उस माँग को पूरा करने से इन्कार करती है । संस्कार और संकल्प के बीच विग्रह खड़ा होता है । समझा कर या बलपूर्वक संस्कार का दमन किया जाता है और धर्मबुद्धि के सहारे शरीर को संतोष समाधान कराया जाता है । इस अनुशासन स्थापना को तपश्चर्या कहा गया है । इस अभ्यास में अन्यान्य प्रकार की वासनाओं का दमन समाधान हो सकता है । इन्द्रिय निग्रह और मनोनिग्रह में इस सफलता से क्रमशः उत्साह साहस बढ़ता चलता है । मन को जीतना सबसे बड़ी विजय है । जो इस क्षेत्र में पूरी तरह सफल हो सके, उसे जीवन मुक्त ही कहा जायगा उपवास की तपश्चर्या के सहारे आत्मानुशासन स्थापित करने का महत्वपूर्ण प्रयोजन सिद्ध होता है ।

जीवनचर्या से लेकर साधना उपासना के आत्मिक व्यायामों तक में जिह्वा का बड़ा महत्व है । जप, स्तवन, पठन आदि जिह्वा से ही किये जाते हैं । अस्तु, इस उपकरण की शुद्धि नितान्त आवश्यक है । जिस जीभ रूपी बन्दूक से मंत्र रूपी कारतूस चलाया जाता है, उसकी सफाई पहले ही कर लेनी चाहिए । नाली में कूड़ा करकट भरा हो, दबाने का घोड़ा और दूसरे पुर्जे अस्त-व्यस्त हों तो कारतूस अच्छा होने पर भी निशाना लगना कठिन है । बंशी बजाने वाले पहले यह देख लेते हैं कि उसके छेद साफ हैं अथवा नहीं । मैले बर्तन में दूध उबालने या दुहने से उसके फटने की आशंका रहती है । यही बात अशुद्ध जिह्वा के सम्बन्ध में भी लागू होती है । उसके द्वारा किये गये पूजा उपचार एवं मन्त्र आराधन सफल नहीं होते अस्तु, उपासना को सार्थक बनाने के लिए जिह्वा शुद्धि की प्रक्रिया आवश्यक है । उस पर पूरा-पूरा ध्यान दिया जाना चाहिए । उपवास उसी प्रक्रिया का एक अंग है ।

उपवास किसे किस प्रकार कितना करना चाहिए ? यह साधक की मनःस्थिति और परिस्थिति पर निर्भर है । पूर्ण उपवास तो वही है जो मात्र जल पर रहा जाय । आंशिक उपवास के कितने ही प्रकार हैं- (१) दूध, छांछ, फलों का रस, शागों का रस जैसे पेय पदार्थों पर रहना, (२) अन्नाहार छोड़कर शाक, फल, दूध आदि पर निर्वाह करना, (३) एक समय भोजन करना, (४) एक अन्न एक लगावन रोटी, शाक, दाल, भात आदि से पेट भरना, (५) खिचड़ी, दलिया जैसी एक ही भगौनी से पकाई वस्तु से काम चलाना । उपवास की इन प्रक्रियाओं में से जो जितना कठिन सरल चुनाव कर सके वह उसे अपना सकता है ।

अस्वाद व्रत जिह्वा शुद्धि की इसी प्रक्रिया का एक अतिरिक्त भाग है । नमक, शक्कर, मसाले छोड़कर बिना स्वाद का भोजन करना इन्द्रिय निग्रह का एक बड़ा कदम है । स्वास्थ्य की दृष्टि से इसमें तनिक भी हानि नहीं । खाद्य पदार्थों में उपयोगी क्षारों की मात्रा प्रकृतितः होती है । उसमें ऊपर से नमक शक्कर आदि मिलाने की स्वास्थ्य की दृष्टि से तनिक भी आवश्यकता नहीं है । सृष्टि का कोई भी प्राणी ऊपर से नमक मसाले नहीं खाता । शरीर के लिए सभी आवश्यक तत्व सामान्य खाद्य पदार्थों में ही मिल जाते हैं । जीभ को चटोरेपन की आदत डालकर भोजन को अखाद्य बनाया जाता है और उसे अनावश्यक मात्रा में खाकर पेट खराब किया जाता है । मन में चंचलता और तामसिकता की वृद्धि भी उन मिलावटों के कारण ही उत्पन्न होती है ।

अस्वाद व्रत जिह्वा इन्द्रिय का संयम है । जीभ को चटोरेपन के दुर्गुण से छुड़ा लेने में साहसिकता का समादेश है । इसे जीत लेने पर अन्य सभी इन्द्रियों पर अनुशासन स्थापित कर सकना सरल हो जाता है । इसके भी आत्म निग्रह का संकल्प प्रखर होता है और इससे बढ़ा हुआ साहस अन्य कुसंस्कारी दुष्प्रवृत्तियों पर विजय पा सकने में समर्थ हो जाता है । आहार इस संयम से मनः संयम भी होता है और उससे आत्मिक प्रगति में बड़ी सहायता मिलती है । इसलिए उपवास और उसकी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

एक महत्वपूर्ण शाखा अस्वाद व्रत का पालन तपश्चर्या में सम्मिलित करना चाहिए । लगातार उसका कितने समय तक पालन किया जाय यह साधक की इच्छा पर निर्भर है, फिर भी न्यूनतम सप्ताह में एक बार तो इस तप के पालन का अभ्यास करना ही चाहिए ।

कहा जा चुका है कि उपासना को सार्थक और सफल बनाने में जिह्वा शुद्धि एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है । आहार शुद्धि इसका एक चरण है क्योंकि जिह्वा आहार ग्रहण के साथ उच्चारण संभाषण का कार्य भी करती है । इस क्षेत्र में संयम और पवित्रता का समावेश आवश्यक है । असत्य भाषण, छल, शेखी, खोरी, अवांछनीय परामर्श, अपमान, तिरस्कार, कटु वचन, चुगली, हिम्मत गिराना जैसे अनेक वाणी दोष हैं । इनके रहते भी वाणी की पवित्रता नहीं बन पाती । साधक को नपा तुला बोलना चाहिए । व्यर्थ की बकझक करते रहने की आदत पड़ गई हो तो वह दूर करनी चाहिए । अन्य वाणी दोषों को सुधारने के लिए पूरा-पूरा ध्यान देना चाहिए । इस संदर्भ में वाणी का विश्राम, निरीक्षण, संशोधन करने लिए के मौन का अभ्यास करना चाहिए । मौन को वाणी का तप कहा गया है ।

सुविधानुसार हर दिन जाग्रत स्थिति में एक दो घंटे मौन रहने का अभ्यास करने का प्रयत्न करना चाहिए । भोजन के समय, मलमूत्र विसर्जन में, उपासना के समय तो मौन रहने की परम्परा भी है । इसके लिए जिस समय कम जन सम्पर्क रहता है उस समय एक दो घंटे का मौन रखने का नियम बनाना चाहिए । सप्ताह में या महीने में एक दिन पूरा मौन रखना भी जिह्वा की अवांछनीय गतिविधियों पर रोक लगाने पुरानी आदतें भुलाने का एक अच्छा उपाय है ।

शक्ति संचय की दृष्टि से कम बोलना उपयोगी है । जब मनुष्य अधिक दुर्बल हो जाता है तो उसकी वाणी बन्द हो जाती है या लड़खड़ाने लगती है । यद्यपि होश हवाश बने रहते हैं । बोलने में अन्त:शक्तियों पर बहुत जोर पड़ता है । अनेकों अवयवों की संयुक्त शक्ति के अतिरिक्त उसमें शरीर की विद्युत शक्ति का भी एक बहुत बड़ा भाग खर्च होता है । दुर्बलता की स्थिति में उतनी सामर्थ्य न रहने से ही बोलने में कठिनाई नहीं होती है । गायत्री उपासना के संदर्भ में उपवास अखण्ड एवं मौन का अभ्यास करना नितान्त आवश्यक है । आहार की तामसिकता-स्वाद संयम और अनर्गल बातों से बचने-वाक् संयम से जिह्वा में वह शक्ति उत्पन्न होती है जिसके द्वारा किया गया जप आराधन सफल होता है ।

आहार और वाणी के संयम के बाद तीसरा तप है-ब्रह्मचर्य । ब्रह्मचर्य का मोटा अर्थ है वीर्य रक्षा । स्वास्थ्य सुरक्षा की दृष्टि से यह भी आवश्यक है । इस बहुमूल्य धातु का सूक्ष्म रूप ओजस् है । नेत्रों में ज्योति, वाणी में प्रभाव, मस्तिष्क में स्मृति, व्यक्तित्व में प्रतिभा, शरीर में स्फूर्ति, चेहरे पर तेजस्विता, मन में साहसिकता के रूप में यह ओजस् ही काम करता है । जीवन ज्योति का आलोक जिस तेल के आधार पर प्रकाशवान रहता है वह वीर्य रक्षा से ही संचित होता है । आत्मिक प्रगति के लिए प्रचण्ड संकल्प शक्ति की आवश्यकता पड़ती है । भौतिक आकर्षणों से लेकर कुसंस्कारों के अवरोधों से पग-पग पर जूझना होता है । इसके लिए योद्धाओं जैसे शौर्य साहस की आवश्यकता पड़ती है । इसके लिए अभीष्ट शक्ति संचय की दृष्टि से ब्रह्मचर्य का पालन आवश्यक है । दाम्पत्य जीवन का अर्थ आत्मघात नहीं है । पति-पत्नी भी दो भाइयों और मित्रों की तरह, दो बहिनों और सहेलियों की तरह मित्रता और प्रसन्नता भरा जीवन सरलता और सफलता पूर्वक जी सकते हैं ।

ब्रह्मचर्य का सूक्ष्म और महत्वपूर्ण भाग वह है जिसमें नर नारी को और नारी नर को कामुकता की दृष्टि से न देखकर सामान्य प्राणी की तरह देखते हैं । अश्लील विचारों की वासनात्मक कुदृष्टि का समन्वय नहीं होने देते । यदि स्नेहपूर्वक एक दूसरे को देखना आवश्यक हो तो पुत्री, भगिनी या माता की पुत्र भाई या पति की पवित्र दृष्टि रखते हुए घनिष्टता एवं मित्रता का भी निर्वाह हो सकता है । मस्तिष्क को अनावश्यक रूप से उत्तेजित करने में-चिन्तन को उच्चस्तरीय प्रयोजनों में संलग्न न होने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

देने में कामुकता के विचार ही अत्यधिक बाधक होते हैं । कल्पनाशक्ति का महत्वपूर्ण भाग इन्हीं कुप्रसंगों का ताना-बाना बुनने में नष्ट हो जाता है । कामुक दृष्टि रहने पर नेत्रों की दिव्य दृष्टि का बुरी तरह अपव्यय होता रहता है । ऐसा चिन्तन वीर्य पात से भी अधिक हानिकारक होता है । रति कर्म से स्थूल शरीर में जैसी हानि होती है वैसी ही कामुक चिन्तन से सूक्ष्म शरीर की प्राण प्रतिभा को क्षति उठानी पड़ती है । इसलिए ब्रह्मचर्य की तप साधना में न केवल वीर्य रक्षा का वरन् कामुक दृष्टि को निरस्त करने का भी अनुशासन है ।

चौथी तपश्चर्या है-तितीक्षा । तितीक्षा का अर्थ है सुविधाओं का स्वेच्छापूर्वक परित्याग और कष्टसाध्य जीवन क्रम का अभ्यास । यह कई कारणों से आवश्यक है । मितव्ययी ब्राह्मण जीवन की स्थिति अपनाने पर ही परमार्थ प्रयोजनों के लिए समय मन और धन बच सकता है । विलासी व्यक्ति की आवश्यकताएँ आकाँक्षाएँ इतनी बढ़ी-चढ़ी होती हैं कि उसके लिए परमार्थ प्रयोजन के लिए कुछ कर सकना तो दूर सोच सकना भी कठिन पड़ता है । अल्प व्यय में निर्वाह करने वाले को कई प्रकार की असुविधाएँ सहन करनी पड़ती हैं । इसका पूर्वाभ्यास तितीक्षा से ही करना पड़ता है ।

सर्दी, गर्मी, भूख, प्यास सहने का अभ्यास तितीक्षा है । भूमि शयन, बिना जूते के चलना, कम वस्त्रों का उपयोग भी इसी श्रेणी में आता है । बिना दूसरों की सहायता का स्वाबलम्बी जीवन, अपनी शरीर यात्रा के कार्य अपने हाथों करने का अभ्यास भी इसी प्रयोजन के लिए है । पाँचवाँ तप है अनुदान-अपने सुविधा साधनों में कमी करके उस बचत को सत्प्रयोजन में लगाते रहना अनुदान अथवा अंशदान है । समय दान, श्रम दान, धन दान आदि इसी वर्ग में आते हैं । अपने धर्म कृत्यों में से प्रत्येक के साथ किसी न किसी रूप में दान देने का विधान है । विविध प्रकार के दान, पुण्य परमार्थ एवं कृत्य माने गये हैं । गायत्री अनुष्ठानों के अन्त में यज्ञ हवन, ब्रह्मभोज, प्रसाद वितरण की पूर्णाहुति की जाती है । यह लोक मंगल के लिए अंशदान की ही एक प्रक्रिया है । दान का अर्थ यों मोटे रूप में पैसा देना ही किया जाता है । प्रत्यक्ष दृश्यमान और अधिक स्थूल होने के कारण इसी का दृश्य आँखों से देखा और यश कानों से सुना जा सकता है । अस्तु, धन दान ही, त्याग बलिदान का-अंशदान अनुदान का प्रतीक बन गया है । जिनके पास धन नहीं है वे भी किसी महादानी की भूमिका समय श्रम, बुद्धि, प्रभाव आदि ईश्वर प्रदत्त सम्पदाओं को सत्प्रयोजनों में लगाकर निभा सकते हैं ।

अंशदान का अर्थ है अपना उपार्जन तो अधिकाधिक बढ़ाना पर उसका न्यूनतम अंश ही अपने निर्वाह में खर्च करना, शेष बचता हो तो परमार्थ प्रयोजनों में लगा देना । यह अंशदान भी तपश्चर्या का एक रूप है । उसमें अपनी वासना तृष्णा पर लोभ मोह का अंकुश डालना पड़ता है । अपनी सुविधाओं को दूसरे उपयोगी कार्यों या व्यक्तियों के लिए निछावर करना पड़ता है । इतनी उदार साहसिकता को जो भी परमार्थ प्रयोजनों के लिए नियोजित कर सके, उसे तपस्वी ही कहा जायगा ।

तपश्चर्या का यह पाँचवाँ चरण है । इन पाँचों को किसी न किसी रूप में कार्यान्वित करके गायत्री उपासना के वास्तविक सत्परिणाम देखने का अवसर प्राप्त करना चाहिए ।

गायत्री महिमा के २४ सूत्र

(१) गायत्री के २४ अक्षर २४ अत्यन्त ही महत्वपूर्ण शिक्षाओं के प्रतीक हैं । वेद, शास्त्र, पुराण, स्मृति, उपनिषद् आदि में जो शिक्षाएँ मनुष्य जाति को दी गई हैं उन सब का सार इन २४ शिक्षाओं में मौजूद है । इन्हें अपनाकर मनुष्य प्राणी व्यक्तिगत तथा सामाजिक सुख-शान्ति को पूर्ण रूप से प्राप्त कर सकता है ।

(२) 'गायत्री' सबसे छोटा किन्तु सबसे सारगर्भित एक सार्वभौम धर्म शास्त्र है । इसके आधार पर मनुष्य जाति की शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, अन्तर्राष्ट्रीय, समस्त समस्याएँ सुलझाई जा सकती हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

(३) गायत्री के २४ अक्षरों के उच्चारण से शरीर के विभिन्न स्थानों में स्थित सूक्ष्म चक्रों, मातृकाओं, ग्रन्थियों, उपत्यिकाओं का जागरण होता है । जैसे टाइपराइटर के अक्षरों पर उँगली रखते ही कागज पर उसी अक्षर की चोट पड़ती है वैसे ही मुख और कण्ठ में अनेक गुप्त ग्रन्थियों की चाबी है । गायत्री के अक्षरों का गुन्थन ऐसा विज्ञान सम्मत है कि इसके अक्षरों के उच्चारण से शरीर में छिपे हुए गुप्त संस्थानों पर दवाब पड़ता है और वे जाग्रत होकर मनुष्य की अनेक सोई हुई शक्तियों को जाग्रत करते हैं ।

(४) संसार में सबसे अधिक, सबसे सच्चा एवं सबसे नि:स्वार्थ प्रेम माता का होता है । ईश्वर से हम इच्छानुसार कोई भी रिश्ता कायम रख सकते हैं उसी के अनुसार ईश्वर की ओर से प्रत्युत्तर भी मिलता है । माता का रिश्ता सबसे महत्वपूर्ण होने से यदि यह सम्बन्ध स्थापित किया जाय तो प्रभु की ओर से भी अलौकिक मातृ प्रेम प्राप्त होता है । वे माता की तरह शीघ्र द्रवित होते हैं और भक्त के सब अपराधों को क्षमा कर देते हैं ।

(५) नारी की पवित्रता एवं श्रेष्ठता संसार में सर्वोपरि है । आज उसे भोग सामिग्री माना जाता है और उसे पराधीन, असहाय, निर्बल, अशिक्षित एवं दीन-हीन बनाकर पशुवत् रखा जा रहा है । कन्या का दर्जा पुत्र से हेटा समझना, उसे पराये घर का कूड़ा मानना, विवाह में दहेज माँगना, बात-बात में मारपीट एवं अपमान करना आदि कारणों से स्त्री जाति दिन-दिन नीचे गिरती जाती है । फलस्वरूप हमारा पारिवारिक जीवन एवं सुसंतति का विकास अवरुद्ध हो रहा है । आधी आबादी को (नारी जाति को) अविकसित रखकर कोई भी राष्ट्र एवं समाज उन्नति नहीं कर सकता । भगवान मनु पहले ही कह चुके हैं कि-"जहाँ नारी की पूजा होगी वहीं देवताओं का निवास होगा ।" भारत के घर-घर में देवताओं का निवास हो इसके लिए नारी की श्रेष्ठता तथा सम्मान की भावना का विकास होना आवश्यक है । गायत्री उपासना से इस भावना को प्रोत्साहन मिलता है ।

(६) सद्बुद्धि संसार का सबसे मूल्यवान धन है । ऋतम्भरा प्रज्ञा, सत्-असत् का विवेक, निर्मलता, सात्विकता, संयम, शिष्टाचार, मृदु व्यवहार, उदारता, धैर्य, साहस, सत्यनिष्ठा आदि गुणों वाली मनोभूमिका ही सद्बुद्धि है । इसको प्राप्त करने से मानव जीवन स्वर्गीय सुख शान्ति से परिपूर्ण हो जाता है । गायत्री में इस सद्बुद्धि के लिए ही प्रभु से प्रार्थना की गई है और यदि यह याचना सच्चे हृदय से की जाय तो वह प्राप्त होकर भी रहती है ।

(७) गायत्री मन्त्र में अनेक ज्ञान विज्ञान छिपे हुए हैं । अनेक प्रकार के दिव्य अस्त्र शस्त्र, सोना आदि बहुमूल्य धातुओं का बनाना, अमूल्य औषधियाँ रसायनें, वायुयान, अनेकों ऋद्धि सिद्धियाँ, शाप, वरदान के प्रयोग, नाना प्रयोजनों के नाना प्रकार के उपचार, परीक्षा विद्या, अर्न्तदृष्टि, प्राण विद्या, वेधक प्रक्रिया, शूल शाल्य, वाममार्गी तंत्र विद्या, कुण्डलिनी चक्र, दश महाविद्या, महामातृ का जीव निर्मोक्ष, रूपान्तरण, अज्ञातसेवन, अदृश्य दर्शन, शब्द परव्यूह, सूक्ष्म सम्भाषण आदि अनेक लुप्त-प्राय महान विद्याओं के रहस्य बीज और संकेत गायत्री में मौजूद हैं । इन विद्याओं के कारण एक समय हम जगद्गुरु, चक्रवर्ती शासक और स्वर्ण सम्पदाओं के स्वामी बने हुए थे । आज इन विद्याओं को भूलकर हम सब प्रकार से दीन हीन बने हुए हैं । गायत्री में सन्निहित उन विद्याओं का यदि फिर प्रकटीकरण हो जाय तो हम अपना प्राचीन गौरव फिर प्राप्त कर सकते हैं ।

(८) गायत्री सनातन एवं अनादि मन्त्र है । पुराणों में कहा गया है कि सृष्टिकर्ता ब्रह्मा को आकाशवाणी द्वारा गायत्री मन्त्र प्राप्त हुआ था, इसी की साधना का तप करके उन्हें सृष्टि निर्माण की शक्ति प्राप्त हुई । गायत्री के चार चरणों की व्याख्या स्वरूप ही ब्रह्माजी ने चार मुखों से चार वेदों का वर्णन किया । गायत्री को वेदमाता कहते हैं । वेद विद्या, गायत्री की व्याख्या मात्र है । गायत्री को जानने वाला वेदों को जानने का लाभ प्राप्त करता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

(९) गायत्री एक आवश्यक नित्य कर्तव्य है । इस धर्म कर्तव्य की उपेक्षा करने वाले को शास्त्रकारों ने 'शूद्र' कहा है । मनुष्य के हाड़ माँस का शरीर माता के गर्भ से प्रसव से होता है किन्तु आध्यात्मिक जीवन गायत्री माता के द्वारा ही मिलता है । यह दूसरा जन्म होने पर कोई व्यक्ति द्विज कहलाता है । जहाँ गायत्री की नियमित साधना होती है वहाँ कल्याण की ही वर्षा होती रहती है ।

(१०) गायत्री सर्वश्रेष्ठ एवं सर्वोत्तम मन्त्र है । जो कार्य संसार में किसी अन्य मन्त्र से हो सकता है गायत्री से भी अवश्य हो सकता है । इस साधना में कोई भूल रहने में भी किसी का अनिष्ट नहीं होता, इससे सरल, स्वल्प श्रमसाध्य और शीघ्र फलदायिनी साधना दूसरी नहीं है ।

(११) गायत्री गीता, गंगा और गौ यह भारतीय संस्कृति की चार आधारशिला हैं उन सबमें गायत्री का स्थान सर्वप्रथम है । जिसने गायत्री के छिपे हुए रहस्यों को जान लिया उसके लिए और कुछ जानना शेष नहीं रहता ।

(१२) स्वाध्याय, सत्संग, कथा, तीर्थ, यात्रा, कीर्तन, दान-पुण्य, पूजा-अचर्ना आदि के अपने-अपने महत्व हैं । पर 'तप' का महत्व सर्वोपरि है क्योंकि तप की अग्नि में पड़कर ही आत्मा के मल विक्षेप और पाप ताप जलते रहते हैं । तप के द्वारा ही आत्मा में वह प्रचण्ड बल प्राप्त होता है जिसके द्वारा सांसारिक तथा आत्मिक जीवन की समस्याएँ हल होती हैं । सभी तपों की जननी गायत्री है । ८४ प्रकार के योगों की साधना गायत्री से ही होती है ।

(१३) गृही विरक्त स्त्री-पुरुष, बाल, वृद्ध सभी अपनी स्थिति और सुविधा के अनुसार गायत्री माता का आश्रय लेकर अपने भीतर और बाहर फैले हुए अन्धकार में प्रकाश उत्पन्न कर सकते हैं । अविश्वासी व्यक्ति परीक्षा की दृष्टि से भी कुछ समय गायत्री उपासना करके देखें, तो उनका अविश्वास विश्वास में परिणित होकर रहता है ।

(१४) समस्त धर्म ग्रन्थों में गायत्री की महिमा एक स्वर से कही गई है । समस्त ऋषि मुनि मुक्त कण्ठ से गायत्री का गुणगान करते हैं । शास्त्रों में गायत्री की महिमा बताने वाला इतना साहित्य भरा पड़ा है कि उसका संग्रह किया जाय तो एक बड़ा ग्रन्थ ही बन सकता है । गीता में भगवान ने स्वयं श्रीमुख से कहा है-'गायत्री छन्दसामहम' अर्थात्-'गायत्री मन्त्र मैं स्वयं ही हूँ ।'

(१५) गायत्री को भूलोक की कामधेनु कहा गया है क्योंकि यह आत्मा की समस्त क्षुधा पिपासा शान्त करती है । गायत्री को 'सुधा' कहा गया है- क्योंकि जन्म-मृत्यु के चक्र से छुड़ा कर सच्चा अमृत प्रदान करने की शक्ति से वह परिपूर्ण है । गायत्री को पारसमणि कहा गया है क्योंकि उसके स्पर्श से लोहे के समान कलुषित अन्तःकरणों का शुद्ध स्वर्ण जैसा महत्वपूर्ण परिवर्तन हो जाता है । गायत्री को कल्पवृक्ष कहा गया है-क्योंकि इसकी छाया में बैठकर मनुष्य उन सब कामनाओं को पूर्ण कर सकता है जो उसके लिए उचित एवं आवश्यक हैं ।

(१६) श्रद्धापूर्वक गायत्री माता का अंचल पकड़ने का परिणाम सदा कल्याणकारक ही होता है । गायत्री को ब्रह्मा कहा गया है । क्योंकि कभी किसी की साधना निष्फल नहीं जाती । इसका प्रयोग कभी भी व्यर्थ नहीं जाता ।

(१७) गायत्री साधना द्वारा आत्मा जब पर जमे हुए मल विक्षेप हट जाते हैं तो आत्मा का शुद्ध स्वरूप प्रकट होता है और अनेक ऋद्धि-सिद्धियाँ परिलक्षित होने लगती हैं । दर्पण मांज देने पर उसका मैल छूट जाता है और वह निर्मल एवं प्रकाशवान होकर ईश्वरीय शक्तियों, गुणों सामर्थ्यों एवं सिद्धियों से परिपूर्ण बन जाती है ।

(१८) प्राचीन काल में ऋषियों ने बड़ी-बड़ी तपस्याएँ और योग साधनाएँ करके अणिमा, महिमा आदि चमत्कारी ऋद्धि-सिद्धियाँ प्राप्त की थीं । उनके शाप और वरदान सफल होते थे तथा वे कितनी ही अद्भुत एवं चमत्कारी सामर्थ्यों से भरे-पूरे थे इसका वर्णन इतिहास पुराणों में भरा पड़ा है । वे तपस्याएँ और योग साधनाएँ गायत्री के आधार पर ही होती थीं । गायत्री महाविद्या से ही ८४ प्रकार की योग साधनाओं का उद्भव हुआ है ।

(१९) गायत्री उपासना से मनुष्य की अनेक कठिनाइयाँ हल होती हैं । ऐसे अनेकों उदाहरण मौजूद हैं कि जो लोग आरम्भ से दरिद्रता का

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अभावग्रस्त जीवन व्यतीत करते थे, अपने मामूली गुजारे की भी व्यवस्था जिनके पास न थी । कर्ज के बोझ से दबे हुए थे । व्यापार में घाटा जा रहा था । उन्होंने गायत्री की उपासना की और अर्थ संकट को पार करके ऐसी स्थिति पर पहुँच गये कि जिनको अनेकों के लिए ईर्ष्या होती है । कम पढ़े और छोटी नौकरियों पर काम करने वालों को ऊँचे पद पर पहुँचने के उदाहरण मौजूद हैं । जिनकी बुद्धि बड़ी ही भौंडी और मंद थी वे चतुर, तीक्ष्णबुद्धि और विद्वान बने हैं । जिनकी परीक्षा में उत्तीर्ण होने की कोई आशा नहीं करता था, ऐसे विद्यार्थी अच्छे नम्बरों से पास हुए है । झगड़ालू, चिड़चिड़े, क्रोंधी, व्यसनी, बुरी आदतों में फँसे हुए, आलसी एवं मूढ़ मति लोगों के स्वभाव में ऐसा परिवर्तन हुआ है कि लोग दाँतों तले उँगली दबाये रह गये ।

(२०) गायत्री साधना के चमत्कारी लाभ जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में प्रकट होते रहते हैं । जिनके दाम्पत्य जीवन बड़े कर्कश थे, पति-पत्नी में कुत्ता-बिल्ली का सा बैर रहता था, वहाँ प्रेम की निर्झरणी बहती देखी गई । भाई-भाई जो एक दूसरे के जानी दुश्मन बने हुए थे उनमें भरत मिलाप हुआ । जो कुटुम्ब, परिवार, क्लेश और कलह की अग्नि में झुलस रहे थे वहाँ शान्ति की वर्षा हुई । फौजदारी, मुकदमाबाजी, कत्ल, चोरी, डकैती की आशंका से हर घड़ी भय रहता था वहाँ निर्भयता का एकछत्र राज हुआ । शत्रुओं के आक्रमण में जो लोग घिरे हुए थे वे इन आपत्तियों से बाल-बाल बच गये ।

(२१) बीमारी से तो कितने ही गायत्री साधकों का पिण्ड छूटा है । कई तो तपैदिक की मृत्यु शैया पर पड़े-पड़े यमराज से लड़े हैं और उनकी डाढ़ों में से वापस लौटै हैं । भूतोन्माद, दुःस्वप्न, मूर्छा, हृदय की निर्बलता, गर्भाशय का विषैला होना आदि रोगों से कितनों ने ही मुक्ति पाई है । कोढ़ी शुद्ध हुए हैं । असंयत जीवन क्रम और कुविचारों से उत्पन्न होने वाले स्वप्नदोष, प्रमेह आदि रोगों में मनःशुद्धि के साथ-साथ तुरन्त कम होना आरम्भ हो जाता है । दुर्बल, जीर्ण रोगों से ग्रस्त व्यक्तियों को वेदमाता की गोद में पहुँच कर बड़ी शान्ति मिलती देखी गई है । सन्निपात, शीतला, हैजा, प्लेग, मोतीझला, निमोनिया आदि कठिन रोगों में गायत्री ने चक्रसुदर्शन की तरह रक्षा की है ।

(२२) चिन्ताओं के दबाव से जो मस्तिष्क फटते रहते थे, उन्हें निश्चिन्तता और सन्तोष की साँस लेते हुए देखा गया है । मृत्यु, शोक, सम्पत्ति नाश, ऋणग्रस्तता, बात बिगड़ जाने का भय, कन्या विवाह का खर्च, प्रियजनों का विछोह, जीविका का आश्रय टूट जाना, अपमान, असाध्य रोग, दरिद्रता, शत्रुओं का प्रकोप, बुरे भविष्य की आशंका आदि कारणों से जिन्हें हर घड़ी चिन्ता घेरे रहतीं थी उन्हें माता की कृपा से निश्चिन्तता प्राप्त हुई है । या तो उन्हें कोई आकस्मिक सहायता मिली है या भीतरी प्रेरणा से उद्धार का कोई उपाय सूझ पड़ा है । उनके अन्तःकरण में ऐसा विवेक और आत्मबल प्राप्त हुआ है जिससे उस अवशम्भावी अटल प्रारब्ध को हँसते-हँसते धीरतापूर्वक सहन कर लिया गया ।

(२३) पुरुषों की भाँति स्त्रियाँ भी प्रसन्नतापूर्वक गायत्री उपासना कर सकती हैं । विधवाएँ आत्म-संयम, इन्द्रिय निरोध, मनोनिग्रह एवं सात्विकता की वृद्धि करने में गायत्री की सहायता से सफल होती हैं । वे घर में रहकर इस तपस्या द्वारा आत्म-कल्याण एवं प्रभु प्राप्ति एवं जीवन मुक्ति प्राप्त कर सकती हैं । कुमारी कन्याओं की गायत्री साधना उनको अच्छे घर, वर तथा अनन्त सौभाग्य प्रदान करने में सहायक होती है । सधवाएँ गायत्री साधना द्वारा दाम्पत्य जीवन में प्रेम, घर में सुख शान्ति एवं समृद्धि, बालकों का कुशल क्षेम प्राप्त कर सकती हैं । गर्भवती स्त्रियाँ वेदमाता की उपासना करके स्वस्थ, तेजस्वी, बुद्धिमान, दीर्घजीवी एवं भाग्यवान बालक प्राप्त करती हैं ।

(२४) सबसे उत्तम यह है कि निष्काम होकर अटूट श्रद्धा और भक्तिभाव से गायत्री की उपासना की जाय, कोई कामना पूर्ति की शर्त न लगाई जाय । क्योंकि मनुष्य अपने वास्तविक लाभ या हानि और आवश्यकता को स्वयं उतना नहीं समझता जितना घट-घट वासिनी सर्व शक्तिवान माता समझती है । वह हमारी वास्तविक आवश्यकता को स्वयं पूरा करती है । प्रारब्धवश कोई अटल दुर्भाग्य न भी टल

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सके तो भी साधना निष्फल नहीं जाती । वह किसी न किसी अन्य मार्ग से साधक को उसके श्रम की अपेक्षा अनेक गुना लाभ अवश्य पहुँचा देती है । सबसे बड़ा लाभ आत्म-कल्याण है जो संसार के समस्त दुःखों को अपने ऊपर लेने से प्राप्त होता हो, तो भी प्राप्त करने ही योग्य है ।

गायत्री उपासकों की ऊँची श्रेणी

गायत्री परिवार के सदस्य वे सभी सज्जन बन सकते हैं जिन्होंने पूरा गायत्री साहित्य पढ़ लिया है और नियमित रूप से गायत्री उपासना करते हैं । ऐसे सज्जनों को समय-समय पर मार्गदर्शन कराने एवं आवश्यक सहयोग देने के लिए यथासम्भव प्रयत्न किया जाता रहता है । इस प्रकार गायत्री परिवार के सदस्य बनकर अनेकों सुसंस्कारी महानुभाव अपनी आध्यात्मिक और भौतिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त करते रहते हैं ।

इस साधारण सदस्य श्रेणी से ऊँची एक और श्रेणी है जिन्हें गायत्री पुत्र कह सकते हैं । आवश्यक ज्ञान और उपासना के द्वारा जिनकी निष्ठा स्थिर हो गई है वे इस श्रेणी में प्रवृत्त होते हैं ।

आरम्भ में साधारणतः अनेक लोग सकाम कामनाओं से गायत्री उपासना की ओर अग्रसर होते हैं । मनुष्य साधारणतः अनेक कामनाओं, मुसीबतों, चिन्ताओं और अभावों से घिरा रहता है, उनसे छुटकारा पाने के लिये जहाँ अनेक प्रकार के अन्य उपाय किया करता है, उन्हीं में एक उपाय उपासना को भी मान लेता है । गायत्री उपासना से संसार की अन्य समस्त उपासनाओं की अपेक्षा अधिक मात्रा में, अधिक सरलता से और अधिक शीघ्र लाभ होता है, यह एक निश्चित तथ्य है । फिर भी सही नहीं कहा जा सकता कि प्रत्येक व्यक्ति की, प्रत्येक प्रार्थना गायत्री माता अवश्य पूर्ण कर देती हैं ।

अन्य पुरुषार्थों की भाँति उपासना भी एक आध्यात्मिक पुरुषार्थ है । जिस प्रकार अन्य पुरुषार्थों का आवश्यक सत्परिणाम होता है, उसी प्रकार गायत्री उपासना का भी होता है । परन्तु वह परिणाम सबके लिए समान रूप से सुखकर नहीं होता । मान लीजिए एक दानी व्यक्ति प्रसन्न होकर १० आदमियों को एक-एक हजार रुपया देता है । तो देने की रकम समान होते हुए भी सबको एक समान लाभ न होगा । जिस पर दस हजार रुपया कर्ज था उसे वह एक हजार जो मिला था उसे दे देने पर भी नौ हजार ऋणी ही रहा । कर्जदार उसे पहले की भाँति ही तकाजे नालिश आदि से परेशान करता रहे । जिस आदमी पर एक हजार कर्ज था उसे केवल कर्जदारों से छुटकारा मिला पर घर में कुछ बढ़ोत्तरी न दीखी । जिसके ऊपर कुछ भी कर्ज न था उसे केवल एक हजार नकद दीख रहा है । जिसके घर में पहले से ही कुछ था, उसे यह एक हजार की नई सहायता मिल जाने से और भी उन्नति एवं सुविधाजनक स्थिति प्राप्त हो गई । देने वालों ने चारों को एक सी सेवा पर प्रसन्न होकर एक सा उपहार दिया पर लेने वालों की परिस्थिति भिन्न होने से उनकी स्थिति में परिवर्तन समान रूप से न हुआ । यही बात उपासना क्षेत्र में भी होती है । मानव प्राणी के साथ उसके पूर्व जन्मों के सुकृतों दुष्कृतों से उत्पन्न अनेक प्रारब्ध बँधे होते हैं । कृत कर्मों के भोग से इस संसार का कोई प्राणी बच नहीं सकता । ऐसा परमात्मा का अटल नियम है । इन प्रारब्धों में उपासना से आवश्यक सुधार तो अवश्य होता है पर हर व्यक्ति अपनी अल्प बुद्धि के कारण उसका अनुभव ठीक प्रकार नहीं कर सकता । जिसके आरम्भ में १० मन कष्ट हैं उपासना से यदि उसमें से ५ मन कष्ट कम किया तो उस मनुष्य के लिए यह जानना कठिन है कि मेरा ५ मन कष्ट घटा या नहीं, वह तो सामने उपस्थित ५ मन कष्ट देख कर भी बहुत दुःख मानता है और अपनी उपासना को व्यर्थ मानता है । कई बार तो वह यहाँ तक कह बैठता है कि यह ५ मन कष्ट उपासना के ही फलस्वरूप आया है, यदि उपासना न करता तो यह कष्ट क्यों आता ? दूसरे उपासकों को अधिक लाभ और अपने को स्वल्प लाभ मिलते देखकर भी कई व्यक्तियों के मन में भी कई प्रकार के भ्रम होने लगते हैं । कई बार ऐसा भी होता है कि कभी तो उपासना का विशेष लाभ हुआ और कभी वैसे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सत्परिणाम सामने न आ सके ऐसी अवस्था में साधक के मन में अनास्था उत्पन्न होने लगती है ।

गायत्री उपासना का मूल एवं सुनिश्चित लाभ आत्म निर्माण, आत्म शुद्धि एवं आत्म कल्याण है । पर मनुष्य इतना भौतिक, इतना बहिर्मुखी हो गया है कि हर काम में यहाँ तक कि उपासना जैसे विशुद्ध आत्म कल्याणकारी कर्तव्य को भी नैतिक लाभ के लिये ही करना चाहता है । पशु में लोभ और भय यह दो ही भावना प्रधान होती हैं, बालबुद्धि का मनुष्य भी एक प्रकार पशु ही है । उसे कुछ प्रलोभन देकर उपासना मार्ग पर अग्रसर करने के लिये भी ऋषियों ने प्रयत्न किया है । अनेक प्रकार के व्रत, तप, उपासना, अनुष्ठान, पूजन, स्तोत्र, पाठ, तीर्थयात्रा, कथा श्रवण आदि के बड़े-बड़े आकर्षक माहात्म्य वर्णन किये हैं, बहुत-बहुत लाभ बताये हैं, सो इसलिए कि लोभी मनुष्य कदाचित इसी बहाने उपासना पथ पर आकर्षित होकर आत्म-कल्याण में लगे । ऋषियों को आशा थी कि थोड़ी दूर तक सकाम भावना से साधना पथ पर चलने के उपरान्त साधक वस्तुस्थिति को समझ लेगा और उपासना के भौतिक नहीं आध्यात्मिक लाभ को लेने के लिए तत्पर हो जायगा ।

पर देखा गया है कि अब मनुष्य का दृष्टिकोण बहुत अधिक स्थूल-भौतिक-स्वार्थपूर्ण-हो गया है । वह उपासना से केवल भौतिक लाभ प्राप्त करना चाहता है । जब तक वह लाभ होता रहता है तब तक वह प्रसन्न रहता है और जब उसमें कमी या देरी होने लगती है तो अमीर होकर पूजा पाठ छोड़ बैठता है । वह चाहता है कि कर्म फल प्रारब्ध पूर्व जन्मों के सुकृत दुष्कृतों का परिपाक आदि के तथ्य तो एक ताक पर उठा कर रख दिये जायँ और उपासना के थोड़े से प्रयत्न से उसे मनमानी मात्रा में लाभ प्राप्त होते रहें । यह इच्छा पूर्णतया सफल तभी हो सकती है जब पूर्व जन्मों के फलों की, प्रारब्धों की सनातन व्यवस्था संसार में से उठ जाय । उस उलझन में अनेक आरम्भ शूर-उपासक अपने अति उत्साह को खो बैठते हैं और इस मार्ग से विमुख हो जाते हैं । गायत्री परिवार के जो सदस्य बनते हैं उनमें से कइयों की ऐसी ही स्थिति हो जाती है । अपने परिजनों के लिए हम भी यथासम्भव सहयोग करते हैं, माता भी उन्हें सर्वथा निराश नहीं रहने देतीं । उनकी उपासना के श्रम के मूल से कहीं अधिक लाभ ये किसी न किसी प्रकार दे ही देती हैं, पर वे लोग जो-

पर्वत सम पातक करें, करें सुई को दान ।
ऊँचे चढ़कर देखते, कितनी दूर विमान ।।

थोड़ा सा पूजा पाठ करके पर्वत सदृश्य प्रारब्ध को टालना चाहते हैं, 'कन' देकर 'मन' माँगते हैं, सदा ही पूर्ण मनोरथ नहीं हो सकते । हर मनुष्य की हर कामना पूर्ण कर सकना गायत्री क्या-किसी भी देवता, मन्त्र, उपचार, सिद्ध पुरुष के वश की बात नहीं है । सुख और दुःख के-हानि लाभ के ताने-बाने से मनुष्य का जीवन बुना हुआ है । यह धूप छाँह हर किसी के जीवन में आती जाती-रहती है । एक ही प्रकार का समय सदा रहना कभी सम्भव नहीं । इन खट्टी मिट्ठी परिस्थितियों का जिस धैर्य, साहस, विवेक और पुरुषार्थपूर्वक समाधान हो सकता है उन्हें प्राप्त करना ही उपासना का वास्तविक लाभ है ।

एक कक्षा की पढ़ाई के बाद दूसरी कक्षा में चलना होता है, बालपन पूरा होने पर युवावस्था में प्रवेश करना होता है । साधना क्षेत्र के साधारण उपासकों को भी ऊँची कक्षा में चढ़ना चाहिए । सकाम उद्देश्यों तक सीमित रहने वाले उपासना के वास्तविक लाभ को प्राप्त नहीं कर सकते । भिखारी लोग किसी दानी के दरवाजे पर खड़े रहते हैं तो उनकी पात्रता और दानी की दया के अनुसार उन्हें यथा अवसर कुछ मिलता रहता है, पर भिखारियों की हर कामना को पूर्ण करना दानी का कर्तव्य नहीं है । भिखारियों की आवश्यकता का समाधान भी दान से नहीं हो सकता । प्रार्थना करने मात्र में जो लाभ प्राप्त होता है वह सीमित होता है । असीम लाभ का अधिकारी वही है जो दानी के साथ आत्म सम्बन्ध स्थापित करके अपने को उसका एक अंग बना लेता है । ऐसी दशा में ही उसे पूर्ण अधिकार प्राप्त हो सकता है । स्त्री, अपने पति की और पुत्र अपने पिता की सम्पत्ति का अधिकारी इसी आधार पर होते हैं कि वह अपने को उस व्यक्ति की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इच्छाओं और भावना के अनुसार ढाल कर अपने आपको उसका एक अंग बना लेते हैं । दूसरी श्रेणी के लोगों का भाव तथा कार्य भी यही होता है ।

गायत्री उपासकों में आरम्भिक श्रेणी के लोगों की संख्या अधिक होती है । ये लोग लाभ होने पर उत्साहित और लाभ न होने पर निराश हो जाते हैं, भिखारियों की भीड़ दरवाजे पर से हट जाय इसमें ईश्वर को भी सन्तोष होता है । पर जो लोग ऊँची श्रेणी के होते हैं अपने भौतिक लाभों की याचना करना छोड़कर माता-पिता की इच्छा और आज्ञा के लिए आत्म-समर्पण करते हैं वे उनकी वात्सल्य के सच्चे अधिकारी बनते हैं । ऐसे लोगों को पहला काम यही करना होता है कि माता के मिठाई खिलाने और आपरेशन के लिए डाक्टर के पास ले जाने में समान रूप से दया, करुणा एवं वात्सल्य का अनुभव होता है वे दोनों ही स्थितियों में श्रद्धालु रहते हैं । अपने लिए कुछ भी-सुख भी-न मँगाकर माता के चरणों पर उनके आदर्शों पर अपना जीवन उत्सर्ग कर देते हैं ।

गायत्री परिवार के अनेक सदस्य हैं । इनमें से अनेक बालक्रीड़ा में रूठते मटकते हँसते रोते रहते हैं । कुछ उत्साह दिखाते हैं कुछ निराश हो जाते हैं । इस श्रेणी से ऊँची श्रेणी के उपासकों की आवश्यकता है । अपने परिवार में से अब हम दूसरी श्रेणी के लोगों को ढूँढ़ना चाहते हैं । क्योंकि उन्हीं के ऊपर संसार का भविष्य बहुत कुछ निर्भर करेगा और वे ही इस महान शक्ति के वास्तविक लाभों से कुछ प्राप्त कर सकेंगे ।

दूसरी ऊँची श्रेणी के लोग अपने किसी स्वार्थ की चिन्ता न करके माता को आत्म-समर्पण कर देते हैं और उनके आदेशानुसार अपने जीवन को लगाते हैं । आज गायत्री माता की जानकारी लुप्तप्राय हो गई है । उसकी समुचित प्रतिष्ठा करके अनेक आत्माओं का कल्याण करना माता की सर्वोत्तम सेवा है । उन्होंने हमें भी ऐसा ही आदेश दिया है तदनुसार एक निश्चित कार्यक्रम में हम लगे हुए हैं । इस दिशा में कन्धे से कन्धा लगाकर काम करने वाले ऐसे साथियों की आवश्यकता है जो दूसरी ऊँची कक्षा के महत्व को समझते हों या समझने में दिलचस्पी रखते हों ।

गायत्री-मन्त्र का अद्भुत प्रभाव

गायत्री-मन्त्र के अद्भुत प्रभाव और आश्चर्यजनक चमत्कारों के विषय में प्राचीन ऋषि, मुनियों और साधु-सन्तों ने तो स्थान-स्थान पर महत्वपूर्ण उद्गार प्रकट किये ही हैं, पर वर्तमान समय के ज्ञानी व्यक्ति भी जिन्होंने उच्चकोटि की पाश्चत्य शिक्षा प्राप्त की है मुक्तकंठ से उसकी प्रशंसा करते रहते हैं । थियोसोफिकल सोसाइटी के एक प्रमुख नेता श्रीकृष्णमूर्ति ने गायत्री उपासना के अनुभवों का वर्णन करते हुए लिखा था-

"विशेष रूप से गायत्री-मन्त्र का प्रयोग करके अवलोकन किया गया और उसका परिणाम अद्भुत जान पड़ा । इस मन्त्र का उपयोग स्वार्थ के लिए न करके परमार्थ के लिए करना चाहिए । देवता भी जहाँ गायत्री का मन्त्रोच्चारण होता हो वहाँ सहायता देते हैं ।"

गायत्री सूर्य भगवान् के आवाहन का मंत्र है और जब उसका उच्चारण किया जाता है तभी जप करने वाले पर प्रकाश की एक बड़ी लपक स्थूल सूर्य में से पड़ती है । प्रार्थना के समय चाहे सूर्य उदय हो रहा हो, चाहे मध्याह्न का समय हो, चाहे संध्या का समय अस्त हो रहा हो, चाहे मध्य रात्रि का समय हो, सूर्य की लपक सूक्ष्म रूप से जप करने वाले पर अवश्य पड़ती है । रात्रि के समय तो यह लपक पृथ्वी को भेद कर आती है । यह प्रकाश श्वेतवर्ण का कुछ सुनहरापन लिये होता है । जब उसके द्वारा जप करने वाले का हृदय भर उठता है तब उसमें से इन्द्रधनुष कैसे सात रंग बाहर निकलते हैं और जो कोई जप करने वाले के सम्मुख होता है उस पर शुभ प्रभाव डालते हैं । यह प्रभाव जप करने वाले के हृदय केन्द्र से ही बाहर नहीं निकलता, वरन् उसकी प्रभा (ओरां में) से भी अर्द्ध-चन्द्राकार में प्रकट होता है । प्रत्येक किरण के सामने कोई मनुष्य बैठा हो या आता हो तो वह उसके मस्तक और हृदय को स्पर्श करती है और इन अंगों के दोनों चक्रों को जाग्रत करती है । प्रत्येक किरण एक ही नहीं वरन् अनेक मनुष्यों पर प्रभाव डालती है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अगर साधारण मनुष्य की प्रभा उसके शरीर के बाहर १८ इंच तक निकलती हो तो उसके नीचे का भाग ९ फीट लम्बे और ५ फीट चौड़े क्षेत्र में फैल जाता है । जिस व्यक्ति का साधन द्वारा विशेष विकास हो जाता है उसके शरीर की प्रभा चारों तरफ ५० गज तक फैल सकती है और जब उसका आधा भाग वृत्ताकार बनता है तो बहुत दूर-दूर के व्यक्तियों पर उसका शुभ प्रभाव पड़ता है ।

मनुष्य की इस प्रकार की प्रभा उसकी वासना और मानसिक प्रकृति की बनी होती है और उसकी समस्त देह में ओत-प्रोत रहती है । यह प्रभा मस्तक से जितनी दूर ऊपर की तरफ जाती है उतनी ही दूर पैरों के नीचे पृथ्वी के भीतर भी पहुँचती है । गायत्री मन्त्र का जप करने वाले की प्रभा जितनी विस्तृत होती है उतनी ही प्रभाव डालने वाली होती है । अगर एक बड़ा जन समुदाय सामूहिक रूप से मन्त्र का उच्चारण करता है तो उसके प्रभाव से प्रकाश की उतनी ही बड़ी लपक उत्पन्न होती है । इससे समस्त मन्त्र उच्चारण करने वाले एक रूप बन जाते हैं और उन सब में से जो सात-सात किरणें निकलती हैं उनका प्रभाव कितने बड़े भू-भाग पर पड़ता होगा इसका अनुमान सहज में किया जा सकता है कितने ही देशों के अध्यात्म-विद्या विशारदों ने प्रयोग करके इसकी सत्यता को स्वयं अनुभव करके देखा है ।

इन प्रयोगों द्वारा यह भी मालूम पड़ा है कि मन्त्रों का प्रभाव किस प्रकार पड़ता है । मन्त्र का आशय यह है कि उसमें शब्दों को एक विशेष योजना के अनुसार, एक विशेष ध्वनि में उच्चारण किया जाय । उसके प्रभाव अक्षर में एक विशेष कम्पन उत्पन्न करने की शक्ति पाई जाती है अर्थात् मन्त्र का प्रत्येक पद स्वर के एक कम्पन के सदृश्य होता है । मन्त्रों में जिस नियम के अनुसार स्वरों की रचना की जाती है, उसे ठीक प्रकार से उच्चारण करने पर अवश्य ही कम्पन एक विशेष गति से उत्पन्न होते हैं और वे कम्पन धीरे-धीरे हमारे शरीर के भिन्न-भिन्न कोषों को जाग्रत करते हैं और उनको शुद्ध बनाते हैं । इन शुद्ध हुए कोषों से उपासक मन्त्रोच्चार करके अपने इष्टदेव को अपनी तरफ आकर्षित करने में समर्थ होता है । इसी क्रिया को देवता का आवाहन कहते हैं । इस प्रकार मन्त्र का उच्चारण जप करने वाले के ऊपर असर करता है और उसकी प्रभावशीलता को बढ़ाता है ।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि स्वरों से एक विशेष प्रकार के कम्पन या आन्दोलन वातावरण में उत्पन्न होते हैं और उससे सूक्ष्म सृष्टि में एक खास तरह के आकार बनते हैं । इस प्रकार के स्वरों के विभिन्न प्रकार के कम्पन अलग-अलग तरह की अनेक आकृतियों को उत्पन्न करते हैं । स्वर-विद्या के जानकार, कुछ वैज्ञानिकों ने विशेष यन्त्रों द्वारा इस बात को प्रत्यक्ष रूप से सिद्ध करके भी दिखला दिया है । इससे यह भी विदित होता है कि मन्त्र विद्या में स्वर का महत्व बहुत अधिक है । प्रत्येक स्वर का उच्चारण अपना अलग आकार उत्पन्न करता है और उससे वैसा ही प्रभाव उत्पन्न होता है । केवल साधारण ढङ्ग से मन्त्र बोल देने या पढ़ देने से कोई खास परिणाम प्रकट नहीं होता । मन्त्रोच्चारण पूर्णरूप से शुद्ध होना चाहिए, उसके स्वरों में किसी प्रकार की विकृति नहीं होनी चाहिए ।

ध्वनि के लिये संस्कृत में वर्ण शब्द का प्रयोग किया जाता है और वर्ण का अर्थ रंग भी होता है । सूक्ष्म सृष्टि में प्रत्येक शब्द के साथ रंग उत्पन्न होता है और उससे अलग-अलग रंग के आकार बनते हैं । जिसमें सब रंगों का एकीकरण होता है उसे संस्कृति भाषा में रवि (सूर्य) कहते हैं । रवि शब्द का अर्थ ध्वनि भी होता है । इसी आधार पर भिन्न-भिन्न देवों के आवाहन के लिए भिन्न-भिन्न मन्त्रों का प्रयोग किया जाता है । जिस देव की प्रार्थना हम करना चाहते हैं उसके मन्त्र का बार-बार शुद्ध रीति से उच्चारण (जप) करने से उच्च भूमिका अर्थात् सूक्ष्म मानसिक दृष्टि के ऊपर उसका आकार पैदा हो जाता है और उस देवता की शुभ शक्तियों को आकर्षित करने का वह केन्द्र बन जाता है । यही कारण है कि आर्ष ग्रन्थों में कहा गया है कि मन्त्र बिना देवता के हैं ही नहीं ।

गायत्री-मन्त्र के विधि-विधान और उच्चारण आदि के विषय में अब भी अनेक व्यक्तियों को पर्याप्त ज्ञान है, इसलिए अगर हम प्रयत्न करें तो

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उससे अनेक प्रकार के लाभ उठा सकते हैं । पर यह तभी सम्भव है जब उपासक में आन्तरिक श्रद्धा के साथ संकल्प बल भी हो । तीसरा गुण एकाग्रता का भी है । डगमगाती स्थिति में करने से तो साधारण काम भी पूरे नहीं होते, तब सूक्ष्म दृष्टि में रहने वाले देवताओं को आकर्षित करना उससे कैसे संभव हो सकता है ? अन्त में सबसे आवश्यक बात है देवता में उपासक का भक्ति-भाव अथवा स्वार्पण का भाव । जब इन सब बातों के साथ मन्त्र का प्रयोग किया जाता है तो उससे अवश्य ही हमारा और दूसरों का कल्याण हो सकता है । इसके विपरीत जो लोग मन्त्र को जादू की तरह समझकर चाहे जैसा अपवित्र जीवन बिताते हुए केवल किसी मन्त्र का उच्चारण कर देने से देवताओं को बुलाने या उनसे भले-बुरे सब कार्य सिद्ध कराने की आशा करते हैं वे मन्त्र-विद्या से अनजान हैं और ऐसे ही व्यक्ति उसकी बदनामी के कारण होते हैं । मन्त्र-विद्या शुभ और कल्याण के कार्यों के लिये ही है और सच्ची श्रद्धा, भक्ति और उपयुक्त विधि से उसमें सफलता मिलती है ।

गायत्री की त्रिविधि साधना

सेव्याआत्मोन्नतेरर्थं पदार्थास्तु सतोगुणाः ।
राजसाश्च प्रयोक्तव्याः मनोवाञ्छाभि पूर्तये ।।

(आत्मोन्नतेरर्थं) आत्मा की उन्नति के लिये (सतोगुणाः) सतोगुणी (पदार्थाः) पदार्थों का (सेव्याः) सेवन करना चाहिए (च) और (मनोवांछाभि पूर्तये) मनोभिलाषाओं की पूर्ति के लिए (राजसाः) रजोगुणी पदार्थों का सेवन करना चाहिए ।

प्रादुर्भावस्तु भावानां तामसानां विजायते ।
तमोगुणानामर्थानां सेवनादिति निश्चयः ।।

(तमोगुणानां) तमोगुणी (पदार्थानां) पदार्थों के (सेवनात्) सेवन करने से (तु) तो (तामसानां भावानां) तमोगुणी भावों की (प्रादुर्भावः) उत्पत्ति (विजायते) होती है । (इति) यह (निश्चयः) निश्चय है ।

मालासनं समिद्यज्ञसामिग्रयर्चन संग्रहः ।
गुणत्रयानुसारं हि सर्वे वै ददते फलम् ।।

(माला) माला (आसनं) आसन (यज्ञसामिग्री) हवन सामिग्री (अर्चन संग्रहः) पूजा के पदार्थ (सर्वे) ये सब (हि) निश्चय से (गुणत्रयानुसार) तीनों गुणों के अनुसार ही (फलं) फल को (वैददते) देते हैं ।

पिछले पृष्ठों पर पाठक पढ़ चुके हैं कि गायत्री के तीन रूप हैं । हूँ श्रीं क्लीं-सरस्वती, लक्ष्मी, दुर्गा-सतोगुणी, रजोगुणी, तमोगुणी यह तीनों ही रूप अपने-अपने स्थान पर एक समान उपयोगी हैं । एक ही मनुष्य समय-समय पर विविध प्रकार के पार्ट अदा करता है । पिता के सामने पुत्र जैसा, गुरु के सामने शिष्य जैसा, पत्नी के सामने पति जैसा, सन्तान के सामने पिता जैसा, नौकरों के सामने मालिकों जैसा, ईश्वर के सामने भक्त जैसा, दुष्टों के साथ में कसाई जैसा आचरण करता है । इतने घोर अन्तर भरे हुए अभिनय करने पर भी उसकी मूल स्थिति में न तो भिन्नता होती है और न अन्तर आता है । इसी प्रकार आद्यशक्ति गायत्री भी विविध प्रयोजनों के लिए विविध रूपों में प्रकट होती है ।

एक ही नारी को विविध प्रयोजन वाले व्यक्ति विविध रूपों से देखते हैं । पिता उसे वात्सल्य की प्रतिमा समझ कर उस पर अपना दुलार ढुलकाता है और उससे वैसी ही इच्छा तथा आशा रखता है जैसी कि एक पुत्री से रखनी चाहिए । उसी नारी का पति उसे भिन्न दृष्टि से देखता है, उसे रति की सुन्दरी कामक्रीड़ा की पुतली तथा अर्धांगिनी, जीवन संगिनी समझता है, उसके समक्ष इन्हीं भावनाओं से सम्मिश्रित व्यवहार करता है और इन भावनाओं के अनुरूप ही पत्नी का आचरण, प्रत्युत्तर प्राप्त होने की आशा करता है । अब उसी नारी के पुत्र का नम्बर आता है, वह शिशु उसे स्नेहमयी, दयामयी, परोपकार की मूर्ति, सुरगौ सी मनोरथ दायिनी अन्नपूर्णा समझता है, वैसा ही उससे व्यवहार करता है वैसी ही माँगें पेश करता है और वैसे ही फल प्राप्त करता है ।

एक ही नारी के प्रति रखे जाने वाले इन तीन दृष्टिकोणों की तुलना कीजिए, यह तीनों ही एक दूसरे से बिल्कुल नहीं मिलते, तीनों में जमीन आसमान का अन्तर है, पुत्र जिस रूप में उस नारी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

को देखता है उस दृष्टिकोण से पति देखना कदापि पसन्द न करेगा और जो पति की दृष्टि है वह पिता के लिए सर्वथा अग्राह्य है । इतना अन्तर होते हुए भी एक नारी विविध अवसरों पर विविध पात्रों के सामने, इन जमीन-आसमान जैसे अन्तरों वाले दृष्टिकोणों का अभिनय करती है । इतनी भिन्नताएँ धारण करने पर भी उसका मूल स्वरूप एकरस ही रहता है ।

गायत्री माता के तीन स्वरूपों का रहस्य भी यही है । वे हंसारूढ़ सरस्वती का सतोगुणी रूप धारण करके ज्ञान और विवेक की मधुर वीणा, भक्त के हृदयाकाश में झंकृत करती हैं । वे रजोगुणी रूप धारण करके गज वाहिनी लक्ष्मी बनती हैं और भक्त के अभाव को समृद्धियों की सम्पदा से पूरा कर देती हैं । वे तमोगुणी रूप में सिंहारूढ़ दुर्गा बनकर आती हैं और शत्रुओं के मस्तक का अपने खड्ग से छेदन करती हुई, उनके रक्त से खप्पर भरती हैं, मुण्डों की माला गले में डालती हैं । हमें विविध अवसरों पर विविध प्रयोजनों के लिए आद्यशक्ति के इन तीनों ही रूपों की आवश्यकता पड़ती है ।

आत्मोन्नति के लिए ज्ञान, विवेक, भक्ति, परमार्थ का लाभ करना प्रधान उद्देश्य हो तो भगवती के सतोगुणी रूप की उपासना करनी चाहिए । किसी सांसारिक आवश्यकता की पूर्ति के लिए, धन, वैभव, पद, स्वास्थ्य, यश तथा अभीष्ट परिस्थिति प्राप्त करने के लिए गायत्री का रजोगुणी रूप उपासनीय है । किन्हीं अनिष्टों का विदारण, आपत्तियों, विघ्नों, संकटों, भीतरी और बाहरी शत्रुओं का विनाश करने के लिए तमोगुण स्वरूपा शक्ति उपासना की जाती है ।

'तमोगुण' शब्द का साधारणतः क्रोध के निन्दास्पद अर्थ में प्रयोग किया जाता है, पर यह अर्थ बहुत ही सीमित, संकीर्ण और अधूरा है । तमोगुण का अर्थ यहाँ 'विरोध' अधिक उपयुक्त होगा । अनुपयुक्त स्थिति को हटाने के लिए जो विरोध उत्पन्न होता है उसके साथ संहारक क्रिया जुड़ी हुई होती है । पर संहारक क्रिया भी उतनी ही आवश्यक होती है, जितनी कि रचनात्मक । रोग कीटाणुओं को मारने के लिए औषधि ली जाती है, यज्ञ द्वारा आकाश स्थित हानिकारक कीटाणुओं का संहार किया जाता है, शरीर, वस्त्र, गृह, पात्र आदि की शुद्धि करने में अशुद्धि का नाश होता है, मन छिपे हुए काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि को मार डालने, इन्द्रियों को पछाड़ने, मन को काबू में करने की संहारक क्रियाएँ योगी जनों के लिए भी आवश्यक समझी जाती हैं । भगवान राम, कृष्ण, परशुराम, नरसिंह आदि अधिकांश अवतारों ने संहारिणी नीति को भी प्रधान रूप से चरितार्थ किया है । इसलिए संहारिणी या विरोधमयी तमोगुण शक्ति की वृद्धि को बुरा नहीं कहा जा सकता वरन् अनेक अवसरों पर तो वह अत्यन्त आवश्यक होती है । तमोगुण का-विरोध तत्व का-बढ़ना कोई बुरी बात नहीं है, बुराई तो तब है जब उसका दुरुपयोग किया जाता है ।

कोई कार्य किसी प्रयोजन के लिए ही किया जाता है । गायत्री से हमारे तीन प्रयोजन सिद्ध हो सकते हैं । उसके जिस रूप की हम उपासना करते हैं वही तत्व हमारे अन्दर बढ़ता है, इस वृद्धि के फलस्वरूप साधक को ऐसे ज्ञात और अज्ञात, प्रत्यक्ष और परोक्ष अवसर प्राप्त होते हैं जिनका सदुपयोग करने से अभीष्ट उद्देश्य की प्राप्ति होती है ।

भूगर्भ विद्या के ज्ञाता जानते हैं कि पृथ्वी में अनेक धातुओं के परमाणु बिखरे होते हैं, इन सब परमाणुओं में एक चुम्बकत्व होता है जिसके द्वारा वह परमाणु अपनी जाति के दूसरे परमाणुओं को अपनी ओर खींचता है या उनकी ओर खिंचता है । इस आधार पर एक जाति के परमाणु दूर-दूर से खिंचते हुए एक स्थान पर जमा होते जाते हैं और कालान्तर में बड़ी-बड़ी खानें बन जाती हैं । खानों की खोज करने वाले विज्ञानवेत्ता अपने अणुवीक्षण यंत्रों से पृथ्वी की विभिन्न सतहों पर यह निरीक्षण करते हैं कि किस जाति के परमाणु, किस गति से, किस दिशा में, चल रहे हैं । वे उसी आधार पर अपना अनुसन्धान जारी रखते हैं और अन्त में बड़ी-बड़ी खानों का पता लगा लेते हैं । हमारे भीतर भी यही परमाणुओं के चुम्बकत्व का सिद्धान्त काम करता है । जिस प्रकार की साधना हम करते

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हैं उसी प्रकार का चुम्बकत्व हमारे जड़ और चैतन्य परमाणुओं में बढ़ता है फलस्वरूप संसार में से उसी प्रकार के तत्व खिंचकर हमारे पास जमा होते हैं और थोड़े ही दिनों में उसी प्रकार की एक बड़ी खान हमारे पास जमा हो जाती है । इस खान को स्थूल दृष्टि वाले लोग साधना की सिद्धि कहकर पुकारते हैं । जिस प्रकार की आन्तरिक शक्तियाँ हमारे अन्दर बढ़ती हैं उस प्रकार की बाह्य सफलतायें पग-पग पर मिलना बिल्कुल स्वाभाविक है । इस स्वाभाविकता को ही लोग मन्त्र बल की अद्भुत शक्ति समझते हैं । देखने में यह सब अद्भुत सा भले ही लगे पर वस्तुतः इसमें असाधारण कोई बात नहीं है, यह वैज्ञानिक प्रक्रिया है जिसके आधार पर सूक्ष्म सिद्धान्तों द्वारा स्थूल लाभ प्राप्त किया जाता है । विज्ञान का आधार ही सूक्ष्म तत्वों से स्थूल लाभ प्राप्त करना है, अध्यात्म विज्ञान भी उस चिर सनातन आधार पर ही अवलंबित है ।

महाप्रज्ञा का तत्वदर्शन सबके लिए

वेदमाता गायत्री को आद्यशक्ति माना जाता है । सद्बुद्धि की अधिष्ठात्री इस महाशक्ति की उपासना को सार्वभौम, सर्वजनीन कहा गया है । सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा हर किसी को मिले, हर व्यक्ति श्रेष्ठता का वरण करे, इसमें किसी प्रकार का मत वैभिन्य नहीं हो सकता । इसीलिए कहा जाता है कि सब धर्म, जाति, लिंग व वर्ण के व्यक्ति बिना किसी भेद के इस उपासना के मार्ग को अपना सकते हैं ।

सूर्य को धूप, चन्द्रमा की चाँदनी, में बैठने का स्वच्छ वायु में साँस लेने, जलाशय में जल पीने आदि का अधिकार मात्र मनुष्य को ही नहीं, प्राणी मात्र को है । गंगा स्नान पर किसी के लिए प्रतिबंध नहीं है । इसी प्रकार सत्य बोलने, उदारता बरतने, संयम से रहने, कर्तव्य परायण रहने जैसे सत्प्रयोजनों के लिए किसी को रोका नहीं जाता, वरन् प्रोत्साहित किया जाता है । ईश्वर का स्मरण भी ऐसा ही पवित्र कार्य है जिसमें हानि की कोई आशंका नहीं है और न ऐसा कुछ है जिस पर विचार करके किसी को प्रभु प्रार्थना का अधिकारी, किसी को अनधिकारी ठहराया जा सके । गायत्री महामन्त्र के बारे में भी यही बात है ।

सद्बुद्धि की देवी गायत्री महाशक्ति की उपासना का अधिकार हर किसी को है । इस तथ्य को सुस्पष्ट करते हुए 'पारस्कर ग्रह सूत्र' २/३/१० में कहा गया है "सर्वेषां वा गायत्री मनु ब्रूयात् ।" अर्थात् गायत्री का उपदेश सबको करें । तात्पर्य यह कि सम्पूर्ण मानव जाति बिना किसी भेद-भाव के गायत्री उपासना कर सकती है । इस सामान्य बुद्धि संगत तथ्य के समर्थन में कुछ कहने की आवश्यकता नहीं, तो भी इस संदर्भ में शास्त्रों में पग-पग पर भरे पड़े प्रमाणों का अवलोकन किया जा सकता है । महाभारत में उल्लेख है-

चतुर्णामपि वर्णानाम् आश्रमस्य विशेषतः ।
करोति सततं शान्ति सावित्रीं उत्तमां पठन् ।।

अर्थात् चारों वर्ण और चारों आश्रमों में रहने वाले कोई भी व्यक्ति जो उत्तम गायत्री महामन्त्र जप करते हैं, वे परम शान्ति को प्राप्त करते हैं ।

देवी भागवत १२/८ के अनुसार "गायत्र्युपासना नित्या सर्व वेदैः समीरिता ।" अर्थात् वेदों में नित्य गायत्री उपासना करने का आदेश है । शास्त्रकारों ने भी उस महाशक्ति की उपासना को ब्राह्मणत्व की ब्रह्मतेजस् की प्राप्ति के लिए मनुष्य मात्र का कर्तव्य बताया है और अत्यन्त आवश्यक एवं महत्वपूर्ण कार्यों में गायत्री उपासना को प्रथम स्थान दिया है । जो इस धर्म-कर्तव्य का पालन नहीं करते उनकी स्थान-स्थान पर तीव्र भर्त्सना की गई है और उन्हें चाण्डाल तक कहा गया है । भले ही उन्होंने ब्राह्मण कुल में ही क्यों न जन्म लिया हो ।

यहाँ यह समझ लेना आवश्यक है कि धर्म शास्त्रों में जहाँ-जहाँ ऐसे प्रतिपादन मिलते हैं जिनमें द्विजत्व या ब्राह्मणत्व को गायत्री के साथ जोड़ा गया है । इस प्रतिपादन का तात्पर्य इतना ही है कि उत्कृष्टतावादी चिन्तन और आदर्शवादी कर्तृत्व अपनाकर चलने वाले जीवन क्रम में ईश्वरीय उपासना की दिव्य उपलब्धियाँ अधिक अच्छी तरह हो सकती हैं । द्विजत्व का अर्थ है दूसरा जन्म ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दूसरे जन्म से तात्पर्य है पशु प्रवृत्तियों से जकड़े हुए सामान्य प्राणि जीवन से ऊँचा उठकर मानवीय उत्तरदायित्वों की विशिष्टता भरी भूमिका को अपनाया जाना । नर पशु की रीति-नीति छोड़कर देव जीवन की महानता अपनाया जाना । इसके लिए व्रत लेना पड़ता है कि वासना-तृष्णा की क्षुद्रता में कृमि कीटकों की तरह निरत नहीं रहा जायगा, वरन् मानवीय उत्कृष्टता को जीवन क्रम से ओत-प्रोत करते हुए उच्चस्तरीय सिद्धान्तों को अपनाकर चला जायगा । ऐसा व्रतशील जीवनक्रम ही द्विजत्व है । पशु प्रवृत्तियों का त्याग और देव परम्परा को धारण करने का व्रत लेना भारतीय परम्परा में एक अत्यन्त आवश्यक एवं पवित्र कर्म माना गया है । इसलिए ब्राह्मणत्व का द्विजत्व का संस्कार समारोहपूर्वक किया जाता है । इसे यज्ञोपवीत संस्कार कहते हैं । इसका प्रतीक यज्ञोपवीत धारण है । ऐसे ही व्रतधारियों को द्विज की संज्ञा दी गई है । योगी याज्ञवल्क्य में स्पष्टोक्ति है "एवं यस्तु विजानाति गायत्रीं ब्राह्मण गुरुः ।" अर्थात् जो गायत्री को जानता और जपता है, वस्तुतः वही सच्चा ब्राह्मण है । जो गायत्री की उपेक्षा करता है, वह वेद में पारंगत होने पर भी शूद्र के समान है ।

गायत्री महाशक्ति की उपासना आराधना करने वाले के लिए आदर्शवादी रीति-नीति अपनाना और लोकोपयोगी कार्यों में निरत रहने की योजना बनाकर चलना आवश्यक होता है । ऐसे कार्यों में तीन प्रमुख हैं : (१) अज्ञान का निवारण, (२) अनीति का उन्मूलन, (३) अभावों का समापन । व्यक्तिगत रुचि, योग्यता एवं परिस्थिति के अनुसार इनमें से कोई भी लक्ष्य चुना जा सकता है । संसार के समस्त कष्टों और संकटों के यह तीन ही कारण हैं । इन्हें जितना निरस्त किया जा सकेगा, उतनी ही सुख-शान्ति स्थिर रह सकेगी और प्रगति की सम्भावना बढ़ेगी । अज्ञान का निवारण करने में प्रवृत्त वर्ग को ब्राह्मण, अनीति से जूझने वालों को क्षत्रिय और अभाव दूर करने में जुटे हुए लोगों को वैश्य कहते हैं । जिनमें इस प्रकार की आदर्शवादी आकांक्षाएँ नहीं हैं, जो अपनेपन आपा-थापी तक ही सीमित है, जिनकी उत्कृष्टता अपनाने में कोई रुचि नहीं है । जो पेट-प्रजनन से आगे की बातों में रुचि नहीं लेते, जिन्हें पशु प्रवृत्तियों में डूबे रहना ही पर्याप्त है, वे सब शूद्र हैं । यह भावनात्मक वर्गीकरण है । इसमें जाति-वंश का कोई प्रश्न नहीं है । इसे विशुद्ध रूप से आचार प्रक्रिया या आदर्श पद्धति कहा जा सकता है । यह वर्ण भेद ही प्राचीनकाल से वर्ण भेद कहा जाता है । जन्म जाति के आधार पर किसी को शूद्र या द्विज मानना निरर्थक है । ब्राह्मणत्व की प्राप्ति गायत्री उपासना से होती है, इस तथ्य को समझा और समझाया जाना चाहिए ।

ईश्वर की उपासना कोई भी कर सकता है, पर अधिक लाभ उसी को होगा जो प्रभु समर्पित आदर्शवादी जीवन प्रक्रिया भी अपनाने का प्रयत्न करेगा । ईश्वर उपासना गाड़ी का एक पहिया है और आदर्शवादिता अपनाने वाली जीवन साधना दूसरा । इन दोनों के सम्मिलन से ही सर्वतोन्मुखी प्रगति का रथ अग्रसर होता है । मात्र कुछ पूजा पाठ कर लेने से भी यों तो कुछ लाभ होता ही है, पर पूरा सत्परिणाम देखना हो तो पवित्र एवं प्रखरता भरा जीवनक्रम अपनाने की साधना के साथ उपासना करनी चाहिए । पवित्र जीवन उर्वर भूमि है और भजन उपजाऊ बीज । दोनों की व्यवस्था पर समुचित ध्यान रखा जाना चाहिए । इसी का प्रतिपादन गायत्री और द्विजत्व का समन्वय करने की संगति बिठाकर किया गया है और उससे लाभान्वित होने का तथ्य शास्त्रों में समझाया गया है ।

यदि किसी वंश या जाति को द्विज ठहराया जायगा और मात्र उसी परिवार में जन्मे लोगों को गायत्री उपासना का अधिकारी कहा जायगा, तब तो निश्चित रूप से अर्थ का अनर्थ हो ही जायगा । दुर्भाग्य से पिछले दिनों कुछ ऐसी ही भूल होती रही है और अमुक जाति-वंश के लोगों को इस महाशक्ति की उपासना का अधिकारी तथा अमुक को अनधिकारी ठहराया जाता रहा है जबकि वास्तविकता इससे सर्वथा भिन्न है । तत्वदर्शी-मानवतावादी ऋषि इतने संकीर्ण हो ही नहीं सकते थे कि वे किसी अमुक जाति-वंश को आत्मिक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रगति के साधनों को अपनाने का अधिकारी ठहरायें और अन्यों को उससे वंचित कर दें । ऐसा पक्षपात तो बहुत ही ओछे स्तर के संकीर्ण बुद्धि, पक्षपाती और विद्वेषी लोग ही कर सकते हैं । भारतीय धर्मशास्त्रों और उनके प्रस्तुतकर्ता ऋषियों पर ऐसे आक्षेप लगने लगेंगे तो यह उस महान संस्कृति का अपमान ही होगा जिसके कारण समस्त विश्व ने इस देशवासियों को देवमानव माना था और जगद्गुरु कहकर अपना मस्तक नवाया था ।

गायत्री की चेतनात्मक धारा सद्बुद्धि के ऋतम्भरा प्रज्ञा के रूप में काम करती है और जहाँ उसका निवास होता है वहाँ ब्राह्मणत्व एवं देवत्व का अनुदान बरसता चला जाता है, साथ ही आत्मबल के साथ जुड़ी हुई दिव्य विभूतियाँ भी उस व्यक्ति में बढ़ती जाती हैं । अतः इसकी उपासना का अधिकार हर किसी को है । जो भी इस महाशक्ति का परिपूर्ण लाभ उठाना चाहें उन्हें जप, तप ही नहीं अपने व्यावहारिक जीवन में ब्राह्मणत्व का द्विजत्व का अवतरण भी करना चाहिए । चरित्र जितना शुद्ध होगा यह महामन्त्र उतना ही प्रखर लाभ पहुँचायेगा । चरित्रवान व्यक्ति की थोड़ी सी उपासना भी इतना अद्भुत लाभ दिखाती है, जितना कि दुश्चरित्र व्यक्ति के आजीवन क्रियाकृत्य भी नहीं कर सकते । ब्राह्मणत्व यदि अपने भीतर अर्जित कर लिया जाय तो गायत्री महाशक्ति की उपासना के जो भी लाभ शास्त्रकारों ने बताये हैं उनकी सत्यता प्रत्येक साधक अक्षरशः अपने जीवन में देख सकता है ।

***



Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गायत्री का हर अक्षर शक्ति स्रोत

गायत्री के २४ अक्षरों में सन्निहित दिव्य शक्तियाँ

गायत्री के तीन चरण हैं और २४ अक्षर । ॐकार और तीन व्याहृतियाँ मन्त्र भाग से पूर्व-शीर्ष रूप में प्रयुक्त होती हैं । इस मन्त्र गठन में अनेक विशेषताएँ और दिव्य संकेत सन्निहित हैं । अर्थ की दृष्टि से तो इस छन्द में भगवान के चार प्रधान गुणों का स्मरण है और सद्बुद्धि के अन्तःकरण में धारण करने का तथा दिव्य प्रेरणा की प्रार्थना भर है । यह बाल-बोध के रूप में शब्दार्थ भर हुआ । इसमें थोड़ी सी शिक्षाएँ भर दी गईं प्रतीत होती हैं, पर गहराई में उतरने से प्रतीत होता है कि बात इतनी मात्र ही नहीं है उसके जुड़े हुए अक्षरों में से प्रत्येक शक्ति रूप है और उनमें बहुत कुछ ऐसा रहस्यमय भण्डार भरा हुआ है जिसे पाकर मनुष्य धन्य बन सकता है ।

शिक्षा की दृष्टि से गायत्री मन्त्र के प्रत्येक अक्षर में प्रमुख सद्गुणों का उल्लेख किया गया है और बताया गया है कि उनको आत्मसात करने पर मनुष्य देवोपम विशेषताओं से भर जाता है । अपना कल्याण करता है और अन्य असंख्यों को अपनी नाव पर बिठाकर पार लगाता है । हाड़-माँस से बनी और मल-मूत्र से सनी काया में जो कुछ विशिष्टता दिखाई पड़ती है वह उसमें समाहित सत्प्रवृत्तियों के ही कारण है, जिसके गुण, कर्म, स्वभाव में जितनी उत्कृष्टता है वह उसी अनुपात से महत्त्वपूर्ण बनता है और महत्त्वपूर्ण उपलब्धियाँ प्राप्त करके जीवन सौभाग्य को हर दृष्टि से सार्थक बनाता है ।

इन सद्गुणों की उपलब्धि में लोक शिक्षण, सम्पर्क एवं वातावरण के प्रभाव से भी बहुत कुछ प्रगति हो सकती है किन्तु अध्यात्म-विज्ञान के अनुसार साधना उपक्रम द्वारा भी इन विभूतियों में से जिसकी कमी दीखती है, जिसके सम्बर्धन की आवश्यकता अनुभव होती है, उसके लिए उपासनात्मक उपचार किए जा सकते हैं ।

जिस प्रकार शरीर में कोई रासायनिक पदार्थ कम पड़ जाने से स्वास्थ्य लड़खड़ाने लगता है उसी प्रकार उपरोक्त चौबीस सद्गुणों में से किसी में न्यूनता रहने पर उसी अनुपात में व्यक्तित्व त्रुटिपूर्ण रह जाता है । उस अभाव के कारण प्रगति पथ पर बढ़ने में अवरोध खड़ा होता है । फलतः पिछड़ापन लदा रहने से उन उपलब्धियों का लाभ नहीं मिल पाता जिनके लिए मनुष्य जीवन का सुरदुर्लभ अवसर हस्तगत हुआ है । आहार के द्वारा एवं औषधि, उपचार से शरीर की रासायनिक आवश्यकता पूरी हो जाती है तो फिर स्वस्थता का आनन्द मिलने लगता है । इसी प्रकार गायत्री उपासना के विशिष्ट उपचारों से सत्प्रवृत्तियों की कमी पूरी की जा सकती है । उस अभाव को पूरा करने पर स्वभावतः प्रखरता एवं प्रतिभा बढ़ती है । उसके सहारे मनुष्य अधिक पुरुषार्थ करता है- अधिक दूरदर्शिता का परिचय देता है, शारीरिक तत्परता और मानसिक तन्मयता बढ़ने से अभीष्ट प्रयोजन पूरा करने में सरलता रहने और सफलता मिलने लगती है । सत्प्रवृत्तियों की इसी परिणति को सिद्धियाँ कहते हैं ।

गायत्री में समाहित शक्तियाँ और उनकी प्रक्रियाओं के नामों का उल्लेख अनेक साधना शास्त्रों में अनेक प्रकार से हुआ है । इनके नाम, रूपों में भिन्नता दिखाई पड़ती है । इस मतभेद या विरोधाभास से किसी असमंजस में पड़ने की आवश्यकता नहीं है । एक ही शक्ति को विभिन्न प्रयोजनों के लिए प्रयुक्त करने पर उसके विभिन्न परिणाम निकलते हैं । दूध पीने पर व्यायाम प्रिय व्यक्ति पहलवान बनता है । विद्यार्थी की स्मरण शक्ति बढ़ती है । योगी का उस सात्विक आहार से साधना में मन लगता है । प्रसूता के स्तनों में दूध बढ़ता है । यह लाभ एक-दूसरे से भिन्न हैं । इससे प्रतीत होता है कि दूध के गुणों का जो वर्णन किया गया है, उसमें मतभेद है । यह विरोधाभास ऊपरी है । भीतरी व्यवस्था समझने पर यों कहा जा सकता

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है कि हर स्थिति के व्यक्ति को उसकी आवश्यकता के अनुसार इससे लाभ पहुँचता है । यदि यह कहा जाता तो दूध के गुणों में जो विरोधाभास जान पड़ता है उसके लिए असमंजस न करना पड़ता । कई बार शब्दों के अन्तर से भी वस्तु की भिन्नता मालूम पड़ती है । एक ही पदार्थ के विभिन्न भाषाओं में विभिन्न नाम होते हैं । उन्हें सुनने पर सहज बुद्धि को भ्रम हो सकता है और अनेक पदार्थों की बात चलती लग सकती है, पर जब यह प्रतीत होगा कि एक ही वस्तु के भावभेद से अनेक उच्चारण हो रहे हैं तो उस अन्तर हो समझने में देर नहीं लगती, जिससे एकता को अनेकता में समझा जा रहा था ।

एक सूर्य के अनेक लहरों पर अनेक प्रतिबिम्ब चमकते हैं । व्यक्तियों की मनःस्थिति के अनुरूप एक ही उपलब्धि का प्रतिफल अनेक प्रकार का हो सकता है । धन को पाकर एक व्यक्ति व्यवसायी, दूसरा दानी, तीसरा अपव्ययी हो सकता है । धन के इन गुणों को देखकर उसकी भिन्न प्रतिक्रियायें झाँकने की बात अवास्तविक है । वास्तविक बात यह है कि हर व्यक्ति अपनी इच्छानुसार धन का सदुपयोग करके अभीष्ट प्रयोजन पूरे कर सकता है । गायत्री के २४ अक्षरों में सन्निहित चौबीस शक्तियों का भाव यह है कि मनुष्य की मौलिक विशिष्टताओं को उभारने में उनके आधार पर असाधारण सहायता मिलती है । इसे आन्तरिक उत्कर्ष या देवी अनुग्रह-दोनों में से किसी नाम से पुकारा जा सकता है । कहने-सुनने में इन दोनों शक्तियों में जमीन-आसमान जैसा अन्तर दीखता है और दो भिन्न बातें कही जाती प्रतीत होती हैं, किन्तु वास्तविकता यह है कि व्यक्तित्व में बढ़ी हुई विशिष्टताएँ सुखद परिणाम उत्पन्न करती हैं और प्रगति क्रम में सहायक सिद्ध होती हैं । इतना कहने से भी काम चलता है । भीतरी उत्कर्ष और बाहरी अनुग्रह वस्तुतः एक ही तथ्य के दो प्रतिपादन भर हैं । उन्हें अन्योन्याश्रित भी कहा जा सकता है ।

गायत्री की चौबीस शक्तियों का वर्णन शास्त्रों ने अनेक नाम रूपों से किया है । उनके क्रम में भी अन्तर है । इतने पर भी इस मूल तथ्य में रत्ती भर भी अन्तर नहीं आता कि इस महाशक्ति के अवलम्बन से मनुष्य की उच्चस्तरीय प्रगति का द्वार खुलता है और जिस दिशा में भी उसके कदम बढ़ते हैं उससे सफलता का सहज दर्शन होता है ।

गायत्री की चौबीस उपासना करने के लिए "शारदा तिलक-तंत्र" का मार्ग दर्शन इस प्रकार है-

अन्यान्य ग्रन्थों में गायत्री के एक-एक अक्षर के साथ जुड़ी हुई शक्तियों का वर्णन कई प्रकार से हुआ है । कहीं उन्हें शक्ति, कहीं मातृका, कहीं कला आदि नामों से सम्बोधित किया गया है । गायत्री मन्त्र के अक्षर एवं उनसे सम्बन्धित कलाओं का वर्णन इस प्रकार मिलता है-

ततः षडंगान्यभ्यर्चेत्केसरेषु यथाविधि ।
आहलादिनी प्रभा पश्चान्नित्यां विश्वम्भरां पुनः ।।
विलासिनी प्रभावत्यौ जयां शान्ति यजेत्पुनः ।
कान्ति दुर्गा सरस्वत्यौ विश्वरूपा ततः परम् ।।
विशाला संज्ञितामीशां व्यापिनी विमला यजेत् ।
ततोऽपहारिणी सूक्ष्मां विश्वयोनि जयावहाम् ।।
पद्मालयां पराशोभां पद्मरूपां ततोऽर्चयेत् ।
ब्राह्याद्याः सारुणा बाह्ये पूजयेत प्रोक्तलक्षणाः ।।

-शारदा० २१-२३ से २६

पूजन उपचारों से षडंग पूजन के बाद 'आल्हादिनी प्रभा' 'नित्या' तथा 'विश्वम्भरा' का यजन (पूजन) करे । पुनः 'विलासिनी' 'प्रभावती' 'जया' और 'शान्ति' का अर्चन करना चाहिए । इसके बाद 'कान्ति' 'दुर्गा' 'सरस्वती' और 'विश्वरूपा' का पूजन करे । पुनः 'विशाल' 'संज्ञावाली' 'ईशा' 'व्यापिनी' और 'विमला' का यजन करना चाहिए । इसके अनन्तर 'अपहारिणी' 'सूक्ष्मा' 'विश्वयोनि' 'जयवाहा' 'पद्मालया' 'परा' 'शोभा' तथा 'पद्मरूपा' आदि का यजन करे । 'ब्राह्मी' 'सारुणा' का बाद में पूजन करना चाहिए ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गायत्री के चौबीस अक्षर

१-तत् २-स ३-वि ४-तु ५-र्व ६-रे ७-णि ८-यं ९-भ १०-र्गो ११-दे १२-व १३-स्य १४-धी १५-म १६-हि १७-धि १८-यो १९-यो २०-नः २१-प्र २२-चो २३-द २४-यात् ।

चौबीस अक्षर-चौबीस शक्ति स्रोत

गायत्री महामन्त्र के २४ अक्षर केवल इसलिए नहीं हैं कि कविता की दृष्टि से आठ-आठ अक्षरों के तीन चरण वाला छन्द गायत्री माना जाता है और यह महामन्त्र 'गायत्री छन्द' भी कहा गया है । इसलिए उसमें २४ अक्षर होने चाहिए । कविता के लिए आवश्यक अक्षरों की पूर्ति के लिए २४ अक्षर नियोजित नहीं किये गये हैं वरन् सच तो यह है कि प्रस्तुत गायत्री मन्त्र के २४ अक्षरों के बारे में भी विवाद चला आता है । 'णयं' शब्द पर गाड़ी अटक जाती है, किसी ऋषि ने उसे एक और किसी ने दो अक्षर गिना है । जो एक गिनते हैं उनके हिसाब से इस मंत्र में २३ ही अक्षर ठहरते हैं । इस कमी के लिए 'णयं' के उच्चारण-क्रम को थोड़ी लम्बी ध्वनि में बोलकर २४ अक्षरों की पूर्ति की जाती है । चारों वेदों में अनेक गायत्री मन्त्र हैं उनमें ऐसा विवाद नहीं है । उनके अक्षर सीधे-सादे और पूरे हैं । हमारे उपास्य महामन्त्र में जिस प्रकार का विवाद है, उस तरह का देखने में नहीं आता । इसलिए कविता की दृष्टि से २४ अक्षरों का होना जैसी सामान्य बात यहाँ नहीं है । कविता की दृष्टि से विवादास्पद कारण के रहते हुए भी अक्षर वे ही रखे गये हैं, जो साधना के वैज्ञानिक प्रयोजन की पूर्ति करते हैं । कविता थोड़ी दोषयुक्त भी हो तो हर्ज नहीं, उनमें शब्द-ब्रह्म का उसी तरह उसी क्रम में प्रयोग हुआ है जिससे कि आत्म-बल एवं ब्रह्म-वर्चस्व के उद्भव का वास्तविक प्रयोजन ठीक तरह पूरा हो सके ।

पिण्ड और ब्रह्माण्ड में कुल मिलकर २४ प्रमुख शक्तियाँ हैं । ब्रह्माण्ड में व्यापक शक्तियाँ पिण्ड-मानव शरीर-के साथ जुड़ी हुई हैं । चेतना के जो प्रमुख संस्थान इस शरीर में हैं, वे इसलिये नहीं हैं कि शरीर का दैनिक कार्य ठीक तरह चलाते रहें, वरन् इसलिये भी है कि निखिल ब्रह्मांड में संव्याप्त महान् शक्ति-स्रोतों के साथ अपना सूक्ष्म सम्बन्ध जोड़े रह सकें । इन्द्रियों के द्वारा यों मोटे तौर से वे विभिन्न वासनाओं की पूर्ति का सुख जुटाते प्रतीत होते हैं, पर उनकी वास्तविक महत्ता पराप्रकृति के विभिन्न विभागों के साथ-साथ जुड़े रहने और दिव्य आदान-प्रदान द्वारा दुर्बल मानव प्राणी को देवताओं की श्रेणी में लाकर बैठा देने में है ।

कामेन्द्रियाँ यों एक क्षणिक वासना-सुख की पूर्ति का माध्यम प्रतीत होती हैं पर वास्तविकता यह कि ब्रह्मांड-व्यापी प्रजनन क्षमता-ब्रह्माणी-के साथ वह अविच्छिन्न रूप से जुड़ी हुई हैं । आकाश में भ्रमण करती हुई आत्मायें अपने प्रारब्ध कर्म भोगने को जहाँ जिस व्यक्ति के शरीर में, जिस घर में जन्म लेने वाली हैं, उनकी आवश्यकता पूर्ण करने में कामेन्द्रिय एक निमित्त मात्र बनती है । अन्तरिक्ष में वितरण करने वाले जीव जहाँ जन्म लेने वाले हैं वहाँ निर्धारित व्यक्ति के शरीर में शुक्र बनकर प्रवेश करते हैं और कामेन्द्रिय उनकी भ्रूण-स्थापना की विधि-व्यवस्था बनाती है । कितना अद्भुत सृष्टिक्रम कामेन्द्रिय के द्वारा पूरा होता है । इस मर्म को तात्विक दृष्टि रखने वाले ही समझ सकते हैं । स्थूल दृष्टि वाला तो उस दिव्य अङ्ग को केवल एक घृणित घर्षण क्रिया से उत्पन्न क्षणिक गुदगुदी का निमित्त मात्र ही समझता है ।

यही बात अन्य इन्द्रियों के सम्बन्ध में भी है । यों जिह्वा, कान, नाक, आँख आदि से मोटे तौर पर हमें विभिन्न विषय-सुख मिलते हैं, पर उनका वास्तविक प्रयोजन ब्रह्मांड-व्यापी, शब्द, रूप, रस, गन्ध, स्पर्श के पंचतत्त्वों में उत्पन्न तन्मात्राओं से सम्बन्ध मिलाना है । हर तत्त्व की एक तन्मात्रा है । शरीर भी पंचतत्त्वों का बना है । पर पिण्ड और ब्रह्माण्ड में जो कुछ सूक्ष्म-सचेतन-शक्ति प्रवाह है उसका आदान-प्रदान इन सब तन्मात्राओं के माध्यम से ही होता है । आकाश तत्त्व की तन्मात्रा शब्द है, अग्नि तत्त्व की तन्मात्रा रूप, जल की रस, पृथ्वी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

की गन्ध और वायु की स्पर्श है । इनकी स्थूल एवं सूक्ष्म अनुभूतियाँ कान, नाक, आँख, जिह्वा एवं त्वचा के माध्यम से होती हैं । इन इन्द्रियों से जो चेतना संवेदना है वही मनुष्य का सम्बन्ध ब्रह्माण्ड व्यापी तात्विक चेतना के साथ जोड़ती है ।

उपरोक्त पंक्तियों में इन्द्रिय संवेदन एवं ब्रह्मांड व्यापी तन्मात्राओं का सन्दर्भ प्रस्तुत किया गया है, केवल इन्द्रियाँ ही नहीं, अनेक शक्ति संस्थान ऐसे हैं जो पिण्ड एवं ब्रह्माण्ड की चेतनाओं-शक्तियों-क्षमताओं एवं संवेदनाओं को आपस में जोड़ते और प्रत्यावर्तन करते हैं । ऐसे स्रोत २४ हैं । इनमें से एक-एक स्रोत का प्रतिनिधित्व गायत्री का एक-एक अक्षर करते हैं । इन २४ अक्षरों को २४ विश्व-व्यापी स्रोतों की कुंजियाँ कहा जाय तो कुछ अत्युक्ति न होगी ।

कुलार्णव तन्त्र में आता है-

."तत्कारात यात्तकार-पर्यन्त शब्द ब्रह्म स्वरूपिणी ।"

अर्थात् तत्कार से लेकर 'यात्' तक गायत्री साक्षात् ब्रह्म स्वरूपिणी है ।

चतुर्विंशतितत्वा सा यदा भवति शोभना ।
गायत्री सवितुः शम्भोः गायत्रीं मदनात्मिकाम् ।
गायत्रीं विष्णुगायत्रीं गायत्रीं त्रिपदात्मनः ।
गायत्रीं दक्षिणामूर्ते गायत्रीं शम्भुयोषितः ।।

गायत्री के चौबीस अक्षर, चौबीस तत्त्व हैं । गायत्री, सविता, शिव, विष्णु, दक्षिणामूर्ति, शम्भु शक्ति और काम बीज है ।

पुरुषो वाव यज्ञस्तस्य यानि चतुर्विंश्शतिवर्षाणि तत्प्रातः सवनं चतुर्विंश्शत्यक्षरा गायत्री गायत्रं प्रातः सवनं तदस्य वसवोऽन्वायत्ताः प्राणा वाव वसव एते हीदंश्सर्वं वासयन्ति ।

-छान्दोग्य ३।१६।१

पुरुष ही यज्ञ है । उसका प्रातःकाल चौबीस वर्ष का है । गायत्री मन्त्र के चौबीस अक्षरों से ही इसका सम्बन्ध है ।

चतुर्विंशतिरुद्दिष्टा गायत्री लोक सम्मता ।
य एतां वेद गायत्रीं पुण्यां सर्वगुणान्विताम् ।
तत्त्वेन भरतश्रेष्ठ स लोके न प्रणश्यति ।

-महाभारत भीष्म ४।१५।१६

अर्थात्-यह चौबीस अक्षरों की गायत्री को सम्मत लोक में महान कल्याणकारी माना जाता है । हे युधिष्ठिर ! जो कोई इसके तत्त्व को समझ लेता है उसका भी नाश नहीं होता ।

गायत्री रहस्योपनिषद् में इस समस्त विश्व-ब्रह्माण्ड को, जड़-चेतन प्रकृति को, देव परिवार को, हलचलों एवं प्रवृत्तियों को गायत्री के अक्षरों में बीज रूप से ओत-प्रोत माना है, आत्मा की सीमित और परमात्मा की असीम शक्ति का ताल-मेल बिठाने वाली महाशक्ति के रूप में गायत्री मंत्र की विवेचना की है । कहा गया है-

ओऽम् भूरिति भुवो लोकः । भुव इत्यन्तरिक्षलोकः । स्वरिति स्वर्गलोकः । मह इति महर्लोक । जन इति जनोलोकः । तप इति तपोलोकः । सत्यमिति सत्यलोकः । तदति ददसौ तेजोमयं तेजोऽग्निर्देवता । सवितुरिति सविता सविता साचित्रमादित्यौ वै । वरेण्यमित्यत्र प्रजापतिः । भर्ग इत्यापो वै भर्गः । देवस्य इतीन्द्रो देवो द्योतत इति स इन्द्रस्तस्मात् सर्वपुरुषो नात रुद्रः । धीमहीयत्नन्तरात्मा । धिय इत्यन्तरात्मा परः य इति सदाशिवपुरुषः । नो इत्यस्माकं स्वधर्मे । प्रचोदयादिति प्रचोदितिकाम इमान् लोकाम् प्रत्याश्रयते यः परो धर्म इत्येषा गायत्री ।

-गायत्री रहस्योपनिषद्

भू शब्द भू लोक का बोधक है । भुवः आकाश का, महाः महलोक का, जनः जनलोक का, तपः तपलोक का, सत्यम्-सत्यलोक का बोधक है । तत्-तेजस्वी अग्नि का, सवितुः- सूर्य का, वरेण्यं-प्रजापति का, भर्गः-वरुण का, देवस्य-इन्द्र का, धीमहि-आत्मा का, धियः-परमात्मा का, यः-शिव का, नः-समष्टि आत्मा का, प्रचोदयात्-प्रेरक इच्छा शक्ति का बोधक है । यह गायत्री ही पर धर्म है । यही समस्त लोकों का प्रत्याश्रय कराती है ।

गायत्री महामन्त्र के २४ अक्षरों में २४ तत्त्व सन्निहित हैं- (१) पृथ्वी (२) जल (३) तेज (४) वायु (५) आकाश (६) गन्ध (७) रस (८) रूप (९) स्पर्श (१०) शब्द (११) वाक् (१२) पैर (१३) गुदा (१४) जननेन्द्रिय (१५) त्वचा (१६) नेत्र (१७) कान (१८) जीभ (१९) नाक (२०)

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मन (२१) बुद्धि (२२) अहंकार (२३) चित्त (२४) ज्ञान ।

देवी भागवत पुराण में गायत्री के २४ अक्षरों के साथ २४ ऋषियों का, २४ छन्दों का, २४ देवताओं का, २४ शक्तियों का, २४ तत्त्वों का, २४ रंगों का वर्णन है । इस महामन्त्र के प्रत्येक अक्षर की एक बीज शक्ति है । उनमें से हर एक को स्वतन्त्र बीज मन्त्र कहा जा सकता है । बीज देखने में एक प्रतीत होता है, पर उसके अन्तराल में वह वृक्ष छिपा रहता है जिसके साथ तना, टहनियाँ, पल्लव, पत्ते, पुष्प, फल आदि का पूरा परिकर जुड़ा हुआ है । अक्षर बीज हैं । गायत्री के २४ बीजाक्षर उन तत्त्वों का प्रतिनिधित्व करते हैं जिनके कारण ऋषि सत्ताएँ तथा देव सत्ताएँ प्रकट होती और अपने विशेष उत्तरदायित्व पूर्ण करती हैं । 'छन्द' एक विशेष प्रकार का ध्वनि प्रवाह है जिसका स्थूल रूप विभिन्न लयों में गाये जाने वाले गीतों के रूप में समझा जा सकता है । स्थूल संगीत गायन और वादन के माध्यम से समझा जाता है, पर सूक्ष्म संगीत एक अक्षर मात्र से भी निसृत होता रहता है । ओंकार एक अक्षर है । पर उसके द्वारा निसृत ध्वनि प्रवाह में योगाभ्यास की समस्त सम्भावनाएँ विद्यमान हैं । ठीक इसी प्रकार गायत्री के २४ अक्षरों में से प्रत्येक का एक ध्वनि प्रवाह है जिसे छन्द कहा गया है ।

देव सत्ताएँ परब्रह्म के चेतना समुद्र में उठने वाले अनेकानेक ज्वार-भाटे, भँवर अथवा तूफान समझे जा सकते हैं । यों वे महासमुद्र की जलराशि से भिन्न नहीं हैं तो भी उनका स्वरूप और प्रभा स्वतन्त्र रूप से भी देखा जा सकता है और उनका अन्तर अनुभव किया जा सकता है । ज्वार की प्रत्येक लहर की ऊँचाई, लम्बाई, चौड़ाई तथा क्षमता में जो अन्तर रहता है वही उसकी विशिष्ठता एवं आकृति-प्रकृति है । देव सत्ताओं की अपनी शक्ति भी इसी प्रकार है । हर शक्ति में थोड़ा-थोड़ा अन्तर रहता है अस्तु उनके नाम भी अलग-अलग गिनाये गये हैं ।

जड़ प्रकृति के पाँच तत्त्व हैं । पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश यह सारा जड़ जगत बना है । यह स्थूल और आँख से देखे जाने वाले प्रत्यक्ष तत्त्व हैं । वैज्ञानिकों ने अपनी प्रयोगशालाओं में इनकी सूक्ष्मता का विश्लेषण करते हुए १०३ के करीब तत्त्व ढूँढ़ निकाले हैं । यह वर्गीकरण आणविक एवं रासायनिक भिन्नता के आधार पर है । अपेक्षा की जाती है कि अगले कुछ ही दिनों में पाँच तत्त्व और खोजे जाने वाले हैं । इस प्रकार १०८ तत्त्वों की माला शृंखला से जप में प्रयुक्त होने वाली १०८ दाने की माला के साथ संगति बैठ जायगी और सृष्टि के निर्माण, अभिवर्धन एवं परिवर्तन में काम कर रहे १०८ तत्त्वों को स्मरण दिलाने के लिए जप की माला को तत्त्वों की माला का प्रतिनिधित्व करने वाली समझा जा सकेगा ।

दिव्य तत्त्व इनसे भिन्न हैं । इनकी पूर्ण संख्या तो नहीं बताई जा सकती, पर यह कहा जा सकता है कि गायत्री के २४ अक्षरों के साथ २४ चेतन तत्त्वों का भी समावेश है । सूर्य की किरणों में विद्यमान सात रंग प्रसिद्ध हैं इन्हें उनके रथ में जुते हुए सात घोड़े भी अलंकार रूप से कहा जाता है । पर यह सात रंग तो मोटी जानकारी भर हैं । इनके परस्पर समन्वय से अन्य सहस्रों रंग बनते हैं । इसी प्रकार अदृश्य रंगों की भी बहुत बड़ी शृंखला है । दृश्य और अदृश्य दोनों ही प्रकार के रंगों की गणना की जाय तो वे इतने अधिक होंगे जो गिने न जा सकें । सविता देवता अध्यात्म क्षेत्र का ज्योति केन्द्र है । उसके भी असंख्य रंग हैं । इस वर्ण किरणों का प्रत्यक्ष नाम देना कठिन है । क्योंकि नाम के आधार पर पहचाने जाने वाले रंगों की संख्या तो कुछ दर्जन से अधिक नहीं हो सकती जबकि रंगों की संख्या अगणित है । गायत्री मन्त्र का अधिष्ठाता सविता देवता कितने ही दिव्य रंग निसृतः करता है । उनमें से २४ अक्षरों के अपने रंग वर्ण हैं इनकी जानकारी देने के लिए पुष्पों के नाम दिये गये हैं जिनकी समानता के आधार पर उन इन वर्णों का परिचय प्राप्त किया जा सके ।

गायत्री मन्त्र के अक्षरों के साथ जुड़ी हुई उनकी विशेषताओं, भिन्नताओं एवं शक्तियों का परिचय देवी भागवत, पुराण में विस्तारपूर्वक दिया गया है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

चौबीस अक्षरों से सम्बन्धित चौबीस कलाएँ-

(१) तापिनी (२) सफला (३) विश्वा (४) तुष्टा (५) वरदा (६) रेवती (७) सूक्ष्मा (८) ज्ञाना (९) भर्गा (१०) गोमती (११) दर्विका (१२) धरा (१३) सिहिंका (१४) ध्येया (१५) मर्यादा (१६) स्फुरा (१७) बुद्धि (१८) योगमाया (१९) योगात्तरा (२०) धरित्री (२१) प्रभवा (२२) कुला (२३) दृष्या (२४) ब्राह्मी ।

'योगी याज्ञवल्क्य' ने इस तथ्य का स्पष्टीकरण इस प्रकार किया है-

कर्मेन्द्रियाणि पंचैव पञ्च बुद्धीन्द्रियाणि च ।
पंच पंचेन्द्रियाणार्थश्च भूतानां चैव पंचकम् ।।
मनाबुद्धि स्तथात्माच अव्यक्तं च यदुत्तमम् ।
चतुर्विंशत्यथैतानि गायत्र्या अक्षराणि तु ।।

-योगी याज्ञवल्क्य

पाँच कर्मेन्द्रिय, पाँच ज्ञानेन्द्रिय, पाँच तत्त्व, पाँच तन्मात्राएँ, मन, बुद्धि, आत्मा तथा परमात्मा इस प्रकार २४ शक्तियाँ गायत्री के २४ अक्षरों में समाई हुई हैं ।

भौतिक विज्ञान के वर्तमान वैज्ञानिकों ने इनकी शोध अपने ढंग से की है । वे इस शक्ति को 'एनर्जी आफ फोर्स' के नाम से पुकारते हैं । हीट पावर (ताप) इलेक्ट्रिकल एनर्जी (ताकत) एनर्जी आफ ऐलैस्टिसिटी (स्थिति) एनर्जी आफ ग्रेवीटेशन (मध्याकर्षण) एनर्जी आफ मोशन (गति) काइनेटिक एनर्जी (क्रिया) कास्मिक इलैक्ट्रिसिटी (विश्व विद्युत) इन्टैलिजेन्स (ज्ञान) सुपर फोर्स (उच्च शक्ति) आदि अनेक भेदों में इस शक्ति को विभक्त किया गया है और उसके गुण कर्मों को जानकर आविष्कारों का तारतम्य मिलाया है ।

यह भौतिक शक्ति गायत्री के २४ अक्षरों के अनुसार २४ प्रकार की है । हमारे प्राचीन वैज्ञानिकों-ऋषियों की भाषा में इन्हें २४ मातृकाएँ कहा गया है ।

चौबीस अक्षरों से सम्बन्धित चौबीस मातृकाएँ-

(१) चन्द्रकेश्वरी (२) अजतवला (३) दुरितारि (४) कालिका (५) महाकाली (६) श्यामा (७) शान्ता (८) ज्वाला (९) तारिका (१०) अशोका (११) श्रीवत्सा (१२) चण्डी (१३) विजया (१४) अंकुशा (१५) पन्नगा (१६) निर्वाक्षी (१७) वेला (१८) धारिणी (१९) प्रिया (२०) नरदत्ता (२१) गन्धारी (२२) अम्बिका (२३) पद्मावती (२४) सिद्धायिका ।

सामान्य दृष्टि से कलाएँ और मातृकाएँ अलग-अलग प्रतीत होती हैं । किन्तु तात्विक दृष्टि से देखने पर उन दोनों का अन्तर समाप्त हो जाता है । उन्हें श्रेष्ठता का सामर्थ्य कह सकते हैं और उनके नामों के अनुरूप उनके द्वारा उत्पन्न होने वाले सत्परिणामों का अनुमान लगा सकते हैं ।

समग्र गायत्री को सर्व विघ्न विनासिनी-सर्व सिद्धि प्रदायनी कहा गया है । संकटों का सम्वरण और सौभाग्य संवर्धन के लिए उसका आश्रय लेना सदा सुखद परिणाम ही उत्पन्न करता है । तो भी विशेष प्रयोजनों के लिए उसके २४ अक्षरों में पृथक-पृथक प्रकार की विशेषताएँ भरी हैं । किसी विशेष प्रयोजन की सामयिक आवश्यकता पूरी करने के लिए उसकी विशेष शक्ति धारा का भी आश्रय लिया जा सकता है । चौबीस अक्षरों की अपनी विशेषताएँ और प्रतिक्रियायें हैं-जिन्हें सिद्धियाँ भी कहा जा सकता है । ये इस प्रकार बताई गई हैं-

(१) आरोग्य (२) आयुष्य (३) तुष्टि (४) पुष्टि (५) शान्ति (६) वैभव (७) ऐश्वर्य (८) कीर्ति (९) अनुग्रह (१०) श्रेय (११) सौभाग्य (१२) ओजस् (१३) तेजस् (१४) गृहलक्ष्मी (१५) सुसंतति (१६) विजय (१७) विद्या (१८) बुद्धि (१९) प्रतिभा (२०) ऋद्धि (२१) सिद्धि (२२) संगति (२३) स्वर्ग (२४) मुक्ति ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जहाँ उपलब्धियों की चर्चा होती है, वहाँ शक्तियों का भी उल्लेख होता है । शक्ति की चर्चा सामर्थ्य का स्वरूप निर्धारण करने के संदर्भ में होती है । बिजली एक शक्ति है । विज्ञान के विद्यार्थी उसका स्वरूप और प्रभाव अपने पाठ्यक्रम में पढ़ते हैं । इस जानकारी के बिना उसके प्रयोग करते समय जो अनेकानेक समस्याएँ पैदा होती हैं उनका समाधान नहीं हो सकता । प्रयोक्ता की जानकारी इस प्रसंग में जितनी अधिक होगी वह उतनी ही सफलतापूर्वक उस शक्ति का सही रीति से प्रयोग करने तथा अभीष्ट लाभ उठाने में सफल हो सकेगा । प्रयोग के परिणाम को सिद्धि कहते हैं । सिद्धि अर्थात् लाभ । शक्ति अर्थात् पूँजी । शक्तियाँ सिद्धियों का आधार हैं शक्ति के बिना सिद्धि नहीं मिलती । दोनों को अन्योन्याश्रित कहा जा सकता है । इतने पर भी पृथकता तो माननी ही पड़ेगी ।

गायत्री के चौबीस अक्षरों में जो पृथक-पृथक शक्तियाँ हैं, उनके नाम शास्त्रकारों ने प्राचीन काल की आध्यात्मिक भाषा में बतलाये हैं । उस समय हर शक्ति को एक देवी के रूप में अलंकृत किया जाता था । देवी का अर्थ अब तो अन्तरिक्षवासिनी। अदृश्य महिला विशेष मानने का भ्रम चल पड़ा है, पर प्राचीन काल में देवी शब्द दिव्य शक्तियों के लिए ही प्रयोग किया जाता था । गायत्री की २४ शक्तियों का शास्त्रीय उल्लेख इस प्रकार है-

वर्णानां शक्तयः काश्च ताः श्रुणुष्व महामुने ।
वामदेवी प्रिया सत्या विश्वा भद्रविलासिनी ।।
प्रभावती जया शान्ता कान्ता दुर्गा सरस्वती ।
विद्रुमा च विशालेशा व्यापिनी विमला तथा ।।
तमोऽपहारिणी सूक्ष्माविश्वयोनिर्जया वशा ।
पद्मालया परा शोभा भद्रा च त्रिपदा स्मृता ।।
चतुर्विंशतिवर्णानां शक्तयः समुदाहृताः ।

हे मुनि ! अब सुनो कि गायत्री के चौबीस अक्षरों में कौन-कौन चौबीस शक्तियाँ भरी पड़ी हैं । (१) वामदेवी (२) सत्या (३) प्रिया (४) विश्वा (५) भद्र विलासिनी (६) प्रभावती (७) शान्ता (८) कान्ता (९) दुर्गा (१०) सरस्वती (११) विद्रुमा (१२) विशालक्षा (१३) व्यापिनी (१४) विमला (१५) तमोपहारिणी (१६) सूक्ष्मा (१७) विश्वयोनि (१८) जया (१९) वशा (२०) पद्मालया (२१) परा (२२) शोभा (२३) मुद्रा (२४) त्रिपदा ।

पिण्ड को ब्रह्माण्ड की छोटी प्रतिकृति माना गया है । वृक्ष की सारी सत्ता छोटे से बीज में भरी रहती है । सौर मण्डल की पूरी प्रक्रिया छोटे से परमाणु में ठीक उसी तरह काम करती देखी जा सकती है । मनुष्य की शारीरिक और मानसिक संरचना का छोटा रूप शुक्राणु में विद्यमान रहता है । यह "महतोमहियान् का अणोरणीयान्" में दर्शन है । छोटी सी 'माइक्रो' फिल्म पर सुविस्तृत ग्रन्थों का चित्र उतर आता है । जीव में ब्रह्म की सारी विभूतियाँ और शक्तियाँ विद्यमान हैं । ब्रह्म का विस्तार यह ब्रह्माण्ड है । जीव का विस्तार शरीर में है । मानवी काया यों हाड़-माँस की बनी दीखती है और मल-मूत्र की गठरी प्रतीत होती है, पर उसकी मूल सत्ता जो गम्भीर विवेचन करने पर प्रतीत होती है । वह है-जिससे इस छोटे से कलेवर में वह सब विद्यमान मिलता है, जो विराट् विश्व में दृष्टिगोचर होता है ।

स्थूल दृष्टि से स्थूल का दर्शन होता है और सूक्ष्म से सूक्ष्म का । चर्म चक्षुओं से सीमित आकार-प्रकार दूरी की वस्तुएँ देखी जा सकती हैं । शक्तिशाली माइक्रोप अदृश्य वस्तुओं को भी दृश्य रूप में प्रस्तुत कर देते हैं । दूरबीनों से वे दूरवर्ती वस्तुएँ दीखती हैं जिन्हें साधारण दृष्टि से देख सकना सम्भव नहीं है । ज्ञान चक्षुओं से सूक्ष्म जगत की स्थिति को भली प्रकार जाना जा सकता है । अर्जुन को, यशोदा को भगवान कृष्ण ने ज्ञान चक्षुओं से ही अपने विराट् रूप के दर्शन कराये थे । उसी माध्यम से राम के वास्तविक रूप का साक्षात्कार कौशिल्या और काकभुसुण्डि को हुआ था । उसी दृष्टि से देख सकना जिस किसी के लिए भी सम्भव हुआ है, वह अपनी ही मानवी-काया में देव शक्तियों की उपस्थिति सत्प्रवृत्तियों के रूप में स्पष्टतया देखता है । प्रसुप्त स्थिति में तो जीवित मनुष्य भी मृतकवत् पड़ा रहता है, पर जागृत की स्थिति में पहुँचकर यही प्रबल पुरुषार्थ करता और अपनी प्रखरता का परिचय देता है । मानवी काया वन-मानुष के, नर-वानर के समतुल्य इसलिए बनी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

रहती है कि उस की देवात्मा प्रसुप्त स्थिति में पड़ी रहती है । साधन, उपचारों की सहायता से जो उसे जगा लेते हैं, उन्हें दिव्य शक्ति सम्पन्न सिद्ध पुरुष बनने में देर नहीं लगती ।

मानवी सत्ता में देव शक्तियों की उपस्थिति का वर्णन करते हुए भगवान शिव-पार्वती के सम्मुख रहस्योद्घाटन करते हैं-

देहेऽस्मिन् वर्तते मेरुः सप्त द्वीप समन्वितः ।
सरितः सागराः शैलाः क्षेत्राणि क्षेत्र पालकाः ।।
ऋषियो मुनयः सर्वे नक्षत्राणि ग्रहास्तथा ।
पुण्य तीर्थानि पीठानि वर्तन्ते पीठ देवताः ।।
सृष्टि संहार कर्तारौ भ्रमन्तौ शशि भास्करौ ।
नभौ वायुश्च वह्निश्च जलं पृथ्वी तथैव च ।।
त्रैलोक्ये यानि भूतानि तानि सर्वाणि देहतः ।
मेरुं संधेत्य सर्वत्र व्यवहारः प्रवर्तते ।।
जानाति यः सर्वमिदं स योगी नात्र संशयः ।
ब्रह्माण्ड संज्ञके देहे यथा देशं व्यवस्थितः ।।

-शिव संहिता

इसी देह में मेरु, सप्त द्वीप, सरिता, सागर, शैल, क्षेत्रपालक, ऋषि, मुनि, नक्षत्र, ग्रह, पीठ, पीठ देवता, शिव, चन्द्र, सूर्य, आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी, तीनों लोक, सब प्राणी निवास करते हैं । जो ब्रह्माण्ड में है वही पिण्ड में है । इस रहस्य को जो जान सकता है वही योगी है ।

किस संस्थान में किस देव शक्ति का निवास है और वहाँ कौन-सी विशिष्ट शक्ति छिपी पड़ी है इसका उल्लेख शास्त्रकारों ने संकेत रूप में किया है । न्यास, कवच, रक्षाविधान आदि के माध्यम से पूजा-प्रार्थना करते हुए यह अनुभव किया जा सकता है कि इस स्थान पर विद्यमान अमुक शक्ति का नव जागरण हो रहा है, उस केन्द्र पर ब्रह्माण्ड में संव्याप्त दिव्य कामनाओं का अवतरण हो रहा है । स्थापना, श्रद्धा, अनुभूति एवं उपलब्धि के चार चरण ध्यान-धारणा में प्रयुक्त होते हैं । यह संगति इन उपचारों के सहारे भली प्रकार बैठ जाती है । फलतः न्यास, कवच, रक्षाविधान आदि कृत्यों के माध्यम से शरीर में देवशक्तियों के जागरण एवं अवतरण का द्वार खुल जाता है । इन उपासनात्मक विधि विधानों का शास्त्रीय उल्लेख इस प्रकार है-

न्यास विधान

ॐ तत्पादङ्गु लिषर्वभ्याँ नमः (पैरों की अंगुलियों की गाँठों को)
ॐ सपादाङ्गु लिभ्यो नमः (पैरों की अंगुलियों को)
ॐ विजङ्घाभ्याँ नमः (दोनों जांघों को)
ॐ तुर्जानुभ्याँ नमः (दोनों जानुओं को)
ॐ व ऊरुभ्याँ नमः (कटि के नीचे के भाग को)
ॐ रे शिश्नाय नमः (शिश्न को)
ॐ णि वृषणाभ्याँ नमः (वृषण को)
ॐ यं कट्यै नमः (कटि को)
ॐ भर्नाभ्यै नमः (नाभि को)
ॐ गो उदराय नमः (पेट को)
ॐ दे स्तनाय नमः (दोनों स्तनों को)
ॐ व उरुसे नमः (छाती को)
ॐ स्य कण्ठाय नमः (कण्ठ को)
ॐ धी दन्तेभ्यो नमः (दाँतों को)
ॐ म तालुने नमः (तालु को)
ॐ हि नासिकायै नमः (नासिका को)
ॐ धि नेत्राभ्यां नमः (नेत्रों को)
ॐ यो भ्रूभ्यां नमः (भौंहों को)
ॐ यो ललाटाय नमः (ललाट को)
ॐ नः पूर्वमुखाय नमः (मुख के पूर्वी भाग को)
ॐ प्र दक्षिणमुखाय नमः (मुख के दक्षिणी भाग को)
ॐ चो पश्चिममुखाय नमः (मुख के पश्चिम भाग को)
ॐ द उत्तरमुखाय नमः (मुख के उत्तर भाग को)
ॐ यात् मूर्ध्ने नमः (सिर को)

बायें हाथ पर जल रख कर दाहिने हाथ की पाँचों उँगलियों को डुबाना और फिर उन भीगी उँगलियों को निर्धारित स्थानों पर स्पर्श कराना न्यास कहलाता है । इस न्यास कृत्य से उन स्थानों में सन्निहित देव शक्तियों में अन्तः जागृति होती है ।

रक्षा बन्धन

तद्वर्णैः पातु मूर्द्धानं साकारः पातु भालकम् ।

तत् वर्ण मूर्धा की, 'स' कार भाल की रक्षा करें ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

चक्षुषी ये विकारस्तु श्रोत्रे रक्षेतु कारकः ।
नासापुटे वकारो ते रेकारस्तु कपालकम् ।।

'वि' मेरे नेत्रों की और 'तु' कार कर्णों की रक्षा करे, 'व' कार नासापुट की और 'रे' कार कपाल की रक्षा करे ।

णिकारस्त्वधरोष्ठ च यकारस्तुर्ध्व ओष्ठके ।
आस्य मध्ये मकारस्तु मोकारस्तु कपोलयोः ।।

'णि' कार नीचे के ओष्ठ की 'य' कार उपरोष्ठ की, मुख के मध्य में 'भ' कार 'गो' कार दोनों कपोलों की रक्षा करें ।

देकारं कण्ठ देशे च वकारः स्कन्ध देशयोः ।
स्यकारो दक्षिणं हस्तं धी कारे वाम् हस्तकम् ।।

'दे'' कार कण्ठ प्रदेश की, 'ब' कार दोनों कन्धों की, 'स्य' कार दाँये हाथ की तथा 'धी' यह बाँये हाथ की रक्षा करें ।

मकारो हृदयं रक्षोद्धिकारो जठरं तथा ।
धिकारौ नाभिदेशं तु यो कारस्तु कटिद्वयम् ।।

'म्र' कार हृदय की रक्षा करे, 'हि' कार पेट की और 'यो' कार कटि द्वय की रक्षा करे ।

गुह्यं रक्षतु यो कार उरु मे नः पदाक्षरमः ।
प्रकारो जाननी रक्षेच्चोकारो जंघ देशयोः ।।

'यो' कार गुह्य प्रदेश की रक्षा करे, दोनों उरुओं की 'न' पद रक्षा करे । 'प्र' कार दोनों घुटनों की रक्षा करे । 'च' कार जंघा प्रदेश की रक्षा करे ।

दकारो गुल्फा देशे तु यात्कारः पाद युग्मकम् ।।

'द' कार गुल्फ की रक्षा करे, 'यात्' पद दोनों पैरों की रक्षा करे ।

बाईं हथेली ऊपर-दाहिनी नीचे रखकर उस संयुक्त करतल पृष्ठ का निर्धारित स्थानों पर स्पर्श करना रक्षा विधान है । दूसरी विधि यह भी है कि हाथ जोड़कर निर्धारित स्थानों पर देव शक्तियों के अवतरण होने और अवयवों की स्थूल शक्ति तथा वहाँ विद्यमान दिव्य शक्ति के संरक्षण, अभिवर्धन का उत्तरदायित्व निभा लेने की भावना करे ।

देव शक्तियों के जागरण एवं अवतरण की अनुभूति प्रायः दो रूपों में होती है । प्रथम रंग-दूसरा गन्ध । ध्यानावस्था में भीतर एवं बाहर किसी पुष्प विशेष की गन्ध भीतर से बाहर को उभरती प्रतीत हो तो समझना चाहिए कि गायत्री के अक्षरों में सन्निहित अमुक शक्ति उभार विशेष रूप से हो रहा है । इस अनुभूति के लिए २४ पुष्पों का उदाहरण दिया गया है । उनके रंग या गन्ध की अन्तः अनुभूति के आधार पर देव शक्तियों का अनुमान लगाया जा सकता है । ऐसा भी कहा जाता है कि अमुक शब्द शक्तियों की साधना में इन फूलों का उपयोग विशेष सहायक सिद्ध होता है ।

अक्षरों और पुष्पों की संगति का उल्लेख इस प्रकार है-

अतः परम् वर्णवर्णान्व्याहरामि यथातथम् ।
चम्पका अतसीपुष्पसन्निभं विद्रुमम् तथा ।।
स्फटिकारकं चैव पद्मपुष्पसमप्रभम् ।
तरुणादित्यसंकाशं शंखकुन्देन्दुसन्निभम् ।।
प्रवाल पद्मपत्राभम् पद्म रागसमप्रभम् ।
इन्द्रीनीलमणिप्रख्यं मौक्तिकं कुम्कुमप्रभम् ।।
अन्जनाभम् च रक्तं च वैदूर्य क्षौद्रसन्निभम् ।
हारिद्रम् कुन्ददुग्धाभम् रविकांतिसमप्रभम् ।।
शुकपुच्छनिभम् तद्वच्छतपत्र निभम् तथा ।
केतकीपुष्पसंकाशं मल्लिकाकुसुमप्रभम् ।।
करवीरश्च इत्येते क्रमेण परिकीर्तिताः ।
वर्णाः प्रोक्ताश्च वर्णानां महापापविधनाः ।।

गायत्री महामंत्र के २४ अक्षरों की प्रकाश किरणों के २४ रंग नीचे दिये पदार्थों तथा पुष्पों के रंग जैसे समझने चाहिए ।

(१) चम्पा (२) अलसी (३) स्फटिक (४) कमल (५) सूर्य (६) कुन्द (७) शंख (८) प्रवाल (९) पद्म पत्र (१०) पद्मराग (११) इन्द्रनील (१२) मुक्ता (१३) कुंकुम (१४) अंजन (१५) वैदूर्य (१६) हल्दी (१७) कुन्द (१८) द्रध (१९) सूर्य कान्त (२०) शुक की पूछ (२१) शतपत्र (२२) केतकी (२३) मल्लिका (२४) कन्नेर ।

किस अक्षर का नियोजन किस स्थान पर हो इस संदर्भ में भी मतभेद पाये जाते हैं । इन बारीकियों में न उलझकर हमें इतना ही मानने से भी काम चल सकता है कि इन स्थानों में विशेष शक्तियों का निवास है और उन्हें गायत्री साधना के माध्यम से जगाया जा सकता है । पौष्टिक आहार-विहार से शरीर के समस्त अवयवों का परिपोषण होता है । रोग निवारक औषधि से किसी भी अंग में

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

छिपी बीमारी के निराकरण का लाभ मिलता है, इसी प्रकार समग्र गायत्री उपासना साधारण रीति से करने पर भी विभिन्न अवयवों में विद्यमान देव शक्तियाँ समर्थ बनाई जा सकती हैं । सामान्यतया विशिष्ट अंग की अतिरिक्त आवश्यकता नहीं पड़ती । संयुक्त साधना से ही सन्तुलित उत्कर्ष होता रहता है ।

वेदमंत्र का संक्षिप्त रूप बीज मंत्र कहलाता है । वेद वृक्ष का सार संक्षेप में बीज है । मनुष्य का बीज वीर्य है । समूचा काम विस्तार बीज में सन्निहित रहता है । गायत्री के तीन चरण हैं । इन तीनों का एक-एक बीज 'भूः, भुवः, स्वः' है । इस व्याहृति भाग का भी बीज है-ॐ । यह समग्र गायत्री मन्त्र की बात हुई । प्रत्येक अक्षर का भी एक-एक बीज है । उसमें उस अक्षर की सार-शक्ति विद्यमान है । तांत्रिक प्रयोजनों में बीज मंत्र का अत्यधिक महत्त्व है । इसलिए गायत्री-मृत्युञ्जय जैसे प्रख्यात मंत्रों की भी एक या कई बीजों समेत उपासना की जाती है । चौबीस अक्षरों के २४ बीज इस प्रकार हैं-

(१) ॐ (२) हीं (३) श्रीं (४) क्लीं (५) हों (६) जूं (७) यं (८) रं (९) लं (१०) वं (११) शं (१२) सं (१३) ऐं (१४) क्रो (१५) हुं (१६) हलीं (१७) पं (१८) फं (१९) टं (२०) ठं (२१) डं (२२) ढ (२३) क्षं (२४) लूं ।

यह बीज मन्त्र व्याहृतियों के पश्चात् एवं मन्त्र-भाग से पूर्ण लगाये जाते हैं । 'भूर्भुवः स्वः' के पश्चात् 'तत्सवितुः' से पहले का स्थान ही बीज लगाने का स्थान है । 'प्रचोदयात्' के पश्चात् भी इन्हें लगाया जाता है । ऐसी दशा में उसे सम्पुट कहा जाता है । बीज या सम्पुट में से किसे कहाँ लगाना चाहिए इसका निर्णय किसी अनुभवी के परामर्श से करना चाहिए । बीज-विधान, तंत्र-विधान के अन्तर्गत आता है । इसलिए इनके प्रयोग में विशेष सतर्कता की आवश्यकता रहती है ।

प्रत्येक बीज मन्त्र का एक यंत्र भी है । इसे अक्षर-यन्त्र या बीज यन्त्र कहते हैं । तांत्रिक उपासनाओं में पूजा प्रतीक में चित्र-प्रतीक की भाँति किसी धातु पर खोदे हुए यंत्र की भी प्रतिष्ठापना की जाती है और प्रतिमा-पूजन की तरह यंत्र का भी पंचोपचार या षोडशोपचार पूजन किया जाता है । दक्षिण मार्गी साधनाओं में प्रतिमा-पूजन का जो स्थान है वही वाममार्गी उपासना उपचार में यंत्र-स्थापना का है, गायत्री यंत्र विख्यात है । बीजाक्षरों से युक्त २४ यंत्र उसके अतिरिक्त हैं । इन्हें २४ अक्षरों में सन्निहित २४ शक्तियों की प्रतीक-प्रतिमा कहा जा सकता है ।

चौबीस अक्षर चौबीस प्रत्यक्ष देवता

गायत्री मन्त्र के २४ अक्षरों को २४ देवताओं का शक्ति बीज मंत्र माना गया है । प्रत्येक अक्षर का एक देवता है । प्रकारान्तर से इस महामन्त्र को २४ देवताओं का एवं संघ-समुच्चय या संयुक्त परिवार कह सकते हैं । इस परिवार के सदस्यों की गणना के विषय में शास्त्र बतलाते हैं-

गायत्री मन्त्र का एक-एक अक्षर एक-एक देवता का प्रतिनिधित्व करता है । इन २४ अक्षरों की शब्द-शृंखला में बँधे हुए २४ देवता माने गये हैं-

गायत्र्या वर्ण मेकंक साक्षात् देवरूपकम् ।
तस्मात् उच्चारण तस्य त्राणयेव भविष्यति ।।

-गायत्री संहिता

अर्थात् गायत्री का एक-एक अक्षर साक्षात् देव स्वरूप है । इसलिए उसकी आराधना से उपासक का कल्याण ही होता है ।

देवतानि शृणु प्राज्ञ तेषामेवानुपूर्वशः ।
आग्नेयं प्रथमं प्रोक्तं प्राजापत्यं द्वितीयकम् ।।
तृतीयं च तथा सौम्यमीशानं च चतुर्थकम् ।
सावित्रं पञ्चमं प्रोक्तं षष्टमादित्यदैवतम् ।।
बार्हस्पत्यं सप्तमं तु मैत्रावरुणमष्टमम् ।
नवमं भगदवत्यं दशमं चार्यमैश्वरम् ।।
गणेशमेकादशकं त्वाष्ट्रं द्वादशकं स्मृतम् ।
पौष्णं त्रयोदशं प्रोक्तमैद्राग्नं च चतुर्दशम् ।।
वायव्यं पंचदशकं वामदैव्यं च षोडशम् ।
मैत्रावरुण दैवत्यं प्रोक्तं सप्तदशाक्षरम् ।।
अष्टादशं वैश्वदेवमुनविंशतिमातृकम् ।
वैष्णवं विंशतितमं वसुदैवतमीरितम् ।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

एकविंशतिसंख्याकं द्वाविंशं रुद्रदैवतम् ।
त्रयोविंशं च कौबेरमाश्विनं तत्वसंख्यकम् ।।
चतुर्विंशतिवर्णानां दैवतानां च संग्रहः ।

-गायत्री तन्त्र प्रथम पटल

हे प्राज्ञ! अब गायत्री के २४ अक्षरों में विद्यमान २४ देवताओं के नाम सुनो-(१) अग्नि (२) प्रजापति (३) चन्द्रमा (४) ईशान (५) सावित्री (६) आदित्य (७) बृहस्पति (८) मित्रावरुण (९) भग (१०) ईश्वर (११) गणेश (१२) त्वष्टा (१३) पूषा (१४) इन्द्राग्नि (१५) वायु (१६) वामदेव (१७) मैत्रावरुण (१८) वैश्वदेव (१९) मातृक (२०) विष्णु (२१) वसुगण (२२) रुद्रगण (२३) कुबेर (२४) अश्विनीकुमार ।

छन्द शास्त्र की दृष्टि से चौबीस अक्षरों के तीन विराम वाले पद्य को 'गायत्री' कहते हैं । मन्त्रार्थ की दृष्टि से उसमें सविता तत्व का ध्यान और प्रज्ञा प्रेरणा का विधान सन्निहित है । साधना-विज्ञान की दृष्टि से गायत्री मन्त्र का हर अक्षर बीज मंत्र है । उन सभी का स्वतन्त्र अस्तित्व है । उस अस्तित्व के गर्भ में एक विशिष्ट शक्ति-प्रवाह समाया हुआ है ।

गुलदस्ते में कई प्रकार के फूल होते हैं । उनके गुण, रूप, गन्ध आदि में भिन्नता होती है । उन सबको एक सूत्र में बाँधकर, एक पात्र में सजाकर रख दिया जाता है तो उसका समन्वित अस्तित्व एक विशिष्ट शोभा-सौन्दर्य का प्रतीक बन जाता है । गायत्री मंत्र को एक ऐसा ही गुलदस्ता कहा जा सकता है, जिसमें २४ अक्षरों के अलग-अलग सामर्थ्य से भरे-पूरे प्रवाहों का समन्वय है ।

औषधियों में कई प्रकार के रासायनिक पदार्थ मिले होते हैं । उनके पृथक-पृथक गुण हैं, पर उनका समन्वय एक विशिष्ट गुण युक्त बन जाता है । गायत्री को एक ऐसी औषधि कह सकते हैं, जिसमें बहुमूल्य शक्ति-तत्त्व घुले हैं ।

मशीनें भिन्न-भिन्न छोटे-छोटे कल-पुर्जों से मिलकर बनती हैं । हार में अनेक मणि-मुक्ता गुँथे होते हैं । सेना में किंतने ही सैनिक रहते हैं । शरीर में कितनी ही नस-नाड़ियाँ हैं । कपड़े में कितने ही धागे होते हैं । इन सब के समन्वय से विशिष्ट क्षमता उत्पन्न होती है । गायत्री का हर घटक महत्त्वपूर्ण है, पर उनका समन्वय जब संयुक्त शक्ति के रूप में प्रकट होता है तो उस समन्वय की सामर्थ्य असीम हो जाती है ।

एक विशेष पर्वतीय प्रदेश की भूमि, वहाँ की वायु, वहाँ की वनस्पतियों, रासायनिक पदार्थों के सम्मिश्रण के कारण गंगोत्री से आरम्भ होने वाला जल विशेष प्रकार के अद्‌भुत गुणों वाला बन गया । इसी प्रकार चौबीस अक्षरों से, उपयोगी तत्त्वों का कारणवश सम्मिश्रण हो जाने से आन्तरिक आकाश में एक विद्युन्मयी सूक्ष्म सरिता बह निकली । इस अध्यात्म गंगा का नाम गायत्री रखा गया । जिस प्रकार गंगा नदी में स्नान से शारीरिक व मानसिक स्वस्थता प्राप्त होती है, उसी प्रकार उस आकाश वाहिनी विद्यन्मयी गायत्री शक्ति की समीपता से आन्तरिक एवं बाह्य बल तथा वैभवों की उपलब्धि होती है ।

गायत्री जप द्वारा उत्पन्न हुआ शक्तिशाली बर्तुल-प्रवाह केवल निखिल ब्रह्माण्ड में परिभ्रमण नहीं करता वरन् पिण्ड में शरीर के भीतर भी ऐसी ही हलचल उत्पन्न होती है । महामन्त्र के २४ अक्षर शरीर के भीतर भी ऐसा ही परिभ्रमण बनाते हैं और २४ उपत्यिकाओं को बार-बार स्पर्श करके उनमें हल्का-हल्का गुदगुदी जैसा स्पन्दन करते हैं । आन्तरिक जागृति का यह सुकोमल क्रिया-कलाप स्वसंचालित रीति-नीति से गतिशील रहता है और कालान्तर में साधक को असाधारण आत्म-शक्ति से सम्पन्न कर देता है ।

'मार्कण्डेय पुराण' में शक्ति अवतार की कथा इस प्रकार है कि सब देवताओं से उनका तेज एकत्रित किया गया और उनकी सम्मिलित शक्ति का संग्रह-समुच्चय आद्य-शक्ति के रूप प्रकट हुआ । इस कथानक से स्पष्ट है कि स्वरूप एक रहने पर भी उसके अन्तर्गत विभिन्न घटकों का सम्मिलन-समावेश है । गायत्री के २४ अक्षरों की विभिन्न शक्ति धाराओं को देखते हुए यही कहा जा सकता है कि उस महा समुद्र में अनेक महानदियों ने अपना अनुदान समर्पित-विसर्जित किया है । फलतः उन सबकी विशेषताएँ भी इस मध्य केन्द्र में विद्यमान है । २४ शब्दों को अनेकानेक शक्ति

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

धाराओं का एकीकरण कह सकते हैं । यह धाराएँ कितने ही स्तर की हैं-कितनी ही दिशाओं से आई हैं । कितनी ही विशेषताओं से युक्त हैं । उन वर्गों का उल्लेख अवतारों-देवताओं दिव्य-शक्तियों ऋषियों के रूप में हुआ है । शक्तियों में से कुछ भौतिकी हैं, कुछ आत्मिकी, इनके नामकरण उनकी विशेषताओं के अनुरूप हुए हैं । शास्त्रों में इन भेद-प्रभेद का सुविस्तृत वर्णन है ।

चौबीस अवतारों की गणना कई प्रकार से की गई है । पुराणों में उनके जो नाम गिनाये गये हैं उनमें एकरूपता नहीं है । दस अवतारों के सम्बन्ध में प्रायः जिस प्रकार की सहमान्यता है, वैसी चौबीस अवतारों के सम्बन्ध में नहीं है । किन्तु गायत्री के अक्षरों के अनुसार उनकी संख्या सभी स्थलों पर २४ ही है । उनमें से अधिक प्रतिपादनों के आधार पर जिन्हें २४ अवतार ठहराया गया है वे यह हैं-(१) नारायण (विराट) (२) हंस (३) यज्ञ पुरुष (४) मत्स्य (५) कूर्म (६) वाराह (७) वामन (८) नृसिंह (९) परशुराम (१०) नारद (११) धन्वन्तरि (१२) सनत्कुमार (१३) दत्तात्रेय (१४) कपिल (१५) ऋषभदेव (१६) हयग्रीव (१७) मोहिनी (१८) हरि (१९) प्रभु (२०) राम (२१) कृष्ण (२२) व्यास (२३) बुद्ध (२४) निष्कलंक-प्रज्ञावतार ।

भगवान के सभी अवतार समष्टि संतुलन के लिए हुए हैं । धर्म की स्थापना और अधर्म का निराकरण उनका प्रमुख उद्देश्य रहा है । इन सभी अवतारों की लीलाएँ भिन्न-भिन्न हैं । उनके क्रिया-कलाप, प्रतिपादन, उपदेश, निर्धारण भी पृथक-पृथक हैं । किन्तु लक्ष्य एक ही है-व्यक्ति की परिस्थिति और समाज की परिस्थिति में उत्कृष्टता का अभिवर्धन एवं निकृष्टता का निवारण । इन्हीं उद्देश्यों की पूर्ति के लिए भगवान समय-समय पर अवतरित होते रहे हैं । इन्हीं उद्देश्यों की गायत्री के २४ अक्षरों में सन्निहित प्रेरणाओं के साथ पूरी तरह संगति बैठ जाती है । प्रकारान्तर से यह भी कहा जा सकता है कि भगवान के २४ अवतार गायत्री मंत्र में प्रतिपादित २४ तथ्यों, आदर्शों को व्यावहारिक जीवन में उतारने की विधि व्यवस्था का लोकशिक्षण करने के लिए प्रकट हुए हैं ।

कथा है कि दत्तात्रेय की जिज्ञासाओं का जब कहीं समाधान न हो सका तो वे प्रजापति के पास पहुँचे और सद्ज्ञान दे सकने वाले समर्थ गुरु को उपलब्ध करा देने का अनुरोध किया । प्रजापति ने गायत्री मन्त्र का संकेत किया । दत्तात्रेय वापिस लौटे तो उन्होंने सामान्य प्राणियों और घटनाओं से अध्यात्म तत्वज्ञान की शिक्षा-प्रेरणा ग्रहण की । कथा के अनुसार यही २४ संकेत उनके २४ गुरु बन गये । इस अलंकारिक कथा वर्णन में गायत्री के २४ अक्षर ही दत्तात्रेय के परम समाधान कारक सद्गुरु हैं ।

तत्वज्ञानियों ने गायत्री मंत्र में अनेकानेक तथ्यों को ढूँढ़ निकाला है और यह समझने-समझाने का प्रयत्न किया है कि गायत्री मन्त्र के २४ अक्षर में से किन रहस्यों का समावेश है । उनके शोध निष्कर्षों में से कुछ इस प्रकार हैं-

(१) ब्रह्म-विज्ञान के २४ महाग्रन्थ हैं । ४ वेद, ४ उपवेद, ४ ब्राह्मण, ६ दर्शन, ६ वेदांग । यह सब मिलाकर २४ होते हैं । तत्त्वज्ञों का ऐसा मत है कि गायत्री में २४ अक्षरों की व्याख्या के लिए उनका विस्तृत रहस्य समझाने के लिए इन शास्त्रों का निर्माण हुआ है ।

(२) हृदय को जीव का और ब्रह्मरन्ध्र को ईश्वर का स्थान माना गया है । हृदय से ब्रह्मरन्ध्र की दूरी २४ अंगुल है । इस दूरी को पार करने के लिए २४ कदम उठाने पड़ते हैं । २४ सद्गुण अपनाने पड़ते हैं । इन्हीं को २४ योग कहा गया है ।

(३) विराट ब्रह्म का शरीर २४ अवयवों वाला है । मनुष्य शरीर के भी प्रधान अंग २४ ही हैं ।

(४) सूक्ष्म शरीर की शक्ति प्रवाहिकी नाड़ियों में २४ प्रधान हैं । ग्रीवा में ७, पीठ में १२, कमर में ५ इन सबको मेरुदण्ड के सुषुम्ना परिवार का अंग माना गया है ।

(५) गायत्री को अष्ट सिद्धि और नवनिद्धि की अधिष्ठात्री माना गया है । इन दोनों के समन्वय से शुभ गतियाँ प्राप्त होती हैं । यह २४ महान लाभ गायत्री परिवार के अन्तर्गत आते हैं ।

(६) सांख्य दर्शन के अनुसार यह सारा सृष्टिक्रम २४ तत्त्वों के सहारे चलता है । उनका प्रतिनिधित्व गायत्री के २४ अक्षर करते हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ऐसे-ऐसे अनेक कारण और आधार हैं जिनसे गायत्री में २४ ही अक्षर क्यों हैं, इसका समाधान मिलता है । विश्व की महान विशिष्टताओं के कितने ही परिकर ऐसे हैं जिनका जोड़ २४ बैठ जाता है । गायत्री मन्त्र में उन परिकरों का प्रतिनिधित्व रहने की बात, इस महामन्त्र में २४ की ही संख्या होने से, समाधान करने वाली प्रतीत हो सकती है ।

ऋषि, छन्द और देवतापरक गायत्री विनियोग

गायत्री के समग्र विनियोग में सविता, देवता, विश्वामित्र, ऋषि एवं गायत्री छन्द का उल्लेख किया गया है, परन्तु उसके वर्गीकरण में प्रत्येक अक्षर एक स्वतन्त्र शक्ति बन जाता है । हर अक्षर अपने आप में एक मन्त्र है । ऐसी दशा में २४ देवता, २४ ऋषि एवं २४ छन्दों का उल्लेख होना भी आवश्यक है । तत्वदर्शियों ने वैसा ही किया भी है । गायत्री-विज्ञान की गहराई में उतरने पर इन विभेदों का स्पष्टीकरण होता है । नारंगी ऊपर से एक दीखती है पर छिलका उतारने पर खण्ड घटक स्वतंत्र इकाइयों के रूप में भी दृष्टिगोचर होते हैं । गायत्री को नारंगी की उपमा दी जाय तो उसके अन्तराल में २४ अक्षरों के रूप में २४ खण्ड घटकों के दर्शन होते हैं । जो विनियोग एक समग्र गायत्री मंत्र का है, वैसा ही प्रत्येक अक्षर का भी आवश्यक होता है । चौबीस अक्षरों के लिए चौबीस विनियोग बनने पर उनके २४ देवता, २४ ऋषि एवं २४ छन्द भी बन जाते हैं ।

ऋषि गुण हैं, देवता प्रभाव, छन्द को विधाता कह सकते हैं । मोटे रूप में पद्यों की संरचना को छन्द कहते हैं । पिंगल-शास्त्र के अनुसार वह संरचना जिस विधि-व्यवस्था में गूँथी गई होती है, उसी आधार पर उसका नामकरण कर दिया जाता है । यह शब्द-शास्त्र की साहित्यिक विवेचना हुई । इसी प्रकार मोटे रूप से ऋषियों को व्यक्ति विशेष माना गया है । इनकी ऐतिहासिक चरित्र चर्चा कथा-पुराणों में स्थान-स्थान पर विस्तारपूर्वक लिखी मिलती है । देवताओं को स्वर्गलोक के निवासी दिव्य शरीरधारी माना जाता है और समझा जाता है कि अर्चना, आवाहन करने पर वे कृपापूर्वक उपासकों के समीप पधारते हैं और उनकी प्रार्थना, कामना को पूरा करने में सहायता करते हैं । यह सामान्य स्तर की बालबोध जानकारी है ।

गम्भीर अवगाहन में गहरे उतरने पर विनियोग का गहरा अर्थ उभरता है । ऋषि सद्गुणों के प्रतीक हैं और देवता उनकी अवधारणा के प्रतिफल । स्पष्ट है कि सद्गुण ही मनुष्य के व्यक्तित्व को महान बनाते हैं और उन्हीं के आधार पर उत्कृष्ट चिन्तन और आदर्श कृतत्व बन पड़ता है । आन्तरिक आत्मिक स्तर और बहिरंग पुरुषार्थ का समन्वय अनेकानेक सिद्धियों और विभूतियों के रूप में प्रतिक्रिया स्वरूप सामने आता है । ऋषि आस्थावान पुरुषार्थ को कहते हैं । प्रकारान्तर से इसी को गुण, कर्म, स्वभाव की उत्कृष्टता कह सकते हैं । पवित्र और प्रखर व्यक्तित्व ऋषि हैं । ऋषियों की संख्या अगणित है । गायत्री साधना से सभी का सीधा सम्बन्ध रहा है किन्तु २४ ऋषि गायत्री-विद्या शोधस्तर के विशेषज्ञ माने गये हैं । ऐतिहासिक विवेचना की दृष्टि से यों कहा जा सकता है कि विश्वामित्र की ही तरह अपने-अपने समय में अपने-अपने प्रयोजन के लिए इन चौबीसों ऋषियों ने गायत्री साधना की थी और सिद्धावस्था प्राप्त की थी । तत्त्वदर्शन की दृष्टि से ऋषि का मानवी अस्तित्व अस्वीकार न करते हुए भी उन्हें सद्गुणों का प्रतीक माना गया है ।

ऋषियों और देवताओं का परस्पर समन्वय है । ऋषियों की साधना से विष्णु की तरह सुप्तावस्था में पड़ी रहने वाली देवसत्ता जागृत होने का अवसर मिलता है । देवताओं के अनुग्रह से देवताओं को उच्चस्तरीय वरदान मिलते हैं । वे सामर्थ्यवान बनते हैं और स्व-पर कल्याण की महत्त्वपूर्ण भूमिका प्रस्तुत करते हैं ।

ऋषि सद्गुण हैं और देवता उनके प्रतिफल । ऋषि को जड़ और देवता को वृक्ष कहा जा सकता है । ऋषित्व और देवत्व के संयुक्त प्रभाव का परिणाम फल-सम्पदा के रूप में सामने आता है । ऋषि लाखों हुए हैं और देवता तो करोड़ों बताये

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जाते हैं । ऋषि पृथ्वी पर और देवता स्वर्ग में रहने वाले माने जाते हैं । स्थूल दृष्टि से दोनों के बीच ऐसा कोई तारतम्य नहीं है जिससे उनकी संख्या समान ही रहे । उसे असमंजस का निराकरण गायत्री के २४ अक्षरों से सम्बद्ध ऋषि एवं देवताओं से होता है । हर सद्गुण का विशिष्ट परिणाम होना समझ में आने योग्य बात है । यों प्रत्येक सद्गुण परिस्थिति के अनुसार अनेकानेक सत्परिणाम प्रस्तुत कर सकता है, फिर भी यह मानकर ही चलना होगा कि प्रत्येक सत्प्रवृत्ति की अपनी विशिष्ट स्थिति होती है और उसी के अनुरूप अतिरिक्त प्रतिक्रिया भी होती है । ऋषि रूपी पुरुषार्थ से देवता रूपी वरदान संयुक्त रूप से जुड़ा रहने की बात हर दृष्टि से समझी जाने योग्य है ।

मूर्धन्य ऋषियों की गणना २४ है । इसका उल्लेख गायत्री तंत्र में इस प्रकार मिलता है-

वामदेवोऽत्रिर्वसिष्ठः शुक्रः कण्वः पराशरः ।
विश्वामित्रो महातेजाः कपिलः शौनको महान् ॥
याज्ञवल्क्यो भरद्वाजो जमदग्निस्तपोनिधिः ।
गौतमो मुद्गलश्चैव वेदव्यासश्च लोमशः ॥
अगस्त्यः कौशिको वत्सः पुलस्त्यो माण्डुकस्तथा ।
दुर्वासास्तपसां श्रेष्ठो नारदः कश्यपस्तथा ॥
इत्येते ऋषयः प्रोक्ता वर्णानां क्रमशोमुने ।

गायत्री के २४ अक्षरों के दृष्टा २४ ऋषि यह हैं- (१) वामदेव (२) अत्रि (३) वशिष्ठ (४) शुक्र (५) कण्व (६) पारासर (७) विश्वामित्र (८) कपिल (९) शौनक (१०) याज्ञवल्क्य (११) भारद्वाज (१२) जमदग्नि (१३) गौतम (१४) मुद्गल (१५) वेदव्यास (१६) लोमश (१७) अगस्त्य (१८) कौशिक (१९) वत्स (२०) पुलस्त्य (२१) माण्डूक (२२) दुर्वासा (२३) नारद (२४) कश्यप ।

इन २४ ऋषियों को सामान्य जनजीवन में जिन सत्प्रवृत्तियों के रूप में जाना जा सकता है, वे यह हैं-

(१) प्रज्ञा (२) सृजन (३) व्यवस्था (४) नियंत्रण (५) सद्ज्ञान (६) उदारता (७) आत्मीयता (८) आस्तिकता (९) श्रद्धा (१०) शुचिता (११) संतोष (१२) सहृदयता (१३) सत्य (१४) पराक्रम (१५) सरसता (१६) स्वावलम्बन (१७) साहस (१८) ऐक्य (१९) संयम (२०) सहकारिता (२१) श्रमशीलता (२२) सादगी (२३) शील (२४) समन्वय । प्रत्यक्ष ऋषि यही हैं ।

इन ऋषियों की कार्य पद्धति छन्द है । मोटे रूप से इसे उसकी उपासना में उपयुक्त होने वाले मंत्रों की उच्चार विधि-स्वर संहिता कह सकते हैं । सामवेद में मंत्र-विद्या के महत्त्वपूर्ण आधार उच्चारण विधान-स्वर संकेतों का विस्तारपूर्वक विधान निर्धारण मिलता है । प्रत्येक वेद मंत्र के साथ उदात्त-अनुदात्त स्वरिति के स्वर संकेत लिखे मिलते हैं । यह जप एवं पाठ प्रक्रिया का सामान्य विधान हुआ, पर यह वर्णन भी बालबोध जैसा ही है । वस्तुतः छन्द उस साधना प्रक्रिया को कहते हैं, जिसमें प्रगति के लिए विधि-विधानों का समावेश हो ।

साधना की विधियाँ वैदिकी भी हैं और तांत्रिकी भी । व्यक्ति विशेष की स्थिति के अनुरूप उनके क्रम-उपक्रम में अन्तर भी पड़ता है । किस स्तर का व्यक्ति किस प्रयोजन के लिए किस स्थिति में क्या साधना करे, इसका एक स्वतन्त्र शास्त्र है । इसका स्पष्ट निर्देश ग्रन्थ रूप में करा सकना कठिन है । इस प्रक्रिया का निर्धारण अनुभवी मार्गदर्शक की सूक्ष्म दृष्टि पर निर्भर है । रोगों के निदान और उसके उपचार का वर्णन चिकित्सा ग्रन्थों में विस्तारपूर्वक मिल जाता है । इतने पर भी अनुभवी चिकित्सक द्वारा रोगी की विशेष स्थिति को देखते हुए उपचार का विशिष्ट निर्धारण करने की आवश्यकता बनी ही रहती है । यह चिकित्सक की स्वतन्त्र सूझबूझ पर ही निर्भर है । इसके लिए कोई लक्ष्मण रेखा खिंच नहीं सकती, जिसके अनुसार चिकित्सक पर यह प्रतिबन्ध लगे कि अमुक स्थिति के रोगी का उपचार अमुक प्रकार करने के लिए ही प्रतिबन्धित है ।

चिकित्सक की सूझ-बूझ को मौलिक कहा जा सकता है । ठीक उसी प्रकार छन्द को अनुभवी मार्गदर्शक द्वारा किया गया इंगित कहा जा सकता है । साधना विधियों में एक ही प्रक्रिया का वर्णन अनेक प्रकार से हुआ है । उसमें से किस परिस्थिति

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

में क्या उपयोग हो सकता है इसकी बहुमुखी निर्धारण प्रज्ञा को 'छन्द' कह सकते हैं ।

गायत्री वेद वाङ्मय में प्रयुक्त होने वाला एक छन्द गीत-है । जिसमें ८-८ अक्षरों के तीन-तीन चरण हों और जो निर्धारित स्वर-लहरी में गाया जा सके, उस कविता को वेद, विद्या के ज्ञाता गायत्री छन्द कहते हैं । यों गायत्री शब्द का अर्थ प्राणों का संरक्षण एवं संवर्धन करने वाली सत्ता भी होता है, पर मोटे तौर पर यह शब्द एक छन्द गीत का ही बोध कराता है । हर गीत की अपनी विशेषता होती है । वह अपने गर्भ में भरे हुए भावों को तो कोमल अभिव्यंजनाओं के साथ व्यक्त करता ही है, भावुकता को जगाता और सरसता को लहराता ही है, साथ ही एक वैज्ञानिक वातावरण भी पैदा करता है । शब्द को ब्रह्म कहा गया है । गीत को ब्रह्म की तरल स्थिति माना गया है । भक्तगण गीत के माध्यम से अपने इष्टदेव के साथ तन्मय होने की लय साधना करते हैं । मीरा, सूर, तुलसी, कबीर, चैतन्य, नारद आदि ने अपनी गीत साधनाओं से ही अपने उपास्य देवों का सामीप्य पाया था, ऋषि सामगान कर के ब्रह्म का साक्षात्कार करते थे । दीपक राग से बुझे दीपकों को जलाना और मेघ मल्हार की स्वर लहरी से वर्षा होने लगना प्रसिद्ध है । गीत-शास्त्र के ज्ञाता जानते हैं कि किस ऋतु में अथवा किस दिन के किस भाग में कौन से राग-रागिनी का गायन किया जाय तो सुनने वालों पर उसका क्या सूक्ष्म प्रभाव पड़ेगा ? गीत का अपना एक वैज्ञानिक स्वरूप भी है, जिसकी शोध कर के आधुनिक पदार्थ विज्ञानवेत्ता अमुक स्वर लहरियों को ध्वनि विस्तारक यन्त्रों द्वारा प्रसारण कर के पशुओं से अधिक दूध लेना, पेड़-पौधों को अधिक फलदायक बनाना, रोगियों को कष्टमुक्त करना आदि अनेक प्रकार के लाभ उठाने लगे हैं । फौज में जब बिगुल बजता है, मार्च की ध्वनि बजती है तब कायर सैनिकों में भी वीरता के भाव लहराने लगते हैं । इसी प्रकार की अपनी विशेषताएँ अन्य गीतों की भी हैं । वेद-गीत तो इस दृष्टि से अत्यधिक प्रभावपूर्ण हैं । उनके अर्थ की महत्ता तो है ही, साथ ही उनका उच्चारण भी अपने आपमें इतना प्रभावशाली है कि वेद-पाठ सामगान आदि के स्वर आयोजन मात्र से अद्भुत प्रतिफल उपस्थित होते हैं ।

गायत्री की स्वर-लहरी अपने क्षेत्र में जादू का काम करती है । गायत्री छन्द के विधिवत् उच्चारण से आकाश में विद्युत कम्पन होते हैं उनका प्रभाव जिन समीपवर्ती और दूरवर्ती लोगों पर पड़ता है वे अनेक भौतिक एवं आध्यात्मिक लाभों से लाभान्वित होते हैं । अथर्व वेद में गायत्री उपासना से प्राप्त होने वाले सात लाभों का वर्णन करते हुए कहा गया है-

स्तुता मया वरदा वेद माता प्रचोदयन्ता पावमानी द्विजानाम् । आयु प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चस् । मह्यं दत्वा व्रजत ब्रह्म लोकम् ।

-अथर्व १९।७१।११

"वेदमाता गायत्री, उपासना करने वालों को पवित्र करती हैं, प्रेरणा देती हैं, आयु, प्राण, प्रजा, पशु, कीर्ति, धन और ब्रह्म-वर्चस् प्रदान करके ब्रह्मलोक तक पहुँचाती हैं ।"

अथर्व वेद की भाँति ही अन्य शास्त्रों तथा ऋषियों ने भी इस महामन्त्र का जो गुणगान किया है उससे सिद्ध होता है कि गायत्री उपासना, साधक को अनेक कठिनाइयों से छुड़ाने और सुख-शान्ति का अधिकारी बनाने में महत्त्वपूर्ण योगदान करती है ।

ऐहिकायुष्मिकं सर्वं गायत्री जपतो भवेत् ।

-आदि पुराण

गायत्री जप से सभी सांसारिक कामनायें पूर्ण होती हैं ।

शत्रुतो न भयं तस्य दस्युतो वन्हान राजतः ।
न शस्त्रानल तोयौधात्कदाचित्संभविष्यति ।

-कात्यायान

न उसे शत्रुओं का भय रहता है, न दस्युओं का, न हथियारों का, न अग्नि का वह सब प्रकार के भयों से निर्भय हो जाता है ।

शास्त्रकार ने गायत्री को सर्वोपरि महत्त्व का साधन उपादान बताया है । वस्तुतः यदि कोई सच्चे मन से और सच्चे क्रम से इस महत्तत्व के साथ अपने को जोड़ सके तो उसे भी अपनी अनुभूतियों के आधार पर शास्त्र की उक्ति को स्वयं दुहराना पड़ेगा । शास्त्र कहता है-

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गायत्र्येव तपो योगः साधनं ध्यानउच्यते ।
सिद्धीनां स मता माता नातः किंचिद् वृहत्तरम् ।
गायत्री साधना लोके न कस्यापि कदापि हि ।।
याति निष्फलता मेतत् ध्रुवं सत्यं हि भूतले ।
योगिकानां समस्तानां साधनानां वरानने ।।

-शिव कैवल्य

"गायत्री ही तप है, योग है, साधन है, ध्यान है । वही सिद्धियों की माता मानी गई है । इससे बढ़कर श्रेष्ठ तत्त्व इस संसार में और कोई नहीं है । कभी किसी की गायत्री साधना निष्फल नहीं जाती । समस्त योग साधनाओं का आधार गायत्री ही है ।"

गायत्री एक वैदिक छन्द तो है ही, उस छन्द के सम्यक उच्चारण से-जो सामान्यतः मिलना चाहिए वह तो मिलता ही है । पर विशेषता एक और भी है कि इन २४ अक्षरों में प्रत्येक अक्षर एक छन्द है । प्रत्येक अक्षर अपने-अपने में एक परिपूर्ण कविता है । इसे २४ काव्यों का एक समन्वय गुच्छक भी कहा जा सकता है । २४ प्रभावशाली औषधियों से मिला कर बनाई हुई औषधि रसायन की तरह-२४ तारों की किसी उत्कृष्ट वीणा की तरह गायत्री के २४ अक्षर अपनी विशिष्ट क्रिया उत्पन्न करते हैं । गायत्री का हर अक्षर अपने आपमें परिपूर्ण गीत-परिपूर्ण शक्ति प्रवाह है इसका स्पष्टीकरण गायत्री तन्त्र में किया गया है ।

समस्त गायत्री साधना का स्वतन्त्र विधान है । यों स्थिति के अनुरूप उस विधान के भी भेद और उपभेद हैं किन्तु २४ अक्षरों में सन्निहित किसी शक्ति विशेष की साधना करनी हो तो व्यक्ति के स्तर तथा प्रयोजन को ध्यान में रखते हुए जो निर्धारण करना पड़े, उसका संकेत 'छन्द' रूप में किया गया है । अच्छा तो यह होता कि पिंगलशास्त्र में जिस प्रकार छन्दों के स्वरूप का स्पष्ट निर्धारण किया गया है उसी प्रकार साधना की छन्द प्रक्रिया का भी शास्त्र बना होता, भले ही उसका विस्तार कितना ही बड़ा क्यों न करना पड़ता । यदि ऐसा हो सका होता तो सरलता रहती । किन्तु इतने पर भी स्वतन्त्र निर्धारण की आवश्यकता से छुटकारा नहीं मिलता ।

जो भी हो आज स्थिति यह है कि छन्द रूप में यह संकेत मौजूद हैं कि उपचार की दिशा-धारा क्या होनी चाहिए । यह सांकेतिक भाषा है । पारंगतों के लिए इस अंगुलि निर्देश से भी काम चल सकता है और प्राचीन काल में चलता भी रहा है । पर आज की आवश्यकता यह है कि 'गुरुपरम्परा' तक सीमित रहने वाली रहस्यमयी विधि-व्यवस्था को अब सर्वसुलभ बनाया जाय । प्राचीनकाल में ऐसे प्रयोजन गोपनीय रखे जाते थे । आज भी अणु-विस्फोट जैसे प्रयोगों की विधियाँ गोपनीय ही रखी जा रही हैं । राजनैतिक रहस्यों के सम्बन्ध में भी अधिकारियों को गोपनीयता की शपथ लेनी पड़ती है, पर एक सीमा तक ही यह उचित है । 'छन्द' के सम्बन्ध में भी एक सीमा तक गोपनीयता बरती जा सकती है, फिर भी उसका उतना विस्तार तो होना ही चाहिए कि उसके लुप्त होने का खतरा न रहे ।

गायत्री मन्त्र के हर अक्षर का एक स्वतन्त्र छन्द स्वतन्त्र साधना विधान है, जिसका संकेत-उल्लेख 'गायत्री-तन्त्र' में इस प्रकार मिलता है-

गायत्र्युष्णिगनुष्टुप् च बृहती पंक्तिरेव च ।
त्रिष्टुभं जगती चैव तथाऽतिजगती मता ।
शक्वर्यतिशक्वरी च धृतिश्चातिधृतिस्तथा ।
विराट् प्रेस्ता रपंक्तिश्च कृतिः प्रकृतिराकृतिः ।
विकृतिः संकृतिश्चैवाक्षरपंक्तिस्तथैव च ।
भूर्भुवः स्वरिति छंदस्तथा ज्यातिष्मती स्मृतम् ।
इत्येतानि च छंदासि कीर्तितानि महामुने ।।

हे नारद ! गायत्री के २४ अक्षरों में २४ छन्द सन्निहित हैं-(१) गायत्री (२) उष्णिक्र (३) अनुष्टुप् (४) वृहती (५) पंक्ति (६) त्रिष्टुप (७) जगती (८) अतिजगती (९) शक्वरी (१०) अतिशक्वरी (११) धृति (१२) अतिधृति (१३) विराट् (१४) प्रस्तार पंक्ति (१५) कृति (१६) प्रकृति (१७) आकृति (१८) विकृति (१९) संस्कृति (२०) अक्षर पंक्ति (२१) भूः (२२) भुवः (२३) स्वः (२४) ज्योतिष्मती ।

छन्द विद्या के अन्तर्गत साधना-विधान का जो उल्लेख मिलता है, उसे मुद्रा कहा जाता है । मुद्राओं में यों कई ग्रन्थों में मात्र अंगुलि संचालन की सामान्य क्रियाओं को ही पर्याप्त मान लिया गया है और गायत्री उपासकों को उन्हें ही कर लेने पर काम चल सकने का आश्वासन दिया गया है, पर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यह आरम्भ है । वास्तव में मुद्रा-विज्ञान अपने आप में एक समग्र शक्ति है । उसमें उँगलियों का ही नहीं शरीर के विभिन्न अवयवों का-श्वसन संस्थान का तथा मन के विशिष्ट भाव प्रवाहों का समावेश होता है । २४ मुद्रा साधनाओं को गायत्री के २४ अक्षरों के लिए किस प्रकार उपयोग किया जाना चाहिए इसका निर्धारण अनुभवी मार्गदर्शक के परामर्श से ही हो सकता है । मुद्राओं का उल्लेख 'घेरण्डसंहिता' में इस प्रकार है-

महामुद्रा नभोमुद्रा उड्डियानं जलन्धरम् ।
मूलबन्धो महाबन्धो महावेधश्च खेचरी ।।
विपरीत करणी योनिर्वज्रोली शक्तिचालिनी ।
ताडकी माण्डवी मुद्रा शाम्भवी पंचधारणा ।।
अश्विनी पाशिनी कामी मातंगी च भुजंगिनी ।
चतुर्विंशति मुद्राणि सिद्धदानीह योगिनाम् ।।

-घेरण्ड संहिता तृतीयोपदेश

(१) महामुद्रा (२) नभोमुद्रा (३) उड्डीयन (४) जालन्धर बन्ध (५) मूलबन्ध (६) महाबन्ध (७) खेचरी (८) विपरीत करणी (९) योनिमुद्रा (१०) वज्रोली (११) शक्ति चालनी (१२) तड़ागी (१३) माण्डवी (१४) शाम्भवी (१५) अश्विनी (१६) पाशिनी (१७) कान्की (१८) मातंगी (१९) भुजंगिनी (२०) पार्थिवी (२१) आम्भरी (२२) वैश्वानरी (२३) वायवी (२४) आकाशी । यह चौबीस मुद्रा साधनाएँ योग साधकों को सिद्धियाँ प्रदान करने वाली हैं ।

तन्त्र प्रकरण में दोनों हाथों की उँगलियों को मिलाकर कुछ विशेष प्रकार की आकृतियाँ बनाई जाती हैं । इन्हें मुद्राएँ कहते हैं । मुद्राओं की संख्या २४ है । प्रत्येक अक्षर की एक मुद्रा है । अक्षरों के क्रम से मुद्रा निर्धारण निम्न प्रकार किया गया है । इन्हें किसी अभ्यासी विज्ञजन से अथवा उपासना ग्रन्थों में उपलब्ध चित्रों के माध्यम से जाना जा सकता है ।

अतः परं प्रवक्ष्यामि वर्णामुद्राः क्रमेण तु ।
सुमुखं सुम्पुटं चैव विततं विस्तृतं तथा ।।
द्विमुखं त्रिमुखं चैव चतुःपंचमुखं तथा ।
षडमुखाधोमुखं चैव व्यापकांजलिकं तथा ।।
शकटं यम पाशं च ग्रन्थितं सम्मुखोन्मुखम् ।
प्रलम्बं मुष्टिकं चैव मत्स्यकूर्म वराहकम् ।।
सिंहाक्रान्तं, महाक्रान्तं, मुद्गरं पल्लव तथा ।
चतुर्विंशतिमुद्राक्षाज्जापादौ परिकीर्तिताः ।।

अर्थात्-गायत्री के अनुसार २४ मुद्राएँ इस प्रकार हैं-(१) सुमुख (२) सुम्पुट (३) विवत (४) विस्तृत (५) द्विमुख (६) त्रिमुख (७) चतुर्मुख (८) पंचमुख (९) षड्मुख (१०) अधोमुख (११) व्यापकाञ्जलि (१२) शकट (१३) यम पाश (१४) ग्रन्थित (१५) सन्मुखोन्मुख (१६) प्रलम्ब (१७) मुष्टिक (१८) मत्स्य (१९) कूर्म (२०) बहारक (२१) सिंहाक्रान्त (२२) महाक्रान्त (२३) मुद्गर (२४) पल्लव ।

गायत्री विनियोग में सविता देवता का उल्लेख है । २४ अक्षरों के २४ देवताओं की नामावली अन्यत्र दी गई है । उन देवताओं को अष्टसिद्धि, नवनिद्धि एवं सप्त विभूतियों के रूप में गिना गया है । ८+९+७=का योग २४ होता है । गायत्री से प्राचीन काल के साधकों को उन चमत्कारी विशिष्टताओं की उपलब्धि होती होगी । आज के सामान्य साधक सामान्य व्यक्तित्व के रहते हुए जो सफलताएँ प्राप्त कर सकते हैं, उन्हें इस प्रकार समझा जा सकता है-

(१) प्रज्ञा (२) वैभव (३) सहयोग (४) प्रतिभा (५) ओजस् (६) तेजस् (७) वर्चस् (८) कान्ति (९) साहसिकता (१०) दिव्य दृष्टि (११) पूर्वाभास (१२) विचार संचार (१३) वरदान (१४) शाप (१५) शान्ति (१६) प्राण प्रयोग (१७) देहान्तर सम्पर्क (१८) प्राणाकर्षण (१९) ऐश्वर्य (२०) दूर श्रवण (२१) दूरदर्शन (२२) लोकान्तर सम्पर्क (२३) देव सम्पर्क (२४) कीर्ति । इन्हीं को गायत्री की २४ सिद्धियाँ कहा जाता है ।

गायत्री उपासक पर देव अनुग्रह की निरन्तर वर्षा होती है । उसमें ऋषि-तत्त्व बढ़ता है । छन्द-पुरुषार्थ में-साधना प्रयोजन में श्रद्धा रहती है । मन लगता है । फलतः उसकी भाव भरी अन्तरात्मा का चुम्बकत्व उन देवताओं का अजस्र वरदान प्राप्त करता है, जिनका इस महामन्त्र के साथ सघन सम्बन्ध है । कहा भी है-

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

चतुर्विंशति-त्वा सा यदा भवति शोभना ।
गायत्रीं सवितुः शम्भो गायत्रीं मदनात्मिकाम् ।।
गायत्रीं विष्णुगायत्री गायत्री त्रिपदात्मनः ।
गायत्रीं दक्षिणामूर्त्ते गायत्री शम्भुयोषितः ।।

गायत्री के चौबीस अक्षर, चौबीस तत्त्व हैं । गायत्री, सविता, शिव, विष्णु, दक्षिणामूर्ति, शम्भु शक्ति और बीज हैं ।

सृष्टि की पदार्थ-सम्पदा का वर्गीकरण करने की दृष्टि से जिन पंच तत्त्वों की चर्चा की जाती है, उसे भौमिक जगत की सृजन सामग्री कहा जाता है । उस सामान्य वर्गीकरण का विज्ञान-वेत्ताओं ने अधिक गम्भीर विश्लेषण किया है तो उनकी संख्या १०० से भी अधिक हो गई है । यह भौतिक जगत की तत्त्व चर्चा हुई । आत्मिक क्षेत्र में चेतना ही सर्वस्व है । इस चेतना के जिन-जिन माध्यमों से अपने अस्तित्त्व का परिचय देने की संभावनाएँ ग्रहण करने तथा अभीष्ट प्रयोजन सम्पन्न करने में आवश्यकता पड़ती है, उन्हें तत्त्व कहा गया है । ऐसे चेतन तत्त्व २४ हैं । इसी गणना में भौतिक पंचतत्त्वों की भी गणना की जाती है ।

सांख्य दर्शन में जिन २४ तत्त्वों का उल्लेख है, वे पदार्थ परक नहीं, वरन् चेतना को प्रभावित करने वाली तथा चेतना से प्रभावित होने वाली सृष्टि धाराएँ हैं । ऐसी धाराओं की गणना २४ की संख्या में की गई है । इन्हें प्रकारान्तर से गायत्री महाशक्ति की सृष्टि संचालन एवं जीवन-प्रवाह में महत्त्वपूर्ण भूमिका सम्पन्न करने वाली दिव्य-धाराएँ, देव सम्पदाएँ, सृष्टि प्रेरणाएँ कहा जा सकता है । प्रवाह परिकर को गायत्री महाशक्ति की सशक्त स्फुरणाएँ समझा जा सकता है । गायत्री तत्त्वदर्शन की विवेचना इसी रूप में होती रही है ।

गायत्री महाशक्ति के २४ अक्षरों के साथ जुड़े हुए २४ तत्त्व इस प्रकार हैं-

पृथिव्यापस्तथा तेजो वायुराकाश एव च ।
गन्धो रसश्च रूपम च शब्दः स्पर्शस्तथैव च ।।
उपस्थम् पायुपादम च पाणी वागपि च क्रमात् ।
प्राथम् जिह्वा च चक्षुश्चत्वक्श्रोत्रम च नत पर ।।
प्राणोऽपानस्तथा व्यानः समानश्च ततः परम् ।
तत्त्वान्योतानि वर्णानं क्रमशः कीर्तितनितु ।।

-गायत्री तन्त्र द्वितीय पटल

(१) पृथ्वी (२) जल (३) अग्नि (४) वायु (५) आकाश (६) गन्ध (७) रस (८) रूप (९) शब्द (१०) स्पर्श (११) उपस्थ (१२) वायु (१३) पाद (१४) पाणि (१५) वाणीं (१६) घ्रण (१७) जिह्वा (१८) चक्षु (१९) त्वचा (२०) श्रोत (२१) प्राण (२२) अपान (२३) व्यान (२४) समान ।

इसके अतिरिक्त २४ तत्त्वों का एक अन्य प्रतिपादन इस प्रकार मिलता है-

(१) पृथ्वी (२) जल (३) तेज (४) वायु (५) आकाश (६) गन्ध (७) रस (८) रूप (९) स्पर्श (१०) शब्द (११) वाक् (१२) पैर (१३) गुदा (१४) जननेन्द्रिय (१५) त्वचा (१६) नेत्र (१७) कान (१८) जीभ (१९) नाक (२०) मन (२१) बुद्धि (२२) अहंकार (२३) चित्त (२४) ज्ञान ।

पद्म पुराण में ऐसा विधान है कि एक-एक अक्षर को पृथक-पृथक देव सत्ताएँ मानकर उनकी आकृति, प्रकृति, शक्ति, वर्ण, तत्त्व आदि समेत ध्यान किया जाय तो २४ देवताओं को २४ प्रकार की शक्तियों का अनुग्रह प्राप्त किया जा सकता है । यह भिन्नताएँ वस्तुतः एक ही अभिन्न तत्त्व के पूरक घटक मात्र हैं । जिस प्रकार गायत्री मन्त्र में उसके २४ अक्षर गुँथे हुए हैं उसी प्रकार यह देव तत्त्व भी परस्पर विरोधी या स्वतन्त्र न होकर एक-एक करके समग्र शक्ति केन्द्र को सर्वाङ्गपूर्ण बनाते हैं ।

पद्म पुराण का कथन इस प्रकार है-

ज्ञात्वार्तु देवतास्तस्य वाङ्मय विदितम् भवेत् ।
जप कालेतु संचिन्त्य तासु सायुज्यतां व्रजेत् ।।

इस श्लोक में यही संकेत है कि उपासना काल में अक्षरों की देव शक्तियों की ध्यान साधना करने में उनके साथ सायुज्यता प्राप्त होती है । साधक उसी स्तर का उन्हीं विशेषताओं से युक्त बनता जाता है ।

बाल्मीकि रामायण में मूल श्लोक २४००० माने जाते हैं । यों पीछे से उसमें क्षेपक रूप में कतिपय श्लोक समय-समय पर जोड़े और निकाले जाते रहने के कारण यह संख्या घटती-बढ़ती भी रही है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

महाभारत का विशुद्ध स्वरूप प्राचीनकाल में भारत संहिता के नाम से प्रख्यात था । उसमें २४००० श्लोक थे । "चतुर्विंशति साहस्त्रीं चक्रे भारतम् संहिताम्" में उसी तथ्य का उल्लेख है । दक्षिण भारत की प्राचीन प्रतियों में महाभारत के पर्वों की संख्या चौबीस हैं । महाभारत ही नहीं अडियार (मद्रास) से प्रकाशित भगवत्गीता में भी चौबीस अध्याय हैं यह २४ की संख्या गायत्री मन्त्र के २४ अक्षरों की प्रेरणा के साथ संगति आती है ।

मद्रास के रामास्वामी शास्त्रुलु एण्ड सन्स, नामक प्रकाशक ने जो रामायण संस्करण प्रकाशित किया है उसमें एक गायत्री रामायण भी है, जिसमें २४ श्लोक हैं । इसमें प्रत्येक श्लोक उसी अक्षर क्रम से आरम्भ हुआ है जिसमें कि गायत्री मन्त्र के अक्षर जुड़े हुए हैं । यह बाल्मीक रामायण के श्लोकों से संग्रहीत किये गये हैं ।

श्रीमद्भागवत् पुराण गायत्री की व्याख्या स्वरूप ही रचा गया कहा जाता है । उसमें भी प्रत्येक एक हजार श्लोक के पीछे गायत्री मन्त्र के एक अक्षर का सम्पुट लगाय गया भी माना जाता है । भगवत् गीता में भी ऐसे श्लोक हैं जिनमें गायत्री मन्त्र के अक्षरों से ही प्रारम्भ हुआ है । इन्हें क्रमबद्ध जोड़ लेने से गायत्री गीता बन जाती है और उनसे गीता सार समझने का पूरा लाभ मिल जाता है । यों गायत्री गीता के स्वतन्त्र श्लोक भी प्रसिद्ध ही हैं ।

गायत्री की व्याख्या स्वरूप भागवत रचे जाने का संकेत देने वाले कुछ उदाहरण मिलते हैं जो इस प्रकार हैं-

यत्राधिकृत्य गायत्रीं वर्ण्यन्ते धर्म विस्तरः ।
वृत्रासुरवधोपेतं तद् भागवतपुच्यते ।।

-मत्स्य पुराण ५३।२०

जिसमें गायत्री के माध्यम से धर्म विस्तारपूर्वक वर्णन है । जिसमें वृत्तासुर वध का वृतान्त है । यह भागवत् ही है ।

"सत्यं परं धीमहि"-तं धीमहि इति गायत्र्या प्रारम्भेण गायत्र्याख्य ब्रह्म विद्या रूप भेत्पुराण निति ।

-श्रीधरी टीका

व्यासजी ने गायत्री प्रतिपाद्य सत्यं परं धीमहि तत्त्व से ही भागवत् पुराण का प्रारम्भ किया । गायत्री के ही दो अक्षरों की व्याख्या में एक-एक स्कन्ध बनाकर १२ स्कन्ध पूरे किये ।

अर्थोऽयं ब्रह्म सूत्राणां भारतार्थ विनिर्णयः ।
गायत्री भाष्य रूपो सौ वेदार्थ परिवृंहणम् ।।

-गरुड़ पुराण

पुराण, ब्रह्म सूत्रों के अर्थ, महाभारत के निर्णय, वेदों के विवेचन यह सभी गायत्री महामन्त्र के भाष्य हैं ।

प्रचोदिता येन पुरा सरस्वती
वितन्वताजस्य सतीं स्मृति हृदि
स्वलक्षणा प्रादुरभूत्किलास्यतः
समे ऋषीणमृषभः प्रसीदतः ।
तेन ब्रह्म हृदाय आदिकवये मुह्यन्तियत्सूरयः ।।

श्रीमद्भागवत् के उपरोक्त श्लोक से यही आभास मिलता है कि उसकी रचना में गायत्री महामन्त्र का आलोक जुड़ा हुआ है ।

देवी भागवत् पुराण का आरम्भ और अन्त गायत्री के ही प्रकाश में हुआ है । प्रारम्भ का श्लोक इस प्रकार है-

ॐ सर्व चैतन्य रूपांतामाद्यां विद्यां च धीमहि ।
बुद्धियोंनः प्रचोदयात् ।

-देवी भागवत्

जो आदि अन्त रहित, सर्व चैतन्य स्वरूप वाली, ब्रह्म स्वरूपिणी आदि शक्ति है । उसका हम ध्यान करते हैं । यह हमारी बुद्धि के सन्मार्ग पर पूर्ण हुआ है ।

महर्षि व्यासोऽपि श्रुतिविवरणेषु प्रतिपदं,
महिम्नां गानेन स्वपरकुशलं साध्वकलयत् ।
कविवाल्मीकिस्ते युग-युगलवर्णान् सुनिपुणः,
समादायानन्यं परिरचितवान् रामचरितम् ।।

महर्षि व्यास ने भी श्रुतियों के विवरण करने में प्रत्येक पद की महिमाओं के गान के द्वारा बहुत ही अच्छा स्व पर कुशल वर्णन किया था । महाकवि वाल्मीकि ने आपके युग-युगल वर्णों को बड़ी ही निपुणता के सहित लेकर अनुपम श्री राम के चरित्र की रचना की थी ।

शारदा तिलक तन्त्र के इक्कीसवें पटल में गायत्री महाशक्ति का उल्लेख है । उसके भाष्य में अन्य आचार्यों द्वारा प्रतिपादित गायत्री मन्त्र के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अक्षरों की अध्यात्म परक व्याख्या का संकलन किया गया है, जो इस प्रकार है-

प्रणवस्य व्याहृतीनां गायत्रीयक्यमधोच्यते ।
तदद्वितीयैक वचनमनेनाऽखिलवस्तुनः ।।
सृष्ट्यादिकारणं तेजोरूपमादित्यमण्डले ।
अभिध्वेयं परानन्दं परम् ब्रह्माऽभिधीयते ।।
यतत्सवितुरित्युक्तम् षष्ठ्येकवचनात्मकम् ।
धातोरिह विनिष्पन्नम् प्राणिप्रसववाचकात् ।।
सर्वासां प्राणिजातीनामिति प्रसवितुः सदा ।
वरेण्यं वरणीयत्वात् सेवनीयतया तथा ।।
भजनीयतया सर्वैः प्रार्थनीयतया स्मृतम् ।
पूर्वस्याऽष्टाक्षरस्यैवं व्याहृतिर्भुरितीरिता ।।
पापस्य भर्जनद्भर्गो भक्तस्निग्धतया तथा ।
देवस्य वृष्टिदानादिगुणयुक्तस्य नित्यशः ।।
प्रभूतेन प्रकाशेन दीप्यमानस्य वै तथा ।
ध्यै चिन्तायामतो धातोर्निष्पन्नधीमहीत्यतः ।।
निगमाद्येन दिव्येन विद्यारूपेण चक्षुषा ।
दृश्यो हिरण्मयो देव आदित्यो नित्यसंस्थितः ।।
हीनतारहितम् तेजो यस्य स्यात् स हिरण्मयः ।
यः सूक्ष्मः सोऽहमित्येवं चिन्तायामः सदैव तु ।।
द्वितीयाष्टाक्षरस्यैवं व्याहृतिर्भुव ईरिता ।
धियो बुद्धीर्मनोरस्य छान्दसत्वाद् य ईरिता ।।
कृतश्च लिङ्गव्यत्यासः सूत्रात् सुप्तिर्डुयग्रहात् ।
यतत्तेजो निरुपमं सर्वदेवमयात्मकं ।।
भजतां पापनाशस्य हेतुभूतमिहोच्यते ।
न इति प्रोक्त आदेशः षष्ठ्या बह्विति चास्पदः ।।
तस्मादस्माकमित्यर्थः प्रार्थनायां प्रचोदयात् ।

इस प्रतिपादन में परब्रह्म परमात्मा सविता की सूर्यमण्डल के रूप में आराधना का उल्लेख है और उसे परम आनन्ददायक, प्राणियों का उत्पादनकर्ता, वरणीय, सेवनीय, भजनीय, प्रार्थनीय बताया है पापों का नाश-स्नेह भक्ति का संचार देवत्व की वृष्टि, सद्गुणों का अनुदान, दिव्य प्रकाश की प्राप्ति-विद्या की उपलब्धि का संकेत है । सर्व देवमयी गायत्री उपासना से लोक और परलोक में मिल सकने वाली समस्त विभूतियों को गायत्री उपासना के माध्यम में प्राप्त होने का उल्लेख है ।

सच्ची गायत्री उपासना का माहात्म्य और प्रतिफल शास्त्रकारों ने जिस प्रकार बताया है, उसे देखते हुए यही प्रतीत होता है कि सर्वताभावेन आत्मिक प्रगति के पथ पर बढ़ने के लिए गायत्री विद्या का महत्त्व असाधारण है कहा गया है-

परब्रह्म स्वरूपा च निर्वाण पददायिनी ।
ब्रह्म तेजोमयी शक्ति स्तधिष्ठातृ देवता ।।

अर्थात्, गायत्री परब्रह्म स्वरूप तथा निर्वाण पद देने वाली है । वह ब्रह्मतेज, शक्ति की अधिष्ठात्री है ।

गायत्री महामन्त्र के परम सामर्थ्यवान २४ अक्षर

गायत्री महामन्त्र में जिन २४ अक्षरों का प्रयोग जिस क्रम से किया गया है, उनमें मन्त्र-शास्त्र की-शब्द विज्ञान की-रहस्यमयी प्रक्रिया प्रयुक्त हुई है । अर्थ की अभिलाषा के लिए इनसे भी सरल और भावपूर्ण शब्दों का प्रयोग हो सकता है । चारों वेदों में लगभग ७० मन्त्र ऐसे हैं जो गायत्री मन्त्र में दी गई शिक्षा और प्रेरणा को प्रस्तुत करते हैं । पर उनका महत्त्व गायत्री जैसा नहीं माना जाता । इस महामन्त्र की गरिमा में उसमें प्रयुक्त हुए क्रम का असाधारण महत्त्व है ।

सितार के तारों को अमुक क्रम में बजाने पर उनमें से अमुक राग की झंकृति निकलती है । यदि उँगली फिराने का क्रम बदल दिया जाय तो दूसरी ध्वनि एवं रागिनी निकलने लगेगी । तारों पर हाथ रखने का क्रम दबाव एवं उतार-चढ़ाव का परिवर्तन उस एक ही सितार यन्त्र में से अगणित प्रकार की राग-रागनियाँ प्रस्तुत करता है । ठीक उसी प्रकार शब्दों का उच्चारण जिस क्रम एवं शृंखला से किया जाता है उसके अनुसार सूक्ष्म आकाश में ईथर में-विभिन्न प्रकार की ध्वनि लहरियाँ प्रादुर्भूत होती हैं । इनका स्पर्श मानव मस्तिष्क में अलग-अलग प्रकार से प्रभाव उत्पन्न करता है ।

शब्दों का सामान्य प्रभाव उनके अर्थों के आधार पर मस्तिष्क ग्रहण करता है । पर सूक्ष्म मस्तिष्क पर शब्दों के अर्थ का नहीं उनके द्वारा उत्पन्न हुई स्पन्दन स्फुरणाओं का प्रभाव पड़ता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

एक शब्द शृंखला को-वाक्य को-यदि उलट-पुलट कर बोला जाय तो अर्थ में अन्तर न आयेगा । केवल व्याकरण सम्बन्धी अशुद्धि मानी जायगी । किन्तु इस सामान्य-सी उलट-पुलट से सूक्ष्म आकाश में स्पन्दन क्रम बहुत बदल जायगा और उसके रहस्यमय प्रभाव से भारी अन्तर रहेगा । इस लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए वेदों के निर्माता ने इस बात का पूरा-पूरा ध्यान रखा है कि हर मन्त्र में उसके अक्षर इस क्रम में संजोये जायें जिससे वह शक्ति प्रखर स्तर पर प्रादुर्भूत हो सके जिसके लिए उसकी रचना की गई है । मन्त्र विज्ञान का सारा ढाँचा इसी तथ्य पर खड़ा हुआ है ।

अर्थ न जानने पर भी मन्त्र अपना प्रभाव प्रस्तुत करते हैं । अधिकांश मन्त्रों का अर्थ उनके प्रयोक्ता जानते भी नहीं, और न उसकी आवश्यकता समझते हैं । अर्थ न जानने पर भी वह उतना ही प्रभाव प्रस्तुत करते हैं, जितना अर्थ जानने पर । अर्थ का प्रभाव विचारणा, शिक्षा एवं भावना की दृष्टि से अवश्य है । पर जहाँ प्रकृति के सूक्ष्म अन्तराल में स्पन्दन प्रकृया का वैज्ञानिक सम्बन्ध है वहीं शब्द का ठीक ढंग से उच्चारण करना भी अभीष्ट प्रयोजन को पूरा कर देता है । यहाँ यह नहीं कहा जा रहा है कि गायत्री का या दूसरे मन्त्रों का अर्थ नहीं जाना जाय । जानने से शिक्षणात्मक एवं बौद्धिक लाभ भी हैं पर यदि अर्थ विदित न हो तो भी शब्द शक्ति अपना वैज्ञानिक प्रयोजन अपने ढंग में करती ही रहेगी, यहाँ इतना भर कहा जा रहा है । यही तथ्य है कि जिसके आधार पर यज्ञ, अनुदान एवं कर्मकाण्डों के अवसर प्रयुक्त हुए मन्त्रों का अर्थ न जानने पर भी उस आयोजन में सम्मिलित नर-नारी लाभान्वित होते हैं । वेद परायण यज्ञों में कितने लोग सब मन्त्रों का अर्थ समझते है ? न समझने पर भी आयोजनों में सम्मिलित व्यक्ति भरपूर लाभ उठाते हैं ।

गायत्री महामन्त्र में प्रयुक्त हुए २४ अक्षर जब उच्चारित किये जाते हैं तो सर्वप्रथम मुख के विभिन्न अवयव, दन्त, ओष्ठ, जिह्वा, कंठ, तालु आदि का परिचालन होता है । इन शब्द मूल स्थलों की गति विधियाँ शरीर में विभिन्न स्थानों पर. अवस्थित शक्ति-केन्द्रों पर प्रभाव डालती हैं और उन्हें प्रसुप्त स्थिति से जागृति में परिणत कर देती है । यहाँ हमें यह जानना होगा कि इस देह-देवालय के विभिन्न भागों पर ऐसे शक्ति-संस्थान बने हुए हैं जिन्हें ऋद्धि-सिद्धियों का रत्न-भण्डार कहा जा सकता है । वे सामान्य व्यक्तियों के शरीरों में मूर्छित पड़े रहते हैं । इसलिए उनका जीवन पशु-पक्षियों एवं कीट-पतङ्गों जैसा आहार, निद्रा, भय, मैथुन की जीव-प्रवृत्तियों तक सीमित रह जाता है, किन्तु यदि कहीं उन मूर्छित शक्ति-स्रोतों को किसी प्रकार जगाया जा सके तो सामान्य से दीखने वाला, शरीर को धारण करने वाला देखते-देखते महापुरुष, सिद्धपुरुष एवं देव-भूमिका में विचरण करने वाला बन सकता है । गायत्री-मन्त्र में प्रयुक्त अक्षरों का उच्चारण इन शक्ति-कोषों को प्रभावित करता है और उनकी प्रसुप्त क्षमता को जाग्रत करे आत्मबल की सम्पन्नता से लाभान्वित बनाता है ।

षट-चक्रों का नाम अध्यात्म-विद्या के प्रेमियों ने सुना होगा । मेरुदण्ड के आदि से लेकर अन्तिम सिरे तक पहुँचते-पहुँचते छः स्थानों पर छः शक्ति संस्थान पाये जाते हैं । इनमें ऐसी विद्युत धाराओं का तारतम्य है जो निखिल आकाश में व्याप्त प्रचण्ड शक्तियों के साथ अपना सम्बन्ध बनाये रख रही है । यह षटचक्र-शक्ति-संस्थान जब जाग्रत होते हैं तो उनकी सक्रियता बढ़ जाती है और वह बढ़ी हुई सक्रियता प्रकृति-प्रवाह में से अपने काम की धाराओं को पकड़कर अभीष्ट प्रयोजन के लिए अपने समीप खींच लेती है । जिस प्रकार अजगर अपने नेत्रों की विद्युत धारा से छोटे-मोटे जीवों को अपनी ओर खींचता है और वे बेचारे अनायास ही घिसटते हुए उसके मुख में आते चले जाते हैं, उसी प्रकार षटचक्रों के जाग्रत शक्ति-संस्थान निखिल ब्रह्मांड में संव्याप्त एक से एक बढ़ी-चढ़ी विभूतियों का अपनी ओर आकर्षित करके उनके अधिपति बन जाते हैं । सिद्ध पुरुषों में ऐसी कितनी ही अद्‌भुत विशेषतायें-विभूतियाँ पाई जाती हैं, जिनसे वे सामान्य व्यक्तियों के स्तर की तुलना में कहीं अधिक सामर्थ्यवान एवं सुविकसित सिद्ध होते हैं । अष्ट सिद्धि, नव निद्धि का वर्णन योग-शास्त्रों में

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मिलता है । साधना मार्ग पर चलने वाले कितने ही व्यक्तियों में कुछ अलौकिक विशेषताएँ देखी जाती हैं, उनका वैज्ञानिक आधार यही है कि ' साधना द्वारा उस साधक ने अपने शरीर में सन्निहित शक्ति-संस्थानों को जगाया और उनसे ब्रह्मांडव्यापी विभूतियों के साथ आदान-प्रदान का सम्बन्ध जोड़ लिया ।'

षटचक्र प्रख्यात हैं । उनके अतिरिक्त २४ विशिष्ट और ८४ सामान्य शक्ति-केन्द्र भी इस शरीर में विद्यमान हैं । इन्हें 'उपात्यिकायें' और 'विभेदिकायें' कहते हैं । २४ उपात्यिकायें छोटे-छोटे षटचक्रों जैसे-शक्ति-संस्थान ही हैं । यह शरीर के विभिन्न स्थानों पर विद्यमान हैं । गायत्री महामन्त्र में २४ अक्षर जब स्पन्दित होते हैं तब मुख में उत्पन्न हुई गतिविधियों का सूक्ष्म प्रभाव उन उपात्यिकाओं पर पड़ता है और वे स्वसंचालित हलचल बनाकर उन्हें प्रस्तुत स्थिति में जाग्रत स्थिति में परिणत करने कर कार्य आरम्भ कर देती हैं । अधिक जप करने की निरन्तर चल रही प्रक्रिया कुँए के पत्थर पर घिसने वाली रस्सी की तरह प्रभाव डालती रहती है और वे संस्थान जैसे-जैसे अपनी मूर्छना दूर करके चेतन-भूमिका में आते जाते हैं, वैसे-वैसे इस उपासना में संलग्न व्यक्ति अपने आपको अलौकिक शक्तियों से सुसम्पन्न अनुभव करता हुआ आत्म-विकास की ओर बढ़ता चला जाता है ।

शरीर के किसी स्थान पर कौन उपत्यिका उपस्थित है और गायत्री मन्त्र का कौन सा अक्षर उसे प्रभावित करने का प्रयोजन पूर्ण करता है, इसका दिग्दर्शन अगले पृष्ठ पर छपे चित्र में दिया गया है । जिस प्रकार टाइपराइटर की कुंजियों पर उँगली दबाने से उसकी जुड़ी हुई तीली उठती है और कागज पर टकाराकर अपना अक्षर छाप देती है, इसी प्रकार मुख से स्पन्दित हुए गायत्री मन्त्र के २४ अक्षर एक-एक उपात्यिकाओं पर प्रभाव डालते हैं और वे एक वैज्ञानिक व्यवस्था के आधार पर सक्षम होने लग जाती है ।

आधुनिक चिकित्साशास्त्रियों ने नवीनतम शोधों के आधार पर मानव-शरीर में अवस्थित कुछ विलक्षण ग्रन्थियों की खोज की है । ये छोटी-छोटी गाँठें शरीर के विभिन्न स्थानों पर पड़ी हुई निरर्थक जैसी दीखती हैं । उनमें से पसीने जैसा एक रस स्रवित होता रहता है, उसे 'हारमोन' कहते हैं । यह हारमाने जब रक्त में मिलते हैं तो विभिन्न व्यक्तियों में विभिन्न प्रकार की विलक्षणतायें पैदा करते हैं । सामान्यतया सभी शरीर हाड़-माँस की दृष्टि से लगभग एक ही तरह के हैं । जीवन यापन या आहार-विहार के तौर-तरीकों में थोड़ा-बहुत ही अन्तर होता है । फिर एक दूसरे में जो जमीन-आसमान जैसा अन्तर पाया जाता है उनका कारण क्या है ? इस प्रश्न का उत्तर शरीर-शास्त्री उन 'हारमोनों' की विचित्रता और विलक्षणता बताते हैं । उनका कहना है कि अवयव एवं आहार-विहार का क्रम भले ही एक सा हो-मनुष्यों में यह सूक्ष्म ग्रन्थिय असामान्य स्तर की होती हैं और उनसे स्रवित होने वाले 'हारमोन' न्यूनाधिक होने के कारण मनुष्यों में विलक्षणता पैदा कर देते हैं । शारीरिक, बौद्धिक, भावनात्मक एवं आत्मिक विशेषताओं का उत्तरदायित्व वे इन 'हारमोन' ग्रन्थियों पर आरोपित करते हैं और साथ ही यह भी कहते हैं कि इन शक्ति-संस्थानों पर औषधि या शल्य-क्रिया कोई काम नहीं करती है । इनकी गतिविधियों को घटाना-बढ़ाना यदि किसी माध्यम से सम्भव हो सकता है तो उसमें मानवीय विद्युत-विज्ञान के विज्ञानी ही सफल हो सकते हैं, शरीर-शास्त्री नहीं ।

मानवीय विद्युत-विज्ञान ही वस्तुतः योग-साधना का प्रमुख प्रयोजन है । हाड़-माँस नहीं-मानवीय व्यक्तित्व एवं वर्चस्व का आधार उसमें प्रवाहित विद्युत धारायें ही होती हैं । मेरुदण्ड में प्रवाहित होने वाली इड़ा और पिंगला का परिचय साधारण से साधारण साधकों को भी होता है । यह दोनों निगेटिव और पोजेटिव-ऋण और धन विद्युत धारायें हैं । इनके मिलने से चेतना-सुषुम्ना-पैदा होती इन तीनों को समुचित साधन करके शरीर के दो ध्रुवों को-मूलाधार और सहस्र कमल को सचेतन बनाया जा सकता है । सुषुप्तावस्था में पड़ी हुई जीवन-शक्ति-कुण्डलिनी को जगाने के बाद कोई साधक सूक्ष्म-प्रकृति के साथ अपना इतना अधिक सम्पर्क बना सकता है कि उसे इच्छानुसार दिशा में मनचाहे ढंग से मोड़ सके ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जिस प्रकार चेतन परमात्मा की इच्छा से प्रभावित होकर विश्व की विधि-व्यवस्था-सूक्ष्म-प्रकृति-मोड़ तोड़ लेती रहती है, उसी प्रकार आत्म-बल से सुसम्पन्न आत्मा भी चेतन सत्ता का प्रभाव प्रकृति के अन्तराल में फैला सकती है और सूक्ष्म वातावरण को मनमानी दिशा में मोड़ सकती है । इसी सामर्थ्य का नाम सिद्धावस्था है । सिद्ध पुरुषों में जो अगणित अलौकिकतायें पाई जाती हैं-उनके द्वारा असम्भव कार्य सम्भव करके दिखाये जाते हैं, इसका कारण यही है कि उसने अपनी अन्तःचेतना को इतना बलवान बना लिया होता है कि प्रकृति की धाराओं को वे मनचाही दिशा में मोड़ सकें । सामान्य मनुष्य प्रकृति की व्यवस्था अनुबन्धित रहते हैं । उन्हें उधर ही चलना पड़ता है जिधर प्रकृति की विधि-व्यवस्था चलाती है, किन्तु सिद्ध पुरुष प्रकृति की धारा को अपनी भावना के अनुरूप मुड़ने को विवश कर सकते हैं । वे समय, युग, परिस्थिति, विधान और व्यवस्था को बदल सकते हैं-ऐसे प्रमाण योग-विज्ञान के पन्ने-पन्ने पर अंकित हैं । आज भी वैसे उदाहरण शोधकर्ताओं को मिल सकते हैं ।

यह आत्मिक समर्थता-अलौकिकता-किसी को उपहार में नहीं मिलती, वरन् प्रबल पुरुषार्थ द्वारा अपने भीतर उत्पन्न करनी पड़ती है । इसी उपार्जन-उत्पादन का नाम साधना अथवा तत्पश्चर्या है । यह अन्धविश्वास नहीं वरन् एक विशुद्ध विज्ञान है, जिसकी सहायता प्रयोग-परीक्षण की कसौटी पर कसी जा सकती है । गायत्री-उपासना इस मार्ग पर चलने की एक पूर्ण सुव्यवस्थित एवं पग-पग पर परीक्षित क्रिया-पद्धति है । उसका वास्तविक शुभारम्भ २४ अक्षरों को बार-बार दोहराने से-जप करने से-ही होता है । क्रमबद्ध रूप से बार-बार किसी शब्द गुच्छक-मन्त्र की उच्चारण पुनरावृत्ति करते रहने से एक विशिष्ट प्रकार का वर्तुल बन जाता है और उस आधार पर एक स्वसंचालित शक्ति-प्रवाह प्रादुर्भूत होने लगता है । यह वर्तुल-प्रवाह बाह्य जगत में अभीष्ट स्तर की हलचल पैदा करता है और शरीर के भीतर को प्रसुप्त उपात्यिकाओं को एक ऐसी क्रमबद्ध प्रक्रिया के साथ शनैः शनैः सजग करने लगता है, जिसमें कोई अवांछनीय हड़बड़ी उत्पन्न न हो । तांत्रिक उपासनायें तीव्र और तीक्ष्ण होती हैं । उनसे शक्ति-केन्द्रों के जागरण में शीघ्रता तो होती है पर साथ ही यह खतरा बना रहता है कि द्रुतगामी हलचल आत्मिक क्षेत्र में हड़बड़ी पैदा कर दे और साधक को किसी अप्रत्याशित जोखिम का सामना करना पड़े । दक्षिण-मार्गी में सफलता कुछ देर से तो मिलती है पर किसी प्रकार का खतरा प्रस्तुत होने की आशंका नहीं रहती । जप ऐसा ही प्रारम्भिक प्रयोग है । उसका सहारा लेकर आत्म-शक्ति के अक्षय भण्डार से पूर्ण उपात्यिकाओं को शान्ति एवं सुव्यवस्था के साथ जगाया जा सकता है । जप के द्वारा जो शक्ति की वर्तुल प्रवाह-धारा प्रादुर्भूत होती है वह अपना काम करती रहती है और समयानुसार उसका आशाजनक प्रतिफल उत्पन्न होता है ।

आकाश में आजकल जो राकेट-उपग्रह-फेंके जा रहे हैं, पृथ्वी की आकर्षण शक्ति के दायरे से बाहर निकलने पर सीधे आगे की दिशा में-ऊपर की ओर नहीं-चले जाते वरन् प्रकृति-व्यवस्था के अनुरूप परिक्रमा करने जैसी कक्षा में घूमने लगते हैं । पृथ्वी की एक नियत मार्ग से परिक्रमा करके उस स्थान पर वापिस आ जाते हैं जहाँ से चले थे । फिर इसी अपनाये हुए मार्ग पर चलते और गोलाई में घूमकर वापिस आते रहते हैं । जब तक कोई विशेष कारण न हो, तब तक उनकी यही क्रिया-पद्धति चलती रहती है, जब तक इनका अस्तित्व रहता है । यही क्रिया-पद्धति समस्त ग्रह-उपग्रहों की है, वे अपनी एक नियत निर्धारित कक्षा में घूमते हुए एक गति-वर्तुल बनाते रहते हैं । शब्द का क्रम भी यही है । वह मुख से निकलकर निखिल आकाश में भ्रमण करने निकल जाता है और एक विस्तृत कक्षा में भ्रमण करता हुआ अपने उद्गम स्थल पर लौट आता है । फिर आगे बढ़ना, उसी कक्षा में घूमना और फिर उद्गम स्थान पर वापिस आना उस शब्द-राकेट का क्रम तब तक चलता रहता है, जब तक उस उच्चारण करने वाले का अस्तित्व मौजूद है । गायत्री जप में उच्चारित किए गये शब्द निखिल आकाश में वर्तुल प्रवाह उत्पन्न

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

करके अपनी कक्षा में भ्रमण करते हैं और जिस कामना के साथ वे उद्‌भूत हुए थे, उनके अनुरूप प्रकृति के अन्तराल में अभीष्ट वातावरण बनाते हैं । फलतः वांछायें पूर्ण होने की सम्भावनाओं का सृजन होने लगता है । उपासना से कामना-पूर्ति का प्रयोजन इसी प्रकार पूर्ण होता है ।

गायत्री-जप द्वारा उत्पन्न हुआ शक्तिशाली वर्तुल-प्रवाह केवल निखिल ब्रह्मांड में ही परिभ्रमण नहीं करता, वरन् पिण्ड में-शरीर के भीतर भी ऐसी ही हलचल उत्पन्न होती है । महामन्त्र के २४ अक्षर शरीर के भीतर भी एक परिभ्रमण कक्ष बनाते हैं और २४ उपात्यिकाओं को बार-बार स्पर्श करके उनमें हल्का-हल्का गुदगुदी जैसा स्पन्दन उत्पन्न करते हैं । आन्तरिक जागृति का यह सुकोमल क्रिया-कलाप स्वसंचालित रीति-नीति से गतिशील रहता है और कालान्तर में साधक को असाधारण आत्म-शक्ति से सम्पन्न कर देता है । दूसरे साधारण ढंग के व्यक्ति जब अपनी आंतरिक प्रस्तुत अवस्था के साथ उस सजग, आत्म-बल वाले साधक की तुलना करते हैं तब यही कहते हैं-उसमें असाधारण अलौकिकता आ गई । यह व्यक्ति वह कार्य कर सकता है जो हम नहीं कर सकते । यह अन्तर अनायास ही उत्पन्न नहीं हो जाता, इसके लिए व्यवस्थित रीति से गायत्री महामन्त्र की साधना करनी होती है । कहना न होगा कि-साधना का प्रथम साधन, जप ही है । किसी भी मन्त्र की शक्ति का लाभ लेना हो तो उसका जाप करना अनिवार्य है । बार-बार दुहराये हुए शब्द अन्तर-प्रदेश में एक गुंजन प्रतिध्वनि का रूप धारण् करके हर छोटे-बड़े शक्ति-संस्थान में व्याप्त हो जाते हैं । फलतः उस शरीर एवं अन्तःकरण की प्रकृति प्रयुक्त मन्त्र की सामर्थ्य के अनुरूप ढल जाती है । दीर्घकालीन सतत साधना वाला साधक एक प्रकार से मन्त्र-मूर्ति ही हो जाता है उसके व्यक्तित्व में से मन्त्र की सामर्थ्य झलकने लगती है । यही सिद्धि है । विनियोग में विश्वामित्र गायत्री के ऋषि कहे, जाते हैं । उन्होंने गायत्री को आत्मसात किया था, वे गायत्री-स्वरूप बन गये थे । उनने इस महातत्त्व का साक्षात्कार किया था, अपने व्यक्तित्त्व को इस योग्य बनाया था कि इस महामन्त्र का अवतरण उसमें हो सके ।

गायत्री के २४ अक्षरों में सन्निहित शिक्षा सर्वविदित है, वरेण्य, भर्ग, देव गुण वाले सविता को आत्मा में धारण करने और सन्मार्ग पर प्रज्ञा का नियोजित करने का संदेश एवं स्पन्दन इन शब्दों में प्रतिध्वनित होता है । इस मन्त्र नीति को अपनाने की शिक्षा इस महामन्त्र में दी गई है । पर यह नहीं समझ लेना चाहिये कि इतना उपदेश देना मात्र ही उसका प्रयोजन है । यह २४ अक्षर जिस क्रम से गुँथे हुए हैं उनकी वास्तविक विशेषता उनके द्वारा उत्पन्न होने वाले वैज्ञानिक प्रयोजनों में है । यदि ऐसा न होता तो एक बार उसका पाठ समझ लेना पर्याप्त होता । बार-बार उसका जप उच्चारण करने की कोई आवश्यकता न पड़ती । महामन्त्र में सन्निहित अलौकिक एवं विलक्षण शक्तियों के बारे में शास्त्रकारों ने तत्त्वदर्शी महर्षियों ने-बार-बार संकेत किया है और बताया कि इन अक्षरों का, इन शब्दों का लिखने-बोलने में साधारण जो स्वरूप परिलक्षित होता है, उतना ही न समझा जाय । इन अक्षरों में रहस्यमय भी बहुत कुछ है । उस रहस्य में अलौकिकता भी प्रचुर परिमाण में छिपी पड़ी है ।

गायत्री मन्त्र यों याद तो कई व्यक्तियों को होता हैं, उसका अर्थ भी जानते हैं, पर उसके तत्त्व एवं रहस्य को कोई विरले ही जानते हैं । भगवान वेदव्यास ने महाभारत में यही प्रतिपादन किया है कि-गायत्री का तत्त्व एवं रहस्य जानना चाहिए । जानकर उसे अपनाना चाहिए । जो इस प्रकार प्रयत्न करेंगे वे सर्वांगीण प्रगति की दिशा में ही निरन्तर अग्रसर होंगे । अवनति का कोई ऐसा प्रसंग उनके सामने न आवेगा ।

य एतां वेद गायत्रीं पुण्यां सर्व गुणान्विताम् ।
तत्वेन भारत श्रेष्ठ ! स लोके न प्रणश्यति ।।

-महाभारत

"जो इस पवित्र सर्वगुण सम्पन्न गायत्री तत्त्व को जानता है उसकी इस लोक में अवनति नहीं होती ।"

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गायत्री महामन्त्र के अक्षरों को जानते समझते हुए भी हम वस्तुतः उससे अनजान ही हैं । यदि हम उसे तत्त्वतः जानने, समझने और अपनाने में सफल हुए होते तो उस स्थिति में न होते जिसमें आज हैं, तब हमारी स्थिति कुछ और ही होती । हम ब्रह्मचेतन, पुण्यात्मा, कीर्तिमान, दिव्य विभूतियों से सुसम्पन्न, निर्मल अन्तःकरण और परम श्रेय के अधिकारी बने हुए सुख-शान्तिपूर्ण स्वर्गीय जीवन जी रहे होते । गायत्री उपनिषद् का प्रतिपादन है कि-

यो हवा एवं चित्त स ब्रह्म वित्पुण्यांच कीर्तिं लभते सुरभीश्च गन्धान् सोऽपहत पाप्मानन्तां श्रिय मश्नुतेय एवं वेद, यश्चैवं विद्वाने वभेत वेदानां मातरं सावित्रीं सम्पद उपनिषदमुपास्ति इति ब्राह्मणम् ।

-गायत्री उपनिषद्

जो वेदमाता गायत्री को ठीक तरह जान लेता है, वह ब्रह्मवित पुण्य कीर्ति एवं दिव्य विभूतियों को प्राप्त करता है और निर्मल अन्तःकरण होकर परम श्रेय का अधिकारी बनता है ।

गोपथ ब्राह्मण में गायत्री के २४ अक्षरों को २४ स्तम्भों का दिव्य तेज बताया गया है । समुद्र में जहाजों का मार्ग दर्शन करने के लिए जहाँ तहाँ प्रकाश स्तम्भ खड़े रहते हैं । उनमें जलने वाले प्रकाश को देखकर नाविक अपने जलपोत को सही रास्ते से ले जाते हैं और चट्टानों से टकराने एवं कीचड़ आदि में धँसने से बच जाते हैं । इसी प्रकार गायत्री के २४ अक्षर २४ प्रकाश स्तम्भ बनकर प्रजा की जीवन नौका को प्रगति एवं समृद्धि के मार्ग पर ठीक तरह चलते रहने की प्रेरणा करते हैं । आपत्तियों से बचाते हैं और अनिश्चितता को दूर करते हैं ।

गोपथ के अनुसार गायत्री चारों वेदों की प्राण, सार, रहस्य एवं तन है । साम संगीत का यह रथन्तर आत्मा के उल्लास को उद्वेलित करता है । जो इस तेज को अपने में धारण करता है, उसकी वंश परम्परा तेजस्वी बनती चली जाती है । उसकी पारिवारिक संतति और अनुयायियों की शृंखला में एक से एक बढ़कर तेजस्वी, प्रतिभाशाली उत्पन्न होते चले जाते हैं । श्रुति कहती है-

"तेजो वै गायत्री छन्दसां तेजो रथन्तरमं साम्नाम् तेजोश्चतुर्विंशस्तो माना तेज एव तत्सम्यक् दधाति पुत्रस्य पुत्रस्तेजस्वी भवति ।"

-गोपथ

"गायत्री सब वेदों का तेज है । सामवेद का यह रथन्तर छन्द ही चौबीस स्तम्भों का यह दिव्य तेज है । इस तेज को धारण करने वाले की वंश परम्परा तेजस्वी होती है ।"

गायत्री को पराविद्या कहा गया है । साधारण विद्या के लाभों का परिचय सर्व साधारण को है । किन्तु परा विद्या का महत्त्व कोई विरले ही जानते हैं । जो जानते हैं वे धन्य हो जाते हैं । परमतत्त्व में परमात्मा से दिव्य विभूतियों से-जीव का सीधा सम्बन्ध बनाने वाली पराविद्या मनुष्य की सबसे बड़ी श्रेय साधना है । गायत्री के २४ अक्षरों में बीज रूप से गायत्री विद्या का सारा रहस्य और तत्त्व ज्ञान ओत-प्रोत हो रहा है । शास्त्रकारों ने इस रहस्य को जाना और प्रकट किया है-

गायत्री त्रिपदा देवी त्र्यक्षरी भुवनेश्वरी ।
चतुर्विंशाक्षरा विद्या सा चैवाभीष्ट देवता ।।

रुद्रयामल

"तीन पद वाली तथा तीन अक्षर (अ-उ-म्) वाली, समस्त भुवनों की अधिष्ठात्री चौबीस अक्षर वाली पराविद्या रूप गायत्री देवी-सबको इच्छित फल देने वाली है ।"

रुद्रयामल तन्त्र की भाँति ही गायत्री तन्त्र में भी इसी तथ्य का वर्णन है । गायत्री वस्तुतः पराविद्या की ही प्रतीक है । उसका प्रत्येक अक्षर इस महाविज्ञान का एक सारगर्भित अध्याय ही कहा जाना चाहिये ।

चतुर्विंशाक्षरी विद्या पर तत्व विनिर्मिता ।
तत्करात् यात्कार पर्यन्त शब्द ब्रह्म स्वरूपिणी ।।

-गायत्री तन्त्र

"तत् से लेकर 'प्रचोदयात्' शब्द के २४ अक्षरों वाली गायत्री पर तत्त्व अर्थात् पराविद्या से ओत-प्रोत हो ।"

गायत्री के २४ अक्षर आठ-आठ शब्दों के तीन पादों में विभाजित हैं । इन तीन पादों का अपना महत्त्व है । तीनों पाद तीनों लोकों की समस्त

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विभूतियाँ अपने अन्दर धारण किये हुए हैं । जो उन्हें ठीक तरह जान समझ लेता है, उन्हें प्रयोग में लाने की प्रक्रिया समझ लेता है, वह त्रयलोक विजयी की तरह आनन्दित होता है ।

''भूमिरन्तरिक्षं द्यौरित्यष्टा व क्षराव्यष्टा क्षरा हवा एवं गायत्र्यै पद मेतदुहैवस्या एतत्सया एतत्सयावेदतेषु लोकेषु ताविद्धि जयति योऽस्याएतद्देवं पदं वेद ।''

-वृहदारण्यको०

अर्थात्-भूमि, अन्तरिक्ष, द्यौ ये तीनों गायत्री के प्रथम पाद के आठ अक्षरों के बराबर हैं । जो गायत्री के इस प्रथम पाद को जान लेता है, सो तीनों लोकों को जीत लेता है ।

वृहदारण्यक उपनिषद में गायत्री के तीन चरणों के द्वारा उपलब्ध हो सकने वाले प्रतिफलों का उल्लेख मिलता है । जिससे जाना जाता है कि महामन्त्र का आश्रय लेने वाला साधक क्या कुछ प्राप्त करने में सफल हो सकता है ।

तत्सवितुर्वरेण्यम् । मधुवाला ऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः । माहवीर्नः सन्त्वेवोषधीः । भूः स्वाहा, भर्गो देवस्य धीमहि । मधुनक्त युतोषसो मधुमत्यार्थिक रजः । मधु द्यौ रस्तु नः पिता । भुवः स्वाहा । धियो योनः प्रचोदयात् । मधु मान्नो वनस्पति मधु या ४ अस्तु सूर्यः माध्वीर्गावो भवन्तु नः । स्वः स्वाहा । सर्वाश्च मधुवती रहयेवेद ४ सर्व भुयांसं भूर्भुवः स्वः स्वाहाः ।

-वृहदारण्यक

-(तत्सवितुर्वरेण्यं) मधुर वायु चले, नदी और समुद्र रसमय होकर रहें । औषधियाँ हमारे लिए सुख-कारक हों

-(भर्गो देवस्य धीमहि) रात्रि और दिन हमारे लिए सुखकारी हों । पृथ्वी की रज हमारे लिए मंगलमय है । द्युलोक हमें सुख प्रदान करें ।

-(धियो योनः प्रचोदयात्) वनस्थलियाँ हमारे लिए रसमयी हों । सूर्य हमारे लिए सुखप्रद हो, उसकी रश्मियाँ हमारे लिए कल्याणकारी हों । सब हमारे लिए सुखप्रद हों । मैं सबके लिए मधुर बन जाऊँ ।

यों उपरोक्त मन्त्र में प्रार्थना जैसी शब्दावली का प्रयोग हुआ है पर उसमें जिस सम्भावना का संकेत है उसे सहज समझा जा सकता है । प्रथम पाद में वायु, नदी, समुद्र, रस और औषधियों के, दूसरे पाद में दिन, रात्रि, पृथ्वी, समृद्धि एवं द्युलोक के और तीसरे पाद में धन-धान्य एवं ऋतुओं के अनुकूल होकर सुख-वैभव प्रदान करने की चर्चा है और साधक को इतना मधुर-सुसंस्कृत बन सकने का संदेश है जिससे उसके लिए सब कोई अनुकूल एवं मधुर बन सकें ।

गायत्री साधना से इस प्रकार की उपलब्धियों की कामना मात्र भावुकता की प्रतिक्रिया नहीं है । महाभारत के भीष्म पर्व में २४ अक्षर वाली गायत्री के अक्षरों का रहस्य, मर्म, प्रकाश, प्रभाव एवं परिणाम जानने वालों को महान कल्याणकारी कहा गया है और पतन एवं विनाश का कष्ट न सहने का आश्वासन दिया गया है ।

'गायत्री संहिता' में गायत्री के २४ अक्षरों की शाब्दिक संरचना को रहस्ययुक्त बताया गया है और उन्हें ढूँढ निकालने के लिए विज्ञजनों को प्रोत्साहित किया गया है । शब्दार्थ की दृष्टि से गायत्री की भाव-प्रक्रिया में कोई रहस्य नहीं है । सद्बुद्धि की प्रार्थना उसका प्रकट भावार्थ एवं प्रयोजन है । यह सीधी-सादी सी बात है, जो अन्यान्य वेदमन्त्रों तथा आप्त वचनों में अनेकानेक स्थानों पर व्यक्त हुई है । अक्षरों का रहस्य इतना ही है कि साधक को सत्प्रवृत्तियाँ अपनाने के लिए प्रेरित करते हैं । इस प्रेरणा को जो जितना ग्रहण कर लेता है वह उसी अनुपात से सिद्ध पुरुष बन जाता है । कहा गया है-

चतुर्विंशतिवर्णैर्या गायत्री गुम्फिता श्रुतो ।
रहस्यमुक्तं तत्रापि दिव्यै रहस्यवादिभिः ।।

-गायत्री संहिता

वेदों में जो गायत्री चौबीस अक्षरों में गूँथी हुई है, विद्वान लोग इन चौबीस अक्षरों के गूँथने में बड़े-बड़े रहस्यों को छिपा बतलाते हैं ।

गायत्री की सिद्धियाँ भीतर से आती और बाहर प्रकट होती हैं । इस तथ्य को जितनी जल्दी, अच्छी तरह समझा जा सके उतना ही उत्तम है । यह भ्रम मिटाना ही चाहिए कि पूजा के बदले किसी पर आकाश से वैभव टपकता है । वस्तुतः सत्प्रवृत्तियाँ ही लोक व्यवहार में सिद्धियाँ बनकर प्रकट होती हैं-

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रादुर्यवन्ति वे सूक्ष्माश्चतुर्विंशति शक्तयः ।
अक्षरेभ्यस्तु गायत्र्या मानवानां ह मानसे ।।

-गायत्री संहिता

मनुष्य के अन्तःकरण में गायत्री के चौबीस अक्षरों से चौबीस सूक्ष्म शक्तियाँ प्रकट होती हैं ।

गायत्री के चौबीस अक्षर और मस्तिष्क की चौबीस शक्तियाँ

गायत्री महामन्त्र में सम्पूर्ण जड़-चेतनात्मक जगत का ज्ञान बीजरूप से पाया जाता है । मस्तिष्क के मूल में से जो मुख्य २४ ज्ञान तन्तु निकल कर मनुष्य के देह तथा मन का संचालन करते हैं उनका गायत्री के २४ अक्षरों से सूक्ष्म सम्बन्ध है । गायत्री के अक्षरों के विधिवत् उच्चारण से शरीर के भिन्न-भिन्न स्थानों में पाये जाने वाले सूक्ष्म चक्र, मातृका, ग्रन्थियाँ, पीठ, स्थान आदि जागृत होते हैं । जिस प्रकार टाइपराइटर मशीन पर उँगली रखते ही सामने रखे कागज पर वे ही अक्षर छप जाते हैं, उसी प्रकार मुख, कण्ठ और तालु में छुपी हुई अनेक ग्रन्थियों की चाबियाँ रहती हैं । गायत्री अक्षरों का क्रम से संगठन ऐसा विज्ञानानुकूल है कि उन अक्षरों के उच्चारण से शरीर के उन गुप्त स्थानों पर दबाव पड़ता है और वे जागृत होकर मनुष्य की अनेक सुषुप्त शक्तियों को कार्यशील बना देते हैं ।

गायत्री मन्त्र के भीतर अनेक प्रकार के ज्ञान-विज्ञान छुपे हुये हैं । अनेक प्रकार के दिव्य अस्त्र-शस्त्र, बहुमूल्य धातुएँ बनाना, जीवन दात्री औषधियाँ, रसायन तैयार करना, वायुयान जैसे यंत्र बनाना, शाप और वरदान देना, प्राण-विद्या, कुण्डलिनी चक्र, दश महाविद्या, महामातृका, अनेक प्रकार की योग सिद्धियाँ गायत्री-विज्ञान के अन्तर्गत पाई जाती है । उन विधाओं का अभ्यास करके हमारे पूर्वजों ने अनेक प्रकार की सिद्धि-सिद्धियाँ प्राप्त की थीं । आज भी हम गायत्री साधना द्वारा उन सब विधाओं को प्राप्त करके अपने प्राचीन गौरव की पुनर्स्थापना कर सकते हैं ।

"गायत्री सनातन अनादि काल का मन्त्र है । पुराणों में बताया गया है कि "सृष्टिकर्ता ब्रह्माजी को आकाशवाणी द्वारा गायत्री-मन्त्र की प्राप्ति हुई थी । उसी मन्त्र की साधना करके उनको सृष्टि रचने की शक्ति मिली थी । गायत्री के जो चार चरण प्रसिद्ध हैं उन्हीं की व्याख्या स्वरूप ब्रह्माजी को चार वेद मिले हैं और उनके चार मुख हुये थे । इसमें सन्देह नहीं कि जिसने गायत्री के मर्म को भली प्रकार जान लिया है उसने चारों वेदों को जान लिया ।"

गायत्री साधना करने से हमारे सूक्ष्म शरीर और अन्तःकरण पर जो मल विक्षेप के आवरण जमे होते हैं वे दूर होकर आत्मा का शुद्ध स्वरूप प्रकट होता है । आत्मा के शुद्ध स्वरूप द्वारा ही सब प्रकार की समृद्धियाँ और सम्पत्तियाँ प्राप्त हो सकती हैं । दर्पण की तरह आत्मा को शुद्ध बनाने से उसके सब प्रकार के मल दूर हो जाते हैं, और मनुष्य का अन्तःकरण निर्मल, प्रकाशवान बनकर परमेश्वर की समस्त शक्तियों, समस्त गुणों, सर्व सामर्थों, सब सिद्धियों से परिपूर्ण हो जाता है ।

गायत्री के तत्त्वरूप २४ वर्णों में २४ प्रकार की आत्मतत्त्व-रूपता स्थित हैं । चौबीस तत्त्व के बाहर और भीतर रहकर उसे अपने अन्तर में स्थित करने से मनुष्य "अन्तर्यामी" बन जाता है । सब ज्ञानों में से यह अन्तर्यामी-विज्ञान सर्वश्रेष्ठ है, जो गायत्री की साधना द्वारा ही प्राप्त होता है ।

जो आत्मा के भीतर है और आत्मा के बाहर भी विद्यमान है, जो आत्मा के भीतर और बाहर रहकर उसका शासन करता है, वही वास्तविक आत्मा है, वही अमृत है, वही अन्तर्यामी है । सर्वान्तरयामी आत्मा सम्पूर्ण ब्रह्मांड का आयतन अर्थात् प्रतिष्ठा है, ऐसा निश्चय होने के पश्चात् ब्रह्मांड के २४ तत्त्वों का आकलन करना सम्भव हो जाता है । इस प्रकार अन्य सब विज्ञान अन्तर्यामी विज्ञान से न्यून श्रेणी के हैं । इस बात की पुष्टि में 'योगी याज्ञवल्क्य' में कहा गया है कि "जो स्वयं अदृष्ट, अश्रुत, अमूर्त, अविज्ञात है वही अन्तर्यामी है, वही अमृत-स्वरूप है, और इसी कारण वह तुम्हारे मेरे और अन्य सबके आत्माओं का पूज्य है । हे गौतम ! इस विज्ञान के अतिरिक्त जो अन्य विज्ञान हैं वे सब दुःखदायी हैं । अन्तर्यामी का

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विज्ञान ही यथार्थ विज्ञान है । गायत्री जिन चौबीस तत्वात्मक विज्ञानों का बोध कराती है वे इस अन्तर्यामी विज्ञान के सहायक होने से ही श्रेष्ठ हैं ।

अन्तर्यामी ब्रह्म का तत्त्वबोध कर लेना कोई साधारण काम नहीं है, क्योंकि यह विषय बहुत ही सूक्ष्म है । स्थूल शक्तियों का विचार करने वालों के लिये उसका यथार्थ बोध हो सकना असम्भव ही है । योग के आचरण से बुद्धि को सूक्ष्म बनाकर सविचार और निर्विचार समापत्ति द्वारा (चित्त जिस विषय में संलग्न होता है और स्फटिक मणि जैसा प्रतीत होता है उस तदाकारापत्ति को ही 'समापत्ति' कहा जाता है) सूक्ष्म विषयों की प्रतीति की जाती है । सूक्ष्मता की अवधि अलिंग तक होती है, अलिंग ही सर्व प्रधान तत्त्व है । जिसका किसी में लय हो सके ऐसा कोई तत्त्व ही जहाँ नहीं है, अथवा वह किसी के साथ मिल सके ऐसा भी कुछ जहाँ शेष नहीं रहता, वही प्रधान तत्त्व होता है । समापत्ति के विषय को समझाते हुए योग शास्त्रकार ऋषियों ने कहा है कि "स्थूल अर्थों में 'अवितर्क' और 'निर्वितर्क' और सूक्ष्म अर्थ में 'सविचार' और 'निर्विचार' इन चार प्रकार की समाधियों की आवश्यकता होती है, और इस समाधि की सूक्ष्मता आलिंग प्रधान तक होती है । इस समापत्ति से २४ तत्त्व रूपावस्था जानने में आती हैं ।

हिरण्य गर्भ जैसा सूक्ष्मतर अथवा अन्तर्यामी तत्त्व जानना हो तो उस सुख स्वरूप परमात्मा को योगाभ्यास द्वारा प्राप्त करना ही परम पुरुषार्थ है । इसके लिए गायत्री के २४ अक्षरों से प्राप्त अति सूक्ष्म ज्ञान सर्वाधिक श्रेष्ठ है । गायत्री साधना की सफलता के रहस्य गोपथ ब्राह्मण में अच्छी तरह समझाये गये हैं । इसके अन्तर्गत मौदगल्य और मैत्रेय संवाद में गायत्री तत्त्वदर्शन पर ३३-३४-३५-३६ कण्डिकाओं में विस्तृत प्रकाश डाला गया है ।

मैत्रेय पूछते हैं-"**सवितुर्वरेण्यम् भर्गोदेवस्य, कवयः किश्चित आहुः**" अर्थात् हे भगवन् ! यह बताइये कि "**सवितुर्वरेण्यम् भर्गोदेवस्य**" इसका अर्थ सूक्ष्मदर्शी विद्वान क्या करते हैं ।

इसका उत्तर देते हुए मौदगल्य कहते हैं-"**सवित प्रविश्यताः प्रचोदयात् यामित्र एति ।**" अर्थात् सविता की आराधना इसलिए है कि वे बुद्धि क्षेत्र में प्रवेश करके उसे शुद्ध करते और सत्कर्म परायण बनाते हैं ।

वे आगे और भी कहते हैं-"**कवय देवस्य सवितुः वरेण्यं भर्ग अन्न पाहु**" अर्थात् तत्त्वदर्शी सविता का आलोक अन्न में देखते हैं । अन्न की साधना में जो प्रखर पवित्रता बरती जाती है, उसे सविता का अनुग्रह समझा जा सकता है ।

आगे और भी स्पष्ट किया गया है-"**मन एवं सविता वाक् सावित्री**" अर्थात् परम तेजस्वी सविता जब मनः-क्षेत्र में प्रवेश करते हैं जो जिह्वा को प्रभावित करते हैं और वचन के दोनों प्रयोजनों में जिह्वा पवित्रता का परिचय देती है । इस तथ्य को आगे और भी अधिक स्पष्ट किया गया है-"**प्राण एव सविता अन्नं सावित्री, यत्र ह्येव सविता प्राणस्तरन्नम् । यत्र वा अन्न तत् प्राण इत्येते ।**" अर्थात् सविता प्राण है और सावित्री अन्न । जहाँ अन्न है वहाँ प्राण होगा और जहाँ प्राण है वहाँ अन्न ।

प्राण जीवन, जीवट, संकल्प एवं प्रतिभा का प्रतीक है । यह विशिष्टता पवित्र अन्न की प्रतिक्रिया है । प्राणवान व्यक्ति पवित्र अन्न ही स्वीकार करते हैं एवं अन्न की पवित्रता को अपनाये रहने वाले प्राणवान बनते हैं ।

इस प्रतिपादन में गायत्री महाशक्ति के अवतरण के लिए मन की, बुद्धि की, वाणी की, अन्न की पवित्रता को अत्यधिक आवश्यक माना गया है । इसके बिना मात्र गायत्री की आराधना, अपंग एकांगी रह जाती है और अभीष्ट फल देने में असमर्थ रहती है ।

सविता सूक्ष्म भी है और दूरवर्ती भी, उसका निकटतम प्रतीक यज्ञ है । यज्ञ को सविता कहा गया है । उसकी पूर्णता भी एकाकीपन में नहीं है । सहधर्मिणी सहित यज्ञ ही समग्र एवं समर्थ माना गया है । यज्ञपत्नी दक्षिणा है । दक्षिणा को सावित्री कह सकते हैं । ३३ वीं कण्डिका में कहा गया है-"**यज्ञ एव सविता दक्षिणा सावित्री**" अर्थात् यज्ञ सविता है और दक्षिणा सावित्री । इन दोनों को अन्यायोश्रित माना जाना चाहिए । यज्ञ के बिना

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दक्षिणा की और दक्षिणा के बिना यज्ञ की सार्थकता नहीं होती । यह यज्ञ का तत्त्वज्ञान उदार परमार्थ प्रयोजनों में है । यज्ञ का तात्पर्य सत्प्रवृत्तियों के अभिवर्धन में योगदान करना है । गायत्री जप की पूर्णता कृत्य द्वारा होती है । इसका तत्त्वज्ञान यह है कि पवित्र यज्ञीय जीवन जिया जाय, साथ ही सविता देवता को प्रसन्न करने वाली-उसकी प्रिय पत्नी दक्षिणा का भी सत्कार किया जाय । यहाँ दुष्प्रवृत्तियों के परित्याग और सत्प्रवृत्तियों के अभिवर्धन करने के निमित्त किए गये संकल्पों को ही भाव भरी दक्षिणा-देव दक्षिणा समझा जाना चाहिए ।

गायत्री उपासना में सफलता-असफलता मिलने की पृष्ठभूमि में शास्त्रोक्त क्रिया कृत्यों का जितना महत्त्व है उससे भी अधिक उस तत्त्वज्ञान का है जिसमें साधक को व्यक्तित्व परिष्कृत करने के लिए मन, बुद्धि और आहार को पवित्र बनाने तथा सत्प्रवृत्तियों के संवर्धन में प्रबल प्रयत्न करने वाली बात भी सम्मिलित है ।

गायत्री उपासना की दिनचर्या, क्रम, पद्धति ऐसी होनी चाहिए जिसे ब्रह्मकर्म, तप, साधन कहा जा सके । कहा गया है कि-"**इदं ब्रह्म ह श्रियं प्रतिष्ठाम् अग्रवनम् ऐक्षत**" अर्थात् ब्रह्मा ने गायत्री में शोभा, सम्पदा और कीर्ति के सभी तत्त्व भर दिये । किन्तु साथ ही यह भी प्रावधान रखा कि "**सावित्र्या ब्राह्मणं सृष्ट्वा तत् सावित्री पर्यपधात्**" अर्थात् उसने गायत्री को धारण कर सकने में समर्थ ब्राह्मण को सृजा और उसे सावित्री के साथ बाँध दिया । ब्राह्मण वंश से नहीं, ऐसे कर्म करने से बनता है, जिनमें सत्य और तप का व्रत जुड़ा हुआ है । गोपथ की इसी कण्डिका में इस तथ्य को प्रकट करते हुए कहा गया है-"**कर्मणा तपः, तपसः सत्यम्-सत्येन ब्रह्म ब्रह्मणा ब्राह्मणाम्-ब्रह्मणेन व्रतम् समदधात्**" अर्थात् सत्कर्मों को तप कहते हैं-तप से सत्य की प्राप्ति होती है, सत्य ही ब्रह्म है-ब्रह्म को धारण करने वाला ब्राह्मण-ब्राह्मण वह जो आदर्शपालन का व्रत धारण करे-ऐसे ही व्रतधारी ब्राह्मण को गायत्री की प्राप्ति होती है ।

शालीनता एवं तपश्चर्या की बात पढ़ते, सुनते या सोचते रहने से काम नहीं चलता । सदाचरण को व्रत रूप में जीवन-क्रम में अविच्छिन्न रूप से समाविष्ट रखा जाना चाहिए । इस परिपालन के आधार पर ही ब्रह्मतेज प्रखर होता है और गायत्री-तत्त्व की उपलब्धि में कृत-कृत्य होने का अवसर मिलता है । मौद्गल्य कहते हैं-"**व्रतेन वै ब्राह्मणः संशितः भवति-अशून्य भवति-अविच्छिन्नः अस्य तन्तु-अविच्छिन्नं जीवनं भवति**" अर्थात् व्रत से ब्राह्मणत्व मिलता है-जो ब्राह्मण है वही मनीषी है-ऐसा व्यक्ति समृद्ध और समर्थ रहता है-उसकी परम्परा छिन्न नहीं होती और मरण सहज पड़ता है ।

गायत्री का तत्त्वज्ञान और उसके अनुग्रह का रहस्य बताते हुए महर्षि मौद्गल्य ने विस्तारपूर्वक यही समझाया है कि चिन्तन और चरित्र की दृष्टि से संयम और परमार्थ की दृष्टि से व्यक्तित्व को पवित्र बनाने वाले ब्रह्मपरायण व्यक्ति ही गायत्री के तत्त्ववेत्ता हैं और उन्हीं को वे सब लाभ मिलते हैं जिनका वर्णन गायत्री की महिमा एवं फलश्रुति का वर्णन करते हुए स्थान-स्थान पर प्रतिपादित किया गया है । इस रहस्य के ज्ञाता की ओर संकेत करते हुए गोपथ ब्राह्मण का ऋषि कहता है।

"**यः एवं वेद यः च एवं विद्वान एवं एतम् व्याचष्टे**"- जो इस पवित्र जीवन समेत की गई सावित्री का आश्रय लेता है, वही ज्ञानी है-वही मनीषी है, उसी को पूर्णता प्राप्त होती है ।

मानवी सत्ता से लेकर विस्तृत ब्रह्मांड में समान रूप से व्याप्त त्रिपदा गायत्री का भुवनेश्वरी रूप सर्वविदित है । गायत्री बीज 'ॐकार' है । उसकी सत्ता तीनों लोक (भूः भुवः स्वः) लोकों में संव्याप्त है । साधक के लिए उसके २४ अक्षर सिद्धियों एवं उपलब्धियों से भरे-पूरे हैं । इन अक्षरों में सन्निहित प्रेरणाओं को अपनाने वाले साधक निश्चित रूप से आप्तकाम बनते हैं और उस तरह खिन्न उद्विग्न नहीं रहते जिस तरह के लिप्सा-लालसाओं की अनुपयुक्त कामनाओं की आग में जलते-भुनते हुए शोक-संताप सहते हैं । इस तथ्य को "रुद्रयामल" में इस प्रकार प्रकट किया गया है-

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गायत्री त्रिपदा देवी त्र्यक्षरी भुवनेश्वरी ।
चतुर्विंशाक्षरा विद्या सा चैवाभीष्ट देवता ।।

-रुद्रयामल

"तीन पद वाली तथा तीन अक्षर (भूः भुवः स्वः) युक्त समस्त भुवनों की अधिष्ठात्री २४ अक्षर वाली पराविद्या रूप गायत्री देवी-सबको इच्छित फल देने वाली है ।"

स्पष्ट है कि गायत्री के तत्वज्ञान को हृदयंगम करके उसके अनुसार पद्धति अपनाने वाले साधकों के लिए कुछ भी दुर्लभ नहीं है ।

गायत्री के शब्दों का पंचधा-शक्ति समुच्चय

गायत्री मन्त्र में चौबीस अक्षर और नौ शब्द हैं । चौबीस अक्षरों में सन्निहित शक्तियों और सिद्धियों का चौबीस अवतारों के क्रियाकलापों और प्रतिपादनों में अलंकारिक रूप से कथा पुराणों की शैली में बताया गया है । महामन्त्र का हर अक्षर एक अवतार है । उसके द्वारा क्या सीखा, क्या किया जाना चाहिए और क्या पाया जा सकता है इसका सुविस्तृत विवरण अवतारों के लीला प्रकरण को ध्यानपूर्वक पढ़ने के उपरान्त भलीभाँति जाना जा सकता है ।

भगवान दत्तात्रेय के चौबीस गुरु गायत्री के चौबीस अक्षर ही हैं । उनकी अगणित जिज्ञासाओं का समाधान जिन प्रज्ञा सूत्रों में सम्भव हुआ था वे महामन्त्र के चौबीस अक्षरों में सन्निहित ब्रह्म विद्या के सार सन्दर्भ ही कहे जा सकते हैं । अगणित देवताओं में चौबीस ही प्रमुख माने गये हैं । ऋषि समुदाय में भी प्रधानता चौबीस की ही है । योगाभ्यास और तपश्चर्या की धाराएँ चौबीस हैं इन्हीं के भेद-उपभेद का क्रमिक विस्तार साधना सम्प्रदाय करते चले गये हैं ।

शब्दों की दृष्टि से गायत्री को नौ भागों में विभक्त किया जाता है । यही विभाजन भक्तियोग में नवधा भक्ति कहा जाता है । योगी उन्हें नौ विभूतियों के रूप में गिनते हैं । शक्ति सम्प्रदाय में इन्हें नौ दुर्गाएँ कहा जाता है । कर्मकाण्ड परम्परा में यज्ञोपवीत के नौ धागे गायत्री के नौ शब्दों के सार तत्व अपने प्रतीक रूप में प्रतिष्ठित किये हुये हैं । रत्न राशि नौ धागों में विभाजित है । सद्गुण समुच्चय में नौ की प्रधानता है । रामायण में ब्राह्मण के नौ गुण बताये गये हैं-"नव गुण परम पुनीत तुम्हारे" । गायत्री को ब्राह्मण की कामधेनु कहा गया है । ब्राह्मणत्व एक मानवी विशिष्टता है । उसका किसी वंश विशेष से सीधा सम्बन्ध नहीं है । गायत्री में सन्निहित नौ शब्दों को नौ गुणों के रूप में अपने व्यक्तित्व में समाविष्ट कर लेने वाले ही नवधा सिद्धियों और विभूतियों के अधिकारी बनते हैं ।

नव दुर्गाओं की भाँति वेदोक्त प्रतिपादन में नव देवियों की चर्चा है-उन्हें गायत्री के नौ शब्दों का ही वाममार्गी एवं दक्षिणमार्गी विभाजन कहना चाहिए । इनकी अवधारणा से अन्तःक्षेत्र में नौ प्रकार की आस्थाएँ पनपती हैं और व्यवहार में नौ प्रकार की विशिष्ट गति विधियों का उभार परिलक्षित होता है । उस उभार को निष्ठाएँ एवं चेष्टाएँ कहा जाता है ।

शब्द वर्गीकरण साथ के जुड़े हुए रहस्यों का सार संक्षेप में इस प्रकार समझा जा सकता है ।

(१) शब्द-"तत्" शक्ति-आद्यशक्ति । सिद्धि-दिव्य दृष्टि । आस्था-तन्मयता । निष्ठा-आस्तिकता ।

(२) शब्द-सवितु । शक्ति-सावित्री । सिद्धि-ओजस्विता । पंचशील-यम-नियम । निष्ठा-ऐश्वर्य ।

(३) शब्द-वरेण्यं । शक्ति-कुण्डलिनी । सिद्धि-अतीन्द्रिय क्षमता । आस्था-तितीक्षा । निष्ठा-नियमन ।

(४) शब्द-भर्ग । शक्ति-वेदमाता । सिद्धि-मनस्विता । आस्था-प्रज्ञा । निष्ठा-उत्कर्ष ।

(५) शब्द-देवस्य । शक्ति-देवमाता । सिद्धि-देवानुग्रह । आस्था-शुचिता । निष्ठा-चरित्र ।

(६) शब्द-धीमहि । शक्ति-विश्वमाता । सिद्धि-कीर्ति । आस्था-उदारता । निष्ठा-अंशदान ।

(७) शब्द-धियः । शक्ति-सरस्वती । सिद्धि-मेधा । आस्था-दूर दृष्टि । निष्ठा-शालीनता ।

(८) शब्द-योनः । शक्ति-लक्ष्मी । सिद्धि-समृद्धि । आस्था-उत्कृष्टता । निष्ठा-तत्परता ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

(९) शब्द-प्रचोदयात् । शक्ति-दुर्गा । सिद्धि-ब्रह्मवर्चस् । आस्था-तेजस् । निष्ठा-सहयोग ।

गायत्री का एक स्वरूप पंचमुखी भी है । यह अलंकारिक प्रतिपादन इस महामन्त्र में सन्निहित पाँच धाराओं की ओर संकेत करता है । शरीर के पाँच तत्त्व चेतना के पाँच प्राण । गोरस के पाँच अमृत-पंचामृत । पाँच तप, पाँच योग । पाँच देव आदि ये गायत्री के पाँच मुखों की व्याख्या विवेचना एवं प्रतिक्रिया ही व्यक्त करते हैं । इन्हें ही (१) शब्द (२) शक्ति (३) सिद्धि (४) आस्था (५) निष्ठा के रूप में वर्गीकृत किया गया है ।

नौ शब्दों में से प्रत्येक की पाँच-पाँच विशेषताएँ हैं । यह समस्त विभूति परिवार जीवन की पूर्णता का स्वरूप प्रस्तुत करता है । इनमें से जो जितना उपलब्ध करता है उसे उसी मात्रा में पूर्णता की प्राप्ति हो गई यह माना जाता है ।

शब्द का अर्थ तो होता ही है साथ ही उसमें शक्ति विशेष का भी समावेश रहता है । संगीत के मेघ मल्हार दीपक राग आदि में उसका चमत्कार प्रत्यक्ष देखा जा सकता है । कटु वचन और मधुर वचन की प्रतिक्रियाएँ निरन्तर सामने आती रहती हैं । गायत्री के नौ शब्दों को ध्वनि विज्ञान के आधार पर एक उच्चस्तरीय वीणा वादन कहा जा सकता है इसके नौ तार जब परस्पर मिलकर ध्वनि प्रवाह उत्पन्न करते हैं तब व्यक्ति के अन्तःकरण एवं प्रकृति के अन्तराल में भाव श्रद्धा का मृदुल संचार होने लगता है ।

सिद्धियाँ सफलताओं को-उपलब्धियों को कहते हैं । अनुकूल घटनाओं एवं अभीष्ट पदार्थों परिस्थितियों को प्राप्त करना समृद्धि कहलाता है । व्यक्तित्व के साथ जुड़ी हुई विशेषताएँ विभूतियाँ एवं सिद्धियाँ कही जाती हैं । सफलताएँ क्षणिक होती हैं । कुछ ही समय में वे पुरानी पड़ जाती हैं । और उनका लाभ चमत्कार सामान्य ही नहीं बन जाता अपर्याप्त भी प्रतीत होता है किन्तु सिद्धियों के बारे में ऐसी बात नहीं है । वे व्यक्तित्व का अंग बन जाती हैं और फूल के साथ जुड़ी हुई शोभा एवं सुगन्ध की तरह अपनी विशिष्टता का प्रमाण परिचय देती रहती हैं । सम्पन्नताओं से मनुष्य धनवान बनता है । किन्तु सिद्ध पुरुषों की गरिमा एवं समर्थता तो हर दृष्टि से अलौकिक मानी जाती है ।

आस्थाएँ अन्तःकरण की गहराई में जड़ जमाती है । इन्हीं के आधार पर भाव संवेदना उभरती है । एवं आकांक्षा उठती है । संवेदनाओं एवं आकांक्षाओं का समुच्चय ही व्यक्तित्व है । उसी की प्रेरणा से मस्तिष्क प्रेरित होता है । मन को कल्पना एवं बुद्धि का निर्धारण तथा अन्तःकरण की प्रेरणा के अनुरूप ही तत्पर होना पड़ता है । शरीर से जो भी कर्म बनते हैं वे मन की आज्ञा से ही होते हैं । मनः संस्थान अन्तःकरण का अनुयायी है । इस प्रकार व्यक्ति का जीवन जैसा भी कुछ भला-बुरा है आस्थाओं का ही प्रतिफल है । गायत्री के शब्द अन्तराल के समस्थल तक अपना प्रभाव पहुँचाते हैं और व्यक्ति में देवत्व का उद्भव करते हैं । यही आस्था प्रसंग है ।

निष्ठाएँ दृश्य होती हैं आस्थाएँ अदृश्य । आस्थाएँ ही मान्यता है । उन्हें श्रद्धा विश्वास भी कह सकते हैं इनकी प्रेरणा से जब मस्तिष्क और शरीर का मिलकर कार्य करने को तत्पर होते देखा जाता है तब वह स्थिति निष्ठा कहलाती है । निष्ठा अर्थात् क्रियाशीलता । कार्य तत्परता कर्म का फल एवं परिस्थितियों एवं सम्पत्तियों के रूप में प्रत्यक्ष परिलक्षित होता है यही है जीवन विकास और अभीष्ट सफलताओं का उपक्रम ।

गायत्री का ब्रह्म विज्ञान उसी महान तत्त्वदर्शन की पृष्ठभूमि प्रस्तुत करता है । गायत्री का साधना विधान उन उपलब्धियों का आधार सिद्ध होता है जिनके सहारे मनुष्य देवोपम मनःस्थिति एवं परिस्थिति का रसास्वादन करते हुए जीवन को सफल हुआ अनुभव करता है एवं सच्चे अर्थों में कृत-कृत्य बनता है ।

गायत्री के नौ शब्दों को नौ देवियों के रूप में इस दृष्टि से प्रतिपादित किया गया है । पाँचमुखी गायत्री इन शब्दों में से प्रत्येक में सन्निहित पाँच-पाँच रहस्यों की ओर संकेत करता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गायत्री की असंख्य शक्तियाँ और उनका सान्निध्य

परमब्रह्म परमात्मा की चेतना, प्रेरणा, सक्रियता, क्षमता एवं समर्थता को गायत्री कहते हैं, यह इस विश्व की सर्वोपरि शक्ति है । अन्य छुट-पुट शक्तियाँ जो विभिन्न प्रयोजनों के लिए प्रयुक्त होती हैं, वे देव नामों से पुकारी जाती हैं । यह समस्त देव शक्तियाँ उस परम-शक्ति की किरणें ही हैं, उनका अस्तित्व इस महत्त्व के अन्तर्गत ही है । उत्पादन, विकास एवं निवारण की त्रिविध देव शक्तियाँ ब्रह्मा, विष्णु, महेश के नाम से विख्यात है । पंचतत्त्वों की चेतना को आदित्य, वरुण, मारुत, द्यौ, अन्तरिक्ष कहकर पुकारते हैं । इन्द्र, बृहस्पति, अर्यमा, पूषा, तृष्टा, गणेश, अश्विनी, वसु, विश्वदेवा आदि की सृष्टि के विभिन्न प्रयोजनों में संलग्न शक्तियाँ ही हैं । चूँकि ये दिव्य है, प्राणियों को उनका अपार अनुराग मिलता है, इसलिए उन्हें देवता कहते हैं और श्रद्धापूर्वक पूजा, अर्चना एवं अभिवन्दना करते हैं । यह सभी देवता उस महत्तत्व के स्फुलिंग हैं जिसे अध्यात्म भाषा में 'गायत्री' कहकर पुकारते हैं । जैसे जलते हुए अग्निकुण्ड में से चिनगारियाँ उछलती हैं, उसी प्रकार विश्व की महान शक्ति सरिता गायत्री की लहरें उन देव शक्तियों के रूप में देखी जाती हैं । सम्पूर्ण देवताओं की सम्मिलित शक्ति को 'गायत्री' कहा जाय तो उचित ही होगा ।

हमें जितना भी कुछ वैभव, उल्लास मिलता है वह शक्ति से मूल्य पर ही मिलता है । जिसमें जितनी क्षमता है वह उतना ही सफल होता है और उतना ही वैभव उपार्जित कर लेता है । इन्द्रियों में शक्ति रहने तक ही भोगों को भोगा जा सकता है । ये अशक्त हो जायें तो आकर्षक से आकर्षक भोग भी उपेक्षणीय और घृणास्पद लगते हैं । नाड़ी-संस्थान की क्षमता क्षीण हो जाय तो शरीर का सामान्य क्रिया-कलाप भी ठीक तरह चल नहीं पाता । मानसिक शक्ति घट जाने पर मनुष्य की गणना विक्षिप्तों और उपहासस्पदों में होने लगती है । धन-शक्ति न रहने पर दर-दर का भिखारी बनना पड़ता है । मित्र-शक्ति न रहने पर एकाकी जीवन सर्वथा निरीह और निरर्थक प्रतीत होने लगता है । आत्मबल न होने पर प्रगति के पथ पर एक कदम भी यात्रा नहीं बढ़ती । जीवनोद्देश्य की पूर्ति आत्मबल से रहित व्यक्ति के लिये सर्वथा असम्भव ही है ।

अतएव शक्ति का सम्पादन भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों क्षेत्रों में सफलता प्राप्त करने के लिए नितान्त आवश्यक है । हमें यह जान ही लेना चाहिए कि भौतिक-जगत में जितनी पंचभूतों को प्रभावित करने एवं आध्यात्मिक जगत में जितनी भी विचारात्मक भावात्मक तथा संकल्पात्मक शक्तियाँ हैं उन सब का मूल उद्गम एवं असीम भाण्डागार वह महतत्त्व ही है जिसे गायत्री नाम से भी सम्बोधित किया जाता है । इस भाण्डागार में जितने ही गहरे उतर जायें उतनी ही बहुमूल्य रत्न-राशि उपलब्ध होने की सम्भावना बढ़ती चली जाती है ।

विश्व के आत्मोत्कर्ष इतिहास पर दृष्टिपात करने से यही प्रतीत होता है कि चरित्र को उज्ज्वल एवं विचारों को उत्कृष्ट रखने के अतिरिक्त हमारे महान पूर्वजों ने उपासनात्मक सम्बल गायत्री महामन्त्र को ही पकड़ा था, और इसी सीढ़ी पर चढ़ते हुए वे देव पुरुषों में गिने जाने योग्य स्थिति प्राप्त कर सके थे । देवदूतों, अवतारों, गृहस्थियों, महिलाओं, साधु ब्राह्मणों, सिद्धपुरुषों का ही नहीं साधारण सद् गृहस्थों का उपास्य भी गायत्री ही रही है और उस अवलम्बन के आधार पर न केवल आत्म-कल्याण का श्रेष्ठ साधन किया है वरन् भौतिक सुख सम्पदाओं की सांसारिक आवश्यकताओं को भी आवश्यक मात्रा में उपलब्ध किया है । ऐसे कितने प्रमाण देखने में आते हैं ।

ब्रह्मवैवर्त पुराण के २३ वें अध्याय में सावित्र्यु-पाख्यान नाम से गायत्री महिमा पर एक सुन्दर कथानक का वर्णन है । महर्षि नारद भगवान विष्णु से पूछते हैं-भगवन् गायत्री उपासना का इतिहास क्रम किस प्रकार चला ? उसके उत्तर में भगवान ने उत्तर दिया-

ब्राह्मणा वेद जननी पूजिता प्रथमे मुने ।
द्वितीये च देवगणैस्तत्पश्चाद्विदुष्णं गणैः ।
तथा चाश्वपतिः पूर्वः पूजया मास भारते ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अर्थात् हे नारद, वेदजननी गायत्री की पहले ब्रह्मा ने, फिर देवताओं ने, फिर गृहस्थी ब्राह्मणों ने उपासना की । राजाओं में प्रथम अश्वपति ने उपासना की ।

अश्वपति का परिचय और उपासना का नियम विधान बताने के उपरान्त भगवान ने नारद जी से कहा-

साच राज्ञी महासाध्वी वशिष्ठ स्योपदे शतः ।
चकाराराधने भक्त्या सावित्रीश्चैव नारदः ।।

राजा और रानी को सावित्री की आराधना करते हुए जब बहुत दिन व्यतीत हो गये तो एक दिन आकाशवाणी हुई कि तुम दश लक्ष गायत्री का विशेष जप करो ।

शुश्रावाकाशवाणीञ्च नृपेन्द्रश्चा शारीरिणीम् ।
गायत्री दश लक्षं च जपं कुर्बीति नारद ।

आकाशवाणी सुनकर उनने १० लक्ष जप का विशेष अनुष्ठान प्रारम्भ किया ।

इसी बीच एक बार महर्षि पाराशर राजा अश्वपति से भेंटे और उनने राजा की गायत्री उपासना की महत्ता बताते हुए कहा-

सकृज्जपश्च गायत्र्या पापं दिन कृत हरेत् ।
दशधा प्रजपान्नृपणं दिवाराज्यय मे वच ।

गायत्री के एक बार जप से दिन में किये पाप, तथा दश बार जप से दिन-रात के पापों का नाश होता है ।

एवं क्रमेण राजर्षे दश लक्षं जपं कुरु ।
साक्षात् द्रक्ष्यसि सावित्रीं त्रिजन्म पातक क्षयात् ।

सो हे राजन् इसी क्रम से तुम भी जप करो । फलस्वरूप तुम्हारा तीन जन्मों के पापों का क्षय हो जायगा और साक्षात् गायत्री माता का दर्शन करोगे ।

दत्वा ज्ञान नृपेन्द्राय प्रथयौ स्वालयं मुनीः ।
राजा सम्पूज्य सावित्री ददर्श वर मा पच ।

इस प्रकार मुनि राजा को ज्ञान देकर आश्रम चले गये और गायत्री की उपासना कर राजा ने भगवती का साक्षात्कार और वरदान प्राप्त किया ।

भगवती गायत्री ने प्रकट होकर कहा-

जानामि ते महाराज यत्तो प्रनसि वर्तते ।
वांछितं तव पत्न्या च सर्व दास्यामि निश्चितम् ।
साध्वी कन्याभिलपंच करोंति तव कामिनी ।
त्वं प्रार्थयसि पुत्रं च भवष्यति क्रमेण ते ।

"राजन मैं तुम्हारी और तुम्हारी पत्नी की अभिलाषा को जानती हूँ । तुम दोनों की कामनाओं को पूर्ण करूँगी । रानी कन्या की और तुम पुत्र की कामना करते हो तो क्रमशः तुम दोनों की कामना पूर्ण करूँगी ।"

तदनुरूप पुत्र तथा कन्या की प्राप्ति हुई ।

अन्यान्य महापुरुषों ने तथा देवताओं ने भी गायत्री उपासना का अवलम्बन लिया है । उसमें उन्हें अभीष्ट आत्म-शक्ति प्राप्त हुई है और उस शक्ति-भण्डार के अधिकारी बन उनने अपने को ऐसा प्रकाशवान बनाया है जिसके प्रकाश से अभी तक संसार में सर्वतोमुखी प्रकाश आलोकित हो रहा दिखाई देता है ।

गायत्री वेद मातास्ति साद्या शक्तिर्मता भुवि ।
जगतां जननी चैव तामुपासेऽहमेवहि ।।

भगवान् शंकर कहते हैं-गायत्री वेदमाता है । यही आदि शक्ति कहलाती है । वही विश्व-जननी है । मैं उसी की उपासना करता हूँ ।

प्रभावेणैव गायत्र्याः क्षत्रियः कौशिको वशी ।
राजर्षित्वं परित्यज्य ब्रह्मर्षिपदमीयिवान् ।।
सामर्थ्यं प्राप चातुच्चैरन्यद्भुवन सर्जने ।
किं किं न दद्याद्गायत्री सम्यगेवमुपासिता ।।
दुर्लभा सर्वमन्त्रेषु गायत्री प्रणवान्विता ।
न गायत्र्यधिकं किंचित त्रीषु परिगीयते ।।

-स्कन्द पुराण-काशीखण्ड

"संयमी एवं तपस्वी क्षत्रिय-विश्वामित्र महर्षि गायत्री मन्त्र की आराधना के प्रभाव से ही राजर्षि पदवी को त्यागकर ब्रह्मर्षि बन गये थे फिर उन्होंने अन्यान्य लोकों की सृष्टि करने की श्रेष्ठ सामर्थ्य भी प्राप्त कर ली थी अच्छी प्रकार से श्रद्धापूर्वक समराधित गायत्री कौन-कौन सा लाभ प्रदान नहीं करती ? निस्संदेह प्रणव मन्त्र से युक्त गायत्री समस्त मन्त्रों में अतीव दुर्लभ है । इसलिए वेदत्रयी में गायत्री मन्त्र से बढ़कर अन्य कोई मन्त्र नहीं माना जाता ।"

कौशिल्या सुप्रजा राम पूर्वा संध्या प्रर्वतते ।
उत्तिष्ठ नरशार्दूल कर्तव्यम् देवमाह्निकम् ।।
तस्यर्षेः परमोदारं वचः श्रुत्वा नरोत्तमी ।
स्नात्वा कृतोदको वीरो जपेतु परमं जपम् ।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

"हे कौशिल्या सुपुत्र राम ! अब संध्या का समय हो गया है अतः हे नरशार्दूल ! उठकर अपने नित्य कर्मों को करो । विश्वामित्र जी के ऐसे प्रेमयुक्त वचनों को सुनकर दोनों भाई उठ बैठे और स्नान करके गायत्री जप में तत्पर हो गये ।"

अवतीर्य रथात् तूर्णं कृत्वा शौचं यथाविधि ।
रथमोचनमादिश्य सन्ध्यामुपविवेश ह ।।

-महाभारत उद्योग पर्व

"हस्तिनापुर को जाते समय कृष्ण जी ने रथ से उतर कर शौचादि क्रिया करके यथाविधि सन्ध्या की ।"

कृतोदकानुजप्यः स हुताग्नि समलंकृतः ।

-महाभारत

"फिर हस्तिनापुर पहुँचकर उन्होंने स्नान, हवन और गायत्री जप किया ।"

सप्त-कोटि महामन्त्र गायत्री नायकाः स्मृताः ।
आदि देव उपासन्ते गायत्री वेद मातरम् ।।

"सप्त कोटि महामन्त्रों में गायत्री सर्वोपरि सेना नायक के समान है । देवता इसी की उपासना करते हैं, यही चारों वेदों की माता है ।"

भगवान शंकर भी कहते हैं-जहाँ गायत्री माता है, वहाँ शक्ति ठहरती है । वह विश्व जननी है । मैं उसी की उपासना करता हूँ । शंकर जी ही नहीं प्रत्येक प्रमुख देवता तथा भू-मण्डल के सभी महापुरुषों ने अपनी साधना में गायत्री का आश्रय लिया है । भगवान कृष्ण का कथन है ।

जपतां जुह्वतां चैव नित्यं च प्रवतात्मनाम् ।
ऋषीणां परमं जप्यं गुह्यमेतन्नराधिप ।।

-महाभारत

"हे युधिष्ठिर ! नित्य जप और हवन करने के लिए ऋषियों का परम मन्त्र गायत्री ही है ।"

संसार में अनेक देवताओं के रूप में जो अनेक शक्तियाँ दृष्टिगोचर हो रही हैं जिनकी सहायता से हमारा जीवन धारण, पोषण, अभिवर्धन एवं श्रेय साधन हो रहा है वे गायत्री महाशक्ति के अन्तर्गत आती हैं । इसे यों भी कहा जा सकता है कि वे गायत्री स्वरूप ही हैं । विश्व-व्यापी जल तत्त्व की नदी, सरोवरों, कूप, तालाबों, जलाशयों, हिमशृंगों, समुद्र और बादलों में विभिन्न रूप, स्वाद और स्थिति में दिखाई पड़ता है । उसी प्रकार एक ही गायत्री महातत्त्व अगणित देव शक्तियों के रूप में देखा और जाना जा सकता है । शास्त्र कहता है-

आदित्य देवा गन्धर्वा मनुष्या-पितरो सुराः तेषां सर्व भूतानां माता मेदिनी मातामही, सावित्री, गायत्री जगत्पुर्वी पृथ्वी बहुला विद्याभूता ।

-नारायणोपनिषद्

देव, गन्धर्व, मनुष्य, पितर, असुर इनका मूल कारण अदिति अविनाशी तत्त्व है । यह अदिति सब भूतों की माता मेदिनी और मातामही है । उसी विशाल गायत्री के गर्भ से विश्व के सम्पूर्ण प्राणी निवास करते हैं ।

पूषार्यमा मरुत्यांश्च ऋषियोऽपि मुनीश्वराः ।
पितरो नाग यक्षाश्च गन्धर्वप्सरा गणाः ।।
ऋग्यजु सामवेदाश्च अथर्वाङ्गि रसानि च ।
त्वमेव पंच भूतानि तत्वानि जगदीश्वरि ।।
ब्राह्मी सरस्वती सन्ध्या तुरीया त्वं महेश्वरी ।
त्वमेव सर्व शास्त्राणि त्वमेव सर्व संहिता ।।
पुराणानि च तन्त्राणि महागम मतानि च ।
तत्सद् ब्रह्म स्वरूपा किंचित्सद् सदात्मिका ।।
परात्परेशी गायत्री नमस्ते मातरम्बिके ।।

-वशिष्ठ संहिता

पूषा, अर्यमा, मारुत, ऋषि, मुनि, पितर, नाग, यक्ष, गन्धर्व, अप्सरा, ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, अंगिरस, पंचभूत, ब्राह्मी, सरस्वती एवं सन्ध्या-हे मातेश्वरि तुम ही हो । सर्व शास्त्रसंहिता पुराण, तन्त्र, अगम-निगम तथा और भी जो कुछ इस संसार में है सो हे ! ब्रह्मरूपिणी पराशक्ति गायत्री तुम ही हो ।

त्वयैतद् धार्यते विश्वं त्वयैतत्सृज्यते जगत् ।
त्वयै तत्पाल्यते देवि त्वमत्सन्ते च सर्वदा ।।

-सप्तशती १।७३

"हे देवी ! तुम्हीं इस विश्व की धारण करने वाली हो, तुम्हीं इसकी सृष्टि करने वाली हो, तुम्हीं इसका पालन करने तथा सदैव इसका अन्त करने वली भी हो ।"

सप्तर्षि प्रीतिजननी माया बहुवर प्रदा ।
शिवयोः कर नेत्रोत्था ह्यश्रुस्वेद समुद्भवा ।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

"सप्त ऋषियों की प्रीति उत्पन्न कराने वाली बहुत वर देने वाली माया, शिव और शक्ति के हाथ, नेत्र से उत्पन्न और उन्हीं के अश्रु पसीना से उत्पन्न तुम्हीं हो ।

शक्ति स्वाभाविकी तस्य विद्या विश्व विलक्षणा ।
एकानेकस्वरूपेण भाँति भानोरिव प्रभा ।।
अनन्ताः शक्तियस्तस्य इच्छाज्ञाना क्रियादयः ।
इच्छाशक्ति महेशस्य नित्या कार्य नियामिका ।।
ज्ञानशक्तिस्तु तत्कार्यं कारणं करणं तथा ।
प्रयोजन च तत्वेन बुद्धिरूपाध्यवस्यति ।।
यथेप्सितं क्रिया शक्तिर्यथा ध्यवसितं जगत् ।
कल्पयत्यखिलं कार्य क्षणात् संकल्प रूपिणी ।।

-शिवपुराण-वायुसंहिता ७

"विश्व-लक्षण वाली विद्या उस परब्रह्म की स्वाभाविक शक्ति है । वह सूर्य की प्रभा की तरह एक ही अनेक रूपों में प्रकट होती है । इच्छा, ज्ञान, क्रिया आदि उसकी अनन्त शक्तियाँ हैं । ये ही दैवी शक्तियाँ संसार के समस्त कार्यों का नियन्त्रण करती हैं । उसी की शक्ति ही कार्य और कारण के रूप में काम करती है और वही अपनी संकल्प शक्ति से अनादि काल से इसका संचालन करता आया है ।"

भ्रमति प्रकृतिस्तावत्संसारे भ्रमरूपिणी ।
यावन्न पश्यति शिवं नित्यतृप्तमनामपम् ।।
संविन्मात्रैक धर्मित्वात्काकतालीय योगतः ।
संविद्देवशिवं स्पृष्ट्वा मन्मय्येव भावत्यलम् ।।
प्रकृतिः पुरुषं स्पृष्ट्वा प्रकृतित्वं समुज्झति ।
तदन्तस्त्वेकतां गत्वा नदीं रूपमिवार्ण वे ।।

-योग व० ६, २, ८५, १६-१९

"भ्रमणशालिनी, स्पन्दात्मिका, परमेश्वर की चित्त-शक्ति प्रकृति इच्छापूर्वक तब तक संसार में भ्रमण करती है जब तक कि वह नित्य, तृप्त, अनामय शिव को नहीं देखती । स्वयं भी संवित रूप होने के कारण यदि वह अकस्मात् कभी शिव को स्पर्श कर लेती है तो तुरन्त ही उसके साथ तन्मयी हो जाती है । तब वह शिव के साथ एकता को प्राप्त करके अपने प्रकृति रूप को इस प्रकार खो देती है, जैसे समुद्र में गिर कर नदी अपने नदी रूप को खो डालती है ।"

द्रवशक्तितथाम्भासु तेजशक्तितथाऽनले ।
शून्यशक्तिस्तथाकाशे भावशक्तिर्भवास्थिती ।।
ब्रह्मणसर्वशक्तिर्हि दृश्यते दशदिग्गता ।
नाशशक्तिर्विनाशेषु शोक शक्तिश्च शोकिषु ।।
आनन्दशक्तिर्मुदिते वीर्यशक्तिस्तथा भटे ।
सर्गेषु सर्गशक्तिश्च कल्पान्ते सर्वशक्तिता ।।

-योग० व० ३।१००।८, ९, १०

"जल में द्रव-शक्ति, अग्नि में तेज-शक्ति, आकाश में शून्य-शक्ति, जगत की स्थिति में भाव-शक्ति, दश दिशाओं में सर्व साधरण-शक्ति, विनाश में नाश-शक्ति, शोक करने वालों में शोक-शक्ति, प्रसन्न रहने वालों में आनन्द-शक्ति, योद्धाओं में वीर्य-शक्ति, सृष्टि में सृजन-शक्ति और कल्प के अन्त में सब-शक्तियाँ उसी में दिखाई देती हैं ।"

भागीरथी मर्त्यलोके पाताले भोगवत्यपि ।
त्रिलोक वाहिनी देवी स्थानत्रयनिवासिनी ।।

"मृत्युलोक में भागीरथी, पाताल में भोगवती, स्वर्ग में सीता-ये त्रिलोक वासिनी देवी तीनों लोकों में विद्यमान हैं ।"

भूर्लोकस्था त्वमेवासि धरित्री लोक धारिणी ।
भुवोलोके वायुशक्तिः स्वर्लोके तेजसो निधिः ।।

"भूलोक में धारण करने वाली धरित्री तुम्हीं हो । भुवःलोक में वायु-शक्ति और स्वर्ग लोक में तेज तुम्हीं हो ।"

महार्लोके महासिद्धिर्जनलोके जपेत्यपि ।
तपस्विनी तपोलोके सत्य लोके तु सत्यवाक् ।।

"महर्लोक में महासिद्धि, जनलोक में जननी, तपोलोक में तपस्विनी और सत्यलोक में सत्य कहने वाली तुम्हीं हो ।"

गंगा च यमुना चैव विपाशा च सरस्वती ।
सरयूर्देविका सिंधुर्नर्मदैरावती तथा ।।
गोदावरी शतदुश्च कावेरी देव लोकगा ।
कौशिकी चन्द्रभागा च वितस्ता च सरस्वती ।
गंडकी तपनी तोया गोमती वेगवत्यपि ।।

"गंगा, यमुना, विपाशा, सरस्वती, सरयू, देविका, सिन्धु, नर्मदा, ऐरावती, गोदावरी, शतद्रु, कावेरी, कौशिकी, चन्द्रभागा, वितस्ता, सरस्वती, गंडकी, तपनी, करतोया, गोमती, वेगवती आदि समस्त सरितायें तुम्हीं हो ।"

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इडा च पिंगलाचैव सुषुम्णा च तृतीयका ।
गांधारी हस्तिजिह्वा च पूषाऽपूषा तथैव च ।।
अलंवुषा कुहूश्चैव शंखिनी प्राणवाहिनी ।
नाड़ी च त्वं शरीरस्था गीयसे प्रक्तनैर्बुधै ।।

"इडा, पिंगला, सुषुम्णा, गांधारी, हस्तिजिह्वा, पूषा, अपूषा, अलम्वुषा, कुहू, शंखिनी, प्राणवाहिनी-ये शरीर में टिकी हुई समस्त नाड़ियाँ भी तुम्हीं हो ।"

हृत्पद्मस्था प्राणशक्तिः कण्ठस्था स्वप्ननायिका ।
तालुस्था त्वं सदाधारा बिन्दुस्था बिन्दुमालिनी ।।
मले तु कुण्डली शक्तिव्यापिनी केशमूलगा ।।

"हृदय कमल में टिकी हुई प्राणशक्ति, कण्ठ में स्थित स्वप्न शक्ति, तालु में सदाधारा, भौं के मध्य में बिन्दुमालिनी, मूलाधार में कुण्डलीशक्ति, केशमूल में व्यापिनी शक्ति तुम्हीं हो ।"

शिखामध्यासना त्वं हि शिखाग्रेतु मनोन्मनी ।
किमन्यद् बहुप्रोक्तेनयत् किंचिज्जगतीत्रये ।।

"शिखा के मध्य में तुम्हीं विराजमान हो और शिखा के अग्र (ब्रह्मरन्ध्र) में मनोन्मनी भी तुम्हीं हो । बहुत कहाँ तक कहा जाय, तीनों लोकों में जो कुछ है वह सब तुम्हीं हो ।"

तत्सर्वं त्वं महादेवि शिवे संध्ये नमोऽस्तु ते ।
इतीदं कीर्तिहं स्तोत्रं संध्यायां बहुपुण्यवम् ।।

"हे श्रीजी और संध्याजी ! तुमको नमस्कार है । इस स्तोत्र का सन्ध्या समय पाठ करने से अत्यन्त पुण्य होता है ।"

कमला विष्णुलोके च गायत्री ब्रह्मलोकदा ।
रुद्रलोके स्थिता गौरी हरार्धाङ्गनिवासिनी ।।

"तुम्हीं विष्णुलोक में कमला, ब्रह्मलोक में गायत्री, रुद्रलोक में महादेवजी के अर्द्धाङ्ग में निवास करने वाली गौरी के रूप में निवास करती हो ।"

आनन्द जननी दुर्गा दशधा परिपठ्यते ।
वरेण्या वरदाचैव वरिष्ठ वर वर्णिनी ।।

"तुम्हीं आनन्द देने दश भाँति की दुर्गा हो जिनको इस प्रकार कहा जाता है-वरेण्या, वरदा, वरिष्ठा वरर्णिनी ।"

गरिष्ठां च वराहा च वरारोहा च सप्तमी ।
नीलगंगा तथा संध्या सर्वदा भोग मोक्षदा ।।

"गरिष्ठा, वराहा, वरारोहा, नीलगंगा, संध्या तथा भोगमोक्षदा ।"

हंसस्था गरूडारूढा तथा वृषभवाहिनी ।
ऋग्वेदाध्यापिनी भूमौ दृश्यते या तपस्विभि ।।

"ब्राह्मी हंसारूढ, सावित्री वृषभवाहिनी और सरस्वती गरूडारूढ है । इनमें से ब्राह्मी ऋग्वेदाध्यापिनी, भूमितल में तपस्वियों द्वारा देखी जाती है ।"

ब्रह्मांड में संव्याप्त अनेक शक्तियाँ इस जगत् का संचालन एवं नियन्त्रण करती हैं । उन्हीं के कारण पर संसार इतना सुन्दर और गतिशील दिखाई पड़ता है । यदि यह शक्तियाँ न होतीं और केवल जड़ पदार्थ ही इस संसार में भरे होते तो यहाँ श्मशान जैसी नीरवता का ही साम्राज्य होता । न कोई हलचल होती न परिवर्तन की गुंजायश रहती । तब न प्राणियों वनस्पतियों का आविर्भाव होता और न उनके कारण जो विविध विधि क्रिया-कलाप चल रहे हैं उनकी कोई सम्भावना रहती । संसार का जो भी स्थूल सूक्ष्म स्वरूप हमारे सामने उपस्थित है उसके मूल में वे अदृश्य शक्तियाँ ही काम कर रही हैं जिन्हें देवताओं अथवा देवियों के नाम से पुकारा जाता है । स्मरण रखने की बात यही है कि यह सारा शक्ति परिवार जगतजननी गायत्री महाशक्ति का ही सृजन निर्माण, वैभव एवं परिवार है । हम गायत्री महाशक्ति को अपनाने में जितना ही धारण करते हैं उतना ही वह अधिकार प्राप्त हो जाता है । जिससे विश्वव्यापी शक्ति शृंखला के साथ अपना सम्बन्ध स्थापित कर सकें । उन्हें अभीष्ट प्रयोजनों के लिये प्रयुक्त कर सकें । यह क्षमता जिन्हें उपलब्ध हो जाती है वे सिद्ध पुरुष कहलाते हैं । सामान्य मनुष्यों को इन शक्तियों के आधिपत्य में रहना पड़ता है, वे परिस्थितियों के दास रहते हैं पर जिन्हें शक्तियों से सम्बन्ध बनाने एवं उन्हें मोड़ने का अधिकार मिल जाता है वे परिस्थितियों को अपने अनुकूल बना लेते हैं । इस अनुकूलता के आधार पर वे अपना और असंख्य दूसरों का भला कर सकते हैं । शक्तिरूपा गायत्री के बारे में शास्त्र कहते हैं-

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भ्राजते दीप्यते यस्माज्जगदन्ते हरत्यपि ।
कालाग्नि रूप मास्थाय सप्तार्चिः सप्तरश्मिभिः ।।

-याज्ञ० सं०

''जिस तेज के प्रताप स यह जगत् शोभित, वर्द्धित एवं सचेतन होकर अन्त में समाप्त हो जाता है वही सप्तार्चि तथा सप्तरश्मियुक्त सत्ता काल रूपी अग्नि की भाँति रूप धारण करती हैं ।''

आदिशक्ते जगन्मातर्भक्तानुग्रह कारिणि ।
सर्वत्र व्यापिकेऽनंते श्रीसंध्ये ते नमोऽस्तु ते ।।

''आदिशक्ति, जगन्माता, भक्तों पर अनुग्रह करने वाली, सर्वत्र व्यापिका, अनन्ता, श्री, संध्या तुम्हारे लिये नमस्कार है ।''

त्वमेव संध्या गायत्री सावित्री च सरस्वती ।
ब्राह्मी च वैष्णवी रौद्री रक्ता श्वेता सितेतरा ।।

''संध्या, गायत्री, सावित्री, सरस्वती, ब्राह्मी, वैष्णवी, रौद्री, रक्ता, श्वेता, कृष्णा तुम्हीं हो ।''

ततः परा पराशक्तिः परमा त्वम् हि गीयसे ।
इच्छाशक्तिः क्रिया शक्तिर्ज्ञान शक्तिस्त्रिशक्तिदा ।।

''तुम्हीं परा, परमाशक्ति कही जाती हो । इच्छाशक्ति और ज्ञानशक्ति भी तुम्हीं हो ।''

इन्द्रियाणमधिष्ठात्री भूतानां चाखिलेषु या ।
भूतेषु तस्यै व्याप्त्यै देव्यै नमोनमः ।
चितिरूपेण या कृत्स्नमेतद् व्याप्यस्थिता जगत ।।

-दुर्गा सप्तशती

''जो देवी समस्त इन्द्रियों और समस्त भूतों की अधिष्ठात्री है उस सर्वव्यापक महाशक्ति को हम नमन करते हैं । यही इस समस्त जगत् का चेतन रूप रखने वाली है ।''

गायत्री वा इदम् सर्वं भूतं यदिदं किंचवाग्वे ।
गायत्री वग्वा इदम् सर्वं भूतं गायत्री त्रायते च ।।

''यह जो कुछ है, निश्चय से गायत्री है । गायत्री ही सारे जगत की सार और वाणी है । क्योंकि वाणी ही सारे संसार को बनाती और रक्षा करती है ।''

सुप्ता नागोपमा ह्येषा स्फुरन्ती प्रभवा स्वया ।
अहिवत् सन्धिसंस्थाना वाग्देवी बीज संज्ञका ।।
ज्ञेया शक्तिरियं विष्णोर्निभया स्वर्णभास्वरा ।
सत्त्वं रजस्तमश्चेति गुणत्रय प्रसूतिका ।।

.-योग शास्त्र

''वह देवी सोयी हुई नाग के समान मालूम होती है तथा अपने ही प्रकाश से दीप्त है । वह सूर्य के समान ही सन्धि स्थान में रहती है तथा वाग्देवी के बीज के नाम से विख्यात है । इसे विष्णु की शक्ति जानना चाहिए । यह निर्भय, स्वर्ण के समान आभावाली है तथा सत्त्व, रज और तम इन तीनों गुणों का प्रसूति स्थान है ।''

यजुर्वेद पठन्ती च अन्तरिक्षे विराजते ।
सा सामगापि सर्वेषु भ्राम्यमाण तथा भुवि ।।

''सरस्वती यजुर्वेद पढ़ती हुई अन्तरिक्ष में विराजमान् होती है और सावित्री सामवेद गाती हुई पृथ्वी तल पर सर्वजनों में भ्रमती है ।''

रुद्रलोकं गता त्वं हि विष्णुलोकनिवासिनी ।
त्वमेव ब्रह्मणो लोकेऽमर्त्यानुग्रहकारिणी ।।

''सावित्री रुद्रलोक में, सरस्वती विष्णुलोक में और ब्राह्मी ब्रह्मलोक में विराजमान रहती हैं-ये सब प्राणियों पर कृपा करने वाली हैं ।''

मानव शरीरों में अनेक शक्तियाँ हैं, उसके मस्तिष्क एवं हृदय में इतनी अद्भुत क्षमताएँ हैं जिनका कोई वारापार नहीं । देखने में सभी मनुष्य लगभग एक जैसे प्रतीत होते हैं । हाड़, माँस, इन्द्रियाँ, अंग, अवयव, आहार-विहार, स्वभाव, अभ्यास, लम्बाई, चौड़ाई की दृष्टि से मानव प्राणियों में कुछ बहुत ज्यादा अन्तर दिखाई नहीं देता, पर उनमें जो सूक्ष्म विशेषताएँ सन्निहित हैं उन्हीं की न्यूनाधिकता में कोई गई-गुजरी स्थिति में पड़ा रहता है कोई उन्नति के उच्च शिखर पर जा पहुँचता है । बहुतों को इन क्षमताओं के अभाव में दुःख दारिद्रय से भरा शोक-संताप ग्रस्त जीवन जीना पड़ता है पर जिनमें कुछ विशेषताएँ प्रतिभा के रूप में अधिक होती हैं, वे उन उपलब्धियों के कारण अनेक दिशाओं में सफलताएँ प्राप्त करते हैं और सुख-शान्ति का लाभ लेते हुए यशस्वी एवं तेजस्वी जीवन व्यतीत करते हैं ।

मानवीय शरीर एवं मस्तिष्क में सन्निहित शक्तियों को वैयक्तिक अभ्यास से भी बढ़ाया जाता है पर वे एक दैवी वरदान के रूप में भी न्यूनाधिक मात्रा में लोगों को मिलती है । यह दिव्य प्रतिभाओं

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

एवं सूक्ष्म शक्तियों का वरदान मनुष्य की आध्यात्मिक प्रगति पर ही निर्भर है । कहना न होगा कि आध्यात्मिक उच्चस्तर की प्राप्ति में उपासना का अद्‌भुत महत्त्व है और उपासनाओं में सर्वोपरि सर्वसुलभ, सर्वाङ्गीण गायत्री उपासना ही है । उसी की अनुकम्पा मानव-जीवन में विभिन्न प्रतिभाओं के रूप में प्रकाशवान् होती है ।

त्वं भूमि भूतानां प्राणः प्राणवतां तथा ।
धीः श्रीः कान्तिः क्षमा शान्ति श्रद्धा मेधा धृतिः स्मृति
त्वं मुदगीथेऽर्धं मात्रासि गायत्री व्याहृति स्तथा ।।

-देवी भागवत

"तुम सब प्राणियों को धारण करने वाली भूमि हो प्राणवानों में प्राण हो । तुम्हीं धी, श्री, कान्ति, श्रद्धा, मेधा, धृति, स्मृति हो । तुम ही ॐकार की अर्धमात्रा उदगीथ हो, तुम ही गायत्री व्याहृति हो ।"

या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्व लक्ष्मीः ।
पापात्मनां कृतधियो हृदयेषु बुद्धिः ।।
श्रद्धा सतां कुलजन प्रभवस्य लज्जा ।
तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम् ।।

"वह भगवती सज्जनों के घर में लक्ष्मी के रूप में निवास करती है । वही विवेकशून्यों के हृदय में बुद्धि का प्रादुर्भाव करती है । वही कुलीन जनों में दुष्कर्मों से लज्जा का भाव उत्पन्न करती है । सारांश यह है कि वही समस्त जगत का पालन तथा संचालन करने वाली शक्ति है ।"

कीर्तिं कान्तिञ्च नैरुज्यं सर्वेषां प्रियतां व्रजेत् ।
विख्यातंचापि लोकेषु भुक्त्वान्ते मोक्षमानुप्यात् ।।

"महादेवी की कृपा से ही कीर्ति, कान्ति, आरोग्य, सर्वप्रियता और संसार में यश आदि की प्राप्ति होती है और अन्त में मोक्ष लाभ भी निस्संदेह होता है ।"

या देवी सर्वभूतेषु विद्यारूपेण संस्थिता ।

-सप्तशती

"वह देवी ही सब भूतों (प्राणियों) में विद्या के रूप में प्रतिष्ठित है ।"

ऐसी महाशक्ति की शरण में हमें जाना चाहिए, उसका सान्निध्य एवं सम्पर्क ग्रहण करना ही चाहिए । इस पारसमणि का स्पर्श कर निस्संदेह हम अपने लोह जैसी कुरूपता एवं अपूर्णता को सर्वाङ्गीण सौन्दर्य एवं समग्र वैभव के रूप में परिणत कर सकते हैं ।

सफल उपासना के मूल में जिस अविच्छिन्न श्रद्धा की आवश्यकता है वह इस महाविद्या के तत्त्व ज्ञान को भली प्रकार जान लेने से ही सम्भव है । इसलिये जिस प्रकार किसी भी कार्य के करने से पूर्व उसका स्वरूप एवं प्रतिफल जानना आवश्यक होता है उसी प्रकार गायत्री विद्या के बारे में भी आवश्यक जानकारी पूरे मनोयोग के साथ प्राप्त करनी चाहिए ।

परिपूर्ण जानकारी का प्रयोजन यही है कि उस सम्बन्ध में अभीष्ट श्रद्धा उत्पन्न हो और उसके आधार पर नियमबद्ध, क्रमबद्ध, व्यवस्थित और भावनापूर्ण उपासना सम्भव हो सके । इसी स्तर की उपासना अभीष्ट परिणाम उत्पन्न करती है । तभी वे सत्परिणाम उत्पन्न होते हैं जिनका वर्णन शास्त्रों एवं ऋषियों ने पग-पग पर किया है ।

गायत्री उपासना में नियमितता एवं क्रमबद्धता आवश्यक है । जो श्रद्धा विश्वास की दृढ़ता होने पर ही सम्भव है । जब तक कौतूहल के रूप में अधूरे मन से कोई कार्य किया जाता है तब तक तन्मयता के अभाव में वह अस्त-व्यस्त ही रहता है । श्रद्धा होने से तत्परता एवं लगन उत्पन्न होती है, तब नियमित उपासना एक स्वभाव बन जाता है । ऐसी दशा में ही अभीष्ट परिणाम भी होता है ।

जो गायत्री को जानता है वह उसके मर्म स्वरूप एवं प्रतिफल में परिणत होने के कारण तत्परतापूर्वक उपासना भी करता है, ऐसे व्यक्ति का मन भी लगता है । मन लगाकर जो भी कार्य किया जाता है उनमें सफलता मिलती ही है फिर उपासना में सफलता क्यों न मिलेगी ?

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गायत्री का ब्रह्मवर्चस्

गायत्री उपासना से ब्रह्मवर्चस् की प्राप्ति

आत्मा में सन्निहित ब्रह्मवर्चस् का जागरण करने के लिए गायत्री उपासना आवश्यक है । यों सभी के भीतर सत्-तत्त्व बीज रूप में विद्यमान है पर उसका जागरण जिन तपश्चर्याओं द्वारा सम्भव होता है, उनमें गायत्री उपासना ही प्रधान है । हर आस्तिक को अपने में ब्रह्म तेज उत्पन्न करना चाहिए । जिसमें जितना ब्रह्म-तत्त्व अवतरित होगा, वह उतने ही अंशों में ब्राह्मणत्व का अधिकारी होता जायगा । जिन्होंने आदर्शमय जीवन का व्रत लिया है, व्रतबंध, यज्ञोपवीत धारण किया है, वे सभी व्रतधारी ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य अपनी आत्मा में प्रकाश उत्पन्न करने के लिए गायत्री उपासना निरन्तर करते रहें, यही उचित है । जो इस कर्त्तव्य से च्युत होकर इधर-उधर भटकते हैं, जड़ को सींचना छोड़कर पत्ते धोते फिरते हैं, उन्हें अभीष्ट लक्ष्य प्राप्त करने में विलम्ब ही नहीं, असफलता का भी सामना करना पड़ता है ।

साधना शास्त्रों में निष्ठावान भारतीय धर्मानुयायियों (द्विजों) को एक मात्र गायत्री उपासना का ही निर्देश किया गया है । उसमें वे अपना ब्रह्मवर्चस् आशाजनक मात्रा में बढ़ा सकते हैं और उस आधार पर विपन्नता एवं आपत्तियों से बचते हुए, सुख-शांति के मार्ग पर सुनिश्चित गति से बढ़ते रह सकते हैं । द्विजत्व का व्रत-बंध स्वीकार करते समय हर व्यक्ति को गायत्री मन्त्र की दीक्षा लेनी पड़ती है, इसलिए उसे ही गुरुमन्त्र कहा जाता रहा है । पीछे से अंधकार युग में चले सम्प्रदायवाद ने अनेक देवी-देवता, मन्त्र और उनके उपासना विधान गढ़ डाले और लोगों को निर्दिष्ट मार्ग से भटकाकर भ्रम-जंजालों में उलझा दिया । फलतः अनादि काल से प्रत्येक भारतीय धर्मानुयायी की निर्दिष्ट उपासना पद्धति हाथ से छूट गई और आधार रहित पतंग की तरह हम इधर-उधर टकराते हुए अधःपतित स्थिति में जा पहुँचे ।

उस तथ्य को दूरदर्शी शास्त्रकारों ने समझा है और सचेत किया है कि वे निरर्थक भटकाने वाले भ्रम-जंजाल को समझें और भ्रान्तियों से निकलकर यदि उपासना करनी है तो समर्थ एवं सनातन उपासना पद्धति-गायत्री-का आश्रय लें । सही मार्ग पर, चलने से ही सही परिणाम निकल सकते हैं । अन्यान्य देवताओं का आराधन कुछ क्षणिक प्रयोजन भले ही सिद्ध करे जीवन लक्ष्य को प्राप्त करा सकने में समर्थ नहीं हो सकता । देवी भागवत में इस तथ्य पर यों प्रकाश डाला गया है-

एषा निष्ठा दुर्लभा मर्त्यबुद्धौ तस्माल्लोके वैष्णवाः शाम्भवाश्च । भिन्नं भिन्नं मार्गमास्थाय वेदं क्षामं कुर्वन्त्या स्तिक छद्मने मे ।। १७ ।।

पक्षि द्वन्द्वं विद्यते स्वस्यं देहो भोक्तारं सा ध्यान माचष्ट एतत् । यावत् क्षीणा भोक्तता स्यात्ततस्तु ज्ञात्वा ब्रूयाद ब्रह्मतां स्वस्य विद्वान् ।। १८ ।।

गायत्र्यर्थं नो विजानाति कश्चिज्जस्मादन्य देवमाद द्विजोऽपि । विज्ञातश्चेत्सर्ववादस्य शान्तिर्मुक्तिर्हस्ते गायमानस्य मन्त्रम् ।। १९ ।।

भस्मान्तं चेद्विश्व मेतत् समस्तं भस्मोद्भूतं भस्म संभासते च । तस्माद ब्रह्म प्राहुराद्यै र्वचोभिर्वेदा स्तस्माद्भस्म लिंग द्विजानाम् । इति शंकराचार्य्याभिप्रायः कृष्ण भिक्षुणा । वर्णितस्ते न गायत्री विभूत्या सहनन्दतु ।। २१ ।।

अर्थ- मानवों की बुद्धि में इस प्रकार की निष्ठा अत्यन्त दुर्लभ होती है । इसी कारण से लोक में शैव और वैष्णव आदि विभिन्न मतानुयायी लोग हो गये हैं । इस प्रकार से भिन्न-भिन्न सम्प्रदायों के मार्ग में समास्थित होकर आस्तिक बनने के छद्म से मेरे वेद-मार्ग को दुर्बल किया करते हैं ।। १७ ।।

किसी भी मत एवं सम्प्रदाय का पक्ष जब ग्रहण कर लिया जाता है तो अन्य लोगों में एक साथ एक प्रकार का द्वन्द्व छिड़ जाता है । अपने देह में वह

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वेद जननी भोक्ता के ध्यान को आकर्षित करती है कि जिस प्रकार यह भोक्तता क्षीण हो जाती है, तभी फिर ज्ञान प्राप्त करके विद्वान् पुरुष अपनी ब्रह्मता को कहे । गायत्री के अर्थ को सामान्य या कोई भी नहीं जानता है, इसी कारण से द्विज भी जिसने गायत्री की दीक्षा से ही द्विजत्व का लाभ प्राप्त किया है, अन्य देव को कहा करते हैं । अर्थात् गायत्री को परमाराध्य सर्वोपरि विराजमान न मानकर अन्य देवों की उपासना किया करते हैं । यदि गायत्री के अर्थ का ज्ञान हो जावे तो फिर सब तरह के विवादों की शांति हो जाया करती है । गायत्री मन्त्र का जो गायन करता है, उसका मोक्ष प्राप्त कर लेना तो फिर उसी के हाथ में रहा करता है । ॥१८, १९ ॥

यदि भस्मान्त हो तो यह समस्त विश्व ही भस्म से उद्भव प्राप्त करने वाला है और इसमें भस्म ही संभासित होती है । इसी से वेदों ने प्राथमिक वचनों से ब्रह्म को बतलाया है । इसीलिये द्विजों का चिह्न ही भस्म होता है । यह स्वामिपाद भगवान् श्री शंकराचार्य जी का अभिप्राय है, जिसकी कृष्ण भिक्षु ने वर्णन किया है । इससे गायत्री माता की विभूति के साथ यह अभिनन्दित होवे ।

मन्त्रैः किं तैर्य प्रतीक्ष्येत देवी गायत्र्यम्बा सम्प्रवेष्टुं द्विजेषु । देवैः कि त्तैरग्निना पुष्टिमद्भि स्तस्मा द्भस्मोद्भषितैः सा निषेव्या ॥८ ॥

दत्तं भस्म श्री त्रिपादावयैतंत्र्यङ्गेरग्नेः शेष रूपं स्वरूपम् । तस्माद्भस्मं प्रोच्यते भासच्च भूतिर्गायत्र्यंवयैक्या त्रिपुण्ड्रम् ॥९ ॥

शैवोऽन्यो वा यां विना किं द्विजः स्याच्छैवोऽन्यो वा दीक्षया वेदमातुः तस्माच्छैवो वैष्णवोऽन्येषु गण्यो गायत्र्याप्ता ब्रह्मता वेदमान्या ।१० ॥

भेदापोहव्यावृतिं सा विभर्त्ति ध्यानैभिन्नैर्ध्यान निष्ठैक वेद्याम् । तस्मान्मामान्यत्र संयान्ति सार्वाण्यस्या निष्ठा शाम्भवी वैष्णवी चाः ॥११ ॥

अर्थ- उन मन्त्रों से क्या लाभ है जिनके द्वारा द्विज गणों में माता गायत्री को सम्प्रवेश करने के लिये प्रतीक्षा की जावे । उन देवों के सेवन से भी क्या प्रयोजन सिद्ध हो सकता है, जो अग्नि के द्वारा पुष्टि वाले हों और उसी से भस्म के द्वारा विभूषित होकर उस गायत्री देवी का निषेवण किया जावे । ॥८ ॥

श्री त्रिपादाम्बा के द्वारा ही दी हुई भस्म है, जो तीन चरणों वाली अग्नि का शेष स्वरूप है । माता गायत्री के ऐक्य से ही उस भासमान से वह भस्म त्रिपुण्ड की विभूति कही जाती है ! ॥९ ॥

चाहे कोई अन्य शैव हो किन्तु वह उस वेदमाता के बिना क्या कभी द्विजत्व का लाभ कर सकता है, अर्थात् शिव की उपासना से भी गायत्री के बिना द्विजत्व नहीं मिल सकता है । चाहे कोई शैव हो या वैष्णव हो, दोनों देवों में से किसी भी एक की उपासना करने वाला क्यों न हो उसकी वेदमाता की दीक्षा से ही गणना की योग्यता होती है । वेदमान्य ब्रह्मता तो माता गायत्री के द्वारा ही प्राप्त होती है । ॥१०॥

वही वेद जननी गायत्री भेदोपोह को धारण किया करती है अर्थात् भेद को दूर करने वाली है । जो ध्यान निष्ठा की एक वेदी में भिन्न ध्यानों के द्वारा किया करती है । इसी से यहाँ पर समस्त नाम इसकी शाम्भवी अथवा वैष्णवी निष्ठा को प्राप्त किया करते हैं ।

लोकस्थास्ते विष्णु रुद्रादि देवाः कैश्चित्कामैः कैश्चिदेवाधिकारैः । गायत्र्यास्तां मूर्त्तयः सेवानीया गायत्र्यां ते सेविताः सम्भ्रमेण ।

अर्थ- विष्णु और रुद्र आदि समस्त देवगण लोकों में रहने वाले हैं । उनमें कुछ कामनाओं को पूर्ति करने की शक्ति तथा कतिपय कुछ अधिकार रहते हैं । वे सभी गायत्री की ही मूर्तियाँ हैं जो सेवन के योग्य हैं । गायत्री में वे सम्भ्रम से ही सेवित होती हैं ।

ब्रह्मत्वं चेदासुकामोऽस्युयास्व गायत्रीं चेल्लोककामोऽन्यदेवम् कामो ज्ञातः क्वीय पाद प्रवृत्त्या वादः को वा तृप्ति हीने प्रवृत्तिः ॥ बुद्धेः साक्षी बुद्धिगम्यो जयादौ गायत्र्यर्थः साऽनघो वेद सारः तद ब्रह्मैव ब्रह्मा तोपासकस्याप्येवं मंत्रः कोऽस्ति तंत्रे पुराणे । ॥१३ ॥

जात्यश्वः किं जातिमासुं सकामो गत्यभ्यासात्स्यष्टता मेति जातिः । ब्रह्मत्वासौ कः प्रयासो द्विजा नां यद गायत्र्या व्यज्यते चाष्टमेऽब्दे । ॥१४ ॥

ब्रह्मत्वस्य स्थापनार्थं प्रविष्टा गायत्रीयंतावतास्य द्विजत्वम् । कर्ण द्वारा ब्रह्म जन्म प्रदानायुक्तो वेदे ब्राह्मणो ब्रह्मनिष्ठः ।॥१६ ॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अर्थ- यदि किसी को ब्रह्मणत्व की प्राप्ति करने की इच्छा है तो उसको वेदमाता गायत्री की ही उपासना करनी चाहिये । यदि किसी लोक विशेष के प्राप्त करने की इच्छा हो तो अन्य देवों की उपासना करो । अपने चरणों में प्रवृत्ति करने से ही हार्दिक कामना का ज्ञान हो जाता है । जो तृप्तिहीन होता है, उसी की प्रवृत्ति होती है । इसमें कोई भी वाद नहीं है ।

यह बुद्धि की साक्षी है । गायत्री का जो अर्थ है, वह अघ रहित, अर्थ पूर्ण पवित्र और वेदों का साररूप है, इसके जप आदि करने में ही यह बुद्धि में गम्यमान होता है । ब्रह्मत्व प्राप्ति की जो उपासना करने वाला है, उसके लिये यह साक्षात् ब्रह्म ही है । गायत्री के समान तन्त्र और पुराण में अन्य कोई भी मन्त्र नहीं है । गायत्री मन्त्र ही सर्व शिरोमणि मन्त्र है । ।। १३ ।।

ज़ाति से जो अश्व है वह क्या कभी अपनी जाति की प्राप्ति करने की इच्छा वाला होता है ? उसकी जाति की स्पष्टता तो उसकी गति के अभ्यास से ही तुरन्त हो जाया करती है । इसी तरह ब्रह्मत्व की प्राप्ति के लिये द्विजों को क्या प्रयास होता है, अर्थात् कुछ भी नहीं क्योंकि वह तो आठवें वर्ष में उपनयन संस्कार होने पर गायत्री माता के द्वारा स्वयं ही व्यज्यमान हो जाया करता है । ।। १४ ।।

ब्रह्मत्व के स्थापन करने के लिये ही यह गायत्री प्रविष्ट होती है और तभी से द्विजत्व की इसके द्वारा प्राप्ति हुआ करती है । कानों के छिद्रों के द्वारा ब्रह्म जन्म का ज्ञान प्रदान किया जाता है अर्थात् गायत्री का उपदेश कानों में ही किया जाया करता है । जब दीक्षा-सम्पन्न होता है, तभी वह ब्रह्मनिष्ठ ब्राह्मण होता है- ऐसा ही वेदों में कहा गया है । ।। १६ ।।

तात्पर्य यह है कि जन्मजात ब्राह्मण कोई भी नहीं हो सकता है । यह तो मिथ्याभिमान ही होता है, क्योंकि ब्राह्मण का भले ही कोई पुत्र हो किन्तु वह ब्राह्मण एवं द्विज तब तक नहीं हो सकता है, जब तक उसे आठवें वर्ष में उपनयन संस्कार होने पर गायत्री की दीक्षा नहीं होती है । गायत्री मन्त्र ही ब्रह्मत्व प्रदान करने वाला होता है ।

ब्रह्मवर्चस् गायत्री उपासना से ही उपलब्ध होता है । इस उपासना से देव-तत्त्वों की मानव शरीर में निरन्तर वृद्धि होती है और शक्तिशाली व्यक्ति देवत्व की महिमा, महत्ताओं को उसी जीवन में उपलब्ध कर लेता है । उसमें दैवी विशेषताएँ प्रत्यक्ष परिलक्षित होने लगती हैं ।

सर्वं देवमयो विप्रो ब्रह्म-विष्णु शिवात्मकः ।
ब्रह्मतेजः समुद्भूतः सदा प्राकृतिको द्विजः ।।
ब्राह्मणैर्भुज्यते यत्र-तत्र भुङ्क्ते हरिः स्वयम् ।
तत्र ब्रह्मा च रुद्रश्च खेचरा ऋषयो मुनिः ।।
पितरो देवताः सर्वे भुञ्जन्ते नात्र संशयः ।
सर्व देव मयो विप्रस्तस्मात्तं नाव मानय ।।
ब्राह्मणं च जननी वेदस्याग्निं श्रुति च गाम् ।
नित्य मिच्छन्ति ते देवा यजितुं कर्म भूमिषु ।।

अर्थ- ब्राह्मण सर्व देवमय और ब्रह्मा, विष्णु एवं शिव स्वरूप है । द्विजगण यद्यपि प्राकृतिक अर्थात् पंचभूतमय ही होते हैं, तो भी गायत्री के ब्रह्म तेज से उनकी उत्पत्ति होती है । जिस स्थान पर गायत्री के उपासक ब्राह्मण भोजन किया करते हैं, वहाँ साक्षात् स्वयं श्री हरि ही भोजन किया करते हैं और वहाँ पर ब्रह्म, विष्णु, रुद्र-खेचर, ऋषि-मुनि, पितर और देवता सभी भोजन करके संतृप्त होते हैं- इसमें सन्देह नहीं है, ब्राह्मण जो सावित्री के परमोपासक हैं, वे सर्व देवमय होते हैं, इसलिये उनका कभी भी अपमान नहीं करना चाहिये । देवगण सदा यही कामना किया करते हैं, कि इस कर्मभूमि में ब्राह्मण वेदमाता गायत्री-अग्नि-श्रुति और गौ इन सबकी नित्य पूजा होती रहनी चाहिये ।

प्राचीनकाल में सभी प्रमुख देवता तथा ऋषि गायत्री उपासना के आधार पर अपनी शक्ति, सामर्थ्य प्राप्त करने, बढ़ाने तथा अक्षुण्ण रखने में समर्थ हुए हैं -

मनुश्चन्द्रः कुबेरश्च लोपामुद्रा च मन्मथः ।
अगस्तिरग्निः सूर्यश्च इन्द्रः स्कन्दः शिवस्तथा ।
क्रोध भट्टारको देव्या द्वादशामी उपासकाः ।।

"(१) मनु, (२) चन्द्र, (३) कुबेर, (४) लोपामुद्रा, (५) मन्मथ, (६) अगस्ति, (७) अग्नि, (८) सूर्य, (९) इन्द्र, (१०) स्कन्द, (११) शिव, (१२) क्रोध भट्टारक, (दुर्वासा)- ये बारह भगवती के उपासक हैं ।"

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ऐसा ब्रह्म तेज सम्पन्न व्यक्ति शाप, वरदान देने की स्थिति में भी होता है । राजा परीक्षित को तक्षक द्वारा काटे जाने का मृत्यु शाप बालक शृंगी ऋषि ने दिया था । यह ब्रह्म बल का ही चमत्कार था । शाप की तरह वरदान भी ऐसा ब्रह्मवादी दे सकता है और अपने ब्रह्मवर्चस् में अगणित मनुष्यों का असीम हित साधन कर सकता है ।

तक्षकेणापि दंष्टस्य प्रतीकारो हि तेक्षणात् ।
ब्रह्मशाप प्रसक्तस्य कलपान्ते स्यात्प्रतिक्रिया ।।
नरकान्निष्कृतिर्नास्ति तस्याभावान्न संशयः ।
एवं तद्वंशजाः सर्वे पीडयन्तेऽहर्निशं प्रिये ।।
नानाविध महोत्पातैयर्वास्यानसप्त पौरुषम् ।
तस्मान् ब्राह्मणं देवि नविमन्येत कर्दिचित् ।।

अर्थ- तक्षक के काटने पर भी तत्काल उसका प्रतिकार हो सकता है, किन्तु गायत्री-उपासक ब्राह्मण के शाप से ग्रसित का कल्पान्त में भी कोई प्रतिकार नहीं है । प्रलय के बिना नरक से छुटकारा नहीं है । ब्रह्म-शाप ग्रसित के सात पुरुषों तक अनेक उत्पातों से पीड़ित रहते हैं । अतएव कभी भी गायत्री - उपासक ब्राह्मण का अपमान न करना चाहिये ।

अन्यान्य देवताओं की उपासना को साधना शास्त्र में निरर्थक ही नहीं, हानिकारक भी बताया गया है और कहा गया है कि सनातन उपासना गायत्री ही है । जब देवता उसी की उपासना करके शक्ति प्राप्त करते हैं तो मूल का तिरस्कार कर पत्तों पर भटकने की भूल क्यों की जाय ? ऐसी भूल करने वालों की भर्त्सना भी की गई है ।

न विष्णुपासना नित्य वेदोक्ता कुत्रचित् ।
न विष्णुदीक्षा नित्यास्ति शिवस्यापि तथैव च ।।
गायत्र्युपासना नित्या सर्ववेदैः समीरिता ।
यया बिना त्वधःपातो ब्राह्मणस्यास्ति सर्वथा ।।
तावता कृतकृत्यव्यं नान्यापेक्षा द्विजस्य हि ।
गायत्रीमात्रनिष्णातो द्विजो मोक्षमवाप्नुयात् ।।
कुर्य्यादन्यन्न वा कुर्यादिति प्राह मनुः स्वयम् ।
विहाय तां तु गायत्री विष्णुपास्तिपरायणः ।।
शिवोपास्तिपरो विप्रो नरकं याति सर्वथा ।।

देवी भागवत, द्वादशस्कन्ध अध्याय ८

अर्थात् वेद में कहीं भी विष्णु उपासना का नियमित रूप से विधान नहीं किया है, न विष्णु दीक्षा ही नियमित है, वैसे ही शिव की भी । गायत्री उपासना तो सब वेदों ने नियमित रूप से प्रतिपादित की है जिसके बिना ब्राह्मण का भी अधःपतन हो जाता है । उतने से (गायत्री उपासना मात्र) से ही कृतकृत्यता हो जाती है, क्योंकि द्विज को और किसी की अपेक्षा नहीं रहती । गायत्री उपासना मात्र में निष्णात द्विज सचमुच मोक्ष प्राप्त कर सकता है, चाहे वह और कुछ करे या न करे ऐसा स्वयं मनु जी ने कहा है । उस गायत्री को छोड़कर विष्णु उपासना में तत्पर अथवा शिवोपासक ब्राह्मण सर्वथा नरक को प्राप्त करता है ।

ब्रह्मवर्चस् की प्राप्ति तो गायत्री के अवलम्बन से ही होती है । ऐतरेय ब्राह्मण में उल्लेख है -

ब्रह्मवर्चसं चेदामुकामोऽस्युपास्व
गायत्रीं चेल्लोक कामोऽन्यदेवम् ।

ब्रह्मवर्चस् पाने की इच्छा हो तो वेदमाता गायत्री ही की उपासना करनी चाहिए । अन्य कामनाओं के लिए अन्य देवताओं को पूजें ।

-ऐतरेय

गायत्री ब्रह्मवर्चसम्।।

-तैत्ति० ब्र; २ ।७ ।३ ।३

गायत्री ही ब्रह्मवर्चस है ।

तेजो वै ब्रह्मवर्चसं गायत्री । तेजस्वी ब्रह्मवर्चस्वी भवति ।।

गायत्री का तेज ही ब्रह्मवर्चस् है अर्थात् गायत्री की उपासना से ब्रह्मवर्चस् की प्राप्ति होती है । इसके जप करने से पुरुष तेजस्वी तथा ब्रह्मवर्चस्वी बन जाता है ।

-ऐत० ब्रा; १ ।५ ।८

तेजो ब्रह्मवर्चसं गायत्री ।।

-गायत्री का तेज ही ब्रह्मवर्चस् है ।

-कौषि० ब्रा० १० ।२ ।९

गायत्र्येव तपोयोगः साधनं ध्यानमुच्यते ।
ब्रह्मवर्चस् रूपा च नातः किंचित ब्रह्त्तरम् ।।

गायत्री ही तप है । गायत्री ही योग है । गायत्री ही ध्यान और साधना है । गायत्री ब्रह्मवर्चस् रूपा है, इससे बढ़कर सिद्धिदायक साधना और कोई नहीं है ।

-अत्रि संहिता

गायत्री मन्त्र में विश्व-ब्रह्माण्ड के अधिपति परमात्मा के जिस रूप की उपासना की गयी है, वह

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है सविता । सविता अर्थात् सब को प्रकाशित करने वाला जीवन सत्ता का मूल आधार । उपासक द्वारा सत्ता के भर्गतेजस् का ध्यान करते हुए परमात्मा से सद्बुद्धि की याचना की गयी है । इस प्रकार गायत्री साधना के दो पक्ष हैं एक सद्ज्ञान ब्रह्मविद्या, दूसरा तेज धारण योग विद्या । शास्त्रों में गायत्री की ज्ञानगरिमा के साथ-साथ उसके तेजस्वी पक्ष का भी उल्लेख किया गया है । देवी भागवत में तो ब्रह्मतेज प्राप्त करने के लिए गायत्री उपासना का ही निर्देश दिया गया है ।

शास्त्रकार में गायत्री को एक साथ ब्रह्मविद्या और ब्रह्मशक्ति बताते हुए कहा है ।

यो ता अग्नाग्नि गायत्री स निदानेन ।

-शत० १ ।८ ।२ ।१५

अर्थात् गायत्री को ही निदान (ब्रह्मज्ञान) अग्नि ब्रह्मशक्ति का रूप समझना चाहिए ।

गायत्री वा इदꣳसर्व भूतं यदिदकिञ्च

-छान्दोग्य ३ ।१२ ।१

इस जड़ चेतन जगत में गायत्री ही शक्ति रूप में विद्यमान है ।

ब्रह्मण्य तेजो रूपा च सर्व संस्कार रूपिणी पवित्र रूपा सावित्री वांछतिह्यात्म शुद्धये ।

-देवी भागवत

गायत्री 'ब्रह्म तेज' रूप है । पवित्रता एवं संस्कार रूपिणी है । उससे आत्म-शुद्धि होती है ।

इस ब्रह्मतेज को ही जीवनी शक्ति, प्राण ऊर्जा, कुंडलिनी शक्ति आदि नामों से पुकारा गया है । ब्रह्मतेज इसी ब्रह्माग्नि की प्रतिक्रिया है । ब्रह्माग्नि और ब्रह्मवर्चस् शब्दों में लेखन या उच्चारण का ही अतंर है । तथ्यों की दृष्टि से दोनों एक ही हैं ।

गायत्री उपासना द्वारा साधक जो ऊर्जा प्राप्त करते हैं वे अपने ढंग से अनोखे शक्ति सम्पन्न हो जाते हैं । उनकी समर्थता अन्य किसी सामर्थ्य के साथ नहीं आंकी जा सकती । सामान्य जीवनक्रम में भी शक्ति के बिना काम नहीं चलता तो फिर आत्मिक प्रयोजनों की पूर्ति के लिए उसके अभाव में कैसे काम चल सकता है शक्ति का स्वरूप भिन्न हो सकता है पर उसकी आवश्यकता तो रहती है । आत्मिक विकास का भौतिक पक्ष हो अथवा आत्मिक, उसमें आगत अवरोधों से जूझने के लिए मनोबल संकल्प शौर्य साहस चाहिए ही । अध्यात्म की भाषा में इसे ही ब्रह्मवर्चस् कहते हैं और भौतिक क्षेत्र में आगे आने वाले अवरोधों से जूझने के लिए जीवट की आवश्यकता होती है इसलिए ईश्वर उपासना की तरह बल की उपासना भी आवश्यक है

वर्चस् की साधना आत्मबल उभारने के लिये

उपनिषद का ऋषि कहता है- "नयमात्मा बल हीने लभ्यो" यह आत्म दुर्बलों को मिल ही नहीं सकता ।

विभिन्न बलों की साधना विभिन्न क्षेत्रों में अपने-अपने ढंग से की जाती है । साधन बल भी एक बल है । प्रगति और सुख-सुविधा के लिए साधनों का संचय भी प्रकारान्तर से शक्ति साधना का ही एक रूप है । पर अभाव एक ही बात का रह जाता है कि यह सब उथली ऊपरी सतह पर ही किया जाता है । उसमें क्रिया और बुद्धि का ही समन्वय रहता है । यदि इसमें उच्चस्तरीय भाव सम्वेदनाओं का भी समावेश रहा होता तो निश्चित रूप से यही प्रयत्न आकाश में टँगे रवि-शशि और तारक मण्डल की तरह चमचमाते-जगमगाते दृष्टिगोचर होते ।

ऊपरी सतह पर जो हलचलें होती हैं वे अपने प्रयास साधनों के अनुरूप स्वल्प परिणाम ही उत्पन्न करती हैं । मोटर का इन्जन खराब हो । पैट्रोल की टंकी खाली हो तो भी उसे धक्के लगाते हुए कुछ दूर ले जाया जा सकता है । सवारियाँ उसके भीतर छाया का लाभ ले सकती है, पर उस गाड़ी की द्रुतगति का लाभ तो सही इन्जन और आवश्यक पैट्रोल होने पर ही सम्भव हो सकता है । शरीर और मन के समन्वित प्रयत्नों से निर्वाह प्रक्रिया तो पूरी होती रह सकती है, पर किसी दिशा में महत्त्वपूर्ण प्रगति करने के लिए उसमें गहन अन्तराल का, संकल्प शक्ति का, आत्म-विश्वास का, अटूट तत्परता का समावेश होना चाहिए । यह सभी उच्चस्तरीय तत्त्व शरीर और मन के क्षेत्र से ऊपर हैं, वे अन्तःकरण की गहरी परतों में ही भरे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हैं । और वहीं से उभर कर ऊपर आते हैं । यदि वह मर्म स्थल प्रसुप्त स्थिति में पड़ा हो तो फिर हर पराक्रम बहुत ही उथले स्तर का रहेगा और उस प्रयास का परिणाम भी अति स्वल्प निकलेगा ।

पैनी तलवार से युद्ध मैदान में लड़ा जाता है और सिर भी उसी से कटते हैं । इस प्रत्यक्ष तथ्य से कोई इनकार नहीं कर सकता । पर इतना ही मान बैठना नासमझी होगी । तलवार चलाने के लिए कलाई की मजबूती और मस्तिष्क की अभ्यस्त क्रिया-कुशलता आवश्यक है । इसके बिना बढ़िया तलवार भी कुछ काम न कर सकेगी । दुर्बल भुजाएँ न तो उसका भार सँभाल सकेंगी और न प्रहार कर सकेंगी । इतना ही नहीं यदि चलाने की कुशलता और सूझ-बूझ अभ्यास में नहीं उतारी गई है तो भी वह शस्त्र निरर्थक ही सिद्ध होगा ।

ऊपर की पंक्तियों में तलवार रूप साधन और हाथ रूप मस्तिष्क की मजबूती से युद्ध में सफलता मिलने की बात कही गई है, पर थोड़ा विचार करने पर एक नया तथ्य और भी उभर कर आता है कि सैनिकोचित शौर्य, साहस का अभाव रहा, अन्तःकरण में भीरुता छाई रही, उत्कट देश-भक्ति का स्थान उदासीनता ने ले लिया तो अन्तराल की स्थिति खोखली रह जायगी । ऐसी दशा में तो वह दुर्बलता अपने आप में संकट बन जायगी और उसके रहते तलवार की अच्छाई और हाथ की मजबूती भी कारगर सिद्ध न होगी । भीतर से हड़बड़ाया हुआ डरता, काँपता सैनिक युद्ध में विजयी होकर नहीं लौट सकता ।

शक्ति का स्रोत अन्तराल है । समर्थता और दुर्बलता का वास्तविक मूल्याकंन इसी स्तर की स्थिति को देखकर किया जा सकता है । बलवान वही है जिसकी अन्तरात्मा बलिष्ठ है । इतिहास साक्षी है कि आश्चर्यचकित कर देने वाली अति महत्वपूर्ण सफलताएँ न तो साधनों के सहारे मिली हैं और न बुद्धि कौशल का ही उसमें बहुत बड़ा हाथ रहा है । चमत्कार संकल्प-शक्ति ही उत्पन्न करती है और यह संकल्प बल उच्चस्तरीय आदर्शों का समन्वय हुए बिना उत्पन्न हो ही नहीं सकता । ललक-लिप्सा के वशीभूत होकर भी लोग उन्नति की दौड़-धूप करते हैं, पर वह न तो स्थिर होती है और न गहरी । अधिक लाभ, बहुत जल्दी मिलने का उत्साह जब तक रहता है तभी तक वे प्रयत्न चलते हैं जैसे ही सफलता श्रम-साध्य, समय-साध्य एवं धूमिल दिखाई दी वैसे ही हाथ-पैर फूल जाते हैं । उत्साह ठण्डा होने पर काम को छोड़ बैठने के अतिरिक्त और कोई चारा ही नहीं रह जाता । हर अवरोध से जूझते हुए, बिना थके झुके प्रयत्नरत रहने की स्थिति अन्तराल की आस्थावान् संकल्प-शक्ति के सहारे ही सम्भव होती है । महत्वपूर्ण कार्यों की सफलता पूर्णतया उसी आन्तरिक प्रखरता के, आत्म-बल के, ऊपर निर्भर रहती है । शक्ति का उद्गम स्रोत अन्तःकरण से ही उभरता है । शरीर और मस्तिष्क में तो उसका प्रवाह भर चलता दीखता है ।

गाँधी जी का शरीर बहुत दुर्बल था । वे मात्र ९६ पौंड के थे । शारीरिक दृष्टि से उनकी सामर्थ्य उपहासास्पद ही गिनी जायगी । उन्हें तो कोई किशोर भी दौड़ने या लड़ने की चुनौती दे सकता था, पर उनकी शक्ति का मूल्याकंन जिनने किया है वे जानते हैं कि पर्वत से ऊँचा और समुद्र से विस्तृत उनका व्यक्तित्व था । उनकी प्रचण्ड सामर्थ्य की टक्कर अँग्रेज सरकार से हुई और इस कुश्ती में वे ही जीते । इतनी बड़ी कुश्ती तो बड़े से बड़ा पहलवान भी नहीं लड़ सकता था । साधन बल से भी यह युद्ध जीतना कठिन था । आत्म-बल ने भारत के स्वतन्त्रता संग्राम में जो भूमिका निवाही उसे देखते हुए स्पष्ट है कि संसार की सबसे बड़ी सामर्थ्य यही है । आत्म-बल से बढ़कर और कोई बल इस संसार में है ही नहीं ।

व्यक्तिगत जीवन की गरिमा उस आत्म-बल पर आधारित है जिसमें आदर्श और संकल्प का समान रूप से समन्वय होता है । सदुद्देश्य में भाव-भरी श्रद्धा और कर्त्तव्य पालन में प्रचण्ड निष्ठा का समन्वय होने से इस आत्म-शक्ति का उदय होता है । उसी के सहारे लोभ और भय के अवरोधों को हटाते हुए उच्चस्तरीय आदर्शों को पूरा कर सकना सम्भव होता है । समाज सेवा की परमार्थ परायणता से ही कोई व्यक्ति यशस्वी होता है । लोक-सम्मान और जन सहयोग पाकर लोग ऊँचे उठते और सफल बनते हैं । यशस्वी और जन-नायक बनने की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आकांक्षा भी बिना आत्म-बल के पूर्ण नहीं हो सकती । परमार्थ प्रवृत्ति गहरी और उच्चस्तरीय होनी चाहिए तभी उसका चिरस्थायी सत्परिणाम निकलेगा । हथकण्डे बाजी से कुछ समय के लिए सस्ती वाहवाही की लूटखसोट हो सकती है, पर उतने भर से कोई काम बन नहीं सकता । धूर्तता के बल पर समेटी गई प्रशंसा में स्थायित्व कहाँ होता है ? काठ की हाँडी में खिचड़ी कहाँ पक पाती है ?

अपने अनुकरणीय आदर्श छोड़ जाने वाले कुछ महत्त्वपूर्ण कार्य कर गुजरने वाले व्यक्तित्वों का विश्लेषण किया जाय तो उनमें सभी में संकल्प-बल की विशेषता पाई जायगी । कहना न होगा कि ओछे, दुष्ट, स्वार्थी मन भूमि में वह संकल्प-शक्ति विकसित हो ही नहीं सकती जिसकी गर्मी से पर्वत गलने और पानी की तरह बहने लगते हैं ।

आतंकवादी दुष्ट, दुरात्मा भी बलिष्ठता का डंका बजाते और ढिंढोरा पीटते देखे गये हैं । उद्दण्डता से डर कर कई दुर्बल प्रकृति के व्यक्ति डरते , घबराते और उनका लोहा मानते भी देखे गये हैं । इस दुष्ट और दुर्बल संयोग से उत्पन्न अवांछनीय प्रतिक्रिया को प्रायः उद्दण्डता की शक्ति के रूप में माना समझा जाने लगा है । वह दुःखद और अवास्तविक मान्यता है । अनैतिक आतंक में यदि कुछ सामर्थ्य है भी तो वह यत्किंचित विनाश कर सकने भर की है । सृजन का कोई तत्व उसमें रत्ती भर भी नहीं है । उपलब्धियाँ तो सृजन की होती हैं । लाभ तो उन्हीं का मिलता है । व्यक्तित्व और कर्तृत्व तो उन्हीं के सहारे निखरता है । ध्वंस को शस्त्र बनाकर चलने वाले वैसा कुछ पा नहीं सकते । वे दूसरों को हानि पहुँचा सकते हैं । प्रथम आक्रमण करने वाला सदा लाभ में रहता है । पर वह लाभ न स्थायी होता है और न फलदायक । अन्ततः वह आक्रमणकारी के लिए ही अभिशाप सिद्ध होता है । माचिस की तीली का अस्तित्व नगण्य है, पर अग्निकाण्ड तो वही रच सकती है । लोहे की एक छोटी सी कील भी किसी का प्राण हरण कर सकती है । इन ध्वंस सामर्थ्य से आक्रमणकारी का कोई लाभ नहीं होता । तीली अग्निकाण्ड तो करती है, पर उसी आग में जलकर उसे स्वयं भी समाप्त होना पड़ता है । पागल कुत्ता कइयों को काट सकता है, पर खैर उसकी भी नहीं है । प्रकृति दण्ड अर्थात् दुष्टता के विरुद्ध उभरे आक्रोश से उसे मृत्यु मुख में ही जाना पड़ता है जब कि काटे हुए लोग दवादारू के सहारे अच्छे भी हो जाते हैं ।

यहाँ चर्चा वास्तविक और अवास्तविक बलिष्ठता की हो रही थी । आतंक, अनीति और धूर्तता का प्रश्रय लेकर भी यत्किंचित बलिष्ठता उपार्जित करते हुए लोग देखे गये हैं । इसमें कइयों का मन इस सस्ती उपलब्धि के लिए मचलता है और वे दुष्टता के सहारे बलिष्ठ बनने का प्रयत्न करते हैं । यहाँ यह हजार बार समझ लिया जाना चाहिए कि यह अवलम्बन न तो सरल होता है और न सफल । दुष्टता अपनाकर सम्मान भी गंवाया जाता है और सहयोग भी । घृणा, तिरस्कार का ताना-बाना अपने चारों ओर बुन डालने वाला व्यक्ति मित्र विहीन बनता चला जायगा । घिनौने व्यक्ति के दो ही साथी होते हैं एक पतन दूसरा विनाश । आतंकवादी बलिष्ठता के दुष्परिणामों को जितनी जल्दी समझ लिया जाय उतना ही उत्तम है ।

कुटिलता के बल पर नहीं, प्रगति सदाशयता और सज्जनता की नीति अपनाने से ही सम्भव होती है । सृजन की सामर्थ्य ही वास्तव शक्ति है । उसी को विकसित करके मनुष्य गुण, कर्म स्वभाव की उत्कृष्टता प्राप्त करता है । व्यक्तित्व को निखारने और सुसंस्कृत बनाने के प्रयत्न ही किसी मनुष्य में समर्थ सशक्तता उत्पन्न करते हैं । उसी से गरिमा बढ़ती है । सृजनात्मक प्रयोजनों में यही क्षमता काम आती है । लोकहित उसी से सम्भव होता है । सेवा साधना उसी के सहारे बन पड़ती है । लोक-सम्मान से लेकर आत्म-सन्तोष तक के अनेकानेक वरदान उसी के सहारे उपलब्ध होते हैं भविष्य निर्माण का एकमात्र उपाय आत्म-निर्माण ही माना गया है । संचित कुसंस्कारों से जूझना उन्हें उखाड़ फेंकना प्रबल पुरुषार्थ कहा जाता है । दूसरों से लड़ने की अपेक्षा अपने से लड़ना आन्तरिक शत्रुओं को परास्त करना अधिक कठिन है । आत्म-शोधन के मोर्चे पर लड़ना और विजय प्राप्त करना बाह्य जगत की किसी भी सफलता की तुलना में अधिक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

श्रेयस्कर है । यह लड़ाई प्रचण्ड आत्म-बल के सहारे ही लड़ी जा सकती है । ब्रह्मवर्चस् को उपार्जित करके मनुष्य सामान्य से असामान्य और नर से नारायण बनने का पथ-प्रशस्त करता है ।

बाह्य जीवन में श्रेय, सहयोग पाने के लिए बीज रूप से स्वयं गलना पड़ता है । परमार्थ प्रयोजनों में सच्चे मन से लग सकना उसी के लिए सम्भव हो सकता है जो अपनी तृष्णाओं पर अंकुश लगा सके । महत्वाकांक्षाओं का दमन करने वाला अपनी क्षमताओं तथा आदर्शों की साधना में लगा सकता है । जो स्वयं ही आकांक्षाओं की आग में जल रहा है उसे तो दूसरों के ईंधन की तरह उपलब्ध करने का ही मन रहेगा । जो अपने को बादल की तरह निचोड़ सके, वही किसी के कुम्हलाये पौधे को नव-जीवन दे सकने में समर्थ हो सकता है । स्वार्थों पर अंकुश लगा सकना, साधु, ब्राह्मण जैसा मितव्ययी जीवन-क्रम अपना सकना इस अहंलिप्सा के युग में कितना कठिन है यह किसी से छिपा नहीं । नदी प्रवाह से ठीक उलटी दिशा में केवल साहसी मछली ही छरछराती हुई चल सकती है । हाथी जैसे विशालकाय प्राणी तक उसमें बहते चले जाते हैं । मछली जैसी प्रवाह के विपरीत चलने की साहसकिता निस्सन्देह असाधारण ही कही जा सकती है । ऐसा अद्‌भुत शौर्य, साहस प्रदर्शित कर सकने वाले ऐतिहासिक महामानव कहलाते और युग समस्याओं को सुलझाते हैं । यह गौरव प्राप्त करने की मनःस्थिति और परिस्थिति बना सकना केवल उन्हीं के लिए सम्भव होता है जो आत्म-बल का महत्व समझते और उसे उपलब्ध करने का प्रयत्न करते हैं । आदर्शवादिता के मार्ग पर चलना, लोक मान्यता के अनुसार घाटे का काम है । इसलिए तथाकथित स्वजन सम्बन्धी एक स्वर से उधर कदम बढ़ाने से चित्रविचित्र तर्क गढ़कर रोकते हैं । शत्रुओं का प्रतिरोध सरल है, पर स्वजनों के आग्रह को अनसुना करने वाली एकाग्र आदर्श-निष्ठा का परिचय दे सकना अति दुस्तर है । इस अग्नि परीक्षा में सफल हो सकना आत्म-बल के बिना सम्भव नहीं हो सकता । आन्तरिक प्रलोभनों और परिजनों के आग्रहों की उपेक्षा कर सकना जिस प्रचण्ड आदर्शवादिता के सहारे सम्भव होता है वह आत्म-बल का ही दूसरा रूप है ।

व्यक्तित्व के परिष्कार और देवताओं जैसा लोक-व्यवहार ही मानव जीवन की सफलता का एकमात्र आधार है । वह उत्कृष्टता के प्रति असीम श्रद्धा रख सकने पर ही सम्भव होता है । आये दिन के आँधी-तूफानों से ज्वार-भाटों से आत्मवादी दृष्टिकोण के दीपक को बुझने न देना भँवर से नाव खेकर ले जाने की तरह कठिन है । यह भव-बन्धनों, को लौह शृंखला को अपने ही नाखूनों से काटने जैसी कठिन प्रक्रिया है । इसे अटूट धैर्य और असीम साहस के सहारे ही सम्पन्न किया जा सकता है । मानवी-गरिमा को प्राप्त कर सकने की ललक तो बहुतों को रहती है, पर उसे पा सकने में आत्म-बल सम्पन्न शूर-वीर ही सफल होते हैं ।

भौतिक जीवन में चिरस्थायी सफलताएँ प्राप्त करने के लिए भी आत्म-बल की, संकल्प बल की आवश्यकता पड़ती है । विद्यार्थियों में से अनेकों को अरुचि और आवारागर्दी की आदत मूर्खता और पिछड़ेपन के गर्त में फेंक देती है । साधन रहते हुए भी कितने ही लड़के पढ़ नहीं पाते और बेकार के बहाने बनाकर शिक्षा लाभ से वंचित रह जाते हैं । इस दुर्भाग्य से जूझ सकना मनस्वी और दूरदर्शी छात्रों के लिए ही सम्भव होता है । व्यायामशाला में क्षणिक उत्साह लेकर कितने ही प्रवेश करते हैं किन्तु उस कठिन मार्ग से खिन्न होकर जल्दी ही छोड़ भी बैठते हैं । नित नये कार्य आरम्भ करने वाले और कुछ ही समय में उसे छोड़ बैठने वाले नर-वानरों की बहुत बड़ी मण्डली सर्वत्र विचरती देखी जा सकती है ।

कृषि, व्यवसाय, शिल्प, कला आदि के सभी क्षेत्रों में अथक परिश्रम, प्रचण्ड-साहस, सन्तुलित विवेक और समुचित धैर्य की आवश्यकता होती है । आलसी, प्रमादी अधीर और आशंकाग्रस्त मनुष्य सामान्य सांसारिक प्रयोजनों तक में सफल नहीं हो पाते । आन्तरिक दुर्बलताएँ अपनी सहेली असफलताओं को निमंत्रण दे देकर बुला लाती हैं। व्यक्तित्व का परिष्कार ही सही-लोक श्रद्धा और आत्म-सन्तोष देने वाली महानता न सही-स्वार्थ साधन की दृष्टि से सम्पन्नता और सफलता तो हर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

किसी को अभीष्ट है ही । उसका आधार भी मनोबल बिना नहीं बनता । जहाँ इसका अभाव होगा वहाँ न स्वार्थ सधेगा और न परमार्थ । आन्तरिक अशक्ति तो बाह्य जीवन में अभिशाप ही बरसाती है । ऐसे व्यक्ति अपंग, असहाय की तरह जीते और रोते-कलपते बेमौत मरते हैं । आत्मबल का अभाव इतना बड़ा दुर्भाग्य है कि इसके कारण पग-पग पर खिन्नता, उद्विग्नता की व्यथा सहन करनी पड़ती है । ऐसे लोगों का न लोक सधता है, न परलोक । उनका न स्वार्थ सिद्ध होता है न परमार्थ बनता है ।

परिस्थितियों का अपना कोई अस्तित्व नहीं, वे मनःस्थिति के अनुरूप बनती हैं । अप्रत्याशित कोई प्रतिकूलता सामने आ खड़ी हो तो भी वे देर तक ठहरती नहीं । रोग कीटाणु अशुद्ध रक्त में ही अपना अड्डा जमा पाते हैं । शुद्ध रक्त तो उन्हें बात की बात में खदेड़ कर बाहर कर देता है । प्रतिकूल परिस्थितियाँ मनःस्थिति के वृक्ष पर ही अमरबेल की तरह छाई और फलती-फूलती रहती हैं । महामानवों की जीवन-गाथाओं पर दृष्टि डालने से प्रतीत होता है कि उनमें से कोई भी जन्मजात एवं परम्परागत अनुकूलता लेकर नहीं जन्मा । हर एक को अपना रास्ता आप बनाना पड़ता है । लोगों ने उनको कन्धे पर नहीं चढ़ाया, वरन् वे स्वयं ही अपनी विशेषताओं के आधार पर हर किसी की आँखों के तारे बने और हृदयों में जा विराजे हैं । अनुकूलताएँ बरसी नहीं, वरन् अपने हाथों उनने उन्हें गढ़ा है । चलना अपने ही पैरों पड़ता है, दूसरों के कन्धों पर लद कर चल सकना किसके लिए कब तक सम्भव हो सकता है ?

आत्म-बल की आवश्यकता हर क्षेत्र में है । आत्म-बल उसकी प्रेरणा से उसी तरह उभरते हैं जैसे सौर-मंडल के ग्रह-उपग्रह सूर्य की आभा से प्रकाशवान् दीखते हैं । जीवन को जीवितों की तरह जीना हो तथा उसमें कुछ और आनन्द लेना हो तो आत्म-बल सम्पादित करने की उपेक्षा की नहीं जा सकती । बलिष्ठता की अनुगामिनी ही सम्पन्नता है । अस्तु, बलों में परम बल आत्म-बल के ब्रह्मवर्चस् उपार्जन को ही प्राथमिकता दी जानी चाहिए ।

शास्त्रकारों ने 'बल उपास्य' का निर्देश इसीलिए दिया है और कहा है कि आत्मोत्कर्ष का लाभ बलहीनों को नहीं मिल सकता । सच भी है बलहीनों को न आत्मा मिल सकेगी और न परमात्मा । भौतिक जीवन में भी उनके पल्ले कुछ नहीं पड़ता । इस संसार के बाजार में सम्पदाएँ विभूतियाँ और उपलब्धियाँ समर्थता के मूल्य पर ही खरीदी जाती हैं ।

जीवन की सार्थकता 'जीवट' के साथ ही है । जीवनी शक्तियुग को ही जीवित कहा जा सकता है । इसके अभाव में मनुष्य को जीवित मृतक ही कहा जा सकता है । खाने सोने की प्रक्रिया तो पेड़-पौधे भी पूरी करते हैं । जीवाणुओं में भी गतिशीलता होती है पर उन्हें जीवितों का श्रेय सम्मान तो नहीं मिलता ।

चेतना की बलिष्ठता को अध्यात्म की भाषा में प्राण के नाम से पुकारा जाता है । प्राण अर्थात् जीव आत्मा की वह क्षमता है जो शरीर में ओजस् चिन्तन में तेजस् और आस्थाओं वर्चस् के नाम से जानी जाती है । इस अंतःक्षमता को, आत्मशक्ति को प्राण तत्व को अधिकाधिक मात्रा में संचय करने वाला ही जीवन का आनन्द लेता और उसे सार्थक बनाता है ।

गायत्री विद्या को प्राण तत्व के अभिवर्धन का आधारभूत साधन माना गया है । उसका तत्त्व दर्शन और उपासना प्रकरण दोनों ही इस आवश्यकता की पूर्ति करते है । भौतिक विज्ञान के सहारे भौतिक साधन बढ़ते हैं । आत्म विज्ञान के सहारे आत्मिक विशिष्टताओं को उभारा और सुदृढ़ किया जा सकता है । आत्मिक क्षेत्र में प्राण शक्ति भर देने की विद्या को गायत्री कहा गया है ।

वृहदारण्यक, ५ । १४ । ४ में उल्लेख है -

सैषा गायत्री प्राणः अतो गाथत्र्यां जगत्प्रतिष्ठतम् । यस्मिन् प्राणे सर्व देवा एक भवन्ति । सर्वे वेदा- कर्माणि तत्फलं च, सैव गायत्री प्राण रूपा सती जगत आत्मा सा हैषा गयांस्तत्रे-त्रातवती, के पुनर्गयाः ? प्राणाः वागादयो वैभवा..... गयत्राणाद् गायत्रीति प्रथिता ।

अर्थात् यह गायत्री ही प्राण है। अतः वही समस्त विश्व में व्याप्त है । इस प्राण में ही समस्त देवता सन्निहित हैं । सब वेद और समस्त कर्मों का फल उससे प्राप्त होता है । यह प्राण रूप गायत्री ही जगत की आत्मा है । वाणी नेत्र आदि समस्त

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इन्द्रियों में समाविष्ट प्राण की संरक्षक होने के कारण उसे गायत्री कहा जाता है ।

प्राणो वै बलं । यत्प्राणे प्रतिष्ठितं तस्मादाहुर्बलं । सत्यादोजीयः इत्येवम्वैषा गायत्र्यध्यात्म प्रतिष्ठिता । साह्यैषा गयांस्तत्रे । प्राणा वै गयास्तत्प्राणांस्तत्रे । तद्यद् गयांस्तत्रे गायत्री नाम् ।

-शतपथ ब्राह्मण

अर्थात् प्राण ही बल है । बल और प्राण एक ही है । परब्रह्म प्राणों का भी प्राण है । गायत्री का अध्यात्म यह प्राण ही है । प्राणों का परिष्कार करने की शक्ति सम्पन्न होने के कारण उसे गायत्री नाम दिया जाता है ।

प्राण शक्ति की आत्म-बल की अभिवृद्धि सामान्य मनुष्य में असामान्य क्षमताएँ विकसित करती है । उसे मूर्च्छित से जाग्रत बनाती है । आन्तरिक समर्थता से सम्पन्न मनुष्य भौतिक और आत्मिक दोनों ही क्षेत्र में सर्वतोन्मुखी प्रगति कर संकने में सफल बन सकता है ।

गायत्री विद्या की उच्च स्तरीय साधना से प्राणशक्ति की अभिवृद्धि होती है । अस्तु, उसके प्रभाव परिणाम को ब्रह्मवर्चस् कहा जाता है । गायत्री के वरदान ब्रह्मवर्चस् को प्राप्त कर सकने वाला हर क्षेत्र में विभूतिवान बनता है । इस तथ्य का प्रतिपादन छान्दोग्य उपनिषद में इस प्रकार मिलता है-

स य एवमेतद्गायत्रं प्राणेषु प्रोत वेद प्राणी भवति सर्वमायुरेति ज्योग्जीवति महान्प्रजया पशुभिर्भवति महान्कीर्त्या महामनः स्यात्तद्व्रतम् ।।

छान्दोग्य २ । १० । २

अर्थात् यह गायत्री तत्व समस्त प्राणों में विद्यमान है । जो उसकी उपासना करता है वह विद्वान, प्राणवान्, दीर्घजीवी, यशस्वी, सुसम्पन्न, उदार और महामानवी बनता है ।

वर्चस् की आत्मबल की आवश्यकता हर क्षेत्र में है भौतिक किन्तु आध्यात्मिक । आत्मबल जिस प्राणशक्ति के संचय से संपादित होता है, वह गायत्री महाशक्ति का अवलम्बन लेकर अर्जित की जा सकती है । गायत्री की प्रेरणा से आत्मबल ब्रह्मवर्चस् इसी तरह उभरता है, जैसे कि सौर मण्डल के ग्रह-उपग्रह सूर्य की आभा से प्रकाशवान दिखाई देते हैं । जीवन को जीवितों की तरह प्राणवानों की तरह, जीना हो, उसमें कुछ रस लेना हो आनन्द लेना हो, सोद्देश्य जीवन जीकर अर्जित करना हो तो आत्मबल ही संपादित किया जाना चाहिए । बलिष्ठता की अनुगामिनी ही सम्पन्नता है । अस्तु, बलों में परमबल आत्मबल के उपार्जन को ही प्राथमिकता दी जानी चाहिए हम 'वर्चस्' की उपासना करें, गायत्री का ब्रह्मतेज धारण कर प्राणवान बनें, इसी में दूरदर्शिता है ।

गायत्री और सावित्री की समन्वित साधना ही ब्रह्मवर्चस्

यह विश्व विराट् का जो भी स्वरूप परिलक्षित होता है उसमें मूलतः दो तत्वों का अनिवार्य संयोग है । एक है चेतना और दूसरा है पदार्थ । इसी सत्य को शास्त्रकारों ने ब्रह्म और प्रकृति समझाने का प्रयास किया है । शिव और शक्ति ईश्वर और माया आदि के नामों से भी इसी तथ्य की व्याख्या की गयी । राम-सीता, कृष्ण-राधिका के विग्रह की तात्विक विवेचना में भी इसी सिद्धान्त की झलक पायी गई है ।

यह दोनों तत्व अपने-अपने क्रम से क्रियाशील रहते हैं । दोनों के अपने-अपने नियम हैं, सिद्धान्त हैं । चेतना से सम्बन्धित बोध जिससे होता है उसे ज्ञान तथा पदार्थ का बोध जिससे होता है उसे विज्ञान कहते हैं ।

जड़ चेतना का, ज्ञान विज्ञान का विस्तार गायत्री मन्त्र के आलोक में भली प्रकार देखा समझा जा सकता है । ज्ञान और विज्ञान की उभयपक्षीय दिव्य धाराएँ गायत्री और सावित्री के रूप में लोक व्यवहार में आती हैं । इनका अवलम्बन यदि ठीक तरह किया जा सके तो मनुष्य देवत्व के उच्च शिखर पर पहुँच सकता है । आत्म-कल्याण और लोक-कल्याण के दोनों ही पक्ष स्वार्थ-परमार्थ इससे ठीक तरह सध सकते हैं ।

गायत्री को ही ब्रह्म विद्या कहा गया है । ऋतम्भरा प्रज्ञा उसी का नाम है । जीवन मुक्ति, भाव, समाधि का आनन्द उसी से मिलता है । योग और

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तप द्वारा उसी राजहंस, परमहंस जैसी मनोभूमि को प्राप्त किया जाता है । यही जीवन का परम लक्ष्य है । इसी की पूर्णता को मुक्ति कहते हैं । आत्मा और परमात्मा का मध्यवर्ती मिलन संयोग इसी महान उपलब्धि का नाम है । इसी को चरमोत्कर्ष कहते हैं । परमानन्द की प्राप्ति इसी सोपान तक पहुँचने वालों को उपलब्ध होती है ।

भौतिक प्रयोजनों के लिए की गई साधना को सावित्री उपासना कहा जाता है । उसका प्रयोगात्मक रूप कुण्डलिनी है । इसके साधना विधानों को तन्त्र विधान के अन्तर्गत लिया जाता है । योग विज्ञान विशुद्ध रूप से भाव विज्ञान है । उसके समस्त क्रिया-कलाप आत्म शोधन से संचालित हैं । भाव पक्ष ही उसमें प्रधान है । यम नियम के द्वारा चरित्र चिन्तन का और आसन प्राणायाम द्वारा स्वास्थ्य संरक्षण का उपक्रम किया जाता है । इसके बाद उच्चस्तरीय उत्तरार्ध प्रत्याहार धारणा ध्यान और समाधि का आता है । यह चारों ही विधान विशुद्ध रूप से चिन्तनपरक, ध्यानपरक हैं । इस सन्दर्भ की समस्त क्रियाएँ मानसिक होती हैं । धारणा ही उसमें प्रधान है । धियः तत्व का इस उपक्रम से क्रमिक अभिवर्धन होता है । गायत्री उपासना की परिधि यही है । सावित्री उपासना के प्राण ऊर्जा को उभारा जाता है और उसे परिपुष्ट बना कर इस योग्य बनाया जाता है कि भौतिक प्रयोजनों की पूर्ति में उसका समुचित लाभ लिया जा सके ।

सावित्री की कुण्डलिनी साधना का केन्द्र बिन्दु यही प्राण तत्व है । यह चेतन के साथ जुड़ा होने और प्रकृतितः ऊर्जा वर्ग का होने से आधा जड़ और आधा चेतन है । यों प्राण का प्रभाव एवं सम्बन्ध चेतना के साथ भी है । किन्तु वह मूलतः शरीर के अंग प्रत्यंगों में सन्निहित है । कोशिकाओं के मध्यवर्ती नाभिक से लेकर हृदय और मस्तिष्क में मुखर रहने वाले जीवन तत्व में उसी का दर्शन, अनुभव एवं मूल्यांकन किया जाता है । यह प्राण ऊर्जा मानवीय काया में प्रचुर परिमाण में भरी पड़ी है । स्वभावतः यह प्रसुप्त स्थिति में पड़ी रहती है । आवश्यकता अनुभव करने वाले पुरुषार्थपूर्वक उसे जगाते, उठाते हैं और उपयोग उपचार के द्वारा उच्चस्तरीय लाभ उठाते हैं । यह सारा प्रयोग उपचार कुण्डलिनी साधना के अन्तर्गत आता है । सावित्री साधना यही है । तन्त्र विज्ञान इसी की विवेचना एवं प्रयोग प्रक्रिया का समग्र शास्त्र है ।

सावित्री साधना के लिए किये गये उपचार अभ्यासों में प्रधानता उनकी ही है जो प्राण शक्ति के जागरण, सम्बर्धन में योगदान देते हैं । प्राप्त ऊर्जा का उत्थान, उत्कर्ष एवं उन्नयन ही प्रकारान्तर से कुण्डलिनी जागरण है । प्राण शक्ति को पाँच भागों में विभक्त किया गया है । उसे प्राण, अपान, व्यान, उदान, समान नामों से जाना जाता है । उन्हीं की प्रेरणा से पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, पाँच कर्मेन्द्रियाँ काम करती हैं । शब्द, रूप, रस, गन्ध, स्पर्श की पाँच तन्मात्राएँ इन्हीं पाँच प्राणों की इन्द्रियजन्य अनुभूतियाँ हैं । पाँच तत्वों को जड़ माना जाता है किन्तु उस जड़ता में भी अग्नि, जल, पृथ्वी, पवन एवं आकाश में जो समर्थ गतिशीलता देखी जाती है, उसे प्राण प्रवाह की प्रेरणा ही कहना चाहिए । निरूपण कर्त्ताओं ने पाँच तत्वों को पाँच प्राणों का ही प्रत्यक्ष प्रतीक माना है । जड़ जगत तत्वों से और चेतन जगत पाँच प्राणों से बना माना जाता है । इस जगती के अधिष्ठाता पाँच देवता माने गये हैं । प्रकारान्तर से यह समस्त विवेचन पंचाधि प्राण शक्ति का ही है । सावित्री के पाँच मुख माने गये हैं । यह अलंकारिक स्थापना है। प्राणी जगत में किसी भी जीवधारी के अनेक मुख नहीं होते । हाथ-पैर ही अनेक हो सकते हैं । मुख अनेक होने पर तो किसी जीवधारी की स्थिति विचित्र हो सकती है, उसका निर्वाह क्रम ही अटपटा सकता है । देवताओं के अनेक मुखों का होना कोई यथार्थता नहीं, उनके साथ जुड़े हुए रहस्यों का इस अंग विविधता, वाहन, शस्त्र, उपकरण आदि के माध्यम से प्रतिपादित भर किया गया है । पहेली बुझौबल की शैली से जानने-जनाने का प्रयत्न किया गया है कि इन प्रतीकों के पीछे सूक्ष्म रहस्यों की अवधारणा क्या है ? सावित्री और कुण्डलिनी शक्ति एक है । गायत्री और वेदमाता एक । गायत्री ज्ञान पक्ष है । सावित्री विज्ञान पक्ष । गायत्री साधना में धियः और धीमहि प्रधान है । उनमें विचारणा और

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भावना को प्रज्ञा और श्रद्धा को उभारा जाता है । इसलिए यह समस्त चिन्तन ब्रह्मविद्या के अन्तर्गत आता है । गायत्री ही ब्रह्मविद्या है । सावित्री इसी महा विज्ञान का कर्मपक्ष है । उसे व्यवहार साधना भी कह सकते हैं । यह तप प्रधान है । सविता का भर्ग इसका उत्पादन केन्द्र है । इसकी उपासना से प्राण ऊर्जा को प्रचंड बनाया जाता है । प्रसुप्ति हटाकर जागृति में परिणित किया जाता है । इसी प्रयास को कुण्डलिनी जागरण कहते हैं । कुण्डलिनी जागरण और सावित्री साधना एक ही बात है ।

सावित्री से शक्ति प्राप्त होती है गायत्री से प्रज्ञा । दोनों के सम्मिश्रण से ही पूर्ण आत्मबल बनता है । एकांगी साधना अधूरी रहती है । बिजली के दोनों तार मिलने पर विद्युत प्रवाह गतिशील होता है । दो गैसें मिलने से पानी बनता है । नर और नारी का मिलन सन्तानोत्पादन के लिए आवश्यक है । गायत्री और सावित्री के संयुक्त समन्वय की आवश्यकता सदा से समझी जाती रही है । एकांगी रहने से अपूर्णता बनी रहती है । ज्ञान और कर्म का सम्मिश्रण ही उपलब्धियों का सृजन करता है । इनमें से कोई अकेला रहने पर अधूरा एवं अशक्त ही रहेगा । गायत्री ज्ञान है और सावित्री कर्म । गायत्री योग है और सावित्री तप । दोनों के मिल जाने से ज्ञान रूपी कृष्ण और कर्म रूपी अर्जुन का समन्वय होता है और महाभारत विजय का आधार बनता है ।

गायत्री को ब्रह्म कहा गया है और सावित्री को वर्चस् । दोनों का समन्वय ही ब्रह्मवर्चस् है । उस समग्र क्षमता को प्राप्त करने के लिए साधना क्षेत्र में तत्वदर्शी प्रबल प्रयत्न करते रहते हैं । अतिवादी एकांगी होते हैं । वे समन्वय की आवश्यकता नहीं समझते और एक पक्षीय हठवाद पर अड़े रहते हैं । फलतः उनकी सफलता भी आधी अधूरी और एक पक्षीय बनी रहती है ।

ब्रह्मविद्या और ब्रह्मतेज का समन्वय ही ब्रह्मवर्चस् है । दूरदर्शी साधकों का यही इष्ट होता है । वे ज्ञान और कर्म का सम्मिश्रण आवश्यक समझते हैं । अतएव अपने प्रयासों में भी योग और तप का समान समावेश करते हैं । इसी को इन शब्दों में भी कहा जा सकता है कि गायत्री और सावित्री की उपासना का समन्वय करके चला जाता है । इसी मार्ग पर चलते हुए आत्म कल्याण की विभूतियाँ और लोक कल्याण की समृद्धियाँ उपलब्ध होती हैं । इन्हीं दोनों का नाम ऋद्धि-सिद्धि है । प्रज्ञा और पराक्रम का धियः और कार्य की संयुक्त साधना ही उस स्थिति को उत्पन्न करती है जिससे आत्म-कल्याण, लोक कल्याण के दोनों साधन सधते हैं । शक्ति और शिव का, काली और महाकाली का युग्म यही है । उनका समन्वय यही है ।

विश्वामित्र ने भगवान राम को यज्ञ रक्षा के बहाने बुला कर बला और अतिबला नामक दो विद्याएँ सिखाई थीं । इन्हें गायत्री और सावित्री की समवेत साधना कह सकते हैं । एक से वरदान देने की क्षमता उपलब्ध होती है, दूसरी से शाप देने की । एक से आनन्द प्राप्त होता है, दूसरी से वैभव । एक का फल मुक्ति है, दूसरी का शक्ति । एक को ऋद्धि कहते हैं, दूसरी को सिद्धि । इन दोनों का समन्वय उतना ही आवश्यक है जितना प्राण और शरीर का संयोग । जब तक दोनों सम्मिलित हैं तब तक जीवन का चमत्कारी स्वरूप बना रहेगा । इनके अलग होने पर दोनों की स्थिति दयनीय हो जाती है । समर्थ ऋषि योगाभ्यास भी करते थे और तप साधना भी । योग से मुक्ति और तप से शक्ति प्रदान होने का तथ्य सर्वविदित है । इसी को ब्रह्मवर्चस् कहते हैं । परशुराम, द्रौणाचार्य, गुरुगोविन्दसिंह इसी परम्परा के थे । कृष्ण का गीता ज्ञान और चक्र सुदर्शन इसी समन्वय का बोध कराता है । भगवान के सभी अवतारों ने धर्म संस्थान और अधर्म निराकरण का उभयपक्षीय प्रयोजन पूरा किया है । धर्म स्थापना के लिए सद्भावनायें और अधर्म निराकरण के लिए प्रचंड समर्थता की आवश्यकता होती है । प्रायः सभी अवतार इन दोनों ही विशिष्टताओं से संयुक्त रहे हैं इन दोनों का ही समग्र प्रयोग करके वे देवताओं को सहकार और असुरों को दंड देकर सन्तुलन बनाने का आत्म उद्देश्य पूरा कर सके हैं ।

प्राचीन अध्यात्म में उपरोक्त दोनों ही तत्वों का समुचित समावेश है । उसके द्वारा प्राप्त होने वाली उपलब्धियाँ ब्रह्मवर्चस् के नाम से जानी जाती थीं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तपस्वी को ओजस्वी, तेजस्वी और मनस्वी भी होना चाहिए । एकाकी अतिवादी से लाभ कम और हानि अधिक है । आगम और निगम, योग और तप मिलकर चलें तभी कल्याण है । असुरों ने भौतिक पक्ष तंत्र अपनाया और आत्म पक्ष से मुँह मोड़ लिया फलतः वे समर्थ तो बने पर अपने और दूसरों के लिए अभिशाप ही सिद्ध हुए । देवता जब एकाकी सात्विकता तक सीमित हो गये तो उन्हें अपना वर्चस्व गँवाना पड़ा और असुर उन पर हावी हो गये । परित्राण का मार्ग उन्हें तभी मिला जब शक्ति की उपेक्षा छोड़ कर उसकी आराधना में निरत हुए । भगवती के अवतरण की कथा, गाथा का जिन्हें परिचय है वे जानते हैं कि महिषासुर, मधुकैटभ, शुंभ, निशुंभ, रक्तबीज जैसे संकटों से पार होना तेजस्विता की प्रतीक सशक्तता का अवलम्बन मिलने पर ही सम्भव हो पाया था ।

पौराणिक गाथा के अनुसार ब्रह्माजी की दो पत्नियाँ हैं । एक गायत्री और दूसरी सावित्री । दोनों प्रगाढ़ स्नेह सहयोग के साथ अपने अधिष्ठाता की सेवा साधना करती हैं । इन तीनों का समन्वय त्रिवेणी जैसा कल्याणकारक होता है । सत् चित् आनन्द के सत्यं, शिवं, सुन्दरं की अनुभूति इसी संयोग के माध्यम से उपलब्ध होती है । समर्थता, सजगता, सरसता का संचार उन्हीं के माध्यम से होता है । स्थूल, सूक्ष्म और कारण शरीरों की अपनी आवश्यकता है, इन्हीं तीनों की सहायता से पूरी हो सकती है ।

ब्रह्मवर्चस् साधना में चिर पुरातन तत्व ज्ञान एवं अध्यात्म विज्ञान को चिर नवीन के अनुरूप बताया गया है । उसमें गायत्री और सावित्री दोनों का समन्वय है । एक मुखी ब्रह्म गायत्री के अन्तर्गत ब्राह्मी, वैष्णवी, शांभवी, वेदमाता, देवमाता, विश्वमाता, ब्रह्मविद्या, ऋतम्भरा आदि की दक्षिण-मार्गी योगपरक साधना की जाती है । पंचमुखी ही उसे वाममार्गी तंत्र पक्ष के निमित्त प्रयुक्त किया जाता है । शक्ति साधना और कुण्डलिनी जागरण की साधना उसी वर्ग में आती है । दुर्गा, काली, मातंगी, त्रिपुरा, शाकंभरी, भैरवी, कालाग्नि आदि का विधि-विधान प्रकारान्तर से सावित्री साधना का ही विस्तार है । ब्रह्मवर्चस् की गायत्री शक्ति पीठ में दोनों का ही समन्वय किया गया है ताकि साधक को समग्र आत्मबल सम्पादित करने और आत्मिक तथा भौतिक प्रगति का समन्वित मार्ग उपलब्ध हो सके ।

गायत्री की ब्रह्मवर्चस् साधना

साधना का उद्देश्य आत्मसत्ता को परिष्कृत करना है । जीव अपने आप में पूर्ण है । पूर्ण से उत्पन्न हुआ पूर्ण ही होना चाहिए । इसके लिए उपयुक्त बोध, साहस और कौशल प्राप्त करने के लिए विभिन्न अध्यात्म साधनाएँ की जाती हैं । प्रसुप्त को जाग्रत में परिणत करने के लिए आत्म-साधना का पुरुषार्थ किया जाता है । इस मार्ग पर चलते हुए जो सफलताएँ मिलती हैं, उन्हें सिद्धियों के नाम से जाना जाता है । उन्हें अतीन्द्रिय क्षमताएँ भी कहा जाता है । इन सामर्थ्य अथवा क्षमताओं का मूल आत्म बल या ब्रह्म तेज है, जिसका उपार्जन गायत्री मन्त्र की साधना द्वारा किया जाता है । इस क्षमता के चमत्कारी क्रिया कलाप भौतिक क्षेत्र में सम्पदाएँ-सफलताएँ और आत्मिक क्षेत्र में सिद्धियाँ-विभूतियाँ कही जाती हैं । यह आत्मिक क्षेत्र का उत्पादन है । जाग्रत आत्माओं का पुरुषार्थ इसी दिशा में नियोजित होता है । ब्रह्मतेज या आत्मबल के उत्पादन उपार्जन में जिस साधना का अभ्यास किया जाता है, उसमें पंचमुखी गायत्री का पंचकोश अनावरण मुख्य है ।

पंचकोशों के अनावरण की साधना में पाँच योगों का समावेश है - (१) त्राटक-विन्दुयोग (२) सूर्यवेधन प्राणायाम - प्राणयोग (३) शक्ति चालिनी -कुण्डलिनी योग (४) खेचरी मुद्रा- त्रय योग (५) सोहम् साधना - हंसयोग । इस समन्वय को यम द्वारा नचिकेता की सिखाई गई कठोपनिषद वर्णित पंचाग्नि विद्या भी कह सकते हैं । इस सरल योगाभ्यास का सामान्य परिचय इस प्रकार है-

(१) विन्दुयोग (त्राटक)

भगवान शिव और भगवती दुर्गा के भ्रू मध्य भाग में तीसरा नेत्र चित्रित किया जाता है । यह तीसरा नेत्र है । दिव्य दृष्टि इसी में रहती है । दिव्य

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दृष्टि सामान्यतया दूरदर्शिता और विवेकशीलता को कहते हैं । उच्चस्तरीय स्थिति में उसे दूर दर्शन जैसी अतीन्द्रिय क्षमता माना जाता है । वेधक दृष्टि भी यही है । इस केन्द्र से प्रचण्ड विद्युत शक्ति निकलती है और उसके द्वारा दूसरों को कई प्रकार के अनुदान देना सम्भव हो जाता है । भगवान शिव ने इसी तीसरे नेत्र से निकलने वाली प्रचण्ड विद्युत शक्ति के सहारे आक्रमणकारी कामदेव को जला कर भस्म कर दिया था । संजय इसी केन्द्र का उपयोग टेलीविजन की तरह करते थे उन्होंने धृतराष्ट्र के पास बैठ कर ही सुविस्तृत क्षेत्र में फैले हुए महाभारत का समाचार सुनाते रहने का काम अपने जिम्मे लिया था ।

इस शक्ति को जाग्रत करने की साधना त्राटक है । त्राटक साधना में घृत दीप जलाकर सामने रखते हैं । उसे एक बार आँख खोलकर देखते हैं, फिर आँखें बन्द कर लेते हैं । भ्रू मध्य भाग में ध्यान करते हैं कि प्रकाश ज्योति भीतर जल रही है और अन्तः क्षेत्र में विद्यमान तृतीय नेत्र को ज्योतिर्मय बनाती हुई, दिव्य दृष्टि उत्पन्न कर रही है । इस ध्यान में दीप ज्योति से सहायता मिलती है । संकल्प बल द्वारा आज्ञा चक्र में उसकी प्रतिष्ठापना होती है और अभ्यास से उसे इतना परिपक्व बनाया जाता है कि चर्मचक्षुओं की तरह से इसे विश्वव्यापी दिव्यता का भान होने लगे । इसे विवेक का जागरण भी कह सकते हैं । त्राटक साधना से जो दूरदर्शी तत्वदर्शी विवेक जाग्रत होता है, उसे ऋतम्भरा प्रज्ञा कहते हैं । वही गायत्री मन्त्र का धियः तत्व है । इस जागरण को आत्म जागरण की संज्ञा दी जाती है । इसे भौतिक और आत्मिक जीवन की महान् उपलब्धि भी कहा जा सकता है ।

(२) प्राणयोग

इस निखिल ब्रह्माण्ड में वायु, ईथर, ऊर्जा आदि की तरह ही एक ऐसा दिव्य तत्व भी भरा पड़ा है जिसे जड़ चेतन की समन्वित शक्ति प्राण कहते हैं ।

यह प्रचुर परिमाण में सर्वत्र भरा पड़ा है । इसकी अभीष्ट मात्रा को खींचना और आत्म सत्ता में धारण कर सकना प्रयत्नपूर्वक सम्भव हो सकता है । इस प्राण विनियोग की प्रक्रिया को प्राणायाम कहते हैं । इसमें विशिष्ट क्रिया-प्रक्रिया के साथ श्वास-प्रश्वास क्रियाएँ करनी पड़ती है । साथ ही प्रचण्ड संकल्प-बल का वैज्ञानिक चुम्बकत्व समुचित मात्रा में समन्वित किये रहना होता है । इसी साधना को प्राणयोग कहते हैं । सामान्यतः इसे प्राणायाम कहते हैं । 'लय' और 'ताल' की महान् शक्ति का ज्ञान सर्व साधारण को तो नहीं होता, पर विज्ञान के विद्यार्थी जानते हैं कि सर्वविदित न होने पर भी यह सामर्थ्य कितनी प्रचण्ड है ।

सूर्यवेधन प्राणायाम में लय और ताल का विशेष समन्वय है । इड़ा और पिंगला शरीरगत दो विद्युत प्रवाह हैं जो मेरुदण्ड के अन्तराल में काम करते रहते हैं । इनका मिलन केन्द्र सुषुम्ना कहलाता है । पिंगला से सम्बन्धित श्वास प्रवाह को उलट-पुलट कर चलाने की प्रक्रिया विशेष महत्वपूर्ण है । पेण्डुलम क्रम में उसी के तनिक से स्पर्श का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है और घड़ी चलती रहती है । हृदय की धड़कन भी इसी उलट-पुलट का क्रम रक्त-संचार के सहारे जीवन धारण किये रहने का महान कार्य सम्पादन करती है ।

इस लोम-विलोम क्रम से किया जाने वाला प्राण-योग सूर्य वेधन प्राणायाम कहलाता है । ब्रह्मवर्चस् साधना में इसी का अभ्यास कराया जाता है । साधक अपने भीतर प्राण तत्व की अभिवृद्धि का अनुभव करता है । इस प्रक्रिया के द्वारा उपार्जित प्राण सम्पदा साधक की बहुमूल्य सम्पत्ति होती है । इस पूँजी को आवश्यकतानुसार विभिन्न प्रयोजनों के लिए प्रयुक्त किया जा सकता है । इसे बहिरंग और अन्तरंग क्षेत्र का सामर्थ्य उत्पादक प्रयोग कह सकते हैं । कुण्डलिनी जागरण के लिए तो इसी क्षमता की विशेष रूप से आवश्यकता पड़ती है । विद्युत उत्पादन में जो कार्य जेनरेटर करते हैं लगभग व्यक्तित्व में अनेक प्रयोजनों में काम आने वाली प्राण ऊर्जा का संचय सूर्य वेधन प्राणायाम की साधना द्वारा किया जाता है ।

(३) कुण्डलिनी योग- शक्तिचालनी

ब्रह्मशक्ति का केन्द्र ब्रह्मलोक और जीव शक्ति का आधार भू-लोक है । दोनों ही काया के भीतर सूक्ष्म रूप से विद्यमान हैं । भूलोक जीव संस्थान

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मूलाधार चक्र है । मूलाधार अर्थात् जननेन्द्रिय मूल । प्राणी इसी स्थान की हलचलों और संचित सम्पदाओं के कारण जन्म लेते हैं । इसलिए सूक्ष्म शरीर में विद्यमान उस केन्द्र का उद्गम स्थान मूलाधार चक्र कहा गया है । कुण्डलिनी शक्ति इसी केन्द्र में नीचा मुँह किये मूर्च्छित स्थिति में पड़ी रहती है और विष उगलती रहती है । इस अलंकार विवेचन में यह बताया गया है कि जीवात्मा का भौतिक परिकर इसी केन्द्र में सन्निहित है । प्रजनन कर्म इसी की सम्वेदनाशीलता की दृष्टि से अति सरस एवं उत्पादन की दृष्टि से आश्चर्यचकित करने वाला एक छोटा-सा किन्तु चमत्कारी अनुभव है । इसे कुण्डलिनी शक्ति का सर्वविदित प्रतिफल कह सकते हैं ।

वस्तुतः प्रकृति शक्ति का यह कुण्डलिनी केन्द्र, मूलाधार की भौतिक क्षमता का मानवीय उद्गम कहा जा सकता है ।

जिस प्रकार ब्रह्म सत्ता का प्रत्यक्षीकरण ब्रह्म लोक में होता है, ठीक उसी प्रकार प्रकृति की प्रचण्ड शक्ति का अनुभव इस जननेन्द्रिय क्षेत्र के कुण्डलिनी केन्द्र में किया जा सकता है । शारीरिक समर्थता, मानसिक सज्जनता और संवेदनात्मक सरलता की तीनों उपलब्धियाँ इसी शक्ति केन्द्र के अनुदानों द्वारा प्राप्त की जा सकती हैं ।

कुण्डलिनी जागरण की साधना में मूलाधार शक्ति को जगाने-उठाने और पूर्णता के केन्द्र से जोड़ देने का प्रयत्न किया जाता है । मूलाधार की प्रसुप्त कुण्डलिनी को जगाने तथा ऊर्ध्वगामी बनाने का प्रथम प्रयास शक्तिचालिनी मुद्रा के रूप में सम्पन्न किया जाता है । ऊर्ध्वमुखी कुण्डलिनी अग्नि शिखर की तरह मेरुदण्ड मार्ग से ब्रह्म लोक तक पहुँचती है तथा अपने अधिष्ठाता सहस्रार से मिलकर पूर्णता प्राप्त करती है ।

शक्तिचालिनी मुद्रा गुदासंकोचन की एक विशेष पद्धति है जिसे सिद्धासन या मुद्रासन पर बैठकर विशिष्ट प्राण साधना के साथ सम्पन्न किया जाता है । इस प्रक्रिया का समूचे कुण्डलिनी क्षेत्र पर प्रभाव पड़ता है जिससे उस शक्ति स्रोत के जागरण और ऊर्ध्व गमन के दोनों उद्देश्य पूरे हो सकें । इस प्रयास से उत्पन्न हुई उत्तेजना का सदुपयोग करने वाले अनेक असाधारण काम सम्पन्न कर पाते हैं ।

(४) लययोग-खेचरी मुद्रा

शान्त मस्तिष्क को ब्रह्मलोक और निर्मल मन को क्षीर सागर माना जाता है । ब्रह्म यों तो सर्वव्यापी है, पर उसकी विशेष सत्ता ब्रह्मलोक में मानी जाती है । मनुष्य और ब्रह्मलोक का आदान-प्रदान ब्रह्मरंध्र मार्ग से होता है । ब्रह्मरंध्र अर्थात् मस्तिष्क का मध्यबिन्दु । ब्रह्मांड के मध्य में ब्रह्मलोक माना गया है और ब्रह्मरंध्र मस्तिष्क में है । सहस्रार कमल इसी का नाम है । जीव और ब्रह्म के बीच अति महत्वपूर्ण आदान-प्रदान का माध्यम यही है । पृथ्वी की सम्पदा अन्तर्ग्रही आदान-प्रदानों से संचित हो सकी है और उससे सूक्ष्म आवश्यकताओं की पूर्ति के साधन जुटते रहते हैं । इस आदान-प्रदान का केन्द्र-केन्द्र द्वार ध्रुव है । ठीक इसी प्रकार मस्तिष्क रूपी मानवीय ब्रह्मलोक का मध्य केन्द्र ब्रह्मरंध्र सहस्रार कमल है । यह जितना सशक्त और दुर्बल होता है, विकसित अविकसित रहता है उसी अनुपात में जीव को ब्रह्म सत्ता के अनुदान प्राप्त कर सकने की सम्भावना बढ़ती है ।

अन्तर्जगत के इस ब्रह्मलोक की सहस्र शीर्षा पुरुष की सहस्र धारा से सम्बन्ध बनाने और उससे होने वाली अमृत वर्षा का लाभ लेने के लिए खेचरी मुद्रा का साधन बताया गया है । ध्यान मुद्रा में शान्त चित्त से बैठकर जिह्वाग्र भाग को तालु मूर्धा से लगाया जाता है । सुहलाने जैसे मन्द-मन्द स्पन्दन पैदा किये जाते हैं उस उत्तेजना से सहस्र दल कमल की प्रसुप्त स्थिति जागृति में बदलती है । बन्द छिद्र खुलते हैं और आत्मिक अनुदान जैसा रसास्वादन जिह्वाग्र भाग के माध्यम से अन्तःचेतना को अनुभव होता है । यह खेचरी मुद्रा है ।

तालु मूर्धा को कामधेनु की उपमा दी गई है और जिह्वाग्र भाग से उसे सुहलाना पयपान कहा गया है । तान्त्रिक हठयोगी उसे विषयान्तर स्तर का ब्रह्मानन्द कहते हैं । इस क्रिया से आनन्द और उल्लास की अनुभूति होती है । यह दिव्यलोक से आत्मलोक पर होने वाली अमृत वर्षा का चिन्ह

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है । देवलोक से सोमरस झरता है । अमृत कलश से अनुदान पाकर आत्मा को अमरता की अनुभूति का आनन्द मिलता है । यह खेचरी मुद्रा की साधना से उत्पन्न होने वाली प्रतिक्रियाओं का ही अलंकारिक वर्णन है । इन विवेचनाओं से इस निष्कर्ष पर पहुँचना पड़ता है कि यदि भावना और क्रिया का सही समन्वय करके इस साधना को किया जा सके तो चेतना क्षेत्र में आनन्द और कार्य क्षेत्र में उल्लास की उपलब्धि होती है । यह लाभ ही प्रकारान्तर से भौतिक और आत्मिक जगत के अनेकों लाभों का आभास कराता है । त्राटक का ऊपर से और खेचरी का नीचे से प्रभाव पड़ने के कारण साधक का ब्रह्मलोक उसका मध्य बिन्दु सहस्रार अपनी जाग्रत समर्थता का परिचय देने लगता है ।

(५) हंसयोग - सोहम् साधना

शरीर निर्वाह में अन्न और जल से भी अधिक महत्व वायु का है । वायु में प्राण वायु की ऑक्सीजन की महत्ता सर्वोपरि है । ऑक्सीजन का महत्व विज्ञान के विद्यार्थी भली प्रकार जानते हैं । रक्त में लालिमा उसी की है । इसी ईंधन के जलने से शरीर का इन्जन गर्म रहता है और सब कल पुर्जे अपना-अपना काम सही रीति से करते हैं । ऑक्सीजन का एक नाम प्राण वायु भी है । वह समुचित रूप से मिलती रहे तो शरीर बलिष्ठ बना रहेगा ।

प्राण ऑक्सीजन से अधिक सूक्ष्म स्तर का है जिसे जीवनी शक्ति, प्रतिभा और प्रखरता के रूप में माना जाता है । सूक्ष्म प्राण के रूप में जीवट प्राप्त करने के लिए प्राणायाम किये जाते हैं । इसके अनेकों विधि विधान हैं । उन्हीं में से एक सूर्य वेधन अनुलोम-विलोम ब्रह्मवर्चस् साधना में प्राण साधना के नाम से सम्मिलित है ।

इस साधना में मन:स्थिति को ब्राह्मी भूत बनाना पड़ता है । अपने को शरीर और मन से ऊपर की स्थिति में अनुभव कराने वाली ब्रह्म चेतना जगानी पड़ती है । इसकी भूमिका बन पड़ने पर श्वास प्रक्रिया में इतना दिव्य आकर्षण उत्पन्न हो जाता है कि उसके सहारे अनन्त अन्तरिक्ष में दिव्य प्राण को अपने लिए आकर्षित करना और उपलब्ध अंश को धारण कर सकना सम्भव होता है । इसी का नाम सोहम् साधना है ।

प्राणायाम में साँस खींचने की प्रक्रिया को पूरक कहते हैं । हंस योग में साँस खींचने के साथ अत्यन्त गहरे सूक्ष्म पर्यवेक्षण में उतर कर यह खोजना पड़ता है कि वायु के भीतर प्रवेश करते समय सीटी बजने जैसी 'सो' की ध्वनि भी उसके साथ ही घुली हुई है यह ध्वनि प्रकृतिगत नहीं वरन् ब्राह्मी है और ईश्वरीय संकेतों, संदेशों तथा अनुदानों से भरी हुई है । यह साँस के साथ भीतर प्रवेश करती है और सम्पूर्ण जीव सत्ता पर अपना अधिकार जमा लेती है । सोहम् के कुंभक में यही भावना रहती है कि जीवन सम्पदा पर परिपूर्ण अधिकार 'सो' -हम- परमेश्वर का हो गया । साँस छोड़ते समय सांप की फुसकार जैसी अहम् की ध्वनि का अनुभव-अभ्यास में लाना पड़ता है और भावना करनी होती है कि अहंता को विसर्जित निरस्त कर दिया गया है । अहम् के स्थान पर 'स' (उस परमेश्वर) की प्रतिष्ठापना हो गयी । वेदान्त योग की यही एकत्व अद्वैत स्थिति है । इसी में पहुँचने में अयमात्मा ब्रह्म-प्रज्ञानब्रह्म-शिवोहम्-सच्चिदानन्दोहम् तत्वमसि आदि बोधक शब्दों में व्यक्त की गई भावनाओं की अनुभूति होती है ।

निरन्तर आत्मा और परमात्मा के साथ अपने सम्बन्ध को स्मरण करने और सम्पर्क सूत्र बनाये रहने के लिए हर श्वास के साथ 'सोऽहम्' का अजपा जाप जारी रखा है । 'सोऽहम्' का अर्थ है- मैं वह (परमात्मा) हूँ । शिवोऽम्- सच्चिदानन्दोहम् आदि शब्दों में सोऽहम् का ही स्पष्टीकरण है । इस तथ्य को हर घड़ी स्मरण रखे रहने और स्मृति सूत्र को सुदृढ़ बनाने की सुविधा इसी अजपा जाप में मिलती है ।

गायंत्री की ब्रह्मवर्चस् साधना-पंच कोशों के अनावरण की साधना है । उससे ब्रह्म सान्निध्य ब्रह्मसाक्षात्कार का लाभ मिलता है । उसके कितने ही आध्यात्मिक क्षेत्र के ऐसे प्रतिफल हैं जिन्हें क्रमश: आत्मा का परमात्मा के रूप में विकास होता, अपूर्णता की पूर्णता में परिणति होती है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गायत्री की प्रचण्ड प्राण ऊर्जा

गायत्री प्राण प्रतिष्ठा की अधिष्ठात्री

गायत्री शब्द में इस महाशक्ति के स्वरूप और प्रभाव का संकेत है । 'गय' कहते हैं प्राण को । त्री कहते हैं त्राण अर्थात् उद्धार उत्कर्ष करने वाली को । प्राण तत्त्व ही इस निखिल ब्रह्माण्ड में चेतना समुद्र की तरह लहलहा रहा है । जड़ जगत् का स्वरूप ऊर्जा है । ताप शब्द, प्रकाश आदि की विद्युत तरंगों के रूप में यही ऊर्जा परमाणुओं के रूप में प्रगट होती है और उसकी स्व संचालित हलचलें संसार को अनुभव गम्य बनाती हैं । यह प्रकृति कृत विवेचना हुई । ब्रह्म चेतना की ऊर्जा प्राण है अर्थात् विश्वव्यापी शक्ति चेतना । यह तत्त्व भी इस ब्रह्माण्ड में 'ईश्वर' की तरह ही भरा है । इसी के प्रभाव से समस्त प्राणी शरीर धारण करते और अपने स्तर की विचार पद्धति एवं क्रियाशीलता अपनाते हैं । जिसके पास इस प्राण-तत्त्व का स्तर जितना ऊँचा है, परिमाण जितना बड़ा है, वह उसी अनुपात से समुन्नत; सशक्त एवं सफल बनता है । जीव जगत् की प्रधान सम्पदा प्राण होने के कारण ही उन्हें प्राण अर्थात् प्राणी कहा जाता है ।

प्राण की मात्रा घट जाने से जीव, दीन-दुर्बल बनता और पिछड़ी स्थिति में निर्वाह करता है । प्राण का स्तर गिर जाने से प्राणी निकृष्टता अपनाता और विपत्ति के गर्त में गिरता है । जिसका प्राण जितना प्रखर है, उसकी प्रतिभा उसी अनुपात से चमकती है । यह प्राण ही शरीर में ओजस् मस्तिष्क में तेजस् और अन्तःकरण में वर्चस् बनकर चमकता है । कामबल, मनोबल और आत्मबल के नाम में इस प्राण-प्रखरता का ही परिचय मिलता है । जब तक शरीर के साथ प्राण जुड़ा है । तभी तक जीवन है । जीवन काया और प्राण का सम्बन्ध सूत्र जुड़ा होने को ही कहते हैं, दोनों का वियोग होते ही काया मृतक बन जाती है और नष्ट होने के लिए तेजी से सड़ने लगती है । समझा यह जाता है कि प्राणी की सामर्थ्य उसकी काया तथा साधनों पर निर्भर है, पर यथार्थता इससे भिन्न है । साधन सम्पदा तथा काया दोनों ही जड़ पदार्थों से विनिर्मित हैं । इनसे कुछ कराया या पाया जा सकना जीवधारी के कौशल पर निर्भर है । प्राण जितना प्रखर होता है, उसी परिमाण में साधनों का उपार्जन उपयोग सम्भव होता है । काया में जो बलिष्ठता, बुद्धि में जो प्रखरता दीखती है यह रक्त माँस की मस्तिष्क मज्जा की नहीं वरन् प्राण चेतना के स्तर की है । जीव का वास्तविक वैभव एवं ऐश्वर्य उसके प्राण भण्डार में ही संचित रहता है । संक्षेप में इतना ही कहा जा सकता है कि प्राण और प्राणी अन्योन्याश्रित है । इसी महातत्त्व का अदृश्य स्वरूप जीव और दृश्य परिकार काय कलेवर के रूप में अपने अस्तित्त्व का परिचय देता है । महा मानवों को महा-प्राण कहते हैं । उनकी एक मात्र विशेषता यही होती है कि दूसरों की अपेक्षा उनके प्राण का परिमाण तथा स्तर अधिक उत्कृष्ट होता है ।

इस प्राण-तत्त्व को अधिष्ठात्री ब्रह्म-सत्ता को गायत्री कहते हैं । कहा जा चुका है कि गय शब्द का तात्पर्य प्राण है । त्री अर्थात् निमंत्रण वितरण और अभिवर्धन करने वाली सत्ता । समझा यह जाता है कि साधन, सामिग्री, बुद्धिमत्ता एवं बलिष्ठता ही सब कुछ है । किन्तु वास्तविकता यह है कि जिस का प्राण जिस स्तर का है, वह उतना ही ऊँचा उठता और आगे बढ़ता है । हीन प्राण के व्यक्ति के लिए सुडौल काया और बहुत साधन सम्पन्नता भी किसी काम नहीं आती, वरन् दुरुपयोग होते रहने से या तो निरर्थक चली जाती या विपत्ति का कारण बनती है । प्राणियों में समर्थ और सफल वे ही होती हैं, जिनमें प्राण-तत्त्व का बाहुल्य है । शेष तो किसी प्रकार जिन्दगी के दिन पूरे करते रहते हैं ।

जीव मात्र को प्रकृति वितरण में प्राणों की उतनी ही मात्रा मिलती है जिससे वह शरीर धारण के साथ जुड़ी हुई आवश्यकताओं को पूरा करते हुए

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जीवित रह सके । क्षुधा क्रीड़ा विश्रान्ति, युयुत्सा जैसी जीव धारी की कुछ ही मूल प्रवृत्तियाँ हैं । इन्हीं का ताना-बाना बुनने में उलझनों को सुलझाने में जीवन काल समाप्त हो जाता है । मनुष्य में कुछ मौलिक विशेषताएँ हैं, जिन्हें महत्त्वाकांक्षा कहा जाता है । यह भौतिक भी होती हैं और आत्मिक भी । इन्हीं दोनों को सुख-शान्ति, समृद्धि, प्रगति एवं ऋद्धि-सिद्धि कहते हैं । इन्हें प्राप्त करने की विशेष ललक मनुष्य में पाई जाती है । जो इस संदर्भ में जितना सफल होता है, वह उतना ही प्रसन्न रहता है और यशस्वी बनता है । यह उपलब्धियाँ सामान्यतया पुरुषार्थ, कौशल साधना एवं भाग्य के आधार पर मिलती दिखाई देती हैं, पर वास्तविकता यह है कि प्राण-शक्ति का चमत्कार ही मनुष्य की समस्त सफलताओं का प्रमुख आधार है । एक शब्द में प्राण और जीवन को एक कहा जा सकता है और दोनों के उपयुक्त समन्वय को सर्वतोमुखी प्रगति का निमित्त कारण समझा जा सकता है । प्राण की प्रखरता ही प्रकारान्तर से सर्वतोमुखी सफलता के रूप में सामने आती है ।

प्राण-तत्त्व को अभीष्ट मात्रा में उपलब्ध कर सकना ही सबसे बड़ा सौभाग्य है । इसे प्राप्त करने के लिए सामान्य पुरुषार्थ से भी कुछ न कुछ तो काम बनता ही है, पर बड़े श्रेय के लिए बड़ी मात्रा अभीष्ट है तो फिर उसके उद्गम स्रोत तक पहुँचना होगा । वस्तुओं का विक्रय विनिमय तो हाट बाजार मे भी होता रहता है, पर उसका उत्पादन खेतों या कारखानों में ही सम्भव है । यों प्रोत्साहन और परिस्थितियों से भी साहस बढ़ता है, पर उसकी, अभीष्ट मात्रा इस विश्वव्यापी प्राण महासागर से ही उपलब्ध करनी पड़ती है । थोड़ी भाप तो कहीं भी उड़ती देखी जा सकती है, किन्तु बादलों की बढ़ी-चढ़ी आवश्यकता पूरी कर सकने में मात्र समुद्र ही समर्थ होता है । प्राण की बहुलता जिन्हें अभीष्ट हो उन्हें ब्रह्म सत्ता के प्राण भाण्डागार का ही द्वार खटखटाना होगा । कहना न होगा कि इस व्यापक महाशक्ति को गायत्री कहते हैं ।

यों साधारणतया गायत्री का छन्द है । उसके शब्द गुच्छक में आठ-आठ अक्षरों के तीन चरण हैं । उच्चारण का कुछ स्वर विधान है, अर्थ की दृष्टि से उसका तात्पर्य सविता से सद्बुद्धि को प्रेरित करने की प्रार्थना है । आम तौर से उसे उपासना के लिए जप ध्यान के रूप में प्रयुक्त किया जाता है । विशेष प्रयोजनों के लिए विभिन्न अनुष्ठान उपचारों की परम्परा है । समर्थ गुरु के मार्ग-दर्शन में उसे अपनाने पर अधिक सफलता की सम्भावना को ध्यान में रखते हुए उसे गुरु मंत्र कहा गया है । गायत्री शब्द स्त्रीलिंग होने के कारण उसकी ध्यान धारणा मातृ-आकृति में की जाती है । सामान्य तथा इतने में ही गायत्री का बोध-परिचय पूर्ण हो जाता है ।

तथ्यों की गहराई में पहुँचने वाले जानते हैं कि ब्रह्माण्डीय चेतना में विद्यमान महाप्राण ही गायत्री महामन्त्र का तत्त्व-दर्शन है । प्राणी मात्र अपने लघु प्राण में किस प्रकार अभीष्ट स्तर की अभीष्ट मात्रा धारण कर सकते हैं इसका निर्धारण ही गायत्री महा विज्ञान है । गायत्री का तत्त्व-दर्शन ही सुविस्तृत ब्रह्म-विद्या के रूप में अनेकानेक ग्रन्थ प्रतिपादनों में दृष्टिगोचर होता है । गायत्री का साधना विधान ही उपासना क्षेत्र के अनेकानेक योगाभ्यासों, तप साधनों एवं अनुष्ठान उपचारों के रूप में फैला पड़ा है । धर्म सम्प्रदाओं ने अपने नाम भले ही भिन्न-भिन्न दिये हों पर उन्हें गायत्री कल्पवृक्ष के शाखा-पल्लव ही समझा जा सकता है ।

विवेचना और साधना गायत्री के दो पक्ष हैं । दोनों को मिलाने से ही यह विज्ञान समग्र बनता है । इस सन्दर्भ में अनेकों ग्रन्थों में विभिन्न प्रकार की चर्चाएँ हैं । इनमें कठोपनिषद् का यम-नचिकेता संवाद विशेष रूप से दृष्टव्य है । इस प्रसंग में पंचाग्नि विधाओं के रूप में पाँच प्राणों की गरिमा और साधना का सांस्कृतिक मार्गदर्शन किया गया है । किस व्यक्ति के लिए, किस प्रयोजन के लिए किस प्रकार क्या करना चाहिए, यह एक गुत्थी है जिसे अनुभवी प्रवीण पारंगतों की सहायता से ही सुलझाया जा सकता है, किन्तु इतना निश्चित है कि प्राण सम्पदा की अभीष्ट उपलब्धि में गायत्री साधना का उपाय उपचार सर्वोपरि है । यों और भी कई ढेड़े मेड़े मार्ग हैं उन्हें अपनाने वाले भी इस

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

महा भाण्डागार में से कुछ न कुछ प्राप्त करते ही रहते हैं ।

गायत्री उपासना का प्रधान लाभ महाप्राणों के साथ लघु प्राण की ब्रह्म के साथ जीव को जोड़ देने की प्रक्रिया सम्पन्न करना है । पर ब्रह्म को साक्षी, दृष्टा, अचिन्त्य अनिर्वचनीय कहा गया है, उसकी सत्ता को व्यवस्था के रूप में जाना-समझा जा सकता है । प्राणी को ईश्वरीय अनुग्रह जिस केन्द्र से मिलता है, वह प्राण महासागर है । संस्कृत भाषा में इसी को गायत्री कहा गया है । गायत्री शब्द का अर्थ प्राणों का उत्कर्ष होता है । साधना प्रक्रिया द्वारा प्राण और महाप्राण का पारस्परिक तालमेल बैठने और आदान-प्रदान चल पड़ने का प्रयोजन पूरा होता है । इसे अमृत, पारस का एवं कल्प वृक्ष की उपलब्धि माना गया है । धरती को कामधेनु का नाम दिया जाना शब्द की दृष्टि से अलंकार भले ही हो, पर उसमें वास्तविकता का आभास भी सहज ही मिलता है ।

संकटों के निवारण सुखद सम्भावनाओं के संवर्धन जैसी भौतिक सम्भावनाएँ और स्वर्ग, मुक्ति, सिद्धि, शान्ति जैसी आत्मिक विभूतियाँ प्राप्त होने का महात्म्य शास्त्रों में सर्वत्र बिखरा पड़ा है । साधना रत अनुभवी भी इसकी पुष्टि करते हैं । जिन्हें इस कल्पवृक्ष की छाया के नीचे बैठने का अवसर मिला है, वे भी अपनी उपलब्धियों का वर्णन मुक्त कंठ से करते हैं । इन निष्कर्षों का अवलोकन करने वालों की सहज ही यह जिज्ञासा होती है कि ये सुखद परिणाम आखिर किस उद्‌गम में प्रगट होते हैं । उत्तर एक ही है, वह है- प्राण-तत्त्व का अभिवर्धन । गायत्री तत्त्व-ज्ञान की प्रेरणा और साधना की ऊर्जा यह दोनों ही पक्ष मिल कर ऐसी मनः स्थिति एवं परिस्थिति का सृजन करते हैं जो सुख-शान्ति की समग्र सम्भावना को मूर्तिमान बना सकें ।

गायत्री-प्राण विद्या है । महाप्राण का, दिव्य प्राण का प्रत्यक्ष और परोक्ष स्रोत सविता को माना गया है । सविता अर्थात् उदयीमान स्वर्णिम सूर्य । सविता अर्थात् प्रज्ञा एवं ऊर्जा का समीकरण । सविता अर्थात् परब्रह्म जाज्वल्यमान तेजस् । गायत्री उपासना में सविता की ध्यान धारणा की जाती है । वही उसका इष्ट देव है । सूर्य से इस दृश्य जगत् को प्रकाश ताप एवं जीवन मिलता है । अदृश्य जगत् का भी गायत्री का प्राण भी महाप्राण सविता है । सविता की उपासना प्राण-तत्त्व के आकर्षण का विधान है । कर्ण, सूर्य पुत्र थे । हममें से कोई भी सविता में प्राण तत्त्व का अभीष्ट मात्रा में अर्जन कर सकता है और सच्चे अर्थों में सूर्य-पुत्र बन सकता ।

गायत्री उपासना से प्राण- शक्ति का अभिवर्धन

मनुष्य एक प्राणी है । प्राणी उसे कहते हैं जिसमें प्राण हो । प्राण निकल जाने पर शरीर निर्जीव होकर सड़-गल जाता है, इसलिए मृत्यु होते ही उसे जलाने, गाढ़ने, बहाने आदि का प्रबन्ध करना पड़ता है । मनुष्येतर जीवों के मरते ही उनके शरीर को समाप्त करने के लिए शृगाल, कुत्ते आदि पशु-गिद्ध, कौए, चील आदि पक्षी और चींटी, गिडार आदि कीड़े नष्ट करने के लिए जुट पड़ते हैं । प्राण निकलते ही प्राणी का भौतिक अस्तित्त्व समाप्त हो जाता है । मनुष्य अथवा अन्य जीव-जन्तुओं के जीवित रहने और विविध क्रिया-कलाप करते रहने का समस्त श्रेय इस प्राण-शक्ति को ही है । जिसमें यह तत्त्व जितना न्यूनाधिक होता है, उसी अनुपात से उसकी सशक्तता, समर्थता, प्रतिभा एवं स्थिति में कमी-वेशी दिखाई पड़ती है । मनुष्य अन्य प्राणियों से श्रेष्ठ एवं समर्थ इसीलिए है कि उसमें प्राण-तत्त्व का दूसरों की अपेक्षा बाहुल्य रहता है ।

सजीवता प्रफुल्लता, स्फूर्ति, सक्रियता जैसी शारीरिक विशेषताएँ तथा मनस्विता, तेजस्विता, प्रतिभा, चतुरता जैसी मानसिक विभूतियाँ और कुछ नहीं प्राण रूपी सूर्य की किरणें प्राणरूपी समुद्र की लहरें हैं । इतना ही नहीं आध्यात्मिक स्तर पर पाई जाने वाली, सहृदयता, करुणा, कर्त्तव्य निष्ठा, संयम शीलता, तितीक्षा, श्रद्धा, सद्‌भावना, समस्वरता जैसी महानतायें प्राण, शक्ति की ही उपलब्धियाँ हैं । प्राण एक विद्युत है, जो जिस क्षेत्र में भी, जिस स्तर पर संयुक्त होती है, उसी में चमत्कार उत्पन्न कर देती है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्राण-शक्ति, जीवनी-शक्ति का दूसरा नाम है, जो जितना सजीव है उसे उतना ही प्राणवान् कहेंगे । यह शक्ति शरीर में चमकती है तो व्यक्ति रूपलावण्य युक्त, नीरोग, दीर्घजीवी, परिपुष्ट एवं प्रफुल्ल दिखाई देता है । उसे परिश्रम से ग्लानि या थकान नहीं वरन् प्रसन्नता प्राप्त होती है । मन में प्राण का बाहुल्य हो तो मस्तिष्क की उर्वरता अत्याधिक बढ़ जाती है । स्मरण शक्ति, सूझ-बूझ, कुशाग्रता, बुद्धिमत्ता, तुलनात्मक निर्णय क्षमता, एकाग्रता जैसी विशेषताएँ उत्पन्न हो जाती हैं । अध्यात्म क्षेत्र में इस महत्ता का संचार होने पर व्यक्ति में शौर्य, साहस, उभय एवं सन्मार्ग पर निरन्तर चलते रहने का पुरुषार्थ उत्पन्न हो जाता है ।

यह प्राण-शक्ति ही प्राणी की विशेषता है, यही उसकी वास्तविक सम्पत्ति है । इसी के मूल्य पर भौतिक समृद्धियाँ एवं सफलताएँ मिलती हैं । इसलिए यह कहना उचित ही है कि जिसके पास जितनी प्राण-शक्ति है, वह उतनी ही मात्रा में जीवन संग्राम में विजय वरण करता है, उतना ही यशस्वी बनता है । प्राण का उपार्जन ही समस्त सम्पत्तियों का अधिपति महासम्पत्ति का उपार्जन करना है । यह महा-सम्पत्ति जिसके पास जितनी मात्रा में होती है, वह उतना ही अपने अभीष्ट लक्ष्य में सफल होता चला जाता है । प्राणवान् व्यक्ति भले ही डाकू, तस्कर, ठग, शासक, नेता, वैज्ञानिक, अध्येता, व्यापारी, कृषक, सैनिक, महात्मा आदि कोई भी क्यों न हो, अपने प्रयोजन में असाधारण सफलता प्राप्त करेगा । अपनी दिशा में उन्नति के शिखर पर अवस्थित दिखाई देगा । अस्तु इस प्राण की सभी को आवश्यकता रहती है । यह बात अलग है कि कौन उसके लिए प्रयत्न करता है और कौन हाथ पर हाथ रखे बैठा रहता है, किसे उसको प्राप्त करने का मार्ग विदित है और कौन उससे अपरिचित रह रहा है ।

गायत्री महामन्त्र का प्रमुख प्राण-शक्ति को उपलब्ध करना ही है । उसकी उपासना यदि ठीक प्रकार से की जाय तो उपासक में प्राण-शक्ति की अभिवृद्धि शीघ्र ही होने लगती है और वह उस अभिवर्धन के आधार पर कई तरह की सफलतायें प्राप्त करने लगता है । कहने वाले इसे गायत्री माता का अनुग्रह, आशीर्वाद कहते हैं, पर वस्तुतः होता यह है कि उस उपासना से साधक में प्राण-शक्ति विकसित होती चली जाती है, उससे उसके व्यक्तित्व में कई प्रकार के सुधार परिवर्तन होते हैं, कई तरह के आकर्षण बढ़ते हैं, फलस्वरूप कठिनाइयों के अवरोध कार्य में से हटते हैं और सफलताओं का पथ प्रशस्त होता है ।

यह आन्तरिक परिवर्तन बहुत ही सूक्ष्म होता है, इसलिए वह मोटे तौर पर दिखाई नहीं देता, पर थोड़ा गम्भीरता पूर्वक निरीक्षण करने से कितनी ही विशेषतायें गायत्री उपासना में संलग्न व्यक्ति में दीख पड़ती हैं । प्रगति का आधार मनुष्य का विकसित व्यक्तित्व ही है । देवता किसी की भौतिक सहायता नहीं करते, वे व्यक्ति के व्यक्तित्व में कुछ ऐसे सुधार कर देते हैं, जिससे वह सफलता पर सफलता प्राप्त करता हुआ, अभीष्ट प्रयोजन की दिशा में तेजी से आगे बढ़ता चला जाता है । गायत्री की उपासना वस्तुतः प्राण-शक्ति की ही उपासना है । जिसे जितना प्राण बल उपलब्ध हो गया समझना चाहिए, उसकी उपासना उतने ही अंशों में सफल हो गई ।

गायत्री का देवता सविता है । सविता का भौतिक स्वरूप रोशनी और गर्मी देने वाले अग्नि पिण्ड के रूप में परिलक्षित होता है, पर उसकी सूक्ष्म-सत्ता, प्राण-शक्ति से ओत-प्रोत है । वनस्पति, कृमि, कीट, पशु-पक्षी, जलचर, थलचर और नभचर वर्गों के समस्त प्राणी सविता देवता द्वारा निरन्तर प्रसारित प्राण-शक्ति के द्वारा ही जीवन धारण करते हैं । वैज्ञानिकों का निष्कर्ष है कि इस जगती पर जो भी जीवन के चिह्न हैं, वे सूक्ष्म विकरण शीलता के ही प्रतिफल हैं । सावित्री उस प्राणवान् सविता देवता की अधिष्ठात्री है । उसकी स्थिति को अनन्त प्राण-शक्ति के रूप में आँका जाय तो कुछ अत्युक्ति न होगी ।

यह विश्वव्यापी प्राण शक्ति जहाँ जितनी अधिक मात्रा में एकत्रित हो जाती है, वहाँ उतनी ही सजीवता दिखाई देने लगती है । मनुष्य में इस प्राण तत्त्व का बाहुल्य ही उसे अन्य प्राणियों से अधिक विचारवान् बुद्धिमान्, गुणवान्, सामर्थ्यवान्

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

एवं सुसभ्य बना सका है । इस महान् शक्ति पुंज का प्रकृति प्रदत्त उपयोग करने तक ही सीमित रहा जाय तो केवल शरीर यात्रा ही सम्भव हो सकती है । और अधिकांश नर पशुओं की तरह केवल सामान्य जीवन ही जिया जा सकता है, पर यदि और किसी प्रकार अधिक मात्रा में बढ़ाया जा सके तो गई-गुजरी स्थिति से ऊँचे उठकर उन्नति के उच्चशिखर तक पहुँच सकना सम्भव हो सकता है।

गायत्री महामन्त्र में उसी की प्रक्रिया या तत्त्व ज्ञान सन्निहित है, जो विधिवत् उसका आश्रय ग्रहण करता है, उसे तत्काल अपनी समग्र जीवनी शक्ति का अभिवर्धन होता हुआ दृष्टिगोचर होता है । जितना ही प्रकाश बढ़ता है, उतना ही अन्धकार दूर होता है । इसी प्रकार आन्तरिक समर्थता बढ़ने के साथ-साथ जीवन को दुःख-दारिद्र्य का और 'घर' व संसार को भवसागर के रूप में दिखाने वाले नाटकीय वातावरण से भी मुक्ति मिलती है ।

गायत्री मन्त्र का नामकरण उसकी इसी विशेषता के आधार पर हुआ है । गायत्री शब्द के तीन अक्षरों में यही भावार्थ ओत-प्रोत है ।

शतपथ ब्राह्मण में कहा गया है-

सा हैषा गयांस्तत्रे 'प्राणाः व गयास्तत्प्राणांस्तत्रे । तद्यद गयांस्तवे तस्याद् गायत्री नाम ।

-शतपथ १४ ।८ ।१५ ।७

अर्थात् गय कहते हैं प्राण को । त्री अर्थात् त्राण, रक्षण करने वाली, जो प्राण की रक्षा करे, उस शक्ति का नाम गायत्री हुआ ।

और भी देखिए-

गयाः प्राणा उच्यन्ते, गयन् प्राणान् त्रायते सा गायत्री ।

-सन्ध्या भाष्य

'गय' प्राण को कहते हैं, जो प्राणों की रक्षा करें उसे गायत्री कहते हैं ।

गायंते त्रायते इति वा गायत्री प्रोच्यते तस्मात् गायन्तं त्रायते यत् ।

-याज्ञवल्क्य

प्राणों का संरक्षण करने वाली होने से उसे गायत्री कहा जाता है ।

गायतस्त्रायसे देवि तद्गायत्रीति गद्यसे ।
गयः प्राण इति प्रोक्तस्तस्त्राणदपीति वा ।।

-नारद

"जो गाने से त्राण (रक्षा) करे वह देवी गायत्री कही जाती है अथवा जो गय अर्थात् प्राणों का त्राण करने वाली है वह गायत्री है ।"

गातारं त्रायते यस्माद् गायत्री तेन गीयते ।

-स्कन्द पुराण १ ।५१

गायन करने वाले का त्राण उद्धार करती है, इसलिए उसे गायत्री कहते हैं ।

तेषाएते पञ्च ब्रह्मपुरुषा स्वर्गस्य लोकस्य द्वारपालस्य एतानेकं पंचब्रह्म पुरुषात् स्वर्गस्य लोकस्य द्वारपाल वेदास्य कुले वीरो जायते प्रतिपद्यते स्वर्गलोकम् ।

हृदय की चैतन्य ज्योति गायत्री, ब्रह्म-रूप है । उस तक पहुँचने के लिए प्राण, व्यान, अपान, समान, उदान ये पाँच प्राण द्वारपाल हैं । इनको वश में करना चाहिए, जिससे कि हृदयस्थित गायत्री रूप ब्रह्म की प्राप्ति सम्भव हो सके । इस क्रिया से उपासना करने वाले को स्वर्ग सुख प्राप्त होता है और उसकी कुल-परम्परा से वीर-जन उत्पन्न होते हैं ।

'गा' चेति सर्वगा शक्ति, 'यत्री' तत्र नियन्त्रिका ।

अर्थात् 'गा' शब्द यह सर्व गायत्री शक्ति का बोधक है । उस शक्ति को जो नियन्त्रित करने वाली सत्ता है उसे 'यत्री' कहना चाहिए । गायत्री अर्थात् सर्वव्यापी परा और अपरा प्रकृति पर नियन्त्रण करने वाली आत्म चेतना है ।

प्राणो गायत्रः । *-ताण्ड्य ७ ।१ ।९*
प्राण ही गायत्री है
प्राणो वै गायत्र्यः । *-कौ० १५ ।२*
प्राण का गायत्री रूप होना निश्चित है ।
प्राणो वै गायत्री ।

-शतपथ ६ ।४ ।३ ।५

प्राणो गायत्री प्रजननम् । *-तां० १६ ।१४ ।५, १६ ।१६ ।७, १६ ।५ ।९, १९ ।७ ।७*
तत्प्राणो वै गायत्रम् । *-जै० उ० १ ।३७ ।७*
प्राणो वै गायत्र्यः । *-कौ० १५ ।२, १६ ।३, १७ ।२,*
प्राणो वै गायत्री । *-श० ६ ।४ ।२ ।५, फ० ३ ।७*

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्राणो गायत्री । -श० ६ ।२ ।१ ।२४, ६ ।६ ।२ ।७, १० ।३ ।१ ।१, तं० ७।३ ।८, १६ ।३ ।६,

यो वै स प्राण एषा सा गायत्री । - ५ ।१ ।२१

गायत्री वै प्राणः । -श० १ ।३ ।५ ।१५

सैषा गायत्री प्राणः अतोगायत्र्यां जगत्प्रतिष्ठितम् । यस्मिन् प्राणे सर्व देवा एकं भवन्ति । सर्वे वेदाः कर्माणि तत्फलं च, सैव गायत्री प्राण रूपा सती जगत आत्मा सा हैषा गायांस्तत्रे-त्रातवती, के पुनर्गयाः ? प्राणाः वागादयो वैभवा ..... गयत्राणाद् गायत्रीति प्रथिता ।

- वृहदारण्यक ५।१४।४

यह गायत्री ही प्राण है । अतः वही समस्त विश्व में व्याप्त है । इस प्राण में ही समस्त देवता सन्निहित हैं । सब वेद और समस्त कर्मों का फल उससे प्राप्त होता है । यह प्राण रूपा गायत्री ही जगत् की आत्मा है । वाणी नेत्र आदि समस्त इन्द्रियों में समाविष्ट प्राण की संरक्षक होने के कारण उसे गायत्री कहा जाता है ।

'गा' कारो गतिदः प्रोक्त 'य' कारो शक्ति दायिनी । 'त्र' त्राताच तथा विद्धि ।'ई' कार स्वयं परम् ।

'गा कार से गति देने वाली, 'य' कार से शक्ति-दायक 'त्र' से त्राण करने वाली और 'ई'कार स्वयं परम तत्त्व का बोधक है ।

सर्वलोकान् व्याहरन्तीति व्याहृतयः ।

गायत्री तदित्यादिका चतुर्विंशत्यक्षराऽष्टक्षर-पादपरिच्छेदेन त्रिपदी । तस्यां भेदत्रयमाह । प्राण वै गयास्तेषां त्रयाणां (त्राता) गायत्री । गायन्ते त्रायते वा गायत्री । सवितृप्रकाशनार्थत्वात् जगतः प्रसवित्री सावित्री । वाग्रूप त्वात् सरस्वती ।

-सन्ध्या भाष्य

''सब लोकों को जो बतलाती हैं, प्रतिपादन करती हैं, सूचित करती हैं, वे व्याहृतियाँ कहलाती हें ।''

''गायत्री 'तत्' से आरम्भ होकर चौबीस अक्षर वाली है और आठ-आठ अक्षरों की तीन पदों के कारण वह त्रिपदी कहलाती है । इसका भेद बतलाते हुए यह कहा है कि 'प्राण' अर्थात् 'गय' उसका रक्षण करने वाली वह 'गायत्री' । अर्थात् गायत्री का जप करने से प्राणों की रक्षा होती है, इसलिये इसका नाम 'गायत्री' हो गया है । यही गायत्री सूर्य के समान प्रकाश करने वाली होने से, जगत् को उत्पन्न करने वाली होने से 'सावित्री' के नाम से कही जाती है और यही वाणी रूप में होने से 'सरस्वती' कही जाती है ।

गायत्री में सन्निहित प्राण-शक्ति वस्तुतः परम ब्रह्म परमात्मा का ब्रह्म तेज 'भर्ग' ही है । निराकार विश्वव्यापी चेतना के रूप में इसे अनुभव किया जा सकता है । भावों का भगवान् मनुष्य अथवा देवता का रूप धारण कर लोकमंगल के लिए विभिन्न स्तर की लीलाएँ करता रहता है, पर वैज्ञानिक का परब्रह्म सचेतन प्राण-शक्ति के रूप में उस विश्व ब्रह्माण्ड के कण-कण में सन्निहित एवं सक्रिय बना हुआ विद्यमान् है । इसका बाहुल्य देवदूत, अवतार, महामानव, नर-रत्न, ऋषि, मनीषी आदि के रूप में देखा जा सकता है । गीता के विभूति योग में भगवान् ने अपनी विशेष स्थिति जिन प्राणियों या पदार्थों में वर्णन की है, उनमें इस प्राण-शक्ति की अधिकता ही कारण है ।

गायत्री के माध्यम से हम उस ब्रह्म चेतना प्राण-शक्ति से ही अपना सम्पर्क बनाते और अधिक सचेतन बनने का उपक्रम करते हैं । मनुष्य के सचेतन का ब्रह्म सम्पर्क इस प्राण-शक्ति के माध्यम से ही होता है । इसलिए गायत्री उपासना को ब्रह्म-विद्या के नाम से उपनिषदों, ब्राह्मण-ग्रन्थों तथा आरण्यकों में वर्णन किया गया है । ब्रह्म की चर्चा, विवेचना एवं स्तुति प्राण के रूप से भी की गई है । कहा गया है-

कतमएको देव इति । प्राण इति स ब्रह्म तदित्यावक्षते ।

- वृहदारण्यक

वह एक मात्र देव कौन है ? -वह प्राण है । उसे ही ब्रह्म कहा जाता है ।

प्राणो ब्रह्म इति ह स्याह कौषीतकिः ।

-ब्रह्म संहिता

प्राण ही ब्रह्म है, ऐसा कौषतकि ऋषि ने व्यक्त किया है ।

प्रजापतिश्चरति गर्भे त्वमेव प्रति जायसे । तुभ्यं प्राण प्रजास्त्विं या बलिं हरन्ति यः प्राणैः प्रतितिष्ठति ।

-प्रश्नोपनिषद

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हे प्राण! आप ही प्रजापति हैं, आप ही गर्भ में विचरण करते हैं । आप ही पिता-माता के अनुरूप होकर जन्म लेते हैं, यह सब प्राणी आपको ही आत्म-समर्पण करते हैं । वह प्राणों के साथ ही प्रतिष्ठित हो रहा है ।

प्राणो ब्रह्म इति ह स्माह पैंग्यः । *-ब्रह्म संहिता,*

पैंग्य ऋषि ने कहा- प्राण ही ब्रह्म है ।

प्राणो विराट् प्राणो देष्ट्री प्राणां सर्व उपासते ।
प्राणोह सूर्य चन्द्रमाः प्राणामाहुः प्रजापतिम् ।।

-अथर्व

प्राण ही विराट है, वही सब का प्रेरक है । इसी से सब उसकी उपासना करते हैं । प्राण ही सूर्य है, चन्द्रमा है और वही प्रजापति है ।

प्राणाय नमो यस्य सर्वमिदं वशे ।
यो भूतः सर्वस्येश्वरो यस्मिन् सर्व प्रतिष्ठितम् ।।

-अर्थव०,

जिसके अधीन यह सारा जगत् है, उस प्राण को नमस्कार है । वही सब का स्वामी है । इसी में यह सारा जगत् प्रतिष्ठित है ।

सर्वा ऋचः सर्वे वेदाः सर्वे घोष एकैव व्याहृतिः प्राणएव प्राणं ऋच इत्येव विद्यात् ।

-एतरेय

जितनी ऋचायें हैं, जितने वेद हैं, जितने शब्द हैं, जितनी व्याहृतियाँ हैं, ये सब प्राण हैं । उन्हें प्राण रूप समझ कर उन्हीं की उपासना करनी चाहिए ।

प्राणो वा ज्येष्ठः श्रेष्ठश्च ।

-छान्दोग्य,

प्राण ही बड़ा है और प्राण ही श्रेष्ठ है ।

प्राण एव स पुरिशेति । तं पुरिशेते इति पुरिशयं । सन्त प्राणं पुरुष इत्याचक्षते ।

-गोपथ

शरीर रूपी पुरी में निवास करने से उसका स्वामी होने के कारण प्राण ही पुरुष कहा जाता है ।

शतपथ ब्राह्मण में कई स्थानों पर प्राण को प्रजापति कहा गया है ।

प्राणो हि प्रजापतिः -४ । ५ । ५ । १३
प्राण उ वै प्रजपतिः -८ । ४ । १ । ४
प्राणः प्रजपतिः -६ । ३ । १ । ९
सर्व हि दं प्राणेनावृतम्

-एतरेय

यह सारा जगत् प्राण से आवृत है ।

प्राण स्येदं वशे सर्व त्रिदिवे सा प्रतिष्ठितम् ।
मातेव पुत्रान् रक्षस्व श्रींच प्रसांच विधेहि न इति ।।

-प्रश्नोपनिषद्

इस विश्व में जो कुछ है, वह सब प्राण के अधीन है । जो कुछ स्वर्ग में है, वह भी प्राण के ही अधीन है । हे प्राण ! तू हमें माता के समान पाल और लक्ष्मी तथा जीवन-शक्ति प्रदान कर ।

स एष वैश्वनरो विश्व रूपः प्राणोदऽग्नि रुदयेत् ।

-पिप्पलाद,

यह प्राण ही सारे संसार में वैश्वानर रूप से प्रकट होता है ।

अमृतसु वै प्राणः शत० ९ । १ । २ । ३२

"इस मर्त्यपिण्ड को अमृतत्व से संयुक्त रखने वाला प्राण ही है ।"

अराइव रथ नाभौ प्राणे सर्व प्रतिष्ठितम् ।
ऋचो यजूंषि सामानि यज्ञः क्षत्रं ब्रह्म च ।।

"रथ चक्र की नाभि में लगे अरों के समान ऋक् की ऋचाएँ, यजु-साम के मन्त्र, यज्ञ, क्षत्रिय, ब्राह्मण आदि सभी इस प्राण में निहित हैं ।"

प्रजापतिश्चरसि गर्भे त्वमेव प्रतिजायते ।
तुभ्यप्राण प्रजास्त्विमा बलिं हरन्ति यः प्राणैः प्रतिष्ठितम् ।।

"प्रजापति तू ही है, गर्भ में तू ही विचरण करता है और तू ही माता-पिता के समान आकृति वाला होकर उत्पन्न होता है । हे प्राण ! यह सब देहधारी तुझे बलि देते हैं । तू देहगत अन्य प्राणों के साथ प्रतिष्ठित है ।"

गायत्री मन्त्र के शब्दार्थ में से प्रकट है कि यह मनुष्य में सन्निहित प्राणतत्त्व का अभिवर्धन, उन्नयन करने की विद्या है । 'गय' अर्थात् प्राण । 'त्री' अर्थात् त्राण करने वाली प्राणों का परित्राण, उद्धार संरक्षण करे वह गायत्री । मन्त्र का अर्थ जैसा—मनन, विज्ञान, विद्या, विचार होता है । गायत्री मन्त्र अर्थात् प्राणों का परित्राण करने की विद्या ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तारक-मन्त्र गायत्री

गायत्री मन्त्र का एक नाम तारक मन्त्र भी है । कई साधना ग्रन्थों में इसका उल्लेख इसी नाम से हुआ है । तारक अर्थात् तार देने वाला, पार करा देने वाला, तैराकर पार निकाल देने वाला । गहरे जल प्रवाह को पार करके निकल जाने को डूबते हुए को बचा लेने को तारना कहते हैं । यह भव सागर ऐसा ही है, जिसमें अधिकांश जीव डूबते हैं । तरते तो कोई बिरले ही हैं । जिस साधन से तरना सम्भव हो सके , उसे ही तारक कहा जायगा । गायत्री मन्त्र में यह सामर्थ्य है, उसी से उसे तारक मन्त्र कहा जाता है ।

तारक मन्त्र की विशेषता और गायत्री मन्त्र में उसका समावेश होने से पूर्व यह समझना होगा कि वह कौन सी शक्ति है जो मनुष्य को समर्थ-असमर्थ, सफल-असफल और जीवनोद्देश्य की प्राप्ति में सशक्त या अक्षम सिद्ध करती है । उस शक्ति को थोड़े ही शब्द में समझना चाहें तो कहा जा सकता है कि प्राण शक्ति ही मनुष्य सत्ता की जीवनी शक्ति है । वह यदि कम हो तो मनुष्य समुचित पराक्रम कर सकने में असमर्थ रहता है और उसे अधूरी मंजिल में ही निराश एवं असफल हो जाना पड़ता है । क्या भौतिक, क्या आध्यात्मिक दोनों क्षेत्रों में अभीष्ट सफलता के लिए आवश्यक सामर्थ्य की जरूरत पड़ती है । इसके बिना आयोजन को पूर्ण कर सकना, लक्ष्य को प्राप्त कर सकना असम्भव है । इसलिए कोई महत्त्वपूर्ण सफलता प्राप्त करने के लिए उसके आवश्यक साधन जुटाना आवश्यक होता है । कहना न होगा कि भौतिक उपकरणों की अपेक्षा व्यक्तित्व की प्रखरता एवं ओजस्विता कहीं अधिक आवश्यक है ।

साधनों का उपयोग करने के लिये भी शौर्य, साहस और सन्तुलन चाहिए । बढ़िया बन्दूक हाथ में है, पर मन में भीरुता, घबराहट भरी हो तो वह बेचारी बन्दूक क्या करेगी ? चलेगी ही नहीं, चल भी गई तो निशाना ठीक नहीं लगेगा । दुश्मन सहज ही उससे इस बन्दूक को छीनकर उल्टा आक्रमण कर बैठेगा । इसके विपरीत साहसी लोग छत पर पड़ी ईंटों से और लाठियों से डाकुओं का मुकाबला कर लेते हैं । साहस वालों की ईश्वर सहायता करता है, यह उक्ति निरर्थक नहीं है, सच तो यही है कि समस्त सफलताओं के मूल में प्राण-शक्ति ही साहस, जीवट, दृढ़ता लगन, तत्परता की प्रमुख भूमिका सम्पादन करती है और यह सभी विभूतियाँ प्राण-शक्ति की सहचरी हैं ।

प्राण ही वह तेज है जो दीपक के तेल की तरह मनुष्य के नेत्रों में, वाणी में गति-विधियों में, विचारों में प्रकाश बनकर चमकता है मानव-जीवन की वास्तविक शक्ति यही है । इस एक ही विशेषता के होने पर अन्यान्य अनुकूलताएँ तथा सुविधाएँ स्वयमेव उत्पन्न एकत्रित एवं आकर्षित होती चली जाती हैं । जिसके पास विभूति नहीं, उस दुर्बल व्यक्तित्व वाले की सम्पत्तियों को दूसरे बलवान लोग अपहरण कर ले जाते हैं । घोड़ा अनाड़ी सवारी को पटक लेता है । कमजोर की सम्पदा, जर, जोरू, जमीन दूसरे के अधिकार में चली जाती हैं ।

जिसमें संरक्षरण की सामर्थ्य नहीं, वह उपार्जित सम्पदाओं को भी अपने पास बनाये नहीं रख सकता । विभूतियाँ दुर्बल के पास नहीं रहतीं । इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए विचारशील लोगों को अपनी समर्थता प्राण-शक्ति बनाये रखने तथा बढ़ाने के लिए भौतिक एवं आध्यात्मिक प्रयत्न करने पड़ते हैं । आध्यात्मिक प्रयत्नों में प्राण-शक्ति के अभिवर्धन की सर्वोच्च प्रक्रिया गायत्री उपासना को माना गया है । उसका नामकरण इसी आधार पर हुआ है ।

शरीर में प्राण-शक्ति ही नीरोगता, दीर्घ जीवन, पुष्टि मेधा एवं लावण्य के रूप में चमकती है । मन में वही बुद्धिमता प्रज्ञा के रूप में प्रतिष्ठित रहती है । शौर्य, साहस, निष्ठा, दृढ़ता, लगन, संयम, सहृदयता, सज्जनता, दूरदर्शिता एवं विवेकशीलता के रूप व उस प्राण-शक्ति की ही स्थिति आँकी जाती है । व्यक्तित्व की समग्र तेजस्विता का आधार यह प्राण ही हैं । शास्त्रकारों ने इनकी महिमा को मुक्त कण्ठ से गाया है और जन-साधारण को इस सृष्टि की सर्वोत्तम प्रखरता का परिचय कराते हुये बताया है कि वे भूले न रहें, इस शक्ति स्रोत के भाण्डागार को ध्यान में रखें और यदि जीवन लक्ष्य में सफलता प्राप्त

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

करनी हो तो इस तत्त्व को उपार्जित, विकसित करने का प्रयत्न करें ।

गायत्री साधना मनुष्य को प्राणयुक्त बनाती और उसमें प्रखरता उत्पन्न करती है । गायत्री का अर्थ ही है- प्राणों का उद्धार करने वाली । इस प्रकार प्राणवान् और विभिन्न शक्तियों में प्रखरता उत्पन्न होने से पग-पग पर सफलताएँ सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं । प्राण की न्यूनता ही समाज विपत्तियों का, अभावों और शोक सन्तापों का कारण है । दुर्बल पर हर दिशा से आक्रमण होता है, दैव भी दुर्बल का घातक होता है । भाग्य भी उसका साथ नहीं देता और मृत लाश पर जैसे चील, कौए दौड़ पड़ते हैं वैसे ही तत्त्व हीन मनुष्य पर परिस्थितियाँ टूट पड़ती हैं । इसलिए हर बुद्धिमान को प्राण का आश्रय लेना ही चाहिए । कहा गया है -

प्राणो वै बलम् । प्राणो वै अमृतम् । आयुर्नः प्राणः राज वै प्राणः ।

-बृहदारण्यक

प्राण ही बल है, प्राण ही अमृत है । प्राण ही आयु है । प्राण ही राजा है ।

यो वै प्राणः सा प्रज्ञा, या प्रज्ञा स प्राणः ।

-सांख्यायन

जो प्राण है, सो ही प्रज्ञा है, जो प्रज्ञा है, सो ही प्राण है ।

यावद्धयस्मिन् शरीरे प्राणोवसति तावदायुः ।

-कौषीतकि

जब तक इस शरीर में प्राण है तभी तक जीवन है ।

प्राणो वै सुशर्मा सुप्रतिष्ठान् ।

-शतपथ

प्राण ही शरीर रूपी नौका की सुप्रतिष्ठा है ।

हे प्राण ! यह विश्व और स्वर्ग में स्थिर जो कुछ है, वह आपके ही आश्रित है । अतः हे प्राण ! तू माता-पिता के समान हमारा रक्षक बन, हमें धन और बुद्धि दे ।

सक्रामतं यां जहीत शरीरः प्राणापानो ते सयजा विहस्ताम् । शतं जीव शरदो बर्धमानाऽग्निष्टे गोपा अधिपा वशिष्ठः ।

'हे प्राण ! हे अपान ! इस देह को तुम मत छोड़ना । मिल-जुलकर इसी में रहना । तभी यह देह शतायु होगी ।'

व्यक्ति का व्यक्तित्व ही नहीं इस सृष्टि का कण-कण इस प्राण-शक्ति की ज्योति से ज्योतिर्मय हो रहा है । जहाँ जितना जीवन है, प्रकाश है, उत्साह है आनन्द है, सौन्दर्य है, वहाँ उतनी ही प्राण की मात्रा विद्यमान समझनी चाहिए । उत्पादन शक्ति और किसी में नहीं केवल प्राण में ही है । जो भी प्रादुर्भाव, सृजन, आविष्कार, निर्माण, विकास क्रम चल रहा है, उसके मूल में यही परब्रह्म की परम चेतना काम करती है । जड़ पंच तत्त्वों के चैतन्य की तरह सक्रिय रहने का आधार यह प्राण ही है । परमाणु उसी से सामर्थ्य ग्रहण करते हैं और उसी की प्रेरणा से अपनी धुरी तथा कक्षा में हैं । विश्व ब्रह्माण्ड के समस्त ग्रह, नक्षत्रों की गतिविधियाँ इसी प्रेरणा शक्ति से प्रेरित है । कहा भी है-

प्राणाद्धये व खल्विमान भूतानि जायन्ते । प्राणानि जातानि जीवन्ति । प्राणं प्रयस्त्यभि संविशन्तीति ।

-तैत्तिरीय

प्राण-शक्ति से ही समस्त प्राणी पैदा होने पर प्राण से ही जीते हैं और अन्ततः प्राण में ही प्रवेश कर जाते हैं ।

सर्वाणि हवा इमानि भूतानि प्राणमेवा ।
भिशं विशन्ति, प्राथमभ्युज्व हते ।।

-छान्दोग्य

यह सब प्राणी प्राण में से ही उत्पन्न होते हैं और प्राण में ही लीन हो जाते हैं ।

तेन संसारचक्रेऽस्मिन् भ्रमतीत्यव सर्वदा ।
तदर्थं ये प्रवर्तन्ते योगिनः प्राण धारणे ।।
तत एवाखिला नाड़ी निरुद्ध षटवेष्टनम् ।
इयं कुण्डलिनी शक्ति रन्ध्रं त्यजति नान्यथा ।।

-योगी गोरखनाथ

"प्राण वायु के कारण ही जीव समूह इस संसार क्रम में भ्रमण करता है । योगी लोग दीर्घ जीवन प्राप्त करने के लिए इस वायु को स्थिर करते हैं । इसके अभ्यास से नाड़ियाँ पुनः कामादि अष्टदोष से दूषित नहीं हो पातीं । नाड़ी शुद्ध होने पर कुण्डलिनी शक्ति रन्ध्र को छोड़ देती है, अन्यथा नहीं छोड़ती ।"

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सोऽयमाकाश प्राणेन वृहव्याविष्टच्चः तद्यथायमाकाशः प्राणेन वृहत्या विष्टब्ध एवं सर्वाणि भूतानि अपि पिपीलिकभ्यः प्राणिते वृहत्या विष्टव्यानीत्येवं विद्यात् ।

-ऐतरेय

"प्राण ही इस विश्व को धारण करने वाला है । प्राण ही शक्ति से ही यह ब्रह्माण्ड अपने स्थान पर टिका हुआ है । चींटी से लेकर हाथी तक सब प्राणी इस प्राण के ही आश्रित हैं । यदि प्राण न होता तो जो कुछ हम देखते हैं, कुछ भी नहीं दीखता ।

अपश्यं गोपामनिपद्यमानमा च परा च पथिभिश्चरन्तम् ।

स सधीची : स विषूचीर्वसा न आवरीवर्ति भुवनेष्यन्त ।।

-ऋग्० १ ।१६४ ।३१

"मैंने प्राणों को देखा है, साक्षात्कार किया है । यह प्राण सब इन्द्रियों का रक्षक है । यह कभी नष्ट होने वाला नहीं है । यह भिन्न-भिन्न भागों अर्थात् नाड़ियों से आता-जाता है । मुख और नासिका द्वारा क्षण-क्षण में इस शरीर में आता है और फिर बाहर चला जाता है । यह प्राण शरीर में वायु रूप है, पर अधिदैवत रूप से यह सूर्य है ।"

यह विश्वव्यापी प्राण-शक्ति जहाँ जितनी अधिक मात्रा में एकत्रित हो जाती है, वहाँ उतनी ही सजीवता दिखाई देने लगती है । मनुष्य में इस प्राण-तत्त्व का बाहुल्य ही उसे अन्य प्राणियों से अधिक विचारवान्, बुद्धिमान्, गुणवान्, सामर्थ्यवान् एवं सुसभ्य बना सका है । इस महान् शक्ति-पुञ्ज का प्रकृति प्रदत्त उपयोग करने तक ही सीमित रह जाय तो केवल शरीर यात्रा ही सम्भव हो सकती है और अधिकांश नर-पशुओं की तरह केवल सामान्य जीवन ही जिया जा सकता है, पर यदि उसे अध्यात्म विज्ञान के माध्यम से अधिक मात्रा में बढ़ाया जा सके तो गई-गुजरी स्थिति में ऊँचे उठ कर उन्नति के उच्च शिखर तक पहुँच सकना सम्भव हो सकता है ।

गई-गुजरी आध्यात्मिक एवं भौतिक परिस्थितियों में पड़े रहना मानव-जीवन में सरलतापूर्वक मिल सकने वाले आनन्द, उल्लास, से वंचित रहना, मनोविकारों और उनकी दुःखद प्रतिक्रियाओं से विविध विधि कष्ट-क्लेश सहते रहना यही तो नरक है । देखा जाता है कि इस धरती पर रहने वाले अधिकांश नर-तनुधारी नरक की यातनाएँ सहते हुए ही समय बिताते हैं । आन्तरिक दुर्बलताओं के कारण सभी महत्त्वपूर्ण सफलताओं से वंचित रहते हैं । इस स्थिति से छुटकारा पाने के लिए प्राण-तत्त्व का सम्पादन करना आवश्यक है ।

गायत्री महामन्त्र में इसी प्रक्रिया का समस्त तत्त्व-ज्ञान सम्मिलित है । जो विधिवत् उसका आश्रय ग्रहण करता है, उसे तत्काल अपने में समग्र जीवनी शक्ति का अभिवर्धन होता हुआ दृष्टिगोचर होता है । जितना ही प्रकाश बढ़ता है, उतना ही अंधकार दूर होता है, इसी प्रकार आन्तरिक समर्थता बढ़ने के साथ-साथ जीवन को दुःख-दारिद्र का घर और संसार को भवसागर के रूप में दिखाने वाले नारकीय वातावरण का भी अन्त होने लगता है ।

गायत्री को 'तारक मन्त्र' इसलिये कहा गया है कि वह साधक को नरक से उवार सकता है । कष्टकर और खेदजनक परिस्थितियों से पार कर सकता है । जिनको दुर्बलताओं ने घेर रखा है, उनके लिए पग-पग पर दुःख-दारिद्र भरा नरक ही प्रस्तुत रहता है । संसार में उन्हें कुछ भी आकर्षण एवं आनन्द दिखाई नहीं पड़ता । अपनी ही तृष्णाएँ, अपनी वासनाएँ बन्धन बन कर रोम-रोम को जकड़े रहती हैं और बन्दी जीवन की यातनायें सहन करते रहने को बाध्य करती हैं । चूँकि यह परिस्थितियाँ हमारी अपनी विनिर्मित की हुई होती हैं । दुर्बलताओं का प्रतिरोध न करके हमने स्वयं ही उन्हें अपने ऊपर शासन करने के लिए आमन्त्रित किया होता है । अतएव इस विधान स्थिति का उत्तरदायित्व भी अपने ही ऊपर है । जब हम मानवोचित् पुरुषार्थ अपना कर प्राण प्रतिष्ठा के लिए तत्पर होते हैं, गायत्री उपासना का आश्रय लेते हैं तो इन विपत्तियों से सहज ही छुटकारा मिल जाता है । डूबने वाली स्थिति बदल जाती है और हम तैर कर पार होने लगते हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गायत्री का महात्म्य वर्णन करते हुए ऋषियों ने उसे 'तारक मन्त्र' बताया है । और कहा है जो उसकी शरण पकड़ेगा, उसे भवबन्धनों से, भव सागर से, नरक से उवारने में देर न लगेगी । यह महाशक्ति उसे डूबने से बचा लेगी और पार उतरने का उपक्रम बना देगी । देखिए-

गायत्र्या परमं नास्ति देविचेह न पावनम् ।
हस्तत्राणप्रदा देवी पततां नरकार्णवे ।।

-शंख स्मृति

नरक रूपी समुद्र में गिरते हुए को हाथ पकड़कर बचाने वाली, गायत्री के समान पवित्र करने वाली वस्तु इस पृथ्वी तथा स्वर्ग में और कोई नहीं है ।

शत्रु तो न भयं तस्य दस्युतो क्वान राजतः ।
न शस्त्रानल तो यौधास्कदाचित्संभविष्यति ।।

न उसे शत्रुओं का भय रहता है, न डाकुओं का, न राजा का, न हथियार का, न अग्नि का, वह सब प्रकार के भयों से निर्भय हो जाता है ।

जपतां जुह्वतां चैव विनिपाते न विद्यते ।

गायत्री जप और हवन करते रहने वाले का कभी पतन नहीं होता ।

सैषा प्रसन्ना नृणां भवति मुक्तये ।

''वे भगवती प्रसन्न होकर मनुष्य को संसार सागर से मुक्त कर देती हैं ।''

दैनिक साधना, सन्ध्या नित्यकर्म में गायत्री मन्त्र जप का साधारण विधान है । विशेष प्रयोजनों के लिए सकाम, निष्काम, निर्जीव, सजीव अनुष्ठान पुरश्चरण किये जाते हैं । यह सामान्य क्रम कहलाता है । इससे ऊँचे स्तर की साधना दो भागों में विभक्त है- एक को कहते हैं ध्यान-धारणा और दूसरे भाग को कहते हैं प्राण-प्रक्रिया । इन्हीं दोनों का अवलम्बन कर साधक उच्च आध्यात्मिक भूमिका में विकसित होता है ।

ध्यान-धारणा में भावना का प्राधान्य है । चित्त को एकाग्र तन्मय एवं प्रेम-भावना से परिपूर्ण करके इष्टदेव के साथ एकात्म भाव, अद्धैत, विलय की स्थिति उत्पन्न करने में अन्तःकरण का आत्म-भाव का विकास होता है । लघुता विभुता में परणित होती है । पुरुष पुरुषोत्तम बनता है और नर से नारायण बनने का अवसर आ जाता है । आत्म-साक्षात्कार और ईश्वर दर्शन इसी स्थिति में होता है । सीमितता जब असीम में परिणत हो जाती है- छोटी सीमा में केन्द्रित ममत्व जब 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का रूप धारण कर लेता है, तब अहंता मिटती है और निरहंकृति व्यापकता में, पूर्णता में परिणत होने लगती है । इसी मार्ग पर चलते हुए जीव, ब्रह्म बन जाता है । जब सब अपने लगते हैं, सभी से समान प्रेम होता है तो प्रेम परमेश्वर का, जड़-चेतन में सर्वत्र अपनी विशुद्ध आत्मा का परमात्मा का दर्शन होता है । इसी ब्राह्मी स्थिति को प्राप्त करने पर जीवनोद्देश्य पूर्ण हो जाता है । उसी भूमिका को आत्म-साक्षात्कार, ब्रह्म-निर्माण, सच्चिदानन्द सुख, निर्विकल्प समाधि कहते हैं । इसी में जीव सब बंधनों से मुक्त होकर ब्रह्म लोक का, परमपद का, मोक्ष का अधिकारी बनता है ।

इस स्थिति को प्राप्त करने से पूर्व साधक को 'प्राण प्रक्रिया ' की भूमिका में होकर गुजरना पड़ता है । सामान्य नित्यकर्म एवं सकाम पुरश्चरणों से आगे बढ़ कर ध्यान-धारणा की उच्च भूमिका में प्रवेश करने से पूर्व, एक मध्यवर्ती साधन के रूप में इस 'प्राण-प्रक्रिया' का अपनाना भी अनिवार्य रूप से आवश्यक हो जाता है । आत्मिक भूमिका में प्रवेश करना शत्रुओं के चक्रव्यूह किले को भेदने की तरह कठिन है । काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर रूपी इस कल्याण मार्ग को रोके बैठे रहते हैं । वासनाएँ और तृष्णा की दो पिशाचनियाँ मनुष्य को दुराचारणी वेश्या की तरह प्रलोभन आकर्षण के सारे साज-सामान जुटाये बैठी रहती हैं । इस जंजाल में ही जीव को जन्म से मृत्यु तक बन्धन-बद्ध होकर तड़पना पड़ता है । नरक के यह आठ दूत सामान्य स्तर के जीव को अपने चंगुल में ही दबोचे बैठे रहते हैं । वासना और तृष्णा रूपी जादूगरनियाँ उसे 'नट-मर्कट' की तरह नचाती रहती हैं । षड्रिपु । मनोविकार मित्र बनकर साथ-साथ छद्मवेश में रहते हैं और हर घड़ी शत्रुओं की करतूत करके जीव का लोक, परलोक बिगाड़ते रहते हैं । काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर की उंगलियों के इशारे पर जीव नाचता रहता है । वे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जो चाहते हैं सो कराते हैं, जिधर इच्छा होती है उधर भागते हैं ।

इस विडम्बना में फँसा हुआ असहाय जीव आत्म कल्याण की बात ध्यान में आने पर भी कुछ कर नहीं पाता । श्रेय साधन के लिए उसे न एक मिनट की फुरसत मिलती है और न एक पाई खर्च करने की लोभ आज्ञा देता है । आत्मा को अपनी आकांक्षा दबाते, कुचलते, रोते, कलपते, दिन बिताने पड़ते हैं और एक-एक करके यह बहुमूल्य मानव-जीवन यों ही नष्ट-भ्रष्ट समाप्त हो जाता है । तब अन्तकाल तक केवल दुर्गति और पश्चाताप का उत्पीड़न सहने के अतिरिक्त और कुछ हाथ नहीं रह जाता है ।

जीवों में से अधिकांश को इसी स्तर का जीवन काटना पड़ता है । इससे उबरने के लिए अन्धी दुनिया की भेड़चाल से प्रतिकूल दिशा में चलना पड़ता है । इसके लिए आवश्यक साहस चाहिये । दुनिया अपने को मूर्ख बताये तो उसकी समझ को उपहास मान कर अपना पथ आप निर्धारित करने की क्षमता और दृढ़ता किसी विरले में ही होती है । यह मनस्विता और तेजस्विता लगन और श्रद्धा जब तक अपने में न हो, तब तक आत्म-कल्याण के मार्ग पर देर तक और दूर तक नहीं चला जा सकता । श्रेय पथ पर किसी आवेश, उत्साह में थोड़ी दूर तक चले भी तो आलस्य, प्रमाद उसे अस्तव्यस्त कर देते हैं । छोटी-मोटी कठिनाइयों के अवरोध सामने आ खड़े होते हैं । तथाकथित मित्र, परिजनों के स्वार्थ में राई-रत्ती कमी आती है तो वे भी गरम होते हैं । कई तो मूर्ख बताते और उपहास करते हैं । इन अड़चनों से मन ढीला पड़ जाता है और जो कुछ थोड़ा-सा आरम्भ किया था, वह संकल्प शक्ति की दुर्बलता, मानसिक शिथिलता के कारण थोड़े ही दिन में समाप्त हो जाता है ।

इस परिस्थिति से निपटे बिना आज तक कोई श्रेयार्थी आत्म-कल्याण के पथ पर आगे नहीं बढ़ सका । इसलिए इस अनिवार्य आवश्यकता की पूर्ति के लिये वह आन्तरिक साहस, आत्मबल एकत्रित करना ही पड़ता, जो इन समस्त विघ्नों को परास्त करता हुआ अंगद के पैर की तरह अपने निश्चय पर दृढ़ बने रहने से सहायता कर सके । यह आत्म बल, यह आन्तरिक साहस प्राण-शक्ति पर आधारित है । इसलिये साधक को प्राण-प्रक्रिया द्वारा अभीष्ट मनोबल, आन्तरिक दृढ़ता एवं अविच्छिन्न श्रद्धा का सम्पादन करना पड़ता है । इसके लिऐ आवश्यक प्रयत्न करने का नाम ही 'प्राण-प्रक्रिया' है ।

आत्म-कल्याण के पथ पर चलाने वाले साधक को अपने सामने आने वाली कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है । आहार-विहार राजसी न रहने से शरीर में भी कुछ दुर्बलता आती है, उसकी पूर्ति प्राण-बल से ही करनी पड़ती है । अभावग्रस्त, एकाकी, कष्टसाध्य, दूसरों से उपेक्षित जीवन खलता है और मन में उद्विग्नता उत्पन्न होती है । इसके समाधान के लिए भी प्राण-बल चाहिये । फिर श्रेयार्थी का हृदय बड़ा कोमल हो जाता है । दूसरों का कष्ट देखकर मक्खन की तरह सहज ही पिघल जाता है । दया और करुणा से द्रवीभूत अन्तःकरण कुछ सहायता करना ही चाहता है ।

भौतिक दृष्टि से दूसरों की सहायता धनी लोग कर सकते हैं और आत्मिक दृष्टि से किसी की सहायता कर सकना प्राण-धन से सम्पन्न लोगों के लिए, सिद्ध पुरुषों के लिए आत्मिक सम्पत्ति से सुसम्पन्न व्यक्ति के लिए ही सम्भव होता है । यह पूँजी केवल प्राण-बल के आधार पर ही संग्रह की जा सकती है ।

गायत्री की 'प्राण-प्रक्रिया' वह वैज्ञानिक पद्धति है, जो साधक की उपरोक्त कठिनाइयों का हल और आवश्यकता की पूर्ति का साधन प्रस्तुत करती है । समर्थ साधक ही अपनी आन्तरिक क्षमता के द्वारा इस कठिन मार्ग पर दैर तक अन्त तक चलता रह सकता है । इसलिये एक आवश्यक साधन को माध्यम समझते हुए श्रेयार्थी की प्राण-शक्ति सम्पादित करने की साधना पद्धति को अपनाना पड़ता है । इसी विधि-व्यवस्था का नाम 'प्राण-प्रक्रिया' है ।

इस अनन्तः विश्व ब्रह्माण्ड में समुद्र में भरे हुए जल की तरह सूक्ष्म रूप में वह अपेक्षित प्राण-

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

शक्ति भरी पड़ी है । आकाश में वायु, ईथर, विद्युत, परमाणु जैसी भौतिक शक्तियाँ भरी पड़ी हैं, इसे पदार्थ-विज्ञान के विद्यार्थी जानते हैं । अध्यात्म विद्या के तत्त्वदर्शियों को पता है कि इस ब्रह्माण्ड में एक प्रचण्ड प्राण-शक्ति व्याप्त है जिसे संस्कृत में 'ब्रह्मऊष्मा' और अंग्रेजी में 'लेटेन्ट हीट' कहते हैं । इसी के प्रभाव और प्रकाश से संसार में विविध प्रकार की हलचलें और गतिविधियाँ दृष्टिगोचर होती हैं । परमाणु के इलेक्ट्रोन ,प्रोट्रोन, न्यूट्रोन आदि भाग इसी ऊष्मा से अपनी धुरी और कक्ष पर द्रुत गति से घूमते हैं । ग्रह नक्षत्रों की गतिशीलता का यही कारण है । वनस्पतियों और जीव-जन्तुओं में सजीवता इसी प्रभाव से परिलक्षित होती है । यह प्राण ही संसार का जीवन है । गायत्री का सविता देवता उस प्राण का प्रचण्ड-पुञ्ज अपने में धारण किये हुए है ।

गायत्री शब्द के अक्षरों का अर्थ-प्राण की संरक्षक अभिवर्धनी शक्ति है । यह महामन्त्र उस महत्तत्व साधक में इस प्राण की मात्रा बढ़ाता है । जिस प्राणी में जितना आध्यात्मिक चुम्बकत्त्व है वह उतनी ही, अधिक मात्रा में इस महाप्राण को अपनी ओर आकर्षित कर उसे संग्रह कर सकता है । इस चुम्बकत्त्व का अभीष्ट मात्रा में उत्पादन गायत्री मन्त्र की उपासना से होता है । जिन्होंने इस महाशक्ति का आश्रय-सान्निध्य लाभ किया है, उनमें प्राण-शक्ति की मात्रा दिन-दिन बढ़ती चली गई है और वे इतना आत्म-बल सम्पादित कर सकते हैं जिसके आधार पर बाह्य और आन्तरिक जीवन की समस्त कठिनाईयों का निवारण और समस्त आवश्यकताओं का समाधान किया जा सके ।

प्राण-प्रक्रिया के साधन विधानों को प्राणायाम कहते हैं । यों साधारणतया साँस की गहराई तक खींचने (पूरक) रोके रहने(अन्तःकुम्भक) पूरी तरह बाहर निकालने (रेचक) और कुछ देर बिना साँस के रहने (बाह्य कुम्भक) इस चार स्तर में बढ़ी हुई श्वासोच्छ्वास प्रक्रिया को प्राणायाम कहा जाता है । संध्या उपासना के नित्य-कर्मों में इसी पद्धति का प्रयोग होता है, पर इतने मात्र से ही प्राणायाम को सीमाबद्ध नहीं मान लेना चाहिये.। उसके प्रख्यात ८४ प्रकार हैं । इसके अतिरिक्त भी अन्य ऐसे प्राण-विधान हैं, जिनके माध्यम से शरीर के सूक्ष्म प्राण-संस्थानों का जागरण होता है, वे विश्व-व्यापी प्राण-शक्ति के साथ जोड़ने और उस सम्पर्क से अपने को अत्यधिक दिव्य सामर्थ्य सम्पन्न बनाने में समर्थ होते हैं ।

मोटे तौर पर प्राणायाम श्वासोच्छ्वास की एक व्यायाम पद्धति है, जिससे फेफड़े मजबूत होते, रक्त संचार की व्यवस्था सुधारने से समग्र आरोग्य एवं दीर्घ जीवन का लाभ मिलता है । शरीर विज्ञान के अनुसार हमारे दोनों फेंफड़े साँस को अपने भीतर भरने के लिये वे यन्त्र हैं, जिनमें भरी हुई वायु समस्त शरीर में पहुँच कर ओषजन (ऑक्सीजन) प्रदान करती है और विभिन्न अवयवों से उत्पन्न हुई मलीनता (कार्बोनिक गैस) को निकाल बाहर करती है । यह क्रिया ठीक तरह होती रहने से फेफड़े मजबूत बनते हैं और रक्त-शुद्धि का क्रम ठीक तरह चलता रहता है, पर देखा गया है कि लोग गहरी साँस लेने के आदी नहीं होते । वे उथली साँस लेते हैं, जिससे फेफड़ों का लगभग एक चौथाई ही काम करता है शेष तीन चौथाई भाग लगभग निष्क्रिय पड़ा रहता है । शहद की मक्खी के छत्ते की तरह फेफड़ों में प्रायः ७ करोड़ ३० लाख 'स्पंज' जैसी कोष्ठक होते हैं । साधारण हल्की साँस लेने पर उनमें से लगभग २ करोड़ में ही वायु पहुँचती है । शेष ५।। करोड़ को कोई उपयोग नहीं होता । इस निष्क्रिय पड़े हुए भाग में जड़ता और गन्दगी जमने लगती है और उसी में क्षय, (टी० बी०) खाँसी, (कफ), सूजन (ब्रौंकाइटिस) जल वृण (प्लुरिसी) आदि रोगों के कीड़े जमा होकर चुपके-चुपके अपना विघातक कार्य करते रहते हैं । फेफड़ों की कार्य पद्धति का अधूरापन रक्त-शुद्धि पर प्रभाव डालता है । हृदय कमजोर पड़ता है और फलस्वरूप अकाल-मृत्यु का कोई न कोई बहाना रोज उपज खड़ा होता है । डाक्टरों का कथन है कि प्रत्येक पाँच में से एक मौत फेफड़ों के रोग से होती है । १५ वर्ष से अधिक आयु में मरने वालों में से प्रत्येक तीन के पीछे एक मौत फेफड़ों के रोगों से होती है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अकाल, महामारी, युद्ध, दुर्घटना आदि से उतने मनुष्य नहीं मरते जितने फेफड़ों के रोगों से । हमारे देश में औसतन प्रति मिनट एक व्यक्ति क्षय रोग से मरता है और उसका प्रधान कारण फेफड़ों की दुर्बलता ही होता है ।

गहरे श्वासोच्छ्वास लेने की साधारण प्राणायाम पद्धति को फेफड़ों का बढ़िया व्यायाम कहा जा सकता है, जिससे स्वास्थ्य सुधार और दीर्घ-जीवन की सम्भावना निश्चित रूप से बढ़ती है । विभिन्न रोगों का निवारण केवल विशेष प्रकार के प्राणायामों द्वारा किया जा सकता है । प्राण-पद्धति अपने आप में एक सर्वांगपूर्ण आरोग्य सम्वर्धन एवं रोग निवारण की सर्वांगपूर्ण पद्धति है । यदि कोई इस विज्ञान को ठीक तरह जान ले तो न केवल अपना बिगड़ा हुआ स्वास्थ्य सुधार ले, वरन् दूसरों को भी शारीरिक रोगों से मुक्त कर उन्हें सर्वांगपूर्ण सुधरे हुए स्वास्थ्य का आनन्द लाभ करा सकता है । इसलिये प्रत्येक धर्म कार्य में, शुभ कार्य में, संध्या वन्दन के नित्य कर्म में, 'प्राणायाम' को एक आवश्यक धर्म-कृत्य के रूप में सम्मिलित किया गया है ।

हमें यह भली-भाँति समझ लेना चाहिये कि स्वास्थ्य लाभ तो 'प्राणायाम' का अकिंचनसा प्रारम्भिक लाभ है । उससे वास्तविक लाभ मानसिक एवं आध्यात्मिक होता है । मनोविकारों के उद्वेग में प्राणायाम एक प्रकार का चमत्कारी प्रयोग है । चिन्ता, क्रोध, निराशा, भय, कामुकता, उद्वेग आदि का समाधान उन प्रयोजनों के लिए निर्धारित प्राणायामों द्वारा सरलतापूर्वक किया जा सकता है । मस्तिष्क की क्षमता बढ़ाने में स्मरण शक्ति, कुशाग्रता, सूझ-बूझ, दूरदर्शिता, सूक्ष्म-निरीक्षण, धारणा, प्रज्ञा, मेधा, आदि मानसिक विशेषताओं का अभिवर्धन 'प्राणायाम' द्वारा किया जा सकता है । चंचल मन का विरोध एकाग्रता साधन करने के लिए प्राणायाम की उपयोगिता अद्भुत है । आन्तरिक मलीनता को शुद्ध करने और अन्तःकरण में सतोगुणी सत्प्रवृत्तियों में अभिवर्धन का आध्यात्मिक प्रयोजन भी प्राणायाम से सिद्ध होता है । षट्चक्र वेधन, कुण्डलिनी जागरण एवं शरीर तथा मन में प्रसुप्त पड़े हुए अनेक सूक्ष्म-शक्ति संस्थानों का उन्नयन प्राण की प्रयोग प्रक्रियाओं पर ही निर्भर है । इनका विज्ञान एवं विधान अपने आप में एक सर्वांगपूर्ण शास्त्र है । प्राचीनकाल के तत्व-वेत्ता इस विद्या को भली प्रकार जानते थे और विश्वव्यापी प्राण-तत्त्व को अपने अन्दर अभीष्ट मात्रा में धारण कर उन विभूतियों को प्राप्त करते थे, जो ऋद्धि-सिद्धियों के नाम से विख्यात हैं ।

यहाँ यह ध्यान रखने की बात है कि साँस खींचना और छोड़ना ही प्राणायाम नहीं है, यह तो उसकी प्रारम्भिक परिपाटी है । आगे चल कर उसके अनेक प्रयोग और प्रकार बन जाते हैं । ८४ प्राणायामों के विधान एक से एक विलक्षण प्रकार के हैं । फिर कितने ही उनमें से मानसिक और आध्यात्मिक ही हैं, जिनमें साँस खींचने और छोड़ने की आवश्यकता नहीं पड़ती है, उनमें प्राण-शक्ति का आकर्षण एवं विकर्षण ही प्रधान रहता है । प्राण का संचय होने से समाधि लगती है और मनुष्य काल को वश में करके मन चाही अवधि तक जीवित रह सकता है । वह चाहे प्राण-त्याग उसी सरलता से कर सकता है , जैसे मल-मूत्र का विर्सजन किया जाता है । शरीर और मन प्राण की शक्ति से चलते हैं । प्राण पर नियन्त्रण करने की विधि जानने वाला अपने शरीर और मन की प्रत्येक क्रिया पर नियन्त्रण रख सकने की क्षमता से सुसम्पन्न हो जाता है । इस प्रकार के सभी विधि-विधान 'प्राणायाम' विद्या के अन्तर्गत आते हैं । साँस खींचने-छोड़ने वाला रेचक-पूरक कुम्भक विधान तो उस महाप्राण विद्या का सब में प्रारम्भ का एक हलका-फुलका शुभारम्भ मात्र है ।

गायत्री प्राण विद्या है । प्राण के साधन से हम शरीर मन और आत्मा की दृष्टि से परिपुष्टि और समुन्नत बनते हैं । यह विकास क्रम हमारी अपूर्णताओं को क्रमशः दूर करते हुए पूर्णताओं से लाभान्वित करता है । अतः हम अपनी सम्पूर्ण अपूर्णताओं से छुटकारा पाकर पूर्णता प्राप्ति का जीवन लक्ष्य प्राप्त कर सकने में सफल हो जाते हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गायत्री उपासना का मध्यवर्ती मार्ग प्राण-प्रक्रिया है । इससे वह समर्थता आती है, जिसके बल पर 'ध्यान धारणा' से सफलता प्राप्त की जा सके । बल के मूल्य पर ही इस संसार की विभिन्न सम्पत्तियाँ और विभूतियाँ प्राप्त की जा सकती हैं । शरीर-बल, मनोबल, आत्म-बल इन तीनों का अभिवर्धन धन, सम्पत्ति, इन्द्रिय-भोग, यज्ञ, मैत्री, वर्चस्व, उल्लास आदि सांसारिक सुखों का सृजन करता है । इसी के द्वारा आत्म-कल्याण का जीवनोद्देश्य प्राप्त होता है । उसी के द्वारा बन्धन से मुक्ति का, मोक्ष का, परम पुरुषार्थ सफलतापूर्वक सम्पन्न होता है । अतएव समग्र सफलता के लिये समग्र बलिष्ठता सम्पादित करनी पड़ती है और यह प्रयोजन गायत्री की प्राण विद्या द्वारा सम्पन्न हो सकता है। अतएव गायत्री शक्ति के आह्वान का विधान 'प्राणायाम' हमारी एक महत्त्वपूर्ण आवश्यकता है । इसकी महिमा बताते हुए शास्त्रकारों ने कहा है-

तपो न परं प्राणायामततो विशुद्धिर्मलानां दीप्तिश्च ज्ञानस्येति ।

-तन्त्र सार

"प्राणायाम के बराबर दूसरा कोई तप नहीं है । उससे दोषों की शुद्धि और ज्ञान की दीप्ति होती है ।"

प्राणायामैरेव सर्वे प्रशुष्यन्ति मला इति ।
आचार्यणांतु केपाञ्चिदन्यत्कर्म न सम्मतम् ।।

-योग चूड़ामणि

"प्राणायाम से देह के समस्त मल सूख जाते हैं, अनेक आचार्यों को इसके अतिरिक्त और कोई मलशोधक साधन अभिप्रेत नहीं है ।"

प्राणायामेन युक्तेन सर्वरोगक्षयो भवेत् ।
अयुक्ताभ्यास योगेन सर्वरोग समुद्भवम् ।।
हिक्का श्वासश्च काशश्च शिराकर्णाक्षि वेदना ।
भवन्ति विविधा दोषाः पवनस्य व्यतिक्रमात् ।।

-सिद्धियोग

'नियमपूर्वक प्राणायाम करने से साधक सब रोगों से छूट जाता है, किन्तु अनियमपूर्वक करने से वायु का व्यतिक्रम होकर हिचकी, दमा, खाँसी, आँख, कान और सिर की बीमारियाँ आदि पैदा हो जाती हैं ।"

प्राणायामैर्दहेद्दोषान्धारणाभिश्च किल्बिषम् ।
प्रत्याहारेण संसर्गान् ध्यानेनानीश्वरान्गुणान् ।।

"सम्यक् प्राणायाम से शारीरिक दोष दूर होते हैं, कुम्भक से शरीर और मन मल रहित होता है, धारणा से पाप नष्ट होते हैं । प्रत्याहार से इन्द्रियों का संसर्ग छूटता है और ध्यान से परमात्मा का ज्ञान होता है ।"

पवनो लीयते यत्र मनस्तत्र विलीयते ।

-मंत्र महार्णव

"प्राण वायु के स्थिर हो जाने पर मन भी स्थिर हो जाता है ।"

दह्यन्ते ध्मायमानानां धातूनां हि यथा मलाः ।
तथेन्द्रियाणां दह्यन्ते दोषाः प्राणस्य निग्रहात् ।।

-मनुस्मृति

"जैसे अग्नि में तपाने से धातुओं का मल जल करके शुद्ध हो जाता है, उसी तरह प्राणायाम से इन्द्रियों के मल नष्ट होकर वे शुद्ध हो जाते हैं ।"

न बहिः प्राण आयाति देहस्य मरणं कुतः ।
केवले कुम्भके सिद्धे किं न सिद्ध यति भूतले ।।

-महातंत्र

"जिस योगी का प्राण (श्वास) बाहर निकलती ही नहीं, उसकी मृत्यु कैसी ? जिस योगी का केवल कुम्भक सिद्ध हो गया, उसे कुछ भी दुर्लभ नहीं है ।"

'पातंजल योग सूत्र' में भी प्राणायाम के आध्यात्मिक महत्त्व का दिगदर्शन कराते हुए लिखा है-

ततः क्षीयते प्रकाशावरणम् ।
धारणासु च योग्यता मनसः ।।

अर्थात्-"प्राणायाम् के अभ्यास से रजोगुण और तमोगुण का आवरण हट कर प्रकाश प्राप्त होने लगता और चित्त को एकाग्रता की विशेष शक्ति प्राप्त होती है ।

गायत्री मन्त्र और प्राण-विद्या

गायत्री मन्त्र के द्वारा जिस प्राण-विद्या की साधना की जाती है, वह ब्रह्म-विद्या ही है । जप, अनुष्ठान और पुरश्चरणों के द्वारा मनोभूमि को शुद्ध किया जाता है । जिस प्रकार किसान अपनी कृषि

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भूमि को हल चलाकर जोतता है और उसे इस योग्य बनाता है कि बीज भली प्रकार उगे, वैसे ही आत्म-कल्याण का पथिक अपनी मनोभूमि को माला रूपी हल के आधार पर कुसंस्कारों से परिमार्जित करके इस योग्य बनाता है कि उसमें उपासना के बीज भली प्रकार उग सकें । प्राण ही वह बीज है जो आगे चलकर साधक के सामने शक्ति एवं सिद्धि के रूप में प्रकट होता है, गायत्री उपासक के लिए जप की प्रथम कक्षा पूर्ण कर लेने के बाद दूसरी कक्षा प्राण-साधना की ही है । गायत्री शब्द का अर्थ ही 'प्राण' का उत्कर्ष करने वाली प्रक्रिया है ।

गायत्री उपासक जिस प्राण-विद्या का साधन करता है, वह परब्रह्म सत्ता की प्रचण्ड आध्यात्मिक शक्ति है, इसे ब्रह्म ऊष्मा (लेटेन्ट हीट) भी कहते हैं । उपासना के द्वारा साधक अपनी अन्तरात्मा में इस शक्ति को जितनी अधिक मात्रा में अपने अन्दर धारण कर लेता है, उतना ही वह प्राणवान् आत्म-बल सम्पन्न बनता जाता है ।

श्रुति में प्राण को प्रत्यक्ष ब्रह्म मानकर उसका अभिनन्दन किया गया है-

वायोत्वं प्रत्यक्ष ब्रह्मासि ।' -ऋ०

हे प्राण वायु ! आप प्रत्यक्ष ब्रह्म हैं ।

''प्राणाय नमो यस्य सर्वमिद वसेः यो भूतः सर्वस्येश्वरो यस्मिन्सर्व प्रतिष्ठितम् ।''

-अथर्व०

उस प्राण को नमस्कार है जिसके वश में सब कुछ है, जो सबका स्वामी है, जिसमें सब समाये हुए हैं ।

उपनिषदों में भी ऐसे ही वर्णन मिलते हैं-

प्राणोभवेत् परब्रह्म जयत्कारमव्ययम् ।
प्राणोभवेत् तथा मन्त्र ज्ञानकोश गतोऽपि वा ।।

-ब्रह्मोपनिषद्

अर्थ- प्राण ही जगत का कारण परब्रह्म है, मन्त्र ज्ञान, तथा पंचकोश, प्राण पर आधारित हैं ।

प्राणाग्नयः एवास्मिन् ब्रह्मकरे जाग्रति ।

-प्रश्नोपनिषद्

इस ब्रह्मपुरी में प्राण की अग्नियाँ ही सदा जलती रहती हैं । आरण्यक और ब्राह्मण ग्रन्थों में प्राण को प्रज्ञा, आयु और अमृत कहा गया है, । यथा-

'प्राणोस्मि प्रज्ञात्मा तं मामायुरमृतमित्युपासस्वाऽयुः प्राणः प्राणो वा आयुः ।' यावदस्मिञ्छरीरे प्राणो वसति वावदायुः प्राणेनद्धि एवास्मिल्लोकेऽमृतत्वमाप्नोति ।-

शांखायन आरण्यक ५ । २

-मैं ही प्राण रूप प्रज्ञा हूँ, मुझे ही आयु और अमृत जानकर उपासना करो । जब तक प्राण है, तभी तक जीवन है, इस लोक में अमृतत्व प्राप्ति का आधार प्राण ही है ।

अमृतम् वै प्राणः,

-शतपथ० ९ । १ । २ । ३१

प्राण ही निश्चित रूप से अमृत है ।

सात प्राण ही सात ऋषि हैं । सप्त ऋषियों को ज्ञान, तप और अध्यात्म बल का प्रतीक माना जाता है । ये ऋषि सदा प्राणों के रूप में हमारे अन्दर मौजूद हैं, गायत्री उपासना के द्वारा इन्हें अपने अन्तस् में जागृत करके साधक ऋषितत्त्व के धारण का अधिकारी बनता है ।

ऐतरेय ब्राह्मण में आता है कि हिरण्यदन नामक ऋषि ने प्राण के स्वरूप को जाना और उसकी उपासना के फलस्वरूप उन्हें विपुल परिणाम प्राप्त हुये ।

प्राण को ही ऋषि माना गया है । मन्त्र दृष्टा ऋषियों का ऋषित्व उनके शरीर पर नहीं वरन् प्राण पर अवलम्बित है । इसलिये विभिन्न ऋषियों के नाम से उसका ही उल्लेख हुआ है । इन्द्रियों के नियंत्रण को कहते हैं 'गृत्स' और कामदेव को कहते हैं 'मद' । यह दोनों ही कार्य प्राण-शक्ति के द्वारा सम्पन्न होते हैं, इसलिए उसे 'गृत्समद' कहते हैं । **विश्वं मित्रं यस्य असौ विश्वामित्र,** प्राण का यह समस्त विश्व अवलम्बन होने से मित्र है, इसलिए उसे विश्वामित्र कहा गया है ।

मननीय, भजनीय, सेवनीय और श्रेष्ठ होने के कारण उसे वामदेव कहा गया । **सर्वम् पापमनोऽवायत् इति अत्रिः** सबको पाप से बचाता है, इसलिए वही अत्रि है । इस बाज रूप शरीर का मरण करने से भरद्वाज भी वही है ।

विश्व में सबसे श्रेष्ठ वशिष्ठ भी हुआ । इसी प्रकार प्राण के अनेक नाम ऋषि बोधक हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गायत्री के द्वारा जिस प्राण-शक्ति की उपासना की जाती है, वह ही देवतत्त्व का केन्द्र है, इसे उपलब्ध करके मनुष्य देवतत्त्व का, देवसत्ता का प्रत्यक्ष दर्शन अपने भीतर करता है । शिर में सहस्र दल कमल के स्थान पर जो सहस्र देवताओं का कोश है, वह प्राण, मन और अन्न के द्वारा ही आवृत हो रहा है । अभक्ष्य अन्न का त्यागकर, मन का संयम हुए जो प्राण साधना की जाती है, उससे वे सहस्र दल वाले देवतत्त्व जागृत होते और साधक पर शान्ति का वरदान बरसाते हैं ।

शास्त्र ने कहा है-

''काया नगर मध्ये तु मारुतः क्षिति पालकः ।''

काया नगरी में प्राण वायु ही राजा है ।

प्राणं देवा अनुप्राणन्ति । मनुष्या परावश्चमे । प्राणो हि भूतानामायुः । तस्मात्सर्वायुषमुच्यते । सर्वमेवत आयुर्यन्ति मे प्राणं ब्रह्मोपासते । प्राणो हि भूतानामायुः । तस्मात् सर्वायुषमुच्यते ।''

- तैत्तिरीय २ । ३

देबता, मनुष्य, पशु और समस्त प्राणी प्राण से ही अनुप्राणित हैं, प्राण ही जीवन है इसी से उसे आयु कहते हैं, यह जानकर जो प्राण स्वरूप ब्रह्म की उपासना करता है, वह निश्चय ही सम्पूर्ण आयु को प्राप्त कर लेता है ।

'यावद्धदस्मिन् शरीरे प्राणोवसति तावदायुः ।'

-- कौषीतकि उपनिषद्

'जब तक इस शरीर में प्राण है, तब तक जीवन है ।'

इस प्राण-शक्ति का एक अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण विज्ञान है । योग साधना से इस विज्ञान को प्रत्यक्ष किया जाता है । गायत्री की साधना से इस प्राण को ही जगाया जाता है । जिसने अपने सोते हुए प्राण को जगा लिया उसके लिए चारों ओर जागृति ही जागृति है । सब दिशाओं में प्रकाश ही प्रकाश है । सोता वही है, जिसमें प्राण सोता है, जिसकी प्राण-शक्ति जग गई, इस संसार में उसे ही जागृत माना जाता है । उसी के सामने इस विश्व का वह रहस्य प्रगट होता है, जो सर्वसाधारण के लिए छिपा हुआ ही है ।

''तदाहुः को स्वजुर्भहति यद्वावै प्राणो जागार तदेव जागरितम् इति ।''

-ताण्ड्य ०१० । ४ । ४

कौन सोता है ? कौन जागता है ? जिसका प्राण जागता है, वस्तुतः वही जागता है ।

य एवं विद्वान्प्राण वेद रहस्यं प्रजा ।
हीयतेऽमृतोभवति तस्येव श्लोकः ।

-प्रश्नोपनिषद् ३ । ११

जो विद्वान् इस प्राण के रहस्य को जानता है, उसकी सन्तति कभी नष्ट नहीं होती वह अमर हो जाता है । इस रहस्यमय प्राणविद्या को जानना प्रत्येक अध्यात्म प्रेमी का कर्त्तव्य है, क्योंकि इसी से उसकी परम्परा अविछिन्न रहती है । सन्तति नष्ट नहीं होती है और उसी विद्या के कारण वह अमरपद को प्राप्त करता है ।

गायत्री मन्त्र और उसके जप से एक इस प्रकार की थरथरी उत्पन्न होती है, जो शरीर के सूक्ष्म संस्थानों में व्याप्त ऊष्मा में इस तरह फूँक मारती है, जैसे हवा से आग को प्रज्वलित किया जाता है । दूध को एक विशेष गति से मंथन करने से उसमें से मक्खन बाहर निकल आता है । गायत्री मंत्र जप विश्व-प्राण को आकर्षित करता है, उसे उपासक के अन्तःकरण में प्रतिष्ठित करता है । प्रारम्भ में इसकी स्पष्ट अनुभूति नहीं होती, किन्तु जैसे-जैसे ध्यान की एकाग्रता और जप में तल्लीनता बढ़ती जाती है प्राण-सत्ता की स्पष्ट अनुभूति होने लगती है । इस प्राण अभिवर्धन की प्रतिक्रिया तुरन्त प्रारम्भ होती है जो उपासक के नेत्रों, वाणी, व्यवहार, विचारणा और स्वप्नों में स्पष्ट झलकने लगती है । अनेक बार पूर्वाभास, वाक् सिद्धि (शाप या वरदान) जैसी अलौकिकताएँ भी, घटनायें भी घट जाती हैं, यह सब प्राण-तत्त्व के विकास की ही वैज्ञानिक प्रक्रिया है । गायत्री उपासना को सर्वाधिक महत्ता इसी वैज्ञानिकता के कारण ही दी गई । उसे भली-भाँति समझा जा सके तो उपासना बहुत शीघ्रता से सफल होती है ।

प्राण-शक्ति एक जीवंत ऊर्जा

प्रजापति ब्रह्मा के पास जाकर देवताओं ने प्रश्न किया- पितामह ! आप कहते हैं कि गायत्री उपासना करने वाले के सब सांसारिक कष्ट दूर हो जाते हैं तथा उसे परलोक में भी सुख-शान्ति और सद्गति प्राप्त होती है, पर आपने ऐसी महासामर्थ्य वाली ईश्वरीय सत्ता से परिचय तो कराया ही नहीं, अब कृपया उसका विज्ञान समझाइये ताकि उस महाशक्ति से सम्पर्क का लाभ हम भी ले सकें ?

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

"गायत्री वरदां देवी- सावित्री वेद मातरम्" प्रजापति बोले- हे देवताओं ! यह जो अनेक प्रकार के वरदान देने वाली गायत्री है, उसे तुम "सावित्री" अर्थात् सूर्य से उद्भासित होने वाला ज्ञान जानो ।

"तेजो वै गायत्री" -गो. उ. ५ । ३
"ज्योतिर्वै गायत्री छन्दसाम्" -ताण्ड्य, १३ । ७ । २
"ज्योतिर्वै गायत्री" -कौश, १७ । ६
"दविद्युत्ती वै गायत्री" -ताण्ड्य, १२ । १ । २
गायत्र्यैव भर्गः -गो० पू० ५
गायत्री छन्दसाम्" -ताण्ड्य १३।७।२
"ज्योतिर्वै गायत्री" -कोश, १७।६
"दविद्युत्ती वै गायत्री" -ताण्ड्य, १२।१।२
गायत्र्यैव भर्गः -गो० पू० ५।१५
तेजसा वै गायत्री प्रथमं त्रिरात्रं दाधार पदैर्द्वितीय यक्षरैस्तृतीयम् -ताण्ड्य१०।५।३
-ताण्ड्य १० । ५ । ३

अर्थात् गायत्री प्रकाश तेज, अग्नि और शक्ति रूप है तीनों काल गायत्री की शक्ति से ही गतिशील है ।-

सूर्य-मण्डल से उद्भासित इस शक्ति को ही जड़-चेतन का आधार माना गया है

सविता सर्व भूतानां सर्व भावांश्च सूयते ।
सर्वनात्प्रेरणाच्चैव सविता तेन चोच्यते ।।

समस्त तत्त्वों, सभी प्राणियों और समस्त भावनाओं को प्रेरणा देने के कारण ही उसे सविता कहते हैं ।

उपरोक्त वाक्यों में भारतीय तत्त्व दर्शियों ने सृष्टि-विज्ञान की भौतिक और आध्यात्मिक प्रक्रिया का स्पष्ट ज्ञान करा दिया है । वह तत्त्व रूप होने से तत्त्वों या भौतिक पदार्थों की गति और सक्रियता का कारण है तथा भावना रूप, प्राण रूप होने से वही सम्पूर्ण प्राणियों एवं मनुष्य को शक्ति, प्राण और प्रकाश देकर भावनात्मक विकास में सहायक होती है ।

विचारणाओं को उठाया नहीं गया, सोचने का लोगों नेप्रयत्न नहीं किया अन्यथा पता चलता कि ऋषियों, तत्त्वदर्शियों की उपरोक्त गवेषणायें पूर्ण वैज्ञानिक सत्य हैं जो बातें आज से लाखों वर्ष पूर्व ऋषियों ने लिख दी थीं आज का विज्ञान ही उनकी सत्यता की साक्षी देने लगा है ।

यद्यपि वैज्ञानिक अभी बहुत थोड़ा और स्थूल भाग ही जान पाये हैं, पर जो कुछ जाना जा सका है वह भी भारतीय मान्यताओं के प्रतिपादन की दृष्टि से कम नहीं ।

यों तो आकाश में असंख्य तारे हैं और वे सभी अपनी नाभिकीय शक्ति (न्यूक्लियर एनर्जी) का सृजन अपने आप करते हैं, पर मूल रूप से वे सब सूर्य की ऊर्जा पर आधारित और जीवित हैं । सूर्य प्रति सेकण्ड चार सौ सैक्टीलियन ऊर्जा (गर्मी, प्रकाश और विद्युत के सम्मिश्रित स्वरूप का नाम ऊर्जा या एनर्जी है) फेंकता रहता है । उसके भीतरी भाग का ताप दो करोड़ डिग्री सेन्टीग्रेड से भी अधिक है । वहाँ इतनी तीव्र हलचल उठ रही है जैसी कि किसी नहर से एक नाली द्वारा जब पानी किसी दूसरी छोटी नहर में निकालते हैं तो उसके पृष्ठ और पीठ दोनों स्थानों में जल बड़ी तीव्र हलचल उत्पन्न करता है । अनुमान है कि सूर्य के मध्य भाग में इस हलचल का कारण "स्पाइरल" नामक आकाश गंगा से आकर गिरता हुआ प्राण है जो कि ब्रह्माण्ड की किसी अज्ञात मशीन या किसी विराट् तारे से आता है । "सत् सवितुः" पद भी यही संकेत करता है कि वह सूर्य जो इस सविता लोक को प्रकाशित करता है । सूर्य के इस भाग में केवल नाभिक कण ही होते हैं इन पर किसी प्रकार का आवरण नहीं होता । न्यूट्रान इलेक्ट्रानों को भगाते रहते हैं और स्वयं प्रोटानों अथवा धन विद्युत आवेश में बदलते रहते हैं । इसी से द्रव्य का रूपान्तर होता है । अर्थात् हाइड्रोजन हीलियम में बदलता रहता है उससे उत्पन्न ऊर्जा ही सृष्टि का संचालन करती है । इस शक्ति का हजारवाँ भाग तो मनुष्य के उपयोग में आता है शेष ९९९ भाग से सविता देवता पृथ्वी की गतिविधियों मौसम, नदियों, पहाड़ों, समुद्र और वर्षा आदि की गति-विधियों का नियन्त्रण करते रहते हैं ।

पृथ्वी में भी जो धूप, पत्थर का कोयला, लकड़ी का ईंधन, पानी, वायु, बिजली आदि हैं । वह सब इसी ऊर्जा के रूपान्तर हैं, जबकि पृथ्वी को सूर्य से कुल २०० ट्रिलियन किलोवाट की ही शक्ति प्राप्त होती है । "नीपर" के पानी का बिजली घर संसार

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

का सबसे अधिक विद्युत् उत्पादक माना जाता है वह यदि दिन-रात काम करे तो भी इतनी शक्ति नहीं दे सकता । यह सब देखकर मानना ही पड़ता है- **''सविता वै प्रसवानामीशे''** (यजुर्वेद) सबको उत्पन्न करने वाला परमेश्वर सविता ही है ।

यह शक्ति सूर्य लोक में जितनी प्रचंड है पदार्थों में भी वही प्रभाव लेकर समासीन हो गई । मन में भी वही शक्ति होने के कारण मनुष्य प्रत्येक पदार्थ के अन्तरंग से सम्पर्क स्थापित कर सकने और सूक्ष्म रूप से किसी भी पदार्थ की शक्ति को प्रवाहित कर लेने में समर्थ है, पर यह विज्ञान थोड़े से योगी ही जानते हैं । इसीलिए उनके कितने ही क्रिया कलाप चमत्कार जैसे लगते हैं । अब जबकि पदार्थ में शक्ति की प्रचंडता और अस्तित्त्व को विज्ञान ने भी स्वीकार कर लिया है यह सिद्धियाँ यान्त्रिक रूप से भी गृहण की जा सकती हैं, पर उनके मनोगत चमत्कार तो योग और उपासना पद्धति से ही प्राप्त हो सकते हैं ।

विश्व ब्रह्माण्ड में इस अदृश्य शक्ति का प्रचंड सागर लहराता रहता है । इस तथ्य को भारतीय तत्त्व दर्शियों ने बहुत पहले जान लिया था -

तेजोयस्य विराजते स बलवान् स्थूलेषु कः प्रत्ययः

-देवी भागवत्

अर्थात् -'शक्ति व तेजरूप से प्रत्येक स्थूल पदार्थ में विद्यमान तुम अकूत बलवाली परमेश्वरी हमारी रक्षा और विकास करो ।' वास्तव में इसी शक्ति से मानसिक सम्बन्ध स्थापित करके वह ऋद्धि-सिद्धियाँ अर्जित की गयीं जो लोगों को चमत्कार जैसी लगती हैं पर वे विज्ञान के सिद्धान्तों पर ही पूर्णतया आधारित हैं । गायत्री उपासना के द्वारा इस अदृश्य शक्तियों का शरीर में आह्वान धारण और विकास करना होता है । उससे स्वास्थ्य, आरोग्य, तेज, बल, बुद्धि का तो विकास होता ही है उन अतीन्द्रिय क्षमताओं का विकास भी होता है जिन्हें लोग आश्चर्य अथवा ईश्वरीय अनुकम्पा ही मानते हैं । '

इन अवतारों का आधार प्राणशक्ति को कहा जा सकता है । मनुष्य शरीर में विद्युत का विपुल भण्डार भरा पड़ा है । मस्तिष्क से विचारों के कम्पन विद्युत प्रवाह के रूप में ही निकलते हैं । शरीर की आन्तरिक क्रिया-प्रक्रिया नाड़ी समूह के साथ-साथ प्रवाहित होते रहने वाले विद्युत प्रवाह के द्वारा ही सम्भव होती है । मस्तिष्कीय विद्युत में मन और बुद्धि के द्वारा देखे जाने वाले अनेकानेक चमत्कार आये दिन सामने आते हैं । साहस और उत्साह के रूप में स्फूर्ति और उमंगों के रूप में इसी क्षमता के उभार उफनते दीख पड़ते हैं । विज्ञानवेत्ता 'प्राण' की व्याख्या इसी मानवी विद्युत के रूप में करते हैं ।

मानवी विद्युत 'प्राण'

मनुष्य में काम करने वाला यह विद्युत प्रवाह भौतिक बिजली के समतुल्य नहीं है । बादलों में कड़कने वाली बिजली और धूप से अनुभव होने वाली गर्मी के समकक्ष उसे नहीं माना जा सकता । यह बिजलीघरों में उत्पन्न की जाने वाली 'शक्ति' के समान भी नहीं है । भौतिक बिजली में धक्का मारने, आगे बढ़ाने एवं फैलाने की क्षमता है । उसकी गणना 'अश्व शक्ति' के रूप में की जाती है, किन्तु मानवी विद्युत की क्रिया पद्धति इससे भिन्न है । उसमें व्यक्तित्व के बहुमुखी विकास की अनेकानेक सम्भावनाएँ जुड़ी हुई हैं । इतना ही नहीं वह अन्य प्राणियों को पदार्थों को प्रभावित करती है और वातावरण पर अपना असाधारण प्रभाव छोड़ती है ।

अध्यात्म विवेचना में उसका वर्णन 'प्राण' के रूप में किया जाता है । ह्यूमन मैगनेटिज्म एवं मैटावोलिज्म उसे कहा जाता है । इसी को जीवनी शक्ति एवं मानवीय विद्युत कहा जाता है ।

''प्रोजेक्शन ऑफ एस्ट्रल वॉडी'' ग्रन्थ में मानवी काया को अद्भुत संरचना और विचित्र काय पद्धति पर विस्तृत प्रकाश डालते हुए कहा गया है कि इतना अद्भुत होते हुए भी यह यंत्र अपना काम कर सकने में इस क्षमता के आधार पर ही समर्थ होता है जिसे मानवी विद्युत कहा जाना चाहिए । इसकी मात्रा एवं स्थिति यदि दुर्बल होगी, तो उसका प्रभाव शरीर संरचना सब प्रकार उपयुक्त होते हुए भी निराशाजनक ही देखा जा सकेगा । लेखक का

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कथन है कि सौर-मण्डलीय परिवार की तथा अन्यान्य ग्रह-नक्षत्रों की ज्ञात और अज्ञात किरणें धरती पर आती हैं । उनका प्रभाव पदार्थों पर तो पड़ता ही है, मानवी काया भी उस अनुदान में से अपना भाग ग्रहण करती है । सामान्यता पदार्थों की तरह जीवधारियों को भी उस अभिवर्षण का लाभ अनायास ही मिलता रहता है, किन्तु यदि संकल्प शक्ति की प्रखरता हो तो व्यक्तिगत चुम्बकत्व प्रचण्ड होता चला जायगा और उस आकर्षण से वह अन्तर्ग्रही सामर्थ्य प्रचुर परिमाण में उपलब्ध होती चली जायगी ।

गामा, बीटा, एक्स, लेसर, अल्ट्रा वायलेट, अल्फा वायलेट आदि कितने ही स्तर की शक्ति किरणें भू-मण्डल के भीतर और बाहर काम करती हैं । उन सबका समुचित समावेश मनुष्य के सूक्ष्म शरीर में हुआ है । स्थूल शरीर जड़ पदार्थों की बन्धन रज्जुओं से जकड़ा होने के कारण असीम है, पर सूक्ष्म शरीर में सम्मिलित शक्तियों का कोई अन्त नहीं । उसका निर्माण ऐसी इकाइयों से हुआ है जिनकी हलचल ही इस वातावरण में विविध-विधि क्रिया-कलाप उत्पन्न करती है । इस दृष्टि से मनुष्य बाहर से एक जीवधारी मात्र दीखते हुए भी वस्तुतः असीम सामर्थ्यों का पुञ्ज है । कठिनाई एक ही है कि वे सामान्यतया प्रसुप्त स्थिति में पड़ी रहती हैं, जिन्हें अधिक मात्रा में आकर्षित करने और व्यावहारिक भूमिका का निर्वाह कर सकने योग्य बनाने में व्यक्तिगत रूप से प्रबल प्रयत्न करने पड़ते हैं ।

ब्रह्माण्ड व्यापी महाशक्तियों में ग्रहों की गुरुत्वाकर्षण क्षमता सर्वविदित है । आकाश में अवस्थित सभी ग्रह-नक्षत्र इसी के आधार पर टिके हुए हैं और गतिशील हैं । यह गुरुत्वाकर्षण आखिर है क्या ? इसका सूक्ष्म अन्वेषण करने पर यह निष्कर्ष निकलता है कि यह मूलतया इलेक्ट्रोमैगनेटर विद्युत चुम्बकीय सत्ता है, जो ग्रह-नक्षत्रों की भ्रमण-शीलता और आकर्षण शक्ति के उभय-पक्षीय प्रयोजन पूरे करती है । प्रकाश, ताप, ध्वनि, विद्युत इसी के स्वरूप हैं । अणुओं की हलचलों से लेकर रासायनिक परिवर्तनों का सरंजाम वही जुटाती है । ईथर के ब्रह्माण्ड-व्यापी महासागर पर इसी विद्युत चुम्बक का आधिपत्य छाया हुआ है । यह शक्ति जड़ नहीं है । यदि वह जड़ रही होती, तो अणु-परमाणुओं की सरंचना और हलचलों में अद्भुत व्यवस्था दिखाई पड़ती और उसके दर्शन न होते ।

यही विद्युत चुम्बक 'प्राण' है । मनुष्य में वह तेजोबलय के रूप में काया के इर्द-गिर्द फैला हुआ देखा जा सकता है । शरीर में ऊर्जा के रूप में उसका अस्तित्त्व है । जीवाणुओं की, अवयवों की विभिन्न हलचलें इसी के सहारे संचारित होती है । मस्तिष्क की मशीनें अपने आप में अद्भुत हैं, पर वह स्वसंचालित नहीं है । यदि उसकी अपनी सामर्थ्य रही होती तो फिर मृत शरीर का मस्तिष्क भी अपना काम करते रह सका होता । यह 'प्राण' ही है जो मस्तिष्क की चेतन और अचेतन परतों पर छाया हुआ है और उन्हें अपने निर्धारित क्रिया-कलाप करते रहने के लिए आवश्यक सामर्थ्य प्रदान करता है ।

ग्रहों में अपना-अपना गुरुत्वाकर्षण है । फिर भी वह उनका निजी उत्पादन नहीं है । ब्रह्माण्ड-व्यापी विद्युत चुम्बकीय क्षमता में से ही यह ग्रह-नक्षत्र अपना हिस्सा बँटाते हैं और गुरुत्वाकर्षण दूसरे शक्ति संचारों से भरे रहते हैं । यह सम्मिलित पूँजी है जिसमें से विश्व-परिवार के सभी घटक अपना-अपना भाग पाते और गुजारा करते है । यही बात प्राण-शक्ति के सम्बन्ध में भी है । विश्व-व्यापी 'महाप्राण' एक तथ्य है । उसी विशाल वैभव में से पृथ्वी के जीवधारी अपनी-अपनी पात्रता और आवश्यकता के अनुरूप भाग बँटाते हैं । मनुष्य की यह विशेषता है कि वह इस सामान्य वितरण में उसे उपेक्षापूर्वक उसे गँवाता रह सकता है, जो उसके लिए सहज सुलभ है । इसी प्रकार उसके लिए यह भी सम्भव है कि प्रयत्न करे, उत्साह सँजोये और संकल्प के सहारे व्यापक प्राण-शक्ति में से बड़े से बड़ा भाग अपने लिये उपलब्ध कर सके । प्राणयोग की साधना प्राणायाम प्रक्रिया इसी प्रयोजन की पूर्ति का एक सुनिश्चित विज्ञान सम्मत आधार है ।

प्राण एक चेतन विद्युत ऊर्जा है जिसकी मात्रा बढ़ी-चढ़ी होने पर बहिरंग और अन्तरंग जीवन के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दोनों पक्षों में उसका चमत्कारी प्रभाव देखा जा सकता है । यह प्राण-शक्ति ही व्यक्तिगत जीवन में साहस और उत्साह के रूप में चमकती है उसे दृढ़ता और तत्परता के रूप में देखा जा सकता है । संकल्प शक्ति के रूप में उसी का परिचय प्राप्त किया जाता है । निश्चय को पूर्ण करने के लिए मनुष्य इसी क्षमता के सहारे अनेकानेक कठिनाइयों को चीरता, अवरोधों से जूझता, श्रम-साध्य और समय-साध्य मंजिल को पार करता है, प्रतिकूलताओं के बीच भी जो अनुकूलता उत्पन्न करने का प्रयास कर रहा है, निराशाजनक परिस्थितियों में जिस आशा की क्षीण, किन्तु सुनिश्चित किरणें दीख पड़ती हों, उसे प्राणवान कहा जा सकता है । लोक-प्रवाह के विपरीत जो अपनी राह एकाकी बना सके, अपने बलबूते पर अपनी योजनाओं को कार्यान्वित करने का शौर्य दिखा सके, उसमें आत्म-विश्वासी प्राण-शक्ति की उपयुक्त मात्रा काम करते हुए देखी जा सकती है ।

ऐतिहासिक महामानवों में इसी प्राण-तत्त्व की समुचित मात्रा रही है । इसी के सहारे उन्होंने महत्त्वपूर्ण निर्णय लिए और दुस्साहसपूर्ण कदम उठाये । लोक-प्रवाह के विपरीत जब उनने अपने स्वतन्त्र भाव निश्चय घोषित किये तो कुटुम्बी, सम्बन्धी और तथाकथित हितैषी एक जुट होकर उनका उपहास असहयोग और विरोध करने पर उतारू हो गये । उन्होंने प्रवाह के विपरीत चलने में खतरे की आशंका देखी और शुभ-चिन्तक के नाते उस खतरे से बचने का परामर्श दिया, किन्तु प्राणवानों को तो आदर्शवादी मार्ग अपनाने में संकटों के साथ आँख-मिचौनी खेलने में ही मजा आता रहा है । खतरों के बीच ही प्रगतिशीलता पनपती है ।

महामानवों की सफलताएँ उतनी महत्त्वपूर्ण नहीं जितनी कि उसके साहस प्रदर्शन की स्मृतियाँ । सफलताएँ तो कइयों को संयोगवश भी मिल जाती हैं । उन्हें छल-बल से भी उपार्जित किया जा सकता है । महत्त्व उन घटनाओं का है जिनमें साहस के आधार पर घनघोर अँधेरे में प्रकाश जलाया गया और आँधी-तूफान के बीच उस आलोक को बुझने से बचाया गया ।

लिकोलन के राज रिचार्ड ने तत्कालीन विशपह्यूगो को आदेश भेजा कि वे अपनी प्रजाएँ नरमुण्डो युद्ध के लिए भेजें । विशप ने इस आज्ञा को मानने से इन्कार कर दिया । स्पष्ट था कि ऐसी अवज्ञा क्रोधी रिचार्ड सैहन न करेगा और विशप को पदच्युत करने से लेकर मौत तक का कोई दण्ड देगा । किन्तु विशप ह्यूगो इससे तनिक भी विचलित नहीं हुए, वरन् वे सीधे दनदनाते हुए राजमहल में चले गये । राजा उस समय भोजन कर रहे थे, विशप को देखते ही वे आग-बबूला हो गये और उनकी ओर से मुँह फेर लिया ।

विशप ने कड़क कर कहा- "उठो विशप का अभिवादन करो ।" राजा चुप रहा । इस पर ह्यूगो ने राजा का कन्धा पकड़कर बुरी तरह झकझोर डाला और आज्ञा पालन का आदेश दिया ।

रिचार्ड सन्न रह गये । वे उठे और अभिवादन किया । भोजन के बाद परामर्श का क्रम चला और जैसा विशप चाहते थे, वैसा ही समाधान बन गया । रिचार्ड ने अपने एक संस्मरण में स्वयं लिखा है- 'विशप में कुछ विलक्षण शक्ति है । उनसे आँख मिलाते ही मनुष्य स्वयंमेव पराभूत हो जाता है ।

क्या भौतिक सफलताएँ पाने वाले, क्या आत्मिक प्रगति करने वाले सभी के व्यक्तित्त्व का तात्त्विक विश्लेषण करने पर उनकी विलक्षणता के पीछे प्राण-प्रतिभा ही झाँकती पाई जायगी । नैपालियन, सिकन्दर सरीखे पराक्रम और लिंकन, वाशिंगटन जैसे प्रगतिशील अनेक संकल्पों को पूरा करने में प्राणपण से जुटे रहने के कारण ही कुछ कहने लायक प्रगति कर सके थे ।

आत्मिक क्षेत्र की समस्त सिद्धियों का स्रोत यही सत्साहस और प्रबल पुरुषार्थ है जिसे वैज्ञानिक शब्दों में प्राण-शक्ति का चमत्कार कह सकते हैं । आत्म-संयम नदी के प्रवाह को रोकने की तरह है, उसमें इन्द्रियों के उद्दण्ड घोड़ों की लगाम कसकर पकड़नी होती है । मन एक दुर्दान्त दैत्य है उसे वशवर्ती बना लेना, सरकस के हिंस्र पशुओं से विलक्षण खेल कराने वाले प्रशिक्षक द्वारा दिखाये जाने वाले दुस्साहस की तरह है जबकि हर जगह सुविधाओं की पुकार है, तब तप-तितीक्षा का

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

स्वेच्छा संकल्प कितना कठोर और कितना जटिल समझा जा सकता हैं । संग्रह और उपभोग के लिए सर्वत्र बिखरी आकुलता के बीच जो त्याग और बलिदान की बात सोचते ही नहीं, उसे कर दिखाने के लिए भी कटिबद्ध हो जाते हैं, उन्हें प्राणवान् ही कहा जा सकता है । उन्हें जो उपहार मिलते हैं, उन्हें उस साहसिकता का ही पुरुस्कार कह सकते हैं, जिसकी व्याख्या प्राण-शक्ति के नाम से की जा सकती है ।

गायत्री साधना से प्राण ऊर्जा का अभिवर्धन

मनुष्य शरीर में विद्यमान चेतना का केन्द्र मस्तिष्क माना जाता है । शरीर का पोषण देने वाला रक्त संस्थान हृदय कहा गया है । हृदय को पेट से सामिग्री मिलती है । पेट में मुँह से खाना पहुँचता है और मुँह तक खाना पहुँचाने के साधन हाथ जुटाते हैं । इस प्रकार देखते हैं कि शरीर का प्रत्येक अंग अवयव लय-ताल से बँधे होते हैं और यह भी सिद्ध हो जाता है कि पूरा शरीर ही शक्ति का भण्डार है । यह शक्ति असामान्य विद्युत स्तर की है । जिस विद्युत शक्ति से हमारा परिचय है, वह तो अच्छी दौड़ लगाती है, और जो भी कोई उसके सम्पर्क में आता है, उसे बिना कुछ सोचे-समझे गर्माती, तपाती और जलाती रहती है । लेकिन मनुष्य शरीर में विद्यमान विद्युत शक्ति को इसीलिए असामान्य कहा गया है कि वह शरीर की परिस्थितियों को देख कर ही अपनी गतिविधयाँ फैलाती और सिकोड़ती है ।

मानवी विद्युत हर व्यक्ति की अपनी विशिष्ट सम्पत्ति है । वह इसी के आधार पर ऐसे अनुदान देता है, ऐसे आदान-प्रदान करता है जो पैसे या किसी वस्तु के आधार पर उपलब्ध नहीं हो सकते । एक व्यक्ति से दूसरा प्रभाव ग्रहण करता है, यह तथ्य सर्वविदित है, संगति की महिमा गाई गई है । कुसंग के दुष्परिणाम और सत्संग के सत्परिणामों को सिद्ध करने वाले उदाहरण हर जगह पाये जाते हैं । यह प्रभाव मात्र वार्त्तालाप व्यवहार, लोभ या दबाव से उतना नहीं पड़ता जितना मनुष्य के शरीर में रहने वाली बिजली के आदान-प्रदान से सम्भव होता है ।

ताप और बिजली का गुण है कि जहाँ अनुकूलता होती है, वह वहाँ अपना विस्तार करती और प्रभाव क्षेत्र बढ़ाती है । प्राणवान् शक्तिशाली व्यक्तित्व अपने से दुर्बलों को प्रभावित करते हैं । यों दुर्बल भी अपनी न्यूनता के कारण समर्थों में सहज करुणा उत्पन्न करते हैं, और उन्हें कुछ देने के लिए विवश करते हैं । बच्चे को देखकर माता की छाती से दूध उतरने लगता है मन हुलसने लगता है । इस प्रकार शक्तिवान अपने से दुर्बलों को अनुदान देकर घाटे में नहीं रहते । उदारता-जन्य आत्म-सन्तोष से उनकी क्षति-पूर्ति भी हो जाती है । दूध पिलाने में माता को प्रत्यक्षतया घाटा ही है, पर वात्सल्य-जन्य तृप्ति से उसकी भावनात्मक पूर्ति हो जाती है ।

मनुष्य को एक अच्छा खासा चुम्बक कहें तो कुछ अत्युक्ति न होगी । चुम्बक का कार्य है आकर्षण । वह अपनी कला द्वारा अन्य लोहे के पदार्थों को आकर्षित करता है । उनको अपना जैसा बनाने का प्रयत्न करता है । एक और विशेषता चुम्बक की है कि उसे यदि टुकड़ों-टुकड़ों में भी विभक्त कर दिया जाय तो हर टुकड़े की वही विशेषता बनी रहेगी । एक टुकड़े को एक धागे में बाँधकर यदि अधर में लटकाया जाय तो इसके दोनों सिरे क्रमशः उत्तर-दक्षिण की तरफ ही रहेंगे । चाहे जैसी परिस्थिति आ जाय अपनी दिशा नहीं बदलेंगे । स्थिरता का सहज गुण चुम्बक में है । इसलिए जलयानों या वायुयानों में 'कम्पास' के सहारे ही दिशा-ज्ञान का बोध होता है ।

यह सारे लक्षण मनुष्य में भी पाये जाते हैं । यदि मन की प्रवृत्तियाँ सही ढंग से कार्य कर रही हों तो एक महान् व्यक्ति बना जा सकता है । ठीक चुम्बक की तरह की सारी विशेषताएँ विकसित भी की जा सकती हैं । महान् व्यक्तित्त्व में इतना आकर्षण होता है कि वे जिस स्थान पर खड़े हो जाते हैं लोग अपने आप उनके चारों ओर एकत्रित हो जाते हैं ।

चुम्बक की दूसरी विशेषता "एक रसता" की है । वह चाहे कितना विखंडित क्यों न हो जाय, उसकी आकर्षण शक्ति कम नहीं होती । महान् मनुष्य ऐसे ही होते हैं । वे बाह्य रूप से चाहे जितने छोटे हो जाएँ, परन्तु उनकी महानता में कोई अन्तर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

नहीं आता है । उनका व्यक्तित्त्व खण्डित नहीं होता है । वे अनेकों लोगों से एक साथ सम्बन्ध रखते हैं, परन्तु उनके व्यक्तित्त्व में अपने पराये का पक्षपात का कोई अन्तर नहीं आता । एक सूर्य अनेक घड़ों के जल में एक रूप ही दिखाई देता है ।

चुम्बक की तीसरी विशेषता है दिशा के प्रति स्थिरता । इसके द्वारा सदैव ही उत्तर एवं दक्षिण दिशा का ज्ञान होता रहेगा, आप चाहे जहाँ चले जायें आकाश में या समुद्र में कम्पास आपको दिशा ज्ञान अवश्य ही करायेगा । वही स्थिति विकसित व्यक्ति की भी होती है । यदि सद्प्रवृत्तियाँ जगा ली गई हैं, भावना एवं व्यक्तित्व का परिष्कार कर लिया गया है तथा उद्देश्य को गम्भीरता से ग्रहण करने की शक्ति पैदा कर ली गई है तो यह निश्चित है कि मनुष्य अपनी दिशा से कभी हिल नहीं सकता है । दूसरों को सही प्रेरणा प्रदान करने का काम भी तो चुम्बक के गुण की तरह ही है ।

बड़ी से बड़ी विशेषताओं एवं महान् गुणों से युक्त मनुष्य भी पतित क्रियाओं एवं विचारणाओं को अपनाने से गर्त में गिर जाता है और अपनी समस्त विशेषताएँ धीरे-धीरे खो देता है । ठीक इसी तरह जैसे चुम्बक को बार-बार पटकने तथा ऊपर नीचे करने से उसकी आकर्षण शक्ति लुप्त हो जाती है, महान् पुरुषों की भी पुण्य की पूँजी एवं प्रभाव उनके पतन के गर्त में गिरने से नष्ट हो जाते हैं ।

धरती की चुम्बकीय शक्ति की तरह मनुष्य में भी एक सहज आकर्षण शक्ति विद्यमान है, उसका प्रयोग करके समर्थता एवं साधन सम्पन्नता प्राप्त की जा सकती है । मनुष्य यदि अपने चुम्बकत्व का प्रयोग करे तो उसे भी वैसे ही पुराण-वर्णित चमत्कार प्रस्तुत करने का अधिकार मिल सकता है । यदि तप, साधन के द्वारा आत्मबल को बढ़ा लिया जाय तो हम आज से हजारों वर्ष पहले घटित घटनाओं को भी यथार्थ रूप से आकाश मंडल में सुन या देख सकते हैं । विज्ञान से तो अब यह सिद्ध हो चुका है कि जो भी ध्वनियाँ निसृत होती हैं वे कभी भी नष्ट नहीं होती ।

अपनी इस पृथ्वी के चतुर्दिक एक चुम्बकीय क्षेत्र व्याप्त है, उसी के सहारे वह समस्त ब्रह्माण्ड में फैली हुई तमाम आवश्यक विशेषताओं को इकट्ठी करती रहती है, यदि इस स्रोत से उसे यह अनुदान प्राप्त न होता तो उसका अक्षय भण्डार एक दिन अवश्य समाप्त हो जाता और साधन सम्पन्न कही जाने वाली धरती विपन्न एवं दीन की स्थिति में पहुँच जाती ।

मनुष्य की अतीन्द्रिय क्षमता में वह चुम्बकत्व विद्यमान है, जिसके द्वारा असम्भाव्य कार्यों को भी कर सकता है । आँखों से न देख पाने वाले स्थानों का वर्तमान में घटित होने वाली घटनाओं का सचित्र वर्णन कर सकता है । एक स्थान से दूसरे स्थान को परस्पर सम्वादों का आदान-प्रदान कर सकता है । इसके अतिरिक्त यदि हमने तप, साधना द्वारा प्रेरक क्षमता अर्जित कर ली है तो किसी दूसरे को प्रेरित कर लाभ पहुँचाया जा सकता है ।

जड़ अणुओं की गति एक प्रकार की विद्युत उत्पन्न करती है, उसमें जब चेतन सत्ता का समावेश होता है तो जीवन का जीवधारियों का आविर्भाव होता है । ध्रुवों के क्षेत्र में चुम्बकीय तूफान उठते रहते हैं, जिनका प्रकाश 'अरोरा बोरीलिस,' तेजोबलय के रूप में छाया रहता है । इसे पृथ्वी के साथ अन्य ग्रहों की सूक्ष्म हलचलों का मिलन स्पन्दन कह सकते हैं । यही है वह पृथ्वी का ग्रहों के साथ प्रणय परिचय जिसके फलस्वरूप कुन्ती के पाँच पुत्रों की तरह पाँच की विविधि-विधि हलचलें जन्म लेती हैं और उनके क्रिया-कलाप एक से एक बढ़ कर अद्भुत और शक्तिशाली बने हुए सामने आते रहते हैं । समुद्र का खारा जल जब धातु विर्निमित नौकाओं तथा जलयानों से टकराता है तो उससे विद्युत तरंगें उत्पन्न होती हैं । नौका विज्ञानी इस अनायास होते रहने वाले विद्युत उत्पादन से परिचित रहते हैं और उसकी हानिकारक लाभदायक प्रतिक्रिया से सतर्क रहते हैं ।

शरीरगत जीवाणु भी इसी प्रकार ईथर एवं वायुमण्डल में भरे विद्युत प्रवाह से टकराते रहते हैं

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

और विद्युत ऊर्जा उत्पन्न करते हैं । जीव कोषों में उन धातुओं तथा रसायनों की समुचित मात्रा रहती है जो आघातों से उत्तेजित होकर विद्युत प्रवाह उत्पन्न कर सकें । यही कारण है कि हर मनुष्य में गर्मी ही नहीं रहती, वरन् विद्युत प्रवाह की अनेक धाराएँ भी बहती हैं । इन्हें यन्त्रों द्वारा भी भली-भाँति देखा, परखा और जाना जा सकता है ।

मानवीय चुम्बक अंतरिक्ष में बरसने वाले अनेक भले-बुरे अनुदानों को अपनी आंतरिक स्थिति के अनुरूप स्वीकार या अस्वीकार करता है । वह जैसा कुछ स्वयं है उसी का चुम्बकत्व उसे इस विश्व ब्रह्माण्ड में अपनी जैसी सूक्ष्म धारा प्रवाह से अनायास ही सम्पन्न सज्जित करता रहता है ।

प्राणिज विद्युत का अध्ययन करने वाले वैज्ञानिकों के अनुसार नैतिक विद्युत का आधार और क्रियाकलाप भौतिक बिजली से भिन्न है । वे प्रणिज विद्युत में इच्छा और बुद्धि का समिश्रण भी मानते हैं भले ही वह कितना ही झीना क्यों न हो ? इसी प्रवाह के कारण प्राणिज विद्युत अपने-अपने क्षेत्र में विशेष परिस्थितियों एवं साधनों की संरचना करती है, प्रायः चुम्बकत्व पदार्थ में से अपने उपयोगी भाग को खींचता है, उसे अपने ढाँचे में ढालता है और इस योग्य बनाता है कि चेतना के स्वर में अपना ताल बजा सके । किस प्राणी के डिम्ब से किस आकृति प्रकृति का जीव उत्पन्न हो, इसका निर्धारण माप रासायनिक संरचना के आधार पर नहीं हो जाता, वरन् यह निर्धारण रज और शुक्र कीटों के अन्दर भरी हुई चेतना के द्वारा होता है । इसी चुम्बकत्व में विशिष्ट स्तर के प्राणियों की आकृति एवं प्रकृति ढलना शुरू हो जाती है । यदि ऐसा न होता तो संसार में पाये जाने वाले समस्त प्राणी प्रायः एक ही जैसी आकृति के उत्पन्न होते क्योंकि अणुओं का स्तर प्रायः एक ही वर्ग का है । उनके जो रासायनिक अन्तर हैं इसके आधार पर कोटि-कोटि वर्ग के प्राणी उत्पन्न होने और उनकी वंश परम्परा चलते रहने की गुंजाइश नहीं है । अधिक से अधिक इतना हो सकता था कि कुछ थोड़ी-सी कुछ थोड़े से अन्तर की जीव जातियाँ इस संसार में दिखाई पड़तीं । वंश परम्परा और जीव विज्ञान का जो स्वरूप सामने है उसमें प्राणि चुम्बकत्व की अपनी विशिष्ट भूमिका है ।

इसे दूसरे शब्दों में विद्युत भण्डार कह सकते हैं । भोजन, रक्त, माँस, अस्थि आदि से आगे बढ़ते-बढ़ते अंततः इसी संस्थान में जा कर ऊर्जा का रूप होता है । यह ऊर्जा ही प्राण कहलाती है । कायकलेवर में इसका एकत्रीकरण महाप्राण कहलाता है और उसी क्रा ब्रह्माण्ड व्यापी चेतना विश्व प्राण या विराट् प्राण के नाम से जानी जाती है ।

इन दोनों के बीच बिंदु-सिन्धु का अन्तर रहते हुए भी ये दोनों अन्योन्याश्रित हैं । कोशिका के अन्तर्गत प्राणांश के घटक परस्पर संयुक्त न हों तो महाप्राण का अस्तित्त्व न बने । इसी प्रकार यदि विराट् प्राण की सत्ता का हो तो भोजन पाचन आदि का आधार का संचार भी सम्भव न हो ।

यदि मानवी विद्युत तेजस्विता, ओजस्विता, प्रभावशीलता के रूप में विकसित होकर कितने ही महत्त्वपूर्ण कार्य कर सकती है । ऊर्ध्व रेता, संयमी, ब्रह्मचारी लोग अपने ओजस् को मस्तिष्क में केन्द्रित करके उसे ब्रह्मवर्चस के रूप में परिणत करते हैं । विद्वान दार्शनिक, नेता, वक्ता, योद्धा, योगी, तपस्वी जैसी विशेषताओं से सम्पन्न व्यक्तियों के सम्बन्ध में यही कहा जा सकता है कि उन्होंने अपने ओजस् का प्राण तत्त्व अभिवर्धन, नियन्त्रण एवं सदुपयोग किया है ।

योग-साधना का उद्देश्य इस चेतना विद्युत शक्ति का अभिवर्धान करना ही है । इसे मनोबल, प्राणबल और आत्मबल भी कहते हैं । संकल्प शक्ति और इच्छा शक्ति के रूप में इसी के चमत्कार देखे जाते हैं ।

गायत्री साधना इस मानवी विद्युत भंडार को असाधारण रूप में उत्तेजित करती और उभारती है । यदि सही ढंग से साधना की जाय तो मनुष्य प्राणवान् और ओजस्वी बनता है तथा उपार्जित प्राण ऊर्जा की विद्युत के सहारे स्वयं कितनी भी सफलताएँ अर्जित करता है और अन्य दूसरों को भी लाभ पहुँचाता रह सकता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गायत्री उपासना द्वारा प्राण-शक्ति का कर्षण

अर्थ की दृष्टि से गायत्री मन्त्र में भगवान् के चार गुणों का ही स्मरण किया गया है और अन्तःकरण में सद्बुद्धि के धारण करने तथा दिव्य प्रेरणा भरने की प्रार्थना की गई है । बाल बोध के रूप में ही यह शब्दार्थ भरा है । परन्तु इसमें जिस सविता देवता की आराधना की गई है और उसकी प्राण-शक्ति को अपने भीतर धारण करने की आकाँक्षा की गई है, यह साधारण नहीं असाधारण है । सविता देवता प्राणशक्ति का अधिष्ठात्रा है और इस प्राण शक्ति की आराधना करने वाला मन्त्र होने से ही गायत्री उपासना सर्वोपरि है । सर्व विदित है कि गायत्री महामन्त्र अधिष्ठात्रा देवता सविता है । इसे सूर्य भी कहा जाता है । आकाशस्थ सूर्य नवग्रहों और उपग्रहों को अनेकानेक स्तर की शक्तियाँ प्रदान करके उन्हें अपने कार्यक्रम पर चलते रहने का साधन प्रदान करता है । कहना नहीं होगा कि हमारी पृथ्वी पर जो जीवन उपलब्ध है, वह मात्र सूर्य देवता का ही अनुदान है । तत्त्वदर्शी महामनीषियों ने शरीर को सूर्य सम्पर्क में रख कर जीवन शक्ति प्राप्त करने और सविता देवता की आराधना करके मनोभूमि को ओजस्वी, तेजस्वी तथा ब्रह्मवर्चस् मुक्त बनाने की साधना विज्ञान विनिर्मित किया था ।

आधुनिक विज्ञान भी सूर्य से जीवन ऊर्जा की प्राप्ति और कर्षण के सम्बन्ध में नए-नए तथ्य खोज रहा है और यह सिद्ध होता जा रहा है कि प्राणायाम का प्राण विद्या का उद्देश्य उसी सूर्य प्राण को अभीष्ट परिमाण में ग्रहण करके शरीर में धारण करना है । चुम्बकीय विद्युत प्रवाह को दीप्तिमान करने के लिए जिस प्राण अभिवर्धन की आवश्यकता होती है, उसे प्राण साधनाक्रम से विशेष प्राणायामों द्वारा उपलब्ध किया जाता है । स्वरयोग एवं प्राणविद्या की निर्धारित साधना पद्धति द्वारा कुण्डलिनी अग्नि को ठीक उसी प्रकार प्रदीप्त करते हैं, जैसे लुहार अपनी आग की भट्टी को धोंकनी की हवा से तेज करता है । नासिका छिद्रों से प्राण-तत्त्व को अनन्त आकाश से आकर्षित करके सूर्य-तत्त्व द्वारा प्रेरित चुम्बकीय प्रवाह को तीव्र बनाया जाता है ।

गायत्री का देवता सविता है । सूर्य देवता का स्थूल प्रतीक है और उसी से प्रवाहित प्राण प्रवाह इस सृष्टि में जीवन का अस्तित्त्व स्थिर रखता और संचालित करता है । प्राण का सूर्य के साथ घनिष्ट सम्बन्ध है, इस सम्बन्ध में बहुत ही मार्मिक प्रसंग प्रश्नोपनिषद् में आया है । पिप्पलाद ऋषि के पास सुकेशा, शिवि कुमार, सत्यकाम, सौर्यायणी, आश्वालायन, भार्गव और कबंधी ऋषि परब्रह्म परमेश्वर के सम्बन्ध में ज्ञान प्राप्त करने के लिए पहुँचे । उन्होंने पिप्पलाद ऋषि से जिज्ञासा की तो महर्षि ने उनसे कहा, तुम लोग तपस्वी हो, तुमने ब्रह्मचर्य के पालन पूर्वक सांगोपांग वेदाध्ययन किया है । तथापि परब्रह्म के सम्बन्ध में जानने के लिए मेरे आश्रम में रह कर एक वर्ष तक पुनः ब्रह्मचर्य का पालने करते हुए तप करो । इसके बाद तुम लोग जो चाहो, मुझसे प्रश्न करना ।

महर्षि पिप्पलाद की आज्ञा से छहों ऋषि ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए उन्हीं के आश्रम में तपोनिष्ठ जीवन व्यतीत करने लगे । इसके बाद उन्होंने पिप्पलाद से अलग-अलग प्रश्न किये । कात्यायन कबंधी ऋषि सर्वप्रथम प्रश्न करते हैं ।

भगवन् कुतो हवा इमा ! प्रजाः प्रजायते इति

-प्रश्न १ /३

'भगवन् जिससे ये सम्पूर्ण चराचर जीव नाना रूपों में उत्पन्न होते हैं, उसका क्या कारण है ? अर्थात् वह कौन है ?

इस पर पिप्पलाद ऋषि कहते हैं ।

प्रजाकांमो वै प्रजापतिः स तोऽतायत स तपरूत्वा स मिथुन मुत्पादयते रयिं च प्राणं चेत्येतौ मे बहुधा प्रजा करष्यित इति

-प्रश्न १ /४

अर्थात् सृष्टि के आदि में जब प्रजापति को प्रजा उत्पन्न करने की इच्छा हुई, तब उन्होंने संकल्प रूप तप किया । तप से उन्होंने सर्वप्रथम रवि और प्राण

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इन दोनों का एक जोड़ा उत्पन्न किया । उसे उत्पन्न करने का उद्देश्य यह था कि ये दोनों मिल कर मेरे लिए नाना प्रकार की सृष्टि उत्पन्न करेगें ।

इस मन्त्र में सबको जीवन प्रदान करने वाली जो समष्टि जीवन शक्ति है, उसे ही प्राण कहा गया है । इसी शक्ति से प्रकृति के स्थूल स्वरूप में समस्त पदार्थों में जीवन, स्थिति और समुचित सामंजस्य आता है एवं जिसमें सामंजस्य आता है, उस स्थूल भूत समुदाय को 'रयि' कहा गया है, जो प्राणरूप जीवन शक्ति से अनुप्राणित होकर कार्यक्षम होता है । प्राण चेतना और शक्ति है तथा रयि स्वरूप और ओंकार । प्राण रयि के संयोग से ही सृष्टि का समस्त कार्य व्यापार चलता है ।

प्राण और रयि के स्थूल प्रतीकों का स्वरूप समझाते हुए ऋषि ने गाया है-

आदित्यो ह वे प्राणो रयिरेव चन्द्रमा
रयिर्व एतद् सर्वं यन्मूर्त चामूर्त च ,
तस्मान्मूर्ति रेव रयिः ।।५।।
अथा दित्य उदयन्य प्राचो दिशं प्रविशीत
तेन प्राच्यान् प्रणान् रश्मियु संनिधते
यद्दक्षिणां यत्प्रतीची यदुदीची यद्ध्वो
यदूर्ध्वं यदन्तरा दिशो यत्सर्वं प्रकाशयति
तेन सर्वान् प्राणान् रश्मिषु संनिद्यते ।।६।।
सएय वैश्वानरो विश्वरूपः प्राणोऽग्नि रुदयते
तदेव इचा भ्युक्तम् ।।७।।
विश्व रूपं हरिण जातवेदस परायणं ज्योति
रेकं तपन्तरम् ।
सहस्त्र रश्मि शतधा वर्तमाना प्राण
प्राणः प्रजानांमुदयत्येष सूर्य ।।८।।

-प्रश्नोपनिषद १

ऋषि ने इन पंक्तियों में जिस सूर्य को प्राण का अधिष्ठाता बताया है, वह निश्चित रूप से आग का वह पिंड नहीं है, जो आकाश में दिखाई देता है । आशय प्राण के अधिष्ठाता देवता सविता से है, जिसका स्थूल प्रतीक सूर्य है । इन मन्त्रों में रयि और प्राण का स्वरूप समझाते हुए कहा गया है कि यह सम्पूर्ण दृश्यमान जगत् प्राण और रयि के संयोग या सम्मिश्रण से ही बना है । इसलिए इन्हें पृथक-पृथक नहीं समझाया जा सकता । फिर भी तुम इस प्रकार समझ सकते हो, कि यह सूर्य जो हमें प्रत्यक्ष दिखाई देता है, यही प्राण है, क्योंकि इसी में सबको जीवन प्रदान करने वाली चेतना शक्ति की प्रधानता और अधिकता है । यह सूर्य उस सूक्ष्म जीवन शक्ति का घनीभूत स्वरूप कहा जा सकता है । उसी प्रकार चन्द्रमा को रयि कहा जा सकता है । क्योंकि इसमें स्थूल तत्त्वों को पुष्ट करने वाली भूत तन्मात्राओं की ही अधिकता है । समस्त प्राणियों के स्थूल शरीरों का पोषण इस चन्द्रमा की शक्ति को पाकर ही होता है । ये दोनों शक्तियाँ शरीर के प्रत्येक अंग-प्रत्यंग में व्याप्त हैं । एक स्थूल पार्थिव रूप जिसे चन्द्रमा (स्थूल प्रकृति) से पोषित कहा गया है और दूसरी चेतना जिसे प्राण सूर्य शक्ति कहा गया है ।

प्राणियों के शरीर में संव्याप्त चेतना का सम्बन्ध सूर्य से बनाया गया है और कहा गया है कि रात्रि के बाद जब सूर्य उदय होता है और पूर्व दिशा से अपना प्रकाश फैलाता है, तब वहाँ के प्राणियों के प्राणों को अपनी किरणों में धारण करता है अर्थात् उनकी जीवन शक्ति जब सूर्य किरणों से सम्बधित होती है तो उनमें नवीन स्फूर्ति संव्याप्त होती है । अर्थात् मानवीय चेतना जब अपने भीतर प्राण-शक्ति धारण करती है तो वह अन्य प्राणियों की अपेक्षा अधिक सचेतन हो उठती है । इसी तथ्य को सोदाहरण समझाते हुए ऋषि ने कहा है कि जिस समय, जिस दिशा में, जहाँ-जहाँ सूर्य अपना प्रकाश फैलाता है, वहाँ-वहाँ के प्राणियों को स्फूर्ति देता रहता है, अतः सूर्य ही समस्त प्राणियों का प्राण है । पिप्पलाद ऋषि कंबन्ध की जिज्ञासा का समाधान करते हुए स्पष्ट कहते हैं कि इस तत्त्व को जानने वालों का कहना है कि किरण जाल से मंडित, प्रकाशमय एक तपता हुआ सूर्य विश्व के समस्त रूपों का केन्द्र है । सभी रूप रंग और आकृतियाँ सूर्य से ही उत्पन्न और प्रकाशित होते हैं । इसका देवता सविता ही सबका उत्पत्ति स्थान है और यही सबकी जीवन ज्योति का मूलस्रोत है । यह सर्वज्ञ और सर्वाधार है तथा प्राणशक्ति के रूप में सर्वत्र व्याप्त है और सबको धारण किये हुए है । समस्त जगत् का प्राणरूप सविता देवता एक ही है, उसके समान इस जगत् में दूसरी कोई भी जीवनी शक्ति नहीं है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

रयि को स्थूल भौतिक जगत् का प्रतिनिधि बताया गया है और प्राण को आत्मिक चेतना जगत् का । रयि और प्राण-शक्ति के द्वारा ईश्वर उपासना के दो भिन्न प्रकार बताये हैं । इसे दक्षिणायन और उत्तरायन मार्ग बताया गया है । प्रश्नोपनिषद् में कहा गया है-

संवत्सरो वै प्रजापति स्तस्यायने दक्षिणं चोतरं च तपे ह वै तदिष्टापूर्ते कृतमित त्युमपासते ।
ते चान्द्रमसेमेव लोकप भिजयन्ते ।
त एव पुनरावर्तनन्ते तस्मादेत ऋषय प्रजाकामो दक्षिण प्रतिप्यन्ते एष ह वै रचिर्य पितृयानः

अर्थ- संवत्सर ही प्रजापति है । उसके दो अयन है- एक दक्षिण और दूसरा उत्तर । वहाँ मनुष्यों में जो लोग निश्चय पूर्वक केवल इन इष्ट और पूर्व कर्मों को ही करने योग्य कर्म मान कर सकाम भाव से उनकी उपासना करते हैं वे चन्द्रमा के लोक को प्राप्त होते हैं और पुनः लौटकर आते हैं । वहाँ से पुनः लौटकर आते हैं, इसलिए ये सन्तान की कामना वाले दक्षिण मार्ग को प्राप्त होते हैं, निस्सन्देह यही वह रयि है जो पितृयान नामक मार्ग है ।

संवत्सर यहाँ परमात्मा के अर्थ में आया है और उसके रयि स्थानीय दक्षिणायन वाली भोग्य पदार्थों की प्राप्ति के उद्देश्य से की जाने वाली उपासना और उसका फल बताया गया है । आशय यह है कि बारह महीनों का यह संवत्सर रूप ही मानों सृष्टि के स्वामी परमेश्वर का स्वरूप है । इसके दो अयन हैं, दक्षिण और उत्तर । दक्षिण के छह महीनों में, जिनमें सूर्य दक्षिण की ओर घूमता है उसके दक्षिण अंग हैं और उत्तरायण के छह महीने उत्तर अंग हैं । इनमें उत्तर अंग अथवा उत्तरायण को तो प्राण कहा गया है और दक्षिण अंग को रयि । प्राण अर्थात् विश्व की चेतना शक्ति और रयि अर्थात् बाह्य स्थूल स्वरूप । 'प्रजाकात्मः ' से आशय यह है कि जो साधक सांसारिक भोगों में आसक्त होकर यज्ञादि द्वारा देवताओं का पूजन करते हैं, ब्राह्मण एवं श्रेष्ठपुरुषों का सत्कारादि तथा अन्य पुण्य कार्य और अनुष्ठानादि करते हैं वे इस प्रकार संवत्सर रूप परमात्मा के दक्षिण भाग की उपासना करते हैं । इसी को ईशावास्योपनिषद् में 'अंतमूर्ति की उपासना' बताया गया है और इस उपासना के प्रभाव से उपासक चन्द्रलोक को वांछित भोगों को प्राप्त कर पुनः इस लोक में लौट आते हैं ।

प्राण की सविता देवता की परमात्मा की उत्तरार्ध उपासना करने के परिणाम बताते हुए ऋषि ने कहा है

अर्थात्तरेण तपसा ब्रह्मचर्येण श्रद्धया विद्ययाऽऽत्मान नमन्विष्यादित्य मभि जयन्ते । एततै प्राणानामायतन मेतद मृत मभयमेतत्परायणमेतस्मान्न पुनरावर्तत इत्तेष निरोध स्तदेष श्लोकः ।१।१०।।

-प्रश्नोपनिषाद्

अर्थ- किन्तु तपस्या और ब्रह्मचर्यपूर्वक श्रद्धा से युक्त होकर जो अध्यात्म विद्या के द्वारा परमात्मा की उपासना करते हैं वे उत्तरायण मार्ग से सविता लोक को प्राप्त होते हैं । वह सविता ही प्राणों का केन्द्र हैं, अमृत और निर्भय पद प्रदान करने वाली परमगति है । इससे पुनः लौट कर नहीं आया जाता । इस प्रकार यह पुनरावृत्ति का निरोध है ।

सूर्य को परमेश्वर का स्वरूप मानकर ही यह महिमागान किया गया है और प्राण की उपासना को जीवन-मरण से छुटकारा प्राप्त करने वाला बताया गया है । गायत्री उपासना और कुछ नहीं, अपने में प्राण शक्ति को ही अधिकाधिक धारण करना है । भौतिक विज्ञान भी इस तथ्य को स्वीकार करने लगा है कि पृथ्वी पर विद्यमान जीवन, पृथ्वी की अपनी सम्पत्ति नहीं है । वह सूर्य से प्राणरूप प्रवाहित होती हुई चली आती है और धरती के वातावरण में वहाँ की तात्त्विक प्रक्रिया के साथ सम्मिश्रित होकर प्राण-वायु बन जाती है । भौतिक विज्ञान की भाषा में प्राणवायु ऑक्सीजन के अर्थों में प्रयुक्त होती है, जबकि प्राण उससे कहीं सूक्ष्म और उच्चतर तत्व है ।

सोवियत रूस के वैज्ञानिक डा० जी० ए० उशाकोश ने अपने ध्रुव शोध के विवरणों में एक और नया तथ्य प्रतिपादित किया है । वे कहते हैं कि जीवन का आधार मानी जाने वाली ऑक्सीजन वायु पृथ्वी की अपनी उपज अथवा सम्पत्ति नहीं है । वह सूर्य से प्राणरूप में प्रवाहित होती हुई चली आती है और धरती के वातावरण में यहाँ की तात्त्विक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रक्रिया के साथ सम्मिश्रित होकर प्रस्तुत 'ऑक्सीजन' बन जाती है । यदि सूर्य अपने उस प्राणप्रवाह में कटौती कर दे अथवा पृथ्वी ही किसी कारण उसे प्रवाह में कटौती कर दे अथवा पृथ्वी ही किसी कारण उसे ठीक तरह ग्रहण न कर सके तो ऑक्सीजन की न्यूनता के कारण धरती का जीवन संकट में पड़ जायगा । पृथ्वी से ६२ मील ऊँचाई पर यह प्राण का ऑक्सीजन बादलों की तरह चाहें जहाँ नहीं बरसता रहता वरन् वह भी सीधा उत्तरी ध्रुव पर आता है और फिर दक्षिण ध्रुव के माध्यम से समस्त विश्व में वितरित होता है । ध्रुव प्रभा में रंग-बिरंगी झिलमिल का दीखना विद्युत मण्डल के साथ ऑक्सीजन की उपस्थित का प्रमाण है ।

प्राणायाम का-प्राण-विद्या का उद्देश्य उसी सूर्य प्राण को अभीष्ट परिमाण में ग्रहण करके शरीर में धारण करना है । चुम्बकीय विद्युत प्रवाह को दीप्तिमान करने के लिए जिस प्राण अभिवर्धन की आवश्यकता होती है उसे प्राण साधना क्रम से विशेष प्राणायामों द्वारा उपलब्ध किया जाता है । स्वरयोग एवं प्राण विद्या की निर्धारित साधना पद्धति द्वारा कुण्डलिनी अग्नि को ठीक उसी प्रकार प्रदीप्त करते हैं जैसे लुहार अपनी आग की भट्टी को धोंकनी की हवा से तेज करता है । नासिका छिद्रों से प्राणतत्त्व को अनन्त आकाश से आकर्षित करके सूर्यतत्त्व द्वारा प्रेरित चुम्बकीय प्रवाह को तीव्र बनाया जाता है ।

इस प्रकार उत्पन्न हुए प्रकाश के कारण सारा सोया हुआ प्राण जीवित हो उठता है । सूर्य के निकलते ही पशु-पक्षी कीट-पतंग सभी निद्रा त्याग कर अपने कार्य में उत्साहपूर्वक लगते दिखाई देते हैं । कलियाँ खिलने लगती हैं और वायु का प्रभाव तीव्र हो जाता है । ठीक इसी प्रकार प्राण साधना से अब हमारे दोनों ध्रुव शक्ति प्रवाह से भरने लगते हैं तो सूर्योदय जैसी हलचल उत्पन्न होती है और न केवल स्थूल शरीर के वरन् सूक्ष्म शरीर और कारण शरीर के भी दृश्य और अदृश्य अंग अवयव अपनी सक्रियता प्रदर्शित करने लगते हैं । साधक को अनुभव होता है मानो वह केंचुली छोड़कर स्फूर्ति, या सर्प की तरह नव-चेतना का अपने में अनुभव कर रहा है ।

कभी-कभी सूर्य मंडल में विशेष उत्क्रान्ति उत्पन्न होने से उस प्रवाह की एक लहर पृथ्वी पर भी चली आती है और ध्रुव प्रदेश में चुम्बकीय आँधी-तूफानों का सिलसिला चल पड़ता है । इनकी प्रतिक्रिया उसे ध्रुव क्षेत्रों तक ही सीमित नहीं रखती वरन् समस्त विश्व को प्रभावित करती है । कई बार यह चुम्बकीय तूफान बड़े उपयोगी और सुखद परिणाम उत्पन्न करते हैं और कई बार इनमें कुछ ऐसे तत्त्व घुले हुए चले आते हैं जिनका प्रभाव समस्त विश्व को कई प्रकार के संकटों में धकेल दे । एक बार सन् १९३८ में एक चुम्बकीय तूफान ध्रुव प्रदेश पर आया था, उसकी भयानक चमक अफ्रीका तथा क्रीमिया तक देखी गई । उसका प्रभाव न केवल वस्तुओं पर पड़ा वरन् जीवधारी भी बुरी तरह प्रभावित हुए । ऐसी ही विद्युत आँधियों ने धरती पर 'हिम युग' उपस्थित कर दिया, मुद्दतों तक बहुत बड़े भूभाग को बर्फ से ढके रखा । समुद्र में, बाढ़ आई और जमीन समुद्र में समुद्र मरुस्थल में बदल गया । कहते हैं कहीं ऐसी ही वायु प्रलय, जल प्रलय, अग्नि प्रलय भी उपस्थित हो सकती है और यह चुम्बकीय आँधियाँ धरती के वर्तमान स्वरूप को कुछ से कुछ करके रख सकती हैं ।

प्रकृतिगत चुम्बकीय आँधियाँ पंच-तत्त्वों के हेर-फेर अथवा नियति के विधान से आती हैं पर योग साधना से ऐसी चुम्बकीय आँधियाँ सूक्ष्म जगत् में उठाई जा सकती हैं और आकाशस्थ ग्रह नक्षत्रों को ही नहीं, दिव्य सत्ता केन्द्रों, देवताओं को भी उससे प्रभावित किया जा सकता है । इस जगत् को प्रभावित करने वाले चेतना केन्द्र सविता को तपस्वी लोग हिलाजुला सकता है । ध्रुव प्रकाश में प्रखर तीव्रता मार्च और सितम्बर में (चैत्र और आश्विन की नव रात्रि के दिनों में) अत्यधिक होती है । इसका कारण पृथ्वी का अक्ष सूर्य के साथ उचित कोण पर होता है । बीज बोने का वही समय अधिक प्रभावी होता है । गर्भ स्थापनाएँ भी उन्हीं दिनों अधिक होती हैं । फूल खिलने का समय यही है । साधक लोग साधनाओं में अधिक सफलता भी इन्हीं दिनों पाते हैं । हम अपनी पृथ्वी काम कला को सूर्य-तेज कला के साथ जब भी जोड़ सकें तभी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यह प्रकाश प्रवाह में तीव्रता आने वाली स्थिति पैदा हो सकती है और उसकी प्रतिक्रिया व्यक्तिगत जीवन में आश्चर्यजनक परिणाम लेकर प्रस्तुत हो सकती है । इतना ही नहीं व्यापक वातावरण को भी उससे प्रभावित किया जा सकता है ।

अलैक्जेण्डर मार्शेक ने साधन अन्तरिक्ष में प्रकाश के रूप में भी, शब्दों के रूप में भी सौरमण्डल तथा मन्दाकिनी आकाशगंगा से आने वाले शक्तिप्रवाहों को सुना है । उसका यंत्र अंकन किया है । यह आवाज क्रमबद्ध संगीत एवं स्वर लहरियों की तरह है । यों कान से वे ध्वनि मात्र सुनाई पड़ती हैं, उनका कोई विशेष महत्त्व समझ में नहीं आता, पर खगोल विद्या की नवीनतम शोधें यह स्पष्ट करती चली जा रही हैं कि यह शब्द-प्रवाह भी सूर्य से ध्रुव प्रदेशों पर बरसने वाले गति प्रवाहों की तरह ही अतीव सामर्थ्यवान है और उनके द्वारा प्राणियों के शरीर तथा मन पर ऐसा प्रबल प्रभाव पड़ता है जैसा व्यक्तिगत प्रयत्नों से बहुत परिश्रम करने पर भी सम्भव नहीं । यह प्रभाव भले और बुरे दोनों ही स्तर का होता है ।

योग साधना में शब्द साधना का विशेष स्थान है । कुण्डलिनी साधना में नाद, बिन्दु कला की साधनाएँ इन अविज्ञात शक्ति प्रवाहों को समझना और उनके साथ अपना सम्बन्ध स्थापित करना ही है । शंख, घंटा, सीटी, नफीरी, झींगुर, निर्झर, मेघ, गर्जन आदि के शब्द नाद साधना में सुने जाते हैं । यह मात्र चित्त वृत्तियों को एकाग्र करने के लिए ही नहीं वरन् इसीलिये भी है कि लोक लोकान्तरों में ग्रह-नक्षत्रों, आकाश गंगाओं एवं देव संस्थानों में जो अनुदान सूर्य की भाँति ही बरसाये जाते रहते हैं उन्हें ग्रहण कर सकना और उनका लाभान्वित हो सकना सम्भव नहीं हो सके । कुण्डलिनी साधक को यह प्रक्रियायें अपनानी पड़ती हैं फलतः वह दैवी वरदानों की तरह अपने में बहुत कुछ अनुपम और अद्भुत तत्त्व समाविष्ट हुआ अनुभव करता है ।

ध्रुव-प्रभा का स्वरूप सर्च लाइट की तरह होता है । वह उत्तर की अपेक्षा दक्षिण की ओर काफी तीव्र होती है । इससे प्रगट होता है कि वह प्रवाह एक स्थान पर दक्षिणी ध्रुव की ओर तीव्र गति से दौड़ रहा है । हमारे मस्तिष्क में अवतरित होने वाला दिव्य तेजस् भी योनि गह्वर की और कुण्डलिनी केन्द्र की ओर दौड़ता है । दक्षिणी ध्रुव में 'पेनगुइन' नामक पक्षी पाया जाता है यह अतिमृदुल स्वभाव का होता है और आगन्तुकों से अत्यन्त मधुर प्रेम भरा व्यवहार करता है । वस्तुतः दक्षिणी ध्रुव कला केन्द्र ही है । वहाँ प्रेम की कोमलता, मधुरता और सरलता की अजस्र धारा बहती है । पेनगुइन पक्षी की तरह ही योनिगह्वर में सरसता और रसिकता का आनन्द और उल्लास का मिठास भरा पड़ा है । इसे जागृत किया जा सके तो जीवन में कलात्मक सरसता का उल्लास निर्झरणी की तरह फूटकर प्रवाहित हो सकता है । दक्षिणी ध्रुव समुद्रतल से १९००० फुट उभरा हुआ है । इसे विश्व शरीर की जननेन्द्रिय का उभार कह सकते हैं । पुराणों में इसे शिवलिंग कहा गया है । नारी की जननेन्द्रिय में भी यह उभार छोटे रूप में पाया जाता है ।

ध्रुवों पर सूर्य की किरणों की विचित्रता के फलस्वरूप वहाँ सब कुछ जादूनगरी जैसा दीखता है । वहाँ पर अक्सर अपनी छाया दुहरी दिखाई पड़ती है । आत्म वेत्ता भी अपने साथ परा और अपरा प्रकृति की दो सहेलियाँ साथ फिरते देखता है और अपने को इन छायाओं से स्थूल और सूक्ष्म शरीरों से भिन्न अविनाशी आत्मा ही मानता है ।

गायत्री की प्राण-प्रक्रिया का प्रयोजन यह है कि दोनों ध्रुवों पर बरसने वाली सूर्य-शक्ति सन्निहित प्राण-धारा को अभीष्ट मात्रा में आकर्षित करके उनके द्वारा स्थूल ओर सूक्ष्म चेतना की समग्र दृष्टि से पुष्ट किया जाय ।

गायत्री ही तेज है तेज ही गायत्री है

गायत्री उपासना करने वालों के सांसारिक कष्ट दूर हो जाते हैं । सकाम उपासकों को यह समझाया, बताया और आश्वासन दिया जाता है । यह आश्वासन केवल श्रद्धा या उपासना के प्रति निष्ठा जागृत करने के लिए ही किया जाता हो ऐसी बात नहीं है । इस सम्बन्ध में विचार करने का प्रयास नहीं किया गया अन्यथा पता चलता कि तत्त्व

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दर्शियों की यह गवेषणा कितनी सत्य है । प्रजापति ब्रह्मा से भी देवताओं ने एक बार यही प्रश्न किया था, 'पितामह'! आप कहते हैं कि गायत्री उपासना करने वालों के सब सांसारिक कष्ट दूर हो जाते हैं तथा उसे परलोक में भी सुख-शान्ति और सद्गति की प्राप्ति होती है, पर आपने ऐसी महासामर्थ्य वाली ईश्वरीय सत्ता से परिचय तो कराया ही नहीं । कृपया उसका विज्ञान समझाइये ताकि उस महाशक्ति के सम्पर्क का लाभ हम भी ले सकें ?

''गायत्री वरदां देवी-सावित्री वेद मातरम्'' प्रजापति बोले- हे देवताओं ! यह जो अनेक प्रकार के वरदान देने वाली गायत्री है, उसे तुम ''सावित्री'' अर्थात् सूर्य से उद्भासित होने वाला ज्ञान जानो ।

''तेजोवै गायत्री ''

-गो० उ०५ ।३

''ज्योतिर्वै गायत्री''

-तांड्य १३ ।७ ।२

''ज्योतिर्वै गायत्री''

-कौशी० १७ ।६

''वविधुतर्ता वै गायत्री''

-तांड्य १२ ।१ ।२

''गायत्र्यैव भर्ग''

-गो० पू० ५ ।१५

तेजसा वै गायत्री प्रथम त्रिसतं ।
दाधार पदैद्वितीयं यक्षरैस्तृतीयम्''

-तांड्य १० ।५ ।३

अर्थात्- गायत्री प्रकाश रूप है, तेजरूप रूप है और शक्ति रूप है । तीनों काल गायत्री की शक्ति से ही गतिशील हैं ।

सूर्य-मण्डल से उद्भासित इस शक्ति को ही जड़ चेतन का आधार कहा गया है-

सविता सर्व भूतानां सर्व भावांश्च सूयते ।
सर्वनात्प्रेरणाच्चैव सविता तेन चोच्यते ।।

समस्त तत्त्वों, सभी प्राणियों और समस्त भावनाओं को प्रेरणा देने के कारण ही उसे सविता कहते हैं ।

उपरोक्त वाक्यों में भारतीय तत्त्व-दर्शियों ने सृष्टि विज्ञान की भौतिक आध्यात्मिक प्रक्रिया का स्पष्ट ज्ञान करा दिया है । वह तत्त्व रूप होने से तत्त्वों या भौतिक पदार्थों की गति और सक्रियता का कारण है तथा भावना रूप, प्राण रूप होने से वही सम्पूर्ण प्राणियों एवं मनुष्य को शक्ति प्राण और प्रकाश देकर भावनात्मक विकास में सहायक होती है ।

यह तो सुविदित है कि गायत्री मन्त्र का शक्ति-स्रोत अधिष्ठाता देवता सविता है । सविता वैसे सूर्य को कहते हैं और सूर्य एक विराट अग्निपुंज है । अभी वैज्ञानिकों ने इस सूर्य के थोड़े और वह भी स्थूल भाग का परिचय ही प्राप्त किया है । भारतीय मनीषियों ने महान् तपश्चर्या और आत्म-विज्ञान के द्वारा जितना कुछ जाना उसका एक अंश भी आधुनिक विज्ञान नहीं जान सका है । फिर भी जो कुछ जान सका है, वह भारतीय मान्यताओं के प्रतिपादन की दृष्टि से कम नहीं ।

यों तो आकाश में असंख्य तारे हैं और वे सभी अपनी नाभिकीय शक्ति (न्यूक्लियर एनर्जी) का सृजन अपने आप करते हैं, पर मूल रूप से वे सब सूर्य की ऊर्जा पर आधारित और जीवित हैं । सूर्य प्रति सेकण्ड ४.१०-२३ किलोवाट (चार सौ सैक्टीलियन) ऊर्जा (गर्मी, प्रकाश और विद्युत के सम्मिश्रित स्वरूप का नाम ऊर्जा या एनर्जी है) फेंकता रहता है । उसके भीतरी भाग का ताप दो करोड़ डिग्री सेन्टीग्रेड से भी अधिक है । वहाँ इतनी तीव्र हलचल रहती है जैसी कि किसी नहर से एक नाली द्वारा जब पानी किसी दूसरी छोटी नहर में निकालते हैं तो उसके पृष्ठ और पीठ दोनों स्थानों में जल बड़ी तीव्र हलचल उत्पन्न करता है । अनुमान है कि सूर्य के मध्य भाग में इस हलचल का कारण ''स्पाइरल'' नामक आकाश गंगा से आकर गिरता हुआ प्राण है जो कि ब्रह्माण्ड की किसी अज्ञात मशीन या किसी विराट् तारे से आता है । ''सत् सवितुः'' पद भी यही संकेत करता है कि वह सूर्य जो इस सविता लोक को प्रकाशित करता है '' सूर्य के इस भाग में केवल नाभिक कण ही होते हैं, इन पर किसी प्रकार का आवरण नहीं होता । न्यूट्रान इलेक्ट्रानों को भगाते रहते हैं और स्वयं प्रोटानों अथवा धन विद्युत आवेश में बदलते रहते हैं । इसी से द्रव्य का रूपान्तर होता है अर्थात् हाइड्रोजन हीलियम में बदलता रहता है, उससे उत्पन्न ऊर्जा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ही सृष्टि का संचालन करती है । इस शक्ति का हजारवाँ भाग तो मनुष्य के उपयोग में आता है । शेष ९९९ भाग सविता देवता पृथ्वी की गतिविधियाँ मौसम, नदियों, पहाड़ों, समुद्र और वर्षा आदि की गतिविधियों का नियन्त्रण करते रहते हैं ।

पृथ्वी में भी जो धूप, पत्थर का कोयला, लकड़ी का ईंधन, पानी, वायु बिजली आदि हैं । वह सब इसी ऊर्जा के रूपान्तर हैं, जबकि पृथ्वी को सूर्य से कुल २०० ट्रिलियन किलोवाट की ही शक्ति प्राप्त होती है । ''नीपर'' के पानी का बिजली घर ही संसार का सबसे अधिक विद्युत् उत्पादक माना जाता है, वह यदि दिन-रात काम करे तो भी इतनी अधिक शक्ति नहीं दे सकता । यह सब देखकर मानना ही पड़ता है, ''**सविता वै प्रसवानामीशे**'' (यजुर्वेद) सबको उत्पन्न करने वाला परमेश्वर सविता ही है ।

यह शक्ति सूर्य लोक में जितनी प्रचण्ड है पदार्थों में भी वही प्रभाव लेकर समासीन हो गई । मन में भी वही शक्ति होने के कारण मनुष्य प्रत्येक पदार्थ के अन्तरंग से सम्पर्क स्थापित कर सकने और सूक्ष्म रूप से किसी भी पदार्थ की शक्ति को प्रवाहित कर लेने में समर्थ है, पर यह विज्ञान थोड़े से ही योगी जानते हैं । इसीलिए उनके कितने ही क्रिया कलाप चमत्कार जैसे लगते हैं । अब जबकि पदार्थ में शक्ति की प्रचंडता और अस्तित्त्व को विज्ञान ने भी स्वीकार कर लिया है यह सिद्धियाँ यान्त्रिक रूप से भी ग्रहण की जा सकती है, पर उनके मनोगत चमत्कार तो योग और उपासना पद्धति से ही प्राप्त हो सकते हैं ।

आइन्सटीन ने पहली बार परमाणु के भीतर बन्द ऊर्जा (शक्ति) की माप के लिये एक समीकरण (इक्वेशन) निकाला ई=एम सी स्क्वायर, ई कहते हैं इनर्जी अर्थात् शक्ति और ''एम'' कहते हैं । ''मास'' अर्थात् पदार्थ में द्रव्य की मात्रा को । सी एक स्थिर अंग है जो प्रकाश की गति अर्थात् १८६००० मील प्रति सेकेण्ड की गति का बोध कराता है । यह शक्ति पुञ्ज पौण्डों में नापी जाती है । २० फुट पौण्ड शक्ति का अर्थ हुआ २ पौंड भार को १० फुट ऊँचे उठाने के लिए जितनी शक्ति खर्च हो या १० पौण्ड भार को २ फुट उठाने में । मनुष्य जाति में नियमित रूप से काम करते हुए कुछ शक्ति निकलती रहती है । वैज्ञानिकों के अनुमान से संसार के सब लोग १ वर्ष में ९०००००००००००००००००० (नौ के आगे १९ शून्य.) फुट पौंड ऊर्जा आकाश में फेंकते रहते हैं जबकि पदार्थ में यह शक्ति थोड़ी सी ही मात्रा में प्राप्त हो जाती है । उदाहरण के लिये हीलियम सबसे हलकी गैस है इसके नाभि (न्यूक्लियस) में केवल दो प्रोट्रान और दो ही न्यूट्रान (इनमें ही अणु भार निहित होता है) होते हैं । वैज्ञानिकों ने इन्हें मापने के लिए जो मापक बनाया उसके अनुसार प्रोट्रान का भार १.००७८ और न्यूट्रान का भार कुल १००८९४ द्रव्यमानमात्रक होता है । २.२ प्रोटान और न्यूट्रानों का भार २.०१५ १५६+२.०१७८८=४.०३३०४ द्रव्यमान मात्रक होना चाहिये था, पर हीलियम के नाभिक का भार कुल ४.००२७९ द्रव्यमान मात्रक ही होता है अर्थात् कुल संभाव्य मात्रक का ३/१०० वाँ अंश पता नहीं कहाँ गायब है । पीछे उसे शक्ति के रूप में जाना गया ।

वैज्ञानिकों ने पता लगाया कि गणना में फुट पौंड का केवल १ अंश जितना सूक्ष्म होने पर भी यही शक्ति है जो संसार को स्थिर किये हुए है यदि यह शक्ति ही भड़क उठे तो जितनी ऊर्जा संसार के मनुष्य मिलकर भी पैदा नहीं कर पाते उतनी ऊर्जा भड़क उठे और संसार के सभी पदार्थों को नष्ट करके हाइड्रोजन में बदल डाले ।

आइन्सटीन ने इसी शक्ति की माप ई=एम सी स्क्वायर समीकरण के द्वारा की । ऊपर हीलियम का जो द्रव्यमान मात्रक है केवल वही यदि शक्ति में बदला जाये तो उतने से ही जो ऊर्जा पैदा होगी वह २८० लाख इलेक्ट्रान वाल्ट के बराबर होगी । द्रव्य में हमेशा एक परमाणु से अधिक परमाणु होंगे अर्थात् यदि किसी द्रव्य की ऊर्जा का विखण्डन किया जाये तो एक न्यूट्रान से २ और २ से ४, ४ से ८, ८ से १६, १६ से ३२ की संख्या में वे बढ़ते जायेंगे और उसी अनुपात से ऊर्जा की मात्रा भी बढ़ती जायेगी । विखण्डन की बीसवीं पीढ़ी में न्यूट्रानों की संख्या ५२४२८८ अस्सीवीं पीढ़ी में

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

१२०८९०००००००००००००००००० से भी अधिक होगी, उस समय की शक्ति का अनुमान करना भी कठिन होगा, जबकि यह शक्ति का उफान एक नैनो सेकण्ड अर्थात् सेकण्ड के अरबवें समय से भी कम कल्पनातीत समय में दृष्टिगोचर हो जाता है ।

भारतीय तत्त्व दर्शियों ने आइन्सटीन की इस बात को बहुत पहले ही जान लिया था-

तेजोयस्य विराजते स बलवान्
स्फूलेषु कः प्रत्ययः

-देवीभागवत्

शक्ति व तेज रूप से प्रत्येक स्थूल पदार्थ में विद्यमान तुम अकूत बलशाली परमेश्वरी हमारी रक्षा और विकास करो ।

इसी शक्ति से मानसिक सम्बन्ध स्थापित करके ऋद्धि-सिद्धियाँ अर्जित की जाती रही हैं जो लोगों को चमत्कार जैसी लगती हैं पर वे पूर्णतया विज्ञान के सिद्धान्तों पर आधारित हैं । हाल ही में पिछले दिनों सूर्य की शक्ति को यांत्रिक ऊर्जा में परिवर्तित करने में सफल प्रयास हुए हैं । इस तरह के कई उपकरण तैयार किये गए हैं जो सूर्य से आने और पदार्थों में व्याप्त होकर क्रियाशील शक्ति को बीच में ही रोक लेते हैं और उसे यांत्रिक शक्ति में बदल कर, उससे खेतों की सिंचाई रसोई, स्नानागार, लांड्री, जल शोधक आदि के काम करते हैं । इस शक्ति से औद्योगिक क्षेत्रों में ईंधन आपूर्ति की एक बड़ी भारी समस्या हल होने की आशा की जा रही है । गायत्री उपासना द्वारा सूर्य की इस अदृश्य शक्ति का परिष्कृत और प्रखर सप से शरीर के भीतर अवगाहन धारण और विकास करना होता है । उससे स्वास्थ्य, आरोग्य, तेजबल, बुद्धि का तो विकास होता ही है, उन अतीन्द्रिय क्षमताओं का विकास भी होता है, जिन्हें लोग आश्चर्य अथवा ईश्वरीय अनुकम्पा ही मानते हैं ।

गायत्री मन्त्र के जाप के साथ मन को सूर्य लोक से जोड़ने का विधान बताया गया है ।

आदित्य मंडले ध्यायेत्परमात्मनाम् अयम् ।

अर्थात्- सूर्य मण्डल के अविनाशी परमात्मा का ध्यान करें । ध्यान से सूर्य के प्राण या शक्ति का आगमन होता है -

याभिरादित्य स्तपति रश्मि-
भिस्ताभिः पर्जन्यो भवति ।

अर्थात् सूर्यदेव जिन कारणों से तपते हैं, उन्हीं किरणों की वृष्टि करते हैं ।

सूर्य और मन एक तत्त्व होने से इस ध्यान के फलस्वरूप मन में सूर्य की तेजस्विता का विकास होता है ।

मनो वै सविता । प्राण धियः

-शतपथ ३ ।६ ।१ ।१३

मन ही सविता है, प्राण ही धी है । इन्द्रियों की स्थूल व पराशक्ति का विकास भी इसी शक्ति से होता है, क्योंकि वे भी इसी से सम्बद्ध है:-

एतस्माप्जायते प्राणो मनः सर्वेन्द्रयाणि च ।

-मुण्डक २ ।१ ।३

मन और समस्त इन्द्रियाँ प्राण की ही उपज है । गोपथ ब्राह्मण पूर्व भाग में प्राण और विद्युत को सूर्य की ही देन कहा है-

प्राण एवं सविता, विद्युदेव सविता ।

-७ ।७ ।९

यह प्राण और विद्युत सूर्य के दिए हुए हैं । इस प्रकार सूर्यलोक से प्रस्फुटित यह चैतन्य तत्त्व गायत्री मनुष्य के विकास में समर्थ है यदि हम उसे भली प्रकार समझ कर धारण कर सकें तो यह शक्ति स्वरूपा गायत्री हमारे मन बुद्धि, चित्त को शुद्ध और निर्मल बनाकर हमारी क्षमताओं का विस्तार सैकड़ों गुना कर सकती है और उसी से हम लोक-परलोक की सुख-शान्ति के अधिकारी हो सकते हैं ।

प्राणयोग-प्रचण्ड ऊर्जा का उत्पादन

प्राण एक शक्ति है और शक्ति उत्पन्न करने का एक तरीका है घर्षण भौतिक जगत् में इस प्रयोग से शक्तिशाली उपलब्धियाँ प्राप्त की जाती हैं । आत्मिक जगत् में प्राणशक्ति का उपार्जन करने के लिए भी यही प्रक्रिया प्रयुक्त की जाती है ।

निर्जन सुनसान जंगलों में कई बार भयंकर आग लगती है और विस्तृत क्षेत्र के गीले-सूखे पेड़ों को

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जलाकर खाक कर देती है । यह मनुष्यों द्वारा उत्पन्न की गई या लगाई गई नहीं होती, क्योंकि जो क्षेत्र सर्वथा निर्जन है वहाँ वैसा होने की कोई सम्भावना नहीं होती । यह आग सूखे पेड़ों की टहनियाँ तेज हवा के कारण हिलने और आपस में टकराने के कारण उत्पन्न होती है । इस कार्य में बाँस सबसे अग्रणी है । झुरमुट में बाँस एक दूसरे से सटकर उगे होते हैं । तेज हवा से उनका टकराना स्वाभाविक है । सूखे बाँस आपस में रगड़ खाकर पहले गरम होते हैं, फिर चिनगारियाँ निकालने लगते हैं । यह आग बढ़ती और फैलती चली जाती है और दावानल का रूप धारण कर लेती है ।

चकमक पत्थर के टुकड़े आपस में टकराकर चिनगारियाँ उत्पादन करने की कला ही आदि मानव ने सीखी थी । पीछे लोहे और पत्थर को टकराकर भी आग निकालने की तरकीब निकाल ली गई । यज्ञों कार्यों में लकड़ियाँ रगड़ कर अरणि मंथन की क्रिया द्वारा अग्नि उत्पन्न की जाती थी । धूना जलाकर अखण्ड अग्नि को सुरक्षित रखने का प्रचलन तो पीछे हुआ, आरम्भ में रगड़ से ही अग्नि उत्पन्न की गई, उस समय की साधनहीन परिस्थितियों में यह अग्नि आविष्कार आज के रेडियो विज्ञान से भी बढ़कर महत्त्वपूर्ण सिद्ध हुआ था और उसने मानव-प्रगति को सौ गुनी बढ़ा दिया था ।

प्राणायाम में श्वास-प्रश्वास क्रिया को क्रमबद्ध, तालबद्ध, लयबद्ध बनाया जाता है और साँस लेने की साधरण-सी अनवरत प्रक्रिया की अव्यवस्था दूर करके उसे व्यवस्था के बन्धनों में बाँधा जाता है ।

सामान्यतः श्वास का आवागमन फेफड़ों तथा अन्य अवयवों में सिकुड़ने फैलने की हलचल उत्पन्न करता है । उसी से दिल धड़कता है, रक्त संचार होता है, माँस पेशियों का आकुंचन-प्रकुंचन क्रम चलता है । जिस प्रकार पेन्डुलम का हिलना घड़ी की गतिविधियों को स्वसंचालित रखने का आधार होता है, उसी प्रकार श्वास प्रश्वास क्रिया को एक प्रकार से शरीर की समस्त हलचलों का उद्गम केन्द्र कहा जा सकता है । कहावतों में अक्सर ऐसे प्रसंग आते हैं "भगवान् के यहाँ से जितने श्वास मिले हैं उतने दिन ही तो जीना है ।" "थोड़े से श्वास और शेष रहे हैं, आदि । मृत्यु का मोटा ज्ञान श्वास चलना बन्द हो जाने से ही किया जाता है । नाड़ी की धड़कन बन्द होना श्वांस बन्द होने का ही लक्षण है ।

श्वास को जीवन कहा जाता है । तनिक गहराई से विचार करें कि हवा तो जड़ पंच-तत्त्वों में गिनी जाती है उनकी प्रतिक्रिया हलचल भी हो सकती है । तेज हवा से पत्ते हिलते हैं धूलि कण, तिनके आदि उड़ते हैं, इससे जीवन तो उत्पन्न नहीं होता । हवा में जब स्वयं ही जीवन नहीं पाया जाता तो वह प्राणी को जीवन कहाँ से दे सकती है ? यदि साँस लेने से जीवन का सम्बन्ध नहीं है तो उसे प्राण के अर्थ में क्यों प्रयुक्त किया जाता है और प्राण को जीवन का पर्यायवाची क्यों माना जाता है ?

बात यह है कि हवा मोटे तौर से एक पदार्थ प्रतीत होती है, पर उसकी भीतरी परतों में और भी महत्त्वपूर्ण वस्तुएँ विद्यमान हैं । दूध में घी दिखाई तो नहीं पड़ता, पर वह उसमें रहता अवश्य है और अमुक विधि से उसे अलग निकाला भी जा सकता है । वनस्पतियाँ मोटे तौर पर हरियाली भी लगती है । पर प्रयोगशाला में उनका विश्लेषण करने पर प्रोटीन, नमक चूना, चिकनाई आदि कितने ही स्तर के पदार्थ ढूँढे निकाले जाते हैं । शरीर मोटे तौर पर माँस-चमड़े का दीखता है, पर विश्लेषण से उसमें ढेरों प्रकार के रासायनिक पदार्थ मिलते हैं । इसी प्रकार साँस में प्रवेश करने वाली हवा मात्र स्पर्श तन्मात्रा वाली प्रकृति की हलचल नहीं है, उसके भीतर कितने ही महत्त्वपूर्ण तत्त्व भरे पड़े हैं, वे भौतिक भी हैं और चेतनात्मक भी । वायुभूत भौतिक पदार्थ आकाश की सुविस्तृत पोल में भरे पड़े हैं, इसे विज्ञानवेत्ता भली प्रकार जानते हैं । विज्ञानियों का कथन है कि चेतना जड़ शरीर में रहने वाली चेतन आत्मा की तरह है । वायु रूपी शरीर के भीतर एक प्राण भी चेतन शक्ति की तरह भरा है । हवा से सूक्ष्म ई- ईथर से सूक्ष्म प्राण - प्राण से सूक्ष्म ब्रह्म इस प्रकार की परतों की कल्पना की जा सकती है । ऐसी परतों की जो पूरी तरह आपस में

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

में गुंथे और मिले हुए हैं । माँस में रक्त घुला रहता है और वायु में प्राण । सामान्यतया वे एकत्रित हैं, पर विशेष प्रयत्न द्वारा उन्हें पृथक् किया जा सकता है और जिस पदार्थ की आवश्यकता हो उसे हस्तगत किया जा सकता है । ठीक इसी प्रकार वायु तत्त्व में घुले हुए प्राण-तत्त्व को अलग से खींचा जा सकता है और उसे अपने प्राण में सम्मिलित करके अधिक शक्तिशाली बनाया जा सकता है ।

सामान्यतया साँस लेने से फेफड़ों में हवा पहुँचने और उससे रक्त को ऑक्सीजन मिलने तथा भीतर उत्पन्न हुई कार्बनडाइ-आक्साइड को बाहर निकालने भर का शरीर यात्रा का आवश्यक प्रयोजन पूरा होता है । इस श्वास-प्रश्वास क्रिया को विशेष ढंग से विशेष क्रम से किया जाने लगे तो उससे भिन्न प्रकार की मंथन क्रिया आरम्भ हो जाती है । मंथन द्वारा दूध से घी निकलता है । रति क्रिया से वीर्यपात का आधार भी यह मंथन ही होता है । अनेक वैज्ञानिक प्रयोजनों में यह मंथन क्रिया की जाती है और उससे अणुओं का विकेन्द्रीकरण होने से छोटे रूप से अणु विस्फोट जैसी स्थिति उत्पन्न होती है और अनोखी उपलब्धियाँ मिलती हैं । दवाओं की घुटाई, पिसाई, घिसाई में भी प्रकारान्तर से यह मंथन क्रिया ही सम्पन्न होती है और सामान्य-सी जड़ी-बूटियाँ चमत्कारी परिणाम प्रस्तुत करती हैं ।

आदिम सभ्यता के विकास काल में चकमक पत्थर के टुकड़े आपस में टकराकर आग उत्पन्न की जाती थी । पीछे लोहे, पत्थर के टकराव से भी चिनगारियाँ उत्पन्न की जाने लगीं । अरणि मंथन में लकड़ियाँ आपस में रगड़ कर यज्ञ के लिए अग्नि उत्पन्न करना उस कर्मकाण्ड का एक अंग रहा है । सूखे हुए बाँस अथवा अन्य कोई लकड़ियाँ तेज हवा के झोंकों से आपस में रगड़ने लगती हैं और उनसे उत्पन्न आग बढ़ते-बढ़ते दावानल बनकर बड़े-बड़े जंगलों को जलाकर खाक कर देती है । सीसे की छड़ एवोनाइट से घिसने पर बिजली उत्पन्न होने की बात साइन्स के छात्रों को स्कूली प्रयोगशाला में प्रत्यक्ष दिखाई जाती है । यह सब घर्षण चमत्कार हैं । ऐसी ही ऊर्जा श्वास क्रिया को मंथन क्रम में चलाने पर उत्पन्न होती है और उससे शारीरिक सक्रियता एवं मानसिक तीक्ष्णता को प्रखर बनाने में महत्त्वपूर्ण सहायता मिलती है ।

चलती रेल के पहियों में जब चिकनाई समाप्त हो जाती है अथवा अन्य किसी कारण से घिसाव पड़ने लगता है तो वही उत्पन्न होने वाली गर्मी धुरे तक को गला देती है और दुर्घटना की स्थिति बन जाती है । आकाश में कभी-कभी प्रचण्ड प्रकाश रेखा बनाते हुए 'तारे टूटते' दिखाई पड़ते हैं । यह तारे नहीं उल्का पिण्ड होते हैं । अन्तरिक्ष में छितराये हुए धातु पाषाण जैसे छोटे-छोटे टुकड़े कभी-कभी पृथ्वी के वायु-मण्डल में घुस पड़ते हैं और हवा से टकराने पर जल कर खाक हो जाते है, उसी जलने का तेज प्रकाश देखकर तारा टूटने का अनुमान लगाया जाता है । यह मात्र घर्षण क्रिया का चमत्कार है । प्राणायाम में इसी प्रक्रिया को अपने ढंग से दुहराया जाता है और प्रकाश उत्पन्न करते देखा जा सकता है ।

दही मंथन में 'रई' को रस्सी के दो छोर पकड़कर उलटा-सीधा घुमाया जाता है । रई घूमती है और उससे दूध में घुला हुआ घी बाहर आ जाता है । बायें-दायें नासिका स्वरों से चलने वाले इडा-पिंगला विद्युत प्रवाहों का अमुक विधि से मंथन करने पर दूध विलोने जैसी हलचल उत्पन्न होती हैं उससे काया चेतना से भरा हुआ ओजस उभर कर ऊपर आता है । इसको विधिवत् उत्पन्न और धारण किया जा सके तो साधक को मनस्वी, तेजस्वी, और ओजस्वी बनने का अवसर मिलता है । इस उपलब्धि को जीवन साहस एवं प्रखरता के रूप में कार्यान्वित होते देखा जा सकता है ।

कई व्यक्ति शारीरिक दृष्टि से समर्थ और मानसिक दृष्टि से सुयोग्य होते हैं, पर साहस का अभाव होने से वे कोई महत्त्वपूर्ण कदम नहीं उठा पाते । शंका-कुशंकाओं से ग्रस्त रहने, आपत्तियों की असफलताओं की सम्भावना उन्हें पग-पग पर डराती रहती हैं । थोड़ी-सी कठिनाई आने पर डरे-घबराये दिखाई पड़ते हैं । ऐसे व्यक्ति प्रगति के उपयुक्त अवसर सामने होने पर भी उन्हें गँवाते और गई-गुजरी स्थिति में आजीबन पड़े रहते हैं । इसके

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विपरीत साहसी व्यक्ति स्वास्थ्य, शिक्षा साधन एवं उपयुक्त अवसर न होने पर भी दुस्साहस भरे कदम उठाते और आश्चर्यजनक करने वाली सफलताएँ प्राप्त करते देखे जाते हैं । ऐसे ही दुस्साहसी व्यक्ति इतिहास के पृष्ठों पर अपना नाम अमर करते देखे जाते हैं । किसी भी क्षेत्र की महत्त्वपूर्ण सफलताएँ पाने के लिए ऐसी ही साहसिक मनोभूमि का होना आवश्यक है । इस आन्तरिक समर्थता को दूसरे शब्दों में 'प्राण' कहा जाता है । प्राणवान् का अर्थ जीवित ही नहीं साहसी भी होता है । इस उपलब्धि को स्वास्थ्य और शिक्षा से भी बढ़कर माना जा सकता है । प्राणायाम के प्रयोग इस उपलब्धि से साधक को लाभान्वित करते हैं ।

जीवन के हर क्षेत्र में पग-पग पर संघर्ष की आवश्यकता होती है । प्रस्तुत कठिनाइयों को चीरते हुए ही प्रगति सम्भव होती है । नाव पानी को चीरते हुए आगे बढ़ती है । मकान बनाने का कार्य नींव खोदने से आरम्भ होता है । खेत को बोने से पहले उसे जोतना पड़ता है । अनेक योनियों में भ्रमण करते हुए जीव जिन पशु-प्रवृत्तियों का अभ्यस्त होता है उन्हें घटाये-हटाये बिना मानवी गरिमा के अनुरूप गुण-कर्म स्वभाव उपार्जित नहीं किया जा सकता । आन्तरिक अवांछनीयताओं को हटाकर उस स्थान पर उत्कृष्टताओं की स्थापना करने के प्रयोग को साधना कहते हैं । यह साहसिकता के बिना किसी प्रकार सम्भव नहीं । बाहरी शत्रुओं से लड़ने के लिए जितना युद्ध कौशल चाहिए उतना ही शौर्य-साहस अपने भीतर घुसे हुए काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद-मत्सर जैसे आत्म-शत्रुओं से लड़ने और परास्त करने के लिए आवश्यक होता है । दुर्बल मनः स्थिति के लोग अपनी भीतरी कमजोरियों को जानते हैं, उन्हें हटाना चाहते हैं, पर साहस के अभाव से उनके साथ लड़ने का पराक्रम प्रदर्शित नहीं कर सकते । फलतः आत्म-सुधार एवं आत्म-निर्माण का प्रयोजन पूरा कर सकना उनसे बन ही नहीं पड़ता । अपने को असहाय अनुभव करते हैं और थककर प्रयत्न ही छोड़ बैठते हैं ।

बाहरी युद्ध जीतने के भौतिक लाभ हैं, किन्तु आन्तरिक युद्ध में जीतने से तो विभूतियों का इतना बड़ा भण्डार हाथ लगता है । जिसे पाकर मनुष्य जीवन सच्चे अर्थों में सार्थक माना जा सकता है । साधना को संग्राम कहा गया है । 'साधना समर' शब्द का अध्यात्म विज्ञान में बार-बार उल्लेख होता है । देवासुर संग्राम के अनेकानेक प्रसंग पौराणिक उपाख्यानों में आते हैं, यह अलंकारिक रूप मनुष्य जीवन के अन्तरंग और बहिरंग क्षेत्रों में सदा होते रहने वाले संघर्षों का ही चित्रण है । दुर्गा सप्तशती और गीता की पृष्ठभूमि इसी संघर्षों के आधार पर खड़ी है । भगवती दुर्गा द्वारा असुरों का संहार और कृष्ण द्वारा अर्जुन के माध्यम से महाभारत का आयोजन प्रकारान्तर से इसी तथ्य की ओर इंगित करते हैं कि साधना समर के क्षेत्र में प्रवेश किये बिना उन अवरोधों से पीछा छुड़ाया जा सकता है जो मनुष्य की दयनीय दुर्दशा में डाले रहने के लिए प्रधान रूप से उत्तरदायी हैं ।

गायत्री की प्राण सम्वर्धन साधना

आत्मिक भूमिका में प्रवेश करना शत्रुओं के चक्रव्यूह किले को भेदने की तरह कठिन है । काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर रूपी षड्रिपु इस कल्याण मार्ग को रोके बैठे रहते हैं । वासना और तृष्णा की दो पिशाचनियाँ मनुष्य को दुराचारिणी वेश्या की तरह प्रलोभन आकर्षण के सारे साज सामान जुटाये बैठी रहती हैं । इस जंजाल में जीव को जन्म से मृत्यु तक बन्धन-बद्ध होकर तड़पना पड़ता है । नरक के यह आठ दूत सामान्य स्तर के जीव को अपने चंगुल में ही दबोचे बैठे रहते हैं । वासना और तृष्णा रूपी जादूगरनियाँ उसे 'नट-मर्कट' की तरह नचाती रहती हैं । षड्रिपु मनोविकार मित्र बन कर साथ-साथ छद्मवेश में रहते हैं और हर घड़ी शत्रुओं जैसी करतूत करके जीव का लोक, परलोक बिगाड़ते रहते हैं । काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद-मत्सर की उँगलियों के इशारे पर जीव नाचता रहता है । वे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जो चाहते हैं सो कराते हैं, जिधर इच्छा होती है उधर भगाते हैं ।

जीव में से अधिकांश को इसी स्तर का जीवन काटना पड़ता है । इससे उबरने के लिए अन्धी दुनिया की भेड़चाल से प्रतिकूल दिशा में चलना पड़ता है । इसके लिए आवश्यक साहस चाहिये । दुनिया अपने को मूर्ख बताये तो उसकी समझ को उपहास मानकर अपना पथ आप निर्धारित करने की क्षमता और दृढ़ता किसी बिरले में ही होती है । यह मनस्विता और तेजस्विता, लगन और श्रद्धा जब तक अपने में न हो, तब तक आत्म-कल्याण के मार्ग पर देर तक और दूर तक नहीं चला जा सकता, श्रेयपथ पर किसी आवेश, उत्साह में थोड़ी दूर तक चले भी तो आलस्य के अवरोध सामने आ खड़े होते हैं । तथाकथित मित्र, परिजनों के स्वार्थ में राई-रत्ती कमी आती है तो वे भी गरम होते हैं । कई तो मूर्ख बताते और उपहास करते हैं । इन अड़चनों से मन ढीला पड़ जाता है और जो कुछ थोड़ा-सा आरम्भ किया था, वह संकल्प शक्ति की दुर्बलता मानसिक शिथिलता के कारण थोड़े ही दिन में समाप्त हो जाता है ।

परिस्थिति से निपटे बिना आज तक कोई श्रेयार्थी आत्म-कल्याण के पथ पर आगे नहीं बढ़ सका । इसलिए इस अनिवार्य आवश्यकता की पूर्ति के लिये वह आन्तरिक साहस-आत्मबल एकत्रित करना ही पड़ता है जो इन समस्त विघ्नों को परास्त करता हुआ, अंगद के पैर की तरह अपने निश्चय पर दृढ़ बने रहने में सहायता कर सके । यह आत्म-बल, यह आन्तरिक साहस प्राण-शक्ति पर आधारित है । इसलिए साधक को प्राण-प्रक्रिया द्वारा अभीष्ट मनोबल आन्तरिक दृढ़ता एवं अविच्छिन्न श्रद्धा का सम्पादन करना पड़ता है । इसके लिये आवश्यक प्रयत्न करने का नाम ही 'प्राण-प्रक्रिया' है ।

आत्म-कल्याण के पथ पर चलने वाले साधक को अपने सामने आने वाली कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है । आहार-विहार राजसी न रहने से शरीर में भी कुछ दुर्बलता आती है, उसकी पूर्ति प्राण-बल से ही करना पड़ती है । अभावग्रस्त, एकाकी, कष्टसाध्य, दूसरों से उपेक्षित जीवन खलता है और मन में उद्विग्नता उत्पन्न होती है । इसके समाधान के लिए भी प्राण बल चाहिये । फिर श्रेयार्थी का हृदय बड़ा कोमल हो जाता है । दूसरों का कष्ट देखकर मक्खन की तरह सहज ही पिघल जाता है । दया और करुणा से द्रवीभूत अंतःकरण कुछ सहायता करना ही चाहता है ।

भौतिक दृष्टि से दूसरों की सहायता धनी लोग कर सकते हैं और आत्मिक दृष्टि से किसी की सहायता कर सकना प्राण धन से सम्पन्न लोगों के लिए सिद्ध-पुरुषों के लिए आत्मिक सम्पति से सुसम्पन्न व्यक्ति के लिए ही सम्भव होता है । यह पूँजी केवल प्राण-बल के आधार पर ही संग्रह की जा सकती है ।

गायत्री की 'प्राण-प्रक्रिया' वह वैज्ञानिक पद्धति है, जो साधक की उपरोक्त कठिनाइयों का हल और आवश्यकता की पूर्ति के साधन प्रस्तुत करती है । समर्थ साधक ही अपनी आन्तरिक क्षमता के द्वारा इस कठिन मार्ग पर देर तक, अन्त तक चलता रह सकता है । इसलिए एक आवश्यक साधन को माध्यम समझते हुए श्रेयार्थी को प्राण-शक्ति सम्पादित करने की साधना पद्धति को अपनाना पड़ता है । इसी विधि व्याख्या का नाम 'प्राण-प्रक्रिया' है ।

इसी अनन्त विश्व-ब्रह्माण्ड में समुद्र में भरे हुए जल की तरह सूक्ष्म रूप में यह अपेक्षित प्राण-शक्ति भरी पड़ी है । आकाश में वायु, ईथर, विद्युत, परमाणु जैसी भौतिक शक्तियाँ भरी पड़ी हैं, इसे पदार्थ विज्ञान के विद्यार्थी जानते हैं । अध्यात्म विद्या के तत्त्वदर्शियों को पता है कि इस ब्रह्माण्ड में एक प्रचण्ड प्राणशक्ति व्याप्त है जिसे संस्कृत में 'ब्रह्म ऊष्मा' और अँग्रेजी में 'लेटेन्ट हीट' कहते हैं । इसी के प्रभाव और प्रकाश से संसार में विविध प्रकार की हलचलें और गतिविधियाँ दृष्टिगोचर होती हैं । परमाणु के इलेक्ट्रान, प्रोट्रान, न्यूट्रोन आदि भाग इसी ऊष्मा से अपनी धुरी और कक्ष पर द्रुत गति से घूमते हैं । ग्रह-नक्षत्रों की गतिशीलता का यही कारण है । वनस्पतियों और जीव-जन्तुओं में सजीवता इसी प्रभाव से परिलक्षित होती है । यह प्राण ही संसार

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

का जीवन है । गायत्री को सविता देवता उस प्राण का प्रचण्ड पुञ्ज अपने में धारण किये हुए है ।

गायत्री शब्द के अक्षरों का अर्थ प्राण की संरक्षक अभिवर्धनी शक्ति है । यह महामन्त्र उस महातत्त्व साधक में इस प्राण की मात्रा बढ़ाता है । जिस प्राणी में जितना आध्यात्मिक चुम्बकत्व है, वह उतनी ही अधिक मात्रा में इस महाप्राण को अपनी ओर आकर्षित कर उसे संग्रह कर सकता है । इस चुम्बकत्व का अभीष्ट मात्रा में उत्पादन गायत्री मन्त्र की उपासना से होता है । जिन्होंने इस महाशक्ति का आश्रय सान्निध्य लाभ किया है, उसमें प्राणशक्ति की मात्रा दिन-दिन बढ़ती चली गई है और वे इतना आत्म-बल सम्पादित कर सकते हैं जिसके आधार पर बाह्यशक्ति आन्तरिक जीवन की समस्त कठिनाइयों का निवारण और समस्त आवश्यकताओं का समाधान किया जा सके ।

प्राण-प्रक्रिया के साधन विधानों को प्राणायाम कहते हैं । यों साधारण तथा साँस को गहराई तक खींचना (पूरक) रोके रहना (अन्तःकुम्भक) पूरी तरह बाहर निकालना (रेचक) और कुछ देर बिना साँस के रहना (बाह्य कुम्भक) इन चार स्तरों में बटी हुई श्वासोच्छ्वास प्रक्रिया को प्राणायाम कहा जाता है । संध्या उपासना के नित्य कर्मों में इसी पद्धति का प्रयोग होता है पर इतने मात्र से ही प्राणायाम को सीमाबद्ध नहीं मान लेना चाहिये । उसके प्रख्यात ८४ प्रकार हैं । इसके अतिरिक्त भी अन्य ऐसे प्राण विधान हैं, जिनके माध्यम से शरीर के सूक्ष्म प्राण संस्थानों का जागरण होता है, वे विश्व-व्यापी प्राण-शक्ति के साथ जोड़ने और उस सम्पर्क से अपने को अत्यधिक दिव्य सामर्थ्य सम्पन्न बनाने में समर्थ होते हैं ।

गहरे श्वासोच्छ्वास लेने की साधारण प्राणायाम पद्धति को फेफड़ों का बढ़िया व्यायाम कहा जा सकता है, जिससे स्वास्थ्य सुधार और दीर्घ-जीवन की सम्भावना निश्चित रूप से बढ़ती है । विभिन्न रोगों का निवारण केवल विशेष प्रकार के प्राणायामों द्वारा किया जा सकता है । प्राण पद्धति अपने आप में आरोग्य सम्वर्धन एवं रोग निवारण की सर्वांगपूर्ण पद्धति है । यदि कोई इस विज्ञान को ठीक तरह जान ले तो न केवल अपना बिगड़ा हुआ स्वास्थ्य सुधार ले, वरन् दूसरों को भी शारीरिक रोगों से मुक्त कर उन्हें सर्वांगपूर्ण सुधारे हुए स्वास्थ्य का आनन्द लाभ करा सकता है । इसीलिये प्रत्येक धर्मकार्य में, शुभ कार्य में, संध्या चन्दन के नित्य कम्र में 'प्राणायाम' को एक आवश्यक धर्म-कृत्य के रूप में सम्मिलित किया गया है ।

हमें यह भली-भाँति समझ लेना चाहिए कि स्वास्थ्य लाभ तो 'प्राणायाम' का अकिंचन सा प्रारम्भिक लाभ है । उससे वास्तविक लाभ मानसिक एवं आध्यात्मिक होता है । मनोविकारों के उद्वेग में प्राणायाम एक प्रकार का चमत्कारी प्रयोग है । चिन्ता, क्रोध निराशा, भय, कामुकता उद्वेग, आवेश आदि का समाधान उन प्रयोजनों के लिए निर्धारित प्राणायामों द्वारा सरलतापूर्वक किया जा सकता है । मस्तिष्क की क्षमता बढ़ाने में स्मरण शक्ति, कुशाग्रता, सूझ-बूझ, दूरदर्शिता, सूक्ष्म-निरीक्षण, धारणा प्रज्ञा, मेधा आदि मानसिक विशेषताओं का अभिवर्धन 'प्राणायाम' द्वारा किया जा सकता है । चंचल मन का निरोध एवं एकाग्रता साधन करने के लिए प्राणायाम की उपयोगिता उद्‌भूत है । आन्तरिक मलीनता को शुद्ध करने और अन्तःकरण में सतोयुगी सत्प्रवृत्तियों के अभिवर्धन का आध्यात्मिक प्रयोजन भी प्राणायाम से सिद्ध होता है । षट्-चक्र वेधन, कुण्डलिनी जागरण एवं शरीर तथा मन में प्रसुप्त पड़े हुए अनेक सूक्ष्म शक्ति संस्थानों का उन्नयन प्राण की प्रयोग प्रक्रियाओं पर ही निर्भर है । इनका विज्ञान एवं विधान अपने आप में एक सर्वांगपूर्ण शास्त्र है ।

गायत्री प्राण-विद्या है । प्राण के साधन से हम शरीर मन और आत्मा की दृष्टि से परिपुष्टि और समुन्नत बनते हैं ।

गायत्री उपासना का मध्यवर्ती मार्ग प्राण-प्रक्रिया है । इससे वह समर्थता आती है जिसके बल पर 'ध्यान धारणा' में सफलता प्राप्त की जा सके । बल के मूल्य पर ही इस संसार की विभिन्न सम्पत्तियाँ और विभूतियाँ प्राप्त की जा सकती हैं । शरीर-बल, मनोबल, आत्म-बल इन तीनों का अभिवर्धन धन, सम्पत्ति, इन्द्रिय भोग, यज्ञ, मैत्री, वर्चस्व, उल्लास

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आदि सांसारिक सुखों का सृजन करता है । इसी के द्वारा आत्म-कल्याण का जीवनोद्देश्य प्राप्त होता है । उसी के द्वारा बन्धन से मुक्ति का मोक्ष का परम पुरुषार्थ सफलतापूर्वक सम्पन्न होता है । अतएव समग्र सफलता के लिए जिस आत्म-बल का सम्पादन करना पड़ता है, वह प्रयोजन गायत्री की प्राण-विद्या द्वारा ही सम्पन्न हो सकता है ।

भगवान् के अवतार के प्रसिद्ध प्रयोग दो ही हैं- (१) अधर्म का उन्मूलन (२) धर्म का संस्थापन । अनाचार को निरस्त करके ही सदाचार की स्थापना हो सकती है । अस्तु सिक्के के दो भागों की तरह उन्हें परस्पर पूरक एवं अविच्छिन्न भी कह सकते हैं । उद्यान को विकसित करने वाला माली जहाँ खाद पानी लगाता है वहाँ सिंचाई, गुड़ाई, छटाई रखवाली जैसी कड़ाई भी आवश्यक है । आत्मोत्कर्ष के लिए जहाँ सत्प्रवृत्तियों का विकसित किया जाना, पुण्य प्रयोजनों को अपनाना अभीष्ट है, उतना ही दुष्प्रवृत्तियों को उखाड़ फेंकने के लिए तत्परता बरतना भी आवश्यक है । भगवान के अवतार इस दुहरी क्रिया को सम्पन्न करने के लिए ही होते रहे हैं । व्यक्तिगत जीवन में भी प्रगतिपंथ पर बढ़ने वालों को इसी मार्ग का अवलम्बन करना होता है । संक्षेप में इसे यों कह सकते हैं कि जिसके अन्तःकरण में भगवान् की दिव्य ज्योति का अवतरण होगा, उसे अवांछनीयताओं के विरुद्ध लोहा लेने के लिए पराक्रम प्रदर्शित करना होगा और सत्प्रवृत्तियों के अभिवर्धन में जुटना होगा । यह दोनों ही प्रयोजन जिस आन्तरिक साहस द्वारा सम्पन्न होते हैं, उसी को 'आत्म-बल' कहा गया है । साधना का एक उद्देश्य आत्म-बल का उपार्जन भी है । प्राणायाम द्वारा उत्पन्न हुई आन्तरिक ऊर्जा इस उत्पादन में विशेष रूप से सहायक होती है । इन्द्रिय दमन, मनोनिग्रह, कुसंस्कारों का उन्मूलन, सत्प्रयोजन की दिशा में अनवरत प्रयाण, कठिनाइयों से संघर्ष, जन उपहास एवं विरोध का सहन जैसे महत्त्वपूर्ण कार्य बिना आन्तरिक साहस के अन्य किसी प्रकार सम्भव नहीं हो सकते ।

कुविचार मस्तिष्क पर छाये रहते हैं और शरीर को अकर्म करने की आदत पड़ी होती है, यदि पुराने अभ्यासों को काटा, उखाड़ा न जाय तो फिर उत्कर्ष के लिए आगे बढ़ चलना कैसे बन पड़ेगा ? स्पष्ट है कि कुविचारों को सद्विचारों से ही निरस्त किया जा सकता है । काँटे से काँटा निकालने और विष से विष को मारने की उक्ति प्रसिद्ध है । मस्तिष्क में यदि कामुकता के विचार उठते रहते हैं, तो उनके काटने का एक ही उपाय है कि ब्रह्मचर्य के पवित्र दृष्टिकोण के समर्थक विचारों को मस्तिष्क में जमा किया जाय । इस मार्ग पर चलने वाले हनुमान, भीष्म, शंकराचार्य, दयानन्द आदि महामानवों के चरित्रों का चिन्तन किया जाय, उस पक्ष के समर्थन वाले तर्क, तथ्य, प्रमाण, उदाहरणों को पर्याप्त मात्रा में स्वाध्याय, मनन आदि की सहायता से संग्रह किया जाय । उन पर बार-बार गहराई से विचार किया जाय । कामुकता तथा शालीनता के दोनों पक्षों को अपनी-अपनी बात के समर्थन का अवसर देकर विवेक द्वारा निष्पक्ष न्यायाधीश की तरह फैसला करने का अवसर दिया जाय तो पुराने अवांछनीय चिन्तन अभ्यास को आसानी से काटा जा सकता है । शारीरिक दुष्प्रवृत्तियों के सम्बन्ध में भी यही बात है । नशा, व्यसन, आलस्य जैसे दुर्गुणों से निपटना, कठोर संकल्प एवं दृढ़ निश्चय से ही सम्भव हो सकता है । व्यक्तित्व का कायाकल्प कर सकने वाले व्यक्ति ही सच्चे अर्थों में शूर-वीर कहे जाते हैं और उन्हीं को भौतिक जगत् की प्रत्येक दिशा में बढ़ चलने का द्वार खुला मिलता है । इस जीवन प्राण कहे जा सकने वाले चेतना तत्त्व को प्राण कहते हैं । प्राणायाम इसी उपलब्धि की साधना है ।

आत्म-बल इसी आन्तरिक ऊर्जा का नाम है जो मनुष्य की भौतिक और आत्मिक क्षेत्र में प्रबल पुरुषार्थ करने तथा आश्चर्य चकित करने वाली उपलब्धियाँ उपार्जित करने की आधारशिला सिद्ध होता है । इसी ऊर्जा को उपार्जित करना प्राणायाम करने का प्रधान उद्देश्य है । तालबद्ध, क्रमबद्ध, संकल्पयुक्त विशेष श्वास क्रिया को प्राणायाम कहते हैं । किस स्तर का प्राण उपार्जित किया जाय इसके लिए भिन्न-भिन्न विधि-विधान हैं । सूर्य की सात किरणों की तरह एक ही प्राण-शक्ति के भेद-

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उपभेद सन्निहित शक्ति के वर्गीकरण का ध्यान रखते हुए किये गये हैं । भस्तिकथा, भ्रामरी, उज्जायी, शीतली, सीत्कारी आदि अनेकों विधि-विधान हैं । इनके उद्देश्य और प्रतिफल भी अनेक हैं ।

गायत्री की दैनिक उपासना में प्राणायाम साधना को अनविार्य कर्म में जोड़ा गया है, पर उसका विधान मात्र पूरक, अन्तःकुम्भक, रेचक और बाह्यकुम्भक तक ही सीमित है । सामान्य की अपेक्षा थोड़ा अधिक देर तक जब तक फेफड़े पूरी तरह वायु से न भर जायें साँस खींचना पूरक क्रिया कहलाती है । जितनी देर सम्भव हो साँस भीतर रोक रहने को अन्तर्कुम्भक कहते हैं । जिस तरह साँस भीतर फेफड़ों में भरी गई थी उसी गति से श्वास बाहर निकालने को रेचक तथा जितनी देर साँस भीतर रोकी गई थी उतनी देर साँस रहित रहने का नाम बाह्यकुम्भक कहलाता है । इन क्रियाओं से क्रमशः इड़ा और पिंगला नाड़ियों का मंथन होता है । जिससे शरीर में प्राण-ऊर्जा का उत्पादन होता है । इस उत्पादित ऊर्जा को पचाना, उसका निग्रह नियंत्रण करना, उसके द्वारा अनेक लौकिक अतीन्द्रिय कार्यों के सम्पादन पर भारतीय योगियों ने व्यापक खोज की है । प्राणायाम द्वारा प्राणों को इतना नियन्त्रित किया जा सके जिससे शरीर को फूल से भी अधिक कोमल तथा वज्र से भी अधिक कठोर बनाया जा सके । राम द्वारा एक ही बाण से सात तालों का काटना, हनुमान का समुद्र की छलाँग लगाना और पर्वत से संजीवनी लाना, अंगद का भरी सभा में पाँव उठा देने की चुनौती देना, भीष्म का शरशैय्या पर लेटे रहना प्राणायाम की शक्ति के ही चमत्कार थे । आज उस विद्या को लोग भूल गये हैं । पर अतीत काल में इसी विद्या के कारण इस देश के लोगों ने एक से एक अद्भुत करतब दिखाये थे । शंकाराचार्य का परकाया प्रवेश एक प्राणायाम द्वारा नियंत्रित क्रिया ही थी ।

इस तरह प्राणायाम आज भी सम्भव है किन्तु अत्याधिक ऊष्मा पैदा करने वाले प्राणायाम यदि किसी को उसकी शारीरिक व मानसिक परिस्थितियों को जाने बिना बता दिये जायें तो लाभ के स्थान पर उलटे हानि हो सकती है । इसी कारण दैनिक विधान में यही प्राणायाम रखा गया है । जटिल प्राणायाम अधिकारी पात्रों को ही बताने और अभ्यास कराने की परम्परा है । प्राणायाम के लाभ स्पष्ट और असंदिग्ध हैं । उनका लाभ यों सामान्य स्थिति में हर कोई प्राप्त कर सकता है ।

मन पर नियंत्रण करने के लए शास्त्रकारों ने प्राणायाम साधन पर बहुत बल दिया है । दोनों की परस्पर घनिष्टता बताते हुए कहा गया है कि यदि प्राण पर नियत्रंण स्थापित किया जा सके तो मनोनिग्रह जैसा कठिन कार्य सरल बन जायगा ।

पवनो बध्यते येन मनस्तेनैव बध्यते ।
मनश्च बध्यते येन पवनस्तेन बध्यते ।।
हेतुद्वयं तु चित्त वासना च समीरणः ।
तयोर्विनष्ट एकस्मिंस्तौ द्वावपि विनश्यतः ।।

-हठयोग प्रदीपिका ४ । २१

जिसने प्राण वायु को जीता उसने मन जीत लिया । जिसने मन जीता उसने प्राण जीत लिया । चित्त की चंचलता के दो ही कारण हैं एक वासना का, दूसरा प्राण वायु का चंचल होना । इनमें से एक के नष्ट हो जाने पर दोनों का नाश हो जाता है ।

चले वाते चलो बिन्दुर्निश्चले निश्चलो भवेत् ।
योगी स्थाणुत्वमाप्नोति ततो वायु निरोधयेत् ।।

-गोरक्ष प० १ । ९०

प्राण वायु चलायमान रहने से बिन्दु चलायमान रहता है । प्राण निश्चल हो जाने से वीर्य भी निश्चल हो जाता है । समर्थ स्थिरता प्राप्त करने के लिए योगी प्राणायाम करे ।

मनो यत्र विलीयते पवनस्तत्र लीयते ।
पवनो लीयते यत्र मनस्तत्र विलीयते ।।

-ह० प्र० ४ । २३

अर्थ- जिस जगह मन विलीन हो जाता है, उस जगह प्राण वायु लीन हो जाती है और जहाँ वायु विलीन हो जाती है, वहाँ मन लीन हो जाता है ।

यावद्वास्युः स्थिरो देहे तावज्जीवनमुच्यते ।
मरणं तस्यनिष्क्रांतिस्ततो वायुं निरोधयेत् ।।

-ह० प्र० २ । ३

अर्थ- जब तक शरीर में प्राण वायु विद्यमान है, तब तक ही वह जीवित है और शरीर से प्राण वायु

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

का निकलना ही मृत्यु है, इसीलिए प्राण वायु का निरोध करना चाहिए ।

स यथा शकुनिः सूत्रे प्रबद्धो दिशं दिशं पतित्वान्यत्रायतनमलब्ध्वा बन्धनमेवोपश्रयते, एवमेव खलु सोम्यैतन्मनो दिशं दिशं पतित्वान्यत्रायतनमलब्ध्वाप्राणमेवोपश्रयते, प्राणबन्धन हि सोम्य मन इति ।

-छान्दो० ६ ।८ ।२

जिस प्रकार डोरी से बँधा हुआ पक्षी घूम-घूमकर अपने मूल आश्रम पर ही आ जाता है, उसी तरह हे सौम्य ! मन कहीं दूसरी जगह आश्रय न पाने पर घूमघामकर प्राण का ही आश्रय लेता है । क्योंकि मन प्राण से ही बँधा हुआ है ।

नानाविधैर्विचारैस्तु न साध्यं जायते मनः ।
तस्मात्तस्य जयः प्राय प्राणस्य जय एव हि ।।

-योग बीज

अनेकों प्रकार के विचारों से मन साध्य नहीं होता है, इससे प्राण वायु के जीतने से ही मन जीता जाता है ।

चित्तं न साध्यं विविधैर्विचारै-
र्वितर्कवादैरपि वेदवादिभिः ।
तस्मात्तु तस्यैव हि केवलं जयः-
प्राणो हि विद्येत न कश्चिदन्यः ।।

-योग रहस्य

विविध, विचारों, तर्कों और अध्ययन श्रवण आदि से चित्त का समाधान नहीं होता, मनोनिग्रह तो प्राणायाम से ही सम्भव है ।

हठिनामधिकस्त्वेकः प्राणायाम परिश्रमः ।
प्राणायामे मनः स्थैर्यं स तु कस्य न सम्मतः ।।

-बोधसार

हठयोगियों का मुख्य साधन श्रम-साध्य प्राणायाम है । यह अन्यान्य योगियों की साधना से अधिक है, परन्तु वह प्राणायाम सिद्ध हो जाने पर मन स्थिर हो जाता है, यह कौन स्वीकार नहीं करेगा ।

इन्द्रिय विकार अनियन्त्रित वासना प्रवाह का कारण शारीरिक नहीं मानसिक होता है । इन्द्रियों पर मन का नियन्त्रण है । मन विकारग्रस्त होगा तो इन्द्रियों की चंचलता भी उभरेगी और वे कुकृत्य कर सकेंगी । यदि मन पर नियन्त्रण स्थापित किया जा सके तो वासना पर अंकुश स्वयमेव लग जाता है । प्राणायाम से मनोनिग्रह-मनोनिग्रह से वासनाजन्य विकारों की रोकथाम सम्भव होती है । असंयम के लिए उत्तेजित करने वाले विकृत मन को कुमार्ग त्यागने के लिए सहमत करना प्राणायाम की सुनियोजित साधना पद्धति अपनाने से सम्भव हो सकता है । इस सम्बन्ध में साधना विज्ञान का मन्तव्य इस प्रकार है-

प्राणायामो भवेदेवं पातकेन्धनपावकः ।
भवोदधिमहासेतुः प्रोच्यते योगिभिः सदा ।।

-योग चूड़ामणि उप० १०८ ।१०९

प्राणायाम की अग्नि पाप रूपी ईंधन को जलाकर पार कर देती है और वह सेतु के समान संसार से पार होने का मार्ग खोलता है ।

इन्द्रियाणां मनो नाथो मनोनाथस्तु मारुतः ।
मारुतस्य लयो नाथः स लयो नादमाश्रितः ।।

-ह० प्र० ४ ।२९

अर्थ- इन्द्रियों का प्रवर्तक मन है और मन का प्रवर्तक वायु है और प्राण का नाथ मन का लय है और वह मन का लय नाद के आश्रित है ।

हेतु द्वयं तु चितस्य वासना च समीरणः ।
तयोर्विनष्ट एकस्मिंस्तौ द्वावपि विनश्यतः ।।

-ह० प्र० ४ ।२२

अर्थ- चित्त की प्रवृत्ति में दो कारण हैं- एक वासना, दूसरी प्राण वायु । उन दोनों में से एक के नष्ट हो जाने पर दोनों ही ही नष्ट हो जाते हैं ।

अध्यात्म साधना में प्राणायाम को योगाभ्यास का महत्त्वपूर्ण अंग माना गया है । उससे मात्र मनोनिग्रह का लाभ ही नहीं मिलता अन्य सूक्ष्म संस्थानों का भी परिशोधन होता है । शारीरिक आरोग्य का लाभ सर्वविदित है । फेफड़े सुदृढ़ होने, अधिक मात्रा में प्राण वायु के शरीर में प्रवेश करने से जीवन तत्त्व भी अधिक मिलते हैं और परिशोधन की गति भी तीव्र होती है । स्थूल और सूक्ष्म शरीरों पर स्वास्थ्य सम्वर्धन और मानसिक परिष्कार का प्राणायाम का प्रत्यक्ष प्रभाव होता है । कारण शरीर के भाव संस्थान पर भी इस साधना की उपयुक्त प्रतिक्रिया होती है । कुसंस्कारों , दोष-दुर्गुणों का निराकरण

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म-प्राण को आत्म-प्राण के साथ संयुक्त करने के लिए जहाँ जीवन क्रम में शालीनता एवं उदारता का अधिकाधिक समावेश करना होता है, वहाँ उपासनात्मक उपक्रमों को अपनाना भी कम महत्त्व का नहीं है । प्राण-शक्ति के अभिवर्धन में कुण्डलिनी जागरण में सूर्य-वेधन जैसे प्राणायामों की आवश्यकता पड़ती है । योगशास्त्र में व्यक्ति-प्राण और ब्रह्म-प्राण के समन्वय की स्थान-स्थान पर चर्चा की गई है ।

इनमें कई प्राणायामों ब्रह्माण्डीय चेतना को जीव चेतना में सम्मिलित करके जीवसत्ता का अतः तेजस् जागृत किया जाता है । उच्चस्तरीय साधना में इसी स्तर के प्राणयोग की आवश्यकता रहती है । प्राणायाम के समय श्वास खींचते समय महाप्राण को विश्व-प्राण को पकड़ने और घसीट कर आत्मसत्ता के समीप लाने का प्रयत्न किया जाता है । श्वास के साथ प्राण तत्त्व की अधिकाधिक मात्रा रहने की भाव भरी मान्यता रहनी चाहिए । साँस में ऑक्सिजन की जितनी अधिक मात्रा होती है, उतनी ही उसे आरोग्यवर्धक माना जाता है । ऑक्सीजन की न्यूनाधिक मात्रा का होना क्षेत्रीय प्रकृति परिस्थितियों पर निर्भर है, किन्तु प्राण तो सर्वत्र समान रूप से संव्याप्त है । उसमे से अभीष्ट मात्रा संकल्प शक्ति के आधार पर उपलब्ध की जा सकती है । सूक्ष्म जगत् में अध्यात्म क्षेत्र में श्रद्धा को ही सबसे प्रबल और फलदायक माना गया है । साधनात्मक कर्मकाण्डों का फल परिपूर्ण मिलना न मिलना अथवा स्वल्प मिलना कर्मकाण्डों के विधि-विधानों पर नहीं साधक की श्रद्धा पर निर्भर रहता है । श्रद्धा की न्यूनता ही साधनाओं के निष्फल जाने का प्रधान कारण होता है । जो इस सुनिश्चित तथ्य को जानते हैं, वे सभी साधना उपचारों में गहनतम श्रद्धा का समावेश करने के लिए प्रचण्ड संकल्प शक्ति का उपयोग करते हैं ।

गायत्री उपासना उस प्रचण्ड प्राण-शक्ति को जागृत करने में अति समर्थ व प्रभावशाली प्रक्रिया है । गायत्री मन्त्र के शब्दार्थ से ही यह प्रकट होता है, यह मनुष्य में सन्निहित प्राणतत्त्व का अभिवर्धन, उन्नयन करने की विद्या है । गय अर्थात् 'प्राण' त्री अर्थात् त्राण करने वाली । जो प्राणों का परित्राण उद्धार संरक्षण करे वह गायत्री । गायत्री मन्त्र अर्थात् प्राणों का परित्राण करने की विद्या । इसके साथ ही प्राणायाम जैसा समर्थ और सशक्त माध्यम आ जुड़े, फिर तो सभी प्रकार से कल्याण ही कल्याण है ।

पंचकोशी गायत्री उपासना में प्राण-योग की बहुत आवश्यकता पड़ती है । आरम्भिक अवस्था में एकाग्रता, धैर्य और उत्साह प्राप्त करने के लिए प्राणायाम का सहारा लेना पड़ता है । ध्यान की, प्रकाश की प्रखरता का परिलक्षित होना प्राणायाम से ही सम्भव होता है । आज्ञा-चक्र का तृतीय ज्ञान नेत्र भी प्राण का प्रकाश पहुँचने पर चमकता है और तभी उस ज्ञान चक्षु के उन्मीलन से सूक्ष्म जगत् का दिव्य-दर्शन कर सकना किसी साधक से बन पड़ता है । आगे चलकर षट्चक्रों के बेधन से लेकर कुण्डलिनी महाशक्ति के जागरण तक पग-पग पर प्राण की प्रबलता अभीसिप्त होती है । यदि प्राण दुर्बल रहा तो साधक की हर साधना लुंज-पुंज ही बनी रहेगी उसे सफलता का यत्किंचित् आभास तो मिलेगा, पर कोई विशेष अनुभूति न हो सकेगी । इसलिए बुद्धिमान साधक स्वयं इस बात का प्रयत्न करते हैं कि उनकी जप-तप साधारण साधनाओं के साथ-साथ प्राणायाम के क्रम में भी व्यवस्थापूर्वक चलते रहें ।

प्राणायाम अनेक प्रकार के होते हैं । यहाँ तीन निरापद प्राणायामों का विधान दिया जा रहा है, जिनमें किसी प्रकार की कोई आपत्ति किसी के लिए नहीं है । बृद्ध, बालक, स्त्री, रोगी सभी इन्हें कर सकते हैं । यह प्राणायाम एक-एक करके एक-एक वर्ष ६-६ माह, में भी पकाये जा सकते हैं और सबका सम्मिलित अभ्यास भी किया जा सकता है । एक वर्ष में एक करना हो तो उनकी संख्या प्रति १५ दिन बाद या १ माह बाद १-१ बढ़ायी जा सकती है । सम्मिलित अभ्यास में तीनों प्राणायाम प्रतिमाह से दो, दो से तीन इस तरह बढ़ाये जा सकते हैं । प्राणायाम पका या नहीं, उसकी जानकारी शान्ति कुंज हरिद्वार से

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जितना समय लगता है, उसकी तुलना में कहीं अधिक लाभ हम अपने भीतर उस सम्पर्क की उष्मा एवं शक्ति के बाहुल्य रूप में अनुभव करते हैं । बुद्धिमानों के सम्पर्क से ज्ञान और धनवानों के सम्पर्क से धन प्राप्त करने के सुअवसर सहज ही मिलते रहते हैं, फिर सर्व-शक्तियों की उद्गम भूत गायत्री माता के सम्पर्क से हमें कुछ भी लाभ न मिले, ऐसा नहीं हो सकता ।

किन्तु यही न मान बैठना चाहिये कि गायत्री का उपयोग उपासना में ही है या वह इतने भर काम के लिये अवतरित हुई है । वस्तुतः इस महाशक्ति के प्रभाव एवं प्रकाश में सारा ब्रह्माण्ड गतिशील हो रहा है । प्राणियों की प्राण-शक्ति जो बीज रूप में, सुषुप्तावास्था में पड़ी रहती है, उसका जागरण, पोषण और अभिवर्धन इसी महत्त्व के प्रभाव से होता है । जड़-जगत् में जो अणु हलचल दृष्टिगोचर होती है और प्रत्येक पदार्थ गतिशील दिखाई देता है, उसके मूल में भी वही महाशक्ति काम कर रही है । आकर्षण-विकर्षण के ऋण-धन द्वन्द्वात्मक जितने भी विधान एवं संचरण प्रकृति के अन्तराल में काम कर रहे हैं, उनके पीछे एक अति प्रचण्ड शक्ति काम कर रही है । उसकी इच्छा एवं प्रेरणा इस जगत् को वर्तमान रूप में प्रतिष्ठित किये हुए हैं । उसी सत्ता केन्द्र का नाम गायत्री हैं ।

यह जगत् गायत्री मय है । यों यह जड़ रूप में पृथ्वी जल, वायु, अग्नि आकाश पञ्च तत्त्वों से बना हुआ है । चेतन रूप से सत्, रज, तम् तीनों गुणों से विनिर्मित प्रतीत होता है, पर उस तत्त्व और गुण प्रकरण के भीतर एक ऐसी शक्ति काम कर रही है जिसका वर्णन अनिर्वचनीय है । उसकी गति सर्वत्र है । निम्न से निम्न और उच्च स्तर पर हो रही गतिविधियों के पीछे जिसका सर्वतोमुखी अस्तित्त्व एवं प्रभाव दीख पड़ता है, उसका ठीक से विवेचन और अनुभव कर सकना मनुष्य की स्वल्प बुद्धि मर्यादा के अन्तर्गत सम्भव नहीं है ।

गायत्री और प्राणायाम की समन्वित साधना का माहात्म्य बताते हुए गायत्री संहिता में कहा गया है-

अल्पीयस्या जगत्येव साधनया तु साधकः ।
भगवत्याश्च गायत्र्याः कृपां प्राप्नोत्यसंशयम् ।।

थोड़ी ही श्रम साधना से जगत् में ही साधक भगवती गायत्री माता की कृपा को प्राप्त कर लेता है ।

प्राणायामे जपन् लोकः गायत्री ध्रुवमाप्नुते ।
निग्रहं मनसश्चैव चेन्द्रियाणां हि सम्पदाम् ।।

मनुष्य निश्चय से प्राणायाम में गायत्री को जपता हुआ मन का निग्रह और इन्द्रियों की सम्पत्ति को प्राप्त करता है ।

मन्त्र विभज्य भागेषु चतुर्षु सुबुधस्तदा ।
रेचकं कुम्भकं बाह्यं पूरकं कुम्भं चरेत् ।।

बुद्धिमान व्यक्ति मन्त्र को चारों भागों में भी विभक्त करके तब रेचक, कुम्भक, पूरक और बाह्य कुम्भक को करे ।

यह प्राण तत्त्व एक ही है सो ब्रह्माण्ड में व्यापक रूप से संव्याप्त है । कहा जा चुका है कि ब्रह्माण्ड में व्यापक रूप से संव्याप्त प्राण की ब्रह्माग्नि कहा जाता है तो पिंड सत्ता में व्याप्त प्राण सत्ता को आत्माग्नि कहा जाता है । इस प्रकार एक होते हुए भी विस्तार भेद से उसके दो रूप बन गए हैं । आत्माग्नि लघु है और ब्रह्माग्नि विभू । तालाब में जब वर्षा का विपुल जल भरता है तो यह परिपूर्ण हो जाता है । यह अनुदान न मिलने पर तालाब सूखता है और घटता जाता है । पानी में मलीनता भी आ जाती है जिस प्रकार तालाब को भरा पूरा और स्वच्छ रखने के लिए नये वर्षा जल की आवश्यकता पड़ती है, उसी प्रकार आत्माग्नि में ब्रह्माग्नि का अनुदान पहुँचाना पड़ता है । इसी का नाम प्राणायाम है ।

यों गहरी साँस लेकर फेफड़े के व्यायाम को भी आरोग्यवर्धक प्राणायाम कहते हैं । शरीर शास्त्र की दृष्टि से उसकी उपयोगिता तथा विधि-व्यवस्था बताई जाती है । साथ ही महिमा का गुणगान भी किया जाता है । इससे अधिक ऑक्सिजन मिलती है और श्वास यन्त्रों का व्यायाम होता है, पर अध्यात्म शास्त्र का योग प्राणायाम उससे भिन्न है । उसमें ब्रह्माण्ड-व्यापी प्राण की अभीष्ट मात्रा आत्म-प्राण तक पहुँचाई जाती है । इस प्रकार उसकी स्थिति एवं सम्पदा बढ़ती है । फलतः भौतिक सफलताओं और आत्मिक विभूतियों के समस्त अवरुद्ध मार्ग खुल जाते हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तुल्यप्रभा वस्तुयदायोगीप्राप्नोतिसंवदिम् ।
तदासम्विादितिख्याताप्राणायामस्यसास्थितिः ।।
यान्तिप्रसादंयेनास्यमनः पंचचवायवः ।
इन्द्रियाणीन्द्रिय यार्थाश्चसप्रसादइतिस्मृतः ।।

जैसे सिंह, व्याघ्र और हाथी को सिखा साधकर नम्र बना लिया जाता है, वैसे ही प्राणायाम से प्राण वश में होते हैं ।

जैसे महावत हाथी को अंकुश के बल पर इच्छानुसार चलता है, वैसे ही योगीराज प्राण से इच्छानुसार काम लेते हैं ।

जैसे पाला हुआ चीता मृगों को ही मारता है, पालने वाले को नहीं । उसी प्रकार प्राणायाम से सँभाला हुआ प्राण पापों को नष्ट करता है, जीवन को नहीं ।

प्राणायाम की चार स्थिति हैं । (१) ध्वस्ति (२) प्राप्ति (३) संवित् (४) प्रसाद ।

जिससे दूषित कर्मों और मनोविकारों का शमन होता है, उसे ध्वस्ति कहते हैं ।

जिससे लोभ, मोह आदि से भरी कामनाएँ समाप्त हो जाती हैं उसे प्राप्ति कहते हैं ।

जिससे ग्रह-नक्षत्र और सूक्ष्म लोकों से सम्बन्ध जुड़ जाता है तथा दिव्य ज्ञान की ज्योति दीप्तिमान होती है । अतीत अनागत और तिरोहित जान लिया जाता है उसे संवित् कहते हैं ।

जिस स्थिति में पाँचों प्राण तथा दशों इन्द्रियाँ वश में हो जाती हैं, चित्त में आनन्द, उल्लास अनुभव होता है, उसे प्रसाद कहते हैं ।

प्राणायाम की पहुँच अध्यात्म क्षेत्र के अति महत्त्वपूर्ण परतों तक है । उसे शारीरिक, मानसिक, व्यायामों का उपचार मात्र नहीं समझना चाहिए । वरन् उसे उच्चस्तरीय योग साधन ही मानकर चलना चाहिए । पुरश्चरण अनुष्ठानों की सफलता के लिए पूर्व भूमिका के रूप में प्राणायाम विज्ञान की विशेष साधनाएँ कराई जाती हैं । कहा गया है

बिना प्राणं यथा देहः कर्मसु न क्षमः ।
बिना प्राणं तथा मंत्रः पुरश्चर्याशतैरपि ।।

प्राण रहित होने पर जैसे शरीर में काम करने की कुछ भी क्षमता नहीं रहती, उसी तरह मन्त्र की प्राण-शक्ति को जब तक जागृत नहीं कर लिया जाता तब तक सैकड़ों पुरश्चरण करने पर भी मन्त्र शक्ति से अभीष्ट लाभ की आशा नहीं की जा सकती ।

या ते तनूर्वाचि प्रतिष्ठिता या श्रोत्रे या च चक्षुषि ।
या च मनसि सन्तता शिवा तां कुरु मोत्क्रमीः ।।
प्राणस्येदं वशे सर्वं त्रिदिवे यत्प्रतिष्ठतम् ।
मातेव पुत्ररन रक्षस्त-श्रीश्च प्रज्ञां च विधेहि न इति ।

-प्रश्नोपनिषद् २ ।१२ ।१३

हे प्राण ! तेरा ही रूप वाणी में निहित है, तू ही श्रोत, नेत्र, मन में विद्यमान है । तू उन्हें कल्याणकारी बना । इस शरीर में ही विद्यमान रह । इस ब्रह्माण्ड में जो कुछ है सो सब तुझ प्राण के ही आश्रित है । तू माता-पिता के समान हमारी रक्षा कर और हमें सम्पदाओं तथा विभूतियों से सम्पन्न कर ।

गायत्री और प्राणायाम की समन्वित साधना

गायत्री मंत्र केवल पूजा उपासना का या जप ध्यान करने का छोटा-सा मन्त्र नहीं है । वह इस विश्व ब्रह्माण्ड की सर्वोपरि शक्ति का प्रतिनिधित्व करता है । उस शक्ति के साथ गायत्री उपासना के माध्यम से जो जितना सम्पर्क स्थापित कर पाता है वह उतना ही लाभ उठाने का सुअवसर प्राप्त कर लेता है । इस शक्ति को प्राण भी कहा जा सकता है । प्राण वह शक्तिशाली आधार है, जिसके कारण विश्व ब्रह्माण्ड में जीवन चेतना विद्यमान दिखाई देती है । ब्रह्माण्ड में व्यापक रूप से व्याप्त होने के कारण उसे ब्रह्माग्नि भी कहा जाता है । वही पिंड सत्ता में भी समाया हुआ है, इसलिए उसे आत्माग्नि भी कहते हैं ।

गायत्री उस प्राण-शक्ति की अधिष्ठात्री सत्ता है और प्राणायाम उस शक्ति को आकर्षित करने का महत्त्वपूर्ण साधन । अतः प्राण-शक्ति का उपार्जन करने के लिए गायत्री और प्राणायाम की समन्वित साधना करनी पड़ती है । उपासना के माध्यम से हम शक्ति के साथ अपना सम्पर्क बना लेते हैं तो सम्पर्क जन्य लाभ उठाने का सुअवसर प्राप्त होता है । इसमें

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

होता है । आत्मिक पवित्रता बढ़ती है । अन्तः करण में श्रेष्ठ संस्कारों का उभार होने लगता है । ऐसी स्थिति बनती चले तो आत्मिक प्रगति में किसी प्रकार का सन्देह न रह जायगा । कहा भी है-

दह्यन्ते ध्यायमनानां धातूनां हि यथा मलाः ।
तथेन्द्रियाणां दह्यन्ते दोषाः प्राणस्य निग्रहात् ।।

-मनु

जैसे अग्नि में डालने से धातुओं के मल जल जाते हैं । वैसे ही प्राणायाम करने से इन्द्रियों के विकार दूर हो जाते हैं ।

यथा पर्वत धातूनां दह्यन्ते धर्मनान्मलाः ।
तथेन्द्रियकृता दोषः दह्यन्ते प्राणधारणात् ।।

-अमृतनादोपनिषद्

जिस प्रकार सोने को तपाने से उसके खोट जल जाते हैं, उसी प्रकार इन्द्रियों के विकार प्राणायाम से जलकर नष्ट हो जाते हैं ।

प्राणायामेन युक्तस्य विप्रस्य नियतात्मनः ।
सर्वे दोषाः प्रणश्यन्ति सत्वस्थाश्चैव जायते ।।
तपांसि यानि तप्यन्ते व्रतानि नियमाश्च ये ।
सर्वयज्ञफलश्चैव प्राणायामश्च तत्समः ।।

-वायु पुराण

प्राणायाम से युक्त नियत आत्मा वाले विप्र के समस्त दोष नष्ट हो जाया करते हैं और फिर वह केवल सत्त्वगुण में ही स्थित रहा करता है । जो भी तपस्यायें तपी जाती हैं, व्रत लिये जाते हैं और नियम ग्रहण किये जाते हैं तथा समस्त यज्ञों के करने का जो भी कुछ फल होता है, वह सब प्राणायाम के समान होता है ।

तस्माद्युक्तः सदा योगी प्राणावामपरो भवेत् ।
सर्व पांपविशुद्धात्मा परं ब्रह्माधिगच्छति ।।

-वायु पुराण

इसीलिए योगी को सर्वथा युक्त होकर प्राणायाम में परायण होना चाहिये । वह फिर समस्त पापों से विशुद्ध आत्मा वाला होकर परब्रह्म को प्राप्त कर लिया करता है ।

प्राणायामो भवत्येवं पातकेन्धनपावकः ।
भवोदधिमहासेतुः प्रोच्यते योगिभिः सदा ।।

-योग सन्ध्या

प्राणायाम करने से जैसे पातक रूपी काष्ठ को भस्म करने वाला अग्नि होती है तैसे ही संसार रूपी समुद्र से तारने वाला बड़ा पुल योगियों ने प्राणायाम को कहा है-

तपो न परं प्राणायामात् ततो विशुद्धिर्मलानां दीप्तिश्च ज्ञानस्य ।

-पञ्च शिखाचार्य

प्राणायाम से बढ़कर और कोई तप नहीं । उससे मलो की शुद्धि होती है और ज्ञान का प्रकाश प्रदीप्त होता है ।

सुषुम्नायां सदेवायं वहेत् प्राणसमीरणः ।
एतद् विज्ञान मात्रेण सर्व पापैः प्रमुच्यते ।।

-गोरखनाथ

यह प्राण वायु सुषुम्ना नाड़ी में सर्वदा ही प्रवाहित होता है, परन्तु जो योगी इसे जान जाते हैं वे समस्त पापों से मुक्त हो जाते हैं ।

प्राणायामेन चित्तं शुद्धो भवति सुव्रत ।
चित्ते शुद्धे शुचिः साक्षात्प्रत्यग्ज्योतिव्यवस्थितः ।।
सर्वपापविनिमुर्क्तः सम्यग्ज्ञानमवाप्नुयात् ।
मनोजवत्वमाप्नोति पलितादि च नाश्यति ।।

-जाबाल दर्शनोपनिषद् ६ ।१६ ।१९

प्राणायाम से चित्त की शुद्धि होती है । चित्त शुद्ध होने से अन्तःकरण में प्रकाश होता है और उस प्रकाश में आत्म-साक्षात्कार होता है ।

प्राणायाम का साधक श्रेष्ठ ज्ञान प्राप्त करता है । मनस्वी और मनोजयी बनता है ।

मारकण्डेय पुराण में प्राणायाम के चार स्तर बताये गये हैं और उनके द्वारा उच्चस्तरीय उद्देश्यों की पूर्ति होने का प्रतिपादन किया गया है-

तस्माद्युक्तः सदा योगी प्राणायाम परो भवेत् ।
श्रूयतां मुक्ति फलद तस्यावस्था चतुष्टयम् ।।
ध्वस्तिः प्राप्ति स्तथा संवित् प्रसादश्च महीयते ।
स्वरूपं श्रुणुचेतषां कथ्यमान मनु क्रमात् ।।
कर्म्मणामिष्ट दुष्टानांजायतेफलसंक्षयः ।
चेतसोऽपकषायत्वंयत्नसाध्वस्तिरु चयते ।।
एहिकामुष्मिकान्कामांल्लेभोहात्मकान्स्वयम् ।
निरुध्यांस्तेसदायोगीप्राप्तिः सासार्वकालिकी ।।
अतीतानागतानर्थान्विप्रकृष्ट तिरोहितान् ।
विजानातीन्दु सूर्य्यर्क्षग्रहाणांज्ञानसम्पदा ।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अपनी प्रगति का विवरण लिखकर ज्ञात की जा सकती है ।

प्राणाकर्षण प्राणायाम

(१) "प्रातःकाल नित्य कर्म से निवृत्त होकर पूर्वाभिमुख पालथी मारकर बैठिए । दोनों हाथ घुटनों पर रखिए । मेरुदण्ड सीधा रखिए । नेत्र बन्द कर लीजिए । ध्यान कीजिए कि अखिल आकाश में तेज और शक्ति से ओत-प्रोत प्राण-तत्त्व व्याप्त हो रहा है । गरम भाप के, सूर्य के प्रकाश में चमकते हुए जैसी बादलों शक्ल के प्राण का उफान हमारे चारों ओर उमड़ता चला आ रहा है और उस प्राण उफान के बीच हम निश्चिन्त, शान्त-चित्त एवं प्रसन्न मुद्रा में बैठे हुए हैं ।"

(२) "नासिका के दोनों छिद्रों से धीरे-धीरे साँस खींचना आरम्भ कीजिए और भावना कीजिए कि प्राण-तत्त्व के उफनते हुए बादलों को हम अपनी साँस द्वारा भीतर खींच रहे हैं । जिस प्रकार पक्षी अपने घोंसले में, साँप अपने बिल में प्रवेश करता है, उसी प्रकार यह अपने चारों ओर बिखरा हुआ प्राण-प्रवाह हमारी नासिका द्वारा साँस के साथ शरीर के भीतर प्रवेश करता है और मस्तिष्क, छाती, हृदय, पेट, आतों से लेकर समस्त अंगों में प्रवेश कर जाता है ।"

(३) "जब साँस पूरी खिंच जाय तो उसे भीतर रोकिये और भावना कीजिए कि- " जो प्राण-तत्त्व खींचा गया है, उसे हमारी भीतरी अंग-प्रत्यंग सोख रहे हैं । जिस प्रकार मिट्टी पर पानी डाला जाय तो वह उसे सोख जाती है, उसी प्रकार अपने अंग सूखी मिट्टी के समान हैं और जलरूपी इस खींचे हुए प्राण को सोखकर अपने अन्दर सदा के लिए धारण कर रहे हैं । साथ ही प्राण-तत्त्व में सम्मिश्रित चैतन्य, तेज, बल, उत्साह, साहस, धैर्य, पराक्रम सरीखे अनेक तत्त्व हमारे अंग-प्रत्यंग में स्थिर हो रहे हैं ।"

(४) " जितनी देर साँस आसानी से रोकी जा सके उतनी देर रोकने के बाद धीरे-धीरे साँस बाहर निकालिए, साथ ही भावना कीजिए कि प्राणवायु का सारतत्त्व हमारे अंग-प्रत्यंगों के द्वारा खींच लिए जाने के बाद अब वैसा ही निकम्मा वायु बाहर निकाला जा रहा है जैसा कि मक्खन निकाल लेने के बाद निस्सार दूध हटा दिया जाता है । शरीर और मन में जो विकार थे , वे सब इस निकलती हुई साँस के साथ घुल गये हैं और काले धुँए के समान अनेक दूषणों को लेकर वह बाहर निकल रहे हैं "

(५) "पूरी साँस बाहर निकल जाने के बाद कुछ देर साँस रोकिए, अर्थात् बिना साँस के रहिए और भावना कीजिए कि अन्दर के जो दोष बाहर निकाले गये थे उनको वापिस न लौटने देने की दृष्टि से दरवाजा बन्द कर दिया गया है और वे बहिष्कृत होकर हमसे बहुत दूर उड़े जा रहे हैं ।"

इस प्रकार पाँच अंगों में विभाजित इस प्राणाकर्षण प्राणायाम को नित्य ही जप से पूर्व करना चाहिए । आरम्भ ५ प्राणायाम से किया जाय । अर्थात् उपरोक्त क्रिया पाँच बार दुहराई जाय । इसके बाद हर महीने एक प्राणायाम बढ़ाया जा सकता है । यह प्रक्रिया धीरे-धीरे बढ़ाते हुए एक वर्ष में आधा घण्टा तक पहुँचा देनी चाहिए "

(२) नाड़ी शोधन प्राणायाम

(१) प्रातःकाल पूर्व को मुख करके कमर सीधी रखकर सुखासन से, पालथी मार कर बैठिये । नेत्रों को अधखुले रखिए ।

(२) दाहिना नासिका का छिद्र बन्द कीजिए । बाँए छिद्र से साँस खींचिए और उसे नाभिचक्र तक खींचते जाइए ।

(३) ध्यान कीजिए कि नाभि के स्थान में पूर्णिमा के पूर्ण चन्द्रमा के समान पीतवर्ण शीतल प्रकाश विद्यमान है । खींचा हुआ साँस उसे स्पर्श कर रहा है ।

(४) जितने समय में साँस खींचा गया था, उतने ही समय भीतर रोकिये और ध्यान करते रहिए कि नाभिचक्र में स्थित पूर्ण चन्द्र के प्रकाश को खींचा हुआ श्वास स्पर्श करके स्वयं शीतल और प्रकाशवान् बन रहा है ।

(५) जिस नथुने से साँस खींचा था, उसी बायें छिद्र से बाहर निकालिये और ध्यान कीजिए कि

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

नाभिचक्र के चन्द्रमा को छूकर वापिस लौटने वाली प्रकाशवान् एवं शीतल वायु इड़ा नाड़ी की छिद्र नलिका को शीतल एवं प्रकाशवान् बनाती हुई वापिस लौट रही है ।

(६) कुछ देर साँस बाहर रोकिए और फिर उपरोक्त क्रिया आरम्भ कीजिए । बायें नथुने से ही साँस खींचिए और उसी से निकालिए । दाहिने छिद्र को अँगूठे से बन्द रखिए । इसी को तीन बार कीजिए ।

(७) जिस प्रकार बायें नथुने से पूरक, कुम्भक, रेचक, बाह्य कुम्भक किया था, उसी प्रकार दाहिने नथुने से भी कीजिए । नाभिचक्र में चन्द्रमा के स्थान पर सूर्य का ध्यान कीजिए और साँस छोड़ते समय भावना कीजिए कि नाभि स्थित सूर्य को छूकर वापिस लौटने वाली वायु श्वास नली के भीतर उष्णता और प्रकाश उत्पन्न करती हुई लौट रही है ।

(८) बायें नासिका स्वर को बन्द रखकर दाहिने छिद्र से भी इस क्रिया को तीन बार कीजिए ।

(९) अब नासिका के दोनों छिद्र खोल दीजिए । दोनों से साँस खींचिए और भीतर रोकिए और मुँह खोलकर साँस बाहर निकाल दीजिए । यह विधि एक बार ही करनी चाहिए ।

तीन बार बायें नासिका छिद्र से साँस खींचते और छोड़ते हुए नाभि चक्र में चन्द्रमा का शीतल ध्यान, तीन बार दाहिने नासिका छिद्र से साँस खींचते छोड़ते हुए सूर्य का उष्ण प्रकाश वाला ध्यान, एक बार दोनों छिद्रों से साँस खींचते हुए मुख से साँस निकालने की क्रिया यह सात विधान मिलकर एक नाड़ी शोधन प्राणायाम बनता है ।

(३) लोम-विलोम सूर्यवेधन प्राणायाम

उपरोक्त प्राणाकर्षण प्राणायाम के बाद लोम-विलोम सूर्य-भेदन प्राणायाम का विधान है, जिसकी पद्धति निम्न प्रकार है-

(१) किसी शान्त एकान्त स्थान में प्रातःकाल स्थिर चित्त होकर बैठिए । पूर्व की ओर मुख, पालथी मारकर सरल पद्मासन से बैठना, मेरुदण्ड सीधा, नेत्र अधखुले, घुटनों पर दोनों हाथ । यह प्राण-मुद्रा कहलाती है, इसी पर बैठना चाहिए ।

(२) बायें हाथ को मोड़कर तिरछा कीजिए । उसकी हथेली पर दाहिने हाथ की कोहनी रखिए । दाहिना हाथ ऊपर उठाइये । अँगूठा दाहिने नथुने पर और मध्यमा तथा अनामिका उँगलियाँ बायें नथुने पर रखिए ।

(३) बायें नासिका के छिद्र को मध्यमा (बीच की) और अनामिका (तीसरे नम्बर की) उँगली से बन्द की लीजिए । साँस फेफड़े तक ही सीमित न रहे, उसे नाभि तक ले जाना चाहिए और धीरे-धीरे इतनी वायु पेट में ले जानी चाहिए, जिससे वह पूरी तरह फूल जाय ।

(४) ध्यान कीजिए कि सूर्य की किरणों जैसा प्रवाह वायु में सम्मिलित होकर दाहिने नासिका छिद्र में अवस्थित पिंगला नाड़ी द्वारा अपने शरीर में प्रवेश कर रहा है और उसकी ऊष्मा अपने भीतरी अंग-प्रत्यंगों को तेजस्वी बना रही है ।

(५) साँस को कुछ देर भीतर रोकिये । दोनों नासिका छिद्र बन्द कर लीजिए और ध्यान कीजिए कि नाभिचक्र में प्राण-वायु द्वारा एकत्रित हुआ तेज नाभि चक्र में एकत्रित हो रहा है । नाभि-स्थल में चिरकाल से प्रसुप्त पड़ा हुआ सूर्यचक्र इस आगत प्रकाशवान् प्राण-वायु से प्रभावित होकर चमकीला हो रहा है और उसकी दमक बढ़ती जा रही है ।

(६) दाहिने नासिका छिद्र को अँगूठे से बन्द कर लीजिए दायाँ खोल दीजिए । साँस को धीरे-धीरे बाँए नथुने से बाहर निकालिए और ध्यान कीजिए कि चक्र को सुषुप्त और धुंधला बनाये रहने वाले कल्मष इस छोड़ी गई साँस के साथ बाहर निकल रहे हैं । इन कल्मषों के मिल जाने के कारण साँस खींचते समय जो शुभ्र वर्ण तेजस्वी प्रकाश भीतर गया था, वह अब मलीन हो गया और होकर साँस के साथ बायें नथुने की इड़ा नाड़ी द्वारा बाहर निकल रहा है ।

(७) दोनों नथुने फिर बन्द कर लीजिए । फेंफड़ों को बिना साँस के खाली रखिए । ध्यान कीजिए कि बाहरी प्राण बाहर रोक दिया गया है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उसका दबाव भीतरी प्राण पर बिल्कुल भी न रहने से वह हलका हो गया है । नाभिचक्र में जितना प्राण सूर्य पिण्ड की तरह एकत्रित था वह तेज-पुंज की तरह ऊपर की ओर अग्नि शिखाओं की तरह ऊपर उठ रहा है । उसकी लपटें पेट के ऊर्ध्व भाग, फुफ्फुस को वेधती हुई कण्ठ तक पहुँच रही हैं । भीतरी अवयवों में सुषुम्ना नाड़ी में से प्रस्फुटित हुआ यह गौण तेज अन्तःप्रदेश को प्रकाशमान् बना रहा है ।

(८) अँगूठे से दाहिना छिद्र बन्द कीजिये और बायें नथुने से साँस खींचते हुए ध्यान कीजिए कि इड़ा नाड़ी द्वारा सूर्य प्रकाश जैसा प्राण-तत्त्व साँस से मिलकर शरीर में भीतर प्रवेश कर रहा है और वह तेज सुषुम्ना विनिर्मित नाभि-स्थल के सूर्य चक्र में प्रवेश करके वहाँ अपना भण्डार जमा कर रहा है । इस तेज सञ्चयु से सूर्यचक्र क्रमशः अधिक तेजस्वी बनता चला जा रहा है ।

(९) दोनों नासिका छिद्रों को बन्द कर लीजिए । साँस को भीतर रोकिए । ध्यान कीजिए कि साँस के साथ एकत्रित किया हुआ तेजस्वी प्राण नाभि स्थित सूर्यचक्र में अपनी तेजस्विता को चिर-स्थाई बना रहा है । तेजस्विता निरन्तर बढ़ रही है और वह अपनी लपटें पुनः ऊपर की ओर अग्नि शिखा की तरह ऊर्ध्वगामी बना रही है । इस तेज से सुषुम्ना नाड़ी निरन्तर परिपुष्ट हो रही है ।

(१०) बायाँ नथुना बन्द कीजिए और दाहिने से साँस धीरे-धीरे बाहर निकालिये ध्यान कीजिए कि सूर्यचक्र का कल्मष धुएँ की तरह तेजस्वी साँस में मिलकर उसे धुँधला पीला बना रहा है और पीली प्राण-वायु पिंगला नाड़ी द्वारा बाहर निकल रही है । भीतरी कषाय बाहर निकलने से अन्तःकरण बहुत हलका हो रहा है ।

(११) दोनों नासिका छिद्रों को पुनः बन्द कीजिए और उपरोक्त नं० ६ की तरह फेफड़ों को साँस से बिल्कुल खाली रखिए । नाभि चक्र से कण्ठ तक सुषुम्ना का प्रकाश पुञ्ज ऊपर उठता देखिये । भीतरी अवयवों में दिव्य ज्योति जगमगाती अनुभव कीजिए ।

यह एक लोम-विलोम सूर्य-वेधन प्राणायाम हुआ । साँस के साथ खींचा हुआ प्राण नाभि में स्थित सूर्य चक्र को जागृत करता है । उसके आलस्य और अन्धकार को वेधता है और वह सूर्यचक्र अपनी परिधि को वेधन करता हुआ सुषुम्ना मार्ग से उदर, छाती और कण्ठ तक अपना तेज फेंकता है । इन कारणों से इसे सूर्य-वेधन कहते हैं । लोम कहते हैं, सीधे को विलोम कहते हैं उल्टे को । एक बार सीधा, एक बार उलटा । फिर उलटा, फिर सीधा । फिर उलटा, फिर सीधा । बायें खींचना, दायें से निकालना । दाहिने से खींचना बायें से निकालना । यह उल्टा-सीधा चक्र रहने से इसे लोम-विलोम कहते हैं । प्राणायाम की प्रकृति के अनुसार इसे लोम-विलोम सूर्य वेधन प्राणायाम कहा जाता है ।

प्राणायाम के अभ्यासी के लिए कुछ सामान्य नियमों का पालन बहुत आवश्यक है:-

१- प्राणायाम शुद्ध वायु में खुले स्थान में करें घर में करें तो कमरे की खिड़कियाँ खुली रहें और स्थान यथा सम्भव शान्त हो ।

२- प्राणायाम के समय शरीर में बहुत अधिक वस्त्र न लादें जायें ।

३- प्राणायाम के बाद वजनदार वस्तुयें न उठायें तथा स्वर्ण, चाँदी आदि धातुओं को छोड़कर कुचालक धातु जैसे लोहे आदि का स्पर्श न करें ।

४- तुरन्त पेट भर भोजन न करें हलका और सात्त्विक आहार ही इन दिनों ग्रहण किया जाए ,पर पानी बिना प्यास के भी दिन में बार-बार पियें ।

५-ब्रह्मचर्य व्रत का यथा सम्भव अधिक से अधिक पालन करना चाहिए ।

गायत्री उपासक का संकल्प जब प्राणायाम प्रक्रिया के साथ जुड़ता है , तो ब्रह्माण्ड व्यापी महाप्राण-तत्त्व उसकी ओर विशिष्ट रूप से प्रवाहित हो उठता है । साधक की आस्था के अनुरूप प्राणानुदान दयामयी की कृपा से प्राप्त होने लगते हैं । इस तरह प्राणायाम के अभ्यास से गायत्री उपासना से उपार्जित प्राण शक्ति की मात्रा द्रुत-गति से बढ़ती है और साधक को लौकिक, भौतिक एवं आध्यात्मिक क्षमताओं से विभूषित कर देती है ।

* * *

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

परमपूज्य गुरुदेव की अभिनव पाँच स्थापनाएँ

युगदृष्टा के स्तर की अवतारी सत्ता के रूप में परमपूज्य गुरुदेव ने अपने अस्सी वर्ष के जीवन काल में जितना भी कुछ किया, उसकी मिसाल कहीं देखने को नहीं मिलती। करोड़ों व्यक्तियों के मनों का निर्माण उनके सोचने के तरीके में बदलाव एवं युगनिर्माण की पृष्ठभूमि बनाकर रख देने का कार्य इन्हीं के स्तर की सत्ता कर सकती थी जो लाखों वर्षों में कभी-कभी धरती पर आती है। उनके द्वारा की गयी स्थापनाओं का जब प्रसंग आता है तब ईंट-गारे-चूने-सीमेंट से बने भवनों से पहले उनकी स्नेह-संवेदना से सिक्त हुए, ममत्व में स्नानकर उनके अपने हो गये लाखों व्यक्ति दिखाई पड़ते हैं, जिनने उनके एक इशारे पर अपना सब कुछ उनको अर्पित कर दिया। स्वतंत्रता संग्राम के दिनों में कभी ऐसा ही वातावरण भारत के कोने-कोने में दिखाई देता था, जब हर घर से सत्याग्रही निकलकर आ रहे थे। भावनाओं का आवेग चिरस्थायी नहीं रहता। वे ही लोग जो कभी राष्ट्रनिर्माण के लिए अपना सब कुछ छोड़ पढ़ना-लिखना छोड़ देश को आजाद बनाने के लिए कूद पड़े थे, कभी गड़बड़ाने न पाएँ, उसी के लिए बापू ने आजादी के बाद कांग्रेस भंग कर देने व सभी को एक आदर्श स्वयं सेवक की तरह दरिद्र नारायण का उत्थान कर राष्ट्र निर्माण में लग जाने की सलाह दी थी।

सभी इस तथ्य को जानते हैं कि ऐसा नहीं हुआ, राष्ट्र का कीर्ति स्तम्भ रूपी वह महापुरुष भी एक वर्ष के अंदर ही शहादत को प्राप्त हो चला गया। गिने-चुने उनके आदर्शों पर चलने वाले रह गये, अवसरवादियों को राजनेतृत्व भाने लगा एवं राष्ट्र आजाद होकर भी उनके हाथ में आ गया जो ब्रिटिश तो नहीं थे किन्तु, उसी रंग में रंगे सत्ता के उन्माद में क़ाम करने वाले शासक थे- सृजेता नहीं। जिंदा रहा तो मात्र बापू का दर्शन बुनियादी आधार पर टिका-मानव को बनाने का तंत्र-आश्रम तंत्र जो सेवाग्राम-साबरमती आश्रम के रूप में कार्य करता रहा और वह भी शीर्ष-पुरुष के न रहने, बिनोबा जी के चले जाने के बाद अस्तित्त्व व महत्व की दृष्टि से गौण हो गया। परमपूज्य गुरुदेव ने अपनी दिव्य-दृष्टि से यह सब पूर्व में ही देख लिया था कि कोई भी भव्य निर्माण आश्रम या तंत्र बनाने से पूर्व राष्ट्र को सांस्कृतिक भौतिक, आध्यात्मिक आजादी दिलाने वाले अगणित व्यक्ति तैयार करने पड़ेंगे। १९११ में आज से ८४ वर्ष पूर्व वि. संवत् २०६८ में जन्में राष्ट्र की आजादी में उन्मत्त बने श्रीराम मत्त कहलाने वाले, आचार्य श्री ने पहले स्वयं को तपाया, वैचारिक क्रांति के निर्माण का आधारभूत तंत्र स्वयं व परमवंदनीया माता जी के रूप में खड़ा किया, 'अखण्ड ज्योति' पत्रिका-अपनी लेखनी से लिखी ममत्व भरी चिट्ठियों व छोटी-छोटी एक आने की किताबों से जन-जन के मन को छुआ, तब जाकर अपने एक लक्ष के २४ गायत्री महापुरश्चरणों की पूर्णाहुति पर उनने गायत्री तपोभूमि, मथुरा की स्थापना की बात १९५२-५३ में सोची। सबसे पहली मंत्र दीक्षा वहीं पर १९५३ में दी व यह मानते हुए कि बिना आध्यात्मिक आधार बनाये, मनोभूमि में, भावनाओं के स्तर पर बदलाब लाये कोई क्रांति सफल नहीं हो सकती, धीमी खुराक देते हुए हर व्यक्ति को गायत्री व यज्ञ के तत्व दर्शन से जोड़ते हुए चले गये। गायत्री परिवार रूपी विराट वट वृक्ष का मूल आधार वह स्थापना है जो जन-जन के मनों में पहले हुई- उनकी भाव संवेदनाओं के उदात्तीकरण के रूप में संपन्न हुई व उनके अंदर अपनी गुरु सत्ता को देखकर त्याग करने की यज्ञीय जीवन अपनाने की प्रेरणा बलवती होने लगी। उनने सर्वमेध के रूप में अपना सर्वस्व बलिदान एवं नरमेध के रूप में अपने आप को समाज के हित न्यौछावर करने की भावना से दो यज्ञ किये। अपनी जमींदारी के बाण्ड बेचकर एवं परमवंदनीया माताजी के कीमती सोने के जेवर (ढाई सौ तोले) बेचकर जो स्वेच्छा से संपन्न हुआ, एक स्थापना भवन के रूप में जो हुई- वह थी **गायत्री तपोभूमि, मथुरा** जो वृन्दावन रोड पर ऋषि दुर्वासा की जन्मस्थली पर बनी आज से ४२ वर्ष पूर्व १९५३ में। प्रारंभिक स्थापना यों अखण्ड ज्योति संस्थान को माना जा सकता है जहाँ अखण्ड दीपक आँवल खेड़ा से अपनी जन्मभूमि से जो वहाँ से मात्र ४० मील दूर थी, स्थापित किया गया था एवं प्रारंभिक तप-तितिक्षा वहीं पर १९४१ से, तपोभूमि की स्थापना से भी 12 वर्ष पूर्व आरंभ हो गयी थी। इस प्रकार जन-जन के मनों का निर्माण उनके अंत: स्थल में प्रवेश कर उनके अंदर देवत्व के जागरण की ललक पैदा करने वाली पृष्ठभूमि पर स्थापनाओं का क्रम बना। किराये की ऐसी हवेली जिसे भुतहा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

हवेली कहा जाता था, में अखण्ड दीपक की स्थापना, उसके समक्ष तप, **अखण्ड ज्योति संस्थान, घीयामण्डी, मथुरा** के रूप में विकसित हुआ एवं एक और दूसरा निर्माण मथुरा में ही गायत्री तपोभूमि के रूप में हुआ जोकि ३ मील दूर वृन्दावन रोड पर १९५३ बनाई गई। १९५३ में एवं क्रमशः सुसंगठित गायत्री परिवार के बनने की प्रक्रिया चल पड़ी।

इस प्रारंभिक भूमिका को समझने के बाद ही परमपूज्य गुरुदेव की पाँच मूल स्थापनाओं एवं बाद में देश के कोने-कोने में बनी भव्य इमारतों के रूप में शक्तिपीठों- प्रज्ञा संस्थानों भारत व विश्वभर में घर-घर में स्थापित स्वाध्याय मण्डलों व गायत्री परिवार की शाखाओं, प्रज्ञापीठों-चरणपीठों का महत्व समझा जा सकता है। नहीं तो जैसे अन्यान्य आश्रम-संस्थान बनते हैं ऐसे इनका भी वर्णन किया जा सकता था व यह कहा जा सकता था कि यह वैभवपूर्ण स्थापनाएँ पूज्यवर ने कीं। उनमें यदि प्राण फूँके गये हों, प्राणवान व्यक्ति वहाँ रहते हों व उस शक्ति के महा-अवसान के बाद भी वे सतत उसी दिशा में चल रहे हों तो माना जाना चाहिए कि प्रारंभिक पुरुषार्थ जो किया गया, वह औचित्य पूर्ण था। ***परम पूज्य गुरुदेव की महत्वपूर्ण पाँच स्थापनाएँ, इस प्रकार हैं-***

(१) युगतीर्थ आँवलखेड़ा (२) अखण्ड ज्योति संस्थान, घीयामण्डी, मथुरा (३) गायत्री तपोभूमि, मथुरा (४) शांतिकुंज, गायत्री तीर्थ, सप्तसरोवर, हरिद्वार तथा (५) ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान, सप्तसरोवर, हरिद्वार।

युगतीर्थ आँवलखेड़ा का नाम सबसे पहले इसलिए लिखा कि यहीं पर वह युगपुरुष जन्मा संवत् १९६८ की आश्विन कृष्ण त्रयोदशी तिथि के दिन ब्राह्म मुहूर्त में, जो अँग्रेजी तारीख से २० सितम्बर १९११ के दिन आती थी। एक श्री मंत ब्राह्मण परिवार में, जहाँ धन की कोई कमी नहीं थी, पूरा परिवार संस्कारों से अनुप्राणित-पिता भागवत के प्रकाण्ड पंडित बहुत बड़ी जागीर के मालिक। आज जहाँ पूज्यवर की स्मृति में एक विराट स्तंभ की, एक चबूतरे की तथा उनके कर्तृत्व रूपी शिलेखों की स्थापना हुई है- वहीं पूज्यवर ने शरीर से जन्म लिया था। समीप बनी दो कोठरियाँ जो काल प्रवाह के क्रम में गिर सी गयी थीं, जीर्णोद्धार कर वैसी ही निर्मित कर दी गयी हैं- जैसी उनके समय में थी। जन्मभूमि का कण-कण उस दैवीसत्ता की चेतना से अनुप्राणित है। उनके हाथ से खोदा कुआँ जिसे पूरे गाँव का एक मात्र मीठे जल वाला कुआँ माना गया- वह अभी भी है, उनके हाथ से रोपा नीम का पेड़ एवं वह बैठक जहाँ स्वतंत्रता संग्राम के दिनों में सब बैठकर चर्चा करते थे, आज भी उन दिनों की याद दिलाते हैं। पास में ही दो कोठरियाँ हैं जिनमें से एक कक्ष में वह स्थान है जहाँ दीपक के प्रकाश में से सूक्ष्म शरीर धारी गुरुसत्ता प्रकट हुई थी तथा जिसने उनके जीवन की दिशा धारा का १९२६ के बाद के क्रम का निर्धारण कर दिया था। यह सब देखकर मस्तिष्क पटल पर वह दृश्य उभर आता था, जिसे गुरुसत्ता ने कभी देखा था व जो गायत्री परिवार की स्थापना का मूल आधार बना। आँवलखेड़ा में ही उनकी माताजी की स्मृति में स्थापित माता दानकुँवरि इंटर कालेज है जो उनके द्वारा दान दी गयी जमीन में प्रदत्त धन राशि द्वारा विनिर्मित्त है। १९६३ से चल रहे इस इंटर कालेज से कई मेधावी छात्र निकल कर आत्म निर्भर बने हैं व उच्च पदों पर पहुँचे हैं।

१९७९-८० में गायत्री शक्तिपीठ-एवं कन्या इंटर कालेज की स्थापना का ताना-बाना बुना जाने लगा एवं एक विशाल शक्तिपीठ तथा आसपास के दो सौ ग्रामों की बालिकाओं के पठन-पाठन की व्यवस्था करने वाले, उन्हें सुशिक्षित संस्कारवान आत्मावलम्बी बनाने वाले कन्या महाविद्यालय का अब रूप ले चुका है। प्रथम पूर्णाहुति हेतु इसी भूमि को जो शक्तिपीठ-जन्मभूमि-ग्रामीण क्षेत्र के चारों ओर है, इसीलिए चुना गया कि यहाँ से उद्भूत प्राण ऊर्जा से यहाँ आने वाला हर संकल्पित साधक अनुप्राणित होकर जाए व राष्ट्र के नव निर्माण की सांस्कृतिक-भावनात्मक क्रांति की पृष्ठभूमि रख सके। यहाँ पूज्यवर १९३६-३७ तक ही रहे, कुछ दिन आगरा रहकर १९४०-४१ में मथुरा चले गये जहाँ दो-तीन मकान बदलने के बाद वर्तमान मकान किराये पर लिया जिसे आज अखण्ड-ज्योति संस्थान कहते हैं।

अखण्ड ज्योति संस्थान, घीया मण्डी, मथुरा में स्थित हैं। परमपूज्य गुरुदेव सीमित साधनों में अपने अखण्ड दीपक के साथ यहीं रहने लगे एवं यहीं से क्रमशः आत्मीयता विस्तार की जन-जन तक अपने क्रांतिकारी चिंतन के विस्तार की प्रक्रिया 'अखण्ड ज्योति' पत्रिका, जो आगरा से ही आरंभ कर दी गयी थी, की 'गायत्री चर्चा' स्तंभ व अन्यान्य

लेखों की पंक्तियों के माध्यम से संपन्न होने लगी। व्यक्तिगत पत्रों द्वारा उनके अंतस्तल को स्पर्श कर एक महान स्थापना का बीजारोपण होने लगा। यहीं पर अगणित दुखी, तनाव ग्रसित व्यक्तियों ने आकर उनके स्पर्श से नये प्राण पाये तथा उनके व परम वंदनीया माताजी के हाथों से भोजन-प्रसाद पाकर उनके अपने होते चले गये। हाथ से बने कागज पर छोटी टेण्ड्रिल मशीनों द्वारा यहीं पर अखण्ड ज्योति पत्रिका छापी जाती थी व छोटी-छोटी किताबों द्वारा लागत मूल्य पर उसे निकालने योग्य खर्च निकलता था। बगल की एक छोटी सी कोठरी में जहाँ अखण्ड दीपक जलता था, आज पूजा घर विनिर्मित है। पूरी बिल्डिंग को खरीद कर उनके सुपुत्र ने एक नया आकार व मजबूत आधार दे दिया है किन्तु यह कोठरी अंदर से वैसी ही रखी गयी है जैसी पूज्यवर के समय में 1942-43 में रही होगी। तब से लेकर आगामी ३० वर्ष का साधनाकाल-लेखनकाल पूज्यवर का इसी घीयामण्डी के भवन में छोटी-छोटी दो कोठरियों में गहन तपश्चर्या के साथ बीता। तपोभूमि निर्माण की पृष्ठभूमि यहीं बनी, १९५८ सहस्र कुण्डीयज्ञ की आधार शिला यहीं रखी गयी, यहीं सारी योजना बनी एवं विधिवत-गायत्री परिवार बनता चला गया। रोज आने वाले पत्रों को स्वयं परम वंदनीया माताजी पढ़ती जातीं एवं पूज्यवर इतनी ही देर में जवाब लिखते जाते, यही सूत्र संबंधों के सुदृढ़ बनने का आधार बना। हर परिजन को तीन दिन में जवाब मिल जाता, शंका-समाधान होता चला जाता एवं देखते-देखते एक विराट गायत्री परिवार बनता चला गया। गायत्री महाविज्ञान के तीनों खण्ड, युग निर्माण परक साहित्य, आर्ष-ग्रन्थों के भाष्य को अंतिम आकार देने का कार्य यहीं संपन्न हुआ। जन सम्मेलनों छोटे-बड़े यज्ञों एवं १००८ कुण्डी पाँच विराट यज्ञों में पूज्यवर यहीं से गये एवं विदाई सम्मेलन की रूपरेखा बनाकर स्थायी रूप से इस घर से १९७१ की २० जून को विदा लेकर चले गये। इस संस्थान के कण-कण में जहाँ आज १० लाख से अधिक संख्या में हिन्दी सहित सभी भाषाओं में अखण्ड ज्योति पत्रिका के प्रकाशन विस्तार डिस्पैच आदि का एक विराट तंत्र स्थापित है, परमपूज्य गुरुदेव की चेतना संव्याप्त अनुभव की जा सकती है। भले ही बहिरंग का कलेवर बदल गया हो, अंदर प्रवेश करते ही परमपूज्य गुरुदेव व परम वंदनीया माताजी की सतत विद्यमान प्राणचेतना के स्पन्दन वहाँ विद्यमान हैं, यह प्रत्यक्षतः देखा जा सकता है।

गायत्री तपोभूमि, मथुरा को परमपूज्य गुरुदेव की चौबीस महापुरश्चरणों की पूर्णाहुति पर की गयी स्थापना माना जा सकता है, जिसे विनिर्मित ही गायत्री परिवार रूपी संगठन के विस्तार के लिए किया गया था। इसकी स्थापना से पूर्व चौबीस सौ तीर्थों के जल व रज को संग्रहीत करके यहाँ उनका पूजन किया गया, एक छोटी किन्तु भव्य यज्ञशाला में अखण्ड अग्नि स्थापित की गयी तथा एक गायत्री महाशक्ति का मन्दिर विनिर्मित किया गया। चौबीस सौ करोड़ गायत्री मंत्रों का लेखन जो श्रद्धापूर्वक नैष्ठिक साधकों द्वारा किया गया था, यहाँ पर संरक्षित कर रखा गया है। पू० गुरुदेव की साधना स्थली व प्रातः काल की लेखनी की साधना की कोठरी यदि अखण्ड ज्योति संस्थान में थी तो उनकी जन-जन से मिलने, साधनाओं द्वारा मार्गदर्शन देने की कर्म-भूमि गायत्री तपोभूमि थी। यहीं पर १०८ कुण्डी गायत्री महायज्ञ में १९५३ में पहली बार पूज्यवर ने साधकों को मंत्र दीक्षा दी। यहीं पर १९५६ में नरमेध यज्ञ तथा १९५८ में विराट सहस्रकुण्डी यज्ञायोजन संपन्न हुए। श्रेष्ठ नररत्नों का चयन कर गायत्री परिवार को विनिर्मित करने का कार्य यहीं व्यक्तिगत मार्गदर्शन द्वारा संपन्न हुआ। हिमालय प्रवास से लौटकर पूज्य आचार्य श्री ने युग निर्माण योजना के शत सूत्री कार्यक्रम एवं सत्संकल्प की तथा युगनिर्माण विद्यालय के एक स्वावलम्बन प्रधान शिक्षा देने वाले तंत्र के आरंभ होने की घोषणा की। यह विधिवत् १९६४ से आरम्भ किया गया एवं अभी भी सफलतापूर्वक चल रहा है। जिस कक्ष में परमपूज्य गुरुदेव सभी से मिला करते थे, अभी भी यहाँ देखा जा सकता है। भव्य निर्माण परमपूज्य गुरुदेव की १९७१ की विदाई के बाद यहाँ हो गया है किन्तु, कण-कण में उनकी प्राणचेतना का दर्शन किया जा सकता है। विराट प्रज्ञानगर, युग निर्माण विद्यालय, साहित्य की छपाई हेतु बड़ी-बड़ी ऑफसेट मशीनें तथा युगनिर्माण साहित्य जो पूज्यवर ने जीवन भर लिखा, उसका वितरण-विस्तार तंत्र यहाँ पर देखा जा सकता है।

शांतिकुंज, हरिद्वार- ऋषि परम्परा के बीजारोपण केन्द्र के रूप में १९७१ में स्थापित किया गया था, जब परमपूज्य गुरुदेव मथुरा स्थायी रूप से छोड़कर परमवंदनीया माताजी को अखण्ड दीपक की रखवाली हेतु यहाँ छोड़कर हिमालय में चले गये। गुरुसत्ता के निर्देश पर वे पुनः एक वर्ष बाद लौटे व तब शांतिकुंज को उनने एक बड़ा विराट रूप देने,

सभी ऋषिगणों की मूलभूत स्थापनाओं को यहाँ साकार बनाने का निश्चय किया । इससे पूर्व परमवंदनीया माताजी ने 24 कुमारी कन्याओं के साथ अखण्ड दीपक के समक्ष २४० करोड़ गायत्री मंत्र का अखण्ड अनुष्ठान आरंभ कर दिया था । पूज्यवर ने प्राण प्रत्यावर्त्तन सत्र जीवन साधना सत्र, वानप्रस्थ सत्र आदि के माध्यम से विभिन्न क्षेत्र में सक्रिय कार्य करने वाले कार्यकर्त्ता यहीं गढ़े । यह सत्र शृंखला कल्प साधना, संजीवनी साधना सत्रों के रूप में तब से ही ९ दिवसीय सत्रों व एक माह के युग शिल्पी प्रशिक्षण सत्रों के रूप में चल रही है, अभी भी अनवरत उसमें आने वालों का तांता लगा रहता है । पहले से ही सब अपनी बुकिंग इसमें करा लेते हैं ।

शांतिकुंज को गायत्री तीर्थ का रूप देकर सप्त ऋषियों की मूर्त्तियों की स्थापना १९७८-७९ में की गयी, एक देवात्मा हिमालय विनिर्मित किया गया एवं यहाँ सभी संस्कारों को संपन्न करते रहने का क्रम बन गया जो सतत चल रहा है। नित्य यहाँ दीक्षा, पुंसवन, नामकरण, विद्यारम्भ, यज्ञोपवीत, विवाह, श्राद्ध-तर्पण आदि संस्कार संपन्न होते हैं। इस बीच परम वंदनीया माताजी ने जागरण सत्र शृंखलाएँ संपन्न करना आरम्भ रखा । देव कन्याओं को प्रशिक्षित कर पूरे भारत में जीप टोलियों में भेजा गया । इनके माध्यम से तीन वर्ष तक भारत के कोने-कोने में तुमुलनाद होता रहा ।

शांतिकुंज का गायत्री नगर जो आज एक विराट स्थापना के रूप में, एक अकेडमी के रूप में नजर आता है व जिसमें एक बार में एक साथ दस हजार व्यक्ति एक साथ ठहर सकते हैं १९८१-८२ में बनना आरम्भ हुआ । विलक्षण, दुर्लभ जड़ी बूटियों के पौधे यहाँ लगाये गये तथा प्रखर प्रज्ञा-सजल श्रद्धा रूपी तीर्थ स्थली का पूज्यवर ने अपने सामने निर्माण कराया । यहीं उनके निर्देशानुसार उनके शरीर छोड़ने पर दोनों सत्ताओं को अग्नि समर्पित की जानी थी । स्वावलम्बन विद्यालय से लेकर एक विशाल चौके का निर्माण एवं गायत्री विद्यापीठ से लेकर भारत के सभी सरकारी विभागों के प्रशिक्षण के तंत्र की स्थापना यहाँ पर की गयी है एवं यह एक जीता जागता तीर्थ अब बन गया है, जहाँ पर उज्ज्वल भविष्य की पूर्व झलक देखी जा सकती है। कम्प्यूटरों से सज्जित विशाल कार्यालय से लेकर पत्राचार विद्यालय जहाँ नित्य हजारों पत्रों के द्वारा पूरे तंत्र का मार्गदर्शन किया जाता है, यहाँ की विशेषता है ।

ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान परम-पूज्य गुरुदेव की अभिनव पाँचवी स्थापना है, जहाँ पर विज्ञान और अध्यात्म के समन्वय का अभिनव शोध कार्य चल रहा है। इसे १९७९ की गायत्री जयंती पर आरम्भ किया गया था । वर्तमान शांतिकुंज-गायत्री तीर्थ से आधा किलोमीटर दूरी पर गंगातट पर स्थित यह संस्थान अपनी आकर्षक बनावट के कारण सहज ही सबके मनों को मोहकर आमंत्रित करता रहता है । इसमें तीन मंजिलों में प्रथम तल पर एक विज्ञान के उपकरणों से सुसज्जित यज्ञशाला विनिर्मित है तथा चौबीस कक्षों में गायत्री महाशक्ति की चौबीस मूर्त्तियाँ बीजमंत्रों व उनकी फल-श्रुतियों सहित स्थापित हैं । द्वितीय तल पर एक वैज्ञानिक प्रयोगशाला है, जहाँ ऐसे उपकरण स्थापित हैं जो यह जाँच पड़ताल करते हैं कि साधना से पूर्व व पश्चात्, यज्ञादि मंत्रोच्चारण के पूर्व व पश्चात् क्या-क्या परिवर्त्तन शरीर-मन की गतिविधियों व रक्त आदि संघटकों में देखने में आये । इनके आधार पर साधकों को साधना संबंधी परामर्श दिया जाता है । यहाँ पर वनौषधियों का विश्लेषण भी किया जाता है तथा यज्ञ ऊर्जा-मंत्र शक्ति का क्या प्रभाव साधक की मस्तिष्कीय तरंगों-जैव विद्युत आदि पर पड़ा यह देखा जाता है । विभिन्न प्रकार के मनोवैज्ञानिक परीक्षण भी यहाँ किये जाते हैं । तृतीय तल पर एक विशाल ग्रंथागार स्थापित हैं, जहाँ विश्वभर के शोध प्रबंध वैज्ञानिक अध्यात्मवाद पर एकत्रित किये गये हैं । यहाँ प्रायः ४५००० से अधिक ग्रंथ हैं, जिनमें कई पुरातन पाण्डुलिपियाँ हैं । यह अपने आप में एक अनूठा संकलन है जो और कहीं एक साथ देखने में नहीं मिलता ।

परमपूज्य गुरुदेव की उपरोक्त पाँच स्थापनाएँ किसी को भी यह परिचय दे सकती हैं कि किस विलक्षण दृष्टास्तर की वह महासत्ता थी जो हम सबके बीच अपना लीला संदोह रचकर चली गयी । प्रत्यक्ष तो यह केन्द्रीय पाँच स्थापनाएँ नजर आती हैं किन्तु ४८०० से अधिक अपने भवनों वाले प्रज्ञा संस्थान २४००० से अधिक प्रज्ञा मण्डल व स्वाध्याय मण्डल तथा अगणित गायत्री परिवार की शाखाएँ यदि इनमें मिलाई जायें तो इनका मूल्य राशि में आँका नहीं जा सकता। यही वह सब है जो उस महापुरुष को एक अवतारी स्तर की सत्ता के रूप में प्रतिष्ठापित करता है व जिसके कर्तृत्व पर श्रद्धावनत होने का मन करता है । ❑❑❑

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य का जीवनदर्शन : समग्र वाङ्मय

परमपूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य ने जीवन भर जो अपनी लेखनी से लिखा, औरों को प्रेरित कर उनसे सृजनात्मक लेखन करवाया, पुस्तकों-पत्रिकाओं में जो प्रकाशित हुआ, समय-समय पर उनने अमृतवाणी के माध्यम से जो विचारों की अभिव्यक्ति की, विचारसार व सूक्तियाँ जो वे लिख गये या अनायास कभी कह गये तथा पत्रों के माध्यम से जो अंतरंग स्पर्श जन-जन को दिया, वह समग्र इस वाङ्मय के खण्डों में है । जिनके नाम इस प्रकार हैं :-

१. युगद्रष्टा का जीवन-दर्शन
समग्र वाङ्मय का परिचय
२. जीवन देवता की साधना-आराधना
३. उपासना-समर्पण योग
४. साधना पद्धतियों का ज्ञान और विज्ञान
५. साधना से सिद्धि-१
६. साधना से सिद्धि-२
७. प्रसुप्ति से जाग्रति की ओर
८. ईश्वर कौन है, कहाँ है, कैसा है ?
९. गायत्री महाविद्या का तत्वदर्शन
१०. गायत्री साधना का गुह्य विवेचन
११. गायत्री साधना के प्रत्यक्ष चमत्कार
१२. गायत्री की दैनिक एवं विशिष्ट अनुष्ठान-परक साधनाएँ
१३. गायत्री की पंचकोशी साधना एवं उपलब्धियाँ
१४. गायत्री साधना की वैज्ञानिक पृष्ठभूमि
१५. सावित्री, कुण्डलिनी एवं तंत्र
१६. मरणोत्तर जीवन : तथ्य एवं सत्य
१७. प्राणशक्ति : एक दिव्य विभूति
१८. चमत्कारी विशेषताओं से भरा मानवी मस्तिष्क
१९. शब्द ब्रह्म-नाद ब्रह्म
२०. व्यक्तित्व विकास हेतु उच्चस्तरीय साधनाएँ
२१. अपरिमित संभावनाओं का आगार मानवी व्यक्तित्व
२२. चेतन, अचेतन एवं सुपर चेतन मन
२३. विज्ञान और अध्यात्म परस्पर पूरक
२४. भविष्य का धर्म : वैज्ञानिक धर्म
२५. यज्ञ का ज्ञान-विज्ञान
२६. यज्ञ : एक समग्र उपचार प्रक्रिया
२७. युग-परिवर्तन कैसे और कब ?
२८. सूक्ष्मीकरण एवं उज्ज्वल भविष्य का अवतरण-१
२९. सूक्ष्मीकरण एवं उज्ज्वल भविष्य का अवतरण-२
(सतयुग की वापसी)
३०. मर्यादा पुरुषोत्तम राम
३१. संस्कृति-संजीवनी श्रीमद्भागवत एवं गीता
३२. रामायण की प्रगतिशील प्रेरणाएँ
३३. षोडश संस्कार विवेचन
३४. भारतीय संस्कृति के आधारभूत तत्त्व
३५. समस्त विश्व को भारत के अजस्र अनुदान
३६. धर्मचक्र प्रवर्त्तन एवं लोकमानस का शिक्षण
३७. तीर्थ सेवन : क्यों और कैसे ?
३८. प्रज्ञोपनिषद्
३९. नीरोग जीवन के महत्त्वपूर्ण सूत्र
४०. चिकित्सा उपचार के विविध आयाम
४१. जीवेम शरदः शतम्
४२. चिरयौवन एवं शाश्वत सौन्दर्य
४३. हमारी संस्कृति : इतिहास के कीर्ति स्तम्भ
४४. मरकर भी अमर हो गये जो
४५. सांस्कृतिक चेतना के उन्नायक : सेवाधर्म के उपासक
४६. भव्य समाज का अभिनव निर्माण
४७. यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता
४८. समाज का मेरुदण्ड सशक्त परिवार तंत्र
४९. शिक्षा एवं विद्या
५०. महापुरुषों के अविस्मरणीय जीवन प्रसंग-१
५१. महापुरुषों के अविस्मरणीय जीवन प्रसंग-२
५२. विश्व वसुधा जिनकी सदा ऋणी रहेगी
५३. धर्मतत्त्व का दर्शन व मर्म
५४. मनुष्य में देवत्व का उदय
५५. दृश्य जगत् की अदृश्य पहेलियाँ
५६.ईश्वर विश्वास और उसकी फलश्रुतियाँ
५७. मनस्विता प्रखरता और तेजस्विता
५८. आत्मोत्कर्ष का आधार- ज्ञान
५९. प्रतिगामिता का कुचक्र ऐसे टूटेगा
६०. विवाहोन्माद : समस्या और समाधान
६१. गृहस्थ : एक तपोवन
६२. इक्कीसवीं सदी : नारी सदी
६३. हमारी भावी पीढ़ी और उसका नवनिर्माण
६४. राष्ट्र समर्थ और सशक्त कैसे बने ?
६५. सामाजिक, नैतिक एवं बौद्धिक क्रान्ति कैसे ?
६६. युग निर्माण योजना-दर्शन, स्वरूप व कार्यक्रम
६७. प्रेरणाप्रद दृष्टान्त
६८. पूज्यवर की अमृतवाणी (भाग एक)
६९. विचारसार एवं सूक्तियाँ (प्रथम खण्ड)
७०. विचारसार एवं सूक्तियाँ (द्वितीय खण्ड)

वाङ्मय के आगे प्रकाशित होने वाले ३८ खण्ड निम्न विषयों पर होंगे—

७१. मनोविकारों की मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि
७२. तनाव के कारण एवं उनके निवारण के उपाय
७३. चिन्तन का विधेयात्मक-निषेधात्मक स्वरूप
७४. पुरुषार्थ और मानवी जिजीविषा
७५. संकल्प बल का अनूठा प्रभाव
७६. बाल-विकास के विविध सोपान
७७. बाल मनोविज्ञान का सही उपयोग
७८. पारिवारिकता में सुसंस्कारों का योगदान
७९. पारिवारिक पंचशील और परिवार-निर्माण
८०. व्यक्तित्व के विकास की प्रक्रिया
८१. विचार-विज्ञान का महत्त्व
८२. सामाजिक समस्याएँ और उनका समाधान
८३. समाज-निर्माण के विभिन्न चरण
८४. सामाजिक जीवन में सद्गुणों की भूमिका
८५. नर-नारी की सामान्य समस्याएँ और उनका समाधान
८६. नारी जागृति की बाधाएँ एवं उनके निराकरण के उपाय
८७. पारिवारिक जीवन: एक तप-साधना
८८. दाम्पत्य जीवन के संयुक्त दायित्व
८९. नीति-विज्ञान और नैतिकता
९०. कृषि, व्यवसाय और उद्योग की उन्नति के आधार
९१. पूज्य गुरुदेव के स्फुट विचार
९२. पूज्यवर की अमृतवाणी-२
९३. पूज्य गुरुदेव की दिव्य अनुभूतियाँ
९४. पूज्य गुरुदेव के लिखे स्मरणीय पत्र
९५. तंत्र महाविज्ञान विवेचन
९६. मंत्र महाविज्ञान विवेचन
९७. महापुरुषों के प्रेरक जीवन-प्रसंग
९८. प्रेरणाप्रद कथा एवं गाथाएँ
९९. हृदयस्पर्शी विविध कथाएँ
१००. शान्तिकुंज का प्रज्ञा अभियान
१०१. युग निर्माण मिशन का क्रमिक इतिहास
१०२. वेद-सार-चिन्तन
१०३. पुराण-शोध-सार
१०४. उपनिषद् और आरण्यकों की दार्शनिक विषयवस्तु
१०५. काव्य-गीत-मंजूषा
१०६. मिशन के रचनात्मक कार्यक्रमों का क्रमिक इतिहास
१०७. मिशन की लोक-व्यवहार संहिता
१०८. गुरुदेव की अपने आत्मीय जनों से अपनी बातें

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org